Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri Funding : IKS

तमिऴ

भारतियार् कविदैहल्

सुब्रह्मण्य भारती

भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-२०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तमिऴ्

भारतियार् कविदैहळ्

(सुब्रह्मण्य भारती की कविताएँ)

[नागरी लिपि में तमिऴ् मूलपाठ, हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद]

लिप्यन्तरण एवं गद्यानुवाद
आचार्य ति० शेषाद्रि, एम० ए०

पद्यानुवाद
आचार्य रामेश्वर प्रसाद पाण्डेय, शास्त्री, 'रमेश'

प्रकाशक
भुवन वाणी ट्रस्ट
मौसम बाग़ (सीतापुर रोड), लखनऊ-२२६०२०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ॥'

प्रथम संस्करण—१९८४-८५ ई०

आकार—१८×२२÷८

पृष्ठसंख्या—११०८

5731

मूल्य— १००·०० रुपया

मुद्रक

वाणी प्रेस

भुवन वाणी ट्रस्ट, मौसम बाग़ (सीतापुर रोड), लखनऊ-२२६०२०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विश्वनागरी लिपि

॥ ग्रामे-ग्रामे सभा कार्या, ग्रामे-ग्रामे कथा शुभा ॥

सब भारतीय लिपियाँ सम-वैज्ञानिक हैं !

All the Indian Scripts are equally scientific !

भारतीय लिपियों की विशेषता ।

' संसार की लिपियों में नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक है ', यह कथन बिलकुल ठीक है । परन्तु यह कहते समय हमें याद रखना चाहिए कि वह सर्वाधिक वैज्ञानिकता, केवल हिन्दी, मराठी, नेपाली लिखी जानेवाली लिपि में नहीं, वरन् समस्त भारतीय लिपियों में मौजूद है। क, च, त, प आदि के रूपों में कोई वैज्ञानिकता नहीं है। वैज्ञानिकता है लिपि का ध्वन्यात्मक होना। नियमित स्वरों का पृथक् होना। अधिक से अधिक व्यंजनों का होना । सबको एक 'अ' के आधार पर उच्चरित करना । ['अ' अक्षर-स्वर, सकल अक्षरों का उस भाँति मूल आधार । सकल विश्व का जिस प्रकार 'भगवान्' आदि है जगदाधार ।] एक अक्षर से केवल एक ध्वनि । एक ध्वनि के लिए केवल एक अक्षर । स्माल्, कैपिटल्, इटैलिक्स् के समान अनेकरूपी नहीं; बस एक ही रूप में लिखना, बोलना, छापना और प्रत्येक अक्षर का समान वज़न पर

तमिळ - देवनागरी वर्णमाला

அ अ क	ஆ आ का	இ इ कि	ஈ ई की
உ उ कु	ஊ ऊ कू	எ ऎ कॆ	ஏ ए के
ஐ ऐ कै	ஒ ओ को	ஓ ओ को	ஔ औ कौ
ஃ अक्			
க क	ங ङ	ச च	ஞ ञ
ட ट	ண ण	த त	ந न
ப प	ம म	ய य	ர र
ல ल	வ व	ழ ऴ,ळ	ள ळ
ற ऱ,ऱ	ன ऩ,ऩ	ஷ ष	ஸ स
ஹ ह	ஜ ज	க்ஷ क्ष	

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एकाक्षरी नाम। उच्चारण-संस्थान के अनुसार अक्षरों का कवर्ग, चवर्ग आदि में वर्गीकरण। फिर प्रत्येक वर्ग के अक्षरों का क्रम से एक ही संस्थान में थोड़ा-थोड़ा ऊपर उठते हुए अनुनासिक तक पहुँचना, आदि-आदि ऐसे अनेक गुण हैं जो अभारतीय लिपियों में एकत्र, एकसाथ नहीं मिलते। किन्तु ये गुण समान रूप से सभी भारतीय लिपियों में मौजूद हैं, अतः वे सब नागरी के समान ही विश्व की अन्य लिपियों की अपेक्षा 'सर्वाधिक वैज्ञानिक' हैं। सब ब्राह्मी लिपि से उद्भूत हैं। ताड़पत्र और भोजपत्र की लिखाई तथा देश-काल-पात्र के अन्य प्रभावों के कारण विभिन्न भारतीय लिपियों के अक्षरों में यत्र-तत्र परिवर्तन, हिन्दी वाली 'नागरी लिपि' को कोई श्रेष्ठता प्रदान नहीं करता। भारत की मौलिक सब लिपियाँ 'नागरी लिपि' के समान ही श्रेष्ठ हैं।

नागरी लिपि को 'भी' अपनाना श्रेयस्कर क्यों ?

"नागरी लिपि" की केवल एक विशेषता है कि वह कमोबेश सारे देश में प्रविष्ट है, जबकि अन्य भारतीय लिपियाँ निजी क्षेत्रों तक सीमित हैं। वहीं यह भी सत्य है कि नागरी लिपि में प्रस्तुत और विशेष रूप से खड़ी बोली का साहित्य, अन्य लिपियों में प्रस्तुत ज्ञानराशि की अपेक्षा कम और नवीनतर है। अतः समस्त भाषाओं की ज्ञानराशि को, सर्वाधिक फैली लिपि "नागरी" में अधिक से अधिक लिप्यन्तरित करके, क्षेत्रीय स्तर से उठाकर सबको सारे राष्ट्र में, यहाँ तक कि विश्व में ले आना परम धर्म है। विश्व की सब भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान (सत्साहित्य) है आत्मा, और 'नागरी लिपि' होना चाहिए उसका पर्यटक शरीर।

अन्य लिपियों को बनाये रखना भी कर्तव्य है।

वस्तुतः यह परम धर्म है कि समस्त सदाचार साहित्य को नागरी में तत्परता से प्राचुर्य में लिप्यन्तरित करना। किन्तु साथ ही यह भी परम धर्म है कि देशी-विदेशी अन्य सभी लिपियों को उत्तरोत्तर उन्नति के साथ बरक़रार रखना। यह इसलिए कि सबका सब कभी लिप्यन्तरित नहीं हो सकता। अतः अन्य लिपियों के नष्ट होने और नागरी लिपि मात्र के ही रह जाने से विश्व की समस्त अ-लिप्यन्तरित ज्ञानराशि उसी प्रकार लुप्त-सुप्त होकर रह जायगी जैसे पाली, प्राकृत और अपभ्रंश, सुरयानी आदि का वाङ्मय रह गया। जगत् तो दूर, राष्ट्र का ही प्राचीन आप्तज्ञान विलुप्त हो जायगा।

नागरी लिपि वालों पर उत्तरदायित्व विशेष !

इन दोनों परम धर्मों की पूर्ति का सर्वाधिक भार नागरी लिपि वालों पर है, इसलिए कि उनको 'सम्पर्क लिपि' का श्रेष्ठ आसन प्रदत्त है। मैं कह सकता हूँ कि उन्होंने अपने कर्तव्य का, जैसा चाहिए था, वैसा निर्वाह नहीं किया। परन्तु उसकी प्रतिक्रिया में अन्य लिपि वालों को भी "अपराध के जवाब में अपराध" नहीं करना चाहिए। 'कोयला' बिहार का है

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अथवा सिंहभूमि का है, इसलिए हम उसको नहीं लेंगे तो वह हमारे ही लिए घातक होगा। कोयले की क्षति नहीं होगी। अपनी लिपियों को समुन्नत रखिए, किन्तु नागरी लिपि को भी अवश्य अपनाइए।

उपर्युक्त परिवेश में नागरी लिपि का पठन और समग्र श्रेष्ठ साहित्य का नागरी में लिप्यन्तरण तो आवश्यक है ही, किन्तु अन्य लिपियाँ भी अपनी लिपि में दूसरी भाषाओं के सत्साहित्य को लिप्यन्तरित तथा अनूदित कर सकती हैं। 'अधिकस्य अधिकं फलम्।' ज्ञान की सीमा नहीं निर्धारित है। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने भी अवधी के रामचरितमानस को ओड़िआ भाषा में गद्य एवं पद्य अनुवाद-सहित, ओड़िआ लिपि में लिप्यन्तरित किया है। परन्तु सम्पर्क और एकीकरण की दृष्टि से 'नागरी लिपि' अनिवार्य है।

नागरी लिपि की वैज्ञानिकता मानव मात्र की सम्पत्ति है।

अब एक क़दम आगे बढ़िए। भारतीय लिपियों की सर्वाधिक वैज्ञानिकता, युगों की मानव-शृंखला के मस्तिष्क की उपज है। क्या मालूम इस अनादि से चल रहे जगत् में कब, क्या, किसने उत्पन्न किया? भारत संयोग से इस समय इस विज्ञान का कस्टोडियन् है, स्रष्टा नहीं। भारत भी न जाने कब, कहाँ तक और कितना था? अतः हम भारतीयों को नागरी लिपि के स्वामित्व का गर्व नहीं होना चाहिए। वह आज के मानव के पूर्वजों की देन है, सबकी सम्पत्ति है, सकल विश्व उसका समान गौरव से उपयोग कर सकता है। हमारा 'अहम्' उस लिपि की उपयोगिता को रुद्ध कर देगा, जिसके हम सँजोये रखनेवाले मात्र हैं। किन्तु विदेशों में बसनेवाले बन्धुओं को भी नागरी लिपि के गुणों को अपने ही पूर्वजों की उपज मानकर परखना चाहिए। ये गुण इस निबन्ध के प्रथम अनुबन्ध में अधिकांशतः वर्णित हैं। न परखने पर उनकी क्षति है, विश्व की क्षति है। अरब का पेट्रोल हम नहीं लेंगे, तो क्षति किसकी होगी? पेट्रोल की नहीं, अपनी ही।

फिर याद दिला देना ज़रूरी है कि क, प आदि रूपों में वैज्ञानिकता नहीं है। वे काफ़, पे और के, पी, जैसे ही रूप रख सकते हैं, किन्तु लिपि में 'अनुबन्ध प्रथम' में ऊपर दिये हुए गुणों और क्रम को अवश्य ग्रहण करें। और यदि एक बनी-बनाई चीज़ को ग्रहण करके सार्वभौम सम्पर्क में समानता और सरलता के समर्थक हों, तो 'नागरी लिपि' के क्रम को अपनी पैतृक सम्पत्ति मानकर, ग़ैर न समझकर, मौजूदा रूप में भी ग्रहण कर सकते हैं। वह भारत की बपौती नहीं है। आज के मानव के पूर्वजों की वह सृष्टि है। इससे विश्व के मानव को परस्पर समझने का मार्ग प्रशस्त होगा।

नागरी लिपि में अनुपलब्ध विशिष्ट स्वर-व्यञ्जनों का समावेश।

हर शुभ काम में कजी निकालनेवाले एक दूर की कौड़ी यह भी लाते हैं कि "नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक होते हुए भी अपूर्ण है और अनेक स्वर-व्यंजनों को अपने में नहीं रखती। उनको कहाँ तक और कैसे समाविष्ट

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किया जाय ?" यह मात्र तिल का ताड़ है। मौजूदा कर्तव्य को टालना है।

अल्बत्ता अन्य भाषाओं में कुछ व्यंजन ऐसे हैं जो नागरी में नहीं हैं— किन्तु अधिक नहीं। भारतीय भाषा उर्दू की क़ ख़ ग़ ज़ फ़, ये पाँच ध्वनियाँ तो बहुत समय से नागरी लिपि में प्रयुक्त हो रही हैं। दुःख है कि आज़ादी के बाद से राष्ट्रभाषा के पक्षधर ही उनको ग़ायब करने पर लगे हैं। इसी प्रकार मराठी ळ है। इनके अतिरिक्त अरबी, इब्रानी आदि के कुछ व्यञ्जन हैं, किन्तु उनको नागरी की दैनिक लिपि में अनिवार्यतः रखना आवश्यक नहीं। विशिष्ट भाषाई कार्यों में, ज़रूरी मानकर, उन विशिष्ट भाषाई व्यंजनों को चिह्न देकर दरसाया जा सकता है।

तदर्थ अरबी लिपि का आदर्श सम्मुख।

और यह कोई नयी बात नहीं। नितान्त अपरिवर्तनशील कहे जाने वालों की लिपि 'अरबी' में केवल २७-२८ अक्षर होते हैं। भाषा के मामले में वे भी अति उदार रहे। "अिल्म चीन (अर्थात् दूर से दूर) से भी लाओ"— यह पैग़म्बर (स०) का कथन है। जब ईरान में, फ़ारसी की नई ध्वनियों च, प, ग, आदि से सामना पड़ा तो उन्होंने उनको अरबी-पोशाक— चे, पे, गाफ़ पहना दी। जब हिन्दोस्तान आये तो ट, ड, ड़ आदि से सामना पड़ने पर अरबी ही जामे में टे, डाल, ड़े आदि तैयार कर लिये। यहाँ तक कि सिन्धी में नागरी के सब महाप्राण और अनुनासिक, तथा सिन्धी के विशिष्ट अन्तःस्फुट अक्षरों को भी अरबी का लिबास पहना दिया गया। फिर 'नागरी' वाले तो औदार्य का दावा करते हैं, उनको परेशानी क्या है? और नागरी में भी तो परिवर्तन होते रहे हैं। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में प्रयुक्त ळ को छोड़ चुके हैं, और ड़, ढ़ आदि को अवर्गीय दशा में जोड़ चुके हैं। नागरी लिपि में कुछ ही व्यंजनों का अभाव है। उनमें से कुछ को स्थायी तौर पर और कुछ को अस्थायी प्रयोग के लिए गढ़ सकते हैं। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने यह सेवा बड़ी सरलता, सफलता और सुन्दरता से की है।

स्वर और प्रयत्न (लहजा) का अन्तर।

अब रहे स्वर। जान लीजिए कि प्रमुख स्वर तीन ही हैं— अ, इ, उ— उनसे दीर्घ, संयुक्त (डिप्थांग) आदि बनते हैं। अतिदीर्घ, प्लुत, लघु, अतिलघु आदि फिर अनेक हैं जो विश्व में अनेक रूपों में बोले जाते हैं। भारतीय वैदिक एवं संस्कृत व्याकरण में अनेक हैं। वे स्वतंत्र स्वर नहीं हैं, प्रयत्न हैं, लहजा हैं। वे सब न लिखे जा सकते हैं, न सब सर्वत्र बोले जा सकते हैं। डायाक्रिटिकल मार्क्स कोशों में छाप-छापकर चमत्कार भले ही दिखा दिया जाय, प्रयोग में तो, "एक ही रूप में", अपने निजी शब्द निजी देशों में भी नहीं बोले जाते। स्वर क्या, व्यंजन तक। एक शब्द "पहले" को लीजिए। सब जगह घूम आइए, देखिए उसका उच्चारण किन-किन प्रकार से होता है। एक बिहार प्रदेश को छोड़कर कहीं भी "पहले" का शुद्ध

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उच्चारण सुनने को नहीं मिलेगा। पंजाब, बंगाल, मद्रास के अंग्रेज़ी के उद्भट विद्वान् अंग्रेज़ी में भाषण देते हैं—उनके लहजे (प्रयत्न) बिलकुल भिन्न होते हैं। फिर भी न उनका उपहास होता है, न अंग्रेज़ी भाषा का ह्रास।

शास्त्र पर व्यवहार को वरीयता (तर्जीह)।

शास्त्र और विज्ञान से हमको विरोध नहीं। लिपि की रचना, शोध, परिमार्जन, देश-काल-पात्र के अनुसार करते रहिए, परन्तु व्यवहारिकता को अवरुद्ध मत कीजिए। खाद्यपदार्थ के तत्त्वों का गुण-दोष, परिमाण, संतुलन, न्यूनाधिक्य, और खानेवाले की शक्ति के साथ उनका समन्वय, यह सब स्तुत्य है, कीजिए। किन्तु ऐसा नहीं कि उस शोध-समीक्षा के पूर्ण होने तक कोई भूखा रहकर मर ही जाय। थाली रखी है, उसे भोजन करने दीजिए। आज सबसे ज़रूरी है राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का एक-दूसरे की ज्ञानराशि को समझने के लिए एक सम्पर्क लिपि की व्यापकता।

'भुवन बाणी ट्रस्ट' ने स्थायी और मुक़ामी तौर पर अनेक स्वर-व्यंजनों की सृष्टि की है। दक्षिणी वर्णमालाओं में एकार तथा ओकार की ह्रस्व, दीर्घ —दोनों मात्राएँ हैं; हम बोलते हैं, किन्तु पृथक् लिखते नहीं। पढ़ने दीजिए, बढ़ने दीजिए। समस्त भाषाओं के ज्ञान-भण्डार को निजी क्षेत्रों से उठाकर धरातल पर नागरी लिपि के माध्यम से पहुँचाइए। नागरी लिपि मानव के पूर्वज की सृष्टि है, मानव मात्र की है। यहाँ से योरोप तक उसकी पहुँच है। यूरोपियों की लिपि-शैली नागरी थी। अक्षरों के रूप कुछ भी रहे हों। किन्हीं कारणों से सामीकुलों में भटककर अलफ़ा-बीटा के क्रम को थोड़े अन्तर के साथ अपना लिया। फिर पुराने संस्कारों से याद आया, तो स्वर-व्यंजन पृथक् कर दिये। किन्तु उनके क्रम-स्थान जैसे के तैसे मिले-जुले रहे। सामीकुल की भाषाओं ने भी प्रमुख स्वर तीन ही माने हैं, ज़बर-ज़ेर-पेश (अ इ उ)। और ै का उच्चारण अरबी, संस्कृत, अवधी और अपभ्रंश का एक जैसा है (अई, अऊ)। किन्तु खड़ी बोली हिन्दी-उर्दू के अै, और औ, ऐनक, औरत जैसे। यह स्वरों की भिन्नता नहीं है, वरन् लहजा (प्रयत्न) की भिन्नता है।

पूर्ण वैज्ञानिक कोई वस्तु मनुष्य के पल्ले नहीं पड़ सकती। "पूर्ण विज्ञान" भगवान् का नाम है। सा-रे-ग-म-प-ध-नी, ये सात स्वर; उनमें मध्य, मन्द, तार; कुछ में तीव्र, कोमल—बस इतने में भारतीय संगीत बँधा है। उनमें भी कुछ अदा नहीं हो सकते, अनुभूति मात्र हैं। किन्तु क्या इतने ही स्वर हैं? संगीत के स्वरों का इनके ही बीच में अनंत विभाजन हो सकता है। जैसे अणु से परमाणु का, और उसमें भी आगे। किन्तु शास्त्र एक वस्तु है, व्यवहार दूसरी। व्यवहार में उपर्युक्त षडज से निषाद तक को पकड़ में लाकर संगीत क़ायम है, क्या उसको रोककर इनके मध्य के स्वरों को पहले तलाश कर लिया जाय? तब तक संगीत को रोका जाय, क्योंकि वह पूर्ण नहीं है? क्या कभी वह पूर्ण होगा? पूर्ण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तो 'ब्रह्म' ही है। "बेस्ट् इज़् द ग्रेटेस्ट् अेनिमी ऑफ़् गुड्।" (Best is the greatest enemy of Good) इसलिए शग़्ल और शोब्दों की आड़ न ली जाय। नागरी लिपि पर्याप्त सक्षम है।

विश्व-व्यापकता के संदर्भ में नागरी लिपि के स्वरों का रूप।

लिखने के भेद— यदि नागरी को हिन्दी क्षेत्र की ही लिपि बनाये रखना है तो इ, उ, ए, ऐ, लिखने के अपने पुरानेपन के मोह में मुग्ध रहिए। और यदि उसे राष्ट्रलिपि अथवा विश्व तक में, यहाँ तक कि सामीकुल में भी आसानी से ग्राह्य बनाना चाहते हैं तो गुजराती लिपि की भाँति अि, अु, अे, अै लिखिए। किन्तु कोई मजबूर नहीं करता। विनोबा जी ने भी इसका आग्रह नहीं रखा। आकार और रूप का मोह व्यर्थ है। पुराने ब्राह्मी-शिलालेखों को देखिए। आपके मौजूदा रूप वहाँ जैसे के तैसे कहाँ हैं?

संस्कृत के तिरस्कार से भाषा-विघटन।

मेरा स्पष्ट मत है कि "संस्कृत" को राष्ट्रभाषा होना चाहिए था। वह होने पर, यह भाषा-विवाद ही न उठता। सबको ही (हिन्दी-भाषी को भी) समान श्रम से संस्कृत सीखने पर, स्पर्धा-कटुता का जन्म न होता, संस्कृत का अपार ज्ञान-भण्डार सबको प्रत्यक्ष होता, और हिन्दी की पैठ में भी प्रगति ही होती। उर्दू-हिन्दी की अपेक्षा, अन्य सभी भारतीय भाषाएँ, संस्कृत के अधिक समीप हैं। इसलिए कि प्राय: सभी भारतीय लिपियों में, संस्कृत भाषा उसी प्रकार अबाध गति से लिखी जाती है जिस प्रकार नागरी लिपि में। संस्कृत ही एक भाषा है जिसकी अनेक लिपियाँ अपनी हैं। किन्तु अब वह बात हाथ से बेहाथ है; अब "हिन्दी" ही राष्ट्रभाषा सबको मान्य होना चाहिए। यह इसलिए कि अन्य भारतीय भाषाओं में हिन्दी ही एक भारतीय भाषा है जो देश के हर स्थल में कमोबेश प्रविष्ट है।

आज क्या करना है?

सार यह कि हुज्जत कम, काम होना चाहिए। शास्त्र पर व्यवहार प्रबल है। समय बड़ा बलवान है, वह आवश्यकतानुसार ढलाई कर देता है। हिन्दी-क्षेत्र में ही घूम-घूमकर प्रतिमा-अनावरण, हिन्दी का महिमा-गान, अनुवादों की धूम, अमुक भाषा की हिन्दी को यह देन, अमुक भाषा में हिन्दी की यह छाप— यह सब दिशाविहीनता, क़िलेबन्दी और अभियान त्यागकर, नागरी लिपि में विश्व का साहित्य लाइए। टूटी-फूटी ही सही, हिन्दी बोलना भी— ("ही" नहीं बल्कि "भी") बोलने का अभ्यास कीजिए। लिपि और भाषा की सार्थकता होगी। मानवमात्र का कल्याण होगा। हमारी एकराष्ट्रीयता और विश्वबन्धुत्व चरितार्थ होगा।

—नन्दकुमार अवस्थी
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सुब्रह्मण्य भारती

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रकाशकीय प्रस्तावना

विषय-प्रवेश

भुवन वाणी ट्रस्ट का उद्देश्य; सभी भारतीय लिपियों की सम-समान वैज्ञानिकता; उनमें देश में सर्वाधिक फैली नागरी लिपि और राष्ट्रभाषा पर समग्र क्षेत्रीय सहस्रों वर्षों के ज्ञान-विज्ञानमय पुरातन वाङ्मय को सारे राष्ट्र में सुलभ करने का दायित्व —प्रस्तुत कथन के आरंभ के छः पृष्ठों में इनका वर्णन है। उसी निबन्ध में यह भी दर्शाया गया है कि ज्ञान-विज्ञान, धरातल के किसी भी क्षेत्र में उदय हुआ हो, वह समस्त मानव की सम्पदा है। विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भारतीय लिपियों की प्रतिनिधिस्वरूपा नागरी लिपि आज के मानव के पूर्वजों के उत्तरोत्तर शोध का फल है। भारत की वह पैतृक सम्पत्ति नहीं है। भारत को केवल यह श्रेय है कि उसने समस्त धरातल के लिए उपादेय नागरी लिपि को अपने यहाँ सँजोये रखा है।

रोमन लिपि में 'विलसितम्' को बिलासिताम्, विलासितम्, विलसिताम्, विलसितम्, सभी कुछ पढ़ा जा सकता है। फिर योरोप के किन्हीं देशों में 'टी' का ट और कहीं त उच्चारण होता है। ऐसी आशंकाओं से मुक्त रहते हुए, नागरी लिपि के भाषा-सेतु द्वारा, अति सामान्य परिवर्द्धन के साथ, विश्व की समस्त भाषाओं के वाङ्मय में पैठ सरलता से सुलभ है। यह अलौकिकता नागरी लिपि की है। हिन्दी, मराठी, नेपाली आदि का सौभाग्य है कि वे उसका लाभ उठा रही हैं। अलबत्ता राष्ट्रभाषा हिन्दी, नागरी लिपि में भारतीय और विदेशी भाषाओं की साहित्यनिधि को सानुवाद नागरी में लिप्यन्तरित कर एक ओर सारे विश्व का उपकार करके प्रख्यात और पुण्यवान् हो सकती है, तो दूसरी ओर अपने निजी भण्डार में अमित वृद्धि और अमीरी प्राप्त होने से उसको विश्व की सभी भाषाओं का अपने को ऋणी और कृतज्ञ भी मानना चाहिए।

राष्ट्रभाषा पर सर्वोपरि बंगाल का ऋण

सर्वप्रथम, १९०५ ई० में बंगर्षि जस्टिस शारदाचरण मित्र ने इस उद्घोष से सकल देश को जाग्रत किया था कि सभी भारतीय भाषाओं को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अमूल्य साहित्य-निधि को नागरी लिपि में अविलम्ब लिप्यन्तरित किया जाय। नागरी लिपि को राष्ट्रव्यापी बनाने के कल्याणकारी मंत्र के वे द्रष्टा थे। दुर्भाग्य रहा कि हिन्दी-जगत् उस समय कान में उँगली डाले बैठा रहा। यह हिन्दी-भाषियों का कर्तव्य था कि तत्काल उस मंत्र पर अमल करते। इसकी पहल तमिळ, मलयाळम, पंजाबी आदि से संभावित न थी। न्यायमूर्ति शारदाचरण ने 'देवनागर' नाम का पत्र भी निकाला जिसमें नागरी लिपि में अहिन्दी भाषाई लिप्यन्तरण छपते थे।

स्वतंत्रता की चेतना तो आ चुकी थी और वह भी जोर-शोर से बंगभूमि में। किन्तु देश में स्वतंत्रता का संघर्ष अन्यत्र कहीं तेज़ पर न था। उस समय बंगाल से नागरी-लिप्यन्तरण का मंत्र जागा था। हम सोते रहे, और आज कई विषम परिस्थितियों (जिनके हम कम उत्तरदायी नहीं हैं) के फलस्वरूप यदि बंगाल से राष्ट्रभाषा के विरुद्ध आवाज़ उठती है, तो हम उसकी शिकायत करते हैं। यह हम भूल जाते हैं कि यह हमारी उस प्रमाद-निद्रा का भोग है।

हमने उस युग-पुरुष नागरी-मंत्रद्रष्टा न्यायमूर्ति शारदाचरण मित्र के चित्र को बहुत तलाश की। खेद है कि वह प्राप्त नहीं हो सका। जनता से, विशेष रूप से बंग समाज से प्रार्थना है कि उनके चित्र को खोज निकाले। तब तक हम उनके एक कल्पित चित्र को प्रतिमा-स्वरूप मन में धारण करके, उनको प्रणाम करते हैं। "भुवन वाणी ट्रस्ट", अब तक के निज श्रम से, अपितु देश में एकाकी, अति विशाल 'सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण' के प्रस्तुत समग्र ग्रंथों को जस्टिस मित्र की पुण्यस्मृति में भगवदर्पण करते हुए अपने को कृतकृत्य मानता है।

मातृभाषा पर तमिळनाडु का प्रेम

पाठकों को विदित हो कि जब व्यापार के उद्देश्य से भारत में योरोपीयों के चरण पधारे, तब इस देश की अद्वितीय सम्पन्नता को देखकर उसको अपने अधीन कर शासन करने के लोभ से बच नहीं सके। तमिळनाडु में फ़्रेंचों ने अपने प्रबल पैग जमाये। इससे पहले ही विदेशी मुसलमानों से आक्रान्त तमिळों एवं अन्य दाक्षिणात्यों को उन्होंने अपना प्यादा बनाकर धर दबोचा। जबरन् अपनी फ़ौज की तृतीय वर्ग की श्रेणी में तेलंग आदि की भरती करके भारतीयों को भारतीयों से जुझाया। तभी से भारत भर में 'तेलंग' से 'तिलंगा' नाम फ़ौजियों के लिए प्रख्यात हो गया। बाद में अंग्रेज़ों ने भी यहाँ पधार कर फ़्रेंचों से मोर्चा लिया।

उस समय तमिळों ने मातृभाषाभिमान में विदेशी भाषा का घोर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिरस्कार किया था। काफ़ी बाद में जन्मे 'भारती जी' भी विदेशी शिक्षा के घोर विरोधी रहे। कालान्तर में विद्या-बुद्धि में सदा के अग्रणीय ब्राह्मण की दूरबीनी ने, इसी में भविष्य को उज्ज्वल देखकर विदेशी उच्च शिक्षा प्राप्त की और वे न्यायमूर्ति आदि बड़े-बड़े पदों को पाकर समुन्नत हुए। इसको देखकर, काफ़ी समय बाद बहुसंख्यक सामान्य समुदाय ने भी विदेशी भाषा को अपनाया। हिन्दी-भाषियों को इस तथ्य को जानकर बुरा नहीं मानना चाहिए कि आज स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भी मद्रासी, बंगाली, पंजाबी, वे कैसे भी मूर्धन्य विद्वान् क्यों न हों, परस्पर मिलने पर अपनी मातृभाषा में ही बोलते हैं। बर अक्स इसके हिन्दी-क्षेत्रों में, सामान्य अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त करते ही अंग्रेज़ी अथवा नीम-अंग्रेज़ी बोलने में अपने को श्रेष्ठ मानते हैं।

हिन्दी के मोर्चे पर अंग्रेज़ी का मुहरा

निष्कर्ष यह कि अहिन्दी-भाषियों को अंग्रेज़ी से किंचित् मोह नहीं है। हिन्दीवालों द्वारा अहिन्दी को गौण समझे जाने के फलस्वरूप उन्होंने यह एकमञ्ची अंग्रेज़ी की गोट बिठाई, क्योंकि अन्य किसी क्षेत्रीय भाषा पर वे सब स्वयं ही एकमत न होते। जबकि तथ्य यह है कि राष्ट्रभाषा (हिन्दी खड़ी बोली) का साहित्य, प्रायः अन्य भारतीय भाषाओं के सहस्रों वर्षों के ज्ञान-विज्ञानमय वाङ्मय की तुलना में नगण्य-सा है। अलबत्ता, हिन्दी की कुछ ऐतिहासिक कारणों से सर्वत्र देश में पैठ है, इसलिए नागरी लिपि और हिन्दी राष्ट्र भाषा को सम्पर्क-सेवा का काम सौंपा गया।

हिन्दी एवं संस्कृत पर तमिळनाडु का ऋण— ग्रंथलिपि

पाठकों को विदित हो कि तमिळ वर्णमाला में कवर्ग, चवर्ग आदि में बीच के तीन अक्षर ख, ग, घ और छ, ज, झ आदि नहीं हैं। देखिए तमिळ वर्णमाला चार्ट पृष्ठ ३ पर। फिर भी इस कमी के बावजूद, उनका दावा है कि उनका साहित्य, संस्कृत भाषा की अपेक्षा भी प्राचीन, सम्पन्न और अपने में पूर्ण एवं समर्थ है। इतने पर भी उन्होंने भारत की एकराष्ट्रीयता में विमुग्ध होकर किसी समय एक 'ग्रंथलिपि' की रचना की थी। तमिळ वर्णमाला में अनुपलब्ध प्रत्येक वर्ग के बीच के तीन अक्षरों फ, ब, भ आदि को अपने रूप से मिलती-जुलती मलयाळम के अक्षरों को लेकर अपनी भाषा को इतना समर्थ बनाया कि नागरी लिपि के सभी उच्चारणों (जिनकी उनको अपने तमिळ साहित्य के लिए कोई आवश्यकता नहीं थी) की सिर्जना की। फलस्वरूप संस्कृत के छोटे-छोटे श्लोकों से लेकर बड़े-बड़े शास्त्र, पुराण, इतिहास, काव्य आदि संस्कृत साहित्य का तमिळ रूपी 'ग्रंथलिपि' में लिप्यन्तरण किया गया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तमिळ-रूपी ग्रन्थलिपि

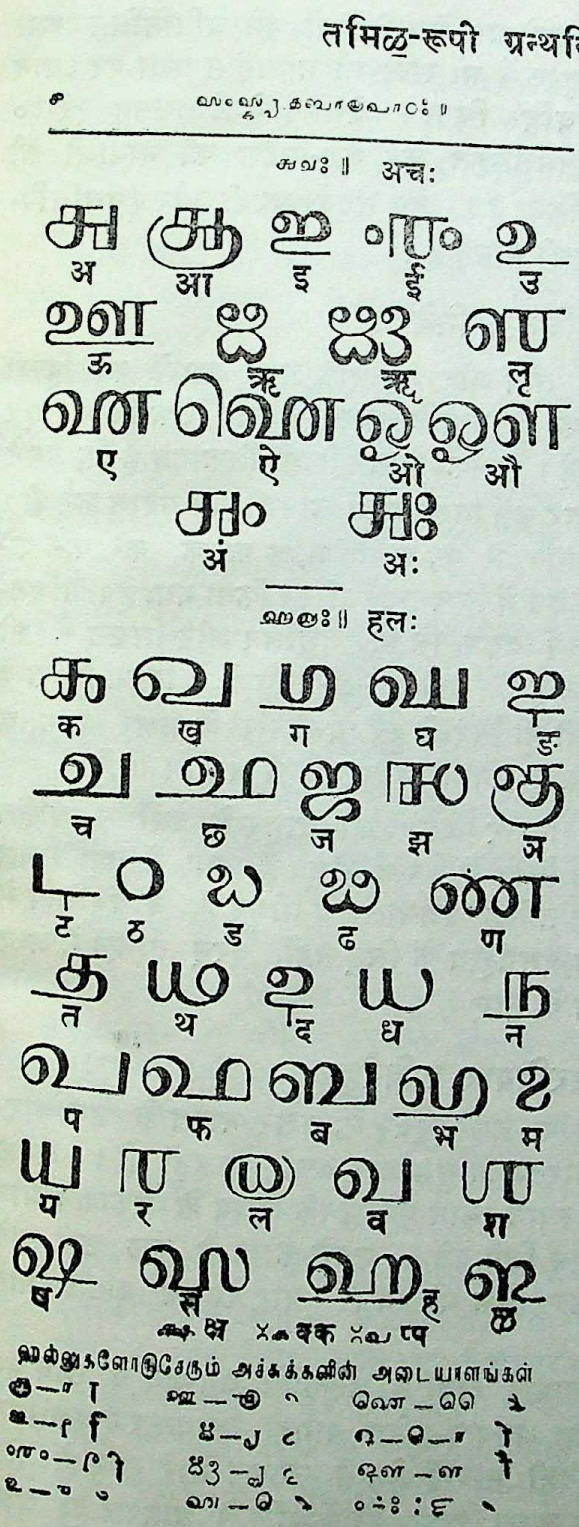

'भुवन वाणी ट्रस्ट' का 'लिपि-परिवर्द्धन' भी तमिळ के 'ग्रंथलिपि' रूपी सफल प्रयास का देश-विदेश के हित में अनुकरण है।

पृष्ठ पर कक्ष में दिये ग्रंथ-लिपि चार्ट और पृष्ठ ३ पर प्रस्तुत तमिळ वर्णमाला के चार्ट की तुलना और एकरूपता देखिए। तमिळनाडु में कुम्भकोणम् आदि नगरों में इस ग्रंथलिपि के बड़े-बड़े मुद्रणालय थे। पश्चात् उनका क्यों अभाव हुआ, इस पर सुने-सुनाये नाना कारणों पर चर्चा यहाँ का विषय नहीं।

यह जानकर आश्चर्य होगा कि अति अपरिवर्तनशील समझे जानेवालों की मूल लिपि 'अरबी' ने लिपि के मामले में यही उदार नीति अपनाई। ज्यों-ज्यों सामना पड़ता गया, फ़ारसी, उर्दू, सिंधी आदि की विशिष्ट देशीय ध्वनियों को उन्होंने अपने अरबी जामे में गढ़ा।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक सभी भारतीय लिपियों की प्रतिनिधि-स्वरूपा नागरी लिपि को, भुवन वाणी ट्रस्ट ने भी राष्ट्र की भाषाई समस्या पर ध्यान रखकर, इसी परिपाटी पर परिवर्द्धित किया। देशी विदेशी लगभग २५-३० ध्वनियों से नागरी लिपि को समलङ्कृत कर, देश-बिदेश की भाषाओं की जोड़लिपि के रूप में प्रस्तुत किया है। हम सगर्व अरबी और (ग्रंथलिपि-सहित) तमिळ का अपने को ऋणी मानते हैं।

तमिळभाषियों से भी एक विनम्र निवेदन

आज तमिळ वर्णमाला में, तीव्र और महाप्राण आदि अक्षरों को हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के साहित्य को लिप्यन्तरित करने के लिए, एक विचित्र एवं हास्यास्पद शैली अपनायी गयी है। हमको शासन से भी शिकायत है कि उसने तुष्टीकरण की नीति को अपनाकर उस विरूप शैली को स्वीकृति प्रदान कर दी। इस शैली के अनुसार तमिळ लिपि में क, ख, ग, घ, ङ को क, क^1, क^2, क^3 और ङ —इस प्रकार तमिळ स्वरूप में लिखना निर्धारित किया गया है। गणित-अंक-रूपी गढ़े गये ये अक्षर कितने विरूप, कितने अशोभन और लिखने में भी कितने कठिन हैं, यह स्वतः स्पष्ट है। मेरी तमिळ-भाषियों से विनय है कि वे क^1, क^2, क^3 के स्थान पर अपनी ही सिरजी हुई 'ग्रंथलिपि' के अक्षर ख, ग, घ के रूप को अपनायें। तमिळ और मलयाळम तो अंग से अंग मिली हैं।

ग्रंथलिपि में 'अ' आदि दो-चार अक्षरों को बाहर से क्यों सम्मिलित किया गया, जबकि वह तमिळ लिपि में स्वतः मौजूद हैं, यह मैं नहीं समझ पाया। बहरहाल जो अक्षर तमिळ वर्णमाला में मौजूद हैं, वे ग्रंथलिपि में जैसे के तैसे लेना चाहिए; तमिळ साहित्य के लिए नहीं, वरन् तमिळ में अन्य भाषाओं को लिप्यन्तरित करने के लिए।

सुब्रह्मण्य भारती का 'भारदियार् कविदैहळ्'

पाठकों को स्मरण होगा कि सन् १९८२ में, उत्तर भारत के समाचार-पत्रों में राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्य भारती की धुआँधार चर्चा चल पड़ी थी। अनेक सभाएँ हुईं, समितियाँ बनीं, स्थान-स्थान पर उनके काव्य के प्रकाशन और उनके स्मारक बनाने के संकल्प लिये गये। उनके काव्य के कुछ छोटे-छोटे अंश छपकर, बड़े-बड़े मूल्यों पर बिक भी गये। और दो वर्ष बीतते-बीतते सब ओर सन्नाटा छा गया।

हम अभी तक, विविध भाषाई क्षेत्रों में लोकप्रिय, जन-जन में छाये हुए प्राचीन साहित्य का ही हिन्दी अनुवाद-सहित नागरी लिप्यन्तरण प्रकाशित कर रहे थे, ताकि वह अपने निजी भाषाई क्षेत्र से उठकर सारे राष्ट्र में फैल जाय, राष्ट्रभाषा का भण्डार सकल राष्ट्र की सम्पत्ति से प्रतिपन्न हो जाय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और जोड़लिपि नागरी से अपेक्षित योगदान भी चरितार्थ हो। एक ओर दो वर्ष तो भारती जी का इतना शोर-शराबा और उसके बाद एकदम मौन ! —इससे जाग्रत् उत्कण्ठा ने ट्रस्ट का ध्यान उस ओर आकृष्ट किया। क्यों न सन् ४२ से पूर्व ही काल-कवलित इस महान व्यक्तित्व को नागरी के द्वारा सारे राष्ट्र में सुपरिचित कराया जाय ?

तमिळ जैसी जटिल भाषा के नागरी लिप्यन्तरण और हिन्दी अनुवाद के सम्बन्ध में आचार्य ति० शेषाद्रि ही हमारे देवता हैं। भुवन वाणी ट्रस्ट के आजीवन न्यासी की हैसियत से १९८३-८४ की ट्रस्ट की वार्षिक बैठक में वे मदुरै से लखनऊ पधारे और तब मैंने 'भारती जी' के सम्बन्ध में उनसे चर्चा चलाई। फलस्वरूप, उन्होंने समाचार-पत्रों के द्वारा अब तक प्राप्त परिचय से कहीं अधिक उस अल्पायु किन्तु अवतारी पुरुष, भारती जी के समग्र जीवन पर विशद प्रकाश डाला। अपने थके हुए स्वास्थ्य में भी, उन्होंने ११०० पृष्ठों से अधिक प्रस्तुत 'भारती जी' के 'काव्य-संग्रह' के नागरी लिप्यन्तरण और हिन्दी गद्यानुवाद का भार ग्रहण कर लिया और अद्भुत आश्चर्य रहा कि मात्र पाँच मास में ही उन्होंने यह गहन और विशाल कार्य पूरा करके ट्रस्ट को पाण्डुलिपि अर्पित कर दी। नेत्र-विकार से पीड़ित आचार्य शेषाद्रि और डॉ० गजानन साठे ने, जिनका परिचय आगे प्रस्तुत है, एक मास लखनऊ में ही साथ बैठकर पाण्डुलिपि की नजरसानी की। साधन एकत्र हुए; मुद्रण आरंभ हुआ।

सुब्रह्मण्य भारती

प्रो० ति० शेषाद्रि का व्यक्तित्व

इन भगीरथ आचार्य प्रो० ति० शेषाद्रि का जन्म, तमिळनाडु में तेंजाउर ज़िला, तहसील नागपट्टणम् के कोळैयूर ग्राम में १४-६-१९१६ ई० को हुआ। गाँव में कक्षा ५ तक शिक्षा प्राप्त कर, नागपट्टणम् में नेशनल हाई स्कूल सेशन् १९३३ ई० में एस्० एस्० एल्० सी०, पश्चात् प्रशिक्षित (ट्रेण्ड) होकर अध्यापन-कार्य में लगे। कुछ ही समय बाद, राष्ट्र के सौभाग्य से वे राष्ट्र-भाषा की सेवा में लग गये। हिन्दी प्रचार सभा से प्रचारक कोर्स, और निजी तौर पर मद्रास विश्व-विद्यालय से 'हिन्दी-विद्वान' की उपाधि प्राप्त की।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बी० ओ० एल० करने के उपरान्त एम० ए० में निष्णात होकर, अध्यापक एवं प्रधानाध्यापक रहकर शिक्षा, विशेष रूप से राष्ट्रभाषा की शिक्षा एवं प्रचार में रत रहे। सन् १९४७ ई० में मदुरै कालेज में प्राध्यापक एवं आचार्य पद को सुशोभित किया। तदनन्तर १९७६ ई० में सेवा निवृत्त होकर, ६० वर्ष की आयु से पूर्णरूपेण राष्ट्रभाषा के प्रचार हेतु समर्पित हो गये। १९७९-८० में हिन्दी प्रचारक प्रशिक्षण केन्द्र में प्राचार्य, और १९८१ से असेफ़ा प्रशिक्षण केन्द्र में प्रिंसिपल रूप में विद्यमान् रहकर अस्वस्थ हो जाने पर १९८४ में अवकाश ले लिया।

भाषासेतु-चक्रवर्तिन् प्रो० ति० शेषाद्रि

मध्यम परिवार में सघर्षशील जीवन बिताते हुए, आंध्र, केरल तथा मद्रास की परीक्षाओं के परीक्षक, मद्रास विश्वविद्यालय की अकेडेमिक कौंसिल के, महामहिम राज्यपाल द्वारा मनोनीत सदस्य हैं।

गांधीदर्शन के सक्रिय विचारक एवं लेखक, स्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज के परमभक्त एवं उनके कई ग्रंथों के अनुवादक तथा अनगिनत कहानियाँ, पत्र-पत्रिकाओं में लेख —यह सब उनकी आजीवन की दिनचर्या है।

और सर्वोपरि, भुवन वाणी ट्रस्ट से प्रकाशित कम्बरामायण का लगभग ५००० पृष्ठों का अद्वितीय तमिळ ग्रंथ— लेखन, उच्चारण दोनों पद्धतियों पर नागरी लिप्यन्तरण, अन्वय, पदच्छेद और हिन्दी भावानुवाद ही वह भगीरथ-कार्य है, जिसने उनको सदियों के लिए अमर कर दिया। नागरी लिपि-सेतु के माध्यम से विश्ववाङ्मय को विश्व में पठनशील बनाने के महत्त्वपूर्ण योगदान के फलस्वरूप भुवन वाणी ट्रस्ट ने उनको 'भाषासेतु-चक्रवर्तिन्' उपाधि से अलंकृत कर अपने को गौरवान्वित किया है।

सुब्रह्मण्य भारती की अलौकिकता

श्री भारती का परिचय, आचार्य शेषाद्रिजी ने अपनी अनुवादकीय प्रस्तावना में विस्तर के साथ प्रस्तुत किया है। किंतु भारती जी के एक पक्ष को अपने अनुवादकीय में प्रस्तुत करने में उन्होंने कदाचित संकोच किया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

केवल 'राष्ट्रकवि' कहने से भारती जी की अलौकिक छवि उजागर नहीं होती। देश में, और विशेषकर हिन्दी-क्षेत्र में महान् राष्ट्रकवि हुए हैं। उनके द्वारा राष्ट्र के प्रति, भारत के दिव्य अतीत के प्रति, सादा जीवन तथा उच्च विचार के प्रति, स्वतंत्रता के प्रति, अमित उद्गार और उद्बोधन प्राप्त हुआ। परन्तु भारती जी को केवल राष्ट्रकवि कहने से बात अधूरी रह जाती है।

भारती जी न केवल राष्ट्रकवि थे, वरन् राष्ट्रयोद्धा भी थे। न केवल स्वजनों को उद्बुद्ध करते, वरन् वे अपने काव्य में, सब प्रकार से जूझने को कटिबद्ध रहते हुए शत्रु को ललकारते हैं। वे उसको रसातल तक पहुँचा देने पर सदैव उद्यत, उग्र तथा भगवान तिलक के अनन्य अनुयायी थे। उनके दिवंगत होने पर ही उन्होंने गांधी जी के सौम्य अहिंसात्मक नेतृत्व में अपने को किसी प्रकार निबाहा। सब प्रकार से संग्राम में जूझने की प्रेरणा और शत्रु को प्रत्यक्ष ललकार, अन्य राष्ट्रकवियों में कदाचित ही देखने को मिलेगी।

ऋषि बंकिम के 'वन्दे मातरम्' ने समग्र भारत के स्वतंत्रता-मंत्र का स्थान ले लिया। भारती जी ने भी अपने काव्य में उसको यथावत् और अनूदित, दोनों प्रकार से सम्मान दिया है। (देखिए पृष्ठ ९७, ९४)। भारती जी ने अपनी रचनाओं में बंगाल से पंजाब और तमिळ से हिमाद्रि तक अपनी राष्ट्रमाता की छवि एकाकार कर दी है (पृष्ठ ७४-७९)। वे अपनी तमिळ मातृभूमि पर मुग्ध, सकल राष्ट्र पर मुग्ध, विश्व पर मुग्ध, मानव से लेकर पशु-पक्षियों पर मुग्ध, सकल जगदात्मा में आत्मलीन हैं।

अल्बत्ता कविवर निराला में उनका साम्य झलकता है। आत्मविभोर निराला, समाज की प्रत्येक अति पर निर्भीक प्रहार करनेवाले निराला, अकस्मात् अष्टम एडवर्ड द्वारा विशाल साम्राज्य को न्योछावर कर देने की भावुकता पर रीझ उठते हैं। उन पर उनकी रचना, सकल विश्व में उनकी तल्लीनता की द्योतक है। वैसे ही विदेशियों पर सदैव खड्गहस्त 'भारती जी' भी अकस्मात नन्हे से (विलायती प्रदेश) बेल्जियम के शौर्य और बलिदान पर रीझ उठते हैं। उसके पुरुषार्थ का गान कर उठते हैं। देखिए पृष्ठ १९५। इस प्रकार सुप्रसिद्ध राष्ट्रकवियों में सुब्रह्मण्य भारती का स्थान अद्वितीय है।

संकटमोचन

कहावत है कि वह सत्कार्य नहीं जिसमें 'बाधाएँ' न उपस्थित हों, और वह सत्कार्य नहीं जिसकी 'सिद्धि' सुनिश्चित न हो! वही हुआ। शेषाद्रि जी के पुरुषार्थ से इस पुनीत राष्ट्रीय काव्य की पाण्डुलिपि तैयार हुई। पद्यानुवाद ने भी प्रस्तुत होकर निखार पैदा कर दिया। ट्रस्ट के बहुभाषाविद् विद्वानों और देश में अन्यत्र दुर्लभ कुशल शिल्पियों के श्रम से मुद्रण आरंभ हुआ कि कुछ ही समय बाद आचार्य शेषाद्रि सांघातिक रोग पर महीनों के लिए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बी० ओ० एल० करने के उपरान्त एम० ए० में निष्णात होकर, अध्यापक एवं प्रधानाध्यापक रहकर शिक्षा, विशेष रूप से राष्ट्रभाषा की शिक्षा एवं प्रचार में रत रहे। सन् १९४७ ई० में मदुरै कालेज में प्राध्यापक एवं आचार्य पद को सुशोभित किया। तदनन्तर १९७६ ई० में सेवा निवृत्त होकर, ६० वर्ष की आयु से पूर्णरूपेण राष्ट्रभाषा के प्रचार हेतु समर्पित हो गये। १९७९-८० में हिन्दी प्रचारक प्रशिक्षण केन्द्र में प्राचार्य, और १९८१ से असेफ़ा प्रशिक्षण केन्द्र में प्रिंसिपल रूप में विद्यमान् रहकर अस्वस्थ हो जाने पर १९८४ में अवकाश ले लिया।

भाषासेतु-चक्रवर्तिन् प्रो० ति० शेषाद्रि

मध्यम परिवार में सघर्षशील जीवन बिताते हुए, आंध्र, केरल तथा मद्रास की परीक्षाओं के परीक्षक, मद्रास विश्वविद्यालय की अकेडेमिक कौंसिल के, महामहिम राज्यपाल द्वारा मनोनीत सदस्य हैं।

गांधीदर्शन के सक्रिय विचारक एवं लेखक, स्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज के परमभक्त एवं उनके कई ग्रंथों के अनुवादक तथा अनगिनत कहानियाँ, पत्र-पत्रिकाओं में लेख —यह सब उनकी आजीवन की दिनचर्या है।

और सर्वोपरि, भुवन वाणी ट्रस्ट से प्रकाशित कम्बरामायण का लगभग ५००० पृष्ठों का अद्वितीय तमिळ ग्रंथ— लेखन, उच्चारण दोनों पद्धतियों पर नागरी लिप्यन्तरण, अन्वय, पदच्छेद और हिन्दी भावानुवाद ही वह भगीरथ-कार्य है, जिसने उनको सदियों के लिए अमर कर दिया। नागरी लिपि-सेतु के माध्यम से विश्ववाङ्मय को विश्व में पठनशील बनाने के महत्त्वपूर्ण योगदान के फलस्वरूप भुवन वाणी ट्रस्ट ने उनको 'भाषासेतु-चक्रवर्तिन्' उपाधि से अलंकृत कर अपने को गौरवान्वित किया है।

सुब्रह्मण्य भारती की अलौकिकता

श्री भारती का परिचय, आचार्य शेषाद्रिजी ने अपनी अनुवादकीय प्रस्तावना में विस्तर के साथ प्रस्तुत किया है। किंतु भारती जी के एक पक्ष को अपने अनुवादकीय में प्रस्तुत करने में उन्होंने कदाचित संकोच किया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

केवल 'राष्ट्रकवि' कहने से भारती जी की अलौकिक छवि उजागर नहीं होती। देश में, और विशेषकर हिन्दी-क्षेत्र में महान् राष्ट्रकवि हुए हैं। उनके द्वारा राष्ट्र के प्रति, भारत के दिव्य अतीत के प्रति, सादा जीवन तथा उच्च विचार के प्रति, स्वतंत्रता के प्रति, अमित उद्गार और उद्बोधन प्राप्त हुआ। परन्तु भारती जी को केवल राष्ट्रकवि कहने से बात अधूरी रह जाती है।

भारती जी न केवल राष्ट्रकवि थे, वरन् राष्ट्रयोद्धा भी थे। न केवल स्वजनों को उद्बुद्ध करते, वरन् वे अपने काव्य में, सब प्रकार से जूझने को कटिबद्ध रहते हुए शत्रु को ललकारते हैं। वे उसको रसातल तक पहुँचा देने पर सदैव उद्यत, उग्र तथा भगवान तिलक के अनन्य अनुयायी थे। उनके दिवंगत होने पर ही उन्होंने गांधी जी के सौम्य अहिंसात्मक नेतृत्व में अपने को किसी प्रकार निबाहा। सब प्रकार से संग्राम में जूझने की प्रेरणा और शत्रु को प्रत्यक्ष ललकार, अन्य राष्ट्रकवियों में कदाचित ही देखने को मिलेगी।

ऋषि बंकिम के 'बन्दे मातरम्' ने समग्र भारत के स्वतंत्रता-मंत्र का स्थान ले लिया। भारती जी ने भी अपने काव्य में उसको यथावत् और अनूदित, दोनों प्रकार से सम्मान दिया है। (देखिए पृष्ठ ९७, ९४)। भारती जी ने अपनी रचनाओं में बंगाल से पंजाब और तमिळ से हिमाद्रि तक अपनी राष्ट्रमाता की छबि एकाकार कर दी है (पृष्ठ ७४-७९)। वे अपनी तमिळ मातृभूमि पर मुग्ध, सकल राष्ट्र पर मुग्ध, विश्व पर मुग्ध, मानव से लेकर पशु-पक्षियों पर मुग्ध, सकल जगदात्मा में आत्मलीन हैं।

अल्बत्ता कविवर निराला में उनका साम्य झलकता है। आत्मविभोर निराला, समाज की प्रत्येक अति पर निर्भीक प्रहार करनेवाले निराला, अकस्मात् अष्टम एडवर्ड द्वारा विशाल साम्राज्य को न्योछावर कर देने की भावुकता पर रीझ उठते हैं। उन पर उनकी रचना, सकल विश्व में उनकी तल्लीनता की द्योतक है। वैसे ही विदेशियों पर सदैव खड्गहस्त 'भारती जी' भी अकस्मात नन्हे से (विलायती प्रदेश) बेल्जियम के शौर्य और बलिदान पर रीझ उठते हैं। उसके पुरुषार्थ का गान कर उठते हैं। देखिए पृष्ठ १९५। इस प्रकार सुप्रसिद्ध राष्ट्रकवियों में सुब्रह्मण्य भारती का स्थान अद्वितीय है।

संकटमोचन

कहावत है कि वह सत्कार्य नहीं जिसमें 'बाधाएँ' न उपस्थित हों, और वह सत्कार्य नहीं जिसकी 'सिद्धि' सुनिश्चित न हो! वही हुआ। शेषाद्रि जी के पुरुषार्थ से इस पुनीत राष्ट्रीय काव्य की पाण्डुलिपि तैयार हुई। पद्यानुवाद ने भी प्रस्तुत होकर निखार पैदा कर दिया। ट्रस्ट के बहुभाषाविद् विद्वानों और देश में अन्यत्र दुर्लभ कुशल शिल्पियों के श्रम से मुद्रण आरंभ हुआ कि कुछ ही समय बाद आचार्य शेषाद्रि सांघातिक तौर पर महीनों के लिए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बीमार पड़ गये। बीमारी ने इतना उग्र रूप धारण किया कि उनके जीवन में संशय उत्पन्न हो गया। मुद्रण में प्रूफ़-संशोधन रुक गया; कार्य ठप्। कार्य असामान्य, हर किसी विद्वान के वश का नहीं। किंतु हमसे अधिक व्याकुल थे हमारे अनन्य सहयोगी डॉ० साठे। उन्होंने अविलंब तलाश की और श्री शौरिराजन् जैसे तमिळ एवं हिन्दी के मँजे हुए विद्वान की सहायता उपलब्ध कर ली। कार्य तो सुचारु रूप से पुनः चलने लगा। किंतु चिन्ता रही कि शेषाद्रि जी कैसे असाध्य जैसे रोग से मुक्त होकर अपने श्रम का अवलोकन करें? ट्रस्ट अपने वरिष्ठ सहयोगी को, अपनी वार्षिक बठक में सदैव की भाँति, उनकी सहज हँसमुख मुद्रा में आसीन कैसे अवलोकन करे!

ट्रस्ट की निष्ठा, भगवान की कृपा और शेषाद्रि जी के गुरुमहान् अनन्तश्री-विभूषित चिन्मय स्वामी के आशीर्वाद से, वे स्वस्थ होने लगे। उन्होंने ८४-८५ को वार्षिक बैठक में लखनऊ आने के साहस को भी सूचना दी है। ग्रंथ भी सम्पूर्ण होने को है। यों विघ्न निवारण हुआ, सिद्धि प्राप्त हुई।

डॉ० गजानन नरसिंह साठे

डॉ० गजानन नरसिंह साठे का जन्म ग्राम नांदिवडे जिला रत्नागिरि में एक महाराष्ट्र ब्राह्मण परिवार में १ फ़रवरी, १९२२ ई० को हुआ। उनके पिता पुण्यवान् भारतीय प्रवर श्री नरसिंह विष्णु साठे लगभग शतायु की पूर्णायु पाकर दिवंगत हुए। अध्यापन कार्य से अवकाश पाने के बाद वे आजीवन निःशुल्क बालकों को विद्या-दान देते हुए आदर्श ब्राह्मण-जीवन का निर्वाह करते रहे।

भाषासेतु-चक्रवर्तिन् डॉ० गजानन नरसिंह साठे

डॉ० गजानन साठे ने बंबई विश्वविद्यालय से मराठी-अंग्रेजी एवं हिन्दू वि० वि० वाराणसी से हिन्दी में एम०ए०, बंबई वि० वि० से बी० टी०, बंबई वि० वि० से हिन्दी में पीएच्० डी० की उपाधियाँ प्राप्त कीं। शोध-विषय था "स्वयम्भु कृत 'पउमचरिउ' और तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' का तुलनात्मक अध्ययन"। हिन्दुस्तानी शिक्षक सनद, साहित्य विशारद (मराठी) साहित्यरत्न (प्र० स० स०) से भी डॉ० साठे समलङ्कृत हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्राइमरी पाठशाला के अध्यापक से उनकी जीविका आरम्भ हुई। ११ वर्ष कई हाई स्कूलों में अध्यापन के पश्चात् २७ वर्ष रा० आ० पोद्दार कालेज, माटुंगा (बम्बई) में हिन्दी विभागाध्यक्ष और आगे चलकर जूनियर कालेज विभाग के प्रमुख आचार्य पद पर आसीन रहे। स्नातकोत्तर कक्षा (एम० ए०) में भी अध्यापन का गौरव उन्हें प्राप्त हुआ। अब वे वहाँ से रिटायर हो चुके हैं। श्री साठे अनेक शिक्षक संस्थाओं, शासन की शब्दावली समिति तथा महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा आदि के सदस्य मनोनीत हुए। मराठी स्वयंशिक्षक का सम्पादन एवं लेखन के अतिरिक्त अनेक संस्थाओं से सम्बन्धित रहकर आजीवन राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार में रत हैं।

और भुवन वाणी ट्रस्ट के तो लगभग १२ वर्षों से दाहिने हाथ हैं। मराठी रामविजय एवं हरिविजय, गुजराती गिरधर रामायण और प्रेमानन्द रसामृत जैसे विशाल ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद और यथावश्यक नागरी लिप्यन्तरण किया। सम्प्रति, संत एकनाथ के भावार्थ रामायण का अनुवाद कर रहे हैं। भुवन वाणी ट्रस्ट की विद्वत्-परिषद् के वरिष्ठ सदस्य और ट्रस्ट के आजीवन न्यासी हैं। भाषाई सेतुबन्ध के लिए जो महत् कार्य स्वयं उन्होंने किये हैं, उनके अतिरिक्त ट्रस्ट के लिए विविध भाषाओं के विद्वानों को खोज निकालना, पत्राचार, परामर्श में सदैव तत्पर एवं रत रहना, और कालेज से अवकाश प्राप्त होने के बाद अब तो वे ट्रस्ट के प्रकाशनों के प्रसार और वितरण में भी संलग्न हैं। तात्पर्य यह कि वह अहर्निश राष्ट्रभाषा की सेवा में ही लगे हैं। उन्होंने अपनी पूँजी से दुर्लभ एवं सुलभ महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का एक निजी संग्रहालय भी तैयार कर लिया है।

भारती जी के प्रस्तुत काव्यग्रन्थ के मुद्रण के बीच, अकस्मात् श्री शेषाद्रि के बीमार पड़ जाने पर उन्होंने श्री शौरिराजन को सुलभ किया और उनके साथ स्वयं भी रात-दिन लगकर 'भारदियार् कविदैहळ्' के प्रूफ़-संशोधन का कार्य नियत समय पर ही पूर्ण कर दिया।

ट्रस्ट ने उनके भाषाई-सेतुबन्ध के अमित योगदान के सम्मान में उनको 'भाषासेतु-चक्रवर्तिन्' की उपाधि से समलंकृत कर इसी वर्ष अपने को गौरवान्वित किया है। भगवान् उनको स्वस्थ और सुखी दीर्घायु प्रदान करें।

श्री आर० शौरिराजन्

सृष्टि-उदय पर, सदा व्योम में, जगते यथा वेद के मंत्र !
'विश्वनागरी' से उगते त्यों सुवन-सरस्वति स्वतः स्वतंत्र !

डॉ० गजानन साठे के यत्न से 'भारदियार् कविदैहळ्' के इस अनूठे संस्करण के प्रूफ़ों के संशोधन कार्य में सौभाग्य से हमें श्री आर० शौरिराजन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

का विशेष रूप से सहयोग प्राप्त हुआ। श्री शौरिराजन् (जन्म ई० १९१९, कुम्भकोणम्— तमिळनाडु) ने श्रीरंगम् और तिरुच्चिरापल्लि में शिक्षा प्राप्त की और बी० एस्० सी० (ऑनर्स) करने के पश्चात् मद्रास विश्वविद्यालय से एम्० ए० उपाधि पायी। १९४२ से १९७८ तक उन्होंने भारत सरकार के डिफ़ेंस अकौण्टस् डिपार्टमेण्ट में काम करके 'अकौण्टस् ऑफ़िसर' के पद से अवकाश ग्रहण किया। अब वे सपरिवार पूना (महाराष्ट्र) में बस गये हैं। श्री शौरिराजन् की मातृभाषा तमिळ है; वे अंग्रेज़ी, संस्कृत, हिन्दी, मराठी के अच्छे ज्ञाता हैं। उन्होंने सन्त ज्ञानेश्वरकृत (मराठी) ज्ञानेश्वरी के तृतीय अध्याय का तमिळ में उत्तम गद्यानुवाद किया है। वे पूना के 'श्रीरामानुजम् सिद्धान्त सभा' के न्यासी तथा कोषाध्यक्ष हैं। वे शौक से कम्ब रामायण, भगवद्गीता और कवि भारती पर 'प्रवचन' दिया करते हैं। श्री शौरिराजन् मानते हैं कि उन्होंने 'भारती' के माध्यम से ही अच्छी तमिळ आत्मसात् की है। वे अपने सर्वाधिक प्रिय कवि 'भारती' की रचनाओं के (श्री शेषाद्रि द्वारा अनूदित तथा भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ द्वारा प्रकाशित) इस अनूठे संस्करण के कार्य में हाथ बँटाने में अपने आपको सौभाग्यशाली मानते हैं। हम डॉ० साठे और श्री शौरिराजन् के, इस महत्त्वपूर्ण कार्य में योगदान से अतिशय अनुग्रहीत हैं।

श्री आर० शौरिराजन्

पद्यानुवाद

श्री शेषाद्रि से तमिळ का नागरी लिप्यन्तरण एवं हिन्दी गद्यानुवाद प्राप्त होने पर उसको पढ़ा, तो उसका हिन्दी पद्यानुवाद भी अनिवार्य प्रतीत हुआ। सूरमा राष्ट्रकवि के उद्गार यदि उसी ओज में गाये न जा सके तो गद्यानुवाद से मात्र अर्थ समझ लेने से क्या ? यह कैसे हो ? मेरी ७८ वर्ष की आयु पूरी हो रही है। स्वास्थ्य ठीक नहीं है। ट्रस्ट के अहर्निश काम से फ़ुर्सत नहीं। फिर इतनी क्षमता भी नहीं। जैसे-तैसे लगे तो वर्षों चाहिए। ट्रस्ट की अबाध तीव्र गति में विलंब की गुंजाइश नहीं। इस चिंता में झूल रहे थे कि भगवत्कृपा से श्री रमेश शास्त्री जी ट्रस्ट कार्यालय में प्रकट हो गये। निवास तो उनका हमारे समीप ही है, परंतु भेंट का सुअवसर वर्षों नहीं आता। वे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

संस्कृत, वैदिक संस्कृत और हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान हैं। केवल साहित्य ही नहीं, इतिहास-पुराण, कर्मकाण्ड, यज्ञ-यागादि, इस प्रकार वे बहुमुखी प्रतिभाशाली हैं। मेधा इतनी तीव्र है कि स्थल-स्थल के अपरिमित विषय उनको कण्ठाग्र हैं। डी० ए० वी० कालेज में प्रशिक्षण, समुन्नत काल के दैनिक 'नवजीवन', आकाशवाणी आदि में वे कार्यरत रहे।

आचार्य श्री रामेश्वर प्रसाद पाण्डेय शास्त्री 'रमेश'

आचार्य श्री रमेश शास्त्री ने भारती जी के 'भारदियार कविदैहळ्' के हिन्दी गद्यानुवाद के आधार पर, बड़ा ओजस्वी पद्यानुवाद कुछेक मास में ही तैयार कर दिया। ग्रंथ में प्राण आ गये। हम उनके अतिशय कृतज्ञ हैं।

आभार-प्रदर्शन

सदाशय श्रीमानों और उत्तरप्रदेश शासन (राष्ट्रीय एकीकरण विभाग) के प्रति हम आभारी हैं, जिनकी अनवरत सहायता से 'भाषाई सेतुकरण' के अन्तर्गत अनेक ग्रन्थों का प्रकाशन चलता रहता है।

सौभाग्य की बात है कि भारत सरकार के राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) तथा शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय ने राष्ट्रभाषा हिन्दी-सहित सभी भाषाओं की समृद्धि और व्यापकता के लिए एक जोड़लिपि "नागरी" के प्रसार पर उपयुक्त बल दिया। उनकी उल्लेखनीय सहायता से हमको विशेष बल मिला है और उसी के फलस्वरूप तमिळ के लोकप्रख्यात राष्ट्रकवि एवं राष्ट्रयोद्धा श्री सुब्रह्मण्य 'भारती' के अनुपम काव्य-संग्रह 'भारदियार कविदैहळ्' को इतना शीघ्र प्रकाशित करने में हम समर्थ हुए हैं। प्रतिदान में हम आश्वासन देते हैं कि नागरी लिपि और राष्ट्रभाषा के माध्यम से विश्व की भाषाओं का सेतुकरण, विश्वमञ्च पर नागरी लिपि का प्रस्थापन, राष्ट्रभाषा का भण्डार भरने और सभी भारतीय भाषाओं को सारे राष्ट्र में प्रसारित करने में उत्तरोत्तर हम अपने कर्तव्य का पालन करते रहेंगे। आशा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

है कि सम्पूर्ण जगत् हमारे इस उपक्रम को "गिलहरी का सेतुबन्धन" मानकर सहकार और अनुग्रह प्रदान करता रहेगा।

ग्रन्थार्पण

विविध भाषाई ग्रन्थों के हिन्दी अनुवाद-सहित नागरी लिप्यन्तरण द्वारा देश तथा विदेश में भाषाई सेतुकरण में, तमिळ भाषा का (१) 'तिरुक्कुऱळ्' पृष्ठ ३५२ और (२) 'कम्ब रामायण' पांच खण्ड पृष्ठ ४५४८ के प्रकाशन के बाद (३) पीरपुंगव राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्य भारती का काव्य-संग्रह 'भारदियार कविदैहळ्' पृष्ठ ११०८ —यह तीसरा ग्रन्थरत्न है। इसमें विशेषता यह है कि नागरी लिप्यन्तरण और हिन्दी गद्यानुवाद के साथ अति ओजस्वी पद्यानुवाद भी प्रस्तुत किया गया है। देश में सन् ८२-८३ के शोर-शराबे के बाद सन्नाटा छा जाने पर ट्रस्ट ने इस दुष्कर किन्तु अति पुष्कल कार्य को साकार किया है। हम नागरी लिप्यन्तरण के मंत्रद्रष्टा न्यायमूर्ति शारदाचरण मित्र और भारत के तमिळ क्षेत्रीय राष्ट्रयोद्धा एवं राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्य भारती की पुण्यस्मृति में यह अद्भुत ग्रन्थ भारतीय जनता को अर्पण कर रहे हैं।

नन्दकुमार अवस्थी

विश्ववाङ्मय से निःसृत अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी पट, सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥
अमर भारती सलिल-मञ्जु की "तमिळ" सुपावन धारा।
की नागरी-सुमण्डित छवि से अब जगमग जग सारा॥

नन्दकुमार अवस्थी
प्रतिष्ठाता, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सुब्रह्मण्य भारती

व्यक्ति, व्यक्तित्व और कृतित्व

सुब्रह्मण्य भारती का जन्म तमिळनाडु के तिरुनेलवेली जनपद के एट्टयपुरम् नामक कस्बे में ११ दिसम्बर, १८८२ ई० को हुआ। उनके पिता श्री चिन्नस्वामी अय्यर अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व के फलस्वरूप (तत्कालीन) एट्टयपुरम् रियासत के स्वामी तथा उनकी राज-सभा के सदस्यों द्वारा समादृत थे। उनकी प्रथम पत्नी लक्ष्मी अम्माल से जन्मे सुब्रह्मण्य इकलौती सन्तान थे। श्री चिन्नस्वामी तमिळ और अंग्रेजी के प्रकाण्ड पण्डित थे। उन्हें विज्ञान तथा कल-कारखाने की स्थापना और संचालन में विशेष रुचि थी। उन्होंने एक कारखाने की स्थापना भी की; परन्तु विदेशियों के षड्यंत्र से उनकी समस्त आशाओं पर पानी फिर गया और वे अकिंचन हो गये। दुर्भाग्य से सुब्रह्मण्य की माता का सन् १८८७ ई० में देहावसान हुआ। श्री चिन्नस्वामी ने १८९५ में अपने १३ वर्षीय पुत्र सुब्रह्मण्य का विवाह,कडयम् के निवासी श्री चेल्लम् अय्यर की सप्तवर्षीया पुत्री चेल्लम्माळ से कराकर उन्हें घर-गृहस्थी के पाश में आबद्ध कर दिया। तदनन्तर वे उन्हें निर्धन अवस्था में छोड़कर १८९८ ई० में स्वर्ग सिधारे। कहते हैं— किशोरावस्था में ही अपने असाधारण कवित्व का परिचय देकर सुब्रह्मण्य ने एट्टयपुरम् रियासत की राज-सभा के कवियों को बहुत प्रभावित किया और उन लोगों द्वारा वे 'भारती' उपाधि से विभूषित कराये गये। एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार, सुब्रह्मण्य को विवाह के अवसर पर 'भारती' उपाधि प्राप्त हुई।

सुब्रह्मण्य १८९४ में तिरुनेलवेली के हिन्दू हाई स्कूल में भर्ती होकर पाश्चात्य परिपाटी की शिक्षा ग्रहण करने लगे। जिस प्रकार, वे अपने पिता के निर्णय के पाबन्द होकर बाल-विवाह-प्रथा के 'शिकार' हुए, उसी प्रकार, अंग्रेजी शिक्षा के प्रति अरुचि होने पर भी उन्हें अपने पिता के आदेश के अनुसार अंग्रेजी शिक्षा पाने के लिए जाना पड़ा। लेकिन उनका मन उसमें नहीं रमा। उस पाठशाला में सुब्रह्मण्य भारती नौवें दर्जे तक ही पढ़ सके। फिर भी उन्होंने अपनी छात्रावस्था में ही अपने तमिळ भाषा-ज्ञान तथा काव्य-कौशल से अपने सहपाठियों और अध्यापकों को मंत्र-मुग्ध कर दिया था। पिताजी के देहान्त के पश्चात् सुब्रह्मण्य भारती अपनी पत्नी को उसके मायके में छोड़कर वाराणसी चले गये। उन्होंने वहाँ अपनी बुआ के आश्रय में रहकर हिन्दी और संस्कृत की अच्छी शिक्षा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पायी। वहीं उन्होंने १९०३ ई० में एण्ट्रेन्स की परीक्षा उत्तीर्ण की। सुब्रह्मण्य की (कदाचित् गँवारू) वेशभूषा और विचार-धारा के प्रति उनके फूफाजी नित्य अप्रसन्न रहते थे। अतः उन्होंने काशी से एट्टयपुरम् लौटकर अपने पैरों पर खड़ा होने का यत्न किया। परन्तु रियासत का वातावरण युवा सुब्रह्मण्य भारती के लिए अनुकूल नहीं सिद्ध हुआ। इसलिए वे मदुरै चले गये।

भारती ने मदुरै के सेतुपति हाई स्कूल में १९०४ (२२ वर्ष की आयु) में कुछ महीने अध्यापन का काम किया। तदनन्तर वे मद्रास गये, जहाँ (तमिळ) दैनिक 'स्वदेश-मित्रन्' के सह-सम्पादक पद पर नियुक्त होकर पत्रकार बन गये। १९०७ ई० में 'स्वदेश-मित्रन्' के उत्तरदायित्व को सम्हालते हुए उन्होंने 'इण्डिया' नामक तमिळ तथा 'बाल भारत' नामक अंग्रेजी साप्ताहिक पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू किया। तत्कालीन अंग्रेज़ सरकार की अवकृपा से उन्हें मद्रास छोड़कर शीघ्र ही पाण्डिचेरी का आश्रय लेना पड़ा, जहाँ वे १९२० तक रहे। इस 'अज्ञात-वास' से बाहर आकर वे १९२१ में मद्रास गये। एक दिन, एक हाथी के द्वारा पैरों के बीच डाले जाकर, उसके द्वारा कुचले जाते-जाते वे बाल-बाल बच गये। परन्तु तदनन्तर, सुब्रह्मण्य भारती की इहलीला ११ सितम्बर, १९२१ ई० को समाप्त हो गई। ये सकल पारिवारिक, शैक्षिक, आर्थिक परिस्थितियाँ, यह अद्भुत प्रतिभा और ४० वर्ष की आयु में काल द्वारा ग्रास !

सुब्रह्मण्य भारती की पत्नी उनके काशी-प्रवास-काल में अपने मायके में रही। उसके पश्चात वे सपरिवार मदुरै, मद्रास और पाण्डिचेरी में रहते थे। इन दिनों आर्थिक दुरवस्था के कारण सबको बहुत कष्ट झेलने पड़े।

सुब्रह्मण्य भारती के जीवन-काल की राजनैतिक परिस्थितियों का यहाँ पर सविस्तार उल्लेख करने की कोई आवश्यकता नहीं है। जान पड़ता है, विदेशी शासन की कुटिल नीति के प्रति एक प्रकार की घृणा उनके मन में बचपन से ही घर किये बैठी रही। पिता श्री चिन्नस्वामी के कारखाने के प्रति उस शासन के दृष्टिकोण ने उसे जगा दिया हो। वे हूण (अंग्रेजी) शिक्षा के भी घोर विरोधी हो गये। उन्हें अनुभव हुआ कि एक सहस्र रुपये खर्च करके पिता द्वारा अंग्रेज़ी शिक्षा के दिये जाने के यत्न के फल-स्वरूप उन्हें (भारती को) अनेक सहस्र बुराइयाँ मिलीं। वाराणसी में रहते समय उनके मन में देश-प्रेम विकसित होने लगा। उन्हें राजनीति में रुचि अनुभव हुई। वे कलकत्ता कांग्रेस (१९०६) में उपस्थित थे। वे लोकमान्य तिलक के परमभक्त तथा उग्रदल के पक्षपाती थे। उन दिनों उनकी भेंट भगिनी दिवेदिता से हुई; गांधीजी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

से भी साक्षात्कार हुआ। वे सूरत कांग्रेस में भी उपस्थित थे, जहाँ उन्होंने अपने इष्टदेव लोकमान्य तिलक के दर्शन किये। वहाँ से लौटने पर अंग्रेज़-शासन के कोप-भाजन बने रहे। सरकार उन्हें गिरफ्तार करने की ताक में थी; पर वे भागकर पाण्डिचेरी में गये और वहीं रहे। वहाँ भी उन्हें काफ़ी कष्ट झेलने पड़े। वहाँ से जब वे मद्रास लौटे, तो एक दिन सरकार ने उन्हें कडलूर में गिरफ़्तार किया; लेकिन श्री रंगस्वामी अय्यंगार के यत्न के फल-स्वरूप सरकार ने उन्हें रिहा कर दिया।

सुब्रह्मण्य भारती प्रतिभा-सम्पन्न कवि थे। सरस्वती के लाड़ले सुपुत्र तथा कविता के अनन्य प्रेमी कवि भारती, शायद जन्म से ही 'विद्रोही' प्रकृति के देश-प्रेमी कवि थे। परिस्थितियों से वे साहस के साथ लड़ते रहे। उन्होंने अपनी वाणी रूपी कराल तलवार से समाज की कुप्रथाओं पर, व्यक्ति की स्वयं को प्रतिष्ठाहीन बनाने वाली कमज़ोरियों पर कठोर आघात किया। वे जहाँ एक ओर मातृभाषा (तमिळ) तथा तमिळनाडु के अभिमानी थे, वहीं भारत देश, भारतीय संस्कृति के भी अनन्य भक्त थे। उनके उदार राष्ट्रीय दृष्टिकोण ने ही उन्हें सिर्फ़ तमिळनाडु का कवि रहने नहीं दिया— उसने उन्हें राष्ट्रीय कवि के पद पर विराजमान करा दिया। कवि भारती सब तरह से अनोखे थे— वेश-भूषा में, आचार-विचार में, भावों की अभिव्यक्ति की शैली में भी। एकान्त वास, गम्भीर चिन्तन, भाषा-प्रेम आदि गुण उनमें कूट-कूटकर भरे थे। सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्र में भारती क्रान्तिकारी कवि थे। परिस्थितियों के आघातों को झेलते रहते हुए भी वे बराबर आशावादी बने रहे। मेरे मत में उनका आशावाद उनकी शक्ति-उपासना से उद्भूत था।

सुब्रह्मण्य भारती की कविताओं का वर्ण्य विषयों के आधार पर नीचे लिखे अनुसार वर्गीकरण किया जा सकता है:—

१— देश-प्रेम, देश-भक्ति और राष्ट्र के अतीत एवं वर्तमान के महापुरुषों के गीत
२— ईश्वर-प्रेम सम्बन्धी गीत।
३— प्रकृति-प्रेम सम्बन्धी गीत।
४— प्रेम सम्बन्धी गीत।
५— विविध गीत।

भारती की लगभग सभी कविताएँ 'भारदियार् कविदैहळ्' नामक बृहदाकार संग्रह में संकलित हैं। फिर भी समय-समय पर उनकी कविताओं के छोटे-बड़े अनेक संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। कविता के अतिरिक्त उन्होंने अनेक लेख और कहानियाँ भी लिखी हैं। उन्होंने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रीमद्भगवद्गीता का तमिळ में बढ़िया अनुवाद भी किया है। दुर्दम्य देश-प्रेम से ही भारती की देश-प्रेम-सम्बन्धी कविता निःसृत है। भारत का गौरवमय अतीत और दयनीय वर्तमान, उसके उज्ज्वल भविष्य के प्रति दृढ़ विश्वास; शिवाजी, राणा प्रताप, गुरु गोविन्दसिंह, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों का उत्तुंग व्यक्तित्व आदि सम्बन्धी अपनी भाव-धारा को भारती ने वाणी के माध्यम से प्रवाहित कराते हुए जन-मानस को सरस बनाकर उसमें देश-प्रेम को अंकुरित-पल्लवित करने का भरसक प्रयास किया। तमिळ भाषा और तमिळनाडु के प्रति अभिमान रखते हुए भी उन्होंने भारत-भूमि को ही आराध्य माना। भारत-निष्ठ होने पर भी उन्होंने अपने देश-प्रेम को संकुचित होने नहीं दिया; मानवीय मूल्यों को नहीं भुला दिया। देश-प्रेम, ज्ञानार्जन तथा उद्योग को उन्होंने व्यक्ति और देश के उद्धार का मार्ग बताया है। इस दृष्टि से प्रस्तुत संकलन के "देशीय गीदङ्गळ (राष्ट्रीय गीत)" नामक प्रभाग को देखिए।

भारती की महत्त्वपूर्ण नाट्यात्मक रचना 'पांचाली-शबदम् (पांचाली-शपथ)' को देश-प्रेम से ही प्रेरित समझना चाहिए। पाँच खण्डों में विभक्त इस कृति में कवि का अपना दृष्टिकोण अभिव्यक्त है। कहना न होगा कि वह रचना रूपकात्मक जान पड़ती है और ध्वनित हो रहा कि द्रौपदी भारतमाता है, दुर्योधन अत्याचारी शासक है, भीष्म नर्म दल के प्रतितिधि हैं।

भारती को प्रेम का कवि कहा जा सकता है। उस प्रेम के प्रमुख अंग हैं— देश-प्रेम, ईश-प्रेम, प्रकृति-प्रेम और सांसारिक-प्रेम। इन सबको चित्रित करते हुए उनकी लेखनी खूब चली है। उनका 'शक्ति-प्रेम' ही समस्त रचनाओं के मूल में अनुस्यूत रहा है— वही सबका प्राण है। शक्ति वा ईश-प्रेम ने उन्हें चर-अचर, छोटे-बड़े —सबके साथ एकात्मता वा अद्वैत के धागे में आबद्ध करके रखा है। वे ईश-प्रेमी हैं, भक्त हैं, फिर भी इस क्षेत्र में वे अन्धे, दकियानूसी नहीं हैं। ईश्वर-प्रेम-सम्बन्धी कविताओं में उनकी दार्शनिक विचार-धारा स्पष्ट रूप से प्रवहमान दिखायी देती है। इस वर्ग में आती है उनकी एक अनूठी रचना— 'कण्णन पाट्टु'। आळ्वार भक्तों ने कृष्ण को स्वामी, पति, प्रेमी, प्रेमिका, पुत्र-पुत्री, गुरु जैसे रूपों में देखा है, जब कि भारती ने दो क़दम आगे बढ़कर इनके अतिरिक्त 'कण्णन्' को सेवक और शिष्य-रूप में भी देखा है। जान पड़ता है, भारती सिद्धभक्त थे।

भारती का प्रकृति-प्रेम स्थान-स्थान पर प्रकट हुआ है। वे प्रकृति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

को सजीव मानते थे; आनन्द का अक्षय स्रोत मानते थे। उन्हें 'प्रकृति-पालित' कवि कहना अनुचित नहीं होगा।

नीति, सदाचार, कर्तव्य-निष्ठा आदि सम्बन्धी उपदेशात्मक उक्तियाँ भारती की कविताओं में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। अवसर मिलने पर वे मनुष्य की हीनता को प्राप्त करानेवाली कमज़ोरियों पर कठोर कुठाराघात करने से नहीं चूकते। स्वयं ब्राह्मण होने पर भी उन्होंने ब्राह्मणों में पायी जानेवाली स्वार्थ-परायण संकीर्णता की निन्दा की है। स्त्रियों की दुरवस्था पर शोक प्रकट करते हुए उनकी स्वतंत्रता तथा उद्धार के वे समर्थक थे। उनकी आत्मकथनात्मक रचना का भी उनकी रचनाओं में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

भारती की कविताएँ गेय हैं। उन्होंने स्वयं अपनी कविताओं के साथ राग, ताल, तर्ज आदि के स्पष्ट संकेत दिये हैं। उनकी भाषा यथा-स्थान ओज, माधुर्य गुणों से युक्त है, सरल है। वह मँजी हुई तमिळ है। रचना-प्रयोग की दृष्टि से उनके 'कवि-वचन' द्रष्टव्य हैं। शैली और भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से उनकी प्रदीर्घ रचनाएँ 'कुयिल' और 'पांचाली-शबदम्' तमिळ भाषा को प्रदत्त उनकी अनुपम देन है।

सुब्रह्मण्य भारती को 'वर-कवि' कहा जाता था —इसलिए कि लोगों की यह धारणा थी कि वे ईश्वरीय वरदान से कविता की रचना करते थे। कवि जन-मानस को कुसुम-कोमल स्पर्श से जगाता है, उसमें सुसंस्कारों के बीच बोता है। वह समाज का अग्रगामी होता है। भारती इस दृष्टि से लोकोत्तर कवि थे। वे 'सिद्ध कवि' थे, इसमें मतभेद की कोई गुंजाइश नहीं है।

मुप्पदु कोडि मुहमुडै याळ् उयिर, मॉय्मबुर् बॉन्रुडैयाळ्— इबळ्।
शॅप्पु मॉळि पदि नॅट्टुडैयाळ् ऍनिर्, चिन्दनै ऑन्रुडै याळ्॥

(—ऍङ्गळ् ताय्, पृ० ६२)

तीस कोटि मुख, प्राण एक है, अट्ठारह भाषाएँ हैं।
सबके किन्तु विचार एक हैं, ऐसी है मेरी माता॥

(—मेरी माता पृ० ६३ : उस समय भारत की आबादी तीस करोड़ थी।)

—ऐसा कहनेवाले तमिळनाडु के तमिळभाषी कवि भारती सच्चे अर्थों में समस्त भारत के राष्ट्रीय कवि हैं।

अब रहा मेरा अपनी कृतज्ञता प्रगट करने का कर्तव्य। सबसे पहले जो सामने आते हैं, वे हैं डॉक्टर श्री गजानन नरसिंह साठे जी तथा श्री शौरिराजन जी। जब उनके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता को लेखबद्ध

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करने लगता हूँ; तब भगवान की लीला तथा उनकी कृपा का ज़बरदस्त स्मरण हो आता है। जब भगवान की बात सोचता हूँ, तब श्री नंदकुमार अवस्थी जी का ख्याल उठ आता है।

जब सन् १९८३ के अंत में पांडुलिपि को एक बार देख लेने की बात उठी, तब न जाने श्री अवस्थी को क्यों सूझा कि साठे जी को भी बुला लूँ। उनकी इच्छा को शिरोधार्य करके मैं और श्री साठे जी दोनों ने पांडुलिपि का लखनऊ में रह कर अवलोकन किया। इससे दो लाभ हुए; एक साठे जी की विद्वत्ता तथा भाषा-ज्ञान का मैंने खूब लाभ उठाया। दूसरा जो लाभ हुआ वही विशेष है तथा अतिशय रूप से अप्रत्याशित तथा अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ। मैं सख्त बीमार पड़ गया तथा प्रूफ़ देखने का काम मेरे द्वारा हो ही नहीं सका। सारा भार साठे जी पर पड़ा! साठे जी को एक मित्र मिल गये, जो तमिळनाडु के ही हैं पर पूना बस गये हैं। उनका तमिळ भाषा तथा साहित्य का ज्ञान काफ़ी ऊँचा है। उनके इस काम में लग जाने के बाद ही मुझे पता लगा कि वे मेरे रिश्तेदार भी हैं। अब कहिए— श्री अवस्थी की दूरदर्शिता की सराहना की जाय? या साठे तथा शौरिराजन के परिश्रम की तारीफ़ की जाय? कितना भी कहूँ मैं इन तीनों से उऋण नहीं हो पाऊँगा।

स्वामी चिन्मयानंद के आशीर्वाद तथा साठे जी, अवस्थी जी प्रभृति सुहृदों की शुभ कामनाओं का फल है कि मैं लगभग दस महीने रोगग्रस्त हो खाट में पड़े रहने के बाद उठ गया।

भगवान को धन्यवाद है कि उन्होंने मुझे ऐसे मित्र, हितैषी दिये; बीमारी दी तथा स्वस्थ भी बना दिया। यह अभूतपूर्व अनुभव भगवान ने लाभार्थ ही दिये हैं।

खैर, यह भारती का काम पूरा करने में ट्रस्ट के कर्मचारियों तथा ऊपर इंगित सज्जनों का जितना अंश रहा है उसके मुक़ाबले में मेरा तो बहुत कम है। जो हो, यह प्रभु का आदेश है, उनकी कृपा का फल है।

पाठकों से विनय है कि वे इस ग्रंथ को पढ़ें तो वे आनंद के साथ प्रेरणा भी पायँगे।

—ति० शेषाद्रि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विषय-सूची

देशीय गीदङ्गळ्—राष्ट्रीय गीत ४२-२०३।

१ बारदनाडु—भारत देश ४२-९७

१ वन्दे मादरम्—वंदे मातरम (१) ४२-४३
२ वन्दे मादरम्—वंदे मातरम (२) ४४-४५
३ नाट्टु वणक्कम्—देश को नमस्कार ४६-४७
४ बारदनाडु—भारत देश ४८-४९
५ बारद देशम्—भारत देश ५०-५१
६ ऍङ्गळ् नाडु—हमारा देश ५६-५७
७ जय बारद—जय भारत ५८-५९
८ बारद मादा—भारतमाता ६०-६१
९ ऍङ्गळ् ताय्—मेरी माता ६२-६३
१० वॅऱि कॊण्ड ताय्—पागल बनी हमारी माता ६४-६५
११ बारदमादा तिरुप्पळ्ळि ऍऴुच्चि—भारतमाता का सुप्रभात ६६-६७
१२ बारदमादा नवरत्तिन मालै—भारतमाता की नवरत्नमाला ६८-६९
१३ बारद देवियिन् तिरुत्त शाङ्गम्—भारतदेवी का श्रीवशाङ्ग ७४-७५
१४ तायिन् मणिक् कॊडि पारीर्—माता की ध्वजा ८०-८१
१५ बारद जनङ्गळन् तऱ्काल् निलैमै—भारतीयों की वर्तमान दशा ८२-८३
१६ निहऴ्हिन्दुस्तानमुम् बरुहिन्दुस्तानमुम्—वर्तमान भारत तथा भावी भारत ८६-८७
१७ बारद समुदायम्—भारतीय समाज ९०-९१
१८ जादीय गीदम्—जातीय गीत : वंदे मातरम् ९४-९५
१९ जादीय गीदम्—वंदे मातरम् का नया अनुवाद ९६-९७

२ तमिऴ्नाडु—तमिऴनाडु ९८-११७

२० शॆन्दमिऴ्नाडु—सुन्दर तमिऴनाडु ९८-९९
२१ तमिऴ्त् ताय्—तमिऴमाता १००-१०१
२२ तमिऴ्—तमिऴ भाषा १०४-१०५
२३ तमिऴ् मॊऴि वाऴ्त्तु—तमिऴ भाषा की प्रशंसा १०६-१०७
२४ तमिऴच् चादि—तमिऴ-जाति १०६-१०७
२५ वाऴिय शॆन्दमिऴ्—सुन्दर तमिऴ जिये ११६-११७

३ शुदन्दिरम्—स्वतन्त्रता ११६-१२९

२६ सुदन्दिरप् पॆरुमै—स्वतन्त्रता-महिमा ११६-११७
२७ सुदन्दिरप् पयिर्—स्वतन्त्रता का पौधा ११८-११९
२८ सुदन्दिर दाहम्—स्वतन्त्रता की प्यास १२२-१२३
२९ सुदन्दिर देवियिन् तुदि—स्वतन्त्रता देवी की स्तुति १२२-१२३
३० विडुदलै—छुटकारा १२६-१२७
३१ सुदन्दिरप् पळ्ळु—कृषकों का आनन्द-नाच १२६-१२७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

	विषय	पृष्ठ
४	देशीय इयक्कप् पाडल्हळ्—राष्ट्रीय आन्दोलन के गीत	१३०-१५९
३२	सत्रपदि शिवाजि–छत्रपति शिवाजी	१३०-१३१
३३	कोक्कले सामियार् पाडल्–साधु गोखले	१४४-१४५
३४	तोण्डु शेय्युम् अडिमै–सेवक दास	१४४-१४५
३५	नम्म जाविककु अडुक्कुमो–हमारी जाति के लिए उचित है क्या	१४८-१४९
३६	नाम् अॅन्त शॅय्वोम्–हम क्या करें	१४८-१४९
३७	बारद देवियिन् अडिमै–भारत देवी का ग़ुलाम	१५०-१५१
३८	वॅळळॅक्कार विञ्ज् दुरै कूऱ्ऱ–गोरे बिच साहब का कथन	१५२-१५३
३९	देशबक्तर् शिदम्बरम् पिळ्ळै मऱुमॉऴि–देशभक्त चिदंबरम् पिळ्ळै का उत्तर	१५४-१५५
४०	नडिप्पुच् चुदेसिहळ्–ढोंगी देशभक्त की निंदा	१५६-१५७
५	देशीयत् तलैवर्हळ्—राष्ट्रनेता	१६०-१८९
४१	वाळ्ह नी अॅम्मात्–महात्मा गांधी-पंचक	१६०-१६१
४२	गुरु गोविन्दऱ–गुरु गोविन्दसिंह	१६२-१६३
४३	दादा बाय् नवुरोजि–दादा भाई नौरोजी	१७६-१७७
४४	पूवेन्दिर विजयम्–भूपेन्द्र-विजय	१७८-१७९
४५	वाळ्ह तिलहत् नामम्–तिलक का नाम जिये	१८०-१८१
४६	तिलह मुनिवर् कोत्–तिलक मुनिराज	१८२-१८३
४७	लाजपदि–लाजपतराय	१८२-१८३
४८	लाजपदियिन् पिरलाबम्–लाजपति का प्रलाप	१८४-१८५
४९	ब-उ-शिक्कु वाळ्त्तु–चिदम्बरम् पिळ्ळै को बधाई	१८८-१८९
६	पिऱ नाडुहळ्—अन्य देश	१८८-२०३
५०	माजिनियिन् शबदम्–माजिनी का शपथ	१८८-१८९
५१	बॅल्जियम् नाट्टिऱ्कु वाळ्त्तु–बॅल्जियम देश को बधाई	१९४-१९५
५२	पुदिय रुशिया–नया रूस	१९८-१९९
५३	कऱम्बुत् तोट्टत्तिले–ईख के बाग़ में	२००-२०१
	टॅय्वप् पाडल्हळ् २०४-४२९ ।	
१	तोत्तिरप् पाडल्हळ्—स्तुति-गीत	२०४-३८७
१	विनायहर् नाऱ्मणि मालै–विनायक चार रत्नमाला	२०४-२०५
२	मुरुहा ! मुरुहा–मुरुहा	२३०-२३१
३	वेलन् पाट्टु–वेलन् गीत	२३२-२३३
४	किळि विडु तूदु–शुक-सन्देश	२३४-२३५
५	मुरुहत् पाट्टु–मुरुहन् गीत	२३६-२३७
६	नमक्कु वेलै–हमारा काम	२३८-२३९
७	वळ्ळिप् पाट्टु–वळ्ळि-गीत (१)	२३८-२३९
८	वळ्ळिप् पाट्टु–वळ्ळि-गीत (२)	२४०-२४१
९	इऱैवा इऱैवा–ईश्वर	२४२-२४३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

	विषय	पृष्ठ
१०	पोट्रि अहवल–नमः	२४२-२४३
११	शिवशक्ति–शिव-शक्ति	२४४-२४५
१२	काणि निलम् वेण्डुम्–सवा एकड़ जमीन चाहिए	२४८-२४९
१३	नल्लदोट्र वीणै शैय्दे–अच्छी एक वीणा	२५०-२५१
१४	महाशक्तिककु विण्णप्पम्–महाशक्ति के प्रति विनय	२५०-२५१
१५	अन्नैयै वेण्डुदल्–माता से विनय	२५२-२५३
१६	बूलोह कुमारि–भूलोककुमारी	२५२-२५३
१७	महाशक्ति वॅण्बा–महाशक्ति-स्तुति	२५२-२५३
१८	ओम् शक्ति–ॐ शक्ति	२५४-२५५
१९	पराशक्ति–पराशक्ति	२५६-२५७
२०	शक्तिक् कत्तु–शक्ति-नृत्य	२५८-२५९
२१	शक्ति–शक्ति	२६०-२६१
२२	वैयम् मुळुदुम्–सारे विश्व को	२६२-२६३
२३	शक्ति विळक्कम्–शक्ति-विवरण	२६४-२६५
२४	शक्तिक्कु आत्म समर्प्पणम्–शक्ति के सामने आत्म-समर्पण	२६६-२६७
२५	शक्ति तिरुप्पुहळ्–शक्ति की श्रीमहिमा	२७६-२७७
२६	शिव शक्ति पुहळ्–शिव-शक्ति की महिमा	२७८-२७९
२७	पेदै नॅञ्जे–अबोध मन	२८०-२८१
२८	महाशक्ति–महाशक्ति	२८४-२८५
२९	नवरात्तिरिप् पाट्टु–नवरात्रि का गीत	२८४-२८५
३०	काळिप् पाट्टु–काली-गीत	२८६-२८७
३१	काळि स्तोत्तिरम्–काली-स्तुति	२८६-२८७
३२	योग सित्ति–योग-सिद्धि	२८८-२८९
३३	महाशक्ति पञ्जकम्–महाशक्ति-पंचक	२९२-२९३
३४	महाशक्ति वाळ्त्तु–महाशक्ति की दुहाई	२९४-२९५
३५	ऊळिक् कत्तु–युगान्तक नाच	२९८-२९९
३६	काळिककुच् चमर्प्पणम्–काली को समर्पण	३००-३०१
३७	काळि तरुवाळ्–काली देगी	३००-३०१
३८	महाकाळियित् पुहळ्–महाकाली की महिमा	३०२-३०३
३९	वॅट्रि–विजय	३०४-३०५
४०	मुत्तु मारि–मोती मारी	३०६-३०७
४१	देश मुत्तु मारि–देश मुत्तुमारी	३०८-३०९
४२	कोमदि महिमै–गोमती-महिमा	३०८-३०९
४३	शाहा वरम्–अमरता का वर	३१२-३१३
४४	गोविन्दत् पाट्टु–गोविन्द-गीत	३१२-३१३
४५	कण्णसै–वेण्डुदल्	३१४-३१५
४६	वरुवाय् कण्णा–आओ कृष्ण	३१६-३१७
४७	कण्ण पॅरुमाने–प्रभु कृष्ण	३१८-३१९
४८	नन्द लाला–नन्दलाल	३१८-३१९
४९	कण्णन् पिरप्पु–कृष्ण पैदा हुए	३२०-३२१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

	विषय	पृष्ठ
५०	कण्णन् तिरुवडि–कृष्ण के श्रीचरण	३२२-३२३
५१	वेय्ङ्गुळल्–वंशी	३२२-३२३
५२	कण्णम् माविन् कादल्–कण्णम्मा का प्रेम	३२६-३२७
५३	कण्णम् माविन् निनैप्पु–कण्णम्मा का स्मरण	३२६-३२७
५४	मनप् पीडम्–मन-पीठ	३२८-३२९
५५	कण्णम् माविन् अँळिल्–कण्णम्मा का सौन्दर्य	३३०-३३१
५६	तिरुक् कादल्–दिव्य-प्रेम	३३२-३३३
५७	तिरु वेट्कै–शुभ मोह	३३२-३३३
५८	तिरु महळ् तुदि–श्रीलक्ष्मी-स्तुति	३३४-३३५
५९	तिरु महळैच् चरण् पुहुदल्–श्रीलक्ष्मी की शरण में प्रवेश करना	३३६-३३७
६०	रादैप् पाट्टु–राधा-गान	३४०-३४१
६१	कलैमहळै वेण्डुदल्–कलादेवी से प्रार्थना	३४०-३४१
६२	वॅळ्ळैत् तामरै–श्वेत-कमल	३४४-३४५
६३	नवरात्तिरिप् पाट्टु–नवरात्रि-गीत	३५०-३५१
६४	मुन्रु कादल्–तीन प्रेम	३५२-३५३
	मुदलावदु–सरस्वदि कादल्—पहला–सरस्वती-प्रेम	३५२-३५३
	इरण्डावदु–लक्ष्मि कादल्—दूसरा–लक्ष्मी-प्रेम	३५२-३५३
	मून्रावदु–काळि कादल्—तीसरा–काली-प्रेम	३५४-३५५
६५	आरु तुडै–छः सहारे	३५६-३५७
६६	विडुदलै वॅण्बा–स्वतन्त्रता	३५६-३५७
६७	जयम् उण्डु–जय है	३५८-३५९
६८	आरिय दरिशनम्–आर्य-दर्शन	३६०-३६१
	बुद्द दरिशनम्–बुद्ध-दर्शन	३६२-३६३
	किरुष्णारजुन दरिशनम्–कृष्णार्जुन-दर्शन	३६२-३६३
६९	सूरिय दरिशनम्–सूर्य-दर्शन	३६८-३६९
७०	आयिरु वणक्कम्–सूर्य नमस्कार	३६८-३६९
७१	ञान बानु–ज्ञान-भानु	३७०-३७१
७२	सोम देवन् पुहळ्–सोमदेव का यश	३७२-३७३
७३	वॅण्णि लावे–श्वेत चाँद	३७२-३७३
७४	ती वळर्त्तिडु वोम्–अग्नि बढ़ाएँगे	३७६-३७७
७५	वेळ्वित् ती–यज्ञाग्नि	३७८-३७९
७६	किळिप् पाट्टु–शुकगीत	३८४-३८५
७७	येशु किरिस्तु–यीशु ख्रिस्तु	३८४-३८५
७८	अल्ला–अल्लाह	३८६-३८७
	२ ञानप् पाडल्हळ्—दार्शनिक ज्ञान-गीत	३८८-४२९
७९	अच्चमिल्लै–भय नहीं	३८८-३८९
८०	जय बेरिहै–जय-दुंदुभी	३८८-३८९
८१	शिट्टुक् कुरुवियैप् पोले–छोटी चिड़िया के समान	३९०-३९१
८२	विडुदलै वेण्डुम्–छुटकारा चाहिए	३९२-३९३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

	विषय	पृष्ठ
८३	वेण्डुम्–चाहिए	३९४-३९५
८४	आत्म जयम्–आत्म-जय	३९४-३९५
८५	कालत्तुक्कु उरैत्तल्–काल से कथन	३९४-३९५
८६	मायैयैप् पळित्तल्–माया की निन्दा	३९६-३९७
८७	शङ्गु–शंख	३९८-३९९
८८	अरिवे दैय्वम्–बोध ही ईश्वर है	४००-४०१
८९	परशिव वेळळम्–परशिव प्रलय	४०२-४०३
९०	पोय्यो ? मैय्यो ?–झूठ है कि सच	४०६-४०७
९१	नान्–मैं (अहम्)	४०८-४०९
९२	सित्तानदच् चामि कोयिल्–सिद्धान्त स्वामी का मन्दिर	४१०-४११
९३	बक्ति–भक्ति	४१०-४११
९४	अम्माक् कण्णु पाट्टु–अम्माक् कण्णुका गीत	४१६-४१७
९५	वण्डिक् कारन् पाट्टु–गाड़ीवान् का गीत	४१६-४१७
९६	कडमै अरि योम्–कर्तव्य नहीं जानते	४१६-४१७
९७	अन्बु शैय्दल्–प्यार करना	४१८-४१९
९८	शैन्ड्रदु मीळादु–गया सो लौट नहीं आया	४१८-५१९
९९	मनत्तुतिड्कुक् कट्टळै–मन को आदेश	४२०-४२१
१००	मनप् पॆण्–मन-कन्या	४२०-४२१
१०१	पहैवनुक्कु अरुळ्वाय्–शत्रु पर कृपा करो	४२२-४२३
१०२	तॆळिवु–निर्मलता	४२६-४२७
१०३	कर्पनै यूर्–कल्पना-नगरी	४२६-४२७

पल्वहैप् पाडल्हळ् ४३०-६९७ ।

१	नीति—नीति	४३०-४४९
१	पुविय आत्तिच् चूडि–नांदी (परमवस्तु की स्तुति)	४३०-४३१
२	पाप्पाप् पाट्टु–शिशु-गान	४३६-४३७
३	मुरशु–नगाड़ा	४४०-४४१
२	समूहम—समाज-सम्बंधी कविताएँ	४५०-४७३
४	पुदुमैप्पॆण्–आधुनिक तरुणी	४५०-४५१
५	पॆण्गळ् वाळ्ह–देवियां जियें	४५६-४५७
६	पॆण्गळ् विडुदलक् कुम्मि–नारी-मुक्ति	४५८-४५९
७	पॆण् विडुदलै–नारी की मुक्ति	४६२-४६३
८	तॊळिल्–उद्योग-धंधा	४६४-४६५
९	मड्वन् पाट्टु–मरवन् का गीत	४६६-४६७
१०	नाट्टुक्-कल्वि–राष्ट्रीय शिक्षा	४६८-४६९
११	पुविय कोणङ्गि–आधुनिक कोणङ्गि	४७०-४७१
३	तनिप् पाडल्हळ्—फुटकर गीत	४७४-५१७
१२	कालैप् पॊळुदु–सबेरे का समय	४७४-४७५
१३	अनविप् पॊळुदु–सन्ध्या-समय	४७८-४७९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

	विषय	पृष्ठ
	कादलियिन् पाट्टु–प्रेमिका का गीत	४८०-४८१
१४	निलावुम् वान् मीतुम् काऱ्ऱुम्–चाँदनी, आकाश के नक्षत्र और पवन	४८२-४८३
	मनत्तै वाळ्त्तुदल्–मन को बधाई देना	४८२-४८३
१५	मळै–वर्षा	४८४-४८५
१६	पुयर् काऱ्ऱु–तूफ़ान	४८६-४८७
१७	पिळैत्त तॆन्नन् दोप्पु–बचा नारियल का बाग़	४८८-४८९
१८	अक्किनिक् कुञ्जु–अग्नि-ढोटा	४९०-४९१
१९	सादारण वरुषत्तुत् तूमकेदु–साधारण वर्ष का धूमकेतु	४९०-४९१
२०	अळहुत् तॆय्वम्–सौन्दर्य-देवी	४९२-४९३
२१	ऒळियुम् इरुळुम्–प्रकाश और अन्धकार	४९४-४९५
२२	शॊल्–शब्द	४९६-४९७
२३	कविदैत् तलैवि–कविता-नायिका	५००-५०१
२४	कविदैक् कादलि–कविता प्रेमिका	५०२-५०३
२५	मदु–मद्य	५०८-५०९
	सङ्गीर्त्तनम्–संकीर्तन	५१४-५१५
२६	शन्दिर मदि–चंद्रमति	५१६-५१७
४	शान्ऱोर्—बड़े सज्जन लोग	५१६-५४१
२७	तायुमानवर् वाळ्त्तु–तायुमानवर-स्तुति	५१६-५१७
२८	निवेदिता–निवेदिता	५१८-५१९
२९	अबेदानन्दा–अभेदानंद	५१८-५१९
३०	ओवियर् मणि इरवि वर्मा–चित्रकार मणि रविवर्मा	५२०-५२१
३१	सुप्परामदीट्चिदर्–सुब्बराम दीक्षित	५२२-५२३
३२	महामहोपात्तियायर्–महामहोपाध्याय स्वामीनाथय्यर	५२६-५२७
३३	वॆङ्गटेशु रॆट्टप्प बूपति–वॆंकटेशु रेट्टप्प भूपति को लिखा पत्र	५२८-५२९
३४	हिन्दु मदाबिमान शङ्गत्तार्–हिन्दू-मताभिमान-संघ	५३२-५३३
३५	वेल्स् इळवर शरुक्कुनल् वरवु–वेल्स राजकुमार का स्वागत	५३६-५३७
५	सुय शरिदै—आत्मकथा	५४०-६१७
३६	कनवु–स्वप्न	५४०-५४१
	पिळ्ळैक् कादल–शैशव-प्रेम	५४२-५४३
	आङ्गिलप् पयिऱ्चि–आंग्ल-विद्यार्जन	५५२-५५३
	मणम्–विवाह	५५८-५५९
	तन्दै वरुमै यॆय्विडल्–पिता का दरिद्रता पाना	५६४-५६५
	पॊरुट् पॆरुमै–अर्थ की महत्ता	५६६-५६७
	मुडिवुरै–उपसंहार	५६८-५६९
३७	बारदि अऱुपत्ताऱु–भारती छियासठी	५७०-५७१
	कडवुळ् वाळ्त्तु–पराशक्ति तुदि—ईश्वर-वन्दना–पराशक्ति-स्तोत्र	५७०-५७१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विषय	पृष्ठ
मरणत्तै वॅल्लुम् वळि–मौत को जीतने का मार्ग	५७२-५७३
अशुरर्हळिन् पॅयर्–असुरों के नाम	५७४-५७५
शिनत्तिन् केडु–क्रोध से हानि	५७६-५७७
तेम्बामै–हताश नहीं होना	५७८-५७९
पॊऱुमैयिन् पॅरुमै–क्षमा, शमन की महत्ता	५७८-५७९
कडतुळ् ॲङ्गे इरुक्किऱार् ?–ईश्वर कहाँ है ?	५८०-५८१
कुरुक्कळ् तुदि (कुळ्ळच् चामि पुहळ्)–गुरु की स्तुति (बामन स्वामी का यश)	५८४-५८५
गुरु दरिशनम्–गुरु-दर्शन	५८६-५८७
उपदेशम्–उपदेश	५८८-५८९
कोविन्द शुवामि पुहळ्–गोविन्द स्वामी का यश	५९६-५९७
याळ्प् पाणत्तुच् चुवामियित् पुहळ्–याळ्प्पाणम् के स्वामी का यश	५९८-५९९
कुवळैक् कण्णन् पुहळ्–कुदळै कण्णन् का यश	५९८-५९९
पॅण् विडुदलै–नारी-स्वतन्त्रता	६००-६०१
कादलिन् पुहळ्–प्रेम की महिमा	६०४-६०५
विडुदलैक् कातल्–स्वच्छन्द प्रेम	६०६-६०७
शर्वमद समरसम्–सर्व-धर्म-सार	६०८-६०९
कोविन्द शुवामियुडन् उरैयाडल्–गोविन्द स्वामी से वार्त्तालाप	६०८-६०९
६ वशन् कविदै—वचन-कविता	६१६-६९७
१ काट्चि–दृश्य	६१६-६१७
मुदर् किळै–इन्बम्–पहली शाखा-सुख	६१६-६१७
इरण्डाङ् गिळै-पुहळ्–दूसरी शाखा-यश	६२०-६२१
आयिरु–सूर्य	६२०-६२१
२ शक्ति–शक्ति	६३४-६३५
३ काऱ्ऱु–वायु	६४६-६४७
४ कडल्–समुद्र	६७२-६७३
५ जगत् चित्तिरम्–जगत-चित्र	६७४-६७५
शिऱु नाडहम्–छोटा नाटक	६७४-६७५
मुदर् काट्चि–पहला दृश्य	६७४-६७५
इरण्डाम् काट्चि–दूसरा दृश्य	६७८-६७९
मून्ऱाम् काट्चि–तीसरा दृश्य	६८०-६८१
नान्गाम् काट्चि–चौथा दृश्य	६८४-६८५
ऐन्दाम् काट्चि–पाँचवाँ दृश्य	६८६-६८७
६ विडुदलै–मुक्ति	६८६-६८७
नाडहम्–लघु नाटक	६८६-६८७
काट्चि २–दृश्य २	६९४-६९५
निलवुप् पाट्टु–चाँदनी-गीत	६९४-६९५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विषय पृष्ठ

मुप्पॆरुम् पाडलहळ् ६९८-१०४९ ।

१ कण्णन् पाट्टु—कान्हा-गीत ६९८-७८९

१ कण्णन् : ऍन् पाट्टु-कान्हा : मेरा साथी ६९८-६९९

२ कण्णन् : ऍन् ताय्-कान्हा : मेरी माँ ७०४-७०५

३ कण्णन् : ऍन् तन्दै-कान्हा : मेरा पिता ७०८-७०९

४ कण्णन् : ऍन् शेवहन्-कान्हा : मेरा सेवक ७१४-७१५

५ कण्णन् : ऍन् अरशन्-कान्हा : मेरा राजा ७२०-७२१

६ कण्णन् : ऍन् शीडन्-कान्हा : मेरा शिष्य ७२६-७२७

७ कण्णन् : ऍन् शद्कुरु-कान्हा : मेरा सद्गुरु ७३८-७३९

८ कण्णम्मा : ऍन् कुळन्दै-कण्णम्मा : मेरी बच्ची ७४६-७४७

पराशक्तियै कुळन्दैयाहक् कण्डु शॊल्लिय पाट्टु-पराशक्ति को शिशु मानकर गाया हुआ गीत ७४६-७४७

९ कण्णन् : ऍन् विळैयाट्टुप् पिळ्ळैलै-कान्हा : मेरा चुहलबाज लड़का ७४८-७४९

१० कण्णन् : ऍन् कादलन् (१)-कान्हा : मेरा प्रेमी (१) ७५०-७५१

११ कण्णन् : ऍन् कादलन् (२)-कान्हा : मेरा प्रेमी (२) ७५४-७५५

उरक्कमुम् विळिप्पुम्-निद्रा तथा जागरण ७५४-७५५

पाङ्गियर् पोन पिन्बु तनियिरुन्दु शॊल्लुदल्-सखियों के जाने के बाद अकेले कहना ७५६-७५७

१२ कण्णन् : ऍन् कादलन् (३)-कान्हा : मेरा प्रेमी (३) ७५८-७५९

काट्टिले तेडुदल्-जंगल में ढूंढ़ना ७५८-७५९

१३ कण्णन् : ऍन् कादलन् (४)-कान्हा : मेरा प्रेमी (४) ७६२-७६३

पाङ्गियैत्तूदु विडुत्तल्-तङ्गप् पाट्टु मॆट्टु—सखी को दूती बनाकर भेजना ७६२-७६३

१४ कण्णन् : ऍन् कादलन् (५)-कान्हा : मेरा प्रेमी ७६४-७६५

पिरि वाऱ्ऱामै-विरह-दुःख ७६४-७६५

१५ कण्णन् : ऍन् कान्तन्-कान्हा : मेरा कान्त ७६६-७६७

१६ कण्णम्मा : ऍन् कादलि (१)-कण्णम्मा : मेरी प्रेमिका (१) ७६८-७६९

काट्चि वियप्पु—दृश्य विस्मय ७६८-७६९

१७ कण्णम्मा : ऍन् कादलि (२)-कण्णम्मा : मेरी प्रेमिका (२) ७६८-७६९

पिन् वन्दु नित्ऱ कण् मरैत्तल्-पीछे से आकर आँख मूंद लेना ७६८-७६९

१८ कण्णम्मा : ऍन् कादलि (३)-कण्णम्मा : मेरी प्रेमिका (३) ७७२-७७३

मुहत्तिरै कळैदल्-घूंघट हटाना ७७२-७७३

१९ कण्णम्मा : ऍन् कादलि (४)-कण्णम्मा मेरी प्रेमिका (४) ७७४-७७५

नाणिक् कण् पुदैत्तल्-नायिका और प्रेमी का वचन ७७४-७७५

२० कण्णम्मा : ऍन् कादलि (५)-कण्णम्मा : मेरी प्रेमिका (५) ७७६-७७७

कुऱिप्पिडम् तवऱियदु-संकेत-स्थान चूक गया ७७६-७७७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

	विषय	पृष्ठ
२१	कण्णम्मा : ऍन् कादलि (६)—कण्णम्मा : मेरी प्रेमिका (६)	७७८-७७९
	योहम्—योग	७७८-७७९
२२	कण्णन् : ऍन् आण्डान्—कान्हा : मेरा मालिक	७८२-७८३
२३	कण्णम्मा : ऍनदु कुल दॅय्वम्—कण्णम्मा : मेरी कुलदेवी	७८६-७८७
२	पाञ्जालि शबदम् (मुदर् पाहम्)—पांचाली-शपथ (प्रथम भाग)	७८८-९०३
१	पिरम तुदि—ब्रह्म-स्तुति	७८८-७८९
२	सरस्वदि—वणक्कम्—सरस्वती-वन्दना	७९०-७९१
३	हस्तिनापुरम्—हस्तिनापुर	७९२-७९३
४	तुरियोदनन् सबै—दुर्योधन-सभा	७९६-७९७
५	तुरियोदनन् पॉरामै—दुर्योधन की ईर्ष्या	७९६-७९७
६	तुरियोदनन् शहुनियिडम् शॉल्वदु—दुर्योधन का शकुनि से कथन	८०८-८०९
७	शहुनियिन् शदि—शकुनि का षड्यंत्र	८१४-८१५
८	शहुनि तिरितराट्टिरणिडम् शॉल्लुदल्—शकुनि का धृतराष्ट्र से कथन	८१८-८१९
९	तिरितराट्टिरन् पदिल् कूऱदल्—धृतराष्ट्र का उत्तर देना	८२६-८२७
१०	तुरियोदनन् शिनम् गॉळ्ळुदल्—दुर्योधन का गुस्सा करना	८३२-८३३
११	तुरियोदनन् तो मॉळि—दुर्योधन के कुवचन	८३४-८३५
१२	तिरिदाराट्टिरन् पदिल्—धृतराष्ट्र का उत्तर	८३८-८३९
१३	तुरियोदनन् पदिल्—दुर्योधन का उत्तर	८४०-८४१
१४	तिरिदराट्टिरन् सम्मदित्तुल्—धृतराष्ट्र का सम्मत होना	८४८-८४९
१५	शबा निर्माणम्—सभा-निर्माण	८४८-८४९
१६	विदुरनैत् तूदु विडल्—विदुर को दूत बनाकर भेजना	८५०-८५१
१७	विदुरन् तूदु शॅल्लुदल्—विदुर का दौत्य पर जाना	८५२-८५३
१८	विदुरनै वरवेऱ्ऱल्—विदुर का स्वागत करना	८५६-८५७
१९	विदुरन् अऴैत्तल्—विदुर का बुलावे की बात कहना	८५८-८५९
२०	दरुम पुत्तिरन् पदिल्—धर्मपुत्र का उत्तर	८६०-८६१
२१	विदुरन् बदिल्—विदुर का उत्तर	८६२-८६३
२२	दरुम पुत्तिरन् तीर्मानम्—धर्मपुत्र का निश्चय	८६२-८६३
२३	बीमनुडैय नीरप् पेच्चु—भीम का वीर वचन	८६४-८६५
२४	दरुम पुत्तिरन् मुडिवरै—धर्मपुत्र का अन्तिम वचन	८६६-८६७
२५	नाल्वरुम् सम्मदित्तल्—चारों का सम्मत होना	८७०-८७१
२६	पाण्डवर् पयण मादल्—पांडवों का प्रयाण	८७०-८७१
२७	मालै वरुणनै—सायं-वर्णन	८७२-८७३
२८	वाणियै वेण्डुदल्—वाणी की प्रार्थना	८७८-८७९
२९	पाण्डवर् वरवेऱ्पु—पाण्डवों का स्वागत	८७८-८७९
३०	पाण्डवर् सबैक्कु वरुदल्—पांडवों का सभा में आगमन	८८२-८८३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

	विषय	पृष्ठ
३१	शूदुक् कळैत्तल्–द्यूत में निमंत्रण देना	८८४-८८५
३२	तरुमत् मऱुत्तल्–धर्म का इनकार करना	८८४-८८५
३३	शहुनियिन् ऍच्चु–शकुनि का ताना देना	८८६-८८७
३४	तरुमनिन् पतिल्–धर्मराज का उत्तर	८८८-८८९
३५	शहुनि बल्लुक् कळैत्तल्–शकुनि का द्यूत के लिए बुलाना	८९०-८९१
३६	तरुमत् इणङ्गुदल्–धर्मराज का सम्मत होना	८९०-८९१
३७	शूदाडल्–जुआ खेलना	८९४-८९५
३८	नाट्टै वैत्ताडुदल्–राज्य को दांव में लगाकर खेलना	८९८-८९९
	पाञ्जालि शबदम् (इरण्डाम बाहम)—पांचाली-शपथ (दूसरा भाग)	९०४-९८५
३९	पराशक्ति वणक्कम्–पराशक्ति-विनय	९०४-९०५
४०	सरस्वति वणक्कम्–सरस्वती-विनय	९०४-९०५
४१	विदुरन् शोल्लिय दर्क्कुत् तुरियोदनन् मऱुमोऴि शोल्लुदल्–विदुर के कथन का दुर्योधन द्वारा उत्तर देना	९०६-९०७
४२	विदुरन् शोल्वदु–विदुर का कथन	९०८-९०९
४३	शूदु मीट्टुन् दोडङ्गुदल्–जुए का पुनः आरम्भ होना	९१२-९१३
४४	शहुनि शोल्वदु–शकुनि का कथन	९१४-९१५
४५	सहादेवनैप् पन्दयङ् गूऱल्–सहदेव को दांव पर लगाना	९१६-९१७
४६	नहुलनै यिऴत्तल्–नकुल को गँवाना	९१८-९१९
४७	पार्त्तनै यिऴत्तल् तरमत् शोल्वदु–पार्थ को खोना	९१८-९१९
४८	वीमनै इऴत्तल्–भीम को खोना	९२०-९२१
४९	तरुमत् तन्नैत् तानै पणयम् वैत्तिऴत्तल्–धर्म का स्वयं अपने को लगाकर गँवाना	९२२-९२३
५०	तुरियोदनन् शोल्वदु–दुर्योधन का कथन	९२४-९२५
५१	शहुनि शोल्वदु–शकुनि का कथन	९२४-९२५
५२	दिरौपदियैच् इऴत्तल्–द्रौपदी को गँवाना	९२६-९२७
५३	तिरौबदि शूदिल् वशमानदु पऱ्ऱिक् कौरवर् कोण्ड महिऴ्च्चि–जुए में द्रौपदी के उनके वश में होने से कौरवों को हुआ आनन्द	९२८-९२९
५४	तुरियोदनन् शोल्वदु–दुर्योधन का कथन	९३०-९३१
५५	तिरौबदियै तुरियोदनन् मऱुक्कक्कु अऴैत्तु बरच् चोल्लियदु पऱ्ऱि जगत्तिल् उण्डान् अदर्मक् कुऴप्पम्–द्रौपदी को दुर्योधन की सभा में ले आने की आज्ञा देने से जग में हुआ अधर्म का टंटा	९३२-९३३
५६	तुरियोदनन् विदुरनै नोक्कि युरैप्पदु–दुर्योधन का विदुर को देखकर कथन	९३४-९३५
५७	विदुरन् शोल्वदु–विदुर का कथन	९३६-९३७
५८	तुरियोदनन् शोल्वदु–दुर्योधन का कथन	९४२-९४३
५९	तिरौबदि शोल्लुदल्–द्रौपदी का कथन	९४४-९४५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

	विषय	पृष्ठ
६०	तुरियोदतन् शॊल्वद–दुर्योधन का कथन	९४८-९४९
६१	तुच्चादतन् तिरौबदियै सबैक्कुक् कॊणर्दल्–दुःशासन का द्रौपदी को सभा में ले आना	९४८-९४९
६२	तिरौबदिक्कुम् तुच्चादतनुक्कुम् सम्वादम्–द्रौपदी-दुःशासन-संवाद	९५०-९५१
६३	सबैयिल् तिरौबदि नीदि केट्टळुदल्–सभा में द्रौपदी का न्याय माँगकर विलाप करना	९५६-९५७
६४	बीट्टु माचारियन् शॊल्वदु–भीष्माचार्य का कथन	९५८-९५९
६५	तिरौबदि शॊल्वदु–द्रौपदी का कथन	९६०-९६१
६६	बीमन् शॊल्वदु–भीम का कथन	९६२-९६३
६७	अर्जुनन् शॊल्वदु–अर्जुन का कथन	९६४-९६५
६८	विकर्णन् शॊल्वदु–विकर्ण का कथन	९६६-९६७
६९	कर्णन् पदिल्–कर्ण का उत्तर	९६८-९६९
७०	तिरौबदि कण्णनुक्कुच् चॆय्युम् पिरार्त्तनै–द्रौपदी की कृष्ण से प्रार्थना	९७०-९७१
७१	बीमन् शॆय्द शबदम्–भीम की सौगन्ध	९७६-९७७
७२	अर्जुनन् शबदम्–अर्जुन की सौगन्ध	९७८-९७९
७३	पाञ्जालि शबदम्–पांचाली-शपथ	९८०-९८१

कुयिल् पाट्ट—कोकिल-गान ९८४-१०४९

१	कुयिल्–कोयल	९८४-९८५
२	कुयिलिन् पाट्टु–कोयल का गाना	९८८-९८९
३	कुयिलिन् कादर् कदै–कोयल की प्रेम-कथा	९९०-९९१
४	कादलो कादल्–मुहब्बत ! हे मुहब्बत	९९६-९९७
५	कुयिलुम् कुरङ्गुम्–कोयल और बन्दर	९९८-९९९
६	इरळुम् ऒळियुम्–अँधेरा और प्रकाश	१००६-१००७
७	कुयिलुम् माडुम्–कोयल तथा बैल	१०१०-१०११
८	नात्गाम् नाळ्–चौथा दिन	१०२०-१०२१
९	कुयिल् तन्नु पूर्व जन्मक कदैयुरैत्तल्–कोयल का अपने पूर्व-जन्म का चरित्र सुनाना	१०२६-१०२७

पुदिय पाडल्हळ्—नवीन-गीत १०५०-११०८

१	सुदन्दिर देवियिडम् मुरैयीडु–स्वतन्त्रता-देवी की याचना	१०५०-१०५१
२	दॆय्वम् नमक्कनुकूलम्–देव हमारे अनुकूल है	१०५२-१०५३
३	इन्दियावित् अळैप्पु–भारत का निमंत्रण	१०५४-१०५५
	वेण्डु कोळ्–निवेदन	१०५४-१०५५
	उत्तरम्–उत्तर	१०५६-१०५७
४	कुरुविप् पाट्टु–कुरुवि (गौरैया) का गीत	१०६०-१०६१
	केळ्वि-प्रश्न	१०६०-१०६१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

	विषय	पृष्ठ
	कुरुवियिन् विडै–कुरुवि का उत्तर	१०६०-१०६१
५	शॅल्वत्तुळ् पिऱन् दत्तमा ?–क्या हम धनी पैदा हुए ?	१०६४-१०६५
६	पिरॅञ्जु देशिय गीदम्–फ़्रांसीसी राष्ट्र-गीत	१०६६-१०६७
७	मणिमुत्तुप् पुलवर्–कवि मणिमुत्तु	१०६८-१०६९
८	उयिर् पॅऱ्ऱु तमिऴर् पाट्टु–जीवन्त हो उठे तमिऴो !	१०६८-१०६९
	जाति–जाति	१०६८-१०६९
	इन्बत् तिऱ्कुवऴि–सुख का मार्ग	१०७०-१०७१
	पुराणङ्गळ्–पुराण	१०७०-१०७१
	स्मिरुदिहळ्–स्मृतियाँ	१०७२-१०७३
	मेऱ्कुलत्तार् ऍवर् ?–उच्च कुल वाले कौन हैं ?	१०७४-१०७५
	तवमुम योगमुम्–तप तथा योग	१०७४-१०७५
	योगम्, यागम्, ज्ञानम्–योग, यज्ञ, ज्ञान	१०७४-१०७५
	परम् बॊरुळ्–परमात्मा	१०७४-१०७५
	मुक्ति–मुक्ति	१०७६-१०७७
९	इळशै ऑरुपा ऑरुपःदु–इळशै पर एक गीत-दशक	१०७६-१०७७
	कापपु–नान्दी	१०७६-१०७७
	नूल्–ग्रंथ	१०७८-१०७९
	तत्ति–अतिरिक्त	१०८२-१०८३
१०	तत्तिमै इरक्कम्–विरह-व्यथा	१०८२-१०८३
११	बङ्गमे वाऴिय–वंग जिये	१०८४-१०८५
१२	कावडिच् चिन्दु–मुरुगन की प्रशंसा में गाया जानेवाला पद्य	१०८६-१०८७
१३	वन्दे मादरम्–वन्दे मातरम्	१०८६-१०८७
१४	ऍन्ऩे कॊडुमै–क्या ही विपदा है	१०८८-१०८९
१५	ऍऩदु ताय् नाट्टिऩ् मुन्ऩाट् पॅरुमैयुम् इन्ऩाट् चिऱुमैयुम्–मेरी मातृभूमि का प्राचीन दिनों का गौरव और आजकल की लघुता	१०९०-१०९१
१६	यान्–मैं	१०९२-१०९३
१७	शन्दिरिहै–चन्द्रिका	१०९४-१०९५
१८	पण्डारप् पाट्टु–शिव-भक्त का गीत	१०९४-१०९५
१९	आशुकवि–आशुकवि	१०९६-१०९७
२०	ज्ञानरदप् पाट्टु–ज्ञान-रथ-गीत	१०९८-१०९९
२१	पहवत् कीतै–भगवद्गीता	१०९८-१०९९
२२	पॅरियोरिऩ् पॅरुमै–बड़ों का बड़प्पन	११००-११०१
२३	शुदन्दिरम्–स्वतंत्रता	११००-११०१
२४	शॅट्टि मक्कळ् कुलविळक्कु–शेट्टियों के कुलदीप	११००-११०१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तमिऴ्

भारतियार् कविदैहळ्

[नागरी लिपि में तमिऴ् मूलपाठ]

(हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद सहित)

सुब्रह्मण्यभारती

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भारदियार् कविदैहळ्

[भारतीजी की कविताएँ]

(नागरी लिप्यन्तर—हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद)

1 देशीय गीदङ्गळ्

1 बारदनाडु

वन्दे मादरम् (वंदे मातरम्)—1

राग— नादनामक्रिया; ताळ— आदि

पल्लवि (टेक)

वन्दे मादरम् ऎन्बोम् —ऎङ्गळ्
मानिलत् तायै वणङ्गुदुम् ऎन्बोम् (वन्दे)

शरणङ्गळ् (चरण)

जादि मदङ्गळैप् पारोम्— उयर्
जन्मम् इत् तेशत्तिल् ऎय्दि नरायिन्
वेदियरायिनुम् ऒन्ऱे— अन्ऱि
बेऱु कुलत्तिन् रायिनुम् ऒन्ऱे (वन्दे) 1
ईनप् पऱैयर्ह ळेनुम्—अवर्
ऎम्मुडन् वाळ्न्दिङ् गिरुप्पवर् अन्ऱो ?
शीनत्त रायविडु वारो ? पिऱ
देशत्तर् पोऱ्पल तीङ्गिळैप् पारो ? (वन्दे) 2

वन्दे मातरम् (माता को नमस्कार)—१

"वन्दे मातरम्" कहेंगे— और कहेंगे कि हम अपने विशाल भूदेवी माता को नमस्कार करते हैं। हम जाति मत(-भेद) नहीं देखेंगे। इस देश में श्रेष्ठ जन्म पा लिया हो, तो विप्र हों तो भी हम सब समान हैं। या अन्य कुल (जाति) के हों,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भारदियार् कविदैहळ्

[भारतीजी की कविताएँ]

(राष्ट्रीय गीत)

१ भारत देश

[हिन्दी पद्यानुवाद]

वन्दे मातरम्—१

(एक साथ सब मिलकर) बोलें (जय जय) वन्दे मातरम् ।
(जय) विशाल भारतमाता की (जय जय) वन्दे मातरम् ।।

ब्राह्मण हों या अब्राह्मण हों, भारत माँ के लाल सभी ।
ऊँच-नीच का भेद भूलकर रहें सदा (ख़ुशहाल) सभी ।।
जाति-गर्व का, छुआछूत का भूत भगा अपने मन से ।
(भारतीय हैं सभी, परस्पर बतला दो यह जन-जन से) ।। १ ।।

एक साथ सब मिलकर बोलें जय जय वन्दे मातरम् ।
(जय) विशाल भारतमाता की (जय जय) वन्दे मातरम् ।। टेक ।।

जिन्हें 'परैयर्' कहते हैं हम, जिन्हें 'हीन' ठहराते हैं ।
क्या वे जन भारतमाता के लाल नहीं (कहलाते) हैं ।।
किसी जाति के होकर भी वे (भारत के हितचिंतक हैं) ।
विदेशियों-सम मातृभूमि के वे न कभी विध्वंसक हैं ।। २ ।।

एक साथ सब मिलकर बोलें जय जय वन्दे मातरम् ।
(जय) विशाल भारतमाता की (जय जय) वन्दे मातरम् ।। टेक ।।

वे भी एक ही (समान) हैं । (वन्दे०) १ हीन 'पइयर्' (अछूत— एक नीच जाति के लोग) ही क्यों न हों, क्या वे हमारे साथ यहाँ रहनेवाले नहीं हैं ? वे क्या चीन वाले हो जायंगे ? और क्या वे अन्य पराये देशवासियों की तरह हमें विविध प्रकार की हानियाँ पहुँचायेंगे ? (वन्दे०) २ यहाँ हजार जातियाँ हैं सही । तो भी परायों का इधर आकर घुस जाना कैसा न्याय है ? एक ही माता के जनाये (लोग) आपस में झगड़ा करें, तो भी क्या वे एक-दूसरे के सहोदर नहीं है ? (वन्दे०) ३ एक बनो, तो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आयिरम् उण्डिङ्गु जादि— ऍऩिल्
अऩ्ऩियर् वन्दु पुहल् ऍऩ्ऩ न दि ?— ओर्
तायिऩ् वयिऱ्ऱिऱ् पिऱन्दोर्— तम्मुळ्
शण्डैशॆय् दालुम् सहोदरर् अऩ्ऱो ? (वन्दे) 3

ऒऩ्ऱु पट्टाल् उण्डु वाऴ्वे— नम्मिल्
ऒऱ्ऱुमै नीङ्गिल् अऩैवर्क्कुम् ताऴ्वे
नऩ्ऱिदु तेर्न्दिडल् वेण्डुम्— इन्द
ञाऩम् वन्दाऱ् पिऩ् नमक्कॆदु वेण्डुम् ? (वन्दे) 4

ऍप्पदम् वाय्त्तिडु मेऩुम्— नम्मिल्
यावर्क्कुम् अन्द निलै पॊदु वाहुम्
मुप्पदु कोडियुम् वाऴ्वोम्— वीऴिल्
मुप्पदु कोडि मुऴुमैयुम् वीऴ्वोम् (वन्दे) 5

पुल्लडि मैत्तॊऴिल् पेणिप्— पण्डु
पोयिऩ् नाट्कळुक् किऩिमऩम् नाणित्
तॊल्लै इहऴ्च्चिहळ् तीर— इन्दत्
तॊण्डु निलैमैयैत् तूवॆऩ्ऱु तळ्लि (वन्दे) 6

वन्दे मादरम्—2

राग— हिन्दुस्तानी बिहाग; ताळ— आदि

पल्लवि (टेक)

वन्दे मादरम् — जय वन्दे मादरम्

शरणङ्गळ् (चरण)

जय जय बारद जय जय बारद
जय जय बारद जय जय जय जय (वन्दे) 1

जीवन (सुखी) होगा। हममें मेल नहीं रहे, तो सबका पतन हो जायगा। इसको अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। अगर यह ज्ञान हो जाए, तो फिर हमें क्या चाहिए ? (वन्दे०) ४ चाहे जो पद मिले, वह सबके लिए समान है। छत्तीस करोड़ (तब की जनसंख्या) समान रूप से एक साथ जिएँगे। गिरेंगे, तो सारे तीस करोड़ समान रूप से नष्ट होंगे। (वन्दे०) ५ नीच दासता का धंधा हमने माँगकर स्वीकार किया। अच्छा हुआ, वे पुराने दिन चले गये। पर उस स्थिति में हम रहे, तदर्थ लज्जा का अनुभव करें और बीते दिनों के अपमानों को मिटाते हुए, इस दासता की स्थिति को धत् बताकर ('वन्दे मातरम्' कहेंगे)। (वन्दे०) ६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यद्यपि हैं जातियाँ हज़ारों (भले परस्पर लड़ते हैं)।
माँ हो एक, सगे भाई क्या आपस में न झगड़ते हैं॥
आयें ग़ैर, चौधरी बनकर जम जायें, यह न्याय नहीं।
(लड़ें-भिड़ेंगे, एक रहेंगे, सह सकते अन्याय नहीं)॥ ३॥
(एक साथ सब मिलकर) बोलें (जय जय) वन्दे मातरम्।
(जय) विशाल भारतमाता की (जय जय) वन्दे मातरम्॥ टेक॥

यदि हम हिल-मिलकर रहते हैं, तो जीवन सुखमय होगा।
हेलमेल से नहीं रहें तो, यह जीवन दुखमय होगा॥
अपना भला-बुरा सब सोचो-समझो (भारत के लालो!)
क्या तुमको अप्राप्य विश्व में अगर ज्ञान यह अपना लो॥ ४॥
(एक साथ सब मिलकर) बोलें (जय जय) वन्दे मातरम्।
(जय) विशाल भारतमाता की (जय जय) वन्दे मातरम्॥ टेक॥

मिलें उच्चपद या कि नीच पद, दोनों एक समान हमें।
(ऊँच-नीच-पद पा न गर्व का और दैन्य का भान हमें)॥
कोटि-कोटि हम भारतवासी, (सबका यह दृढ़ निश्चय है)।
साथ जियेंगे, साथ मरेंगे (ज़रा न मन में संशय है)॥ ५॥
(एक साथ सब मिलकर) बोलें (जय जय) वन्दे मातरम्।
(जय) विशाल भारतमाता की (जय जय) वन्दे मातरम्॥ टेक॥

अपने कर्मों के कारण ही मिली नीच दासता हमें।
भला हुआ वे गये पुराने दिन आई विज्ञता हमें॥
भुला दासता की लज्जा को भुला विगत अपमानों को।
त्याग गुलामी, आज़ादी में (गायें मञ्जु तरानों को)॥ ६॥
(एक साथ सब मिलकर) बोलें (जय जय) वन्दे मातरम्।
(जय) विशाल भारतमाता की (जय जय) वन्दे मातरम्॥ टेक॥

वन्दे मातरम्—२

वन्दे मातरम्! जय वन्दे मातरम्!!

जय भारत की, जय भारत की, जय जय भारतमाता की।
जयति जयति जय, जयति जयति जय, जय जय भारतमाता की॥ १॥
वन्दे मातरम्! जय वन्दे मातरम्॥ टेक॥

वन्दे मातरम्—२

वन्दे मातरम्। जय वन्दे मातरम्। जय जय भारत की! जय जय भारत की! जय जय भारत की जय, जय जय जय। (वन्दे०) १ आर्य भूमि पर नारियों और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आरिय बूमियिल् नारिय रुम्नर
सूरियरुम् शॊलुम् वीरिय वाशहम् (वन्दे) 2
नॊन्दे पोयिनुम् वॆन्दे मायिनुम्
नन्दे शत्तर् उ वन्दे शॊल्वदु (वन्दे) 3
ऒन्राय् निन्ऱिनि वॆन्ऱा यिनुमुयिर्
शॆन्ऱा यिनुम्वलि कुन्ऱा दोदुवम् (वन्दे) 4

नाट्टु वणक्कम् (स्वदेश वन्दनम्)—3

राग—कामबोदि; ताळ—आदि

ऎन्दैयुम् तायुम् महिऴ्न्दु कुलावि, इरुन्ददुम् इन्नाडे— अदन्
मुन्दैयर् आयिरम् आण्डुहळ् वाऴ्न्दु, मुडिन्ददुम् इन्नाडे— अवर्
शिन्दैयिल् आयिरम् ऎण्णम् वळर्न्दु, शिऱन्ददुम् इन्नाडे— इदै
वन्दनै कूऱि मनत्तिल् इरुत्तिऎन्, वायुऱ वाऴ्त्तेनो ?— इवै
'वन्दे मादरम् वन्दे मादरम्', ऎन्ऱु वणङ्गेनो ? 1
इन्नुयिर् तन्दैमै ईन्ऱु वळर्त्तु अरुळ्, ईन्ददुम् इन्नाडे— ऎङ्गळ्
अन्नैयर् तोन्ऱि मऴलैहळ् कूऱि, अऱिन्ददुम् इन्नाडे— अवर्
कन्निय राहि निलविनि लाडिक्, कळित्तदुम् इन्नाडे— तङ्गळ्
पॊन्नुडल् इन्बुऱ नीर्विळै याडि, इल्, पोन्ददुम् इन्नाडे—इदै
'वन्दे मादरम्' वन्दे मादरम्, ऎन्ऱु वणङ्गेनो ? 2

नर-सूर्यों की वीरता का यह नारा (है)। (वन्दे०) २ हम जर्जर होते रहे, चाहे भुन ही जायें— हमारे देश के वासियों का हर्ष के साथ गरज उठनेवाला नारा है। (वन्दे०) ३ चाहे हम जीतें या हमारे प्राण जाते रहें, एक बनकर, हम बिना जोर को कम किये नारे लगायें कि वन्दे मातरम्। (वन्दे०) ४

देश को नमस्कार—३

हमारे माता-पिता जहाँ रह कर खुशी से संलाप करते थे, वह यही देश है। हमारे पुरखे हजारों साल जीकर जहाँ अंत को प्राप्त हुए, वह भी यही देश है। उनके मन में हजारों विचार उत्पन्न हुए और वे पले और वे इसी देश में बड़े हुए। क्या मैं इस देश की वन्दना नहीं करूँगा ? क्या मैं मन में उसे धारण करके जी-भर इसको बधाई नहीं दूँगा ? क्या मैं 'वन्दे मातरम्', 'वन्दे मातरम्' कहकर, उसको नमस्कार नहीं करूँगा ? १ ये मधुर प्राण इसी मातृभूमि ने मुझे दिये, मुझे जन्म दिया और सौभाग्य प्रदान किया। हमारी माताएँ इसी में पैदा हुईं और उन्होंने यहाँ शिशुओं के रूप में तोतली वाणी बोलकर आपस में मेलजोल बढ़ाया था। वे यहीं कन्यायें बनीं, चाँदनी में खेलीं और खुश रहीं। वह यही देश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सूर्य-सरीखे पुरुष यहाँ के, (चन्द्र-सरीखी) महिलाएँ।
वीरगान है राष्ट्र-वन्दना (हिल-)मिलकर जन जन गाएँ ॥ २ ॥
वन्दे मातरम् ! जय वन्दे मातरम् ॥ टेक ॥

तन जर्जर, विदग्ध मन यद्यपि, प्रतिफल हों दुःख घटाएँ।
जन-जन के तन-मन का रञ्जन जयकारा हिलमिल गायें ॥ ३ ॥
वन्दे मातरम् ! जय वन्दे मातरम् ॥ टेक ॥

जीतें या मिट जायँ, नहीं परवाह, संगठित रहें सकल।
एक उमंग-तरंग, एक जयकारा गायें हम प्रतिपल ॥ ४ ॥
वन्दे मातरम् ! जय वन्दे मातरम् ॥ टेक ॥

देश को नमस्कार—३

पिता और माता व गुरुजन हमारे।
जनम ले इसी देश में दिन गुज़ारे ॥
हँसे और बोले, यहीं सब बढ़े थे।
यहीं पर मरे थे, चिता पर चढ़े थे ॥
मनन और चिंतन, यहीं ज्ञान-धारा।
बही, तृप्त जिससे हुआ लोक सारा ॥
न इस देश की वन्दना क्या करूँगा ?।
हृदय से न अभिनन्दना क्या करूँगा ? ॥ १ ॥
वही देश है यह वही देश है यह।
नमस्कार इसको नमस्कार है ॥ टेक ॥

इसी ने दिये जन्म औ प्राण हमको।
दिया (सौख्य) सौभाग्य का दान हमको ॥
यहीं पर हुई (पूज्य) माता हमारी।
बढ़ीं तोतली बोलियाँ बोल (प्यारी) ॥
यहीं चाँदनी में बिताया था बचपन।
यहीं खेल खेलीं (मनोरम) मुदित-मन ॥
यहीं के सरों बीच तैरीं नहायीं।
सुबरन सरिस वे खिलीं खिलखिलायीं ॥ २ ॥
वही देश है यह, वही देश है यह।
नमस्कार इसको नमस्कार है ॥ टेक ॥

है, जिसके निर्मल जल में वे जल-क्रीड़ा करके अपनी स्वर्ण-देहों को आराम देते हुए घर जाती थीं। क्या यह नहीं कहूँ कि माता को नमस्कार है ? २

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मङ्गैय रायवर् इल्लऱम् नन्गु, वळर्त्तदुम् इन्नाडे— अवर्
तङ्ग मदलैहळ् ईन्ऱमु दूट्टित्, तळुविय दिन्नाडे— मक्कळ्
तुङ्गम् उयर्न्दु वळऱहैनक् कोयिल्हळ्, शूळ्न्ददुम् इन्नाडे— पिन्नर्
अङ्गवर् माय अवरुडऱ् पून्दुहळ्, आर्न्ददुम् इन्नाडे— इदै
'वन्दे मादरम्, वन्दे मादरम्', ऍन्ऱु वणङ्गेनो ? 3

बारद नाडु—4

राग—हिन्दुस्तानी तोड़ी

पल्लवि (टेक)

पारुक्कुळ्ळे नल्ल नाडु — ऍङ्गळ बारद नाडु

शरणङ्गळ् (चरण)

ञानत्ति लेपर मोनत्ति ले— उयर्
मानत्ति लेअन्न दानत्तिले
गानत्ति ले अमु दाह निऱैन्द
कविदैयि ले उयर् नाडु— इन्दप् (पारुक्) 1
दीरत्ति ले पडै वीरत्तिले— नॅञ्जिल्
ईरत्ति ले उब हारत्तिले
सारत्ति लेमिहु शात्तिरङ् गण्डु
तरुवदि ले उयर् नाडु— इन्दप् (पारुक्) 2
नन्मैयि लेउडल् वन्मैयिले— शॅल्वप्
पन्मैयि ले मऱत् तन्मैयिले
पॊन्मयि लॊत्तिडुम् मादर् तम् कऱ्पिन्
पुहळ्ळिनि ले उयर् नाडु— इन्दप् (पारुक्) 3
आक् कत्ति ले तॊळिल् ऊक्कत्तिले— पुय
वीक्कत्ति ले उयर् नोक्कत्तिले
काक्कत् तिऱल् हॊण्ड मल्लर्तम् शेनैक्
कडलिनि ले उयर् नाडु— इन्दप् (पारुक्) 4

फिर वह यही देश है, जहाँ वे सयानी बनीं; और जहाँ उनके द्वारा गृहस्थ-धर्म का अच्छा निर्वाह हुआ। उन्होंने स्वर्ण (-सम मूल्यवान) बच्चे जनाये; उन्हें खिलाया और गले लगाया। वह यही देश है, जहाँ मंदिर बने, ताकि लोगों का मन बहुत ही उच्च बने। फिर वे इसी देश में मरे; और उनकी मृदुल धूल जिसमें मिलकर समा गयी है, वह यही देश है। क्या मैं 'वन्दे मातरम्' कहकर इसको नमस्कार नहीं करूँ ? ३

भारत देश—४

संसार भर में (सबसे) अच्छा देश है हमारा भारत देश। ज्ञान में, परम ध्यान में, उच्च

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यहीं वे तरुणियाँ बनीं, कर सगाई।
यहीं धर्म-पूर्वक गृहस्थी निभाई॥
यहीं स्वर्ण से पुत्र प्यारे जनाये।
यहीं पर खिलाये, गले से लगाये॥
यहीं पर बने देवमन्दिर (मनोरम)।
हुए पूत मन (साधना का चला क्रम)॥
इसी देश में स्वर्ग थे वे सिधारे।
वही देश उनकी चिता-धूल धारे॥ ३॥
वही देश है यह, वही देश है यह।
नमस्कार इसको नमस्कार है॥ टेक॥

भारत देश—४

मंजु मुकुट-मणि सब देशों में भारतवर्ष हमारा है।
आन-(बान) में, ज्ञान-ध्यान में, मान-(शान) में, श्रेष्ठ यही।
अन्न-दान में, सुधा-सरीखे काव्य, गान में, श्रेष्ठ यही॥ १॥
(सभी सद्गुणों का सागर है, सब देशों से न्यारा है)।
मंजु मुकुट-मणि सब देशों में भारतवर्ष हमारा है॥ टेक॥
यही धीरता की धरती है, यही वीरता की धरती।
कोमल-मन की खान यही है, परहित-व्रत का यही व्रती॥ २॥
शास्त्र-सिन्धु को मथकर देता (ज्ञान-सुधा की धारा है)।
मंजु मुकुट-मणि सब देशों में भारतवर्ष हमारा है॥ टेक॥
सभी गुणों में, तन-विक्रम में, धन-वैभव में श्रेष्ठ यही।
ललनाओं के शील, शूरता के गौरव में श्रेष्ठ यही॥ ३॥
(रहा गूँजता निखिल विश्व में इसके यश का नारा है)।
मंजु मुकुट-मणि सब देशों में भारतवर्ष हमारा है॥ टेक॥
नव-निर्माणों की (यह शाला), उत्साहों का (यह सागर)।
भुजबल में है (भीम), उदार विचारों का (निर्मल निर्झर)॥ ४॥
रक्षक-सेना का (सेनानी), समरथ, (सुखद सहारा है)।
मंजु मुकुट-मणि सब देशों में भारतवर्ष हमारा है॥ टेक॥

मान में, अन्न-दान में, गान में, और अमृतमय कविता में बढ़ा हुआ है यह देश। (संसार०) १ धैर्य में, हथियारों (सेना) की वीरता में, मन की स्निग्धता में, परोपकार में, शास्त्र-सार खोजकर दिलाने में यह श्रेष्ठ देश है। (संसार०) २ भली बातों में, शरीर की शक्ति में, धन की विविधता में, शौर्य में, स्वर्ण-मयूर-सी स्त्रियों के शील में, और यश में यह श्रेष्ठ देश है। (संसार०) ३ सर्जन में, कार्योत्साह में, भुज-बल में, उत्कृष्ट विचार, रक्षण-समर्थ मल्ल-सेना-सागर में उन्नत देश है यह। (संसार०) ४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वण्मैयि ले उळत् तिण्मैयिले— मनत्
तण्मैयि ले तव ऱाद पुलवर्
उणर्विनि ले उयर् नाडु— इन्दप् (पारुक्) 5

याहत्ति ले तव वेहत्ति ले— तनि
योहत्ति ले बल पोहत्ति ले
आहत्ति ले दॅय्वब बक्ति कॉण् डार्दम्
अरुळिनि ले उयर् नाडु— इन्दप् (पारुक्) 6

आऱ्ऱिनि ले शुनै यूऱ्ऱि निले— तॅन्ऱल्
कार्ऱिनि लेमलैय् पेऱ्ऱिनिले
एऱ्ऱिनि ले पयन् ईन्दिडुङ् गालि
इन्नतिनि ले उयर् नाडु— इन्दप (पारुक्) 7

तोट्टत्ति लेमरक् कूट्टत्तिले— कनि
ईट्टत्ति लेपयिर् ऊट्टत्तिले
तेट्टत्ति ले अडङ् गाद नदियिन्
शिऱप्पिनि ले उयर् नाडु— इन्दप् (पारुक्) 8

बारद देशम्—5

राग— पुन्नाग वराळि

पल्लवि (टेक)

बारद देशमॅन्ऱु पॅयर् शॊल्लुवार्— मिडिप्
पयङ् गॊल्लु वार्तुयर्प् पहैबॅल्लु वार्

शरणङ्गळ् (चरण)

वॅळ्ळिप् पनिमलैयिन् मोदुलवु वोम्— अडि
मेलैक् कडल्मुळुदुम् कप्पल विडुवोम्
पळ्ळित् तलमनैत्तुम् कोयिल् शॅय्दु वोम्, अॅङ्गळ्
बारद देशमॅन्ऱु तोळ् कॊट्टुवोम् (बारद) 1

उदारता में, चित्त की दृढ़ता में, मन की शीतलता में, मति (बुद्धि) की सूक्ष्मता में, सत्य में न चूकनेवाले पंडितों (कवियों) की भावना में उत्कृष्ट देश है यह। (संसार०) ५ याग-यज्ञादि में, तपस्या की उग्रता में, अपूर्व योग में, विविध भोगों में, हृदय में ईश्वर-भक्ति रखनेवाले भक्तों की कृपा में, उत्कृष्ट देश है वह। (संसार०) ६ नदी, स्रोत, मलय-पवन, पर्वत-सम्पत्ति, हल, लाभकारी पशु —इन सबमें उन्नत है यह देश। ७ (संसार०) यह देश उपवन-उद्यान, वृक्ष-समूह, फल-बहुलता, शस्य-समृद्धि (सबप्रकार से) अप्रमेय नदी-श्री —इनमें बढ़ा-चढ़ा है यह। —इस (संसार०) ८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जिनके उर में (अनुपम) दृढ़ता औ (स्वभाव में) उदारता।
मन में शीतलता (की सरिता), मति में सूक्ष्मा विवेचिता ॥ ५ ॥
ऐसे पंडित सत्यनिष्ठ कवियों का (यह गुरुद्वारा है)।
मंजु मुकुट-मणि सब देशों में भारतवर्ष हमारा है ॥ टेक ॥

यह यज्ञों की (पावन वेदी), यह तपस्वियों का (आश्रम)।
कर्मयोग का सुख समृद्धि औ, भक्ति-ज्ञान का है संगम ॥ ६ ॥
ईश्वर के प्रति भक्ति, यही भक्तों का सदा सहारा है।
मंजु मुकुट-मणि सब देशों में भारतवर्ष हमारा है ॥ टेक ॥

सरिताएँ हैं (सुधा-वाहिनी), (शीतल-जल-पूरित) सोते।
मलय-सुवासित पवन, समुन्नत पर्वत (मन का मल धोते) ॥ ७ ॥
(विकसित) कृषि, उपकारी पशुधन, (भूपर स्वर्ग उतारा है)।
मंजु मुकुट-मणि सब देशों में भारतवर्ष हमारा है ॥ टेक ॥

यहाँ (मनोरम) वन-उपवन हैं, विटप लदे फल-फूलों से।
उर्वर कृषि है, सरितायें बहतीं टकरातीं कूलों से ॥ ८ ॥
प्रकृति-प्रिया का प्रिय क्रीडांगण (विधि ने इसे सँवारा है)।
मंजु मुकुट-मणि सब देशों में भारतवर्ष हमारा है ॥ टेक ॥

भारत देश—५

दुख-वैरी पर विजय दिलाता (दुनिया में सरनाम है)।
भय-भंजक, आलस्य-विनाशक, प्यारा भारत नाम है ॥ टेक ॥

रजत-शुभ्र पर्वत-माला पर विचरण कर सुख पायेंगे।
वृहत् हिन्द पश्चिम सागर पर हम जलयान चलायेंगे ॥
विद्यालय के सभी स्थलों को देवालय बनवायेंगे।
भारत देश हमारा, यह कह मस्तक (उच्च) उठायेंगे ॥ १ ॥
दुख-वैरी पर विजय दिलाता (दुनिया में सरनाम है)।
भय-भंजक, आलस्य-विनाशक, प्यारा भारत नाम है ॥ टेक ॥

भारत देश—५

जो भारत देश का नाम लेते हैं, वे आलस्य-भय का हनन करेंगे तथा दुख-वैरी को जीत लेंगे। (टेक) हम रजत शुभ्र पर्वत पर सैर करेंगे। (पद-) तल में रहनेवाले पश्चिमी सागर पर हम सर्वत्र जलयान चलायेंगे। हम पाठशालाओं को देवालय बना लेंगे। 'यह हमारा भारत देश है' —यह कहते हुए हम (गर्व से) कंधे ठोकेंगे। (भारत०) १ हम सिंहल द्वीप (जाने) के लिए सेतु बना लेंगे। सेतु को उलट जाकर

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शिङ्गळत् तीविनुक्कोर् पालम् अमैप्पोम्
शेदुवै मेटुरुत्ति बीदि शमैप्पोम्
वङ्गत्तिन् ओडि वरुम् नीरिन् मिहैयाल्
मैयत्तु नाडुहळिल् पयिर्शेय् हुवोम् (बारद) 2
वॅट्टुक् कनिहळ् शॅय्दु तङ्गम् मुदलाम्
वेरु पलपॊरुळुम् कुडैन् दॅडुप्पोम्
अॅट्टुत् तिशैहळिलुञ् शॅन्रिवै विर्रे
अॅण्णुम् पॊरुळनैत्तुम् कॊण्डु वरुवोम् (बारद) 3
मुत्तुक् कुळिप्पदॊरु तॅन् कडलि ले;
मॊय्त्तु वणिहर् पल नाट्टिनर् वन्दे
नत्ति नमक्किनिय पॊरुळ् कॊणर्न्दु
नम्मरुळ् वेण्डुवदु मेर्करयिले (बारद) 4
सिन्दु नदियिन् मिशै निलविनिले,
शेरनन् नाट्टिळम् पण्गळुडने
शुन्दरत् तॅलुङ्गिनिर् पाट्टिशैत्तुत्
तोणिह ळोट्टिविळै याडि वरु वोम् (बारद) 5
गङ्गै नदिप्पुरत्तुक् कोदुमैप् पण्डम्
काविरि वॅर्रि लैक्कु मारु कॊळ्ळुवोम्
शिङ्ग मराट्टियर् तम् कविदै कॊण्डु
शेरत्तुत् तन्दङ्गळ् परिशळिप्पोम् (बारद) 6
काशि नगर्प्पुलवर् पेशुम् उरैतान्
काञ्जियिल् केट्पदर् कोर् करुवि शॅय्वोम्
राशपुत् तानत्तु बीरर् तमक्कु
नल्लियर् कन्नडत्तुत् तङ्गम् अळिप्पोम् (बारद) 7

पथों का निर्माण करा लेंगे। हम वंग (-सागर) में बह जानेवाले (अधिक) जल से (जलका उपयोग करके) मध्य देश में कृषि करेंगे। (भारत०) २ हम खानें खोदकर स्वर्ण आदि खनिज पदार्थों को निकालेंगे। हम आठों दिशाओं में उन्हें ले जाकर बेचेंगे और मनचाही वस्तुओं को लाएँगे। (भारत०) ३ मोतियों के लिए गोताखोर जहाँ गोता लगाते हैं, वह स्थान दक्षिणी सागर के तट पर है। अनेक देशों के व्यापारी आते हैं, और हमारी इच्छित चीजें देकर, वे हमारी कृपा के मुखापेक्षी बने रहते हैं। यह पश्चिमी सागर तट पर होता है। (भारत०) ४ हम सिंधु नदी में, चाँदनी में, चेर (केरल) देश की तरुण नारियों के संग, सुंदर तॅलुगु गीत गाते हुए नावें चलायेंगे और विहार करेंगे। (भारत०) ५ हम कावेरी नदी के किनारों के प्रदेश के पान के पत्तों के बदले में गंगा की कछार के गेहूँ के पदार्थों को, ले आयेंगे। हम केसरी (सम) मरहठोंकी कविताओं को ग्रहण करेंगे और हम उनके बदले चेर नाडु के हाथी-दाँत की कला-कृतियों को पुरस्कार-स्वरूप देंगे। (भारत०) ६ हम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लंका की यात्रा करने को (विस्तृत) सेतु बनायेंगे।
सेतु समुन्नत हुए कि पथ पर पथ निर्माण करायेंगे॥
बंगदेश में बहनेवाले जल पर बाँध बँधायेंगे।
उसके जल से मध्य देश में (अमित) अन्न उपजायेंगे॥ २॥
दुख-वैरी पर विजय दिलाता (दुनिया में सरनाम है)।
भय-भंजक, आलस्य-विनाशक, प्यारा भारत नाम है॥ टेक॥
उत्पादन के लिए अपरिमित खानों को खुदवायेंगे।
जिनसे खनिज पदार्थ निरन्तर स्वर्ण-रत्न हम पायेंगे॥
आठ दिशाओं के देशों में उन्हें बेचने जायेंगे।
मनचाही वस्तुएँ अनेकों उनके बदले लायेंगे॥ ३॥
दुख-वैरी पर विजय दिलाता (दुनिया में सरनाम है)।
भय-भंजक, आलस्य-विनाशक, प्यारा भारत नाम है॥ टेक॥
दक्षिण-सागर-तट पर गोताखोर अनेकों जाते हैं।
गोता लगा अगम सागर से मंजुल मोती लाते हैं॥
सिन्धु-पश्चिमी-तट पर देशों से व्यापारी आते हैं।
विविध पदार्थ हमें देकर वे कृपा हमारी पाते हैं॥ ४॥
दुख-वैरी पर विजय दिलाता (दुनिया में सरनाम है)।
भय-भंजक, आलस्य-विनाशक, प्यारा भारत नाम है॥ टेक॥
(कलकल-छलछल बहती सुन्दर) सिन्धु नदी लहराती हो।
(चारु चन्द्र की चपल) चाँदनी (जल-थल में) मुसकाती हो॥
मलवारी तरुणी, नावों पर गीत तेलुगू गाती हों।
बैठ नाव पर विचरें चौदिक् एकराष्ट्र-छबि छाती हो॥ ५॥
दुख-वैरी पर विजय दिलाता (दुनिया में सरनाम है)।
भय-भंजक, आलस्य-विनाशक, प्यारा भारत नाम है॥ टेक॥
कावेरी के तट पर पनपे पानों को दे आयेंगे।
गंगा के कछार के गेहूँ बदले में हम लायेंगे॥
सिंह-मराठों के गायन में झूम, वीररस हम लेंगे।
चेरनाडु की गज-रद कृतियाँ उन्हें पुरस्कृत कर देंगे॥ ६॥
दुख-वैरी पर विजय दिलाता (दुनिया में सरनाम है)।
भय-भंजक, आलस्य-विनाशक, प्यारा भारत नाम है॥ टेक॥
दूरश्रवण यंत्र निर्मित कर कांची-नगरी के वासी।
सुन लें विद्वानों का भाषण उनका जो बसते काशी॥
जो (बल-विक्रम-पूर्ण) वीर-वर बसे राजपूताने में।
कर्णाटक का सोना उनको देंगे हम नज़राने में॥ ७॥
दुख-वैरी पर विजय दिलाता (दुनिया में सरनाम है)।
भय-भंजक, आलस्य-विनाशक, प्यारा भारत नाम है॥ टेक॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पट्टिनिल् आडैयुम् पञ्जिल् उडैयुम्
पण्णि मलैहळैन वोदि कुविप्पोम्
कट्टित् तिरवियङ्गळ् कॊण्डु वरुवार्
काशिनि वणिहरुक्कु अवै कॊडुप्पोम् (बारद) 8

आयुदम् शॆय्वोम् नल्ल काहिदम् शॆय्वोम्
आलैहळ् वैप्पोम् कल्विच् चालैहळ् वैप्पोम्
ओयुदल् शॆय्योम् तलैशायुदल् शॆय्योम्
उण्मैहळ् शॊल्वोम् पल वण्मैहळ् शॆय्वोम् (बारद) 9

कुडैहळ् शॆय्वोम् उऴु पडैहळ् शॆय्वोम्;
कोणिहळ् शॆय्वोम् इरुम् बाणिहळ् शॆय्वोम्;
नडैयुम् परप्पुमुणर् वण्डिहळ् शॆय्वोम्;
ञालम् नडुङ्ग वरुम् कप्पल्हळ् शॆय्वोम् (बारद) 10

मन्दिरम् कर् पोम् विनैत् तन्दिरम् कर् पोम्;
वानैयळप्पोम् कडल् मीनै यळप् पोम्;
शन्दिर मण् डलत्तियल् कण्डु तॆळिवोम्;
शन्दितॆरु पॆरुक्कुम् शात्तिरम् कर्पोम् (बारद) 11

काव्यम् शॆय्वोम् नल्ल काडु वळर्प्पोम्
कलैवळर्प् पोम् कॊल्लरुलै वळर्प्पोम्;
ओवियम् शॆय्वोम् नल्ल ऊशिहळ् शॆय्वोम्;
उलहत् तॊळि लनैत्तु मुवन्दु शॆय्वोम् (बारद) 12

काशी नगरी के विद्वानों के भाषण को कांची में सुन सकें-- हम एक यंत्र ऐसा बना लेंगे। हम राजपूताने के वीरों को श्रेष्ठ कर्नाटक प्रदेश का स्वर्ण भेंट करेंगे। (भारत०) ७ हम रेशम की पोशाकें तथा रुई के वस्त्र बनायेंगे और गली-गली में पर्वतों के समान उनके ढेर लगा देंगे। विश्व के व्यापारी अन्य मूल्यवान पदार्थ लायेंगे और (उनके बदले में) हम उन्हें ये वस्त्र देंगे। (भारत०) ८ हम हथियार बनायेंगे, श्रेष्ठ काग़ज़ बनायेंगे। हम उद्योगशाला स्थापित करेंगे; पाठशालाएँ स्थापित करेंगे। हम कभी (सुस्ती से) अकर्मण्य नहीं हो जायेंगे। थकावट से नहीं लेट जाएँगे। सत्य ही बोलेंगे और अनेक चमत्कार करेंगे। (भारत०) ९ हम छत्र बनायेंगे, हल के साधनों का निर्माण करेंगे। बोरे बनायेंगे तथा लोहे की कीलें बनायेंगे। हम ऐसे यान बनायेंगे जो चल सकेंगे, जो उड़ सकेंगे। हम ऐसे जहाज़ भी निर्मित करेंगे, जो दुनिया को कँपाते हुए (घूमकर लौट) आयेंगे। (भारत०) १० हम मंत्र सीखेंगे, तंत्र सीखेंगे। हम आकाश को मापेंगे तथा समुद्र की मछलियों को भी गिनेंगे। हम चंद्र-मंडल के गठन को जान लेंगे। साथ-साथ हम गली-चौराहा आदि साफ़ करने के शास्त्र को भी सीखेंगे। (भारत०) ११ हम काव्य रचेंगे तथा अच्छे वन भी उगा लेंगे। हम कला का संवर्धन करेंगे, साथ-साथ लोहार की भट्ठी को जलाते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सूती और रेशमी (सुन्दर) वस्त्र अपार बनायगे।
गली-गली में पर्वत के सम उनके ढेर लगायेंगे॥
दुनिया के कोने-कोने से व्यापारी-गण आयेंगे।
उनके हाथों वस्त्र बेच अगणित निधियाँ हम पायेंगे॥ ८॥

दुख-वैरी पर विजय दिलाता (दुनिया में सरनाम है)।
भय-भंजक, आलस्य-विनाशक, प्यारा भारत नाम है॥ टेक॥

हथियारों को, श्रेष्ठ काग़ज़ों को हम (स्वयं) बनायेंगे।
उद्योगालय संस्थापित कर विद्यालय खुलवायेंगे॥
नहीं थकेंगे कभी, निकम्मापन को पास न लायेंगे।
बोलेंगे हम सत्य, करामातें करके दिखलायेंगे॥ ९॥

दुख-वैरी पर विजय दिलाता (दुनिया में सरनाम है)।
भय-भंजक, आलस्य-विनाशक, प्यारा भारत नाम है॥ टेक॥

छत्र बनायेंगे, हल आदिक (कृषि के यंत्र) बनायेंगे।
बोरे, और लौह की कीलें बना-बना सुख पायेंगे॥
चलनेवाले उड़नेवाले यान बनाते जायेंगे।
जलचारी जलयान बनाकर विश्व कँपाते आयेंगे॥ १०॥

दुख-वैरी पर विजय दिलाता (दुनिया में सरनाम है)।
भय-भंजक, आलस्य-विनाशक, प्यारा भारत नाम है॥ टेक॥

मंत्र सीखकर, तंत्र सीखकर नापें नभ की ऊँचाई।
गिनें जलधि के जन्तु, थाह लें जल की कितनी गहराई॥
शशिमण्डल में जाकर देखें उसकी रचना-(सरसाई)।
गली, चौरहे, गलियारे, स्वच्छता चौतरफ़ हो छाई॥ ११॥

दुख-वैरी पर विजय दिलाता (दुनिया में सरनाम है)।
भय-भंजक, आलस्य-विनाशक, प्यारा भारत नाम है॥ टेक॥

(रसमय) काव्य बनायेंगे हम अच्छे वन उपजायेंगे।
ललित-कला का संवर्धन कर, लौह-शिल्प सिखलायेंगे॥
चित्र बनायेंगे, (सीने की) सुइयाँ सुघर बनायेंगे।
सोत्साह जग के उद्योगों में प्रवीण हो जायेंगे॥ १२॥

दुख-वैरी पर विजय दिलाता (दुनिया में सरनाम है)।
भय-भंजक, आलस्य-विनाशक, प्यारा भारत नाम है॥ टेक॥

रखेंगे। हम चित्र बनायेंगे तथा साथ ही में अच्छी सुइयाँ भी बनेंगी। हम विश्व के सारे उद्योग करेंगे तथा सोत्साह करेंगे। (भारत०) १२ जातियाँ दो हैं, इनके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शादि इरण्डॊळ्ळिय वेऱिल्लै यॆन्ऱे
तमिळ् महळ् शॊल्लिय शॊल् अमिळ्द मॆन्बोम्
नीदि नॆऱि यिनिन्ऱु पिऱर्क्कु दवुम्
नेर्मैयर् मेलवर्; कीळवर् मऱ्ऱोर् (बारद) 13

ऍङ्गळ् नाडु—6

राग— भूपाल

मन्नुम् इमयमलै यॆङ्गळ् मलैये, मानिल मीदिदु पोऱ्पिऱि दिलैये !
इन्नरु नीर्क् कङ्गै यारॆङ्गळ् याऱे, इङ्गिदन् माण्बिऱ् कॆदिरॆदु वेऱे ?
पन्नरुम् उब निडदनू लॆङ्गळ् नूले, पार्मिशै येदॊरु नूल् इदु पोले ?
पॊन्नॊळिर् बारदना डॆङ्गळ् नाडे, पोऱ्ऱुवम् इःदै ऍमक्किलै ईडे 1
मारद वीरर् मलिन्द नन्नाडु, मामुनिवोर् पलर् वाळ्न्द पॊन्नाडु
नारद गान नलन्दिहळ् नाडु, नल्लन यावैयुम् नाडुरु नाडु
पूरण ञानम् पॊलिन्द नन्नाडु, पुत्तर् पिरानरुळ् पॊङ्गिय नाडु
बारदनाडु पळम् बॆरुम् नाडे, पाडुवम् इःदै ऍमक्किलै ईडे 2

इन्नल् वन् दुऱ्ऱिडुम् बोददऱ् कञ्जोम्
एळैयराहि इनि मण्णिल् तुञ्जोम्
तन्नलम् पेणि इऴितॊऴिल् पुरियोम्
ताय्त्तिरु नाडॆनिल् इनिक्कैये विरियोम्
कन्नलुम् तेनुम् कनियुम् इन् पालुम्
कदलियुम् शॆन्नॆलुम् नल्हुम् ऍक् कालुम्
उन्नद आरिय नाडॆङ्गळ् नाडे
ओदुवम् इःदै ऍमक्किलै ईडे 3

अतिरिक्त अन्य (जाति) नहीं है, तमिळ-स्त्री ओबैयार ने यह सूक्ति कही थी। उसको हम अमृत (-सा अमर तथा प्रेरणादायक) वचन मानते हैं। न्याय-मार्ग पर रहकर जो दूसरों की सहायता करते हैं, वे श्रेष्ठ हैं। अन्य नीच हैं (ये ही दो जातियां हैं)। (भारत०) १३

हमारा देश—६

अचल हिमाचल हमारा ही पर्वत है, इस संसार-भर में उसकी टक्कर का और कोई नहीं है। मधुर सुगंध-जला गंगा नदी हमारी नदी है, यहाँ इसकी श्रेष्ठता के सामने और क्या है ? अकथ महिमा-युक्त उपनिषद्-ग्रंथ हमारा ग्रंथ है। पृथ्वी भर में इसके समान अन्य कौन-सा ग्रंथ है ? स्वर्णप्रभ भारत देश हमारा देशहै। हम इसकी महिमा गाते हैं— हमारे समान कोई अन्य (सौभाग्यशाली) नहीं है। १ यह ऐसा देश है, जहाँ महारथी वीरों की बहुतायत है। यह वह स्वर्ण देश है, जिसमें अनेक महान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

न्याय-मार्ग पर चलनेवाले पर-उपकारी सज्जन हैं।
अपकारी, विपरीत मार्ग पर चलते, वही हीन जन हैं॥
"जाति यही दो", —देवि तमिळ की "ओवैयार[1]" बताती है।
उसकी अमृतमयी यह वाणी हमको पथ दिखलाती है॥ १३॥
दुख-वैरी पर विजय दिलाता (दुनिया में सरनाम है)।
भय-भंजक, आलस्य-विनाशक, प्यारा भारत नाम है॥ टेक॥

हमारा देश—६

अचल हिमालय-सा गिरिवर यह किसने कहीं निहारा है।
सुरभित मधुर गंगधारा-सी कहाँ दूसरी धारा है॥
ज्ञानराशि उपनिषत्-सरीखा ग्रंथ जगत में न्यारा है।
(जग में अनुपम भारत ही में विधि ने इन्हें सँवारा है)॥ १॥
भाग्यवान हम भारतवासी, यही हमारा नारा है।
ऐसा देश न, जैसा स्वर्णिम भारत देश हमारा है॥ टेक॥
महारथी वीरों, मुनियों की जन्मभूमि यह भारत है।
नारद से गायक (गुनियों) की जन्मभूमि यह भारत है॥
सभी सद्गुणों का अन्वेषक पूर्ण-ज्ञान-गरिमा-शाली।
बुद्धदेव की करुणा(-धारा) यहीं बही (महिमावाली)॥ २॥
यह प्राचीन विशाल देश है, यही हमारा नारा है।
ऐसा स्वर्णिम देश न, जैसा आर्यावर्त हमारा है॥ टेक॥
संकट आयें (तो सह लेंगे) होंगे हम भयभीत नहीं।
भूशायी, बन दीन, करेंगे (अपनी आयु व्यतीत) नहीं॥
चुप न रहेंगे और मौत से भी न कभी घबरायेंगे।
स्वार्थ-नीचता त्याग, मातृभूमी से मुख न फिरायेंगे॥ ३॥
पय-मधु-फल का ईख-धान्य का भरा यहाँ भंडारा है।
ऐसा कोई देश न, जैसा आर्यावर्त हमारा है॥ टेक॥

मुनि निवास करते हैं। यह नारद-गान-विशिष्ट देश है। यह सभी उत्तमताओं का अन्वेषक है। यहाँ पूर्ण ज्ञान की शोभा है। इसी पर भगवान बुद्धदेव की कृपा उमड़ चली थी। हमारा भारत देश प्राचीन तथा बहुत बड़ा देश है। हम इसकी महिमा गाते हैं। हमारे समान कोई अन्य नहीं है। २ संकट आए तो भी, उससे हम नहीं डरेंगे। अब फिर से दरिद्र होकर हम पृथ्वी पर नहीं सोयेंगे (चुप नहीं रहेंगे या नहीं मरेंगे)। हम स्वार्थ-साधन करके नीच कर्म नहीं करेंगे। मातृभूमि का नाम सुनकर हम अब हाथ (असमर्थता में वा असावधानी में) नहीं खींचेंगे। इक्षु, मधु, फल तथा मधुर दुग्ध, केले तथा श्रेष्ठ धान —ये सब देनेवाला उन्नत आर्यों का यह देश हमारा देश है। हम इसका (महिमा-) गान करते हैं। हमारे समान कोई अन्य नहीं है। ३

---

१ "ओवैयार" एक प्राचीन सिद्ध महिला में रूप में तमिळनाडु में प्रसिद्ध है। नीति की पण्डिता इस देवी का बड़े-बड़े शासक तक सम्मान करते थे। किन्हीं के मत से समय-समय पर ऐसी पाँच "ओवैयार" का अस्तित्व माना जाता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जय बारद—7

शिऱन्दु निन्ऱ शिन्दै योडु, तेयम् नूऱु वॅन्ऱिवळ्
मऱन्द विऱ्न्दन् नाडर् वन्दु, वाऴि शॊन्न पोऴ्दिनुम्
इऱन्दु माण्बु दोर मिक्क, एऴ्मै कॊण्ड पोऴ्दिनुम्
अऱन्द विऱ्क्कि लाडु निऱ्कुम्, अन्ऩै वॅऱ्ऱि कॊऴ्हवे 1

नूऱु कोडि नूल्हळ् शॅय्दु, नूऱु देय वाणर्हळ्
तेऱम् उण्मै कॊळ्ळ इङ्गु, तेडि वन्द नाळिनुम्
माऱु कॊण्डु कल्वि तेय, वण्मै तीर्न्द नाळिनुम्
ईऱु निऱ्कुम् उण्मै यॊन्ऱु इऱैञ्जि निऱ्पळ् वाऴ्हवे 2

विल्लर् वाऴ्वु कुन्ऱि ओय, वीर वाऴुम् मायवे
वॅल्लु ञानम् विञ्जि योर्शॅय्, मॅय्म्मै नूल्हळ् तेयवुम्
शॊल्लुम् इव् वऩैत्तुम् वेऱु, शूऴु नन्मै युन्दर
वल्लनूल् कॅडादु काप्पळ्, वाऴि अन्ऩै वाऴिये 3

तेवरुण्णुम् नन् मरुन्दु, शेर्न्द कुम्बम् ऍन्ऩवुम्
मेवुवार् कडर्कण् उळ्ळ, वॅळ्ळ नीरै ऑप्पवुम्
पाव नॅञ्जिऩोर् निदम्, परित्तल् शॅय्व रायिनुम्
ओबि लाद शॅल्वम् इन्नुम्, ओङ्गुम् अन्ऩै वाऴ्हवे 4

इदन्दरुम् तॊऴिल्हळ् शॅय्दु, इरुम्बु विक्कु नल्हिऩळ्
पदन् दरर् कुरिय वाय, पन्म दङ्गळ् नाट्टिऩळ्

जय भारत—७

यह मेरी माता (मातृभूमि) किसी भी दशा में धर्म से च्युत नहीं होगी— चाहे स्थिति ऐसी हो कि उत्कृष्ट चिंतन के साथ यह सौ-सौ देशों को जीत ले तथा उन देशों के निवासी प्रताप से हाथ धोकर (यहाँ) आएँ और इसकी जय गायें, या यह स्वयं अपना गौरव तथा वीरता खोकर, दरिद्र बने। हमारी ऐसी माता की जय हो। १ सौ करोड़ शास्त्रों की रचना करके सौ-सौ देशों के पंडित अंतिम सत्य के अन्वेषण में यहाँ आयें, उस दिन; और इसके विपरीत यहाँ की विद्या हीन हो जाए, यश लुप्त हो जाए— उस दिन भी, मेरी माता अमर रहनेवाले सत्य वस्तु-स्वरूप परमात्मा की स्तुति करती रहेगी। उस माता की जय हो। २ धनुर्धरों का जीवन निष्प्रभ हुआ। वीरता का खड्ग नष्ट हो गया। विजय (दिलानेवाले) ज्ञान में बढ़े कवियों के रचित सत्य ग्रंथ लुप्त हो गये। मेरी माता उक्त सभी को तथा अन्य सौभाग्य-प्रद ग्रंथों (वेदों) को नाश से बचानेवाली है। जय हो उस माता की। ३ पापी मन वाले लोग देव-योग्य अमृतकलश-सम, और सर्वप्रिय समुद्र की बाढ़ के जल के समान अथाह धन को प्रतिदिन हर ले जायें, उस अक्षय धन से मेरी माता समृद्ध बनी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जय भारत--७

अपनी श्रेष्ठ बुद्धि से शत-शत देशों पर हम जय पायें।
विजित-देश-वासी श्रीहत हो विनत हमारी जय गायें॥
अथवा हम बल-(बुद्धि-पराक्रम-) गौरव से च्युत हो जायें।
दीन-हीन बन आन-बान-मर्यादा विरहित हो जायें॥ १॥
किसी दशा में धर्म-मार्ग से कभी न तोड़ेगी नाता।
जय जय जय जय भारत जननी, जय जय जय भारतमाता॥ टेक॥

अगणित ग्रंथों के निर्माता अगणित देशों के पंडित।
सत्य-मार्ग-अन्वेषक आये, यही भूमि थी गुण-मंडित॥
(कालचक्र के परिवर्तन से) वह सब ज्ञान विलुप्त हुआ।
ज्ञान-सूर्य अज्ञान-घटा में आज अचानक गुप्त हुआ॥ २॥
किन्तु आज भी अमर सत्य प्रभु के ही जन-जन गुण गाता।
जय जय जय जय भारत-जननी जय जय जय भारतमाता॥ टेक॥

धनुर्धरों के धनुर्वरों की प्रत्यंचा निष्पन्द हुई।
वीरवरों की खड्गधार भी आभा कुंठित मन्द हुई॥
दिग्विजयी कवि-ग्रन्थ-विपुल की गौरव-गाथा गुप्त हुई।
(ज्ञानी-प्रोक्त ज्ञान-गाथा की उज्ज्वल आभा लुप्त हुई)॥ ३॥
किन्तु उक्त सौभाग्य बचाने में अब भी सक्षम माता।
जय जय जय जय भारत-जननी जय जय जय भारतमाता॥ टेक॥

चाहे जितना पियें देवगण अमृत (अमल) घटता न कभी।
(जल-बड़वानल से जल जाए) सागर-जल घटता न कभी॥
हरण करें पातकी विदेशी कितना भी, यह अक्षय है।
(दान दिये पर दिन-दिन बढ़ता व्यय होकर भी अव्यय है)॥ ४॥
उस विद्या-धन को पा भारत, धनी बना है (हर्षाता)।
जय जय जय जय भारत जननी, जय जय जय भारतमाता॥ टेक॥

लाभप्रद उद्योग चलाकर जग को सभी पदार्थ दिये।
धर्मों का प्रचार कर सबको मोक्ष (आदि परमार्थ) दिये॥
आज विविध देशों को इसने अनुपम मंत्र प्रदान किया।
जीवन-तथ्यों को समझाकर स्वतंत्रता का प्रेम दिया॥ ५॥
(धर्म-अर्थ की, काम-मोक्ष की, सभी पदार्थों की दाता)।
जय जय जय जय भारत जननी, जय जय जय भारतमाता॥ टेक॥

हुई है। उस माता की जय हो। ४ लाभकारी अनेक उद्योगों को चलाकर उसने संसार को उनका फल दिलाया। उसने मोक्षपददायी अनेक धर्म चलाये। आज विविध

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विदम्बॆरुम् बल् नाट्टि नर्क्कु, वेऱॊ रुण्मै तोऱ्ऱवे
शुदन्दिरत्ति लाशै इन्ऱु तोऱ्ऱि नाळ्मन् वाळ्हवे 5

बारदमादा—8

तर्ज़— तान तननदन तान तननदन तानतन् ताना ने।

मुन्नै इलङ्गै अरक्कर् अळिय, मुडित्त विल् यारुडै विल् ? —ॲङ्गळ्
अन्नै बयङ्करि बारद देबिनल्, आरिय राणियिन् विल् 1
इन्दिर शित्तन् इरण्डु तुण्डाह, ॲडुत्त विल् यारुडै विल्—ॲङ्गळ्
मन्दिरत् तॆय्वम् बारद राणि, वयिरवि तन्नुडै विल् 2
ऒन्ऱु परम्बॊरुळ् नाम् अदन् मक्कळ्, उलहिन्वक् केणि ॲन्ऱे—मिह
नन्ऱु पल्वेदम् वरैन्द कै बारद, नायहि तन्तिरुक् कै 3

शित्तमय मिव्वुलहम् उरुदिनम्
शित्तत्तिल् ओङ्गि विट्टाल्-- तुन्नुबम्
अत्तनैयुम् वॆल्ल लामॆन्ऱु शॊन्न शॊल्
आरिय राणियिन् शॊल् 4

शहुन्दलै पॆऱ्ऱदोर् पिळ्ळैशिङ् गत्तिनैत्, तट्टि विळैयाडि— नन्ऱु
उहन्ददोर् पिळ्ळैमुन् बारद राणि, ऒळियुरप् पॆऱ्ऱ पिळ्ळै 5

काण्डिवम् एन्दि उलहिन्नै बॆन्ऱ्ऱदु
कल्लॊत्त तोळ् ॲवर्तोळ् ?— ॲम्मै
आण्डरुळ् शॆय्बवळ पॆऱ्ऱु वळर्प्पवळ्
आरिय देवियिन् तोळ् 6

शाहुम् बॊळु दिल् इरुशॆविक् कुण्डलम्, तन्द दॆवर् कॊडैक्कै ? शुवैप्
पाहु मॊळियिर् पुलवर्हळ् पोऱ्ऱिडुम्, बारद राणियिन् कै 7
पोर्क्कळत् तेपर ञान मॆय्क् कॊदै, पुहन्ऱ दॆवरुडै वाय् ? पहै
तीर्क्कत् तिऱन्दरु पेरिनळ् बारद, देवि मलर्त्तिरु वाय् 8
तनदै इन्दिऱत् तान् अरशाट्चियुम्, तैयलर् तम्मुऱवुम्— इन्नि
इन्द उलहिल् विरुम्बुहि लेन् ॲन्ऱ्ऱदु, ॲम् अन्नै शॆय्द उळ्ळम् 9

देशों को एक अन्य तथ्य को दरसाते हुए उसने स्वतंत्रता का प्रेम सिखा दिया। उस माता की जय हो। ५

भारतमाता—८

पहले जिस धनु ने लंका के राक्षसों को मिटा दिया, वह किसका चाप है ? वह भयंकरी माता भारतदेवी, श्रेष्ठ आर्य रानी का धनु है। १ इंद्रजित् को दो टुकड़ों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भारतमाता—८

जिसने लंकापति की (अगणित) सेना का विध्वंस किया।
भयंकरी उस आर्यमातु का वह धनु भारतमाता का ॥ १ ॥
इन्द्रविजेता मेघनाद के थे जिसने दो खंड किये।
मंत्र-चतुर माता का वह धनु, वह धनु भारतमाता का ॥ २ ॥
एक मात्र परमेश्वर सब का, सब उसकी सन्तान सदा।
अंधकूप सांसारिक दुख है, कहते वेद-पुरान सदा ॥
उन वेदों का रचनेवाला बोलो नाम विधाता का।
धन्य हस्त भारत जननी का, कर वह भारतमाता का ॥ ३ ॥
चिन्मय है यह विश्व, सुदृढ़ चिन्तन से सारे दुख जीतो।
यह है कथन आर्यदेवी का (प्यारी) भारतमाता का ॥ ४ ॥
पीट-पीटकर खेल खेलता रहा सिंह के छौनों से।
शकुंतला-सुत-भरत पुत्र था प्यारी भारतमाता का ॥ ५ ॥
धारण कर गांडीव धनुष, वह वज्र-भुजाएँ थीं किसकी ?।
निखिल लोक जिसने जीते, वह वज्र-भुजाएँ थीं किसकी ? ॥
अहो ! स्वामिनी, आर्यमहारानी वह मेरी माता का।
विश्वपालिका, वरद-स्वामिनी, वह कर भारतमाता का ॥ ६ ॥
दे डाले कानों के कुंडल, जो न मौत से भीत हुआ।
मधुमय भाषा में जो वर्णित, वह कर भारतमाता का ॥ ७ ॥
जिससे रण में सत्य-ज्ञान-मय गीता की वाणी गूँजी।
शत्रुघातिनी, शक्तिदायिनी, वह मुख, भारतमाता का ॥ ८ ॥
मान पितु-वचन, राज्य, भामिनी-सुख को तृण-सम त्याग दिया।
भीष्म-प्रतिज्ञा की जिस मन ने, वह मन भारतमाता का ॥ ९ ॥

में काटा था जिस धनु ने, वह धनु किसका है ? हमारी मंत्रणा-चतुर देवी भारत रानी भैरवी का धनु है। २ परमात्मा एक है। हम उसकी संतानें हैं। संसार सुख-कूप है। यह कहनेवाले श्रेष्ठ वेदों का रचयिता हस्त किसका है ? यह भारत-नायिका का श्रीहस्त है। ३ यह संसार चिन्मय है। हमारे चित्त में विचार दृढ़ रूप से विकसित हो गया, तो सारे दुखों को जीता जा सकता है। यह कथन आर्य राज्ञी (भारतमाता) का वचन है। ४ शकुंतला (-दुष्यंत) का पुत्र सिंह को पीटकर उससे खेलते हुए बहुत आनन्द पाता था। वह पुत्र भारत-राज्ञी का शोभा के साथ जनाया पुत्र है। ५ गांडीव धनुष धारण करके चट्टान-सम भुजाओं ने लोक को जीता था। वे भुजाएँ किसकी हैं ? वे हमारी पालनकर्त्री वरदायनी, जननी, स्वामिनी, आर्यदेवी की भुजाएँ हैं। ६ मरते समय किसके दानी हाथों ने दोनों कर्ण-कुंडलों का दान दिया ? वे हाथ उस भारतरानी के हैं, जिसकी महिमा चासनी-सम मधुर भाषा में कवि लोग गाते हैं। ७ युद्धस्थल में जिस मुख ने परा ज्ञान की सत्य वाणी, गीता का उपदेश दिया था, वह शत्रु-घातिनी, शक्ति-दायिनी भारतदेवी का कमल-मुख है। ८ 'पिता को सुख देने के निमित्त इस संसार में शासन तथा स्त्री-भोग को नहीं चाहूँगा'—

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्बु शिवम् उल हत्तुयर् यावैयुम्, अन्बिनिर् पोहुम् ऍन्ऱे— इङ्गु
मुन्बु मॊऴिन्दुल हाण्डदोर् बुत्तन्, मॊऴि ऍङ्गळ् अन्ऩै मॊऴि 10
मिदिलै ऍरिन्दिड वेदप् पॊरुळै, विऩवुम् शऩहन् मदि— तन्
मदियिनिर् कॊण्डदै निन्ऱु मुडिप्पदु, वल्लनम् अन्ऩै मदि 11
वॆय्विहच् चाहुन्दल मॆऩुम् नाडहम्, शॆय्द दॆवर् कविदै ? अयन्
शॆय्व दऩैत्तिन् कुऱिप्पुणर् बारद, देवि अरुट् कविदै 12

ऍङ्गळ् ताय्—9

तर्ज़— कावडिच् चिन्दु "आऱुमुह वडि वेलवने" का

तॊन्ऱु निहऴ्न्द दऩैत्तुम् उणर्न्दिडु, शूऴ्हलं वाणर्हळुम्— इवळ्
ऍन्ऱु पिऱन्दवळ् ऍन्ऱुणराद, इयल्बिऩ ळाम् ऍङ्गळ् ताय् 1
यारुम् वहुत्तऱ् करिय पिरायत्त, ळायिनु मेयॆङ्गळ् ताय्— इन्दप्
पारुळ् ऍन् नाळुमोर् कऩ्निहै ऍऩ्ऩप्, पयिऩ्ऱिडुवाळ् ऍङ्गळ् ताय् 2
मुप्पदु कोडि मुहमुडै याळ् उयिर्, मॊय्म्बुर् वॊऩ्ऱुडैयाळ्—इवळ्
शॆप्पु मॊऴि पदि नॆट्टुडैयाळ् ऍनिर्, चिन्दऩै ऍऩ्ऱुडै याळ् 3
नाविऩिल् वेद मुडैयवळ् कैयिल्, नलन्दिहऴ् वाळुडै याळ्—तऩै
मेविऩर्क् किऩ्ऩरुळ् शॆय्बवळ् तीयरै, वीट्टिडु तोळुडैयाळ् 4
अऱुपदु कोडि तडक्कै हळालुम्, अऱङ्गळ् नडत्तुवळ् ताय्— तऩैच्
चॆऱुबदु नाडि वऱु बवरैत् तुहळ्, शॆय्दु किडत्तुवळ् ताय् 5
बूमियिऩुम् पॊरै मिक्कुडै याळ्पॆरुम्, बुण्णिय नॆञ्जिऩळ् ताय्— ऍऩिल्
तोमिऴैप्पार्मुन् निन्ऱिडुङ् गाऱ् कॊडुन्, दुर्गै यऩैयवळ् ताय् 6
ऒऱ्ऱैच् चडैमदि वैत्त तुऱवियैक्, कैतॊऴुवाळ् ऍङ्गळ् ताय्— कैयिल्
ऒऱ्ऱैत् तिहिरि कॊण् डेऴुल हाळुम्, ऒरुवऩैयुम् दॊऴुबाळ् 7

यह प्रतिज्ञा करनेवाले (भीष्म) का मन मेरी माता का मन है। ९ प्रेम शिव है। सारा सांसारिक दुख प्रेम से दूर हो जायगा। ऐसा उपदेश देकर बुद्ध ने सर्वप्रथम विश्व पर अपना प्रेमस्वरूप शासन किया। उनकी वाणी मेरी माता की ही वाणी है। १० जब मिथिला जल रही थी तब जनक वेदार्थ का अन्वेषण कर रहे थे। उनकी मति मेरी माता की ही मति है, जो मन की इच्छा को पूर्ण कर सकती है। ११ दिव्य शाकुंतलम्, नाटक, रचा किसके कवित्व ने ? जो ब्रह्मा के समस्त कृत्यों के अर्थ को जानती है, उसी भारतमाता के वरद कवित्व ने। १२

मेरी माता—९

वे बहुत ही प्रबुद्ध कवि भी, जो प्राचीन काल की सभी बातों को जान सकते हैं, यह नहीं समझ सकते कि इसका जन्म कब हुआ। ऐसी अगम्य स्थिति है हमारी माता की। १

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सांसारिक दुःखों का नाशक, प्रेम-रूप प्रभु, लोकजयी।
सर्वप्रथम संदेश बुद्ध का, वाणी भारतमाता की ॥ १० ॥

मिथिला जलती हो इस पर भी आत्मज्ञान में लीन जनक।
ऐसी मनोकामना-पूरक मति है भारतमाता की ॥ ११ ॥

शकुंतला-नाटक निर्मात्री, विधि-विधान की जो ज्ञात्री।
कविता की वरदात्री प्रतिभा, प्रतिभा भारतमाता की ॥ १२ ॥

मेरी माता—९

भूत-भविष्यत्-वर्तमान के जो थे सदा पूर्ण ज्ञाता।
जिसका जन्म न जान सके वे, ऐसी है मेरी माता ॥ १ ॥

मेरी माता के वय का अनुमान न कोई कर पाता।
चिर प्राचीन किन्तु अब भी है चिरबाला मेरी माता ॥ २ ॥

तीस कोटि मुख, प्राण एक है, अट्ठारह भाषाएँ हैं।
सबके किन्तु विचार एक हैं, ऐसी है मेरी माता ॥ ३ ॥

मुख में वेद, खड्ग है कर में, भुजबल अमित अपार लिये।
शरण-दायिनी दुष्ट-घातिनी ऐसी है मेरी माता ॥ ४ ॥

कोटि-कोटि निज सुदृढ़ करों से करे धर्म की जो रक्षा।
आगत-अधर्मियों को धूल चटानेवाली है माता ॥ ५ ॥

धरती-सी है क्षमाशील वह, पावन-भाव-भरा मन है।
दुष्ट जनों के लिए चंडिका ! भयंकरी ! मेरी माता ॥ ६ ॥

एक जटाधारी शंकर या एक चक्रधारी हरि का।
दोनों का बस आदर करती, ऐसी है मेरी माता ॥ ७ ॥

मेरी माता की आयु का कोई अनुमान नहीं कर सकता। तो भी इस विश्व-भर में वह बालिका के समान क्रीड़ा-रत रहती है। ऐसी है मेरी माँ। २ वह तीस करोड़ (अब साठ करोड़) मुखों वाली है। तो भी उसका सशक्त प्राण (आत्मा) एक ही है। इसकी बोलियाँ (भाषाएँ) अठारह हैं, तो भी वह एक ही चिंतनवाली है। ३ उसकी गोद पर वेद है और वह खड्ग-हस्ता है। अपने आश्रितों का उपकार करनेवाली वह दुर्जनों का वध करने का भुज-बल रखती है। ४ साठ (एक सौ बीस) करोड़ हाथों से धर्माचरण करती है हमारी माता। हमारी माता उसकी हानि करने के विचार से आनेवालों को धूल बनाकर भूमि पर बिखेर देगी। ५ भू-देवी से भी वह अधिक सहनशील है। उसका मन पुण्य भावों से भरा-पुरा है। तो भी वह जब अन्याय करनेवालों के सामने खड़ी रहती है, तब वह भयंकर दुर्गा बन जाती है। ६ एक जटा-धारी चन्द्रशेखर योगी के सामने हमारी माता हाथ जोड़ती है (शिव को भजती है।) जो हाथ में एक चक्र लेकर सातों लोकों का शासन कर रहे हैं, उन (विष्णु) को भी वह नमस्कार करेगी। ७ वह योग-संसिद्ध है तथा जानती है कि सत्य अद्वय है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्बु शिवम् उल हत्तुयर् यावैयुम्, अन्बिनिर् पोहुम् ऍन्ऱे— इङ्गु
मुन्बु मॊऴिन्दुल हाण्डदोर् बुत्तन्, मॊऴि ऍङ्गळ् अन्नै मॊऴि 10
मिदिलै ऍरिन्दिड वेदप् पॊरुळै, विन्नवुम् शन्नहन् मदि— तन्
मदियिनिर् कॊण्डदै निन्ऱु मुडिप्पदु, वल्लनम् अन्नै मदि 11
वॆय्विहच् चाहुन्दल मॆन्नुम् नाडहम्, शॆय्द दॆवर् कविदै ? अयन्
शॆय्व दन्नैत्तिन् कुरिप्पुणर् बारद, देवि अरुट् कविदै 12

ऍङ्गळ् ताय्—9

तर्ज़— कावडिच् चिन्दु "आऱुमुह वडि वेलवने" का

तॊन्ऱु निहऴ्न्द दन्नैत्तुम् उणर्न्दिडु, शूऴ्हलै वाणर्हळुम्— इवळ्
ऍन्ऱु पिऱन्दवळ् ऍन्ऱुणराद, इयल्बिन् ळाम् ऍङ्गळ् ताय् 1
यारुम् वहुत्तर् करिय पिरायत्त, ळायिनु मेयॆङ्गळ् ताय्— इन्दप्
पारुळ् ऍन् नाळुमोर् कन्निहै ऍन्नप्, पयिन्ऱिडुवाळ् ऍङ्गळ् ताय् 2
मुप्पदु कोडि मुहमुडै याळ् उयिर्, मॊय्म्बुर् वॊन्ऱुडैयाळ्—इवळ्
शॆप्पु मॊऴि पदि नॆट्टुडैयाळ् ऍनिर्, चिन्दनै ऍन्ऱुडै याळ् 3
नाविनिल् वेद मुडैयवळ् कैयिल्, नलन्दिहऴ् वाळुडै याळ्—तन्नै
मेविनर्क् किन्नरुळ् शॆय्बवळ् तीयरै, वीट्टिडु तॊळुडैयाळ् 4
अऱुपदु कोडि तडक्कै हळालुम्, अऱङ्गळ् नडत्तुवळ् ताय्— तन्नैच्
चॆऱुबदु नाडि बऱु बवरैत् तुहळ्, शॆय्दु किडत्तुवळ् ताय् 5
बूमियिनुम् पॊरै मिक्कुडै याळ्पॆरुम्, बुण्णिय नॆञ्जिनळ् ताय्— ऍनिल्
तोमिऴैप्पारमुन् निन्ऱिडुङ् गाऱ् कॊडुन्, दुर्गै यनैयवळ् ताय् 6
ऒऱ्ऱैच् चडैमदि वैत्त तुऱवियैक्, कैतॊऴुवाळ् ऍङ्गळ् ताय्— कैयिल्
ऒऱ्ऱैत् तिहिरि कॊण् डेऴुल हाळुम्, ऒरुवनैयुम् दॊऴुवाळ् 7

यह प्रतिज्ञा करनेवाले (भीष्म) का मन मेरी माता का मन है। ८ प्रेम शिव है। सारा सांसारिक दुख प्रेम से दूर हो जायगा। ऐसा उपदेश देकर बुद्ध ने सर्वप्रथम विश्व पर अपना प्रेमस्वरूप शासन किया। उनकी वाणी मेरी माता की ही वाणी है। १० जब मिथिला जल रही थी तब जनक वेदार्थ का अन्वेषण कर रहे थे। उनकी मति मेरी माता की ही मति है, जो मन की इच्छा को पूर्ण कर सकती है। ११ दिव्य शाकुंतलम्, नाटक, रचा किसके कवित्व ने ? जो ब्रह्मा के समस्त कृत्यों के अर्थ को जानती है, उसी भारतमाता के वरद कवित्व ने। १२

मेरी माता—९

वे बहुत ही प्रबुद्ध कवि भी, जो प्राचीन काल की सभी बातों को जान सकते हैं, यह नहीं समझ सकते कि इसका जन्म कब हुआ। ऐसी अगम्य स्थिति है हमारी माता की। १

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सांसारिक दुःखों का नाशक, प्रेम-रूप प्रभु, लोकजयी।
सर्वप्रथम संदेश बुद्ध का, वाणी भारतमाता की ॥ १० ॥

मिथिला जलती हो इस पर भी आत्मज्ञान में लीन जनक।
ऐसी मनोकामना-पूरक मति है भारतमाता की ॥ ११ ॥

शकुंतला-नाटक निर्मात्री, विधि-विधान की जो ज्ञात्री।
कविता की वरदात्री प्रतिभा, प्रतिभा भारतमाता की ॥ १२ ॥

मेरी माता—९

भूत-भविष्यत्-वर्तमान के जो थे सदा पूर्ण ज्ञाता।
जिसका जन्म न जान सके वे, ऐसी है मेरी माता ॥ १ ॥

मेरी माता के वय का अनुमान न कोई कर पाता।
चिर प्राचीन किन्तु अब भी है चिरबाला मेरी माता ॥ २ ॥

तीस कोटि मुख, प्राण एक है, अट्ठारह भाषाएँ हैं।
सबके किन्तु विचार एक हैं, ऐसी है मेरी माता ॥ ३ ॥

मुख में वेद, खड्ग है कर में, भुजबल अमित अपार लिये।
शरण-दायिनी दुष्ट-घातिनी ऐसी है मेरी माता ॥ ४ ॥

कोटि-कोटि निज सुदृढ़ करों से करे धर्म की जो रक्षा।
आगत-अधर्मियों को धूल चटानेवाली है माता ॥ ५ ॥

धरती-सी है क्षमाशील वह, पावन-भाव-भरा मन है।
दुष्ट जनों के लिए चंडिका ! भयंकरी ! मेरी माता ॥ ६ ॥

एक जटाधारी शंकर या एक चक्रधारी हरि का।
दोनों का बस आदर करती, ऐसी है मेरी माता ॥ ७ ॥

मेरी माता की आयु का कोई अनुमान नहीं कर सकता। तो भी इस विश्व-भर में वह बालिका के समान क्रीड़ा-रत रहती है। ऐसी है मेरी माँ। २ वह तीस करोड़ (अब साठ करोड़) मुखों वाली है। तो भी उसका सशक्त प्राण (आत्मा) एक ही है। इसकी बोलियाँ (भाषाएँ) अठारह हैं, तो भी वह एक ही चिंतनवाली है। ३ उसकी जीभ पर वेद है और वह खड्ग-हस्ता है। अपने आश्रितों का उपकार करनेवाली वह दुर्जनों का वध करने का भुज-बल रखती है। ४ साठ (एक सौ बीस) करोड़ हाथों से धर्माचरण करती है हमारी माता। हमारी माता उसकी हानि करने के विचार से आनेवालों को धूल बनाकर भूमि पर बिखेर देगी। ५ भू-देवी से भी वह अधिक सहनशील है। उसका मन पुण्य भावों से भरा-पुरा है। तो भी वह जब अन्याय करनेवालों के सामने खड़ी रहती है, तब वह भयंकर दुर्गा बन जाती है। ६ एक जटा-धारी चन्द्रशेखर योगी के सामने हमारी माता हाथ जोड़ती है (शिव को भजती है।) जो हाथ में एक चक्र लेकर सातों लोकों का शासन कर रहे हैं, उन (विष्णु) को भी वह नमस्कार करेगी। ७ वह योग-संसिद्ध है तथा जानती है कि सत्य अद्वय है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

योहत्तिलेनिह रर्ऱवळ् उण्मैयुम्, ऒत्ऱैन नन्ऱऱिवाळ्—उयर्
बोहत्तिलेयुम् निऱैन्दवळ् ऎण्णरुन्, पॊऱ्कुवै तानुडै याळ् 8
नल्लऱम्;नाडिय मन्नरै वाळ्त्ति, नयम्बुरिवाळ् ऎङ्गळ् ताय्— अवर्
अल्लव रायिन् अवरैवि ळुङ्गिप्पिन्, आनन्दक् कूत्तिडु वाळ् 9
वॆण्मै वळरिम याशलन् तन्द, विऱन् महळाम् ऎङ्गळ् ताय्— अवन्
तिण्मै मऱैयिनुम् तान् मऱै याळ् नित्तञ्, शोरुरुवाळ् ऎङ्गळ् ताय् 10

वॆऱि कॊण्ड ताय्—10

राग—अभोगी; ताल-रुपक

पेयवळ् काण् ऎङ्गळ् अन्नै— पॆरुम्
पित्तुडैयाळ् ऎङ्गळ् अन्नै
कायळल् एन्दिय पित्तन्— तनैक्
कादलिप्पाळ् ऎङ्गळ् अन्नै (पेयवळ्) 1
इन्निशै याम्इन्बक् कडलिल्— ऎळुन्दु
ऎऱुम् अलत्तिरळ् वॆळ्ळम्
तन्निडम् मूळ्हित् तिळैप्पाळ्— अङ्गुत्
ताविक् कुदिप्पाळ् ऎम् अन्नै (पेयवळ्) 2
तोज्जोऱ् कविदयञ् जोलै— तन्निल्
दॆय्वोह् नन्मणम् वीशुम्
तेज्जोरि मामलर् शूडि— मदुत्
तेक्कि नडिप्पाळ् ऎम् अन्नै (पेयवळ्) 3
वेदङ्गळ् पाडुवळ् काणीर्— उण्मै
वेल्कैयिऱ् पऱ्ऱिक् कुदिप्पाळ्
ओदरुञ् जात्तिरम् कोडि— उणर्न्
दोदि युलहॆङ्गुम् विदैपपाळ् (पेयवळ्) 4
बारदप् पोरॆन्निल् ऎळिदो ? विऱऱ्
पार्त्तन् कै विल्लिडै ऒळिर्वाळ्
मारदर् कोडि वन् दालुम्— कणम्
माय्त्तुक् कुरुदियिल् तिळैप्पाळ् (पेयवळ्) 5

वह श्रेष्ठ योगों में भी सिद्ध है। उसके पास स्वर्ण निधियाँ हैं। ८ हमारी माता सुधर्मपालक राजाओं को बधाई देती है, उन्हें हित पहुँचाती है। पर जो ऐसा नहीं हो (अधर्मी हो), उन्हें निगलकर वह आनन्दपूर्वक नर्तन करेगी। ९ शुभ्र हिमाचल की प्रदत्त साहसपूर्ण कन्या है हमारी माता। चाहे उस (पर्वत) की कठोरता छिप-मिट जाय, तो भी हमारी यह माता क्षीण नहीं हो जाएगी। वह दिनोंदिन श्री में वृद्धि को प्राप्त होती जाएगी। १०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रेष्ठ-योग-संसिद्ध निरन्तर अद्वय सत्य जानती है।
चेरी उसकी हैं नौ निधियाँ, ऐसी है मेरी माता ॥ ८ ॥
धार्मिक भूपों की पालक है अधार्मिकों की घातक है।
दुष्ट-दलन पर नृत्य-विमुग्धा ऐसी है मेरी माता ॥ ९ ॥
शैलसुता, पितु शैल भले ही कोमल हो या मिट जाये।
प्रतिदिन कान्तिमयी छविशालिनि अक्षय है मेरी माता ॥ १० ॥

पागल बनी हमारी माता--१०

अहा ! अग्निधर पागल शिव को प्यार करेगी विह्वल माता।
पिशाचिनी है मेरी माता, पागल बनी हमारी माता ॥ १ ॥
मधुर सुखद संगीत-सिंधु की तरल तरंगों में लहराती।
डुबकी लगा-लगा उछलेगी अमित उमंगों में उतराती ॥
पिशाचिनी है मेरी माता, पागल बनी हमारी माता ॥ २ ॥
सुरभित मधुमय आम्र-मंजरी के नव आभूषण धारण कर।
मधुर काव्य-उपवन में देवी नृत्य करेगी मद पी-पीकर ॥
पिशाचिनी है मेरी माता पागल बनी हमारी माता ॥ ३ ॥
सत्य-सांग ले नृत्य करेगी वेदगान (मंजुल) गायेगी।
कठिन-शास्त्र के मर्म-बीज चुन बसुन्धरा में बिखरायेगी ॥
पिशाचिनी है मेरी माता पागल बनी हमारी माता ॥ ४ ॥
"भारत-रन" में पारथ-धनु-सम, वह अगणित शत्रु गिरायेगी।
मृत वीरों के रुधिर-कुंड में नहा-नहा कर हरषायेगी ॥
पिशाचिनी है मेरी माता पागल बनी हमारी माता ॥ ५ ॥

उन्मत्त बनी हमारी माता—१०

पिशाचिनी है वह ! देख, बड़ी उन्मत्त है हमारी माँ। अग्निधारी उन्मत्त (शिव) को प्यार करेगी हमारी माँ। (पिशाचिनी है०) १ मधुर-संगीत-सुख-सागर में उठकर उछलनेवाली तरंगों की बाढ़ में डुबकी लगाकर मजा लूटेगी हमारी माँ। वहाँ जल-केलि करेगी हमारी माँ। (पिशाचिनी०) २ मधुर शब्दों की कविता की-सी सुन्दर फुलवारी में दिव्य सुगन्धित मधुस्रावी आम्र सुमन धारण करके मधुरूपी मद्य का पान करके हमारी माता नर्तन करेगी। (पिशाचिनी०) ३ देखिए, वह वेदों का गान करेगी। वह सत्य रूपी सांग हाथ में लेकर नर्तन करेगी। वह पठन द्वारा अगम्य रहनेवाले करोड़ शास्त्रों का अध्ययन करेगी तथा विश्व भर में उनके बीज बो देगी। (पिशाचिनी०) ४ भारतीय युद्ध समझ-बूझ के साथ क्या साधारण था ? उसमें जो वीर पार्थ के हाथ धनु में चमकती थी, वह (अब) भी करोड़ों महारथी आएँ, तो भी क्षण में उन्हें हत करके उसके रुधिर में स्नान करने का आनन्द उठायेगी। (पिशाचिनी०) ५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बारदमादा तिरुप्पळ्ळि ऎऴुच्चि—11

पॊऴुदु पुलर्न्ददु याम् शॆय्द तवत्ताल्
पुनमै यिरुट् कणम् बोयिन यावुम्;
ऎऴुपशुम् बॊऱ्चुडर् ऎङ्गणुम् बरवि
ऎऴुन्दु विळङ्गिय दऱिवॆनुम् इरवि;
तॊऴु दुनै वाऴ्त्ति वणङ्गुदऱ् किङ्गु उन्
तॊण्डर् पल्लायिरर् शूऴ्न्दुनिऱ् किन्ऱोम्
विऴितुयिल् हिन्ऱनै इन्नुम् ऎम् ताये !
वियप्पिदु काण् पळ्ळि यॆऴुन्दरु ळाये 1

पुळ्ळिनम् आर्त्तनन आर्त्तनन मुरशम्
पॊङ्गिय दॆङ्गुम् शुदन्दिर नादम्
वॆळ्ळिय शङ्गम् मुऴङ्गिन केळाय्
वीदि यॆलाम् अणुहुऱ्ऱनर् मादर् !
तॆळ्ळिय अन्दणर् वेदमुम् निन्ऱुन्
शीर्त्तिरु नाममुन् ओदि निऱ् किन्ऱार्;
अळ्ळिय तॆऴळमु दन्नै ऎम् अन्नै !
आरुयिरे ! पळ्ळि यॆऴुन्दरु ळाये ! 2

परुदियिन् पेरॊळि वानिडैक् कण्डोम्;
पार्मिशं निन्नॊळि काणुदऱ् कलन्दोम्;
करुदिनिन् शेवडि अणिवदऱ् कॆन्ऱे
कनिवुरु नॆञ्जह मलर्कॊडु वन्दोम्;
शुरुदिहळ् पयन्दनै ! शात्तिरम् कोडि
शॊल्लरु माण्बिन ईन्ऱनै अम्मे !
निरुदर्हळ् नडुक्कुर्च् चूल् करत् तेऱ्ऱाय् !
निर्मलैयै ! पळ्ळि यॆऴुन्दरुळाये 3

भारतमाता का सुप्रभात—११

[तमिऴ में पळ्ळि = शयन, ऎऴुच्चि = उठाना है। शयन से, निद्रा से उठाने के लिए, जगाने के लिए गाया जानेवाला गीत 'पळ्ळि ऎऴुच्चि' गीत कहा जाता है। उसमें हर पद के अंत में 'शयन त्याग कर उठो'—इस अर्थ की पंक्ति दुहरायी जाती है। यहाँ भारतमाता से निद्रा को त्यागकर उठने की प्रार्थना की जा रही है।]

सवेरा हो गया। हमारे किये हुए तप के फलस्वरूप समस्त क्षुद्र अंधकार दूर हो गया। उदीयमान स्वर्ण-किरणें सब जगह फैल रही हैं और बुद्धि रूपी रबि उग आया है और वह शोभायमान है। तुम्हारी स्तुति करके प्रणमन करने के लिए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भारतमाता का सुप्रभात—११

(स्वकृत) तप की रश्मियों से छँट गया (काला) अँधेरा।
(स्फूर्ति भरता क्लान्ति हरता) आ गया स्वर्णिम सबेरा॥
ज्ञान-रवि है उदित स्वर्णिम (कर्म की) किरणें मनोरम।
अर्चना-हित आज भक्तों का हुआ समवेत संगम॥
इस (मधुर जागरण) बेला में जननि तुम सो रही हो।
(नयन मीलित हैं तुम्हारे चेतना भी खो रही हो)॥
अंब! अब अविलंब जगकर जागरण का राग रागो।
आ गया सुन्दर सबेरा नींद त्यागो. अंब! जागो॥ १॥
कर रहे कलकल विहग-कुल भेरियाँ भी बज रही हैं।
(नव) रमणियों से (मनोरम) वीथियाँ सब सज रही हैं॥
गूँजती है मंदिरों में शंख की ध्वनि (पापहारी)।
(पूत तन से पूत मन से कर रहे पूजन पुजारी)॥
वेद की पावन ऋचाएँ विप्र ज्ञानी पढ़ सुनाते।
देवि! तेरे स्तोत्र (सुन्दर) भक्तगण हैं गुनगुनाते॥
अमृत-निर्मल, प्राणप्रद प्रिय जननि से (वरदान) माँगो।
आ गया सुन्दर सबेरा नींद त्यागो, अंब! जागो॥ २॥
जगमगाती है गगन में गगनमणि की ज्योति (जगमग)।
आज भूतल पर जगा दो अंब (निज पग) ज्योति (मग-मग)॥
चरण-पूजन-हेतु लाये स्निग्ध मन का सुमन सुन्दर।
(है समर्पित आज तुमको, तुम करो स्वीकार सत्वर)॥
देवि! तुम श्रुतिदायिनी हो निखिल-शास्त्र-विधायिनी हो।
तीक्ष्ण-शूल-विधारिणी हो दैत्य-दल-भय-दायिनी हो॥
अंब! अब अविलंब जगकर जागरण का राग रागो।
आ गया सुदर सबेरा नींद त्यागो, अंब! जागो॥ ३॥

अनेक सहस्र (स्वयं) सेवक घेरकर खड़े हैं। अब भी, हे माँ! तुम सो रही हो यह आश्चर्य है, देखो! निद्रा को त्याग कर उठो। १ पक्षीगण बोल उठे। भेरियाँ बज उठीं। सर्वत्र स्वतंत्रता का घोष उमड़ उठा। शुभ्र शंख ध्वनि कर उठे। सुनो! सभी वीथियों में स्त्रियाँ जुट आयी हैं। निर्मल ज्ञानी ब्राह्मण वेद तथा तुम्हारे मंगल श्रीनाम का पाठ कर रहे हैं। हे स्वच्छ अमृत— हमारी माँ, हमारे प्यारे प्राण! निद्रा को त्याग उठो। २ सूर्य की बड़ी ज्योति को हमने आकाश में देखा। भूमि में तुम्हारी ज्योति को देखने के लिए हम लालायित हो उठे हैं। सोच-समझकर तुम्हारे चरणों को अलंकृत करने के ही निमित्त हम स्निग्ध मन रूपी सुमन ले आये हैं। हे श्रुतिदायिनी! अकथ महिमा के करोड़ शास्त्रों की तुमने रचना की थी। हे माता! राक्षसों को कँपानेवाले त्रिशूल को हाथ में धारण करनेवाली हे निर्मल देवी! निद्रा को त्यागकर उठो। ३ तुम्हारी कृपादृष्टि के दर्शन की हमारे मन की लालसा को क्या तुम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निन्नॆऴिल् विऴियरुळ् काण्बदर् कॆङ्गळ्
नॆञ्जहत् तावलै नीयऱियायो ?
पॊन्नन्नैयाय् ! वॆण् पनि मुडि यिमयप्
पॊरुप्पिनन् ईन्द पॆरुन्दवप् पॊरुळे !
ऍन्न तवङ्गळ् शॆय्दु ऍत्तनै कालम्
एङ्गुवम् निन्नरुट् केऴैयम् यामे ?
इन्नमुम् तुयिलुदियेल् इदु नन्ऱो ?
इन्नुयिरे पळ्ळि यॆऴुन्दरुळाये ! 4
मदलैयर् ऍऴुप्पवुम् ताय् तुयिल् वायो ?
मानिलम् बॆऱ्ऱवळ् इःदुणरायो ?
कुदलै मॊऴिक्किरङ् गादॊरु तायो ?
कोमहळे ! पॆरुम् बारदर्क् करशे !
विदमुऱु निन्मॊऴि पदि नॆट्टुम् कूऱि
वेण्डिय वारु उन्नैप् पाडुदुम् काणाय्
इदमुऱ वन् दॆमै आण्डरुळ् शॆय्वाय् !
ईन्ऱवळे ! पळ्ळि ऍऴुन्दरुळाये ! 5

बारदमादा नवरततिन्न मालै—12

[इप्पाडल्हळिल् मुऱैये ऑन्बदु इरत्तिनङ्गळिन् पॆयरहळ् इयऱ्कैप् पॊरुळिलेनुम् । शिलेडप् पॊरुळिलेनुम् वऴङ्गप्पट्टिरुक्किन्ऱन्न ।]

काप्पु (मङ्गलाचरण)

वीरर्मुप् पत्तिरण्डु कोडि विऴैवित्त
बारदमा दाविन् पदमलर्क्के— शीरार्
नवरत्न मालैयिङ्गु नान् शूट्टक् काप्पाम्
शिवरत्न मैन्दन् तिऱम्

नहीं जानती हो ? स्वर्ण-मान्य ! शुभ्र हिम-शिखर—हिमाचल की जनायी है तपोभूत देवी ! तुम्हारी कृपा (पाने) के लिए हम भाग्यहीन कितनी तपस्या करें तथा कितने समय तरसें ? अब भी सोओ, क्या यह उचित है, हमारे प्यारे प्राण ! शयन त्यागकर उठो । ४ शिशु जगाएँ और माता ! तुम सोओ ? हे वसुधा-प्रसविनी ! तुम क्या इतना नहीं जानतीं ? शिशु का स्वर सुनकर जो कृपा न करे, ऐसी भी कोई माता होगी ? हे राजकुमारी ! महान भारत की रानी ! हम तुम्हारी विविध अठारह भाषाओं में तुम्हारा (महिमा-) गान करते हैं। देखो न ! हमें सुख-सन्तोष देते हुए आओ और हमारा पालन करो । हे हमारी जननी ! शयन त्याग कर उठो । ५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शुभ्र हिमगिरि की सुता हो भक्तजन-मन-वासिनी हो।
हो तपोमय मूर्ति मंजुल स्वर्ण-कान्ति-प्रभासिनी हो॥
हो कृपा की दृष्टि हम पर यह हमारी लालसा है।
(देवि ! अन्तर्यामिनी तुम) जान लो क्या मन बसा है॥
तब कृपा (की दृष्टि) पाने को करें कितनी तपस्या ?।
हैं तरसते हम अभागे (है जटिल कितनी समस्या) ?॥
अंब ! अब अविलंब जगक जागरण का राग रागो।
आ गया सुंदर सवेरा नींद त्यागो, अंब ! जागो॥ ४॥
हो धरा की तुम प्रसविनी, क्या नहीं तुम जानती हो।
सो रहीं तुम, शिशु जगायें, क्या, उचित यह मानती हो ?॥
(मुग्ध) शिशुओं का रुदन सुन क्या जननि न दयालु होती।
(मुग्ध शिशुओं का वचन सुन क्या जननि न कृपालु होती)॥
भव्य भारत (के विशद साम्राज्य) की रानी तुम्हीं हो।
(हो हिमालय-नृप-कुमारी दिव्य वरदानी तुम्हीं हो)॥
गुण गा रहे हैं तव अठारह बोलियों में, नींद त्यागो।
छबिमयी आओ, करो पालन हमारा, अंब ! जागो॥ ५॥

भारतमाता की नवरत्नमाला—१२

मङ्गलाचरण

बत्तिस कोटि वीर पुरुषों की जननी भारतमाता को।
पहनाते हम नवरत्नों की माला भारतमाता को॥
देवगणों में रत्नरूप हैं महादेव (श्री शिवशंकर)।
उनके पुत्र-रत्न गणनायक विघ्न-विनाशक विघ्नेश्वर॥
उनके दिव्य प्रताप-रत्न की जगमग आभा मंगलमय।
(विघ्नों का तमतोम दूर कर ऋद्धि-सिद्धि दे विमल विजय)॥
अक्ष-समान अमूल्य नाम है भारत का सब नामों में।
सभी सिद्धियाँ उसके कीर्तन से मिलतीं सब कामों में॥

भारतमाता (की) नव-रत्न-माला—१२

[इन पद्यों में क्रमशः नवों रत्नों के नाम अपने स्वाभाविक अर्थ में या श्लिष्ट अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं।]

बत्तीस करोड़ वीरों की जननी भारतमाता के चरणों में हम जो श्रीसम्पन्न नवरत्न-माला समर्पित करते हैं उसका रक्षक हो, शिवरत्न (श्रेष्ठ शिवजी) के पुत्र (गणेश) का प्रताप ! (इसमें 'रत्न' शब्द ही आया है। शिव-रत्न-पुत्र = विनायक। विनायक विघ्नहर, विघ्नेश्वर हैं; अतः उनकी स्तुति मंगलाचरण में गायी जाती है। जो कोई 'इंडिया' (हिन्दुस्तान) का आपके नेत्र-सम (बहुत ही मूल्यवान तथा प्रधान) नाम का उच्चारण करेंगे, उन्हें सुदृढ़ श्रेष्ठ हीरे की-सी श्री से संयुक्त श्रीशरीर,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॆण्बा (छन्द)

तिऱमिक्क नल्वयिरच् चीर् तिहऴुम् मेनि
अऱमिक्क शिन्दै अऱिवु— पिऱ्नलङ्गळ्
ऍण्णऱ्ऱन पॆऱुवार् 'इन्दिया' ऍन्ऱनिन्ऱन्
कण्णोत्त पेरुरॆत्तक् काल् 1

कट्टळैक् कलित्तुऱै (छन्द)

कालम् ऍदिऱ्प्पडिऱ् कैकूप्पिक् कुम्बिट्टुक् कम्बनमुऱ्
रोलमिट् टोडि मऱैन्दॊऴि वान्पहै यॊन्ऱुळदो ?
नीलक् कडलॊत्त कोलत्ति नाळ्मूनुऱु नेत्ति रत्ताळ् ।
कालक् कडलुक्कोर् पालमिट् टाळ् अन्नै काऱ्पडिनै 2

ऍण्शीर्क् कऴि नॆडिलाशिरिय विरुत्तम् (छन्द)

अन्नैये अन्नाळिल् अवनिक् कॆल्लाम्
आणिमुत्तुप् पोन्ऱमणि मॊऴिहळाले
पन्नि नी वेदङ्गळ् उपनिड दङ्गळ्
परवुपुहऴ्प् पुराणङ्गळ् इतिहासङ्गळ् ।
इन्नुम्पन् नूल्हळिले यिशैत्त ञानम्
ऍन्नॆन्ऱु पुहऴ्न्दुरैप्पोम् अदनै यिन्नाळ्
मिन्नु हिन्ऱ पेरॊऴि काण् ! कालङ् गॊन्ऱ
विरुन्दु काण् कडवुऴुक्कोर् वॆऱ्ऱि काणे 3

आशिरियप्पा (छन्द)

वॆऱ्ऱि कूऱुमिन् ! वॆण् शङ् गूदुमिन् !
कऱ्ऱव राले उलहु काप्पुऱ्ऱदु
उऱ्ऱदिङ् गिन्नाळ् ! उलहिनुक् कॆल्लाम्
इऱ्ऱैनाळ् वरैयिनुम् अऱमिला मऱवर्
कुऱ्ऱमे तमदु महुडमाक् कॊण्डोर्
मऱ्ऱै मनिदरै अडिमैप् पडुत्तले
मुऱ्ऱिय अऱिविन् मुऱैयॆन् ऱॆण्णुवार्
पऱ्ऱै यरशर् पऴिपडु पडैयुडन्

तथा सुधर्मनिष्ठ मन, बुद्धि तथा अन्य सौभाग्य, अगणित रूप से प्राप्त हो जायेंगे। [इसमें 'वयिरम' हीरे का नाम आया है]। १ हमारी माता नीले सागर के समान रूप वाली है। वह विनेत्रा है। वह काल रूपी सागर पर सेतु बाँध चुकी है। ऐसी भारतमाता की शरण में आ जाएँ तो काल भी हमारे सामने आये, तो हाथ जोड़ लेगा। वह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तन को हीरे की-सी आभा मन को (निश्छल) धार्मिकता।
मिलते हैं सौभाग्य अनेकों विमल बुद्धि को विशुद्धता।
माँ की दयादृष्टि से होता तन पुलकित मन प्रमुदित है॥
नवरत्नों की मंजुल-माला भारत माँ को, अर्पित है॥ १॥

नील-महोदधि-सी छविशाली त्रिलोचना मेरी माता।
काल-सिंधु पर सेतु बाँधती (जन-जन उसके गुण गाता)॥
जो उसका शरणागत बनता कुटिल काल उससे डरता।
हाथ जोड़ता, थरथर कँपता भगता, हाय हाय करता॥
फिर हमसे कर वैर कौन वैरी रह सकता जीवित है।
नवरत्नों की मंजुल माला भारत माँ को अर्पित है॥ २॥

हे माँ! तुमने मंजु मोतियों-सम शब्दों को चुन-चुनकर।
रचे वेद-उपनिषद् और इतिहास-पुराण रचे (मनहर)॥
जगमग करते ज्योतिपुंज वे, कालजयी वे व्यंजन हैं।
परमेश्वर के विजय-चिह्न वे ज्ञान-सुधा-वर्षी (घन) हैं॥
कैसे उनकी करे प्रशंसा बुद्धि हमारी परिमित है।
नवरत्नों की मंजुल-माला भारत माँ को अर्पित है॥ ३॥

जय जय बोलो, शंख बजावो, उठे देश-रक्षक (नेता)।
शिक्षा-ज्ञान-सिंधु से जग में देश-प्रेम लहरें लेता॥
अधम अधर्मी समझ रहे थे दास बनाना मतिमत्ता।
निन्दित-सेना के बल पर ही (संस्थित थी उनकी सत्ता)॥
घुनी नीति के नियम (निराले) उनके शास्त्र पुराने थे।
अपराधों का मुकुट पहनकर भूप-यूथ (मस्ताने थे)॥
आज हमारा देश (जग उठा) नई राह का निर्देशक।
(त्याग निरंकुश शासन जग में रामराज्य का संरक्षक)॥

थर-थर कांपेगा! 'हाय-हाय' करते चीखते हुए वह भागकर छिप जायगा। क्या कोई हमारा शत्रु भी होगा (जो हमसे शत्रुता करने की हिम्मत करेगा)? (इसमें 'नीलम' रत्न का नाम आया है) २ हे माता! उस दिन तुमने उत्कृष्ट (प्रमाण-योग्य) मोतियों के समान शब्दों में वेद, उपनिषद्, प्रकीर्तित पुराण, इतिहास और अन्य अनेक ग्रंथों की रचना की। उनमें तुमने जो ज्ञान प्रस्तुत किया है, उसकी आज हम कैसे प्रशंसा कर पाएँगे? वे चमकते प्रकाश-पुंज हैं। वह काल जयी "भोज" हैं (ऐसा भोजन, जो कभी बासी नहीं लगता, नित नवीन स्वाद से युक्त होता है।) असल में वे ईश्वर के ही विजय-चिह्न हैं। (इसमें 'मोती' रत्न का नाम आया है।) ३ जय बोलो! शुभ्र शंख फूंको, बजाओ। शिक्षितों के द्वारा आज संसार सुरक्षित हो रहा है। आज तक अधार्मिक पापी, अपराध-किरीट-धारी लोग यही सोचते थे कि मानवों को दास बनाना ही पूर्ण विकसित बुद्धि का कार्यक्रम है। राजाओं के झुंड ने निंद्य सेना-बल के आधार पर घृण्य नीति के शास्त्रों को संग्रहीत कर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शॊऱ्ऱै नीदि तॊहुत्तुवैत् तिरुन्दार्
इऱ्ऱै नाळ्
पारि लुळ्ळ पलनाट् टिनऱ्क्कुम्
बारदनाडु पुदुनॆऱि पळक्क
लुऱ्ऱदिङ् गिन्नाळ्— उवहॆलाम् पुहळ्
इन्ब वळम् जॆऱि पण्बल पयिऱ्ऱुङ्
कबीन्दिर नाहिय रवीन्दिर नादन्
शॊऱ्ऱदु केळीर्:— पुविमिशै यिन्ऱु
मनिदर्क् कॆल्लाम् तलैप्पडु मनिदन्
तर्ममे उरुवाम् मोहनदास
कर्मचन्दिर गांदियॆन् ऱुरैत्तान्
अत्तहैय गांदियै अरशियल् नॆऱियिले
तलैवनाक् कॊण्डु पुविमिशैत् तरुममे
अरशिय लदनिलुम् पिऱइय लनैत्तिलुम्
वॆऱ्ऱि तरुमॆन्न वेदम् शॊन्नदै
मुऱ्ऱम् पेण मुऱ्पट्टु निन्ऱार्
बारद मक्कळ् इदनार् पडैऱ्तम्
शॆरुक् कॊळिन् दुलहि लऱन्दिऱम् बाद
कऱ्ऱोर् तलैप्पडक् काण्बोम्— विरैविले
(वॆऱ्ऱि कूऱुमिन्; वॆण्शङ् गूदुमिन्) 4

तरवु कॊच्चहक् कलिप्पा (छन्द)

ऊदुमिनो वॆऱ्ऱि ! ऒलिमिनो वाळ्त् तॊलिहळ् !
ओदुमिनो वेदङ्गळ् ! ओङ्गु मिनो ओङ्गुमिनो !
तीदु शिऱिदुम् पयिलाच् चॆम्मणि मा नॆऱि कण्डोम् !
वेदनैह ळिनि वेण्डा विडुदलै यो तिण्णमे 5

वञ्जि विरुत्तम् (छन्द)

तिण्णङ् गाणीर् ! पच्चै, वण्णन् पादत् ताणं;
ऎण्णङ् गॆडुदल् वेण्डा ! तिण्णम् विडुदलै तिण्णम् 6

रखा था। पर आज-- आजकल भारत देश ने विश्व के देशों को नये मार्ग से जाने में अभ्यस्त कराना आरम्भ किया है। मधुरता से समृद्ध अनेक गीतों के रचयिता कवींद्र रवींद्रनाथ क्या कहते हैं ? सुनिये : वे कहते हैं कि आज विश्व भर के मानवों में सर्वश्रेष्ठ मनुष्य मोहनदास करमचंद्र गांधी हैं, जो (साक्षात्) धर्म-मूर्ति हैं। भारत देश-वासी ऐसे गांधी को राजनीति में अपना नेता मानते हैं, वेदों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यही कवीन्द्र रवीन्द्र कह रहे मधुमय गीतों के गायक।
यही कह रहे धर्मरूप गांधी धरती के नरनायक॥
भारतीय जन मान रहे हैं गांधी को अपना नेता।
वेदों का उपदेश यही है, सदा सत्य ही जय देता॥
सत्यमार्ग पर गमनोद्यत हैं आज सत्य के विश्वासी।
(पायेंगे स्वातंत्र्य शीघ्र ही ये भावुक भारतवासी)॥
सत्ता (अत्याचारी) सेना की समाप्ति हो जायेगी।
सत्यनिष्ठ शिक्षित नेताओं की सत्ता सरसायेगी॥
(स्वतंत्रता की आज भावना जन-गण-मन में विकसित है।
नवरत्नों की मंजुल-माला भारत माँ को अर्पित है॥ ४॥

आज विजय का शंख बजावो (हिलमिल) बधाइयाँ गाओ।
पढ़ो सुदिव्य वेद-मंत्रों को बढ़ो (लक्ष्य को अपनाओ)॥
लाल रत्न-सा मार्ग मिला 'सत्याग्रह' दोष-विवर्जित है।
कष्ट (-कंटकों) से वंचित है स्वतंत्रता अब निश्चित है॥
(मंत्र न भूलो 'असहयोग' का, देश-विदेशों का हित है)।
नवरत्नों की मंजुल-माला भारत माँ को अर्पित है॥ ५॥

मरकत-मणि से हरि-चरणों की शपथ; (सफलता) निश्चित है।
भ्रम मत समझो (देशवासियो!) अब स्वतंत्रता निश्चित है॥
(स्वतंत्रता के लिए युद्ध को जन-जन आज समर्पित है)।
नवरत्नों की मंजुल माला भारत माँ को अर्पित है॥ ६॥

के इस उपदेश को मान लिया है कि संसार में धर्म (सत्य) ही राजनीति में तथा अन्य सभी क्षेत्रों में विजयी होगा (सत्यमेव जयते), और वे उस पर पूरा विश्वास रखकर चलने को उद्यत हो गये हैं। इसलिए हम जल्दी ही यह स्थिति देखेंगे, जिसमें सेना के वीरों की सरगर्मी लुप्त हो जायगी और दुनिया में सत्य धर्म से न डिगने वाले शिक्षित लोग आगे आ जाएँगे। (जय बोलो-- शुभ्र शंख फूँको)। (इसमें 'प्रवाल' शब्द आया है।) ४ विजय का शंख फूँको। बधाई की ध्वनियाँ उत्पन्न (निर्मित) करो। वेदों का पठन करो। बढ़ो। ऐसा लाल मणि-सा (अति उत्तम, मूल्यवान) महान (सत्याग्रह, असहयोग) मार्ग हमने पा लिया, जिसमें कोई भी त्रुटि या बुराई मिश्रित नहीं है। आगे कोई पीड़ा नहीं होगी। और स्वतंत्रता (की प्राप्ति) निश्चित ही है। (इसमें 'मणि' शब्द आया है।) ५ निश्चित है, देख लो हरे रंग के (श्रीनारायण) देव के चरणों की सौगन्द— विचार में भ्रम नहीं हो। यह निश्चित है। स्वतंत्रता (पाना) निश्चित है। (इसमें पन्ने 'मरकत' का नाम आया है।) ६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कलिप्पा (छन्द)

विडुदलै पॅऱुवीर् विरैवा नीर् !
वॅऱ्ऱि कॊळ्वीर् अॅन्ऱ्ऱरैत् तॅङ्गुम्
कॅडुद लिन्ऱिनन् दाय्त्तिरु नाट्टिन्
किळर्च्चि तन्नै वळर्च्चि शॅय् हिन्ऱान्
शुडुद लुम् कुळि रुम् उयिर्क् किल्लै
शार्वु वीळ्च्चिहळ् तॊण् डरुक् किल्लै
अॅडुमि नो अऱप् पोरिन्नै यॅन्ऱान्
अॅङ्गो मेदह मेन्दिय कान्दि ! 7

अऱुशीर् विरुत्तम् (छन्द)

गान्दिशेर् पदुमराहक् कडिमलर् वाळ् श्रीदेवि
पोन्दुनिऱ् किन्ऱाळिन्ऱु बारदप् पॊन्नाडॅङ्गुम्
मान्दरॅल् लारुम् शोर्वै अच्चत्तै मऱन्दु विट्टार्
गान्दिशॊऱ् केट्टार् काण्बार् विडुदलै कणत्तिनुळ्ळे 8

अॅळुशीर्क्कळि नॅडिलाशिरिय विरुत्तम् (छन्द)

कणमॅन्नु मॅन्ऱ्ऱ् कण्मुन्नै वरुवाय्, बारद देविये कन्नल्काल्
इणैविळि वाल वाय माऱ् जिङ्ग मुदुहिन्नि लेऱि वीऱ् ऱिरुन्दे
तुणैनिन्नै वेण्डु नाट्टिनर्क् कॅल्लाम्, तुयर्कॅड विडुदलै यरुळि
मणिनहै पुरिन्दु तिहळ् तिरक् कोलम्, कण्डुनान् महिळ्न्दिडु मारे 9

बारद देवियिन् तिरुत्त शाङ्गम्—13

नामम् (नाम)

राग— काम्बोदी

पच्चै मणिक् किळिये ! पाबियॅन्नक् के योहप्
पिच्चै यरु ळिय ताय् पेरुरंयाय् ! —इच्चहत्तिल्

हमारे राजा महा महिमावान (या गोमेदक-सम) गांधीजी यह कहते हुए कि आप लोग शीघ्र ही स्वतंत्रता पा लेंगे– विजयी होंगे– सर्वत्र बिना किसी संकट के राष्ट्रीय आंदोलन को बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि गरमी या शीतलता प्राणों को नहीं लगती। और सेवकों को थकावट या पतन नहीं अनुभव होता। यह धर्म-युद्ध (स्वतंत्रता संग्राम) है, लो (आगे) बढ़ो। (इसमें 'गोमेदक' का नाम आया है।) ७ आज भारत में शोभा-सुरंग-सुगन्ध-पद्म-सुमन-निवासिनी श्रीदेवी पधारकर व्याप्त रहती है। इसलिए सभी लोगों ने आलस्य और भय को त्याग दिया है। जो गांधीजी की बात मानकर चलेंगे, वे एक ही क्षण में स्वतंत्रता के दर्शन कर लेंगे। (इसमें 'पद्मराग' रत्न का नाम आया है।) ८ हे भारत देवि ! क्षण में मेरे सामने आ जाओ, ताकि मैं आपके उस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(चला रहे हैं नगर-नगर में जो आन्दोलन की आँधी)
गोमेदक-सम महिमाशाली बता रहे हमको गांधी ॥
शीत-घाम, श्रम-क्लान्ति, देश के भक्तों को न डिगा सकते।
जीत-हार, सुख-दुख भी उसके प्राणों को न हिला सकते ॥
(शत्रु अधर्मी) धर्मयुद्ध है (वीरो! निर्भय चढ़े चलो)।
स्वतंत्रता पा विजयी होंगे, आंदोलन पर बढ़े चलो ॥
(बढ़ते रहना कभी न रुकना, रुकना अतिशय निन्दित)है।
नवरत्नों की मंजुल माला भारत माँ को अर्पित है ॥ ७ ॥
पद्मराग-वसना श्रीदेवी भारत भर में व्यापी है।
भय-प्रमाद से रहित भारती, (भय से कंपित पापी है) ॥
गांधी का आदेश सभी यदि दृढ़तापूर्वक पालेंगे।
परतंत्रता भगा देंगे वह शुभ स्वतंत्रता पा लेंगे ॥
(स्वतंत्रता के लिए आज जन-जन का मन लालायित) है।
नवरत्नों की मंजुलमाला भारत माँ को अर्पित है ॥ ८ ॥
अग्निनेत्र-युत विकट पूँछ का सिंह तुम्हारा वाहन है।
उस पर चढ़कर दर्शन दो, माँ, (अंत समय) आवाहन है ॥
देख सकूँ मैं देशवासियों के दारुण दुःखों का अन्त।
(देख सकूँ मैं स्वतंत्रता का मुसकाता अभिराम वसन्त) ॥
देख सकूँ माँ, रूप तुम्हारा दिव्य (अपार प्रभाशाली)।
देख सकूँ (माँ) मैं (जन-जन के मुख पर छाई) खुशियाली ॥
हों स्वतंत्र हम सब स्वतंत्र हों, यही प्रार्थना प्रार्थित है।
नवरत्नों की मंजुलमाला भारत माँ को अर्पित है ॥ ९ ॥

भारतदेवी का श्रीदशाङ्ग—१३

भारतमाता के राज्य के दशाङ्ग—नाम :—

प्रश्न. हरितवर्ण के हे सुंदर शुक! (पूछ रहा हूँ अता-पता)।
योग-भीख दे किया अनुग्रह, उस माता का नाम बता ॥

सुन्दर रूप के दर्शन करूँ और आनन्द अनुभव करूँ, जिसमें आप अग्निवर्षक नेत्रों वाले तथा भयंकर पुच्छ वाले सिंह पर आरूढ़ हों और आपसे सहायता की कामना करनेवाले देशों के दुःखों को दूर करके, स्वतंत्रता दिलाकर सुन्दर हास के साथ विराजमान हों। ९

(भारतदेवी का श्री दशांग)—१३

(भारतमाता के राज्य के दस अंग)

[तमिळ में 'शुक' आदि को संबोधित करके बातों को सुनाने की प्रथा है।]

हे हरे सुन्दर शुक! उस माता का नाम कहो, जिसने योग की भिक्षा देते हुए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पूरणमा ञानप् पुहऴ्विळक्कै नाट्टुवित्त
बारद मा देवियॅनप् पाडु 1

नाडु (राज्य)

राग— वसन्त

तेनार् मॉऴिक्किळ्ळाय् तेवि यॅनक् कानन्द
मानाळ् पॉन्नाट्टै अऱि विप्पाय् ! —वानाडु
पेरिमय वॅऱ्पु मुदल् पॅण् कुमरि ईऱाहुम्
आरिय नाडॅन्ऱे अऱि 2

नगरम् (नगर)

राग— मणिरङ्गु

इन्मऴलैप् पैङ्गिळिये ॲङ्गळ् उयिरानाळ्
नन्मैयुऱ वाऴुम् नहरॅदु कॉल् ? —शिन्मयमे
नानॅन् ऱरिन्द नन्निपॅरियोर्क् किन्नमुदु
तानॅन्ऱ काशित् तलम् 3

आऱ (नीद)

राग— शुरुट्टि

वण्णक्किळि ! वन्दे मादरमॅन् ऱोदुवरै
इन्नलऱक् काप्पा ळिया ऱुरैयाय् ! नन्नर् शॅयत्
तान्पोम् वऴि येलाम् तन्ममॉडु पॉन्विळैक्कुम्
वान्पोन्द गङ्गैयॅन वाऴ्त्तु 4

मलै (पर्वत)

राग— कानड़ा

शोलैप् पशुङ् गिळिये ! तॉन्मऱैहळ् नान्गुडैयाळ्
वालै वळरुम् मलै कूऱाय् ! —ञालत्तुळ्
वॅऱ् पॉन्ऱुम् ईडिलदाय् विण्णिल् मुडि ताक्कुम्
पॉऱ्पोन्ऱु वॅळ्ळैप् पॉरुप्पु 5

ऊर्दि (वाहन)

राग— धन्याश्री

शीरुम् शिऱप्पु मुयर् शॅल्वमुमो रॅण्णऱ्ऱाळ्
ऊरुम् पुरवि उरैतत्ताय्— तेरिन्

मुझ पापी पर अनुग्रह किया। ऐसा गान करो कि इस जगत में पूर्ण-महा-ज्ञान का यशस्वी दीप जिसने प्रज्वलित किया, उसका नाम महान भारतदेवी है। १ हे मधु-भाषी शुक ! यह सुनाओ कि मेरी आनन्ददायिनी देवी का यह स्वर्ण देश है;— जान लो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उत्तर. किया प्रकाशित जग को जिसने पूर्ण ज्ञान का दीप जला।
वह महान भारतदेवी है, गा तू उसका नाम भला॥ १॥

देश या राज्य

प्र० अरे मनोज्ञ मधुरभाषी शुक (पूछ रहा हूँ अता-पता)।
मेरी सुखदायक माता का स्वर्ण-देश है कौन बता॥

उ० (दक्षिण में है) द्वीप कुमारी (उत्तर में विशाल) हिमनग।
(और बीच में) आर्य देश है (कहता है 'भारत' सब जग)॥ २॥

नगर

प्र० मधुर तोतली बोली के शुक! (पूछ रहा हूँ अता-पता)।
जहाँ बसी प्राणों की देवी, नगर कौन वह मुझे बता॥

उ० (गंगा-वरुणा-असी जहाँ पर साधु-सन्त शुचि संन्यासी॥
आत्मज्ञान का अमृत पिलाती है माँ की नगरी काशी॥ ३॥

नदी

प्र० अरे स्वर्ण आभावाले शुक! (पूछ रहा हूँ अता-पता)।
मातृ-वन्दकों की दुखनाशक, रक्षक सरिता कौन बता॥

उ० ब्रह्मलोक से उतरी, करती सबका तन-मन चंगा है।
धर्मदायिनी अर्थदायिनी (पतित-पावनी) गंगा है॥ ४॥

पर्वत

प्र० उपवन के कोमल शुक! (तुमसे पूछ रहा हूँ अता-पता)।
चतुर्वेद स्वामिनी पली है किस पर्वत पर मुझे बता॥

उ० (निखिल) विश्व में (सबसे) अनुपम गगन-स्पर्शी (उच्च) शिखर।
स्वर्णिम (किरणों से अनुरंजित) हिममंडित वह हिमगिरिवर॥ ५॥

वाहन

प्र० हे मेरे प्यारे शुक! (तुझसे पूछ रहा हू अता-पता)।
श्री-यश-उन्नत-निधियों-वाली का वाहन है कौन बता॥

यह हिमाचल से कन्याकुमारी तक (फैला हुआ विशाल) देश ही आर्य देश है। २ हे मधुर तोतली बोली वाले शुक! कहो तो हमारे प्राण-स्वरूपा देवी सुख-सहित जिसमें निवास करती है, वह नगर कौन-सा है? वह स्थल (नगर) काशी है, जो उन श्रेष्ठ साधुओं के लिए मधुर अमृत है, जिन्होंने आत्मा को चिन्मयस्वरूप जाना है। ३ हे सुवर्ण शुक! जो 'वन्दे मातरम्' का गान करते हैं, उन्हें संकटहीन करके रक्षा करने वाली (कौन) नदी है। सबका भला करती हुई और अपने मार्ग भर में धर्म के साथ स्वर्ण (अर्थ-समृद्धि) भी पैदा करती हुई जो (बहती) जाती है, वही आकाश की (नभ से अवतरित) गंगा है, उसकी जय गाओ। ४ हे उपवन के सुकुमार शुक! प्राचीन चार वेदों की स्वामिनी बाला किस पर्वत पर पलती है? कह दो, वह पर्वत कौन-सा है? वह है विश्व भर में अप्रतिम, गगन-भेदी-शिखर, स्वर्ण-सम (मूल्यवान) शुभ्र (हिम-) अचल है। ५ हे शुक! कहो कि श्री तथा यश में तथा उन्नत निधियों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

परि मिशैयूर् वाळल्लळ् पारनैत्तुम् अञ्जुम्
अरिमिशैये ऊर्वाळ् अवळ् 6

पडै (सेना)

राग— मुहारि

करुणै युरुवाताळ् कायन्दऴुङ्गार् किळ्ळाय् !
शॅरुनरै वीऴ्त् तुम्पडै यॅन् शॅप्पाय्!— पॉरु बवर्मेल्
तण्णळिपाल् वीऴादु वीळिन् तहैप्परिदाम्
तिण्णमुऱु वान् कुलिशम् तेऱु 7

मुरशु (भेरी)

राग— शॅञ्जुरुर्रि

आशै मरगदमे अन्नैतिरु मुन्ऱिलिडै
ओशै वळर् मुरश मोदुवाय्— पेशुहवो
सत्तियमे शॅय्ह तरुममे यॅन्ऱॉलि शॅय्
मुत्ति तरुम् वेद मुरशु 8

तार् (हार)

राग— विलहरि

वारा यिळञ्जुहमे वन्दिरुप्पार्क् कॅन्ऱु मिडर्
ताराळ् पुनैयु मणित् तार्कूऱाय्— शेरारै
मुऱ्ऱाक् कुऱुनहैयाल् मुऱ्ऱुवित्तुत् तानॉळिर् वाळ्
पॉऱ्ऱा मरैत्तार् पुनैन्दु 9

कॉडि (ध्वजा)

राग— केदार

कॉडिप्पवळ वाय्क्किळ्ळाय् ! कुत्तिरमुन् दीङ्गुम्
मडिप्पवळित् वॅल्कॉडितान् मऱ्ऱॅन्— अडिप्पणिवार्
नन्ऱारत् तीयार् नलि वुऱ्वे वीशुमॉळि
कुन्ऱा वयिरक् कॉडि 10

में बढ़ी-चढ़ी (भारत-देवी) रथ या अश्वों पर सवार होनेवाली नहीं है। वह सर्वविश्व-भयंकर हरि (सिंह) पर ही आरोहण करनेवाली है। ६ हे शुक ! कहो कि करुणा-रूपिणी (भारतदेवी) जब क्रोध करके उठे, तब शत्रुओं को मार गिरानेवाली उसकी सेना कैसी है। शत्रु पर, वह करुणा के कारण यों तो नहीं गिरती, परन्तु अगर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उ० (गजवाहिनी नहीं वह देवी) और न अश्ववाहिनी है।
रथ-वाहिनी नहीं, वह (देवी) भीषण सिंह-वाहिनी है॥ ६॥

सेना

प्र० हे शुक ! करुण-हृदय वाली (का पूछ रहा हूँ अता-पता)।
शत्रुहारिणी (क्रोधकारिणी) माँ की सेना कौन बता॥

उ० करुण-हृदय वाली जननी है (साथ न कोई संगर है)।
उग्र-गगन से गिरनेवाली सेना गाज भयंकर है॥ ७॥

भेरी

प्र० हे मरकत आभा वाले शुक ! (पूछ रहा हूँ अता-पता)।
माँ के आँगन में जो बजती भेरी है वह कौन बता॥

उ० 'सत्यं वद', 'धर्मं चर' का उपदेश मधुर देनेवाली।
वेदों की वाणी माता की भेरी है सुषमाशाली॥ ८॥

हार

प्र० अरे ! बालशुक ! (तुझसे मैं यह पूछ रहा हूँ अता-पता)।
(बंदी दुःख-हारिणी) माँ का रत्नहार है कौन बता॥

उ० मन्द हँसी से जो विरोधियों को (सत्वर) करती हत है।
स्वर्ण-कमल के मृदुल हार से माँ (का हृदय) सुशोभित है॥ ९॥

ध्वजा

प्र० मूँगे-से मुखवाले हे शुक ! (पूछ रहा हूँ अता-पता)।
कुलक्षणों की निवारिणी माँ का विजयी ध्वज कौन बता ?॥

उ० दुष्ट-दारिणी भक्त-तारिणी माँ के रथ पर संस्थित है।
मेरी माँ की विमल ध्वजा पर चिह्न वज्र का अंकित है॥ १०॥

गिरती ही हो, तो वह अनिवार्य तथा भयंकर आकाश के कुलिश के रूप में गिरेगी। ७ हे प्यारे मरकत (-रंग शुक) ! जो माता के आँगन में वर्धनशील ध्वनि करती है, बताओ वह भेरी ? वेद (ही) वह भेरी है, जो कहती है कि सत्य बोल और धर्म का आचरण कर। ८ हे बाल-शुक ! आओ ! वन्दना करनेवालों के लिए कभी जो संकट नहीं उत्पन्न कर देती है (जो संकटों को हरती है) उस माता का पहना हुआ रत्नहार कहो ! विरोधियों को मन्द हास्य से ही हत करके जो शोभायमान रहती है, वही माता स्वर्ण-कमल-हार पहनकर शोभायमान है। ९ हे लता-प्रवाल-मुख-शुक ! क्षुद्रता तथा बुराई को मिटानेवाली का विजयी ध्वज क्या है ? चरणों में नत होनेवालों का भला करते हुए तथा बुरे लोगों को बुरा कहने देते हुए जो अमंद प्रकाश रूप में फहरा रही है, वह वज्र की ध्वजा है। १०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तायिन् मणिक् कॊडि पारीर्—14

(बारद नाट्टुक् कॊडियिनैप् पुहळ्वल्)

तर्ज़— तायुमानवर् आनन्दक् कळिप्पु मॆट्टु

पल्लवि (टेक)

तायिन् मणिक् कॊडि पारीर्— अदैत्
ताळ्न्दु पणिन्दु पुहळ्न्दिड वारीर्

शरणङ्गळ् (चरण)

ओङ्गि वळर्न्ददोर् कम्बम्— अदन्
उच्चियिन् मेल् वन्दे मादर मॆन्ऱे
पाङ्गि नॆळुदित् तिहळुम्— शॆय्य
पट्टॊळि वीशिप् पऱन्ददु पारीर्! (तायिन्) 1
पट्टुत् तुहिलॆन लामो? अदिर्
पाय्न्दु शुळर्ऱुम् पॆरुम्बुयर् काऱ्ऱु
मट्टु मिहुन् दडित् तालुम्— अदै
मदियादव् वुऱुदि कॊळ् माणिक्कप् पडलम् (तायिन्) 2
इन्दिरन् वच्चिर मोर्पाल्— अदिल्
ऍङ्गळ् तुरुक्क रिळम्बिऱै योर्पाल्
मन्दिरम् नडुवुऱत् तोन्ऱुम्— अदन्
माण्बै वहुत्तिड वल्लवन् यानो? (तायिन्) 3
कम्बत्तिन् कीळ्निऱ्ऱल् काणीर्— ऍङ्गुम्
काणरुम् वीरर् पॆरुन्दिरुक् कूट्टम्
नम्बर् कुरियरव् वीरर्— तङ्गळ्
नल्लुयि रीन्दुङ् गॊडियिनैक् कापपार् (तायिन्) 4
अणि यणि यायवर् निऱ्कुम्— इन्द
आरियक् काट्चियो रानन्द मन्ऱो?
पणिहळ् पॊरुन्दिय मार्बुम्— विऱर्
पॆन्दिरु वोङ्गुम् वडिवमुङ् गाणीर्! (तायिन्) 5

माता की ध्वजा—१४

भारत देश की ध्वजा का गुणगान

[तायुमानवर् तमिळनाडु के प्रसिद्ध दार्शनिक कवि हैं, जो नायककुल के राजा के मंत्री के पद को सुशोभित कर रहे थे। ईश्वर-भजन से प्राप्त दिव्य आनंद का वर्णन उन्होंने किया है। उस गीत के तर्ज़ में यह गीत रचा गया है।]

माता की सुंदर ध्वजा देखो। आओ, नमन तथा विनय करके उसकी प्रशंसा करें।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

माता की ध्वजा—१४

(भारत देश की ध्वजा का गुणगान)

(देश-दिवानो !) दर्शन कर लो सविनय अभिनन्दन कर लो।
मेरी माँ की दिव्य ध्वजा का (बार-बार) वन्दन कर लो॥
स्तंभ-उच्च के ऊपर देखो (राष्ट्र-) ध्वजा लहराती है।
लाल रेशमी कान्ति-विमंडित (फहर-फहर) फहराती है॥
(पद) 'वन्दे-मातरम्' ध्वजा पर अंकित है दर्शन कर लो।
मेरी माँ की दिव्य ध्वजा का (बार-बार) वन्दन कर लो॥ १॥

इसे रेशमी वस्त्र न समझो यह कठोर माणिक्य-पटल।
झंझावातों में, आँधी में, तूफ़ानों में (सदा) अटल॥
मेरी माँ की दिव्य ध्वजा का बार-बार वन्दन कर लो॥ २॥

इस पर अंकित वज्रचिह्न है, मुस्लिम जन की चन्द्र-कला,।
और बीच में 'मंत्र' सुअंकित महिमा क्या मैं कहूँ भला॥
मेरी माँ की दिव्य ध्वजा का (बार-बार) वंदन कर लो॥ ३॥

ध्वजस्तंभ के नीचे देखो वीरों का दल खड़ा हुआ।
अपने प्राणों की बलि देकर रक्षा के हित अड़ा हुआ॥
उन विश्वासी वीरवरों का (गुण-गौरव वर्णन कर लो)।
मेरी माँ की दिव्य ध्वजा का (बार-बार) वन्दन कर लो॥ ४॥

तमिळ देश के 'तमिळ' खड़े हैं अग्नितुल्य दृग 'मरव' खड़े।
"शेर राज्य" के वीर खड़े हैं दृढ़ मन के "तैलङ्ग" बड़े॥
माता के उत्तम चरणों के सेवक सदा (अखंडित) हैं।
'तुलुब' वीर ये खड़े हुए (जो मंजुल-महिमा-मंडित) हैं॥

ऊँचा बढ़ा हुआ स्तम्भ है। उस पर ऊपर ध्वजा है, जिसमें 'वन्दे मातरम्' बहुत ही युक्त रूप से लिखा गया है। और वह लालिमा लिये रेशम-सा प्रकाश बिखेरती हुई फहर रही है, देखो। (माता का०) १ क्या उसे रेशम का वस्त्र कहा जाय ? नहीं, वह कठिन माणिक्य-पटल है, जो बड़ी बवंडरमय आँधी अमित रूप से, तेजी से बहकर उसे त्रस्त करे, तो भी उसकी परवाह नहीं करे। (माता का०) २ उसमें (उस पर) एक ओर इन्द्र का वज्र अंकित है। उसमें हमारे मुस्लिम बंधुओं की हिलाल है, चंद्रकला है। मध्य में 'मंत्र' दिखता है। उसकी महिमा कहने में क्या मैं समर्थ हूँ ? (माता का०) ३ देखो, स्तम्भ के नीचे खड़े हैं अदृष्ट-पूर्व वीरों के बड़ा श्रेष्ठ दल ! वे वीर विश्वासपात्र हैं। अपने बहुमूल्य प्राणों की बलि देकर भी वे ध्वजा की रक्षा कर लेंगे। (माता का०) ४ वे जो व्यूहों में खड़े हैं, वह आर्य दृश्य (उत्कृष्ट दृश्य) मन का आह्लाद नहीं है क्या ? (माता का०) ५ सुशोभित तमिळ देश के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शंन्दमिळ् नाट्टुप् पॊरुनर्— कॊडुम्
तीक्कण् मऱवर्हळ् शेरऩ्ऱऩ् वीरर्
शिन्बै तुणिन्द तॆलुङ्गर्— तायिऩ्
शेवडिक् के पणि शॆय्दिडु तुळुवर् 6
कऩ्ऩडियर् ऒट्टिय राडु— पोरिऱ्
कालऩु मञ्जक् कलक्कु मराट्टर्,
पॊऩ्ऩहर्त् तेवर्हळॊप्प— निऱ्कुम्
पॊऱ्पुडै यारिन्दुस्तानत्तु मल्लर् 7
पूदल मुऱ्ऱिडुम् वरैयुम्— अऱप्
पोर्बिऱल् यावुम् मऱप्पुऱुम् वरैयुम्
मादर्हळ् कऱ्पुळळ वरैयुम्— पारिल्
मऱैवरुम् कीर्त्ति कॊळ् रजपुत्र वीरर् 8
पञ्ज नदत्तुप् पिऱन्दोर्— मुऩ्ऩैप्
पार्त्तऩ् मुदऱ् पलर् वाळ्न्दनऩ् नाट्टार्
तुञ्जुम् पॊळ्दिऩुम् तायिऩ्— पदत्
तॊण्डु निऩैन्दिडुम् वङ्गत्तिऩोरुम् 9
शेर्न्ददैक् काप्पदु काणीर्— अवर्
शिन्दैयिऩ् वीरम् निरऩ्दरम् वाळ्ह !
तेर्न्ददवर् पोऱ्ऱुम् बरद— निलत्
तेवि तुवजम् शिर्प्पुऱ वाळ्ह (तायिऩ्) 10

बारद जनङ्गळऩ् तऱ्काल निलैमैं—15

नॊण्डिच् चिन्दु (छन्द)

नञ्जु पॊऱुक्कु दिलैये— इन्द
निलैकॆट्ट मऩिदरै निऩैन्दु विट्टाल्
अञ्जि यञ्जिच् चावार्— इवर्
अञ्जाद पॊरुळिल्लै यवऩियिले

तमिळ वीर, क्रूर अग्नि-सम आँखों वाले मरव (एक वीर जाति) लोग, शेर (तमिळ प्रदेश—चोळ शेर, पांड्य —तीन प्रदेशों में बँटा था। उनमें 'शेर' पश्चिम में है। अब केरल प्रदेश) राजा के वीर, दृढ़-चित्त तेलुङ्ग (आंध्र) लोग और माता के श्रेष्ठ चरणों की सेवा में कटिबद्ध तुळुव लोग—६ कन्नड (कर्नाटक) लोग तथा उनसे मिले महाराष्ट्र देश के मरहठे वीर, जो युद्ध में यम को भयभीत करते हुए विक्षुब्ध करनेवाले हैं, जो स्वर्ण नगरी अमरावती के सुरों की समानता करते हुए, खड़े रहते हैं, वे गौरवपूर्ण हिन्दुस्तान के मल्ल,— ७ और राजपुत्र वीर, जिनकी कीर्ति तब तक लुप्त नहीं हो सकती, जब तक भूतल का अंत नहीं होता, धर्मयुद्ध की वीरता हर तरह से अमान्य नहीं होती

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'कन्नड' और 'मराठे' सैनिक यम को भी भयदायक हैं।
हिन्दुस्तानी 'मल्ल' लग रहे देवगणों के नायक हैं॥
मेरी माँ की दिव्य ध्वजा का बार-बार वन्दन कर लो॥ ५-७॥
राजपूत ये खड़े हुए हैं 'वीर राजपूताने के'।
(आन-बान पर मरनेवाले हैं वंशज मर्दाने के)॥
जब तक धर्मयुद्ध की महिमा जब तक है सतीत्व वंदित।
जब तक भूतल की सत्ता है तब तक इनकी कीर्ति कलित॥
इधर 'पंचनद वीर' खड़े हैं, 'पार्थ-वंश के वीर अतुल'।
स्वप्नों में भी माँ के पूजक 'बंग देश के वीर' (विपुल)॥
मेरी माँ की दिव्य ध्वजा का बार-बार वन्दन कर लो॥ ८-९॥
(ध्वजा-वन्दना करने के हित) पंक्ति-बद्ध सब खड़े हुए।
(सिंह-सरिस सेना के सैनिक व्यूह-बद्ध सब अड़े हुए)॥
इनके मन में अडिग धैर्य है (सबकी यही कामना है)।
चिरजीवी ये रहें जगत में (सबकी यही कामना है)॥
विपुल वीर करते हैं जिसकी मंजुल महिमा का वर्णन।
अमर रहे यह ध्वजा देश की (अमर रहे इसका वंदन)॥
(देश दिवानो) दर्शन कर लो, सविनय अभिनंदन कर लो।
मेरी माँ की दिव्य ध्वजा का (बार-बार) वन्दन कर लो॥ १०॥

भारतीयों की वर्तमान दशा--१५

(दीन-दशा को देख) नहीं है मन सह पाता॥ टेक॥
यहाँ मूढ़ जन (प्रतिपल) डरते (प्रतिपल) मरते।
सभी वस्तुएँ भूत समझकर उनसे डरते॥
(भूत-प्रेत से भीत) उन्हीं की बातें करते।
वृक्ष-तडाग, स्तम्भ पर बैठे देख सिहरते॥

और जब तक स्त्रियों का पातिव्रत्य पालित नहीं रह जाता। ८ पंचनद (पांचाल) में जनमे वीर, पहले पार्थ से लेकर अब तक के लोगों के उस देश के वीर, सोते समय भी माता की चरण-सेवा का स्मरण करते रहनेवाले बंग देश के वीर-- ९ ये सब एकत्र खड़े हैं। देखो। उनके मन का धैर्य निरन्तर जिए रहे। चुने हुए श्रेष्ठ लोग जिसकी महिमा का मान करते हैं, उस भारत-देश भूमि रूपी देवी की ध्वजा विशेष गौरव का पात्र बनकर अमर रहे। (माता का०) १०

भारतीय जनों की आजकल की स्थिति--१५

चित्त इसे सह नहीं पाता। जब हम अच्छी स्थिति से गिरे हुए (पतित) लोगों की बात सोचते हैं। वे डरते-डरते मरते हैं। इस भूमि में ऐसी कोई चीज नहीं, जिससे वे नहीं डरते। वे वंचक भूत की बात करते हैं (हौआ देखते हैं) और कहते हैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वञ्जनप् पेय्ह ळॆन्बार्— इन्द
मरत्ति लॆऩ्बार्; अन्दक् कुळत्ति लॆऩ्बार्
तुञ्जुदु मुहट्टि लॆन्बार्— मिहत्
तुयर्प्पडु वार् ऍण्णिप् पयप्पडुवार् (नॆञ्जु) 1
मन्दिर वादियॆन्बार्— शॊऩ्ऩ
मात्तिरत्ति लेमऩक् किलिपिडिप्पार्;
यन्दिर शूऩियङ्गळ्— इऩ्ऩुम्
ऍत्तऩै आयिरम् इवर् तुयर्हळ् !
तन्द पॊरुळैक् कॊण्डे— जऩम्
ताङ्गुव रुलहत्तिल् अरशरॆल्लाम्
अन्द अरशियलै— इवर्
अञ्जुदरु पेयॆऩ्ऱॆण्णि नॆञ्जमयर्बार् (नॆञ्जु) 2
शिप्पायैक् कण्डञ्जुबार्— ऊर्च्
चेवहऩ् वरुदल् कण्डु मऩम् पदैप्पार्
तुप्पाक्कि कॊण्डॊरुवऩ्— वॆहु
दूरत्तिल् वरक्कण्डु वीट्टिलॊळिप्पार्
अप्पा लॆवऩो शॆल्वाऩ्— अवऩ्
आडैयैक् कण्डु बयन् दॆळुन्दु निऱ्पार्
ऍप्पोदुम् कैकट्टुवार्— इवर्
यारिडत्तुम् पूऩैहळ् पो लेङ्गि नडप्पार् (नॆञ्जु) 3
नॆञ्जु पॊरुक्कुदिलैये— इन्द
निलै कॆट्ट मऩिदरै निऩैन्दु विट्टाल्
कॊञ्जमो पिरिविऩैहळ्— ऒरु
कोडि यॆऩ्ऱाल् अदु पॆरिदामो ?
ऐन्दु तलैप् पाम् बॆन्बाऩ्— अपपऩ्
आऱुतलै यॆऩ्ऱु महऩ् शॊल्लि विट्टाल्
नॆञ्जु पिरिन्दिडुवार्— पिऩ्बु
नॆडुना ळिरुवरुम् पहैत्तिरुप्पार् (नॆञ्जु) 4
शात्तिरङ्ग ळॊऩ्ऱुङ् गाणार्— पॊय्च्
चात्तिरप् पेय्हळ् शॊल्लुम् वार्त्तै नम्बिये
कोत्तिरम् ऒऩ्ऱायिरुऩ् दालुम्—ऒरु
कॊळ्हैयिऱ् पिरिन्द वऩैक् कुलैत् तिहळ्वार्;

कि वह इधर इस पेड़ पर है, उधर उस तालाब में है। वा उस शहतीर पर बैठा है। ऐसा मानकर वे बहुत दुःखी होते हैं, भयभीत होते हैं। (तमिळ में क्रियाएँ भविष्य-काल में हैं।) (चित्त सह०) १ वे 'ओझा' कहते हैं और कहने मात्र से वे भयभीत-मन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रतिपल इनके मन को भय का भूत सताता।
दीन दशा को देख नहीं है मन सह पाता ॥ १ ॥

यंत्र-मंत्र औ तंत्र-मूठ से मांत्रिक ओझा।
(अशिक्षितों पर) लाद रहे हैं भय का बोझा ॥
होते हैं सरकारी जन जनता के पालक।
किन्तु उन्हें ये भूत समझते (घर के घालक) ॥
(फँसे मूढ़ता में न इन्हें कोई समझाता)।
(दीन दशा को देख) नहीं है मन सह पाता ॥ २ ॥

देख सिपाही और दरोगा घबराते हैं।
और देख बंदूक़ घरों में छिप जाते हैं ॥
वर्दीधारी देख काँपते हाथ जोड़ते।
भीगी बिल्ली बन (साहस का साथ छोड़ते) ॥
(सिंह बन गये स्यार) दशा दयनीय विधाता।
(दीन दशा को देख) नहीं है मन सह पाता ॥ ३ ॥

दीन दशा इनकी न सही जाती (दुखदाई)।
भेद-भाव शत-कोटि (भिन्न हैं भाई-भाई) ॥
साँप पाँच सिर वाला है, यदि पिता बताता।
छः सिर वाला साँप, पुत्र उसको बतलाता ॥
बीज सदा के लिए बैर का है पड़ जाता।
(दीन दशा को देख) नहीं है मन सह पाता ॥ ४ ॥

हो जाते हैं। 'टोना-टोटका !'— हाय ! कितने ही हज़ार संकट इनके होते हैं। संसार में राजा प्रजा से वस्तुएँ (कर के रूप में) लेकर प्रजा का परिपालन करते हैं। ये लोग उस शासन को 'भयंकर भूत' समझकर शिथिल पड़ जाते हैं (यहाँ शायद, भारती का कहना है कि लोग राज्य के सिपाहियों आदि को देखकर भयभीत होते हैं।) (चित्त सह०) २ ये लोग सिपाही को देखकर डरते हैं। जब गाँव का रक्षक आता है, तो देखकर घबड़ा जाते हैं। किसी को दूर में बन्दूक़ लेकर आता देखकर ये घर में जाकर छिप जाते हैं। उधर कोई कहीं हटकर जा रहा है— उसकी पोशाक (वरदी) देखकर ये भय से उठ खड़े हो जाते हैं। हमेशा हाथ बाँधे खड़े रहते हैं। ये किसी के भी सामने भीगी बिल्ली बनकर दयनीय व्यवहार करते हैं। (चित्त सह०) ३ इन गिरे हुए लोगों का स्मरण करें, तो हाय ! चित्त सह ही नहीं पाता। (इस देश में) क्या विभेद कम हैं ? एक करोड़ कहो, तो भी अत्युक्ति नहीं होगी। पिता कहता है— पाँच सिरों वाला साँप है। पर यदि पुत्र कहे कि नहीं, वह छः सिरों वाला है, तो उनके मन ही एक-दूसरे से पृथक् हो जाते हैं। फिर लम्बे अरसे तक वे अलग ही रहते हैं। (चित्त सह०) ४ वे कोई शास्त्र नहीं जानते। झूठे शास्त्र रूपी भूतों के कथन पर विश्वास करके, वे उसको त्रस्त करते हैं तथा उसकी निन्दा करते हैं, जो किसी सिद्धांत के कारण पृथक् हो गया, चाहे उनका गोत्र एक ही क्यों न हो। (इधर भारतीजी का जीवन ही दृष्टान्त के रूप में लिया जा सकता है। उन दिनों ब्राह्मणों में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तोत्तिरङ्गळ् शॊल्लियवर् ताम्— तमैच्
चूदु शॆय्युम् नी शर्हळैप् पणिन् दिडुवार्;
आत्तिरङ् गॊण्डेयिवन् शैवन्— इवन्
अरि बक्त नन्ऱु पॆऱुञ् जण्डेयिडुवार् (नॆञ्जु) 5
नॆञ्जु पॊऱुक्कुदिलैये— इदै
निनैन्दु निनैत्तिडिनुम् वॆऱुक्कुदिलैये
कञ्जि कुडिप्पदऱ् किलार्— अदन्
कारणङ्गळ् इवैयॆन्नुम् अऱिवुमिलार्
पञ्जमो पञ्जमॆन्ऱे— निदम्
परिदवित्ते उयिर् तुडितुडित्तु
तुञ्जि मडिहिन्ऱारे— इवर्
तुयर्हळैत् तीर्क्क वोर् वऴियिलैये (नञ्जु) 6
ऎण्णिला नोयुडैयार्— इवर्
ऎऴुन्दु नडप्पदऱ्कुम् वलिमैयिलार्
कण्णिलाक् कुऴन्दैहळ् पोल्— पिऱर्
काट्टिय वऴियिऱ् चॆन्ऱु माट्टिक् कॊळ्वार्
नण्णिय पॆरुङ्गलैहळ्— पत्तु
नालायिरङ् गोडि नयन्दु निन्ऱ
पुण्णिय नाट्टिनिले— इवर्
पॊऱियऱऱ विलङ्गुहळ् पोल वाऴ्वार् (नॆञ्जु) 7

निहऴ्हिन्ऱ हिन्दुस्तानमुम् वरुहिन्ऱ हिन्दुस्तानमुम्—16

पोहिन्ऱ बारदत्तैच् चबित्तल्

वलिमैयऱऱ तोऴिनाय् पो पो पो
मार्बिले ऒडुङ्गिनाय् पो पो पो
पॊलिविला मुहत्तिनाय् पो पो पो
पॊऱियिऴन्द विऴियिनाय् पो पो पो

आचार-व्यवहार की कड़ाई अत्यधिक थी। छुआछूत का सख्त विचार था। आहार-पोशाक के नियम अटूट थे। आज के परिवर्तन के मुक़ाबले में भारती उतनी दूर अलग नहीं गये थे जितनी दूर जाना आजकल ब्राह्मणों में मामूली बात हो गयी है। तो भी भारती को जाति-भ्रष्ट-सा रहना पड़ा था।) पर वे ही अपने वंचक हानिकर्ता नीचों की स्तुति करते हैं तथा विनय करते हैं। और आपस में बड़े गुस्से के साथ यह कहते हुए लड़ते हैं कि 'यह शैव है', 'यह हरिभक्त (वैष्णव) है'। (चित्त सह०) ५ चित्त सह नहीं पाता। तो भी उनसे घृणा नहीं की जाती। उनके पास 'माँड़' (रूखी-सूखी रोटी) भी नहीं है। ऐसा क्यों है? इसके कारण को जानने की बुद्धि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(पढ़े-लिखे वे नहीं), शास्त्र को नहीं जानते।
मिथ्या-विश्वासों को ही वे धर्म मानते॥
जाति-निकाला, त्रसित भाइयों को करते हैं।
नीच वंचकों के चरणों पर सिर धरते हैं॥
शैव-वैष्णवी का वैर परस्पर क्रोध बढ़ाता।
(दीन दशा को देख) नहीं है मन सह पाता॥ ५॥
है असह्य तो भी न घृणा उनसे की जाती।
रूखी-सूखी रोटी भी न उन्हें मिल पाती॥
आया है अकाल कहते, न समझ पाते हैं।
चिल्लाते हैं और तड़पते मर जाते हैं॥
देख दशा इनकी (दयालु जन अश्रु बहाता)।
देख दशा निरुपाय, नहीं है मन सह पाता॥ ६॥
रोगों से हैं ग्रस्त, न पग भर चल पाते हैं।
अंधों-से बतलाये पथ पर टकराते हैं॥
विद्या और कलानिधि जहाँ सदैव रहे हैं।
अज्ञानी पशु-सम वे जीवन बिता रहे हैं॥
(है कैसी दुर्दशा देश की, देश-विधाता!।
(दीन दशा को देख) नहीं है मन सह पाता॥ ७॥

वर्तमान भारत तथा भावी भारत--१६

गमनशील भारत को शाप देना

हे निर्बल भुजवाले जाओ, क्षुद्र वक्ष वाले जाओ।
प्रभाहीन मुखवाले जाओ, निष्प्रभ दृगवाले जाओ॥
मंदस्वर वाले तुम जाओ, निर्बल तनवाले जाओ।
भयत्रस्त मनवाले जाओ, दास्यवृति वाले जाओ॥ १॥

भी वे नहीं रखते। 'अकाल है', 'अकाल आया है'-- यही चिल्लाते हुए वे रोज छटपटाते हैं, तड़पते हैं और मर जाते हैं। इनके दुःखों को दूर करने का रास्ता भी कोई नहीं दिखता। (चित्त सह०) ६ ये असंख्य रोगों के शिकार हुए हैं। उनमें उठकर चलने की शक्ति भी नहीं है। अन्धे शिशु के समान ये दूसरों के बताये मार्ग से जाकर फँस जाते हैं (धोखा खाते हैं)। ये उस देश में, जो दस, चार हजार, करोड़ (बहुत बड़ी संख्या में) कलाओं का लाघव (कौशल) से अभ्यास करता रहा, अब बुद्धिहीन पशुओं के समान रहते हैं। (चित्त सह०) ७

वर्तमान हिन्दुस्तान तथा आनेवाला हिन्दुस्तान—१६

गमनशील हिन्दुस्तान को शाप देना

हे निर्बल-भुज, जाओ, जाओ जाओ! संकुचित वक्ष-वाले! जाओ! प्रभाहीन मुख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऑलियिऴन्द कुरलिनाय् पो पो पो
ऑळियिऴन्द मेनियाय् पो पो पो
किलिपिडित्त नॅञ्जिनाय् पो पो पो
कीऴ्मैयॅन्रुम् पेण्डुवाय् पो पो पो 1
इन्रु बारदत्तिडै नाय् पोले
एऱ्ऱ मिन्ऱि वाऴुवाय् पो पो पो
नन्रु कूऱि लञ्जुवाय् पो पो पो
नाणिलादु कॅञ्जुवाय् पो पो पो
शॅन्रु पोन पॉय्यॅलाम् मॅय्याहच्
चिन्दै कॉण्डु पोऱ्ऱुवाय् पो पो पो
वॅन्रु निऱ्कु मॅय्यॅलाम् पॉय्याह
विऴि मयङ्गि नोक्कुवाय् पो पो पो 2
वेरु बेरु बाषैहळ्— कऱ्पाय् नी
वीट्टु वार्त्तै कऱ्किलाय् पो पो पो
नूरु नूल्हळ् पोऱ्ऱुवाय्— मॅय्कूरुम्
नूलिलॉत् तियल्हिलाय् पो पो पो
मारु पट्ट वादमे ऐन्नूरु
वायिल् नीळ ओदुवाय् पो पो पो
शेरु पट्ट नाऱ्ऱमुम्— तूरुञ् जेर्
शिऱिय वोडु कट्टुवाय् पो पो पो 3
जादि नूरु शॉल्लुवाय् पो पो पो
तरुम मॉन्ऱि यऱ्ऱि लाय् पो पो पो
नीदि नूरु शॉल्लुवाय्— काशॉन्रु
नीट्टिनाल् वणङ्गुवाय् पो पो पो
तीदुशॅय्व दञ्जिलाय्— निन् मुन्ने
तीमै निऱ्कि लोडुवाय् पो पो पो
शोदिमिक्क मणियिले— कालत्ताल्
शूऴ्न्द माशु पोन्ऱनै पो पो पो 4

वरुहिन्ऱ बारदत्तै वाऴ्त्तल्

ऑळि पडैत्त कणणिनाय् वा वा वा
उरुदि कॉण्ड नॅञ्जिनाय् वा वा वा
कळि पडैत्त मॉऴिषिनाय् वा वा वा
कडुमै कॉण्ड तोळिनाय् वा वा वा

बाले ! जाओ ! तेजहीन आँख वाले, जाओ ! मंद स्वर वाले ! जाओ ! निष्प्रभ देह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुत्तों-सा अपमानित जीवन तय करनेवाले जाओ।
भलाइयों के उपदेशों से तुम डरनेवाले जाओ॥
बन निर्लज्ज चापलूसी कर (तन दह-) ने वाले जाओ।
बीते मिथ्या-विश्वासों को सच कहनेवाले जाओ॥
(दीन-दास-निर्लज्ज गुज़ारे पर खुश, तुम जाओ, जाओ)।
भ्रमवश सत्य, असत्य मानकर खुश रहनेवाले जाओ॥ २॥
तज निज-भाषा, पर-भाषा में तुम बढ़नेवाले जाओ।
धर्मग्रंथ तज, सौ-सौ पोथों को पढ़नेवाले जाओ॥
शत-शत-मुखधर व्यर्थ वितंडा कर, हँसनेवाले जाओ।
दुर्गन्धित सीले झंखारों में बसनेवाले जाओ॥ ३॥
जाति-भेद अपनानेवाले धर्माचरण-हीन जाओ।
नीति बखान! नियत कौड़ी पर डगमग! ऐसे तुम जाओ॥
दुष्कर्मों को कर, परिणामों से डरनेवाले जाओ।
मल की तह बन रत्न-ज्योति धूमिल करनेवाले जाओ॥ ४॥

भावी भारत का स्वागत

तेज-पूर्ण-दृगवाले! आओ, धैर्य-युक्त-मनवाले! आओ।
ओज-पूर्ण-स्वरवाले! आओ, वज्र-सरिस-भुजवाले आओ॥
नव-निर्मल-मतिवाले! आओ, सिंह-वृषम-गतिवाले! आओ।
नीचों की नीचता देखकर सहज क्रोध वाले आओ॥
(मेट गुलामी आज़ादी का दम भरनेवाले आओ)।
दीनों पर हमदर्द, दुःख उनके हरनेवाले आओ॥ १॥

वाले! जाओ! भयत्रस्त चित्त वाले, जाओ! सदा की दासता के चाहनेवाले, तुम जाओ, जाओ, चले जाओ। १ आज भारत में उन्नति के बिना कुत्ते के समान रहोगे—जाओ, जाओ, जाओ! भला कहा जाय, तो भी डरोगे—जाओ! बिना शर्म के चिरौरी करोगे, जाओ! गये-गुज़रे सारे झूठ को सत्य मानकर तुम उसकी सेवा करोगे, जाओ! जो सत्य विजय के साथ आँखों के सामने रहता है, उसे आँखों में भ्रम लेकर असत्य के रूप में देखोगे! —जाओ! २ अन्य अलग-अलग भाषाएँ सीखोगे, पर घर की भाषा नहीं सीखोगे—जाओ! सौ-सौ ग्रंथ पढ़ोगे, पर सत्य ग्रंथ मानकर नहीं चलोगे, चले जाओ! वितंडावाद पाँच सौ मुखों से करोगे, जाओ! पंकिल, दुर्गन्ध-पूर्ण तथा झाड़ियों से छोटे-छोटे घर बनाओगे, जाओ! ३ (आपस में) सौ जातियाँ कहोगे (जातियों में बँटे रहोगे), पर कोई धर्म-आचरण नहीं करोगे। सौ नीतियाँ बघारोगे, पर एक कौड़ी सामने आ जाए, तो सिर नवा दोगे। बुरा करने से नहीं डरोगे। पर अपने सामने संकट आवे, तो भाग जाओगे—जाओ, चले जाओ! ज्योतिर्युक्त रत्न पर लगे मैल के समान रहते हो—चले जाओ। ४

आनेवाले भारत का स्वागत

ओजपूर्ण आँख वाले, आओ, आओ! धैर्ययुक्त चित्त वाले, आओ, आओ!

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तॆळिवु पॆऱ्ऱ मदियिन्नाय् वा वा वा
शिऱुमै कण्डु पॊङ्गुवाय् वा वा वा
ऎळिमै कण् डिरङ्गु वाय् वा वा वा
एऱु पोल् नडैयिन्नाय् वा वा वा 1
मॆय्म्मै कॊण्ड नूलैये— अन्बोडु
वेदमॆन्ऱु पोऱ्ऱुवाय् वा वा वा
पॊय्मै कूऱ लञ्जुवाय् वा वा वा
पॊय्मै नूल्ह ळॆऱ्ऱुवाय् वा वा वा
नॊय्मैयऱ्ऱ शिन्दयाय् वा वा वा
नोय्हळऱ्ऱ उडलिन्नाय् वा वा वा
तॆय्ब शाबम् नीङ्गवे— नङ्गळ् शोर्त्
तेशमीदु तोन्ऱुवाय् वा वा वा 2
इळैय बारदत्तिनाय् वा वा वा
ऎदिरिला वलत्तिन्नाय् वा वा वा
ऒळियिळन्द नाट्टिले— निन्ऱ्ऱेऱुम्
उदय ञायि ऱॊप्पवे वा वा वा
कळैयिळन्द नाट्टिले— मुन् बोले
कळै शिर्क्क वन्दन्नै वा वा वा
विळैयु माण्बु यावैयुम्— पार्त्तन् बोल्
विऴियिन्नाल् विळक्कुवाय् वा वा वा 3
वॆऱ्ऱि कॊण्ड कैयिन्नाय् वा वा वा
विनय निन्ऱ नाविन्नाय् वा वा वा
मुऱ्ऱि निन्ऱ वडिविन्नाय् वा वा वा
मुळुमै शेर् मुहत्तिन्नाय् वा वा वा
कऱ्ऱलॊन्ऱु पॊय्क्किलाय् वा वा वा
करुदिय दियऱ्ऱुवाय् वा वा वा
ऒऱ्ऱुमैक्कुळुय्यवे— नाडॆल्लाम्
ऒरु पॆरुञ् जॆयल् शॆय्वाय् वा वा वा 4

बारद समुदायम्—17

राग— बिहाग; ताल— तिस्र एक ताल

पल्लवि (टेक)

बारद समुदायम् वाळ्हवे— वाळ्ह वाळ्ह
बारद समुदायम् वाळ्हवे— जय जय जय (बारद)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सद्ग्रंथों का वेदों के सम, आदर-करनेवाले ! आओ ।
क्षुद्र हीन भावों को तजकर विमल चित्तवाले !आओ ।।
तज असत्य, मिथ्या-ग्रंथों को ठुकरानेवाले ! आओ ।
स्वस्थ-सबल-तनवाले ! आओ, अति-उदार-मनवाले आओ ।।
(मेट ग़ुलामी आज़ादी का दम भरनेवाले ! आओ) ।
देव-शाप कर दूर, देश के भावी निर्माता ! आओ ।। २ ।।
हे तरुण ! नवोदित भारत में, अमित शौर्य लेकर आओ ।
भारत का तम हर नव-रवि-से मृदु-मुसकानेवाले ! आओ ।।
गौरव-गरिमा-हीन देश को हे चमकानेवाले ! आओ ।
पार्थ-सरीखे सुभटजनों को, हे दमकानेवाले ! आओ ।। ३ ।।
विजय-हस्तवाले ! तुम आओ, विनय-वचनवाले ! तुम आओ ।
पूर्ण-रूपवाले ! तुम आओ, पूर्णाननवाले ! तुम आओ ।।
जो भी सीख चुके हो उसको सफल निभानेवाले ! आओ ।
जो भी सोच रहे हो उसको कर दिखलानेवाले ! आओ ।।
विशद-देश में ऐक्य-भावना को भरनेवाले ! तुम आओ ।
समुन्नती के लिए कर्म अविरत करनेवाले ! तुम आओ ।। ४ ।।

भारतीय समाज—१७

चिरजीवी भारत-समाज की जय हो, जय हो ।
कोटि-कोटि के राष्ट्र (-धवल) का नवल-उदय हो ।। टेक ।।

उत्साहपूर्ण बोली वाले, आओ आओ ! कठोरतायुक्त भुजा वाले, आओ, आओ ! निर्मल मति वाले, आओ, आओ ! नीचता देखकर (कोप से) भड़कनेवाले, आओ ! दीनता को देखकर सहानुभूति करोगे--आओ! सिंह वृषभ-की-सी चाल वाले, आओ ! १ सत्यदर्शी ग्रंथों को ही आदर के साथ वेदों के समान सम्मानित करोगे, जाओ ! असत्य-कथन से डरोगे— आओ ! मिथ्या-ग्रंथों को ठुकराओगे-- आओ ! क्षुद्रता से हीन चित्तवाले, आओ ! नीरोग शरीरवाले, आओ ! देव-शाप को दूर करने के लिए इस देश में पैदा होनेवाले, हे भावी भारतीय-- आओ ! २ बाल भारतवासी ! आओ ! अप्रतिहत वीरता के साथ ही आओ ! अंधकारमय देश में चढ़नेवाले उदीयमान मान सूर्य के समान तुम आओ ! जो गौरव-शोभा खो रहा है, उस देश में पहले की तरह चटक लाने के लिए आये हो-- आओ ! जो बड़प्पन को प्राप्त होनेवाले हैं, उन सबको पार्थ के समान अपनी दृष्टि से प्रकाश में लाओगे-- आओ ! ३ हे विजयहस्त, आओ ! हे विनय-जिह्वा, आओ ! हे पूर्णरूप, आओ ! हे पूर्णता से शोभित आनन वाले, आओ ! जो भी सीख चुके हो, उसको व्यर्थ न करनेवाले, आओ ! जो सोचते हो, वह कर दिखाओगे, आओ ! सारा देश एक बनकर उन्नति करे-- तुम ऐसा एक बड़ा काम करोगे, आओ ! ४

भारतीय समाज—१७

टेक— भारतीय समाज की जय हो । जिए, जिए, जिए, भारतीय-समाज जिए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनुपल्लवि (अनुटेक)

मुप्पदु कोडि जनङ्गळिन् सङ्ग
मुऴुमैक्कुम् पॊदु उडैमै
ऒप्पिलाद समुदायम्
उलहत्तुक् कॊरु पुदुमै— वाऴ्ह (बारद)

शरणङ्गळ् (चरण)

मनिद रुणवै मनिदर् परिक्कुम्
वऴक्क मिनियुण्डो ?
मनिदर् नोह मनिदर् पार्क्कुम्
वाऴ्क्कै यिनिपुण्डो ? — पुलनिल्
वाऴ्क्कै यिनियुण्डो ?
इनिय पॊऴिल्हळ् नॆडिय वयल्हळ्
ऎण्णरुम् पॆरुनाडु
कनियुङ् गिऴङ्गुम् दानियङ्गळुम्
कणक्किन्ऱित् तरु नाडु— इदु
कणक्किन्ऱित् तरु नाडु— नित्त नित्तम्
कणक्किन्ऱित् तरु नाडु— वाऴ्ह (बारद) 1
इनि यॊरु विदि शॆय्वोम्— अदे
ऎन्द नाऴुम् काप्पोम्
तनि यॊरुवनुक् कुणविलै यॆनिल्
जगत्तिनै अऴित्तिडुवोम्— वाऴ्ह (बारद) 2
ऎल्ला उयिर्हळिलुम् नानै यिरुक्किऱेन्
ऎन्ऱुरैत्तान् कण्ण पॆरुमान्;
ऎल्लारु ममर निलै यॆय्दु नन् मुऱैयै
इन्दिया उलहिऱ् कळिक्कुम्— आम्
इन्दिया उलहिऱ् कळिक्कुम्— आम् आम्
इन्दिया उलहिऱ् कळिक्कुम्— वाऴ्ह (बारद) 3
ऎल्लारु मोर्कुलम् ऎल्लारु मोरिनम्
ऎल्लारु मिन्दिया मक्कळ्
ऎल्लारु मोर् निऱै ऎल्लारु मोर् विलै
ऎल्लारुम् इन्नाट्टु मन्नर्— नाम्
ऎल्लारुम् इन्नाट्टु मन्नर्— आम्
ऎल्लारुम् इन्नाट्टु मन्नर्— वाऴ्ह 4 (बारद)

(जय जय, जय)। यह अनुपम समाज सारे तीस करोड़ की जनसंख्या की आम निधि है। यह, विश्व की आँखों में नयी (निधि) है। (भारत०)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अब निर्बल का कौर नहीं छीनेगा बलधर।
अब न हँसेंगे सुखी, दुखी-दुख देख-देखकर॥
होंगे सब मतिमान, बुद्धि से हीन न कोई।
होंगे सभी सुखी जन, दीन-मलीन न कोई॥
अति विशाल हैं खेत, असंख्यक वन-उपवन हैं।
कन्द-मूल-फल-फूल-धान्य से भरे भवन हैं॥
सब कुछ देनेवाला (अक्षय देनेवाला)।
अगणित देनेवाला है यह देश निराला॥
(दिन-दिन दूनी उन्नति हो अभिराम) विजय हो।
चिरजीवी भारत-समाज की जय हो, जय हो॥ १॥

बना नवीन-विधान, नियम उसके पालेंगे।
कोई भूखा रहा एक तो जग घालेंगे॥
(निर्भय हों सब जन, न मौत का भी संशय हो)।
चिरजीवी भारत-समाज की जय हो, जय हो॥ २॥

'सबके उर में बसता हूँ', यह कृष्ण-कथन है।
भारत का यह ज्ञान विश्व का अक्षय धन है॥
सब जग को दे रहा ज्ञान इसकी जय-जय हो।
चिरजीवी भारत-समाज की जय हो, जय हो,॥ ३॥

सभी एक कुल, एक गोत्र भारत-बालक हैं।
एक-वज़न हैं, एक-मोल हैं, सब शासक हैं॥
देश-नृपति हैं, देश-नृपति हम सबकी जय हो।
चिरजीवी भारत-समाज की जय हो, जय हो॥ ४॥

मनुष्य के मुख के निवाले को मनुष्य ही छीन ले, क्या यह रीति आगे बनी रहेगी ? मनुष्य दुःखी हो और मनुष्य देखता रहे-- ऐसा जीवन अब होगा क्या ? मतिहीन जीवन अब होगा क्या ? हममें ऐसा जीवन क्या ? (नहीं होगा।) हमारा ऐसा देश है, जिसमें असंख्य सुन्दर बाग हैं और बिशाल खेत हैं। फल, कन्द, धान्य --यह सब अत्यधिक देनेवाला यह देश। यह अगणित रूप से देनेवाला देश है। दिन-प्रतिदिन अनगिनत रूप से देनेवाला देश है। जिए यह--(भारत०) १ अब हम नयी विधिब नायेंगे और उसका सदा पालन करेंगे। (हममें से) किसी एक को भी खाना न मिले तो हम जगत को मिटा देंगे। जिए यह-- (भारत०) २ परमात्मा कृष्ण ने कहा कि मैं सभी जीवों में रहता हूँ। भारत सभी जगत को अमरत्व पाने का उपाय (ज्ञान) दिला देगा। हाँ, भारत जगत को (ऐसा ज्ञान) दिलाएगा। हाँ, हाँ, भारत जगत को (ऐसा ज्ञान) दिलाएगा। जिए यह-- (भारत०) ३ सभी एक ही कुल के हैं, एक ही बिरादरी के हैं। हम सभी भारत की संतानें हैं। सभी का बज़न एक ही है। सभी का एक ही मोल है। सभी इस देश के राजा हैं। हम सब इस देश के राजा हैं। हाँ, सब इस देश के राजा हैं। जिए यह (भारत०) ४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जादीय गीदम्—18

[बङ्किम्चन्दिर शट्टोपाद्यायर् ऍऴुदिय जगत् पिरसिद्दि कॊण्ड 'वन्दे मादरम्' गीदत्तिन् मॊऴि पॆयर्प्पु ।]

(अनुवाद)

इनिय नीर्प् पॆरुक्किनै ! इन् कनि वळत्तिनै
तनिनऱु मलयत् तण्कार् चिऱप्पिनै !
पैन्निऱप् पऴनम् परविय वडिविनै (वन्दे) 1
वॆण्णिलाक् कदिर्महिऴ् विरित्तिडु मिरविनै !
मलर् मणिप् पूत्तिहऴ् मरन्पल शॆऱिन्दनै !
कुऱुनहै यिन्शॊलार् कुलविय माण्बिनै !
नल्हुवै यिन्बम् वरम्बल नल्हुवै ! (वन्दे) 2
मुप्पदु कोडिवाय् (निन्निशै) मुऴङ्गवुम्
अऱुपदु कोडि तो ळुयर्न्दुनक् काऱ्ऱवुम्
'तिऱनिलाळ्' ऍन्ऱुनै यावनै शॆप्पुवन् ?
अरुन्दिऱ लुडैयाय् ! अरुळिनैप् पोऱ्ऱि
पॊरुन्दलर् पडैपुऱत् तॊळित्तिडुम् पॊऱ्पिनै (वन्दे) 3
नीये वित्तै नीये तरुमम्
नीये यिदयम् नीये मरुमम्
उडलहत् तिरुक्कु मुयिरुमन् नीये ! (वन्दे) 4
तडन्दो ळहलाच् चक्ति नोयम्मे
शित्तनीङ् गादुऱु बक्तियु नीये
आलयन् दोऱु मणिपॆऱ विळङ्गुम्
तॆय्विह वडिवमुन् देवियिङ् गुनदे ! (वन्दे) 5
ऒरुपदु पडैकॊळु मुमैयव णीये !
कमल मॆल् लिदऴ्हळिऱ् कळित्तिडुङ् कमलै नी !
वित्तनन् गरुळुम् वॆण्मलर्त् तेवि नी ! (वन्दे) 6
पोऱ्ऱिवान् शॆल्बो ! पुरैयिलै निहरिलै !
इनिय नीर्प् पॆरुक्किनै इन्कनि वळत्तिनै !
शामळ निऱत्तिनै शरळमान् वहैयिनै
इनियपुन् मुऱुवलाय् इवङ्गुनल् लणियिनै !
तरित्तॆमैक् काप्पाय्, ताये ! पोऱ्ऱि ! (वन्दे) 7

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जातीय गीत : वन्दे मातरम्—१८

(स्व० बंकिमचन्द्र चटर्जी कृत)

माता सुंदर जलवाली है, माता सुंदर फलवाली।
शुचि-शीतल चन्दनवाली है, शस्य-श्याम अंचलवाली॥
सुजला, सुफला, शस्य-श्यामला मलयज शीतल गाता की।
(एक साथ सब करो वंदना) जय जय भारतमाता की॥ टेक॥

शुभ्र चाँदनी से पुलकित रजनी वाली भारतमाता।
फूले-फले-द्रुमों के दल से छविशाली भारतमाता॥
मधुर-भाषिणी सुहासिनी की सुखदाता वरदाता की।
(एक साथ सब करो वन्दना) जय-जय भारतमाता की॥ १॥

इसके कोटि-कोटि कंठों से गूँज रही कल-कल वाणी।
साठ करोड़ करों में शोभित कलित कृपाणी कल्याणी॥
कौन कह रहा माँ अबला है, है बहुबल-धारिणी यही।
रिपु-दल-संहारिणी यही हैं, निखिल-विश्व-तारिणी यही॥
(एक साथ सब करो वन्दना) जय जय भारतमाता की॥ २॥

विद्या यही, सुधर्म यही है, यही मर्म है, यही हृदय।
यही प्राण है, यही भुजा है, यही शक्ति का है संचय॥
मंदिर-मंदिर में मुसकाती मूर्ति मनोरम माता की।
(एक साथ सब करो वन्दना) जय जय भारतमाता की॥ ३॥

तुम दुर्गा दशभुजा दशों आयुध धारण करनेवाली।
वाणी विद्याप्रदा कमल-दल पर विहार करनेवाली॥
(एक साथ सब करो वन्दना) जय जय भारतमाता की॥ ४॥

कमला, अमला, अतुला, सुजला, सुफला, शस्य-श्यामला माँ।
सरला है, सुस्मिता, भूषिता, भरणी, धरणी, (विमला) माँ॥
(एक साथ सब करो वन्दना) जय जय भारतमाता की॥ ५॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जादीय गीदम् —19

पुदिय मॊऴि पॆयर्प्पु (नया अनुवाद)

[भारती के शब्दों में यह गाने के लिए अधिकयोग्य है ।]

नऴिर्मणि नीरुम् नयम्बडु कनिहळुम्
कुऴिर्पून् दॆन्ऱलुम्, कॊऴुम्बॊऴिर् पशुमैयुम्
वाय्न्दु नन् गिलहुवै, वाऴिय अन्नै ! (वन्दे) 1

तॆण्णिल वदनिर् चिलिर्त्तिडु मिरवुम्
तण्णियल् विरि मलर् ताङ्गिय तरुक्कळुम्
पुन्नहै यॊऴियुम् तेमॊऴिप् पॊलिवुम्
वाय्न्दनै यिन्बमुम् वरङ्गळु नल्हुवै (वन्दे) 2

कोडि कोडि कुरल्ह ळॊलिक्कवुम्
कोडि कोडि पुयत्तुणै कॊऱ्ऱमार्
नीडु पल्पडै ताङ्गिमुन् निऱ्कवुम्
कूडु तिण्मै कुऱैन्दनै यॆन्बदॆन् ?
आऱ्ऱलिन् मिहुन्दनै अरुम्बदङ् गूट्टुवै
माऱ्ऱलर् कॊणर्न्द वन्पडै योट्टुवै (वन्दे) 3

अऱिवु नो तरुम नो, उळ्ळ नो अदनिडै
मरुम नो उडऱ्कण् वाऴ्न्तिडु मुयिर् नो
तोऴिडै वन्बु नो, नॆञ् जहत् तन्बु नो
आलयन् दोरुम् अणि पॆऱ विळङ्गुम्
तंयवच् चिलैयॆलान् देवियिङ् गुन्दे (वन्दे) 4

पत्तुप् पडैहॊऴुम् पार्वदि देवियुम्
कमलत् तिदळ्हऴिर् कळित्तिडुङ् गमलैयुम्
अऱिविनै यरुळुम् वाणियुम् अन्नै नो ! (वन्दे) 5

तिरुनि ऱैन्दनै तन्निह ऱॊन्ऱिलै !
तीदु तीर्न्दनै नीर्वळञ् जार्न्दनै,
मरुवु शॆय्हऴिन् नऱ्पयन् मल्हुवै;
वळनिन् वन्ददॊर् पॆन्निऱम् वाय्न्दनै,
पॆरुहु मिन्ब मुडैयॆ, कुरुनहै
पॆऱ्ऱॊऴिर्न्दन पल्पणि पूण्डनै
इरुनिलत्तुवन् दॆम्मुयिर् ताङ्गुवै
(अङ्गळ् ताय्निन् पदङ्ग ळिरैञ्जुवाम् (वन्दे) 6

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वन्दे मातरम्

[स्व० ऋषि बंकिम-विरचित बँगला "वन्दे मातरम्" का मूल पाठ]

उसी गीत का नया अनुवाद—१९

[भारती ने बंकिम के दो अनुवाद प्रस्तुत किये। पहला (अहवल छंद में) अनुवाद गीत १८ है, जिसका हिन्दी पद्यानुवाद पृ० ९५ में प्रस्तुत है। यह गीत १९ अनेक छंदों में, गेय नया अनुवाद है। यहाँ नीचे मूल गीत ही प्रस्तुत है।]

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य श्यामलाम् मातरम् (वन्दे)
शुभ्रज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम् ॥ (वन्दे)
सप्तकोटि-कंठ-कल-कल निनाद कराले,
द्विसप्तकोटि भुजैर्धृत खर-करवाले,
के बोले मा तुमि अबले
बहुबल धारिणीम् नमामि तारिणीम्
रिपुदल वारिणीम् मातरम्।
तुमि विद्या, तुमि धर्म्म
तुमि हृदि, तुमि मर्म्म,
त्वं हि प्राणाः शरीरे।
बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति,
तोमारइ प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे (वन्दे)
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदल विहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वां, (वन्दे)
नमामि कमलां अमलां अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्,
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
भरणीं धरणीं मातरम् ॥ (वन्दे)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

2 तमिळ् नाडु

शॆन्दमिळ् नाडु—20

शॆन्दमिळ् नाडॆनुम् पोदिनिले— इन्बत्
तेन्वन्दु पायुदु कादिनिले— ऍङ्गळ्
तन्दैयर् नाडॆन्र पेच्चिनिले— ऒरु
शक्ति पिऱक्कुदु मूच्चिनिले (शॆन्दमिळ्) 1

वेदम् निऱैन्द तमिळ्नाडु— उयर्
वीरम् शॆऱिन्द तमिळ्नाडु— नल्ल
कादल् पुरियुम् अरम्बैयर् पोल्— इळङ्
गन्नियर् शूळ्न्द तमिळ्नाडु (शॆन्दमिळ्) 2

काविरि तॆन्पॆण्णै पालारु— तमिळ्
कण्डदोर् वैयै पॊरुनै नदि— ऍन
मेविय यारु पलवोडत्— तिरु
मेनि शॆळित्त तमिळ्नाडु (शॆन्दमिळ्) 3

मुत्तमिळ् मामुनि नीळ्वरैये— निन्ऱु
मॊय्म्बुऱक् काक्कुम् तमिळ्नाडु— शॆल्वम्
ऍत्तनै युगडु पुवि मीदे— अवै
यावुम् पडैत्त तमिळ्नाडु (शॆन्दमिळ्) 4

नीलत् तिरैक् कड लोरत्तिले— निन्ऱु
नित्तम् तवऴ्जॆय् कुमरि ऍल्लै— वड
मालवन् कुन्ऱम् इवऱ्ऱिडैये— पुहळ्
मण्डिक् किडक्कुम् तमिळ्नाडु (शॆन्दमिळ्) 5

कल्वि शिऱन्द तमिळ्नाडु— पुहळ्क्
कम्बन् पिऱन्द तमिळ्नाडु— नल्ल
पलविद मायिन शात्तिरत्तिन्— मणम्
पारॆङ्गुम् वीशुन् तमिळ्नाडु (शॆन्दमिळ्) 6

वळ्ळुवन् तन्नै उलहिनुक्के— तन्दु
वान्पुहळ् कॊण्ड तमिळ्नाडु— नॆऴजै
अळ्ळुम् शिलप्पदि हार मॆन्ऱोर्— मणि
यारम् पडैत्त तमिळ्नाडु (शॆन्दमिळ्) 7

---

२ तमिळ देश (सुन्दर तमिळनाडु)—२०

सुन्दर तमिळनाडु ! (तमिळ में 'शेम्मै' का अर्थ लाल है। यह श्रेष्ठता, सौंदर्य, महत्ता आदि अर्थ में प्रयुक्त होता है।) 'सुन्दर तमिळनाडु' —यह कहते हुए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

२ तमिळनाडु (तमिळ देश—२०)

'तमिळनाडु' यह नाम घोलता सुधा हमारे कानों में।
'पितृदेश'—यह नाम शक्ति भरता साँसों (की तानों) में ॥ १ ॥
वेद-ज्ञान-परिपूर्ण तमिळ है, विपुल वीतरापूर्ण तमिळ।
प्रेममयी अप्सरा-सरीखी तरुणिवृन्द-परिपूर्ण तमिळ ॥ २ ॥
तॅन् - पैण्णै - पालारु - ताम्रपर्णी - कावेरी - वेगै - जल।
सबसे मिलकर पुष्ट हुआ है तमिळनाड का तन (निर्मल) ॥ ३ ॥
त्रि-तमिळ-मुनि अगस्त्य का गिरिवर इसका प्रिय रखवाला है।
निखिल विश्व की नवनिधियों का (फैला यहाँ उजाला है) ॥ ४ ॥
तप में लीन 'कुमारी कन्या' नील-सिंधु तट पर संस्थित।
बाला जी का वेंकटाद्रि गिरि इसके उत्तर में शोभित ॥ ५ ॥
हुए यहीं पर ज्ञानी कम्बन, विद्या में है श्रेष्ठ तमिळ।
शास्त्र-ज्ञान की सुरभि विश्व में फैलाता (गुण ज्येष्ठ) तमिळ ॥ ६ ॥
'तिरुक्कुरळ्' के अमर रचयिता हुए सुकवि 'वळ्ळुवर' यहीं।
मणिमाल 'शिलप्पधिकार' सदृश से समलंकृत शुचि भूमि यहीं ॥ ७ ॥

(समय) कानों में आनन्द-मधु आकर बहने लगता है; हमारा पितृदेश —इस कथन से हमारी साँस में (हमारे प्राणों में) एक (अनोखी) शक्ति पैदा हो जाती है। (सुन्दर०) १ वेदों से पूर्ण तमिळनाडु, उन्नत वीरता से भरा तमिळनाडु, उत्तम प्रेम की लीला करनेवाली अप्सराओं के समान युवतियों से भरा हुआ तमिळनाडु (है यह)। (सुन्दर०) २ यह तमिळनाडु है, जिसका श्रीशरीर (आकार) काविरि, तेन् पेण्णै पालारु, तमिळ भाषा से परिचित (वेगै) तथा ताम्रपर्णी आदि श्रेष्ठ नदियों से पुष्ट होता है। (वेगै तथा ताम्रपर्णा मधुरै तथा तिरुनॅलवेली जिलों में बहती हैं। ये दोनों जिले ठेठ तमिळ भाषा के प्रदेश हैं। काविरि आदि नदियाँ तमिळनाडु की नदियाँ हैं। इन्हीं की वजह से तमिळनाडु की समृद्धि सम्भव होती है।) (सुन्दर०) ३ त्रि-तमिळ-मुनि-गिरि द्वारा सुदृढ़ रूप से रक्षित है यह तमिळ देश। (अगस्त्य, जो तमिळ भाषा के आदि रचयिता या व्याकरणकर्ता माने जाते हैं— त्रि-तमिळ इसलिए कहा जाता है कि उसमें गद्य, पद्य गीत (तथा नाटक) रचे गये हैं। उनका 'गिरि', पर्वतीय निवास-स्थान, पोदियै कहा जाता है। विश्व में जितनी तरह की निधियाँ हैं, वे सब इस तमिळनाडु में प्राप्त हैं। ऐसा देश है यह तमिळनाडु। (सुन्दर०) ४ नीले सागर के तट पर स्थित होकर नित्य तपस्या में लीन कन्याकुमारी दक्षिण में है। उत्तर में श्रीविष्णु (बालाजी) का पर्वत (वेंकटाद्रि) है। इन दोनों के बीच बहुत बड़े यश के साथ फैला है यह तमिळनाडु। (सुन्दर०) ५ विद्या में श्रेष्ठ तमिळनाडु! इसी तमिळनाडु में कम्बन पैदा हुए थे। विविध शास्त्रों की ज्ञान रूपी गंध यहीं से विश्व में फैलती है। ऐसा तमिळनाडु है। (सुन्दर०) ६ वळ्ळुवन् (तिरुक्कुरळ् के अमर रचयिता) को विश्व को देकर स्वर्गव्यापी यश पाया है इस तमिळनाडु ने। (वळ्ळुवन पैदा हुए तमिळनाडु में, पर उनका ग्रंथ विश्व की सम्पत्ति बन गया है।) हृदय-हारी 'शिलप्पधिकारम्' नामक मणिहार से अलंकृत देश है यह तमिळनाडु। (सुन्दर०) ७ जो सिंहल, पुष्पक, शावक आदि कई द्वीपों में गये थे और जिन्होंने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शिङ्गळम् पुट्पहम् शावह— माहिय
तीवु पलविनुञ् जॅन्ऱेरि— अङ्गु
तङ्गळ् पुलिक्कॉडि मीन् कॉडियुम्— निन्ऱु
शाल् बुऱक् कण्डवर् ताय्नाडु (शॅन्दमिळ्) 8

विण्णै यिडिक्कुम् तलैयिमयम्— ऍनुम्
बॅऱ्पै यडिक्कुम् तिऱ्नुडैयार्— समर्
पण्णिक् कलिङ्गत् तिरुळ् कॅडुत्तार्— तमिळ्प्
पार्त्तिवर् निन्ऱ तयिळ्नाडु (शॅन्दमिळ्) 9

शीन मिशिरम् यवन्नरहम्— इन्नुम्
तेशम् पलवुम् पुहळ् वीशिक्— कलै
ञान्नम् पडैत्तॉळिल् वाणिबमुम्— मिह
नन्ऱु वळर्त्त तमिळ्नाडु (शॅन्दमिळ्) 10

तमिळ्त् ताय्—21

(तन् मक्कळैप् पुदिय शात्तिरम् पेण्डुदल्)

तर्ज़— तायुमानवर् आनन्दक् कळिप्पु शन्दम्

आदि शिवन् पॅऱ्ऱु विट्टान्— ऍन्नै
आरिय मैन्दन् अहत्तिय नॅन्ऱोर्
वेदियन् कण्डु महिळ्न्दे— निऱै
मेवुम् इलक्कणञ् जॅय्दु कॉडुत्तान् 1

मून्ऱु कुलत्तमिळ् मन्नर्— ऍन्नै
मूण्डनल् लन्बॉडु नित्तम् वळर्त्तार्;
आन्ऱ मॉळिहळि नुळ्ळे— उयर्
आरियत् तिऱ्कु निहरॅन्न वाळ्न्देन् 2

कळ्ळैयुन् दीयैयुञ् जेर्त्तु— नल्ल
कार्ऱैयुम् वान् वैळियैयुञ् जेर्त्तुत्
तॅळ्ळु तमिळ्प्पुल वोर्हळ्— पल
तीञ्जुवैक् काविय ञ् जॅय्दु कॉडुत्तार् 3

अपनी व्याघ्र-ध्वजा तथा मत्स्य-ध्वजा को शान से वहां फहराता देखा, उन वीर राजाओं की मातृभूमि है यह तमिळनाडु। (सुन्दर०) ८ गगन-भेदी-शिखर-हिमालय पर्वत पर भी चढ़ सकनेवाले, समर करके कलिंग के अंधकार को दूर कर सकनेवाले तमिळ राजाओं का यह देश है। (तमिळ साहित्य में दो राजाओं का चरित्र वर्णित पाया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सिंहल-पुष्पक-शावक-आदिक द्वीपों में जानेवाले।
हुए यहीं नृप, 'व्याघ्र' और 'मत्स्यध्वज' फहरानेवाले॥ ८॥

तुंग हिमालय पर चढ़ नृपदल पर प्रहार करनेवाले।
हुए यहीं नृपवर, कलिंग का अंधकार हरनेवाले॥ ९॥

चीन, मिस्र, यूनान आदि में विद्या-कला-सैन्य व्यापार।
फलाये थे इसी देश ने, फैली जग में कीर्ति अपार॥ १०॥

तमिळ माता--२१

मुझ भाषा के जन्म-प्रदाता आदिदेव हैं शिवशंकर।
परम तुष्ट व्याकरण-विधाता हुए अगस्त्य महा मुनिवर॥ १॥

चोळ, शेर औ पाण्ड्य नृपों नें किया प्रेम से परिपालन।
श्रेष्ठ आर्यवाणी (संस्कृत-) सम हुआ हमारा संवर्धन॥ २॥

नभ-सम (व्यापक), अग्नि-तुल्य(-उद्दीपक), मदिरा-सम (मादक)।
और पवन सम (प्राण-प्रदायक) बने काव्य हृदयाह्लादक॥ ३॥

जाता है। एक ने हिमालय पर्वत से पत्थर लाकर उनका उपयोग करके 'कण्णकी' देवी का मन्दिर निर्मित किया था। उस यात्रा में उसे हिमालय पर्वतीय राजाओं का सामना करना पड़ा था। दूसरे राजा ने कलिंग पर चढ़ाई की तथा उसके राजा को परास्त किया था। कलिंग का 'अंधकार' उसका गर्व है। (सुन्दर०) ९ चीन, मिश्र, यवनों का देश और ऐसे अनेक देशों का इस देश के साथ कला, ज्ञान, सेना-कार्य तथा व्यापार बहुत हुआ और इसकी कीर्ति फैली। जिसने ऐसे व्यापार को खूब बढ़ाया था, ऐसा देश है यह तमिळनाडु। (सुन्दर०) १०

तमिळ माता—२१

[तमिळ भाषा रूपी माता अपनी सन्तानों से अभिनव शास्त्रों— विज्ञान, कला आदि की सृष्टि माँगती है। तमिळ भाषा कहती है—]

मुझे आदि शिव ने जन्म दिया। फिर आर्य श्रेष्ठ अगस्त्य ऋषि कवि ने मुझे देखकर सन्तोष किया और विशिष्टतापूर्ण सम्पूर्ण व्याकरण रच दिया। १ तीन कुलों (चोळ, शेर, पांड्य) के तमिळ राजाओं ने मुझे बहुत प्रेम के साथ दिन-प्रतिदिन पाला। जो विश्व की गौरवयुक्त भाषाओं में उत्तम आर्य भाषा (संस्कृत) है, उसकी समानता रखती हुई मैं पली। २ निर्मल ज्ञानी कवियों ने सुरा तथा आग, पवन, तथा आकाश —इन सबको मिलाकर (मुग्धकारी, प्रेरित करनेवाले, मन को ताजा बनानेवाले, दूर की कल्पनाओं से अलंकृत) अनेक मधु-मधुर काव्य रचे। ३ उन्होंने अनेक शास्त्र

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शात्तिरङ्गळ्पल तन्दार्— इन्दत्
तारणि यॆङ्गुम् पुहऴ्न्दिड वाऴ्न्देन्
नेत्तिरङ् गॆट्टवन् कालन्— तन्मुन्
नेर्न्द दनैत्तुन् दुडैत्तु मुडिप्पान् 4
नन्ऱॆन्ऱुन् तीदन्ऱुम् पारान्— मुन्बु
नाडुम् पॊरुळ्हळ् अनैत्तैयुम् वारिच्
चॆन्ऱिडुङ् काट्टु वॆळ्ळम् पोल्— वयच्
चेर्क्कै यनैत्तैयुङ् गॊन्ऱु नडप्पान् 5
कन्निप् परुवत्तिल् अन्नाळ्— ऍन्ऱन्
कादिल् विऴुन्द तिशै मॊऴि ऍल्लाम्
ऍन्नन्नवो पॆयरुण्डु— पिन्नर्
यावुम् अऴिवुऱ् ऱिऱन्दन कण्डीर् 6
तन्वै अरुळ्वलि यालुम्— मुन्बु
शान्ऱ पुलवर् तववलि यालुम्
इन्दक् कणमट्टुङ् गालन्— ऍन्नै
एऱिट्टुप् पार्क् कवुम् अञ्जि यिरुन्दान् 7
इन्ऱॊरु शॊल्लिनैक् केट्टेन् !— इनि
एदु शॆय्वेन् ? ऍन दारुयिर् मक्काळ् !
कॊन्ऱिडल् पोलॊरु वार्त्तै— इङ्गु
कूऱत् तहादवन् कूऱिनन् कण्डीर् ! 8
पुत्तम् पुदिय कलैहळ्— पञ्ज
बूदच् चॆयल्हळिन् नुट्पङ्गळ् कूरुम्;
मॆत्त वळरुदु मेर्के— अन्द
मेन्मैक् कलैहळ् तमिऴिनिल् इल्लै 9
शॊल्लवुङ् कूडुव दिल्लै— अवै
शॊल्लुन् दिऱमै तमिऴ् मॊऴिक् किल्लै;
मॆल्लत् तमिऴिनिच् चाहुम्— अन्द
मेऱ्कु मॊऴिहळ् पुविमिशै योङ्गुम् 10
ऍन्ऱन्दप् पेदै उरैत्तान्— आ !
इन्द वशैयॆनक् कॆय्दिड लामो
शॆन्ऱिडुवी रॆट्टुत् तिक्कुम्— कलैच्
चॆल्वङ्गळ् यावुङ् गॊणर्न्दिङ्गु शेर्प्प र् ! 11

रच दिये। मैं इन सबको लिये हुए विश्व भर में यश प्राप्त करके जीती रही। यम अन्धा है। उसका गुण है कि जो भी उसके सामने आयें, उन सबका वह अन्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विद्वानों ने रचे शास्त्र जिनसे मैं जग में विश्रुत हूँ।
यम से बच, नश्वर धरती पर, अब भी जिनसे जीवित हूँ ॥ ४ ॥

यम अंधा है, भले-बुरे में भेद नहीं लख पाता है।
कर देता है अंत सभी का (अन्तक वह कहलाता है) ॥
वन्यनदी की बाढ़ बहा ले जाती ज्यों पुर-वन-उपवन।
उसी भाँति हर लेता यम भी जग के जन-जन का जीवन ॥ ५ ॥

अगणित देशों की भाषाएँ—नाम सुने थे बचपन में।
आज सभी वे लुप्त हो गईं (काल-चक्र-परिवर्तन में) ॥ ६ ॥

(शंकर) पितु की (परम) कृपा से कवियों के तप के बल से।
मिटा न पाया अब तक मुझको कुटिल काल (कोपानल से) ॥ ७ ॥

हे मेरी संतानो ! मैंने बात एक सुन पाई है।
किसी मूर्ख ने दुखद मृत्यु-सम एक बात फैलाई है ॥ ८ ॥

विविध कला-विज्ञान आदि पश्चिम देशों में छाये हैं।
वे विज्ञान तमिऴ-भाषा में नहीं आज आ पाये हैं ॥ ९ ॥

शक्तिहीन है, उनका वर्णन तमिऴ नहीं कर पायेगी।
पनपेंगी पश्चिम-भाषाएँ तमिऴ (हाय !) मर जायेगी ॥ १० ॥

क्या मैं ऐसी निंद्य ! सभी देशों में प्रिय पुत्रो ! जाओ।
विविध कला-निधियाँ लाकर साहित्य तमिऴ को सरसाओ ॥ ११ ॥

कर देता है। ४ वह न अच्छा देखता है, न बुरा। उस वन्य नदी की बाढ़ के समान, जो सभी चीजों को बहा ले जाती है, वह जगत के समस्त संगठनों को मिटाता जाएगा। ५ अपनी छोटी आयु में मैंने कितनी ही देशी भाषाओं के नाम सुने थे। फिर, वे सभी लुप्त हो गयीं। जानते हो न ? ६ पिता (शिवजी) की कृपा के बल से और प्राचीन महिमायुक्त कवियों की तपस्या के बल से, अब तक, काल मेरी ओर आँख उठाने से डरता रहता था। ७ आज मैंने एक बात सुनी। अब, मेरी प्यारी सन्तानो ! मैं क्या करूँ ? देखो— किसी अयोग्य व्यक्ति ने ऐसी बात कह दी कि जो मुझे (मानो) मार डालती है। ८ "पश्चिम में बिलकुल नयी कलाएँ, जो पाँच भूतों के रहस्य खोल देती हैं, पल रही हैं। वे उत्कृष्ट कलाएँ (विज्ञान के आविष्कार) तमिऴ में नहीं पायी जातीं। ९ उन्हें भाषा-बद्ध करना भी (तमिऴ के लिए) संभव नहीं। उन्हें कहने की सामर्थ्य तमिऴ भाषा में नहीं है। अब तमिऴ धीरे-धीरे मर जायगी। वे पश्चिमी भाषाएँ विश्व में बढ़ती रहेंगी।" १० ऐसा उस अबोध ने कहा। हाय ! क्या मैं इतनी निन्दा-स्पद हूँ ? जाओ आठों दिशाओं में। सभी कला-निधियों को लाकर इधर उनका संग्रह कर दो। ११ पिता (शिवजी)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तन्वै यरुळ्वलि यालुम्— इन्ऱु
शार्न्द पुलवर् तववलि यालुम्
इन्दप् पॆरुम्बऴि तीरुम्— पुहळ्
एऱिप् पुविमिशै यॆन्ऱु मिरुप्पेन् 12

तमिऴ्—22

यामऱिन्द मॊऴिहळिले तमिऴ् मॊऴि पोल्
इऩिदाव वॆङ्गुङ् गाणोम्
पामरराय्, विलङ्गुहळाय् उलहऩैत्तुम्
इहळ्च्चि शॊलप् पान्मै कॆट्टु
नाममदु तमिऴरॆनक् कॊण्डिङ्गु
वाळ्न्दिडुदल् नन्ऱो ? शॊल्लीर् !
तेमदुरत् तमिऴोशै उलहमॆलाम्
परवुम् वहै शॆय्दल् वेण्डुम् 1
यामऱिन्द पुलवरिले कम्बऩैप् पोल्
वळ्ळुवर् पोल् इळङ्गो वैप् पोल्
पूमि तऩिल् याङ्गणुमे पिऱन्द दिल्लै
उण्मै, वॆऱुम् पुहळ्च् चियिल्लै;
ऊमैयराय्च् चॆविडर्हळाय्क् कुरुडर्हळाय्
वाळ्हिन्ऱोम् : ऒरु शॊऱ् केळीर्
शेम मुऱ् वेण्डुमॆऩिल् तॆरु वॆल्लाम्
तमिऴ् मुऴक्कम् शॆऴिक्कच् चॆय्वीर् ! 2
पिऱ नाट्टु नल्लऱिञर् शात्तिरङ्गळ्
तमिऴ् मॊऴियिल् पॆयर्त्तल् वेण्डुम्;
इऱवाद पुहळुडैय पुदुनूल्हळ्
तमिऴ् मॊऴियिल् इयऱ्ऱल् वेण्डुम्
मऱैवाह नमक्कुळ्ळे पऴङ्गदैहळ्
शॊल्व दिलोर् महिमै यिल्लै;
तिऱमैयाऩ पुलमैयॆऩिल् वॆऴि नाट्टोर्
अदै वणक्कञ् जॆय्दल् वेण्डुम् 3
उळ्ळत्तिल् उण्मैयॊऴि युण्डायिऩ्
वाक्किऩिले ऒऴियुण् डाहुम्;

की कृपा के बल से, आज, श्रेष्ठ कवियों की तपस्या के बल से, यह निन्दा दूर हो जायगी और मेरा यश बढ़ेगा और मैं सदा विश्व में ससम्मान रहूँगी । १२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पूज्य पिता की दयादृष्टि से कवियों के तप के बल से।
अयश दूर, यश-मान बढ़ेगा मेरा (नभ तक भूतल से) ॥ १२ ॥

तमिळ-भाषा—२२

तमिळ-समान मधुरतम भाषा नहीं विश्व में कोई है।
करो प्रचार विश्व में इसका (क्यों चेतनता सोई है) ॥
गौरव खोकर पामर-पशु-सम बन केवल तामिळ-भाषी।
निंदित होकर कभी न बनना तुम जीने के अभिलाषी ॥ १ ॥
कम्बन औ वल्लुवर इलङ्गो के समान भावुक कविवर।
हुए कहाँ हैं जगतीतल में, अतिशयोक्ति समझो न (मुखर) ॥
गूँगे, अंधे, बहरे बन हम आज जी रहे (बन लांछित)।
गली-गली में तमिळ गुँजा दो अगर चाहते अपना हित ॥ २ ॥
अन्य देश के श्रेष्ठ ंथ ले तामिळ में अनुवाद करो।
नूतन श्रेष्ठ अमर ग्रंथों से तामिळ का भंडार भरो ॥
ज्ञान पुरातन औ नितनूतन, सब जिसका लोहा मानें।
नत-मस्तक हों, (करें प्रशंसा, समझें, जानें, पहिचानें) ॥ ३ ॥
अगर चित्त में सत्य प्रकाशित तो वाणी उज्ज्वल होगी।
कंठों से कविता फूटेगी (प्रतिभा नव निर्मल होगी) ॥

तमिळ—२२

हमारी जानी हुई सभी भाषाओं में तमिळ भाषा के समान मधुर भाषा कहीं अन्यत्र प्राप्य नहीं होती। फिर पामर बनकर, पशु के समान विश्व-निंद्य रूप से गौरव खोकर तमिळ-भाषी की संज्ञा के साथ जीना अच्छा है क्या? तुम ही कहो! मधु-मधुर तमिळ-स्वर जग भर में फैले —इसका उपाय करना चाहिए। १ हमारे जाने-माने कवियों में कम्बन (रामायण-रचयिता), वळ्ळुवर (तिरुक्कुरळ् के लेखक), और इळङ्गो (शिलप्पधिकारम के रचयिता) के समान संसार भर में कहीं भी कोई पैदा नहीं हुआ। यह सत्य है। केवल झूठा यशोगान नहीं है (अत्युक्ति नहीं है)। आज हम गूंगे, बहरे और अन्धे बनकर जी रहे हैं। एक बात सुनो। अपना क्षेम चाहते हो, तो गली-गली तमिळ की धूम मचा दो। २ अन्य देशों के श्रेष्ठ विद्वानों के शास्त्रों का तमिळ में अनुवाद (रूपान्तर) हो जाना चाहिए। अमर कीर्ति के योग्य नये-नये ग्रंथों का तमिळ में प्रणयन करना चाहिए। छिपे-छिपे हम आपस में पुरानी कथाएँ सुनते रहें, इसमें कोई बड़ाई नहीं है। ठोस विद्वत्ता वही है जिसके सामने अन्य देशवासी भी सिर झुका लें। ३ चित्त में सत्य का प्रकाश हो, तो वाणी में भी प्रकाश आ जायगा। बाढ़ के प्रवाह के समान कला तथा काव्य के प्रवाह होने लगें, तो गर्त में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॆळ्ळत्तिन् पॆरुक्कैप् पोऱ् कलैप्पॆरुक्कुम्
कविप् पॆरुक्कुम् मेवु मायिन्
पळ्ळत्तिल् वीऴ्न्दिरुक्कुङ् गुरुडरॆलाम्
विऴि पॆऱ्रुप् पदवि कॊळ्वार्
तॆळ्ळुऱ्ऱ तमिऴमुदिन् शुवै कण्डार्
इङ्गमरर् शिऱप्पुक् कण्डार् 4

तमिऴ् मॊऴि वाऴ्त्तु—23

तर्ज़— तान तनत्तन तान तनत्तन तानन तन्दान

वाऴ्ह निरन्दरम् वाऴ्ह तमिऴ् मॊऴि
वाऴिय वाऴिय वे ! 1
वान मळन्द दनैत्तुम् अळन्दिडुम्
वण् मॊऴि वाऴियवे 2
एऴ्कडल् वैप्पिनुन् तन्मणम् वीशि
इशै कॊण्डु वाऴियवे 3
ऎङ्गऴ् तमिऴ् मोऴि ऎङ्गळ् तमिऴ् मॊऴि
ऎन्ऱॆन्ऱुम् वाऴियवे 4
शूऴ्कलि नीङ्गत् तमिऴ् मॊऴि ओङ्गत्
तुलङ्गुह वैयहमे ! 5
तॊल्लै वितैतरु तॊल्लै यहन्ऱु
शुडर्ह तमिऴ् नाडे 6
वाऴ्ह तमिऴ् मॊऴि ! वाऴ्ह तमिऴ् मॊऴि
वाऴ्ह तमिऴ् मॊऴिये 7
वानम् अऱिन्द दनैत्तुम् अऱिन्दु
वळर्मॊऴि वाऴियवे 8

तमिऴच् चादि—24

ऎनप्पल पेशि इऱैञ्जिडप् पडुवदाय्
नाट्पट नाट्पड नाऱ्ऱमुम् शेऱुम्

गिरे रहनेवाले सभी अन्धे आँख पा जायेंगे और उच्चपदासीन बन जायेंगे। निर्मल तमिऴ-अमृत का स्वाद जिसने चखा, वह अमरों का-सा श्रेय पा गया। ४

तमिऴ भाषा की प्रशंसा—२३

जिए निरन्तर, जिए तमिऴ भाषा ! जिए, जिए ! १ आकाश के नीचे पायी जानेवाली सभी चीज़ों को माप सकनेवाली (सर्वज्ञान-सम्पन्न) समृद्ध तमिऴ भाषा जिए। २ सात समुद्र पार रखी जाए, तो भी अपनी सुगन्ध फैलाते हुए वह यशस्विनी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रबल-बाढ़-सम काव्यकला का अगर प्रवाह बहायेंगे।
अवनत अन्ध नयन-युत होंगे, उच्चपदों को पायेंगे॥
स्वच्छ तमिऴ का सुधा-सरीखा जिसने स्वाद चखा मधुमय।
फैली कीर्ति विश्व में उसकी अमर हुआ वह (मृत्युञ्जय)॥ ४॥

तमिऴ-भाषा की प्रशंसा—२३

(तमिऴ-भाषियों में उमड़ी है यही प्रबलतम अभिलाषा)।
जीवित रहे तमिऴ-भाषा यह, जीवित रहे तमिऴ-भाषा॥ १॥
गगन-धरा पर प्राप्त पदार्थों के वर्णन में सक्षम है।
सर्वज्ञान-सम्पन्न समुन्नत जीवित रहे तमिऴ-भाषा॥ २॥
सात-समुद्र-पार भी रहकर निज सौरभ को फैलाये।
यशस्विनी हम सबकी प्यारी जीवित रहे तमिऴ-भाषा॥ ३॥
(तमिऴवासियों में उमड़ी है यही प्रबलतम अभिलाषा)।
जीवित रहे तमिऴ-भाषा यह, जीवित रहे तमिऴ-भाषा॥ ४॥
कलि-प्रभाव हो दूर, तमिऴ उन्नत हो, सारा जग चमके।
(महिमाशाली गौरवशाली) जीवित रहे तमिऴ-भाषा॥ ५॥
प्राक्तन-कर्मज दुःख दूर हों तमिऴ देश की द्युति दमके।
(अगणित-गुण-गण-गरिमा-वाली) जीवित रहे तमिऴ-भाषा॥ ६॥
(तमिऴवासियों में उमड़ी है यही प्रबलतम अभिलाषा)।
जीवित रहे तमिऴ-भाषा यह, जीवित रहे तमिऴ-भाषा॥ ७॥
नभ के नीचे वसुधातल पर ज्ञान और विज्ञान सकल।
आत्मसात् कर फूले-फैले जीवित रहे तमिऴ भाषा॥ ८॥

तमिऴ-जाति—२४

(हाय दैव !) तू यही चाहता तमिऴ-जाति क्या मिट जाये।
पात्र व्यंग्य-वचनों का बनकर सम्मानों से हट जाये॥

होकर जिए। ३ हमारी तमिऴ भाषा, हमारी तमिऴ भाषा सदा जिए। ४ घेरकर आनेवाला कलियुग (कलिमल) हटे, तमिऴ भाषा उन्नति करे। सारा विश्व चमक उठे। ५ प्राचीन कर्मफल से प्राप्त संकट दूर हो और तमिऴ देश दमक उठे। ६ जिए तमिऴ भाषा, जिए तमिऴ भाषा, जिए तमिऴ भाषा। ७ आकाश (के नीचे का संसार) जो-जो जानता है, उन सभी बातों को (विश्व भर में व्याप्त ज्ञान को) जानते हुए जिए यह विकासशील तमिऴ भाषा। ८

तमिऴ जाति—२४

[यह गीत बहुत शिथिल पड़ी पांडुलिपि से लिया गया है। इसके आरम्भ तथा अंत की कुछ पंक्तियाँ अप्राप्य हैं।]

विविध वाक्य-प्रहारों का पात्र बन, जग दूषित होकर, दिनों के बीतते-बीतते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पाशियुम् पुदैन्दु पयन् नीर् इलदाय्
नोय्क् कळमाहि अळिहॅन्नुम् नोक्कमो ? 1-4
विदिये विदिये तमिळ्च् चादियै
अॅन् शॅय निनैत्ताय् ? अॅनक्कुरैयायो ? 5-6
शार्विनुक् कॅल्लाम् तहत्तह माऱित्
तन्मैयुम् तनदु तरुममुम् मायादु
अॅन्रुमोर् निलैया यिरुन्दुनिन् अरुळाल्
वाळ्न्दिडुम् पॉरु ळॉडु वहुत्तिडु वायो ? 7-10
तोर्ऱमुम् पुऱत्तुत् तॉळिलुमे कात्तु मर्रु
उळ्ळुरु तरुममुम् उण्मैयुम् माऱिच्
चिदैवुऱ् ऱळियुम् पॉरुळ्हळिल् शेर्प्पैयो ? 11-13
अळियाक् कडलो ? अणि मलर्त् तडमो ?
वानुरु मीनो ? माळिहै विळक्को ?
कऱ्पहत् तरुवो ? काट्टिडै मरमो ?
विदिये तमिळ्च् चादियै अॅव्वहै
विदित्ताय् अॅन्बदन् मॅय्यॅनक् कुणर्त्तुवाय् 14-18
एनॅनिल् 19
शिलप्पदि हारच् चॅय्युळैक् करुदियुम्
तिरुक्कुऱळुरुदियुम् तॅळिवुम् पॉरुळिन्
आळमुम् विरिवुम् अळहुम् करुदियुम्
अॅल्लैयॉन् ऱिन्मै अॅनुम् पॉरुळ् अदनैक्
कम्बन् कुऱिहळाऱ् काट्टिड मुयलुम्
मुयऱ्चियैक् करुदियुम् मुन्बुनान् तमिळ्च्
चादियै "अमरत् तन्मै वाय्न्ददु" अॅन्रु
उऱुदि कॉण्डिरुन्देन् ऑरु पदिनायिरम् 20-27
शनिवाय्प् पट्टुम् तमिळ्च् चादितान्
उळ्ळुडै वित्ऱि उळैत् तिडु नॅऱिहळैक्
कण्डु अॅनदु उळळम् कलङ्गिडा दिरुन्देन् 28-30

दुर्गन्ध और पंक तथा काई से भरकर उपयोगी जल से रिक्त होकर तथा बीमारी का अड्डा बने, आखिर मिट ही जाए– क्या यही विचार है तुम्हारा? १-४ हे विधाता! हे विधाता! तमिळ जाति का क्या करने का विचार रखते हो ? नहीं कहोगे मुझसे ? ५-६ क्या तुम इसे उन वस्तुओं की श्रेणी में नहीं रखोगे, जो बाहरी रूप में आवश्यकतानुसार बदलें, पर स्वभाव तथा आन्तरिक धर्म से नहीं छूटें; सदा एकरस रहें तथा तुम्हारी कृपा से जीवित रहें ? ७-१० या क्या तुम उन वस्तुओं में मिला दोगे, जो केवल रूप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रोगों का अड्डा दुर्गन्धित काई कीचड़ पट जाये।
ऐसा गड्ढा बने कि जिसका उपयोगी जल घट जाये॥ १-४ ॥
अरे विधाता! (पूँछ रहा हूँ तुमसे तुम समझाओगे)।
तमिळ-जाति का क्या भविष्य है, क्या मुझको बतलाओगे॥ ५-६ ॥
आवश्यकता के वश जिसका बाह्यरूप परिवर्तित हो।
पर, स्वभाव आन्तरिक धर्म से नहीं कभी भी जो च्युत हो॥
ऐसे द्रव्यों की श्रेणी में तमिळ-जाति रखना (प्रभुवर!)।
रहे एकरस और रहे जीवित त्वदीय करुणा पाकर॥ ७-१०॥
जो: पदार्थ बाहरी धर्म से बाह्यरूप से संयुत हैं।
किन्तु आन्तरिक रूप, आन्तरिक धर्म आदि से जो च्युत हैं॥
जिससे सारे तमिळ शिथिल जर्जर हो जायें मिट जायें।
(ऐसे द्रव्यों की श्रेणी में तमिळ-जाति को मत लायें)॥ ११-१३॥
अक्षय सागर के समान या सुंदर-मृदुल-सुमन-तल-सी।
नभ के तारों-सो या महलों की दीपाभा (उज्ज्वल)-सी॥
कल्पवृक्ष-सी या कानन के तरु के सदृश बनाओगे।
कैसी होगी तमिळ-जाति यह (हे विधि!) क्या समझाओगे?॥ १४-१८॥
तिरुक्कुरळ् के बतलाये पुरुषार्थ और स्वच्छता (सुघर)।
विशालता-सौंदर्य-अर्थगाम्भीर्य (आदि गुण-गण लखकर)॥
'कम्बन' के संकेतों द्वारा इंगित करती अनन्तता।
कला 'शिलप्पधिकार'-काव्य की, इन सबकी लख सुन्दरता॥
तमिळ-जाति को अमर दिव्य रत्नों की खान मानता था।
(हर कोई, गुण-गण-गौरव-गरिमा-युत इसे जानता था)॥ १९-२७॥
दश सहस्र (कटु-) शनिग्रहों का इसने (प्रबल) प्रहार सहा।
तो भी नहीं तमिळ-कुल टूटा (यत्नशील) श्रमशील रहा॥
इसकी कार्य-रीतियाँ लखकर मेरा मन निश्चिन्त रहा।
(उन्नति के पथ पर बढ़ने को तमिळ सदैव सचिन्त रहा)॥ २८-३०॥

तथा बाहरी कर्मों का निर्वाह करते हुए आन्तरिक धर्म तथा सत्य से पृथक् हो जायें तथा शिथिल-जर्जर होकर मिट जायँ? ११-१३ इसकी क्या गतिविधि सोची है तुमने? अक्षय सागर? सुन्दर सुमन-स्थल? आकाश के तारे? प्रासाद का दीप, कल्पतरु या वन्य वृक्ष? हे विधाता! तुमने तमिळ जाति के लिए कैसी स्थिति का विधान रचा है? उसका तात्पर्य मुझे समझाओ। १४-१८ क्योंकि-- १९ शिलप्पधिकारम् का काव्य-सौष्ठव, तिरुक्कुरळ् में बताये गये पुरुषार्थ, उस ग्रंथ की निर्मलता, अर्थगांभीर्य, विशालता तथा सौंदर्य और अनन्त वस्तु की ओर कम्बन का संकेत-प्रयत्न —इनके आधार पर, मैं तमिळ जाति को अमरता-प्राप्त समाज मानता था। २०-२७ दस सहस्र शनि-ग्रह-प्रताड़ित होने पर भी तमिळ कुल अन्दर से न टूटते हुए, परिश्रम करता रहा। उसकी कार्य-रीतियों को देखकर मेरा मन निश्चिन्त रहा। २८-३० अफ़्रीका के 'काफ़िर'

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आप्पिरिक्कत्तुक् काप्पिरि नाट्टिलुम्
तॆन्मुत्तै यडुत्त तीवुहळ् पलविनुम्
पूमिप् पन्दिन् कोळ्प् पुऱत्तुळ्ळ
पऱ्पल तोविनुम् परवि यिव्वॆळिय
तमिळ्च् चादि तडियुवै युण्डुम्
कालुदै युण्डुम् कयिऱ्ऱडि युण्डुम्
वरुन्दिडुम् शॆय्दियुम् मायन्दिडुम् शॆय्दियुम्
पॆण्डिरै मिलेच्चर् पिरित्तिडल् पॊऱादु
शॆत्तिडुञ् शॆय्दियुम् पशियाऱ् चादलुम्
पिणिहळाऱ् चादलुम् पॆरुन्दॊलै युळ्ळ तम्
नाट्टिनैप् पिरिन्द नलिविनाऱ् चादलुम् 31-41
इःदॆलाम् केट्टुम् ऍनदुळम् अळिन्दिलेन्;
दॆय्वम् मऱवार्, शंयुङ् गडन् पिळैयार्
एदुदान् शॆयिनुम् एदुतान् वरुन्दिनुम्
इऱुदियल् पॆरुमैयुम् इन्बमुम् पॆऱुवार्
ऍन्बवॆन् नुळत्तु वेरहळ्न् दिरुत्तलाल् 42-46
ऍनिनुम्
इप्पॆरुङ् गॊळ्है इदयमेऱ् कॊण्डु
कलङ्गिडा दिरुन्द ऍनैक्कलक् कुऱुत्तुम्
शॆय्दियॊन् ऱदनैत् तॆळिवुऱक् केट्पाय् 47-50
ऊनमऱ् ऱॆवैताम् उऱिनुमे पॊऱुत्तु
वानमुम् पॊय्क्किन् मडिन्दिडुम् उलहुपोल्
दानमुम् तवमुन् दाळ्न्दिडल् पॊऱुत्तु
ञानमुम् पॊय्क्क नशिक्कुमोर् शादि 51-54
शात्तिरङ् गण्डाय् शादियिन् उयिर्त्तलम्
शात्तिरम् इन्ऱेऱ् चादि यिल्लै 55-56
पॊय्म्मैच् चात्तिरम् पुहुन्दिडिन् मक्कळ्
पॊय्म्मै याहिप् पुळुवॆन मडिवर्; 57-58

(बर्बर) देशों में, दक्षिणी (कुमारी) अन्तरीप के पास रहनेवाले द्वीपों में तथा भूमि रूपी गेंद के पूर्व में स्थित विविध द्वीपों में तमिळ जाति फैली है। वहाँ तमिळों को लाठी का प्रहार मिल रहा है। उन्हें लातें खानी पड़ रही हैं। वे रस्सी से मारे जाते हैं, बहुत कष्ट पाते हैं तथा मरते भी हैं। उनमें पुरुषों को 'म्लेच्छ' लोग उनकी स्त्रियों से अलग कर देते हैं तथा वे पुरुष, वियोग सह न सकने के कारण, मर जाते हैं। कुछ लोग भूख से भी मर जाते हैं। रोग भी उनके हंता बने हैं। कुछ लोग अपने देश से बहुत दूर होने से व्यथा के शिकार बनकर मर जाते हैं। तमिळ जाति की इतनी दुर्गति हो रही है --यह सुनकर भी मेरा मन स्थिर रहा-- कुछ नहीं घबड़ाया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इस विशालतम भू-कन्दुक पर संस्थित पूर्वी द्वीपों में।
और दक्षिणी अन्तरीप के समीपवर्ती द्वीपों में॥
अफ़्रीका के बर्बर देशों (विकट वनों में भी जाकर)।
भूमंडल के सब देशों में फैली तमिळ-जाति (सुन्दर)॥
लाठी से पीटे जाते हैं, लातों का प्रहार पाते।
कोड़ों से पीटे जाते हैं, संकट सहते मर जाते॥
क्रूर विदेशी म्लेच्छ, पत्नियों से उनको बिलगाते हैं।
(तड़प-तड़प) उनके वियोग में वे (बेकस) मर जाते हैं॥
विकट-भूख से कुछ मर जाते कुछ रोगों से हैं मरते।
हो स्वदेश से दूर व्यथित हो मरते कुछ (क्रन्दन करते)॥
तमिळ-जाति की देख दुर्दशा मेरा हृदय न घबराया।
(इसका कारण बतलाता हूँ) क्यों स्थिर रहा (न भरमाया)॥ ३१-४१॥
यही धारणा बद्धमूल थी मेरे अन्तर् के भीतर।
भूलेंगे प्रभु को न तमिळ जन छोड़ेंगे न स्वधर्म (सुघर)॥
चाहे जो भी संकट झेलें (कभी नहीं घबरायेंगे)।
एक दिवस वे सुख-गौरव के अधिकारी बन जायेंगे॥ ४२-४६॥
यह विचार मन में धारण कर था मेरा मन शान्त हुआ।
किन्तु दुखद सुन ख़बर एक, मन फिर मुरझाया, क्लांत हुआ॥ ४७-५०॥
अन्य वस्तुओं का अभाव हो कभी नहीं घबराता है।
वर्षा का अभाव होने पर किन्तु विश्व मिट जाता है॥
उसी भाँति तप-दान-रहित भी जाति (यदपि) जीवित रहती।
ज्ञान-हीन हो मिट जाती है (यही शास्त्र-वाणी कहती)॥ ५१-५४॥
(विमल) ज्ञान ही (मनुज) जाति का प्राणरूप (कहलाता) है।
विमल-ज्ञान-(रवि) हो न जहाँ पर वही देश मिट जाता है॥ ५५-५६॥
मिथ्या-शास्त्रों के (असार) मत जो मानव अपनायेंगे।
निष्फल जीवन होगा उनका, कीड़ों-से मर जायेंगे॥ ५७-५८॥

क्यों ? ३१-४१ —इसलिए कि मेरे मन में यह धारणा जड़ पकड़े थी कि हमारे लोग ईश्वर को नहीं भूलेंगे, स्वधर्म से च्युत नहीं होंगे। जो भी हो जाय, जो भी उन्हें कष्ट मिले, अन्त में, वे गौरव तथा सुख के भोक्ता बन जायेंगे। ४२-४६ तो भी, इस सिद्धान्त को हृदय में धारण करके, जो अचल-मन रहा, उस मुझे क्षुब्ध करनेवाला एक समाचार है। उसे सुनाता हूँ, सुनो। ४७-५० जैसे संसार अन्य सभी (बातों) के क्षीण होने पर भी सह लेता है पर वर्षा का अभाव होने पर मिट जाता है, वैसे ही जाति दान-तप आदि के क्षीण होने पर भी जीवित रहती है, पर उसमें ज्ञान का अभाव हो जाए, तो मिट जाती है। ५१-५४ शास्त्र (ज्ञान) ही जाति का मर्म-स्थान है। शास्त्र नहीं रहें तो जाति ही नहीं रह पावे। ५५-५६ मिथ्या शास्त्रों का प्रवेश हो जाय, तो लोग निस्सार बनकर कीड़ों की मौत मर जायेंगे। ५७-५८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाल्वहैक् कुलत्तार् नण्णुमोर् शादियिल्
अऱिवुत् तलैमै याऱ्ऱिडुम् तलैवर्
मऱ्ऱिवर् वहुप्पदे शात्तिर माहुम् 59-61
इवर् ताम्
उडलुम् उळ्ळमुम् तम्वश मिलराय्
नॆऱिपिळैत् तिहळ्वुरु निलैमैयिल् वीळिनुम्
पॆरिदिलै; पिन्नुम् मरुन्दिदर् कुण्डु 62-65
शॆय्हैयुज् जीलमुम् कुन्ऱिय पिन्नरुम्
उय्वहैक् कुरिय वळिशिल उळवाम् 66-67
मऱ्ऱि वर्
शात्तिरम्— (अदावदु, मदियिले तळुविय
कॊळ्है, करुत्तु कुळिर्न्दिडु नोक्कम्)—
ईङ्गिदिल् कलक्क मॆय्दिडु मायिन्
मऱ्ऱदन् पिन्नर् मरुन्दॊन्ऱु इल्लै 68-72
इन्नाळ् ऍमदु तमिळ्नाट् टिडैये
अऱिवुत् तलैमै तमदॆनक् कॊण्डार्
तम्मिले इरुवहै तलैप्पडक् कण्डेन्; 73-75
ऒरु शार्
मेऱ्ऱिशै वाळुम् वॆण्णिऱ मक्कळिन्
शॆय्हैयुम् नडैयुम् तीनियुम् उडैयुम्
कॊळ्हैयुम् मदमुम् कुऱिहळुम् नम्मुडै
यवऱ्ऱिनुज् शिऱन्दन आदलिन् अवऱ्ऱै
मुळुवुमे तळुवि मूळ्हिडि नल्लाल्
तमिळच् चादि तरणिमी दिरादु
पॊय्त्तळि वॆय्दल् मुडि बॆनप् पुहलुम् 76-83
नन्ऱडा ! नन्ऱु ! नामिनि मेऱ्ऱिशै
वळियॆलान् दळवि वाळ्हुवम् ऍनिलो
'ए ए ! अःदुमक्किशैया' दॆन्बर्
उयिर् तरु मेऱ्ऱिशै नॆऱिहळै उवन्दु नीर्
तळुविडा वण्णन् दडुत्तिडुम् पॆरुन्वडै

चारों वर्णों के लोग जिसका आदर करते हैं, उस जाति के लोग नेतृत्व करनेवाले नेता हैं। उनके द्वारा निर्मित जो होते हैं वे ही शास्त्र होते हैं। ५९-६१ ये लोग अगर अपने शरीर तथा मन पर अपना वश खोकर, मार्गच्युत होकर पतित हो जायँ तो भी कोई बड़ी हानि नहीं है। (क्योंकि) इलाज उसका हो सकता है। ६२-६५ कृति तथा शील क्षुद्रता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चारों वर्णों का यह जनमत जिसको आदर देता है।
वही वर्ण है शास्त्र-प्रणेता वही हमारा नेता है ॥ ५९-६१ ॥
संयम खोकर, मार्गभ्रष्ट हो पतित बनें यदि ये (नेता)।
तो भी सभी सुधर सकते हैं (यह विचार धीरज देता) ॥ ६२-६५ ॥
कर्महीन हों, शीलहीन हों (गुण-विहीन हों), क्षुद्र बनें।
तो भी हैं इनके सुधार के (जग में) अमित उपाय (घने) ॥ ६६-६७ ॥
किन्तु शास्त्र के सिद्धान्तों में यदि विकार आ जायेगा।
तो सुधार है निपट असम्भव, (कौन इसे सुलझायेगा) ॥ ६८-७२ ॥
तमिळ देश में आज विचारों के हैं प्रबल-प्रचारक जो।
उनके हैं दो वर्ग देश के नेता (और सुधारक) जो ॥ ७३-७५ ॥
एक वर्ग पाश्चात्य सभ्यता का परिपूर्ण प्रवर्तक है।
वर्ग दूसरा भारतीय संस्कृति का प्रबल समर्थक है ॥
जो कि वर्ग पाश्चात्य सभ्यता का (परिपूर्ण) समर्थक है।
बतलाता वह यही सभ्यता उपयोगी आवश्यक है ॥
धर्म-कर्म या खान-पान या चाल-ढाल वस्त्राभूषण।
(शुभ) आचार-विचार विदेशी सर्वश्रेष्ठ हैं (गत-दूषण) ॥
पश्चिमीय सभ्यता नहीं यदि तमिळ-जाति अपनायेगी।
नाम-निशान मिटेगा जग से तमिळ-जाति मिट जायेगी ॥ ७६-८३ ॥
अपनायें पाश्चात्य सभ्यता करते हैं जब हम निर्णय।
तो कुछ जन अपने वचनों से उपजाते मन में संशय ॥
जीवन-प्रद पाश्चात्य सभ्यता तुमको रास न आयेगी।
तुम न सकोगे उसको अपना (कभी नहीं निभ पायेगी) ॥
इस पाश्चात्य सभ्यता में कुछ बड़ी-बड़ी बाधायें हैं।
जो न मिटाई जा सकती हैं (ऐसी कुछ विपदायें हैं) ॥ ८४-९० ॥

को प्राप्त हो जाएँ तो भी उभरने के कुछ उपाय हो सकते हैं। ६६-६७ पर इनके शास्त्र-प्रणयन (यानी सिद्धान्त, विचार, करुणा आदि) में चंचलता आ जाए, तो उसके बाद सुधार का कोई इलाज नहीं रहता। ६८-७२ आज मैं तमिळ देश में बौद्धिक (वैचारिक) नेतृत्व जिनके पास है, उनके दो पक्ष देखता हूँ। ७३-७५ एक पक्ष कहता है कि पश्चिमी देशवासी गोरे लोगों के कार्य, चाल-चलन, भोजन, पोशाक (यानी संस्कार), सिद्धान्त, धर्म तथा चिह्न हमारे कार्य आदि से श्रेष्ठ हैं। अतः उन सबको अपनाकर पूर्णतया उनमें विलीन न हो जाओगे, तो तमिळ जाति नाम की चीज विश्व में नहीं रह जायगी। वह नाम-निशान-विहीन हो मिट जायगी। ७६-८३ अरे, ठीक है, अच्छा है। हम अब पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्कार के मार्ग पर चलेंगे। यह निर्णय करें, तो कुछ लोग करुण-वचन कहते हैं कि हे ! वह तुम्हें नहीं सोहेगा। जिनके कारण जीवनदायी पाश्चात्य मार्ग को तुम सानन्द अपना न सको-- ऐसी बड़ी बाधाएँ हैं, और वे दूर होनेवाली नहीं हैं। इसका अर्थ है-- विदेशी—८४-९० वंद्य तमिळ जाति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पल अवै नीङ्गुम् पान्मैय वल्ल
ऎन्ऱरुळ् पुरिवर् ! इदन् पॊरुळ् शीमै 84-90
मरुन्दुहळ् कऱ्ऱ मरुत्तुवर् तमिऴच्
चादियिन् नोय्क्कुत् तलैयशैत् तेहिनर् 91-92
ऎन्बदे याहुम् इःदॊरु शार्बाम्
पिन्नॊरु शार्बिनर् वैदिहप् पॆयरॊडु
नमदुमू दादैयर् (नाऱ्पदिऱ् राण्डिन्)
मुन्निरुन्दवरो ? मुन्नूऱ् ऱाण्डिऱ्कु
अप्पाल् वाऴ्न्दवर् कॊल्लो ? आयिरम्
आण्डिन् मुन्नवरो, ऐयायिरमो ?
पवुत्तरे नाडॆलाम् पल्हिय कालत्
तवरो ? पुराण माक्किय कालमो
शैवरो ? वैणव शमयत् तारो ?
इन्दिरन् तानै तनि मुदऱ् कडवुळ्
ऎन्ऱु नम् मुन्नोर् एत्तिय वैदिहक्
कालत्तवरो ? करुत्तिला दवर्ताम्
ऎमदुमू दादैय रॆन्बदिङ् गॆवर् कॊल् ?
नमदुमू दादैयर् नयमुऱक् काट्टिय
ऒऴुक्कमुम् नडैयुम् किरियैयुम् कॊळ्हैयुम्
आङ्गवर् काट्टिय अव्वप् पडियै
तऴुविडिन् वाऴ्वु तमिऴर्क् कुण्डु; 93-109
ऎनिल् अदु तऴुवल् इयन्ऱिडा वण्णम्
कलि तडै पुरिवन्; कलियिन् वलियै
वॆल्ल लाहादॆन विळम्बुहिन् ऱनराल्
नाशङ् गूरुम् नाट्टु वेत्तियर् 110-113
इवराम् इङ्गिव् विरुदलैक् कॊळ्ळियिन्
इडैये नम्मवर् ऎप्पडि उय्वर् ? 114-115
विदिये ! विदिये ! तमिऴच् चादियै
ऎन् शैयक् करुदि यिरुक्किन् ऱायडा ? 116-117

विदि (विधि)

मेले नी कूऱिय विनाशप् पुलवरै
नम्मवर् इहऴ्न्दु नन्मैयुम् अऱिवुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तमिळ-जाति का रोग देखकर वैद्य विदेशी (तज आशा)।
विना चिकित्सा विवश चल दिये, एक पक्ष को यह आशा॥ ९१-९२ ॥

वर्ग दूसरा दकियानूसी अन्धभक्त है पुरखों का।
उसी धर्म को मान रहा है जो है लाखों बरखों का॥
(कहता है सभ्यता पुरानी तमिळ-जाति को हितकारी।
पुरखों का वह धर्म पुराना है समस्त संकटहारी)॥
पुरखों के आचरण, सभ्यता, चाल-चलन को अपनायें।
अनुष्ठान-क्रम और व्यवस्था वही पुरानी हम लायें॥
उनके ही शुभ सिद्धान्तों का यदि होगा पूरा प्रचलन।
तमिळ देश तब उन्नत होगा (तब प्रमुदित होगा जन-जन)॥ ९३-१०९ ॥

पर प्राचीन धर्म-पथ पर चलने में कलियुग बाधक है।
जीत न सकता उस कलियुग को धर्म-कर्म का साधक है॥
भारत-संस्कृति-पोषक देशी वैद्य यही बतलाते हैं।
(दोनों वर्ग सुनिश्चित कोई मार्ग न बतला पाते हैं)॥ ११०-११३ ॥

(अगर इधर गंभीर कूप है तो है खाई खुदी उधर)।
दोनों ओर धधकती ज्वाला जायें हम किस ओर किधर?॥ ११४-११५ ॥

अरे विधाता! मुझे बता दे कौन विचार विचारा है?।
तमिळ-जाति का क्या अब होगा (इसका कौन सहारा है)?॥ ११६-११७ ॥

इन अतिवादी दोनों पक्षों की बातों पर ध्यान न दें।
दोनों है विनाश के पंडित कहने पर कुछ कान न दें॥

का रोग देखकर भी सिर हिलाकर (बिना दवा-दारू किये) चले गये। यह एक पक्ष है। ९१-९२ फिर दूसरा पक्ष, दकियानूसी विचारवाला, हमारे पुरखों का नाम लेता है। (पुरखे कौन? चालीस साल पहले के रहनेवाले? तीन सौ साल के पहले जो रहे, वे? हजार साल पुराने, पाँच हजार वर्ष के पहले रहनेवाले? या उस समय के जब बौद्ध लोग देश भर में अधिक संख्या में फैले थे? या पुराणकाल के? वे कौन थे? शैव? वैष्णव? या उस वैदिकी काल के, जब हमारे लोग इन्द्र को आदिदेव मानकर चले थे? अविवेकी लोग जो कहते हैं वे पुरखे कौन हैं?) खैर। इस पक्ष के लोग पुरखों का नाम लेकर कहते हैं कि हमारे पूर्वजों ने जो व्यवहार करके दिखाया है, उसी चाल-चलन, व्यवस्था, अनुष्ठान, कर्म तथा सिद्धान्त को, उन्हीं के बताये अनुसार, अपनाकर चलें तो तमिळों का जीवन (समृद्ध) होगा। ९३-१०९ तो भी उस पर चलने से कलिपुरुष रोक देगा। उसके बल को जीता नहीं जा सकता। ऐसा कहते हैं, दूसरे पक्ष के लोग—जो नाश का मार्ग बतानेवाले देशी वैद्य हैं। ११०-११३ यहाँ दोनों ओर आग है। हमारे लोग कैसे बचें? ११४-११५ अरे! विधाता! तमिळ जाति का क्या करना सोचा है तुमने? ११६-११७ विधाता (भाग्य उत्तर देता है): तुमने, जिन विनाश-पंडितों की बात की, उन्हें हमारे लोग ठुकरा दें। वे हित तथा ज्ञान, जिस किसी भी दिशा से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅत्तिशैत् तॅन्निनुम् यावरे काट्टिनुम्
मऱ्ऱवै तऴवि वाऴ्वी रायिन्
अच्च मॊन्ऱु इल्लै ! आरिय नाट्टिन्
अऱिवुम् पॅरुमैयुम्··· ··· ··· ··· ··· 118-123

वाऴिय शॅन्दमिऴ्—25

आशिरियप्पा (छन्द)

वाऴिय शॅन्दमिऴ् ! वाऴ्ह नऱ्ऱमिऴर्, वाऴिय बारद मणित् तिरु नाडु !
इन्ऱैमै वरुत्तुम् इन्नल्हळ् माय्ह ! नन्मैवन् दॅय्दुह ! तीदॅलाम् नलिह !
अऱम् वळर्न्दिदुह ! मऱम् मडि वुऱुह, आरिय नाट्टिनर् आण्मैयो डियर्ऱुम्
शोरिय मुयऱ्चिहळ् शिऱन्दुमिक् कोङ्गुह ! नन्दे यत्तिनर् नाडॊऱुम् उयर्ह !
वन्दे मातरम् ! वन्दे मातरम् !

3 शुदन्दिरम्

(सुदन्दिरप् पळ्ळु)

सुदन्दिरप् पॅरुमै—26

तर्ज— तिल्लै वॅळियिले कलन्दु पिट्टालवर् तिरुम्बियुम् वरुवारो ? अॅन्नुम् वर्ण मॅट्टु ।

वीर सुदन्दिरम् वेण्डि निन्ऱार् पिन्नर्
वेऱॊन्ऱु कॊळ्वारो ?— अॅन्ऱुम्
आरमु दुण्णुदर् काशै कॊण्डार् कळ्ळिल्
अऱिवैच् चॅलुत्तु वारो ? (वीर) 1
पुहऴुनल् लऱमुमे यन्ऱियॅल्लाम् वॅऱुम्
पॊय्यॅन्ऱु कण्डारेल्— अवर्
इहऴुऱु मीनत्तॊण् डियर्ऱियुम् वाऴ्ववर्
किच्चैयुर् ऱिरुप्पारो ? (वीर) 2

आवे या जो भी दिखावें, उसका अनुसरण करके जिएँ । तो कोई डर नहीं रहेगा । आर्य देश का ज्ञान तथा गौरव····· । ११८-१२३

सुन्दर तमिऴ जिए—२५

जिए सुन्दर तमिऴ ! अच्छे तमिऴ लोग जिएँ । भारत का मणि-देश (मनोहर तथा प्यारा) देश जिए । आज हमें सतानेवाले संकट मिट जायें । भला आ पहुँचे । सभी बुराइयाँ क्षीण हो जायें । धर्म संवर्धित हो । पाप मिट जाय । आर्यदेश में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जहाँ कहीं से मिले ज्ञान तो उसे तुरत अपना लें हम।
हितकारी बातें अपनाकर (जीवन सफल बना लें हम)॥
यदि ऐसा कर सकें तमिळ-जन तो सब जन होंगे निर्भय।
होगी वृद्धि ज्ञान-गौरव की आर्य देश की होगी जय॥ ११८-१२३॥

सुंदर तमिळ जिये—२५

हमें सतानेवाले संकट सब मिट जायें।
(सबका) हो कल्याण दोष(-दुर्गुण) हट जायें॥
(दुख-दायक दुर्दान्त उग्र) पापों का क्षय हो।
(सुखदायक शुभ शान्त) धर्म की सदा विजय हो॥
श्रेष्ठ प्रयत्न और पौरुष जो भी अपनायें।
सफल आर्यजन नित्य समुन्नत हों, सुख पायें॥
भारत की मणिभूमि जयति, जय पुण्य-प्रभासो।
जय जय तमिळ प्रदेश जयति जय तमिळ-निवासी॥

३ स्वतंत्रता

स्वतंत्रता-महिमा—२६

स्वतंत्रता के पुजारियों को किसी वस्तु की चाह नहीं।
सुधा पान करनेवालों को ताड़ी की परवाह नहीं॥ १॥
कीर्ति-धर्म को छोड़ और सब मिथ्या है, यह ज्ञान जिन्हें।
हीन दास बन निन्द्य, नहीं है जीने का अरमान उन्हें॥ २॥

पौरुष के साथ जो भी प्रयत्न किये जाते हैं, वे श्रेष्ठ प्रयत्न विशिष्ट हों, बढ़ें तथा उन्नत हों। हमारे देश के लोग दिन-प्रतिदिन उन्नति करते जाएँ। वन्दे मातरम्! वन्दे मातरम्!

३ स्वतंत्रता

स्वतंत्रता-महिमा—२६

[तमिळ के प्रसिद्ध 'नन्दनार चरित्र' नाटक में एक अछूत भक्त 'नन्दनार' की कहानी है। उसमें एक गीत है, जिसमें कहा है— तिल्लै या चिदंबरम् के (चित्) आकाश में जो जा चुके हैं, क्या वे लौट आयँगे? इसका यह अर्थ है कि मुक्त आत्मा फिर से जगत में जन्म को प्राप्त नहीं होता।]

वीरता से प्राप्य स्वतंत्रता की चाह लिये हुए जो (जीवित) रहते हैं, वे फिर क्या और कुछ लेंगे? जो सदा अमृत का अशन करना चाहते हैं, वे क्या ताड़ी के प्रति मन लगायेंगे? १ जो यह देख (जान) चुके कि यश तथा श्रेष्ठ धर्म को छोड़कर शेष सब मिथ्या है, क्या वे निंद्य तथा हीन दासता का काम करते हुए जीने की इच्छा करेंगे? २ जिन्हें यह तथ्य विदित हो गया कि जन्म लेनेवाले सभी जीवों की मृत्यु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पिऱन्दवर् यावरु मिऱप्प दुरुदियॆनुम्
पॆऱ्ऱियै यऱिन्दारेल्— मानम्
तुऱन्दवऱम् मऱनदुम् पिन् नुयिर् कॊण्डु वाळ्वदु
शुहमॆन्ऱु मदिप्पारो ? (वीर) 3
मानुड जन्मम् पॆरुवदऱ् करिदॆनुम्
वाय्मैयै युणर्न्दारेल्— अवर्
ऊनुडल् तीयिनु मुण्मै निलैतवऱ्
उडन्बडु माऱुळदो ? (वीर) 4
विण्णि लिरवितनै विऱ्ऱुविट् टॆवरुम् पोय्
मिन्मिनि कॊळ्वारो ?
कण्णिलु मिनिय सुदन्दिरम् पोनपिन्
कॆकट्टिप् पिळैप्पारो ? (वीर) 5
मण्णिलिन् बङ्गळै विरुम्बिच् चुदन्दिरत्तिन्
माण्बिनै यिळप्पारो ?
कण्णिरण्डुम् विऱ्ऱुच् चित्तिरम् वाङ्गिनाऱ्
कॆकॊट्टिच चिरियारो ? (वीर) 6
वन्दे मातर मॆन्ऱु वणङ्गिय पिन्
मायत्तै वणङ्गुवरो ?
वन्दे मातर मॊन्ऱे तारक
मॆन्बदै मऱप्पारो ? (वीर) 7

सुदन्दिरप् पयिर्—27

कण्णिहळ् (अर्द्धवृत्त)

तण्णीर्विट् टोवळर्त्तोम् ? सर्वेशा इप्पयिरैक्
कण्णीराऱ् कात्तोम्; करुहत् तिरुवुळमो ? 1
अॆण्णमॆला नॆय्याह अॆम्मुयिरि नूळ्वळर्न्द
वण्ण विळक्किःदु मडियत् तिरुवुळमो ? 2
ओरायिर वरुड मोय्न्दु किडन्द पिन्नर्
वारादु पोल वन्द मामणियॆत् तोऱ्पोमो ? 3
तर्ममे वॆल्लु मॆन्नुम् शान्ऱोर्शॊर् पॊय्यामो ?
कर्म विळैबुहळ्याम् कण्डदॆल्लाम् पोदादो ? 4

निश्चित है, क्या वे (आत्म-) सम्मान को खोकर और धर्म छोड़कर जीवन को धारण कर जीने में सुख मान लेंगे ? ३ जो यह सत्य जान गये कि मानव-जन्म (पाना) दुर्लभ है, क्या उनमें शरीर के जलने पर भी सत्य-निष्ठा से डिगने की प्रवृत्ति को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'जो पैदा होता वह मरता', सत्य तथ्य यह ज्ञात जिन्हें।
मान-धर्म तज जीवित रहना कभी नहीं स्वीकार उन्हें ॥ ३ ॥
दुर्लभ है नरजन्म, तथ्य यह तत्त्वपूर्ण है ज्ञात जिन्हें।
तन जल जाये नहीं सत्यता से डिगना स्वीकार उन्हें ॥ ४ ॥
बेच सूर्य को कहो कौन नर जुगनू लेना चाहेगा।
दृग-सी प्रिय स्वतंत्रता तज कर कौन दासता चाहेगा ? ॥ ५ ॥
पार्थिव सुख के बदले कोई स्वतंत्रता क्या दे देगा ?।
कौन मूर्ख, दृग बेच, चित्र लेकर उपहास खरीदेगा ? ॥ ६ ।
कह 'वन्दे मातरम्' कौन झूठी माया अपनायेंगे ?।
सुनकर 'तारकमंत्र' कहो कैसे उसको बिसरायेंगे ? ॥ ७ ॥

स्वतंत्रता का पौधा—२७

जल से नहीं, अश्रु से सिंचित, हमने इसे बढ़ाया है।
स्वतंत्रता के कोमल तरु को परमेश्वर! मुरझाना मत ॥ १ ॥
संकल्पों का घृत भर प्राणों के भीतर जिसको पाला।
स्वतंत्रता के उस दीपक को हे परमेश! बुझाना मत ॥ २ ॥
एक हज़ार वर्ष बीते तब दुर्लभ-सा जो प्राप्त हुआ।
स्वतंत्रता का रत्न अनोखा देखो कभी गँवाना मत ॥ ३ ॥
'विजयी होता धर्म', कथन यह क्या झूठा हो जायेगा।
भुगते पातक-फल अशेष, अब क्या न धर्म सरसायेगा ? ॥ ४ ॥

स्वीकार करने की रीति रहेगी ? ४ क्या कोई आकाश के सूरज को बेचकर जुगनू को लेंगे ? आँखों से भी प्यारी स्वतंत्रता के जाने के बाद क्या कोई दूसरों के सामने हाथ बाँधकर (जोड़कर) जीवन-यापन करेंगे ? ५ पार्थिव सुखों की इच्छा करते हुए क्या कोई स्वतंत्रता के गौरव को खो देंगे ? (देने को उद्यत होंगे ?) कोई दोनों आँखों को बेचकर (उस पैसे से) चित्र को खरीद लेंगे, तो क्या लोग उन्हें (देखकर) तालियाँ बजाकर नहीं हँसेंगे ? ६ 'वन्दे मातरम्' कहकर भारतमाता को नमस्कार करने के पश्चात् क्या कोई 'माया' के सामने सिर झुकायेंगे ? क्या वे यह भूल जायेंगे कि 'वन्दे मातरम्' ही अकेला तारक (मंत्र) है ? ७

स्वतंत्रता का पौधा—२७

हे सर्वेश्वर ! क्या हमने यह पौधा जल से सींचकर बढ़ाया था ? नहीं, अपने आँसुओं से सींचकर हमने इसे पाला था। क्या आपका दिव्य मन इसे सुखा देना चाहेगा ? १ सब संकल्पों-विचारों का घी बनाकर हम अपने प्राणों के अन्दर जिसे पालते रहे, वह सुन्दर दीप है यह। उसका बुझ जाना आपको क्या अभीष्ट होगा ? २ एक सहस्र वर्ष शिथिल पड़े रहने के पश्चात्, जो महान् रत्न (हाथ) न आता-सा रहा, वह (हाथ) आया। क्या (अब) हम उसको खो देंगे ? ३ साधु पुरुषों का यह कथन क्या झूठा हो जायेगा कि धर्म ही विजयी होगा। जो बुरे कर्म-फल हमें मिले,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेलोर्हळ् वॆज्जिऱैयिल् वीऴ्न्दु किडप्पदुवुम्
नूलोर्हळ् शॆक्कडियिल् नोवदुवुङ् गाण्गिलैयो ? 5
अॆण्णऱ्ऱ नल्लो रिदयम् पुऴुङ्गियिरु
कण्णऱ्ऱ शेय्पोऱ् कलङ्गुवदुङ् गाण् गिलैयो ? 6
मादरैयु मक्कळैयुम् वन्कण्मै याऱ् पिरिन्दु
काद लिळैञर् करुत्तऴिदल् काणायो ? 7
अॆन्दाय् नी तन्द इयऱ्पॊरुळॆ लामिऴन्दु
नॊन्दार्क्कु नीयन्ऱि नोवऴिप्पार् यारुळरो ? 8
इन्बच् चुवन्दिर निन् इन्नरुळाऱ् पॆऱ्ऱदन्ऱो ?
अन्बऱ्ऱ माक्कळ् अवैप्परित्ताऱ् कावायो ? 9
वानमळै यिल्लै यॆन्ऱाल् वाऴ्वुण्डो ? अॆन्दै शुया
दीन मॆमक् किल्लैयॆन्ऱाल् दीनरॆदु शॆय्वोमे ? 10
नॆञ्जहत्ते पॊय्यिन्ऱि नेर्न्दवॆला नी तरुवाय्
वञ्जहमो अॆङ्गळ् मनत्तूय्मै काणायो ? 11
पोय्क्को वुडलुम् पॊरुळुयिरुम् वाट्टुहिऱोम् ?
पॊय्क्को तीरादु पुलम्बित् तुडिप्पदुमे ? 12
निन् पॊरुट्टु निन्नरुळाल् निन्नुरिमै याम् केट्टाल्
अॆन् पॊरुट्टु नी तान् इरङ्गादिरुप्पदुवो ? 13
इन्ऱु पुदि दायिरक् किन्ऱोमो ? मुन्नोर्
अन्ऱुकॊडु वाऴ्न्द अरुमैयॆला मोरायो ? 14
नीयुम् अऱमुम् निलैत्तिरुत्तल् मॆय्यानाल्
ओयुमुन रॆङ्गळुक्किव् वोर्वरम् नी नल्हुदियॆ 15

क्या वे पर्याप्त नहीं हैं ? ४ श्रेष्ठ लोग कारा में आबद्ध होकर पड़े हैं। विद्वानों को कोल्हू चलाना पड़ रहा है। क्या आप उनका दुःख नहीं देख पाते ? (यहाँ खास तौर से वी० ओ० चिदंबरम् पिळ्ळै की चर्चा है, जिन्होंने एक जहाज कम्पनी स्थापित की और जिन्हें राजद्रोह के अपराध में कारावास में सख्त सजा भुगतनी पड़ी। बैल के स्थान पर उन्हें जोतकर उनके द्वारा कोल्हू चलवाया गया था।) ५ असंख्यक अच्छे लोगों का हृदय दग्ध है। वे दोनों नयनों से हीन शिशुओं के समान विक्षुब्ध हो रहे हैं। क्या आप इसे नहीं देख पाते ? ६ बलपूर्वक स्त्रियों और शिशुओं को उनके अपने प्यारे (तरुण) व्यक्तियों से अलग किया गया है। वे मन मारकर रह रहे हैं। क्या आप इस पर ध्यान नहीं देंगे ? ७ हमारे धाता ! आपके द्वारा हमें प्रदत्त सब निधियों को हम खो चुके हैं और हम दुःख-जर्जर हो गये हैं। सिवा आपके कौन हमारे इस रोग (दुःख) को दूर करेगा ? ८ हमारी मधुर स्वतंत्रता क्या आपकी कृपा का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पड़े जेलखाने में सज्जन पेर रहे घानी बुध-जन।
यह कैसा अन्याय हो रहा कैसे धीर धरें जन-मन ॥ ५ ॥

हृदय जल रहा है जन-जन का लघु-शिशुओं-सम हैं कातर।
इनकी दारुण दशा देख (क्यों द्रवित न होते परमेश्वर) ! ॥ ६ ॥

स्त्रियों और शिशुओं को युवकों से बलात् बिलगाते हैं।
नहीं देखते (क्या प्रभु ! तुम) वे मन-मसोस रह जाते हैं ॥ ७ ॥

जो निधियाँ दीं उन्हें खो चुके, तन-मन है दुख से जर्जर।
कौन हमारे दुःख दूर करनेवाला, हे परमेश्वर ! ॥ ८ ॥

स्वतंत्रता थी प्राप्त आपकी दया-दृष्टि से हमें (विभो !)।
छीन चुके उसको निर्दय जन क्या न मिलेगी पुनः (प्रभो !) ॥ ९ ॥

वर्षा हो यदि नहीं गगन से तो न बचेगा जन-जीवन।
स्वतंत्रता यदि मिली न हमको व्यर्थ सभी हैं (तन-मन-धन) ॥ १० ॥

निश्छल मन की सरल याचना पूर्ण आप (प्रभु !) करते हैं।
मेरा मन अशुद्ध कपटी क्या ? जो न (विकट) दुख हरते हैं ॥ ११ ॥

क्या सच नहीं कि तन-मन-धन-जीवन से हम मुरझाते हैं ?।
क्या यह भी सच नहीं, निरन्तर हम रोते बिलखाते हैं ॥ १२ ॥

माँग रहा आपके लिए ही अपना हक मैं, करुणाकर !।
इस पर भी क्या आप न मुझ पर कृपा करेंगे (परमेश्वर !) ॥ १३ ॥

नया नहीं हम माँग रहे हैं, पूर्व वृत्त पर ध्यान करें।
जैसी कृपा पूर्वजों पर थी उस महिमा का ध्यान करें ॥ १४ ॥

यदि है सच्चा धर्म, आप भी सच्चे हैं (हे परमेश्वर !)।
तो मरने से पहले दे दें (स्वतंत्रता का सुंदर) वर ॥ १५ ॥

फल नहीं थी ? यदि निर्दय (पशुओं जैसे) मनुष्य उसको छीन रहे हों, तो क्या आप उसकी रक्षा नहीं करेंगे ? ९ आकाश से वर्षा न हो, तो क्या जीना सम्भव होगा ? हमारे धाता ! हम स्वाधीन न हों तो हम दीन जन क्या कर सकेंगे ? १० मन में मैल न रखकर (शुद्ध मन से) कुछ भी माँगा जाय, तो आप देनेवाले हैं। क्या हम मन में कोई छल-कपट रखते हैं ? क्या आप हमारी हृदय-शुचिता को नहीं देख पाते ? ११ क्या हम झूठ-मूठ अपने तन, धन, जीवन को मुरझा रहे हैं ? क्या हम निरन्तर झूठा विलाप करते हुए तड़प रहे हैं ? १२ आपके लिए आपकी कृपा से आपके अधिकार को हम माँग रहे हैं, तो भी क्या आप हमारे लिए, हम पर दया नहीं करेंगे ? १३ क्या आज हम कुछ नया माँग रहे हैं ? हमारे पूर्वज उन दिनों कैसे रहे ? क्या उस समस्त महिमा पर आप नहीं सोचेंगे (ध्यान देंगे) ? १४ अगर आपका और धर्म का शाश्वत रहना सच है, तो हमारे निर्जीव होने से (मरने से) पहले यह एक वर हमें दीजिए। १५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सुदन्दिर दाहम्—28

राग— कमास्; ताळ— आदि

अॅन्ऱु तणियुमिन्द सुदन्दिर दाहम् ? अॅन्ऱु मडियुमॅङ्गळ् अडिमैयिल् मोहम् ?
अॅन्ऱॅम दन्नैकै विलङ्गुहळ् पोहुम् ?, अॅन्ऱॅम दिन्नल्हळ् तीर्न्दु पॉय्याहुम् ?
अन्ऱॊरु बारद माक्क वन्दोन्ने, आरियर् वाळ्विन्ने यादरिप्पोन्ने !
वॅन्ऱि तरुन्दुणै निन्नरु ळन्ऱो ?, मॅय्यडि योमिनुम् वाडुदल् नन्ऱो ? 1
पञ्जमु नोयुनिन् मॅय्यडियार्क्को ?, पारिनिल् मेन्मैहळ् वेऱिनि यार्क्को ?
तञ्ज मडैन्दपिन् कॅविड लामो ?, तायुन्दन् कुळन्दैयैत् तळ्ळिडप् पोमो ?
अञ्जलॅन् ऱुळ्शॅयुङ् गडमैयिल् लायो ?, आरिय नोयुनिन् अऱमऱन् दायो ?
वॅञ्जॅय लरक्करै वीट्टिडु वोनो, वीर शिकामणि आरियर् कोन्ने ! 2

सुदन्दिर देवियिन् तुदि—29

विरुत्तम् (छन्द)

इदन्दरु मनैयिन् नीङ्गि इडर्मिहु शिऱैप् पट्टालुम्
पदन्दरु विरण्डु माऱिप् पळिमिहुत् तिळिवुऱ् ऱालुम्
विदन्दरु कोडि यिन्नल् विळैन्दॅन्नै यळ्हित् तिट्टालुम्
सुदन्दिर देवि निन्नैत् तॊळुदिडल् मऱक्कि लेन्ने ! 1
निन्नरुळ् पॅऱ्ऱिलादार् निहरिलाच् चॅल्व रेनुम्
पन्नरुङ् गल्वि केळ्वि पडैत्तुयर्न् दिट्टा रेनुम्
पिन्नरुम् अॅण्णिलाद पॅरुमैयिऱ् चिऱन्दा रेनुम्
अन्नवर् वाळ्क्कै पाळाम् अणिहळ् वेय् पिणत् तोडॉय्पार् 2

स्वतंत्रता की प्यास—२८

यह स्वतंत्रता की प्यास कब बुझेगी ? हमारा दासता से मोह कब छूटेगा ? कब हमारी माता की हथकड़ियाँ छूटेंगी ? कब हमारे संकट दूर होंगे और वे (संकट) कब मिथ्या सिद्ध होंगे ? (प्राचीन काल में) उस दिन एक महाभारत (-युद्ध) रचने के लिए आनेवाले (हे कृष्ण) ! आर्यों के जीवन के हे मित्र ! विजयदायिनी सहायता आपकी ही कृपा है न। हम सच्चे भक्त मुरझा रहे हैं-- क्या यह भी ठीक है ? १ अकाल तथा बीमारियाँ क्या आपके सच्चे दासों के लिए ही हैं ? तो फिर बड़ाइयाँ विश्व में अन्य किनकी हों ? हम आपकी शरण में आ गये हैं-- फिर आप क्या हमारा हाथ छोड़ दे सकते हैं ? माता भी क्या अपनी सन्तान को दूर हटा दे ? क्या आप अभय-दान देने का कर्तव्य भूल गये हैं ? हे आर्य (महान गुणों के ईश्वर) ! क्या आप भी अपना धर्म भूल गये ? नृशंसकारी राक्षसों के हे हंता ! हे वीर-शिरोमणि ! आर्यराज ! २

स्वतंत्रता देवी की स्तुति—२९

(यद्यपि) मैं हितकारक घर से अलग होकर संकटदायी कारा में बंद रहूँ, अथवा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

स्वतंत्रता की प्यास—२८

स्वतंत्रता की प्यास बुझेगी कब (परमेश्वर!)।
छूटेगा दासता-मोह कब (हे अखिलेश्वर!)॥
कब टूटेंगी माता के कर की हथकड़ियाँ।
कब हट जायेंगी हमसे संकट की घड़ियाँ॥
बने सहायक आप महाभारत के रण में।
आर्यों को दी विजय, कीर्ति छाई कण-कण में॥
सच्चे भक्त आप के होकर हम मुरझाते।
(भक्त दुखी हों, आप भक्तवत्सल कहलाते)॥ १॥

ये अकाल, ये रोग आज हम दासों पर ही।
तब सुपात्र वे कौन, कृपा रखते जिन पर ही?॥
शरणागत का हाथ आप कैसे छोड़ेंगे।
कैसे माता-पिता पुत्र से मुख मोड़ेंगे॥
अभयदान की बान आप क्या भूल गये हैं?।
निज कर्तव्य महान आप क्या भूल गये हैं?॥
क्रूर नृशंस राक्षसों के प्रभु हो तुम घालक!।
वीर-शिखा-मणि आर्यराज (भक्तों के पालक)॥ २॥

स्वतंत्रता देवी की स्तुति—२९

सुखद सदन तज करूँ निरन्तर दुखद जेल का मैं सेवन।
गौरवमय ये स्थितियाँ तज कर बनूँ घृणा का या भाजन।
अथवा कोटि-कोटि दुर्गतियाँ नष्ट करें मेरा जीवन।
नहीं तजूँगा स्वतंत्रता की देवी मैं तेरा पूजन॥ १॥

हों अनुपम धनवान या कि उद्भट विद्वान बहुश्रुत हों।
अगणित-गुण-गण-गरिमाओं की महिमाओं से मंडित हों॥
विभूषणों से भूषित शव-सा वे करते जीवन-यापन।
बिन स्वतंत्रता-देवि-कृपा के निष्फल है उनका जीवन॥ २॥

(यद्यपि गौरवपूर्ण) दोनों स्थितियों से छूटकर अपकीर्ति का शिकार बन जाऊँ और घृणास्पद बनकर रह जाऊँ, अथवा (यद्यपि) विविध करोड़ों दुर्गतियाँ आकर मुझे मिटा दें, तो भी, हे स्वतंत्रता की देवी! मैं तुम्हारा पूजन करना नहीं भूलूंगा। १ जो तुम्हारी कृपा के पात्र न हुए, वे चाहे अतुल्य धनवान हों, अथवा बहुत विद्या-सम्पन्न तथा श्रवण (द्वारा प्राप्त) ज्ञान से श्रेष्ठ हुए हों, और साथ ही असंख्य-विधि बड़ाई में उन्नत हो गये हों (तो भी) उनका जीवन शून्य (अर्थहीन) है। वे आभूषणों से विभूषित शव की ही समानता करते हैं। २ हे देवी! तुम्हारी शोभा से अनलंकृत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देवि ! निन् नॉळि पॅऱाद तेयमोर् तेय मामो ?
आवियङ् गुण्डो ? शॅम्मै अऱिवुण्डो आक्क मुण्डो ?
काविय नूल्हळ् ञानक् कलैहळ्वे दङ्ग ळुण्डो ?
पाविय रन्ऱो निन्ऱन् पालनम् पडैत्ति लादार् ? 3
ऑळिवऱु नोयिऱ् चावार् ऊक्कमॉन् ऱऱिय माट्टार्
कळिवुऱु माक्क ळॅल्लाम् इहळ्न्दिडक् कडैयिल् निऱ्पार्
इळिवऱु वाळ्क्कै तेरार् कनविनु मिन्बङ् गाणार्
अळिवऱु पॅरुमै नलहुम् अन्नै निन् नरुळ्पॅ ऱादार् 4

वेऱु (भिन्न छन्द)

देवि ! निन्नरुळ् तेडि युळन्दवित्, ताबि युन्दम दन्बु मळिप्पवर्
मेवि निऱ्पदु वॅञ्जिऱै यायिनुम्, ताविल् वानुल हॅन्नत् तहुवदे 5
अम्मै युन्ऱ नरुमै यऱिहिलार्, शॅम्मै यॅन्ऱिऴि तॉण्डिनैच् चिन्दिप्पार्
इम्मै यिन्बङ्ग ळॅय्दुपॉन् माडत्तै, वॅम्मै यार् पुन् शिऱयॅनल् वेण्डुमे 6
मेऱ्ऱि शॅप्पल नाट्टिनर् वीरत्ताल्, पोऱ्ऱि निन्नैप् पुदुनिलै यॅय्दिनर्;
कूऱ्ऱि नुक्कुयिर् कोडि कॉडुत्तुम्निन्, पेऱ्ऱि नैप्पॅऱु वेमॅनल् पेणिनर् 7
अन्न तन्मैकॉळ् निन्नै यडियनेन्, ऍन्न कूऱि यिशैत्तिड वल्लनै ?
पिन्न मुऱ्ऱुप् पॅरुमै यिळन्दुनिन्, शिन्न मऱ्ऱळि तेयत्तिऱ् ऱोन्ऱिनेन् 8
पेर ऱत्तिनैप् पेणुनल् वेलिये, शोर वाळ्क्कै तुयर् मिडि यादिय
कार रुक्कक् कदित्तिडु शोदिये, वीर रुक्कमु देनिनै वेण्डुवेन् 9

देश भी कोई देश है ? क्या वहाँ (उसमें) प्राण होंगे ? क्या श्रेष्ठ बुद्धि का प्रकाश होगा ? क्या वहाँ (किसी का) निर्माण होगा ? काव्यग्रंथों, ज्ञान, कलाओं का, वेदों का अस्तित्व रहेगा ? तुम्हारे परिपालन में जो नहीं आते, वे पापी ही हैं न ? ३ हे अमिट महिमादायिनी माता ! जो तुम्हारी कृपा के पात्र नहीं हों, वे अनवरत रोगों से मर जायेंगे। उनमें कोई उत्साह नहीं होगा। वे क्षुद्र पशु-सम मनुष्यों से (द्वारा) भी निंद्य होकर सबसे निम्न श्रेणी में रहेंगे। वे यह भी नहीं जान पाते कि 'अनिंद्य' जीवन क्या होगा ? और वे स्वप्न में भी सुख को प्राप्त नहीं होंगे। ४ हे देवी ! जो तुम्हारी कृपा की खोज में व्याकुल-मन होकर अपने प्राणों तथा प्रेम को अर्पित कर देंगे, उनका वास कठोर कारा में भी क्यों न हो, वह (कारागृह) निर्मल स्वर्ग ही मानने योग्य होगा। ५ माँ ! तुम्हारी महत्ता जो नहीं जानते, जो निकृष्ट दासता को ही श्रेष्ठ समझते हैं, वे जिस स्वर्ण-प्रासाद में रहकर ऐहिक सुख को भोगते हैं, उसे (प्रासाद) को कठोर तथा निकृष्ट कारा (-गृह) मानना चाहिए। ६ पश्चिम दिशा के अनेक देशों के वीरों ने वीरता द्वारा तुम्हारी पूजा की तथा नया पद पाया। उन्होंने अपने प्राणों को यम के हवाले करके भी तुम्हारी प्राप्ति का लाभ चाहा और वे उसी में लगे रहे। ७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नव-निर्माण, प्राण की धड़कन, होगा बुद्धि-प्रकाश नहीं।
काव्य-कला-विज्ञान-वेद की विद्याओं का वास नहीं॥
स्वतंत्रता से रहित नरों में धर्मभाव का लेश नहीं।
स्वतंत्रता से जो न सुशोभित उसे कहेंगे देश नहीं॥ ३॥

हे अक्षय महिमाप्रद माँ! जो कृपा न तेरी पायेंगे।
निरुत्साह होकर, असाध्य रोगी बन वे मर जायेंगे॥
नर-पशुओं से भी निंदित हो महानीच कहलायेंगे।
रह विमूढ़ उस निन्द्य दशा में, सुख न स्वप्न में पायेंगे॥ ४॥

देवि! तुम्हारी कृपा खोजने को जो जन विह्वल होकर।
प्रबल प्रेम को प्रकट करेंगे अपने प्राणों को खोकर॥
जिसमें वे निवास करते हों, वह कठोरतम कारागार।
कहलायेगा जगती-तल पर निर्मल (सुंदर) स्वर्गागार॥ ५॥

माता! तेरी (मंजुल) महिमा जो जन नहीं जानते हैं।
(दारुण दुखद) दासता को ही (सुखप्रद) श्रेष्ठ मानते हैं॥
वे जिसमें निवास करते हैं, स्वर्ग-समान मानते हैं।
स्वर्ग नहीं, वह अधम कैद है, भ्रमवश नहीं जानते हैं॥ ६॥

पश्चिम देशों के वीरों ने (देवि!) तुम्हारा कर पूजन।
पाया था नव पद (अक्षय यश, करता जग उनका वंदन)॥
स्वतंत्रता के लिए दे दिया अपने प्राणों का बलिदान।
(इसीलिए उनकी गुण-गाथा विश्व कर रहा आज बखान)॥ ७॥

ऐसी तेरी (मंजुल) महिमा कैसे मैं गा पाऊँगा।
(शब्दों का भंडार नहीं है कैसे उसे सुनाऊँगा)॥
देश जन्मदाता जो मेरा, उसका गौरव अस्त हुआ।
स्वतंत्रता का चिह्नमात्र भी जहाँ न मिलता, (ध्वस्त हुआ)॥ ८॥

दुर्गम-दुर्ग-समान (जननि!) तुम (देश-) धर्म की रक्षक हो।
(जगमग) ज्योति वीरता की हो दुख-दीनता-विनाशक हो॥
(सरस-) सुधा के ही समान हो वीरों को (उत्साह-प्रदा)।
सदा करूँ मैं वंदन तेरा (पूजन तेरा करूँ सदा)॥ ९॥

ऐसी (स्थिति-युक्त) तुम्हारी महिमा का मैं किस शब्दों में गान कर सकूंगा? मैं तो ऐसे देश में जन्मा, जो षण्ढ हो गया है, गौरव को खो चुका है और जिसमें तुम्हारे अस्तित्व का कोई चिह्न नहीं पाया जाता है। ८ हे धर्म-पालक दुर्ग! चोरों का-सा जीवन, दुःख, दरिद्रता आदि के अंधकार का नाश करनेवाली हे ज्योति। हे वीरों के अमृत! तुमसे मैं विनय करूँगा (मैं सेवा करूँगा)। ९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विडुदलै—30

राग— बिलहरि

विडुदलै ! विडुदलै ! विडुदलै !
पऱैय रुक्कु मिङ्गु तीयर् पुलैय रुक्कुम् विडुदलै !
परवरोडु कुऱव रुक्कु मऱव रुक्कुम् विडुदलै !
तिऱमै कॊण्ड तीमैयऱ्ऱ तॊऴिल् पुरिन्दु यावरुम्
तेर्न्द कल्वि ञान मॆय्दि वाऴ्वमिन्द नाट्टिले (विडु) 1
एऴैयॆन्ऱुम् अडिमै यॆन्ऱुम् ऍवनु मिल्लै जादियिल्
इऴिवु कॊण्ड मनिदरॆन्ऱ दिन्दि याविल् इल्लैये
वाऴि कल्वि शॆल्वमॆय्दि मनमहिऴ्न्दु कूडिये
मनिदर् यारु मॊरुनिहर् समानमाह वाऴ्वमे (विडु) 2
मादर्तम्मै इऴिवु शॆय्यु मडमैयैक् कॊऴुत्तुवोम्
वैय वाऴ्वु तन्नि लॆन्द वहैयि लुम्न मक्कुळे
ताद रॆन्ऱ निलैमै माऱि आण्ग ळोडु पॆण्गळुम्
सरिनि हर्स मानमाह वाऴ्व मिन्द नाट्टिले (विडु) 3

सुदन्दिरप् पऴ्ऴु—31

(पऴ्ऴर् कऴियाट्टम्)

राग— वराळि; ताळ— आदि

पल्लवि (टेक)

आडुवोमे— पऴ्ऴुप् पाडुवोमे
आनन्द सुदन्दिरम् अडैन्दु विट्टो मॆन्ऱु (आडु)

मुक्ति (स्वतंत्रता)—३०

मुक्ति ! मुक्ति ! मुक्ति ! यहाँ मुक्ति (है) पऱैयरों, तीयों तथा पुलैयों को (अछूतों की जातियाँ परवर, कुरवर् (कंजड़) और मऱवरों को भी छुटकारा है। हम सभी दक्षतापूर्वक अहानिकर कार्य करेंगे; इस देश में श्रेष्ठ विद्या तथा ज्ञान अर्जित करते हुए रहेंगे। (मुक्ति०) १ जाति से नीच-ऊँच कोई नहीं बना रहता। नीचता से विभूषित कोई मनुष्य भारत में नहीं है। जय हो हमारी। हम विद्या तथा धन अर्जित कर, सुखपूर्वक मेल से रहेंगे तथा सबके समान, बिलकुल समान होकर जीवन बितायेंगे। (मुक्ति०) २ नारी का अपमान करनेवाली मूढ़ता को जला देंगे : सांसारिक जीवन में हम किसी भी प्रकार की दासता की स्थिति को बदल देंगे और सभी स्त्री-पुरुष इस देश में बिलकुल सम-समानता के साथ जीवन बितायेंगे। (मुक्ति०) ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

छुटकारा (स्वतंत्रता)—३०

आज मुक्ति का महापर्व है (आज कटे सबके बन्धन) ॥
'तीयों' और 'पुलैयों' की भी, है 'परैयरों' की भी मुक्ति।
'परवर' और 'कुरवरों' की भी और 'मरवरों' की भी मुक्ति ॥
हम सब लोग दक्षता-पूर्वक (शुभ) अहानिकर कार्य करें।
ज्ञान, श्रेष्ठ विद्या अर्जित कर (सद्भावों से हृदय भरें) ॥
(मुक्त हृदय से मधुर मुक्ति का करते हैं सब अभिनंदन)।
आज मुक्ति का महापर्व है, (आज कटे सबके बंधन) ॥ १ ॥
जन्ममात्र से कोई जन भी ऊँच नहीं है, नीच नहीं।
निन्द्य-नीचता-युत नर कोई अब भारत के बीच नहीं ॥
विद्या पढ़कर (ज्ञानवान बन) धन-सम्पत्ति कमायेंगे।
हिल-मिल सुखी रहेंगे, जीवन एक समान बितायेंगे ॥
अपनायेंगे सुख-प्रद समता भुला विषमता का क्रन्दन।
आज मुक्ति का महापर्व है, (आज कटे सबके बन्धन) ॥ २ ॥
नारी का अपमान करे जो वह अज्ञता जला देंगे।
जग-जीवन से मिटा दासता हम परिवर्तन ला देंगे ॥
(नर-नारी दोनों के अनुचित भेद सभी मिट जायेंगे)।
पा समान अधिकार नारि-नर दोनों सम कहलायेंगे ॥
(तन स्वतंत्र हो, मन स्वतंत्र हो औ स्वतंत्र होगा जीवन)।
आज मुक्ति का महापर्व है, (आज कटे सबके बन्धन) ॥ ३ ॥

पळ्ळों (कृषकों) का आनन्द-नाच—३१

(स्वतन्त्रता पर पळ्ळों का गाना)

स्वतंत्रता का सौख्य प्राप्त कर (मंगल) मोद मनायेंगे।
नाच-नाचकर पळ्ळ कृषकजन पळ्ळु-गान को गायेंगे ॥

स्वतन्त्रता पर पळ्ळों (कृषकों) का गाना—३१

(पळ्ळों का आनन्द-नृत्य)

[पळ्ळ लोग कृषक-कुल के होते हैं। वे अपने उत्सवों में जो नाटक खेलते हैं और गाना गाते हैं, उन्हें 'पळ्ळु' कहा जाता है। इसमें भारती यह कल्पना करते हैं कि स्वतन्त्रता मिल गयी है तथा उसको मनाते हुए कृषक लोग 'पळ्ळु' (के तर्ज में) गा रहे हैं।]

नाचें, पळ्ळु गायें। 'आनन्द-स्वतन्त्रता प्राप्त कर गये' यह कहते हुए नाचें, गावें।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शरणङ्गळ् (चरण)

पार्प्पाऩै ऐयरॆऩ्ऱ कालमुम् पोच्चे— वॆळ्ळैप्
परङ्गियॆत् तुरैयॆऩ्ऱ कालमुम् पोच्चे— पिच्चै
एऱ्पारैप् पणिहिऩ्ऱ कालमुम् पोच्चे— नम्मै
एय्प्पोरुक् केवल् शॆय्युम् कालमुम् पोच्चे (आडु) 1
ऍङ्गुम् सुदन्दिरम् ऍऩ्बदे पेच्चु— नाम्
ऍल्लोरुम् सममॆऩ्बदु उऱुदि याच्चु
शङ्गु कॊण्डे वॆऱ्ऱि ऊदुवोमे— इदॆत्
तरणिक् कॆल्लामॆडुत्तु ओदुवोमे (आडु) 2
ऍल्लोरुम् ऒऩ्ऱॆऩ्ऩुम् कालम् वन्ददे— पॊय्युम्
एमाऱ्ऱुम् तॊलैहिऩ्ऱ कालम् वन्ददे— इऩि
नल्लोर् परियरॆऩ्ऩुम् कालम् वन्ददे— कॆट्ट
नयवञ्जक् कारुक्कु नाशम् वन्ददे (आडु) 3
उऴवुक्कुम् तॊऴिलुक्कुम् वन्दऩै शॆय्वोम्— वीणिल्
उण्डुकळित् तिरुप्पोरै निन्दऩै शॆय्वोम्
विऴलुक्कु नीर्पाय्च्चि माय माट्टोम्— वॆऱुम्
वीणरुक्कु उऴैत्तुडलम् ओय माट्टोम् (आडु) 4
नामिरुक्कुम् नाडु नमदु ऍऩ्ब दऱिन्दोम्— इदु
नमक्के उरिमैयाम् ऍऩ्ब दऱिन्दोम्— इन्दप्
पूमियिल् ऍवर्क्कुम् इऩि अडिमै शॆय्योम्— परि
पूरणऩुक् केयडिमै शॆय्दु वाऴ्वोम् (आडु) 5

ब्राह्मण को 'ऐयर्' (शायद आर्य का बिगड़ा रूप है, पर यहाँ अत्यन्त सम्मान-सूचक शब्द है। यह सम्मान ऊँच जाति के होने के नाते उन्हें मिला है। उस शब्द में अछूत प्रथा के पक्षपात की तीव्र गन्ध है।) कहने का जमाना लद गया। गोरे फ़िरंगियों को 'दुरै' (साहब) कहने का समय भी बीत गया। भिखारियों के सामने विनय करने का काल भी चला गया। वैसे ही हमें धोखा देनेवालों की दासता करने का जमाना भी लद गया। निश्चय लद गया। (नाचें०) १ सर्वत्र स्वतंत्रता का ही नारा है। यह निश्चित हो गया कि हम सब समान हैं। शंख लेकर विजयध्वनि करेंगे। संसार के सभी लोगों से यह बात कहेंगे। (नाचें०) २ सभी एक हैं, यह मान लेने का समय आ गया। झूठ और धोखा—इनके चले जाने का जमाना आ गया। अच्छे मनुष्य ही श्रेष्ठ लोग हैं—यह मानने का जमाना आ गया। बुरे वंचकों का नाश-काल आ गया। (नाचें०) ३ कृषि तथा उद्योग की वन्दना करेंगे। निरुद्योग बनकर खाते हुए भोग-विलास करनेवालों की निन्दा करेंगे। नींद को पानी सींचने में समय का अपव्यय नहीं करेंगे। निरे ढोंगियों के लिए परिश्रम करके शरीर नहीं थकायेंगे। (नाचें०) ४ हम सब यह जान गये कि हम जिस देश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जब ब्राह्मण ही 'ऐयर' पदवी थे पाते, वह युग बीता।
जब अंग्रेज़ 'दुरै' (साहब) थे कहलाते, वह युग बीता॥
भिखारियों-सम सम्मुख नत हो रिरियाने का युग बीता।
वञ्चक जन की अधम दासता अपनाने का युग बीता॥
(दास्यभाव से छूट सभी अब स्वतंत्रता अपनायेंगे)।
नाच-नाचकर पळ्ळ कृषक-जन पळ्ळु-गान को गायेंगे॥ १॥

(गूँज रहा) सर्वत्र आज है स्वतंत्रता का ही नारा।
हैं सब एक समान (सभी को) हुआ यही निश्चय (प्यारा)॥
विजय-शंख लेकर (निज कर में हर्ष-समेत) बजायेंगे।
(कटी हमारी दास्य-शृंखला जग को यही बतायेंगे)॥
(अब हम भी सम्मानित होंगे, मानव माने जायेंगे)।
नाच-नाचकर पळ्ळ कृषक जन पळ्ळु-गान को गायेंगे॥ २॥

युग आया अब एक समान सभी मानव माने जायें।
युग आया छल-छद्म नष्ट हों (दुष्ट हेय जाने जायें)॥
युग आया अब सज्जन (जग में सर्व) श्रेष्ठ नर कहलायें।
युग आया अब इस स्वदेश से वञ्चक सारे मिट जायें॥
(नव-युग आया नव-उमंग से नव-जीवन अपनायेंगे)।
नाच-नाचकर पळ्ळ कृषक-जन पळ्ळु-गान को गायेंगे॥ ३॥

कृषि की उन्नति कर उद्योगों की महिमा हम गायेंगे।
काहिल, सुस्त, कामचोरों को निन्दनीय ठहरायेंगे॥
निद्रालस-प्रमाद में पड़कर समय न व्यर्थ गँवायेंगे।
कभी ढोंगियों के हित श्रम कर तन को नहीं थकायेंगे॥
(कर्मशील बन कर्मभूमि में सभी सिद्धियाँ पायेंगे)।
नाच-नाचकर पळ्ळ कृषक-जन पळ्ळु-गान को गायेंगे॥ ४॥

बसे जहाँ वह देश हमारा आज सभी यह जान गये।
इस पर है अधिकार हमारा यह भी हैं पहचान गये॥
अब हम जग के बीच किसी के दास नहीं कहलायेंगे।
परमेश्वर की सेवा करके जीवन सफल बनायेंगे॥
(जिस धरती पर जन्म लिया है उस पर बलि-बलि जायेंगे)।
नाच-नाचकर पळ्ळ कृषक-जन पळ्ळु-गान को गायेंगे॥ ५॥

में रहते हैं, वह हमारा ही देश है। इस पर हमारा ही अधिकार है— हम यह भी पहचान गये हैं। अब हम इस विश्व में किसी की भी दासता नहीं करेंगे। परिपूर्ण भगवान ही की सेवा करते हम अपना जीवन बितायेंगे। (नाचें०) ५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

4 देशीय इयक्कप् पाडल्हळ्

सत्रपदि शिवाजि—32

टीका— तत् सैन्नियत्तिऱ्कुक् कूऱ्ऱियदु ।

जय जय बवानि ! जय जय बारदम् !
जय जय मादा ! जय जय दुर्क्का !
वन्दे मादरम् ! वन्दे मादरम्
सेनैत् तलैवर् हाळ् ! शिऱन्द मन्दिरिहाळ् !
यानैत् तलैवरुम् अरुन्दिऱल् वीरर्हाळ् !
अदिरद मन्नर्हाळ् ! तुरगदत् तदिबर्हाळ् !
ऍदिरिहळ् तुणुक्कुऱ इडित्तिडु पदादि हाळ् !
वेलॅऱि पडैहाळ् ! शूलॅऱि मऱवर्हाळ्
कालनुरुक् कॊळुम् कणैतुरन् दिडुवीर्
मऱुमा यिरविदम् पऱ्ऱलर् तम्मैच्
चॅऱ्ऱिडुन् दिऱनुडैत् तीर रत्तिनङ्गाळ् !
याविरुम् वाऴिय ! याविरुम् वाऴिय !
देविनुन् दमक्कॅलाम् तिरुवरुळ् पुरिह ! 1-13
माऱ्ऱलर् तम्पुलै नाऱ्ऱमे यऱिया
आऱ्ऱल् कॊण् डिरुन्ददिव् वरुम् पुहऴ् नाडु ! 14-15
वेदनूल् पऴिक्कुम् वॆळित्तिशै मिलेच्चर्
पादमुम् पॊऱुप्पळो बारद देवि ? 16-17
वीररुम् अवरिशै विरित्तिडु पुलवरुम्
पारॆलाम् पॆरुम्बुहऴ् परप्पिय नाडु 18-19
तर्ममे उरुवात् तऴैत्तपे ररशरुम्
निर्मल मुनिवरुम् निरैन्द नन्नाडु ! 20-21
वीररैप् पॆऱाद मेन्मैतीर् मङ्गैयै
ऊरवर् मलडियैत् ऱुरैत्तिडु नाडु ! 22-23
बारदप् पूमि पऴम्बॆरुम् बूमि; 24

---

४ राष्ट्रीय आन्दोलन के गीत

छत्रपति शिवाजी—३२

[उनकी अपनी सेना के प्रति उक्ति]

जय, जय भवानी (की) । जय जय भारत (की) । जय जय माता (की) । जय जय दुर्गा (की) । वन्दे मातरम् । वन्दे मातरम् । सेना-पतियो । श्रेष्ठ सचिवो ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

४ राष्ट्रीय आन्दोलन के गीत

छत्रपति शिवाजी का अपनी सेना से कथन—३२

जयति-जयति जय-जय माता की जय दुर्गा महरानी की।
जयति-जयति जय-जय भारत की जय-जय-जयति भवानी की॥
सेनापतियो! श्रेष्ठ मंत्रियो! गजपतियो! जय हो जय हो।
जय हो अतुल साहसी वीरो! अतिरथियो! जय हो जय हो॥
अरि-दल पर भीषण आघाती पदातियो! जय हो जय हो।
(नरपतियो! राजाओ! जय हो) और अश्वपतियो! जय हो॥
सांग फेंकनेवालों की जय, शूल फेंकनेवालो! जय।
काल-बाण बरसानेवाले वीरो! जय-जय जय-जय-जय॥
विविध रीतियों से अरियों के वध-कारक रणधीरो! जय।
शत्रु पराजित करनेवाले विश्रुत विजयी वीरो! जय॥
जियो, जियो, जय सकल तुम्हारी (शक्ति अपार अखंड भरे)।
(विजय-वैजयन्ती फहरा दो) देवी तुम पर कृपा करे॥ १-१३॥
देश हमारा सर्वश्रेष्ठ था (कलित कीर्ति से मंडित था)।
शत्रुजनों की नीच गंध से नहीं कभी भी परिचित था॥ १४-१५॥
उन म्लेच्छों का बसना कैसे सह सकती भारत-माता।
'वेद-पुराणों की कर निन्दा जिनका मन अति हरषाता'॥ १६-१७॥
विद्वानों ने सुयश देश का निखिल विश्व में गाया है।
वीरों ने इसके प्रताप को भूतल पर चमकाया है॥ १८-१९॥
अगणित धार्मिक राजाओं से भारत देश विभूषित था।
तपोव्रती निर्मल मुनियों से (निखिल विश्व में वन्दित था)॥ २०-२१॥
जो वीरों की हो न प्रसविनी नारी गौरव से वञ्चित।
वंध्या कहते थे उस नारी को भारतवासी (पंडित)॥ २२-२३॥
सब देशों से बड़ी पुरानी भारत-भूमि हमारी है।
अति विशाल विस्तार-समन्वित (सारे जग से न्यारी है)॥ २४॥

गजपतियो। अति साहसी वीरो। अतिरथी राजाओ। अश्वपतियो। शत्रु-भयंकर-आघाती-पदातियो। सांग फेंकनेवाली पलटनो। शूल फेंकनेवाले वीरो। काल रूपी बाण छोड़नेवालो। और सहस्र रीतियों से शत्रुओं का हनन करने की शक्ति रखनेवाले धीर-रत्नो। जियो सब। जियो सब। देवी तुम सब पर कृपा करे। १-१३ यह (हमारा) श्रेष्ठ तथा यशस्वी देश शत्रुओं की नीच (कर्मों की) गन्ध भी नहीं जानता था; वह इतना सशक्त था। १४-१५ क्या हमारी भारत-देवी अपने ऊपर विदेशी वेदनिंदक म्लेच्छों द्वारा चरण रखा जाना सह सकेगी? १६-१७ हमारा देश ऐसा देश है जिसका बड़ा यश, वीरों तथा उनके यश-गायक विद्वानों द्वारा विश्व भर में फैलाया गया था। १८-१९ यह श्रेष्ठ देश धर्मरूप बड़े-बड़े राजाओं तथा निर्मल मुनिगणों से भरा था। २०-२१ इस देश में अवीरप्रसविनी गौरवहीन नारी को लोग वंध्या कहते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीरदन् पुदल्वर् इन्निन्नैवहर् ऱादीर् 25
बारद नाडु पार्क्कॅलाम् तिलहम्
नीरदन् पुदल्वर् इन् निन्नैवहऱ्ऱा दीर् ! 26-27
वान्नह मुट्टुम् इमयमाल् वरैयुम्
एन्नैय दिशैहळिल् इरुन्दिरैक् कडलुम् 28-29
कात्तिडु नाडु ! गङ्गैयुम् सिन्दुवुम्
तूत्तिरै यमुनैयुम् शुन्नैहळुम् पुन्नल्हळुम्
इन्नरुम् पॊऴिल्हळुम् इणैयिला वळङ्गळुम्
उन्नद मलैहळुम् ऒळिर्तरु नाडु ! 30-33
पैन्निऱप् पऴनम् पशियिला दळिक्क
मैन्निऱ मुहिल्हळ् वऴङ्गु पॊन्नाडु ! 34-35
देवर्हळ् वाऴ्विडम्, तिऱलुयर् मुनिवर्
आवलो डडैयुम् अरुम्पुहऴ् नाडु 36-37
ऊनमॊन्ऱऱिया ञानमैय्प् पूमि 38
वानवर् विऴैयुम् माट्चियार् तेयम् 39
बारद नाट्टिशै पहर यान् वल्लनो ? 40
नीरदन् पुदल्वर् निन्नैवहर् ऱादीर् ! 41
ताय्त्तिरु नाट्टैत् तरुहण् मिलेच्चूचर्
पेय्त्तहै कॊण्डोर् पॆरुमैयुम् वण्मैयुम्
ञानमुम् अऱिया नवैपुरि पहैवर्
वानहम् अडक्क वन्दिडुम् अरक्कर् पोल्
इन्नाळ् पडैकॊणर्न्दु इन्नल् शॆय्हिन्ऱार् ! 42-46
आलयम् अऴित्तलुम् अरुमऱै पऴित्तलुम्
बालरै विऱुत्तरैप् पशुक्कळै ऒऴित्तलुम्
मादर्कऱ् पऴित्तलुम् मऱैयवर् वेळ्विक्कु
एदमे शूऴ्वदुम् इयऱ्ऱिनिऱ् किन्ऱार् 47-50

थे। २२-२३ भारत-भूमि प्राचीन तथा विशाल भूमि है। २४ तुम सब उसकी सन्तान हो। यह स्मरण रखना, न भूलना। २५ भारत देश विश्व का तिलक है। तुम उसकी सन्तान हो। मत भूलना। २६-२७ गगनभेदी हिमालय पर्वत से और अन्य दिशाओं में तरंगों-सहित समुद्रों से रक्षित देश है यह। २८-२९ यह वह देश है, जिसमें गंगा, सिंधु, स्वच्छ-तरंग यमुना, अन्य सरिताएँ— नदियाँ, श्रेष्ठ वन, अनुपम समृद्धियाँ तथा उन्नत पर्वत रहकर उसकी शोभा बढ़ा रहे हैं। ३०-३३ हरे-हरे खेत भूख को नहीं रहने देते हुए अन्न उपजाएँ, तदर्थ अंजनवर्ण मेघ पानी जहाँ बरसा रहे हों—ऐसा देश है यह। ३४-३५ यह देवों का आवास है। आत्मशक्ति में बढ़े हुए महर्षि उत्साह के साथ जहाँ आ पहुंचते हैं ऐसा देश है यह। ३६-३७ यह दार्शनिक ज्ञान-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(भोले-भाले भारतवासी) तुम सब उसकी हो सन्तान।
सदा स्मरण रखना न भूलना (गौरव-मंडित बुद्धि-निधान) ॥ २५ ॥
विश्व-भाल पर (मंजु) तिलक-सा भारतवर्ष हमारा है।
तुम सब उसकी सन्तानें हो (वह प्राणों से प्यारा है) ॥ २६-२७ ॥
(उच्च) गगन-चुंबी हिमगिरि है गहन सिन्धु की धारा है।
इन दोनों के बीच सुरक्षित भारतवर्ष हमारा है ॥ २८-२९ ॥
गंगा-यमुना-सिंधु आदि नदियाँ इसमें सरसाती हैं।
उन्नत पर्वत निधि-समृद्धि औ वन श्रेणियाँ सुहाती हैं ॥ ३०-३३ ॥
उपजाते बहु अन्न खेत हैं सबकी भूख मिटाते हैं।
काले-काले मेघ सींचने को पानी बरसाते हैं ॥ ३४-३५ ॥
(तेंतिस कोटि) देवताओं का है सुन्दर आवास यहाँ।
आत्म-शक्ति-सम्पन्न मुनीश्वर करते सदा निवास यहाँ ॥ ३६-३७ ॥
तत्त्व-ज्ञानियों की फैली थी तत्त्व-ज्ञान की प्रभा यहाँ।
सब दोषों-त्रुटियों से वर्जित समृद्ध धरती और कहाँ ॥ ३८ ॥
स्वर्गलोकवासी सुरगण को भी यह भारत प्यारा है।
गौरव-गरिमा-पूर्ण देश है सब देशों से न्यारा है ॥ ३९ ॥
भारत के महिमा-वर्णन में मेरी बुद्धि समर्थ नहीं।
इसके गुण वर्णन करने को शब्द नहीं हैं अर्थ नहीं ॥ ४० ॥
(यही तुम्हारी जन्मभूमि है) तुम इसकी सन्तान सुघर।
कभी न भूलो भारत-वासी ये (उदात्त) भावना (प्रखर) ॥ ४१ ॥
क्रूर म्लेच्छ जन हैं पिशाच के तुल्य प्रकृतिवाले (निर्दय)!।
ज्ञान-मान-औदाय-हीन हैं संकटदायक हैं (निश्चय) ॥
जैसे असुरों की सेना ने देवलोक पर दुख ढाये।
उसी भाँति ये म्लेच्छ सैन्य ले भरत-भूमि पर चढ़ आये ॥ ४२-४६ ॥
देवमंदिरों को गिरवाना, वेदों की निन्दा करना।
बालक-वृद्ध और गायों की बलपूर्वक हिंसा करना।
(भोली-भाली) महिलाओं पर बलात्कार करना (भारी)।
यज्ञ आदि में विघ्न डालना करते ये (अत्याचारी) ॥ ४७-५० ॥

समृद्ध भूमि ऐसी है, जिसमें कोई कमी, त्रुटि या हीनता नही है। ३८ स्वर्गवासी देवों से भी चाहा जानेवाला गौरवपूर्ण देश है यह। ३९ इस भारत देश की महिमा कहने को मैं समर्थ हूँ क्या? ४० तुम इसकी सन्तान हो। यह भावना मत त्यागो। ४१ क्रूर म्लेच्छ लोग, पैशाचिक स्वभाव के, मान-उदारता ज्ञान से हीन, संकट देनेवाले शत्रु, सेना के साथ स्वर्गदमनकारी असुरों के समान आकर हमारी श्रीमातृभूमि पर अत्याचार कर रहे हैं। ४२-४६ देवालयों को तोड़ना, वेदों की निंदा करना, बालकों, वृद्धों तथा गायों का नाश करना, स्त्रियों से बलात्कार करना, ब्राह्मणों के यज्ञ-यागादि में विघ्न डालना —वे यह सब करते रहते हैं। ४७-५० और भी ये शास्त्रों की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शात्तिरत् तॊहुदियैत् ताळ्त्तु वैक्किन्ऱार् !
कोत्तिर मङ्गैयर् कुलङ्गॆ डुक्किन्ऱार्
अॆण्णिल तुणैवर्हाळ् अॆमक्किवर् शॆयुन्दुयर्
कण्णियम् मऱुत्ततर्, आण्मैयुङ् गडिन्दनर्
पॊरुळिनैच् चिदैत्ततर् मऱुळिनै विदैत्ततर्
तिण्मैयै यळित्तुप् पॆण्मैयिङ् गळित्ततर्
बारदप् पॆरुम्बॆयर् पळिप्पॆय राक्किनर्;
शूरर्तम् मक्कळैत् तॊळुम्बराय्प् पुरिन्दनर्
वीरियम् अळिन्दु मेन्मैयुम् ऒळिन्दुनम्
आरियर् पुलैयरुक् कडिमैह ळायिनर् 51-60
मऱ्ऱिदैप् पॊऱुत्तु वाळ्वदो वाळ्क्कै ?
वॆऱ्ऱिकॊळ् पुलैयर् ताळ् वीळ्न्दुकॊल् वाळ्वीर् ? 61-62
मॊक्कुहळ् तान् तोऱ्ऱि मुडिवदु पोल
मक्कळाय्प् पिऱन्दोर् मडिवदु तिण्णम् 63-64
तायत्तिरु नाट्टैत् तहर्त्तिडु मिलेच्चरै
मायत्तिड विरुम्बार् वाळ्वुमोर् वाळ्वु कॊल् ? 65-66
मानमॊन् ऱिलादु माऱ्ऱलर् तॊळुम् बराय्
ईनमुऱ् ऱिरुक्क ऒवन्कॊलो विरुम्बुवन् ? 67-68
तायपिऱन् कैपडच् चहिप्पवनाहि
नायॆन् वाळ्वोन् नमरिल् इङ्गुळनो ? 69-70
पिच्चै वाळ्वु हन्दु पिऱरुडै याट्चियिल्
अच्चमुऱ् ऱिरुप्पोन् आरिय नल्लन् 71-72
पुन्पुलाल् याक्कयैप् पोऱ्ऱियै तायनाट्टु
अन्बिला दिरुप्पोन् आरिय नल्लन् 73-74
माट्चि तीर् मिलेच्चर् मनप्पडि याळुम्
आट्चियि लडङ्गुवोन् आरिय नल्लन् 75-76

मर्यादा को कम कर रहे हैं। उच्च कुल की स्त्रियों को कुल-भ्रष्ट कर रहे हैं। हे असंख्यक, साथियो, सोचो, वे कितने अगणित कष्ट दे रहे हैं। वे हमारे गौरव को नहीं मानते। उन्होंने हमको नपुंसक (हतवीर्य) कर दिया, हमारे धन लूट लिये; और भ्रम फैला दिया हमारे बीच ! उससे हमारा पौरुष नष्ट हो गया। स्त्रियों को भी अपने गुण त्यागने पड़ गये। उन्होंने भारत के उत्कृष्ट नाम को निंद्य बना दिया। शूरों की संतानों को गुलाम बना दिया। हमारा वीर्य व्यर्थ हो गया और गौरव मिट्टी में मिल गया, (फलतः) हमारे आर्य लोग म्लेच्छों के दास हो गये। ५१-६० क्या इस स्थिति को सहते हुए जीना भी कोई जीवन है ? क्या तुम विजेता नीचों के पैरों में गिरकर जीवन बिताओगे ? ६१-६२ कलियाँ खिलें, फिर गिरकर मिट्टी में मिल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेदों-शास्त्रों की मर्यादा को यह क्षीण बनाते हैं।
श्रेष्ठ वंश की महिलाओं को भ्रष्ट बना (हरसाते हैं)॥
किया हमें हतवीर्य, नपुंसक औ सारा धन लूट लिया।
पौरुष नष्ट हो गया, हममें भारी भ्रम-विस्तार किया॥
हे असंख्य साथियो! विचारो, ये कितने दुख-दायक हैं।
नष्ट आर्य-गौरव करने को (बनते सेनानायक हैं)॥
कुल-गौरव को त्याग नारियाँ (हाय! गुरुत्व-विहीन बनीं)।
हुआ कलंकित भारत का यश (सभी प्रजाएँ दीन बनीं)॥
(रणधीरो!) वीरों के वंशज! हा! म्लेच्छों के दास बने।
व्यर्थ हुआ (बल-) वीर्य हमारा (सब जग के उपहास बने)॥ ५१-६०॥
नीचों के पैरों पर गिरकर (क्या उनके गुण गाओगे)।
इस अपमान भरे जीवन को कैसे हाय! बिताओगे॥ ६१-६२॥
ज्यों (प्रतिदिन) कलियाँ खिलती हैं, मुरझाती, झर जाती हैं।
उसी भाँति जातियाँ सभी पैदा होती, मर जाती हैं॥ ६३-६४॥
म्लेच्छ मिटाते मातृभूमि को अकर्मण्य हैं भारत-जन।
(अपमानों से भरा विनिन्दित) यह भी है कोई जीवन॥ ६५-६६॥
सभी मान-मर्यादा खोकर और शत्रुओं का बन दास।
दीन-हीन बन कौन बितायेगा अपना जीवन (सोल्लास)॥ ६७-६८॥
फँसी शत्रुओं के चंगुल में अपनी माता को लखकर।
कुत्ते के समान जीना चाहेगा कहो कौन (पामर)॥ ६९-७०॥
जो भयभीत भिखारी बनकर पराधीन हो जायेगा।
(कुत्तों के सम जीनेवाला) आर्य नहीं कहलायेगा॥ ७१-७२॥
हाड़-मांस के इस तन को जो पाल-पाल दुलरायेगा।
देश-प्रेम से हीन किन्तु हो, आर्य न माना जायेगा॥ ७३-७४॥
गौरव-हीन म्लेच्छ-शासन में रहना जिसे सुहायेगा।
मनमाने शासन से शासित आर्य न माना जायेगा॥ ७५-७६॥

जायें —यही नियम है! वैसे ही जो मनुष्य पैदा हुए, वे मर भी जायँगे। यह ध्रुव सत्य है। ६३-६४ पर हमारी श्रीमातृभूमि को विदीर्ण करते रहनेवाले म्लेच्छों को मटियामेट करने के अनिच्छुकों का जीवन भी कोई जीवन है? ६५-६६ सम्मान खोकर शत्रुओं का दास बनकर हीन रहना कौन चाहेगा? ६७-६८ अपनी माता को शत्रु के हाथ में पड़ते देखकर भी कुत्ते के समान जीना चाहनेवाला भी क्या हममें कोई है? ६९-७० भिखारी के जीवन को पसन्द करते हुए पर-शासन में, भयभीत रहने वाला व्यक्ति आर्य नहीं कहलायेगा। ७१-७२ क्षुद्र मांस-संघात इस शरीर की सेवा में मातृ-देश-प्रेम से हीन रहनेवाला व्यक्ति आर्य नहीं होगा। ७३-७४ गौरवहीन म्लेच्छ मनमाना शासन कर रहे हैं। उस शासन के अधीन रहनेवाला व्यक्ति आर्य नहीं माना जायगा। ७५-७६ आर्यता से रहित क्षुद्र आदमी, जो भी यहाँ हो, वह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आरियत् तन्मै अर्ऱिडुञ् शिऱियर्
यारिवण् उळरवर् याण्डेनुम् ऑळिह ! 77-78
पडैमुहत्तु इऱन्दु पदम्बॆऱ विरुम्बाक्
कडैपडु माक्कळॆन् कण्मुनिल् लादीर् ! 79-80
शोदरर् तम्मैत् तुरोहिहळ् अळिप्प
मादरार् नलत्तिन् महिळ्बवन् महिळ्ह; 81-82
नाडॆलाम् पिरर्वशम् नण्णुदल् निनैयान्
वीडुशॆन् रॊळिक्क विरुम्बुवोन् विरुम्बुह ! 83-84
तेशमे नलिवॊडु तेय्न्दिड मक्कळिन्
पाशमे पॆरिदॆनप् पार्प्पवन् शॆल्ह ! 85-86
नाट्टुळार् पशियिनाल् नलिन्दिडत् तन्वयिऱु
ऊट्टुदल् पॆरिदॆनप् पार्प्पवन् शॆल्ह 87-88
आणुरुक् कॊण्ड पॆण्गळुम् अलिहळुम्
वीणिलइङ् गिरुन्दॆनै वॆऱुत्तिडल् विरुम्बेन् 89-90
आरियर् इरुमिन् ! आण्गळ् इङ्गु इरुमिन् !
वीरियम् मिहुन्द मेन्मैयोर् इरुमिन्
मानमे पॆरिदॆन मदिप्पवर् इरुमिन् !
ईनमे पॊऱाद इयल् बिनर् इरुमिन् !
ताय्नाट् टन्बुऱु तनैयर् इङ्गु इरुमिन् !
माय्नाट् पॆरुमैयिन् माय्बवर् इरुमिन् !
पुलैयर्तम् तॊळुम्बैप् पॊऱुक्किलार् इरुमिन् !
कलैयऱु मिलेच्चरेक् कडिबवर् इरुमिन् !
ऊरवर् तुयरिल् नॆञ् जुरुहुवीर् इरुमिन् !
शोर नॆञ्जिलात् तूयवर् इरुमिन्
देविताळ् पणियुन् दीरर् इङ्गु इरुमिन्
पावियर् कुरुदियैप् परुहुवार् इरुमिन् !
उडलिनैप् पोऱ्ऱा उत्तमर् इरुमिन् ! 91-103
कडल्मडुप् पिनुम् मनम् कलङ्गलर् उदवुमिन्;
वम्मिनो तुणैवीर् ! मरुट्चिकॊळ् ळादीर् 104-105

कहीं (अन्यत्र) चला जाय। ७७-७८ सेना-आयुध सम्मुख मरकर पद (गौरव) प्राप्त करना न चाहनेवाले निकृष्ट लोग मेरी आँखों के सामने स्थित न रहें। ७९-८० भाइयों को शत्रु मारते रहते हैं। तब भी स्त्री-भोग में आनन्द करनेवाले, चाहें तो करें। ८१-८२ सारा देश पराधीन हो रहा है। इसकी ओर ध्यान दिये बिना, घर में जा छिप जाने की इच्छा करनेवाले चाहे तो वैसा करें। ८३-८४ जब देश ही क्षीण होकर मिट रहा है, तब जो सन्तान-पाश को अधिक माननेवाला हो, वह चला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

क्षुद्र-भावना-भरा हृदय हो और आर्यता से हो हीन।
(यहाँ न बसने योग्य मनुज वह) देश त्याग कर दे वह दीन ॥ ७७-७८ ॥
जो न अमरपद पाना चाहें सम्मुख सेना में मरकर।
आँखों से हों दूर हमारी जो होवें ऐसे कायर ॥ ७९-८० ॥
मार रहे जब शत्रु, भाइयों को, तब भोगें वनिता-सुख।
ऐसे (विषय-विलासी) मानव नहीं रहें मेरे सम्मुख ॥ ८१-८२ ॥
पराधीन जब देश हो रहा तब जो घर में छिप जायें।
करे नहीं साहाय्य देश का वे न मुझे मुख दिखलायें ॥ ८३-८४ ॥
देश मिट रहा हो मिट जाए, तजें न पुत्रों की ममता।
ऐसे (कच्चे मन वालों) की नहीं मुझे आवश्यकता ॥ ८५-८६ ॥
भर लें अपना पेट, देशवासी सब भूखे मर जायें।
ऐसे नर भी मेरी आँखों के सामने नहीं आयें ॥ ८७-८८ ॥
पुरुष-रूप में जो नारी हों और नपुंसक हों जो नर।
मुझसे जो हों घृणा कर रहे, वे न रहें, इस ओर इधर ॥ ८९-९० ॥
आर्यो! रहो, रहो पुरुषो! तुम वीर्यवान! गुणवान! रहो।
निरभिमान! तुम रहो पूज्य माँ के भक्तो! (मतिमान) रहो ॥
गत-गौरव-हित (प्रिय-) प्राणार्पण करनेवालो! रहो, रहो।
नीच दासता का उत्सर्जन करनेवालो! रहो, रहो ॥
कला-ज्ञान-हीनों म्लेच्छों को धुननेवालो! रहो, रहो।
देश दुःख से कातर! पर-दुख सुननेवालो! रहो, रहो ॥
निश्छल पावन मन रखने वालो! मत जाओ, यहीं रहो।
देवि-चरण-वन्दन करने वालो! मत जाओ, यहीं रहो ॥
क्रूर पापियों का लोहू पीनेवालो! तुम रहो, रहो।
तृण-सम तन को तुच्छ मान जीनेवालो! तुम रहो, रहो ॥ ९१-१०३ ॥
अगर सिन्धु भी बढ़ आये तो जो न ज़रा भी हों विचलित।
सहायता, साथियो! करो तुम आओ, भ्रान्त न हो किञ्चित् ॥ १०४-१०५ ॥

जाय। ८५-८६ जब देशवासी भूख से दीन हो रहे हैं, तब अपना पेट भरने को ही मुख्य समझनेवाला चला जाए। ८७-८८ पुरुष रूप में, जो स्त्रियाँ तथा षण्ड इधर हों, वे इधर रहें तथा मुझसे घृणा करें —यह मैं नहीं चाहूँगा। ८९-९० आर्यो! रहो; पुरुषो! रहो! वीर्यवान श्रेष्ठ लोगो! रहो! (व्यक्तिगत) मान को बड़ा न मानने वाले तुम रहो! मातृप्रेमी पुत्रो, रहो! गये दिनों के गौरव के लिए प्राण छोड़ सकनेवालो, रहो! नीचों की दासता जिन्हें असह्य हो, वे इधर रहें! कला-ज्ञान हीन म्लेच्छों को ताड़ना देनेवाले इधर रहें! देशदुखकातर लोगो, रहो! जिनके मन में चोरी (कपट) न हो, जिनका मन पवित्र हो, वे इधर रहें! देवि के चरणों की वन्दना करनेवाले लोगो, रहो! पापियों के रक्त पीनेवाले लोगो, रहो! शरीर-रक्षण को अधिके महत्त्व न देनेवालो, रहो। ९१-१०३ समुद्र भी उमड़ आवे, तो भी जिनका मन न घबड़ाये, ऐसे लोगो, आओ, सहायता करो! आओ साथियो! भ्रांत मत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नम्मिनो राऱ्ऱलै नाळिहैप् पॊळुदॆनुम्
पुल्लिय माऱ्ऱलर् पॊरुक्कवल् लार् कॊल् ? 106-107
मॆल्लिय तिरुवडि वीरुडैत् तेवियिन्
इन्नरुळ् नमक्कोर् इरुन्दुणै याहुम् 108-109
पन्नरुम् पुहळुडैप् पार्त्तनुम् कण्णनुम्
वीमनुम् तुरोणनुम् वीट्टुमन् ऱानुम्
रामनुम् वेरुळ इरुन्दिऱल् वीररुम्
नऱ्ऱुणै पुरिवर्; वान्ह नाडुरुम् ! 110-113
वॆऱ्ऱियै यन्ऱि वेरॆदुम् पॆरुहिलेम् !
पऱ्ऱु मुनिवरुम् आशिहळ् पहर्वर्
शॆऱ्ऱिनि मिलेच्चरैत् तीर्त्तिड वम्मिन् !
ईट्टियार् चिरङ्गळै वीट्टिड ऍळुमिन् ! 114-117
नीट्टिय वेल्हळै नेरिरुन्दु ऍऱिमिन् 118
वाळुडै मुन्नैयिनुम् वयन्दिहळ् शूलिनुम्
आळुडैक् काल्ह ळडियिनुन् तेर्हळिन्
उरुळैयि निडैयिनुम् माऱ्ऱलर् तलैहळ्
उरुळैयिऱ् कण्डुनॆञ् जुवप्पुऱ वम्मिन् ! 119-122
नम्मिदम् पॆरुवळम् नलिन्दिड विरुम्बुम्
वन्मियै वेरऱत् तॊलत्तपिन् नन्ऱो
आणॆनप् पॆरुवोम्; अन्ऱिनाम् इऱप्पिनुम्
वानुरु तेवर् मणियुल हडैवोम् 123-126
वाळ्वमेर् पारद वान् पुहळ्त् तेवियैत्
ताळ्विनिन् ऱुयर्त्तिय तडम्बुहळ् पॆरुवोम् ! 127-128
पोरॆनिल् इदुपोर् ! पुण्णियत् तिरुप्पोर्
पारिनिल् इदुपोऱ् पार्त्तिडऱ् कॆळिदो ? 129-130
आट्टिनैक् कॊन्ऱु वेळ्विहळ् इयऱ्ऱि
वीट्टिनैप् पॆरुवदै विरुम्बुवार् शिलरे !

होओ ! १०४-१०५ क्या वे क्षुद्र वैरी हमारी शक्ति को घड़ी भर के लिए भी सह सकेंगे ? (नहीं ।) । १०६-१०७ मृदुल-चरणा वीर-देवी की कृपा हमारी बड़ी सहायक होगी । १०८-१०९ अवर्णनीय यशस्वी पार्थ, कृष्ण, भीम, द्रोण तथा भीष्म श्रीरम और अन्य वीर (आदर्श रूप रहकर) हमारी सहायता करेंगे । देश स्वर्ग बन जायगा । ११०-११३ इससे विजय को छोड़कर हमें कुछ नहीं मिलेगा । निर्लिप्त मुनिगण हमें आशीर्वाद देंगे । आओ ! हम क्रोध के साथ म्लेच्छों को मिटा देंगे-- आओ ! साँगों से उनके सिरों को काट गिरायें ! उठो ! ११४-११७ शक्तियों का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दुर्बल वैरी पल भर को भी शक्ति नहीं सह सकते हैं।
(हो भयभीत भाग जायेंगे खड़े नहीं रह सकते हैं) ॥ १०६-१०७ ॥
वीरवरों की जो देवी है उसकी (करुणा-) दयालुता।
(संकट में तत्काल) करेगी वही हमारी सहायता ॥ १०८-१०९ ॥
राम-कृष्ण से भीम-पार्थ से, भीष्म-द्रोण से वीर-प्रवर।
सभी सहायक होंगे तब यह देश बनेगा स्वर्ग (सुघर) ॥ ११०-११३ ॥
(ऋषि-) मुनियों के शुभाशीष से विजय प्राप्त होगी, आओ।
साँगों से म्लेच्छों के सिर को काट-काटकर बिखराओ ॥ ११४-११७ ॥
(वीरो! बढ़ो, सामने आओ उग्र शक्तियों को तानो।
(अत्याचारी म्लेच्छ जनों के काट-काट सिर मुद मानो) ॥ ११८ ॥
तलवारों की नोकों पर या तीखे-तीखे शूलों पर।
पैदल सेना के पैरों पर रथ-चक्रों के आभ्यन्तर ॥
नीच शत्रुओं के, म्लेच्छों के काट-काटकर सिर (सत्वर)।
(गेंदों-से) लुढ़काओ वीरो! अपने मन में मुद भरकर ॥ ११९-१२२ ॥
आज हमारे सभी हितों की जो अरि हत्या करते हैं।
औ समृद्धियों का विनाश कर (निज मन में मुद भरते हैं) ॥
उन अरियों का उन्मूलन कर हम सब पुरुष कहायेंगे।
यदि मर जायेंगे तो भी हम स्वर्गलोक को जायेंगे ॥ १२३-१२६ ॥
यदि हम जीवित रहे जननि की यह दुर्दशा मिटायेंगे।
मातृभूमि की उन्नति करके कीर्ति अपार कमायेंगे ॥ १२७-१२८ ॥
बड़े भाग्य से मिला आज है धर्मयुद्ध इस धरती पर।
यह दुर्लभ है, पुण्ययोग है, सुलभ नहीं है जगती पर ॥ १२९-१३० ॥
बकरों की बलि देकर अपना यज्ञ पूर्ण करनेवाले।
कम ही होंगे मोक्षप्राप्त कर (भवसागर तरनेवाले) ॥

सन्धान करो तथा उन्हें सामने से फेंको। ११८ तलवारों की नोकों, तेजोमय शूलों से, पदाति वीरों के चरणों तले तथा रथों के पहियों के नीचे शत्रुओं के सिरों को लुढ़कते देखकर, हम मन आनन्द से भर लें, आओ! ११९-१२२ जो हमारे हितों को तथा हमारी समृद्धियों को नष्ट करना चाहते हैं, उन वैरियों का उन्मूलन करने के बाद ही न हम पुरुष कहलायेंगे! इसके अतिरिक्त, यदि हम मर भी जायें, तो स्वर्गवासी देवों के सुन्दर स्थान में पहुँच जायेंगे। १२३-१२६ हम जिएँगे, तो भारत की बड़ी यशस्विनी देवी को उसकी गिरी हुई स्थिति से ऊपर उठाकर विशाल कीर्ति पायेंगे। १२७-१२८ युद्ध तो यही युद्ध है। सौभाग्य से जिसका अवसर मिला है, ऐसा यह पुण्यप्रद युद्ध है। क्या संसार में ऐसा युद्ध कहीं देखना भी सुलभ है? १२९-१३० बकरों की बलि देकर यज्ञ करके मोक्ष को पाने की कामना करनेवाले लोग कम ही होंगे। पर हम हृदय के रक्त को धरती पर बहायेंगे और वंचना को मिटानेवाला यह महायज्ञ सम्पन्न करेंगे। १३१-१३४ ऐसा यज्ञ कोई दूसरा नहीं है। ऐसी तपस्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नॆञ्जहक् कुरुदियै निलत्तिडै वडित्तु
वञ्जह मळिक्कुम् मामहम् पुरिवम् याम् 131-134
वेळ्वियिल् इदुपोल वेळ्वियॊन् ऱिल्लै
तवत्तिनिल् इदुपोल् तवम्पिऱि दिल्लै 135-136
मुन्नैयोर् पार्त्तनन् मुनैत्तिशे निन्ऱु
तन्नॆदिर् निन्ऱ तळत्तिनै नोक्किड
मादुलर् शोदरर् मैत्तुनर् तादैयर्
कादलिन् नण्बर् कलतरु कुरवरॆन्ऱु
इन्नवर इरुत्तल् कण्डु इदयम् नॊन्दोनाय्त्
तन्नरुन् दॆय्विहच् चारदि मुन्नर्
ऐयने इवर्मी दम्बैयो तॊडुप्पेन् ?
वैयहत् तरशुम् वानह आट्चियुम्
पोयिनुम् इवर्तमैप् पोरिनिल् वीळ्त्तेन्
मॆय्यिनिल् नडुक्कम् मेवुहिन् ऱदुवाल्;
कैयिनिल् विल्लुम् कळ्नऱु वीळ् हिन्ऱदु
वायुलर् हिन्ऱदु; मनम् पदैक्किन्ऱदु
ओय्वुऱुम् काल्हळ् उलैन्ददु शिरमुम्
वॆऱ्ऱियै विरुम्बेन्; मेन्मैयै विरुम्बेन्; 137-150
शुऱ्ऱमिङ् गऱुत्तुच् चुहम्बॆऱल् विरुम्बेन्;
ऍनैयिवर् कॊल्लिनुम् इवरैयान् तीण्डेन्
शिनैयऱुत् तिट्ट पिन् शॆय्वदो आट्चि ? 151-153
ऍनप्पल कूऱियव् विन्दिरन् पुदल्वन्
कनप्पडै विल्लैक् कळत्तिनिल् ऍऱिन्दु
शोर्वॊडु वीळ्न्दनन्; शुरुदियिन् शुडिवाय्त् 154-156
तेर्वयिन् निन्ऱनम् दॆय्विहप् पॆरुमान्
विल्लॆऱिन् दिरुन्द वीरनै नोक्कि
पुल्लिय अऱिवॊडु पुलम्बुहिन् ऱनैयाल्
अऱत्तिनैप् पिरिन्द शुयोदना दियरैच्
चॆऱुत्तिनि मायप्पदु तीमैयॆन् गिन्ऱाय् 157-161

कोई दूसरी नहीं है। १३५-१३६ पहले पार्थ ने युद्धभूमि में खड़े होकर, सामने सेना पर दृष्टि चलायी, तो देखा कि मातुल, भ्राता, श्यालक, पिता, प्यारे मित्र, शास्त्र-शिक्षक, गुरु-- आदि लोग सामने थे। तब वह जर्जर-मन होकर अपने दिव्य सारथी (श्रीकृष्ण) से कहने लगा कि हे प्रभु ! इन पर कैसे बाण चलाऊँ ? पृथ्वी का शासन तथा स्वर्ग का आधिपत्य चला जाय, तो भी मैं इनको युद्ध में नहीं मारूँगा। मेरा शरीर काँप रहा है। मेरे हाथ से धनुष फिसलकर गिर रहा है। मेरा मुख सूख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पर हम अपने हृदय-रक्त को आज समोद बहायेंगे।
आज वंचना-नाशक रण का महायज्ञ रचवायेंगे ॥ १३१-१३४ ॥
(यही कह रहे हैं सुविज्ञजन, किन्तु जानते अज्ञ नहीं—)।
ऐसी कोई नहीं तपस्या, ऐसा कोई यज्ञ नहीं ॥ १३५-१३६ ॥
युद्धभूमि के बीच पहुँचकर जब अर्जुन ने था देखा।
मामा-भाई-श्याल-पिता-गुरु-मित्रों को सम्मुख देखा ॥
मन विह्वल हो गया, (धैर्य डिग गया, पाँव उनके डोले)।
अपने दिव्य सारथी (साथी मित्र) कृष्ण से वह बोले ॥
हे प्रभु! मैं कैसे इन सब पर अपने बाण चलाऊँगा।
(कैसे इन प्रिय, पूज्य जनों का वध करके हरसाऊँगा) ॥
क्या पृथ्वी का राज्य? स्वर्ग का राज्य भी अगर मिल जाए।
तो भी इन्हें नहीं मारूँगा (भले हिमालय हिल जाए) ॥
काँप रहा तन (थर-थर) मेरा कर से धनु है फिसल रहा।
सूख रहा मुख, मन घबराता, पैर शिथिल, सिर विचल रहा ॥
नहीं विजय-कामना मुझे है और कीर्ति-कामना नहीं।
(इन्हें मारकर राज्य प्राप्त करने की भी भावना नहीं) ॥ १३७-१५० ॥
बन्धुजनों का वध करके मैं नहीं चाहता सुख पाना।
भले मुझे मारें पर इनको मैं न छुऊँगा, (यह ठाना) ॥
बन्धुजनों का वध करके (औ रक्त-सिन्धु लहरा भीषण)।
(उनके खून-सनी धरती का) नहीं चाहता मैं शासन ॥ १५१-१५३ ॥
इन्द्र-पुत्र अर्जुन ने हरि से इस प्रकार बातें कहकर।
हो अशक्त रथ-बीच गिर पड़ा, फेंक करों से धनु (औ शर) ॥ १५४-१५६ ॥
जो रथ के सारथी बने थे दिव्य पुरुष (अवतारी) थे।
वेद-वन्द्य थे, (नीति-निपुण थे चक्र सुदर्शन-धारी थे) ॥
बोले वे (श्रीकृष्ण) पार्थ से मोटी बुद्धि तुम्हारी है।
इसीलिए तुम विकल हो रहे (मन में संशय भारी है) ॥
धर्महीन दुर्योधनादि का हनन अधर्म जानते हो।
करते हो विलाप मूर्खों-सा निज को विज्ञ मानते हो ॥ १५७-१६१ ॥

रहा है। मन घबड़ा रहा है। पैर शिथिल होते जा रहे हैं। सिर भी अस्थिर है। मैं विजय नहीं चाहता। मैं कीर्ति नहीं चाहता। १३७-१५० बन्धुओं का हनन करके, मैं सुख नहीं चाहूँगा। मुझे चाहे वे मार दें, तो भी मैं इन पर शस्त्र नहीं चलाऊँगा। (बन्धुओं को) कुल के अंगों को काट देने के बाद जो किया जायगा, वह कैसा शासन होगा? १५१-१५३ ऐसी विविध बातें कहकर उस इन्द्रपुत्र अर्जुन ने अपने भारी धनु को युद्ध के मैदान में फेंक दिया और वह शक्तिहीन होकर गिर गया। १५४-१५६ वेद-वंद्य दिव्य पुरुष, रथ पर (सारथी के रूप में) खड़े थे। उन्होंने धनु को दूर फेंककर खड़े रहे वीर अर्जुन से यों कहा— तुम खोटी बुद्धि के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उण्मैयै अऱियाय् उऱवैये करुदिप्
पॅण्मै कॊण् डेदो पिदऱ्ऱिनिऱ् किऩ्ऱाय् 162-163
वञ्जहर् तीयर् मऩ्ऩिदरै वरुत्तुवोर्
नॅञ्जहत् तरुक्कुडै नीशर्हळ्; इऩ्ऩोर्
तम्मॊडु पिऱन्द सहोदर रायिऩुम्
वॅम्मैयो डॊरुत्तल् वीरर्तञ् जॅयलाम्
आरिय नीदिनो अऱिहिलै पोलुम् !
पूरियर् पोल्मऩम् पुळुङ्गुऱ लायिनै 164-169
अरुम् बुहळ् तेय्प्पदुम् अऩारियत् तहैत्तुम्
पॅरुम्बदत् तडैयुमाम् पॅण्मैयॅङ् गॅयदिनै ? 170-171
पेडिमै यहऱ्ऱ ! निऩ् पॅरुमैयै मऱन्दिडेल् !
ईडिलाप् पुहळ्ळिऩाय् ! अॅळुहवो ! अॅळुह ! 172-173
अॅऩ्ऱु मॅय्ञ्ञाऩम् नम् इऱैयवर् कूऱक्
कुऩ्ऱॅऩुम् वयिरक् कॊऱ्ऱवाऩ् पुयत्तोऩ्
अऱमे पॅरिदॅऩ अऱिन्दिडु मऩत्तऩाय्
मऱमे उरुबुडै माऱ्ऱलर् तम्मैच्
चुऱ्ऱमुम् नोक्काऩ् तोळमै मदियाऩ्
पऱ्ऱलर् तमैयॅलाम् पार्क्किरै याक्किऩऩ् 174-179
विशयऩऩ् ऱिरुन्द बियऩ्पुहळ् नाट्टिल्
इशैयुनऱ् ऱवत्ताल् इऩ्ऱुवाळ्ऩ् दिरुक्कुम्
आरिय वीरर्हाळ अवरुडै याऱ्ऱलर्
तेरिल् इऩ् नाट्टिऩर् शॅऱिबुडै उऱविऩर् 180-183
नम्मैयिऩ् ऱॅदिर्क्कुम् नयऩिलाप् पुल्लोर्
शॅम्मैतीर् मिलेच्चर् देशमुम् पिऱिदाम्

कारण विलाप कर रहे हो। धर्मच्युत दुर्योधन आदि को युद्ध में मारने को तुम बुरा कह रहे हो। १५७-१६१ तुम सत्यतत्त्व नहीं जानते, पर नाते-रिस्ते को महत्त्व देकर स्त्रैण हो गये हो तथा अंड-संड बक रहे हो। १६२-१६३ वंचक लोग, बुरे मनुष्य, आततायी, अहंकारी, नीच —ऐसे लोग भ्राता भी क्यों न हों, उनको क्रोध के साथ दबा देना वीरों का कर्तव्य है। हे वीरश्रेष्ठ ! तुम शायद इस आर्य-नीति को नहीं जानते। तभी तो शक्तिहीनों की तरह क्षुब्ध-मन हो गये हो। १६४-१६९ श्रेष्ठ कीर्ति का नाशक, अनार्योचित, उत्तम पद का अवरोधक यह 'क्लैव्य' तुमने कहाँ से पाया है ? १७०-१७१ इस नपुंसकता को त्यागो, हे अर्जुन ! अपनी महानता मत भूलो। १७२-१७३ हमारे ईश्वर ने ऐसा सत्य-ज्ञान कहा। तब अर्जुन के मन में यह धारणा हो गयी कि धर्म ही बड़ा है। तब उसने पापी शत्रुओं का न बन्धुत्व माना, न उनकी मित्रता मानी। उसने सभी शत्रुओं को धरती का भोग बना डाला। १७४-१७९ जिस देश में तब विजय (अर्जुन) रहता था, उस विपुल यश-मंडित देश में, अपनी श्रेष्ठ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बन्धुजनों के मोह-ग्रस्त हो, बकते हो तुम मनमाना।
आज नपुंसक बने हुए हो, सत्य तत्त्व है अनजाना ॥ १६२-१६३ ॥
जो वंचक हों, जो दुर्जन हों, नीच और अभिमानी हों।
(अन्यायी) अत्याचारी हों (पापी बड़े गुमानी हों) ॥
ऐसे जन यदि सगे बन्धु हों तो भी (बन्धु-प्रेम तजकर)।
वीरों का कर्तव्य, कुचल दें, करें विनष्ट कुपित होकर ॥
वीर-श्रेष्ठ ! इस धर्म तत्त्व से अब तक (अज्ञ) अपरिचित हो।
इसी लिए कायरों-सदृश तुम (पार्थ !) हो रहे विचलित हो ॥ १६४-१६९ ॥
क्लैव्य-भाव यह (पार्थ) तुम्हारा श्रेष्ठ कीर्ति का नाशक है।
है अनार्य लोगों से सेवित उत्तम-पद-अवरोधक है ॥
क्लैव्य-भाव यह कैसे पाया अर्जुन मुझको बतलाओ।
(तुम्हें पार्थ यह नहीं सुहाता, समझो और सँभल जाओ) ॥ १७०-१७१ ॥
त्याग नपुंसकता यह अर्जुन (त्याग हृदय की दुर्बलता)।
उठो वीर अर्जुन (तुम चेतो) भूलो मत निज महानता ॥ १७२-१७३ ॥
इस प्रकार जब सत्य-ज्ञान का केशव ने उपदेश दिया।
(समुचित धर्मयुद्ध करने का जब अविचल आदेश दिया) ॥
तब अर्जुन के मन के भीतर यही धारणा पुष्ट हुई।
धर्मतत्त्व को हृदयंगम कर (उनकी मति संतुष्ट हुई) ॥
(हटा मोह का परदा तत्क्षण सुन केशव के दिव्य वचन)।
समझ (अधर्मी, अत्याचारी, दुर्जन-) पापी सभी स्वजन ॥
भुला दिया बन्धुत्व और मित्रता भुला (क्रोधित होकर)।
(किया समर अर्जुन ने भीषण) किया नष्ट उनको (सत्वर) ॥ १७४-१७९ ॥
जिसमें अर्जन का निवास था, वही यशस्वी देश यही।
(जिसमें केशव का निवास था, वही मनस्वी देश यही) ॥
पूवजन्म में विपुल तपस्या तुमने की होगी (वीरो !)।
इसीलिए इस पुण्यभूमि में जन्म लिया है (रणधीरो !) ॥
सोचो सुभग आर्यवीरो ! तुम जो अर्जुन के अरिजन थे।
वे सब इसी देश के जन थे उसके सगे बन्धुगण थे ॥ १८०-१८३ ॥
किन्तु आज जो अत्याचारी हमसे लड़ने आये हैं।
(वे न यहाँ के वासी जन हैं उनके देश पराये हैं) ॥
देश भिन्न है, जन्म भिन्न है और भिन्न ही भाषा है।
(उनके मन में देश लूटने की केवल अभिलाषा है) ॥

तपस्या के फलस्वरूप सौभाग्य से रहनेवाले हे आर्य वीरो ! सोचो तो, उसके शत्रु, इसी देश के थे; आपस में निकट के नातेदार थे। १८०-१८३ पर आज जो हमारा सामना कर रहे हैं, वे गुणहीन क्षुद्र लोग हैं। अनार्य म्लेच्छ हैं। उनका देश भी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पिऱप्पिनिल् अन्नियर्, पेच्चिनिल् अन्नियर्
शिऱप्पुडै यारियच् चोर्नैयै यऱियार् 184-187

कोक्कले सामियार् पाडल्—33

टीका— इरामलिङ्ग शुवामिहळ् कळक्कमर्प् पॊदुनडम् नान् कण्डु कॊण्ड तरुणम् ऎन्ऱु पाडिय पाट्टैत् तिरित्तुप् पाडियदु।

कळक्कमुऱम् मार्लिनडम् कण्डु कॊण्ड तरुणम्
कडैच्चिऱियेन् उळम्पूत्तुक् काय्त्त दॊरु काय्दान्
विळक्कमुऱप् पऴत्तिडुमो ? वॆम्बि विऴुन्दिडुमो ?
वॆम्बादु विऴिनुमॆन्ऱन् करत्तिलहप् पडुमो ?
वळर्त्त पऴम् कर्सानॆन्ऱ कुरङ्गु कवर्न्दिडुमो ?
मऱिङ्ङन् आट्चि शॆय्युम् अणिल् कडित्तु विडुमो ?
तुळक्कमऱ यान्पॆऱिङ् गुण्णुवनो अल्लाल्
तॊण्डै विक्कुमो एदुम् शॊल्लरिय दामो ?

तॊण्डु शॆय्युम् अडिमै—34

टीका— सुयराज्यम् वेण्डुमॆन्ऱ बारद वासिक्कु आङ्गिलेय उत्तियोहस्तन् कूऱवदु।

तर्जः— ननदन्तार् शरित्ति रत्तिलुळ्ळ "माडु तिन्नुम् पुळैया उन्नक्कु मार्हऴित तिरुनाळा ?" ऎन्ऱ पाट्टिन् वर्ण मॆट्टु।

तॊण्डु शॆय्युम् अडिमै !— उन्नक्कुच्, चुदन्दिर निन्नॆवोडा ?
पण्डु कण्डबुण्डो ?— अदर्कुप्, पात्तिर मावायो ? (तॊण्डु) 1

पराया है। वे भिन्न कुल तथा भिन्न वाणी के हैं। वे महत्ता से युक्त आर्यों की श्रेष्ठता को न पहचान सकनेवाले हैं। १८४-१८७

साधु गोखले—३३

[भारती गर्म या उग्रदल के पक्षपाती थे, अतः उनकी गोखले के प्रति उतनी आस्था नहीं थी। इसलिए सामियार 'साधु' कहकर, व्यग्य कसते हुए वे अपना मनोभाव शीर्षक में ही जता देते हैं।

तमिऴनाडु तथा भाषा के प्रसिद्ध संत कवि रामलिंग वळ्ळलार ने भक्ति का एक गीत गाया है, जिसके शब्दों में इधर-उधर हेर-फेर करके यह हास्य-कविता रची गयी है।]

प्रमादपूर्ण मार्ली (भारतीय इतिहास में मिंटो-मार्ली— एक सुधारक का नाम) के नाच को मैंने जिस क्षण देखा, उस क्षण अकिंचन मेरे मन में (संतोष का) फूल खिल उठा। उस (फूल) से जो फल निकला, वह क्या ठीक तरह पकेगा या काल के पहले पककर व्यर्थ ही झर जायगा ? अगर अकाल में न पककर अच्छा फल बनकर गिरे, तो भी क्या वह मेरे हाथ लगेगा ? पके फल को क्या 'कर्जान' नाम का बन्दर छीन लेगा ? क्या यहाँ शासन करनेवाली गिलहरियाँ उसे कुतर देंगी। क्या बिना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(वे गुणहीन क्षुद्र मनवाले हैं, उनमें सद्-ज्ञान नहीं)।
आर्यों की श्रेष्ठता-महत्ता की उनको पहचान नहीं ॥
(इसीलिए तुम भारत-वीरो! उन अरियों का करके क्षय।
धर्मयुद्ध में वीर पार्थ-सम प्राप्त करो तुम अमर-विजय) ॥ १८४-१८७ ॥

साधु गोखले—३३

'मार्ली-मिण्टो का रिफ़ार्म' का नाटक देख प्रमाद भरा।
मन खिल उठा अकिञ्चन का, यह कैसा स्वाँग विनोद भरा? ॥
कहो कभी वह फूल फलेगा क्या फल पका दिखायेगा।
या अकाल में ही मुरझाकर वह भू पर गिर जायेगा ॥
यदि अकाल से बचकर वह फल भलीभाँति पक जायेगा।
तो भी क्या वह (सुफल) हमारे हाथ कभी लग पायेगा ॥
पके हुए उस सुंदर फल को छीनेगा कर्जन—बन्दर।
या शासक-स्वरूप गिलहरियाँ उसको कुतरेंगी (जी भर) ॥
इन बाधाओं से बचने पर क्या मैं वह फल पाऊँगा।
और उसे पाकर के भी क्या मैं उसको खा पाऊँगा ॥
खाते समय गले में मेरे क्या न अटक वह जायेगा।
होगा क्या परिणाम? कौन है जो मुझको समझायेगा ॥

सेवक दास—३४

(स्वराज्य की माँग पर आफ़िसर का व्यंग्य-कथन)

रे सेवक! रे दास! तुझे भी क्या स्वतंत्रता प्यारी है।
क्या तू उसके योग्य पात्र है, बात अनोखी न्यारी है ॥ १ ॥

किसी बाधा के मुझे वह प्राप्त होगा और क्या मैं उसे भुगत सकूँगा? या खाते समय वह मेरे गले में अटक जायगा? इसके विषय में कुछ कहना कठिन है। (भाव में भी नर्म के प्रति उग्र दल का व्यंग्य-भाव साफ़ परिलक्षित होता है।)

सेवक दास—३४

[स्वराज्य की माँग करनेवाले भारतीय लोगों से अंग्रेज अफ़सर का यह कथन है। 'नन्दनार चरित्र' एक प्रसिद्ध नाटक है, जिसमें भक्त अछूत नन्दनार का चरित्र वर्णित है। उसमें नन्दनार चिदंबरम् जाकर ईश्वर के दर्शन करने की अपनी उत्कट इच्छा प्रकट करता है और अपने स्वामी ब्राह्मण से अनुमति माँगता है। वह ब्राह्मण तब एक गीत गाता है, जिसमें वह पूछता है कि हे मृत बैल को खानेवाले अछूत! तुम्हें भी मार्गशीर्ष मास में मनाये जानेवाले उत्सव में जाना है क्या? उसी गाने के स्वर में यह गाना रचित है।]

रे सेवा करनेवाले दास! क्या तुम्हें भी स्वतन्त्रता का विचार (सोहता) है? पहले कहीं देखा गया है ऐसा? क्या तुम उसके योग्य हो? (सेवा०) १ क्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जातिच् चण्डै पोच्चो ?— उङ्गळ्, शमयच् चण्डै पोच्चो ?
नीदि शॊल्ल वन्दाय् !— कण्मुन्, निर्कॊणादु पोडा ! (तॊण्डु) 2
अच्चम् नीङ्गि ताय़ो ?— अडिमै !, आण्मै ताङ्गिताय़ो ?
पिच्चै वाङ्गिप् पिळैक्कुम्— आशै, पेणुदल् ऒळित्ताय़ो ? (तॊण्डु) 3
कप्प लेरु वाय़ो ?— अडिमै ! कडलैत् ताण्डुवाय़ो ?
कुप्पै विरुम्बुम् नाय्क्के— अडिमै, कॊर्र्रत् तविशु मुण्डो ? (तॊण्डु) 4
ऒर्रुमै पयिन् ऱाय़ो ?— अडिमै, उडम्बिल् वलिमै युण्डो ?
वॆर्रुरैपे शादे !— अडिमै, वीरियम् अऱि वाय़ो ? (तॊण्डु) 5
शेर्न्दु वाळु वीरो ?— उङ्गळ्, शिरुमैक् कुणङ्गळ् पोच्चो ?
शोर्न्दु वोळ्दल् पोच्चो— उङ्गळ्, शोम्बरैत् तुडैत् तीरो ? (तॊण्डु) 6
वॆळ्ळै निऱत्तैक् कण्डाल्— पदऱि, वॆरुवलै ऒळित् ताय़ो ?
उळ्ळदु शॊल्वेन्केळ्— मुदन्दिरम्, उन्क्किल्लै मऱन्दिडडा ! (तॊण्डु) 7
नाडु काप्प दर्के—उन्क्कु, ञानम् शिऱिदु मुण्डो ?
वीडु काक्कप् पोडा !— अडिमै, वेलै शॆय्यप् पोडा ! (तॊण्डु) 8
शेन्नै नडत्तु वाय़ो !— तॊळुम्बुहळ्, शॆय्दिड विरुम्बाय़ो ?
ईन्न मान्न तॊळिले— उङ्गळुक्कु, इशैवदाहुम् पोडा ! (तॊण्डु) 9

तुम्हारा आपस का जाति-संघर्ष दूर हुआ ? क्या धर्म-कलह दूर गया ? तुम नीति बघारने आये। चलो, तुम हमारी आँखों के सामने आने योग्य नहीं हो। (सेवा०) २ क्या तुम भयमुक्त भी हुए हो ? रे दास, पौरुष भी है तुममें ? भिक्षा माँगकर खाने की लालसा का भी तुमने त्याग किया ? (सेवा०) ३ तुम जहाज़ पर चढ़ोगे ? रे दास ! समुद्र पार करोगे ? कूड़ों के ढेर के प्रेमी दास, कुत्ते के हक़ में क्या विजयी आसन भी होता है ? (सेवा०) ४ क्या तुमने आपस में मेल सीखा है ? रे दास ! क्या तुम्हारी देह में शक्ति है ? कोरे शब्दों का उच्चारण मत करो। रे दास ! जानते हो वीर्य क्या चीज़ है ? (सेवा०) ५ क्या तुम मिल-जुलकर रहते हो ? क्या तुम्हारे ओछे गुण गये ? शिथिल पड़कर पतित होने का स्वभाव छूटा ? क्या अपने आलस्य को पोंछ सके ? (सेवा०) ६ क्या श्वेत रंग को देखते ही घबड़ाकर तुम्हारा भयभीत हो जाना दूर हो सका ? मैं सच बताता हूँ— स्वतंत्रता तुम्हारे लिए नहीं है। अरे, उसे भूल जाओ। (सेवा०) ७ क्या देश-रक्षण-ज्ञान का तुममें लवलेश भी है ? घर की रक्षा करने जाओ, रे दास, काम करो, जाओ। (सेवा०) ८ क्या तुम सेना-संचालन करोगे ? दासता के छोटे-मोटे काम करना नहीं चाहोगे ? अरे ! निकृष्ट काम ही तुम्हारे योग्य है। जाओ-जाओ। (सेवा०) ९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दूर हुए जातीय कलह सब, धर्म कलह क्या निपटाया ?।
जो इस भाँति हमारे सम्मुख शेखी बघारने आया ॥
ओझल हो ! तुझ-सा न सामने आने का अधिकारी है।
रे सेवक ! रे दास ! तुझे भी क्या स्वतंत्रता प्यारी है ? ॥ २ ॥

क्या भय से तू मुक्त हो गया ? पौरुष ज्वाला जागी है।
भीख माँगकर खाने की क्या (ललित-) लालसा त्यागी है ॥
(क्या कर सकता है वह जग में जो जन दीन भिखारी है)।
रे सेवक ! रे दास ! तुझे भी क्या स्वतंत्रता प्यारी है ॥ ३ ॥

कूड़े-करकट के दुर्गन्धित घूरे पर जिसका आसन।
उस गुलाम कुत्ते को सोहेगा क्या विजयी सिंहासन ॥
चढ़ जहाज पर सिंधु-पार करना बेधर्मी भारी है।
रे सेवक ! रे दास ! तुझे भी क्या स्वतंत्रता प्यारी है ॥ ४ ॥

क्या आपस में मेल-जोल है ? क्या तन में आया बल है।
क्या (बल-) वीर्य-(पराक्रम) इनसे परिचित तव अन्तस्तल है ॥
(रे गुलाम ! मत बोल, मौन हो, यह बकवाद तुम्हारी है)।
रे सेवक ! रे दास ! तुझे भी क्या स्वतंत्रता प्यारी है ॥ ५ ॥

मेल-जोल से रहते हो क्या ? छोड़ दिये ओछे अवगुण ?।
तुझको पतित बनानेवाले, तजे शिथिलता के दुर्गुण ॥
क्या आलस्य तज दिया तुझने, (कैसे तू अधिकारी है ?)।
रे सेवक ! रे दास ! तुझे भी क्या स्वतंत्रता प्यारी है ॥ ६ ॥

श्वेत रंग को देख-देख क्या अब न कभी घबराता है ?।
स्वतंत्रता के योग्य नहीं तू (व्यर्थ अरे ललचाता है) ॥
अरे भुला दे इन बातों को (क्या तेरी मति मारी है)।
रे सेवक ! रे दास ! तुझे भी क्या स्वतंत्रता प्यारी है ॥ ७ ॥

ज्ञान देश-पालन का तुझको (इसमें पग-पग पर भय है)।
अपने घर की रक्षा कर ले (यही तुझे मंगलमय है) ॥
अरे काम अपना गुलाम ! कर, (अन्य काम भयकारी है)।
रे सेवक ! रे दास ! तुझे भी क्या स्वतंत्रता प्यारी है ॥ ८ ॥

(सेनापति बन) किया चाहता तू सेना का संचालन ॥
अरे ! दासता के कामों से ऊब गया क्या तेरा मन ॥
हीन कार्य तू कर (ये तेरी उन्नति की फुलवारी है)।
रे सेवक ! रे दास ! तुझे भी क्या स्वतंत्रता प्यारी है ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नम्म जादिक्कु अडुक्कुमो—35

टीका— पुदिय कट्चित् तलैवरै नोक्कि निदानक् कट्चियार् शॊल्लुदल् ।

तर्ज— ओय् नन्दतारे ! नम्म जादिक् कडुक्कुमो ? निदायन्दातो नीर् शॊल्लुम् ! ऍन्ऱ वर्ण मॆट्टु ।

पल्लवि (टेक)

ओय् तिलकरे ! नम्म जातिक् कडुक्कुमो ?
शॆय्वदु शरियो ? शॊल्लुम्

कण्णिहळ् (अर्द्धवृत्त)

मुन्तरियाप् पुदु वऴक्कम्— नीर्
मूट्टि विट्ट दिन्दप् पऴक्कम्— इप्पोदु
ऍन्नहरिलु मिदु मुऴक्कम्— मिह
इडुम्बै शॆय्युम् इन्द ऑऴुक्कम् (ओय् तिलकरे) 1
सुदन्दिरम् ऍन्गिऱ पेच्चु— ऍङ्गळ्
तॊऴुम्बुह ळॆल्लाम् वीणाय्प् पोच्चु— इदु
मदम्पिडित् तदुपोलाच्चु— ऍङ्गळ्
मनिदर्क् कॆल्लाम् वन्द देच्चु (ओय् तिलकरे) 2
वॆळ्ळै निऱत्तवर्क्के राज्यम्— अन्ऱि
वेऱ् वर्क्कुमदु तियाज्यम्— शिऱु
पिळ्ळैहळुक्के उपदेशम्— नीर्
पेशिवैत्त दल्लाम् मोशम्— (ओय् तिलकरे) 3

नाम् ऍन्न शॆय्वोम्—36

तर्ज— नाम् ऍन्न शॆय्वोम् पुलैयरे ! —ईन्दप् पूमियि लिल्लाद पुदुमैयैक् कण्डोम् ऍन्ऱ वर्ण मॆट्टु ।

राग— पुन्नाग वराळि; ताळ— रुपकम्

पल्लवि (टेक)

नाम् ऍन्न शॆय्वोम् ! तुणैवरे— इन्दप्
पूमियि लिल्लाद पुदुमैयैक् कण्डोम् (नाम्)

हमारी जाति के लिए क्या यह उचित है—३५

[गर्म दल के लोगों से नर्म दल वालों का कथन]

[उसी नन्दनार-चरित्र में झुग्गी के अछूत लोग नन्दनार को सलाह देते हैं कि यह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हमारी जाति के लिए उचित है क्या ?—३५

मान्य ! तिलक जी ! (पूछ रहे हम, हमें आप यह बतलायें)।
न्यायोचित कर्तव्य हमारी दलित जाति को जतलायें ॥

यह स्वभाव जो तजा आपने बड़ी अनोखी है यह बात।
यह गति अति संकट देगी यह बात सभी नगरों में ख्यात ॥
मान्य तिलक जी (पूछ रहे हम हमें आप यह बतलायें)।
न्यायोचित कर्तव्य हमारी दलित जाति को जतलायें ॥ १ ॥

सभी दासता की सेवाएँ व्यर्थ हुईं सहते अपमान।
स्वतंत्रता का नाम-ध्यान भी पागलपन के हुआ समान ॥
मान्य तिलक जी ! (पूछ रहे हम हमें आप यह बतलायें)।
न्यायोचित कर्तव्य हमारी दलित जाति को जतलायें ॥ २ ॥

जो कुछ समझा सब धोखा है बच्चों को बहलाना है।
गोरों ही को राज्य उचित, अन्यों को राज्य न पाना है ॥
मान्य तिलक जी (पूछ रहे हम हमें आप यह बतलायें)।
न्यायोचित कर्तव्य हमारी दलित जाति को जतलायें ॥ ३ ॥

हम क्या करें—३६

हम क्या करें साथियो ! देखी हमने यहाँ अनोखी बात ॥ टेक ॥

हमारी जाति के लिए उचित काम नहीं है। वह गीत यों है— हे नन्दनार, क्या हमारी जाति के लिए यह उचित है ? यह न्याय है ? तुम ही कहो। इस गीत के तर्ज में यह गाना रचित है।]

हे तिलक जी ! हमारी जाति के लिए क्या यह उचित है ? क्या यह करनी नेक है ? आप ही कहें। (टेक) यह अभूतपूर्व नयी बात है ! आपने यह टेव लगा दी है ! अब सभी नगरों में यही धूम है। यह चाल बड़ा ही संकट उत्पन्न कर देगी। (हे तिलक०)। १ स्वतन्त्रता का नाम लेना ? हमारी दासता की सभी सेवाएँ व्यर्थ हो गयी हैं। यह कहना उन्मत्त का-सा हो गया है। और हम लोगों का अपमान होने लगा है। (हे तिलक०) २ (यहाँ) गोरों का ही राज्य होगा। अन्य किसी के लिए भी वह (राज्याधिकार) त्याज्य है। छोटे लड़कों के लिए यह उपदेश है। आपने जो भी समझा दिया है, वह सब धोखा है। (हे तिलक०) ३

हम क्या करें ?— ३६

[उसी चरित्र में यह गीत है हम क्या करें ? अछूत लोगो ! इस भूमि पर असम्भव विचित्रता हमने देखी। उस गीत के तर्ज में यह लिखा गया है।]

हम क्या करें, साथियो ! हमने इस भूमि में असम्भव अनोखी बात देखी। (हम०) (टेक) एक तिलक से ऐसा हो गया है ! भला-बुरा कुछ नहीं रहा !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिलहन् ऑरुवनाले इप्पडि याच्चु
शॅम्मैयुम् तीमैयुम् इल्लामले पोच्चु;
पलतिशयुम् दुष्टर् कूट्टङ्ग ळाच्चु
पॅयल्हळ् नॅञ्जिल् पयमॅन्बदे पोच्चु (नाम्) 1
तेशत्तिल् ऍण्णऱ्ऱ पेर्हळुङ् गॅट्टार्
शॅय्युन् दॊऴिल् मुऱै यावॅयुम् विट्टार्
पेशुवोर् वार्त्तै दादा शॊल्लि विट्टार्
पिन्वर वऱियामल् सुदन्दिरम् तॊट्टार् (नाम्) 2
पट्टम् बॅऱ्ऱोर्क्कुमदिप् पॅन्बदु मिल्लै
परदेशप् पेच्चिल् मयङ्गुबव रिल्लै
शट्टम् मऱन्दोर्क्कुप् पूजै कुऱैविल्लै
सर्क्का रिडम् शॊल्लिप् पार्त्तुम् पयनिल्लै (नाम्) 3
शीमैत्तुणि यॅन्ऱाल् उळ्ळम् कॊदिक्किऱार्
शीरिल्लै ऍन्ऱालो ऍट्टि मिदिक्किऱार्
तामॅत्तैयो वन्दे यॅन्ऱु तुदिक्किऱार्
तरमऱ्ऱ वार्त्तैहळ् पेशिक् कुदिक्किऱार् (नाम्) 4

बारद देवियिन् अडिमै—37

टीका— नन्दन् मरित्तिरत्तिलुळ्ळ 'आण्डैक् कडिमैक् कारनल्लवे ऍन्ऱु पाट्टिन् वर्ण मॅट्टैयुम् करुत्तैयुम् पिन् पऱ्ऱि ऍऴुदप् पट्टदु।

पल्लवि (टेक)

अन्नियर् तमक्कडिमै यल्लवे— नान्
अन्नियर् तमक् कडिमै यल्लवे

चरणङ्गळ् (चरण)

मन्निय पुहळ् बारद देवि
तन्निरु ताळिणैक् कडिमैक् कारन् (अन्) 1

अनेक दिशाओं में दुष्टों के जमघट पैदा हो गये। छोकरों के मन में अब डर नहीं रहा। (हम०) १ देश में असंख्य लोग बिगड़ गये हैं। उन्होंने अपना कर्म-क्रम भी त्याग दिया। बोलनेवाले कहते हैं कि 'दादा' ने कह दिया है। परिणाम पीछे क्या होगा —इसकी चिन्ता किये बिना ही उन्होंने स्वतन्त्रता की माँग करना आरम्भ किया। (हम०) २ (उपाधिधारियों या) पदाधिकारियों का सम्मान नहीं रहा। वे परदेसियों की बातों के प्रति मोहित नहीं हो जाते। जो क़ानून भूल गये, उनकी पूजा में कमी नहीं है। सरकार से अर्ज़ करने में भी कोई फ़ायदा नहीं होता। २ (हम०) ३ लोग विदेशी कपड़े के नाम से भड़क उठते हैं। उनका मन जल उठता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एक तिलक की यह करनी है, आज यही जा रहा कहा।
(कैसी है यह बात अनोखी) भला-बुरा कुछ नहीं रहा॥
सभी दिशाओं में दुष्टों का जमघट लगा दिखाता है।
और बालकों के भी मन में भय न (ज़रा) दिखलाता है॥ १ ॥
हम क्या करें साथियो! देखी हमने आज अनोखी बात॥ टेक॥
कर्म त्याग निज आज देश के बिगड़ गये हैं अगणित जन।
दादा ने मंत्र दिया हमको कहते हैं सब यही (वचन)?॥
(आज सभी भारत के वासी) स्वतंत्रता की माँग करें।
भला-बुरा जो कुछ भी होवे परिणामों से नहीं डरें॥ २ ॥
हम क्या करें साथियो! देखी हमने आज अनोखी बात॥ टेक॥
उच्च-पदाधिकारियों का अब है कुछ भी सम्मान नहीं।
इन विदेशियों की बातों पर मोह नहीं है, मान नहीं॥
करने पर कानून भंग भी, पूजा में न्यूनता नहीं।
शासन से फ़र्याद करें तो क्या होगा यह पता नहीं॥ ३ ॥
हम क्या करें साथियो! देखी हमने आज अनोखी बात॥ टेक॥
नाम विदेशी वस्त्रों का सुन भड़क उठें जल जाते हैं।
अगर कहें यह ठीक नहीं है तो वह लात जमाते हैं॥
'वन्दे' कहकर करें वन्दना, (राष्ट्रगान कुछ गाते हैं)।
भाँति-भाँति के शब्द अनर्गल कह, हड़कंप मचाते हैं॥ ४ ॥
हम क्या करें साथियो! देखी हमने आज अनोखी बात॥ टेक॥

भारत-देवी का ग़ुलाम—३७

और किसी का दास नहीं, मैं और किसी का दास नहीं॥ टेक॥
जो यशस्विनी भारत-देवी (मेरी पावन माता है)।
दास उसी के चरणों का हूँ और किसी का दास नहीं॥ १ ॥
और किसी का दास नहीं मैं और किसी का दास नहीं॥ टेक॥

'यह ठीक नहीं है' कहो तो वे लात मारते हैं। आप किसी अज्ञात चीज़ की 'वन्दे' कहकर वन्दना करते हैं। तब निम्न स्तर के वचन कहकर वे उछल-कूद मचाते हैं। (हम०) ४ (यह नर्म दल वालों की ओर से शिकायत के रूप में कहा गया है। भारती तिलक जी के विचारों के पक्षपाती थे। व्यंग्य स्पष्ट है।)

भारत-देवी का दास—३७

[नन्दचरित्र में एक गाना है— स्वामी का दास नहीं हूँ! उसी स्वर तथा विचारों का इसमें अनुसरण हुआ है।]

अन्यों का ग़ुलाम नहीं हूँ— मैं अन्यों का ग़ुलाम नहीं हूँ। (टेक) मैं यशस्विनी भारत-देवी के युग्म चरणों का दास हूँ। (अन्यों का०) १ सभी श्रेष्ठ गुणों का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इलहु पॆरुङ्गुणम् यावैक्कुम् अॆल्लैयाम्
तिलह मुनिक् कॊत्त अडिमैक्कारन् (अन्) 2
वॆय्य शिऱैक्कुळ्ळे पुन्नहै योडु पोम्
ऐयन् बूपेन्दिरनुक् कडिमैक्कारन् (अन्) 3
कावलर् मुन्निऱ्पिनुम् मॆय् तवऱा अङ्गळ्
बालर् तमक् कॊत्त अडिमैक्कारन् (अन्) 4
कान्दन लिट्टालुम् तर्मम् विडाप्रम्म
पान्तवन् दाळिणैक् कडिमैक् कारन् (अन्) 5

वॆळ्ळैक्कार विञ्च् दुरै कूऱ्ऱु—38

राग— ताण्डकम्; ताळ— आदि

नाट्टिलॆङ्गुम् सुदन्दिर वाञ्जैयॆ, नाट्टिनाय् कनल् मूट्टिनाय्
वाट्टि युन्नॆ मडक्किच् चिऱैक्कुळ्ळे, माट्टुवेन्, वलि काट्टुवेन् (नाट्टि) 1
कूट्टम् कूडि वन्दे मादर मॆन्ऱु, कोषित् ताय्; अॆमैत् तूषित्ताय्
ओट्टम् नाङ्ग ळॆडुक्क वॆन्ऱे कप्पल्, ओट्टिनाय् पॊरुळ् ईट्टिनाय् (नाट्टि) 2
कोळ्प् पट्ट जनङ्गळुक् कुण्मैहळ्, कूऱिनाय् शट्टम्— मीऱिनाय्
एळ्ळैप् पट्टिङ्गु इऱ्त्तल् इळि वॆन्ऱे, एशिनाय् वीरम् पेशिनाय् (नाट्टि) 3
अडिमैप् पेडिहळ् तम्मै मनिदर्हळ्, आक्किनाय्– पुन्मै– पोक्किनाय्
मिडिमै पोदुम् नमक्कॆत् ऱिरुन्दोरे, मीट्टिनाय्– आशै– ऊट्टिनाय् (नाट्टि) 4
तोण्डॊन्ऱे तॊळिलाक् कॊण्डिरुन्दोरॆत्
तूण्डिनाय्;— पुहळ्— वेण्डिनाय्;
कण् कण्ड तॊळिल् कऱ्क मार्क्कङ्गळ्
काट्टिनाय् शोर्वे ओट्टिनाय् (नाट्टि) 5

ठिकाना, महर्षि तिलक का भक्त दास हूँ। (अन्यों का०) २ कठोर कारा में मुस्कुराहट लिये जो जाते हैं, उन प्रभु भूपेंद्र का दास हूँ। (अन्यों का०) ३ सिपाहियों के समक्ष रहते भी सत्य से अच्युत रहनेवाले (बिपिनचंद्र) 'पाल' का भक्त दास हूँ। (अन्यों का०) ४ मैं जलती आग में डालो तो भी धर्म को न छोड़नेवाले ब्रह्मबन्धु के युग्म चरणों का दास हूँ। (अन्यों का०) ५

गोरे विंच साहब का कथन—३८

[विंच कलेक्टर का नाम है। उसके द्वारा देशभक्त वी० ओ चिदंबरम् पिल्लै को डाँट बताने की कल्पना की गयी है।]

देश भर में स्वतन्त्रता की कामना को जगा दिया तुमने; आग फैला दी।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रेष्ठ गुणों के जो निधान हैं जो महर्षि-सम पूज्य परम।
उन्हीं तिलक का भक्त दास हूँ और किसी का दास नहीं ॥ २ ॥
और किसी का दास नहीं मैं और किसी का दास नहीं ॥ टेक ॥
जो कठोर कारागृह में भी (मोद-मग्न) मुसकाते हैं।
दास उन्हीं भूपेंद्र दास का और किसी का दास नहीं ॥ ३ ॥
और किसी का दास नहीं मैं और किसी का दास नहीं ॥ टेक ॥
सिपाहियों के भी सम्मुख, जो कि सत्य पर सदा अटल।
उन्हीं पाल का भक्त दास हूँ और किसी का दास नहीं ॥ ४ ॥
और किसी का दास नहीं मैं और किसी का दास नहीं ॥ टेक ॥
जलती ज्वाला में भी पड़कर धर्म नहीं तजनेवाले।
ब्रह्मबन्धु का चरण दास हूँ और किसी का दास नहीं ॥ ५ ॥
और किसी का दास नहीं, मैं और किसी का दास नहीं ॥ टेक ॥

गोरे विच साहब का कथन—३८

भारत भर में सुलगाई है तुमने स्वतंत्रता-ज्वाला।
निर्बल करके कारागृह में जायेगा तुमको डाला ॥ १ ॥
यह 'वन्दे मातरम्' घोष कर अपयश मेरा फैलाया।
मुझे भगाने को जलयान चलाया, धन अक्षय पाया ॥ २ ॥
निन्द्य गुलामी, भंग करो कानून, कायरों से कहकर।
अपमानित कर हमें, पोल दी खोल, ढीठ! हे ढीठ (मुखर) ॥ ३ ॥
पुरुष बनाकर दास नपुंसक को उनमें वीरता भरी।
कंगाली में खुश थे उनकी अधीनता-दीनता हरी ॥ ४ ॥
उकसाया दासों में उद्यम, यश की माँग लगे करने।
मार्ग दिखाये उद्योगों के लगे निराशा को हरने ॥ ५ ॥

तुमको निर्बल करके जेल में ठूंस दूंगा। अपना बल प्रदर्शित करूंगा। (देश भर०) १ तुमने भीड़ लगाकर 'वन्दे मातरम्' का नारा लगाया। तुमने हमारा दूषण किया। हमको (यहाँ से) भगाने के विचार से जहाज चलाया और पैसे भी बनाये। (देश भर०) २ कायर लोगों को तुमने सच्ची बातें बता दीं। क़ानून को भंग किया। ग़रीब रहकर मरना निंद्य है —यह अपने लोगों से कहकर तुमने (अप्रत्यक्ष रूप से) हमें गाली दी और अपनी वीरता की डींग हाँकी। (देश भर०) ३ जो गुलाम तथा नपुंसक थे, तुमने उन्हें (पौरुषयुक्त) मानव बना दिया। उनका दैन्य दूर कर दिया। वे इसी विचार में खुश थे कि हमें कंगाली सोहती है। उन्हें तुमने उस भाव से छुड़ाया। तथा उनके मन में लालसाओं को भर दिया। (देश भर०) ४ तुमने केवल सेवा को उद्योग समझनेवालों को उकसाया। वे यश की कामना करने लगे। तुमने अनेक उद्योग सीखने के मार्ग (अपने लोगों को) दिखाये; लोगों की निराशा को दूर किया। (देश भर०) ५ तुमने सर्वत्र स्वराज्याभिलाषा को प्रेरित किया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍङ्गुम् इन्द सुयराज्य विरुप्पत्तै
एविनाय्— विदै— तूविनाय्;
शिङ्गम् शॅय्युम् तॉळिलैच् चिरुमुयल्
शॅय्यवो ? नीङ्गळ्— उय्यवो ? (नाट्टि) 6
शुट्टु वीळ्त्तिये पुत्ति वरुत्तिच्
चॉल्लुवेन्;— कुत्तिक्— कॉल्लुवेन्;
तट्टिप् पेशुवो रुण्डो ? शिरॅक्कुळ्ळे
तळ्ळुवेन्— पळि— कॉळ्ळुवेन् (नाट्टि) 7

देशबक्तर् शिदम्बरम् पिळ्ळै मरुमॉळि—39

शीन्द नाट्टिर् परर्क् कडिमै शॅय्दे, तुञ्जि डोम् इनि— अञ्जिडोम्
ऍन्द नाट्टिनुम् इन्द अनीदिहळ्, एऱ्कुमो ?— दॅय्वम् पार्क्कुमो ? 1
वन्दे मादरम् ऍन्ऱुयिर् पोम् वरै, वाळ्त्तुवोम्— मुडि—ताळ्त्तुवोम्
ऍन्द मारुयि रन्नैयैप् पोऱ्ऱुदल् ईनमो— अव— मानमो ? 2
पॉळुदॅल्लाम् ऍङ्गळ शॅलवङ् गॉळ्ळै कॉण्डु, पोहवो ? नाङ्गळ्— शाहवो ?
अळुदु कॉण्डिरुप् पोमो ? आण् पिळ्ळैहळ्, अल्लमो— उयिर् वॅल्लमो ? 3
नाङ्गळ् मुप्पदु कोडि जनङ्गळुम्, नाय्हळो ?— पन्ऱिच्— चेय्हळो ?
नीङ्गळ् मटटुम् मनिदर्हळो ? इदु, नीदमो ?— पिडि— वादमो ? 4
बारदत्तिडे अन्बु शॅलुत्तुदल्, पाबमो ? मनस्— ताबमो ?
कूरुम् ऍङ्गळ् मिडिमैयैत् तोर्प्पदु, कुऱ्ऱमो ? इदिल्— शॅऱ्ऱमो ? 5
ऑऱ्ऱुमै वळि यॉन्ऱे वळि यॅन्बदु ओर्न्दिट्टोम्— नन्गु— तेर्न्दिट्टोम् !

उसके बीज बोये। सिंह द्वारा करने योग्य काम को खरगोश करे ? क्या किसी भी उपाय से तुम उन्नति कर सकोगे ? (देश भर०) ६ मैं तुम्हें गोली मारकर पाठ सिखाऊँगा। भाला या तलवार भोंककर या घूंसा जमाकर मार डालूंगा। हमारी बात काटकर बोलनेवाला भी कोई है? (यदि हो तो) उसे जेल में ठूंस दूंगा। और दोष भी ले लूंगा (या बदला लूंगा)। (देश भर०) ७

देशभक्त चिदंबरम् पिळ्ळै का उत्तर—३९

हम अपने ही देश में पराधीनता के रहते चुप नहीं रहेंगे (नहीं सोयेंगे, नहीं मरेंगे)। अब भयभीत नहीं रहेंगे। क्या किसी भी देश में यह अन्याय सह्य होगा ? क्या इसे देव भी देखते रहेंगे ? १ हम मरते दम तक 'वन्दे मातरम्' कहकर माता की स्तुति करेंगे (उसके सामने) अपना सिर झुकायेंगे। हमारी प्राण-स्वरूपा माता की स्तुति करना क्या कोई हीन कार्य है ? क्या यह अपमानकारी है ? २ क्या तुम्हारा हमेशा (यहाँ का) धन लूटकर ले जाते रहने का विचार है ? क्या हम मर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बोये बीज स्वराज्य-प्राप्ति के, दी स्वराज्य की अभिलाषा।
क्या होगा शश सिंह-सदृश ? है उन्नति की तुमको आशा ? ॥ ६ ॥
असि-भाला-घूँसों से गोली से मैं पाठ पढ़ाऊँगा।
बात कौन काटेगा ? लूँगा अयश, जेल पहुँचाऊँगा ॥ ७ ॥

देशभक्त चिदंबरम् पिळ्ळै का उत्तर—३९

हम स्वदेश में पराधीन बन मौन रहें, स्वीकार नहीं।
नहीं डरेंगे, लड़ें-मरेंगे, मानेंगे हम हार नहीं ॥
किसी देश के नर सह सकते हैं ऐसा अन्याय नहीं।
अरे दैव ! देखता रहे, (क्या होगा कभी सहाय नहीं ?) ॥ १ ॥
हम 'वन्दे मातरम्' कहेंगे, अपना सीस झुकायेंगे।
(जब तक तन में प्राण हमारे तब तक गायन गायेंगे) ॥
पाप नहीं है मातृ-वन्दना सबको यही बतायेंगे।
यदि होगा अपमान, सहेंगे, (कभी नहीं घबरायेंगे) ॥ २ ॥
सदा लूटने का विचार है इसी भाँति क्या मेरा धन ?।
रहें सदा हम यों ही रोते तज देवें अपना जीवन ॥
(आखिर) हम भी पुरुष, (नसों में पौरुष का संचार सदा)।
(देश-जाति पर) प्राण निछावर करने को तैयार सदा ॥ ३ ॥
कोटि-कोटि हम भारत-वासी जीवें शूकर-श्वान-समान।
और अकेले तुम मानव हो, यह कैसा है विषम विधान ? ॥
(कोई बुद्धिमान नर इसको न्याय नहीं बतलायेंगे)।
यह अन्याय दुराग्रह हठ है, यही सभी जतलायेंगे ॥ ४ ॥
(बतला दो) क्या देशभक्ति भी कहीं कही जाती है पाप ?।
या कि तुम्हारे मन का समझें हम इसको (भीषण) संताप ॥
दैन्य-भाव आलस्य हटाना तुम अपराध बताते हो।
(देश-दिवानों पर) क्यों (अपना भीषण) कोप जताते हो ? ॥ ५ ॥
उन्नति का है मार्ग संगठन यह हमने पहिचान लिया।
(और उपाय नहीं है कोई) भलीभाँति यह जान लिया ॥

जायें ? हमेशा रोते रहें हम ? क्या हम मर्द नहीं हैं ? क्या हमारे लिए प्राण 'गुड' (के समान मधुर-प्यारे) हैं ? (इसका अर्थ है कि प्राण-त्याग के लिए हम तैयार हैं) । ३ क्या हम तीस करोड़ लोग कुत्ते हैं ? या सुअर के बच्चे हैं ? क्या अकेले तुम लोग ही मानव हो ? यह न्याय है या (अन्यायपूर्ण) हठ है ? ४ भारत से प्यार करना पाप है क्या ? क्या यह तुम्हारे मन का ताप (बना) है ? तुम ही कहो कि क्या अपनी ग़रीबी को, (आलस्य को) दूर करना भी अपराध है ? तो फिर गुस्सा क्यों करते हो ? ५ हमने पहचान लिया कि एकता ही एक मात्र उन्नति का मार्ग है। इसे हमने ख़ूब जान लिया है। आगे आप जो भी क्रूरता के कार्य करें, हम डरते नहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मऱ्ऱ नीङ्गळ् शॅय्युङ् गॊडुमैक्कॆल्लाम्, मलैवुऱोम्— शित्तम्— कलैवुऱोम् 6
शदॆयॆत् तुण्डु तुण्डाक् किनुम् उन्नॆण्णम्, शायुमो ?— जीविन्— ओयुमो ?
इवयत्तुळ्ळे इलङ्गु महाबक्ति, एहुमो— नॆञ्जम्— वेहुमो ? 7

नडिप्पुच् चुदेसिहळ्—40

(पल्लित्तऱि वुरुत्तल्– किळिक् कण्णिहळ्)

नॆञ्जिल् उरमुमिन्ऱि नेर्मैत् तिऱमुमिन्ऱि
वञ्जनै शॊल् वारडि— किळिये
वाय्च् चॊल्लिल् वीररडि 1
कूट्टत्तिर् कूडिनिन्ऱु कूविप् पिदर्र् लन्ऱि
नाट्टत्तिर् कॊळ्ळारडी ! किळिये !
नाळिल् मऱप्पारडी ! 2
शॊन्द अरशुम् पुविच् चुहङ्गळुम् माण्बु हळुम्
अन्दहर्क् कुण्डा हुमो ? किळिये
अलिहळुक् किन्ब मुण्डो ? 3
कण्गळ् इरण्डिरुन्दुम् काणुन् तिऱमै यऱ्ऱ
पॆण्गळिन् कूट्टमडो ! किळिये !
पेशिप् पयनॆन्नडि ! 4
यन्दिर शालै यॆन्बार् अॆङ्गळ् तुणिह ळॆन्बार्
मन्दिरत्ताले यॆङ्गुम्— किळिये !
माङ्गनि वीळ्वदुण्डो ! 5
उप्पॆन्ऱुम् शीनि अॆन्ऱुम् उळ्नाट्टुच् चेलै अॆन्ऱुम्
शॆप्पित् तिरिवा रडी ! किळिये
शॆय्व दऱियारडी 6
देवियर् मानम् अॆन्ऱुम् दॆय्वत्तिन् बक्ति अॆन्ऱुम्
नाविनार् चॊल्वदल्लाल् !— किळिये
नम्बुद लऱ्ऱा रडि ! 7

रहेंगे। हमारा मन डाँवाडोल नहीं होगा। ६ हमारे मांस की (काटकर) बोटी-बोटी करो, तो भी क्या तुम्हारा उद्देश्य पूरा होगा ? क्या हमारा जीवन (उत्साह) नष्ट हो जायगा ? हृदय में जो महान भक्ति है क्या वह दूर होगी ? क्या हमारा मन भुन जायगा ? (इस कथन का अर्थ है— मरने पर भी इच्छा नष्ट नहीं होगी)। ७

ढोंगी स्वदेशी (देशभक्त)—४०

निंदा द्वारा शिक्षा

[इसमें शुक को सम्बोधित करके बातें बतायी जाती हैं, और 'कण्णि' का अर्थ है

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चाहे जितनी आप क्रूरता (निर्दयता) दिखलायेंगे।
हम न डरेंगे, मन न डिगेगा, कभी नहीं घबरायेंगे ॥ ६ ॥
कटे हमारी बोटी-बोटी तुम न कदापि सफल होगे।
उमगेगा उत्साह हमारा (तुम सर्वथा विफल होगे) ॥
देशभक्ति भरपूर हृदय में वह अब दूर नहीं होगी।
मर जायें पर मन की हिम्मत चकनाचूर नहीं होगी ॥ ७ ॥

ढोंगी देशभक्त की निंदा—४०

मन में साहस नहीं, सरलता चतुराई से कोसों दूर।
अरी शुकी! ये वंचक वक्ता हैं केवल बातों के शूर ॥ १ ॥
भीड़-भाड़ में बहुत बकेंगे पर न ध्यान में लायेंगे।
अरी शुकी! ये पल भर में ही बातें सभी भुलायेंगे ॥ २ ॥
कभी नपुंसक नर भी वनिता के सुख को पा सकते हैं?।
अरी शुकी! अन्धे, स्वराज्य-सुख, गौरव अपना सकते हैं? ॥ ३ ॥
आँखों के होने पर भी ये नर अंधी नारियों समान।
अरी शुकी! यह कहने में भी लाभ नहीं कुछ भी (नादान) ॥ ४ ॥
वस्त्र स्वदेशी बनवायेंगे, कार्यालय खुलवायेंगे।
अरी शुकी! बातों के जादू से ये आम गिरायेंगे ॥ ५ ॥
नमक, शकर, साड़ियाँ स्वदेशी, कहकर शोर मचायेंगे।
अरी शुकी! ये बिना कुछ किये (कैसे सब पा जायेंगे) ॥ ६ ॥
देवभक्ति, सम्मान देवियों का, केवल मुँह से कहना।
अरी शुकी! विश्वास न श्रद्धा, गाल बजाते बस रहना ॥ ७ ॥

छंद के नियमों के अनुसार पद्य बनता है, पर चरणों की संख्या में कमी या पंक्ति की लम्बाई में कमी रहती है। इसलिए यह 'शुक— कण्णियाँ, कहाता है।]

हमारे इन लोगों के मन में साहस नहीं; सिधाई तथा दक्षता नहीं है। ये लोग वंचना-पूर्ण भाषण करेंगे। हे शुकी! ये बातों में शूर हैं। १ ये भीड़ में इकट्ठा होकर खड़े होकर बकेंगे; पर ये बात ध्यान में नहीं लायेंगे! री शुकी! ये लोग उसे एक ही दिन में भूल जायँगे! २ री शुकी! स्वराज्य, ऐहिक सुख और गौरव क्या अन्धोंको मिलेगा? क्या षंडों को भोग भी प्राप्त हो सकता है? ३ दो-दो आँखों के होने पर भी ये देखने की शक्ति न रखनेवाले, री शुकी, ये नारी-वृन्द हैं। हमारे द्वारा कहने से क्या लाभ होगा? री! ४ 'कारखाना' कहेंगे; 'हमारे कपड़े' कहेंगे, पर 'जादू' से कहीं, री शुकी! क्या आम का फल नीचे गिरेगा (हाथ आयगा)? ५ नमक, चीनी, स्वदेशी साड़ियाँ, आदि कहते हुए ये बकते फिरेंगे! पर री शुकी! अरी, ये करना कुछ नहीं जानते। ६ देवियों का मान, देव-भक्ति आदि का जिह्वा से उच्चारण करने के सिवा, री शुकी! ये मन से उसका विश्वास करनेवाले नहीं हैं।७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मादरैक् कऱ्पऴित्तु वन् कण्मै पिऱर् शॆय्यप्
पेदैहळ् पोलुयिरैक्— किळिये
पेणि यिरुन् दारडी ! 8
देवि कोयिलिऱ् चॆन्ऱु तीमै पिऱर्हळ् शॆय्य
आवि पॆरिदॆन् ऱॆण्णिक्— किळिये
अञ्जिक् किडन्दारडी ! 9
अच्चमुम् पेडिमैयुम् अडिमैच् चिऱुमदियुम्
उच्चत्तिऱ् कॊण्डारडी !— किळिये
ऊमैच् चत्तङ्गळडी ! 10
ऊक्कमुम् उळ्वलियुम् उण्मैयिऱ् पऱ्ऱुमिल्ला
माक्कळुक्कोर् कणमुम्— किळिये
वाऴत् तहुदि युण्डो ? 11
मानम् शिऱिदॆन् ऱॆण्णि वाऴ्वु पॆरिदॆन् ऱॆण्णुम्
ईनर्क् कुलहन् दनिल्— किळिये
इरुक्क निलैमै युण्डो 12
शिन्दयिऱ् कळ् विरुम्बिच् चिव शिव वॆन्बदु पोल्
वन्दे मादर मॆन्बार्— किळिये !
मनत्ति लदनैक् कॊळ्ळार् 13
पऴमै पऴमै यॆन्ऱु पावनै पेश लन्ऱिप्
पऴमै इरुन्द निलै !— किळिये
पामर रेदऱिवार् ! 14
नाट्टिल् अव मदिप्पुम् नाणिन्ऱि इऴि शॆल्वत्
तेट्टिल् विरुप्पुङ् गॊण्डे !— किळिये !
शिऱुमै यडै वारडी ! 15
शॊन्दच् चहोदरर्हळ् तुन्बत्तिऱ् चादल् कण्डुम्
शिन्दै इरङ्गा रडी !— किळिये
शॆम्मै मऱन्दा रडी ! 16
पञ्जत्तुम् नोय्ह ळिलुम् बारदर् पुऴुक्कळ् पोल्
तुञ्जत्तम् कण्णार् कण्डुम्— किळिये
शोम्बिक् किडप्पारडी ! 17
तायैक् कॊल्लुम् पञ्जत्तैत् तडुक्क मुयऱ्चि युऱार्
वायैत् तिऱन्दु शुम्मा— किळिये
वन्दे मादर मॆन्बार् 18

स्त्रियों के चरित्र को बिगाड़कर, उनके साथ बलत्कार किया जाता देखकर ये मूर्खों की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शीलभंग को लखकर, लखकर बलात्कार अबलाओं पर।
अरी शुकी! निज प्राण पालते रहे, मूर्ख-सम ये (पामर)॥ ८॥
देवमन्दिरों-बीच विदेशी करते थे जब अत्याचार।
अरी शुकी! ये भयकातर हो पड़े रहे (निष्क्रिय बेकार)॥ ९॥
भय में और नपुंसकता में, दास्य-वृत्ति में बढ़े-चढ़े।
अरी शुकी! ये सब गूँगे हैं, महामूर्ख हैं, (विना पढ़े)॥ १०॥
नहीं सत्यनिष्ठा है इनमें साहस औ उत्साह नहीं।
अरी शुकी! ये पशु-सम मानव, हैं जीने के योग्य कहीं?॥ ११॥
प्राणों को अनमोल मानते किन्तु मान का मोल नहीं।
अरी शुकी! इन हीन जनों को जीने का अधिकार कहीं?॥ १२॥
मन में इनके ध्यान सुरा का, रसना पर शिव-शिव का नाम।
अरी शुकी! मन में न भक्ति, मुख में 'वन्दे मातरम्' ललाम॥ १३॥
ये पामर प्राचीन सभ्यता के प्रति प्रेम मानते हैं।
अरी शुकी! प्राचीन सभ्यता क्या है? नहीं जानते हैं॥ १४॥
ये निर्लज्ज, अधम, धन-लोभी सह लेंगे सारे अपमान।
अरी शुकी! ये नीच जनों के तुल्य जियेंगे तज सम्मान॥ १५॥
सगे भाइयों को भी दुःखित देख न दया दिखायेंगे।
अरी शुकी! ये सब प्रकार से सत्-स्वभाव बिसरायेंगे॥ १६॥
रोग-अकाल-ग्रस्त कीड़ों-से मरते भारतीय लखकर।
अरी शुकी! ये मस्त रहेंगे अपनी सुस्ती में (पामर)॥ १७॥
देश-विनाशक कटु अकाल की बाधा नहीं मिटायेंगे।
अरी शुकी! मुख से 'वन्दे-मातरम् सदा चिल्लायेंगे॥ १८॥

तरह, री शुकी! अपने प्राण पालते रहे। ८ देवी के मन्दिर में घुसकर पराये (विधर्मी) लोग अत्याचार करते थे। (तब) प्राणों को बड़ा मानकर, री शुकी! ये भयकातर होकर पड़ रहे। ९ भय तथा नपुंसकता, दासता की निकृष्ट मति (विचार) --ये सब इनमें चोटी पर हैं। री शुकी! ये गूंगे लोग हैं री! १० अन्दर उत्साह नहीं, साहस नहीं, सत्य में निष्ठा नहीं --क्या ऐसे पशुवत् मानव, री शुकी! क्षण भर के लिए भी जीने योग्य हैं? ११ सम्मान को छोटा, और जीवन को बड़ा माननेवाले हीनों के लिए, री शुकी, संसार में क्या रहने का अधिकार भी है? १२ चित्त में मद्य (ताड़ी) का ध्यान, जिह्वा पर 'शिव' का नाम रखनेवालों की तरह ये लोग 'वन्दे मातरम्' तो बोलते हैं। पर री शुकी! मन में कोई आस्था नहीं होती। १३ ये प्राचीनता की भावना प्रकट करते हैं। पर ये पामर हैं, री शुकी! क्या प्राचीन स्थिति को जानते हैं? १४ देश में अपमान को सहन करते हुए निर्लज्ज होकर, निकृष्ट धन की चाह करते हुए, री शुकी! ये नीचता को प्राप्त हो जायेंगे। १५ सगे भाइयों को दुख में मरता देखकर भी, री शुकी! मन में सहानुभूति का अनुभव नहीं, ये सत्स्वभाव को भूल गये हैं। १६ अकाल में तथा रोगों में फँसकर अपने भारतीय लोग कीड़ों की तरह मरते हैं --यह अपनी आँखों से देखकर भी, री शुकी! ये सुस्ती में मस्त रहेंगे। १७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

5 देशीयत् तलैवर्हळ्

वाऴ्ह नी ॲम्मान्—41

महात्मा गान्दि पञ्जकम्

वाऴ्ह नी ॲम्मान्, इन्द वैयत्तु नाट्टि लॆल्लाम्
ताऴ्वुर्रु वरुमै मिञ्जि विडुदलै तवरिक् कॆट्टुप्
पाऴ् पट्टु निन्र् दामोर् बारद देशन्दन्नै
वाऴ्विक्क वन्द गान्दि महात्मा नी वाऴ्ह वाऴ्ह ! 1
अडिमै वाऴ्व हन्द्रिन् नाट्टार् विडुदलै यार्न्दु शॆल्वम्
कुडिमैयि लुयर्वु कल्वि ञानमुम् कूडि योङ्गिप्
पडिमिशैत् तलैमै यॆय्दुम् पडिक्कॊरु शूऴ्च्चि शॆय्दाय्
मुडिविलाक् कीर्त्ति पॆर्राय् ! पुविक्कुळ्ळे मुवन्मै पुर्राय् 2

वेऱु (छंद भिन्न)

कॊडिय वॆन् नाह पाशत्तै मार्र्, मूलिहै कॊणर्न्दवन् ॲन्गो ?
इडि मिन्नल् ताङ्गुम् कुडै शॆय्दान् ॲन्गो ?, ॲन् शोलिप् पुहऴ्वदिङ् गुनैये
विडिविलात् तुन्बञ् जॆयुम् परादीन्, वॆम्बिणि यहर्र्रिडुम् वण्णम्
पडिमिशैप् पुदिदाच् चालवुम् ॲऴिदाम्, पडिक्कॊरु शूऴ्च्चि नी पडैत्ताय् 3
तन्नुयिर् पोले तन्नक्कऴि वॆण्णुम्, पिरन्नुयिर् तन्नैयुम् कणित्तल्
मन्नुयि रॆल्लाम् कडवुळिन् वडिवम्, कडवुळिन् मक्कळॆन् रुणर्दल्
इन्न मॆय्ञ् ञानत् तुणिविनै मर्राङ्गु, इऴि पडुपोर् कॊलै तण्डम्
पिन्निये किडक्कुम् अरशिय लदनिल्, पिणैत्तिडत् तुणिन्दनै पॆरुमान् 4
पॆरुङ्गॊलै वऴियाम् पोर्वऴि इहऴ्न्दाय्, अदनि लुन्दिरन् पॆरि दुडैत्ताम्
अरुङ्गलै वाणर् मॆय्त् तॊण्डर् तङ्गळ् अऱवऴि यॆन्रु नी अऱिन्दाय्;
नॆरुङ्गिय पयन्शेर् ऒत्तुऴै यामै, नॆऱियिन्नाल् इन्दिया विर्कु
वरुङ्गदि कण्डु पहैत्तॊऴिल् मऱन्दु, वैयहम् वाऴ्ह नल्लऱत्ते ! 5

ये मातृभूमि को मारनेवाले अकाल को रोकने का प्रयत्न नहीं करेंगे; पर, हाँ हे शुकी ! मुख खोलकर ऊँचे स्वर में 'वन्दे मातरम्' का नारा लगा देंगे । १८

५ राष्ट्र नेता

महात्मा गांधी-पंचक—४१

चिरंजीव रहें ! हे मेरे बापू ! भारत इस विश्व के सारे देशों में सबसे दलित होकर, ग़रीबी में बढ़कर, स्वतन्त्रता को खोकर, सब तरह बिगड़कर निर्धन हो रहा था। ऐसे भारत देश का उद्धार करने के लिए अवतरित हे गांधीजी, महात्मा जी ! आप जिएँ ! जुग-जुग जिएँ ! १ आपने एक ऐसी नीति को अपनाया, जिससे इस देश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

५ राष्ट्रनेता

महात्मा गांधी-पंचक—४१

स्वतंत्रता को खोकर भारत सभी गुणों से हीन बना।
निखिल विश्व के सब देशों से दलित दीन धनहीन बना।
(जुग-जुग जियें कि दीन दशा लख दुख से द्रवित हुए बापू)॥
इस भारत को उबारने को हैं अवतरित हुए बापू॥ १ ॥
स्वतंत्रता हो प्राप्त मनोरम कटें दासता के बन्धन।
धन-विद्या-यश-कीर्तिज्ञान में उन्नत हों भारत के जन॥
ऐसा साधा तंत्र आपने हों ये जन-मन के जेता।
हों सब जग के ये पथ-दर्शक, हों सब जग के ये नेता॥ २ ॥
नाग-पाश हरने की ओषधि लानेवाला तुम्हें कहूँ।
वज्रपात-रक्षक-छतरी को छानेवाला तुम्हें कहूँ॥
पराधीनता-उग्ररोग विनशानेवाला तुम्हें कहूँ।
सरल तंत्र रचकर स्वतंत्रता लानेवाला तुम्हें कहूँ॥ ३ ॥
अपने प्राणों के समान ही अरि के प्राणों को माना।
सभी जीव प्रभुरूप, सभी प्रभुपुत्र, आपने पहचाना॥
नीच-युद्ध, वध, दंड आदि से राजनीति जो थी दूषित।
उक्त ज्ञान अभिनव उसको दे, किया पुनीत, किया भूषित॥ ४ ॥
हत्याकारक युद्धमार्ग की बापू! तुमने निन्दा कर।
'सत्याग्रह' का देश-सेवकों को दिखलाया पथ (दुखहर)॥
असहयोग के सफल मार्ग से भारत की गति को लखकर।
विश्व बने सद्-धर्म-परायण सभी शत्रुता बिसराकर॥ ५ ॥

के वासी दासता के जीवन से छूट जाएँ, स्वतन्त्रता पायें, धन-प्राप्ति करें, और उन्नति करें, विद्या और ज्ञान से युक्त हों और संसार का नेतृत्व प्राप्त करें। आप अनन्त कीर्तिमान हो गये! विश्व भर में आप सर्वप्रथम (सम्मान्य) हो गये! २ मैं आपको क्या कहूँ? भयंकर नागपाश के हरण के लिए ओषधि लानेवाले कहूँ? क्या गाज तथा बिजली को झेलनेवाला छाता बनानेवाले कहूँ? दुस्तर दुख देनेवाली पराधीनता के कठोर रोग को दूर करने के लिए आपने विश्व में अभूतपूर्व, असाधारण रूप से सरल, एक तन्त्र (उपाय) का निर्माण किया। ३ हे महात्मा! अपने ही प्राणों के समान हमारे नाश के अभिलाषी शत्रु के भी प्राणों को (प्यारा) मानना; सभी जीवों को ईश्वर के ही रूप और ईश्वर के पुत्र समझना; —ऐसे सच्चे ज्ञान के सिद्धान्तों को अपने निंद्य युद्ध, वध दण्ड से अपृथक् रूप से जुड़ी (गूँथी) रहनेवाली राजनीति में प्रवेश कराने का निश्चय किया है। ४ विपुल हत्या का मार्ग युद्ध का मार्ग है! आपने उसकी निंदा की। आपने जान लिया कि उससे अधिक सक्षम मार्ग है—श्रेष्ठ (सत्याग्रह) शास्त्रियों तथा सच्चे सेवकों का (अहिंसा) धर्ममार्ग। युक्त-फलदायक असहयोग के मार्ग को अपनाने से भारत को जो (अच्छी) गति मिलेगी उसको विश्व देख ले; (और फलतः) वह शत्रुकर्म को भूल जाय और सद्धर्म-परायण हो। ५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गुरु गोविन्दर्—42

आयिरत् तॆऴुनूर् ऱैम्बत्ताऱु
विक्रम ताण्डु वीररुक् कमुदाम्
आनन्द पुरत्ति लार्न्दिति दिरुन्दनन्
पाञ्जालत्तुप् पडर्तरु शिङ्गक्
कुलत्तिनै वहुत्त गुरुमणि यावान् 1-5
ञानप् पॆरुङ्गडल् नललिशैक् कविञन्
वानम्वीऴ्न् दुदिरिनुम् वाळ्कॊडु तडुक्कुम्
वीरर् नायहन् मेदिति कात्त
गुरु गोविन्द शिङ्गमाङ् गोमहन् 6-9
अवन्तिरुक् कट्टळै अऱिन्दुपल् तिशैयिनुम्
पाञ्जालत् तुऱु पडैवलोर् नाडॊऱुम्
नाडॊऱुम् वन्दु नण्णुहिन् ऱाराल् 10-12
आनन्द पुरत्तिल् आयिर मायिरम्
वीरर्हळ् गुरुविन् विरुप्पिनैत् तॆरिवान्
कूडिवन् दॆय्दिनर् कॊऴुम् बॊऴिलिनङ्गळुम् 13-15
पुन्नहै पुनैन्द पुदुमलर्त् तॊहुदियुम्
पॆन्निऱम् विरिन्द पळनक् काट्चियुम्
नल्वर वाहुह नम्मनोर् वरवु ऎन्ऱु
आशिहळ् कूऱि आर्प्पन पोन्ऱ 16-19
पुण्णिय नाळिऱ् पुहळ्वळर् गुरवन्
तिरुमॊऴि केट्कच् चॆऱिन्दनर् शीडर्हळ् 20-21
"यादवन् कूऱुम् ? ऎन्नॆमक् करुळुम् ?
ऎप्पणि विदित्तॆम देळेऴ् पिऱवियुम्
इन्बुडैत् ताक्कुम् ?" ऎन्नप्पल करुदि
मालोन् तिरुमुनर् वन्दुकण् णुयर्त्ते
आक्किनै तॆरिवान् आवलॊडु तुडिक्कुम्
तेवरै यॊत्तनर् तिडुक्कॆनप् पीडत्तु 22-27

गुरु गोविंद (सिंह)—४२

पांचाल देश में फैले रहनेवाले सिंह (सिक्ख) कुल के जनक गुरु-रत्न (गुरु गोविन्दसिंह), विक्रमी संवत्सर एक सहस्र सात सौ छप्पन में वीरों के (अमृत-सम) प्यारे आनन्दपुर में जाकर सुख के साथ रहे। १-५ वे विशाल-ज्ञान-सागर थे; प्रकीर्तित कवि थे। वे आकाश चूकर गिरने लगे तो भी अपने खड्ग से उसे रोक सकनेवाले वीरों के नायक थे। वे ही भूरक्षक शासक गुरु गोविन्दसिंह थे। ६-९ उनकी मान्य आज्ञा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गुरु गोविन्दसिंह—४२

जो पंजाब-देश में फैले सिक्ख सभी हैं सिंह-समान।
उनके पूज्य जन्मदाता भी गुरु गोविन्दसिंह (मतिमान)॥
विक्रम संवत् सत्रह सौ छप्पन में शुभ प्रस्थान किया।
वीरप्रिय आनँदपुर साहिब जाकर समुद निवास किया॥ १-५ ॥
(वेद-पुराण-शास्त्र-ज्ञाता थे), विपुल ज्ञान के सागर थे।
(सरस्वती के वरद पुत्र थे), वे प्रसिद्धतम कविवर थे॥
यदि विशाल आकाश टूटकर गिरनेवाला हो भू पर।
जो अपनी तलवार-नोक पर उसे रोक सकते सत्वर॥
ऐसे बाँके वीरवरों के संचालक थे नायक थे।
गुरु गोविन्दसिंह भारत भू के रक्षक थे, शासक थे॥ ६-९ ॥
उनके मुखमंडल से निकली अविचल आज्ञाएँ सुनकर।
पंजाबी सेनानी आते दिशा-दिशा से प्रतिवासर॥ १०-१२ ॥
दिशा-दिशा से वीर हज़ारों हुए इकट्ठा आ-आकर।
गुरु की आज्ञा सुनने के हित थी उनमें उत्साह लहर॥ १३-१५ ॥
भरे फलों से बाग़-बगीचे, हँसती-सी सुमनावलियाँ।
हरे-भरे से खेत मनोरम, (गाती-सी विहगावलियाँ)॥
अति उल्लास भरे सब मानों देते थे यह आशीर्वाद।
यह आगमन आपका शुभ हो, (हरो देश का सकल विषाद)॥ १६-१९ ॥
एक पवित्र दिवस में सुनने, कीर्तिमान गुरु का प्रवचन।
हुए सभी एकत्र सिक्ख वे व्यूह बनाकर प्रमुदित मन॥ २०-२१ ॥
नहीं जानते हम सब हमसे वे क्या कहनेवाले हैं।
नहीं जानते कौन अनुग्रह हम पर करनेवाले हैं॥
क्या वे अपनी शुभ सेवा का हम सबको अवसर देकर।
जन्म कृतार्थ करेंगे सबके सातजन्म के पातक हर॥
इस प्रकार सोचते हुए वे सिक्ख सुहाते थे ऐसे।
विष्णुदेव के सम्मुख उन्मुख खड़े देवगण हों जैसे॥ २२-२७ ॥

सुनकर दिन-दिन, विविध दिशाओं से पांचाल देश के सेनानी आने लगे। १०-१२ वे वीर हज़ारों की संख्या में आये और गुरु की इच्छा जानने के निमित्त आनन्दपुर में इकट्ठे हुए। १३-१५ समृद्ध बाग-बगीचे, मुस्कुराते-से ताजे सुमनों की राशियाँ तथा हरे रंग के खेत मानो यह आशीर्वचन उल्लास के साथ कह रहे थे कि आओ, आपका शुभागमन हो। १६-१९ एक पवित्र दिन में यशस्वी गुरु का प्रवचन सुनने के लिए शिष्य (सिक्ख) लोग घनी भीड़ लगाकर एकत्रित हुए। २०-२१ "वे क्या कहनेवाले हैं? हम पर क्या अनुग्रह करनेवाले हैं? हमसे कौन-सी सेवा कराकर हमारे (आगामी) सात जन्मों को कृतार्थ बनानेवाले हैं?" इस प्रकार सोचते हुए वे उन देवों के समान लग रहे थे, जो विष्णुदेव के सामने आकर तत्पर आँखें ऊपर उठाये, आतुरता के साथ,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एऱि निन्ऱदु काण्! इळमैयुम् तिऱलुम्
आदिबत् तहैमैयुम् अमैन्ददोर् उरुवम् 28-29
विळिहळिल् दॆय्वप् पॆरुङ्गनल् वीशिडत्
तिरुमुडि शूळ्न्दोर् तेशिकात् तिरुप्प
तूक्किय करत्तिल् शुडरुमिळ्न् दिरुन्ददु
कूऱना नडुङ्गुमोर् कॊऱ्ऱक् कूर्वाळ् 30-33
ऍण्णिला वीरर् इव्वुरु नोक्कि
वान्निन् ऱिऱङ्गिय मान्दिरिहन् मुनर्च्च
चिङ्गक् कूट्टम् तिहैत्तिरुन् दाङ्गु
मोनमुऱ् ऱडङ्गि मुडिवणङ् गिनराल् 34-37
वाळ्नुनि काट्टि माट्चियार् कुरवन्
तिरुवुळ नोक्कऱ् जॆप्पुवन् दॆय्वच् 38-39
चेयिद ळशैबुऱच् चिनन्दोर् ऍरिमलै
कुमुऱुदल् पोल् वॆळिक् कॊण्डन तिरुमॊळि 40-41
वाळिदै मनिदर् मार्बिडैक् कुळिप्प
विरुम्बुहिन्ऱेन् यान्; [तीर्हिला विडाय् कॊळ्
तरुमत्] तॆय्वन्दान् पल कुरुदिप्
पलिविळै हिन्ऱदाल्; बक्तर्हाळ्! नुम्मिडै
नॆञ्जिनैक् किळित्तु निलमिशै [युदिरम्
वीळ्त्तित् तेवियिन् विडायिनैत् तविर्प्प
यार्वरु हिन्ऱीर्? ऍन्नलुम् शीडर्हळ्
नडुङ्गि योर् कणम्वरै नावॆळा दिरुन्दनर् 42-49
गम्मॆन ओर्शिऱु कणङ्गळि वुऱ्ऱदु 50
आङ्गिरुन्दार् पल्लायिर रुळ्ळॊरु
वीरन्मुन् वन्दु विळम्बुवान् इःदे 51-52
गुरुमणि! निन्नॊरु कॊऱ्ऱवाळ् किळिप्प
विडायऱात् तरुमम् मेम्बडु तॆय्वदत्तु

आज्ञा सुनने के लिए उन्मुख रहे हों। २२-२७ तब अकस्मात्, देखो! शक्ति तथा यौवन से विभूषित तथा रोबीले रूपधारी एक व्यक्ति पीठ पर चढ़ते हुए दिखाई दिये। २८-२९ उनकी आँखों में दिव्य ज्वाला धधक रही थी। उनके चारों ओर दिव्य प्रभामंडल विद्यमान रहा। जिसका नाम लेते जीभ भी काँपे, ऐसी भयंकर तलवार उनके हाथ में से अपना तेज बिखेर रही थी। ३०-३३ असंख्य वीरों ने यह रूप देखा, तो वे उन सिंहों के समान सन्न रह गये, जो मानो आकाश से उतरे जादूगर के सामने रहे हों। उन्होंने मौन होकर सिर झुका लिये। ३४-३७ गौरवशाली गुरुदेव ने अपनी तलवार की नोक दिखाकर अपने मन की बात कही। ३८-३९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शक्ति-समन्वित यौवन-मंडित अति अतुलित प्रभावशाली।
सिंहासन पर खड़े हुए गुरु (रोबीले स्वभावशाली) ॥ २८-२९ ॥
उनके तेज भरे नयनों में धधक रही थी ज्वाला-सी।
मुख-मंडल पर प्रभा-मंडली फैला रही उजाला-सी ॥
वीरों की जिह्वा ले जिसका नाम काँपती थी थरथर।
ऐसी उग्र कृपाण हाथ में चमक रही थी जगर-मगर ॥ ३०-३३ ॥
वीर रूप गुरु का यह देखा सिंह-सदृश उन वीरों ने।
मौन हुए सब झुका लिये सिर (बड़े-बड़े रणधीरों ने) ॥
नभ-मंडल से उतरे वन में जैसे कोई जादूगर।
सन्न सिंह-सम अविचल वैसे ही हो गये चकित सब नर ॥ ३४-३७ ॥
खड्ग-नोक दिखलाकर बोले गुरुवर अतुल शील-शालीन।
(उनके वचनों को सुनने में हुए सभी सैनिक तल्लीन) ॥ ३८-३९ ॥
हिले अधर, प्रस्फुटित हुआ, वह गर्जन अग्नि-अलावा-सा।
ज्वालामुखी फट पड़ा जैसे उगल रहा हो लावा-सा ॥ ४०-४१ ॥
चाह रहा यह खड्ग भोंकना मैं नर के वक्षस्थल में।
उत्कट प्यासा धर्म रक्त की बलि माँगता (वधस्थल में) ॥
तुममें ऐसा कौन भक्त है (जो निर्भय हो आयेगा)।
अपनी छाती चिरा रक्त से माँ की प्यास बुझायेगा ॥
सुनकर उनकी भीषण वाणी सभी सिक्ख वे काँप उठे।
पल भर हिली न रसना उनकी (अधर दाँत से चाँप उठे) ॥ ४२-४९ ॥
(सन्नाटा सर्वत्र छा गया जन-जन हो भयभीत गया)।
इसी मौनता की छाया में छोटा-सा क्षण बीत गया ॥ ५० ॥
उन असंख्य-तम वीरों में तब एक वीर (कुछ-कुछ डोला)।
गुरु के सम्मुख आकर निर्भय होकर वह ऐसे बोला ॥ ५१-५२ ॥
उत्कट रक्त-पिपासु धर्म की प्रबल-पिपासा हरने को।
बनकर उसका ग्रास खड़ा मैं निज प्राणार्पण करने को ॥

उनका श्रीवचन उनके दिव्य अधर के हिलने से बाहर निकले; वह मानों ज्वालामुखी के क्रोध के साथ फटने पर निकला लावा-सा था। ४०-४१ उन्होंने कहा-- मैं इस तलवार को मनुष्य की छाती में भोंकना चाहता हूँ। अदम्य पिपासु धर्म रूपी देवता अनेक रक्त की बलियाँ माँग रहा है। हे भक्त लोगो! तुम लोगों में से कौन अपनी छाती चीरकर, धरती पर अपना रक्त गिराकर देवी माता की प्यास बुझाने के लिए आयेगा? जब यह उन्होंने कहा, तब सभी शिष्य (सिक्ख) काँप उठे। तथा क्षण भर उनकी जीभें हिली नहीं। ४२-४९ इस प्रकार मौन में एक छोटा क्षण बीत गया। ५० तब उन हजारों में से एक वीर सामने आया और यों बोला-- ५१-५२ हे गुरुरत्न! आपकी तलवार से चीरा जाकर, अदम्य पिपासु धर्म के उद्धारण के लिए देव के ग्रास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इरैयॆऩ मायवऩ् एऱ्ऱरुळ् पुरिहवे 53-55
पुऩ्ऩहै मलर्न्ददु पुऩिदनल् वदऩम्
कोयिलुळ् अवऩॆक् कुरवर्कोऩ् कॊडुशॆल
मऱ्ऱदऩ् निऩ्ऱोर् मडुविऩ् वऩ्दालॆऩक्
कुरुदिनोर् पायक् कुळात्तिऩर् कण्डऩर् 56-59
पार्मिऩ् सऱ्कुरु पळीरॆऩक् कोयिलिऩ्
वॆळिप्पोऩ्दाङ्गु मेविऩोर् मुऩ्ऩम्
मुदऱ्पलि मुडित्तु मुहमलर्न् दोऩाय्
मिऩ्ऩॆऩप् पायऩ्दु मीण्डुवऩ् दुऱ्ऱऩऩ् 60-63
मीण्डुमव् वुदिरवाळ् विण्वळि तूक्किप्
पिऩ्वरु मॊळिहळ् पेशुबवर् कुरवर् कोऩ् 64-65
मानुडर् नॆञ्जिलिव् वाळिऩैप् पदिक्कच्
चित्तम् नाऩ् कॊण्डेऩ्; देविताऩ् पिऩ्ऩुमोर्
बलिकेट् किऩ्ऱाळ्! बक्तर्हाळ्! नम्मुळे
इऩ्ऩुम् इङ्गॊरुवऩ् इरत्तमे तऩ्दु इक्
काळियैत् ताहङ् गळित्तिडत् तुणिवोऩ्
अॆवऩुळऩ्? अॆऩलुम् इऩ्ऩुमोर् तुणिवुडै
वीरऩ् मुऩ् निऩ्ऱु विरुप्पिऩै उणर्त्तिऩऩ् 66-72
इवऩैयुङ् गोयिलुळ् इऩिदळैत् तेहि
इरण्डाम् बलि मुडित् तीण्डिऩऩ् कुरवऩ् 73-74
कुरुदियॆक् कण्डु कुळात्तिऩर् नडुङ्गिऩर्
इङ्ङऩ मीण्डुमे इयऱ्ऱिप्
पलियो रॆऩ्दु परमनङ् गळित्तऩऩ् 75-77
अऱ्ऱतिऩैत् तमदोर् अऱिविनाऱ् कॊण्ड
मट्टिले मानिडर् माण्बॆऱ् लाहार् 78-79
अऱमदु तळैप्प नॆञ्जहम् काट्टि
वाट्कुत्तु एऱ्ऱु मायबवर् पॆरियोर्
अवरे मॆय्म्मैयोर्, मुत्तरुम् अवरे 80-82
तोऩ्ऱुऩू ऱायिरम् तॊण्डर् तम्मुळ्ळे
अत्तहै नल्लरै अऱिहुदल् वेण्डिये

के रूप में, मैं अपने प्राणों को हनन करने को उद्यत हूँ। आप कृपा कर अपना लें। ५३-५५ गुरुदेव के पुनीत सुवदन पर मुस्कुराहट फैल गयी। गुरुराज उसे मन्दिर के अन्दर ले गये। तब लोगों ने देखा कि उसके अन्दर से सरिता के समान रक्त बह आया। ५६-५९ देखो! सद्गुरु पहली बलि का काम पूरा करके झट बाहर आये तथा वहाँ खड़े हुए लोगों के सामने प्रसन्नमुख, विद्युत् के समान प्रकट

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(हे गुरुवर ! अपना लें मुझको, शीघ्र चीरकर मेरा उर।
रक्त पिला दें रणचंडी को रक्त-पिपासित जो आतुर ।। ५३-५५ ।।
गुरुवर के पावन आनन पर झलक उठी मंजुल मुसकान।
(काली-काली घनमाला में चमक उठी चंचला-समान) ।।
उसको लेकर चले गये वे देवी-मंदिर के अंदर।
लोगों ने देखा निकली है प्रबल रक्त-सरिता बहकर ।। ५६-५९ ।।
कर पहिला बलिदान शीघ्र गुरु मंदिर से बाहर आये।
बिजली के समान फिर सबके सम्मुख आकर मुसकाये ।। ६०-६३ ।।
स्वीय रक्तरंजित कृपाण को नभ की ओर उठा करके।
बोले फिर वे उन वीरों से (मन्द-मन्द मुसका करके) ।। ६४-६५ ।।
वक्ष भेदना चाह रही फिर यह मेरी तीखी तलवार।
अपनी बलि देने को बोलो कौन वीरवर है तैयार ।।
एक और बलि माँग रही है देवी, सुन लो हे वीरो !।
प्यास बुझाने को काली की रक्त कौन देगा धीरो ! ।। ६६-७२ ।।
ऐसा सुनकर उनके सम्मुख वीर एक फिर से आया।
मैं निज बलि देने को प्रस्तुत ऐसा उसने जतलाया ।।
उसको भी ले गये तुरत गुरु देवी-मंदिर के अन्दर।
कर क्षण में बलिदान दूसरा मंदिर से आये बाहर ।। ७३-७४ ।।
देख रक्त-सरिता की धारा भीड़ हुई भय से कम्पित।
इसी प्रकार पाँच बलियाँ दे हुए परमगुरु अति प्रमुदित ।। ७५-७७ ।।
सिर्फ़ धर्म-सिद्धान्त जानकर श्रेष्ठ न माना जाता है।
(किन्तु धर्म पर चलनेवाला श्रेष्ठ बखाना जाता है) ।। ७८-७९ ।।
जो कृपाण-आघात सहेंगे, जो देंगे अपना बलिदान।
वे ही सच्चे धार्मिक होंगे, वही मुक्त हैं वीर महान ।। ८०-८२ ।।
कौन धर्मप्रेमी है सच्चा (कौन वीर है बलिदानी)।
यही जानने को गुरुवर ने कठिन ठान मन में ठानी ।।

हो गये। ६०-६३ फिर से गुरुराज ने रक्तरंजित वह तलवार आकाश की ओर उठाकर निम्नलिखित बातें कहीं। ६४-६५ मैं मनुष्य के वक्ष में इस तलवार को घुसेड़ने की चाह रखता हूँ। देवी और एक बलि माँगती हैं। हे भक्तो। हम में ऐसा कोई है, जो अपना रक्त देकर इस काली की प्यास को बुझाने का साहस कर सकता है। ६६-७२ उनके इस प्रकार कहते ही और एक साहसी वीर ने सामने आकर अपनी स्वीकृति प्रदर्शित की। गुरु इसको भी मन्दिर के अन्दर ले जाकर दूसरी बलि का काम पूरा करके बाहर आये। ७३-७४ रक्त देखकर भीड़ भय-कंपित हुई। इस तरह परमगुरु पाँच बलियां चढ़ाकर प्रसन्नचित्त हुए। ७५-७७ धर्म को केवल बुद्धि-ग्राह्य रखनेवाले श्रेष्ठ नहीं हो सकते। ७८-७९ पर जो लोग तलवार का आघात सहेंगे, और अपनी बलि दे देंगे, वे ही सच्चे धर्माचरण करनेवाले होंगे। मुक्त भी वे ही (कहलाते) हैं। ८०-८२ वैसे श्रेष्ठ धर्मप्रेमियों को चुनने के विचार से ही करुणा-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तण्णरुट् कडलान् तहवुयर् कुरुवन्
कॊडुमै शेर् शोदनै पुरिन्दिडल् कुऱित्तनन् 83-86
अन्बिन् मिहैयाल् आरुयिर् नल्हुवोर्
ऐवरॆक् कण्डपिन् अव्वियल् उडयार्
ऍण्णिलर् उळरॆन्नत् तुणिन्दु इन्बु ऍय्दिनन् 87-89
वॆय्य शॆङ् गुरुदियिन् वीऴ्न्दुता मिर्न्दु
शॊर्क्कमुऱ् ऱारॆन्नत् तॊण्डर् कॊण्डिरुक्कुम्
ऐन्दुनन् मणियॆन्नुम् ऐन्दुमुत् तरैयुम्
कोयिलु ळिरुन्दु पेरवैमुन्नर्क् कॊण्डर्न्दान् ! 90-93
आर्त्तनर् तॊण्डर् ! अरुवियप् पॆय्दिनर् !
विऴिहळैत् तुडैत्तु मीळवुम् नोक्किनर् ! 94-95
जय जय गुरुमणि जय गुरु शिङ्गम्
ऍन्नप्पल वाऴिहळ् इशैत्तनर्, आडिनर् 96-97
अप्पोऴ् दिन्नरुळ् अवदरित् तनैयान्
नर्चुडर्प् परिदि नहैपुरिन् दाङ्गु
कुऱुनहै पुरिन्दु कुऱैयऱु मुत्तर्
ऐवर्हळ् तम्मैयुम् अहमुऱत् तऴुवि
आशिहळ् कूऱि अवैयिनै नोक्किक्
कडल् मुऴक् कॆन्न मुऴङ्गुवान् काणीर् 98-103
काळियुम् नमदु कन्नहनन् नाट्टुत्
तेवियुम् ऑन्ऱॆन्नत् तेर्न्दनल् अन्बर्हाळ् ! 104-105
नडुक्कम् नीरॆय्द नान् ऐम् मुऱैयुम्
बलियिडच् चॆन्ऱदु बावनै मन्ऱ 106-107
ऍन् करत्ताऱ् कॊलो नुम्मुयिर् ऍडुप्पन् ? 108
ऐम्मुऱै तानुम् अन्बरै मऱैत्तुनुम्
नॆञ्जहच् चोदनै निहऴ्त्तिनॆन् याने ! 109-110

सागर, गुणोत्कृष्ट गुरु ने (इस प्रकार की) क्रूर परीक्षा लेने का कार्यक्रम बनाया था। ८३-८६ प्रेमाधिक्य के कारण वैसे पाँच प्राणदाता मिल गये, तो उन्हें निश्चय हो गया कि वैसे स्वभाव के असंख्यक और भी अवश्य होंगे। इस निर्णय से उन्हें अपार हर्ष हुआ। ८७-८९ भक्त यही सोच रहे थे कि वे पाँचों अपने ही खून के मध्य गिरकर स्वर्गवासी हो गये। इतने में गुरुदेव उन पाँचों मुक्तों को मन्दिर के अन्दर से सभा के सामने ले आये। ९०-९३ त्यों ही सेवक शोर मचा उठे। वे अतिशय विस्मित हुए। वे आँखें मल-मलकर सामने बार-बार देखते रहे। ९४-९५ 'जय महान गुरु की', 'जय गुरुरत्न की' ! कहते हुए उन्होंने बार-बार मंगल नारे लगाये। वे नाच उठे। ९६-९७ तब मधुर करुणा के अवतारस्वरूप गुरु ने श्रेष्ठ किरणों के सूर्य के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करुणा-सागर गुणोत्कृष्ट गुरुवर के मन में आया था।
कठिन परीक्षा लेने का यह कार्यक्रम अपनाया था॥ ८३-८६ ॥
प्रेमपूर्ण प्राणों के दानी पाँच जनों को जब पाया।
अगणित बलिदानी ऐसे ही हैं इनमें, यह ठहराया॥
इस निर्णय से गुरु के मन में समुदित अतिशय हर्ष हुआ।
(पञ्च पियारे उन वीरों के गौरव का उत्कर्ष हुआ॥ ८७-८९ ॥
यही भक्त सब सोच रहे थे— "वे पाँचों ही वीर महान।
रक्तदान निज देकर सीधे स्वर्गलोक को किया पयान॥
इतने में आश्चर्य अनोखा देख सभी जन चकराये।
पाँचों मुक्तों को मंदिर से सभा बीच गुरु ले आये॥ ९०-९३ ॥
कोलाहल कर उठे सभी जन हुए सभी अतिशय विस्मित।
बार-बार आँखें मल-मलकर लगे देखने वे "जीवित"॥ ९४-९५ ॥
"जय गुरुरत्न", "महागुरु की जय" बोल उठे सेवक सारे।
नभमंडल में गूँज उठे ये उनके मंगलमय नारे॥
लगे नाचने सभी वीर वे (अति आनन्द-मग्न होकर)।
(बोल उठे सब जन सहसा ही धन्य धन्य हे परमेश्वर!)॥ ९६-९७ ॥
करुणा के अवतार-रूप गुरु ने रवि-किरणों-सम हँसकर।
गले लगा पाँचों वीरों को आशीर्वाद दिया सुंदर॥
(प्रेमदृष्टि से) देख सभी की ओर सिन्धु-सा गर्जन कर।
(इस सबका रहस्य समझाने को) फिर यों बोले गुरुवर॥ ९८-१०३ ॥
कालो माँ औ भारत-माँ को एक समझते जो प्रियजन।
(बतलाता रहस्य मैं तुमको सुनो शान्त करके निज मन)॥ १०४-१०५ ॥
मंदिर के अन्दर मैं पैठा पाँच बार बलि करने को।
कृत्य प्रकम्पन किया आपमें धर्म-भावना भरने को॥ १०६-१०७ ॥
(कैसे उन्हें मिटाता उर में जिनके लिए सदा कल्याण)।
अपने ही हाथों कर लेता कैसे हरण आपके प्राण॥ १०८ ॥
पाँच बार ले गया प्रियजनों को मानों बलि देने को।
केवल आप-सदृश वीरों की शौर्य-परीक्षा लेने को॥ १०९-११० ॥

समान मुस्कराते हुए इन पाँचों मुक्तों को गले लगाकर आशीर्वाद दिया। फिर, सभा की तरफ़ देखकर समुद्र-गर्जन-से स्वर में (जो) बोले— सो देख लें। ९८-१०३ कालिका देवी तथा हमारे देश की देवी (मातृ-भूमि) को एक ही माननेवाले श्रेष्ठ प्रेमियो! १०४-१०५ आपको कँपा देते हुए मैं पाँच बार बलि की रसम अदा करने (के बहाने) अन्दर जो गया, वह आपके मन में 'भावना' भरने के लिए था। १०६-१०७ क्या मैं अपने ही हाथ से आपके प्राणों को नष्ट कर सकता हूँ? १०८ मैंने पाँच बार अपने प्रेमियों को छिपा रखा तथा उस बहाने आपके मन की परीक्षा की। १०९-११० 'मातृभूमि के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ताय्मणि नाट्टिन् उण्मैत् तनयर् नीर्
ऍन्बदु तॆळिन्देन्, ऍन् कर वाळाल्
अरुत्तदिङ् गिन्ऱैन् दाडुहळ् काण्बीर्; 111-113
शोदनै वऴियिनुन् दुणिविनैक् कण्डेन्
कळित्त दॆन् नॆञ्जम् कऴिन्दत कवलैहळ् 114-115
गुरु गोविन्दन् कॊण्डदोर् तरुमम्
शीडर् तम् मार्क्कम् ऍनप् पुहऴ् शिऱन्दबु 116-117
इन्नुमम् मार्क्कत् तिरुप्पवर् तम्पॆयर्
'कालसा' ऍन्ब 'कालसा' ऍनु मॊऴि
मुत्तर्तम् सङ्ग मुऱैयॆनुम् पॊरुळदु 118-120
मुत्तर् तम् सबैक्कु मूलर्हळाह मऱ्ऱु
ऐवरन्नोर् तमै अरुळिनन् आरियन्
शमैन्ददु 'कालसा' ऍनुम् पॆयर्च् चङ्गम् 121-123
बारद मॆन्ऱ पऴम्बॆरु नाट्टिनर्
आवितेयन् इऴिन्दिलर्, आण्मैयिऱ् कुरैन्दिलर्
वीरमुञ् जिरत्तैयुम् वीन्दिल रॆन्ऱु
पुवियिनोर् अऱियप् पुरिन्दनन् मुनिवन् 124-127
अन्नाळ् मुहुन्दन् अवदरित्ताङ्गु ओर्
दॆय्विहत् तलैवन् शीरुऱत् तोन्ऱि
मण्मा शहन्ऱ वान्पडु शॊऱ्कळाल्
ऍऴुप्पिडुङ् गालै, इऱन्दु तान् किडक्किलऴ्;
इळमैयुम् तुणिवुम् इशैन्दु नम् अन्नै
शादियिन् मानन् दाङ्ग मुऱ्पडुव ऎन्ऱु
उलहिनो ररिविडै युरुत्तिनन् मुनिवन् 128-134
ऐम्बॆरुम् बूदत् तहिलमे शमैत्त
मुन्नव नॊप्प मुनिवनुम् ऐन्दु
शीडर्हळ् मूलमात् तेशुरु बारदच्
चादियै बहुत्तनन्; तऴैत्तदु तरुमम् 135-138
कॊडुङ्गोल् पऱ्ऱिय पुन्नहैक् कुरिशिलर्
नडुङ्गुव रायिनर्; नहैत्तनळ् शुदन्दिरै 139-140

सच्चे तनय हो तुम लोग; यह मुझे विदित हो गया। अपने करवाल से मैंने जिनको काटा था, वे ये पाँच भेड़ें हैं। देख लो! १११-११३ इस परीक्षा के द्वारा मैंने तुम्हारा साहस देख लिया। मेरी चिन्ताएँ दूर हुईं। ११४-११५ गुरु गोविन्द का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मातृभूमि के तुम सपूत हो आज मुझे यह विदित हुआ।
(नष्ट हो गया संशय का तम निश्चय का रवि उदित हुआ)॥
अपनी खड्गधार से जिनका मैंने खून बहाया था।
वे सब पाँचों ही भेड़ें थीं (यही रहस्य छिपाया था)॥ १११-११३ ॥

लेकर कठिन परीक्षा मैंने देख लिया साहस वीरो!।
चिन्ताएँ सब दूर हो गयीं (मन सन्तुष्ट हुआ धीरो!)॥ ११४-११५ ॥

गुरु गोविंदसिंह का यह मत सिक्ख-धर्म विख्यात हुआ।
('शिष्य-धर्म' यह 'सिक्ख-धर्म' यह सब लोगों को ज्ञात हुआ)॥ ११६-११७ ।

सिक्ख-धर्म के वे अनुयायी (खालिस) मुक्त कहाते हैं।
मुक्तों का है संघ खालसा यही अर्थ बतलाते हैं॥ ११८-१२० ॥

उन पाँचों को मुक्त संघ के मूल पुरुष का पद देकर।
किया खालसा-संघ विनिर्मित श्रीगुरुवर ने (हरषाकर)॥ १२१-१२३ ॥

मुनि-सम गुरु ने भूमंडल को इस प्रकार यह दिखा दिया।
हुआ नहीं निष्प्राण देश है (सारे जग को सिखा दिया)॥
इस विशाल प्राचीन देश के वासी अभी न पौरुषहीन।
और (वीरता) देशभक्ति से देश न अब भी हुआ विहीन॥ १२४-१२७ ॥

अधर्मियों का वध करने को जैसे थे अवतरित मुकुन्द।
म्लेच्छों का विनाश करने को वैसे हुए प्रकट गोविंद॥
विश्ववासियों को जतलाने बोले (वे यह वाक्य नवीन)।
ये स्वदेश के दैवी नायक पार्थिव दोषों से हैं हीन॥
देशवासियों के मन में ये देशभक्ति उपजायेंगे।
तब माता नवजीवित होगी सोते भी जग जायेंगे॥
माँ यौवन-उत्साह और नव-साहस से भर जायेगी।
देश-जाति-गौरव की रक्षा करने के हित आयेगी॥ १२८-१३४ ॥

धर्म 'शिष्यों (सिक्खों) का धर्म' नाम से विख्यात हो गया। ११६-११७ अब भी उस धर्म के अनुयायी 'खालसा' नाम से जाने जाते हैं। 'खालसा' शब्द का अर्थ 'मुक्तों का संघ' है। ११८-१२० आर्य गुरु ने उन मुक्त-संघ के मूल पुरुषों के रूप में उन पाँचों को नियुक्त किया। तब बना 'खालसा संघ'। १२१-१२३ मुनि (सदृश गुरु) ने भूलोक को यह दिखा दिया कि प्राचीन तथा विशाल भारत देश के वासी निष्प्राण नहीं हुए, पौरुषहीन नहीं हुए और उनकी वीरता तथा श्रद्धा (देशभक्ति) मिटी नहीं थी। १२४-१२७ उस दिन जैसे मुकुन्द अवतरित हुए, वैसे ही आज ये दिव्य नायक अवतरित हुए। पार्थिव दोषों से रहित स्वर्गीय शब्दों से जब वे माता को (देश-प्रेम को) देशवासियों के मन में जगायें, तब माता मरी नहीं पड़ी रहेंगी; पर यौवन-उत्साह तथा साहस के साथ वे जाति (-समाज) के गौरव-रक्षार्थ उठ आगे आयेंगी। --यह उन मुनिवर ने विश्ववासियों को जतला दिया। १२८-१३४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आयिरत् तॆळुनूऱ् ऱैम्बत् ताऱु
विक्किर मार्क्क ऩाण्डिऩिल् वियऩ् पुहळ्क्
कुरु गोविन्दऩ् कॊऱ्ऱमार् शीडरॆक्
कूट्टिये दॆय्वक् कॊलुवॊऩ् ऱमैत्तऩऩ् 141-144
काण्डऱ् करिय काट्चि ! कविऩ् तिहळ्
अरिया दऩऩ्तिल् अमर्न्दऩऩ् मुऩिवर् कोऩ् 145-146
शूळ्न्दिरुन्दऩर् उयिर्त् तॊण्डर् ताम् ऐवरुम्;
तऩ्तिरुक् करत्ताल् आडैहळ् शार्त्ति
मालैहळ् शूट्टि मदिप्पुऱ इरुत्तिक्
कण्मणि पोऩ्ऱार् ऐवर्मेर् कऩिन्दु
कुळैवुऱ वाळ्त्तिक् कुळात्तिऩै नोक्कि
'कण्डिरो मुदलाङ् 'कालसा' ऎऩ्ऱऩऩ् 147-152
नाडुम् तरुममुम् नऩ्गिदिऱ् काप्पाऩ्
अमैत्तदिच् चङ्गम् अऱिमिऩ् नीर् ऎऩ्ऱाऩ् 153-154
अरुहिऩिल् ओडिय आऱ्ऱिऩ्निऩ् ऱैयऩ्
इरुम्बुच् चिऱु कलत् तिऩ्नीर् कॊणर्न्दु
वाळ्मुऩै कॊण्डु मऱ्ऱदैक् कलक्कि
मन्दिर मोदिऩऩ्, मऩत्तिऩै अडक्किच्
चित्तमे मुळुदुऱ् जिवत्तिडै याक्किच्
चुबमुरैत् तिट्टाऩ्, शयप् पॆरुन्दिरु अक्
कॊलुमुऩर् वन्दु कुदित्तुनिऩ् ऱिट्टाळ् 155-161
आऱ्ऱु नीर् तऩैयो अडित्तदत् तिरुवाळ्
अयर्न्दु पोय् निऩ्ऱ अरुम्बुहळ् बारदच्

पाँच भूतों को मिलाकर संसार का सर्जन करनेवाले प्रजापति के समान मुनिवर ने भी पाँच शिष्यों को अग्रगामी (नेता) बनाकर तेजोयुक्त भारत जाति का निर्माण किया। और (फलतः) धर्म पनप उठा। १३५-१३८ जो अत्याचारी दण्डशासक राजा मंदहास कर रहे थे वे अब काँपने लग गये। स्वतन्त्रता (स्वतन्त्रता की देवी खुशी से) हँस उठी। १३९-१४० विस्मित करनेवाले यशस्वी गुरु गोविन्द ने १७५६ विक्रमी संवत् में विजयी सिक्खों को एकत्रित करके एक दिव्य दरबार लगाया। १४१-१४४ वह दृश्य अभूतपूर्व था। शोभायमान सिंहासन पर मुनिराज विराजमान हुए। १४५-१४६ प्राणों-से मूल्यवान पाँचों सिक्ख उनको घेरे बैठे थे। गुरु ने उन्हें अपने हाथ से वस्त्र पहनाया। मालाएँ पहनायीं। फिर गौरव के साथ सुयोग्य आसन पर बिठाया। आँखों के तारे के समान उन पर स्नेहसिक्त दृष्टि दौड़ायी। आशीर्वाद दिया और भीड़ से कहा— "देखा न पहला 'खालसा' ?" १४७-१५२ यह जान लो कि देश तथा धर्म के सम्यक् रक्षणार्थ यह संघ निर्मित हुआ है। १५३-१५४ पास ही से जो नदी बह रही थी, उससे वे लोह-पात्र में जल ले आये। वे अपनी तलवार की नोक से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मिला पंचभूतों को जग का यह प्रपंच रचनेवाले।
ब्रह्मा के समान गुरुवर के पाँच शिष्य थे बलवाले॥
उन्हें पुरस्सर करके गुरु ने (देशधर्म का त्राण किया)।
तेजपूर्ण भारती जाति का उनसे ही निर्माण किया॥ १३५-१३८ ॥
वह अत्याचारी शासक जो पहले करता था उपहास।
थर-थर काँप रहा है देखो (उपजा मन में भीषण त्रास)॥
(जो) स्वतंत्रता की देवी (पहिले दिखती थी मुरझाई)।
देखो अब अतिशय प्रसन्न हो मन्द-मन्द है मुसकाई॥ १३९-१४० ॥
गुरु गोविन्दसिंह ने सबको इस प्रकार विस्मित करके।
(इस अद्भुत संगठन शक्ति से जग आश्चर्यचकित करके)॥
सत्रह सौ छप्पन संवत् में कर सैनिक एकत्र अपार।
समुद लगाया विजयी सिक्खों का था एक दिव्य दरबार॥ १४१-१४४ ॥
दृश्य अभूतपूर्व था सुन्दर (बजते सुन्दर बाजे थे)।
शोभित सिंहासन पर गुरुवर मुनिवर सदृश विराजे थे॥ १४५-१४६ ॥
प्राणों से प्रिय पाँच पियारे थे सन्निकट गुरू के पास।
(देवदूत-से वे लगते थे, मन्द-मन्द करते थे हास)॥
गुरु ने अपने ही हाथों से उन्हें वस्त्र पहिनाया था।
मालाएँ पहिना गौरव-युत आसन पर बिठलाया था॥
नयन-पुतलियों के सम उन पर अपनी नेह-दृष्टि डाली।
आशीर्वाद दिया गुरुवर ने (फिर उनको समृद्धिशाली॥
बोले वे (यह संघ देश का रक्षक दिव्य ढाल सा है।
श्रद्धा से देखो सब लोगो!) पहिला यही खालसा है॥ १४७-१५२ ॥
देश-धर्म की रक्षा के हित है इसका निर्माण हुआ।
(सिक्खों का खालसा संघ यह मातृभूमि का प्राण हुआ)॥ १५३-१५४ ॥
फिर समीपवर्ती सरिता से लौहपात्र में जल लाये।
खड्ग-नोक को डुबा सुपावन मंत्र मधुर स्वर से गाये॥
धरकर शिव का अटल ध्यान जब बोले मंगलमय वाणी।
खड़ी हो गई स्वतः सभा में विजय-महाश्री कल्याणी॥ १५५-१६१ ॥
यह न जानना गुरु ने पीटा व्यर्थ नदी के पानी को।
(किन्तु जगाया था भारत की सोई हुई जवानी को)॥
भारत की जातीय शक्तियों को (था धक्का लगा दिया)।
जो निढाल होकर सोती थीं उन सबको था जगा दिया॥

उसे घोलकर मंत्रोच्चारण करने लगे। फिर चित्त में पूर्णरूप से शिव के ध्यान में मन लगाकर उन्होंने शुभ वचनों का उच्चारण किया। उसी समय विजय-महा-श्री मानो दरबार में कूदती हुई आकर खड़ी हो गयी। १५५-१६१ क्या उन्होंने केवल नदी-जल को प्रताड़ित किया था। नहीं। शिथिल रही यशस्वी भारतीय जाति की सभी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चादियिऩ् तिऱल्हळ् तम्मैये इयक्कि
नल्लुयिर् नल्हिऩऩ् नाडॆल्लाम् इयङ्गिऩ 162-165
तवमुडै ऐवरैत् तऩ्मुऩर् निऱुत्ति
मन्दिर नीरै माशऱत् तॆळित्तु
अरुळ् मयमाहि अवर् विऴि तीण्डिऩऩ् 166-168
पार्मिऩो उलहीर्! परमऩङ् गरत्ताल्
अवर्विऴि तीण्डिय अक्कणत् तऩ्ऱे
नाडऩैत्तुक्कुम् नल्वऴि तिऱन्ददु! 169-171
शीडर्ह ळऩैवरुम् दीट्चै इःदडैन्दऩर् 172
ऐयऩ् शॊल्वाऩ् अऩ्बर्हाळ्! नीविर्
शॆय्दिडप् पॆऱ्ऱ दीट्चैयिऩ् नामम्
अमिर्दम् अॆऩ्ऱु अरिमिऩ् अरुम् पेऱाम् इदु 173-175
पॆऱ्ऱार् यावरुम् पेररुळ् पॆऱ्ऱार् 176
नुमक्किऩित् तरुमम् नुवऩ्ऱिडक् केण्मिऩ्
ऒऩ्ऱाम् कडवुळ् उलहिडैत् तोऩ्ऱिय
मानिड रॆल्लाऱ् जोदरर् मानिडर्
शमत्तुव मुडैयार् शुदन्दिरऱ् जार्न्दवर् 177-180
शीडर्हाळ् कुलत्तिऩुम् शॆयलिऩुम् अऩैत्तिऩुम्
इक्कणन् दीट्ट नीर् याविरुम् ऒऩ्ऱे
पिरिवुहळ् तुडैप्पीर्! पिरिदले शादल् 181-183
आरियर् शादियुळ् आयिरऱ् जादि
वहुप्पवर् वहुत्तु माय्ह! नीर् अऩैविरुम्
तरुमम् कडवुळ् सत्तियम् सुदन्दिरम्
ऎऩ्बवै पोऱ्ऱ ऎऴुन्दिडुम् वीरच्
चादियॊऩ् ऱऩैये शार्न्दो रावीर् 184-188
अनीवियुम् कॊडुमैयुम् अऴित्तिडुऱ् जादि;
मऴित्तिडलऱ्रिया वऩ्मुहच् चादि;

शक्तियों को उन्होंने उस कृति द्वारा जगा दिया। उन्हें प्राणवान बनाया। समस्त देश स्पंदित हो उठा। १६२-१६५ उन पवित्र तपस्वी पाँचों को अपने सामने खड़ा करके, उन्होंने उन पर पवित्र, अभिमंत्रित जल को छिड़क दिया; और उनकी आँखों का कृपा-पूर्वक स्पर्श किया। १६६-१६८ देखो संसारवालो! परमगुरु ने जिस क्षण अपने सुन्दर हाथ से उनकी आँखों का स्पर्श किया, उसी क्षण सारे देश के लिए मंगल-मार्ग खुल गया। १६९-१७१ सभी शिष्यों ने इस दीक्षा को ग्रहण किया। १७२ फिर प्रभु बोले— प्रेमियो! तुमने जिस मंत्र की दीक्षा पायी है, जान लो, उसका नाम 'अमृत' है। यह बड़े सौभाग्य की उपलब्धि है। १७३-१७५ यह जिसे मिला, वह बड़ी ही कृपा के पानेवाले सिद्ध हो गये। १७६ अब तुम्हारा धर्म कहूँगा। सुनो,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(भारतवीरों की नस-नस में) प्राणों का संचार हुआ।
लगा धड़कने हृदय देश का (सुखद स्वप्न साकार हुआ) ॥ १६२-१६५ ॥
पाँचों पावन तपस्वियों को कर अपने सम्मुख संस्थित।
उन पर छिड़क दिया पावन जल कर मंत्रों से अभिमंत्रित ॥
और कृपा कर फिर से उनकी आँखों का संस्पर्श किया।
(देश-जाति के सच्चे सेवक बनो, यही आशीष दिया) ॥ १६६-१६८ ॥
गुरु ने सुन्दर कर से उनकी आँखों का जब स्पर्श किया।
निखिल देश के लिए उसी क्षण मंगलमय पथ खोल दिया ॥ १६९-१७१ ॥
(इस प्रकार पाँचों शिष्यों की यह विकराल परीक्षा थी)।
अन्य सकल शिष्यों को भी स्वयमेव प्राप्त यह दीक्षा थी ॥ १७२ ॥
बोले गुरु जिस मधुर मंत्र की है तुमने दीक्षा पायी।
अमृत-मंत्र वह अमृत-तुल्य है (सुख-) सौभाग्य (शान्ति-) दायी ॥ १७३-१७५ ॥
जिसको मिला मंत्र, वे प्रभु की परम कृपा के पात्र बने।
(अपवित्रता मिटी सब उनकी अतिशय पावन गात्र बने) ॥ १७६ ॥
धर्म तुम्हारा यही "एक ईश्वर" की ही सत्ता मानो।
(उसको ही जग का उत्पादक, पालक औ घालक जानो) ॥
जगतीतल के सभी मनुज हैं आपस में भाई भाई।
सब स्वतंत्र (परतंत्र न कोई) परम धर्म है यह भाई ॥ १७७-१८० ॥
शिष्यो! सबकी जाति एक है कर्म एक तुम सबका है।
हो तुम एक सभी बातों में (भिन्न न कोई तबक़ा है) ॥
आपस के इस भेदभाव को तुमको दूर भगाना है।
भेद-भावना मौत सरीखी, (जीवन मेल बखाना है) ॥ १८१-१८३ ॥
जाति-भेद अगणित आर्यों में रचनेवाले रचा करें।
ठान शत्रुता मरा करें वे (द्वेषानल में पचा करें) ॥
उन वीरों की एक जाति तुम जो स्वतंत्रता के सेवक।
ईश्वर भक्त, धर्म के पालक, सदा सत्य के आराधक ॥ १८४-१८८ ॥
कुटिल क्रूरता, अन्यायों की नाशक जाति तुम्हारी हो।
बने सुदृढ़ मुख मुद्रावाली आनन दाढ़ी धारी हो ॥

ईश्वर एक है। संसार में जनमे सभी मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं। सभी मनुष्य स्वतंत्र हैं। १७७-१८० हे शिष्यो! जाति तथा सभी कर्मों में, क्यों? सारी बातों में, इस क्षण से तुम सब एक हो। आपस के भेद दूर कर दो। अलग-अलग होना मौत पाना है। १८१-१८३ आर्यों में हजार जाति-भेद रचनेवाले रचें और मरें। पर तुम सब उन वीरों की एक जाति हो, जो धर्म, ईश्वर, सत्य, स्वतंत्रता आदि का आदर करने के लिए उठ आनेवाले हों। १८४-१८८ तुम अन्याय तथा क्रूरता को मिटानेवाली जाति हो। दाढ़ी न बनानेवाले, सुदृढ़ मुख-मुद्रावाले लोगों की जाति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इरुम्बुमुत् तिरैयुम् इरुहिय कच्चैयुम्
कैयिनिल् वाळुम् कळन्ऱिडाच् चादि
शोदर नट्पुत् तॊडर्न्दिडु शादि 189-193
अरशन् इल्लादु दॆय्वमे यरशा
मानुडर् तुणैवरा मऱमे पहैयाक्
कुडियर शियर्ऱुङ् गॊळ्हैयार् शादि; 194-196
अऱत्तिनै वॆरुक्किलीर् मऱत्तिनैप् पॊरुक्किलीर्
ताय्त् तिरु नाट्टैच् चन्ददम् पोऱ्ऱि
पुहळॊडु वाळ्मिन् ! पुहळॊडु वाळ्मिन् !" 197-199
अॆन्ऱुरैत् तैयन् इन्बुऱ वाळ्त्तिनन् 200
अवनडि पोऱ्ऱि आऱ्त्तनर् शीडर्हळ् 201
गुरुगो बिन्दक् कोमहन् नाट्टिय
कॊडि उयर्न्द शैयक कुवलयम् पुहळ्न्ददु 202-203
आडिये माय्न्ददु अरङ्गशीप् आट्चि 204

दादा बाय् नवुरोजि—43

मुन्नाळिल् इरामपिरान् कोदमना, दियपुदल्वर् मुऱैयि नीन्ऱु
पन्नाडु मुडिवणङ्गत् तलैमै निऱुत्, तिय अॆमदु बरद कण्ड
मिन्नाळ् इङ् गिन्नाळिन् मुदियोळाय्प् पिऱरॆळ्ळ वीळ्न्द कालै
अन्नाळैत् तुयर् तविर्प्पान् मुयल्वर्शिल मक्कळव रडिहळ् शूळ्वाम् 1
अव्वऱिञ रनैवोर्क्कुम् मुदल्वनाम्, मैन्दन् तन् अन्नै कण्णीर्
अॆव्वहैयि नुन्दुडैप्पेन् इन्ऱेलैन् उयिर् तुडैप्पेन् अॆन्नप् पोन्दु,
यौवननाळ् मुदऱ्कॊडु तान् अॆण्बदिन्मेल् वयदुऱ्ऱ कारुम्
शॆव्वियुऱत् तनदुडलम् पॊरुळावि यानुळैप्पुत् तोर्द लिल्लान् 2

हो। लौह-मुद्रा, कसकर गूंथे हुए कच, करवाल आदि को हाथ से दूर न करनेवाली जाति हो। सहोदर-प्रेम को जीवित रखनेवाली जाति हो। १८९-१९३ मानवीय राजा के स्थान पर ईश्वर को राजा, मानव को साथी, पाप को ही शत्रु मानकर प्रजातंत्र चलानेवाले का सिद्धान्त अपनानेवाली जाति हो। १९४-१९६ धर्म से कभी घृणा मत करो। पाप को क्षमा मत करो। मातृप्रेम की सतत सेवा करो और यशभाजन बनकर जियो। यशस्वी होकर जियो। १९७-१९९ ऐसा कहकर गुरुदेव ने प्रसन्नता से बधाई दी। २०० उनका चरण-स्पर्श करके शिष्यों ने उच्चनाद किया। २०१ गुरु गोविंद की स्थापित ध्वजा फहरी तथा कुवलय ने प्रशंसा की। २०२-२०३ (अन्त में) औरंगजेब का शासन हिल उठा और मिटा भी। २०४

दादाभाई नौरोजी—४३

हमारे भारतखण्ड की देवी, जिसने श्रीराम, गौतम आदि पुत्रों को क्रम से जन्म

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कर में हो करवाल, (कमर में कच्छ) केश हों मस्तक पर।
(केशों में कंघा हो शोभित लौह कड़े से भूषित कर)॥
(ये ही पाँच ककार आज से बनें जाति के आभूषण)।
रहो सहोदर से तुम हिलमिल (दूर देश के हों दूषण)॥ १८९-१९३ ॥
मानव को राजा मत मानो, राजा मानो ईश्वर को।
मानव को तुम साथी मानो औ अरि पाप भयंकर को॥
प्रजातंत्र के सिद्धान्तों पर चलनेवाली जाति बनो।
(दुष्टों के दुर्दान्त दलों को दलनेवाली जाति बनो)॥ १९४-१९६ ॥
कभी धर्म से घृणा करो मत, नहीं पाप को क्षमा करो।
मातृभूमि की सेवा करके जियो सुयश से भुवन भरो॥ १९७-१९९ ॥
इस प्रकार दी (समुद) बधाई सबको गुरु ने हरषाकर।
चरणस्पर्श किया शिष्यों ने उच्चनाद फिर किया प्रखर॥ २००-२०१ ॥
गुरु गोविन्दसिंह-संस्थापित ध्वजा (गगन में) फहराई।
भूमंडल के सभी जनों ने (कलित) कीर्ति (उनकी) गाई॥ २०२-२०३ ॥
(सिक्खों के इस प्रबल संगठन से भयभीत हुए दुर्जन)।
डगमग होकर मिटा क्रूर औरंगज़ेब का वह शासन॥ २०४ ॥

दादाभाई नौरोजी—४३

राम और गौतम की जननी विश्ववन्द्य भारतमाता।
होकर प्रौढ़ हुई पतनोन्मुख निन्द्य बनी आरत माता॥
उसके कष्ट दूर करने को आगे बढ़े तभी कुछ जन।
उनके (चारु) चरण कमलों का हम सब करते हैं वन्दन॥ १ ॥
प्राण-प्रदीप बुझा करके भी (मातृ-कष्ट सब हरने को)।
तन-मन-धन-प्राणों की बलि दे माँ की सेवा करने को॥
अश्रु पोंछने-हित माता के (अपने को न रोक पाये)।
माता के कुछ ज्ञानि-शिरोमणि श्रेष्ठ पुत्र सम्मुख आये॥
युवा रहे, फिर वृद्ध हुए, अस्सी वर्षों के, अड़े रहे।
तन, धन, प्राण निछावर कर वे आज़ादी हित बढ़े रहे॥ २ ॥

देकर अनेक देशों से बंद्य होकर, आधिपत्य जमाया था; जब बूढ़ी हुई तथा दूसरों के लिए निन्दा-योग्य होकर पतनोन्मुख बनी, तब कुछ महाशयों ने उसके दुख को दूर करने का यत्न किया। उनके चरणों की हम वन्दना करते हैं। १ वैसे उन सभी ज्ञानियों के शीर्षस्थ, माता के श्रेष्ठ पुत्र, यह कहते हुए सामने आये कि माता की आँखों के आँसुओं को मैं किसी भी प्रकार पोंछूंगा, नहीं तो अपने प्राण-दीप बुझा दूंगा। युवावस्था से लेकर अस्सी साल के ऊपर होते समय भी वे बहुत अच्छी तरह से तन, धन, प्राणों की बाज़ी लगाकर उसकी सेवा करने से नहीं चूके। २ वे ऐसे वीर हैं, जिनमें विद्या,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कल्वियैप् पोल् अऱिवुम् अऱिविऩैप् पोलक् करुणैयुम् अक् करुणै पोलप्
पल्विदवूक् कङ्गळ् शॆयुन् दिऱनुमॊरु निहरिऩ्ऱिप् पडॆत्त वीरऩ्
विल् विऱलाऱ् पोर्शॆय्दल् पयऩिलदाम्, अॆऩ अदऩै वॆऱुत्ते उण्मैच्
चॊल्विऱलाऱ् पोर्शॆय्वोऩ् पिऱर्क्कऩ्ऱित् तऩक्कुळैयात् तुऱवि यावोऩ् 3
मादा वाय्विट्टलऱ अदैच्चिऱिदुम् मदियादे वाणाळ् पोक्कुन्
तीदावार् वरिऩुमवर्क् किऩिय शॊलि नऩ्गुणर्त्तुऱ् जॆव्वि याळऩ्,
वेदावायिऩु मवऩुक्कऱ्जामे उण्मैनॆऱि विरिप्पोन् अॆङ्गळ्
दादावाय् विळङ्गुऱुनल् दादाबाय् नवुरोजि शरणम् वाळ्ह 4
अॆण्बःदाण् डिरुन्दववऩ् इऩिप् पल्लाण्डु इरुन्दॆम्मै इऩिदु काक्क !
पण्बल्ल नमक्किळैप्पोर् अऱिवु तिरुन्, दुह अॆमदु बरदनाट्टुप्
पॆण्बल्लार् वयिऱ्ऱिऩुमन् नवुरोजि पोऱ्पुदल्वर् पिऱन्दु वाळ्ह !
विण्बुल्लु मीऩ्गळॆऩ अवऩऩ्ऩार् अॆव्वयिऩुम् मिहुह मऩ्ऩो 5

पूबेन्दिर विजयम्--44

पाबेन्दिरियऱ् जॆऱुत्त अॆङ्गळ् विवेहाऩन्दप् परमऩ् ञाऩ
रूबेन्दिरऩ् तऩक्कुप् पिऩ्वन्दोऩ् विण्णवर्त मुलहैयाळ्पर-
ताबेन्दिरऩ् कोबमुऱिऩुमदर्कु अऱ्जियऱऩ् तविर्क्कि लादाऩ्
पूबेन्दिरप् पॆयरोऩ् बारद नाट् टिर्कडिमै पूण्डु ताळ्वोऩ् 1
वीळ्त्तल् पॆऱत् तरुममॆलाम् मऱमऩैत्तुङ् गिळैत्तुवर मेलोर् तम्मैत्
ताळ्त्ततमर् मुऩ्ऩोङ्ग निलैपुरण्डु पादहमे तदुम्बि निऱ्कुम्
पाळ्त्त कलियुहऱ् जॆऩ्ऱु मऱ्ऱॊरुहम् अरुहिल्वरुम् पाऩ्मै तोऩ्ऱुक्
काळ्त्त मऩ वीरमुडऩ् युहाऩ्दरत्तिऩ् निलैयिऩिदु काट्टि निऩ्ऱाऩ् 2
मण्णाळु मऩ्ऩ रवऩ् ऱऩैच् चिऱैशॆय् दिट्टालुम् मान्द रॆल्लाम्
कण्णाहक् करुदियवऩ् पुहळोदि वाळ्त्ति मऩङ् गळिक्किऩ् ऱाराल्

विद्या के समान बुद्धि, बुद्धि के समान करुणा और उस करुणा के समान अनेक साहस-युक्त कार्य करने की कुशलता अनुपम रूप से है। वे यह समझकर कि धनुष-शक्ति से लड़ना निष्फल होगा, उसे त्यागकर सत्यभाषण की शक्ति से लड़नेवाले हैं। वे निरीहिता से सेवा करनेवाले संन्यासी हैं। ३ माता को मुख खोलकर क्रन्दन करता देखकर भी उसकी ओर ज़रा-सा भी ध्यान दिये बग़ैर, अर्थहीन जीवन बितानेवाले बुरे लोग आवें, तो भी उनसे मधुर वचन कहकर ये उन्हें समझानेवाले सज्जन हैं। दादाभाई नौरोजी 'वेद' (वेदपुरुष विष्णु) भी हों, तो भी उनसे न डरकर उन्हें सत्यपथ की अर्थ समझा देनेवाले हमारे दादा हैं। उनके चरणों की जय हो। ४ वे अस्सी साल जीवित रहे। अब वे और अनेक साल जीवित रहकर हमारे हित का रक्षण करें। उससे अभद्र व्यवहार करनेवाले हम ऐसे लोगों की मति सुधर जाय।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

है वीरता-सदृश विद्या, विद्या-सम मति, मति-सम करुणा।
करुणा-सदृश साहसिकता भी सदा प्रवीण सदा तरुणा॥
शस्त्रशक्ति का त्याग भरोसा सत्यशक्ति को अपनाकर।
स्वार्थहीन माता के सेवक संन्यासी-से वे (नरवर)॥ ३ ॥
माता के क्रन्दन को सुनकर देते नहीं ज़रा जो ध्यान।
ऐसे दुष्टों को समझाते मधुर वचन कह (सुधा-समान)॥
जो सत्पथ की व्याख्या करते वेदपुरुष से भी निर्भय।
उन दादाभाई नौरोजी के (पावन) चरणों की जय॥ ४ ॥
अस्सी वर्ष आयु है उनकी पर वे शतजीवी होकर।
बुद्धि सुधार, अभद्र जनों— हम जैसों की मति करें सुघर॥
नौरोजी-सम सुत उपजायें भारत की प्रिय महिलाएँ।
नभ के तारों से मुसकायें प्रतिपल बढ़ते ही जाएँ॥ ५ ॥

भूपेन्द्र-विजय—४४

पापेन्द्रिय का दमन कर रहे परमज्ञान में इन्द्र-समान।
पूज्य विवेकानन्द-अनुज हैं (देशभक्त) भूपेन्द्र महान॥
स्वर्ग-नृपति-देवेन्द्र-कोप-भय से न धर्म तजनेवाले।
देश-दासता के हरने को प्राण-साज सजनेवाले॥ १ ॥
हुआ धर्म का ह्रास, पाप की वृद्धि हो रही थी भीषण।
साधु-जनों को सता-सताकर पनप रहे थे पापी जन॥
बीतेगा यह कलियुग, आयेगा सतयुग, दे आश्वासन।
सुदृढ़ वीरता और सुगमता से लाये युग-परिवर्तन॥ २ ॥
रवि किरणों से घृणा मान भजता उलूक तम-तोम सघन।
सदा भले को बुरा बताते ऐसे भी जग में दुर्जन॥

हमारे भारत की अनेक महिलाओं की कोख से नौरोजी के समान पुत्र पैदा होकर पलें। आकाश के तारों-से उनके समान (असंख्यक) लोग सब तरह से बढ़ें। ५

भूपेन्द्र विजय—४४

पापेन्द्रिय-दमनकारी, परमज्ञान-रूपेन्द्र हमारे विवेकानन्द के अनुज, स्वर्गशासक प्रतापेन्द्र, प्रतापी देवेन्द्र क्रुद्ध हो, तो भी उससे डरकर धर्म न छोड़नेवाले, भूपेन्द्र नामक महानपुरुष भारत देश की दासता को स्वीकार कर जीनेवाले नहीं हैं। १ जब धर्म का पतन हो गया, पाप बढ़ती पर था, साधु लोगों को दलित करके पापी आगे बढ़ रहे थे, उस समय उन्होंने सुदृढ़ वीरता के साथ युगान्तर की स्थिति को सुगमता से दिखाया। उनकी हस्ती यह आश्वासन दे रही थी कि यह बुरा कलियुग बीत जायगा और अन्य युग निकट ही आ रहा है। २ भूपतियों ने उन्हें कारावास दिया, फिर भी लोगों ने उनको अपनी आँख के बराबर माना और वे उनकी महिमा गाकर मुदित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅण्णादु नऱ्पॊरुळैत् तीदॆन्वार् शिलरुलहिल् इरुप्प रन्ऱे ?
विण्णारुम् परिदियॊळि वॆरुत्तॊरुपुळ् इरुळिनदु विरुम्बल् पोन्ऱे 3
इन्नाद पिऱर्क् कॆण्णान् बारदनाट् टिऱ्किरङ्गि इदयम् नैवान्
ऑन्नारॆन् ऱॆवरु मिलान् उलहनैत्तुम् ओरुयिरॆन् रुणर्न्द ञानि
अन्नानैच् चिऱप्पडुत्तार् मेलोर् तम् पॆरुमैयॆदुम् अऱिहिलादार्
मुन्नाळिल् तुन्बिन्ऱि इन्बम् वरा दॆनप् पॆरियोर् मॊळिन्दारन्ऱे ? 4

वाऴ्ह तिलहन् नामम्—45

पल्लवि (टेक)

वाऴ्ह तिलहन् नामम् ! वाऴ्ह वाऴ्हवे !
वीऴ्ह कॊडुङ् गोन्मै ! वीऴ्ह वीऴ्हवे !

शरणङ्गळ् (चरण)

नालु दिशैयुम् स्वादन्दर्य नादम् अॅऴुहवे !
नरह मॊत्त अडिमै वाऴ्वु नैन्दु कऴिहवे !
एलु मनिदर् अऱिवै यडर्क्कुम् इरुळ् अऴिहवे
अॅन्द नाऴुम् उलहमीदिल् अच्चम् ऑऴिहवे (वाऴ्ह) 1
कल्वि यॆन्नुम् वलिमै कॊण्ड कोट्टै कट्टिनान्— नल्ल
करुत्तिना लदनैच् चूऴ्न्दोर् अहऴि वॆट्टिनान्
शॊल्विळक्क मॆन्ऱ दनिडैक् कोयिलाक्किनान्
स्वादन्दर्य मॆन्ऱदन्मेर् कॊडियॆन् तूक्किनान् (वाऴ्ह) 2
तुन्ब मॆन्नुङ् गडलैक् कडक्कुन् दोणियवन् पॆयर्
शोर्वॆन्नुम् पेयै योट्टुञ् जूऴ्च्चि यवन् पॆयर्
अन्बॆनुन् देन् ऊरित् तदुम्बुम् पुदुमलर् अवन् पेर्
आण्मैयॆन्नुम् पॊरुळैक् काट्टुम् अऱिकुऱि यवन्पेर् (वाऴ्ह) 3

हो रहे हैं। इस संसार में कुछ अविवेकी रहते ही हैं न, जो विना बिचारे अच्छी वस्तु को बुरा बता देते हैं ! यह वैसा ही है जैसा एक पक्षी (उल्लू) आकाशचारी सूर्य की किरणों से घृणा करके अँधेरे में रहना चाहता है। ३ वे ज्ञानी हैं। दूसरों की हानि न चाहनेवाले, भारत देश की स्थिति पर विचार करके दुखी होनेवाले वे किसी को अपना वैरी या विरोधी नहीं मानते हैं। वे यह धारणा रखनेवाले ज्ञानी पुरुष हैं कि सारा विश्व एक है। उनको जेल में डाला है उन लोगों ने, जो महात्मा साधु लोगों की महानता को नहीं जानते। हाँ, महात्माओं ने पहले ही कह रखा है न कि बिना पहले दुख के आये सुख नहीं आयगा ! ४

तिलक का नाम जिये (चिरंजीव रहे)—४५

जिये तिलक का नाम ! जिये ! जिये (जिन्दाबाद), गिरे (मिटे) अत्याचारी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कारावास दिया भूपों ने पर जनता महिमा गाती।
अपनी आँखों के समान प्रिय मान उन्हें, अति हरषाती ॥ ३ ॥
वे न किसी को शत्रु मानते, वसुधा को कुटुम्ब कहते।
हानि नहीं चाहते किसी की, देश-दशा लख दुख सहते ॥
महिमा से अनभिज्ञ जनों ने उन्हें जेल में डाला है।
दुख-विष पीने पर ही मिलता सौख्य-सुधा का प्याला है ॥ ४ ॥

तिलक का नाम जिये—४५

अत्याचारी शासन क्षय हो, बोलो सब मिल मुर्दाबाद।
तिलक अमर हों, तिलक अमर हों, बोलो सब मिल ज़िन्दाबाद ॥ टेक ॥
गूँज ठे अब दिशा-दिशा से (शुभ) स्वतंत्रता का नारा।
नारकीय दासता दूर हो, (हो स्वतंत्र भारत प्यारा) ॥
सुजनों की मति हरनेवाले अंधकार का क्षय होवे।
और सदा के लिए विश्व से भीषण भय का लय होवे ॥ १ ॥
अत्याचारी शासन क्षय हो, बोलो सब मिल मुर्दाबाद।
तिलक अमर हों, तिलक अमर हों, बोलो सब मिल ज़िन्दाबाद ॥ टेक ॥
जिसने सुन्दर सद्-विद्या का दृढ़तम दुर्ग बनाया है।
सद्-विचार की शुभ खाईं को चारों ओर खुदाया है ॥
मध्य व्याख्या का श्रीमन्दिर संस्थापित करवाया है।
(सुख-दायक शुभ) स्वतंत्रता का (सुन्दर) ध्वज फहराया है ॥ २ ॥
अत्याचारी शासन क्षय हो, बोलो सब मिल मुर्दाबाद।
तिलक अमर हों, तिलक अमर हों, बोलो सब मिल ज़िन्दाबाद ॥ टेक ॥
नाम तिलक का नौका बनकर पार कराता दुख-सागर।
नाम तिलक का थकन-भूत को करता नष्ट तंत्र बनकर ॥
नाम तिलक का (मधुर) प्रेम का मधु-छलकाता सुमन-समान।
नाम तिलक का पुरुषार्थी के पौरुष की (प्यारी) पहचान ॥ ३ ॥
अत्याचारी शासन क्षय हो, बोलो सब मिल मुर्दाबाद।
तिलक अमर हों, तिलक अमर हों, बोलो सब मिल ज़िन्दाबाद ॥ टेक ॥

शासन ! मिटे, मिटे। (टेक) चारों दिशाओं में स्वतंत्रता का (नारा) उठे। नरक-सा दास-जीवन गलकर दूर हो जाय। समर्थ मनुष्यों की बुद्धि को घोंटनेवाला अन्धकार मिटे। सदा के लिए संसार में भय का अभाव हो जाय। (जिये०) १ उसने विद्या नामक सुदृढ़ गढ़ बनाया। श्रेष्ठ विचारों की उसके चारों ओर परिखा खोदी। उसके मध्य (गीतारहस्य शीर्षक भगवद्गीता की व्याख्या नामक) मन्दिर स्थापित किया। उसके ऊपर स्वातन्त्र्य नामक झंडा फहरा दिया। (जिये०) २ उसका नाम दुःख-सागर पार करानेवाली नाव है। उसका नाम थकावट रूपी भूत को भगानेवाला तन्त्र है। उसका नाम ताज़ा सुमन है, जिसमें प्रेम का मधु उत्पन्न होकर छलकता है। उसका नाम पौरुष रूपी वस्तु का परिचायक चिह्न है। (जिये०) ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिलह मुनिवर् कोन्—46

नामहट्कुप् पॆरुन्दॊण्डियऱिप् पल्, नाट्टिनोर् तम् कलैयिलुम् अव्ववर्
तामहत्तु वियप्पप् पयिन्ऱॊरु, शात्तिरक् कडलॆन्न विळङ्गुवोन्
मामहट्कुप् पिऱप्पिड माह मुन्, वाळ्न्दिन् नाळिल् वऱण्डयर् बारदप्
पूम हट्कु मनन् दुडित्ते यिवळ्, पुन्मै पोक्कुवल् ऍन्ऱ विरदमे 1
नॆञ्ज हत्तोर् कणत्तिलुम् नीङ्गिलान्, नीदमेयोर् उरुवॆन्न् तोन्ऱिनोन्
वञ्जहत्तैप् पहैयॆन्क् कॊण्डबै, माय्क्कु मारु मनत्तिर् कॊदिक्किन्ऱोन्
तुञ्जुमट्टुमिप् पारद नाट्टिऱ्के, तॊण्डिळैक्कत् तुणिन्दवर् यावरुम्
अञ्जॆऴुत् तिनैच् चॆवर् मॊळिदल् पोल्, अन् बॊडोदुम् पॆयरुडै यारियन् 2
वीर मिक्क मराट्टियर् आदरम्, मेविप् पारद देवि तिरुनुदल्
आर वॆत्त तिलह मॆनत् तिहळ्, ऐयन् नल्लिशैप् पालगङ् गावरन्
शेर लर्क्कु निनैक्क वुन् दीयॆन्, निन्ऱ ऍङ्गळ् तिलह मुनिवर् कोन्
शीर डिक्कम लत्तिनै वाळ्त्तुवेन्, शिन्दै तूय्मै पॆऱुहॆन्नच् चिन्दित्ते 3

लाजपदि—47

विण्णहत्ते इरवि तनै वॆत्तालुम्, अदन् कदिर्हळ् विरैन्दु वन्दु
कण्णहत्ते ऒळितरुदल् काण्गिलमो ?, निन्नै यवर् कनन्ऱिन् नाट्टु
मण्णहत्ते वाळादु पुऱञ्जॆय्दुम्, याङ्गळॆलाम् मऱक्कॊणा दॆम्
ऍण्णहत्ते लाजपति ! इडैयिन्ऱि, नी वळर्दर्कॆन् शॆय्वारे ? 1

तिलक मुनिराज—४६

सरस्वती देवी की बड़ी सेवा करके, अनेक देशों के लोगों के शास्त्रों का, उनको विस्मय में डालते हुए अभ्यास कर शास्त्र-सागर रूप में शोभायमान रहने वाले, (उन तिलक के०) १ (पहले) लक्ष्मी का मन्दिर रहने के पश्चात् आजकल निर्धन होकर शिथिल हुए भारत देश की देवी के लिए मन में तड़पकर उसकी दरिद्रता को दूर करने का व्रत जिनके मन से एक क्षण के लिए भी न भुलाया गया है, जो न्याय की मूर्ति के रूप में प्रकट हुए हैं, वंचना को शत्रु मानकर उसको मिटाने के वास्ते मन में उबलते रहनेवाले, सुप्त भारत देश की सेवा करने का निश्चय जो कर चुके हैं, वे लोग उसी प्रकार ही जिनका नाम प्रेम से लेते हैं, जैसे शैव शिवजी के पंचाक्षर (मंत्र नमः शिवाय) का जाप करते हैं, (उन तिलक के०) २ वीरतापूर्ण मराठे लोगों ने गौरव बुद्धि के साथ भारत देवी के श्रीयुक्त ललाट में जिसे तिलक के रूप में लगा लिया, ऐसे जान पड़नेवाले श्रीमान्, सुयश-पात्र बाल गंगाधर, शत्रुओं के लिए जिनका स्मरण भी अग्नि के समान प्रतीत हो, ऐसे हमारे तिलकमुनिराज के श्रीचरणों की वन्दना मैं यह चाहकर करूंगा कि मेरा चित्त पवित्र हो। ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिलक मुनिराज—४६

सरस्वती के सच्चे सेवक, शास्त्र-जगत से भर सागर।
देश-विदेशों के लोगों के मन में देते विस्मय भर॥
जो लक्ष्मी-मंदिर था पहिले किन्तु आज जो है निर्धन।
उस भारत की देख दुर्दशा हुआ व्यथित जिनका मृदु मन॥
देश-दीनता दूर करूँगा, ऐसा (शुभ) व्रत अपनाकर।
भूले कभी नहीं वे उसको यत्नशील थे जीवन भर॥ १ ॥

न्याय-मूर्ति थे, प्रवंचना को शत्रु समझनेवाले थे।
शत्रुनाश करने को मन में सदा उबलनेवाले थे॥
सुप्त देश भारत की सेवा का निश्चय करनेवाले।
(देश जाति के दारुण दुख को, दुर्दिन को हरनेवाले)।
पंचाक्षर शिव-मंत्र भक्ति से जपते जैसे शिवपूजक।
उसी भाँति ही नाम तिलक का जपते उनके आराधक॥ २ ॥

जिनका गौरव वीर मराठों ने अत्यन्त बढ़ाया है।
भारतमाता के ललाट में तिलक-समान सजाया है॥
जिनका स्मरण शत्रुओं को लगता है दाहक अग्नि-समान।
(ऐसे पूज्य बाल गंगाधर) तिलक महोदय (कीर्तिनिधान)॥
उन मुनिराज-समान तिलक के चरणों का करके वन्दन।
आज पवित्र करूँगा (निज तन,) आज पवित्र करूँगा मन॥ ३ ॥

लाजपतराय—४७

यद्यपि उच्च गगन-मंडल में करता है रवि सदा निवास।
तो भी उसकी किरणें आकर फैलातीं भूमि पर प्रकाश॥
क्रोधित हो निर्दय शासक ने किया देश से निष्कासन।
मनमंदिर में बसे हुए तुम, भूल न सकते भारत-जन॥
दिया निकाल देश से तुमको (कैसे दशा सँभालेंगे)।
कैसे सबके मनमंदिर से तुमको कहो निकालेंगे॥ १ ॥

लाजपति (लाजपतराय)—४७

आकाश में ऊपर रवि रहे, तो भी क्या हम नहीं देखते कि उनकी किरणें जल्दी आकर हमारी आँखों को प्रकाश देती हैं? आपसे अप्रसन्न होकर उन्होंने आपको इस देश की धरती में रहने नहीं दिया, देश से निष्कासित कर दिया तो भी हम आपको भूल नहीं पाते और आप निरन्तर हमारे मन में संवर्धित रहते हैं— तो फिर वे (शासकगण) क्या कर सकेंगे? १ एक मनुष्य को अनेक देशों के पार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऒरुमनिदन् तनैप्पऱ्ऱिप् पलनाडु, कडत्तियवऱ्कु ऊऱु शॆय्दल्
अरुमैयिलै; ऎळिदिनवर् पुरिन्दिट्टा, रॆन्ऱिडिनुम् अन्द मेलोन्
पॆरुमैयॆनन् गरिन्दवनैत् तॆय्वमॆन, नॆञ्जिनुळे पॆट्पिऱ् पेणि
वरुमनिदर् ऎण्णऱ्ऱार् इवरैयॆलाम्, ओट्टियॆवर् वाळ्व दिङ्गे ? 2
पेरन्बु शॆय्दारिल् यावरे, पॆरुन्दुयरम् पिळैत्तु निन्ऱार् ?
आरन्बु नारणन् पाल् इरणियन् शेय्, शॆय्ददनाल् अवनुक् कुऱ्ऱ
कोरङ्गळ् शोलत् तहुमो बारद नाट्, टिऱ्पक्ति कुलवि वाळुम्
वीरङ्गोळ् मनमुडैयार् कॊडुन्दुयरम्, पलवडैदल् वियत्तऱ् कॊन्ऱो ? 3

लाज पदियित् पिरलाबम्—48

कण्णिहळ् (चरण)

नाडिळन्दु मक्कळैयुम् नल्लाळैयुम् पिरिन्दु
वीडिळन्दिङ् गुऱ्ऱेन् विदियिनै यॆन् शॊल्हेने ? 1
वेदमुनि पोन्ऱोर् विरुत्तरा मॆन्दैयिरु
पादमलर् कण्डु परवप् पॆरुवेनो ? 2
आशैक् कुमरन् अर्च्चुननैप् पोल्वान् ऱन्
माशऱ्ऱ शोदि वदनमिनिक् काण् बेनो ? 3
अन्ऱिलैप् पोन् रॆन्नै अरैक्कणमेनुम् पिरिन्दाल्
कुन्ऱि मनञ् जोर्वाळिक् कोलम् पॊऱुप्पाळो ? 4
वीडुम् उऱवुम् वॆऱुत्तालुम् ऎन्नरुमै
नाडु पिरिन्द नलिविनुक् कॆन् शॆय्हेने ? 5
आदिमरै तोन्ऱियनल् लारिय नाडॆन्नाळुम्
नीदिमरै विन्ऱि निलैत्त तिरुनाडु 6

(देश-निकाले की सजा देकर) भेजना, उसे कष्ट देना कठिन नहीं है। उन्होंने आसानी से वह काम कर दिया। तो भी, आज उस महान व्यक्ति की महानता को जानकर, उसे ईश्वर के रूप में अपने मन में स्थापित करके, उसका आदर करते रहते असंख्यक लोग हैं। क्या इन सबको (निष्कासित) करके वे (शासक) यहाँ रह पायेंगे ? ३ क्या अत्यधिक प्रेम करनेवाले अतिशय दुख से बचे रहे ? हिरण्यकशिपु का पुत्र (प्रह्लाद) श्रीनारायण से गहरा प्रेम करता था। फलस्वरूप, उसको जो घोर संकट सहने पड़े, वे क्या कथनीय हैं ? भारत देश से भक्ति करनेवाले वीर-मन लोगों का कठोर दुख पाना क्या कोई आश्चर्य की बात है ? ३

लाजपति का प्रलाप—४८

देश छोड़ना पड़ा (मुझे) ! मैं संतानों से, प्रिया से बिछुड़ा ! घर-बार छूट

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रिय स्वदेश से एक व्यक्ति को कठिन न निर्वासित करना।
कठिन नहीं हैं एक व्यक्ति को भय देना त्रासित करना॥
उस निर्वासित महापुरुष की मंजु महत्ता को लखकर।
ईश्वर मान पूजते सब जन मन-मंदिर में स्थापित कर।
इन पूजन करनेवालों को क्या निकाल वे पायेंगे।
यदि निकाल देंगे इन सबको, कैसे खुद रह पायेंगे॥ २ ॥
प्रबल प्रेम के करनेवाले महाप्रबल दुख पाते हैं।
(सुनो सुनो इतिहास पुराना तुमको आज सुनाते हैं)॥
सुत प्रह्लाद हिरण्यकशिपु का, किया विष्णु से उत्कट प्रीति।
सहे घोर संकट असह्य थे (पितु की असहनीय दुर्नीति)॥
भारत के हम वीर भक्त हैं, है किसको यह ज्ञात नहीं?।
फिर उनका कठोर दुख पाना कुछ विस्मय की बात नहीं॥ ३ ॥

लाजपति का प्रलाप—४८

देश छोड़ना पड़ा मुझे पत्नी औ पुत्रों से बिछुड़ा।
छूट गया घर-बार हाय विधि! आकर के मैं यहाँ पड़ा॥ १ ॥
वैदिक-मुनि-सम वृद्ध पिता के चरणों का करके दर्शन।
हाय दैव! तू मुझे बता दे फिर कर पाऊँगा वन्दन॥ २ ॥
क्या मैं अर्जुन के समान हा! (कभी भाग्यशाली हूँगा)।
क्या निजप्रिय सुत का मैं अपलक ज्योतिर्मय मुख देखूँगा?॥ ३ ॥
पल भर बिछुड़ हमारी पत्नी होती चकवी-सी विह्वल।
अब मेरी यह दशा देख, किस भाँति सकेगी भला सँभल॥ ४ ॥
कुटुम्बियों का विरह सहूँगा, गृह-बिछोह बिसराऊँगा।
किन्तु देश की विरह-वेदना मैं कैसे सह पाऊँगा॥ ५ ॥
आर्य देश है देश हमारा प्रकट हुए थे वेद यहाँ।
न्याय यहाँ पर स्थायी रहता (जग में ऐसा देश कहाँ?)॥ ६ ॥

गया! यहाँ आ पड़ा हूँ! हाय! प्रारब्ध का क्या कहूँ? १ क्या मैं वेद (-काल के) मुनि के समान अपने वृद्ध पिता के दोनों चरणों के फिर से दर्शन करके उनकी वन्दना कर पाऊँगा? २ क्या मैं अर्जुन के समान, अपने प्यारे पुत्र के निष्कलंक ज्योतिर्मय वदन को फिर कभी देख पाऊँगा? ३ आधे क्षण के लिए भी मुझसे अलग होना पड़े, तो अरुरिल (चक्रवाकी) के समान (मेरी स्त्री) क्लान्त हो जाएगी; उसका मन मर जायगा। वे मेरी इस स्थिति को देखें तो क्या उसे सह सकेंगी? ४ शायद मैं घर का त्याग व रिश्तेदारों का बिछुड़ना सह भी सकूँ, तो भी अपने प्यारे देश से बिछुड़ने से उत्पन्न दैन्य को कैसे सहन कर पाऊँगा? ५ मेरा देश ऐसा आर्य देश है, जहाँ आदिवेद प्रकट हुए थे; और जहाँ न्याय अक्षय तथा प्रगट रूप से स्थायी रहता है। ६ वह दिव्य सिंधु तथा उससे मिलनेवाली पाँच नदियों से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सिन्दु वॆन्नुम् देय्वत् तिरुनदियुम् मऱ्ऱदिऱ्चेर्
ऐन्दु मणि याऱम् अळिक्कुम् पुन्नल् नाडु 7
ऐम् बुलन्नै वॆन्ऱ अऱवोर्क्कुम् माऱ्ऱलर्तम्
वॆम् बुलन्नै वॆन्ऱ ऍण्णिल् वीरर्क्कुन् दाय्नाडु 8
नल्लऱत्तै नाट्टुदऱ्कु नम्बॆरुमान् कौरवराम्
पुल्लियरैच् चॆऱ्ऱाळ्न्द पुन्निदप् पॆरुनाडु 9
कन्नाणुन् दिण्डोट् कळवीरन् पार्त्तन्नॊरु
विन्ना णॊलि केट्ट मेन्मैत् तिरुनाडु 10
कन्न निरुन्द करुणै निलम् तर्मन्नॆन्नुम्
मन्नन् अऱङ्गळ् वळर्त्त पुहळ्नाडु 11
आरियर् तम् तर्मनिलै आदरिप्पान् वीट्टुमन्नार्
नारियर् तङ्गादल् तुऱन्दिरुन्द नन्नाडु 12
वीमन् वळर्न्द विऱल् नाडु विल्लशुवत्
तामन्निरुन्दु शमर् पुरिन्द वीर निलम् 13
शीक्क रॆन्नुम् ऍङ्गळ् विऱर् चिङ्गङ्गळ् वाळ्तरुदल्
आक्क मुयर् कुन्ऱम् अडर्न् दिरुक्कुम् पॊन्नाडु 14
आरियर् पाळाहा दरुमऱैयिन् उण्मै तन्द
शीरियर् मॆय्ज्ञान दयानन्दर् तिरुनाडु 15
ऍन्नरुमैप् पाञ्जालम् ऍन्ऱेन्नुम् काण्बेनो ?
पन्नरिय तुन्बम् पडर्न्दिङ्गे माय्वेनो ? 16
एदॆल्लाम् बारदत्ते इन्नाळ् नडप्पन्नवो ?
एदॆल्लाम् यान्नरियादु ऍन् मन्निदर् पट्टन्नरो ? 17
ऍन्नै निनैत्तुम् इरङ्गुवरो ? अल्लादु
पिन्नैत् तुयर्हळिलॆन् पेरुम्मऱन् दिट्टारो ? 18
तॊण्डु पट्टु वाडुमॆन्ऱन् तूय पॆरु नाट्टिल्
कॊण्डु विट्टङ् गॆन्नैयुडन् कॊन्ऱालुम् इन्बुऱुवेन् 19

सिंचित जलसमृद्ध देश है। ७ वह पंचेन्द्रियजयी धर्मशील लोगों की तथा शत्रुजयी असंख्य वीरों की मातृभूमि है। ८ इस पुनीत विशाल देश में हमारे प्रभु (श्रीकृष्ण) ने धर्म-संस्थापना के लिए अधर्मी कौरवों को हराकर नष्ट किया था। ९ प्रस्तर-हासी (प्रस्तर को मात करनेवाले), कठोर-भुज पार्थ के धनुष की टंकार की गूंज से अभ्यस्त श्रेष्ठ भूमि है मेरा देश। १० कर्ण का करुणा-भरा वासस्थल मेरा यह देश ऐसा यशस्वी देश है, जहां उस धर्मपुत्र ने अनेक धर्म पाले थे। ११ आर्य (अपने) लोगों की धार्मिक स्थिति के आदर में भीष्म ने स्त्री का प्रेम त्यागा था इसी देश में। १२ यह वह वीर देश है, जहां भीम बढ़-पले थे; धनुर्धर अश्वत्थामा ने रहकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सिन्ध, (चिनाब, व्यास औ रावी, झेलम, सतजल) से सिंचित।
(हरा भरा है) देश हमारा निर्मल जल से परिपूरित ॥ ७ ॥
(शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्श, इन पाँचों विषयों के विजयी)।
धार्मिक इन्द्रियजयी हुए हैं वीर यहीं पर शत्रुजयी ॥ ८ ॥
इसी विशाल पुनीत देश में पैदा हुए कृष्ण (भगवान)।
धर्म थापना-हेतु कौरवों अधर्मियों का मिटा निशान ॥ ९ ॥
प्रस्तर से भी कर कठोर थे अर्जुन के धनु की टंकार।
उसी पराक्रम के अभ्यासी भारतवासी वीर जुझार ॥ १० ॥
यही कर्ण का करुण वास-थल यही यशस्वी देश (विमल)।
धर्मपुत्र ने यहीं निबाहे (जग-हित-कारक-) धर्म सकल ॥ ११ ॥
आर्यधर्म के प्रतिपालन में त्याग दिया था वनिता-सुख।
(जो आजन्म ब्रह्मचारी थे) हुए यहीं वे भीष्म (प्रमुख) ॥ १२ ॥
यहीं भीम उत्पन्न हुए थे और यहीं पर पले, बढ़े।
यहीं धनुर्धर अश्वत्थामा के धन्वा से तीर कढ़े ॥ १३ ॥
सिंह-समान सिक्ख वीरों का जन्मस्थल है मेरा देश।
(नभचुम्बी) उन्नत शिखरों से घिरा (विमल है) मेरा देश ॥ १४ ॥
करी आर्य-गौरव की रक्षा (पाखंडों का किया विनाश)।
यहीं ज्ञानऋषि दयानंद ने रचा ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' ॥ १५ ॥
अपने प्रिय पंजाब देश को कभी देख क्या पाऊँगा ? ॥
दुःसह दुःखों से पीड़ित हो या कि यहीं मर जाऊँगा ? ॥ १६ ॥
आज हमारे भारत में, जाने क्या-क्या होता होगा।
क्या बीता होगा जनता पर (जन-जीवन रोता होगा) ॥ १७ ॥
मुझे याद कर भारतवासी जन क्या अब रोते होंगे।
भूल गये या मुझे संकटों में (सुध-बुध खोते होंगे) ॥ १८ ॥
पावन देश विशाल हमारा पराधीन दुख-जर्जर है।
वहीं मुझे, यदि मारा जाये तो यह (अतिशय) सुखकर है ॥ १९ ॥

युद्ध किया था। १३ सिक्खों के वीर केसरियों के रहने से उन्नत पर्वतों से घिरा देश है मेरा वह देश। १४ आर्यों को नष्ट होने से बचाने के लिए वेद के (सत्यार्थप्रकाश के) रचयिता श्रेष्ठ, सत्यज्ञानी दयानन्द का देश है मेरा देश। १५ हाय! मेरा प्यारा पांचाल देश— क्या कभी उसको फिर से मैं देख पाऊँगा ? या मैं अकथनीय दुखों द्वारा आक्रान्त होने से यहीं मर जाऊँगा ? १६ भारत में क्या-क्या हो रहा होगा ? मेरे अनजाने मेरे लोगों पर क्या ही बीता होगा ? १७ क्या वे मुझे याद करके दुखी होंगे ? या वे अन्य संकटों के बीच मेरा नाम भी भूल गये होंगे ? १८ गुलाम बनकर मेरा पवित्र विशाल देश संकट-जर्जर हुआ है। वहीं ले जाकर मुझे मारा भी जाय, तो मैं उसमें सुख ही मानूंगा। १९ कितने ही जन्मों के लिए मुझे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅत्तनै जन्मङ्गळ् इरुट् चिरैयि लिट्टालुम्
तत्तुपुनर् पाञ्जालन् दनिल्वैत्ताल् वाडुहिलेन् 20

व-उ-शिक्कु वाळ्त्तु—49

वेळाळन् शिरै पुहुन्दान् तमिळहत्तार्, मन्ननॅन मीण्डान् अन्रे
केळाद कदैविरैबिर् केट्पाय् नी, वरुन्दलै अॅन् केण्मैक् कोवे !
ताळाण्मै शिरिदु कॊलो याम् पुरिवेम्, नी इरैक्कूत् तवङ्गळ् आर्रि
वेळाण्मै निन् तुणैवर् पॅरुहॅनवे, वाळ्त्तुदि नी वाळ्दि ! वाळ्दि !

6 पिर नाडुहळ्

माजिनियिन् शबदम्—50

पेररुट् कडवुळ् तिरुवडि याणै, पिरप्पळित् तॅमैयॅलाम् पुरक्कुम्
तारणि विळक्काम् अॅन्नरु नाट्टिन्, तवप्पॅय रदन्मिशै याणै
पारवॅन् दुयर्हळ् तायत्तिरु नाट्टिन्, पणिक्कॅनप् पलविदत् तुळन्दु
वीरर् नम्नाडु वाळ्हॅन वीळ्न्द विळुमियोर् तिरुप्पॅय राणै 1
ईशनिङ् गॅनक्कुम् अॅन्नुडन् पिरन्दोर्, यावर्क्कुम् इयर्कैयिन् अळित्त
शमिन् बुरुवान् अॅनक्कवन् पणित्त, शीरुय रर्ङ्गळि नाणै
माशरु मन्नर् डायिनैप् पयन्दॅन्, वळिक्कॅलाम् उरैयुळाम् नाट्टिन्
आशैयिङ् गॅवर्क्कुम् इयर्कैया मन्रो ? अत्तहै यन्बित् मीदाणै 2

जेल में डालें, पर यदि तेज़ी से बहनेवाली नदियों के पांचाल देश में मुझे रखेंगे, तो मैं नहीं मुरझाऊँगा। २०

चिदंबरम् पिळ्ळै को बधाई—४९

हे मेरे मित्रराज ! कृषक जेल में प्रविष्ट हुआ और तमिळनाडुवासियों के राजा के रूप में बाहर आया— यह पहले अनसुनी कहानी जल्दी सुनोगे। तुम दुखी मत होओ। क्या हम कम वीरता दिखायँगे ? तुम ईश्वर को लक्ष्य करके तपस्या करो और यह आशीर्वाद दो कि तुम्हारे लोग स्वतन्त्र बनें ! तुम्हारी जय हो !

६ अन्य देश

माज़िनी की शपथ—५०

बड़े कृपालु ईश्वर के चरणों की शपथ। मेरा प्यारा देश, हमें जन्म देकर हमारा पालन करनेवाला, विश्व का दीप, (जो है) उसके पावन नाम की शपथ; श्री मातृभूमि की सेवा में विविध भारी तथा कठोर दुख को झेलनेवाले वीरों तथा अपने देश को जिलाने के अर्थ जो बलि हो गये, उन महानुभावों के मान्य नामों की सौगन्द; १ मुझे और मेरे भाइयों को ईश्वर ने प्यार से सहज ही यह देश दिया है। उसको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

द्रुत सलिला-युत देश पञ्चनद में यदि मैं रह पाऊँगा।
जन्म-जन्म यदि रहूँ जेल में, कभी नहीं मुरझाऊँगा ॥ २० ॥

चिदम्बरम् पिळ्ळै को बधाई—४९

मित्रराज ! तुम दुःखी मत हो (तज दो दारुण विषम विषाद)।
शीघ्र सुनोगे कानों से तुम यह आश्चर्यजनक संवाद ॥
सज़ा भोगने को किसान जो गया जेल में पहुँचाया।
तमिळवासियों का राजा बन कारा से बाहर आया ॥ १ ॥
जय हो, जय हो, जय जय जय हो, (बोल रहे हैं हम साह्लाद)।
ईश्वर का तप करो और दो हमको यह शुभ आशिर्वाद ॥
हम अनुपम वीरता दिखायें (नष्ट करें अरि का षडयन्त्र)।
(दुख-प्रद परतंत्रता दूर हो) भारतवासी बनें स्वतंत्र ॥ २ ॥

माजिनी का शपथ—५०

(जो रक्षा करता रहता है अविरत सदा चराचर की)।
अति अपार करुणा-सागर की शपथ मुझे उस ईश्वर की ॥
जिसनें जन्म दिया है हमको जो पालन करनेवाला।
निखिल विश्व का दीपक बनकर जो फैलाता उजियाला ॥
जो मेरा प्यारा स्वदेश है, देता जो सुख अकथ मुझे।
उस सौभाग्य-समन्वित पावन देश-नाम की शपथ मुझे ॥
मातृभूमि की सेवा के हित कष्ट जिन्होंनें अमित सहे।
देश जिलानें को जीवन-भर करते सतत प्रयत्न रहे ॥
सदा देश के जीवन के हित किया प्राण-बलिदान अकथ।
उस सम्मान्य महाभागों के मान्य नाम की मुझे शपथ ॥ १ ॥
मुझे सबन्धु, सनेह ईश ने इस स्वदेश में उपजाया।
जीवन-सुख-हित शुभ धर्मों का ज्ञान हमें है सिखलाया ॥
(चलूँ धर्म-पथ पर, पापी-जन नहीं कर सकें विपथ मुझे)।
उन उत्कृष्ट सभी धर्मों की शपथ मुझे है शपथ मुझे ॥
मेरी निष्कलंक माता को है जिसनें उत्पन्न किया।
और वंशजों के रहनें को स्थल जिसनें सम्पन्न दिया ॥
उस स्वदेश की भक्ति-भावना स्वाभाविक है अकथ मुझे।
उस स्वाभाविक देश-प्रेम की शपथ मुझे है, शपथ मुझे ॥ २ ॥

सुखी बनाने के निमित्त मुझे कुछ श्रेष्ठ धर्मों का ज्ञान भी दिया है। उन उत्कृष्ट धर्मों की शपथ; मेरी अकलंक माता को पैदा करके, मेरे वंशजों को रहने के लिए भी स्थान देनेवाले इस देश पर प्रेम रखना किसी के लिए भी स्वाभाविक है न ! उस प्रेम की शपथ ! २ बुराई करना, अतिक्रमाचरण, आर्जवहीन शासन, अन्याय आदि के प्रति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तीयत पुरिदल् मुऱैतवि रुडैमै, शॆम्मैतीर् अरशियल् अनीदि,
आयवऱ् ऱॆन्नॆञ् जियऱ्कैयिन् ऍय्दुम्, अरुम्बहै यदन् मिशै याणै
तेयमॊन् ऱऱ्ऱेन् नऱ्कुडिक् कुरिय, उरिमैहळ् शिऱिदॆनु मिल्लेन्
तूयशी रुडैत्ताम् शुदन्दिरत् तुवशम्, तुळङ्गिला नाट्टिडैप् पिऱन्देन् 3
मऱ्ऱै नाट्टवर् मुन् निन्ऱिडुम् पोऴ्दु, मण्डुमॆन् वॆट्कत्ति नाणै
मुऱ्ऱिय वीडु पॆऱ हॆनप् पडैप्पुऱ्ऱु, अच्चॆयल् मुडित्तिड वलिमै
अऱ्ऱदाल् मरुहुम् ऍन्नुयिर्क् कदनिल्, आऱ्न्द पेरावलि नाणै
नऱ्ऱवम् पुरियप् पिऱन्द दायिनुमिन्, नलनरु मडिमैयिन् कुणत्ताल् 4
वलियिऴन् दिरुक्कुम् ऍन्नुयिर्क् कदन्गण्, वळर्न्दिडुम् आशैमी दाणै
मलिवुऱु शिऱप्पिन् ऍम्मुडै मुन्नोर्, माण्बदन् निनैविन् मीदाणै
मॆलिवुडन् इन्नाळ् याङ्गळ् वीऴ्न्दिरुक्कुम्, वीऴ्च्चियि नुणर्च्चि मी दाणै
पॊलिवुऱु पुदल्वर् तूक्किनि लिऱन्दुम्, पुन्शिऱैक् कळत्तिडै यऴिन्दुम् 5
वेऱ्ऱु वाडुहऴिल् अवर् तुरत्तुण्डुम्, मॆय्हुलैन् दिऱन्दुमे पडुदल्
आऱ्ऱ हिलाराय् ऍम्मरु नाट्टिन्, अन्नैमार् अऴुङ्गणी राणै
माऱ्ऱल रॆङ्गळ् कोडियर्क् किऴैक्कुम्; वहुक्कॊणात् तुयर्हऴि नाणै
एऱ्ऱ इव्वाणै यनैत्तु मेऱ्कॊण्डे, यान्शॆयुञ् शबदङ्गळ् इवैये 6
कडवुऴिन् नाट्टिऱ् कीन्ददोर् पुनिदक्, कट्टळै तन्निनुम् अदनैत्
तिडनुऱ निऱुव मुयलुदल् मऱ्ऱित्, तेशत्ते पिऱन्दवर्क् कॆल्लाम्

मेरे मन में सहज रूप से जो कठोर शत्रुता उत्पन्न होती है, उसकी शपथ; मैं देशहीन हो गया, प्रजा का कोई स्वत्व नहीं रहा। पवित्रता तथा श्रेष्ठता से युक्त स्वतन्त्रता का ध्वज जिसमें शोभायमान नहीं है, उस देश में मैं पैदा हो गया। ३ अन्य देशवासियों के समक्ष खड़े होते समय जो लज्जा मेरे मन को आक्रान्त करके उमड़ती है, उस लज्जा की सौगन्द; पूर्ण स्वतन्त्र बनने को मैं पैदा किया गया। पर मुझमें वह काम पूरा करने की शक्ति नहीं रह गयी। उसी कारण से मेरे प्राण ही छटपटा रहे हैं। उन प्राणों में उस स्वतन्त्रता का प्रेम समाया हुआ है। उस बड़े प्रेम की शपथ। श्रेष्ठ तपस्या करने के लिए मेरे प्राण बने हैं। तो भी इस निगोड़ी दासता के गुण से—४ मेरे प्राण निर्बल हो गये हैं। पर उनके प्रति जो मेरी आसक्ति बढ़ रही है, उसकी शपथ। अपार श्रेष्ठताओं के हमारे पुरखों के बड़प्पन के स्मरण की शपथ; आज क्षीण होकर जो हम गिर गये हैं, उस पतन की भावना की शपथ; (इस मातृभूमि के) शोभायुक्त पुत्र फाँसी पर मरे; घिनौनी कारा में बन्द होकर मिटे। ५ वे अन्य देशों में निर्वासित हुए, शरीर जर्जर होकर वे मरे भी। माताएँ इसके विरुद्ध कुछ कर न सकती हैं और उस दुख को सह नहीं सकती हैं और आँसू बहा रही हैं। उन आँसुओं की सौगन्द। (हमारे) शत्रु हम लोगों पर जो अत्याचार कर रहे हैं, उनसे उत्पन्न अपार दुःख की शपथ। ६ इन सब सौगन्दों को ध्यान रखकर मैं निम्नोक्त प्रतिज्ञाएँ करता हूँ —ईश्वर ने इस देश के लिए जो पवित्र आज्ञा दी है, उसपर, उसको सुदृढ़ रूप से स्थापित करना, इस देश में जनमे सभी लोगों का सहज कर्तव्य है

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पर-निन्दा आचरण-हीनता औ' अन्याय कुटिल शासन।
इन सबके प्रति घोर घृणा की शपथ मुझे है सुनो सुजन॥
देश-हीन मैं हुआ (देश में मेरा रहा महत्त्व नहीं)।
प्रजाजनों को प्राप्त कहीं भी कोई मौलिक स्वत्व नहीं॥
पावन श्रेष्ठ नहीं फहराती स्वतंत्रता की ध्वजा जहाँ।
(इसी खेद की शपथ मुझे है) हुआ हाय! उत्पन्न वहाँ॥ ३॥
अन्य देश वालों के सम्मुख लज्जा करती क्लांत मुझे।
उस लज्जा की शपथ मुझे है, उस लज्जा की शपथ मुझे॥
पूर्ण स्वतंत्र बनूँ इस कारण किया गया उत्पन्न मुझे।
पूर्ण काम क्यों हों? अशक्ति ने (बना दिया अवसन्न मुझे)॥
इस कारण छटपटा रहे हैं व्याकुल होकर मेरे प्राण।
उन प्राणों में स्वतंत्रता का भरा (अलौकिक) प्रेम महान॥
(स्वतंत्रता का प्रेम अलौकिक लगता अतिशय अकथ मुझे)।
स्वतंत्रता के अकथ प्रेम की शपथ मुझे है, शपथ मुझे॥ ४॥

श्रेष्ठ तपस्या करने के हित बने हमारे प्राण प्रबल।
पर दुरन्त दासता-ग्रस्त हो मेरे प्राण हुए निर्बल॥
तो भी उन पर आज बढ़ रही है मेरी आसक्ति (अकथ)।
उस अगाध आसक्ति (अकथ) की मुझे शपथ है, मुझे शपथ॥
श्रेष्ठ गुणों से मंडित पुरखों की महिमा (अत्यन्त अकथ)।
उस महिमा की मुझे शपथ है, उस महिमा की मुझे शपथ॥
दीन-हीन बन गये आज हम, हुआ पतन (अत्यन्त अकथ)।
अधःपतन की मुझे शपथ है, अधःपतन की मुझे शपथ॥ ५॥
अगणित प्यारे देशसुतों को मिली हाय! भीषण फाँसी।
बने असंख्य देश-सुत दुख-प्रद घृणित जेल के भी वासी।
हुए देश-सुत हाय! हज़ारों परदेशों में निर्वासित।
तन-मन जर्जर हुए, हुए वे अपने प्राणों से वञ्चित॥
अत्याचारों के विरुद्ध कुछ भी न जननि कह सकती हैं।
बहा रही हैं (अविरल) आँसू, दुःख नहीं सह सकती हैं॥
(माता के नयनों के आँसू दुःख देते हैं अकथ मुझे)।
माँ के बहते अश्रुकणों की शपथ मुझे है, शपथ मुझे॥ ६॥
इन सब शपथों को खाकर के (मन में कर धीरज धारण)।
(देश-जाति की सेवा के हित) करता हूँ अब मैं ये प्रण॥
ईश्वर ने इस देश के लिए दी है जो आज्ञा पावन।
उस आज्ञा का सुदृढ़ रूप से करना है मुझको पालन॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उडनुऱ कडमै याहुमॆन् बदिनुम्, ऊन्ऱिय नम्बुदल् कॊण्डुम्
तडनिल मिशैयोर् शादियै इऱैवन्, शमैहॆन्नप् पणिप्पन्नेल् अदुतान् 7
शमैदलुक् कुरिय तिऱमैयुम् अदऱ्कुत्, तन्दुळ नॆन्बदै यऱिन्दुम्
अमैयुमत् तिऱमै जनङ्गळैच् चारुम्, अन्नवर् तमक्कॆन्त् तामे
तमैयल देवर्हळ् तुणैयु मिल्लादु, तम्मरुन् दिऱमैयैच् चॆलुत्तल्
शुमैयॆन्नप् पॊऱुप्पिन् शॆयत्तिनुक् कडुवे, शूळ्च्चियान् ऍन्बदै यऱिन्दुम् 8
करुममुऱ् जॊन्द नलत्तिन्नैच् चिऱिदुम्, करुदिडा दळित्तलुन् वान्ने
तरुमसाम् ऍन्ऱुम् ऒऱ्ऱुमै योडु, तळर्विलाच् चिन्दन्नै कॊळ्ळे
पॆरुमैकॊळ् वलियाम् ऍन्ऱुमे मन्नत्तिऱ्, पॆयर्न्दिडा उऱुदिमेऱ् कॊण्डुम्
अरुमैशाल् शबदमिवै पुरि हिन्ऱेन्, आणह ळन्नैत्तु मुऱ्कॊण्डे 9
ऍन्नुडनॊत्त तरुमत्तै येऱ्ऱार्, इयैन्द इव् वालिबर् शबैक्के
तन्नुडल् पॊरुळुम् आवियु मॆल्लाम्, दत्तमा वळङ्गिन्नेन्; ऍङ्गळ्
पॊन्नुमर् नाट्टै ऒऱ्ऱुमै युडैत्ताय्च्, चुदन्दिरम् पूण्डडु वाहि
इन्नुमोर् नाट्टिन् शार्विल दाहिक्, कुडियर शियन्ऱदा यिलह 10
इवरुडन् यानुम् इणङ्गिये यॆन्ऱुम्, इदुवलार् पिऱतॊळि लिलन्नायत्
तवऱऱु मुयऱ्चि शॆय्दिडक् कडवेन्, शन्ददऱ् जॊल्लिन्नाल् ऍळुत्ताल्
अवमऱु शॆय्है यदन्निन्नाल् इयलुम्, अळबॆल्लाम् ऍम्मव रिन्द
नवमुऱु शौयि नॊरुपॆरुङ् गरुत्तं, नन्गिदन् अऱिन्दिडप् पुरिवेन् 11
उयरुमिन् नोक्कम् निऱैवुऱ इणक्कम् ऒन्ऱुतान् मार्क्कमॆन् बदुवुम्
शॆयम्निलै याहच् चॆय्दिडऱ् कऱमे, शिऱन्ददोर् मार्क्कमॆन् बदुवुम्
पॆयर्वऱ ऍङ्गळ् नाट्टिनर् मन्नत्तिऱ्, पेणुमा ऱियऱ्ऱिडक् कडवेन्;
अयलॊरु शबैयि लिन्ऱदो रॆन्ऱुम्, अमैन्दिडा दिरुन्दिडक् कडवेन् 12
ऍङ्गळ्नाट् टॊरुमै ऍन्नॊडुङ् गुऱिक्कुम्, इच्चबैत् तलैवरा यिरुप्पोर्
तङ्गळाक् किन्नैह ळन्नैत्तैयुम् पणिन्दु, तलैक् कॊळर् कॆन्ऱुमे कडवेन्;

--इस धारणा पर अचल विश्वास करके;— "विशाल भूमि पर ईश्वर जब किसी जाति से चाहें कि वह संगठित हो, तब उसे, ७ वे संगठन की कुशलता भी दे चुके होते हैं" --इस तथ्य को जानकर; और यह जानकर कि संगठन की सामर्थ्य को प्रदर्शित करना उसी जाति का उत्तरदायित्व होना चाहिए और उस जाति के लोग बिना किसी और की सहायता की प्रतीक्षा किये, अपनी सामर्थ्य का प्रयोग करने का भार अपने ऊपर ले लें, तो वही विजय का मार्ग होगा; ८ और स्वार्थ का पूर्ण त्याग कर सेवा को समर्पित करना धर्म है, इन बातों को अचल रूप में ध्यान में रखकर एकता के साथ अचूक संकल्प कर लेना बड़ा बल है। अपने मन में स्थिर रूप से धारण करके मैं इन सब शपथों के लिए बल भर कठोर प्रतिज्ञाएँ करता हूँ। ९ जिस युवकसंघ के मेरे सहधर्मी युवक, सदस्य हैं, उस पर मैं अपने तन, धन तथा प्राणों की बलि चढ़ाता हूँ। यह इसलिए कि हमारा स्वर्ग-सम श्रेष्ठ देश एकता से रहकर, स्वतन्त्र हो तथा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सभी देशवासी मनुजों का स्वाभाविक कर्तव्य यही।
सदा (पूर्ण) विश्वास-योग्य है अचल धारणा (भव्य) यही॥
विशद देश की किसी जाति का गठन चाहता जब ईश्वर।
दे देता तब उसे कुशलता इस रहस्य को अवगत कर॥ ॥ ७ ॥
जाति-गठन-सामर्थ्य-साधना उसी जाति का है दायित्व
अन्य किसी की सहायता के बिना (बना उसका स्थायित्व)॥
विना सहायक, शक्ति-भार यदि स्वयं जाति वह करे वहन।
वही विजय का मार्ग मनोरम होगा, (होगा दूर पतन)॥ ८ ॥
स्वार्थ त्यागकर सेवा करना देश जनों का धर्म यही।
दृढ़ निश्चय औ' (सुदृढ़) संगठन, है महान बल (मर्म यही)॥
इन सब बातों को निज मन में सुदृढ़ रूप से धारण कर।
शपथपूर्वक ये कठोर प्रण करता (मत निर्धारण कर)॥ ९ ॥
'युवक-संघ' जिसका सदस्य मैं, सहधर्मी हैं अन्य युवक।
तन-मन-धन-प्राणों की बलि मैं चढ़ा रहा हूँ उसे (अथक)॥
जिससे स्वर्ग-समान श्रेष्ठ मम देश सकल सुगठित होकर।
हो स्वतंत्र जनतंत्र-समन्वित पराधीनता को खोकर॥ १० ॥
युवक-संघ से मिलकर सब कुछ त्याग, करूँगा अथक प्रयत्न।
भरसक सबको समझाऊँगा इसके उद्देश्यों के (रत्न)॥
बातचीत से, लेखों द्वारा (भाषण से बतलाऊँगा)।
अपने निष्कलंक कर्मों से सबको मैं समझाऊँगा॥ ११ ॥
उच्च ध्येय यह पूर्ण हो सके, इसका मार्ग संगठन है।
स्थायी-विजय-लाभ-हित वाञ्छित श्रेष्ठ धर्म का पालन है॥
ये विचार दृढ़ता से पनपें देशवासियों के मन में।
यही प्रयत्न अनन्य करूँगा मैं अपने इस जीवन में॥
इसी संघ का बना रहूँगा मैं सदस्य अब आजीवन।
अन्य संघ का अब सदस्य मैं कभी नहीं सकता हूँ बन॥ १२ ॥
देश-एकता के अभिलाषी युवक-संघ नेताओं का।
आदर करके सदा करूँगा पालन मैं आज्ञाओं का॥

पराये देश के अधीन न होकर जनतन्त्र सत्तात्मक बन जाए। १० इनके साथ मिल-जुलकर रहकर, और किसी कार्य में न लगकर मैं अचूक प्रयत्न करता रहूँगा। नित्य-प्रति वाणी, लेखनी और कर्म से मैं भरसक हमारे इस संघ के उद्देश्यों को सबको समझा दूँगा। ११ इस उद्देश्य की पूर्ति करने का एक मात्र मार्ग है एकता (से काम करना); स्थायी विजय प्राप्त करना हो, तो धर्म ही श्रेष्ठ मार्ग है। जिससे ये विचार स्थिर रूप से हमारे देश के लोगों के मन में स्थापित हों-- उस रीति से मैं प्रयत्न करूँगा। मैं किसी दूसरे संघ का कभी भी, आज से अन्त तक, सदस्य नहीं बनूँगा। १२ जो हमारे देश की एकता चाहनेवाले इस संघ के नेता हैं, उनके सारे आदेशों को सविनय शिरोधार्य करना मैं अपना कर्तव्य मान लूँगा। मेरे प्राणों पर भी क्यों न

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इङ्गॆन दावि माय्न्दिडु मेनुम्, इवर्पणि वॆळियिडा दिरुप्पेन्
तुङ्गमार् शॆयलार् पोदनै यालुम्, इयन्ऱिडुन् दुणैयिवर्क् कळिप्पेन् 13
इन्ऱुम् ऎन्नाळुम् इवैशॆयत् तवऱेन्, मॆय्यिदु मॆय्यिदु इवऱ्ऱै
ऎन्ऱुमे तवऱु इळैप्पनेल् ऎन्नै, ईशनार् नाशमे पुरिह
अन्ऱियुम् मक्कळ् वॆऱुत्तॆनै इहळ्ह, अशत्तियप् पादहञ् जूळ्ह
निन्ऱती यॆळुवाय् नरहत्तिन् वीळ्न्दु, निन्तम्या नुळलुह मन्नो ! 14

बेरु (भिन्न छंद)

पेशि निन्ऱ पॆरुम् पिरतिक्किनै, माशि लादु निऱैवुरुम् वण्णमे
आशि कूऱि यरुळुह ! एळै येऱ्कु, ईशन् ऎन्ऱुम् इदयत् तिलहिये 15

बॆल्जियम् नाट्टिऱ्कु वाळ्त्तु—51

अऱत्तिनाल् वीळ्न्दु विट्टाय्; अन्नियन् वलियनाहि
मऱत्तिनाल् वन्दु शॆय्द, वन्मैयॆप् पॊऱुत्तल् शॆय्याय्
मुऱत्तिनाल् पुलियैत् ताक्कुम्, मॊय्बरैक् कुऱप्पॆण् पोलत्
तिऱत्तिनाल् ऎळियै याहिच्, चॆय्हैयाल् उयर्न्दु निन्ऱाय् 1
वण्मैयाल् वीळ्न्दु विट्टाय् !, वारिपोऱ् पहैवन् शेनै
तिण्मैयोडु अडर्क्कुम् पोदिल्, शिन्दनै मॆलिव लिन्ऱि
ऒण्मैशेर् पुहळे मेलॆन्ऱु, उळत्तिले उऱुदि कॊण्डाय्
उण्मैतेर् कोल नाट्टार्, उरिमैयैक् कात्तु निन्ऱाय् 2
मानत्ताल् वीळ्न्दु विट्टाय् ! मदिप्पिलाप् पहैवर् वेन्दन्
वानत्तार् पॆरुमै कॊण्ड, वलिमैतान् उडैय नेनुम्

बन आये, तब भी इनके कृत्यों को कहीं किसी पर प्रगट नहीं करूँगा। मैं उत्कृष्ट कर्मों तथा सीखों द्वारा इनको अपनी शक्ति के अनुसार सहायता पहुँचाऊँगा। १३ आज भी और आगे भी नित्यप्रति ऐसा करने से मैं नहीं चकूँगा। यह सच है, सच है। इनमें कोई वचनभंग हो जाय, तो ईश्वर मेरा नाश कर दें, और लोग भी मुझसे घृणा करें, मेरा अपमान करें; असत्य का पाप मुझे लग जाय; (इसके फल-स्वरूप) मैं आग्नेय नरक में गिरकर सतत दुख भोगूं। १४ मैं निर्बल हूँ ! ईश्वर मेरे मन में सदा निवास करें और यह आशीर्वाद दें कि जो मैंने बड़ी बड़ी प्रतिज्ञाएँ की हैं, वे निर्दोष रीति से पूरी हों। १५

बेल्जियम देश को बधाई—५१

सन् १९१४ ई० में विराट् जर्मनी ने बॆल्जियम जैसे छोटे देश पर आक्रमण किया। बॆल्जियम ने सामना किया पर हार गया। भारती जी उसकी वीरता तथा धर्मनिष्ठा की सराहना करते हैं।

तुम (बेल्जियम) अपने ही धर्माचरण से गिर गये। तुम्हारे विरोधी बलवान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रकट करूँगा कृत्य न इसके मेरे प्राण भले जायें।
गुप्त रहस्य रखूँगा इसके चाहे जो संकट आयें)॥
श्रेष्ठ कर्म कर दिखलाऊँगा, सीखों से सिखलाऊँगा।
यथाशक्ति इन नेताओं को सहायता पहुँचाऊँगा॥ १३॥
वर्तमान में औ भविष्य में कभी करूँगा चूक नहीं।
यही सत्य है बतलाऊँगा (कभी रहूँगा मूक नहीं)॥
वचन-भंग मेरा हो जाये तो प्रभु मेरा नाश करें।
(घृणा करें, अपमान करें सब, कभी नहीं विश्वास करें)॥
झूठ बोलने का लग जाये (घोर भयानक) पाप मुझे।
नरककुंड की ज्वालाओं का मिले भयंकर ताप मुझे॥ १४॥
मैं निर्बल हूँ, हे परमेश्वर! मेरे मन में वास करो।
आशीर्वाद यही दो मुझको (अपने प्रति विश्वास भरो)॥
मैंने जो की हैं परमेश्वर! ये सब बड़ी प्रतिज्ञाएँ।
(निभ जायें) निर्दोष रीति से सभी पूर्ण वे हो जायें॥ १५॥

बेल्जियम देश को बधाई—५१

(प्रबल जर्मनी-हमले पर) निर्बल रणवीर लड़े, जूझे।
हार, जीत-सम! (हे बौने! बेल्जियम्!) धन्य है, धन्य तुझे॥
पर्वतीय कुर-जाति-सुता ने किया सूप से प्रबल-प्रहार।
भगा दिया बिकराल व्याघ्र को (मन में रञ्च न मानी हार)
यद्यपि तुम सब बल-विक्रम में कम हो (अतिशय अवनत हो)।
किन्तु कर्म में (औ साहस में) तुम (हो गये) समुन्नत हो॥ १॥
अपनी अतिशय उदारता-वश आज तुम्हारा हुआ पतन।
सिन्धु-समान शत्रु-सेना ने घेर देश का किया दमन॥
हतोत्साह तब भी न हुए तुम अपने मन में (प्रण) ठाना।
उज्ज्वल यश को ही बस तुमने था सबसे बढ़कर माना।
सत्यमार्ग पर चलनेवाले कोल देश के वीर अपार।
सदा बचाते रहे देश को और देश के सब अधिकार॥ २॥
अपने अहंभाव के कारण सहज तुम्हारा पतन हुआ।
(तुम परतंत्र बने हो वीरो! देश-जाति का दमन हुआ)॥

थे। उन्होंने दुष्टता से आकर तुम्हारे साथ बलात्कार किया। तुमने सहन नहीं किया। (यह तमिळ-साहित्य में विख्यात है कि) पर्वतदेशीय 'कुर' जाति की कन्या ने सूप से बाघ पर प्रहार करके उसे भगा दिया। वैसे ही तुम शक्ति में कम हो, पर कर्म में ऊँचे हो गये हो। १ तुम उदारता के कारण गिर गये। वैरी की सेना, समुद्र के समान आयी और तुम्हें घेरकर कठोरता से प्रहार करने लगी। तब भी चित्त में तुम कमजोर नहीं हुए। तुमने मन में ठाना कि उज्ज्वल यश ही बड़ा है। अतः तुम सत्यपथी कोल हालैण्ड देश के स्वत्व की रक्षा करते रहे। २ तुम (उचित) अभिमान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऊऩत्ताल् उळ्ळ मऱ्जि, ऒदुङ्गिड मऩमॊव् वामल्
आऩत्तैच् चॆय्वो मॆऩ्ऱे, अवऩ् वळि यॆदिर्त्तु निऩ्ऱाय् 3
वीरत्ताल् वीळ्ऩ्दु विट्टाय्, मेल्वरै युरुळुङ् गालै
ओरत्ते ऒदुङ्गित् तऩ्ऩै, ऒळित्तिड मऩमॊव् वामल्
पारत्तै ऎळिदाक् कॊण्डाय्, पाऱ्बिऩैप् पुळुवे यॆऩ्ऱाय्
नेरत्ते पहैवऩ् तऩ्ऩै, निल् लॆऩ मुऩैन्दु निऩ्ऱाय्, 4
तुणिविऩाल् वीळ्ऩ्दु विट्टाय्, तॊहैयिलाप् पडैहळोडुम्
पिणिवळर् शॆरुक्कि ऩोडुम्, पॆरुम्बहै ऎदिर्त्त पोदु
पणिवदु करुद माट्टाय्; पदुङ्गुदल् पयऩॆऩ् ऱॆण्णाय्
तणिवदे निऩैक्क माट्टाय्, निल् लॆऩत् तडुत्तल् शॆय्दाय् 5
वॆरुळुद लऱिवॆऩ् ऱॆण्णाय्; विबत्तैयोर् पॊरुट्टाक् कॊळ्ळाय्
शुरुळलै वॆळ्ळम् बोलत्, तॊहैयिलाप् पडैहळ् कॊण्डे
मरुळुऱु पहैवर् वेन्दऩ्, वलिमैयाऱ् पुहुन्द वेळै
'उरुळुह तलैहळ् मानम्, ओङ्गुहॆऩ् ऱॆदिर्त्तु निऩ्ऱाय् 6
यारुक्के पहैयॆऩ् ऱालुम्, पार्मिशै इवऩ्शॆऩ् ऱालुम्
ऊरुक्कुळ् ऎल्लै ताण्डि, उत्तर वॆण्णि डामल्
पोरुक्कुक् कोलम् पूण्डु, पुहुन्दवऩ् शॆरुक्कुक् काट्टै
वेरुक्कुम् इडमिल् लामल्, वॆट्टुवेऩ् ऎऩ्ऱु निऩ्ऱाय् 7
वेळ्वियिल् वीळ्व दॆल्लाम्, वीरमुम् पुहळुम् मिक्कु
मीळ्वदुण् डुलहिऱ् कॆऩ्ऱे, वेदङ्गळ् विदिक्कुम् ऎऩ्बर्

के कारण गिर गये। गौरव-हीन वैरी राजा स्वर्ग तक व्याप्त यश-बल से युक्त था। तो भी अपनी शक्तिहीनता का विचार करके तुम डरे नहीं, और पीछे हटने को तैयार नहीं हुए, और यह विचार करके उसका तुमने सामना किया कि मैं भरसक प्रयास करता रहूँगा। ३ तुम वीरता को प्रदर्शित करते-करते गिर गये। ऊपर से पर्वत गिर रहा था, तो भी अपने को बचाना तुम्हारे मन ने नहीं चाहा। तुमने भार को झेल लिया। तुमने सर्प को 'रे कीड़े' कहा। तुम ठीक अवसर पर वैरी से 'रुको' कहकर, लड़ने को उद्यत हो गये। ४ तुम साहस प्रदर्शित करते-करते गिर गये। असंख्यक सेनाओं-सहित रोग के समान बढ़नेवाले गर्व के साथ घोर शत्रु ने तुम पर धावा बोल दिया। तुम उनका लोहा मानने, अपना सिर झुकाने को तैयार नहीं हुए। तुमने छिप जाने को फलदायी न माना। तुमने दबने की बात नहीं सोची। तुमने 'रुको' कहकर उनको बढ़ने से रोकने का प्रयास किया। ५ तुमने डरने को बुद्धिमत्ता का काम नहीं माना। विपदा को कोई चीज नहीं समझा। लुढ़क आनेवाली लहरों से युक्त बाढ़ के समान अगणित सेनाओं के साथ भ्रान्त विरोधी राजा ने अपनी शक्ति के घमण्ड में तुममें प्रवेश किया। तब तुमने यह कहकर उसका सामना किया कि 'सिर लुढ़क जायँ, पर मान बढ़े'। ६ "वह किसी का भी शत्रु क्यों न हो? किसी पर भी आता हो। नगर की सीमा लाँघकर, हमारी आज्ञा की परवाह किये बिन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

स्वर्गव्यापी यश-बल से था युक्त शत्रु-नृप मान-रहित ।
शक्तिहीन निज को विचार कर डरे नहीं तुम (दैन्य-सहित) ॥
पीछे हटे नहीं तुम वीरो! किया शक्ति भर प्रबल प्रयास ।
किया सामना विरोधियों का (मन में लिये विजय-विश्वास) ॥ ३ ॥

गिरे वीरता से तुम वीरो! (पर पग पीछे फिरे नहीं) ।
(ऐसे संकट, (धन्य बेल्जियम!) किसी देश पर घिरे नहीं) ॥
पर्वत गिरता देख वीर! तुम पग भर पीछे नहीं हटे ।
झेला भार विशाल स्वतन पर अटल भाव से रहे डटे ॥
अति-विकराल सर्प को तुमने एक तुच्छ कीड़ा माना ।
और उचित अवसर पर अरि से 'रुक, रुक' कहकर रण ठाना ॥ ४ ॥

रोगों के सम बढ़नेवाले विपुल गर्व को धारण कर ।
किया शत्रु ने प्रबल आक्रमण लेकर साथ विपुल संगर ॥
माना अरि-आतंक न तुमने, तने रहे तुम झुके नहीं ।
छिपे नहीं तुम, दबे नहीं तुम, (बढ़े हुए पग रुके नहीं) ॥
रुको, रुको, अरियो! कहकर (प्रकटित हृदयोल्लास किया) ।
बढ़ते शत्रु रोकने के हित तुमने प्रबल प्रयास किया ॥ ५ ॥

अरियों से डरने में तुमने नहीं बुद्धिमत्ता मानी ।
विपक्षियों के दल की तुमने तिनके-सम सत्ता मानी ॥
बाढ़-प्रवाहतुल्य घहराती (जर्मन) सेनाएँ लेकर ।
किया प्रवेश भ्रान्त वैरी ने बल-घमंड-मद में भरकर ॥
तब तुम यही बोलते वाणी, वैरी के सम्मुख धाये ।
चाहे सिर कट जाय भले ही पर न मान जाने पाये ॥ ६ ॥

चाहे शत्रु किसी का हो वह, किया किसी पर हो धावा ।
आज्ञा-विना नगर में घुसकर किया युद्ध का है दावा ॥
उसके विपुल-गर्व के वन को जड़ से अब हम देंगे काट ।
ऐसा कहकर खड़े हुए तुम (मन में साहस लिये विराट्) ॥ ७ ॥

वेद बताते हैं, यज्ञों में जिनका होता है बलिदान ।
इसी लोक में फिर वे आते लेकर सुयश-वीरता-(मान) ॥
उसी भाँति जो (धर्मयुद्ध में) निज-पौरुष दिखलाते हैं ।
और धर्म का पालन करते हुए प्राण तज जाते हैं ॥

युद्ध-सन्नद्ध होकर यह आकर प्रविष्ट हुआ है। मैं उसके घमंडस्वरूप कानन को जड़ के लिए भी स्थान न रखकर काट दूँगा।" ऐसा कहते हुए तुम उठकर खड़े हो गये। ७ लोग कहते हैं, वेदों का ऐसा आश्वासन है कि यज्ञ में जो बलि हो जाते हैं वे अधिक वीरता के साथ यश लेकर फिर इस लोक में लौट आ जाते हैं। (वैसे ही) पौरुष-पूर्ण कार्य करते समय, जो धर्मपालन करते हुए क्षीण होकर गिर जाते हैं, वे फिर से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आळ्विनै शॆय्युम् पोदिल्, अऱत्तिले इळैत्तु वीळ्न्दार्
केळ्वियुण् डुडन्ने मीळक्, किळर्च्चि कॊण् डुयिर्त्तु वाळ्दल् 8
विळक्कॊळि मऴुङ्गिप् पोह, वॆयिलॊळि तोन्ऱुम् मट्टुम्
कळक्कमा रिरुळिन् मूऴ्हुम्, कन्ह माळिहैयु मुण्डाम्
अळक्करुन् दीदुऱ्ऱालुम्, अच्चमे युळत्तुक् कॊळ्ळार्
तुळक्कऱ ओङ्गि निऱ्पर्, तुयरुण्डो तुणिवुळ् ळोर्क्के ! 9

पुदिय रुशिया—52

(जार् शक्करवर्त्तियित् वीळ्च्चि)

माकाळि पराशक्ति उरुशिय नाट् टिनिऱ् कडैक्कण् वैत्ताळ्, अङ्गे
आहावॆन् ऱॆऴुन्ददु पार् युहप्पुरट्चि; कॊडुङ्गालन् अलऱि वीळ्न्दान्
वाहान् तोळ् पुडैत्तार् वान्मरर्; पेय्हळॆल्लाम् वरुन्दिक् कण्णीर्
पोहामऱ् कण्पुदैन्दु मडिन्दन्वाम् वैयहत्तीर् पुदुमै काणीर् ! 1
इरणियन्पो लरशाण्डान् कॊडुङ्गोलन् जारॆनुम् पेरिशॆन्द पावि
शरणिन्ऱित् तवित्तिट्टार् नल्लोरुम्, शान्ऱोरुम्, तरुमम् तन्नैत्
तिरणमॆन्क् करुदि विट्टान् जार्मूडन्; पॊय् शूदु तीमै यॆल्लाम्
अरणियत्तिऱ् पाम्बुहळ् पोल् मलिन्दुवळर्न् दोङ्गिन्वे अन्द नाट्टिल् 2
उऴुदुविदैत् तरुप्पाऱुक् कुणविल्लै; पिणिहळ् पलवुण्डु पॊय्यैत्
तॊऴुदडिमै शॆय्वारुक्कुच् चॆल्वङ्ग, ळुण्डु उण्मै शॊल्वोर्क् कॆल्लाम्
अॆऴुदरिय पॆरुङ् गॊडुमैच् चिऱैयुण्डु, तूक्कुण्डे यिऱ्प्पदुण्डु
मुऴुदुमॊरु पेय्वन्माऱ् जिवेरियिले, आविकॆड मुडिवदुण्डु 3

उत्साह के साथ उठकर जीवित रहेंगे --ऐसी भी जनश्रुति है। ८ दीप का प्रकाश मन्द पड़ जाय तब, धूप के निकल आने तक घने अन्धकार में कनक महल भी अदृश्य होकर रहता है। अमाप दुख से पीड़ित होने पर भी निर्भय मन वाले अकलंक रूप से उन्नत होकर रहेंगे। क्या साहसी लोगों को कभी दुख भी प्राप्त होगा ? ९

नया रूस (चक्रवर्ती ज़ार का पतन)—५२

महाकाली, पराशक्ति ने रूसी देश पर अपनी कृपादृष्टि डाली। वहाँ हाहाकार मचाते हुए युगक्रान्ति हो गयी। देख लो ! क्रूर काल 'हाय, हाय' चिल्लाते हुए गिर गया। स्वर्ग के सुरों ने अपने सुडौल कन्धे ठोंके। पिशाच दुखी हुए। आँसू बहे और उन्हीं में आँखें डूब गयीं और वे (पिशाच) मर गये। हे विश्वासियो ! देखो यह अभिनव बात ! १ ज़ार नामक पापी अत्याचारी शासक ने हिरण्यकशिपु के समान शासन किया। अच्छे लोग तथा शिष्ट लोग निराश्रय होकर संकटग्रस्त हुए। मूर्ख ज़ार ने धर्म को तृण मान लिया। उसके देश में झूठ, वंचना, बुराई --सभी जंगल में सर्पों के समान बहुत पैदा हुए, बढ़े और पले। २ जो हल चलाते हैं,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वे उत्साह-पूर्ण नर-पुंगव कभी नहीं मर पाते हैं।
(काल न उन्हें मार सकता) वे वीर अमर कहलाते हैं॥ ८ ॥
जब रवि होवे अस्त और जब मंद पड़े दीपक-आभा।
होती तब अदृश्य घनतम में स्वर्णमहल की स्वर्णाभा॥
हों अपार दुख से भी पीड़ित तो भी निर्भय मनवाले।
उन्नत सदा रहेंगे वे जन निष्कलंक-यश-मन-वाले॥
जिनके विस्तृत मन में साहस का सागर लहराता है।
ऐसे वीरवरों को जग में दुःख न कभी सताता है॥ ९ ॥

नया रूस (चक्रवर्ती ज़ार का पतन)—५२

पराशक्तिरूपिणी महाकाली ने कृपादृष्टि डाली।
हाहाकारी महाक्रांति मच गई रूस में मतवाली॥
अतिशय दुखी पिशाच हो गये छिड़ा काल का नृत्य प्रचण्ड।
स्वर्गलोक के देवगणों ने ठोंके सबल पुष्ट भुजदण्ड॥
बहने लगा अश्रु का सागर डूबे उसमें दनुज नयन।
विश्ववासियो! हृदय थामकर अद्भुत लखो काण्ड नूतन॥ १ ॥
पापी अत्याचारी शासक रूस देश का ज़ार हुआ।
दुष्ट हिरण्यकशिपु-सम अतिशय भीषण भ्रष्टाचार हुआ॥
सज्जन, शिष्ट निराश्रय बनकर भीषण संकट-ग्रस्त हुए।
मूर्ख ज़ार ने तृण-सम समझे धर्म-कार्य सब ध्वस्त हुए॥
झूठ, वंचना और बुराई के प्रसार में था अतिरेक।
जैसे भीषण जंगल में हों सर्प भयंकर पले अनेक॥ २ ॥
हल जोतते, बीज बोते हैं और फ़सल करते उत्पन्न।
किन्तु दीन दुर्बल कृषकों को मिलता नहीं पेट भर अन्न॥
उन भूखे कृषकों को भीषण रोग अनेक सताते हैं।
अन्न न मिलता उन्हें पेट भर तड़प-तड़प मर जाते हैं॥
जो झूठों के चापलूस औ दास, उन्हें मिलता है धन।
पर कारागृह में सड़ते हैं सभी सत्यवादी सज्जन॥
साइबेरिया-भूतमहल में मिलता उनको निर्वासन।
था अत्यन्त क्रूरतापूर्वक फाँसी से मिटता जीवन॥ ३ ॥

बीज बोते हैं तथा फ़सल काटते हैं, उन्हें भोजन नहीं (मिलता); पर उन्हें अनेक रोग (सताते) हैं। जो झूठ की चिरौरी करके दासता करते हैं, उन्हें धन मिलता है। सभी सत्यवादी लोगों के लिए कठोर कारावास मिल जाता है, जिसकी अत्यधिक क्रूरता लिखी नहीं जा सकती। उन्हें फाँसी पड़ती है। जो नितान्त रूप से भूतों का आवास है, उस 'सिबेरी' (साइबीरिया) में निर्वासित होकर उन्हें मरना पड़ता है। ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इम्मॆन्ऱाल् शिऱै वासम्; ऐन्नॆन्ऱाल्, वनवासम्; इव्वा ऱङ्गे
शॊम्मैयॆलाम् पाळाहिक् कॊडुमैये, अऱमाहित् तीर्न्द पोदिल्
अम्मै मनङ् गनिन्दिट्टाळ्; अडि परवि, उण्मै शॊलुम् अडियार् तम्मै
मुम्मैयिलुम् कात्तिडुनल् विळियाले, नोक्किनाळ्; मुडिन्दान् कालन् 4
इमयमलै वीळ्न्ददुपोल् वीळ्न्दु विट्टान् जाररशन् इवनैच् चूळ्न्दु
शमयमुळ पडिक्कॆल्लाम् पॊय् कूऱि, अऱङ्गॊन्ऱु शदिहळ् शॆय्द
शुमडर् शडशडवॆन्ऱु शरिन्दिट्टार्; पुयऱ्कार्ऱुच् चूऱै तन्निल्
तिमुतिमॆन्न मरम् विळुन्दु काडॆल्लाम्, विर्हान शॆय्दि पोले 5
कुडिमक्कळ् शॊन्नपडि कुडिवाळ्वु मेन्मैयुऱक् कुडिमै नीदि
कडियॊन्ऱि लॆळुन्ददुपार् कुडियर शॆन्ऱु, उलहऱियक् कूऱि विट्टार्
अडिमैक्कुत् तळैयिल्लै यारुमिप्पोदु, अडिमैयिल्लै अऱिह अन्ऱार्;
इडिपट्ट शुवर्पोले कलि विळुन्दान् किरुदयुहम् ऎळुह मादो! 6

करुम्बुत् तोट्टत्तिले—53

(हरिकाम्बोदि जन्यम्)

राग— सैन्दवि; ताळ— तिस्र चाप्पु

पल्लवि (टेक)

करुम्बुत् तोट्टत् तिले— आ
करुम्बुत् तोट्टत्तिलै

चरणङ्गळ् (चरण)

करुम्बुत् तोट्टत्तिले— अवर्
काल्हळुम् कैहळुम् शोर्न्दु विळुम्बडि
वरुन्दु हिन्ऱुन्नरे!— हिन्दु
मादर्दम् नॆञ्जु कॊदित्तुक् कॊदित्तु मॆय्
शुरुङ्गु हिन्ऱुन्नरे— अवर्
तुन्बत्तै नीक्क वळियिल्लैयो? ऒरु
मरुन्दिवर् किलैयो? शॆक्कु
माडुहळ् पोलुळैत् तेङ्गु हिन्ऱार्, अन्दक् (करुम्बुत् तोट्टत्तिले) 1

'हुँ' कहो तो कारावास! 'क्यों' पूछो तो वनवास! इस प्रकार वहाँ सारी अच्छाइयाँ नष्ट हो गयी थीं और क्रूरता ही धर्म बन गयी थी। तब माता का मन आर्द्र हो उठा। माता ने अपनी चरण-वन्दना करके सत्य बोलनेवाले भक्तों की तीनों (कालों) में रक्षा करनेवाली अपनी दृष्टि उस पर डाली। बस, काल मर गया। ४ जार राजा हिमालय पर्वत गिरा जैसा ढह गया। और जो मूर्ख लोग उन्हें घेरे रहे तथा प्रसंगानुसार झूठ (चापलूसी) कहकर धर्म का हनन करते तथा षड्यंत्र रचते रहे, वे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'हूँ' कहने पर कारागृह है, 'क्यों' पूछो तो है वनवास।
धर्म बनी क्रूरता, हो गया सभी सद्गुणों का था ह्रास॥
चरण-वन्दना करनेवाले, सत्य बोलनेवालों पर।
डाली दृष्टि त्रिकालरक्षिणी माता ने तब लालों पर॥
उसी समय से क्रूर कसाई-कुटिल-काल का अंत हुआ।
(सुखी हो गई जनता सारी उसको सुखद वसंत हुआ)॥ ४॥
चापलूस, झूठे, षड्यंत्री, धर्मविरोधी, मूर्ख सुभट।
जो घेरे रहते थे उसको वे भी नष्ट हुए झटपट॥
नष्ट, भ्रष्ट हो जाते जैसे आँधी से वन के तरुवर।
ईंधन बनें सुभट, हिमगिरि-सम ज़ार विनष्ट हुआ सत्वर॥ ५॥
देश रूस में क्षण भर में ही लागू हुआ नियम-नूतन।
प्रजा-हितार्थ प्रजाओं द्वारा पनपा प्रजातंत्र-शासन॥
हुई घोषणा तभी "हमारा है यह प्रजातंत्र-शासन।
कटे दासता के सब बंधन, दास नहीं अब कोई जन॥
देखे विश्व —एक धक्के में कलियुग पट-पर भित्ति-समान।
कृतयुग का आरंभ हुआ अब (करो सत्ययुग का सम्मान)॥ ६॥

ईख के बाग़ में—५३

(फ़िजी द्वीप में हिन्दू-स्त्रियाँ)

कष्ट झेलती हैं महिलाएँ हाय! ईख के बाग़ में॥ टेक॥
उन्हें ईख के बाग़-बीच अति संकट विकट सताते हैं।
उनके हाथ-पैर सब थककर महाशिथिल हो जाते हैं॥
हिन्दू-बालाओं के तन कृश, मन प्रतप्त हो जाते हैं।
उनके दुख हटने के कोई यत्न नहीं दिखलाते हैं॥
वे कोल्हू के बैल-सरीखी मलिन बनी श्रम करती हैं।
इनकी कोई दवा नहीं क्या? (असमय में ही मरती हैं)॥ १॥

सब 'मूर्ख' लोग हरहराहट के साथ ढह गये। वह ऐसा रहा, जैसे आँधी के सामने सभी तरु चट-चट के साथ गिरे हों तथा जंगल में ईंधन फैल गये हों। ५ एक ही घड़ी में नया शासन उभर गया। —प्रजाजनों के कहे अनुसार, प्रजाजीवन के उत्कर्षार्थ, प्रजातंत्र। विश्व के सामने उन्होंने घोषणा कर दी कि 'हमारा प्रजातन्त्रात्मक शासन है। जान लो कि यहाँ दासता की बेड़ी नहीं है, यहाँ कोई दास नहीं है'। धकेली जाकर गिरनेवाली दीवार के समान 'कलि' गिर गया। कृतयुग आरम्भ हो! ६

ईख के बाग़ में (दूसरा शीर्षक: फिजीद्वीप में हिन्दू स्त्रियाँ)—५३

ईख के बाग़ में— हाय! ईख के बाग़ में! (टेक) ईख के बाग़ में उन (स्त्रियां) ने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॆण्णॆत्रु शॊल्लिडिलो— ऒरु
पेयुम् इरङ्गुम् ऎत्बार्; दॆय्वमे ! नित्तु
ऎण्णम् इरङ्गादो ?— अन्द
एऴैहळ् अङ्गु शॊरियुङ् गण्णीर् वॆऱुम्
मण्णिर् कलन्दिडुमो ?— तॆऱ्कु
माकडलुक्कु नडुवित्तिले अङ्गोर्
कण्णऱ्ऱु तीवित्तिले— तन्निक्
काट्टिनिऱ् पॆण्गळ् पुऴुङ्गुहित्त्रार्— अन्दक् (करुम्बुत् तोट्टत्तिले) 2

नाट्टै नित्तैप्पारो— ऎन्द
नाळित्तिप् पोयदैक् काण्बदॆन्ऱे अन्ने
वीट्टै नित्तैप्पारो ?— अवर्
विम्मि विम्मि विम्मि यऴुङ्गुरल्
केट्टिरुप्पाय् काऱ्ऱे— तुन्बक्
केणियिले ऎङ्गळ् पॆण्गळ् अऴुद शॊल्
मीट्टुम् उरैयायो ? अवर्
विम्मि यऴुवुन् दिऱङ्गॆट्टुप् पोयित्तर् (करुम्बुत् तोट्टत्तिले) 3

नॆञ्जम् कुमुऱुहिऱार्— कऱ्पु
नीङ्गिडच् चॆय्युङ् गॊडुमैयिले अन्दप्
पञ्जै महळिरॆल्लाम्— तुन्बप्
पट्टु मडिन्दु मडिन्दु मडिन्दॊरु
तञ्जमु मिल्लादे— इवर्
शाहुम वऴुक्कत्तै इन्दक् कणत्तित्तिल्
मिञ्ज विडलामो ? हे !
वीरमा काळि चामुण्डि, काळीश्वरी ! (करुम्बुत् तोट्टत्तिले) 4

पीड़ा का अनुभव करती हैं। उनके हाथ, पैर थककर ढीले हो जाते हैं। हिन्दू स्त्रियाँ सन्तप्त-मना तथा कृश- शरीर हो जाती हैं। उनके दुख को दूर करने का क्या कोई उपाय नहीं है ? क्या इसकी कोई दवा नहीं है ? वे कोल्हू के बैल के समान परिश्रम करते-करते मलिन होती हैं (ईख के बाग में०) १ लोग कहते हैं— स्त्री कहो तो भूत भी दया करेगा। हे ईश्वर ! तुम्हारा मन क्या दया नहीं करेगा ? वहाँ जो ग़रीब लोग आँसू बहाते हैं, क्या वह केवल मिट्टी में मिल जायँ ? दक्षिणी महासागर के मध्य आँखों से दूर एक द्वीप में— निर्जन विकट जंगल में स्त्रियाँ मुरझा रही हैं। (ईख के बाग में०) २ क्या वे अपने देश का स्मरण करती हैं ? या अपनी माता के घर का स्मरण करके सोचती हैं कि अब कब जाकर उसे देखेंगे ? हे पवन ! तुम उनके सिसक-सिसककर रोने का स्वर सुन चुके हो। दुख के कुएँ के अन्दर से हमारी स्त्रियाँ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(दुःख भोगता हैं ललनाएँ हाय ! ईख के बाग़ में ।)
कष्ट झेलती हैं महिलाएँ हाय ! ईख के बाग़ में ।। टेक ।।

भूत-प्रेत भी दया दिखाते हैं निरीह अबलाओं पर ।
इन दुखारियों पर न दया क्या दिखलायेंगे परमेश्वर ।।
दीन जनों के ये आँसू क्या मिट्टी में मिल जायेंगे ।
(या कि तुम्हारी दयादृष्टि पाकर निहाल हो जायेंगे ।)
दक्षिण-सागर मध्य द्वीप है 'फ़िजी' दूर पर बसा हुआ ।
उस पर एक विशद जंगल है महा भयंकर बसा हुआ ।। २ ।।
(वहीं बिलखती हैं बालाएँ हाय! ईख के बाग़ में) ।
कष्ट झेलती हैं महिलाएँ हाय ! ईख के बाग़ में ।। टेक ।।

वे स्वदेश की, निज माता की करती रहतीं सदा स्मरण ।।
सदा सोचतीं कब देखेंगी देश-जननि के चारु-चरण ।।
पवन ! सुना है तुमने उनका रुदन ? हमें जतलाओगे ? ।
उन दुख-कूप-मग्न महिलाओं ने क्या कहा, बताओगे ? ।। ३ ।।
(रही न शक्ति सिसकने की भी, हाय ! ईख के बाग़ में) ।
कष्ट झेलती हैं महिलाएँ हाय ! ईख के बाग़ में ।। टेक ।।

बलात्कार उन पर होता है नहीं उसे वे सह पातीं ।।
बेचारी निर्बल, दुखकातर घुट-घुटकर हैं मर जातीं ।।
कोई नहीं सहारा उनका, सदा खौलता उनका मन ।
वीर महाकाली चामुण्डा ! हर लो उनके दुःख, घुटन ।।
बढ़ते भीषण कष्टों का है क्या कोई प्रतिकार नहीं ? ।
(घुट-घुट यों ही मरा करें क्या जीने का अधिकार नहीं ?) ।। ४ ।।
(विपदाओं की घिरीं घटाएँ हाय ! ईख के बाग़ में) ।
कष्ट झेलती हैं महिलाएँ हाय ! ईख के बाग़ में ।। टेक ।।

रोते हुए जो कह रही थीं, उस वचन को तुम फिर से नहीं सुनाओगे क्या ? वे अब सिसकने की, रोने की शक्ति भी खो चुकी हैं । (ईख के बाग़ में०) ३ उनका मन खौलता है । उनके साथ बलात्कार किया जाता है । तब ऐसे क्रूर कृत्य से वे बेचारी निर्बल स्त्रियाँ दुखकातर हो-होकर मरती हैं । उनके लिए कोई आश्रय नहीं । क्या उनके ऐसे मरने की रीति को अब आगे बढ़ने दिया जाए ? हे वीर महाकाली, चामुण्डी, कालीश्वरी । (उस ईख के बाग़ में०) ४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देय्वप् पाडल्हळ्

1 तोत्तिरप् पाडल्हळ्

विनायहर् नान्मणि मालै—1

वॆण्बा (छन्द)

शक्ति पॆरुम् पावाणर् शार्रु पॊरुळ् यावॆनिनुम्
शित् (तिपॆरुच् चॆय्वाक्कु वल्लमैक्का— अत्तन्ने
(निन्) ऱनुक्कुक् काप्पुरॆप्पार्; निन्मीदु शॆय्युम् नूल्
इन्ऱि दऱ्कुम् काप्पु नीये 1

कलित्तुरै (छन्द)

नीये शरणम् निन्नदरुळे शरणम् जरणम्
नायेन् पलपिळै शॆय्दु कळैत्तुन्नै नाडि वन्देन्
वाये तिऱवाद मौन्नत् तिरुन्दुन् मलरडिक्कुत्
तीये निहर्त्तॊळि वीशुन् दमिळ्ककवि शॆय्हुवन्ने 2

विरुत्तम् (छन्द)

शॆय्युन् दॊळिले काण् शीर् पॆऱ्ऱिड नी अरुळ् शॆय्वाय्
वॆयन् दनैयुम् वॆळियिन्नैयुम् वान्नत्तैयु मुन् पडैत्त वन्ने
ऐया नान्मुहप् पिरमावे यान्नैमुहन्ने वाणि तन्नैक्
कैया लणैत्तुक् काप्पवन्ने ! कमला शन्नत्तुक् कर्पहमे ! 3

---

१ स्तुति गीत

[यह अंश किसी संस्करण में 'भक्तिगीत' के नाम से संग्रहीत है; किसी में (देय्वप्पाडलहळ) 'दिव्य गीत' या 'देवी गीत' के नाम से। किसी में 'पामालै' शीर्षक देकर उसके नीचे 'भक्तिप्पाडल्हळ', फिर 'विनायहर् नान्मणि मालै' शीर्षक देकर 'विनायक-स्तुति' के गीत दिये गये हैं। हमारे इस संस्करण में 'देवीगीत' के नीचे 'स्तुति गीत' लिखकर बाद 'विनायक चतुर्रत्नमाला' शीर्षक के नीचे 'विनायक-स्तुति' दी जा रही है। स्पष्ट है, यह गीत 'विनायक की स्तुति' में गाये गये हैं और उनकी महिमा के गीत हैं। पुदुच्चेरी में जहाँ भारती सियासी अपराधी के रूप में क़ानून से बचने के लिए जाकर रहते थे, वहाँ 'मळक्कुळप् पिळैयार' नामक 'विनायक देव' का मन्दिर था। उसी विनायक को सामने रखकर ये गीत रचे गये हैं। तो भी इनमें 'गाणापत्य' मत को स्वीकार करके उनके परब्रह्म-रूप का वर्णन तथा स्तुति की गयी है। **नान्मणि** —या चार रत्न इसलिए कहा गया है कि इसमें चार विभिन्न छन्दों के गीत-रत्नों को एक ही क्रम से पिरोकर गीतमाला रची गयी है। उन छंदों के नाम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

१ स्तुति-गीत

विनायक चार रत्न-माला—१

कवि प्रभावशाली कोई भी विषय चुने निज-कविता का।
पर करता मंगलाचरण वह मंजुल-काव्य-प्रसविता का॥
(जिससे वाणी को प्रभाव-शालिनी अपरिमित शक्ति मिले।
काव्य-कला की शोभा निखरे नव-रस की अनुरक्ति मिले)॥
देव! तुम्हीं पर लिखता हूँ मैं अपना यह शुभ ग्रंथ ललाम।
इसके रक्षक-कवच तुम्हीं हो पूर्ण करो इसको अभिराम॥ १॥

आप शरण-दाता हैं, दे दें कृपया चरणों की छाया।
कर अपराध श्वान-सम थककर तुम्हें खोजता हूँ आया॥
बोले बिना, बिना मुख खोले, मौन-भाव करके धारण।
अग्निशिखा-जाजुल्य तमिळ में काव्य करूँगा मैं अर्पण॥ २॥

मेरा काव्य-कवित्व पूर्ण हो, कृपया यह वर दो सुंदर।
धरा-गगन के रचनेवाले सर्वशक्तिमय परमेश्वर॥
हे प्रभु! हे गजवदन! विनायक! ब्रह्म चतुर्मुखधारी हो।
अपने करस्पर्श से वाणी के रक्षक तुम भारी हो॥
कमलासन के कल्पवृक्ष तुम अभिमत फल के दाता हो।
(विघ्न हरो मेरे सब गणपति ऋद्धि-सिद्धि-संघाता हो)॥ ३॥

गीतों के ऊपर दिये गये हैं। ये गीत अन्य स्तुतिगीतों से भिन्न तरीके से लिखे गये हैं। विषय में भी और शैली में भी। और यह 'अंतादि' शैली गीत है। 'अंतादि' में पहले पद्य का अन्तिम शब्द तथा बाद के पद्य का आरम्भिक शब्द एक ही रहता है। 'देवी' या 'दिव्य गीत' में सम्पूर्ण गीत का अन्तिम शब्द और पहला शब्द एक ही रहते हैं।]

विनायक-चतुर्रत्नमाला (स्तोत्र-गीत)— १

प्रभावशाली कवि अपनी रचना के लिए कोई भी विषय ले ले, पर प्रभाव डालने वाली वाणी की शक्ति के लिए, हे धाता! मंगलाचरण रचते हैं। यह ग्रंथ तुम्हीं पर लिखा जाता है। इसके भी कवच (रक्षक) तुम्हीं हो। १ आप ही शरण्य हैं। आपकी दया ही शरण है। मैं शरण में आया हूँ। मैं श्वान-सम दास अनेक अपराध करके थककर आपको खोजता हुआ आया हूँ। मैं मुख खोले ही बिना, मौन साधन करके आपके चरणों में (अर्पण करने के लिए) अग्नि-सम दीप्ति फैलानेवाली तमिळ-कविता रचूँगा २ मेरा कर्तव्य काव्य-रचना है, देखें। मुझे यह वरदान देने की कृपा करें कि वह शोभायुक्त हो। भूमि और अन्तरिक्ष तथा आकाश के रचनेवाले! प्रभु! चतुर्मुख ब्रह्म! गजानन! वाणी को हाथों से लपेटकर उनकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवल् (छन्द)

कऱ्पह विनायहक् कडवुळे पोऱ्ऱि
शिऱ्पर मोनत् तेवन् वाळ्ह
वारण मुहत्तान् मलर्त्ताळ् वॆल्ह !
आरण मुहत्तान् अरुट्पदम् वॆल्ह
पडैप्पुक् किऱैयवन् पण्णवर् नायहन्
इन्दिर गुरु ऍनदु इदयत् तॊळिर्वान्
शन्दिर मवुलित् तलैवन् मैन्दन्
गणपदि ताळैक् करुत्तिडै वैप्पोम्
गुणमदिऱ् पलवाम् कूऱक् केळीर्
उट्चॆवि तिर्क्कुम् अहक्कण् ऒळितरुम्
अक्किनि तोन्ऱुम्; आण्मै वलि युरुम्
तिक्कॆलाम् वॆन्ऱु जयक् कॊडि नाट्टलाम्
कट्चॆवि तन्नैक् कैयिले ऍडुक्कलाम्
विडत्तैयुम् नोवैयुम् वॆम्बहै यदनैयुम्
तुच्चमॆन् ऱॆण्णित् तुयरिला विङ्गु
निच्चलुम् वाळ्न्दु निलै पॆऱ् ऱोङ्गलाम्
अच्चन् दीरुम् अमुदम् विळैयुम्
वित्तै वळरुम्; वेळ्वि ओङ्गुम्
अमरत् तन्मै ऍय्दवुम्
इङ्गु नाम् पॆऱलाम्; इःदुणर्वीरे 4

वॆण्बा (छन्द)

(उण) र्वीर् उणर्वीर् उलहत्तीर् ! इङ्गुप्
पुणर्वीर् अमररुरुम् बोहम्— गणपदियॆप्
पोव बडिवाहप् पोऱ्ऱिप् पणिन् दिडुमिन्
कादलुडन् कञ्जमलर् काल् 5

कलित्तुऱै (छन्द)

कालैप् पिडित्तेन् कणपदि ! निन्पदङ् गण्णि लॊऱ्ऱि
नूलैप् पलपलवाहच् चमैत्तु नॊडिप्पॊळुदुम्
वेलैत्तवरु निहळादु नल्ल वितैहळ् शॆय्दुन्
कोलै मनमॆनुम् नाट्टिन् निरुत्तल् कुऱि यॆनक्के 6

रक्षा करनेवाले ! कमलासनस्वरूप कल्पवृक्ष ! ३ कल्पक-विघ्नेश्वर, नमः, चितुपर मौन देव। जय। गजानन के कमल-चरणों की जय। सृष्टि के ईश्वर, देवों के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कल्पवृक्ष विघ्नेश्वर की जय, मौन देव चित्पर की जय।
गजमुख के प्रियपद-कमलों के मनमोहक केसर की जय॥
सकल सृष्टि के ईश्वर हो तुम देवों के प्रिय नायक हो।
इन्द्रदेव के तुम गुरुवर हो मम उर बसे विनायक हो॥
चारु चन्द्र मस्तक पर है, उन जगन्नाथ के पुत्र ललाम।
श्री गणपति के चारु चरण शुभ मन में बसें सदा छविधाम॥
गणपति-चरणों के चिन्तन से मिलते सबको लाभ अपार।
दिव्य-कान होते हैं, मन के दृग पाते प्रकाश का द्वार॥
तेज प्राप्त होता है, पौरुष बढ़ता है, होता बलवान।
कीर्ति फैलती निखिल विश्व से सब जग करते हैं सम्मान॥
सर्व-दिग्-विजय करके अपनी विजय-पताका फहराते।
रोग दूर होते, विष मिटते, सबल शत्रु भी घबराते॥
तुच्छ मान विष-रोग-शत्रु को सदा रहेंगे हम जीवित।
अमर बनेंगे, श्रेष्ठ बनेंगे, भय भी होगा दूर भ्रमित।,
अमृत मिलेगा, विद्या होगी, और यज्ञ होंगे वर्धित।
प्राप्त करेंगे यहाँ अमरता भलीभाँति हो लोक-विदित॥ ४॥

लोकवासियो! जानो, जानो, अमर-भोग तुम प्राप्त करो।
बोधि-रूप में गणपति-चरणों को पूजो, उर विनय भरो॥ ५॥

आज लगाए हूँ नयनों से गणपति के श्रीचरणों को।
ग्रंथ रचूँ, भूलूँ न, निबाहूँ निर्मल धर्माचरणों को॥
हृदय-राज्य पर स्थापित कर लूँ देव! आपका शुभ शासन।
मेरे इस मानव-जीवन का है उद्देश्य यही पावन॥ ६॥

नायक इन्द्रगुरु; मेरे हृदय में शोभायमान। चन्द्रशेखर जगन्नाथ के पुत्र (उन) गणपति के श्रीचरणों को मन में धारण करें। सुना है कि उससे लाभ बहुत होते है। उससे अन्तःकरण का कान खुलेगा; आन्तरिक नयन प्रकाश (ज्ञान) देगा। अग्नि प्रकट होगी। पौरुष बलवान होगा। (हम लोग फलतः) सर्व-दिग्विजय करके झण्डा गाड़ सकते हैं। फिर हम सर्प को हाथ से उठा सकेंगे। विष; रोग तथा कठोर शत्रु को भी तुच्छ मानकर, बिना दुख के, यहाँ दिन-दिन जीवित रहेंगे, अमर बनेंगे तथा उत्कृष्ट होंगे। हमारा भय दूर होगा; अमृत मिलेगा। विद्या बढ़ेगी, यज्ञ वर्द्धित होंगे। यह जान लो, अमरता भी हम यहाँ प्राप्त कर सकेंगे। ४ जान लो! जान लो, पृथ्वी के निवासियो, तुम यहाँ अमरों को प्राप्य भोग भुगत लोगे। गणपति की 'बोधि' रूप में पूजा करो! प्रेम के साथ उनके कंजचरणों की विनय करो! ५ हे गणपति! (मैंने आपके) चरण पकड़े! मैं आपके चरणों का अपनी आँखों से स्पर्श करा लूँ! मैं विविध ग्रंथ रचूँ! क्षण-क्षण भूल-चूक के बिना, अच्छे-भले काम करता रहूँ; और आपके शासन को अपने मन रूपी राज्य पर स्थापित करा लूँ—यही मेरा उद्देश्य है। ६ हे गणपति देव! मैं अपने ईप्सित वरों को स्पष्ट

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विरुत्तम् (छन्द)

अॅनक्कु वेण्डुम् वरङ्गळै इशैप्पेन् केळाय् गणपदि
मनत्तिर् चलनमिल्लामल् मदियिल् इरुळे तोन्ड्रामल्
निनैक्कुम् पॊळुदु निन्मवुन निलै वन्निडनी शॅयल् वेण्डुम्
कनक्कुज् जॅल्वम् नूऱुवयदु इवैयुम् तर नी कडवाये 7

अहवल् (छन्द)

कडमैयावन तन्नैक् कट्टुदल्
पिऱर् तुयर् तॊर्त्तल् पिऱर् नलम् वेण्डुदल्
विनायह देवनाय् वेलुडैक् कुमरनाय्
नारायणनाय् नदिच्चडै सुडियनाय्
पिऱ नाट्टिरुप्पोर् पॅयर् पल कूऱि
अल्ला ! यॅहोवा अॅनत् तॊळुदन्बुरुम्
देवरुन् दानाय् तिरुमहळ् बारदि
उमैयॅनुन् देवियर् उहन्दवान् पॊरुळाय्
उलहॅलाङ् गाक्कुम् ऑरु वनैप् पोऱ्ऱुदल्
इन्नान् गेयिप् पूमियि लॅवर्क्कुम्
कडमै यॅनप् पडुम्; पयनिदिल् नान्गाम्
अरम् पॊरुळ् इन्बम् वीडॅनुम् मुऱैये
तन्नै याळुज् जमर्त्तॅनक् करुळ्वाय्
मणक्कुळ विनायहा ! वान्मरैत् तलैवा !
तनैत्तान् आळुन् दन्मै नान् पॅऱ्ऱिडिल्
अॅल्लाप् पयन्गळुम् तामे अॅय्दुम्
अशैया नॅञ्जम् अरुळ्वाय् उयिरॅलाम्
इन्बुऱ्ऱिरुक्क वेण्डि निन्निरु ताळ्
पणिवदे तॊळिलॅनक् कॊण्डु
गणपदि देवा वाळ्वेन् कळित्ते 8

वॅण्बा (छन्द)

कळियुऱ्ऱु निन्ऱु, कडवुळे ! इङ्गुप्
पळियऱ्ऱु वाळ्न्दिडक् कण् पार्प्पाय्-- ऑळि पॅऱ्ऱुक्

कहूँगा सुनिए। मेरे मन में चंचलता न रहे; बुद्धि में अंधकार न हो; जब कभी चाहूँ तभी आपके ध्यान में मौन सध जाय। यह वर आप दिला दें। धनी सम्पत्ति, सौ वर्ष की आयु भी देनी चाहिए। ७ ये हमारे कर्तव्य हैं— आत्म-संयम, परदुखनिवारण; परहित-कामना और जिनको विनायक देव वेल (साँग)-धारी कुमारदेव, श्रीनारायण,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अंधकार हो नहीं बुद्धि में, चंचलता न रहे मन में।
सदा रहूँ मैं लीन आपके ध्यान-मौनमय-साधन में॥
सौ वर्षों की आयु, दीजिए सुख-सम्पत्ति, अपरिमित धन।
मन-वाञ्छित वर यही हमारे पूर्ण करो हे गज-आनन!॥ ७ ॥

आत्म-नियंत्रण में क्षम होऊँ, औ परदुःख-निवारण में।
पर-हित की कामना मनोरम बसे हमारे जीवन में॥
शक्ति-शस्त्र-धारी कुमार हों अथवा हों श्रीनारायण।
या शिव हों जो जटा-जूट में करते गंगा को धारण॥
या अल्लाह! यहोवा! कहकर जिन्हें विदेशी मान रहे।
लक्ष्मी, सरस्वती या गिरिजा ये सब जिन्हें बखान रहे॥
सब लोकों का जो रक्षक है बोलो उसकी जय-जयकार।
वही एक है देव सभी का नमस्कार कर लो शत बार॥
यही चार कर्तव्य विश्व में सबके माने जायेंगे।
धर्म, अर्थ औ काम, मोक्ष इनके फल जाने जायेंगे॥
हे गणपति! है यही कामना मेरी उस पर ध्यान धरें।
आत्म-नियंत्रण की दृढ़ क्षमता मुझको देव! प्रदान करें॥
वेदस्रोत हे देव! विनायक! कृपा आपकी पायेंगे।
मिले आत्म-संयम का गुण तो सभी लाभ मिल जायेंगे॥
कृपा करें हे देव! हमारा बने अचंचल, चंचल-मन।
तो मैं गणपतिदेव! आपके चरणों का कर लूँ वन्दन॥
मैं सुख पाऊँगा यदि जग के अन्य सकल हों जीव सुखी।
यही कामना मेरी भगवन्! जग में कोई हो न दुखी॥ ८ ॥

सुख से रहूँ, न जग-निन्दा हो, ऐसी कृपा-दृष्टि करिये।
विद्याओं में पारंगत हूँ, मन में ज्ञान-ज्योति भरिये॥

गंगाजटाधारी शिवजी और जिनको विदेशों में अल्लाह, यहोवा आदि कहकर पूजते हैं वे देव, लक्ष्मी, वाणी तथा उमादेवी आदि देवियाँ जिनको चाहती हैं और जो सर्व-लोकरक्षक हैं, उन एक परब्रह्म को नमस्कार करना। ये ही चार इस भूमि में किसी के भी कर्तव्य माने जायँगे। इनके फल चार होते हैं। वे हैं— धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष। (हे गणपति देव!) आत्मशासन की सामर्थ्य मुझे प्रदान करें। हे मणकुछ विनायक! हे उत्कृष्ट वेदनाथ! यदि मैं आत्म-संयम का गुण पा जाऊँ, तो सभी लाभ मुझे स्वतः आकर मिल जायेंगे। मुझे अचंचल मन दीजिए! हे गणपति देव! आपके दोनों चरणों की वन्दना करना मैं अपना काम बना लूँगा, ताकि सभी जीव सुखी रहें तब मैं भी सुख से जिऊँगा। ८ मैं सुख से रहूँ। हे ईश्वर! ऐसी कृपादृष्टि डालिए कि मैं अनिंद्य रहूँ। मैं प्रकाश (ज्ञान) पाऊँ; अनेक विद्याओं में पारंगत हो जाऊँ, कर्तव्य को अच्छी तरह से निभाऊँ, और प्राचीन कर्मों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कल्वि पल तेर्न्दु कडमै यॆलाम् नन्गार्ड्रित्
तॊल्विनैक् कट्टॆल्लाम् तुऱन्दु 9

कलित्तुरै (छन्द)

तुऱन्दार् तिऱमै पॆरिवॆदिनुम् पॆरि दाहुमिङ्गुक्
कुऱैन्दारैक्कात् तॆळियार्क् कुण वीन्दु कुलमहळुम्
अऱन्दाङ्गु मक्कळुम् नीडूळि वाळ्हॆन अण्डमॆलाम्
शिऱन्दाळुम् नादनैप् पोऱ्ऱिडुन् दॊण्डर् शॆयुन् दवमे 10

विरुत्तम् (छन्द)

तवमे पुरियुम् वहै यऱियेन् शलिया दुऱनॆञ् जऱियादु
शिवमे नाडिप् पॊळुदनैत्तुम् तियङ्गित् तियङ्गि निऱ्पेनै
नवमा मणिहळ् पुनैन्द मुडि नादा करुणालयने ! तत्
तुवमाहिय दोर् पिरणवमे अञ्जेल् ऍन्ऱु शॊल्लुदिये 11

अहवल् (छन्द)

शॊल्लिनुक् करियनाय् शूळ्च्चिक् करियनाय्प्
पल्लुरु वाहिप् पडर्न्दवान् पॊरुळै
उळ्ळुयि राहि उलहङ् गाक्कुम्
शक्तिये तानान् दनिच् चुडर्प् पॊरुळै
शक्ति कुमारनच् चन्दिर मवुलियैप्
पणिन्दव नुरुविले बावनै नाट्टि
ओमॆनुम् पॊरुळै उळत्तिले निऱुत्ति
शक्तियैक् काक्कुम् तन्दिरम् पयिन्ऱु
यार्क्कुम् ऍळियवनाय् यार्क्कुम् वलियवनाय्
यार्क्कुम् अनबनाय् यार्क्कुम् इनियनाय्
वाळ्न्दिड विरुम्बिनेन्; मनमे नीयिदै
आळ्न्दु करुदि आयन्दायन्दु पलमुऱै
शूळ्न्दु तॆळिन्दु पिन् शूळ्न्दार्क् कॆल्लाम्
कूऱिक् कूऱिक् कुऱैवऱत् तेर्न्दु

बन्धन काट दूं। ९ संन्यासियों की शक्ति बड़ी है। उससे भी बड़ा है ब्रह्मांड-नायक के उन भक्तों-सेवकों का तप, जो दीनों का रक्षण करते हैं और हीनों को भोजन देते हैं; और जो उस तप को कुलस्त्रियों तथा धर्मरक्षकों की चिरजीवता के लिए करते हैं। १०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भली-भाँति कर्तव्य निभाऊँ, काटूँ कर्मों के बन्धन।
यही माँगता, यही दीजिए, हे गणपति ! हे करुणा-घन ॥ ९ ॥
संन्यासियों-साधुओं में है सबसे बढ़कर शक्ति महान।
उससे बढ़कर भक्त-सेवकों की तप-शक्ति महा-बलवान ॥
दीनों की वे रक्षा करते, हीनों को भोजन देते।
कुलवधुओं को, धर्म-रक्षकों को, तप से जीवन देते ॥ १० ॥
तप की रीति नहीं मैं जानूँ, मन न शान्त रखना जानूँ।
पर प्रभु शिव को सदा खोजने के कारण कण-कण छानूँ ॥
करुणसिन्धु ! नवरत्नकिरीटी ! प्रणव-तत्त्व-कारण ! जय हो।
मेरे सिर पर वरद-हस्त रख कह दो मुझसे, 'निर्भय हो' ॥ ११ ॥
जो नेत्रों के लिए अलख है, जो वाणी के लिए अगम !।
श्रेष्ठतत्त्व सर्वत्र व्याप्त है विविध रूप धर जड़-जंगम ॥
तन में प्राण-रूप से बसकर जो करता सबका रक्षण।
जो गिरिजा-सुत चन्द्र-भाल है, जो गणेश है पूज्य-चरण ॥
उसकी प्रथम वंदना करके उसका रूप ध्यान में धर।
ओंकार का मंत्र मनोरम अपने मन में धारण कर ॥
जिससे शक्ति सुरक्षित रहती, होता बल का विमल विकास।
उस अति अद्भुत तंत्र-शास्त्र का करके सप्रयास अभ्यास ॥
सर्व-शक्ति-सम्पन्न, सर्व-प्रिय, सर्व-सुलभ औ' सर्व-मधुर।
इन महनीय गुणों से मंडित होने को था मैं आतुर ॥
रे मन ! इसको सोचो, कर लो विश्लेषण भी तुम गंभीर।
बार-बार अभ्यास करो तुम कभी न होना किन्तु अधीर ॥
भली-भाँति समझो तुम इसको अन्य जनों को समझाओ।
इस प्रकार उस परम तत्त्व का पक्का पूर्ण-ज्ञान पाओ ॥

मैं तपस्या करने की रीति को नहीं जानता। मन को अचंचल रखना भी नहीं जानता। पर शिव की खोज में सदा लगा रहता हुआ ठिठक-ठिठककर रह जाता हूँ। ऐसे मुझसे, हे नवरत्न किरीटधारी नाथ ! करुणासागर, प्रणवतत्त्व ! कहो कि 'डरो मत'। ११ जिनको वाणी के अन्दर लाना तथा नेत्रों से (देख) पा लेना दुर्लभ है, जो श्रेष्ठ वस्तु विविध रूप लेकर सर्वत्र व्याप्त हैं, जो अन्दर प्राण-रूप रहकर लोकरक्षण करते हैं; जो शक्ति (पार्वती) के कुमार हैं, जो चन्द्रशेखर हैं (इसमें गणपति का परब्रह्म-रूप स्मरण किया जाता है) उनकी वन्दना करके, उनके रूप को ध्यान में धरकर, 'ॐ' वस्तु चित्त में धारण करके, शक्ति को सुरक्षित करने के तन्त्र का अभ्यास करके मैं सर्वसुलभ, सर्वशक्ति, सर्वप्रिय तथा सर्वमधुर (सबके लिए मधुर) रहना चाहता था। रे मन ! तुम इस पर सोचो। गम्भीर रूप से इसका विश्लेषण करो; बार-बार अभ्यास करो, तुम स्वयं ठीक रूप से समझ लो; फिर पास रहनेवालों को समझाओ। फिर उस तत्त्व का पक्का ज्ञान प्राप्त करो। इस प्रकार उत्तरोत्तर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तेरिन्तेरि नान् शित्ति पॅऱ्ऱिडवे
निन्ना लियन्ऱ तुणै पुरिवायेल्
पॊन्नाल् उन्नक्कॊरु कोयिल् पुनैवेन्
मनमे ! ऍनै नी वाळ्वित् तिडुवाय्
वीणे युळ्ळुदल् वेण्डा
शक्ति कुमारन् शरण् पुहळ्वाये ! 12

वॅण्बा (छन्द)

पुहळ्वोम् गणपदि निन् पॊऱ्कळलै नाळुम्
तिहळ्वोम् पॅरुङ्गीर्त्ति शेर्न्दे— इहळ्वोमे
पुल्लरक्कप् पादहरिन् पॊय्यॅलाम्; ईङ्गिदु काण्
वल्लबै कोन् तन्द वरम् 13

कलित्तुरै (छन्द)

वरमे नमक्किदु कण्डोर् कवलैयुम् वञ्जनैयुम्
करवुम् पुलैमै विरुप्पमुम् ऐयमुम् काय्न्दॅरिन्दु
'शिरमीदु ऍङ्गळ् गणपदि ताळ्मलर् शेर्त्तॅमक्कुत्
तरमे कॊल् वानवर्' ऍन्ऱुळत् तेकळि शार्न्दवुवे 14

विरुत्तम् (छन्द)

शार्न्दु निऱ्पाय् ऍनदुळमे शलमुम् करवुम् शञ्जलमुम्
पेर्न्दु परम शिवानन्दप् पेऱ्ऱै नाडि नाळ् तोऱुम्
आर्न्द वेदप् पॊरुळ् काट्टुम् ऐयन् शक्ति तलैप् पिळ्ळै
कूर्न्द इडर्हळ् पोक्किडुनङ् गोमान् पादक् कुळिर् निळले 15

अहवल् (छन्द)

निळलिनुम् वॅयिलिनुम् नेर्न्द नऱ्ऱुणैयाय्त्
तळलिनुम् पुनलिनुम् अबायन् दविर्त्तु
मण्णिनुम् काऱ्ऱिनुम् वानिनुम् ऍनक्कुप्
पहैमै यॊन्ऱिन्ऱिप् पयन्दविर्त् ताळ्वान्

उत्कृष्ट होकर मुझे सिद्धि पाने में सहायता दोगे, तो मैं तुम्हारे लिए एक स्वर्णमन्दिर बना दूंगा। हे मन ! तुम (उच्च जीवन) जीने में मेरी सहायता करो। तुम व्यर्थ न भटकना। तुम शक्तिपुत्र (गणेश) के चरणों की वन्दना करो। १२ हम हे गणपति, प्रतिदिन आपके स्वर्ण-चरण की वन्दना करेंगे। हम बड़ा यश कमाकर शोभायमान रहेंगे। अधम राक्षसों, पापियों, झूठों की निन्दा करेंगे। यही

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सिद्धि-प्राप्ति में दो सहायता उन्नति करूँ उत्तरोत्तर।
बनवाऊँगा तभी तुम्हारे लिए विशाल स्वर्ण-मंदिर॥
व्यर्थ न तुम मुझको भटकाना सुन लो मेरे भोले मन।
देना मुझको सहायता तुम, जिससे बने उच्च-जीवन॥
(चंचलता को दूर मिटाने की संतत साधना करो)।
गिरिजा-सुत गणपति के पावन चरणों की वन्दना करो॥ १२॥
तव स्वर्णिम चरणों का गणपति सदा करेंगे हम वन्दन।
शोभित होंगे जगतीतल में कर विशाल यश का अर्जन॥
अधम राक्षसों, पातकियों की, झूठों की कटु निंदा कर।
हम जग में चरितार्थ करेंगे दिया वल्लभापति का वर॥ १३॥
चिन्ता, कपट, दुराव, नीचता की अभिलाषा औ' संशय।
इन सबको दुतकार दूर (पर) हमने फेंक दिया (निश्चय)॥
मस्तक पर विराजते मेरे भी गणपति के चरण कमल।
मेरे मन में भरा हुआ है यही मस्त आनन्द (अमल)॥
क्या अब हैं समकक्ष हमारे स्वर्ग-निवासी देव अमर?।
देखो यही मिला है हमको (सुखदायक मंगलमय) वर॥ १४॥
छल छोड़ो औ' कपट हटाओ, चंचलता त्यागो हे मन!।
परमानंद-प्राप्ति का प्रतिफल, करो प्रयत्न, करो साधन॥
जो गिरिजा के ज्येष्ठ पुत्र हैं जिनके गुण वेद गा रहे।
चुभनेवाले तीक्ष्ण संकटों के कंटक जो मिटा रहे॥
अगर चाहते हो तुम हरना तीनों तापों की माया।
तो अपना लो तुम गणपति के चरणों की शीतल छाया॥ १५॥
धूप और छाया दोनों में सबसे श्रेष्ठ सहायक हैं।
आग और पानी के भय से रक्षक सदा विनायक हैं॥

वल्लभापति (इधर गणपति को प्रायः ब्रह्मचारी के रूप में माना जाता है। पर कहीं-कहीं उन्हें वल्लभादेवी का पति माना जाता है। लगता है कि तन्त्रशास्त्र में पुत्री, पत्नी आदि में अन्तर नहीं माना जाता है।) का दिया वर है। १३ देखो, यही हमें मिला वर है हमने चिन्ता, कपट, दुराव, नीचता की कामना तथा संशय को दुत्कार कर दूर फेंक दिया; और मन में यह मस्त आनन्द भर गया कि हमने अपने सिर पर अपने गणपति के चरण-कमल धारण कर लिये हैं। क्या अब व्योमवासी (सुर) भी हमारी समता करने योग्य रहे? १४ हे मेरे मन! छल, कपट, चंचलता आदि छोड़ो। परम शिवानन्द की प्राप्ति का प्रयत्न करो। दिन-दिन श्रेष्ठ वेदार्थ जिनका प्रतिपादन करता है, उन प्रभु के, शक्तिदेवी के ज्येष्ठ पुत्र के, और चुभनेवाले तीक्ष्ण संकटों को मिटानेवाले हमारे नायक के चरणों की शीतल छाया के आश्रय में रहो। (इस पद्य का अर्थ करते समय आरम्भ में के शारनदु निरपाय— आश्रय में रहो, शब्दों को पद्य के अन्त में रखकर अर्थ बनाना चाहिए।) १५ छाँह में तथा धूप में युक्त, सर्वश्रेष्ठ सहायक, आग के या पानी के तरेख से बचानेवाले; पृथ्वी, वायु तथा आकाश में मुझे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उळ्ळत् तोङ्ग नोक्कुरुम् विऴियुम्
मौन वायुम् वरन्दरु कैयुम्
उडैय नम्बॆरुमान् उणर्बिले निऱ्पान्
ओमॆनुम् निलैयिल् ऒळियात् तिहऴ्वान्
वेदमुनिवर् बिरिवाहप् पुहऴ्न्द
बिरुहस् पतियुम् बिरमनुम् यावुम्
तानॆ याहिय तनिमुदऱ् कडवुळ्
यानॆन दऱ्ऱार् ञानमे तानाय्
मुत्ति निलैक्कु मूलवित् तावान्
शत्तॆनत् तत्तॆनच् चदुर्मऱै याळर्
नित्तमुम् पोऱ्ऱुम् निर्मलक् कडवुळ्
एऴैयर्क् कॆल्लाम् इरङ्गुम् पिळ्ळै
वाऴुम् पिळ्ळै मणक्कुळप् पिळ्ळै
वॆळ्ळाडै तरित्त विट्टुणु वॆन्ऱु
शॆप्पिय मन्दिरत् तेवनै
मुप्पॊऴुदेत्तिप् पणिवदु मुऱैये 16

वॆण्बा (छन्द)

मुऱैये नडप्पाय्, मुऴुमूड नॆञ्जे !
इऱैयेनुम् वाडाय् इनिमेल्— करैयुण्ड
कण्डन् महन्वेद कारणन् शक्ति महन्
तॊण्डरुक् कुण्डु तुणै 17

कलित्तुरै (छन्द)

तुणैये ऎनदुयिरुळ्ळे यिरुन्दु शुडर्विडुक्कुम्
मणिये ऎनदुयिर् मन्नवने ! ऎन्ऱन् वाऴ्बिनुक्कोर्
अणिये ऎनुळ्ळत्ति लारमुदे ऎनदऱ्पुदमे !
इणैये दुनक्कुरैप्पेन् कडैवानिल् ऎऴुञ्जुडरे ! 18

शत्रुहीन बनाकर मेरी रक्षा करनेवाले; ऐसी दृष्टि जिससे हम आपको अपने चित्त में मूर्त-रूप से स्थित देखें, मौन मुख तथा वरद हाथ —इनसे भूषित हमारी अनुभूति में टिकनेवाले प्रभु हैं। जो ॐ की (ध्यान) स्थिति में प्रकाशमय रहनेवाले हैं, वेद-मुनि प्रशंसित बृहस्पति तथा ब्रह्मा सभी हैं, वे आदि-मूल परमेश्वर; जो निरहंकार के स्वयं ज्ञान ही हैं; मुक्ति-स्थिति के आधार-बीज, सत् या तत् कहकर जिनकी चतुर्वेदी ब्राह्मण लोग निरन्तर स्तुति करते हैं; समस्त असहाय लोगों पर दया करनेवाले बालक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भूमि, वायु, आकाश सभी में हैं रक्षा करनेवाले।
हृदय-व्यापिनी दृष्टि, मौन मुख, वरद-हस्त धरनेवाले॥
शुभ आत्मानुभूति के भीतर यों प्रतिभासित होते हैं।
ओंकार की ध्यान-दशा में सदा प्रकाशित होते हैं॥
वैदिक मुनि से सदा प्रशंसित ब्रह्मा तथा बृहस्पति हैं।
आदिमूल परमेश्वर हैं वे निरहंकार ज्ञानमति हैं॥
मंजु-मुक्ति-आधार-बीज वे भव-बंधन को हरते हैं।
चतुर्वेद-विद्-विप्रवृंद 'तत् सत्' कहकर स्तुति करते हैं॥
दीनों पर दयालु, चिरजीवी, "मणक्कुळप् पिळ्ळै" नामक।
इन सब अमित गुणों से मंडित वे कहलाते हैं बालक॥
"शुक्लाम्बरधर विष्णु' मंत्र में वर्णित वंदित देव यही।
(वेदों, शास्त्रों और पुराणों में अभिनंदित देव यही॥
इस प्रकार नाना रूपों में किया गया जिनका वर्णन।
उन गणेश का तीन बार हम करें सदा प्रतिदिन वंदन॥ १६ ॥

मेरे निपट मूर्ख मन! क्रमशः बढ़ो, न तृण भर कुम्हलाओ।
गिरिजा-शंकर-सुत, वेदों के कारण, गणपति को ध्याओ॥
उनकी सहायता भक्तों के लिए अतीव अपेक्षित है।
उनकी सहायता पाकर के सदा सफलता निश्चित है॥ १७ ॥

मेरे सदा सहायक हो तुम, कृपा तुम्हारी रहे अटल।
प्राणों में बसकर प्रकाश छिटकानेवाले रत्न विमल॥
मेरे प्राणों के राजा हो, अलंकार मम जीवन के।
हो पावन-पीयूष हृदय के, विस्मय हो मेरे मन के॥
मेरे विस्तृत भाव-गगन की जगमग ज्योति मनोरम हो।
और कौन है सदृश तुम्हारे, इस जग में तुम अनुपम हो॥ १८ ॥

(इधर गजानन को पिळ्ळैयार कहते हैं। पिळ्ळै का अर्थ बालक या पुत्र है। 'आर' आदरसूचक प्रत्यय है) चिरंजीव रहनेवाले 'बालक' मणक्कुळप् पिळ्ळै, "शुक्लांबरधरं विष्णुं" के मंत्र के देव को हम (प्रतिदिन) तीन बार नमस्कार करके स्तुति करें —यह उचित कार्यक्रम है। (इस वाक्य के 'कर्ता' समानाधिकरण के रूप में, अनेक हैं।) १६ हे निपट मूर्ख मन! कार्यक्रम के अनुसार चलो। आगे जरा भी मत कुम्हलाओ। नीलकंठ-सुत, वेद-हेतु, शक्तिपुत्र, उन (विनायक देव) से सहायता पाना उनके सेवकों (भक्तों) के लिए निश्चित है। १७ हे मेरे सहायक! मेरे प्राणों के अन्दर रहकर प्रकाश की किरणों को छिटकानेवाली मणि! मेरे प्राणों के अधिपति! मेरे जीवन के आभूषण! मेरे चित्त के अमृत! मेरे आश्चर्य! मेरे अंतरिक्ष में उठनेवाली ज्योति! मैं आपका द्वितीय (आप जैसा कोई दूसरा) किसको कहूँ? १८ हे ज्योति! नमोऽस्तु ते! गणदेवों के राजा! नमोऽस्तु! आठ हजार बार मैंने बताया है—

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विरुत्तम् (छन्द)

शुडरे पोऱ्ऱि ! कणत्तेवर्, तुरैये पोऱ्ऱि ! ऍऩक्कॆऩ्ऱुम्
इडरे यिऩ्ऱिक् कात्तिडुवाय्, ऍणणायिरङ्गाल् मुऱैयिट्टेऩ्;
पडर्वाऩ् वॆळियिर् पलकोडि, कोडि कोडिप् पल्कोडि
इडऱा दोडुम् अण्डङ्गळ् इशत्ताय् वाऴि इऱैयवऩे 19

अहवल् (छन्द)

इऱैवि इऱैवऩ् इरण्डुम् ऑऩ्ऱाहित्
तायाय्त् तन्दैयाय्च् चक्तियुम् शिवऩुमाय्
उळ्ळॊळि याहि उलहॆलान् दिहळुम्
परम्बॊरुळेयो ! परम्बॊरुळेयो !
आदिमूलमे ! अऩैत्तैयुम् काक्कुम्
देव देवा ! शिवऩे ! कण्णा !
वेला ! शात्ता ! विनायहा ! माडा !
इरुळा ! सूरिया ! इन्दुवे ! शक्तिये !
वाणी ! काळी ! मामह ळेयो !
आणाय्प् पॆण्णाय् अलियाय् उळ्ळदु
यादुमाय् विळङ्गुम् इयर्कैत् तॆय्वमे
वेदच्चुडरे मॆय्याङ् गडवुळे
अबयम् अबयम् अबयम् नाऩ् केट्टेऩ्
नोवु वेण्डेऩ् नूऱ्ऱाण्डु वेण्डिऩेऩ्
अच्चम् वेण्डेऩ् अमैदि वेण्डिऩेऩ्
उडैमे वेण्डेऩ् उऩ्ऩुणै वेण्डिऩेऩ्;
वेण्डा दऩैत्तैयुम् नीक्कि
वेण्डिय दऩैत्तुम् अरुळ्वदुऩ् कडऩे 20

वॆण्बा (छन्द)

कडमैता नेदु करिमुहऩे ! वैयत्
तिडम्नी यरुळ्शॆय्दाय्, ऍङ्गळ् उडैमैहळुम्
इऩ्बङ् गळुमॆल्लाम् ईन्दाय्नी याङ्गळुऩक्कु
ऍऩ्पुरिवोम् कैम्मा ऱियम्बु ? 21

संकटों को दूर करके मुझे सदा बचाइये ! विशाल आकाश में अनेक करोड़, करोड़, करोड़, वर्धन-शील और आपस में टकराये बिना घूमते चलनेवाले करोड़ों ब्रह्माण्डों के सर्जक! हे ईश्वर ! जय हो आपकी ! १९ क्या आप वह एक परम वस्तु हैं, जो ईश्वरी तथा ईश्वर दोनों बने हैं, माता तथा पिता, शक्ति और शिव बने हैं, जो अंबर की ज्योति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ज्योति-रूप ! तुमको प्रणाम है, गणनायक ! प्रणाम तुमको।
(विघ्न-विनायक को प्रणाम है, वरदायक ! प्रणाम तुमको) ॥
आठ हज़ार बार हे गणपति ! हमने तुम्हें पुकारा है।
संकट सभी मिटा दो मेरे आश्रय देव ! तुम्हारा है॥
घूम रहे हैं नभमंडल में अगणित कोटि-कोटि ग्रह-गण।
टकराते न कभी आपस में करते नियम-समेत भ्रमण॥
ऐसे कोटि-कोटि ब्रह्माण्डों के स्रष्टा गणपति की जय।
(वर्तमान औ' भूत-भविष्यत् के द्रष्टा गणपति की जय) ॥ १९ ॥

ईश्वर और ईश्वरी दोनों परमवस्तु बन जायँ घने।
शक्ति और शिव यह दोनों ही मेरे माता-पिता बनें॥
अंतर्ज्योति रूप बनकर जो जग-प्रपंच में भासित हैं।
परमतत्त्व कहकर उसको ही करते शास्त्र प्रकाशित हैं॥
परम-तत्त्व ही आदिमूल है, वही देव सबका रक्षक।
वही शक्ति-धारक कुमार है, वही विनायक है शासक॥
'माढ देव', 'इरुला', रवि, शशि है, वही शक्ति, वाणी, काली।
वही पुरुष, स्त्री और नपुंसक, लक्ष्मी वही कान्तिशाली॥
जो परिपूर्ण सभी भावों से, है वह प्रकृति निखिल-गुण-धाम।
सत्य, ब्रह्म उसको कहते हैं, वही वेद की ज्योति ललाम॥
परमतत्त्वमय परब्रह्म मैं माँग रहा हूँ बनूँ अभय।
सौ वर्षों की आयु माँगता, रोग दूर हों, हूँ निर्भय॥
मुझे चाहिए अभय शान्ति बस, है धन की कामना नहीं।
निर्मल भक्ति मुझे प्रभु ! दे दो मुझे और याचना नहीं॥
कभी न देना मुझको वे सब, जो-जो हों मेरे प्रतिकूल।
करो अनुग्रह, सदा वही दो जो-जो हो मेरे अनुकूल॥ २० ॥

दिये मुझे सब सुख प्रभु ! तुमने सौंपी संपत्तियाँ महान।
की वसुधा पर कृपा, करें कैसे प्रभुवर ! इसका प्रतिदान॥ २१ ॥

बनकर सृष्टि भर में दीप्त रहते हैं। हे परमवस्तु ! आदिमूल ! सर्वरक्षक देवदेव ! कान्हा ! वेला (सांगधारी कार्तिकेय !) शास्ता ! विनायक ! माढदेव ! (दक्षिण में परमेश्वर के अनेक रूप माने जाते हैं। उनमें एक दीवार पर बने ताक में रहनेवाला माना जाता हो ! उसे माढदेव कहते हैं !) इरुळा (अंधकार के समान काले रहनेवाले देव) ! सूर्य ! इन्दु ! शक्ति ! वाणी ! काली ! हे लक्ष्मीदेवी ! स्त्री, पुरुष, नपंसक और जिनके भाव हैं, वे सब बने रहनेवाले प्रकृति देवता ! वेद-ज्योति ! सत्यब्रह्म ! मैं अभय, अभय माँगता हूँ ! रोग नहीं आए। सौ वर्ष (आयु) माँगता हूँ। भय नहीं चाहता; शांति चाहता हूँ। संपत्ति नहीं चाहता। आपका साथ (भक्ति) चाहता हूँ। जो नहीं चाहता, उन सबको (मुझसे) अलग कर लें; जो चाहता हूँ, वह मुझे प्रदान कर अनुगृहीत करना आपका कर्तव्य है। २० हम करें भी क्या ? भूमि पर आपने कृपा की।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कलित्तुरै (छन्द)

इयम्बु मॊळिहळ् पुहळ्मरै याहुम् ऎडुत्तविनै
पयन्पडुम् देवर् इरुपोदुम् वन्दु पदन्दरुवर्
अयन्पदि मुन्नोन् गणपदि सूरियन् आनैमुहन्
वियन्पुहळ् पाडिप् पणिवार् तमक्कुरुम् मेन्मैहळे 22

विरुत्तम् (छन्द)

मेन्मैप् पडुवाय् मनमे ! केळ्, विण्णिन् इडिमुन् विळुन्दालुम्
पान्मै तवरि नडुङ्गादे ! पयत्ताल् एदुम् पयनिल्लै;
यान्मुन् उरैत्तेन् कोडिमुरै इन्नुङ् गोडि मुरै शॊल्वेन्
आन्मावान गणपदियिन् अरुळुण्डु अच्चम् इल्लैये 23

अहवल् (छन्द)

अच्च मिल्लै अमुङ्गुद लिल्लै
नडुङ्गुद लिल्लै नाणुद लिल्लै
पाव मिल्लै पदुङ्गुब लिल्लै
एदु नेरिन्नुम् इडर्प्पड माट्टोम्;
अण्डञ् जिदरिनाल् अञ्ज माट्टोम्
कडल् पॊङ्गि ऎळुन्दार् कलङ्ग माट्टोम्
यार्क्कुम् अञ्जोम् ऎदर्कुम् अञ्जोम्
ऎङ्गुम् अञ्जोम् ऎप्पॊळुदुम् अञ्जोम्
वानमुण्डु मारि युण्डु
आयिरुम् काऱुम् नल्ल नीरुम्
तीयुम् मण्णुम् तिङ्गळुम् मीन्गळुम्
उडलुम् अरिवुम् उयिरुम् उळवे;
तिन्नप् पॊरुळुम् शेर्न्दिडप् पॆण्डुम्
केट्कप् पाट्टुम् काणनल् लुलहमुम्

आपने हमें संपत्तियाँ, सुख सब प्रदान किये। हम आपका प्रत्युपकार क्या करें ? आप ही कहें। २१ जो ब्रह्मा, शिव तथा सूर्य के भी पहले से स्थित हैं, उन गजानन की विस्मयकारी महिमा गाओ, तो तुम जो भी कहोगे, वह वेद-वाक्य होकर रहेगा। जो भी आरम्भ करोगे, वह कार्य सफल होगा। देवता लोग दोनों जून आयेंगे और तुम्हें (उच्च) पद दिलायेंगे। ये सब उन भक्तों को प्राप्त होनेवाली श्रेष्ठताएँ हैं। २२ हे मन ! तुम श्रेष्ठ बन जाओगे। सुनो ! सामने आकाश की गाज भी गिरे, तो भी 'स्वभाव' को त्यागकर डरो मत। यह पहले ही मैंने करोड़ बार कहा है कि भय से कोई लाभ नहीं होता है। और करोड़ बार यहाँ कहूँगा। आत्मारूप गणपति की कृपा है। भय (का कोई कारण) नहीं। २३ डर नहीं; दबना नहीं है। काँपना नहीं, लजाना नहीं,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ब्रह्मा, शिव, रवि से भी पहिले स्थिति है जिन चतुरानन की।
विस्मयकारी महिमा गाओ यदि तुम उन्हीं गजानन की॥
गणपति की पूजा करने से तुम महान फल पाओगे।
वेद-वाक्य वे बन जायेंगे जो भी मुख से गाओगे॥
जो भी तुम आरंभ करोगे वे सब कार्य सफल होंगे।
साँझ-सबेरे दर्शन दगे प्रभुवर! भाव विमल होंगे॥
इस प्रकार जो जन करते हैं गणपति-चरणों का पूजन।
सभी श्रेष्ठताएँ करती हैं उनके चरणों का चुंबन॥ २२॥
हे मन! तुमको समझाता हूँ, श्रेष्ठ व्रती बन जाओ तुम।
अगर गगन से गिरे गाज भी, कभी नहीं घबराओ तुम॥
धैर्य न त्यागो, नहीं डरो तुम, कोई लाभ नहीं भय से।
यही करोड़ों बार कहा है और कहूँगा निश्चय से॥
आत्मरूप गणपति की जिस पर दयादृष्टि हो जाती है।
दूर सभी भय उनके होते औ अशान्ति खो जाती है॥ २३॥
नहीं डरेंगे, नहीं दबेंगे, काँपेंगे न लजायेंगे।
नहीं करेंगे पाप, न अपने पाप कदापि छिपायेंगे॥
चाहे जो भी संकट आयें कभी नहीं घबरायेंगे॥
खण्ड-खण्ड ब्रह्माण्ड-भाण्ड हो तो भी भीति न पायेंगे॥
अगर उबलने लगे सिन्धु भी तो भी क्षुब्ध नहीं होंगे।
(इस क्षणभंगुर जीवन के प्रति रंचक लुब्ध नहीं होंगे)॥
किसी मनुज से नहीं डरेंगे, किसी वस्तु से भी न डरें।
अरे कहीं भी नहीं डरेंगे और कभी भी नहीं डरें॥
अगम अनन्त व्योम-मंडल है, निर्मल जल की वृष्टि तरल।
जगमग रवि है, सुखद पवन है, विमल सलिल है, प्रबल अनल॥
विस्तृत व्यापक वसुन्धरा है, चारु चन्द्र मुसकाता है।
नक्षत्रों का क्षत्र बना-सा (नभमंडल छवि छाता है)॥
स्वस्थ शरीर, विशुद्ध बुद्धि है, ऊर्जस्वल हैं प्राण प्रबल।
श्री गणपति ने दिये सभी को ये पदार्थ अनमोल अमल॥
भोज्य पदार्थ विविध प्रस्तुत हैं, रति-रंजक सुन्दरियाँ हैं।
श्रवण-सुखद संगीत सुखद है, (नृत्य-निरत किन्नरियाँ हैं)॥

पाप नहीं, छिपना नहीं। जो कुछ भी हो, हम पीड़ित नहीं होंगे। ब्रह्माण्ड फटकर छितर जाय, तो भी नहीं डरेंगे। समुद्र उमड़ आये, तो भी विलोडित नहीं होंगे। किसी मनुष्य से नहीं डरेंगे, किसी भी चीज से नहीं डरेंगे। कहीं नहीं डरेंगे। कभी नहीं डरेंगे। आकाश है— बारिश है। रवि, पवन, शुद्ध जल, अनल, पृथ्वी, चन्द्र तथा नक्षत्र, शरीर, बुद्धि, प्राण —सभी हैं। अशन करने के लिए भोज्यपदार्थ हैं, संगति के लिए नारियाँ हैं। श्रवण के लिए संगीत है, देखने के लिए सुन्दर विश्व है। संतोष के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कळित्तुरै शॆय्यक् कणपदि पॆयरुम्
ऎन्रुमिङ् गुळवाम् ! शलित् तिडाय्; एळै
नॆञ्जे ! वाळि नेर्मैयुडन् वाळि !
वञ्जहक् कवलैक् किडङ्गॊडेल् मन्नो !
तञ्ज मुण्डु शॊन्नेन्
शॆञ्जुडर्त् तेवन् शेवडि नमक्के 24

वॆण्बा (छन्द)

नमक्कुत् तॊळिल् कविदै नाट्टिर् कुळैत्तल्
इमैप्पॊळुदुञ् जोरा दिरुत्तल्— उमैक्किनिय
मैन्दन् कणनादन् नङ्गुडियै वाळ्विप्पान् !
शिन्दैये इम्मून्रुम् शॆय् 25

कलित्तुरै (छन्द)

शॆय्युङ् गविदै पराशक्ति याले शॆय्यप् पडुङ्गाण्
वैयत्तैक् काप्पवळ् अन्नै शिव शक्ति वण्मै यॆल्लाम्
ऐयत्ति लुन्दुरि दत्तिलुञ् जिन्दि यळिव दॆन्नै
पॆयत् तॊळिल् पुरि नॆञ्जे ! गणादिपन् बक्ति कॊण्डे 26

विरुत्तम् (छन्द)

बक्ति युडैयार् कारियत्तिर् पदरार् मिहुन्द पॊरुमैयुडन्
वित्तु मुळैक्कुन् दन्मैपोल् मॆल्लच् चॆय्दु पयन्नडैबार्
शक्ति तॊळिले अन्नैत्तु मॆनिर् चार्न्द नमक्कु शञ्जलमेन् ?
वित्तैक् किरैवा ! कणनादा ! मेन्मैत् तॊळिलिर् पणियॆन्नैये 27

अहवल् (छन्द)

ऎन्नै नी काप्पाय् यावुमान् दॆय्वमे !
पॊरुत्ता रन्रे पूमि याळ्वार् ?

साथ जपने के लिए गणपति का नाम है। ये सब यहाँ निरन्तर हैं। चंचल मत होओ। हे बेचारे मन ! आर्जव के साथ जिओ। जय हो तुम्हारी। वंचक चिन्ता के लिए स्थान मत दो। मैंने कहा न कि लाल किरणों के देव की शरण का, हमें आश्रय है। २४ हमारा धंधा कविता की रचना करना है तथा देश की सेवा करना है। और पल भर के लिए भी हमें निढाल नहीं रहना है। उमा के प्यारे पुत्र गणनाथ हमारे घर को उन्नत बनाये रखेंगे। हे मन ! अतः ये तीनों कार्य करो। २५ यह जान लो, रची कविता पराशक्ति से रचित होती है। लोकरक्षिका माता शिवशक्ति की सारी देन को संशय तथा (त्वरा) जल्दी (करने) में क्यों लुटाकर मिटाया जाय ? हे मन ! धीरे-धीरे गणाधिप की भक्ति पर विश्वास रखकर धीरे-धीरे काम करो। २६ जिनमें भक्ति है, वे कार्य में उतावली नहीं दिखाते। वे बहुत ही क्षमाशीलता के साथ, जैसा बीज उगता है,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दर्शनीय है विश्व मनोरम लगता नयनों को अभिराम।
ससंतोष जप-योग्य जगत में है पावन गणपति का नाम॥
हे मन! सभी पदार्थ विश्व में तुमको प्राप्त निरन्तर हैं।
फिर क्यों इस अभिराम विश्व में चिन्ता-ग्रस्त सभी नर हैं॥
जिओ सरलता को अपनाकर, त्यागो मादक चंचलता।
वंचक-चिन्ता तजो चिता-सम, जय हो, प्राप्त करो क्षमता॥
कह तो दिया कि शरण हमें है औ' शुभ संकट-हरण हमें।
अरुण-किरण-सम अरुण-वर्ण गणपति-चरणों की शरण हमें॥ २४॥

भावपूर्ण कविताएँ रचना तथा देश-सेवा निष्काम।
पल भर को भी कभी न थकना, मेरे तीन यही प्रिय काम॥
तीनों कार्य अगर मन! तेरे ये पूरे हो जाएँगे।
तो गिरिजा-सुत श्री गणनायक उन्नत तुझे बनाएँगे॥ २५॥

पराशक्ति की परम कृपा से होती कविता की रचना।
भलीभाँति यह बात समझ लो कुछ भी नहीं असत्यपना॥
लोकरक्षिका माता श्री शिवशक्ति ने दिये तुमको वर।
उन्हें अरे! संशय-प्रमाद में लुटा रहा तू क्यों पामर!॥
धीरे-धीरे काम करो सब अटल धैर्य को धारण कर।
रखो अटल विश्वास भक्ति मन! श्रीगणपति के चरणों पर॥ २६॥

भक्त लोग कामों के करने में न हड़बड़ी करते हैं।
काम सभी करते धीरज से, नहीं गड़बड़ी करते हैं॥
धीरे-धीरे उगता जैसे बोया बीज धरातल पर।
उन्नति के गिरि पर वैसे ही चढ़ते क्षमाशील वे नर॥
महाशक्ति ही सब कुछ करती फिर क्यों ये मन उन्मन हो?॥
क्यों घबराये? क्यों भय खाये? क्यों आतुर हो? क्रन्दन हो?॥
विद्या-दायक देव विनायक! (मुझ पर करुणा दिखाइये)।
सत्कर्मों में, सद्-धर्मों में मुझे सर्वदा लगाइये॥ २७॥

सभी देवगण आज हमारी रक्षा करें, विपत्ति हरें।
'क्षमाशील होते भूपति ही' यह जनोक्ति चरितार्थ करें॥
जो दें देव उसे सह लेना, जानो इसे राम का बाण।
इसमें ही है भला सभी का इसमें ही सबका कल्याण॥

वैसा धीरे-धीरे (कार्य को) सम्पन्न करके उन्नति कर पाते हैं। शक्ति के ही सभी कृत्य हैं तो हमें चंचलता, बेचैनी क्यों हो? हे विद्या के देव! हे गणनाथ! मुझे श्रेष्ठ कार्य में लगा दीजिए। २७ हे देव! जो सर्व हैं। मेरी रक्षा करें। भू-शासक क्षमाशील ही होते हैं न! (यह तमिळ की कहावत है।) आप सभी हैं, तो सभी को (झेल) सह लेना ही अच्छा उपाय है। उसी में शिव-स्थिति संभाव्य है। (मेरा) उबलना थमाकर मुझे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यावुम् नी यायिन् अनैत्तैयुम् पॊरुत्तल्
शॆव्विय नॆऱि, अदिऱ् चिव निलै पॆऱलाम्
पॊङ्गुदल् पोक्किप् पॊऱैयॆनक् कीवाय्
मङ्गळ कुणपति ! मणक्कुळ गणपति !
नॆञ्जक् कमलत्तु निऱैन्दरुळ् पुरिवाय्
अहल्विळि उमैयाळ् आशै महने !
नाट्टिनैत् तुयरिन्ऱि नन्गमैत् तिडुवदुम्
उळमॆनुम् नाट्टै ऒरु पिळैयिन्ऱि
आळ्वदुम् पेरॊळि ञायिऱै यनैय
शुडर्तरु मदियॊडु तुयरिन्ऱि वाळ्दलुम्
नोक्कमाक् कॊण्डु निन्पदम् नोक्किनैन्
कात्तरुळ् पुरिह कडवुळे ! उलहॆलाम्
कोत्तरुळ् पुरिन्द कुऱिप्परुम् पॊरुळे
अङ्गुश पाशमुम् कॊम्बुम् तरित्ताय् !
ऍङ्गुल देवा पोऱ्ऱि
शङ्गरन् महने ताळिणै पोऱ्ऱि 28

वॆण्बा (छन्द)

पोऱ्ऱि कलि याणि पुदल्वने ! पाट्टिनिलै
आऱ्ऱ लरुळि अडियेनैत्— तेऱ्ऱमुडन्
वाणिपदम् पोऱ्ऱुवित्तु वाळ्विप्पाय् ! वाणियरुळ्
वोणैयॊलि ऍन् नाविल् विण्डु 29

कलित्तुऱै (छन्द)

विण्डुरै शॆय्हुवन् केळाय् पुदुवै विनायहने
तॊण्डुन दन्नै पराशक्तिक् कॆन्ऱुम् तॊडर्न्दिडुवेन्
पण्डैच् चिऱुमैहळ् पोक्कि ऍन्नाविऱ् पळुत्त शुवैत्
तॆण्डमिळ्प् पाडल् ऒरु कोडि मेविडच् चॆय्हुवैये 30

क्षमा सिखा दें। हे मंगल-गुणपति; मणक्कुळ गणपति (यह पुदुच्चेरी स्थित विनायक का नाम है।) हृदयकमल में भरकर मुझ पर कृपा कीजिए। हे विशालाक्षी उमादेवी के पुत्र ! देश को सुखी तथा श्रेष्ठ बनाने, मन के देश को विना किसी अपराध के स्वशासन में लाने, महान ज्योति-सूर्य के समान बुद्धि के साथ रहने की साध लेकर मैं आपके चरणों की ओर ताक रहा हूँ ! हे कल्पक विनायक ! रक्षा करें ! हे ईश्वर ! रक्षा कीजिए। सारे लोकों को मिलाकर पालनेवाले हे अप्रमेय वस्तु ! अंकुश-पाश-दंतधारी! (कहा जाता है कि विनायक ने महाभारत लिखने के लिए अपने दांतों में से एक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उग्र क्रोध की ज्वालाओं का हरना मुझको सिखला दो।
अपराधों को भुला क्षमा का करना मुझको सिखला दो॥
हे मंगल 'गुणपति' तुम मेरे मनमंदिर में आ जाओ।
मंजु मणक्कुल गणपति मेरे हृदय-कमल में मुसकाओ॥
प्रिय स्वदेश को श्रेष्ठ, सुखी, सम्पन्न, समृद्ध बनाने को।
हृदय-देश को निरपराध कर शासन स्वीय जमाने को॥
हरने को अज्ञान-अँधेरा, दुख की रात मिटाने को।
रवि की आभा-सी आभासित बुद्धि विमल अपनाने को॥
हे विशाललोचना उमा के पुत्र! सभी यह पाने को।
अशरण-शरण चारु चरणों में उत्सुक हूँ मैं आने को॥
रक्षा करें विनायक! मेरी हे ईश्वर! रक्षा करिये।
हे सब लोकों के परिपालक! परमेश्वर! रक्षा करिये॥
अप्रमेय शुभ तत्त्वरूप! हे अंकुश-पाश-दन्तधारी!।
हे मेरे कुलदेव पूज्य! हे शंकर-सुत! मंगलकारी!॥
शुद्धभाव से भक्ति तुम्हारी सब प्रकार मैं करता हूँ।
कोमल चारु चरण-कमलों को नमस्कार मैं करता हूँ॥ २८॥

कल्याणी-सुत नमस्कार है, मन में विपुल भक्ति भर दो।
मेरी कविता में, गीतों में, अतुल अपार शक्ति भर दो॥
वाणी के चरणों का वंदन सदा धैर्य के साथ करूँ।
उन्नत जीवन कर दो मेरा (दीन जनों के कष्ट हरूँ)॥
वीणा-वादिनि (हंसवाहना, पद्मासना, कुन्द-दशना)।
आज बसे मेरी रसना पर सरस्वती (उज्ज्वल-वसना)॥ २९॥

पुदुच्चेरी के देव विनायक! सुनिये मेरे विनय-वचन।
मैं तव माता पराशक्ति का सदा करूँगा पग-वन्दन॥
लघुताएँ प्राचीन दूर कर, मेरे सिर पर कर परसें।
कोटि-कोटि रसमय कविताएँ मेरी रसना से बरसें॥ ३०॥

को तोड़कर उसकी लेखनी बनायी थी।) हमारे कुलदेवता! नमोऽस्तु! शंकर-सुवन! आपके चरणद्वय को नमस्कार है। २८ हे कल्याणीसुत! नमस्कार! मेरे गीत में शक्ति भर दें; मुझसे धैर्य के साथ वाणी के चरणों की वन्दना करवाकर मुझे उन्नत जीवन जीने दें। वाणी (सरस्वती) की वीणावाणी मेरी जीभ में प्रगट हो। २९ हे पुदुच्चेरी के विनायक! मैं खुलकर (प्रकट रूप से) कहूँगा। सुनिए। मैं आपकी माता पराशक्ति की सेवा हमेशा जारी रखूँगा। प्राचीन लघुताओं को दूर करके, मेरी जिह्वा से एक करोड़ सुरस कविताओं को निकलने दीजिए। ३० ललिता, मधुरा, श्रीदेवी, लाल कमल पर रहनेवाली लक्ष्मी का दास होकर मैं जो भी करूँ उन सब कार्यों में वे हाथ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विरुत्तम् (छन्द)

शॆय्याळ् इनियाळ् श्री देवी शॆन्दा मरैयिऱ् चेर्न्दिरुप्पाळ्
कैया ळॆत्तनिन् ऱडियेन् शॆय् तीळिल्हळ् यावुम् कॆकलन्दु
शॆय्वाळ् पुहळ्शेर् वाणियुमॆन् नुळ्ळे निन्ऱु तीङ्गविदै
पॆय्वाळ् ! शक्ति तुणै पुरिवाळ् पिळ्ळाय् निन्नैप् पेशिडिले 31

अहवल् (छन्द)

पेशाप् पॊरुळैप् पेशनान् तुणिन्देन्
केट्का वरत्तॆक् केट्क नान् तुणिन्देन्
मण्मी दुळ्ळ मक्कळ् पऱवैहळ्
विलङ्गुहळ् पूच्चिहळ् पुऱ्पूण्डु मरङ्गळ्
यावुमॆन् वित्तॆयाल् इडुम्बै तीर्न्दे
इन्बमुऱ् ऱन्बुडन् इणङ्गि वाळ्न्दिडवे
शॆय्दल् वेण्डुम् देव देवा !
आन्ना काशत्तु नडुवे निन्ऱु नान्
'पूमण्डलत्तिल् अन्बुम् पॊऱैयुम्
विळङ्गुह; तुन्बमुम् मिडिमैयुम् नोवुम्
शावुम् नीङ्गिच् चार्न्द पल् लुयिरॆलाम्
इन्बुऱ्ऱु वाळ्ह 'ऍन्बेन् ! इदन्नै नी
तिरुच्चॆवि कॊण्डु तिरुवुळम् इरङ्गि
'अङ्ङन्ने याहुह ऍन्बाय् ऐयन्ने !
इन्नाळ् इप्पॊळु दॆन्नक्किव् वरत्तिन्नै
अरुळ्वाय् आदि मूलमे अन्नन्द
शक्ति कुमारन्ने ! शन्दिर मवुली
नित्तियप् पॊरुळे ! शरणम्
शरणम् शरणम् शरणमिङ् गुन्नक्के 32

वॆण्बा (छन्द)

उन्नक्के ऍन् आवियुम् उळ्ळमुम् तन्देन्;
मन्नक्केदम् याविन्नैयुम् मार्ऱि— ऍन्नक्के नी
नीण्डपुहळ् वाणाळ् निऱैशॆल्वम् पेरळ्हु
वेण्डु मट्टुम् ईवाय् विरैन्दु 33

बटाएँगी। यशस्विनी वाणी मेरे अन्दर रहकर मधुर कविताएँ बहाएँगी। हे विनायक ! आपकी स्तुति करूँ, तो शक्ति देवी भी मेरी सहायता करेंगी। (विनायक की सेवा करो, तो तीनों देवियाँ अनुग्रह करेंगी।) ३१ अवाक्गोचर वस्तु का वर्णन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जो कहलाती ललिता देवी, जो है मधुरा, श्रीदेवी।
लाल कमल पर बसनेवाली है मंजुल लक्ष्मीदेवी॥
मैं जो कुछ भी कार्य करूँगा बनकर उन लक्ष्मी का दास।
सबमें हाथ बटायेंगी वह, मन में यही अटल विश्वास॥
सरस्वती मेरी रसना पर आकर के बस जायेगी।
निर्मल कविता की सरिता की धारा सरस बहायेगी॥
हे गणेश! हे विघ्न-विनायक! करूँ आपका यदि वन्दन।
भगवति तीनों कृपा करेंगी, शक्ति भरेंगी मेरे तन॥ ३१॥
आज किया हे गणपति! मैंने यह दृढ़ निश्चय अपने मन।
जो वाणी से अगम अगोचर आज करूँ उसका वर्णन॥
आज किया हे गणपति! मैंने यह दृढ़ निश्चय अपने मन।
जो न किसी ने माँगा अब तक, मैं वैसा वर करूँ वरण॥
खग-मृग-कीट-वनस्पति-तृण-तरु-नर सबके दुख होवें दूर।
हेल-मेल से सभी रहें, ये जीवन सुख से हो भरपूर॥
यही कहूँगा ज्ञान-गगन के बीच सदा संस्थित होकर।
प्रेम-भावना, क्षमा-भावना बनी रहे भूमंडल पर॥
दुःख-दीनता-रोग-मृत्यु के भय भूतल से भग जाएँ।
सभी सुखी हों भूतलवासी चिरजीवी हों, जग जाएँ॥
अपने श्रीकर्णों से सुनकर वर देने की कृपा करें।
अपने मुख से 'तथास्तु' कहकर मेरे मन का ताप हरें॥
आदि-मूल तुम, चन्द्रमौलि तुम, नित्य-तत्त्व तुम हो गणनाथ।
शक्तिपुत्र! मैं शरण तुम्हारी, मम सिर धर दो अपना हाथ॥ ३२॥
मेरा चंचल चित्त आपको हे गणनाथ! समर्पित है।
मेरा चंचल प्राण आपके चरणों में ही अर्पित है॥
हे वरदायक! (विघ्न-विनायक! सिद्धि-प्रदायक! कृपा करो)।
मेरे मन के दुःख-भार को हे गणनायक देव! हरो॥

करने का मैंने निश्चय किया है। उनसे अब तक जो न माँगा गया हो, ऐसा वर माँगने का मैंने निश्चय किया है। हे देव, देव! मुझ पर ऐसी कृपा करें, जिससे मेरे इस कार्य से धरती पर रहनेवाले मनुष्य, पक्षी, पशु, कीड़े, घास, पौधे, तरु—सभी दुख से छूटकर सुख से मेल के साथ रहें। ज्ञानाकाशमध्य (ध्यान लगाने के शास्त्र में उक्त एक स्थिति) स्थित होकर मैं करूँगा कि भूमंडल में प्रेम तथा क्षमा विद्यमान रहें। दुख, दरिद्रता और रोग तथा मृत्यु न रहें। इसमें रहनेवाले विविध जीवगण सुखी होकर जिएँ। आप भी यह अपने श्रीकर्ण से सुनकर, मन में अनुग्रह करके कहें— तथास्तु। हे प्रभु! आज मुझे यह वर देने की कृपा करें। हे आदिमूल! अनन्तशक्तिसुवन! हे चन्द्रमौलि! नित्यवस्तु! अब आपकी शरण, शरण, शरण है। ३२ मैंने अपने चित्त तथा प्राणों को आपको ही समर्पित किया है। मेरे मन के सभी दुःखों को दूर करके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कलित्तुऱै (छन्द)

विरैन्दुन् तिरुवुळ मॅन्मी दिरङ्गिड वेण्डुमैया !
कुरङ्गै विडुत्तुप् पहैवरिन् तीवैक् कॉळुत्तियवन्
अरङ्गत् तिलैतिरु मादुडन् पळ्ळि कॉण्डान् मरुहा !
वरङ्गळ् पॉऴियुम् मुहिले अॅन्नळत्तु वाळ्बवने ! 34

विरुत्तम् (छन्द)

वाळ्ह पुदुवै मणक्कुळत्तु वळ्वळ् पाद मणि मलरे !
आळ्ह उळ्ळम् शलनमिलादु ! अहण्ड वॅळिक्कण् अन्बिनैये
शूळ्ह! तुयर्हळ् तॉलैन्दिडुह!तॉलैया (इन्बम् विळैन्दिडुह !)
वीळ्ह ! कलियिन् वलियॅल्लाम् ! किरुद युहन्दान् मेवुहवे ! 35

अहवल् (छन्द)

मेवि मेवित् तुयरिल् वीळ्बाय्
अॅत्तनै कूऱियुम् विडुदलैक् किशैयाय्
पावि नॅञ्जे ! पार्मिशै निन्नै
इन्बुऱच् चॅय्वेन्; अॅदऱ्कुमिनि अञ्जेल्
ऐयन् पिळ्ळै (यार्) अरुळाल् उन्नक्कु नान्
अबयमिङ् गळित्तेन् नॅञ्(जे)
निन्नक्कु नान् उरैत्तन निलैनिऱुत् ति(डवे)
तीयिडैक् कुदिप्पेन् कडलुळ् वीळ्वेन्
वॅव्विड मुण्बेन् मेदिनि यळिप्पेन्
एदुञ् जॅय्दुनै इडरिन्ऱिक् काप्पेन्
मूड नॅञ्जे मुप्पदु कोडि
मुऱैयुनक् कुरैत्तेन् इन्नुम् मॉळिवेन्
तलैयिलिडि विळुन्दाल् शञ्जलप्पडादे
एदु निहळिनुम् नमक्केन् ? अॅन्ऱिरु;
पराशक्ति युळत्तिन् पडि युलहम् निहळुम्;
नमक्केन् पॉऱुप्पु ? नान् अॅन्ऱोर् तनिप् पॉरुळ्
इल्ले ! नानॅनुम् अॅण्णमे वॅरुम् पॉय्

मुझे विशाल यश, लम्बी आयु, समृद्ध धन, अधिक सौन्दर्य —ये सब यथेष्ट तुरन्त दे दें। ३३ जिन्होंने वानर पठाकर शत्रु के (लंका) द्वीप को जलवा दिया था, और जो श्रीरंग में देवी-सहित शयन करनेवाले हैं उनके हे भानजे, (पार्वती विष्णु की बहिन मानी जाती है) हे बरदमेघ, हे मेरे हृदयवासी, आपका मन मुझ पर शीघ्र ही अनुग्रह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दो विशाल यश, दीर्घ आयु दो, सुख-संपति समृद्ध-धन दो।
दो अपार सौन्दर्य दयानिधि! भक्ति-भाव-पूरित मन दो॥ ३३ ॥
लंकानगरी भस्म बनाने जिसने भेजा पवनकुमार।
जो श्रीरंग सहित देवी के करते शयन कृपा-आगार॥
उनके प्यारे योग्य भानजे मेरे पूज्यदेव! भगवान!।
वरदमेघ! मेरे उर-वासी! कृपा करें मुझ पर मतिमान॥ ३४ ॥
जय जय देव! पांडिचेरी के जयति मणक्कुल के भगवान।
पूज्य आपके पद-कमलों में मेरा मन हो मग्न महान॥
कब से आश लगाये हूँ मैं, सदा परखता हूँ नित नेम।
तव नयनों की कृपादृष्टि से वेष्टित होवे मेरा प्रेम॥
संकट सभी दूर हो जायें और सभी सुख सरसायें।
कलियुग का कल्मष कट जाये सौम्य सत्ययुग आ जाये॥ ३५ ॥
उठ-उठ करके बार-बार तुम दुख-कुंडों में गिरते हो।
हे पापी मन! मुझे बता दो क्यों न पाप से फिरते हो?॥
मोक्ष नहीं क्यों चाह रहे तुम! मैं अब सुखी बनाऊँगा।
अब न डरो तुम किसी बात से, मैं अब तुम्हें उठाऊँगा॥
'पिळ्ळैयार' विनायक की करुणा पर तुमको दिया अभय।
ज्वाला में जल, कूद सिन्धु में, पूर्ण करूँ प्रण दृढ़ निश्चय॥
महा भयंकर विष खाऊँगा, कर दूँगा जग का संहार।
सब प्रकार मैं सदा करूँगा तुम्हें संकटों से उद्धार॥
हे मन! मैंने तुम्हें करोड़ों बार यही है समझाया।
तब तक समझाऊँगा तुमको (जब तक शुद्ध न हो काया)॥
चाहे सिर पर वज्र गिरे पर मन में कभी न भय-संचार।
सदा रहेगा चलता यह जग पराशक्ति-इच्छा-अनुसार॥
हम अपने को क्यों गौरव दें? 'मैं' यह अहंकार दुर्वार।
बुद्धदेव ने कहा कि मिथ्या है यह मन का 'अहं' विचार॥

करे। ३४ जियें पुदुवै (पुदुच्चेरी या पांडिचेरी का ह्रस्व नाम है) के मणक्कुळ के उदार प्रभु-पाद-कमल! मेरा मन अचल रूप से मग्न हो जाय। विशाल अंतरिक्ष (या भूमि) आपका प्रेम घेरे रहे। मेरे संकट दूर हों। मुझे अमिट सुख प्राप्त हो। कलि का बल मिट जाय। कृतयुग आ जाय। ३५ हे पापी मन! उठ-उठकर दुःख में गिरते हो। कितना भी कहूँ, मोक्ष नहीं चाहोगे। अब तुम्हें भूमि पर सुखी बनाऊँगा। अब किसी बात से भी मत डरो। प्रभु पिळ्ळैयार (विनायक) के अनुग्रह के बल पर तुम्हें मैंने अभय प्रदान किया है। रे मन! तुमसे मैंने जो वादा किया, उसको निभाने के वास्ते मैं आग में कूदूँगा; समुद्र में गिर जाऊँगा। भयंकर विष खाऊँगा। मेदिनी का संहार कर दूँगा। कुछ भी करूँगा, पर तुम्हें किसी आँच के बिना बचा लूँगा। हे मूढ़ मन! तीस करोड़ बार तुम्हें मैंने समझाया। अब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅन्ऱान् पुत्तन् इऱैञ्जुवोम् अवन् पदम्
इन्नियॅप् पॉळ्ळुदुम् उरैत्तिडेन्, इदैनी
मऱवादिरुप्पाय् मडमै नॅञ्जे
कवलैप् पडुदले करु नरहम्मा !
कवलैयऱ् ऱिरुत्तले मुक्ति
शिवनॉरु महन्निदै निनक् करुळ् शॅय्हवे 36

वॅण्बा (छन्द)

शॅय्हतवम् ! शॅय्ह तवम् नॅञ्जे ! तवम् शॅय्दाल्
अॅय्द विरुम्बियदै अॅय्दलाम्— वैयहत्तिल्
अन्बिऱ् चिऱन्द तवमिल्लै अन्बुडैयार्
इन्बुऱुऱु वाळ्दल् इयल्बु 37

कलित्तुऱै (छन्द)

इयल्बु तवऱि विरुप्पम् विळैदल् इयल्व दन्ऱाम्
शॅयलिङ्गु शित्त विरुप्पिनैप् पिन्बऱुम्; शीर् मिहवे
पयिलु नल्लन्बे इयल्बॅनक् कॉळ्ळुदिर् पारिलुळ्ळीर्
मुयलुम् विनैहळ् शॅळिक्कुम् विनायहन् मॉय्म्बिनिलि 38

विरुत्तम् (छन्द)

मॉय्क्कुङ् गवलैप् पहै पोक्कि मुन्नोन् अरुळैत् तुणै याक्कि
अॅय्क्कुम् नॅञ्जे वलियुरुत्ति उडलै इरुम्बुक् किणैयाक्किप्
पॉय्क्कुङ् गलियै नान्गॉन्ऱु पूलो हत्तार् कण् मुन्नै
मॅय्क्कुङ् गिरुद युहत्तिनैये कॉणर्वेन् तॅय्व विदियिःदे 39

अहवल् (छन्द)

विदिये वाऴि ! विनायहा वाऴि !
पदिये वाऴि परमा वाऴि

भी समझाऊँगा। सिर पर बिजली गिरे, (तो भी) पराशक्ति की इच्छा के अनुसार ही संसार चलेगा। हम क्यों इसमें अपना जिम्मा मानें? 'मैं' नाम का कोई पृथक् पदार्थ नहीं है। 'मैं' विचार ही मिथ्या है —ऐसा कहा है बुद्ध ने। हम उनके चरणों में विनय करें। मैं फिर कभी यह नहीं दुहराऊँगा। इसे, रे मूर्ख मन, मत भूलो। चिन्ता ही घोर नरक है। भैया ! निश्चिन्त रहना ही मुक्ति है। शिवजी के अनुपम सुत तुम्हें यह सिखा देने की कृपा करें। ३६ तपस्या करो ! तपस्या करो ! रे मन ! तप करोगे, तो जो चाहो, पाओगे। संसार में प्रेम से बढ़कर (कोई अन्य) तप नहीं है। प्रेम करनेवाले लोग सुख भोगते रहें —यह स्वभाविक है। ३७ स्वभाव के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उनके चरणों में गिर करके प्रभु के गुणगण गाऊँगा।
अहंभाव-मिथ्या विचार को फिर न कभी दुहराऊँगा॥
'चिन्ता ही तो घोर नरक है' इसे मूर्ख मन! मत भूलो।
'निश्चिन्तता मुक्ति मंजुल' (यह ज्ञान कमल से तुम फूलो)॥
शिव के प्यारे पुत्र विनायक यह तुमको समझायेंगे।
जिस पर चलकर सभी तुम्हारे भव-बन्धन कट जायेंगे॥ ३६॥
करो तपस्या रे मेरे मन! अगर न तुम घबराओगे।
तो सब पूर्ण मनोरथ होंगे, सब पदार्थ पा जाओगे॥
जग में मधुर प्रेम से बढ़कर कोई नहीं तपस्या है।
(पुण्य प्रेम ही तो सुलझाता जग की जटिल समस्या है?)।
तन-मन-धन न्यौछावर करके त्याग-भाव भरनेवाले।
सहज सत्य है, सुखी जगत में रहें प्रेम करनेवाले॥ ३७॥
है स्वभाव-विपरीत कामना कभी प्रकृति-अनुकूल नहीं।
कर्म कामना का अनुयायी इस मत में है भूल नहीं॥
युक्त रीति से पुण्य प्रेम का करना तुम स्वधर्म मानो।
हे भूलोक-वासियो! आओ प्रेम-तत्त्व को पहचानो॥
देव विनायक की करुणामय कृपाशक्ति जिसने पायी।
सभी प्रयत्न बनेंगे उसके अतिशय मंगल-फल-दायी॥ ३८॥
शिव के ज्येष्ठ पुत्र गणनायक की यदि कृपादृष्टि पाऊँ।
तो पल भर में जगतीतल में मैं परिवर्तन ले आऊँ॥
दुख-प्रद चिन्ता-शत्रु मिटाऊँ, निर्मल करूँ मलिन मन को।
(श्रम-व्यायाम आदि से) दृढ़कर लोहे-सा कर लूँ तन को॥
जग देखे मैं इस कलियुग के पापों का संहार करूँ।
पुण्य-प्रभाव-पूर्ण सतयुग के सत्यों का संचार करूँ॥ ३९॥
जय-जय विश्व-विधाता विधि की, जय-जय विघ्नविनायक की।
जय-जय बोलो परमपुरुष की, जय पशुपति वर-दायक की॥

विपरीत इच्छा करना प्राकृतिक नहीं है। कर्म भी इच्छा का अनुयायी है। उचित रीति से अच्छा प्रेम करने को स्वधर्म मान लो; हे भूवासियो! विनायक की अनुग्रह-शक्ति से सारे प्रयत्न विपुल फलदायी होंगे। ३८ गहन चिंता रूपी शत्रु को मिटाकर, अग्रज (शिवजी के पहले पुत्र) विनायक की कृपा को सहयोगी बना लेकर मलिन मन को बलवान बनाकर; शरीर को लोह-सदृश सख्त करके झूठे कलि को मारकर मैं भूलोकवासियों की आँखों के सामने ही सत्य कृतयुग को ला दूं। —यही देवेच्छा है। ३९ जय-जीव विधाता की! जय-जीव विनायक! (पशु-) पति की जय! परमपुरुष जिएँ! नाशहारी देव! नमोऽस्तु ते! नये कार्य के दर्शक पुण्यपुरुष! नमोऽस्तु ते! बुद्धि-वर्धक राजा! नमः! जो इच्छा, क्रिया तथा ज्ञान शक्ति बनाती है उस मूल शक्ति के भी आदिपुरुष! नमः! चन्द्रधर परमेश्वर की जय! पूर्णत्व दिलानेवाले

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शिवैविनै नीक्कुम् तैय्वमे पोऱ्ऱि !
पुवुविनै काट्टुम् पुण्णिया पोऱ्ऱि !
मदियिनै वळर्क्कुम् मन्ने पोऱ्ऱि !
इच्चैयुम् किरियैयुम् ञानमुम् अन्ऱाक्कु
मूल शक्तियिन् मुदल्वा पोऱ्ऱि !
पिऱै मदि शूडिय पेरुमान् वाऴि
निऱैविनैच् चेर्क्कुम् निर्मलन् वाऴि
कालम् मून्ऱैयुम् कडन्दान् वाऴि
शक्ति देवि शरणम् वाऴि
वॆऱ्ऱि वाऴि ! वीरम् वाऴि
बक्ति वाऴि ! पल पल कालमुम्
उण्मै वाऴि ऊक्कम् वाऴि !
नल्ल कुणङ्गळे नम्मिडं यमरर्
पदङ्गळाम् कण्डीर् ! पारिडै मक्कळे !
किरुद युहत्तिनैक् केडिन्ऱि निरुत्त
विरदम् नान् कॊण्डनन्; वॆऱ्ऱि
तरुञ्जुडर् विनायहन् ताळिणै वाऴिये ! 40

मुरुहा ! मुरुहा !—2

राग— नाट्टैक्कुऱिञ्जि; ताळ— आदि

पल्लवि (टेक)

मुरुहा !— मुरुहा !— मुरुहा— !

शरणङ्गळ् (चरण)

वरुवाय् मयिल् मीदिनिले, वडि वेलुडने वरुवाय् !
तरुवाय् नलमुम् तहवुम् पुहळुम्, तवमुम् तिऱमुम् तनमुम् कनमुम् (मुरुहा) 1
अडियार् पलरिङ् गुळरे, अवरै विडुवित् तरुळ्वाय् !
मुडिया मरैयिन् मुडिवे !, अशुरर् मुडिवे करुदुम् वडिवे लवने (मुरुहा) 2

निर्मल देव की जय ! त्रिकाल पारंगत की जय ! शक्तिदेवी के चरणों की जय ! विजय जिए ! वीरता जिए ! भक्ति जिए ! बहुत-बहुत काल तक ! सत्य जिए ! उत्साह जिए ! जान लो हे भूलोक-वासियो ! श्रेष्ठ पुण ही हममें अमर-पद है। मैंने कृतयुग को निर्विघ्न स्थापित करने का व्रत ग्रहण किया है। विजयदायी तेज, विनायक के चरणद्वय की जय ! ४० (वाऴि ! पोऱ्ऱि, वाऴ्ह —ये सब प्रायः समानार्थी होते हैं। 'जुग, जुग जिए' जीवन्त रहे, जय जीव, जय हो —ये भी उनके अर्थ हैं।)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हे विनाश-हर ! देव ! तुम्हारे चरणों को प्रणाम शत बार।
पुण्यपुरुष नव-कर्म-प्रदर्शक नमस्कार कर लो स्वीकार॥
विमल बुद्धि के वर्धक नृपवर ! तुमको नमस्कार शत बार।
मूलशक्ति के आदिपुरुष हे ! नमस्कार कर लो स्वीकार॥
विश्व बनाती, उसे पालती और उसे करती संहार।
इच्छा-क्रिया-ज्ञान को देती मूलशक्ति का यह व्यापार॥
उस महत्त्वमय मूलशक्ति को नमस्कार शत बार अपार।
मूलशक्ति के आदिपुरुष को नमस्कार शत बार अपार॥
चन्द्रमौलि परमेश्वर की जय, जय त्रिकाल पारंगत की।
जय पूर्णत्व दिलानेवाले दिव्य देव श्रुति-सम्मत की॥
महाशक्ति के चरणों की जय, जय-जय विजय, वीरता जय।
जयति सनातन सरल सत्य की, जय-जय धर्म-धीरता जय॥
जय चिरकालिक भक्तजनों की भोली भव्य भक्ति की जय।
सदा सफलता देनेवाली नव उत्साह-शक्ति की जय॥
मत भूलो भूलोकवासियो ! गुण ही सदा सहायक है।
अमर श्रेष्ठ गुण ही जगती में सदा अमर-पद-दायक है॥
सतयुग-स्थापन का प्रण पावन मैंने किया सुदृढ़ निश्चय।
विजय-प्रदायक विघ्न-विनायक के नव चरण-युगल की जय॥ ४० ॥

मुरुहा—२

निज मयूर-वाहन पर चढ़कर तीक्ष्ण शक्ति लेकर आओ।
यश-तप-कौशल-हित धन-गौरव और योग्यता दे जाओ॥ १ ॥
तीक्ष्ण-शक्ति-धर असुरान्तक तुम तुम अनन्त वेदों के अन्त।
इधर अनेकों भक्त खड़े हैं उन्हें करा दें मुक्त तुरन्त॥ २ ॥

मुरुहा, मुरुहा—२

[उत्तर भारत में जिनको 'षण्मुख; वा कार्तिकेय' कहा जाता है, उन्हें यहाँ मुरुगन; मुरुहन् भी उच्चरित होता या वेलन् कुमरन्, सुब्रह्मण्य आदि भी कहा जाता है— मुरुहन् का अर्थ सुन्दर है; वेलन, वेल् या सांगधर, कुमरन— कुमार है।]

मुरुहा-मुरुहा-मुरुहा। (टेक) मयूर पर आइएगा। सुन्दर या तीक्ष्ण (वेल्) शक्ति के साथ आइएगा। दिलाइयेगा हित, योग्यता, यश, तप, कौशल, धन तथा गौरव। (मुरुहा०) १ इधर आपके अनेक भक्त हैं। उनको मुक्त करा दें। अनन्त वेदों के अंत ! असुरों का अंत चाहनेवाले तीक्ष्ण शक्तिधर ! (मुरुहा०) २ अत्यर्थ आइयेगा। साहस आइएगा। चिन्ता कर-करके चिन्तित रहनेवाले चिन्तासागर को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शुरुदिप् पॊरुळे वरुह
तुणिवे कन्नले वरुह !
करुदिक् करुदिक् कवलैप् पडुवार्
कवलैक् कडलैक् कडैयुम् वडिवेल् (मुरुहा) 3
अमरावदि वाळ्वुऱवे
अरुळ्वाय् शरणम् शरणम् !
कुमरा पिणिया वेयुमे शिदऱक्
कुमुरुम् शुडर्वे लवन्ने शरणम् ! (मुरुहा) 4
अऱिवाहिय कोयिलिले
अरुळाहिय ताय् मडिमेल्
पॊऱि वेलुडन्ने वळर्वाय् ! अडियार्
पुदुवाळ्वुऱवे पुवि मो दरुळ्वाय् (मुरुहा) 5
गुरुवे ! परमन् महने
गुहैयिल् वळरुङ् गन्नले
तरुवाय् तॊळिलुम् पयनुम् अमरर्
शमरा दिबन्ने ! शरणम् शरणम् (मुरुहा) 6

वेलन् पाट्टु—3

राग— पुन्नाग बराळि; ताळ— तिस्र एकम्

विल्लिन्नै यॊत्त पुरुवम् वळैत्तन्नै वेलवा ! अङ्गोर्
वॆऱ्पु नॊरुङ्गिप् पॊडिप् पॊडि यान्नदु वेलवा
शॊल्लिन्नैत् तेनिऱ् कुळैत्तुरैप्पाळ् शिऱु वळ्ळियैक्— कण्डु
शॊक्कि मरमॆन्न निन्ऱुऱन्नै तॆन्मलैक् काट्टिले
कल्लिन्नै यॊत्त वलिय मनङ् गॊण्ड पादहन्— शिङ्गन्
कण्णिरण् डायिरङ् गाक्कैक् किरैयिट्ट वेलवा
पल्लिन्नैक् काट्टिवॆण् मुत्तैप् पळित्तिडुम् वळ्ळियै— ऑरु
पार्प्पन्नक् कोलन् दरित्तुक् करन्वॊट्ट वेलवा ! 1
वॆळ्ळलैक् कैहळैक् कॊट्टि मुळङ्गुङ् गडलिन्नै— उडल्
वॆम्बि मऱुहिक् करुहिप् पुहैय वॆरुट्टिन्नाय्

मथनेवाली शक्ति के धारक (मुरुहा०) ३ आप यह कृपा करें कि मैं अमरावती में निवास करूँ। शरण ! शरण ! हे कुमार ! सभी रोगों को छितराते हुए गरजनेवाली दीप्त शक्ति के 'वेलव' (धारण) शरण ! (मुरुहा०) ४ मति रूपी मन्दिर में अनुग्रह रूपी गोद (पीठ) पर वेल के आयुध के साथ शोभनेवाले ! भक्तों को नया जीवन दिलाने के लिए विश्व पर कृपा करें। (मुरुहा०) ५ हे गुरु ! परमेश्वर-सुत, गुफा में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सार-भूत वेदों के आओ साहस के सागर आओ।
चिन्ता-सागर-मथनेवाली तीक्ष्ण शक्ति लेकर आओ॥ ३ ॥
अमरावती-निवास मिले सुखदायक, शरण तुम्हारी हम।
रोग-विनाशक, दीप्त-शक्ति के धारक शरण तुम्हारी हम॥ ४ ॥
मति-मंदिर में कृपा-पीठ पर शक्ति-शस्त्र लेकर विहरो।
नवजीवन देकर भक्तों को विकल विश्व पर कृपा करो॥ ५ ॥
हे गुरुवर! हे महादेव-सुत! गुहा-प्रपालित प्रबल-अनल!।
देव-सैनपति! शरण तुम्हारी, हों मेरे सब काम सफल॥ ६ ॥

वेलन् गीत्—३

हे कुमार! अपनी भौंहों को ताना तुमने धनुष-समान।
चूरचूर हो गया क्रौञ्च गिरि मिटा शिखर का नाम-निशान॥
वाणी में मधु भरनेवाली सुघर वल्लि की छवि लखकर।
मुग्ध-हृदय बन खड़े रह गये हो जैसे कोई तरुवर॥
दक्षिण पर्वत के वन-भीतर जो निर्भीक विचरता था।
पत्थर-सा दृढ़ मन था जिसका जो बहु पातक करता था॥
सिंह नाम के उस राक्षस की दो सहस्र आँखें सुन्दर।
कौओं को दीं खिला आपने जय कुमार! जय बेलववर!॥
दन्त-छटा से मंजु मोतियों को लज्जित करनेवाली।
ब्राह्मण-वेद बनाकर तुमने वल्लि विवाही छविशाली॥ १ ॥
लहरों के कर पीट-पीटकर जो सागर करता गर्जन।
उसे तपाया, क्षुब्ध हुआ वह हुआ धुएँ-सा काला तन॥

पलनेवाले अनल, हे अमर-समराधिक! हमें कार्य तथा फल दिलाइयेगा। शरण, शरण! (मुरुहा०) ६

'वेलन्' गीत—३

हे वेलव! तुमने धनु-सम भौंहों को झुकाया, तो इधर (क्रौंच पर्वत) चूर-चूर हो गया। मधु को शब्दों में घोलकर दे सकनेवाली (मधुवाणी) वळ्ळि को देखकर तुम मुग्ध हुए और तरुवत् खड़े हो गये। दक्षिण में पर्वत के जंगल के प्रस्तर-दृढ़-मन पातक-सिंह (नाम के राक्षस) की दो सहस्र आँखों को कौओं का ग्रास बनानेवाले हे वेलव! अपने दाँतों को दिखाकर मोती का परिहास करनेवाली वळ्ळि को, ब्राह्मण-वेशधारी बनकर कर ग्रहण करनेवाले वेलव! (सुब्रह्मण्य के यहाँ दो पत्नियाँ मानी जाती हैं। पहली पत्नी देवसेना या देवयानै देवेन्द्र की पुत्री मानी जाती है और वाळ्ळ निषाद जाति के वन्य प्रदेश के राजा की पुत्री है। उन्हें अपना वेश बदल कर उससे विवाह करना पड़ा था।) १ श्वेत-लहर-रूपी हाथों के ताल बजा-बजाकर गरजनेवाले सागर को तुमने इतना सताया कि वह झुलसा, क्षुब्ध हुआ और काला धुआँ बन गया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किळ्ळै मॊळिच् चिरु वळ्ळियॆनुम् पॆयर्च् चॆल्वत्तै— ऎन्रुम्
केडर्र् वाळ्विनै इन्ब विळक्किनै मरुवित्ताय्
कॊळ्ळै कॊण्डे अमरावदि वाळ्वु कुलैत्तवन्— बानु
गोपन् तलै पत्तुक् कोडि तुणुक्कुरुक् कोपित्ताय्
तुळ्ळिक् कुलावित् तिरियुञ् जिरुवन मानैप्पोल्— तिनैत्
तोट्टत्तिले यॊरु पॆण्णै मणङ् गॊण्ड वेलवा ! 2
आरु शुडर् मुहङ् गण्डु विळिक्किन्ब माहुदे;— कॆयिल्
अञ्ज लॆनुङ् गुरि कण्डु महिळ्च्चि युण्डाहुदे !
नीरु पडक्कॊडुम् पावम् पिणि पशि यावॆयुम्— इङ्गु
नीक्कि अडियारै नित्तमुङ् गात्तिडुम् वेलवा !
कूरु पडप्पल कोडि यवुणरिन् कूट्टत्तैक्— कण्डु
कॊक्करित् तण्डङ् गुलुङ्ग नहैत्तिडुञ् जेवलाय् !
मारु पडप्पल वेरु वडिवॊडु तोन्रुवाळ् ऎङ्गळ्
वैरवि पॆर्र् पॆरुङ्गनले वडि वेलवा 3

किळि विडु तूदु—4

पल्लवि (टेक)

शॊल्ल वल्लायो ? किळिये
शॊल्ल नी वल्लायो ?

अनुपल्लवि (अनुटेक)

वल्ल वेल्मुरु हत्तनै— इङ्गु
वन्दु कलन्दु महिळ्न्दु कुलावॆन्रु (शॊल्ल)

शरणङ्गळ् (चरण)

तिल्लै यम्बलत्ते— नडनम्
शॆय्युम् अमरर् पिरान्— अवन्
शॆल्वत् तिरुमहनै— इङ्गु वन्दु
शेर्न्दु कलन्दु महिळ्न्दिडु वायॆन्रु (शॊल्ल) 1

तुमने शुकवाणी वळ्ळि नाम की सम्पत्ति को, निष्कलंक जीवन को तथा सुख-दीप को गले लगा लिया। भानुकोप नामक राक्षस अमरावती को लूटकर वहाँ के लोगों के जीवन को अस्त-व्यस्त कर रहा था। तुमने गुस्सा दिखाया, तो उसके दस करोड़ सिर टूट गये। चौकड़ी भरते उछलती-कूदती रहनेवाली वन्य बाल हरिणी के समान कोदों (एक कदन्न) के खेत में एक कन्या (वळ्ळि) से विवाह कर लेनेवाले हे वेलव ! २ आपकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शुक-भाषिणी वल्लि अपनाई निष्कलंक जीवन पाया।
सुख-दीपक को गले लगाया अगम तुम्हारी है माया॥
अमरावती लूटकर हरता था जो देवों के जीवन।
दस करोड़ सिर 'भानुकोप' के होकर क्रुद्ध किये कर्तन॥
उछल-कूदकर वन की हरिणी-सी क्रीड़ा करनेवाली।
कोदों के वन-बीच विवाही वल्लि-सुन्दरी छविशाली॥ २॥

ज्योतिर्मय है आनन लखकर नयनों को मिलता आनन्द।
कर की देख अभय मुद्रा को होता मन उत्फुल्ल अमन्द॥
रोग-भूख-पापों तापों को भस्म बनानेवाले हो।
प्यारे भक्तों के हे वेलव! प्राण बचानेवाले हो!
उच्चस्वर से बोल फोड़ता अंडों को जो हँस-हँसकर।
काट रहा दैत्यों की मानों वह बोटी-बोटी सत्वर॥
उस कुक्कुट के स्वामी हो तुम हे कुमार! हे शिवनंदन!।
(पूज्य चरण-कमलों को यह जन बार-बार करता वंदन)॥
विविध-रूप-धारिणी भैरवी के तुम बालक सुंदर हो।
हे कुमार! तुम अनल-रूप हो, सुन्दर सबल शक्तिधर हो॥ ३॥

शुक-सन्देश—४

प्रबल-शक्ति-धर स्कन्द समागम करने को अभिसार करें।
क्या शुक! तुम यह कह पाओगे, आकर मुझसे प्यार करें॥ टेक॥
चिदंबरम् मठ बीच नाचते शिवसुत के समीप जाकर।
संगम कर आनंद मनाने को कह पाओगे शुकवर!॥ १॥

छः ज्योतिर्मय मुखों की झाँकी से आँखों को आनन्द मिलता है! हाथ की अभय मुद्रा को (अभयहस्त) देखकर हमें उत्फुल्लता होती है। क्रूर पाप, रोग, भूख आदि सभी को राख बनाकर, उड़ाकर भक्तों की नित रक्षा करनेवाले हे वेलव! हे उस मुर्गे के स्वामी जो ऐसा शोर मचाकर अंडों को फोड़ते हुए हँसता है कि अमुक राक्षस बोटी-बोटी बन जाएँ, विविध भैसों में प्रकट होनेवाली हमारी भैरवी से जनमे, हे बड़े अनल! सुन्दर शक्तिधर! ३

शुक-सन्देश—४

कह सकोगे? हे शुक! तुम कह सकोगे? (टेक) (गीत के बीच का भाग) समर्थ शक्तिधर सुब्रह्मन इधर आकर मिलन करके आनन्द के साथ प्यार करे (कह सकोगे०) तिल्लै (चिदंबरम्) के मंडप में नृत्य करनेवाले अमरदेव (परम शिव) के प्यारे पुत्र से यहाँ आकर मेलजोल करके खुशी मनाने को— (कह सकोगे०) १ एक दिन, संध्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अल्लिक् कुळत्तरुहे— ऑरुनाळ्
अन्दिप् पॊळ्दिनिले— अङ्गोर्
मुल्लेच् चॆडियदन् पाऱ्— चॆय्दवित्तै
मुऱ्ऱुम् मरन्दिडक् कऱ्ऱ दॆन्ने यॆन्ऱु (शॊल्ल) 2
पालै वनत्तिडैये— तन्नैक्कॆप्
पऱ्ऱि नडक्कॆयिले— तन्कै
वेलिन् मिशैयाणै— वैत्तुच् चॊन्न
बिन्द मॊळिहळैच् चिन्दै शॆय्वा यॆन्ऱु (शॊल्ल) 3

मुरुहन् पाट्टु—5

वीरत् तिरुविळिप् पार्वैयुम्— वॆऱ्ऱि, वेलुम् मयिलुम् ऍनमुन्निन्ऱे— ऍन्द
नेरत्तिलुम् ऍन्नैक् काक्कुमे; अन्नै, नीलि पराशक्ति तण्णरुट्— करै
ओरत्तिले पुणै कूडुदे !— कन्दन्, ऊक्कत्तै ऍन्नुळम् नाडुदे;— मलै
वारत्तिले विळैयाडुवान्— अन्ऱुम्, वानवर् तुन्बत्तैच् चाडुवान् 1
वेडर् कनियै विरुम्बिये— तव, वेडम् पुनैन्दु तिरिहुवान्— तमिळ्
नाडु पॆरुम् पुहळ् शेरवे— मुन्नि, नादनुक् किम्मॊळि कूऱुवान्— शुरर्
पाडु विडिन्दु मरिळ्न्दिड— इरुट्, पार मलैकळैच् चीऱुवान्;— मऱै
येडु तरित्त मुदल्वनुम्— गुरु, वॆन्ऱिड मॆय्प्पुहळ् एऱुवान् 2
तेवर् महळै मणन्दिडत्— तॆऱ्कुत्, तीविलशुरनै माय्त्तिट्टान्;— मक्कळ्
यावरुक्कुन् दलै यायिनान्— मऱै, अरत्त मुणरत्तु नल् वायिनान्— तमिळ्प्

समय वहाँ कुमुद-सर के पास, चमेली के पास, जो लीला-कार्य हुआ, उसको एकदम भूलना कैसे सीखा उन्होंने ? यह (कह सकोगे०) २ मरुभूमि में हम हाथ में हाथ डाले चलें। तब उन्होंने वेल (शक्ति) पर हाथ रखकर (सौगन्द खाकर) जो गुदगुदानेवाली विचित्र बातें कही थीं, उनका स्मरण करने को— (कह सकोगे०) ३

मुरुहन् गीत—५

वीरतासूचक श्रीदृष्टि, विजयी शक्ति और (मुरुहन का वाहन) मयूर —सब मेरे समक्ष रहकर हमेशा मेरा रक्षण करेंगे। माता नीली पराशक्ति की कृपा के सागर के किनारे मेरी नाव पहुँच गयी। मेरा मन स्कन्द देव (कार्तिकेय) की प्रेरणा का अभिलाषी है। वे पर्वत की तराई में लीलारत रहनेवाले हैं। वे देवों के दुःख से जूझनेवाले हैं। १ वे मधुर व्याध-कन्या (वळ्ळि) की चाह में तपस्वी का भेस धारण करके घूमनेवाले हैं। उन्होंने तमिळ देश के लिए गौरव प्राप्त करते हुए मुनिश्रेष्ठ (नारद) से यह बात कही थी। वे सुरों की भार-निवृत्ति (संकट-निवारण) के लिए अन्धकारमय बड़े भारी पर्वत (रूप में रहनेवाले राक्षसों) पर गुस्सा करनेवाले हैं। वेदनाथ ब्रह्म (परमेश्वर) का भी यश उन्हें (कार्तिकेय को) अपना गुरु मानने से बढ़ा (ब्रह्मा के गर्व को दूर करने के लिए, कुमार ने उनसे प्रणव का अर्थ बताने को कहा।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रबल-शक्ति-धर स्कन्द समागम करने को अभिसार करें।
क्या शुक ! तुम यह कह पाओगे, आकर मुझसे प्यार करें॥ टेक॥
कुमुद-सरोवर-वास चमेली-कुंज-बीच संध्या वेला।
कैसे भूल गये वे उसको प्रेम-खेल जो था खेला॥ २॥
प्रबल-शक्ति-धर स्कन्ध समागम करने को अभिसार करें।
क्या शुक ! तुम यह कह पाओगे, आकर मुझसे प्यार करें॥ टेक॥
शपथ शक्ति की खाकर मेरा हाथ थामकर मरुथल में।
जो मादक बातें कीं वे क्या याद नहीं अन्तस्तल में॥ ३॥
प्रबल-शक्ति-धर स्कन्द समागम करने को अभिसार करें।
क्या शुक ! तुम यह कह पाओगे, आकर मुझसे प्यार करें॥ टेक॥

मुरुहन् गीत—५

वाहन मंजु मयूर, विजयिनी शक्ति, वीरता-सूचक दृष्टि।
ये सब मेरे सम्मुख रहकर सदा करेंगे रक्षा-वृष्टि॥
पराशक्ति के कृपा-सिन्धु तट-नील लगी है मेरी नाव।
कार्तिकेय से मिले प्रेरणा, मेरे मन में है यह चाव॥
वे पर्वत के शुभ अंचल में लीला-रत रहनेवाले।
देवगणों पर पड़नेवाले दारुण दुख हरनेवाले॥ १॥
मधुर व्याध-कन्या को पाने की अभिलाषा के कारण।
घूमे वे पर्वतों-वनों पर विविध वेष करके धारण॥
अब न असंभव, तमिल देश को संभव है गौरव पाना।
मुनिवर नारद को बतलाया यह रहस्य अति अनजाना॥
देवगणों का भार दूरकर उनके संकट हरते हैं।
अंधकारमय गिरियों पर वे कोप भयंकर करते हैं।
इन्हें मान करके अपना गुरु प्रणव-अर्थ का पाठ पढ़ा।
वेदनाथ परमेश्वर का भी इसीलिए सम्मान बढ़ा॥ २॥
देव-सुता से परिणय करने का मन-बीच विचार किया।
दक्षिण-द्वीप-निवासी राक्षस का इससे संहार किया॥
सभी मनुष्यों के नायक हैं कृपापूर्ण मनवाले हैं।
श्रुति के छै अंगों को पढ़ने को छै आननवाले हैं॥

ब्रह्मा को उन्होंने दण्ड देकर कारा में बन्द कर दिया। परमेश्वर ने यह बात जानी, तो पूछा कि क्या तुम उसे जानते हो ? जानते हो तो मुझे सिखाओ। कुमार ने कहा कि शिष्य के लिए उचित भाव अपनाइये, तो सिखाऊँगा। परमेश्वर ने उन्हें अपने कन्धे पर बैठा लिया तथा विनय के साथ प्रणव का रहस्य जान लिया। पुराण के अनुसार शिवजी का गौरव बढ़ा, न कि घटा।) २ देवकन्या से ब्याह करने के हेतु, उन्होंने दक्षिणी द्वीप में असुर का वध कराया। वे सभी मनुष्यों के नायक हुए। वे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पावलरुक् किन्नरुळ् शॆय्हुवान्- इन्दप्, पारिल् अरमळै पॆय्हुवान्- नॆञ्जित्
आवलरिन्दरुळ् कूट्टुवान्;— नित्तम्, आण्मैयुम् वारमुम् ऊट्टुवान् 3
तीवळर्त्ते पळ वेदियर्— निन्रन्, शेवहत्तिन् पुहळ् नाट्टिनार्; —ऑळि
मी वळरुञ्जॆम् बॊन् नाट्टिनार्!- निन्रन्, मेन्मैयिनालरम् नाट्टिनार्- ऐय!
नी वळरुङ्गुरु वॆऱ्पिले— वन्दु, निन्रुनिन् शेवहम् पाडुवोम्— वरम्
ईवळ् पराशक्ति यन्नै तान्— उङ्गळ्, इन्नरुळे यॆन्ऱु नाडुवोम्- निन्रन् 4
(वीरत्)

अमक्कु वेलै—6

तोहैमेल् उलवुङ् गन्दन्, शुडर्क्करत् तिरुक्कुम् वॆऱ्ऱि
वाहैये शुमक्कुम् वेलै, वणङ्गुवदु ऍमक्कु वेलै 1

वळ्ळिप् पाट्टु(1)—7

पल्लवि (टेक)

अन्द नेरमुम् निन् मैयल् ऐऱुदडी
कुऱ वळ्ळी, शिऱु कळ्ळी !

शरणङ्गळ् (चरण)

(इन्द) नेरत्ति लेमलै वारत्तिल लेनदि
योरत्ति लेयुनैक् कूडि— निन्रन्
वीरत् तमिळ्च् चॊल्लिन् शारत्ति लेमनम्
मिक्क महिळ्च्चि कॊण्डाडि— कुळल्
पारत्ति लेइदळीरत्ति लेमुलै
योरत्तिले अन्बु शूडि— नॆञ्जम्

वेदार्थ समझाने में समर्थ मुखवाले हैं। तमिळ के कवियों पर मधुर कृपा करनेवाले हैं। इस भूमि पर धर्म की बारिश करनेवाले हैं। वे (भक्त के) मन की इच्छा को जानकर उसके अनुसार अनुग्रह करनेवाले हैं। वे प्रतिदिन लोगों में पौरुष तथा वीरता भरनेवाले हैं। ३ प्राचीन वेदज्ञ विप्र लोगों ने यज्ञ द्वारा आपके यश को प्रतिष्ठित किया। आपकी वीरता के यश को (गौरव-महिमा) बढ़ा दिया। शोभा देनेवाली श्रेष्ठ सम्पत्ति पैदा की। आपकी महिमा से श्रेष्ठ धर्म संस्थापित किया। हे श्रेष्ठ प्रभु! हम आप जिस पर्वत पर (मुरुगन पर्वतवासी देव समझे जाते हैं। सब प्रधान सुब्रह्मण्य-मन्दिर पर्वतों पर ही पाये जाते हैं।) रहते हैं, उस पर्वत के प्रति आयेंगे और आपकी दासता की महिमा गायेंगे। हमें माता पराशक्ति आपकी कृपा का वर दिलायेंगी। उसके लिए हम प्रयत्न करेंगे। (वीरता तथा) ४

हमारा काम—६

मयूर पर सवार स्कन्द के उज्ज्वल हाथ में रहनेवाली विजयवाहिका शक्ति की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तमिळ देश के सब कवियों पर दया दिखानेवाले हैं।
तमिळ देश पर धर्म-स्वरूपी जल बरसानेवाले हैं॥
जान भक्त के मन की इच्छा करुणा करनेवाले हैं।
वीरों के मन बीच वीरता पौरुष भरनेवाले हैं॥ ३ ॥
वेद-विज्ञ प्राचीन ब्राह्मणों ने बहुयज्ञ किये पावन।
बढ़ा आपका यश जगती में हुआ आपका अभिनंदन॥
बढ़ी आपकी महिमा जग में मिली उन्हें सम्पत्ति सुघर।
हुआ धर्म संस्थापित जग में तव वर-महिमा से प्रभुवर!॥
जिस पर्वत पर आप बसे हैं उस पर्वत पर आयेंगे।
वहाँ आपकी भव्य-भक्ति की मंजुल महिमा गायेंगे॥
यही प्रयत्न करेंगे, हे प्रभु! हम सब अपने जीवन भर।
माता पराशक्ति दिलवाये हे प्रभु! भवत्कृपा का वर॥ ४ ॥

हमारा काम—६

उज्ज्वल कर में विजयवाहिका शक्ति लिये जो भासित हैं।
जो मयूर के मंजुल वाहन पर सवार हो शोभित हैं॥
उनके चारु चरण-कमलों को पुण्य प्रणाम हमारा है।
उनके गुण-गण-वर्णन करना पावन काम हमारा है॥ १ ॥

वळ्ळि-गीत (१)—७

प्रतिपल बढ़ता प्रेम तुम्हारा बाल-मयूरी-सी कुर वल्लि! ॥ टेक ॥
पर्वत-तल पर नदी किनारे मैं सुन्दरि! तुमसे मिलकर।
वीरभाव से भरे तुम्हारे तमिळ गीत सुनकर सुन्दर॥
कोमल केश-भार सहलाकर चूम-चूमकर सरस अधर।
पुष्ट उरोजों को पीड़ित कर समुद गाढ़ आलिंगन कर॥
मधुर प्रेम की क्रीडाओं से स्वर्गिक सुख मैंने पाया।
प्राप्त करूँगा आज सुन्दरी! सबका फल मैं मन-भाया॥

विनय करना ही हमारा काम है। ('बेलै' में श्लेष है। 'बेलै' का अर्थ 'कार्य' है तथा 'शक्ति (सांग)' भी है।) १

वळ्ळि गीत (१)—७

हर-हमेशा तुम्हारा मोह बढ़ता है री! कुर (जाति की) वळ्ळि! छोटी चोरनी। (टेक)। इस समय, पर्वत-तल पर, नदी के किनारे तुमसे मिलकर, तुम्हारे वीरता-भरे तमिळ-शब्दों के सार में मन-मुग्ध होकर, केश-भार में, अधर की आर्द्रता में, स्तनों (भक्ति) के किनारे प्रेम (सुख) का अनुभव करके, हृदय से खूब लगाकर मैंने जो अमरता प्राप्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आरत्तळुवि अमर निलै पॆऱ्ऱदत्
पयलै यिनुऱु काण्बेन् (अॆन्द नेरमुम्) 1
वॆळ्ळै निलाविडुगु वानत्तै मूडि
विरिन्दु पॊलिवदु कण्डाय्— ऑळिक्
कॊळ्ळै यिलेयुनैक् कूडि मुयङ्गिक्
कुरिप्पिनि लेयॊन्ऱु पट्टु— निन्ऱन्
पिळ्ळैक् किळियॆन् कुदलैयि लेमनम्
पिन्न मऱ्ऱ चॆल्ल विट्टु— अडि
तॆळ्ळिय जानप् पॆरुञ् जॆल्वमे ! निनैच्
चेर विरुम्बिनन् कण्डाय् (अॆन्द नेरमुम्) 2
वट्टङ्ग ळिट्टुङ् गुळमह लाद
मणिप् पॆरुन् दॆप्पत्तैप् पोल— निनै
विट्ट विट्टुप् पल लीलैहळ् शॆय्दु निन्
मेनि तनैविड लिन्ऱि— अडि
अॆट्टुत् तिशैयुम् ऑळिर्न्दिडुङ् गालै
इरवियैप् पोन्ऱ् मुहत्ताय्— मुत्तम्
इट्टुप् पलमुत्त मिट्टुप् पलमुत्तम्
इट्टुनैच् चेर्न्दिड वन्देन् (अॆन्द नेरमुम्) 3

वळ्ळिप् पाट्टु(2)—8

राग हरहरप्परियै; ताळ— आदि

पल्लवि (टेक)

उनैये मयल् कॊण्डेन्— वळ्ळी !
उवमैयिल् अरियाय्; उयिरिनम् इनियाय् (उनैये)

शरणम् (चरण)

अॆनै याळ्वाय्, वळ्ळी, वळ्ळी !
इळमयिले ! अॆन् इदयमलर् वाळ्वे !

की, उसका फल आज प्राप्त करूँगा। (हर हमेशा०) १ (इस भाग में यमकालंकार भी है।) देखो, श्वेत चाँदनी आकाश को आच्छादित करके फैलकर छिटक रही है, देखो। इस प्रकार की लूट (बाढ़) में तुमने संयोग में लगा हुआ, चिन्तन में एक बनकर, तुम्हारे मृदु-बाल-शुक वचनों के पीछे-पीछे अपृथक रीति से मन को चलाकर री! निर्मल ज्ञान-धन! तुमसे मिलना चाहता हूँ। देख लो। (हर हमेशा०) २ चक्कर लगाने पर भी तालाब से पृथक् न हो सकनेवाली (क्रीड़ा या देवमूर्ति की) नाव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(कान्त-कलेवर कामदेव की कलित किशोरी-सी कुर वल्लि !)।
प्रतिपल बढ़ता प्रेम तुम्हारा बाल-मयूरी-सी कुर वल्लि ! ॥ १ ॥
चारु चन्द्र की श्वेत चाँदनी छिटकी हो नभमंडल में।
(बरस रही हो धवल दूध की धारा जैसे जल-थल में) ॥
उस चन्द्रिका पर्व में सुन्दरि ! तुमसे करूँ विहार प्रिये !।
शुक-सम मधुर वचन तव सुनकर तुम पर हूँ बलिहार प्रिये ! ॥
पीछे-पीछे डोलूँ तेरे लिए पुलकता प्यार प्रिये।
तव चिन्तन में तन्मय होकर होऊँ एकाकार प्रिये ॥
(बाल-पतंग-समान उड़ूँ मैं, तुम हो डोरी-सी कुर वल्लि !)।
प्रतिपल बढ़ता प्रेम तुम्हारा बाल-मयूरी-सी कुर वल्लि ! ॥ २ ॥
घूम-घूमकर उसी सरोवर में नौका खाती वक्कर।
ज्यों जहाज़ का पंछी अपृथक्, क्रीडारत तुमसे मिलकर ॥
दिग्-दिगन्त में प्रभा-प्रसारक रवि-सम सुंदर मुख वाली।
आलिंगन कर बार-बार मुख चूमूँ तेरा मतवाली ॥
विटप-वल्लि-सम सिंधु-लहर-सम हम-तुम एकाकार बनें।
कभी न बिछुड़ें चंद्र-चंद्रिका-सदृश लीन शृङ्गार बनें ॥
(चंचल नयनों से तुम निरखो चकित चकोरी-सी कुर वल्लि !)।
प्रतिपल बढ़ता प्रेम तुम्हारा बाल-मयूरी-सी कुर वल्लि ! ॥ ३ ॥

वल्लि-गीत (२)—८

वल्लि ! तुम्हीं पर मोहित हूँ मैं, वल्लि ! तुम्हीं पर मोहित हूँ ॥ टेक ॥
तुम अनुपम सौंदर्यमयी हो, तुम प्राणों से प्यारी हो।
(क्रीडाओं की क्यारी हो तुम यौवन की फुलवारी हो) ॥
मुझ पर शासन करो वल्लि ! तुम मैं तुमसे ही शासित हूँ।
वल्लि ! तुम्हीं पर मोहित हूँ मैं, वल्लि ! तुम्हीं पर मोहित हूँ ॥ १ ॥
बाल-मयूरी-सी तुम सुन्दर मेरे हृदय-कमल की प्राण।
मधुर स्वाद वाली मधुफल हो, संभोगों में सुधा-समान ॥
(अधर-सुधा पीकर ही सुन्दरि ! मैं इस जग में जीवित हूँ)।
वल्लि ! तुम्हीं पर मोहित हूँ मैं, वल्लि ! तुम्हीं पर मोहित हूँ ॥ २ ॥

के समान ('जहाज़ का पंछी' में जो ध्वनि है, वही इसमें भी है) तुमसे रह-रहकर अनेक तरह की क्रीड़ाएँ करूँ, तुम्हारे शरीर से अपृथक् न होऊँ। आठों दिशाओं में फैलनेवाली ज्योति में, हे रवि के समान मुखवाली ! चूमूँ, अनेक बार रह-रहकर चूमूँ और चूमकर, चूमते हुए तुमसे मिल जाऊँ —यही साध लेकर मैं आया हूँ। (हर हमेशा०) ३

वल्लि-गीत (२)—८

तुम्हीं पर मोहित हो गया, हे वल्लि ! (टेक) हे अनुपमा ! प्राणों से प्रिये !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कऩियै ! शुवैयुऱु तेऩे
कलवियिले अमुदऩैयाय् ! (कलवियिले)
तऩियै ज्ञान विऴियाय्— निलविऩिल्
निऩै मरुवि वळ्ळी वळ्ळी
नीया हिडवे वन्देऩ् (उऩैये)

इऱैवा इऱैवा—9

राग— धन्यासी

पल्लवि (टेक)

अॅत्तऩै कोडि इऩ्बम् वैत्ताय् ! अॅङ्गळ्
इऱैवा ! इऱैवा ! इऱैवा ! (ओ अॅत्तऩै)

शरणङ्गळ् (चरण)

शित्तिऩै अशित्तुडऩ् इणैत्ताय्— अङ्गु
शेरुम् ऐम्बूदत्तु वियऩुल हमैत्ताय्
अत्तऩै युलहमुम् वर्णक् कळञ्जिय
माहप् पलपलनल् लऴहुहळ् शमैत्ताय् (ओ अॅत्तऩै) 1
मुक्तियॅऩ् ऱॊरुनिलै शमैत्ताय्— अङ्गु
मुऴुदिनैयु मुणरुम् उणर् वमैत्ताय्
बक्तियॅऩ् ऱॊरुनिलै वहुत्ताय्— अॅङ्गळ्
परमा ! परमा ! परमा ! (ओ अॅत्तऩै) 2

पोऱ्ऱि अहवल्—10

पोऱ्ऱि उलहॊरु मूऩ्ऱैयुम् पुणर्प्पाय् !
माऱुवाय्, तुडैप्पाय्, वळर्प्पाय्, काप्पाय् !
कऩियिले शुवैयुम् काऱ्ऱिले इयक्कमुम्

(तुम्हीं पर०) मुझ पर शासन करो (या करनेवाली !) बळ्ळि ! बळ्ळि ! बाल-मयूर ! मेरे हृदय-कमल के प्राण ! हे फल (के समान मधुर बाले !) स्वाद भरे शहद ! संभोग में अमृत-सी··· (संभोग में) अकेली ज्ञान-दृष्टि वाली ! —हे बळ्ळि ! चाँदनी में तुम्हारा आलिंगन करके, हे बळ्ळि ! तुम्हीं बन जाने के हेतु मैं आया हूँ। (तुम्हीं पर०)

ईश्वर ! ईश्वर !—९

कितने करोड़ सुख रच रखे हैं (आपने) ! हे हमारे ईश्वर ! ईश्वर ! ईश्वर !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अद्वितीय तुम दिव्य-दृष्टि-मय तुम्हें चाँदनी में पाऊँ।
करूँ प्रेम से मैं आलिंगन और तुम्हीं में मिल जाऊँ॥
(वल्लि! तुम्हारे मधुर प्रेम को पाकर मैं अति हर्षित हूँ)।
वल्लि! तुम्हीं पर मोहित हूँ मैं, वल्लि! तुम्हीं पर मोहित हूँ॥ ३॥

ईश्वर—९

कोटि-कोटि सुख रचे आपने, हे परमात्मा! परमेश्वर!।
धन्य-धन्य है धन्य आपको, हे जगकर्ता! जगदीश्वर!॥
रचा प्रपंच पंचभूतों का जड़ में फूँकी चेतनता।
रंग-बिरंगे लोक बनाये भर दी अनुपम सुन्दरता॥
(सर्व-शक्ति-संपन्न तुम्हीं हो सर्वव्यापक सर्वेश्वर!)।
कोटि-कोटि-सुख रचे आपने, हे परमात्मा! परमेश्वर!॥ १॥
रची ज्ञान अनुभव की गरिमा दुःख-हारिणी मुक्ति रची।
सरस सुधा-सी और एक गति मधुर मनोरम भक्ति रची॥
कर्म, भक्ति औ ज्ञान-मार्ग के तुम्हीं विधाता विश्वेश्वर!।
कोटि-कोटि सुख रचे आपने, हे परमात्मा! परमेश्वर!॥ २॥

नमः—१०

नमो नमस्ते त्रिलोकजननी! त्रिलोकभरणी! नमो नमः।
नमो नमस्ते त्रिलोकहरणी! जग-उद्धरणी नमो नमः॥
तुम पालन करनेंवाली हो, तुम विकास करनेवाली।
तुम परिवर्तन करनेवाली, तुम विनाश करनेंवाली॥

(टेक) आपने चित् को अचित् से जोड़ दिया। वहाँ मिश्रित पंचभूतों की विस्मयकारी सृष्टि निर्मित की। सारे लोक रंगों के खजाने हैं। उसमें विविध सौन्दर्य भी आपने भर दिये हैं। (कितने०) १ आपने मुक्ति नामक एक स्थिति रच रखी है। वहाँ सर्वज्ञानानुभव की स्थिति स्थापित की। भक्ति नामक एक गति का प्रबन्ध किया है। हमारे परम-(परमेश्वर)! परम! परम! (कितने०) २

नमः अहवल् (छन्द में)—१०

[पोर्‌रि का अर्थ प्रशंसा करना है, जयगान करना, महिमा गाना, मन्दिरों में अर्चना के समय भगवान के नामों के साथ 'ॐ नमः' जोड़ा जाता है। उसी के-से प्रयोग में तमिळ में पोर्‌रि शब्द प्रयुक्त हुआ है।]

हे त्रिलोकजननी। नमोऽस्तु ते। परिवर्तन, नाश, वर्धन तथा रक्षण करनेवाली देवी! आप फल में स्वाद तथा पवन में स्पंदन के समान सबसे व्याप्त हुई हैं। आप सारा संसार बनकर शोभित हैं। विनय आपकी! हे माता, नमस्कार! हे अमृत!

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कलन्दार् पोलनी अनैत्तिलुम् कलन्दाय्
उलहॆल्लान् दानाय् ऒळिर्वाय् पोऱ्ऱि
अन्ने पोऱ्ऱि अमुदे पोऱ्ऱि
पुदियदिऱ् पुदुमैयाय् मुदियदिल् मुदुमैयाय्
उयिरिले उयिराय् इऱप्पिलुम् उयिराय्
उण्डॆन्नुम् पॊरुळिल् उण्मैयाय् ऎन्नुळे
नान्नुम् पॊरुळाय् नानैये पॆरुक्कित्
तान्नॆ माऱ्ऱुञ् शाहाव् चुडराय्
कवलैनोय् तीर्क्कुम् मरुन्दिन् कडलाय्
पिणियिरुळ् कॆडुक्कुम् पेरॊळि जायिऱाय्
यान्नॆ दिन्ऱि यिरुक्कुनल् योहियर्
जान्मा महुड नडुत्तिहळ् मणियाय्
शॆय्हैयाय् ऊक्कमाय् शित्तमाय् अऱिवाय्
निन्ऱिडुम् ताये नित्तमुम् पोऱ्ऱि
इन्बङ् गेट्टेन् ईवाय् पोऱ्ऱि
तुन्बम् वेण्डेन् तुडैप्पाय् पोऱ्ऱि !
अमुदङ् गेट्टेन् अळिप्पाय् पोऱ्ऱि
शक्ति पोऱ्ऱि ताये पोऱ्ऱि
मुक्ति पोऱ्ऱि मोन्मे पोऱ्ऱि !
शावित्तै वेण्डेन् तविर्प्पाय् पोऱ्ऱि !

शिव शक्ति—11

इयऱ्कै यॆन्ऱुरैप्पार्— शिलर्, इणङ्गुम् ऎम्बूदङ्गळ् ऎन्ऱिशैप्पार् शॆयऱ्कैयिन् शक्तियॆन्बार्— उयिर्त्, तीयॆन्बर् अऱिवॆन्बर् ईशनॆन्बर् वियप्पुरु ताय् निन्ऱक्के— इङ्गु, वेळ्वि शॆय्दिडु मॆङ्गळ् 'ओम्' ऎन्नुम् नयप्पडु मदुबुण्डे ?— शिव, नाट्टियङ् गाट्टि नल् लरुळ् पुरिवाय् 1
अन्बुरु शोदि यॆन्बर्— शिलर्, आरिरुट् काळियॆन् ऱुनैप् पुहळ्वार्

नमस्कार ! आप नयों से नयी हैं, पुरानों से पुरानी हैं। आप जीवों में प्राण हैं, मृतों के भी आत्मा हैं। जिस किसी वस्तु का भाव है, वह 'भाव' आप हैं। आप मुझमें 'मैं' की वस्तु हैं तथा उसी 'मैं' की विस्तृत करके अपने में बदल लेनेवाली ज्योति हैं आप। चिन्ता-रोग-निवारक औषध के सागर हैं आप। आप रोगान्धकार-नाशक प्रकाश सूर्य हैं। 'अहं'कार-'मम'कार-हीन योगियों के ज्ञानरूपी बृहत् किरीट की मध्य मणि हैं। आप क्रिया-रूप हैं, उत्साह-रूप हैं, चित्त-रूप हैं तथा बुद्धि-रूप हैं। हे माता ! आपको नित्य नमस्कार ! मैं सुख माँगता हूँ। दे दें। नमस्ते। मैं दुख नहीं चाहता, उसे मिटा दें। नमस्ते। मैंने अमृत माँगा, उसे दे दें। नमस्ते। हे शक्ति ! नमस्कार !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुम्हीं फलों में स्वाद बनी हो, तुम्हीं पवन में हो स्पन्दन।
निखिल विश्व है रूप तुम्हारा विनय, विनय, पुनरपि वन्दन॥
तुम प्राचीन पुरातन से भी, नूतन से भी हो नूतन।
जीवों में हो प्राण, मृतों में भी भरती हो तुम जीवन॥
मुझमें 'मैं' की अहंभावना को तुम ही भरनेवाली।
तुम्हीं देवि! हो अहंभाव को निज में लय करनेवाली॥
(व्यापक पुण्य-प्रभाव तुम्हीं हो, मोहक सरल स्वभाव तुम्हीं)।
(नाशक प्रलय अभाव तुम्हीं हो, सब भावों की भाव तुम्हीं)॥
चिंता-नाशक, औषधियों का हो विशाल भंडार तुम्हीं।
रवि बनकर हरती हो रोगों का तमतोम अपार तुम्हीं॥
जो योगीजन अहंकार से औ ममता से हैं वर्जित।
माँ! तुम उनके ज्ञान-मुकुट की मंजुल-मणि-सी हो शोभित॥
क्रिया तुम्हीं, उत्साह तुम्हीं हो, चित्त तुम्हीं हो बुद्धि तुम्हीं।
नमस्कार है माता! तुमको, दो सुख-शान्ति-समृद्धि तुम्हीं॥
दुख-हारिणी नमस्ते माता! अमृत-दायिनी नमो नमः।
शक्तिरूपिणी जननि! नमस्ते, मुक्तिरूपिणी नमो नमः॥
मौनभाव-युत जननि! नमस्ते, मृत्युवारिणी नमो नमः।
भक्तजनोद्धारिणी! नमस्ते, जगत्-तारिणी नमो नमः॥

शिव-शक्ति—११

कुछ कहते हैं प्रकृति और कुछ पंचभूत बतलाते हैं।
कुछ कहते हैं क्रियाशक्ति, कुछ प्राण-अग्नि जतलाते हैं॥
कुछ कहते हैं बुद्धि और कुछ जन कहते हैं परमेश्वर।
अति आश्चर्यजनक लीला है ललित आपकी जगदीश्वर!॥
सुधा-सरीखे ॐकार के जप में हैं हम सब संलग्न।
आप दिखा शिव नृत्य अनुग्रह करें मोद-सागर में मग्न॥ १॥
प्रेम-ज्योति कुछ जन कहते हैं, सघन-तिमिर-मय काली कुछ।
कुछ सुख की प्याली कहते हैं, दुख की कंटक-डाली कुछ॥

हे माता, नमस्कार! हे मुक्ति! नमस्कार! मैं मरण नहीं चाहता, मुझे उससे बचा दें। नमस्ते!

शिव-शक्ति—११

कुछ लोग आपको 'प्रकृति' कहते हैं, कुछ लोग समन्वित पंचभूत कहते हैं। लोग यह भी कहते हैं कि 'यह क्रिया की शक्ति है', आपको विस्मय में डालनेवाली प्राणाग्नि बुद्धि, ईश्वर आदि भी कहते है। यहाँ हम जिस (जय) यज्ञ में लगे हैं, उसमें 'ॐ'कार की सुधा है। आप शिव-नृत्य द्वारा हमें अनुगृहीत करें। १ लोग आपको प्रेम-ज्योति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इऩ्बमॆऩ् ऱुरैत्तिडुवार्— शिलर्, ऍण्णरुऩ् दुऩ्बमॆऩ् ऱुनै यिशैप्पार्
पुऩ्बलि कॊण्डुबन्दोम्— अरुळ्, पूण्डॆमैत् तेवर्दङ् गुलत्तिडुवाय्
मिऩ्पडु शिवशक्ति— ऍङ्गळ्, वीरै निऩ् तिरुवडि शरण् पुहुन्दोम् 2
उण्मैयिल् अमुदावाय्,— पुण्गळ्, ऒळित्तिडुवाय् कळि उदविडुवाय्;
वण्मै कॊळ् उयिर्च् चुडराय्— इङ्गु, वळर्न्दिडु वाय् ऍऩ्ऱुम् माय्वदिलाय्
ऒण्मैयुम् ऊक्कमुन्दाऩ्— ऍऩ्ऱुम्, ऊरिडुन् विरुवरुट् चुनैयावाय्
अण्मैयिल् ऍऩ्ऱुम् निऩ्ऱे— ऍऩ्मै, आदरित् तरुळ् शॆय्युम् विरदमुऱ्ऱाय् 3
तॆळिवुऱुम् अऱिविनै नाम्— कॊण्डु, पॊर्त्तलम् निऩक्कडु सोमरसम्
ऒळियुऱुम् उयिर्च्चॆडियिल्— इदे, ऒङ्गिडुम् मदिवलि तऩिर् पिऴिन्दोम्
कळियुऱक् कुडित्तिडुवाय्— निऩ्ऱुम्, कळिनडङ् गाण्डदर् कुळङ्गनिन्दोम्;
कुळिर् शुवैप् पाट्टिशैत्ते— शुरर्, कुलत्तिनिऱ् चेर्न्दिडल् विरुम्बुहिऩ्ऱोम् 4
अच्चमुम् तुयरुम् ऍऩ्ऱे— इरण्डु, अशुरर्बन् दॆमैयिङ्गु शूऴ्न्दु निऩ्ऱार्
तुच्चमिङ् गिवर् पडैहळ्— पल, तॊल्लैहळ् कवलैहळ् शावुहळाम्;
इच्चैयुर् ऱिवरडैन्दार्— ऍङ्गळ्, इऩ्ऩमुदैक् कवर्न् देहिडवे,
विच्चैयिङ् गॆमक्कळित्ताय्— ऒरु, पॆरुनहर् उडलॆडुम् पॆयरिऩदाम् 5
कोडि मण्डवन् दिहऴुम्— तिऱ्, कोट्टैयिङ् गिदैयवर् पॊऴुदऩैत्तुम्
नाडि निऩ्ऱिडर् पुरिवार्— उयिर्, नदियिऩैत् तडुत्तॆमै नलिन्दिडुवार्
शाडुपल् कुण्डुहळाल्— ऒळि, शार्मदिक् कूडङ्गळ् तहर्त्तिडुवार्
पाडिनिऩ् ऱुनैप् पुहऴ्वोम्— ऍङ्गळ्, पहैवरै अऴित्तॆमैक् काल्तिडुवाय् 6

कहते हैं। कुछ लोग 'जमे रहनेवाले अन्धकार की काली' कहकर आपकी प्रशंसा करते हैं। कुछ लोग 'सुख' कहते हैं, तो कुछ लोग 'अपार दुख' भी मानते हैं आपको ! हम बहुत ही 'छोटी' बलि लाये हैं। कृपा कर उसे अपना लें तथा हमें देवकुल का सदस्य बना लें। (जप या ध्यान का यज्ञ हो रहा है। उसमें ॐकार 'की' हवि दी जाती है। श्रद्धा उतनी गहन नहीं कही जा सकती, तो भी भक्त चाहता है कि उसे देव-सम्पत्ति मिल जाय।) हे विद्युत् की शिवशक्ति ! हे वीराणि ! हम आपकी शरण में आये हैं। २ आप सचमुच अमृत हैं। आप (हमारे) व्रणों को (संकटों को) दूर कर देंगी। हमें संतोष प्रदान करेंगी। पुष्कल प्राण-ज्योति के रूप में आप यहाँ बढ़ रही हैं। कभी मरना नहीं है आपको। कृपा के स्रोत हैं, जिससे ज्ञान-प्रकाश तथा उत्साह निरन्तर फूटते रहते हैं। सतत हमारे निकट रहकर हम पर अनुग्रह करने का आपने व्रत लिया है। ३ हमने अपनी शुद्ध मति को आप में मिला दिया, तो आपके लिए 'सोमरस' बना। उज्ज्वल प्राणों के पौधे से हमने यह सोमरस अपनी उन्नत मति के बल से निचोड़कर निकाला है। आप मस्ती के साथ उसे पियें। हमारा मन आपके आनन्दनृत्य को देखने के लिए लालायित है। हम शीतल (मनोमुग्धकारी) मधुर गीत गाकर सुर-कुल में सम्मिलित होना चाहते हैं। ४ भय और दुख (नाम के) दो असुर आकर इधर हमें घेरे हुए हैं इनकी तुच्छ सेनाएँ हैं— अनेक झंझटें, चिन्ताएँ तथा मृत्यु। ये हमारे (सुख या जीवन रूपी) अमृत को हरने की इच्छा से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देवि! तुम्हारे लिए आज हम छोटी-सी बलि लाये हैं।
करें इसे स्वीकार प्रेम से, मन में आश लगाये हैं॥
बना देवकुल का सदस्य अब मुझ सेवक को अपना लें।
शुभ दैवी सम्पत्ति प्राप्त हो ध्यान यज्ञ का फल पा लें॥
तुम नव अनुपम वीराणी हो, हो तुम विद्युन्मय शिवशक्ति।
शरण तुम्हारी हम आयें हैं, मुझे देवि दो निर्मल भक्ति॥ २॥
अमृत रूप हैं आप हमारे घाव भयानक भर देंगी।
पुष्कल प्राण-ज्योति-सी ज्योतित तुष्ट हमें अब कर देंगी॥
उत्साहों का निर्झर झरता ज्ञान-प्रकाश प्रकाशित है।
स्रोत कृपा की अमर देवि तुम तुमसे बुद्धि विभासित है॥
अजर-अमर बन देवि! हमारे निकट सदैव निवास करो।
लिया अनुग्रह का व्रत तुमने अनुगृहीत निज दास करो॥ ३॥
निज विशुद्ध मति का प्रयोग कर बना सोमरस लाये हैं।
उज्ज्वल प्राण-लता से मति-बल से निचोड़ बस लाये हैं॥
मादकता से पी लें इसको, यह आपको समर्पित है।
मेरा मन आनन्द-नृत्य के लखने को लालायित है॥
शीतल, मनमोहक, मंजुलतम, मधुर गीत को गा-गाकर।
मिलना चाह रहे सुरकुल में (कृपा तुम्हारी हम पाकर)॥ ४॥
भय-दुख नामक असुर भयंकर आज हमें दो घेरे हैं।
चिंता-मृत्यु-कलह औ संकट सैनिक तुच्छ घनेरे हैं॥
सुख की सुधा हमारी हरने पास हमारे आये हैं।
देवि! करो तुम रक्षा मेरी (ये अतिशय बौराये हैं)॥
हमें आपने तन के पुर की कृपापूर्वक दी भिक्षा।
(इस पुर की हो कैसे रक्षा? इसकी भी दो तुम शिक्षा)॥ ५॥
यह शरीर है दुर्ग करोड़ों मंडप इसमें शोभित हैं।
किन्तु असुर ये दोनों इसकी करते हानि अपरिमित हैं॥
रोक प्राण-सरिता की धारा, हमें मलिन कर देते हैं।
चला गोलियाँ शिविर ढहाते बुद्धि व्यर्थ कर देते हैं॥
देवि! आपकी स्तुति करते हैं हम अपार महिमा गाकर।
देवि! हमारी रक्षा करिए सभी शत्रुदल विनशाकर॥ ६॥

हमारे पास आये हैं। आपने शरीर नामक बड़े नगर की भिक्षा हमें प्रदान की है। ५ यह ऐसा दुर्ग है, जिसमें करोड़ों मंडप विद्यमान हैं। ये असुर हमेशा प्रयत्नपूर्वक इसकी हानि कर रहे हैं। प्राण-सरिता को रोकते हैं तथा हमें मलिन कर देते हैं। ये गोलियाँ चलाकर बुद्धिमत्ता से बनाये गये पड़ावों को गिरा देते हैं। (अतः) हम आपकी महिमा गाकर स्तुति करते हैं। हमारे शत्रुओं को मिटाइये, हमें बचाइये। ६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निन्नरुळ् वेण्डुहिन्रोम्— ऍङ्गळ्, नीदियुन् दर्ममुम् निलैप्पदर्के
पॊन्नविर् कोयिल्हळुम्— ऍङ्गळ्, पॊर्पुडै मादरुम् मदलैयरुम्
अन्न नल् लणि वयल्हळ्— ऍङ्गळ्, आडुहळ् माडुहळ् कुदिरैहळुम्
इन्नवै कात्तिडवे— अन्नै, इणैमलर्त् तिरुवडि तुणैयुहुन्दोम् 7
ऍम्मुयि राशैहळुम्— ऍङ्गळ्, इशैहळुम् शॆयल्हळुम् तुणिवुहळुम्
शॆम्मैयुर् रिड अरुळ् वाय्— निन्रुन्, शेवडि अडैक्कलम् पुहुन्दु विट्टोम्
मुम्मैयिन् उडमैहळुम्— तिरु, मुन्नरिट् टञ्जलि शॆय्दु निर्पोम्
अम्मै नर् चिव शक्ति— अमै, अमरर् तम् निलैयिनिल् आक्किडुवाय् 8

काणि निलम् वेण्डुम्—12

काणि निलम् वेण्डुम्— पराशक्ति, काणि निलम् वेण्डुम्— अङ्गु
तूणिल् अळहियदाय्— नन्माडङ्गळ्, तुय्य निरत्तिनदाय्— अन्दक्
काणि निलत्तिनिडैये— ओर्माळिहै, कट्टित्तर वेण्डुम्— अङ्गु
केणि यरुहिनिले— तॆन्नै मरम्, कीर्रु मिळनीरुम् 1
पत्तुप् पन्निरण्डु— तॆन्नै मरम्, पक्कत्तिले वेणुम्— नल्ल
मुत्तुच् चुडर् पोले— निलावॊळि, मुन्बु वरवेणुम्; अङ्गु
कत्तुङ् गुयिलोशै— शर्रे वन्दु, कादिर् पडवेणुम्— ऍन्रन्
शित्तम् महिळ्न्दिडवे— नन्रायिळन्, दॆन्रल् वर वेणुम् 2
पाट्टुक् कलन्दिडवे— अङ्गेयॊरु, पत्तिनिप् पॆण् वेणुम्— ऍङ्गळ्
कूट्टुक् कळियिनिले— कविदैहळ्, कॊण्डु तर वेणुम्— अन्दक्
काट्टु वॆळियिनिले— अम्मा निन्रुन्, कावलुर् वेणुम्— ऍन्रन्
पाट्टुत् तिरत्ताले— इवबैयत्तैप् पालित्तिड वेणुम् 3

आपकी कृपा की याचना करते हैं। हमारी नीति तथा धर्म स्थिर रहें। हम आपके चरणद्वय के आश्रय में आये हैं ताकि हमारे स्वर्णोपम मन्दिर, सुन्दर स्त्रियाँ, बच्चे, धान के खेत, हमारी भेड़-बकरियाँ, हमारे पशु तथा अश्व सभी का आप पालन करें। ७ आप हम पर यह अनुग्रह करें कि हमारे दिल की इच्छाएँ, हमारे गीत, हमारे कर्म तथा संकल्प सभी श्रेष्ठ बन जाएँ। आपके आरक्त (महिमामय, सुन्दर) चरणों के आश्रय में हम आ गये हैं। हम तीनों (काल) सारी सम्पत्ति आपके सामने अर्पित करके अंजलिबद्ध खड़े हैं। हे माता! हे शुभ शिवशक्ति! हमें अमरों की स्थिति दिला दीजिए। ८

'काणि' (सवा एकड़) ज़मीन हो—१२

हमें एक 'काणि' ज़मीन चाहिए। हे काली, हमें एक काणि ज़मीन चाहिए। वहाँ अच्छे स्तम्भों का, और श्रेष्ठ मंडपों से भरा एक महल बनाकर देना चाहिए। वहाँ कुएँ के पास, अच्छे पत्तों तथा डाभों (फलों) से पूर्ण— १ दस, बारह नारियल के पेड़ हों। तब मोती की ज्योति के समान चाँदनी निकल आ जाए। वहाँ कोयल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कृपा करो हे देवि ! हमारी नीति, धर्म सब अटल रहें।
चरणों के आश्रय में आये कार्य हमारा सफल रहे॥
सुन्दर ललनाएँ, भोले शिशु, स्वर्णोपम मन्दिर मनहर।
हरे धान के खेत, हमारी भेड़-बकरियाँ-पशु-हयवर॥
(भली-भाँति से इस जीवन का देवि ! हो सके संचालन)।
करते हैं हम यही प्रार्थना करें आप इनका पालन॥ ७॥
मधुर गीत, संकल्प-कर्म शुभ, मन की सभी कामनाएँ।
अंब-अनुग्रह से पुष्कल हों दूर सभी हों विपदाएँ॥
अरुण-वर्ण-वाले चरणों की आज शरण हम आये हैं।
सब सम्पति-त्रिकाल अर्पित है हाथ जोड़ सिर नाये हैं॥
हे माता शिव-शक्ति ! हमें अमरों की शक्ति प्रदान करें।
मृत्युलोक की भीति मिटाकर हमको अमर-समान करें॥ ८॥

सवा एकड़ ज़मीन चाहिए—१२

गुज़र कर सकूँ, मुझे चाहिए एकड़-सवा मात्र धरती॥ टेक॥
मुझे चाहिए खंभोंवाले श्रेष्ठ मंडपों-भरा महल।
जहाँ कुएँ के पास नारियल के तरुवर हों लगे स-फल॥
(शीतल सुखद सघन छाया हो तन-मन को हर्षित करती।
गुज़र कर सकूँ, मुझे चाहिए एकड़-सवा मात्र धरती॥ १॥
दस-बारह नारियल विटप बस, कोयल कूक सुनाती हो।
मंद-मंद मलयानिल मेरे मन को मस्त बनाती हो॥
मोती-सी चाँदनी खिली हो, रोम-रोम पुलकित करती।
गुज़र कर सकूँ, मुझे चाहिए एकड़-सवा मात्र धरती॥ २॥
गानों की लय-तान ले रही पतिव्रता मम नारी हो।
कलित केलियों में मुसकाती, कविताओं की क्यारी हो॥
सुख-समृद्धि-सम्पत्ति हमारे मन में हो प्रमोद भरती।
गुज़र कर सकूँ, मुझे चाहिए एकड़-सवा मात्र धरती॥
भीषण वन में माता ! मेरी प्रहरी बन रक्षा करना।
निज-गानों से जग-रक्षा कर सकूँ यही वर है वरना॥
देवि ! तुम्हारी कृपादृष्टि ही सब मनसा पूरन करती।
गुज़र कर सकूँ, मुझे चाहिए एकड़-सवा मात्र धरती॥ ३॥

की कूक कानों में ज़रा आ जाए। मेरे मन को ताज़ा करते हुए मंद-मंद दक्षिणी (मलय) पवन चले। २ गानों की लय हो, इसके लिए एक पतिभक्ति-युक्त नारी हो। हमारी सम्मिलित केलियों में कविताएं पैदा करा दीजिए। उस वन्य प्रदेश में हे माता, आपका पहरा हो। हे माँ, अपने गान-कौशल से मैं इस विश्व का संरक्षण कर सकूं —यह भी सम्भव करा दें। ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नल्लदोर् वीणै शॆय्दे—13

नल्लदोर् वीणै शॆय्दे— अदै, नलङ्गॆडप् पुऴुदियिल् ऍऱिवदुण्डो ?
शॊल्लडि शिव शक्ति— ऍऩैच्, चुडर्मिहुम् अऱिवुडऩ् पडैत्तु विट्टाय्
वल्लमै तारायो— इन्द मानिलम् पयनुऱ वाऴ्वदर्के
शॊल्लडि शिव शक्ति— निलच्, चुमैयॆऩ वाऴ्न्दिडप् पुरिहुवैयो ?
विशयुऱु पन्दिनैप् पोल्— उऴ्ळम्, वेण्डिय पडिशॆलुम् उडल्केट्टेऩ्
नशैयऱु मनङ्गेट्टेऩ्— नित्तम्, नवमॆऩच् चुडर् तरुम् उयिर् केट्टेऩ्
तशैयिनैत् तो शुडिनुम्— शिव, शक्तियैप् पाडुम्नल् अहङ् गेट्टेऩ्
अशैवऱु मदि केट्टेऩ्— इवै, अरुळ्वदिल् उऩक्कॆदुन् दडैयुळदो ?

महाशक्तिक्कु विण्णप्पम्—14

मोहत्तैक् कॊऩ्ऱुविडु— अल्ला लॆऩ्ऱऩ्, मूच्चै निऱुत्ति विडु
देहत्तच् चाय्त्तु विडु— अल्ला लदिल्, शिन्दनै माय्त्तु विडु
योहत् तिरुत्ति विडु— अल्ला लॆऩ्ऱऩ्, ऊनैच् चिदैत्तु विडु
एहत् तिरुन्दुलहम्— इङ्गुळ्ळ, यावैयुम् शॆय्बवळे 1
बन्दत्तै नीक्कि विडु— अल्लालुयिर्प्, पारत्तैप् पोक्कि विडु
शिन्दै तॆळिवाक्कु— अल्ला लिदैच्, चॆत्त उडलाक्कु
इन्दप् पदर्हळैये— नॆल्ला मॆऩ, ऍण्णि यिरुप्पेऩो ?
ऍन्दप् पॊरुळिलुमे— उळ्ळे निऩ्ऱु, इयङ्गि यिरुप्पवळे 2
उळ्ळम् कुळिरादो ? पॊय्याणव, ऊनम् ऒळियादो ?
कळ्ळम् उरुहादो— अम्मा बक्तिक्, कण्णीर् पॆरुहादो ?

एक अच्छी वीणा—१३

एक अच्छी बीणा बनाकर क्या उसकी महिमा को बिगाड़ते हुए धूल में फेंका भी जायगा ? री ! शिवशक्ति ! कह ! मुझे उज्ज्वल बुद्धि के साथ तूने बना दिया। तो फिर क्या तू मुझे शक्ति नहीं देगी, ताकि यह विश्व सफल जीवन जिए ? री शिवशक्ति ! कह दे ! क्या तू मुझे भू के भारस्वरूप रहने देगी ? ज़ोर से उछाली गयी गेंद के समान, मैंने अपनी इच्छा के अनुसार क्रियाशील रहनेवाला शरीर माँगा था, रागहीन मन माँगा। दिन प्रतिदिन अभिनव बननेवाली ज्योति से परिपूर्ण प्राण माँगे। और मांस को आग से जलाते समय भी शिवशक्ति का (महिमा-) गान करनेवाला मन माँगा। अचल बुद्धि की याचना की। क्या इनको देने में तुझे कोई आपत्ति है ?

महाशक्ति के प्रति विनय—१४

एकाकिनी रहकर यहाँ सब करनेवाली देबि ! (टेक) मोह को मार दो, नहीं तो साँसों को रोक दो (मुझे ही मार दो।) शरीर को गिरा दो। नहीं तो उसमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अच्छी एक वीणा—१३

मनमोहक मंजुलतम वीणा रच करके अतिशय सुंदर।
महिमा कौन मिटायेगा जन उसको धूलि-धूसरित कर॥
री शिवशक्ति! (अरे तूने ही इस जग को उपजाया है)।
निर्मल बुद्धि मुझे दे करके तूने मुझे बनाया है॥
विशद विश्व में सदा सफलता प्राप्त करे मेरा जीवन।
शक्ति नहीं देगी इसके हित क्या तू मुझको (मनभावन)॥
री शिवशक्ति! बता क्या मुझको तू भू-भार बनायेगी।
(या दे करके शक्ति मुझे बलवान अपार बनायेगी)॥
इच्छा के अनुसार क्रियामय कन्दुक-सम तन माँगा था।
रंच राग का दाग़ न जिसमें ऐसा ही मन माँगा था॥
दिन-दिन नूतन-ज्योति-समन्वित प्राणों का धन माँगा था।
ज्वाला में जल तुझे न भूले ऐसा दृढ़ मन माँगा था॥
अचल बुद्धि देने की मैंने तुझसे की प्रार्थना जननि!।
क्या संकोच? न देवि करेगी क्या मेरी याचना जननि?॥

महाशक्ति के प्रति विनय—१४

या तो मोह नष्ट कर मेरा या मेरा ही कर संहार।
तन विनष्ट कर, या विनष्ट कर मन की चिन्ता और विचार॥
या तो मुझे योग में स्थित कर योग-साधना का वर दे।
बोटी-बोटी मांस काट या तन को नष्ट-भ्रष्ट कर दे॥ १॥
भार हटा मेरे प्राणों का या दे काट सभी बन्धन।
या तो चिन्ताएँ सुलझा दे या मृत बने हमारा तन॥
विराजती तू अन्तर्यामिनि! बन करके सबमें स्पन्दन।
क्या इन छिलकों को ही देवी! समझूँगा सदैव मैं धन॥ २॥
देवि! बता दे तू, क्या मेरा अन्तस्तल शीतल होगा?।
झूठे अहंकार से उपजा दैन्य न क्या निष्फल होगा?॥
क्या मेरा मन भक्ति-भावना से न कभी भी पिघलेगा?।
नवल प्रेम का निर्मल निर्झर क्या न दृगों से उबलेगा?॥

रहनेवाली चिन्तनशक्ति को मिटा दो। योग में स्थित कर दो। नहीं तो मेरे मांस को नष्ट-भ्रष्ट कर दो। १ बन्धन को काट दो, नहीं तो प्राणों का भार हटा दो। चिन्तन को सुलझाओ। नहीं तो इस शरीर को मृत बना दो। सभी वस्तुओं में अन्तर्यामी रहकर स्पंदित रहनेवाली देवी! क्या मैं इन छिलकों को धन समझे रहूँगा? २ क्या मेरा मन शीतल (शान्त) बनेगा? झूठे अहंकार की हीनता दूर नहीं होगी क्या? हे माँ! भक्ति-गलित अश्रु बह नहीं चलेंगे क्या? (भक्ति से मेरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेळ्ळक् करुणैयिले— इन्नाय् शिरु, वेट्कै तविरादो ?
विळ्ळऱ् करियवळे !— अत्तैत्तिलुम्, मेविय़िरुप्पवळे ! 3

अन्नैयै वेण्डुदल्—15

अँण्णिय मुडिदल् वेण्डुम्, नल्लवे अँण्णल् वेण्डुम्
तिण्णिय नॅञ्जम् वेण्डुम्; तॅळिन्द नल्लऱिवु वेण्डुम्
पण्णिय पावमॅल्लाम्, परिदिमुन् पऩिये पोल
नण्णिय निन्मुन् इङ्गु, नशित्तिडल् वेण्डुम् अन्नाय्

बूलोह कुमारि—16

पल्लवि (टेक)

बूलोह कुमारि ! हे अमृत नारि !

अनुपल्लवि (अनुटेक)

अलोक श्रृंगारि, अमृत कलश कुश पारे
काल पय कुटारि काम वारि कऩ लता रूप गर्व तिमिरारे

शरणम् (चरण)

बाले रस जाले बगवति प्रसीद काले
नील रत्नमय नेत्र विशाले, नित्य युवति पद नीरज माले
लीला ज्वाला निर्मित वाणी, निरंतरे निकिल लोकेशानि
निरुपम सुन्दरि नित्य कल्याणि, निजम् माम् कुरु हे मन्मदराणि

महाशक्ति वॅण्बा—17

तन्नै मऱन्दु सकल उलहिऩैयुम्
मन्न निदङ्गाक्कुम् महाशक्ति— अऩ्ऩै

मन द्रवित नहीं होगा ? आँखों से आँसू नहीं बहेंगे ? हे अवर्णनीय देवी ! सर्वान्तर्यामी ! तुम्हारी करुणा-नदी में यह कुत्ता अपनी प्यास जरा बुझा नहीं सकेगा क्या ? ३

माता से विनय—१५

हे माँ ! आयोजित हुआ कार्य पूरा होना चाहिए। और सोचना भी भला ही चाहिए। सुदृढ़ हृदय चाहिए। सुलझी हुई निर्मल बुद्धि चाहिए। किये हुए सभी पाप, सूर्य के सामने के हिम के समान, तुम्हारे सामने नष्ट हो जाने चाहिए।

भूलोक-कुमारी—१६

भूलोक-कुमारी ! हे अमृत नारी ! (टेक) आलोक-श्रृंगारी, अमृत-कलश, कुच-भार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हे अवर्ण्य ! अन्तर्यामिनि ! माँ ! बहती तव करुणा-धारा।
बुझा सकेगा प्यास न उसमें क्या यह कुक्कुर बेचारा ॥ ३ ॥

माता से विनय—१५

मन के सोचे सभी मनोरथ मेरे पूरे कर दो माँ !।
जग-मंगल की मधुर भावना मनोरथों में भर दो माँ ! ॥
अबल हृदय में मेरे माता ! तुम अपार दृढ़ता भर दो।
सभी उलझनों को सुलझाये मति में निर्मलता भर दो ॥
जैसे जमी बर्फ़ गल जाती जब होता है सूर्य उदय।
उसी भाँति माँ ! तब दर्शन से मेरे सभी पाप हों क्षय ॥

भूलोक-कुमारी—१६

हे भूलोककुमारी ! सुंदरि ! हे नव अमृतमयी नारी ! ॥टेक ॥
सुधा-कलश-से उन्नत कुच हैं आलोकित करते श्रृंगार।
कुटिल-काल के भय के तरु को बनकर तुम काटतीं कुठार ॥
कामदेव का रूप-गर्व-तम छिन्न-भिन्न करनेवाली।
उचित समय पर देवि ! मुदित हो हे बाले ! रस की प्याली ॥
नीलम-सदृश पुतलियों वाली, हो विशाल नयनों वाली।
नीरज-माला धरनेवाली, नित्य-युवति हो छविशाली ॥
हो तुम संतत रहनेवाली, लीला-ज्वालामय वाणी।
हो अनुपम सुंदरी विश्व में नित्य चिरंतन कल्याणी ॥
मैं न विलग रह जाऊँ, मुझको अपना लो मन्मथ रानी।
हे भूलोक-कुमारी सुंदर ! हे नव अमृतमयी नारी ! ॥

महाशक्ति-स्तुति—१७

महाशक्ति अपने स्वरूप का जभी विस्मरण करती है।
तब स्थायी स्वरूप से लोकों का वह पालन करती है ॥
ऐसी महिमामयी हमारी आश्रयदाता माता है।
ऐसा दृढ़ विश्वास निरंतर एक मात्र सुखदाता है ॥ १ ॥

वाली ! काल-भय की कुठार ! काम की घने प्रवाह-सी लता ! रूप गर्व रूपी तिमिर को नाश करनेवाली ! हे बाले, रस-जाले, हे भगवती, ठीक समय पर (समय रहते) प्रसन्न हो जाओ। नीले रत्नों के समान विशाल नेत्रों वाली ! चिर-युवती ! हे चरणों में नीरजमाला धरनेवाली ! हे लीला-ज्वाला-निर्मित वाणी ! हे निरन्तरा ! हे सभी लोकों में अद्वितीय सुन्दरी ! हे नित्य-कल्याणी ! हे मन्मथराज्ञी ! मुझे भी 'स्वयं' बना लो ! मैं तुमसे अलग न रह जाऊँ !

महाशक्ति-स्तुति—१७

महाशक्ति अपने को भूलकर सारे लोकों को स्थायी रूप से पाल रही हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अवळे तुणैयॆन्ऱु अन्नवरदम् नॆञ्जम्
तुवळा दिरुत्तल् सुहम् 1
नॆञ्जिऱ् कवलै निवमुम् पयिराक्कि
अञ्जि उयिर् वाऴ्दल् अऱियामै— तञ्जमॆन्ऱे
वैयमंलाङ्गाक्कुम् महाशक्ति नल्लरुळै
ऐयमऱप् पऱ्ऱल् अऱिवु 2
वैयहत्तुक् किल्लै ! मनमे निन्नक्कु नलञ्
शॆय्यक् करुदि यिदै शॆप्पुवेन्— पॊय्यिल्लै
अॆल्लाम् पुरक्कुम् इऱै नमैयुङ् गाक्कुमॆन्ऱु
शॊल्लाल् अऴियुम् तुयर् 3
अॆण्णिऱ् कडङ्गामल् अॆङ्गुम् परन्दनवाय्
विण्णिऱ् चुडर्हिन्ऱ मीन्नॆयॆल्लाम्— पण्णियदोर्
शक्तियै नम्मैच् चमैत्तदुकाण्— नूऱाण्डु
बक्तियुडन् वाऴुम् पडिक्कु 4

ओम् शक्ति—18

नॆञ्जुक्कु नीदियुम् तोऴुक्कु वाऴुम् निऱैन्द शुडर्मणिप् पूण्
पञ्जुक्कु नेर्पल तुन्बङ्गळाम्, इवळ्, पार्वैक्कु नेर् पॆरुन्दी
वञ्जनै यिन्ऱिप् पहैयिन्ऱिच् चूदिन्ऱि, वैयह मान्द रॆल्लाम्
तञ्जमॆन्ऱे युरैप्पोर् अवळ् पेर् शक्ति, ओम् शक्ति, ओम् शक्ति, ओम् 1
'नल्लदुन् दीयदुञ् जॆय्दिडुम् शक्ति, नलत्तै नमक् किऴैप्पाळ्
अल्लदु नीङ्गुम्' अॆन्ऱे युलहेऴुम् अऱैन्दिडुवाय् मुरशे !
शॊल्लत् तहुन्द पॊरुळन्ऱु काण् ! इङ्गु शॊल्लु मवर् तमैये
अल्लल् कॆडुत्तम रर्क्किणै याक्किडुम्, ओम् शक्ति, ओम् शक्ति ओम् 2

'माता ही हमारा आश्रय (या हमारी सहायिका) हैं' —इस विश्वास में अनवरत अथक रहना ही सुख है। १ चित्त में चिन्ता को प्रतिदिन (हर समय) पालित करके डरते-डरते जीवन बिताना मूढ़ता है। सकल-लोक-रक्षिका महाशक्ति की श्रीकृपा का, संशय त्यागकर, आश्रय कर लेना बुद्धिमत्ता है। २ रे मन, मैं यह उपदेश संसार को नहीं दे रहा हूँ। तुझी को, तेरा भला करने के इरादे से कह रहा हूँ। असत्य नहीं है यह— 'सर्वरक्षक ईश्वर हमारी भी रक्षा करेंगे'। इस कथन से ही कष्ट मिट जायगा। ३ यह जान लो कि जो संख्या में नहीं समा सकें और जो सर्वत्र फैले हैं, उन आकाश में चमकनेवाले सभी तारों की सृष्टि करनेवाली शक्ति ने ही हमें भी रचा। —क्यों ? सौ वर्ष भक्ति के साथ जीने के लिए। ४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रतिदिन चिन्तन करते-करते प्रतिपल ही डरते-डरते।
मूर्ख व्यक्ति ही इस जगती में निज जीवन-यापन करते॥
सब लोकों की जो रक्षक उस महाशक्ति की कृपा उदार।
जो नर निःसंशय पा जाते बुद्धिमान हैं वही अपार॥ २॥
रे मन ! यह उपदेश नहीं मैं सबके लिए बताता हूँ।
तेरा ही हित करने को मैं सचमुच तुझे सुनाता हूँ॥
जग-रक्षक जगदीश मुझे भी करके कृपा बचायेंगे।
यह सच्चा विश्वास करो तो सब संकट मिट जायेंगे॥ ३॥
जिसने नभ में फैले अगणित जगमग तारों को विरचा।
उसी शक्ति ने हम सबको भी इस संसृति में है सिरजा॥
इस रहस्य को भली-भाँति से यदि मानवो ! जान लोगे।
सौ वर्षों तक सदा जियोगे मन में भक्ति ठान लोगे॥ ४॥

ॐ शक्ति—१८

मन के लिए नीति का पालन औ, कन्धे के हित तलवार।
चमकीलो मणियों से निर्मित अलंकार ये ही छविदार॥
बस कपास-सम विविध कष्ट हैं शक्ति-दृष्टि है अग्नि-समान।
पल भर में ही जला डालती जन के संकट सभी महान॥
कपट, वंचना और शत्रुता त्याग विश्व के नर मतिमान।
शक्ति नाम का आश्रय लेकर बोलें ओं-शक्ति अभिराम॥ १॥
शक्ति सदा मंगल कर सकती शक्ति अमंगल कर सकती।
मंगल सदा करेगी मेरा, नहीं अमंगल कर सकती॥
मंगलमयी शक्ति का कर दो सप्तलोक में भेरी-घोष।
"अकथनीय है शक्ति" यही कह जो जन करते है उद्घोष॥
अमर-समान उन्हें कर देती करके कष्टों का वारण।
'ॐ शक्ति जय', 'ॐ शक्ति जय', करो प्रेम से उच्चारण॥ २॥

ॐ शक्ति—१८

मन के लिए नीति तथा कन्धे के लिए तलवार ही चमकीली मणियों से बने अलंकार हैं। विविध कष्ट रुई के समान हैं, जब कि इनकी दृष्टि आग के समान है। कपट, वंचना तथा शत्रुता को त्यागकर विश्व के मानव उनके नाम को आश्रय कह (मान) लें— शक्ति, ॐ शक्ति, ॐ शक्ति, ॐ। १ शक्ति, अच्छा-बुरा चाहे जो कर सकती है। वह शक्ति हमारा मंगल ही करेगी। और जो (मंगल से) इतर है, वह दूर हो जायगा। हे भेरी ! सातों भुवनों में ऐसी मुनादी पीट दो। कथनीय चीज नहीं है यह— जो ऐसा करता है उसका कष्ट दूर करके, उसे अमर के समान कर देगी यह ॐ शक्ति, ॐ शक्ति, ॐ २ 'विश्वास ही निस्तार का मार्ग है।' वेद ने यह विश्वास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नम्बुव देवरि ऎन्ऱ मऱै तन्नै नामिन्ऱु नम्बि विट्टोम्
कुम्बिट् टॆन्नेरमुम् 'शक्ति' यॆन्ऱालुनैक् कुम्बिडुवेन् मनमे !
अम्बुक्कुम् तोक्कुम् विडत्तुक्कुम् नोवुक्कुम् अच्च मिल्लादपडि
उम्बर्क्कुम् इम्बर्क्कुम् वाऴ्वु तरुम् पदम् ओम् शक्ति, ओम् शक्ति, ओम् 3
पॊन्नैप् पॊऴिन्दिडु मिन्नै वळर्त्तिडु पोऱ्ऱि उनक् किशैत्तोम्
अन्नै पराशक्ति ऎन्ऱुरैत्तोम् तळै अत्तनैयुम् कळैन्दोम्
शॊन्न पडिक्कु नडन्दिडुवाय् मनमे तॊऴिल् वेऱिल्लै काण्
इन्नु मदेयुरैप्पोम् शक्ति ओम् शक्ति, ओम् शक्ति, ओम् शक्ति, ओम् 4
वॆळ्ळै मलर्मिशै वेदक् करुप्पॊरु ळाह विळङ्गिडुवाय् !
तॆळ्ळु कलैत् तमिऴ् वाणी ! निनक्कॊरु विण्णप्पम् जॆय्दिडु वेन्;
ऎळ्ळत् तनैप् पॊऴुदुम् पयनिन्ऱि इरावॆन्ऱन् नाविन्निले
वॆळ्ळ मॆनप् पॊऴिवाय् शक्ति वेल् शक्ति वेल् शक्ति वेल् शक्ति वेल् 5

परा शक्ति—19

कदैहळ् शॊल्लिक् कविदै यॆऴुदॆन्बार्, कावियम् पल नीण्डन कट्टॆन्बार्
विदविदप्पडु मक्कळिन् शित्तिरम्, मेवि नाडहच् चॆय्युळै मेवॆन्बार्;
इदयमो ऎनिऱ् कालैयुम् मालैयुम्, ऎन्द नेरमुम् वाणियैक् कूवङ्गाल्
ऎदैयुम् वेण्डिल दन्नै पराशक्ति, इन्ब मॊन्ऱिनैप् पाडुदल् अन्ऱिये 1
नाट्टु मक्कळ् पिणियुम् वऱुमैयुम्, नैयप् पाडॆन्ऱॊरु दॆय्वङ् गूऱुमे
कूट्टि मानुडच् चादियै ऒन्ऱॆनक्, कॊण्डु वंयम् मुऴुदुम् पयनुऱप्

विलाया है। उस वाक्य पर हम विश्वास रख चुके हैं। हे मन, अगर तुम सदा शक्ति कहोगे, तो मैं तुम्हारा बद्धांजलि होकर नमस्कार करूँगा। इह तथा स्वर्ग-लोक के वासियों को (सुखी) जीवन देनेवाला पद है, ॐ शक्ति, ॐ शक्ति, ॐ। ३ स्वर्ण बरसाओ। बिजली को (अन्तश्शक्ति को) बढ़ा दो। हम तुम्हें नमस्कार कहते हैं। हम तुम्हें माँ, पराशक्ति कहते हैं। हम सभी बन्धनों को काट चुके हैं। रे मन ! जैसा कहूँ, वैसा करो। कोई और धंधा नहीं है-- यह जान लिया ? अब भी वह उच्चारण कर-- ॐ शक्ति, ॐ शक्ति, ॐ। ४ तुम श्वेत (कमल) पुष्प पर वेद-बीज (मूल) के रूप में शोभायमान हो। हे स्वच्छ तमिऴ-कला-वाणी ! मैं तुमसे एक निवेदन करूँगा। हे शक्ति वेल ! शक्ति वेल, शक्ति। तिल भर भी (यह तमिऴ का मुहावरा—जरा भी समय के अर्थ में प्रयुक्त होता है।) अकारथ न रहकर बाढ़ के समान मेरी जीभ में से बरसते रहो। (वेल-- साँग या शक्ति है। यहाँ ॐ के स्थान पर वह प्रयुक्त है।) ५

पराशक्ति—१९

लोग सुझाते हैं कि कहानी कहनेवाली कविताएँ लिखो। कुछ लोग कहते हैं कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दृढ़-विश्वास मुक्ति का पथ है वेद दिलाते हैं विश्वास।
उस पर कर विश्वास विश्व में हम करते हैं सतत प्रयास॥
रे मन! यदि तुम 'शक्ति-शक्ति' कह नाम जपोगे बारंबार।
नमस्कार कर-बद्ध करूँगा तो तुमको हे भक्त उदार!॥
भूमिवासियों, स्वर्गवासियों दोनों को सुखदायक है।
ॐ शक्ति बस, ॐ शक्ति पद सबका सदा सहायक है॥ ३॥
जपकर शक्ति स्वर्ण बरसाओ, अंतःशक्ति बढ़ाओ तुम।
तुमको नमस्कार हम करते शक्ति-नाम-गुण गाओ तुम॥
जो जन माता पराशक्ति को प्रेम-समेत बुलाते हैं।
उनके दैहिक-दैविक-भौतिक सब बंधन कट जाते हैं॥
रे मन! जो मैं कहूँ करो वह, और नहीं कोई साधन।
'ॐ शक्ति जय', 'ॐ शक्ति जय' करो प्रेम से उच्चारण॥ ४॥
बेद-बीज बन श्वेत कमल पर शोभित माँ! तव आसन है।
तमिळ-कला की निर्मल वाणी! तुमसे एक निवेदन है॥
सदा उमड़ते रहें बाढ़ से रसना से बस यही वचन।
व्यर्थ न हो पल भर सदैव हो 'ॐ शक्ति' का उच्चारण॥ ५॥

पराशक्ति—१९

लिखो कथाओं की कविताएँ, कुछ जन यही सुझाते हैं।
लिखो विशाल प्रबन्ध-काव्य को, कुछ जन यह बतलाते हैं॥
लिखो चरित्र-चित्र-मय नाटक, यह कुछ जन जतलाते हैं।
इस प्रकार सब अपनी-अपनी कह मुझको समझाते हैं॥
साँझ-सबेरे किसी समय भी जब मैं वाणी को ध्याता।
पराशक्ति की महिमा तजकर और न कुछ मुझको भाता॥ १॥
कहता एक, देश जन के रुज-दैन्य विलोक द्रवित होकर।
रचो काव्य वह जिससे फूटे करुणा का निर्मल-निर्झर॥
अन्य देव कह रहा काव्य में विश्व-धर्म को दरसाओ।
मनुज-जाति को एक मानकर सब जग का हित कर जाओ॥
और तीसरा देव कह रहा विरचो मंजुल कविताएँ।
सुखद-राग-मय मधुर-मोद-मय सजा विचित्र कल्पनायें॥ २॥

अनेक लम्बे प्रबन्ध-काव्यों को लिखो। विविध मानव-चित्र बरसाते हुए दृश्य-काव्य बनाओ—यह भी कुछ लोग कहते हैं। पर शाम हो कि सबेरे, कभी भी जब हृदय वाणी को पुकारता है, तब वह माता पराशक्ति की महिमा के गान के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता है। १ एक देव कहता है कि देशवासियों के रोग तथा दरिद्रता पर आर्द्र होकर काव्य रचो। और एक देव कहता है कि मानवजाति को एक मानकर विश्व भर को लाभ पहुँचाते हुए अपनी कविता में धर्म बरसाओ। तीसरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पाट्टिले यऱङ् गाट्टॆनु मोर् दॆय्वम्, पण्णिल् इन्बमुम् कऱ्पनै विन्दैयुम्
ऊट्टि ऍङ्गुम् उवहै पॆरुहिड, ओङ्गुम् इन्कवि ओदॆनुम् वेऱोन्ऱे 2
नाट्टु मक्कळ् नलमुऱ्ऱु वाळ्बुम्, नानिलत्तवर् मेनिलै यॆय्दवुम्
पाट्टिले तनि यिन्बत्तै नाट्टवुम्, पण्णिले कळि कूट्टवुम् वेण्डि नान्
मूट्टुम् अन्बुक् कनलॊडु वाणियै, मुन्नुहिन्ऱ पॊळुदि लॆलाङ् गुरल्
काट्टि अन्नै पराशक्ति एळैयेन्, कविदै यावुन् तनक्कॆनक् केट्किन्ऱाळ् 3
मळै पॊळिन्दिडुम् वण्णत्तैक् कण्डु नान्, वानिरुण्डु करुम्पुयल् कूडिये
इळैयु मिन्नल् शरॆलॆन्ऱु पायवुम्, ईरवाडै इरैन्दॊलि शॆय्यवुम्
उळैय लाम् इडैयिन् ऱियिव् वाननीर्, ऊऱ्ऱुञ् जॆय्दि उरैत्तिड वेण्डुङ्गाल्
मळैयुङ् गाऱ्ऱुम् पराशक्ति शॆय्हैकाण्, वाळ्ह ताय् ऍन्ऱु पाडुमॆन् वाणिये 4
शॊल्लिनुक् कॆळि दाहवुम् निन्ऱिडाळ्, शॊल्लै वेऱिडञ् जॆल्ल वळि विडाळ्
अल्लिनुक् कुट् पॆरुञ् जुडर् काण्बवर्, अन्नै शक्तियिन् मेनि नलङ् गण्डार्
कल्लिनुक्कुळ् अऱि वॊळि काणुङ्गाल्, काल वेळ्ळत्तिले निलै काणुङ्गाल्
पुल्लिनिल् वयिरप्पडं काणुङ्गाल्, पूतलत्तिल् पराशक्ति तोन्ऱुमे 5

शक्तिक् कूत्तु—20

राग— पियाग्

पल्लवि (टेक)

तहत् तहत् तहत् तहतह वॆन् ऱाडोमो ?— शिव
शक्ति शक्ति शक्ति यॆन्ऱु पाडोमो ? (तह)

शरणङ्गळ् (चरण)

अहत्तहत् तहत्तिनिले उळ् निन्ऱाळ्— अवळ्
अम्मै यम्मै ऍम्मै नाडु पॊय् वॆन्ऱाळ्

कहता है, सुखद राग में विचित्र कल्पना से भरकर, सर्वत्र आनन्द बहाते हुए उत्कृष्ट बननेवाली कविता रचो। २ मैं भी प्रेम के जोश के साथ वाणी की अगवानी करता हूँ, ताकि मेरी रचनाओं से देशवासी मंगल में रहें तथा उन्नति करें। पर जब कभी मैं गीत-विशेष सुख को स्थापित करने तथा स्वर में आनन्द भर देने के विचार के साथ प्रेम के जोश के साथ उसकी अगवानी करता हूँ, तब माता पराशक्ति अपना स्वर पहचनवा कर मेरी सारी कविता को अपने लिए माँगती है। ३ पानी के बरसने का रंग-ढंग देखता हूँ। आकाश काला बन जाता है, काली घटाएँ उमड़-घुमड़ आती हैं। रेखा-सी विद्युत् अकस्मात कौंध जाती है। गीली उदीची हवा जोर से शोर मचाती है। अन्तरिक्ष में स्थान न छोड़कर आकाश से पानी गिर रहा है। उस उत्फुल्ल-कारी समाचार को मैं अपनी कविता द्वारा सुनना चाहता हूँ। तब मेरी वाणी तो यही गायेगी कि 'रे ! ये बारिश तथा वायु पराशक्ति के ही कृत्य हैं। अतः हे माँ जियो' ! ४ वह न शब्द के लिए सुलभ ग्राह्य रहती है, न शब्द को दूसरी दिशा में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रेम-ताप के साथ कर रहा मैं भी वाणी का स्वागत।
मंगलमय मम कविताएँ हों और देश-जन हों उन्नत॥
पर जब किसी विशेष गीत के सुख को स्थापित करने को।
प्रेम-ताप से जब स्वागत करता स्वर में सुख भरने को॥
तब-तब माता पराशक्ति अपने स्वर को पहिचनवा कर।
अपने लिए माँगती है वह मेरी सब कविता मनहर॥ ३॥
नभ हो जाता काला, नभ में घिरतीं श्याम-घटाएँ हैं।
रेखाओं-सी चपल चमकतीं अकस्मात् चपलाएँ हैं॥
आर्द्र उत्तरी वायु ज़ोर से नभ में शोर मचाती है।
अन्तरिक्ष की घनी बदलियाँ जल-धारा बरसाती हैं॥
वर्षाऋतु का रंग-ढंग यह देख समोद सराह रहा।
कविता द्वारा हृदयोल्लासक वर्णन करना चाह रहा॥
'पराशक्ति के कृत्य वायु-वर्षा हैं', गायेगी वाणी।
वर्षा छवि छिटकानेवाली जय-जय माता कल्याणी॥ ४॥
शब्दों द्वारा सुलभ रूप से वह को जा सकती नहीं ग्रहण।
औ न शब्द का अन्य दिशा में होने देती परिवर्तन॥
अंधकार में देख सकेंगे जो जन ज्वलित महा ज्वाला।
वे ही माता का तन-सौष्ठव निरख सकेंगे छबिवाला॥
पत्थर में भी विमल बुद्धि का तेज देखना तुम सीखो।
काल-प्रवाह मध्य सुस्थिरता-भाव पेखना तुम सीखो॥
वज्रायुध के चमत्कार को जब तृण में पहिचानोगे।
पराशक्ति का दरस तभी भूतल पर लख मुद मानोगे॥ ५॥

शक्ति-नृत्य—२०

ताताथेई क्यों नहिं नाचें शक्ति-गीत भी गायें क्यों न?॥
पराशक्ति अन्तर में स्थित है, वह माता है, माता है।
झूठ सभी कर चुकी पराजित जो मेरे ढिग आता है॥
उचित रीति से कृपा करेगी वह मेरी माता हम पर।

जाने देती है। जो अँधेरे के मध्य बड़ी ज्वाला देख सकेंगे, वे ही माता के शरीर का सौष्ठव देख सकेंगे। प्रस्तर में बुद्धि का तेज देखना सीखो; काल के बहाव में स्थिरता देख सको, घास में वज्रायुध का चमत्कार पहचानो, तभी भूतल में पराशक्ति दिखायीदेगी। ५

शक्ति-नृत्य—२०

हम 'तकत् तकत् तकत् तक तक' क्यों न नाचेंगे? और शिवशक्ति शक्ति, शक्ति क्यों न गायेंगे? (टेक) अन्दर, अन्दर मध्य में स्थित है पराशक्ति। वह माँ है, माँ है। वह हमारे पास आनेवाले झूठों को पराजित कर चुकी है। उचित रीति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तहत्तह नमक्करुळ् पुरिवाळ् ताळौत्रे
शरणमॅन्रु वाळ्त् तिडुवोम् नामॅन्रे (तह) 1
पुहप्पुह पुह विन्बमडा पोदॅल्लाम्
पुरत्तिनिले तळ्ळिडुवाय् शूदॅल्लाम्
कुहैक्कु ळङ्गे यिरुक्कुदडा तो पोले— अदु
कुळन् दंयदन् तायडिक् कीळ् शेय्पोले (तह) 2
मिहैत् तहैप्पडु कळियिनिले मॅय्शोर— उळ्
वीरम् वन्बु शोर्वै वॅन्रु कॅतेर
शहत्ति निलुळ्ळ मनिदरॅल्लाम् नन्रु नन्रॅन— नाम
शदिरुडन्ते ताळम् इशै इरण्डु मौन्रॅन (तह) 3
इन्दिर नारुलहिनिले नल्लिन्बम्
इरुक्कु वॅन्बार् अदनै यिङ्गे कौण्डॅय्दि
मन्दिरम् पोल वेण्डुमडा शौल्लिन्बम्— नल्ल
मदमुरवे अमुदनिलै कण्डॅय्बित् (तह) 4

शक्ति—21

तुन्बमिलाद निलैये शक्ति तूक्क मिलाक् कण् विळिप्पे शक्ति
अन्बु कनिन्द कनिवे शक्ति आण्मै निरैन्द निरैवे शक्ति
इन्ब मुदर्न्द मुदिर्वे शक्ति अॅण्णत्तिरुक्कुम् अॅरिये शक्ति
मुन्बु निरकिन्र तौळिले शक्ति मुक्ति निलैयिन् मुडिवे शक्ति 1
शोम्बर् कॅडुक्कुम् तुणिवे शक्ति शौल्लिल् विळङ्गुम् शुडरे शक्ति
तीम् पळन् दन्निल् शुवैये शक्ति दॅय्वत्तै अॅण्णुम् निनैवे शक्ति
पाम्बै अडिक्कुम् पडैये शक्ति पाट्टिनिल् वन्द कळिये शक्ति
शाम्बरैप् पूशि मलैमिशै वाळुम् शङ्गरन् अन्बुत् तळ्ळे शक्ति 2

से वह हम पर करुणा करेंगी। हम यह कहकर उनकी स्तुति करें कि तुम्हारे चरण ही हमारे आश्रय हैं। (तक···) १ प्रवेश करते-करते सदा सुख ही सुख है। अरे! धोखा आदि सभी को उस ओर पटक दो। (हृदय रूपी गह्वर) में है। वह आग के समान रे! वह शिशु है। —माता के पैरों के पास रहनेवाले शिशु के समान। (तक···) २ आनन्दाधिक्य से यह शरीर निढाल हो जाय; तब अन्दर की वीरता (शक्ति) थकावट को दूर करके बढ़े; जग के सभी लोग 'शाबाश', 'शाबाश' कहें, तालमेल ठीक रहे। उस स्थिति में हम उचित पद-चाप के साथ (तक···) ३ लोग कहते हैं, इन्द्रलोक में सुख है। अरे! उसे यहाँ लाएँ। ऐसे मंत्र के समान शब्द का आनन्द होना चाहिए। हम बहुत मद-मत्त हों —ऐसे अमर भाव का अनुभव करते हुए हम। (तक···) ४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"चरण तुम्हारे हमें शरण दें" गाय यही स्तोत्र सुन्दर ॥
ताताथेई क्यों नहिं नाचें शक्ति-गीत भी गायें क्यों न ? ॥ १ ॥
हृदय-देश में जो प्रवेश करते वे सुख अनुभव करते।
छल-प्रपंच-धोखा तजकर सब प्राप्त महागौरव करते ॥
हृदय-गुफा में छिपा हुआ है वह प्रचंड अग्नि के समान।
माता के चरणों में रहनेवाले शिशु-सम सरल महान ॥
ताताथेई क्यों नहिं नाचें शक्ति-गीत भी गायें क्यों न ? ॥ २ ॥
अति-समुचित आनन्द-वेग से जब हो जाये शिथिल शरीर।
तब समस्त श्रम हर अन्तर की बढ़े वीरता शक्ति गभीर ॥
करें वाह-वाही जग के जन ठीक-ठीक हों सारे ताल।
उस स्थिति में हम नृत्य करें नव दिखा उचित चरणों की चाल ॥
ताताथेई क्यों नहिं नाचें शक्ति-गीत भी गायें क्यों न ? ॥ ३ ॥
इन्द्रलोक में अतिशय सुख है ऐसा कहते हैं सब जन।
उस सुख को भूपर ले आयें ऐसा मंत्र पढ़ो पावन ॥
होकर अति मद-मत्त अमरता के भावों का अनुभव कर।
ताताथेई करके नाचें गायें मधुर गीत सुन्दर ॥
ताताथेई क्यों नहिं नाचें शक्ति-गीत भी गायें क्यों न ? ॥ ४ ॥

शक्ति—२१

शक्ति दुःख से रहित दशा है, शक्ति प्रमादहीन जागृति।
पौरुष की पूर्णता शक्ति है, शक्ति प्रेम की है परिणति ॥
सुख की परिणति शक्ति, शक्ति है चिन्तन की जलती ज्वाला।
शक्ति मुक्ति की अन्तिम स्थिति है, शक्ति कर्म सम्मुख-वाला ॥ १ ॥
शक्ति अलसता-भंजक साहस, शक्ति शब्द की है ज्वाला।
तेजस्वी का तेज शक्ति है, शक्ति स्वाद मधु-फल-वाला ॥
देवगणों का स्मरण शक्ति है, शक्ति सर्वघातक हथियार।
है मादक संगीत शक्ति, भस्माभिभूत शंकर का प्यार ॥ २ ॥

शक्ति—२१

[इसमें शक्ति के विविध रूपों की व्याख्या की जा रही है। देवी शक्ति कहाँ-कहाँ किस रूप में प्रकट होती— उसका भी विवरण इसमें है।]

दुःखरहित स्थिति ही शक्ति है। अनिद्र जागरण ही शक्ति है। वैसे ही प्रेम की पक्वावस्था, पौरुष-भरा पूर्णत्व, सुख की परिपक्वावस्था, चिन्तन की ज्वाला प्रस्तुत कार्य और मुक्ति की अन्तिम स्थिति शक्ति है। १ आलस्य-भंजक साहस, शब्दों में प्रकट ज्वालामयी तेज, मधुर फल का स्वाद, देव-स्मरण, सर्प-प्रताड़क हथियार, संगीत से उत्पन्न मस्ती, और भभूत धारण करके पर्वत पर वास करनेवाले शंकरदेव की प्रेम ज्वाला ही (प्रेम का पात्र तथा उज्ज्वला पार्वती) शक्ति है। २ जीवन को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाळ्वु पॅरुक्कुम् मदिये शक्ति मानिलङ् गाक्कुम् मदिये शक्ति
ताळ्वु तडुक्कुञ् जदिरे शक्ति शञ्जलम् नीक्कुम् तवमे शक्ति
वीळ्वु तडुक्कुम् विऱले शक्ति विण्णै यळक्कुम् विरिवे शक्ति
ऊळ्वितै नीक्कुम् उयर्वे शक्ति उळ्ळत्तॊळिरुम् विळक्के शक्ति 3

वैयम् मुळुदुम्—22

वैयम् मुळुदुम् पडैत्तळिक्किन्ऱ, महा शक्ति तन् पुहळ् वाळ्त्तुहिन्ऱोम्
शॅय्युम् विनैहळ् अनैत्तिलुमे वॅऱ्ऱि, शेर्न्दिड नल्लरुळ् शॅय्ह वॅन्ऱे 1
पूदङ्गळ् ऐन्दिल् इरुन्दङ्गुङ् गण्णिऱ्, पुलप्पडुम् शक्तियैप् पोर्ऱुहिन्ऱोम्
वेदङ्गळ् शॊन्न पडिक्कु पनिदरै, मेन्मैयुरच् चॅय्दल् वेण्डु मॅन्ऱे 2
वेहम् कवर्च्चि मुदलिय पल्वितै, मेविडुम् शक्तियै मेवु हिन्ऱोम्
एह निलैयिल् इरुक्कुम् अमिर् दत्तै, याङ्गळ् अऱिन्दिड वेण्डुमॅन्ऱे 3
उयिरॅनत् तोन्ऱि उणवु कॊण् डेवळर्न्, दोङ्गिडुम् शक्तियै ओदुहिन्ऱोम्
पयिरिनैक् काक्कुम् मळैयॅन अङ्गळैप्, पालित्तु नित्तम् वळर्क्क वॅन्ऱे 4
शित्तत्ति लेनिन्ऱु शेर्व दुणरुम्, शिव शक्ति तन् पुहळ् शॅप्पु हिन्ऱोम्
इत्तरै मीदिनिल् इन्बङ्गळ् यावुम्, अॅमक्कुत् तॅरिन्दिडल् वेण्डुमॅन्ऱे 5
मारु दॅलन्ऱिप् पराशक्ति तन्पुहळ्, वैयमिशै नित्तम् पाडुहिन्ऱोम्
नूरु वयदु पुहळ्डन् वाळ्न्दुयर्, नोक्कङ्गळ् पॅऱ्ऱिड वेण्डुमॅन्ऱे 6

विकसित करनेवाली मति, महान धरती के पालन का मति-चातुर्य, पतन से बचा लेने की सामर्थ्य, चंचलता-निवारक तपस्या, गिरावट को रोकनेवाली शक्ति, आकाश माप सकनेवाला (मन का) विस्तार, प्रारब्ध-निवारक उत्कर्ष तथा आत्मा में जलनेवाला दीप ही शक्ति है। ३

सारे विश्व को (अर्ध पद्य)—२२

सारे विश्व को रचकर उसका पालने करनेवाली महाशक्ति की महिमा हम गाते हैं और प्रार्थना करते हैं कि हमारे सभी कार्यों में हमें विजय मिले। १ हम पांचों भूतों में रहनेवाली और हर स्थान में दृष्टिगोचर होनेवाली, उस शक्ति को नमस्कार करते हैं, ताकि वेद के कहे अनुसार वह मनुष्य को उत्कर्ष (-मार्ग) पर ला रखे। २ हम वेग, आकर्षण आदि विविध क्रियाओं से मिली शक्ति का स्वीकार करते हैं, ताकि हम एक सम-स्थिति में रहनेवाले अमृत को जान सकें। ३ प्राणों के रूप में जन्म लेकर आहार के साथ बढ़नेवाली शक्ति को हम नमस्कार करते हैं, ताकि शस्य को पालनेवाली वर्षा के समान, वह हमारा पालन करे और हमें बढ़ावे। ४ चित्त में विद्यमान होकर जो शक्ति होनी को पहचानती है, उस शक्ति को हम नमस्कार करते हैं, ताकि हमें इस धरती के सारे सुखों का परिचय मिल जाय। ५ बिना घटने-बढ़ने के हम दुनिया में पराशक्ति की महिमा हर रोज (घड़ी) गाते हैं, जिससे हम सौ वर्ष जिएँ और उच्चातिउच्च आदर्श को अपना लें। ६ हम 'ॐ शक्ति, ॐ शक्ति, ॐ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मानव-जीवन विकसित करनेवाली मति कहलाई शक्ति।
इस विशाल वसुधा के पालन की अपार चतुराई शक्ति॥
बचा पतन से उन्नत करने की समर्थता समझो शक्ति।
चंचलता-हारिणी तपस्या की दृढ़ क्षमता समझो शक्ति॥
शक्ति गिरावट से मानव को सदा रोकती आई है।
नभ-विस्तार नाप ले ऐसी बुद्धि, शक्ति कहलाई है॥
जो प्रारब्ध निवारण करती ऐसी क्षमता समझो शक्ति।
आत्मा में आभासित दीपक की उज्ज्वलता समझो शक्ति॥ ३॥

सारे विश्व को—२२

जो सम्पूर्ण विश्व को रचकर करती है उसका पालन।
ऐसी महाशक्ति की महिमा का हम करते हैं गायन॥
निर्मल मन से यही प्रार्थना करते हैं हम सब सविनय।
इस जीवन में सब कार्यों में हमें सर्वदा मिले विजय॥ १॥

जो सर्वत्र दिखाई पड़ती, पंचभूत में संस्थित है।
उसी शक्ति के लिए हमारा नमस्कार यह अर्पित है॥
वेदों के बतलाये धर्मों के पालन में नर रत हों।
जिससे सभी नरों के जीवन अति महान हों उन्नत हों॥ २॥

वेग और आकर्षण आदिक सभी क्रियाओं का मेलन।
है जिस महाशक्ति में उसका हम सब करते हैं सेवन॥
जिससे हम सब सदा एक ही स्थिति में जो रहनेवाला।
पहिचानें पीयूष मधुर वह पियें अमरता का प्याला॥ ३॥

प्राणों का स्वरूप बनकर के जन्मा है जिसका जीवन।
साथ-साथ आहार-क्रिया के होता है जिसका वर्धन॥
अन्न-प्रपालक वृष्टि-सदृश ही करते हम उसका वंदन।
जिससे सदा करे वह मेरा लालन-पालन-संवर्धन॥ ४॥

जो जन-जन के मन-मंदिर में विद्यमान रहती मतिमान।
भवितव्यता और होनी की रखती है पूरी पहचान॥
उस महानतम महाशक्ति का हम सब करते हैं वन्दन।
इस जग के सम्पूर्ण सुखों से जिससे हो परिचय पावन॥ ५॥

शक्ति-महत्ता नहीं घटाते और न उसे बढ़ाते हैं।
पराशक्ति की महिमा को हम समुद सर्वदा गाते हैं॥
जिससे हम सब सौ वर्षों का सुखद दीर्घ जीवन पायें।
और उच्चतम आदर्शों को निज जीवन में अपनायें॥ ६॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ओम् शक्ति ओम् शक्ति, ओम् शक्ति ओम् शक्ति
ओम् शक्ति अॅन्रुरै शॅय्दिडुवोम्
ओम् शक्ति अॅन्बवर् उण्मै कण्डार् शुडर्
ऑण्मै कॉण्डार् उयिर् वण्मै कॉण्डार् 7

शक्ति विळक्कम्—23

आदिप् परम् बॉरुळिन् ऊक्कम्— अदै, अन्नै अॅनप् पणिदल् आक्कम्
शुदिल्लै काणुमिन्द नाट्टीर् !— मऱ्ऱत्, तॉल्लै मदङ्गळ् शॅय्युम् तूक्कम् 1
मूलॅप् पळम् बॉरुळिन् नाट्टम्— इन्द, मून्ऱु पुविमुदन् आट्टम्
कालप् पॅरुङ्गळत्तिन् मीदे— अङ्गळ्, काळि नडमुलहक् कूट्टम् 2
कालै इळञ्चॅयिलिन् काट्चि— अवळ्, कण्णॉळि काट्टुहिन्ऱ माट्चि
नील विशुम्बिनिडै इरविल्— शुडर्, नेमि यनैत्तुमवळ् आट्चि 3
तारणनैन्ऱु पाळ्वेदम्— शॉल्लुम्, नायहन् शक्ति तिरुप्पादम्
शेरत्तवम् पुरिन्दु पॅऱुवार्— इङ्गु, शॅल्वम् अऱिवु शिव बोदम् 4
आ द शिवनुडैय शक्ति— अङ्गळ्, अन्नै यरुळ् पॅरुदल् मुक्ति
मीदि उयिरिरुक्कुम् बोदे— अदै, वॅल्लल् शुहत्तिनुक्कु युक्ति 5
पण्डै विदियुडैय देवि— वॅळ्ळैप्, पारदि यन्नै यरुळ् मेवि
कण्ड पॉरुळ् विळक्कुम् नूल्हळ्— पल, कऱ्ऱलिल् लादवनोर् पावि 6
मूर्त्तिहळ् मून्ऱु पॉरुळ् ऑन्ऱु— अन्द, मूलप् पॉरुळ् ऑळियिन् कुन्ऱु
नेर्त्ति तिहळुम् अन्द ऑळियै— अॅन्द, नेरमुम् पोऱ्ऱु शक्ति अॅन्ऱु 7

शक्ति, ॐ शक्ति, ॐ शक्ति (मन्त्र) का उच्चारण करते हैं, क्योंकि जो ॐ शक्ति का उच्चारण करते हैं, वे सत्यदर्शी हो जाते हैं; वे उज्ज्वल बन जाते हैं तथा उनका जीवन सर्वसमृद्ध हो जाता है। ७

शक्ति-विवरण—२३

आदि परमवस्तु की प्रेरणा को माता कहकर नमस्कार करना उत्कर्ष (-प्रब) है। हे इस देश के वासियो ! इसमें कोई धोखा नहीं है, देख लें। जो अन्य हानिकारी मत हैं, वे निद्रा (मोह) में डाल देते हैं। १ वह पुरातन तथा मूल वस्तु (पराशक्ति) की कृपा है, जिससे ये तीनों लोक चलते हैं। काल के बड़े आँगन में हमारी काली का नृत्य ही लोकों का जमघट है। २ सबेरे ही बालसूर्य का दृश्य काली की आँख की ज्योति की शान है। नीले आकाश में सभी ज्योतिर्मय गोलों (लोकों) पर उसका ही शासन (चढ़ाया) है। ३ जिनको पुराण, वेद 'नारायण' कहते हैं, उनकी शक्ति उनके श्रीचरण हैं। जो उनसे मिलने के लिए तपस्या करेंगे, उन्हें धर्म, ज्ञान तथा शिवानुभव प्राप्त हो जाता है। ४ शिव की आदिशक्ति हमारी माता पराशक्ति है। उनका अनुग्रह पाना ही मुक्ति है। प्राण जब तक शेष हैं, तभी उसे जीत लेना (जीवन-मुक्त दशा पाना), सुख की प्राप्ति की युक्ति है। ५ जो पुरातन विधाता देव की देवी श्वेत भारती की कृपा प्राप्त करके अनेक विविध अर्थबोधक ग्रंथों को नहीं पढ़ पाता, वह पापी है। ६ मूर्तियाँ तीन हैं, पर वस्तु एक ही है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय', हम सब करते उच्चारण।
ॐ शक्ति: के उच्चारण से बनें सत्यदर्शी सब जन॥
ॐ शक्ति के उच्चारण से वे उज्ज्वल बन जाते हैं।
उनके जीवन सुख-समृद्धि-मय और सफल बन जाते हैं॥ ७॥

शक्ति-विवरण—२३

मानो आदिम परमतत्त्व की प्रबल प्रेरणा का माता।
उसके चरणों का प्रणाम है सब उत्कर्षों का दाता॥
कोई भी छल-कपट न इसमें और न धोखा तुम जानो।
अन्य सभी मत संकट-दायक, मोह-नींद-कारक मानो॥ १॥
सदा पुरातन मूलतत्त्व की पराशक्ति की महिमा से।
तीनों लोकों का संचालन होता (अतिशय गरिमा) से॥
महाकाल के जग-प्रांगण में महाकालिका का नर्तन।
लोगों का जमघट कहलाता, (कहलाता युग-परिवर्तन)॥ २॥
प्रात-समय मुसकानेवाले रवि की किरणों की लाली।
समझो उसको महाशक्ति की शान सुनयनों की लाली॥
नील गगन में भ्रमण कर रहे जो नव ज्योतिर्मय ग्रह-गण।
संस्थापित उन सबके अपर महाशक्ति का ही शासन॥ ३॥
वेद-पुराण-शास्त्र सब कहते हैं जिनको श्रीनारायण।
उनकी सबल शक्ति समझो तुम महाशक्ति के चारु चरण॥
उन चरणों की कृपा-प्राप्ति-हित जो जन करते तप-साधन।
शिव का बोध उन्हें हो जाता, मिलता विमल ज्ञान, बहुधन॥ ४॥
आदिम शिव की महाशक्ति ही पराशक्ति मेरी माता।
उसके सदय अनुग्रह से ही मुक्ति सभी जग है पाता॥
इस जीवन में ही पा लेना जीते जी ही जीवनमुक्ति।
अति-अपार-आनन्द-प्राप्ति की बतलाई जाती है युक्ति॥ ५॥
जो अत्यन्त पुरातन विधि की कहलाती देवी सुन्दर।
उस सितवर्णी सरस्वती की करुणामयी कृपा पाकर॥
विविध-अर्थ-बोधक ग्रंथों को जो न कभी पढ़ पाता है।
पुण्यहीन वह मानव जग में अति पापी कहलाता है॥ ६॥
(सरस्वती, लक्ष्मी, काली या ब्रह्मा, विष्णु, महेश कहो)।
मूर्ति तीन हैं, तत्त्व एक है, इसे सदा जानते रहो॥
वह नव-मौलिक-तत्त्व-मनोरम चिर प्रकाश का गिरिवर है।
उस प्रकाश को शक्ति मानकर नमन करो तो सुखकर है॥ ७॥

वह मौलिक वस्तु प्रकाश का गिरि है। उस ज्योति को हमेशा 'शक्ति' मानकर नमस्कार करो। ७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शक्तिक्कु आत्म समर्प्पणम्—24

राग— बूपाळम्; ताळ चतुस्र एकम्

कैयैच् चक्ति तऩक्के करुवि याक्कु— अदु
शादनैहळ् याविऩैयुम् कूडुम्— कैयैच्
शचक्ति तऩक्के करुवि याक्कु— अदु
शक्ति युऱ्ऱुक् कल्लिऩैयऱ् जाडुम् 1

कण्णैच् चक्ति तऩक्के करुवियाक्कु— अदु
शक्ति वळियिऩै अदु काणुम्— कण्णैच्
चक्ति तऩक्के करुवियाक्कु— अदु
सत्तियमुम् नल्लरुळुम् पूणुम् 2

शैवि शक्ति तऩक्के करुवि याक्कु— शिव
शक्ति शौलुम् मौळियदु केट्कुम्— शैवि
शक्ति तऩक्के करुवि याक्कु— अदु
शक्ति तिरुप् पाडलिऩै वेट्कुम् 3

वाय् शक्ति तऩक्के करुवियाक्कु— शिव
शक्ति पुहळिऩैयदु मुळङ्गुम्— वाय्
शक्ति तऩक्के करुवि याक्कु— अदु
शक्ति नॆऱि याविऩैयुम् वळङ्गुम् 4

शिव शक्ति तऩै नाशि नित्तम् मुहरुम्— अवैच्
चक्ति तऩक्के करुवि याक्कु— शिव
शक्ति तिरुच् चुवैयिऩै नुहरुम्— शिव
शक्ति तऩक्के ऍमदु नाक्कु 5

मॆय्यैच् चक्ति तऩक्के करुवि याक्कु— शिव
शक्ति तरुन् दिऱऩदि लेरुम्— मॆय्यैच्
चक्ति तऩक्के करुवि याक्कु— अदु
शादलऱ्ऱ वळि यिऩैत् तेरुम् 6

कण्डम् शक्ति तऩक्के करुवि याक्कु— अदु
शन्ददमुम् नल्लमुदैप् पाडुम्— कण्डम्
शक्ति तऩक्के करुवि याक्कु— अदु
शक्ति युडऩ् ऍऩ्ऱुम् उऱवाडुम् 7

तोळ् शक्ति तऩक्के करुवि याक्कु— अदु
तारणियुम् मेलुलहुन् दाङ्गुम्— तोळ्
शक्ति तऩक्के करुवियाक्कु— अदु
शक्ति पॆऱ्ऱु मेरुवॆऩ ओङ्गुम् 8

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शक्ति के सामने आत्म-समर्पण—२४

हाथ बना दो शक्ति-उपकरण, साधन सभी जुटायेगा।
उसे शक्ति का करण बना दो, पत्थर तोड़ दिखायेगा॥ १॥
शक्ति उपकरण नयन बना दो, शक्ति-मार्ग लख पायेगा।
शक्ति अंग बन शक्ति-अनुग्रह से मंडित हो जायेगा॥ २॥
कर्ण शक्ति का साधन होवे सुन लेगा शिव-शक्ति-वचन।
सदा शक्ति के दिव्य गीत सुन वह होगा अति प्रमुदित मन॥ ३॥
आनन बने शक्ति का साधन करे शक्ति-महिमा घोषित।
शक्ति-प्राप्ति के सब मार्गों से कर देगा तुमको परिचित॥ ४॥
यदि नासिका-शक्ति का साधन, सूँघे शक्ति-सुगन्ध-सुघर।
जिह्वा बने शक्ति का साधन चखे शक्ति का स्वाद मधुर॥ ५॥
तन को करो शक्ति का साधन मिले शक्ति की सुन्दरता।
अमर बनानेवाली खोजेगा अवश्य अमरत्व-लता॥ ६॥
करो कंठ को शक्ति-उपकरण अमर-गीत वह गायेगा।
सदा शक्ति के साथ मनोरम निज सम्बन्ध बनायेगा॥ ७॥
करो स्कन्ध को शक्ति-उपकरण झेलेगा भू-नभ का भार।
उच्च मेरु-पर्वत-समान ही होगा स्वतः समुच्च अपार॥ ८॥

शक्ति के सामने आत्मसमर्पण—२४

हाथ को— शक्ति का ही उपकरण बना दो। वह सभी साधनों को जुटा देगा। उसे शक्ति का ही साधन बना दो। वह सशक्त बनकर पत्थर को भी तोड़ देगा। १ नेत्र को— शक्ति का ही उपकरण बना दो। वह शक्ति का मार्ग देख सकेगा। उस शक्ति का ही अंग बना दो। वह सत्य तथा शुभ अनुग्रह से मंडित हो जायेगा। २ कान को— शक्ति का ही उपकरण बना दो। वह शिवशक्ति का वचन सुनेगा। उसे शक्ति का साधन बना दो; वह शक्ति के दिव्य गीतों को सुनने को आतुर रहेगा। ३ मुख को— शक्ति का ही साधन बना दो। वह शिवशक्ति की महिमा को घोषित करेगा :— मुख को शक्ति का ही उपकरण बना दो। वह शक्ति-प्राप्ति के सारे मार्ग बता देगा। ४ शिवशक्ति को नासिका रोज सूँघे। उसे शक्ति का ही साधन बना दो। हमारी जीभ शिवशक्ति की ही है। वह शक्ति का स्वाद चखेगी। ५ शरीर को शक्ति का ही उपकरण बना दो। शिवशक्ति द्वारा प्रदत्त रंग (सामर्थ्य) उस पर खूब चढ़ेगा। शरीर को शक्ति का साधन बना दो। वह अमर रहने का उपाय ढूँढ़ लेगा। ६ कंठ को शक्ति का ही उपकरण बना दो। वह सतत अमरता का गाना)। गायगा कंठ को शक्ति का ही साधन बना दो। वह हमेशा शक्ति के साथ नाता जोड़ लेगा। ७ कन्धे को शक्ति का ही उपकरण बना दो। वह धरती तथा ऊपरी लोक को झेल लेगा। कन्धे को शक्ति का ही साधन बना दो। वह शक्ति पाकर मेरु के समान बनेगा। ८ हृदय (छाती) को शक्ति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नॆञ्जम् शक्ति तन्नक्के करुवि याक्कु— अदु
शक्ति युऱ् नित्तम् विरिवाहुम्— नॆञ्जम्
शक्ति तन्नक्के करुवि याक्कु— अदॆत्
ताक्क वरुम् वाळॊदुङ्गिप् पोहुम् 9

शिव शक्ति तन्नक्के ऍमदु वयिऱु— अदु
शाम्बरैयुम् नल्लुण वाक्कुम्— शिव
शक्ति तन्नक्के ऍमदु वयिऱु— अदु
शक्ति पॆऱ् उडलिन्नॆक् काक्कुम् 10

इडॆ शक्ति तन्नक्के करुवि याक्कु— नल्ल
शक्तियुळ्ळ सन्ददिहळ् तोन्ऱुम्— इडॆ
शक्ति तन्नक्के करुवियाक्कु— निन्ऱन्
शादि मुऱ्ऱुम् नल्लऱत्तिल् ऊन्ऱुम् 11

काल् शक्ति तन्नक्के करुवि याक्कु— अदु
शाडि यॆळु कडलैयुन् दावुम्— काल्
शक्ति तन्नक्के करुवि याक्कु— अदु
शञ्जल मिल्लाम लॆङ्गुम् मेवुम् 12

मन्नम् शक्ति तन्नक्के करुवियाक्कु— अदु
शञ्जलङ्गळ् तोर्न्दॊरुमै कूडुम्— मन्नम्
शक्ति तन्नक्के करुवि याक्कु— अदु
शात्तु विहत् तन्मैयिन्नैच् चूडुम् 13

मन्नम् शक्ति तन्नक्के करुवियाक्कु— अदु
शक्ति यऱ्ऱ शिन्दन्नैहळ् तीरुम्— मन्नम्
शक्ति तन्नक्के करुवि याक्कु— अदिल्
शारुम् नल्ल उऱुदियुम् शीरुम् 14

मन्नम् शक्ति तन्नक्के करुवि याक्कु अदु
शक्ति शक्ति शक्ति यॆन्ऱु पेशुम्— मन्नम्
शक्ति तन्नक्के करुवि याक्कु— अदिल्
शार्न् दिरुक्कुम् नल्लुऱवुम् तेशुम् 15

मन्नम् शक्ति तन्नक्के करुवि याक्कु— अदु
शक्ति नुट्पम् याविन्नैयुम् नाडुम्— मन्नम्
शक्ति तन्नक्के करुवि याक्कु— अदु
शक्ति शक्ति यॆन्ऱु कुदित् ताडुम् 16

मन्नम् शक्ति तन्नक्के करुवि याक्कु— अदु
शक्तियिन्नै ऍत्तिशैयुम् शेर्क्कुम्— मन्नम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करो हृदय को शक्ति-उपकरण हो सशक्त, दृढ़ और विशाल।
बने ढाल-सा दृढ़, प्रहार से भी टूटे कठोर करवाल ॥ ९ ॥
करो उदर को शक्ति-उपकरण बने राख भी उसको दाख।
तृप्ति-पुष्टि देकर शरीर की रक्षा करे बचाये साख ॥ १० ॥
कटि को करो शक्ति का साधन होंगे पुत्र महा-बलवान।
धर्म-धुरंधर जाति बनेगी, (होगी जग में कीर्ति महान) ॥ ११ ॥
पग को करो शक्ति का साधन लाँघेगा सातों सागर।
गति होगी अबाध बिचरेगा जल-थल-कानन-गिरि-गह्वर ॥ १२ ॥
मन को करो शक्ति का साधन दूर सभी होंगे संशय।
एकाग्रता मिलेगी, होगा सात्विक भावों का समुदय ॥ १३ ॥
मन को करो शक्ति का साधन होंगे नहीं अशक्त विचार।
सभी श्रेष्ठता के गुण होंगे, दृढ़ता का होगा संचार ॥ १४ ॥
मन को करो शक्ति का साधन जपे शक्ति का पावन नाम।
सत्संबंध मिलेंगे उसको होगा तेजपूर्ण द्युति-धाम ॥ १५ ॥
मन को करो शक्ति का साधन खोजेगा वह शक्ति-रहस्य।
शक्ति-शक्ति कह मस्त रहेगा, शक्ति-जाप का बने सदस्य ॥ १६ ॥
मन को करो शक्ति का साधन, अमित शक्ति पा जायेगा।
अति-विशाल-गिरि भी उखाड़कर गेंद-समान उठायेगा ॥ १७ ॥

का ही उपकरण बना दो। वह शक्ति के लगते विशाल बन जायेगा। छाती को शक्ति का साधन बना लो; उस पर आघात करने के लिए आनेवाली तलवार हट जायगी। ९ शिवशक्ति के लिए ही हमारा पेट है। वह राख को भी अच्छी खाद्य बना देगा। शिवशक्ति के लिए ही हमारा पेट है। वह शक्ति पाकर शरीर की रक्षा करेगा। १० कटि को शक्ति का ही उपकरण बना लो। उससे अच्छी ताक़तवर सन्तानें पैदा होंगी। कटि को शक्ति का साधन बना दो। तुम्हारी जाति ही श्रेष्ठ धर्म में स्थिर बनेगी। ११ पैर को शक्ति का ही अंग बना दो। वह सातों समुद्रों को भी लाँघ जायगा। पैर को शक्ति का साधन बना दो। वह बिना हिचक के सर्वत्र जायगा। १२ मन को शक्ति का ही अंग बना दो। (मन की) दुबिधा दूर हो जाएगी तथा एकाग्रता आ जायगी। मन को शक्ति का ही उपकरण बना दो। वह सात्विक भाव को अपना श्रृंगार बना लेगा। १३ मन को शक्ति का ही साधन बना दो। उसमें अशक्त विचार नहीं रहेंगे। मन को शक्ति का ही साधन बना दो। उसमें दृढ़ता और श्रेष्ठता आ जायगी। १४ मन को शक्ति का ही उपकरण बना दो। वह शक्ति का ही नाम लेगा — 'शक्ति', 'शक्ति', 'शक्ति' कहेगा। मन को शक्ति का ही उपकरण बना दो। उसमें अच्छे नाते तथा तेज घुले-मिले रहेंगे। १५ मन को शक्ति का ही उपकरण बना दो। वह शक्ति-सम्बन्धी सारा रहस्य ढूँढ़ लेगा। मन को शक्ति का ही उपकरण बना दो, वह 'शक्ति'-'शक्ति' कहता नाचेगा (शक्ति-उपासना में मस्त रहेगा)। १६ मन को शक्ति का ही साधन बना दो। वह हर दिशा से शक्ति को प्राप्त कर लेगा। मन को शक्ति का उपकरण बना दो। वह चाहे तो महान पर्वत को भी उत्पाटित कर देगा। १७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शक्ति तनक्के करुवि याक्कु— अदु
तान् विरुम्बिल् भामलैयैप् पेर्क्कुम् 17
मनम् शक्ति तनक्के करुवि याक्कु— अदु
शन्ददमुम् शक्ति तनैच् चूळुम्— मनम्
शक्ति तनक्के करुवि याक्कु— अदिल्
शाबु पॅरुम् तीविनैयुम् ऊळुम् 18
मनम् शक्ति तनक्के उरिमै याक्कु— अॅदैत्
तान् विरुम्बिनालुम् वन्दु शारुम्— मनम्
शक्ति तनक्के उरिमैयाक्कु— उडल्
तन्नि लुयर् शक्ति वन्दु शेरुम् 19
मनम् शक्ति तनक्के करुवि याक्कु— इन्दत्
तारणियिल् नूरु वयदाहुम्— मनम्
शक्ति तनक्के करुवि याक्कु— उन्नैच्
चार वन्द नोयळिन्दु पोहुम् 20
मनम् शक्ति तनक्के करुवि याक्कु— तोळ्
शक्ति पॅऱ्ऱु नल्ल तॉळिल् शॅय्युम्— मनम्
शक्ति तनक्के करुवि याक्कु— अॅङ्गुम्
शक्ति यरुळ् मारि वन्दु पॅय्युम् 21
मनम् शक्ति तनक्के करुवि याक्कु— शिव
शक्ति नडैयावुम् नन्गुपळहुम्-- मनम्
शक्ति तनक्के करुवि याक्कु— मुहम्
शार्न्दिरुक्कुम् नल्लरुळुम् अळहुम् 22
मनम् शक्ति तनक्के करुवि याक्कु— उयर्
शात्तिरङ्गळ् यावुम् नन्गु तॅरियुम्— मनम्
शक्ति तनक्के करुवि याक्कु— नल्ल
शत्तिय विळक्कु नित्तम् ऍरियुम् 23
चित्तम् शक्ति तनक्के उरिमैयाक्कु— नल्ल
ताळनहै शन्दवहै काट्टुम्— चित्तम्
शक्ति तनक्के उरिमैयाक्कु— अदिल्
शारुम् नल्ल वार्त्तैहळुम् पाट्टुम् 24
चित्तम् शक्ति तनक्के उरिमैयाक्कु— अदु
शक्तियै यॅल्लोर्क्कु मुणर्वुरुत्तुम्— चित्तम्
शक्ति तनक्के उरिमै याक्कु— अदु
शक्ति पुहळ् तिक्कनैत्तुम् निरुत्तुम् 25

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मन को करो शक्ति का साधन सतत शक्ति होगी सञ्चय।
मिट जायें दुष्कर्म, दूर होगा दुर्भाग्य पूर्ण निश्चय ॥ १८ ॥
मन को करो शक्ति का साधन सभी मनोरथ होंगे पूर्ण।
शक्ति उदात्त मिलेगी तन को होगी सब निर्बलता चूर्ण ॥ १९ ॥
मन को करो शक्ति का साधन सौ वर्षों की आयु मिले।
तन के सभी रोग मिट जायें दिन-दिन दूना स्वास्थ्य खिले ॥ २० ॥
मन को करो शक्ति का साधन तो कन्धे होंगे बलवान।
सदा करेंगे सत्कर्मों को कृपा-वृष्टि होगी सुमहान ॥ २१ ॥
मन को करो शक्ति का साधन हों अभ्यस्त शक्ति-गतियाँ।
स्नेह और सौंदर्यभाव की दमकेंगी मुख पर द्युतियाँ ॥ २२ ॥
मन को करो शक्ति का साधन मिले उच्च-शास्त्रों का ज्ञान।
मन-मंदिर में सतत सत्य का दमकेगा दीपक द्युतिमान ॥ २३ ॥
करो चित्त को शक्ति-उपकरण, छन्दों, तालों का हो ज्ञान।
शब्दों के नव-रत्न मिलेंगे औ संगीत-सुधा रस-खान ॥ २४ ॥
करो चित्त को शक्ति-स्वत्व, वह शक्ति-तत्त्व उपजायेगा।
सदा शक्ति का उज्ज्वल यश वह सभी ओर फैलायेगा ॥ २५ ॥

मन को शक्ति का ही उपकरण बना दो। वह सतत शक्ति को घेरे रहेगा। मन को शक्ति का ही साधन बना दो। उसमें बुरे कर्म तथा प्रारब्ध जलकर मिट जायँगे। १८ मन को शक्ति का उपकरण बना दो। जो भी वह (मन) चाहे, वह (पदार्थ) आकर मिल जायगा। मन को शक्ति का ही उपकरण बना दो। शरीर में उदात्त शक्ति आकर बस जायगी। १९ मन को शक्ति का ही उपकरण बना दो। इस धरती पर (तुम्हें) सौ वर्ष की आयु मिल जायगी। मन को शक्ति का ही साधन बना दो। तुमसे लगने के लिए आनेवाला रोग मिट जायगा। २० मन को शक्ति का ही साधन बना दो। उससे तुम्हारे कन्धे बलवान बनेंगे और अच्छे-अच्छे कार्य करेंगे। मन को शक्ति का ही उपकरण बना दो। सब कहीं कृपा की वर्षा हो जायगी। २१ मन को शक्ति का ही अंग बना दो। तुम शिवशक्ति की सब गति-विधियों से अभ्यस्त हो जाओगे? मन को शक्ति का ही उपकरण बना दो। मुख पर स्नेह और सौंदर्य के भाव आकर इकट्ठा हो जाएँगे। २२ मन को शक्ति का ही साधन बना दो। सब उच्च शास्त्र स्वतः भली-भाँति विदित हो जायँगे। मन को शक्ति का ही उपकरण बना दो। सत्य का दीप सतत जलेगा। २३ चित्त को शक्ति का स्वत्व बना दो। तब श्रेष्ठ तालवर्ग तथा छन्दवर्ग का (कविता, संगीत आदि का) ज्ञान स्वतः (प्राप्त) हो जायगा। चित्त को शक्ति का स्वत्व बना दो। उसमें अच्छे शब्द तथा अच्छे संगीत भर जायँगे। २४ चित्त को शक्ति का स्वत्व बना दो। वह शक्ति की अनुभूति सबमें उत्पन्न कर देगा। चित्त को शक्ति के अधीन कर दो। वह शक्ति का यश सभी दिशाओं में स्थायी कर देगा। २५ चित्त को शक्ति के ही अधीन कर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चित्तम् शक्ति तन्नक्के उरिमैयाक्कु— अदु
शक्ति शक्ति यॆन्ऱु कुळलूदुम्— चित्तम्
शक्ति तन्नक्के उरिमै याक्कु— अदिल्
शार्वदिल्लै अच्च मुडन् शूदुम् 26
चित्तम् शक्ति तन्नक्के उरिमैयाक्कु— अदु
शक्ति यॆन्ऱु बोणं तन्निल् पेशुम्— शित्तम्
शक्ति तन्नक्के उरिमैयाक्कु— अदु
शक्ति परिमळ मिङ्गु वीशुम् 27
चित्तम् शक्ति तन्नक्के उरिमै याक्कु— अदु
शक्ति यॆन्ऱु ताळिट्टु मुळक्कुम्— शित्तम्
शक्ति तन्नक्के उरिमैयाक्कु— अदु
शञ्जलङ्गळ् याविनॆयुम् अळिक्कुम् 28
चित्तम् शक्ति तन्नक्के उरिमै याक्कु— अदु
शक्ति वन्दु कोट्टै कट्टि वाळुम्— शित्तम्
शक्ति तन्नक्के उरिमैयाक्कु अदु
शक्ति यरुट् चित्तिरत्तिल् आळुम् 29
मदि शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदु
शङ्गडङ्गळ् याविनॆयुम् उडैक्कुम्— मदि
शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अङ्गु
सत्तियमुम् नल्लऱमुम् किडैक्कुम् 30
मदि शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदु
शार वरुन् दीमैहळै विलक्कुम्— मदि
शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदु
शञ्जलप् पिशाशुहळैक् कलक्कुम् 31
मदि शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदु
शक्ति शॆय्युम् विन्दैहळैत् तेडम्— मदि
शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदु
शक्ति युऱै विडङ्गळै नाडुम् 32
मदि शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदु
तर्क्कमॆन्नुङ् गाट्टिलच्चम् नीक्कुम्— मदि
शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदिल्
तळ्ळि विडुम् पॊय्न्नॆऱियुम् तीङ्गुम् 33
मदि शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदिल्
शञ्जलत्तिन् तीय विरुळ् विलहुम्— मदि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शक्ति-अधीन चित्त को कर दो हों विनष्ट धोखे औ डर।
बजे शक्ति की मधुर बाँसुरी गूँज उठें उसके मधु-स्वर ॥ २६ ॥
करो शक्ति सम्पत्ति चित्त को, फैले सदा शक्ति-परिमल।
सरस शक्ति की वीणा का स्वर गूँज उठे सर्वत्र विमल ॥ २७ ॥
शक्ति-स्वत्व को चित्त सौंप दो, हों विनष्ट सारे संशय।
करे शक्ति की प्रबल घोषणा, सहित ताल औ' सुमधुर लय ॥ २८ ॥
शक्ति-स्वत्व दो चपल-चित्त को गढ़े शक्ति का दुर्ग विशाल।
शक्ति-भक्ति में वह निमग्न हो मिले शक्ति की कृपा रसाल ॥ २९ ॥
मति को करो शक्ति की सम्पति सब संकट मिट जायेंगे।
सत्य और सद्धर्म मिलेंगे (सुख-सागर लहरायेंगे) ॥ ३० ॥
मति को करो शक्ति की सम्पत्ति दुर्गुण सब मिट जायेंगे।
हो भयभीत, भूत संकट के, पल भर में भग जायेंगे ॥ ३१ ॥
मति को करो शक्ति की सम्पति शक्ति-वास-थल खोजेगी।
शक्ति-प्रसूत करामातों का अति विचित्र फल खोजेगी ॥ ३२ ॥
मति को शक्ति-स्वत्व दे दो तुम मिटे तर्क-वन का सब भय।
मिट जायें मिथ्या उपाय सब सभी हानियों का हो क्षय ॥ ३३ ॥
मति को शक्ति-स्वत्व दे दो तुम मिटे संशयों का घन-तम।
सबल शक्ति की ज्योति सामने जलती रहे सदा अनुपम ॥ ३४ ॥

दो। वह 'शक्ति', 'शक्ति', 'शक्ति', 'शक्ति' का स्वर बाँसुरी से निकालेगा। चित्त को शक्ति के ही अधीन कर दो-- उसमें डर और धोखा नहीं उत्पन्न होंगे। २६ चित्त को शक्ति की ही सम्पत्ति बना दो। वह शक्ति का स्वर वीणा में निकालेगा। चित्त को शक्ति का स्वत्व बना दो। वह शक्ति का परिमल सब जगह फैला देगा। २७ चित्त शक्ति के ही स्वत्व में छोड़ दो। वह शक्ति की ताल-लय के साथ घोषणा करेगा। चित्त को शक्ति का स्वत्व बना दो। वह सारे संशयों का नाश कर देगा। २८ चित्त का शक्ति ही हक बना दो। उससे शक्ति आकर उसे दुर्ग बनाकर जियेगी। चित्त को शक्ति के ही मातहत कर दो। वह शक्ति की कृपा के चित्रण में मग्न हो जायगा। २९ मति (को) शक्ति की ही सम्पत्ति बना दो। वह सारे संकटों को नष्ट कर देगी। मति को शक्ति के ही अधीन कर दो। उससे सत्य और सद्धर्म प्राप्त हो जायेंगे। ३० मति को शक्ति की सम्पत्ति बना दो। वह सारी बुराइयों को मिटा देगी। मति को शक्ति का ही स्वत्व बना दो। वह संशयों के भूतों को भयभीत कर भगा देगी। ३१ मति को शक्ति की सम्पत्ति बना दो। वह शक्ति की करामातों का अन्वेषण करेगी। मति को शक्ति के अधीन करा दो। वह शक्ति के निवासस्थानों को ढूँढ़ेगी। ३२ मति को शक्ति का ही स्वरूप बना दो। तब तर्क रूपी जंगल में डर नहीं रहेगा। (भ्रम या डर के बिना तर्कजालों को सुलझा सकेगी)। मति को शक्ति की सम्पत्ति बना दो। उससे मिथ्या मार्ग तथा हानियाँ दूर हो जायेंगी। ३३ मति को शक्ति के ही स्वत्व में डाल दो। उससे संशयों (चंचलताओं) का बुरा अन्धकार मिट जायगा। मति को शक्ति की ही सम्पति बना दो। उससे शक्ति की ज्योति हमेशा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदिल्
शक्ति यॊळि नित्तमु निन्ऱिलहुम् 34
मदि शक्ति तन्नक्के अडिमैयाक्कु— अदिल्
शार्वदिल्लै ऐयमॆन्नुम् पाम्बु— मदि
शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदिल्
तान् मुळैक्कुम् मुक्ति विदैक्काम्बु 35
मदि शक्ति तन्नक्के अडिमैयाक्कु— अदु
तारणियिल् अन्बु निलै नाट्टुम्— मदि
शक्ति तन्नक्के अडिमैयाक्कु— अदु
सर्व शिव शक्तियिन्नैक् काट्टुम् 36
मदि शक्ति तन्नक्के अडिमैयाक्कु — अदु
शक्ति तिरु वरुळिन्नैच् चेर्क्कुम्— मदि
शक्ति तन्नक्के अडिमै याक्कु— अदु
तामदप् पॊय्त् तीमैहळैप् पोक्कुम् 37
मदि शक्ति तन्नक्के अडिमै याक्कु— अदु
सत्तियत्तिन् वॆल् कॊडियै नाट्टुम्— मदि
शक्ति तन्नक्के अडिमैयाक्कु— अदु
ताक्क वरुम् पॊय्प्पुलियै ओट्टुम् 38
मदि शक्ति तन्नक्के अडिमैयाक्कु— अदु
सत्तिय नल् लिरवियैक् काट्टुम्— मदि
शक्ति तन्नक्के अडिमैयाक्कु— अदिल्
शार वरुम् पुयल्हळै वाट्टुम् 39
मदि शक्ति तन्नक्के अडिमै याक्कु— अदु
शक्ति विरदत्तै अॆन्ऱुम् पूणुम्— मदि
शक्ति विरदत्तै यॆन्ऱङ् गात्ताल्— शिव
शक्ति तरुम् इन्बमुम् नल्लूणुम् 40
मदि शक्ति तन्नक्के अडिमै याक्कु— तॆळि
दन्दमुदप् पॊय्हैयॆन्न ऒळिरुम्— मदि
शक्ति तन्नक्के अडिमैयाक्कु— अदु
शन्ददमुम् इन्बमुऱ मिळिरुम् 41
अहम् शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदु
तन्नै यॊरु शक्ति यॆन्ऱु तेरुम्— अहम्
शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदु
तामदमुम् आणवमुम् तीरुम् 42

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मति को शक्ति-स्वत्व दे दो तुम होगा संशय-सर्प विनष्ट।
हो प्रस्फुटित मुक्ति का अंकुर शक्ति सबल के बल पर स्पष्ट ॥ ३५ ॥
शक्ति-स्वत्व दे दो मति को तुम दे शिव-शक्ति दिव्य-दर्शन।
इस भूतल पर प्रेम राज्य का होगा सुंदर संस्थापन ॥ ३६ ॥
मति को करो शक्ति की दासी मिले शक्ति की कृपा अपार।
हो झूठी हानियाँ दूर जो तामस गुण के सभी विकार ॥ ३७ ॥
मति को करो शक्ति की दासी काम सभी बन जायेगा।
सत्य-पताका फहरायेगी झूठ-व्याघ्र भग जायेगा ॥ ३८ ॥
मति को करो शक्ति का सेवक सत्य-सूर्य उग आयेगा।
मति के भीषण झंझावातों को बलहीन बनायेगा ॥ ३९ ॥
मति को करो शक्ति की दासी शक्ति-व्रती बन जायेगी।
सबल शक्ति की विमल भक्ति के सुख का स्वाद चखायेगी ॥ ४० ॥
मति को करो शक्ति का सेवक सतत सुखी हो जायेगी।
सुधा-सरोवर के समान शोभायमान हो जायेगी ॥ ४१ ॥
करो शक्ति-सम्पत्ति 'अहं' को, शक्ति स्वयं बन जायेगा।
शक्ति-कृपा से मन से तामस-अहंकार मिट जायेगा ॥ ४२ ॥

सामने प्रकाशमान रहेगी। ३४ मति को शक्ति का ही स्वत्व बना दो। उसमें संशय रूपी सर्प आकर नहीं रहेगा। मति को शक्ति की सम्पत्ति बना दो। उसमें से मुक्ति का अंकुर फूटेगा। ३५ मति को शक्ति के ही अधिकार में छोड़ दो। वह धरणी पर प्रेम को स्थापित कर देगा। मति को शक्ति की ही सम्पत्ति बना दो। वह (मति या शक्ति) सर्व-शिव-शक्ति को दरसा देगी। ३६ मति को शक्ति की ही दासी बना दो। वह शक्ति का अनुग्रह प्राप्त कर देगी। मति को शक्ति के अधीन कर दो। उससे तमोगुण की मिथ्या हानियाँ दूर हो जायँगी। ३७ मति को शक्ति की दासी बना दो। वह सत्य की विजय-पताका को गाड़ देगी। मति को शक्ति की ही दासी बना दो। वह आघात करनेवाले असत्यस्वरूप व्याघ्र को भगा देगी। ३८ मति को शक्ति की दासी बना दो। वह सत्य (रूपी) रवि को दरसायगी। मति को शक्ति के अधीन बना दो। वह उसमें आनेवाली आँधियों को निर्बल बना देगी। ३९ मति को शक्ति की दासी बना दो। वह (मति) शक्ति-व्रत का व्रती बन जायगी। मति शक्ति-व्रत पालेगी, तो शिवशक्ति, सुख तथा अच्छा भोजन दिला देगी। ४० मति को शक्ति की दासी बनाओ। मति स्वच्छ हो जायगी और अमृत-सर के समान शोभित हो जायगी। मति को शक्ति के अधीन कर दो; वह सतत सुखी रहेगी। ४१ अहम् को शक्ति की सम्पत्ति बना दो। वह अपने को भी शक्ति जान लेगी। अहम् को शक्ति की ही सम्पत्ति बना दो। तमोगुण तथा अहंकार दूर हो जायेंगे। ४२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहम् शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदु
तन्नैयवळ् कोयिलॆन्ऱु काणुम्— अहम्
शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदु
तन्नै यॆण्णित् तुन्बमुऱ नाणुम् 43

अहम् शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदु
शक्ति यॆन्ऱुम् कडलिलोर् तिवलै— अहम्
शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— शिव
शक्ति युण्डु नमक्किल्लै कवलै 44

अहम् शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदिल्
शक्ति शिव नाद नित्तम् ऒलिक्कुम्— अहम्
शक्ति तन्नक्के उडैमैयाक्कु— अदु
शक्ति तिरुमेनि यॊळि ज्वलिक्कुम् 45

शिव शक्ति ऎन्ऱुम् वाळि ऎन्ऱु पाडु— शिव
शक्ति शक्ति ऎन्ऱु कुदित्ताडु— शिव
शक्ति ऎन्ऱुम् वाळि ऎन्ऱु पाडु— शिव
शक्ति शक्ति ऎन्ऱु विळैयाडु 46

शक्ति तिरुप्पुहळ्—25

शक्ति शक्ति शक्ती शक्ती शक्ति शक्ति ऎन्ऱोडु
शक्ति शक्ति शक्ती ऎन्बार्— शाहार् ऎन्ऱे निन्ऱोडु 1
शक्ति शक्ति ऎन्ऱे वाळ्दल्— शाल्बाम् नम्मैच् चार्न्दीरे
शक्ति शक्ति ऎन्ऱो राहिल्— शाहा उण्मै शेर्न्दीरे 2
शक्ति शक्ति ऎन्ऱाल् शक्ति ताने शेरुम् कण्डीरे
शक्ति शक्ति ऎन्ऱाल् वॆऱ्ऱि— ताने नेरुम् कण्डीरे 3
शक्ति शक्ति ऎन्ऱे शॆय्दाल्— ताने शॆय्है नेराहुम्
शक्ति शक्ति ऎन्ऱाल् अःदु ताने मुक्ति वेराहुम् 4
शक्ति शक्ति शक्ती शक्ती ऎन्ऱे आडोमो ?
शक्ति शक्ति शक्ती यॆन्ऱे ताळङ् गॊट्टिप् पाडोमो ? 5

अहम् को शक्ति का स्वत्व बना दो। वह अपने को शक्ति के मन्दिर के रूप में पहचान लेगा। अहम् को शक्ति की सम्पत्ति बना दो। वह अपना सच्चा रूप जान लेगा तथा दुखी होने में लज्जित हो जायगा। ४३ अहम् को शक्ति का स्वत्व बना दो। वह शक्ति रूपी सागर की बूंद है। अहम् को शक्ति के ही अधिकार की चीज़ बना दो, फिर शिव-शक्ति ही शक्ति है, कोई खतरा नहीं। ४४ अहम् को शक्ति की ही सम्पति बना दो। उसमें शक्ति तथा शिव का नाद हर घड़ी गूँजेगा।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करो शक्ति का स्वत्व (अहं) को शक्ति-भवन बन जायेगा।
सत्य-रूप लख, पिछली छवि पर दुख से बहुत लजायेगा ॥ ४३ ॥
करो शक्ति का स्वत्व 'अहं' को भय-विहीन हो निर्भय हो।
शक्ति-सिंधु का विन्दु 'अहं' है, मिलकर पूर्ण शक्तिमय हो ॥ ४४ ॥
करो शक्ति-सम्पत्ति (अहं) को शक्ति-दीप्ति छा जायेगी।
सदा शक्ति-शिव की अनहद ध्वनि-वीणा नित्य बजायेगी ॥ ४५ ॥
जयति-जयति शिव-शक्ति जयति-जय कह-कहकर नाचो-गाओ।
'चिरञ्जीव शिव-शक्ति रहे', कह-कहकर अमित शक्ति पाओ ॥ ४६ ॥

शक्ति की श्रीमहिमा—२५

जयति शक्ति, जय-जयति शक्ति, जय-जयति शक्ति, जय-जय बोलो।
अमर रहेंगे शक्ति-उपासक, जय-जय-जय निर्भय बोलो ॥ १ ॥
कर विश्वास सत्य पर मित्रो! जीवन श्रेष्ठ बनाओगे।
दृढ़ विश्वास शक्ति पर करके अमर सत्य पा जाओगे ॥ २ ॥
शक्ति-शक्ति यदि कहो निरन्तर स्वयं शक्ति आ जायेगी।
शक्ति-शक्ति यदि कहो निरंतर विजय तुम्हें अपनायेगी ॥ ३ ॥
शक्ति-शक्ति कह कर्म करो तो कर्म सरल बन जायेगा।
मुक्ति-बीज वह पा जायेगा शक्ति-शक्ति जो गायेगा ॥ ४ ॥
शक्ति-शक्ति का तुमुल घोषकर नाच-नाच हरषायेंगे।
शक्ति-शक्ति कह ताल बजाकर क्या न प्रेम से गायेंगे? ॥ ५ ॥

अहम् पर शक्ति का ही अधिकार मान लो। उस पर शक्ति-शरीर की दीप्ति चढ़ जायगी। ४५ गाओ, शिवशक्ति चिरजीवी रहे! 'शिवशक्ति', 'शक्ति' कहकर नाचो, गाओ— 'शिवशक्ति' की जय हो। शिवशक्ति शक्ति की लीला करो। ४६

शक्ति की श्रीमहिमा—२५

[तिरुप्पुहळ्— एक ग्रंथ का भी नाम है, जिसमें षण्मुख देव की प्रशंसा के गीत पाये जाते हैं। उसी के तर्ज़ पर यह गीत रचा गया है।]

बोलो शक्ति, शक्ति, शक्ति, शक्ति शक्ति, शक्ति। शक्ति, शक्ति बोलनेवाले नहीं मरेंगे —यह बोलो। १ हे हमजोलियो! 'शक्ति', 'शक्ति' कहते हुए उस पर विश्वास करके जीना ही श्रेष्ठ जीवन है। शक्ति, शक्ति कहो (शक्ति पर विश्वास करो), तो तुम अमर सत्य से मिल जाओगे। २ 'शक्ति', 'शक्ति' कहो, तो शक्ति स्वयं आ जायगी। 'शक्ति', 'शक्ति' कहो, विजय स्वतः तुम्हारे पास आ जायगी। देखो। ३ 'शक्ति' कहकर काम करो, तो काम स्वतः सीधा हो जाएगा। 'शक्ति', 'शक्ति' कहो। वही मुक्ति का बीज है। ४ शक्ति, शक्ति, शक्ति, हे शक्ति! —इस प्रकार नारे लगाते हुए क्या हम नहीं नाचेंगे? शक्ति, शक्ति, शक्ति कहकर क्या हम ताली बजाते हुए नहीं गायेंगे? ५ शक्ति, शक्ति, कहो तो दुख स्वतः दूर हो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शक्ति शक्ति ऍन्ऱाल् तुनबम् ताने तीरुम् कण्डीरे !
शक्ति शक्ति ऍन्ऱाल् इन्बम् ताने शेरुम् कण्डीरे ! 6
शक्ति शक्ति ऍन्ऱाल् शॆल्वम्— ताने ऊरुम् कण्डीरो
शक्ति शक्ति ऍन्ऱाल् कल्वि ताने तेरुम् कण्डीरो ? 7
शक्ति शक्ति शक्ती शक्ती शक्ती शक्ती वाळी नी !
शक्ति शक्ति शक्ती शक्ती शक्ती शक्ती वाळी नी ! 8
शक्ति शक्ति वाळी ऍन्ऱाल्— शम्पत् तॆल्लाम् नेराहुम्
शक्ति शक्ति ऍन्ऱाल् शक्तिदासन् ऍन्ऱे पेराहुम् 9

शिव शक्ति पुहळ्—26

राग— दन्यासी; ताळ— चतुस्र एकम्

ओम् शक्ति शक्ति शक्तियॆन्ऱु शोल्लु— कॆट्ट
शञ्जलङ्गळ् याविनैयुम् कॊल्लु;
शक्ति शक्ति शक्ति यॆन्ऱु शॊल्लि— अवळ्
सन्निदियिले तॊळुदु निल्लु 1
ओम् शक्ति मिशै पाडल् पल पाडु— ओम्
शक्ति शक्ति ऍन्ऱु ताळम् पोडु
शक्ति तरुञ् जॆय्है निलन् दनिले— शीव
शक्ति वॆऱि कॊण्डु कळित्ताडु 2
ओम् शक्ति तनैये शरणङ् गॊळ्ळु ऍन्ऱुम्
शाविनुक् कॊरच्चमिल्लै तळ्ळु
शक्ति पुहळाममुदै अळ्ळु— मदु
तन्निलिनिप् पाहुमन्दक् कळ्ळु 3
ओम् शक्ति शॆय्युम् पुदुमैहळ् पेशु— नल्ल
शक्ति यऱ्ऱ पेडिहळै एशु;
शक्ति तिरुक्को यिलुळ्ळ माक्कि— अवळ्
तन्दिडुनऱ् कुङ्गुमत्तैप् पूशु 4
ओम् शक्तियिनैच् चेर्न्द दिन्दच् चॆय्है— इदैच्
चार्न्दु निऱ्पदे नमक् कोरुय्है;
शक्तियॆनुम् इन्बमुळ्ळ पॊय्है— अदिल्
तन्तमुद मारि नित्तम् पॆय्है 5

जायगा। शक्ति, शक्ति, कहो तो सुख स्वतः आ मिल जायगा। ६ शक्ति, शक्ति, कहो, तो सम्पत्ति स्वयं उत्पन्न हो आयगी। शक्ति, शक्ति कहो तो विद्या स्वयं आ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शक्ति-शक्ति जब स्वतः तुम्हारा दुःख दूर हो जायेगा।
शक्ति-शक्ति तुम जपो, तुम्हारे पास स्वतः सुख आयेगा॥ ६ ।
शक्ति-शक्ति तुम कहो, तुम्हें सम्पत्ति सकल मिल जायेगी।
शक्ति-शक्ति तुम जपो निरन्तर तो सब विद्या आयेगी॥ ७ ॥
शक्ति-शक्ति हे शक्ति ! तुम्हारी जय-जय-जय हो, जय-जय हो।
शक्ति-शक्ति हे शक्ति ! तुम्हारी विमल-विजय जय अक्षय हो॥ ८ ॥
शक्ति-शक्ति की जय-जय बोलो सब वैभव मिल जायेगा।
शक्ति-उपासक शक्ति-भक्त, यश शक्ति-दास का पायेगा॥ ९ ॥

शिव-शक्ति की महिमा—२६

ॐ शक्ति तुम जपो निरन्तर सभी संशयों को तजकर।
शक्ति-शक्ति कह उसके सम्मुख खड़े रहो तुम जोड़े कर॥ १ ॥
शक्ति-गीत रच-रचकर गाओ, ॐ शक्ति गाकर दो ताल।
शक्ति-भरोसे जीवट-मस्ती से नाचो (होवो खुशहाल)॥ २ ॥
शक्ति-शरण लो तुम्हें कभी भी नहीं मृत्यु का होगा डर।
शक्ति नाम की मादक मदिरा मधुर सुधा से भी बढ़कर॥ ३ ॥
कहो शक्ति के कर्म अलौकिक करो अशक्तों का निन्दन।
मन को करो शक्ति का मन्दिर भाल शक्ति का हो चंदन॥ ४ ॥
ॐ शक्ति-जप शक्ति-कर्म है, जप से होता है उत्थान।
शक्ति-सुखद-सर, जहाँ अमृत की वर्षा नित करती सुख-दान॥ ५ ॥

जायगी। ७ हे शक्ति, हे शक्ति, हे शक्ति, हे शक्ति ! जय हो। हे शक्ति, शक्ति, शक्ति, शक्ति ! जय हो तुम्हारी। ८ 'शक्ति', 'शक्ति की जय' हो। कहो, तो सब सम्पत्ति सामने आ जायगी। शक्ति, शक्ति कहो, तो 'शक्ति-दास' का नाम हो जायगा। ९

शिवशक्ति-महिमा—२६

ॐ ! शक्ति, शक्ति, शक्ति कहो— और सभी संशयों को हटा दो। 'शक्ति', 'शक्ति' का जप करते हुए उसकी सन्निधि में हाथ जोड़े खड़े रहो। १ ॐ ! शक्ति पर अनेक गीत (रचो और) गाओ। ॐ ! शक्ति, शक्ति कहकर ताल दो। शक्ति जो करेगी, उसके बल पर जीवट की मस्ती लेकर नाचो। २ ॐ ! शक्ति की ही शरण लो। फिर कभी मृत्यु का डर नहीं होगा ! (डर को) छोड़ दो। शक्ति-महिमा रूपी अमृत को उठा लो। सुधा से भी मधुर है वह 'ताड़ी' ! ३ ॐ ! शक्ति के विचित्र कार्यों का वर्णन करो। शक्तिहीन नपुंसकों की निंदा करो। मन को शक्ति का मन्दिर बना लो (मानस-पूजा करके प्रसाद के रूप में) उसका दिया सुंदर कुंकुम (तिलक) माथे पर लगा लो। ४ ॐ ! यह कार्य शक्ति से सम्बद्ध काम है। इसमें लगा रहना ही हमारा उत्कर्ष है। शक्ति सुखद सरोवर है। और उसमें अमृत की सदा बारिश (होती) है। ५ ॐ ! 'शक्ति, शक्ति, शक्ति —इस (मंत्र)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ओम् शक्ति शक्ति शक्ति यॆन्ऱु नाट्टु— शिव
शक्तियरुळ् पूमि तनिल् काट्ट;
शक्ति पॆऱ्ऱ नल्ल निलै निऱ्पार्— पुविच्
चादिहळॆल्ला मऱनैक् केट्टु 6
ओम् शक्ति शक्ति शक्ति यॆन्ऱु मुऴङ्गु— अवळ्
तन्दिर मॆल्ला मुलहिल् वळङ्गु
शक्ति यरुळ् कूडि विडुमायिन्— उयिर्
सन्ददमुम् वाऴु नल्ल किऴङ्गु 7
ओम्, शक्ति शॆय्युन् दॊऴिल्हळै ऍण्णु— नित्तम्
शक्तियुळ्ळ तॊऴिल् पल पण्णु
शक्तिहळै येयिऴन्दु विट्टाल्— इङ्गु
शाविनैयुम् नो विनैयुम् उण्णु 8
ओम् शक्ति यरुळालुलहिल् एऱु— ऒरु
शङ्गडम् वन्दा लिरण्डु कूऱु
शक्ति शिल शोदनैहळ् शॆय्दाल्— अवळ्
तण्ण रुळॆन्ऱे मनदु तेऱु 9
ओम्, शक्ति तुणै ऍन्ऱु नम्बि वाऴ्त्तु— शिव
शक्ति तनैये अहत्तिल् आऴ्त्तु
शक्तियुम् शिऱप्पुम् मिहप् पॆऱवाय्— शिव
शक्ति यरुळ् वाऴ्ह वॆन्ऱु वाऴ्त्तु 10

पेदै नॆञ्जे—27

इन्नु मॊरु मुऱै शॊल्वेन् पेदै नॆञ्जे!
ऍदऱ्कुमिनि उलैवदिलै पयनॊन्ऱिल्लै;
मुन्नर् नम दिच्चैयिनार् पिऱन्दो मिल्लै
मुदलिऱुदि इडै नमदु वशत्तिल् इल्लै;
मन्नुमॊरु दॆय्वत्तिन् शक्ति याले
बैयहत्तिल् पॊरुळॆल्लाम् शलित्तल् कण्डाय्!
पिन्नैयॊरु कवलैयु मिङ्गिल्लै नाऴुम्
पिरियादे विडुदलयैप् पिडित्तुक् कॊळ्वाय्! 1
निनैयाद विळैवॆल्लाम् विळैन्दु कूडि
निनैत्त पयन् काण्बदवळ् शॆय्है यन्ऱो?

को दृढ़ रूप से स्थापित कर दो। शिवशक्ति को भूमि पर दरसा दो। उसको देखकर भूमि पर रहनेवाली सभी जातियाँ अच्छी स्थिति में आकर रहेंगी। ६ ॐ!

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भू पर 'ॐ शक्ति' की सत्ता दृढ़ता से स्थापित कर दो।
जो जातियाँ धरा पर उनको ऊँचे पद पर स्थित कर दो॥ ६ ॥
करो शक्ति की प्रबल घोषणा शक्ति-तंत्र फैला दो तुम।
शक्ति-अनुग्रह पर प्राणों को स्वस्थ चिरायु बनाओ तुम॥ ७ ॥
शक्ति-सिद्धियों के गुण गाओ सदा शक्तिमय कर्म करो।
शक्ति गँवाकर रोगी बनकर कभी न तुम बेमौत मरो॥ ८ ॥
शक्ति-कृपा से उन्नति कर लो जग-संकट सब कट जायें।
मान शक्ति की दया, परीक्षा देना, यदि दुख आ जायें॥ ९ ॥
महाशक्ति को मान सहायक मन में तुम स्थापना करो।
बनो यशस्वी शक्ति-कृपा की चिर-जीवन-कामना करो॥ १० ॥

अबोध मन—२७

हे अबोध मन! एक बार फिर है तुमको यह समझाना।
जग में कभी किसी के कारण क्षोभ न मन में तुम लाना॥
इस जग में अपनी इच्छा से जन्म न हमने धारा है।
आदि, मध्य औ अन्त किसी पर वश भी नहीं हमारा है॥
अव्यय ईश्वर का बल करता सकल सृष्टि का संचालन।
यह विचार, निश्चिन्त बनो तुम गहो मुक्ति का पथ पावन॥ १ ॥
अनचाहे फल कभी, कभी फल मिल जाते हैं मनचाहे।
ये सब कृत्य शक्ति के ही हैं, मनचाहे या अनचाहे॥

शक्ति, शक्ति की घोषणा करो। उसके सारे तन्त्रों के हाल को भूलोक भर में फैला दो। शक्ति का अनुग्रह प्राप्त हो जाय, तो प्राण हमेशा 'कन्द' के समान रहेंगे। (तमिळ में स्वस्थ तथा लम्बी आयु वाले लोगों को 'कन्द' कहते हैं।) ७ ॐ! शक्ति की करामातों की गणना करो। तुम भी रोज शक्तिसम्पन्न होकर अनेक कृत्य करो। अगर शक्तियों को खो दो, तो तुमको मौत तथा रोग को भोगना पड़ेगा। ८ ॐ! शक्ति की कृपा से दुनिया में उन्नति करो। संकट आ जाए, तो उसके दो खण्ड (टुकड़े-टुकड़े) हो जायेंगे! शक्ति कभी-कभी कुछ परीक्षाएं लेंगी। (संकट के अवसर आयेंगे।) तो यह सोचकर धीरज धारण कर लो कि यह उसकी शीतल दया है। ९ ॐ! शक्ति को सहायिका मानकर रहो। शिवशक्ति को अपने मन में स्थापित कर लो। तब तुम शक्ति तथा यश पा लोगे। ऐसी मंगलकामना करो कि 'शिव-शक्ति की कृपा जीती रहे'। १०

अबोध मन—२७

हे अबोध मन! और एक बार बताऊँगा। लोक में किसी के लिए भी मन को क्षुब्ध करने से कोई लाभ नहीं है। हम पहले अपनी इच्छा से जनमे नहीं हैं। आरम्भ, अन्त तथा मध्य कुछ भी हमारे वश में नहीं है। अव्यय ईश्वर की शक्ति से ही विश्व में सारी सृष्टि चलित होती है। देख लो। फिर कोई चिन्ता नहीं है। सतत मुक्ति को पकड़ लो। १ कभी अनचाहे फल आ मिलते हैं। तो कभी अभीष्ट

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मनमार् उण्मैयिनैप् पुरट्टलामो ?
महाशक्ति शैय्द नन्ऱि मऱक्क लामो ?
ऎनैयाळुम् मा देवि वीरर् देवि,
इमैयवरुन् दोऴुम् देवि, ऎल्लैत् तेवि,
मनैवाऴ्वु पॊरुळॆल्लाम् वहुक्कुन् देवि,
मलरडियै तुणैयॆन्ऱु वाऴ्त्ताय् नॆञ्जे ! 2
शक्ति यॆन्ऱु पुहऴ्न्दिडुवोम् मुरुहन् ऎन्बोम्;
शङ्गरन् ऎन्ऱुरैत्तिडुवोम् कण्णन् ऎन्बोम्;
नित्तियमिङ् गवऴ् शरणे निलै यॆन्ऱॆण्णि
निनक्कुळ्ळ कुऱैहळॆल्लान् तीर्क्कच् चॊल्लि,
पत्तियिनाऱ् पॆरुमै यॆल्लाम् कॊडुक्कच् चॊल्लि
पशि पिणिहळिल्लामऱ् काक्कच् चॊल्लि
उत्तम् नन् नॆऱिहळिले शेर्क्कच् चॊल्लि,
उलहळन्द नायहि ताळ् उरैप्पाय् नॆञ्जे 3
शॊल्वङ्गळ् केट्टाल् नी कॊडुक्क वेण्डुम्
शिऱुमैहळॆन्निड मिरुन्दाल् विडुक्क वेण्डुम्;
कल्वियिले मदियिनै नी तॊडुक्क वेण्डुम्,
करुणैयिनाल् ऐयङ्गळ् कॆडुक्क वेण्डुम्;
तॊल्लै तरुम् अहप्पेयैत् तॊलैक्क वेण्डुम्,
तुणै यॆन्ऱु निन्नरुळैत् तॊडरच् चॆय्दे
नल्लवऴि शेर्प्पित्तुक् काक्क वेण्डुम्,
'नमो नम ओम् शक्ति' यॆन नविलाय् नॆञ्जे ! 4
पाट्टिनिले शॊल्वदुम् अवळ् शॊल्लाहुम् !
पयनिन्ऱि उरैप्पाळो ? पाराय् नॆञ्जे !
केट्टदु नी पॆऱ्ऱिडुवाय् ऐयमिल्लै
केडिल्लै दैय्वमुण्डु वॆऱ्ऱियुण्डु,
मीट्टुमुनक् कुरैत्तिडुवेन् आदि शक्ति
वेदत्तिन् मुडियिनिले विळङ्गुम् शक्ति,

फल मिल जाता है। यह सब उस (शक्ति) की ही करतूतें हैं न ? क्या तुम जान-बूझकर सत्य को बदल सकोगे ? महाशक्ति-कृत उपकार को भुलाया जाय ? मेरी स्वामिनी-महादेवी, वीरों की ईश्वरी, सुर-वंदिता देवी, सीमा की अधीश्वरी, घर-गृहस्थी, धन आदि का निर्माण करनेवाली भगवती के चरणकमलों को ही आश्रय मानकर, हे मन, उसकी स्तुति करो। २ (हम) 'शक्ति' कहकर जय-गान करेंगे। हम मुरुहन कहेंगे, शंकर या कान्हा कहकर भी सम्बोधित करेंगे। हे मन ! सतत उसके चरणों को (अपने लिए) शाश्वत आश्रय मानो। उससे अपनी माँगों को पूरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

महाशक्ति के उपकारों को कैसे कहो भुलायें हम।
जान-बूझकर सबल सत्य को क्यों बदलें बिसरायें हम॥
वीरवरों की महेश्वरी है औ सुर-वृन्द-वन्दिता है।
सीमा-रक्षक अधीश्वरी है देती धन-गृह-वनिता है॥
है ऐसी समर्थ करुणामय मम स्वामिनी महादेवी।
उसी भगवती को भज लो तुम बनकर चारु-चरण-सेवी॥ २॥

शंकर कहकर सिर नायेंगे, कहकर कान्ह मनायेंगे।
स्कन्द देव कहकर ध्यायेंगे, सदा शक्ति-जय गायेंगे॥
हे मन! उसके ही चरणों को तुम शाश्वत आश्रय मानो।
निज याचना पूर्ण करने को करो प्रार्थना, यह जानो॥
करके उसकी भक्ति सभी गुण-गौरव की याचना करो।
भूख-रोग से रक्षा के हित उससे ही प्रार्थना करो॥
सत्पथ पर चलना तुम माँगो (दूर कुपथ से हो जाओ)।
निखिल-लोक-मापक माता की चरण-वन्दना तुम गाओ॥ ३॥

रे मन! ॐ शक्ति कह करके करो प्रेम से उसे प्रणाम।
माँगो उससे धन वह देगी वह है अतुल दया का धाम॥
सभी अल्पताएँ छुट जायें मति हो रत विद्यार्जन में।
उन्हें मिटा दो निज करुणा से जो संशय मेरे मन में॥
संकट-दायक अहंकार का भूत भगा दो हे माता!।
चलूँ कृपा का ही आश्रय ले सुपथ दिखा दो हे माता!॥ ४॥

गीतों के शब्द हैं हमारी माता की मधुमय वाणी।
कभी निरर्थक शब्द न कहती मेरी माता कल्याणी॥
जो माँगोगे मिल जायेगा कभी नहीं इसमें संशय।
कुछ भी हानि न होगी जानो जहाँ शक्ति है वहीं विजय॥
मेरी माता आदिशक्ति है पूज्यवेद के शीश-समान।
उसने बना दिया है मुझको जनक-समान ज्ञान की खान॥

करने की प्रार्थना करो। उसकी भक्ति करके सारी बड़ाइयाँ माँग लो। भूख, रोग आदि से बचाने की प्रार्थना करो। उत्तम सन्मार्ग पर लगाये जाने की माँग करो। यह सब, लोक-मापक पैरोंवाली माता से चरणों की स्तुति करके माँग लो। ३ रे मन! कहो! नमोनमः ॐ शक्ति! धन माँगूं, तो तुमको देना चाहिए। छोटापन मुझसे छूट जाय। मेरी मति विद्यार्जन में लगी रहे। अपनी करुणा से तुम्हें मेरे संशयों को मिटाना चाहिए। संकटकारी 'अहं' के भूत को मिटाना चाहिए। तुम्हारी कृपा का आश्रय लेकर मैं चलूँ और तुम मुझे अच्छे रास्ते में चलाकर बचा लो --यह तुम्हें (मेरे लिए) करना चाहिए। ४ गीत में जिन शब्दों का प्रयोग होता है, वे उसके ही बोल हैं। हे मन! तुम ही सोचो! निरर्थक शब्द वह क्या बोलेगी? तुम जो माँगोगे, वह मिल जायगा --इसमें कोई संशय नहीं। कोई हानि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाट्टिनिले शनहनप्पोल् नमैयुज् जॅय्दाळ्
'नमोनम ओम् शक्ति' येन नविलाय् नॅज्जे 5

महाशक्ति—28

शन्दिर नॉळियिल् अवळैक् कण्डेन् शरणमॅन्रु पुहुन्दु कॉण्डेन्
इन्दिरियङ्गळै वॅन्रु विट्टेन् ऍनबॅन् आशैयैक् कॉन्रु विट्टेन् 1
पयनॅण्णामल् उळैक्कच् चॉन्नाळ्, बक्ति शॅय्दु पिळैक्कच् चॉन्नाळ्
तुयरिलाक्कॅच् चॅय्दु विट्टाळ् तुन्ब मॅन्बदैक् कॉय्दु विट्टाळ् 2
मीन्गळ् शॅय्युम् ऑळियैच् चॅय्दाळ् वीशिनिऱ्कुम् वळियैच् चॅय्दाळ्
वान्कणुळ्ळ वॅळियैच् चॅय्दाळ् वाळि नॅज्जिऱ् कळियैच् चॅय्दाळ् 3

नवरात्तिरिप् पाट्टु—29

(उज्जयिनी)

उज्जयिनी नित्य कल्याणो !
ओम् शक्ति ओम् शक्ति, ओम् शक्ति, ओम् शक्ति (उज्जयिनी) 1
उज्जय कारण शङ्कर देवी
उमा सरस्वति श्रीमाता सा (उज्जयिनी) 2
वाळि पुनैन्दु महेश्वर देवन्
तोळि पदङ्गळ् पणिन्दु तुणिन्दनम् (उज्जयिनी) 3
सत्य युहत्तै अहत्ति लिरुत्ति
तिऱत्तै नमक् करुळिच् चॅय्युम् उत्तमि (उज्जयिनी) 4

नहीं होगी। ईश्वर है। विजय (निश्चित) है। तुमसे फिर से कहूँगा। आदि-शक्ति, वेदशीर्षस्था शक्ति ने हमें भी इस देश में जनक राजा के समान बना दिया। हे मन ! बोलो : नमो नमः ॐ शक्ति। ५

महाशक्ति—२८

चन्द्र की रोशनी में मैंने उसे (महाशक्ति को) देखा। मैं 'शरण' कहकर उसमें प्रविष्ट हो गया। मैंने इन्द्रियों को जीत लिया। अपनी कामना को मिटा दिया। १ उसने कहा, 'फल की चिन्ता किये बिना कर्म करो। भक्ति करके जियो'। मुझे उसने दुख-रहित कर दिया। दुख ही को उसने नष्ट किया। २ उसने नक्षत्रों का प्रकाश बनाया। बहनेवाली हवा का निर्माण किया। आकाश का अवकाश रचा। जय हो उसकी। मेरे मन को मोद प्रदान किया। ३

नवरात्रि का गीत (उज्जयिनी)—२९

उज्जयिनी (टेक) उज्जयिनीवासिनी नित्य-कल्याणी ! ॐ शक्ति, ॐ शक्ति,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरे तुम्हीं सोचो-समझो, जब भी तुम अपना मुख खोलो।
नमो नमः कह, नमस्कार कर, ॐ शक्ति की जय बोलो॥ ५॥

महाशक्ति—२८

शुभ्रचाँदनी में मुसकाती महाशक्ति का कर दर्शन।
हुआ ध्यान में लीन उसी के 'शरणागत' कह मेरा मन॥
पाँचों चंचल सबल इन्द्रियों को मैंने था जीत लिया।
सभी कामनाओं को मन से त्यागा, उन्हें अतीत किया॥ १॥
कहा शक्ति ने फल की चिन्ता त्याग सभी तुम कर्म करो।
चिरंजीव हो वसुधातल पर भक्तिभाव से हृदय भरो॥
महाशक्ति ने करुणा करके सभी दुखों को दूर किया।
दुःख नष्ट कर, (सब कुछ देकर वैभव से भरपूर किया)॥ २॥
जगमग करते नक्षत्रों को उसी शक्ति ने चमकाया।
शीतल मंद पवन को रचकर व्यापक नभमंडल छाया॥
जिसने मेरे मन-गह्वर में भरा मोद का सिन्धु अपार।
महाशक्ति की जय हो! (उसके चरणों को प्रणाम शत बार)॥ ३॥

नवरात्रि का गीत—२९

जय-जय-जय उज्जैन देश की पूज्य नित्य कल्याणी माँ!।
ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, शक्ति-समुद्र भवानी माँ!॥ १॥
तुम उज्जैन देश की कारणभूत शिवा शर्वाणी माँ!।
तुम्हीं उमा हो, तुम्हीं रमा हो, तुम वाणी ब्रह्माणी माँ!॥
जय-जय-जय उज्जैन देश की पूज्य नित्य कल्याणी माँ!।
ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, शक्ति-समुद्र भवानी माँ!॥ २॥
मन में सतयुग लिये, कुशलता सतयुग की देनेवाली।
जय-जय-जय उज्जैन देश की कल्याणी माँ छबिशाली॥
जय-जय-जय उज्जैन देश की पूज्य नित्य कल्याणी माँ!।
ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, शक्ति-समुद्र भवानी माँ!॥ ३॥
हे सखि! देव महेश्वर का हम आओ, आज करें दर्शन।
साहस करके कर लें उनके पावन चरणों का वंदन॥
जय-जय-जय उज्जैन देश की पूज्य नित्य कल्याणी माँ!।
ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, शक्ति-समुद्र भवानी माँ!॥ ४॥

ॐ शक्ति, ॐ शक्ति (उज्जयिनी) १ विजयदायिनी-शंकर-देवी! उमा-सरस्वती श्रीमाता वह, (उज्जयिनी) २ जय हे सखि! महेश्वर देव के चरणों की हमने साहस करके वन्दना की। (उज्जयिनी) ३ सत्ययुग को हृदय में रखकर, तदनुकूल कौशल हमको देनेवाली उत्तम देवी है। (उज्जयिनी) ४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काळिप् पाट्टु—30

यादुमाहि निन्ऱाय्— काळि ! ऍङ्गुम् नी निऱैन्दाय्
तीदु नन्मै यॆल्लाम् काळि ! दॆय्व लीलै यन्ऱो ?
पूदमैन्दुम् आनाय्— काळि पॊऱिहळैन्दुम् आनाय्
बोदमाहि निन्ऱाय्— काळि पॊऱियै विञ्जि निन्ऱाय् 1
इन्ब माहि विट्टाय्— काळि ऍन्नुळे पुहुन्दाय्
पिन्बु निन्नै यल्लाल्— काळि पिऱिदु नानुम् उण्डो ?
अन्बळित्तु विट्टाय् काळि आण्मै तन्दु विट्टाय्
तुन्बम् नीक्कि विट्टाय्-काळि तॊल्लै पोक्कि विट्टाय् 2

काळि स्तोत्तिरम्—31

यादु माहि निन्ऱाय्— काळी ऍङ्गुम् नी निऱैन्दाय्
तीदु नन्मै यॆल्लाम्— निन्ऱन् शॆयल्ह ळन्ऱि यिल्लै
पादुम् इङ्गु मान्दर्— वाळुम् पॊय्मै वाळ्क्कै यॆल्लाम्
आदि शक्ति ताये— ऍन्मीदु अरुळ् पुरिन्दु काप्पाय् 1
ऍन्व नाळुम् निन्मेल्— ताये इशैहळ् पाडि वाळ्वेन्
कन्दनैप् पयन्दाय्— ताये करुणै वॆळ्ळमानाय्
मन्व मारुदत्तिल्— वानिल्— मलैयिनुच्चि मीदिल्
शिन्वै यॆङ्गु शॆल्लुम्— अङ्गुन्— शॆम्मै तोन्ऱुम् अन्ऱे ! 2
कर्म योह मॆन्ऱे— उलहिल् काक्कु मॆन्नुम् वेदम्
तर्म नीदि शिऱिदुम्— इङ्गे— तवऱ लॆन् बदिन्ऱि
मर्म मान पॊरुळाम्— निन्ऱन्— मल रडिक्कण् नॆञ्जम्
शॆम्मै युऱ्ऱु नाळुम्— शेर्न्दे तेशु कूड वेण्डुम् 3
ऍन्ऱ नुळ्ळ वॆळियिल्— ञानत् तिरबियेऱ वेण्डुम्
कुन्ऱ मॊत्त तोळुम्— मेरुक्— कोल मॊत्त वडिवुम्

काली गीत—३०

सभी कुछ बनी हो, हे काली ! तुम सर्वत्र व्याप्त हो। बुरा या भला सब कुछ, हे काली, वैसी लीला है न ? पाँचों भूत बनी तुम, हे काली, पाँचों इन्द्रियाँ भी तुम हो। बोध-रूप बनी हो तुम, हे काली, इंद्रियों से भी परे हो। सुख-रूप हो हे काली ! मेरे अन्दर प्रवेश कर गयी हो। फिर तुम्हारे परे, हे काली, मैं क्या कुछ अन्य हूँ ? प्रेम दे दिया तुमने, हे काली, पौरुष दे गयी हो। दुख दूर कर दिया, हे काली, तुमने संकट हर दिया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काली-गीत—३०

सर्व-स्वरूपमयी तुम काली ! माँ ! तुम सर्वव्यापक हो।
भला-बुरा सब तेरी लीला दैवी-लीला-कारक हो ॥
पंचभूत हो तुम्हीं, तुम्हीं हे देवि ! पंच-इन्द्रिय-मय हो।
बोधरूप हो तुम्हीं, इन्द्रियों से भी परे निर्विषय हो ॥
माँ काली ! तुम सुख-स्वरूप हो, व्यापक तुम मेरे तन-मन।
फिर तुमसे अन्यत्र पृथक् हो रह सकता क्या मम जीवन ? ॥
दिया प्रेम तुमने माँ काली ! और दिया पौरुष उत्कट।
दुख को दूर किया तुमने ही हरे तुम्हीं ने सब संकट ॥

काली-स्तुति—३१

सर्वरूप-मय माँ काली ! तुम, तुम हो सर्वव्यापक माँ ! ।
बुरे-भले सब कृत्य तुम्हारे, कुछ भी नहीं निरर्थक माँ ! ॥
आज विश्व के मानव सारे बिता रहे झूठा जीवन।
आदिशक्ति माँ ! कृपा करो तुम मेरा हित (मेरा पालन) ॥ १ ॥
मैं प्रतिदिन पुलकित हो करके गीत तुम्हारे गाऊँगा।
वैसा ही आचरण और जीवन मैं मातु ! बिताऊँगा ॥
स्कन्ददेव की जननी हो तुम, करुण-सिंधु की प्रेम-लहर।
नभ, गिरि, मंद पवन, मन की गति में छायी लाली मनहर ॥ २ ॥
वेद बताते हैं इस जग में कर्मयोग ही रक्षक है।
नीति-धर्म सबका पालन हो भगवति ! तू संरक्षक है ॥
देवी ! तेरे चरण-कमल अति निगूढ़ महिमा से मंडित।
लगा रहे उनमें मन मेरा और तेज हो संवर्धित ॥ ३ ॥
मेरे निर्मल चिदाकाश में विमल-ज्ञान-रवि उग आये।
गिरि-सम दृढ़स्कन्ध हों मेरे वदन मेरु-सा सरसाये ॥

काली-स्तुति—३१

सब कुछ बनी हो तुम, हे काली, सर्वत्र व्याप्त हो। बुरा, भला सभी कुछ तुम्हारे कृत्य हैं, अन्य कुछ नहीं। बस ! पर्याप्त है मानवों का यहाँ का झूठा जीवन ! हे आदिशक्ति माँ ! मुझ पर अनुग्रह करो और मेरी रक्षा करो। १ हर दिन, हे माँ ! 'तुम' पर गीत गाऊँगा और वैसा ही जीवन बिताऊँगा। हे स्कन्द की जननी ! तुम करुणा-सागर बनी हो। मन्द मारुत में, आकाश में या पर्वत-शिखर पर, जहाँ भी मेरा मन जाय, वहाँ तुम्हारी लाली दिखेगी न ? २ वेद कहते हैं कि संसार में अकेला कर्मयोग ही रक्षक है। धर्म और नीति से यहाँ बिना कुछ भी छूटे, और तुम्हारे रहस्यमय चरण-कमलों पर, मन हमेशा लगा रहे, और तेज बढ़े। ३ मेरे चिदाकाश में ज्ञानरवि चढ़ आये। पर्वत-सम स्कन्ध, मेरु-सा सुन्दर आकार और भला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नन्ऱै नाडु मनमुम्— नीयॆन्— नाळु मोदल् वेण्डुम्
ऑन्ऱै विट्टु मऱ्ऱोर्— तुयरिल्— उळ्ळुम् नॆञ्जम् वेण्डा 4
वानहत्ति नॉळियैक्— कण्डे— मन महिळ्च्चि पॊङ्गि
यानॆवऱ्कुम् अञ्जेन्— आहि— ऍन्द नाळुम् वाळ्वेन्
ज्ञान मॊत्त दम्मा— उवमै— नानुरैक् कॊणादाम् !
वानहत्ति नॉळियिन्— अळमै वाळ्त्तु मारि यादो ? 5
ज्ञायि ऱॆन्ऱ कोळम्— तरुमोर्— नल्ल पेरॊळिक्के
तेय मोदोर् उवमै— ऍवरे— तेडियोद वल्लार् ?
वायिनिक्कुम् अम्मा ! अळहाम् मदियिन् इन्ब ऑळियै
नेयमो डुरैत्ताल्— आङ्गे— नॆञ्जि ळक्क मॆय्दुम् 6
काळि मीदु नॆञ्जम्— ऍन्ऱुम्— कलन्दु निऱ्क वेण्डुम्
वेळै यॊत्त विऱलुम्— पारिल् वेन्दरेत्तु पुहळुम्
याळि यॊत्त वलियुम्— ऍन्ऱुम्— इन्बम् निऱ्कुम् मनमुम्
वाळि योदल् वेण्डुम्— अन्नाय् !— वाळ्ह निन्ऱन् अरुळे 7

योग सित्ति—32

(वरङ् गेट्टल्)

विण्णुम् मण्णुम् तनियाळुम्— ऍङ्गळ् वीरै शक्ति निन्नदरुळे— ऍन्ऱन्
कण्णुम् करुत्तुम् ऍनक्कॊण्डु- अन्बु कशिन्दु कशिन्दु कशिन्दुरुहि- नान्
पण्णुम् पूशनै हळॆल्लाम्— वॆरुम् पालै वन्त्तिल् इट्टनीरो;— उनक्
कॆण्णुञ् जिन्दै यॊन्ऱिलैयो ?— अऱि विल्ला दहिलम् अळिप्पायो ? 1
नोये शरणमन्ऱु कूवि— ऍन्ऱन् नॆञ्जिऱ् पेरुरुदि कॊण्डु— अडि
ताये ! ऍनक्कु मिहनिदियुम्— अऱन् दन्नैक् काक्कु मॊरुतिऱनुम्— तरु

खोजनेवाला मन —यह सब आप मुझे अवश्य दें। एक को छोड़कर, दूसरे संकट में गिरकर घुलनेवाला हृदय मुझे नहीं चाहिए। ४ अन्तरिक्ष का प्रकाश देखकर मेरे मन में मोद बढ़े। मैं किसी से भी न डरनेवाला बनूँ। मैं इस प्रकार हमेशा जीऊँगा। अन्तरिक्ष का प्रकाश ज्ञान के समान है। नहीं। उपमा देना मेरे बस का काम नहीं है। मैं उसके सौन्दर्य की महिमा कैसे गाऊँ ? ५ सूर्य नामक गोल प्रकाशपुंज जो बड़ा प्रकाश देता है, उसकी उपमा इस दुनिया में कौन दे सकेगा ? हे माँ ! सुन्दर चन्द्र की प्यारी रोशनी का प्यार के साथ वर्णन किया जाय तो मुँह मीठा हो जायगा। दिल पिघल जायगा। ६ काली पर (मेरा) मन हमेशा लगा रहे। कुमार (स्कन्द) की-सी वीरता, राजाओं से प्रशंसित यश, याळी (शरभ या बहुत युगों के पहले रहनेवाला कल्पित पशु, जो सिंह का पूर्वज माना जाता है) का-सा बल, और सर्वसुखी मन, हे माँ ! यह सब मुझे दिला दो। तुम्हारी कृपा की जय हो। ७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हित-अन्वेषक हो मन मेरा यह सब मुझको मिल जाये।
संकट तज, संकट में पड़ता, ऐसा मन न मुझे भाये॥ ४॥
अन्तरिक्ष की ज्योति निरखकर मोद-मग्न हो मेरा मन।
कभी किसी से नहीं डरूँ मैं ऐसा हो मम चिर-जीवन॥
अन्तरिक्ष की ज्योति ज्ञान की ज्योति-सदृश क्या उज्ज्वल है?।
माता की महिमा-वर्णन का मुझमें कहो, कहाँ बल है?॥ ५॥
प्रबल प्रकाश-पुंज भास्कर की किससे की जाए समता।
(महाशक्ति की सुन्दरता के वर्णन की किसमें क्षमता)॥
चारु चन्द्र की प्रिय ज्योत्स्ना का प्रबल प्रेमपूर्वक वर्णन।
रसना को मधुमय कर देगा और द्रवित कर देगा मन॥ ६॥
मिले स्कन्द-सी मुझे वीरता, राजाओं-सा यश शंसित।
शरभ-तुल्य अतुलित बल दे दो, सर्वसुखी हो मन की गति॥
काली माता! तव चरणों में सदा चित्त मम लगा रहे।
जय हो देवि! तुम्हारी रसमय भक्ति-सुधा में पगा रहे॥ ७॥

योगसिद्धि (वर-याचना)—३२

तुम ही माता स्वर्गलोक की एक मात्र शुभ शासक हो।
तुम ही माता भूमिलोक की शासक (दैन्य-विनाशक) हो॥
कृपा तुम्हारी को मैं माता! नयन और मन सब कुछ जान।
पूजा करता देवि! द्रवित हो, मधुर प्रेम में मग्न महान॥
क्या मेरी सब पूजा-अर्चा मरुस्थलों का सिंचन है।
युक्तायुक्त-विचारक माता! क्या न पास तेरे मन है॥
सोचे-समझे बिना जननि! क्या विश्व-प्रपंच चलाती हो?।
जो मेरी इस पूजा-अर्चा पर न ध्यान तुम लाती हो?॥ १॥
'शरण तुम्हारी हैं हम देवी!' करके यह घोषणा प्रबल।
देवि! प्रार्थना मैं करता हूँ करके दृढ़-संकल्प सबल॥
मैं कर सकूँ धर्म का पालन तुम ऐसी दृढ़ता भर दो।
मिलें मुझे सब निधियाँ माता! मुझको तुम ऐसा वर दो॥

योगसिद्धि (वर की माँग)—३२

स्वर्ग तथा भूमि पर अकेली शासन करनेवाली, हे वीर शक्ति! तुम्हारी कृपा को ही आँख तथा चित्त (सर्वस्व) मानकर मैं प्रेम से पानी-पानी होकर जो पूजाएँ कर रहा हूँ, क्या वे सब मरुभूमि में सींचा पानी है? क्या तुम्हारे सोचनेवाला मन नहीं है? क्या तुम बिना समझ के ही अखिल सृष्टि को चला रही हो? १ 'तुम्हारी ही शरण हैं' —यह घोषणा करते हुए मन में बहुत दृढ़ संकल्प करके मैं प्रार्थना करता हूँ कि अरी माँ! मुझे अधिक सम्पत्ति दो तथा धर्मपालन करने का बल दो। तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाये अॅन्ऱु पणिन्देत्तिप्— पल वाऱानिन्नदु पुहळ्पाडि— वाय्
ओये नावदुणरायो ?— निन्न दुण्मै तवऱुवदोर् अळ्हो ? 2
काळी वलिय शामुण्डि— ओङ् गारत् तलैवियॅन् निराणि— पल
नाळिङ् गॅन्नैयलैक् कलामो; उळ्ळम् नाडुम् पॊरुळडैदऱ् कन्ऱो ?- मलर्त्
ताळिल् विऴुन्द बयङ् गेट्टेन्— अदु— तारायॅनिलुयिरत् तीराय्— तुन्बम्
नीळिल् उयिर् तरिक्क माट्टेन्— करु— नीलियॅन् नियल्ब ऱियायो ? 3
तेडिच् चोऱु निदन् विन्ऱु— पल शिन्नम् जिऱु कदैहळ् पेशि— मन्नम्
वाडित् तुन्ब मिह उळ्ळन्ऱु— पिऱर् वाडप् पल शॅयल्हळ् शॅय्दु— नरै
कूडिक् किळ्प् परुव मॅय्दि— कॊडुङ् गूऱुक् किरैयॅन्नप् पिन्मायुम्— पल
वेडिक्कै मन्निदरैप् पोले— नान् वीळ्वे नॅन्ऱु निन्नत् तायो ? 4
निन्नैच् चिल वरङ्गळ् केट्पेन्— अवै नेरे इन्ऱॅन्नक्कुत् तरुवाय्— अॅन्ऱन्
मुन्नत् तीय विनैप् पयन्गळ्— इन्नुम् मूळा दळिन्दिडुदल् वेण्डुम्— इनि
अॅन्नैप् पुदिय वुयिराक्कि— अॅन्नक् केदुङ् गवलै यऱच्चॅय्दु— मदि
तन्नै मिहत् तॅळिवु शॅय्दु— अॅन्ऱुम् सन्दोषङ् गॊण्डिरुक्कच् चॅय्वाय् 5
तोळै वलि युडैयदाक्कि— उडऱ् चोर्बुम् पिणि पलवुम् पोक्कि— अरि
वाळैक् कॊण्डु पिळन्दालुम्— कट्टु माऱा वुडलुऱुदि तन्दु— शुडर्
नाळैक् कण्डदोर् मलर्पोल्— ऒळि— नण्णित् तिहळु मुहन्दन्दु— मद
वेळै वॅल्लु मुऱै कूऱित् तव मेन्मै कॊडुत् तरुळल् वेण्डुम् 6
ऍण्णुङ् गारियङ् गळैल्लाम्— वॅऱ्ऱि येऱप् पुरिन्दरुळल् वेण्डुम्— तॊलिल्
पण्णप् पॊरु निदियम् वेण्डुम्— अदिऱ् पल्लोर् तुण पुरिदल् वेण्डुम्— शुवै

विनय करते हुए अनेक रीतियों से तुम्हारी महिमा गाते-गाते मेरा मुख नहीं थकता। क्या तुम यह नहीं जानतीं ? इस प्रकार सत्य से विमुख रहना भी क्या तुम्हें शोभा (देता) है। २ काली ! बलवती चामुंडा ! ॐकार की ईश्वरी ! मेरी रानी ! क्या मुझे बहुत दिन तक लालायित करोगी ? मेरा मन जिसे खोजता है, क्या वह अप्राप्य वस्तु है ? मैंने तुम्हारे कमल-चरणों पर गिरकर अभय माँगा। अगर वह नहीं दे सकी, तो मेरा प्राण ले लो। अगर इस दुख की अवधि बढ़ जाए, तो प्राण धारण नहीं करूँगा। हे काली-नीली देवी ! मेरे स्वभाव से तुम अवगत नहीं हो क्या ? ३ रोज खोज-खोजकर खाना खाओ, अनेक छोटी-छोटी कहानियाँ आपस में कहो, मन को दुखी करके संकट में छटपटाते रहो। दूसरों को हानि पहुँचानेवाले अनेक कार्य करो। जरा वार्धक्य पाकर फिर मर जाओ। —ऐसे विचित्र (जीवनक्रम वाले) मनुष्यों के समान क्या मैं भी गिरूँगा ? क्या तुम ऐसा सोच रही हो ? ४ मैं तुमसे कुछ वर माँगूँगा। उन्हें आज सीधे मुझे दे दो। मेरे प्रारब्ध आकर मुझे न सतायें। मुझे नया जन्म दे दो। मेरे लिए कोई संकट न हों मेरी मति सुलझी हुई रहे। हमेशा मुझे संतुष्ट रखो। ५ मेरे कन्धों को बलवान बना दो। शरीर की थकावट तथा रोगों को दूर कर दो। चाकू लेकर शरीर को चीरा जाय, तो भी गठन न टूटे —ऐसा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विविध रीतियों से हे माता! तव महिमा गाते-गाते।
कभी नहीं थकता मेरा मन विनय तुम्हारी दुहराते॥
माँ! तुम क्या यह नहीं जानतीं, जो मेरे मन में स्थित है?।
रहना विमुख सत्य से माता! क्या तुमको यह शोभित है?॥ २॥

हे ॐकारेश्वरी! बलवती चामुंडा! काली माता!।
रक्खोगी लालायित कब तक मेरी साम्राज्ञी माता!॥
क्या वह अति अप्राप्य वस्तु है जिसे खोजता मेरा मन।
तव पद-कमलों पर गिर करके माँगे मैंने अभय वचन॥
अगर नहीं वह दे सकती हो तो तुम ले लो मेरे प्राण।
यदि यह दुःख न नष्ट हुआ तो हो न सकेगा मेरा त्राण॥
नील-कान्ति-मय! कृष्ण-कान्ति-मय! हे मेरी माता! अभिमत!।
क्या मेरे स्वभाव से मेरी जननि! नहीं तुम हो अवगत॥ ३॥

जो प्रतिदिन भोजन के कारण कष्ट अनेकों सहते हैं।
मन वहलाने, समझाने को तुच्छ कथाएँ कहते हैं॥
दुःखित-मन संकट सहते, क्षति औरों को भी पहुँचाते।
हैं इस भाँति बिताते जीवन बूढ़े होकर मर जाते॥
क्या ऐसे विचित्र मनुजों-सम होगा मेरा भी न पतन?।
क्या तुम ऐसा सोच रही हो मेरा सम्भव हो न तरण?॥ ४॥

माँग रहा हूँ जो मैं तुमसे माता! मुझको दो वे वर।
पूर्वजन्म के कर्म भाग्य बन मुझे सताएँ मत आकर॥
नया जन्म दे दो माँ! मुझको संकट काटो (पुष्ट रहूँ)।
मेरी मति निर्मल सुलझी हो और सदा संतुष्ट रहूँ॥ ५॥

कन्धे हों बलवान हमारे, तन की थकन, रोग हों नष्ट।
शस्त्रों से भी कट न सके जो ऐसी हो तन-गठन सुपुष्ट॥
विकसित-सूर्यमुखी-सम मेरा मुख दिन-ब-दिन प्रकाशित हो।
श्रेष्ठ तपस्या का गौरव दो, मुझसे काम पराजित हो॥ ६॥

जो भी सोचूँ कार्य सभी में विजय प्राप्त हो, यह वर दो।
साझे में उद्योग कर सकूँ इतना धन अविनश्वर दो॥

सुगठित शरीर मुझे दे दो। मेरा मुख प्रकाशमय दिन में सूर्योन्मुख सुमन के समान विकसित तथा प्रकाशमय रहे। कामराज को जीतने का उपाय सिखा दो। मुझे श्रेष्ठ तपस्या का गौरव भी दिला दो। ६ जिन कार्यों का मैं विचार करूँ, उनमें मुझे विजय हो —यह वर दो। उद्योग करने के लिए अधिक धन चाहिए। उसमें बहुत लोगों का साझा चाहिए। श्रुतिमधुर गीत तथा मेल का ताल मन में खूब रहना चाहिए। श्रेष्ठ स्वर में करोड़ प्रकार का सुख दिला सकें, ऐसा गीत गाने की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नण्णुम् पाट्टिनॉडु ताळम्— मिह नन्ऱा वुळत् तळुन्दल् वेण्डुम्— पल
पण्णिर् कोडिवहै इन्बम्— नान् पाडत् तिर नडैदल् वेण्डुम् 7
कल्लै वयिर मणियाक्कल्— शॆम्बैक् कट्टित् तङ्ग मॆन्च् चॆय्दल्— वॆऱुम्
पुल्लै नॆल्लॆन्प् पुरिदल्— पन्ऱिप् पोत्तैच् चिङ्ग वेऱाक्कल्— मण्णै
वॆल्लत् तिनिप्पु वरच्चॆय्दल्— ऍन् विन्दै तोन्ऱिड इन्नाट्टै— नान्
तॊल्लै तीर्त्तु यर्वु कल्वि— वॆऱ्ऱि शूळुम् वीर मऱि वाण्मै 8
कूडुन् दिरवियत्तिन् कुवैहळ्- तिऱल् कॊळ्ळुदल् कोडिवहैत् तॊळिल्हळ्- इवै
नाडुम् पडिक्कु विन्नै शॆय्दु— इन्द नाट्टोर् कीर्त्ति यॆङ्गु मोङ्गक्— कलि
शाडुन् दिऱन्नक्कु तरुवाय्— अडि ताये उन्नक्करिय दुण्डो ?— मदि
मूडुम् पॊय्मै यिरुळॆल्लाम्— ऍन्नै मुऱुम् विट्टहल वेण्डुम् 9
ऐयम् तीर्न्दु विडल् वेण्डुम्— पुलै अच्चम् पोयॊळिदल् वेण्डुम्— पल
पैयच् चॊल्लुवदिङ् गॆन्नै;— मुन्नैप् पार्त्तन् कण्णनिवर् नेरा— ऍन्नै
उय्यक् कॊण्डरुळ वेण्डुम्— अडि उन्नैक् कोडि मुऱै तॊळुदेन्— इनि
वैयत् तलैमै यॆन्नक्करुळ्वाय्— अन्नै वाऴि ! निन्न दरुळ् वाऴि
ओम् काळि ! वलिय शामुण्डि ! ओङ्कारत्तलैवि ! ऍन् इराणि ! 10

महाशक्ति पञ्जकम्—33

करणमुन् दनुवुम् निन्नक्कॆन्न् तन्देन् काळि नी कात्तरुळ् शॆय्ये
मरणमुम् अञ्जेन् नोय्हळै अञ्जेन्, मारवॆम् पेयिन्नै अञ्जेन्
इरणमुञ् जुहमुम् पळियु नऱ्पुहळुम्, यावुमोर् पॊरुळॆन्नक् कॊळ्ळेन्
शरणमॆन् ऱुनदु पदमलर् पणिन्देन्, तायॆन्नैक् कात्तलुन् कडने 1

मुझे सामर्थ्य मिलनी चाहिए। ७ पत्थर को हीरा बनाना, ताँबे को कुंदन बनाना, मामूली घास से धान निकालना, सुअर के बच्चे को पुरुष-सिंह में बदल देना, मिट्टी में गुड़ का-सा स्वाद लाना —ऐसे चमत्कार दिखाते हुए मैं इस देश का संकट दूर करूँ, और श्रेष्ठ विद्या, विजय दिलानेवाली वीरता, बुद्धिमत्ता, पौरुष, ८ और मूल्यवान निधि-राशियाँ, दक्षतापूर्ण करोड़ों प्रकार के उद्योग —ये सब मुझे प्राप्त हों। मैं ऐसा कार्य करूँ कि जिससे इस देश के वासियों के यश को सर्वत्र उन्नत रूप में फैलाते हुए कलि पर प्रहार करूँ। —ऐसा (कार्य-) कौशल मुझे दे दो। अरी माँ ! क्या तुम्हारे लिए कुछ कठिन भी है ? मति को आवृत करनेवाले झूठ के अन्धकार को पूर्ण रूप से अलग कर दो। यह तुमको मेरे लिए करना चाहिए। ९ (मुझसे) संशय दूर हो। अधर्म डरकर हट जाय। किं बहुना ? पहले कृष्ण ने पार्थ को जैसे किया वैसे तुमको मेरा उद्धार करना चाहिए। अरी माँ ! तुमको करोड़ों बार नमस्कार करता हूँ। अब मुझे विश्व-नेतृत्व दे दो ! माँ जिओ ! जय हो तुम्हारी कृपा की ! ॐ काली ! बलवती, चामुंडा, ॐ कारेश्वरी ! मेरी रानी ! १०

महाशक्ति पंचम—३३

मैंने अपनी इन्द्रियों तथा शरीर को तुम पर अर्पित कर दिया। हे काली ! मेरी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कर्ण-मधुर हों राग परस्पर ताल-मेल हो तालों-सम।
श्रेष्ठ स्वरों में गीत सुखद गाऊँ, बल दो लयवालों-सम ॥ ७ ॥

बना सकूँ पत्थर को हीरा, ताँबे को कर दूँ कुन्दन।
घास-फूस से धान निकालूँ, शूकर कर दूँ सिंह-सुवन ॥
मिट्टी को मिसरी कर दूँ मैं ऐसी करूँ करामातें।
दूर करूँ संकट स्वदेश के (उजली हों काली रातें) ॥
विजय-दायिनी मिले वीरता मिले श्रेष्ठ विद्या सुन्दर।
मिले बुद्धिमत्ता औ' पौरुष निधि अमूल्य पायें सुखकर ॥
मिलें दक्षता-पूर्ण करोड़ों उद्योगों के कार्य सुघर।
ऐसा कार्य करूँ मैं जिससे ये पदार्थ हों प्राप्त प्रचुर ॥
देश-वासियों का यश फैला कलि पर प्रबल प्रहार करूँ।
माँ! मुझको ऐसा कौशल दे (सतयुग का संचार करूँ) ॥
कुछ भी कठिन नहीं माँ! तुमको यह विनती स्वीकार करो।
मति ढकनेवाले असत्य के तम का तुम संहार करो ॥ ८-९ ॥

डरकर हट जाए अधर्म औ' दूर सभी होवें संशय।
जैसे अर्जुन की रक्षा की वैसे मुझे करें निर्भय ॥
कोटि-कोटि तुमको प्रणाम माँ! मुझे विश्व-नेतृत्व मिले।
जननि! तुम्हारी कृपादृष्टि हो माँ का मुझे ममत्व मिले ॥
जय ॐकारेश्वरी! भवानी! जयति-जयति जय-जय काली।
जय बलवती देवि चामुंडी! जय साम्राज्ञी छबिशाली ॥ १० ॥

महाशक्ति-पंचक—३३

मैंने तन को और इन्द्रियों को कर दिया तुम्हें अर्पण।
हे मेरी माता! काली! तुम सदा करो मेरा रक्षण ॥
विकट मृत्यु से नहीं डरूँगा रोगों से भी भीत नहीं।
काम-स्वरूपी भूत भयंकर से भी हूँ भयभीत नहीं ॥
मिले मुझे दुख याकि मिले सुख, यश हो अथवा हो अपयश।
तुम्हें त्याग मैं अन्य किसी का कभी न हो सकता परवश ॥
देवि! तुम्हारी चरण-शरण गह नमस्कार मैं करता हूँ।
तव कर्तव्य, बचा ले मुझको (यह पुकार मैं करता हूँ) ॥ १ ॥

रक्षा करो। मैं मृत्यु से नहीं डरूँगा। मैं रोगों से नहीं डरूँगा। काम रूपी भयंकर भूत से भी नहीं डरूँगा। व्रण (दुख) हो कि सुख, अपयश हो कि यश, किसी को भी कुछ नहीं गिनूँगा। तुम्हारे चरण-कमलों को 'शरण' कहकर नमस्कार करता हूँ। हे माता! मुझे बचाना तुम्हारा कर्तव्य है। १ तुम असंख्यक पदार्थ, अपार आकाश सब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍण्णिलाप् पॊरुळुम् ऍल्लैयिल्, वॆळियुम् यावुमाम् निन्ऱनैप् पोऱ्ऱि
मण्णिलार् वन्दु वाळ्त्तिनुङ् जॆऱिनुम्, मयङ्गिलेन् मनमॆनुम् पॆयर्कॊळ्
कण्णिलाप् पेयै ऍळ्ळुवेन्; इनियॆक् कालुमे अमैदियि लिरुप्पेन्
तण्णिला मुडियिऱ् पुनैन्दु निन्ऱिलहुम्, तायुनैच् चरण् पुहुन्देनाल् 2
नीशरुक्किनिदान् दनत्तिनुम् मादर्, निनैप्पिनुम् नॆऱियिला माक्कळ्
माशुऱु पॊय्न्नट् पदनिलुम् पन्नाळ्, मयङ्गिनेन् अवैयिनि मदियेन्
तेशुऱु नील निऱ्त्तिनाळ् अऱिवाय्च्, चिन्दैयिऱ् कुलविडु तिऱत्ताळ्
वीशुऱुङ् गाऱ्ऱिल् नॆरुप्पिनिल् वॆळियिल्, विळङ्गुवाळ् तनैच् चरण् पुहुन्देन् 3
ऐयमुन् दिहैप्पुन् दॊलैन्दनन्; आङ्गे अच्चमुन् दॊलैन्ददु; शिनमुम्
पॊय्यु मॆन्ऱिनैय पुन्मैह ळॆल्लाम्, पोहिन उऱुदि नान् कण्डेन्
वैयमिङ् गनैत्तुम् आक्कियुम् कात्तुम्, माय्त्तुमे महिळ्न्दिडु तायैत्
तुय्य वॆण्णिऱत्ताळ् तनैक्करि, यवळैत् तुणैयॆनत् तॊडर्न्द कॊण्डे 4
तवत्तिनै ऍळिदाप् पुरिन्दनळ् पोहत्, तनिनिल ऍळियॆनप् पुरिन्दाळ्
शिवत्तिनै इनिदाप् पुरिन्दनळ्, मूडच् चित्तमुम् तॆळिवुऱच् चॆय्दाळ्
पवत्तिनै वॆऱुप्प अरुळिनळ् नानाम् पान्मै कॊन्ऱुवळ् मयम् पुरिन्दाळ्
अवत्तिनैक् कळैन्दाळ् अऱिवॆन्न विळैन्दाळ्, अनन्दमा वाळ्ह थिङ्गिवळे 5

महाशक्ति वाळ्त्तु—34

विण्डुरैक्क अरिय अरियदाय् विरिन्द वान वॆळियॆन निन्ऱनै;
अण्ड कोडिहळ् वानिल् अमैत्तनै; अवऱ्ऱिल् ऍण्णऱ्ऱ वेहम् जमैत्तनै

बनी हो। तुमको नमस्कार। पृथ्वी पर कोई भी आकर, चाहे मेरा मंगल कहे या मुझसे लड़े मैं मोह में नहीं पड़ूँगा। मैं मन नामक इस अन्धे पिशाच की अवहेलना करूँगा। आगे नित्य शान्ति (की स्थिति) में ही रहूँगा। हे शीतल चन्द्र-शेखरा, देखो, माँ! मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। २ नीचों का प्रिय धन, नारी-स्मरण, अधार्मिक, लोगों का कलंकित तथा झूठा स्नेह— मैं इनमें बहुत दिन मोहित होकर पड़ा था। अब उन पर ध्यान नहीं दूँगा। अब मैं तेजोमय नीले रंगवाली, बुद्धि में चित्त में विलसनेवाली (पराशक्ति), बहनेवाली हवा, अनल तथा आकाश में शोभायमान देवी की शरण में पहुँच गया हूँ। ३ मेरे संशय और भ्रम दूर हो गये। तब डर भी दूर हो गया। क्रोध, झूठ आदि नीचताएँ दूर हो गयीं। मेरे मन में दृढ़ धारणा हो गयी। (यह सब कब से हो रहा है)? विश्व का सर्जन, पालन तथा संहार करके संतुष्टि पानेवाली माता, निर्मल श्वेत रंगवाली कालीदेवी को जब से मैंने अपना सहारा मान लिया, तब से यह हो। ४ उसने तप को सुगम करा दिया। विशेष भोगस्थिति को तेज के रूप में विदित करा दिया। शिव को सुख से समझा दिया। जड़ चित्त को सुलझा दिया। मुझे भवद्वेष सिखाने की कृपा की। मुझमें 'मैं' के भाव को मिटाकर 'तत्' भाव कर दिया। अविद्या को निरस्त करके वह स्वयं विद्या बन गयी। वह अनंत रहे। ५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निखिल-तत्त्व-मय, व्योम-रूप तुम बननेवाली तुम्हें प्रणाम।
आया शरण तुम्हारी माता शीतल-चन्द्र-किरीट ललाम॥
हितचिन्तक हो कोई मेरा या विकराल विरोधी हो।
कभी मोह में नहीं पड़ूँगा, शान्त-प्रकृति या क्रोधी हो॥
मन-नामक अन्धे पिशाच का सदा करूँगा मैं अपमान।
सदा शान्ति-प्रिय बना रहूँगा सुख-दुख दोनों ही सम मान॥ २॥
नीचों के प्रिय-धन में अटका, नारी की सुध में भटका।
धर्म-विहीन कलंकित जन की मृषा-प्रीति में मैं लटका॥
बहुत दिनों तक मोह-ग्रस्त था अब दूँगा मैं ध्यान नहीं।
(इन सबकी झूठी माया से अब हूँ मैं अनजान नहीं)॥
जो तेजोमय नीलकान्ति है मन में बसी बुद्धि बनकर।
पराशक्ति की चरण-शरण हूँ भक्ति-भाव से भर अन्तर॥ ३॥
दूर हो गये भ्रम-संशय सब भय भी सारा दूर हुआ।
क्रोध-असत्य-नीचता विनसीं मन दृढ़ता-भरपूर हुआ॥
जब से, जग का सर्जन-पालन और निधन करनेवाली।
सुख-सन्तोष-सुधा से अपने मन का घट भरनेवाली॥
निर्मल श्वेत रंग वाली है जो कहलाती है काली।
उसे सहारा माना जब से तब से करती रखवाली॥ ४॥
तप को सुगम बनाया उसने, शिव को सुख से समझाया।
और विशेष भोग की स्थिति को खुले रूप से जतलाया॥
जड़-चंचल-मन को सुलझाया, रूप भव्य निज दिखलाया।
मुझमें 'मैं' का भाव मिटाकर तत्त्व 'तत्त्वमसि' सिखलाया॥
नाश अविद्या का करके जो विद्या-द्युति बनकर चमकी।
हो अनन्त! वह शक्ति-स्वरूपिणि महाशक्ति बनकर दमकी॥ ५॥

महाशक्ति की दुहाई—३४

कभी नहीं कर सकती वाणी जिसकी गरिमा का वर्णन।
कभी नहीं मति कर सकती है जिसकी महिमा का चिन्तन॥
ऐसा विस्तृत नभ बनकर तुम माता मेरी! हो संस्थित।
उस विशाल नभ में माँ! तुमने बहु ब्रह्मांड किये निर्मित॥

महाशक्ति की दुहाई—३४

(हे शक्ति!) तुम अकथनीय तथा अबुद्धिग्राह्य विशाल विस्तार (आकाश) बनकर स्थित हो। तुमने आकाश में करोड़ों ब्रह्मांडों की रचना की है। उनमें अपार गति भर दी है। उसमें एक-दूसरे के मध्य उतने योजनों की दूरी रखी है जितने, एक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मण्ड लत्तै अणुवणु वाक्किनाल् वरुवदैत्तनै अत्तनै योशनै
कॊण्ड दूरम् अवर्ऱिडै वैत्तनै कोलमे ! निनैक् काळियैन् ऱेत्तुवेन् 1
नाडु काक्कुम् अरशन् तनैयन्व नाट्टुळोर् अर शॆन्ऱऱिवार् ऍनिल्
पाडु तण्डैक् कुळन्दै तनक्किदम् पण्णुम् अप्पन् अवनैन् ऱरिन्दिडुम्
कोडि यण्डम् इयक्कि यळिक्कुम् निन् कोलम् ऐऴै कुऱित्तिड लाहुमो ?
नाडियिच् चिऱ पूमियिर् काणुनिन् नलङ्गळ् ऐत्तिड नल्लरुळ् शॆय्हवे 2
परिदि यॆन्नुम् पॊरुळिडै येय्न्वनै, परवुम् वॆय्य कदिरॆनक् काय्न्दनै
करिय मेहत् तिरळैनच् चॆल्लुवै कालु मिन्नैन वन्दुयिर् कॊल्लुवै
शॊरियुम् नीरॆनप् पल्लुयिर् पोऱ्ऱुवै; शूऴुम् वॆळ्ळम् ऍन उयिर् मार्ऱुवै
विरियुम् नीळ्कड लॆन्न निऱैन्दनै वॆल्ह काळि यॆनदम्मै वॆल्हवे 3
वायु वाहि वॆळियै अळन्दनै वाळ् वॆदर्कुम् उयिर् निलै आयिनै
तेयुवाहि ऑळियरुळ् शॆय्हुवै शॆत्त वऱ्ऱैक् करुपपॊरुळ् आक्कुवै
पायु मायिरज् जक्तिह ळाहिये पारिलुळ्ळ तॊळिल्ह ळियऱ्ऱुवै
शायुम् पल्लुयिर् कॊल्लुवै निऱ्पन् तम्मैक् कात्तुच् चुहम्पल नल्हुवै 4
निलत्तिन् कीऴ्पल् लुलोहङ्गळ् आयिनै; नीरिन् कीळिलॆण् णिलानिदि वैत्तनै
तलत्तिन् मीदु मलयुम् नदिहळुम् शारुङ् गाडुञ् जुनैकळुम् आयिनै
कुलत्ति लॆण्णऱ्ऱ पूण्डु पयिरिनम् कूट्टि वैत्तुय् पल नलन् दुय्त्तनै !
पुलत्तै यिट्टिङ् गुयिर्हळ् शॆय्दाय्, अन्ने ! पोऱ्ऱि पोऱ्ऱि निन्नरुळ् पोऱ्ऱिये 5
शित्त शागरज् जॆय्दनै आङ्गदिर् चॆय्द करम पयनॆनप् पल्हिनै

मंडल के टूटने से अणु हो सकते हैं। हे अनुपम सुन्दरी, तुम्हें 'काली' कहकर मैं तुम्हारी स्तुति करूँगा। १ किसी देश के प्रजाजन अपने देश के शासक को राजा मानते हैं। क्वणनशील पायलधारी शिशु अपने हितकारी पिता को पहचान सकता है। पर करोड़ ब्रह्माण्डों को चालित-पालित करनेवाली का— तुम्हारा हाल क्या मैं बेचारा वर्णन कर सकूँगा? इस भूमि पर तुम्हारे गुणों का अन्वेषण करके उनका गान कर पाऊ, ऐसी शक्ति देने की कृपा करो। २ तुम परिधि (रवि) नामक विषय में रहकर फैलनेवाली गरम किरणों के रूप में तपाती हो। काले मेघ-समूहों के रूप में विचरती हो। चमकती बिजली के रूप में आकर प्राणों का हरण करती हो। बरसते जल के रूप में अनेक जीवों को पालती हो। बाढ़ के रूप में घेरकर प्राणों को बदल देती हो। विशाल समुद्र के रूप में भरी हो। जय हो काली की ! जय हो हमारी माता की ! ३ तुम वायु बनकर आकाश को नापती हो। (आकाश में व्याप्त रहती हो।) तुम सभी जीवनधारियों का जीवन-केन्द्र हो। तेज बनकर उन्हें तेजोमय बनाती हो। मरे हुए जीवों को फिर से गर्भस्थ कर देती हो। हजारों प्रकार की शक्तियाँ बनकर संसार के कृत्यों को करवाती हो। अनेक मरते जीवों को मारती हो तथा जो जीवित हैं, उनकी रक्षा करके उन्हें विविध सुख दिला देती हो। ४ धरती के नीचे तुम अनेक लोक बनी हो। जल के नीचे भी तुमने असंख्यक निधियाँ रखी हैं। थल पर तुम पर्वत, नदियाँ, उनके निकटवर्ती जंगल और स्रोत बनी हो। तुमने असंख्य कुलों की जड़ी-बूटियाँ, पौधे आदि बनाकर अनेक प्रकार से (लोगों का) हित किया है। इन्द्रियों-सहित तुमने यहाँ अनेक जीवों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उनमें शक्ति अपार भरी है दूरी है उनमें इतनी।
एक अंड के मग्न कणों की विस्तृत संख्या है जितनी॥
हे विचित्र शक्तिस्वरूपिणी! मैं तुमको काली कहकर।
अगणित-गुण-गण वर्णन करके गाऊँगा संस्तुति सुन्दर॥ १॥

किसी देश की प्रजा मानती राजा उसके शासक को।
रुनझुन पायल पहने शिशु ज्यों पहचानें निज पालक को॥
किन्तु कोटि ब्रह्मांडों का तुम करतीं पालन-संचालन।
भला तुम्हारी महिमा का मैं कैसे कर सकता वर्णन॥
भूतल पर भवदीय गुणों का करके माँ मैं अन्वेषण।
कृपया शक्ति मुझे दे जिससे गा पाऊँ तेरे गुण-गण॥ २॥

रवि की प्रभा-परिधि में व्यापक किरणों को तुम देतीं ताप।
कृष्ण-मेघ-खंडों-सी नभ में विचरण-वर्षण करतीं आप॥
जल-वर्षा बन सब जीवों का माता! तुम करतीं पालन।
अगम सिंधु-सम, बाढ़-रूप से प्राणों का फिर परिवर्तन॥
कभी कड़कती बिजली-सी गिर करतीं प्राणों का संहार।
जय काली की, जय माता की, (नमस्कार शत बार अपार)॥ ३॥

बनकर वायु गगन-मंडल में हे माता! तुम व्यापक हो।
जीवन-केन्द्र सभी जीवों की हे माता! तुम पालक हो॥
तेजोमय हो, निज भक्तों को तेजोमय कर देती हो।
मृत-जीवों को फिर जननी के गर्भों में धर देती हो॥
जननि! हज़ारों ही प्रकार की कार्यशक्ति बन जाती हो।
जगतीतल के सब जीवों से सारे कृत्य कराती हो॥
मरणोन्मुख जीवों की माता! प्राण-विहीन बनाओगी।
जीवित जीवों की रक्षा कर सब सुख उन्हें दिलाओगी॥ ४॥

जननि! धरातल के भी नीचे विरचे तुमने लोक अपार।
जल में नीचे तुमने जननी! सिरजे निधियों के भंडार॥
पर्वत, नदियाँ, कानन, सोते, थल पर सभी बनाये हैं।
जड़ी-बूटियों के अगणित कुल जीव-हितार्थ लगाये हैं॥
सभी इन्द्रियों-सहित रचे हैं माता! तुमने जीव अपार।
धन्यवाद हे माता! तुमको, जयति कृपा की पारावार॥ ५॥

रचा हृदय का सागर तुमने बनीं कर्म-फल का है जल।
विविध रूप की विविध भाँति की तरल तरंगें रहीं उछल॥

को सृष्टि की है। दुहाई है तुम्हारी। तुम्हारी कृपा की जय हो। ५ तुमने चित्त-सागर को रचा और तुम स्वयं उसमें कर्मफल के विविध रूप असंख्य रीति से बन गयीं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तत्तु हिन्ऱ तिरैयुञ् जुऴिहळुम् ताक्कि यॆऱ्ऱिडुङ् गाऱ्ऱु मुळ् ळोट्टमुञ्
जुत्त मोनप् पहुदियुम् वॆणपनि शूळ्न्द पाहमुम् शुट्ट वॆन् नीरुमॆन्ऱु
ऒत्त नीर्क् कडल् पोलप् पलवहै उळ्ळमॆन्नुङ् गडलिल् अमैत्तनै 6

ऊऴिक् कूत्तु—35

वॆडिपडु मण्डत् तिडिपल ताळम् पोड— वॆरुम्
वॆळियि लिरत्तक् कळियॊडु पूदम् पाडप्— पाट्टिन्
अडिपडु पॊरुळिन् अडिपडु मॊलियिऱ् कूडक्— कळित्
ताडुङ् गाळी ! चामुण्डो ! गङ्गाळी !
अन्नै अन्नै आडुङ् गूत्तै
नाडच् चॆय्दाय् ऎन्नै 1
ऐन्दुरु पूदम् शिन्दिप् पोयॊन्ऱाहप्— पिन्नर्
अदुवुम् शक्तिक् कदियिल् मूळ्हिप् पोह— अङ्गे
मुन्दुरुम् ऒळियिऱ् चिन्दै नळुवुम् वेहत्— तोडे
मुडिया नडनम् पुरिवाय्; अडुती शॊरिवाय् !
अन्नै ! अन्नै ! आडुङ् गूत्तै
नाडच् चॆय्दाय् ऎन्नै 2
पाळाय् वॆळियुम् पदरिप् पोय् मॆय् कुलैयच्— चलनम्
पयिलुम् शक्तिक् कुलमुम् वऴिहळ् कलैय— अङ्गे
ऊळाम् पेय्तान् "ओहो हो" वॆन्ऱलैय— वॆऱित्
तुरुमित् तिरिवाय् शॆरुवॆङ् गूत्ते पुरिवाय् !
अन्नै ! अन्नै ! आडुङ् गूत्तै
नाडच् चॆय्दाय् ऎन्नै 3
शक्तिप् पेय्तान् तलैयॊडु तलैहळ् मुट्टिच्— चट्टच्
चड चड चट्टॆन्ऱुडैपडु ताळङ् गॊट्टि— अङ्गे

उछलती-कूदती चलनेवाली लहरें, भंवर, आघात करके उछाल देनेवाला पवन, आन्तरिक बहाव, शुद्ध 'मौनअंश', श्वेत हिम से आवृत स्थल, गरम जल —आदि से युक्त सागरों के समान चित्त-सागर में भी तुमने अनेक बातें निर्मित कर रखी हैं। ६

युगान्तक नृत्य—३५

फटनेवाले ब्रह्माण्डों की कड़कड़ाहट विविध रीति से ताल देती है। शुद्ध अन्तराल में रक्त पीकर उन्मत्त हुए भूत गाते हैं। हे गीतों द्वारा संकेतित पदार्थों के उठते स्वर के साथ मस्ती के साथ नाचनेवाली काली ! हे चामुंडा, कंकाली (तमिऴ में काली जैसे भयानक रूप को तथा मनुष्य को भय दिखाकर अच्छे मार्ग पर चलानेवाली देवी को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भँवर घूमते, कराघात-सम पवन उठाता सलिल अथाह।
मौन शान्त धाराएँ अगणित, हैं अनन्त आन्तरिक प्रवाह॥
धवल हिमाच्छादित हिमानियाँ, कहीं उष्ण धाराएँ हैं।
यों ही चित् सागर में तूने रचीं विचित्र विधाएँ हैं॥ ६॥

युगान्तक नाच—३५

अंडों से फटते ब्रह्मांडों की कड़कें देती हैं ताल।
पिये रक्त, उन्मत्त झूमते गाते नभ में भूत कराल॥
गीतों से गुंजित पदार्थ सब नाच रही हो तुम काली!।
जय-जय तांडव-नृत्य-परायण! जय चामुण्डा कंकाली!॥
अपना नृत्य देखने को माँ! तुमने प्रेरित किया मुझे।
नृत्य देखने का भी साहस माँ! तुमने ही दिया मुझे॥ १॥
पंचभूत बिखरें, मिल जायें, फिर वह बने शक्ति-गति-मग्न।
प्रबल-प्रचंड-प्रकाश-पुंज में चकित भ्रान्त-मन बने निमग्न॥
ऐसी द्रुत गति से तुम माता! नृत्य अनन्त दिखाओगी।
सब संसार जलानेवाली अग्नि-धार बरसाओगी॥
अपना नृत्य देखने को माँ! तुमने प्रेरित किया मुझे।
नृत्य देखने का भी साहस माँ! तुमने ही दिया मुझे॥ २॥
सब गतिशील शक्तियों के कुल अपने पथ को तज देंगे।
प्रलय-काल के भूत भयंकर चीख-चीखकर भटकेंगे॥
शून्य गगन भी काँप उठेगा होगा भीषण परिवर्तन।
तुम पागल-सी बन दिखलाओगी कराल गर्जन-नर्तन॥
अपना नृत्य देखने को माँ! तुमने प्रेरित किया मुझे।
नृत्य देखने का भी साहस माँ! तुमने ही दिया मुझे॥ ३॥
महाशक्ति के भूत भयंकर अपने सिर टकरायेंगे।
चट-चट-चट के शब्दों से विध्वंसक ताल बजायेंगे॥

'कंकाली' कहते हैं। उसमें अनादर का कोई भाव नहीं।), हे माँ! मुझे, तुमने अपने नाच को देखने को प्रेरित किया। १ पंचभूत बिखरें तथा एकत्रित हों। फिर वह (एकाकार) भी शक्ति-गति में मग्न हो जाय। वहाँ फैलते प्रकाश में मन भी फिसल ऐसी जाय, तीव्र गति के साथ तुम अनन्त नृत्य करोगी। जलनेवाली आग बरसाओगी। हे माँ, हे माँ, अपना नृत्य देखने को तुमने मुझे प्रेरित किया। २ शून्य आकाश में भी कम्पन होता है। चलनशील शक्ति-कुलों के मार्ग छोड़ते, वहाँ युगान्त के भूत के 'ओह', 'ओह' चीखते और भटकते समय तुम पागल बनकर गरजती फिरोगी, भयंकर मार नृत्य करोगी। माँ, हे माँ! अपने नृत्य को देखने के लिए तुमने मुझे प्रेरित किया। ३ शक्ति के भूत आपस में सिरों को टकराकर, 'चट चट चट चट चट' के साथ टूटते शब्द का ताल बजाकर, हर दिशा में तुम्हारी आँख की आग के जा पहुँचते ही, स्वयं जलकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅत्तिक् किनिलुम् निन्विऴि यत्तल् पोय् अॅट्टित्— तान्ने
अॅरियुङ् गोलङ् गण्डे शाहुम् कालम्
अन्नै ! अन्नै ! आडुङ्कूत्तै
नाडच् चॅय्दाय् अॅन्नै 4
कालत् तॉडु निर् मूलम् पडुमूवुलहमुम्— अङ्गे
कडवुळ् मोत्तत् तॉळिये तत्तिया यिलहुम्— शिवन्
कोलङ्गण्डुन् कत्तल् शॅय् शित्तमुम् विलहुम्— कैयैक्
कॉऴ्जित् तॉडुवायू आनन्दक्कूत् तिडुवाय् !
अन्नै ! अन्नै ! आडुङ्गूत्तै
नाडच् चॅय्दाय् अॅन्नै ! 5

काळिक्कुच् चमर्प्पणम्—36

इन्द मॅय्युम् करणमुम् पॉऱियुम् इरुपत्तेऴु वरुडङ्गळ् कात्तत्तन्
वन्दत्तम् अडि पेररुळ् अत्ताय्; वॅरवी ! तिरऱ् चामुण्डी ! काऴि !
शिन्दत्तै तॅळिन्देनिनि युन्ऱन् तिरुवरुट्कॅन्नै अर्प्पणञ् जॅय्देन्
वन्दिरुन्दु पल पयत्ताहुम् वहै तॅरिन्दु कॉळ् वाऴि यडि नी

काळि तरुवाळ्—37

अॅण्णिलाद पॉरुट्कुब तानुम् एऱ्ऱमुम् पुवियाट्चियुम् आङ्गे
विण्णिल् आदवत् नेर्न्दिडुम् ऑळियुम् वॅम्मैयुम् पॅरुन्दिण्मैयुम् अऱिवुम्
तण्णि लाविन् अमैदियुम् अरुळुम् तरुवळ् इन्ऱैत्त दत्तैयॅन् काळी !
मण्णि लार्क्कुन् दुयरिन्ऱिच् चॅय्वेन् वरुमै यॅन्बदै मण्मिशै माय्प्पेन् 1
दानम् वेळ्वि तवङ् गल्वि यावुम् तरणि मीदिल् निलै पॅऱच् चॅय्वेन्
वानम् मून्ऱु मऴैतरच् चॅय्वेन् माऱिलाद बळङ्गळ् कॉडुप्पेन्

मर जाते हैं। उस समय के, हे माँ, माँ, अपने नाच को देखने के लिए तुमने मुझे प्रेरित किया। ४ काल-सहित तीनों भुवन निर्मूल हो जायेंगे। तब ईश्वर का मौन-प्रभाव जोरदार रहेगा। उस समय शिवजी की स्थिति को देखकर तुम्हारा आग बनानेवाला क्रोध दूर हो जायगा। तब तुम दुलार के साथ उनके हाथ को स्पर्श करोगी तथा आनन्द के साथ नाचोगी। हे माँ, हे माँ ! तुम जो नाच नाचोगी, उसे देखने के लिए तुमने मुझे प्रेरित किया। ५

काली को समर्पण—३६

मैंने यह शरीर, इन अंगों तथा इन इन्द्रियों को सत्ताईस वर्ष पाला। अरी ! बहुत कृपालु माँ ! धन्यवाद ! हे भैरवी ! बलवती चामंडा ! काली ! अब मेरी बुद्धि सुलझ गयी। अब मैंने अपने आपको तुम्हारी कृपा को अर्पित कर दिया। (यहाँ) आकर रह जाओ ! विविध रूपों में सफल बनने का उपाय सिखा दो। अरी ! जय हो तुम्हारी।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आँखों की ज्वाला के बादल दिशा-दिशा मँड़रायेंगे।
निज जलने का दृश्य दिखाओगी सुर-गण घबड़ायेंगे॥
अपना नृत्य देखने को माँ! तुमने प्रेरित किया मुझे।
नृत्य देखने का भी साहस माँ! तुमने ही दिया मुझे॥ ४॥
काल-सहित तीनों भुवनों का होगा माता! भयद अभाव॥
परमेश्वर के महामौन का फैला होगा प्रबल प्रभाव॥
शिव की दशा विलोक तुम्हारा क्रोधानल भी होगा शान्त।
प्रबल प्रेम से उनका कर गह नाचोगी तुम नृत्य सुखान्त॥
अपना नृत्य देखने को माँ! तुमने प्रेरित किया मुझे।
नृत्य देखने का भी साहस माँ! तुमने ही दिया मुझे॥ ५॥

काली को समर्पण—३६

सत्ताइस वर्षों तक यह तन और इन्द्रियाँ ये पालीं।
चामुंडा! भैरवी! धन्य हो, जय माँ! कृपाकरी काली!॥
बुद्धि शुद्ध हो गई हमारी, माता! मैंने अपना मन।
जननि! तुम्हारी कृपादृष्टि को किया आज मैंने अर्पण॥
विविध सफलताएँ सिखलाकर मुझमें दृढ़ विश्वास भरो।
हे जग-जननी! जय हो, जय हो, मन-मंदिर में वास करो॥

काली देगी—३७

भूमंडल का शासन देगी मेरी माँ मेरी काली।
विविध पदार्थों की निधि देगी उन्नति देगी छबिशाली॥
बुद्धि-वीरता देगी माता, देगी रवि का ताप-प्रकाश।
शीतल शान्ति चाँदनी की दे जननि करेगी कृपा विलास॥
फिर मैं भूमंडल पर सबको दुख से हीन बनाऊँगा।
भूमंडल से दरिद्रता का नाम-निशान मिटाऊँगा॥ १॥
दान-यज्ञ-तप-विद्या सबको जग में स्थायी कर दूँगा।
विवश बना घन, तीन वृष्टियों से भूतल को भर दूँगा॥

काली देगी—३७

मेरी माँ, मेरी काली देवी, आज अगणित वस्तुओं की राशियाँ, उन्नति, पृथ्वी का शासन —यह सब मुझे प्रदान करोगी। वह उधर आकाश से सूर्य का प्रकाश और उसकी गर्मी भी देगी। वीरता और बुद्धिमत्ता देगी। शीतल चाँदनी की शान्ति तथा कृपा देगी। फिर मैं पृथ्वी पर सबको दुखहीन कर दूँगा और दरिद्रता को पृथ्वी से मिटा दूँगा। १ मैं दुनिया में दान, यज्ञ, तप, विद्या सभी को स्थायी बना दूँगा। आकाश को तीन बर्षाएँ करने को बाध्य करूँगा। (पृथ्वी को) निरन्तर सभी समृद्धियाँ दिला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मानम् वीरियम् आण्मै नन्नेर्मै वण्मै यावुम् वळङ्गुरुच् चॆय्वेन्
ञान मोङ्गि वळर्न्दिडच् चॆय्वेन् नान् विरुम्बिय काळि तरुवाळ् 2

महाकाळियिन् पुहळ्—38

(कावडिच् चिन्दु)

राग— आनन्द बैरवि; ताळ— आदि

कालमाम् वनत्तिलण्डक् कोल मा मरत्तिन् मीदु
काळि शक्ति यॆन्ऱ पॆयर् कॊण्डु— रीङ्
गारमिट् टुलवु मॊरु वण्डु— तळल्
कालुम् विऴि नील वन्न मूल अत्तु वाक्क ळॆन्नुम्
काल्हळारु डैयदॆन्नक् कण्डु— मऱै
काणु मुन्नि वोरुरैत्तार् पण्डु
मेलुमाहिक् कीऴुमाहि वेऱ्ऱळ तिशैयुमाहि
विण्णु मण्णु मान शक्ति वॆळ्ळम्— इन्द
विन्दै यॆल्ला माङ्गदु शॆय् कळ्ळम्— पऴ
वेदमायदन् मुनुळ्ळ नादमाय् विळङ्गुमिन्द
वीर शक्ति वॆळ्ळम् विऴुम् पळ्ळम्— आह
वेण्डुम् नित्त मॆन्ऱॆन्नेळै युळ्ळम् 1
अन्बु वडि वाहि निऱ्पळ् तुन्बॆला मवळिऴैप्पळ्
आक्क नीक्कम् यावु मवळ् शॆय्है— इदै
आर्न्दुणर्न्द वर्हळुक्कुण् डुय्है— अवळ्
आदिया यनादिया यहण्डरि वावळुन्ऱन्
अऱिवु मवळ् मॆन्नियिलोर् शैहै— अवळ्
आनन्दत्ति नॆल्लै यऱ्ऱ पॊय्है
इन्ब वडि वाहि निऱ्पळ् तुन्बॆला मवळिऴैप्पळ्
इःदॆला मवळ् पुरियुम् मायै— अवळ्

दूँगा। मैं ऐसा प्रबन्ध कर दूँगा कि मान, वीर्य, पौरुष, आर्जव और औदार्य आदि गुण सबके पास रहें— ज्ञान उन्नत हो बढ़े —यह भी साध्य कर दूँगा। कालीदेवी, जो भी मैं चाहूँ, वह सब मुझे दे देगी। २

महाकाली की महिमा—३८

काल रूपी कोई वन है। उसमें ब्रह्माण्ड का विचित्र बड़ा (या आम का) तरु है। उस तरु पर काली का नाम धरकर गुंजारव करता हुआ घूमता है एक भ्रमर! उसकी आँखों से आग फूट रही है। पुराने वेद-द्रष्टा मुनियों ने कहा है कि वह नीले रंग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सभी जनों को सब समृद्धियाँ करके यत्न दिलाऊँगा।
विमल ज्ञान की उन्नति होवे यह भी साध्य बनाऊँगा॥
मान - वीर्य - औदार्य - सरलता - पौरुष सबके पास रहें।
कालीदेवी सब कुछ देगी (यदि जन उसके दास रहें)॥ २॥

महाकाली की महिमा—३८

काल-विपिन में लगा हुआ है यह ब्रह्मांड-रूप तरुवर।
उस तरु पर काली-स्वरूप बन गुंजन करता एक भ्रमर॥
नील रंग है उस मधुकर का नयनों से जलती ज्वाला।
विश्व-वृक्ष का मूल बना है वह मधुकर षड् पद वाला॥
अति प्राचीन वेद-मुनियों का यही सर्वसम्मत मत है।
छः अश्वा हैं छः पग उसके, शैवतंत्र से अभिमत है॥
भू पर, नभ पर, ऊपर, नीचे सभी दिशाओं में सोत्साह।
उसकी अगम अपार शक्ति का फैला है सर्वत्र प्रवाह॥
जगतीतल में जितनी होतीं ये अद्भुत घटनाएँ हैं।
उस विनोदमय महाशक्ति की सब विचित्र लीलाएँ हैं॥
वेदों से भी अधिक पुरातन, वीरशक्तिमय नाद महान।
उसी शक्ति का कुंड बनूँ, मुझ दीन हृदय में यह अरमान॥ १॥

प्रेम-रूप बनकर वह स्थित है वही डालती सब संकट।
विश्व बनाना औ' बिगाड़ना काम उसी के (गुप्त-प्रकट)॥
इस अज्ञेय तत्त्व का जिनके मन में स्थिर है सुदृढ़ विचार।
इसे जानते और समझते उनका ही होता निस्तार॥
वह आदिम है, वह अनादि है वह अखण्ड है अनुपम ज्ञान।
मानव की यह बुद्धि उसी का हृदय-स्पन्दन ही लो जान॥
वह अपार आनन्द-सरोवर सत्य तत्त्व की छाया है।
वह सुखदाता वह दुखदाता, यह जग उसकी माया है॥

का है और उसके मूल— अश्वा (याने, शैव-सिद्धान्त-दर्शन के अनुसार कर्म से या जीवन पाने के छः साधन) के छः पैर हैं— जो शक्ति स्वयं ऊपर, नीचे तथा सब अन्य दिशाएँ और आकाश, पृथ्वी सब बनी है, उसका वह प्रवाह है। यह जो विनोदपूर्ण बातें (प्रपंच-जाल की घटनाएँ) हो रही हैं, वह उसके माया के काम हैं। यह पुराना वेद, उससे भी पुराना नाद है। वह वीरशक्ति है। वह शक्ति जिसमें भर जाए, वह गड्ढा मैं बनूँ —मेरा अकिंचन मन हमेशा यही चाहता है। १ वह प्रेमरूपा होकर स्थित है। कभी-कभी बहुत सारी झंझटें भी वही उत्पन्न कर देती है। बनाना-बिगाड़ना सब उसी का काम है। जो यह तत्त्व जानते हैं और समझते हैं उनका निस्तार होता है। वह आदि है, अनादि है। अखण्ड ज्ञान है। तुम्हारी बुद्धि भी उसकी (ज्ञान-) देह का ही एक स्पंदन है। वह आनन्द का अपार सरोवर है। वह सुखरूपिणी है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एदुमऱ्ऱ मॆय्प्पॊरुळिन् शायै— ऎनिल्
ऎण्णिये ओम् शक्ति यॆनुम् पुण्णिय मुनिवर् नित्तम्
ऎय्दुवार् मॆय्ञ् ञानमॆनुम् तीयै— ऎरित्तु
ऎऱ्ऱु वारिन् नानॆनुम् पॊय्प्पेयै 2
आदियाञ् जिवनुमवन् शोदियान शक्तियुन्दान्
अङ्गु मिङ्गु मॆङ्गु मुळवाहुम्— ऒन्ऱे
याहिना लुलहनैत्तुम् शाहुम्— अवै
यत्रि योर् पॊरुळुमिल्लै अन्रि यॊन्ऱु मिल्लै
आय्न्दिडिल् तुयरमॆल्लाम् पोहुम् इन्द
अरिवु तान् परम ञानमाहुम्
नीदिया मरशु शॆय्वर् निविहळ् पल कोडि तुय्प्पर्
नीण्ड कालम् वाळ्वर् तरै मीदु— ऎन्व
नॆरियुमॆय्दु वर् निनैत्त पोदु— अन्द
नित्त मुत्त शुत्त पुत्त शत्त पॆरुङ् काळि पद
नीळलडैन्दार्क् किल्लै योर् तीदु— ऎन्ऱुम्
नेर्मै वेदम् शॊल्लुम् वळि यीदु 3

वॆऱ्ऱि—39

ऎडुत्त कारियम् याविनुम् वॆऱ्ऱि ऎङ्गु नोक्किनुम् वॆऱ्ऱि मऱ्ऱाङ्गे
विडुत्त वाय्मॊळिक् कॆङ्गणुम् वॆऱ्ऱि वेण्डिनॆनुक् करुळिनळ् काळि !
तडुत्तु निऱ्पदु दॆय्वद मेनुम् शाहु मानुड मायिनुम् अःदेप्
पडुत्तु माय्प्पन् अरुट् पॆरुङ् गाळि पारिल् वॆऱ्ऱि ऎनक्कुरु माऱे 1
ऎण्णु मॆण्णङ्गळ् याविनुम् वॆऱ्ऱि ऎङ्गुम् वॆऱ्ऱि ऎदनिनुम् वॆऱ्ऱि
कण्णु मारुयिरुम्मॆन निन्ऱाळ् काळित् तायिङ् गॆनक्करुळ् शॆय्दाळ्;

सारा दुख भी वही देती है। यह सब उसकी माया है। वह केवल सत्यतत्व की छाया है। तो भी, जो पुण्यात्मा मुनिगण उसका स्मरण करके 'ॐ शक्ति' का जप करते हैं, उन्हें ज्ञानाग्नि प्राप्त हो जाती है। वे 'अहम्' के झूठे भूत को जलाकर दूर करते हुए ठुकरा देते हैं। २ आदिपुरुष शिव तथा शक्ति, जो उसकी ज्योति है, ही अत्र-तत्र-सर्वत्र रहनेवाले हैं। वे दोनों एक ही बनें, तो सारा जगत मिट जायगा। उनके सिवा कोई वस्तु नहीं है। कुछ नहीं है। इस तथ्य का अनुसंधान करें, तो सारा दुख दूर हो जायगा। यही परम ज्ञान है। काली की पद-छाया में जो पहुँच गये हैं, वे नित्य, मुक्त, शुद्ध, प्रबुद्ध तथा शक्ति पुरुष राज करें तो वे न्यायपूर्वक ही शासन करेंगे। वे अनेक करोड़ निधियों का भोग करेंगे। भूमि पर लम्बे समय तक जियेंगे। जो भी पद चाहें, वह पा लेंगे; और उन्हें कोई कष्ट नहीं होगा। यह सत्य वेदों का प्रतिपादित मार्ग है। ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जो पुण्यात्मा मुनिगण उसका सदा संस्मरण करते हैं।
ॐ शक्ति का जप करते हैं (नहीं विस्मरण करते हैं)॥
अपने अंतस्तल में वे मुनि ज्ञान-अग्नि प्रकटाते हैं।
ज्ञान-अग्नि से जला 'अहं' का मिथ्याभूत भगाते हैं॥ २॥
आदिपुरुष श्रीशिव औ' उनकी ज्योति-स्वरूपा शक्ति विचित्र।
ये दोनों इस निखिल विश्व में व्यापक यत्र-तत्र-सर्वत्र॥
जब शिव-शक्ति एक हो जाते तब जग का लय होता है।
(जब होते ये पृथक् तभी प्रकटित जग-आलय होता है)॥
इन्हें छोड़कर तत्त्व न कोई, जिसको है यह दृढ़ निश्चय।
उस ज्ञानी के सभी दुखों का क्षण भर में हो जाता क्षय॥
परमज्ञानमय जो काली की पद-छाया के आश्रित हैं।
शुद्ध-बुद्ध-मुक्तस्वरूप हैं नित्य भक्त जो विश्रुत हैं॥
ऐसे शक्ति-पुरुष यदि जग का करें न्याय-पूर्वक शासन।
कोटि-कोटि निधियाँ भोगेंगे करके प्राप्त दीर्घ-जीवन॥
जो भी पद वे पाना चाहें उसे शीघ्र वे पायेंगे।
वेद-विदित यह सत्य मार्ग है कष्ट न कभी उठायेंगे॥ ३॥

विजय—३९

सब कामों में माँ काली से मैंने सदा विजय माँगी।
सभी दिशाओं में काली से मैंने सदा विजय माँगी॥
मुख से निकली सब बातों की सदा सफलता ही माँगी।
सभी पूर्ण कर दी काली ने जो जो मनचाही माँगी॥
मृत्यु सुनिश्चित है मानव की, रोक न सकता उसको दैव।
संकट-मृत्यु निवार किन्तु जय देगी काली मुझे सदैव॥ १॥
मिली विजय सर्वत्र सफलता सभी मनोरथ हुए सफल।
मेरे प्यारे प्राण-नयन हैं अम्ब-अनुग्रह के ही फल॥
जय हो काली के चरणों की, जो जन ऐसा कहते हैं।
क्षिति-जल-अग्नि-पवन-नभ-सम्मुख कर जोड़े स्थित रहते हैं॥

विजय—३९

मैंने काली से अपने सभी कार्यों में विजय माँगी; दृष्टि जहाँ तक जाती है, उन सभी दिशाओं में विजय की माँग की। मुख से निकली हर बात की सफलता माँगी। काली ने मुझे वह दिला दी। चाहे देव ही रोक ले, मानव मर्त्य है, तो भी दयामयी काली संकट, मृत्यु आदि को मुझे विजय दिलाते हुए मिटा देगी। १ मेरे सभी संकल्प सफल हो गये। —कहीं भी विजय! किसी भी बात में सफलता मिली! जो स्वयं मेरे नेत्र तथा प्यारे प्राण बनी है, उस काली माँ ने मुझ पर अनुग्रह किया था। जय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मण्णुम् कार्रुम् पुनलुम् अनलुम् वानुम् वन्दु वणङ्गिनिल् लावो ?
बिण्णुळोर् पणिन् देवल् शेय्यारो ? वॆल्ह काळि पदङ्ग ळॆन्बार्क्के 2

मुत्तु मारि—40

उलहत्तु नायहिये ! —अॆङ्गळ् मुत्तु मारियम्मा, अॆङ्गळ् मुत्तु मारि !
उन् पादम् शरण् पुहुन्दोम्— अॆङ्गळ् मुत्तु मारियम्मा,अॆङ्गळ् मुत्तु मारि
कलहत् तरक्कर् पलर्— अॆङ्गळ् मुत्तु मारियम्मा, अॆङ्गळ् मुत्तु मारि
करुत्तिनुळ्ळे पुहुन्दु विट्टार्– अॆङ्गळ् मुत्तु मारियम्मा अॆङ्गळ् मुत्तु मारि !
पल कर्रुम् पल केट्टुम्— अॆङ्गळ् मुत्तु मारियम्मा, अॆङ्गळ् मुत्तु मारि
पयनॊन्रु मिल्लैयडि— अॆङ्गळ् मुत्तु मारियम्मा, अॆङ्गळ् मुत्तु मारि !
निलैयॆङ्गुम् काणविल्लै— अॆङ्गळ् मुत्तु मारियम्मा अॆङ्गळ् मुत्तु मारि !
निन्पादम् शरण् पुहुन्दोम्— अॆङ्गळ् मुत्तु मारियम्मा, अॆङ्गळ् मुत्तु मारि;
तुणि वॆळुक्क मण्णुण्डु— अॆङ्गळ् मुत्तु मारियम्मा अॆङ्गळ् मुत्तु मारि !
तोल् बॆळुक्कच् चाम् बरुण्डु– अॆङ्गळ् मुत्तु मारियम्मा, अॆङ्गळ् मुत्तु मारि!
मणि बॆळुक्कच् चाणैयुण्डु— अॆङ्गळ् मुत्तु मारियम्मा अॆङ्गळ् मुत्तु मारि !
मनम् वॆळुक्क वळियिल्लै— अॆङ्गळ् मुत्तु मारियम्मा, अॆङ्गळ् मुत्तु मारि !
पिणिहळुक्कु मार्रुण्डु— अॆङ्गळ् मुत्तु मारियम्मा, अॆङ्गळ् मुत्तु मारि !
पेदैमैक्कु मार्रिल्लै— अॆङ्गळ् मुत्तु मारियम्मा, अॆङ्गळ् मुत्तु मारि !
अणिहळुक्कॊ रॆल्लैयिल्लाय्– अॆङ्गळ् मुत्तु मारियम्मा अॆङ्गळ् मुत्तु मारि !
अडैक्कलमिङ्गुनैप् पुहुन्दोम्– अॆङ्गळ् मुत्तु मारियम्मा, अॆङ्गळ् मुत्तु मारि!

हो काली के चरणों की ! —ऐसा कहनेवालों के सामने, क्या धरती, अनिल, जल, अनल तथा आकाश, सभी आकर हाथ जोड़े खड़े नहीं रहेंगे ? क्या व्योम-निवासी (देव) विनय करके उनकी सेवा-टहल नहीं करेंगे ? २

मोती मारी (शीतला देवी)—४०

(मारी— शीतला, जो रोग समझी जाती है, उसको 'मारी' नामक देवी माना जाता है। उसे 'मुत्तुमारी' कहा जाता है, क्योंकि माता का रोग जब होता है, तब रोगी के शरीर पर मोती के आकार के फफोले निकल आते हैं। उत्तर भारत में शीतला माता के नाम से यह प्रसिद्ध है।)

लोकों की माविका ! — हमारी मुत्तुमारी माता, हमारी मुत्तुमारी ! तुम्हारे चरण तले आये हैं। हमारी मुत्तुमारी माता, हमारी मुत्तुमारी ! कलहकारी अनेक राक्षस, हमारी मुत्तुमारी माता, हमारी मुत्तुमारी ! मन में घुस गये। हमारी मुत्तुमारी माता, हमारी मुत्तुमारी ! बहुत पहले बहुत सारे, हमारी मुत्तुमारी माता,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

स्वर्ग-निवासी सुरगण करते माँ के चरणों का पूजन।
(क्यों न करेंगे उनका अर्चन ये भूतल के वासी जन)॥ २॥

मोती मारी—४०

सभी लोकों की नायक हो हमारी शीतला-माता।
हमारी शीतला-माता हमारी शीतला-माता॥
हमारे मन में पैठे हैं अमित राक्षस कलहकारी।
चरण की शरण आये हैं तुम्हारी शीतला-माता॥
सभी लोकों की नायक हो हमारी शीतला-माता।
हमारी शीतला-माता हमारी शीतला-माता॥
बहुत पढ़ने से क्या होता बहुत सुनने से क्या होता।
कहीं मुझको न गति दिखती हमारी शीतला-माता॥
चरण की शरण आये हैं तुम्हारी शीतला-माता।
सभी लोकों की नायक हो हमारी शीतला-माता॥
अरे साबुन लगाने से सदा धुलता है तन का मल।
लगाकर पाउडर करते हैं तन गोरा जो हों श्यामल॥
चढ़ाकर सान पर हीरों को कर देते विमल झलमल।
न कोई वस्तु है ऐसी बना दे मन को जो निर्मल॥
दवा रोगों की, जड़ता की दवा कुछ हो नहीं सकती।
(भला क्या मूर्खता मेरी जननि! तू खो नहीं सकती)॥
अमित निधियाँ अलंकारों की तेरे पास हैं माता।
चरण की शरण में आये तुम्हारे दास हैं माता॥
सभी लोकों की नायक हो हमारी शीतला-माता।
हमारी शीतला-माता हमारी शीतला-माता॥

हमारी मुत्तुमारी! कोई लाभ नहीं। हमारी मुत्तुमारी माता, हमारी मुत्तुमारी! गति कहीं नहीं दिखती, हमारी मुत्तुमारी माता, हमारी मुत्तुमारी! तुम्हारे चरणों तले आये। हमारी मुत्तुमारी माता, हमारी मुत्तुमारी! कपड़ा सफ़ेद करने को मिट्टी है, चमड़ा सफ़ेद करने को राख है। हमारी मुत्तुमारी माता, हमारी मुत्तुमारी! रत्न सफ़ेद करने (तराशने) को सान है। हमारी मुत्तुमारी माता, हमारी मुत्तुमारी! (पर) मन सफ़ेद (शुद्ध) बनाने का मार्ग नहीं है। हमारी मुत्तुमारी माता, हमारी मुत्तुमारी! रोगों का इलाज है, हमारी मुत्तुमारी माता, हमारी मुत्तुमारी! (पर) अज्ञता का, इलाज नहीं। हमारी मुत्तुमारी माता, हमारी मुत्तुमारी! आभूषणों की तुम्हारे पास सीमा नहीं हमारी मुत्तुमारी माता, हमारी मुत्तुमारी! (हम) तुम्हारे आश्रय में आये हैं। हमारी मुत्तुमारी माता, हमारी मुत्तुमारी!

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देश मुत्तु मारि—41

तेडियुन्नैच् चरणडैन्देन्, देश मुत्तु मारि!
केडदन्नै नीक्किडुवाय् केट्ट वरन् दरुवाय् 1
पाडियुन्नैच् चरणडैन्देन्, पाशमॅल्लाङ् गळैवाय्;
कोडिनलञ् जॅय्दिडुवाय्, कुऱैहळॅल्लान् दीर्प्पाय् 2
अॅप्पॊळुदुम् कवलैयिले इणङ्गि निऱ्पान् पावि
ऒप्पि युन्नदेवल् शॅय्वेन् उन्न दरुळाल् वाळ्वेन् 3
शक्ति यॅन्ऱु नेरमॅलान् दमिळ्क कविदै पाडि
बक्ति युडन् पोऱ्ऱि निन्ऱाल् फयमन्नैत्तुम् तीरुम् 4
आदारम् शक्ति यॅन्ऱे अरुमऱैहळ् कूरुम्;
यादानुन् दॊळिल् पुरिवोम् यादुमवळ् तॊळिलाम् 5
तुन्बमे इयऱ्कै यॅन्नुम् शॊल्लै मऱन् दिडुवोम्;
इन्बमे वेण्डि निऱ्पोम् यावुमवळ् तरुवाळ् 6
नम्बिन्नोर् कॅडुवदिल्लै नान्गु मऱैत्तीर्प्पु;
अम्बिहैयैच् चरण् पुहुन्दाल् अदिह वरम् पॅऱलाम् 7

कोमदि महिमै—42

तारुह वनत्ति निले— शिवन् शरणनन् मलरिडै युळम् पबित्तुच्
चीरुऱत् तवम् पुरिवार्— पर शिवन् पुहळमुदिने अरुन् दिडुवार्
पेरुयर् मुनिवर् मुन्ने— कल्बिप् पॅरुङ्गडल् परुहिय शूदन्नॅन्बान्
तेरु मॅय्ज् ञानत्तिनाल्— उयर् शिव निहर् मुनिवरन् शॅप्पुहिन्ऱान् 1

देश मुत्तुमारी—४१

मैं ढूंढ़ता हुआ तुम्हारी शरण में आया हूँ देश मुत्तुमारी, संकट को हर दो! मुझे माँगा वर दे दो! १ गाते हुए तुम्हारी शरण में आया हूँ। सभी पाशों को हटा दो। तुम करोड़ों (प्रकार से) हित करती हो! सभी शिकायतों को दूर कर दो। २ पापी वह है जो हमेशा चिन्तासक्त है। मैं मन लगाकर तुम्हारी सेवा करूँगा, तुम्हारी कृपा से जिऊँगा। ३ शक्ति को विषय बनाकर, सारा समय तमिळ-कविता गाते हुए (यदि) भक्ति के साथ तुम्हारी स्तुति करूँ, तो सारा भय मिट जायगा। ४ अति श्रेष्ठ वेद कहते हैं कि शक्ति ही सर्वाधार है। हम कोई भी धंधा करेंगे, सारे धन्धे उसी के हैं। ५ हम यह मसल भूल जायँगे कि दुख अवश्यंभावी तथा स्वाभाविक है। सुख ही का वर माँगेंगे और वह सब कुछ दे देगी। ६ (देवी पर) विश्वास करनेवाले संकट में नहीं पड़ते, यह चतुर्वेद का निर्णय है। अंबा की शरण जायँ, तो हम अधिक वर प्राप्त कर सकते हैं। ७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देश मुत्तुमारी—४१

खोज-खोजकर सब देशों को शरण तुम्हारी आया हूँ।
संकट हर लो, माँगा वर दो, शरण तुम्हारी आया हूँ॥ १ ॥
मेरे सब पाशों को काटो शिकायतें सब कर दो दूर।
अमित कोटि कल्याण करो माँ गाता यही भक्ति-भरपूर॥ २ ॥
कहलाता पापी चिन्तातुर सेवा करूँ लगाकर मन।
जिससे कृपा तुम्हारी पाकर सुखी रहे मेरा जीवन॥ ३ ॥
अगर शक्ति को विषय बनाकर तमिळ-काव्य मैं गाऊँगा।
भक्ति-भाव से विनय करूँगा तो भय दूर भगाऊँगा॥ ४ ॥
सर्वश्रेष्ठ यह वेद कह रहे सदा शक्ति ही सर्वाधार।
कोई भी व्यापार करें हम हैं सब उसके ही व्यापार॥ ५ ॥
दुख स्वाभाविक और अटल है यह लोकोक्ति भुला देंगे।
माता सब कुछ देगी उससे सुख का ही वर माँगेंगे॥ ६ ॥
विश्वासी दुख नहीं भोगते, चारों वेदों का निर्णय।
जो अम्बा की शरण गहें तो मिलें सभी वर, यह निश्चय॥ ७ ॥

गोमती-महिमा—४२

दारुक वन में बसकर जो मुनि श्रेष्ठ तपस्या करते थे।
परमेश्वर के महिमामृत को पीकर शिव को भजते थे॥
ऐसे पावन तपस्वियों के उस उत्कृष्ट तपोवन—में।
सहसा आकर सौम्य सूत मुनि बोले हो प्रमुदित मन में॥
वे विद्या सागर-पायी थे सत्य ज्ञान परिनिष्ठित थे।
ऋषियों, मुनियों के मंडल में शिव के सदृश प्रतिष्ठित थे॥ १ ॥

गोमती-महिमा—४२

[दक्षिण में शंकरनारायणर् कोयिल या शंकर नयिनार् कोयिल नाम का एक स्थान है, जहाँ के प्रसिद्ध मंदिर में शंकर तथा नारायण की जुड़ी हुई मूर्ति है। उस मंदिर की देवी का नाम गोमती है। भारती उसकी कहानी कहने चले, पर पूरा नहीं कर पाये। इस स्थल पर तथा इस गीत में विष्णु ही शिव हैं।]

दारुक वन में शिवचरण-कमलों का स्मरण करते हुए श्रेष्ठ तपस्या में लीन रहनेवाले तथा परमेश्वर की महिमा रूपी अमृत का पान करनेवाले उत्कृष्ट मुनिवरों के सामने, शिव-सदृश सूत मुनि जो विद्यासागरपायी तथा सत्यज्ञाननिष्ठ थे, आये और कहने लगे। १ जिओ, मुनिवरो! वर्धनशील यशस्वी शंकरन कोयिल में यह बात

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाळ्ळिय मुनि वर्हळे !— पुहळ् वळर्त्तिडुञ् जङ्गरन् कोयिलिले,
ऊळ्ळियैच् चमैत्त पिरान्— इन्द उलहमॅला मुरुक्कॊण्ड पिरान्,
एळ्ळिरु शुबत्तिलुम्— ऍन्रुम् इयल् पॅरुम् उयिर्हळुक् कुयिरावान्,
आळु नल्लरि बावान्— ऑळि यरिवित्तैक् कडन्द मॅय्प्पॊरुळावान् 2
तेवर्क् कॅलान् देवन्— उयर् शिव पॅरुमान् पण्डॊरु कालत्तिले
कावालि नुलहळिक्कुम्— अन्दक् कण्णनुन् दानुमिङ् गोरुरुबाय्
आवलो डरुन्दवङ्गळ्— पल आर्रिय नाहर्हळ् इरुवर् मुन्ने
मेवि निन्रुरुळ् पुरिन्दान्— अन्द वियप्पुरु सारिदयै विळम्बुहिन्रेन् 3
केळीर् मुनिवर्हळ !— इन्दक् कीर्ति कॊळ् शरिदैयैक् केट्टवर्क्के
वेळ्विहळ् कोडि शॅय्दाल्— शदुर् वेदङ्गळायिर मुरै पडित्ताल्
मूळु नर् पुण्णियन्दान्— वन्दु मॅय्त्तिडुम् शिव नियल् विळङ्गि निर्कुम्,
नाळुनर् चॅल् वङ्गळ्— पल नणुहिडुम्, शरद मॅय् वाळ्वण्डाम् 4
इक्कदै उरैत्तिडुवेन्— उळम् इन्बुरुक् केट्पीर्, मुनिवर्हळे !
नक्क पिरानरुळाल्— इङ्गु नडैपॅरुम् उलहङ्गळ् कणक्किलवाम् !
तॊक्कन अण्डङ्गळ्— वळर् तॊहैपल् कोडि पल् कोडिहळाम् !
इक्कणक् कॅवरिवार् ?— पुवि ऍत्तनै युळदॅन्बदि यारिवार् ! 5
नक्क पिरानरिवान्; मर्रु नानरियेन् पिर नररियार्,
तॊक्क पेरण्डङ्गळ्— कॊण्ड तॊहैक् कॅल्लैयिलै यॅन्रु शॊल्लु हिन्र
तक्क पल् शात्तिरङ्गळ्— ऑळि तरुहिन्र वानमोर् कडल् पोलाम्;
अक्कडलदनुक्के— ऍङ्गुम् अक्करै इक्करै यॊन्रिलैयाम् 6
इक्कडलदनुक्के— अङ्गङ् गिडैयिडैत् तोन्रुम् पुनुकुमिळ्हळ् पोल्
तॊक्कन उलहङ्गळ्; तिशैत् तूवॆळि यदनिडै विरैन्दोडुम्,
मिक्क दॊर् वियप्पुडैत्ताम्— इन्द वियप्पॆरु वैयत्तिन् काट्चि, कण्डीर् !
मॅय्क्कलै मुनिवर्हळे !— इदन् मॅय्प्पॊरुळ् परशिवन् शक्ति, कण्डीर् ! 7

घटित हुई। युग-सर्जक प्रभु, सातों भुवनों के वासी जीवों के प्राण, गम्भीर बुद्धिस्वरूप, बुद्धि से परे रहनेवाले, देवों के देव, श्रेष्ठ शिवजी ने प्राचीन काल में किसी समय लोक-पालक कृष्ण को अपने में मिला लिया, वे एकरूप बने। फिर वे उन दो नागों के सामने प्रगट हुए, जिन्होंने उत्साह के साथ कठोर तपस्याएँ की थीं। शिवदेव ने उन पर अनुग्रह किया। उस विस्मयकारी कहानी को अब मैं सुनाऊँगा। २-३ सुनो ! हे मुनिगण ! इस प्रकीर्तित कहानी को जो सुनता है, उसे वह पुण्य मिलेगा, जो करोड़ों यज्ञ सम्पन्न करनेवाले को मिल जाता है; या जो चारों वेदों को सहस्रों बार पढ़ चुका हो, उसे मिलता है। उसे शिव की कृपा प्राप्त होगी। प्रतिदिन सम्पत्तियाँ मिलेंगी। शाश्वत जीवन मिलेगा। ४ मैं यह शुभ चरित्र बखान करूँगा। उसे आनन्द-पूर्वक सुनो। हे मुनियो ! जो शिवजी की कृपा से यहाँ चलते हैं, वे लोक असंख्यक हैं। करोड़ों अंडों की राशियाँ हैं। उनका गणन कौन जानता है ? —यह कौन जानता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वर्धनशील यशस्वी सुन्दर सुखद शंकरन कोयिल में।
जिओ मुनिवरो! गूँजी वाणी व्याप्त हुई वह तिल-तिल में॥
जो सातों भुवनों के वासी जीवों के हैं प्राण-स्वरूप।
जो बुद्धि से परे होकर भी हैं गंभीर बुद्धि के रूप॥
जो देवों के देव, श्रेष्ठ, शिव, महादेव कहलाते हैं।
जिन प्रभुवर को सभी देवगण युग-सर्जक बतलाते हैं॥
अति-प्राचीन-काल में, मुनियो! वही श्रेष्ठ शिव जग-पालक।
एक रूप बन मिले कृष्ण के तन में जग के संचालक॥
अति उत्साहपूर्ण होकर के था जिनने तप किया विकट।
उन दो नागों के सम्मुख फिर कृष्णरूप शिव हुए प्रकट॥
उन पर कैसे किया अनुग्रह शिव ने यह समझाऊँगा।
उनकी अद्भुत कथा पुरातन सबको आज सुनाऊँगा॥ २-३॥

यह अति पावन कथा मुनिगणो! जो जन सादर सुनता है।
कोटि-कोटि यज्ञों का पावन पुण्य असंशय मिलता है॥
एक सहस्र वेद-पारायण का मिलता है फल उसको।
सुख-सम्पति औ' शाश्वत-जीवन मिले शिव-कृपा-बल उसको॥ ४॥

मुनियो! मन दे सुनो कर रहा शुभ चरित्र का मैं वर्णन।
शिव की कृपादृष्टि से जिनका होता प्रतिपल-संचालन॥
ऐसे हैं ब्रह्मांड करोड़ों लोक असंख्यक हैं अनगिन।
कौन कर सके उनकी गणना कौन करे उनका ज्ञापन॥ ५॥

यह रहस्य मैं नहीं जानता और न जाने कोई नर।
इस रहस्य के गुप्त भेद के ज्ञाता केवल शिवशंकर॥
हैं असीम ब्रह्मांड-राशियाँ ऐसा कहते शास्त्र अपार।
सिन्धु-सदृश नभ है प्रकाश-प्रद नभ-सागर का आर न पार॥ ६॥

नभ-सागर के बुद्बुद-सम ही विविध लोक-लोकान्तर हैं।
पूत दिशाओं के अन्तर्गत जो घूमते निरन्तर हैं॥
अति आश्चर्य-जनक इस जग का, मुनियो! देखो अद्भुत दृश्य!।
है शिव-शक्ति सर्व-संचालक यही शास्त्र का गूढ़ रहस्य॥ ७॥

है कि ये लोक कितने हैं। ५ उसे प्रभु शिवजी जानते हैं। मैं नहीं जानता। अन्य कोई भी मनुष्य नहीं जानता। विश्व रूपी अंडों की राशियों की कोई सीमा नहीं है। ऐसा कहनेवाले सुयोग्य शास्त्र अनेक हैं। प्रकाश देनेवाला आकाश एक समुद्र के समान है। उस सागर का न आर है, न पार है। ६ इस सागर के इधर-उधर होनेवाले छोटे-छोटे बुदबुदों के समान हैं ये राशीकृत लोक! वे दिशाओं के बीच के पवित्र अन्तराल में बड़े वेग से चलते रहते हैं। वह बहुत विस्मयकारी बात है। इस आश्चर्य-कारी विश्व का दृश्य देखो। हे मुनियो, सत्यशास्त्रज्ञ मुनिगणो! तुम इसकी सच्ची वस्तु (आधार वस्तु) जो परमेश्वर की शक्ति है, इसे जान लो! ७ दिशाओं और आकाश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍल्लैयुण्डो इल्लैयो ?— इङ्गु यावर् कण्डार् तिशै वॆळियिनुक्के
शॊल्लुमॊर् वरम्बिट्टाल्— अदै.....
(यह पूरा नहीं हुआ है।)

शाहा वरम्—43

पल्लबि (टेक)

शाहा वरमरुळ्वाय्, रामा
शदुर्मरै नादा ! सरोज पादा

शरणङ्गळ् (चरण)

आकाशन् दीकाल् नीर्मण् अत्तनै बूदमुम् ऒत्तु निरैन्दाय्
एकामिर्दमाहिय निस्ताळ् इणै शरणॆन्ऱाल् इदु मुडियादा ? (शाहा) 1
वाहार् तोळ् वीरा, दीरा, मन्मद रूबा, वानवर् बूपा
पाकार् मॊळि शोदैयिन् मॆन्ऱोळ् पळहिय मार्बा ! पद मलर् शार्बा ! (शाहा) 2
नित्या निर्मला, रामा, निष्कळङ्गा, सर्वा, सर्वा दारा,
सत्या, सनातना रामा शर्णम्, शरणम् शरण मुदारा ! (शाहा) 3

गोविन्दन् पाट्टु—44

कण्णिरण्डुम् इमैयामल् शॆन्निऱत्तु, मॆल्लिदळ्प्पूङ् गमलत्तॆय्वप्
पॆण्णिरण्डु विळिहळैयुम् नोक्किडुवाय्, गोविन्दा ! पेणिनोर्क्कु
नण्णिरण्डु पॊऱ्पाद मळित् तरुळ्वाय्, शराशरत्तु नादा ! नाळुम्
ऍण्णिरण्डु कोडियिनुम् मिहप् पलवाम्, वीण् कवलै ऍळिय नेर्के 1

की कोई सीमा है, या नहीं है ? कौन जानता है ? एक सीमा कहें तो··· उसे··· (यह पद्य अपूर्ण है।)

न मरने का वर—४३

न मरने का वर दो, हे राम ! चतुर्वेदनाथ ! सरोजचरण ! (टेक) तुम आकाश, अग्नि, वायु, जल, धरती— सभी भूतों में सम रूप से भरे हो। तुम्हारे अमृतमय 'चरणद्वय की शरण' कहूँ, तो यह क्या असम्भव है ? (न मरने०) १ सुगठित भुजाओं वाले वीर ! धीर ! मन्मथ-रूप ! देवों के राजा ! वाशनी-सी मधुर-भाषिणी सीता के मृदुल कन्धों के आलिंगन के अभ्यस्त वक्ष वाले ! चरण-कमल का सहारा देनेवाले ! (न मरने०) २ नित्य ! निर्मल, राम, निष्कलंक, सर्व, सर्वाधार ! सत्य, सनातन ! राम ! शरण, शरण, शरण ! हे उदार ! शरण ! (न मरने०) ३

गोविन्द-गीत—४४

लाल, मृदु पंखुड़ियों वाले कमल-पुष्प में रहनेवाली देवी (लक्ष्मी) की दोनों आँखों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

है अनन्त आकाश, दिशाओं का भी नहीं कहीं है अन्त।
कौन जानता इनकी सीमा, सीमा केवल शिव भगवन्त॥

अमरता का वर—४३

हे चारों वेदों के स्वामी! हे सरोज-सम चारु-चरण!।
राम! अमरता का वर दे दो, अमर बनूँ मैं, हो न मरण॥
पृथ्वी में जल में पावक में पवन और नभमंडल में।
सब भूतों में व्यापक हो तुम एक रूप से जल-थल में॥
दोनों पावन चरण तुम्हारे सरस सुधामय हैं, प्रभुवर!।
बात असंभव—भय न दूर हो, उनकी सुखद शरण गहकर॥
तुम अशरण को शरण दे रहे मुझको भी दो नाथ शरण।
राम! अमरता का वर दे दो, अमर बनूँ मैं, हो न मरण॥ १॥

हे सुगठित भुजदंडों वाले! कामदेव-सम सुंदर हो।
धैर्य-धुरंधर विपुल-वीर हो, सब देवों के ईश्वर हो॥
मधुरभाषिणी जनक-दुलारी सीता के कंधे कोमल।
उनका आलिंगन करने का अभ्यासी तव वक्षस्थल॥
अशरण-शरण प्रसिद्ध सदा से राम! तुम्हारे चारु चरण।
राम! अमरता का वर दे दो, अमर बनूँ मैं, हो न मरण॥ २॥

सत्य, सनातन, सर्वरूप हो सर्वाधार, समुज्ज्वल हो।
निष्कलंक हो नाथ! राम! तुम सदा नित्य हो निर्मल हो॥
अति उदार है हृदय तुम्हारा ताप हमारे करो हरण।
राम! अमरता का वर दे दो, अमर बनूँ मैं, हो न मरण॥ ३॥

गोविन्द-गीत—४४

अरुण-मृदुल-दलवाले विकसित-शतदल पर बसनेवाली।
लक्ष्मी की आँखों को अपलक लखनेवाले वनमाली!॥
हे गोविन्द! चराचर-स्वामी! भक्तजनों पर कृपा करें।
दे चरणों की शरण प्यार से उनके मन का ताप हरें॥
कोटि-कोटि चिन्ताएँ प्रतिदिन प्रभुवर! मुझे सताती हैं।
(प्रबल अग्नि की ज्वालाओं-सी तन-मन सभी जलाती हैं)॥ १॥

को अपने दोनों अपलक नेत्रों से देखते रहनेवाले हे गोविन्द! हे चराचरनाथ! भक्ति करनेवालों को प्यार से अपने सुन्दर चरणों को देने की कृपा करें। प्रतिदिन सोलह करोड़ से बहुत अधिक चिन्ताएं मुझे सताती हैं। १ हे ईश्वर, 'मैं-मेरा'—ऐसी मेरी झंझट

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍऴियऩेऩ् याऩॆऩलै ऍप्पोदु पोक्किडुवाय्, इऱैवऩे ! इव्
वऴियिले पऱवैयिले मरत्तिऩिले मुहिलिऩिले वरम्बिल् वाऩ
बॆऴियिले कडलिडैये मण्णहत्ते वीदियिले वीट्टिलॆल्लाम्
कऴियिले गोविन्दा निऩैक्कण्डु निऩ्ऩॊडुनाऩ् कलप्पदॆऩ्ऱो ? 2
ऍऩ् कण्णै मऱन्दुनिरु कण्गळैये ऍऩ्ऩहत्तिल् इशैत्तुक् कॊण्डु
निऩ् कण्णऱ् पुवियॆल्लाम् नीयॆत्वे नाऩ् कण्डु निऱैवु कॊण्डु
वऩ् कण्मै मऱदियुडऩ् शोम्बर् मुदर् पावमॆल्लाम् मडिन्दु नॆञ्जिऱ्
पुऩ्कण् पोय् बाऴ्ऩ्दिडवे, गोबिन्दा ! ऍऩक्क मुदम् पुहट्टुवाये ! 3

कण्णऩै वेण्डुदल्—45

'वेद बाऩिल् विळङ्गि अऱम् जॆय्मिऩ्, शादल् नेरिनुम् जत्तियम् पूणुमिऩ्
तीबहऱ्ऱमिऩ् ऍऩ्ऱु तिशैयॆलाम्, मोद निऩ्तम् इडित्तु मुऴङ्गिये 1
उण्णुञ् जादिक् कुऱ्ऱमुम् शाबुमे, नण्णु ऱावणम् नऩ्गु पुरऩ्दिडुम्
ऍण्ण रुऩ्ऩुहह्क् कीवैयॆनच् चॊलुम्, पण्ण मिऴ्दत् तरुळ्मऴै पालित्ते 2
ऍङ्गळारिय बूमियॆऩुम् पयिर्, मङ्गळम् पॆऱ निऩ्तलुम् बाऴ्विक्कुम्
तुङ्ग मुऱ्ऱ तुमै मुहिले मलर्च्च, चॆङ्गणायनिऩ् पद मलर् शिन्दिप्पाम् 3
वीरर् वॆय्बदम् कर्म विळक्कु नऱ्, पारदर् शॆय् तबत्तिऩ् पयऩॆऩुम्
तारबिर्न्द तडम् पुयप् पार्त् तऩोर्, कारणम् मॆऩक् कॊण्डु कडबुळ् नो ! 4
निऩ्ऩै नऩ्बि निलत्तिडै यॆऩ्ऱुमे, मऩ्ऩु पारद माण्गुलम् याविऱ्कुम्
उऩ्ऩुङ् गालै उयर्तुणै याहबे, शॊऩ्ऩ शॊल्लै युयिरिडैच् चूडुवोम् 5
ऐय केळिमि योर् शॊल् अडियर् याम्, उय्प निऩ्मॊऴि पऱ्ऱि यॊऴुहिये
मैयऱम् पुहऴ् बाऴ्क्कै पॆऱ्ऱ्कॆऩच्, चॆय्युम् शॆय्हैयि निऩ्ऩरुळ् शेर्प्पॆयाल् 6

को आप कब दूर करेंगे ? हे गोविन्द ! वह दिन कब आयगा जब मैं पवन, पक्षी, तरु, मेघ, असीम आकाश, समुद्र, पृथ्वी, वीथियों, घरों में— सर्वत्र आपको पाकर आप ही में लय हो जाऊँ ? २ मैं अपनी दोनों आँखों को मूलकर आपकी दोनों आँखों को ही अपने हृदय में धारण करूँगा। आपकी आँखों द्वारा ही सारे विश्व को देखूंगा और आपको ही देखूंगा। और जी भर देख लूंगा। हे गोविन्द ! आप मुझे अमृत पिलायें ताकि मेरी कठोरता, विस्मरण, आलस्य, पाप आदि हट जायें तथा हृदय की नीचता दूर हो जाय और मैं (श्रेष्ठ भक्तों का जीवन) जिऊँगा। ३

कृष्ण से प्रार्थना—४५

(हे कमलाक्ष !) ऐसी गीता वेदाकाश में स्थित होकर दिशाओं में जाकर गूंजती हुई यह घोषित करती है कि धर्माचरण करो ! मरना भी पड़े तो सत्य का व्रत धारण किये रहो। और वह दोष और मृत्यु से जीवों को बचाती है। गीता कथित अपार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'मैं', 'मेरा'—यह ममता, झंझट सकल हरेंगे कब ईश्वर ?।
वह सुंदर दिन कब आयेगा बतलाओ हे विश्वेश्वर !॥
जब मैं मेघ - पवन - तरु - पक्षी - अगम गगन - सागर - भूतल।
सदन-वीथियों सबमें तुमको लख लय होऊँ मैं अविचल॥ २ ॥
निज नयनों को भूल आपके नयनों को उर में धर लूँ।
और आपके नयनों से जग-छवि तव-छवि दर्शन कर लूँ॥
मन भरकर मैं देखूँ जग की जगदीश्वर की छवि सुंदर।
हे गोविन्द ! पिला दें मुझको ऐसी पावन-सुधा मधुर॥
जिससे आलस-पाप-विस्मरण-कठोरता सबका हो नाश।
नीच-भाव हों दूर भक्त-सा नवजीवन दो परम-प्रकाश॥ ३ ॥

कृष्ण से प्रार्थना—४५

सदा धर्म का करो आचरण और सत्य का व्रत धारो।
अगर मृत्यु सामनें खड़ी हो तो भी नहीं नियम टारो॥
वेद-गगन में संस्थित होकर गीता घोषित करती है।
सभी दिशाओं को गुंजित करके संबोधित करती है॥
गीता जीवों को दोषों से औ' मृत्यु से बचाती है।
(गीता जग के सब जीवों को कर्मयोग सिखलाती है)॥
ऐसी ज्ञानमयी गीता का शुभ प्रवचन करनेवाले !।
हे अपार महिमामय मधुमय कृपावृष्टि करनेवाले !॥ १-२ ॥
हो तुम मेघ, बढ़ानेवाले आर्यभूमि के तरुवर को।
हे कमलाक्ष ! करेंगे वन्दन तव-पद-पंकज सुंदर को॥ ३ ॥
हे वीरों के देव ! कर्म के दीप ! वीर जन के तप-फल।
हे वन-माला-धारी भगवन् ! दिया पार्थ को ज्ञान विमल॥
सभी भारतीयों को वह उपदेश अमोघ सहारा है।
उन उपदेशों को हम सबनें निज प्राणों में धारा है॥ ४-५ ॥
हे भगवन् ! हम सभी करेंगे तव उपदेशों का पालन।
जिससे हो उद्धार, सुयश हो, बनें कलंक-रहित जीवन॥
हे भगवन्। इन उद्देश्यों से करते हम जो कर्म सकल।
प्रभो ! अनुग्रह का बल देकर उन्हें कीजिए सदा सफल॥ ६ ॥

महिमावाले संगीतमयी अमृत की कृपा की वर्षा करानेवाले ! १-२ हमारे आर्यभूमि के पौधे को मंगल के साथ रोज बढ़ानेवाले उन्नत मेघ ! हे कमलाक्ष ! हम आपके चरण-कमलों का स्मरण करेंगे। ३ वीरों के देव, कर्म-दीप, भारत-वीरों के तपोफल, मालाधारी विशालभुज पार्थ को निमित्त बनाकर, हे भगवान, आपने उपदेश दिया। वह सभी भारतीय कुलों को विचार करने पर बाध्य बनानेवाला है। उस उपदेश के वचनों को हम अपने प्राणों में धारण करेंगे। ४-५ प्रभु, सुनो एक बात ! हम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऒप्पिलाद उयर्वॊडु कल्वियुम्, ऎय्प्पिल् वीरमुम् इप्पुवि याट्चियुम्
तप्पिलाद तरुममुङ् गॊण्डु याम्, अप्पत्ते निन्नडि पणिन्दुय्वमाल् 7
मऱ्ऱु नीयिन्द वाळ्बु मऱुप्पैयेल् शऱ्ऱु नेरत्तुळ ऎम्मुयिर् शाय्त्तरुळ्
कॊऱ्ऱवा ! निन् कुवलय मीदिनिल्, वॆऱ्ऱु वाळ्क्कै विरुम्बि यळिहिलेम् 8
निन्ऱत् मा मरबिल् वन्दु नी शराय्प्, पॊन्ऱल् वेण्डिलम् पॊऱ्कळ लाणैकाण्
इन्ऱिङ् गॆम्मै यदम्पुरि, इल्लैयेल्, वॆन्ऱियुम् पुहळुन् दरल् वेण्डुमे 9

वरुवाय् कण्णा—46

पल्लवि (टेक)

वरुवाय्, वरुबाय्, वरुवाय्— कण्णा !
वरुबाय्, वरुवाय्, वरुवाय् !

शरणङ्गळ् (चरण)

उरुवाय् अऱिविल् ऒळिर्वाय्— कण्णा !
उयिरिन् नमुदाय्प् पॊळिवाय्— कण्णा !
करुवाय् ऎन्नुळ् बळर्वाय्— कण्णा!
कमलत् तिरुवो डिणैवाय्— कण्णा ! (वरुबाय्) 1
इणैवाय् ऎन्नदावियिले— कण्णा !
इदयत्तिनिले यमर्वाय्— कण्णा !
कणैवा यशुरर् तलैहळ्— शिवऱक्
कडैयूळियिले पडैयो डॆळुवाय् ! (वरुवाय्) 2
ऎळुवाय् कडल्मी दिनिले— ऎळुमोर्
इरविक् किणैया उळमो दिनिले
तॊळुवेन् शिवनाम् निनैये— कण्णा !
तुणैये अमरर् तॊळुम् वानवने (वरुवाय्) 3

भक्त उद्धार के लिए आपके कथन का अनुसरण करेंगे। और कलंकहीन यशस्वी जीवन जियेंगे। तथ्यं, हम जो कर्म करते हैं उसमें तुम अपना अनुग्रह मिला दो। ६ अनुपम उन्नति, विद्या, अचूक वीरता, धरती का शासन, अडिग धर्म —इन सबके साथ हम, हे तात ! आपके चरणों को नमस्कार करके उद्धार को प्राप्त होंगे। ७ अगर तुम ऐसा जीवन देने से इनकार करो, तो कुछ ही देर में हमारे प्राणों को निकालकर गिरा दो। हे राजा ! तुम्हारे संसार में हम निरर्थक जीवन पाकर मिट जाना नहीं चाहते। ८ हम तुम्हारे अत्युन्नत वंश में आये; फिर नीच बनकर मरना नहीं चाहते। तुम्हारे स्वर्णचरणों की सौगन्द। अभी हमें हत कर दो। नहीं तो आपको हमें विजय तथा यश अवश्य देना पड़ेगा। ९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनुपम उन्नति, निर्मल विद्या, धर्म अडिग, सुन्दर शासन।
औ' अचूक वीरता-सहित हम प्रभो! करेंगे पग-वन्दन ॥ ७ ॥
यदि ऐसा जीवन देना प्रभु तुमको है स्वीकार नहीं।
तो मेरे तन में भी प्राणों का तुम करो प्रचार नहीं॥
हे जगदीश! तुम्हारे जग में लेकर यह निरर्थ जीवन।
प्रभु! हम जीना नहीं चाहते समुद करेंगे मृत्यु-वरण ॥ ८ ॥
हे भगवन्! हम तव भक्तों के उन्नत कुल में आ करके।
जीवित-शव-सम नहीं बनेंगे नीच-भाव अपना करके॥
स्वण-वर्णमय तव चरणों की है सौगंध हमें प्रभुवर!।
या तो विजय सुयश दो मुझको अथवा लो प्राणों को हर ॥ ९ ॥

आओ कृष्ण (कान्हा)—४६

आओ, आओ, आओ, कान्हा! आओ, आओ, आओ कृष्ण! ॥ टेक ॥
प्रभो! ध्यान में मूर्तिमान हो अपनी शोभा दिखलाओ।
प्राणों में अम्रित बन बरसो हृदय-गर्भ में बस जाओ॥
हे कमला के कान्त! कन्हैया! कृपा-सुधा बरसाओ कृष्ण!।
आओ, आओ, आओ, कान्हा! आओ, आओ, आओ, कृष्ण! ॥ १ ॥
बाणों से असुरों के मस्तक काट-काट बिखराते हो।
तुम युगान्त में सेना लेकर शत्रु-समूह मिटाते हो॥
मेरे प्राणों से जुड़ जाओ औ' मन में बस जाओ कृष्ण!।
आओ, आओ, आओ, कान्हा! आओ, आओ, आओ, कृष्ण! ॥ २ ॥
तुम्हीं शान्त शिव का स्वरूप हो कृष्ण! कन्हैया! तुम्हें प्रणाम।
सदा सहायक हो तुम मेरे हो सुरवंदित देव ललाम॥
सागर-तल पर उठनेवाले रवि-समान मुसकाओ कृष्ण!।
आओ, आओ, आओ, कान्हा! आओ, आओ, आओ, कृष्ण! ॥ ३ ॥

आओ कृष्ण (कान्हा)!—४६

आओ, आओ, आओ, कान्हा! आओ, आओ, आओ! (टेक) बुद्धि में (ध्यान में) रूप धरकर शोभा दिखाओ, हे कान्हा! प्राणों में अमृत होकर बरसो, हे कृष्ण! मेरे अन्दर गर्भ के रूप में पलो— हे कृष्ण! श्री कमला से मिले रहनेवाले, हे कृष्ण! (आओ०) १ मेरे प्राणों में घुल-मिल जाओ! हे कृष्ण! मेरे हृदय में विराजो! हे कृष्ण! बाणों से असुरों के सिरों को छितराने के निमित्त युगान्त में सेना के साथ निकलनेवाले हे कृष्ण! (आओ०) २ समुद्र में से उग आनेवाले सूर्य के समान मेरे हृदय में उदय हो आओ— हे कृष्ण! तुम शिव हो! मैं तुम्हें प्रणाम करूँगा! हे कृष्ण! हे सहायक! हे सुरवंदित देव! (आओ०) ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्ण पॆरुमाऩे—47

कायिले पुळिप्पदॆऩ्ऩे कण्ण पॆरुमाऩे— नी
कऩियिले इऩिप्प दऩ्ऩे ? कण्ण पॆरुमाऩे !
नोयिले पडुप्प दॆऩ्ऩे ? कण्ण पॆरुमाऩे-— नी
नोऩ्बिले उयिर्प्प दॆऩ्ऩे ! कण्ण पॆरुमाऩे ! 1
काऱ्ऱिले कुळिर्न्द दॆऩ्ऩे कण्ण पॆरुमाऩे— नी
कऩलिले शुडुव दॆऩ्ऩे कण्ण पॆरुमाऩे
शेऱ्ऱिले कुळम्ब लॆऩ्ऩ ? कण्ण पॆरुमाऩे— नी
तिक्किले तॆळिन्द दॆऩ्ऩे, कण्ण पॆरुमाऩे ! 2
एऱ्ऱि निऩ्ऩैत् तॊळुव वॆऩ्ऩे, कण्ण पॆरुमाऩे ! नी
ऍळियर् तम्मैक् काप्प दॆऩ्ऩे ! कण्ण पॆरुमाऩे !
पोऱ्ऱि नारैक् काप्प दॆऩ्ऩे ? कण्ण पॆरुमाऩे- नी
पॊय्यर् तम्मै माय्प्प दॆऩ्ऩे ? कण्ण पॆरुमाऩे ! 3

वेऱु

पोऱ्ऱि ! पोऱ्ऱि ! पोऱ्ऱि ! पोऱ्ऱि, कण्ण पॆरुमाऩे !— निऩ्
पॊऩ्ऩडि पोऱ्ऱि निऩ्ऱेऩ्, कण्ण पॆरुमाऩे !

नन्द लाला—48

राग— यदुकुल काम्बोदी; ताळ— आदि

काक्कैच् चिऱहिऩिले नन्द लाला !— निऩ्ऱऩ्
करिय निऱऩ् दोऩ्ऱु दैये, नन्द लाला ! 1
पार्क्कुम् मरङ्ग ळॆल्लाम् नन्द लाला !-निऩ्ऱऩ्
पच्चं निऱऩ् दोऩ्ऱुदैये, नन्द लाला 2
केट्कु मॊलियि लॆल्लाम् नन्द लाला !— निऩ्ऱऩ्
गीद मिशैक्कुदडा, नन्द लाला 3
तीक्कुळ् विरलै वैत्ताल् नन्द लाला !— निऩ्ऩैत्
तीण्डु मिऩ्बऩ् दोऩ्ऱुदडा, नन्द लाला ! 4

हे प्रभु कृष्ण—४७

हे प्रभु कृष्ण ! तुम कच्चे फल में खटाई के रूप में क्यों रहते हो ? (पक्व) फल में मधुर क्यों लगते हो ? हे प्रभु कृष्ण ! रोग में तुम शयन के रूप में क्यों रहते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रभु कृष्ण—४७

कच्चे फल में खट्टा रस बन क्यों बसते हो हे प्रभुवर !।
और पके फल में मधुरस बन क्यों बसते हो परमेश्वर !॥
प्रबल रोग में क्यों प्रभुवर ! तुम मृत-समान बन जाते हो।
और व्रतों के परिपालन में क्यों जीवित दिखलाते हो॥ १ ॥

हे प्रभुवर ! हे कृष्ण ! पवन में क्यों शीतल बन जाते हो ?।
और आग की ज्वालाओं में क्यों संतप्त दिखाते हो ?॥
मलिन बनें हो पंक बीच क्यों ? हे प्रभुवर ! बतलाओ तुम।
स्वच्छ बनें क्यों दिव्य दिशाओं में प्रभुवर ! समझाओ तुम॥ २ ॥

स्तुति-प्रार्थना सभी करते क्यों तव-गुण-महिमा को गाकर ?।
क्यों दीनों की रक्षा करते बतलाओ करुणा-सागर ?॥
अपनी स्तुति करनेवालों की क्यों प्रभु रक्षा करते हो ?।
क्यों अधर्मियों का वध करके भक्तों का भय हरते हो ?॥ ३ ॥

हे प्रभुवर ! हे कृष्ण ! स्वर्ण-सम चरणों का करता वंदन।
नमो नमस्ते, नमो नमस्ते, नमो नमस्ते, यदुनंदन !॥ ४ ॥

नंदलाल—४८

नंदलाल जी ! काकपंख में काला रंग तुम्हारा है॥ १ ॥
हरा रंग तरुओं के पत्तों में, प्रभु ! रंग तुम्हारा है॥ २ ॥
नंदलाल ! जग की ध्वनियों में गीत तुम्हारे गुंजित हैं॥ ३ ॥
तप्त अनल में ऊष्मा बन, सुख-ताप तुम्हारा संचित है॥ ४ ॥

हो ? तुम, व्रत में जीवंत कैसे हो जाते हो ? १ हे प्रभु कृष्ण ! हवा में शीतल क्यों बने ? तुम, आग में क्यों गरम लगते हो ? पंक में घोल क्यों हो ? हे प्रभु कृष्ण ! तुम दिशाओं में स्वच्छ कैसे बने हो ? हे प्रभु कृष्ण ! २ तुम्हारी महिमा गाकर स्तुति करना क्या है ? प्रभु कृष्ण ! तुम दोनों की क्या रक्षा करते हो ? प्रभु कृष्ण ! स्तोताओं की रक्षा कैसे करते हो ? प्रभु कृष्ण ! तुम झूठों को क्यों मार देते हो ? ३ नमो, नमो, नमो, नमः, हे प्रभु कृष्ण, मैं तुम्हारे स्वर्ण-चरणों को नमस्कार करते हुए खड़ा हूं। हे प्रभु। कृष्ण !

नंदलाल !—४८

काक के काले पंखों में, हे नंदलाल ! तुम्हारा ही काला रंग दिखता है। १ देखे हुए सभी तरुओं में, हे नंदलाल ! तुम्हारा हरा रंग ही दिखता है, तात ! २ सुनी हुई सब ध्वनियों में, हे नंदलाल ! तुम्हारा संगीत मुखरित है तात ! ३ आग में उँगली रखूं, हे नंदलाल ! तो तुम्हारे स्पर्श का सुख मिलता है, अरे ! ४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णन् पिऱप्पु—49

कण्णन् पिऱन्दान्— ऍङ्गळ् कण्णन् पिऱन्दान्— इन्दक्
काऱ्ऱदै यॆट्टुत् तिशैयिलुङ् गूऱिडुम्
तिण्णमुडैयान्-मणि वण्ण मुडैयान्— उयर्
तेवर् तलैवन् पुविमिशैत् तोन्ऱिनन्
पण्णै यिशैप्पीर्— नॆञ्जिऱ् पुण्णै यॊऴिप्पीर्— इन्दप्
पारिनिले तुयर् नीङ्गिडुम् ऍन्ऱिदै
ऍण्णिडैक् कॊळ्वीर्— नन्गु कण्णै विऴिप्पीर्— इनि
एदुङ् गुऱैविल्लै; वेदम् तुणैयुण्डु (कण्) 1

अक्किनि वन्दान्— अवन् तिक्कै वळैत्तान्— पुवि
यारिरुट् पॊय्मैक् कलियै मडित्तनन्
तुक्कङ् गॆडुत्तान्— शुरर् ऒक्कलुम् वन्दार्— शुडर्च्च
चरियन्, इन्दिरन्, वायु, मरुत्तुक्कळ्;
मिक्क तिरळाय्— सुरर् इक्कणन्दन्निल्— इङ्गु
मेवि निऱैन्दनर्; पावि यशुरर्हळ्
पॊक्कॆन वीऴुन्दार्— उयिर् कक्कि मुडिन्दार्— कडल्
पोल ऒलिक्कुडु वेदम् पुवि मिशै (कण्) 2

शङ्गरन् वन्दान्;— इङ्गु मङ्गल मॆन्ऱान्— नल्ल
शन्दिरन् वन्दिन् नमुदेप् पॊऴिन्दनन्;
पङ्ग मॊन्ऱिल्लै— ऒळि मङ्गुव दिल्लै;— इन्दप्
पारिन् कण् मुन्बु वानत्तिले निन्ऱु,
गङ्गैयुम् वन्दाळ्— कलै मङ्गैयुम् वन्दाळ्— इन्बक्
काळि पराशक्ति अन्बुड नॆय्दिनळ्;
शॆङ्ग मलत्ताळ्— ऍऴिल् पॊङ्गु मुहत्ताळ्— तिरुत्
तेवियुम् वन्दु शिऱप्पुऱ निन्ऱनळ् (कण्) 3

कृष्ण पैदा हुए !—४९

कृष्ण जनमे— हमारे कृष्ण जनमे ! इसे हवा आठों दिशाओं में सुना देगी ! साहसी, मणि-वर्ण उन्नत देवपति इस भू पर जनमे ! गीत गाओ। हृदय का व्रण मिटाओ। (अब) इस भू पर कष्ट नहीं रहेगा, वह दूर हो जायगा। इसको ध्यान में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कृष्ण पैदा हुए—४९

हुआ कृष्ण का जन्म कह रही दिशा-दिशा में आज पवन।
भू पर जन्मे उन्नत सुरपति अतुल साहसी नीलम-तन॥
अपने उर के घाव मिटाओ, मंगलमय गायन गाओ।
अब भूतल पर कष्ट न होगा सभी भक्तजन हरषाओ॥
अपनी अलसित आँखें खोलो इन बातों पर ध्यान धरो।
वेदों का है सबल सहारा, कमी न कुछ, (शुभ कर्म करो)॥ १॥

सभी दिशाओं को पावक ने आ करके अब घेर लिया।
और भूमिवासी तम रूपी झूठे कलि को मिटा दिया॥
दुख को नष्ट कर दिया उसने आये आज सभी सुरगण।
रवि तेजोमय, मत्त पवन है, सभी मुदित अग-जग इस क्षण॥
पतन हुआ पापी असुरों का चटपट प्राण-विहीन हुए।
सिन्धु-समान वेद धरती पर प्रबल घोषणा-लीन हुए॥ २॥

कृष्ण-जन्म सुन शंकर आये बोले अब होगा मंगल।
शशि ने स्वच्छ-सुधा बरसाई भूतल सभी हुआ शीतल॥
धर्मभंग का भय न रहा अब मंद पड़ेगा नहीं प्रकाश।
भूतल पर गंगा उतरी है तजकर विस्तृत-सा आकाश॥
विद्यादेवी सरस्वती भी इस भूतल पर आई हैं।
पराशक्ति सुख देनेवाली आई काली माई हैं॥
अरुण-कमल पर बसनेवाली सुंदर मंजुल मुखवाली।
कृष्ण-जन्म-उत्सव पर आई श्रीदेवी शोभाशाली॥ ३॥

रखो। अपनी आँखें खोलो। अब कोई कमी नहीं है। वेदों का सहारा है। १ अग्नि आया। उसने दिशाओं को घेर लिया। भूमि पर रहनेवाले अंधकार रूपी झूठे (वंचक) कलि को मिटा दिया। उसने दुख को कष्ट दिया। सभी सुर आये। तेजोमय सूर्य, वायु, मरुत् सब इस क्षण बड़े दलों में इधर आकर व्याप गये। पापी असुर चट से गिर गये। उन्होंने प्राणों का वमन कर दिया तथा वे मिट गये। वेद भूमि पर समुद्र के समान घोष करते हैं। २ शंकर आये। उन्होंने कहा, 'यहाँ मंगल होगा'। रमणीय चन्द्र ने आकर सुहावना अमृत बरसाया। अब कोई 'भंग' (तोड़-फोड़) नहीं है। प्रकाश मन्द नहीं पड़ेगा। पहले ही आकाश से इस भूमि पर गंगा आयी है। कला की देवी (सरस्वती) भी आयीं। सुख देनेवाली पराशक्ति काली भी प्रेम के साथ आयी हैं। लालकमलासनस्था, सौन्दर्यमय मुख वाली श्रीदेवी भी आकर शोभा बढ़ाती हुई खड़ी हो गयीं। ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णन् तिरुवडि—50

कण्णन् तिरुवडि ऍण्णुह मनमे
तिण्णम् अळ्ळिया वण्णन् दरुमे 1
तरुमे निदियुम्, पॅरुमै पुहळुम्
करुमा मेनिप् पॅरुमा निङ्गे 2
इङ्गे यमरर् शङ्गन् दोन्रुम्
मङ्गुम् तीमै, पॉङ्गुम नलमे 3
नलमे नाडिर् पुलवीर् पाडीर्;
निलमा महळिन् तलैवन् पुहळे 4
पुहळ्वीर् कण्णन्, तहै शेरमरर्
तॉहैयो डशुरप् पहैतीर्प्पदैये 5
तीर्प्पान् इरुळैप् पेर्प्पान् कलियै
आर्प्पा रमरर्, पार्प्पार् तवमे 6
तवरा दुणर्वीर्, पुवियीर् मालुम्
शिवनुम् वानोर्, ऍवरुम् ऑन्रे 7
ऑन्रे पलवाय् निन्रोर् शक्ति
ऍन्रुन् दिहळुम्, कुन्रा वॉळिये 8

वेय्ङ्गुळल्—51

राग— हिन्दुस्तान् तोडि; ताळ— एक ताल

ऍङ्गिरुन्दु वरुहुवदो ?— ऑलि
यावर् शॅय्हुवदो ?— अडि तोळि !
कुन्रिनिन्रुम् वरुहुववदो— मरक्
कॉम्बि निन्रुम् वरुहुवदो ?— वॅळि

कृष्ण के श्रीचरण—५०

रे मन ! कृष्ण के श्रीचरणों का स्मरण करो ! निश्चित है, वे अमरता का वर देंगे। १ नीले रंग वाले महान कृष्ण निधियाँ देंगे, बड़ाई तथा यश देंगे। २ यहाँ अमरों का जमघट हो जायगा। कष्ट घटेंगे; हित बढ़ेंगे। ३ हे कवियो ! भला चाहो, तो भूदेवी के पति की महिमा गाओ। ४ कृष्ण के द्वारा असुर-शत्रुओं के दलों के नाश की प्रशंसा करो। ५ वे (कृष्ण) अन्धकार को मिटा देंगे; कलि को ठुकरा देंगे। सुर लोग हो-हल्ला मचायेंगे और तपस्या में लीन रहेंगे। ६ हे भूवासियो ! इसे अचूक रीति से जान लो कि विष्णु, शिव और सभी देवता एक हैं। ७ एक ही अनेक रूप में रहते हैं। शक्ति सदा (सर्वत्र) विद्यमान रहेगी। प्रकाश कभी मन्द नहीं पड़ेगा। ८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कृष्ण के श्रीचरण—५०

कृष्णचन्द्र के श्रीचरणों का रे मन! सदा संस्मरण कर।
निश्चित है वह तुझको देगा सदा अमरता का शुभ वर॥ १॥
हैं महान घनश्याम कृष्ण जी सबको नव-निधियाँ देंगे॥
यश देंगे सर्वत्र बड़ाई की अगणित विधियाँ देंगे॥ २॥
देवगणों का आज यहाँ पर अब जमघट हो जायेगा।
होगी हित की वृद्धि नष्ट सारा संकट हो जायेगा॥ ३॥
कवियो! भला चाहते हो तो भूपति की महिमा गाओ।
कृष्णचन्द्र से हत असुरों की गाथा घर-घर फैलाओ॥ ४-५॥
घन-तम-तोम मिटायेंगे यह कलि को मार भगायेंगे।
सुरगण इनके गुण गायेंगे तप-निमग्न हो जायेंगे॥ ६॥
भली-भाँति भूलोक-वासियो! तुम अपने मन में जानो।
विधि-हरि-हर सब देव एक हैं यह सिद्धान्त सत्य मानो॥ ७॥
एक शक्ति के ही अनेक यह नामरूप हो जाते हैं।
अमर अनन्त अनादि शक्ति है (वेद-पुराण बताते हैं)॥
शक्ति प्रकाशित सदा रहेगी होगा मंद प्रकाश नहीं।
(अजर, अमर है अविनाशी है होता इसका ह्रास नहीं)॥ ८॥

वंशी—५१

श्रवण में स्वरों की सुधा घोलती-सी।
हृदय गुदगुदाती चली आ रही है॥
अरी सखि! बता कौन वंशी बजाता।
मधुर ध्वनि कहाँ से चली आ रही है॥ टेक॥
अरी! आ रही पर्वतों से मधुर ध्वनि।
विटप की टहनियों से या आ रही है?॥
गगन-कुंज से गूँजती या रसीली।
अरी! मति हमारी ये भरमा रही है॥

वंशी—५१

कहाँ से आ रहा है? यह स्वर किसका (निकाला) हुआ है? अरी सखि! (टेक) क्या यह पर्वत से आनेवाला स्वर है? तरु की टहनियों से आनेवाला है? या यह बाहर आकाश से आ रहा है? री सखि! यह मेरी मति को भ्रांत कर रही है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मन्ऱि निन्ऱु वरुहुवदो ?— ऎन्ऱन्
मदि मरुण्डिडच् चॆय्हुदडि !— इःदु (ऎङ्) 1

अलैयोलित्तिडुम् दॆय्व— यमुनै
याऱ्ऱि निन्ऱुम् ऒलिप्पदुवो ?— अन्ऱि
इलै यॊलिक्कुम् पॊऴिलिडै निन्ऱुम
ऎऴुवदो इःदिन्ऱ मुदैप्पोल् ? (ऎङ्) 2

काट्टि निन्ऱुम् वरुहुवदो ?— निलाक्
काऱ्ऱैक् कॊण्डु तरुहुवदो ?— वॆळि
नाट्टि निन्ऱु मित् तॆन्ऱल् कॊणर्वदो ?
नादमिःदॆन् उयिरै युरुक्कुदे (ऎङ्) 3

पऱवै येदुमॊन्ऱुळ्ळदुवो ?— इङ्ङन्
पाडुमो अमुबक्कन्ऱर् पाट्टु ?
मऱविनिन्ऱु किन्नर रादियर्
वात्तियत्तिनिशै यिदुवो अडि ! (ऎङ्) 4

कण्ण नूदिडुम् वेय्ङ्गुऴल् तानडी !
कादि लेयमु दुळ्ळत्तिल् नञ्जु
पण्णत् ऱामडि पावैयर् वाडप्
पाडि यॆय्दिडुम् अम्बडि तोऴि ! (ऎङ्) 5

(कहाँ से०) १ क्या यह यमुना से स्वरित होनेवाला है, जिसमें लहरें शब्द कर रही हैं ? या यह जो मधुर अमृत के समान निकल रहा है, उस फुलवारी से निकला है, जिसमें पत्ते ध्वनि कर रहे हैं ? (कहाँ से०) २ जंगल से आनेवाला है यह ? क्या यह चांदनी को हवा द्वारा लाया गया है ? या मलय पवन इसे विदेश से ला रहा है ? यह नाद मेरे प्राणों को पानी-पानी बना रहा है। (कहाँ से०) ३ क्या यह कोई पक्षी है ? क्या वह ऐसा भी गा सकता है, जिसमें अमृत तथा अनल दोनों घुल-मिल गये हों ? अरी ! क्या यह कोई किन्नर आदि है जो आड़ में रहकर अपने वाद्य से यह संगीत उत्पन्न कर रहे हैं। (कहाँ से०) ४ यह कण्णन् (कृष्ण) की बजती वंशी ही है, री ! यह देखो, वह कान में अमृत को, पर हृदय में विष को घोल रहा है। यह राग नहीं है री ! पर रमणियों को जलाने के लिए गाने के रूप में चलाया जानेवाला बाण है, री सखि ! (कहाँ से०) ५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रवण में स्वरों की सुधा घोलती-सी।
हृदय गुदगुदाती चली आ रही है॥
अरी सखि ! बता कौन वंशी बजाता।
मधुर ध्वनि कहाँ से चली आ रही है॥ १॥
अरी ! स्वर निकलता है यमुना नदी से।
लहरियाँ ललित लोल लहरा रही हैं॥
सुधा-स्वर निकलता किसी वाटिका से।
दलों की मृदुल ताल-ध्वनियाँ बहीं हैं॥
श्रवण में स्वरों की सुधा घोलती-सी।
हृदय गुदगुदाती चली आ रही है॥
अरी सखि ! बता कौन वंशी बजाता।
मधुर ध्वनि कहाँ से चली आ रही है॥ २॥
विपिन से निकलती है क्या ध्वनि रसीली।
चपल चाँदनी की पवन इसको लाई॥
मलयवात परदेश से इसको लाई॥
तरल प्राण की-सी नदी छलछलाई॥
श्रवण में स्वरों की सुधा घोलती-सी।
हृदय गुदगुदाती चली आ रही है॥
अरी सखि ! बता कौन वंशी बजाता।
मधुर ध्वनि कहाँ से चली आ रही है॥ ३॥
विहग कंठ से गूँजती है मधुर ध्वनि।
दुर्लभ सुलभ है ! मृदु कण्ठ कोकिल ?॥
अनल-सी तपन या बजाती अजब-सा।
सुधा रसभरी औ' पवन-ताप यक मिल॥
श्रवण में स्वरों की सुधा घोलती-सी।
हृदय गुदगुदाती चली आ रही है॥
अरी सखि ! बता कौन वंशी बजाता।
मधुर ध्वनि कहाँ से चली आ रही है॥ ४॥
अरी सखि ! कन्हैया की यह बाँसुरी है।
सुधा कान में, विष हृदय में बहाती॥
नहीं राग की तान ये गुनगुनाती।
अनल-बाण बन मन हमारे जलाती॥
श्रवण में स्वरों की सुधा घोलती-सी।
हृदय गुदगुदाती चली आ रही है॥
अरी सखि ! बता कौन वंशी बजाता।
मधुर ध्वनि कहाँ से चली आ रही है॥ ५॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णम्माविन् कादल्—52

कार्रु वॆळियिडैक् कण्णम्मा— निन्रन्
कादलै यॆण्णिक् कळिक्किन्ड्रेन्;— अमु
दूर्रिनै यॊत्त इदळ्हळुम्— निल
वूरित् तदुम्बुम् विळिहळुम्— पत्तु
मार्रुप् पॊन्नॊत्त निन् मेनियुम्— इन्द
वॆयत्तिल् यानुळ्ळ मट्टिलुम्— अॆन्नै
वेर्रु नित्तैविन्रित् तेर्रिये— इङ्गोर्
विण्णवन्नाहप् पुरियुमे इन्दक् (कार्रु) 1

नीयॆन्न दिन्नुयिर् कण्णम्मा !— अॆन्द
नेरमुम् निन्रन्नैप् पोर्रु वेन्— तुयर्
पोयिन्न पोयिन्न तुन्बङ्गळ्— निन्नैप्
पॊन्नॆन्नक् कॊण्ड पॊळुदिले— अॆन्रन्
वायिन्निले यमुदूरुवै— कण्णम्
मावॆन्र पेर् शॊल्लुम् पोळ्दिले— उयिर्त्
तीयिन्निले वळर् शोदिये— अॆन्रन्
शिन्दन्नैये, अॆन्रन् शित्तमे इन्दक् (कार्रु) 2

कण्णम्माविन् निन्नैप्पु—53

पल्लवि (टेक)

निन्नैये रदि यॆन्रु निन्नैक्किड्रेन्डि— कण्णम्मा
तन्नैये शशि यॆन्रु शरण मॆय्दिन्नेन् ! (निन्नैये)

शरणङ्गळ् (चरण)

पॊन्नैये निहर्त्त मेनि मिन्नैये निहर्त्त शायर्
पिन्नैये ! नित्य कन्नियै ! कण्णम्मा (निन्)

कण्णम्मा का प्रेम—५२

(भारती वैष्णव संतों के विपरीत, भगवान को नायिका के रूप में देखकर अपने प्रेम का वर्णन करते हैं। तब कण्णन 'कण्णम्मा' हो जाते हैं।) वायु भरे आकाश के बीच, री कण्णम्मा ! तुम्हारा प्रेम समझकर मैं मुदित हो जाता हूँ। अमृत के स्रोत के समान अधर; चांदनी जिसमें छलकती हो ऐसी आँखें, 'दस 'मार्रु' (खरापन की एक माप जो कसौटी पर घिसकर देखा जाता है— साढ़े दस मार्रु का सोना बिलकुल खरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णम्मा का प्रेम—५२

मुक्त पवन में मुक्त गगन म प्रेम प्रवाहित है तेरा।
आलिंगन करके कण्णम्मा! मुग्ध हुआ है मन मेरा॥ टेक॥

सुधा-स्रोत-सम अधर, दृगों में चपल चाँदनी छलक रही।
शुद्ध तपाये हुए स्वर्ण-सी देह-कान्ति है झलक रही॥
इनकी मधुर याद में सारा विश्य भूल मैं जाऊँगा।
इनकी स्मृति से अमर रहेगा देवों-सा जीवन मेरा॥ १॥

मुक्त पवन में मुक्त गगन में प्रेम प्रवाहित है तेरा।
आलिंगन करके कण्णम्मा! मुग्ध हुआ है मन मेरा॥ टेक॥

कण्णम्मा! प्रिय प्राण तुम्हीं हो महिमा सदा सराहूँगा।
होंगे सब दुख दूर तुम्हें अनमोल मान जब चाहूँगा॥
कण्णम्मा! प्रिय नाम तुम्हारा मुख में सुधा घोलता है।
मम प्राणों में पली ज्योति, तुम चित्त, तुम्हीं चिन्तन मेरा॥ २॥

मुक्त पवन में मुक्त गगन में प्रेम प्रवाहित है तेरा॥
आलिंगन करके कण्णम्मा! मुग्ध हुआ है मन मेरा॥ टेक॥

कण्णम्मा का स्मरण—५३

तुम्हीं इन्द्र की शचि रानी हो, तुम्हीं काम की रति रानी।
शरण तुम्हारी मैं आया हूँ हे कण्णम्मा! वरदानी॥ टेक॥

स्वर्ण-वर्ण है वदन तुम्हारा बिजली-सी आभा राधे।
कण्णम्मा तुम नित्य कुमारी कौन साधना हो साधे॥ १॥

तुम्हीं इन्द्र की शचि रानी हो, तुम्हीं काम की रति रानी।
शरण तुम्हारी मैं आया हूँ हे कण्णम्मा! वरदानी॥ टेक॥

माना जाता।) के सोने के-से रंग की तुम्हारी देह, ये सब, जब तक मैं इस संसार में रहूँ, तब तक किसी और विषय को स्मरण करने नहीं देंगे तथा यहीं मुझे सुर (अमर) बना देंगे। (इस हवा में०) १ हे कण्णम्मा! तुम मेरे प्रिय प्राण हो। मैं नित्य तुम्हारी महिमा गाऊँगा। जब तुम्हें स्वर्ण-प्यारी (बहुमूल्य) चीज माना तब मेरा दुख गया, दर्द गये। कण्णम्मा का नाम लेता हूँ, तब मेरे मुख में अमृत-सा झर आता है। मेरे प्राणों की अग्नि में पलनेवाली ज्योति! मेरे चिंतन। हे मेरे चित्त (के ध्यान)! (इस हवा में०) २

कण्णम्मा का स्मरण—५३

तुम्हें रति ही समझता हूँ री! कण्णम्मा! तुम्हीं को शची समझकर तुम्हारी शरण में आया हूँ। (टेक) स्वर्ण-सदृश शरीर और बिजली-सदृश आभा वाली पिन्नै! (तमिळ संत-साहित्य में पिन्नै को राधा का स्थान प्राप्त है।) नित्य चिर कन्या!

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मार नम्बुह ळॅन्मीदु वारि वारि वीश नी— कण्
पारायो ? वन्दु शेरायो ? कण्णम्मा ! (निन्)
यावुमे शुह मुनिक्कॉर् ईशना मॅनक्कुन् तोर्ऱुम्
मेवुमे— इङ्गु यावुमे कण्णम्मा ! (निन्)

मनप् पीडम्—54

पल्लवि (टेक)

पीडत्ति लेऱिक् कॉण्डाळ्— मनप्
पीडत्ति लेऱिक् कॉण्डाळ्

शरणङ्गळ् (चरण)

नाडित् तवम् पुरिन्दु पीडुऱ्ऱ मुनिवरर्
केडऱ्ऱ दॅन्ऱु कण्डु कूडक् करुदु मॉळि
माडत्ति लेऱि आनक्कूडत्तिल् विळैयाडि
ओडत् तिरिन्दु कन्नि वेडत्तिल् रदियैप्पोल्
ईडऱ्ऱ कर्पनैहळ् काडुऱ्ऱ शिन्दनैहळ्
मूडिक् किडक्कु नॅञ्जिन् ऊडुऱ्ऱदै यमरर्
तेडित् तविक्कु मिन्ब वीडॉत् तिन्निमै शॅय्दु
वेडत्ति शिऱु वळ्ळि वित्तैयॅन् कण्णम्मा (पीडत्ति) 1
कण्णन् तिरुमार्बिऱ् कलन्द कमलैयॅन्गो
विण्णवर् तॉळुदिडुम् वीरच् चिङ्गादनत्ते
नण्णिच् चिवनुडलै नाडुमव ळॅन्गो ?
ऍण्णत् तिदिक्कुदडा इवळ् पॉन्नुडलमुदम् !
पॅण्णि लरशियिवळ् पॅरिय ऍळिलुडैयाळ्
कण्णुळ् मणि यॅनक्कुक् कादलि रदियिवळ्
पण्णि लिनिय शुवै परन्द मॉळियिनाळ्
उण्णु मिदळमुद ऊऱ्ऱिनळ् कण्णम्मा (पीडत्ति) 2

कण्णम्मा री ! (तुम्हें०) १ कामदेव मुझ पर बाण पर बाण छोड़ रहा है, क्या तुम दृष्टि नहीं डालोगी ? कण्णम्मा ! क्या आकर नहीं मिलोगी ? (तुम्हें०) २ शुक मुनि के लिए सभी दृश्य ईश्वर हैं। अरी कण्णम्मा ! मुझे सर्वत्र तुम्हारा रूप ही दिखता है। (तुम्हें०) ३

मन-पीठ—५४

मन लगाकर तपस्या करने से गौरवान्वित हुए मुनिगण जिससे, अनिंद्य मानकर,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कामदेव मुझ पर धनु ताने बरसा रहा बाण पर बाण।
दयादृष्टि तुम कर दो मुझ पर आकर मिलो बचाओ प्राण ॥ २ ॥
तुम्हीं इन्द्र की शचि रानी हो, तुम्हीं काम की रति रानी।
शरण तुम्हारी मैं आया हूँ, हे कण्णम्मा ! वरदानी ॥ टेक ॥
जिस प्रकार शुकदेव मुनीश्वर समझे थे सबको ईश्वर।
उसी भाँति तव छवि कण्णम्मा ! कण-कण में होती भास्वर ॥ ३ ॥
तुम्हीं इन्द्र की शचि रानी हो, तुम्हीं काम की रति रानी।
शरण तुम्हारी मैं आया हूँ, हे कण्णम्मा ! वरदानी ॥ टेक ॥

मन-पीठ (हृदय-सिंहासन)—५४

आज विराज रही कण्णम्मा मेरे मन-सिंहासन पर ॥ टेक ॥
जिसको पाने हेतु तपस्या करते मुनिवर महिमामय।
जिससे सभी चाहते मिलना मान मोदमय मंगलमय ॥
मंजु प्रकाश-भवन पर चढ़कर दिव्य-ज्ञान के आँगन में।
वह कन्या बन हुआ प्रतिष्ठित मम रति-भाव-भरे मन में ॥ १ ॥
देवाभिलषित - मुक्ति - सरीखी व्याधसुता - प्रिय - वळ्ळी - सी।
आज विराज रही कण्णम्मा मेरे मन सिंहासन पर ॥ टेक ॥
कृष्णचन्द्र के वक्षस्थल से लिपटी इसे कहूँ कमला।
देववंद्य सिंहासन पर शिव को खोजती शिवा अमला ॥
इसके स्वर्णवदन की अतिशय मधुरिम है सौंदर्य-सुधा।
रमणी रत्नों की रानी-सी बढ़ा रही सौंदर्य-क्षुधा ॥
मेरी आँखों की पुतली है रति-सी सरस प्रेमिका है।
वाणी मधु संगीत भरी है मानों स्वर्ग-गायिका है ॥ २ ॥
मधुर सुधा के सरस स्रोत हैं कण्णम्मा के मधुर अधर।
आज विराज रही कण्णम्मा मेरे मन-सिंहासन पर ॥ टेक ॥

मिलना चाहते हैं, वह ज्योति (मन के) भवन पर चढ़कर ज्ञानांगन में खेलती, दौड़ती फिरती है। वह 'कन्या (रूप में) रति' के समान है। वह उस मेरे मन के आर-पार हुई, जिसमें अनुपम कल्पनाएँ तथा जंगल के समान चिन्तन खचाखच भरे थे, और उसने उसे (मन को) उस मोक्ष पद के समान मधुर बना दिया, जिसकी अमर लोग आतुरता के साथ खोज लगाते फिरते हैं ! वह मेरी व्याधकन्या छोटी वळ्ळी (कार्तिकेय की दूसरी पत्नी) है; कण्णम्मा है। मेरी विद्या के फलस्वरूप वह पीठ पर चढ़ गयी। १ तुम्हें कृष्ण के श्रीवक्ष में मिली रही कमला कहूँ ? देववंदित, वीर सिंहासन में जाकर शिव के शरीर को खोजनेवाली कहूँ ? रे ! इसके स्वर्ण-शरीर के अमृत का चिंतन करो, तो मधुर लगता है। यह स्त्रियों में रानी है, बहुत ही सौन्दर्यवती है। मेरी आँखों का तारा है। प्रेमिका रति है। उसकी वाणी सुरीले संगीत से भरी है। कण्णम्मा के अधर पेय अमृत के स्रोत हैं (पीठ पर०) २

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णम्माविन् ऍळिल्—55

राग शॅञ्जुरुट्टि; ताळ—रूपक

पल्लवि (टेक)

ऍङ्गळ् कण्णम्मा नहै पुदुरोजाप्पू
ऍङ्गळ् कण्णम्मा विळि इन्द्र नीलप्पू !
ऍङ्गळ् कण्णम्मा मुहञ् जॅन्बा मरॅप्पू
ऍङ्गळ् कण्णम्मा नुदल् बाल सूरियन्

शरणङ्गळ् (चरण)

ऍङ्गळ् कण्णम्मा ऍळिल् मिन्नलै नेर्क्कुम्
ऍङ्गळ् कण्णम्मा पुरुवङ्गळ् मदन् विर्कळ्;
तिङ्गळै मूडिय पाम्बिनैप् पोले
शॅरि कुळल् इवळ् नाशि ऍट्पू (ऍङ्गळ्) 1

मङ्गळ वाक्कु नित्यानन्द ऊर्ऱु
मदुरवाय् अमिर्दम् इदळमिर्दम्
शङ्गीद मॅन् गुरल् शरस्वति वीणै
शायलरम्बै शदुर् अयिराणि (ऍङ्गळ्) 2

इङ्गिद नाद निलैय मिरु शॅवि
शङ्गु निहर्त्त कण्डम् अमिर्द शङ्गम्
मङ्गळक् केहळ् महाशक्ति वाशम्
वयिऱालिलै; इडै अमिर्द वीडु (ऍङ्गळ्) 3

शङ्गरमैत् ताङ्गु नन्दि पद शदुरम्
तामरै यिरु ताळ् लक्ष्मी पीडम्
पॊङ्गित् तदुम्बित् तिशैयॆङ्गुम् पायुम्
पुत्तन्बुम् आनमुम् मॅय्त् तिरुक् कोलम् (ऍङ्गळ्) 4

कण्णम्मा का सौन्दर्य—५५

हमारी कण्णम्मा का हास ताजा गुलाब है। हमारी कण्णम्मा के नेत्र इन्द्रनील सुमन हैं। हमारी कण्णम्मा का आनन लाल कमल है। हमारी कण्णम्मा का भास बाल सूर्य है। (टेक) हमारी कण्णम्मा की छवि बिजली से तुल्य है। हमारी कण्णम्मा की भौंहें मन्मथ के धनुष हैं। घना केशसमूह चन्द्र को आवृत रहनेवाले सर्प के समान है। इसकी नासिका तिल का फूल है। (हमारी०) १ उसकी मंगल वाणी नित्यानन्द का स्रोत है। उसका मुख अमृत है। अधर अमृत है। संगीतमय मृदु कंठ सरस्वती की वीणा है। वह छवि में रम्भा है। वह चतुरता में इन्द्राणी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णम्मा का सौन्दर्य—५५

है गुलाब के फूल-सरीखा मेरी कण्णम्मा का हास।
इन्द्रनील के सुमन-सरीखा कण्णम्मा का दृष्टि-विलास ॥ टेक ॥

लाल-कमल के फूल-सरीखा कण्णम्मा का आनन है।
बाल-भानु सा भव्य भाल भी करता प्रभा प्रकाशन है ॥
कण्णम्मा की छटा छबीली चपला-सी लगती चंचल।
काम-चाप-सी टेढ़ी बाँकी छवि-शाली भौंहें मंजुल ॥
चन्द्र ढका हो सर्पराशि से केशराशि यों सुहा रही।
नासा तिल के फूल-सरीखी मेरे मन को लुभा रही ॥ १ ॥
है गुलाब के फूल-सरीखा मेरी कण्णम्मा का हास।
इन्द्रनील के सुमन-सरीखा कण्णम्मा का दृष्टि-विलास ॥ टेक ॥

कण्णम्मा की मंगलवाणी सदानन्द का नव निर्झर।
मधुर-सुधा-सम मुख-मंडल है मधुर-सुधा-सम मधुर अधर ॥
मृदुल कंठ में गूँज रही है सरस्वती की वीणा-सी।
छवि में रंभा-सी, चतुराई में है शची प्रवीणा-सी ॥ २ ॥
है गुलाब के फूल-सरीखा मेरी कण्णम्मा का हास।
इन्द्रनील के सुमन-सरीखा कण्णम्मा का दृष्टि-विलास ॥ टेक ॥

नाद-निलय हैं कर्ण मनोरम कंठ शंख-सा सुधा निवास।
मृदु मंगलमय करयुगलों में महाशक्ति का है आवास ॥
वट-पल्लव के तुल्य मनोरम कण्णम्मा का मृदुल उदर।
सुधा-निकेतन नाभिकुंडयुत शोभित है कमनीय कमर ॥ ३ ॥
है गुलाल के फूल-सरीखा मेरी कण्णम्मा का हास।
इन्द्रनील के सुमन-सरीखा कण्णम्मा का दृष्टि-विलास ॥ टेक ॥

कण्णम्मा के चरण-युगल श्री शंकर का नंदीश्वर है।
कण्णम्मा के चरण-कमल श्रीलक्ष्मी का सिंहासन है ॥
उमड़-उमड़ छवि, छलक-छलक छवि, सभी दिशाओं में फैली।
सिखा रही है नवल प्रेम की विमल ज्ञान की शुभ शैली ॥ ४ ॥
है गुलाब के फूल सरीखा मेरी कण्णम्मा का हास।
इन्द्रनील के सुमन-सरीखा कण्णम्मा का दृष्टि-विलास ॥ टेक ॥

है। (हमारी०) २ उसके दोनों कर्ण सुहावने नाद-निलय हैं। शंख-निभ-कंठ अमृत-शंख है। मंगलहस्त महाशक्ति का आवास है। पेट वटपत्र है तथा कटि अमृत-निकेतन है। (हमारी०) ३ श्रेष्ठ पद शंकर का वाहन नंदी है। पदकमलद्वय लक्ष्मी-पीठ है। उसके शरीर की झाँकी उमड़कर, छलककर दिशाओं में फैलनेवाला नव प्रेम तथा ज्ञान है। (हमारी०) ४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिरुक् कादल्—56

तिरुवे ! निनैक् कादल् कॊण्डेनै— निनदु तिरु
उरुवे मऱवा दिरुन्देनै— पल दिशैयिल्
तेडित् तिरिन् दिळैत्तेनै— निनक्कु मनम्
वाडित् तिनङ्गळैत् तेनै— अडि निनदु
परुवम् पॊऱुत् तिरुन्देनै— मिहवुम् नम्बिक्
करुवम् पडैत्तिरुन् देनै— इडै नडुविल्
पॆयच् चदिहळ् शॆय्दाये— अदनिलुमॆन्
मैयल् वळर्दल् कण्डाये— अमुदमळै
पॆय्यक् कडैक्कण् नल् हाये— निनदरुळिल्
उय्यक् करुणै शॆय्वाये— पॆरुमै कॊण्डु
वैयन् दळैक्क वेप्पेनै— अमर युहम्
शॆय्यत् तुणिन्दु निऱ्पेनै— अडियॆनदु
तेनै ! अॆनदिरु कण्णे— अॆनै युहन्दु
तानै ! वरुन् दिरुप्— पॆण्णे !

तिरु वेट्कै—57

राग— नाट्टै; ताळ—चतुस्र एकम्

मलरिन् मेवु तिरुवे— उन्मेल् मैयल् पॊङ्गि निन्ऱेन्
निलवु शॆय्युम् मुहमुम्— काण्बार् निनैवळिक्कुम् विळियुम्
कलहलॆन्ऱ मॊळियुम्— वॆय्वक् कळि तुलङ्गु नहैमुम्
इलहु शॆल्व वडिवुम्— कण्डुन् इन्बम् वेण्डु हिन्ऱेन् 1
कमल मेवुम् तिरुवे— निन्मेल् कादलाहि निन्ऱेन्
कुमरि निन्नै इङ्गे— पॆऱ्ऱोर् कोडि यिन्ब मुऱ्ऱार्

दिव्य प्रेम—५६

हे श्री ! मुझे तुमसे प्रेम हो गया। तुम्हारा दिव्य रूप कभी नहीं भूला। मैं दिशा-दिशा में ढूँढ़ता फिरा और कृश हो गया। तुम्हारी याद में रोज मन जर्जर रहा। री ! तुम्हारे सयाना हो जाने की ताक में रहा। बहुत विश्वास करके मैं गर्व करता रहा। बीच में तुमने धीरे-धीरे षड्यंत्र रच लिये। तब भी तुमने देखा कि मेरा मोह बढ़ता ही गया। देखो— अमृत की बारिश करते हुए मेरी ओर कनखियों से देखो। तुम्हारे अनुग्रह पर मैं पलूं —यही दया करो। तब अभिमान कर सकूंगा और विश्व को पनपने में सहायता दूंगा। मैं देवयुग लाने का निश्चय करके खड़ा रहूंगा। री ! मेरी मधु ! मेरी दो आँखें ! मुझसे प्रेम करो और आ जाओ, श्री बाले !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दिव्य-प्रेम—५६

हे सुंदर श्रीदेवी ! तुमसे हुआ हमारा प्रेम अनूप।
भुला न पाया हाय ! कभी मैं देवि ! तुम्हारा दिव्य स्वरूप ॥
दिशा-दिशा में भटक-भटक कर हुआ हमारा तन पंजर।
नित्य तुम्हारी विकल याद से हुआ हमारा मन जर्जर ॥
मैं प्रवीण प्रिय पात्र तुम्हारा बनूँ, यही कामना रही।
दृढ़ विश्वास मुझे था तुम पर सुदृढ़ गर्व-भावना रही ॥
बीच-बीच में तुमने धीरे-धीरे बहु षडयंत्र रचे।
बढ़ता रहा मोह फिर भी हम (तुम्हें कभी क्या नहीं जँचे) ॥
बंक दृष्टि से लखकर मुझ पर सरस सुधा की वृष्टि करो।
पलूँ तुम्हारी करुणा पाकर देवि ! दया की सृष्टि करो ॥
यदि यह संभव हुआ करूँगा तो मैं अपने पर अभिमान।
और विश्व को पनपाने में दूँगा सहायता का दान ॥
देवों के युग को फिर लाने का करके दृढ़तम निश्चय।
(जुट जाऊँगा समुत्साह से साहस से होके निर्भय) ॥
री ! मेरे मन की मधु-मदिरा मेरी आँखों की पुतली।
मुझे प्रेम करने श्री बाले ! आओ प्रेम-पियूष-पली ॥

शुभ मोह—५७

सुमनासना दिव्य श्रीदेवी ! बढ़ता रहा मोह तुम पर ॥ टेक ॥
फलाता मुख चारु चाँदनी, सुध-बुध सभी भुलाते नैन।
दिव्यानन्द हास बिखराता, कलकल ध्वनि से गुंजित बैन ॥ १ ॥
सदा चाहता क्षेम तुम्हारा आकृति है अतिशय सुंदर।
सुमनासना दिव्य श्रीदेवी ! बढ़ता रहा मोह तुम पर ॥ टेक ॥
कमलासना दिव्य श्रीदेवी ! तुमसे मैं करता हूँ प्रेम।
माता-पिता भाग्यशाली तव मिले उन्हें सुख कोटिक, क्षेम ॥
प्रेम करो मुझसे तो जीवन देव-समान बिताऊँगा।
अटल हिमालय से टकरायें प्रेम-गीत बस गाऊँगा ॥ २ ॥

शुभ मोह—५७

सुमनासना श्रीदेवी ! तुम पर मोह बढ़ता रहा। चाँदनी फैलानेवाला मुख और देखनेवालों को बेसुध करनेवाली दृष्टि कलकल ध्वनि-वाणी, दिव्य आनन्द बिखेरनेवाला हास, बहुत शोभायमान आकार —यह सब देखकर मैं तुम्हारा (मिलन-) सुख चाहता हूँ। १ कमलासना श्रीदेवी ! मैं तुमसे प्रेम करता हुआ खड़ा हूँ। हे कुमारी ! तुम्हें प्राप्त करनेवाले बड़े भाग्यवान हैं। उन्हें करोड़ों (प्रकार का) अपार सुख मिल गया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अमरर् पोल वाळ्वेन्— अॅन्मेल् अन्बु कॉळ्वैयायिन्
इमय वॅऱ्पिन् मोद— निन्मेल् इशैहळ् पाडि वाळ्वेन् 2
वाणि तन्नै अॅन्ऱुम्— निन्नदु वरिशै पाड वैप्पेन् !
नाणि येह लामो ?— अॅन्नै नन्ग रिन्दि लायो ?
पेणि वैयमॅल्लाम्— नन्मै पॅरुह वैक्कुम् विरवम्
पूणु मैन्द रॅल्लाम्— कण्णन् पॉऱिहळाव रन्ऱो ? 3
पॉन्नुम् नल्ल मणियुम्— शुडर्शॅय् पूण्ग ळेन्दि वन्दाय्
मिन्नु निन्ऱन् वडिविऱ्— पणिहळ् मेवि निऱ्कुम् अळहै
अॅन्नुरैप् पन्नेडि— तिरुवे ! अॅन्नयिर्क् कॉरमुदे !
निन्नै मार्बु शेरत्— तळुवि निहरिलादु वाळ्वेन् 4
शॅल्व मॅट्टु मॅय्दि— निन्नार् चॅम्मै येऱि वाळ्वेन्
इल्लै अॅन्ऱ कॉडुमै— उलहिल् इल्लैयाह वैप्पेन्
मुल्लै पोन्ऱ मुऱुवल्— काट्टि मोहवादै नीक्कि
अॅल्लै यऱ्ऱ शुवैये ! अॅन्नै नी अॅन्ऱुम् वाळ वैप्पाय् 5

तिरु महळ् तुदि—58

राग— चक्रवाकम्; ताळ— तिस्र एकम्

निन्तमुन्नै वेण्डि मन्नम् निन्नैप्प दॅल्लाम् नीयाय्प्
पित्तन्नैप् पोल् वाळ्वदिले पॅरुमै युण्डो तिरुवे ?
शित्त उऱुदि कॉण्डिरुन्दार् शॅय्हैयॅल्लाम् वॅऱ्ऱि कॉण्डे
उत्तम निलै शेर् वरॅन्ऱे उयर्न्द वेद मुरैप्पदॅल्लाम् 1

मुझसे अगर तुम प्रेम करो तो मैं अमरों (सुरों) के समान जीवन बिताऊँगा। तब ऐसे गीत गाता हुआ रहूँगा, जो जाकर हिमालय से टकराये। २ मैं ऐसा करूँगा कि स्वयं सरस्वती तुम्हारी महिमाएँ गाये। क्या लजाकर जाओगी ? क्या तुमने मुझे अच्छी तरह नहीं जाना है ? क्या वे सब कृष्ण के अंग नहीं हैं, जो विश्व भर में कल्याण को फैलाने का व्रत रखते हैं ? ३ तुम उज्ज्वल तथा स्वर्ण-मणि-रचित आभरण पहनकर आयी हो। दमक भरे तुम्हारे शरीर पर ये आभरण कितने चटकीले लगते हैं ? क्या कहूँ ? अरी ! हे श्री ! मेरे प्राणों के लिए अनोखे अमृत ! मैं तुम्हें खूब वक्ष से लगाकर प्रिय के रूप में संग रहकर, अप्रतिद्वन्द्व रहूँगा। ४ आठों (धन, धान्य, गृह आभरण आदि) निधियों को, तुम्हारे अनुग्रह से पाकर गौरव में बढ़ा रहूँगा। संसार में 'अभाव' की भयानकता का अभाव कर दूँगा, चमेली के समान हास दिखाओ —प्रेम-वेदना को दूर करो और हे असीम मधुरता ! मुझे हमेशा के लिए (सुखमय) जीवन प्रदान करो। ५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सदा रहेगा प्रेम हमारा इस धरती पर अजर-अमर।
सुमनासना दिव्य श्रीदेवी! बढ़ता रहा मोह तुम पर॥ टेक॥
ऐसा यत्न करूँगा जिससे तव गुण गाये सरस्वती।
क्या न मुझे तुमने पहिचाना मत जाओ हे लाजवती!॥
सकल-विश्व-कल्याण-कामना के व्रत के जो भक्तव्रती।
क्या वे हरि के अंग नहीं हैं, मुझे बता दो दयावती॥ ३॥
तुमसे करके प्रेम, मुझे जग बना आज शिव-सत्य-सुघर।
सुमनासना दिव्य श्रीदेवी! बढ़ता रहा मोह तुम पर॥ टेक॥
मणिमय स्वर्णाभरण समुज्ज्वल धारण करके तुम आईं।
आभरणों की चटक कांतियाँ दमक-दमक तन पर छाईं॥
प्राणों की तू सुधा अनोखी तुझको गले लगाऊँगा।
सदा रखूँगा संग कभी प्रिय! तुझे नहीं बिलगाऊँगा॥ ४॥
सदा रहेंगे इस संसृति में जल-तरंग सम हिल-मिलकर।
सुमनासना दिव्य श्रीदेवी! बढ़ता रहा मोह तुम पर॥ टेक॥
श्रीदेवी! तव अनुकम्पा से आठों निधियों को पाकर।
गौरवशाली हूँगा भीषण दरिद्रता को ठुकराकर॥
हँसो चमेली-सम जगती में प्रेम-वेदना दूर करो।
हे असीम माधुर्य! सर्वदा जीवन में सुख-शान्ति भरो॥ ५॥
(सभी सुखी हों, सब समृद्ध हों, दुखी नहीं हो कोई नर)।
सुमनासना दिव्य श्रीदेवी! बढ़ता रहा मोह तुम पर॥ टेक॥

श्रीलक्ष्मी-स्तुति—५८

"नित्य प्रार्थना करूँ तुम्हारी होकर आकुल विह्वल-सा।
तुम्हें याद कर-करके घूमूँ गली-गली मैं पागल-सा"॥
इसमें कौन बड़ाई तेरी माँ लक्ष्मी! मुझको बतला।
निज भक्तों को क्यों भटकाती माता! मुझको यह जतला॥
दृढ़-विश्वासी नर पाते हैं सब कामों में सदा विजय।
वेद बताते निश्चय उनको मिलती उत्तम गति अक्षय॥
झूठा है यह वेद-कथन क्या? हे ज्वलन्त मणि बतलाओ।
मोहग्रस्त अतिशय मन मेरा हे माँ! लक्ष्मी! आ जाओ॥ १॥

श्रीलक्ष्मी-स्तुति—५८

हे लक्ष्मी! क्या इस बात में कोई महिमा है कि मैं रोज तुमसे प्रार्थना करके, सर्वत्र तुम्हारा ही स्मरण करके पागल के समान घूमता रहूँ? अरे! वेद कहते हैं कि मन में निश्चय विश्वास रखनेवाले अपने सभी कार्यों में विजय पावेंगे तथा उत्तम गति को प्राप्त होंगे—क्या यह झूठी बात है? हे ज्वलन्त मणि! मैं बहुत ही मुग्ध हो गया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शुत्त वॆरुम् पॊय्योडी ? शुडर् मणिये तिरुवे ?
मॆत्त मॆदल् कॊण्डु विट्टेन् मेविडुवाय् तिरुवे
उन्नै यन्ऱि इन्ब मुण्डो उलह मिशै वेऱे ?
पॊन्नै वडिवॆन् ऱुडैयाय् पुत्तमुदे तिरुवे !
मिन्नॊळि तरुनन् मणिहळ् मेडै युयर्न्द माळिहैहळ्
वन्न मुडैय तामरैप्पू मणिक्कुळ मुळ्ळ शोलैहळुम्
अन्नम् नऱु नॆय्पालुम् अदिशयमात् तरुवाय् !
निन्नरुळै वाळ्त्ति ऎन्ऱुम् निलैत् तिरुप्पेन् तिरुवे 2
आडुहळुम् माडुहळुम् अळहुडैय परियुम्
वीडुहळुम् नॆडुनिलमुम् विरैविनिले तरुवाय् !
ईडु निनक्कोर् दॆय्वमुण्डो ऎनक्कुनैयन्ऱिच् चरणुमुण्डो ?
वाडु निलत्तैक् कण् डिरङ्गा मळैयिनैप् पोल् उळ्ळमुण्डो ?
नाडु मणिच् चॆल्व मॆल्लाम् नन्गरुळ्वाय् तिरुवे !
पोडुडैय वान् पॊरुळे पॆरुङ्गळिये तिरुवे ! 3

तिरु महळैच् चरण् पुहुदल्—59

मादवन् शक्तियिनैच्— चॆय्य मलर् वळर् मणियिनै वाळ्त्निडुवोम्
पोदुमिव् वरुमैयॆलाम्— ऎन्दप् पोविलुञ् जिरुमैयिन् पुहैतनिले
वेदनैप् पडु मनमुम्— उयर् वेदमुम् वॆरुप्पुरच् चोर् मदियुम्
वादनै पॊरुक्क विल्लै— अन्नै मामह ळडियिणै शरण् पुहुवोम् 1
कीळ्हळित् अवमदिप्पुम्— तॊळिल् कॆट्टव रिणक्कमुम् किणऱ्ऱितुळ्ळे
मूळ्हिय विळक्किनैप् पोल्— शॆय्युम् मुयऱ्चि यॆल्लाङ् गॆट्टु मुडिवदुवुम्
एळ्हड लोडियुमोर्— पयन् ऎय्दिड वळियिन्ऱि इरुप्पदुवुम्
वीळ्ह इक् कॊडु नोय्तान्— वैय मीदिनिल् वरुमैयॊर् कॊडुमै यन्ऱो ? 2

हूँ। आओ, लग जाओ, हे लक्ष्मी ! १ दुनिया में तुमको छोड़कर और कोई सुख है क्या ? स्वर्ण को ही अपनी छवि बनाये रखनेवाली अभिनव अमृत ! लक्ष्मी ! बिजली की-सी चमक वाली श्रेष्ठ मणियाँ, उन्नत चबूतरों-सहित भवन, रंगीन कमल फूल, सुन्दर तडागों-सहित उपवन, अन्न, सुगन्धित घी, दूध —यह सब विपुल रूप में दे दो। तुम्हारी कृपा का नित्य गान करके जीता रहूँगा, हे लक्ष्मी ! २ भेड़, बकरियाँ, पशु, उम्दा अश्व, घर, लम्बी जमीन यह सब जल्दी दे दो। क्या तुम्हारी टक्कर का कोई अन्य देवता है ? और क्या तुमको छोड़कर मेरी शरण्या कोई दूसरी है ? सूखे के कारण तरसनेवाली जमीन को देखकर दया न करनेवाले मेघ का-सा दिल भी होगा क्या ? हे लक्ष्मीदेवी ! मैं जो धन तथा सम्पत्तियाँ ढूँढ़ता हूँ, वे सब कसरत से दिला दो। हे महिमामयी श्रेष्ठ वस्तु ! बड़ी आनन्द (-मय देवि) लक्ष्मी ! ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुम्हें छोड़कर इस दुनिया में और नहीं है सुख कोई।
तुम वह सुधा, दमकती जिससे सोने की भी छवि खोई॥
बिजली-सदृश चमकती मणियाँ, ऊँचे-ऊँचे भव्य-भवन।
रंग-बिरंगे फूल कमल के, सुंदर सर, सुरभित उपवन॥
दूध, अन्न, सुरभित घृत, ये सब कर दो माता! मुझे प्रदान।
लक्ष्मी! तेरी अतुल कृपा का सदा रहूँगा करता गान॥ २॥

हय, गज, भेड़, बकरियाँ दे दो, अतुल धरा दो, भव्य-भवन।
तुम-सा और देव नहिं कोई फिर मैं किसकी गहूँ शरण॥
जो अकाल से शुष्क धरा को देख कभी होता न द्रवित।
ऐसे मेघ-समान देवि! क्या हृदय तुम्हारा दया-रहित?॥
जो धन-सम्पति ढूँढ़ रहा हूँ वे सब प्रचुर दिला दो माँ!।
महिमामय! आनन्दमयी माँ! प्रेम-पियूष पिला दो माँ!॥ ३॥

श्री लक्ष्मी की शरण में प्रवेश करना (आश्रय लेना)—५९

लाल-कमल-वासिनी विष्णु की पत्नी की जय गायेंगे।
आज समोद महालक्ष्मी की सुखद शरण में जायेंगे॥
सदा अल्पता-धूम-राशि में घुटता रहता मेरा मन।
मति विश्वास खो चुकी सारा नहीं मानती वेद-वचन॥
दरिद्रता का दुख असह्य है, औ' असह्य यह नास्तिकता।
कृपा करो हे लक्ष्मीदेवी! दे दो मुझको आस्तिकता॥ १॥

कुकर्मियों का साथ नहीं हो, नीच करें अपमान नहीं।
यत्न विफल हों अन्धकूप में दीपक-ज्योति-समान नहीं॥
सात सागरों की यात्रा कर सदा लाभ से हीन रहूँ।
ऐसा नहीं बनाना मुझको जो धनहीन मलीन रहूँ॥
इस दुनिया में दरिद्रता से बढ़कर कोई रोग नहीं।
हरो भयंकर रोग हमारा माँ! मैं सकता भोग नहीं॥ २॥

श्रीलक्ष्मी की 'शरण में प्रवेश करना'—५९

हम माधव की शक्ति (देवी) की, लाल कमल पर पलनेवाली देवी की जय गायेंगे। यह दरिद्रता पर्याप्त (असह्य) है। हमेशा अल्पता के धुएँ में झुलसनेवाला मन, वेदों से भी घृणा करे, ऐसी ऊबी हुई मति! —यह वेदना असह्य है। हम माता महालक्ष्मी की शरण में जायेंगे। १ क्षुद्र लोगों के हाथों अपमान, कुकर्मियों का साथ, कुएँ के अन्दर रहते हुए दीप के समान प्रयत्नों का निष्फल होना, सात समुद्र यात्रा करने पर भी कुछ हाथ लगने का मार्ग न दिखना —यह सब दूर हो जाय। यह भयंकर रोग दूर हो। संसार में अभाव (दरिद्रता) घोर (पीड़ा) है न! २ वह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पाऱ्कड लिडैप् पिऱन्दाळ्— अदु पयन्द नल् लमुदत्तिन् पान्मै कॊण्डाळ्;
एऱ्कुमोर् तामरैप्पू— अदिल् इणैमलर्त् तिरुवडि इशैत्तिरुप् पाळ्
नाऱ्करन् दानुडैयाळ्— अन्द नान्गिनुम् पलवहैत् तिरुवुडैयाळ्
वेऱ्करु विळियुडैयाळ्— शॆय्य मेनियळ् पशुमैयै विरुम्बिडुवाळ् 3
नारणन् मार्बिनिलै— अनबु नलमुऱ् नित्तमुम् इणैन् दिरुप्पाळ्
तोरणप् पन्दरिलुम्— पशुन् दॊळुदिलुम् शुडर् मणि माडत्तिलुम्
वीरर्तन् दोळिनिलुम्— उडल् वॆयर्त्तिड उऴैप्पवर् तॊळिल्ह ळिलुम्
पारति शिरत्तिनिलुम्— ऒळि परविड वीऱ्ऱिरुन् दरुळ् पुरिवाळ् 4
पॊन्निलुम् मणिहळिलुम्— नऱुम् पूविलुम् शान्दिलुम् विळक्कि निलुम्
कन्नियर् नहैप्पि निलुम्— शॆऴुङ् काट्टिलुम् पॊऴिलिलुङ् गऴनियिलुम्
मुन्निय तुणिविनिलुम्— मन्नर् मुहत्तिलुम् वाळ्न्दिडुम् तिरुमहळैप्
पन्निनऱ् पुहळ् पाडि— अवळ् पदमलर् वाऴ्त्ति नऱ् पदम् पॆऱुवोम् 5
मण्णिनुट् कनिहळिलुम्— मलै वाय्प्पिलुम् वार्कड लाऴत्तिलुम्
पुण्णिय वेळ्बियिलुम्— उयर् पुहऴिलुम् मदियिलुम् पुवुमैयिलुम्
पण्णुनर् पावैयिलुम्— नल्ल पाट्टिलुम् कूत्तिलुम् पडत्तिनिलुम्
नण्णिय तेविदनै— अङ्गळ् नाविलुम् मनत्तिलुम् नाट्टिडुवोम् 6
वॆऱ्ऱि कॊळ् पडैयिनिलुम्— पल विनयङ्गळ् अऱिन्दवर् कडैयिनिलुम्
नऱ्ऱव नडैयिनिलुम्— नल्ल नावलर् तेमॊऴित् तॊडरिनिलुम्
उऱ्ऱ शॆन्दिरुत्तायै— नित्तम् उवहैयिऱ् पोऱ्ऱि यिङ् गुयर्न्दिडुवोम्
कऱ्ऱ पल् कलैकळॆल्लाम्— अवळ् करुणै नल्लॊळि पॆऱक् कलि तविर्प्पोम् 7

क्षीर-सागरोद्भवा है, उससे निकले अमृत का-सा गुण रखनेवाली है। उसको (अपने ऊपर) कमल फूल धारण किये हुए है। उसमें उसके चरणकमलद्वय धरे रहते हैं। वह चतुर्हस्ता है। उन चारों हाथों में विविध श्रीलक्षण हैं। वह वेल् (शक्ति) के समान तथा काली आँखों वाली है। वह लाल रंग की है और हमेशा हरी वस्तु (समृद्धता) चाहनेवाली है। ३ प्रेम के साथ मंगल करती हुई वह हमेशा श्रीनारायण के वक्ष से युक्त रहती है। तोरण सहित पंडालों, गोशालाओं, चमकदार मणि-जड़ित भवनों, वीरों की भुजाओं, पसीना बहाते हुए श्रम करनेवालों के परिश्रमों और भारती के शीर्ष में अपनी आभा को फैलाती हुई वह विराजकर अनुग्रह कर रही है। ४ स्वर्ण में, मणियों में, सुगन्धित फूलों में, चंदन में, दीप में, रमणियों के हास में, घने जंगल में, बढ़ते रहनेवाले उपवनों में, खेतों में, साहस में और राजाओं के मुखों पर जो विलसती है, उसकी महिमा हम गायेंगे। उसके श्रीचरणों की जय गाकर उच्च पद पायेंगे। ५ पृथ्वी के नीचे खानों में, पर्वतीय प्रदेशों में, बड़े समुद्र की गहराई में, उन्नत यश में, मति में, अभिनवता में, रचित सुन्दर प्रतिमा में, अच्छे संगीत में, नाच में और चित्र में शोभित रहनेवाली देवी को हम अपनी जीभ में तथा मन में स्थापित कर लेंगे। ६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

क्षीरसिंधु से उपजी लक्ष्मी सुधा-सदृश-गुणवाली है।
चरण युगल कमलों पर संस्थित वह कमलासन वाली है॥
चतुर्भुजा है, सभी भुजाओं में लक्ष्मी के चिह्न ललाम।
श्यामल-नयना, अरुणिम-वर्णा, है समृद्धिदा, अति अभिराम॥ ३ ॥

तोरणवाले पंडालों में, मणि-भवनों के खंडों में।
श्रमिकों के श्रमसिक्त श्रमों में, वीरों के भुजदंडों में॥
भव्य भारती के मस्तक में, पावन गोशालाओं में।
नारायण के वक्षस्थल में, (भक्तों की मालाओं में)॥
इन सबमें बसती है लक्ष्मी निज आभा फैलाती है।
कृपादृष्टि कर भक्तजनों के दुख-दारिद्र्य मिटाती है॥ ४ ॥

दीपों में, चंदन में, सुरभित सुमनों, मजुल मणियों में।
राजाओं के मुखमंडल में औ' रमणीय रमणियों में॥
खेतों में, उपवनों, वनों में, स्वर्ण-राशि में, साहस में।
बसती है श्रीलक्ष्मीदेवी पुरुषार्थी के पौरुष में॥
लक्ष्मीदेवी के चरणों की जय-जयकार मनायेंगे।
उसकी कृपादृष्टि पाकर जन उच्च पदों को पायेंगे॥ ५ ॥

पृथ्वी के नीचे खानों में, पर्वतीय मैदानों में।
महासिन्धु की गहराई में, संगीतों में, गानों में॥
उन्नत यश में, निर्मल मति में, प्रतिमा में, अभिनव-वन में।
श्री लक्ष्मी निवास करती है चित्र-वाद्य में, नर्तन में॥
पावन नाम महालक्ष्मी का मेरी रसना पर राजे।
मंजुल मूर्ति महालक्ष्मी की मम मनमंदिर में भ्राजे॥ ६ ॥

तपस्वियों के पावन तप में, अरि-विजयी सेनाओं में।
निर्णायक के शुभ-निर्णय में, कवियों की रचनाओं में॥
बसी अरुणवर्णा श्रीदेवी उसको आज मनायेंगे।
नित्य प्रार्थना उसकी कर उन्नति पर उन्नति पायेंगे॥
उसकी दयाज्योति से, सीखी कलाराशि खिल जायेगी।
कलि-प्रकोप से बच जायेंगे, (सिद्धिराशि मिल जायेगी)॥ ७ ॥

विजयी वाहिनी में, न्यायाधीशों के फ़ैसले में, श्रेष्ठ तप के मार्ग में, मँजे हुए कवियों की मधु शब्दावली में, जो लाल देवी माता शोभायमान रहती हैं, उसकी रोज स्तुति करके हम उन्नति करेंगे। सीखी हुई कलाएं उसकी करुणा के उत्कृष्ट प्रकाश से खिल जायेंगी और हम कलि से बच जायेंगे ७।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रादैप् पाट्टु—60

राग— कमास्; ताळ— आदि

पल्लवि (टेक)

देहि मुदम् देहि श्री रादे रादे !

शरणङ्गळ् (चरण)

राग समुद्रजाम्रुते रादे रादे !
राज्ञी मण्डल रत्न रादे रादे
पोह रदि कोटि तुल्ये रादे रादे ! जय जय (देहि)
बूदेवि तब पल रादे रादे !
वेद महा मन्त्र रस रादे रादे !
वेद वित्तिया बिलासिनि श्री रादे रादे !
आदि पराशक्ति रूप रादे रादे !
अत्यद्बुत शृङ्गारमय रादे रादे ! (देहि)

तमिळ्क् कण्णिहळ् (तमिळ पदांश)

कादलॆनुन् दीविनिले रादे रादे अनुरु
कण्डॆडुत्त पॆण्मणिये रादे रादे ! (देहि) 1
कादलंनुञ् जोलैयिले रादे रादे निनुर
कर्पहमाम् बून् दरुवे रादे रादे ! (देहि) 2
मादरशे शॆल्वप् पॆण्णे रादे रादे !— उयर्
वानवर्ह ळिनुव वाळ्वे ! रादे रादे (देहि) 3

कलैमहळै वेण्डुदल्—61

नॊण्डिच् चिनदु

अॆङ्ङनम् शॆन्ऱिरुन्दोर्— अॆनदु इन्नुयिरे अॆनुरन् इशैयमुदे !
तिङ्गळैक् कण्डवुडन्— कडल् तिरैयिनैक् कार्ऱिनैक् केट्टवुडन्

(क) राधा-गान (संस्कृत-पदांश)—६०

दो मुझे मोद ! श्रीराधे ! राधे ! (टेक) राग समुद्र से उत्पन्न अमृतरूपिणी ! राधे राधे ! रानियों के मंडल में रत्नसमाना ! भोग में कोटि रतियों से तुल्य राधे ! राधे, जय जय (दो०) भूदेवी के तप का फल ! राधे, राधे ! वेद महामंत्र का रस ! राधे, राधे ! वेद-विद्या-विलासिनी ! श्रीराधे ! आदि पराशक्ति-रूपे, राधे, राधे ! अत्यद्भुत शृंगारमयी राधे, राधे ! (दो०)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(क) राधा-गान (संस्कृत-पदांश)—६०

मुझे मोद दो, मुझे मोद दो, मुझे मोद दो, हे राधे ! ॥
राग-सिन्धु से समुद्भूत तुम अमृतरूपिणी हो राधे ! ।
महारानियों की टोली में रत्न-दीपिनी हो राधे ! ॥
कोटि-कोटि-रतियों-सी सुखमय भोग-भोगिनी हो राधे ! ।
मुझे मोद दो, मुझे मोद दो, मुझे मोद दो, हे राधे ! ॥
भूदेवी के तप का फल हो, श्रुति-मंत्रों का रस राधे ! ।
वैदिक-विद्या-विलासिनी हो, पराशक्ति शुभ-यश राधे ! ॥
अत्यद्भुत श्रृंगारमयी तुम (करतीं हरि को वश राधे) ! ।
मुझे मोद दो, मुझे मोद दो, मुझे मोद दो, हे राधे ! ॥

(ख) राधा-गान (तमिळ-पदांश—६०)

प्रम-द्वीप से निकली सुंदर नारी-रत्न रुचिर राधे ! ।
मुझे मोद दो, मुझे मोद दो, मुझे मोद दो, हे राधे ! ॥ १ ॥
प्रेम बाग़ के कल्पवृक्ष की सुमन-सुरभि हो तुम, राधे ! ।
मुझे मोद दो, मुझे मोद दो, मुझे मोद दो, हे राधे ! ॥ २ ॥
तुम हो बहुत दुलारी बाला तुम रमणीरानी राधे ! ।
मुझे मोद दो, मुझे मोद दो, मुझे मोद दो, हे राधे ! ॥
महा सुरों की तुम प्यारी हो, तुम जीवनदानी राधे ! ।
मुझे मोद दो, मुझे मोद दो, मुझे मोद दो, हे राधे ! ॥ ३ ॥

कलादेवी (सरस्वती) से प्रार्थना—६१

होती रात, पवन हहराती, चन्द्रचाँदनी मुसकाती ।
चारु चन्द्र लख सिन्धु तरंगावलि है जैसे लहराती ॥

(ख) राधा-गान (तमिळ-पदांश)—६०

प्रेम के द्वीप में, राधे राधे, उस दिन ढूंढ़ निकाली गयी हे नारीरत्न ! राधे, राधे ! (दो०) १ प्रेम रूपी उद्यान में, राधे, राधे, खड़ी कल्पसुमनतरु राधे ! (दो०) २ स्त्री रानी दुलारी बाले ! राधे, राधे ! महान सुरों की प्यारी जीवन-दायिनी ! राधे ! (दो०) ३

कलादेवी (सरस्वती) से प्रार्थना—६१

हे मेरी प्यारी जान ! संगीतामृत ! तुम कहाँ और कैसे गयी थी ? चन्द्र को देखते ही, समुद्र की तरंगों, हवा को देखते ही, रात से साक्षात्कार होते ही तुम अमृत के समान उमड़ आतीं । (कवि का तात्पर्य कविता की अंतर्प्रेरणा की लहर से है ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कङ्गुलैप् पार्त्तवुडन्— इङ्गु कालैयिल् इरवियैत् तॊळुदवुडन्
पॊङ्गुबोर् अमिळ्दॆन्नवे— अन्दप् पुदुमैयिले तुयर् मऱन्दि रुप्पेन् 1

मादमॊर् नाऱ्गा नीर्— अत्बु वऱुमैयि लेयॆन्नै वीळ्त्ति बिट्टीर्
पादङ्गळ् पोऱ्ऱु हिन्ऱेन्— अॆन्ऱन् पावमॆलाङ् गॆट्टु जाऱगङ्गै
नाद मॊडैप् पॊळुदुम्— अॆन्ऱन् नाविन्निले पॊळिन् दिडवेण्डुम्
वेदङ्ग ळाक्किडुवीर्— अन्द विण्णवर् कण्णिडै विळङ्गिडुवीर् ! 2

कण्मणि पोन्ऱवरे ! इङ्गुक् कालैयुम् मालैयुम् तिरुमहळाम्
पॆण्मणि यिन्बत्तैयुम्— शक्तिप् पॆरुमहळ् तिरुवडिप् पॆरुमैयैयुम्
वण्मैयिल् ओदिडुवीर्– अॆन्ऱन् वायिलुम् मदियिलुम् वळर्न् दिडुवीर्
अण्मैयिल् इरुन्दिडुवीर्– इन्नि अडियनैप् पिरिन्दिडल् आऱ्ऱवनो ? 3

तान्नॆनुम् पेय् कॆडवे— पल शञ्जलक् कुरङ्गुहळ् तलैप्पडवे
वान्नॆनुम् ऒळि पॆऱवे— नल्ल वाय्मैयिले मदि निलैत्तिडवे
तेन्नॆन्नप् पॊळिन् दिडुवीर्– अन्दत् तिरुमहळ शिन्नङ्गळैत् तीर्त्तिडुवीर्
ऊन्नङ्गळ् पोक्किडवीर्— नल्ल ऊक्कमुम् पॆरुमैयुम् उदविडुवीर् 4

तोयिन्नै निरुत्तिडुवीर्— नल्ल तीरिमुन् दॆळिवुमिङ् गरुळ् पुरिवीर्
मायैयिल् अऱिविळन्दे— उम्मै मदिपपदु मऱन्बन्न् पिळैहळॆल्लाम्
तायॆन्न उमैप् पणिन्देन्– पॊऱै शार्त्तिनल् लरुळ्शॆय वेण्डुहिन्ऱेन्;
वायिन्निऱ् चपद मिट्टेन्— इन्नि मऱक्कहिलेन् अॆन्नै मऱक्कहिलीर् 5

वे उसको सरस्वती देवी का प्रत्यक्ष होना मानते हैं।) उस विचित्र अभिनव अनुभव में, मैं अपना दुख भूला बैठता हूँ। १ चार महीनों से तुमने मुझे प्रेम के अभाव में डुबा दिया। मैं तुम्हारे चरणों की वन्दना करता हूँ। मेरे सभी पाप दूर हों और ज्ञान गंगा सुस्वर के साथ हमेशा मेरी जिह्वा से धारावाही निकलती रहे। हे वेदजननी ! सुर की आँखों में विलसनेवाली ! २ आँख के तारे-सी रहनेवाली ! यहाँ सबेरे और शाम लक्ष्मीदेवी के भोग तथा महीयसी शक्ति के श्रीचरणों की महिमा को पुष्कल रूप में प्रकट करो। मेरे मुख में तथा मेरी मति में पलती रहो। आगे मैं दास, आपके वियोग को सह सकूंगा क्या ? ३ अहंकार का भूत बिछुड़ जाय। संशय-वानर मिट जाय। आकाश-सा प्रकाश मिल जाय। सत्य में बुद्धि स्थिति पा जाय। यह सब सम्भव करते हुए मधु-समान झरो। उस श्रीलक्ष्मी (सम्पत्ति की ईश्वरी) के कोप का शमन कर दो। न्यूनता को दूर (पूरा) करो। उत्साह तथा बड़ाई पाने में मेरी सहायता कर दो। ४ आग को शान्त करो। (आग का कोई भी अर्थ किया जा सकता है, जिसका वह प्रतीक हो सकता है— जैसे अभाव, डाह आदि।) धैर्य तथा स्वच्छता का अनुग्रह करो। माया से अपहृत-ज्ञान होकर मैं तुम्हें मानना भूल गया था। अब माता मानकर तुम्हारे चरणों की वंदना करता हूँ। मेरी भूलों को माफ़ करो। बड़ी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उसी भाँति से हो सरस्वती! तुम मनमंदिर में आतीं।
सुधा-सिन्धु की सुधा-लहर-सी भाव राशि हो लहरातीं॥
सरस्वती! तुम प्राणरूप हो तुम संगीत-सुधा सुन्दर।
इस विचित्र अभिनव अनुभव में भूल गया मैं कष्ट प्रखर॥ १॥

चार मास से प्रेम-रहित हो मैं अभाव में डूबा हूँ।
चरणों की कर रहा वंदना (स्वार्थी जग से ऊबा हूँ)॥
लुंज-पुंज हों पाप-पुंज सब, पावन हो तन-मन सारा।
बहती रहे ज्ञान-गंगा की रसना से निर्मल धारा॥
सुर-नयनों में विलसित, वेदों की माता-सम ध्याता हूँ।
मुझ पर कृपा करो तुम माता, तुमको सीस झुकाता हूँ॥ २॥

राजो तुम मेरी रसना पर मति में मेरी बसी रहो।
सह न सकूँगा विरह तुम्हारा दृग-पुतली-सी लसी रहो॥
साँझ-सबेरे लक्ष्मी आये, वैभव से भंडार भरो।
अपने चरणों की महिमा को प्रचुर रूप से प्रकट करो॥ ३॥

अहंकार का भूत भगे औ' मिट जायें संशय वानर।
नभ-सा मिले प्रकाश, सत्य में यह मति मेरी हो सुस्थिर॥
यह सब संभव बना शारदे! तुम मधु-बिन्दु-समान झरो।
मुझ पर लक्ष्मीदेवी का है कोप, उसे तुम शमन करो॥
करो सभी कमियों को पूरा, अन्तर में उत्साह भरो।
और यशौन्नति के पाने में माता सदा सहाय करो॥ ४॥

द्वेष-अग्नि को शान्त करो माँ! धैर्य-स्वच्छता दो माता!॥
माया से ढक गया ज्ञान था भूल गया तुमको माता!॥
अब मैं माता! मान तुम्हारे चरणों का वंदन करता।
क्षमा करो त्रुटियाँ सब मेरी, कृपा करो, क्रन्दन करता॥
शपथ खा रहा मैं निज मुख से भूलूँगा अब नहीं तुम्हें।
यही प्रार्थना तुमसे, तुम भी अब न भूलना कभी हमें॥ ५॥

कृपा करो। मुख से शपथ करता हूँ— अब मैं तुम्हें नहीं भूलूँगा। तुम भी मुझे मत भूलो। ५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॆळ्ळैत् तामरै—62

राग— आनन्द बैरवि; ताळ— चाप्पु

वॆळ्ळैत् तामरैप् पूविल् इरुप्पाळ्
वीणै शॆय्युम् ऑलियिल् इरुप्पाळ्
कॊळ्ळै यिन्बम् कुलवु कविदै
कूरु पावलर् उळ्ळत्ति लिरुप्पाळ्
उळ्ळताम् बॊरुळ् तेडियुणर्न्दे
आदुम् वेदत्तिन् उळ् निन्ऱॊळिर्वाळ्
कळ्ळ मऱ्ऱ मुनिवर्हळ् कूरुम्
करुणै वाशहत्तुट् पॊरुळावाळ् (वॆळ्ळैत्) 1

मावर् तीङ्गुरऱ् पाट्टिल् इरुप्पाळ्
मक्कळ् पेशुम् मऴलैयिल् उळ्ळाळ्
कीदम् पाडुम् कुयिलिन् कुरलैक्
किळियिन् नावै इरुप्पिडङ् गॊण्डाळ्
कोदहत्ऱ् तॊऴिलुडैत् ताहिक्
कुलवु शित्तिरम् कोपुरम् कोयिल्
इदनैत्तिन् ऍऴिलुडै युऱ्ऱाळ्
इन्बमे वडि वाहिडप् पॆऱ्ऱाळ् (वॆळ्ळैत्) 2

वञ्जमऱ्ऱ तॊऴिल् पुरिन्दुण्डु
वाऴुम् मान्दर् कुल दॆय्व मावाळ्
वॆञ्जमर्क् कुयिराहिय कॊल्लर्
वित्तै योर्न्दिडु शिऱ्पियर् तच्चर्
मिञ्ज नऱ्पॊरुळ् बाणिहञ् जॆय्बोर्
बीर मन्नर् पिन् वेदियर् यारुम्
तञ्ज मॆन्ऱु वणङ्गिडुन् दॆय्वम्
तरणि मी वऱि वाहिय दॆय्वम् (वॆळ्ळैत्) 3

श्वेत कमल—६२

(सरस्वती) श्वेत कमल में रहती है। वीणा के स्वर में, अपार सुख-विदग्ध कविता के वक्ता कवियों के हृदय में, सत्य वस्तु का अन्वेषण कर प्रतिपादित करनेवाले वेद के अन्दर और निष्कपट मुनि-कथित करुणा-कलित कथन के अन्दर उसके तात्पर्य के रूप में रहती है। (श्वेत कमल०) १ वह स्त्रियों के मधुर-कंठ गीत में पायी जायगी। वह शिशुओं की तुतली बोली में वास करती है। गीत गानेवाली कोयल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्वेत-कमल—६२

श्वेत-कमल-दल पर बसती है हंसवाहना सरस्वती ॥ टेक ॥
सरस्वतीदेवी बसती है वीणा के स्वर सुमधुर में।
परमानन्द-प्रदा कविता के कर्ता कवियों के उर में॥
सत्यवस्तु का अन्वेषण कर प्रतिपादित करनेवाले।
बसती सरस्वती वेदों में ज्ञानराशि भरनेवाले॥
कपट-हीन मुनियों से वर्णित करुणा-कलित-कथन-भीतर।
बन करके तात्पर्य-रूप लसती सरस्वती वीणा-वर॥
(इन सब स्थानों पर बसती है सरस्वती सौंदर्यवती)।
श्वेत-कमल-दल पर बसती है हंसवाहना सरस्वती॥ १॥

मधुर-कंठ-वाली बालाओं के मृदु मधुमय गानों में।
शिशुओं की तुतली बोली में कोयल की कल तानों में॥
दोष-विहीन कलाकारों के मानस-रंजक हृदयों में।
उच्च-गोपुरों, मंजु मन्दिरों के अपार सौंदर्यों में।
मधुभाषी शुक की जिह्वा में मधु को-सी मिठास बनकर।
सुख-स्वरूपिणी सरस्वती बसती सबमें सुवास बनकर॥
(इन सब स्थानों पर) बसती है सरस्वती अति रूपवती।
श्वेत-कमल--दल पर बसती है हंसवाहना सरस्वती॥ २॥

जो छल-कपट-वंचना तजकर कठिन परिश्रम करते हैं।
अस्त्र-शस्त्र रचकर लोहे के, जो युद्धस्थल भरते हैं॥
शिल्प-कला के ज्ञाता शिल्पी, बढ़ई काष्ठ-कला, निष्णात।
धर्म-कार्य-हित अर्थ-उपार्जक सुकुशल व्यापारी (विख्यात)॥
पुत्र-समान प्रजा के पालक वीर साहसी नृपवर की।
धार्मिक सौम्य सुशील जितेन्द्रिय ज्ञानी विज्ञ विप्रवर की॥
इन सबकी कुलदेवी भू पर बुद्धिमयी विज्ञानवती।
श्वेत-कमल-दल पर वसती है हंस-वाहना सरस्वती॥ ३॥

के कंठ को तथा शुक की जिह्वा को वह अपना निवास-स्थान बना चुकी है। निर्दोष कारीगरी के साथ मनोरंजक रहनेवाले चित्रों में, गोपुरों, मन्दिरों आदि सभी में ऐसे सभी के सौन्दर्य के साथ रहनेवाली वह केवल सुखरूपिणी है। (श्वेत कमल०) २ वंचना-हीन श्रम करके रहनेवाले मनुष्यों की वह कुलदेवी है। कठोर युद्ध के लिए ही योग्य लुहार, अपनी विद्या में निष्णात शिल्पी, बढ़ई, धर्म के आधार पर प्राप्त धन को बढ़ाने के लिए व्यापार करनेवाले, वीर राजा, फिर विप्र— सभी के लिए शरण्य-रूप बन्धु देवी है। वह धरणी पर बुद्धि रूप में रहनेवाली है। (श्वेत कमल०) ३ सभी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दय्वम् यावुम् उणर्न्दिडुन् दॆय्वम्
तीमै काट्टि विलक्किडुन् दॆय्वम्
उय्व मॆन्ऱ् करुत्तुडै योर्हळ्
उयिरिनुक् कुयिराहिय दॆय्वम्
शॆय्व मॆन्ऱॊरु शॆय्है यॆडुप्पोर्
शॆम्मै नाडिप् पणिन्दिडु दॆय्वम्
कैबरुन्दि उऴैप्पवर् दॆय्वम्
कविञर् दॆय्वम् कडवुळर् दॆय्वम् (वॆळ्ळैत्)

शॆन्दमिऴ् मणि नाट्टिडै युळ्ळीर् !
शेर्न्दित् तेवै वणङ्गुवम् वारीर् !
वन्दनम् इबट्के शॆय्व दॆन्ऱाल्
वाऴि यःदिङ् गॆळिदॆन्ऱु कण्डीर् !
मन्दिरत्तै मुगुमुणुत् तेट्टै
वरिशैयाह अडुक्कि अदन्मेल्
शन्दनत्तै मलरै इडुवोर्
शास्तिरम् इबळ् पूशनै यन्ऱाम् (वॆळ्ळैत्) 5

वीडु तोऱुम् कलैयित् विळक्कम्
वीदि तोऱुम् इरण्डॊरु पळ्ळि
नाडु मुऱ्ऱिलुम् उळ्ळन वूर्हळ्
नहर्हळॆङ्गुम् पल पल पळ्ळि
तेडु कल्वि यिलाद दॊरुरैत्
तीयिनुक् किरैयाह मडुत्तल्
केडु तीर्क्कुम् अमुदमॆन्ऱ् अन्नै
केण्मै कॊळ्ळ वऴियिवै कण्डीर् (वॆळ्ळैत्) 6

ऊणर् देशम् यवनर् तन्देशम्
उदय ञायिऱ् ऱॊळि पॆऱु नाडु

देवता इसका स्मरण करते हैं। यह हानि (का भय) दिखाकर बचानेवाली देवी है। जो उद्धार पाना चाहते हैं, वे इसी को अपने प्राणों का प्राण मानते हैं। जो किसी कृत्य को करने का संकल्प करते हैं, वे अपने कार्य में सौष्ठव चाहकर इसी देवी की सेवा करते हैं। यह शारीरिक श्रम करनेवालों की देवी है। कवियों की देवी, देवताओं की देवी है। (देय्वम्, शब्द देवी, देवता दोनों के अर्थ में प्रयुक्त होता है। यह प्रायः अकेले ईश्वर के लिए प्रयुक्त होता है और कभी-कभी परमेश्वर से इतर देवी-देवताओं का भी द्योतक बनता है।) (श्वेत कमल०) ४ हे तमिऴ के सुन्दर तथा श्रेष्ठ देश में रहनेवालो! आओ, हम सब मिलकर इस देवी की वन्दना करें। इसकी वन्दना करनी है

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सभी देवता सरस्वती का सदा संस्मरण करते हैं।
प्राणों से प्रिय इसे मानते वे भवसागर तरते हैं॥
करते दृढ़-संकल्प कार्य की पूर्ति-हेतु यदि कोई जन।
तभी कार्य-सौष्ठव-हित करते सरस्वती का ही अर्चन॥
शुचि श्रमिकों की देवी है यह, देवी है यह कवियों की।
देवों की भी देवी है यह देवी दिव्य-देवियों की॥
हानि दिखाकर रक्षा करती ऐसी है यह दयावती।
श्वेत-कमल-दल पर बसती है हंसवाहना सरस्वती॥ ४॥

सुन्दर श्रेष्ठ तमिळ-वासी जन करें वन्दना सब मिलकर।
इसकी जय-जयकार वन्दना है सुकर्म सबसे सुन्दर॥
पूज्य वेद-मंत्रों को पढ़ना पन्नों को रचना चुन-चुन।
उन पर चंदन-तिलक लगाना और चढ़ाना सुरभि-सुमन॥
इस प्रकार से विधि-विधान से साङ्गोपाङ्ग यजन-पूजन।
नहीं वास्तविक क्या यह पूजन? (सरल भक्ति सच्चा अर्चन)॥
सरल भक्ति से सदा रीझती सरस्वती सद्भाववती।
श्वेत-कमल-दल पर बसती है हंसवाहना सरस्वती॥ ५॥

ग्राम-ग्राम घर-घर में होवे ललित-विलास कलाओं का।
गली-गली में गूँज रहा हो पाठ पाठशालाओं का॥
नगर-नगर में भारत भर में बहु विद्याशालाएँ हों।
विद्या-व्यसन-विहीन ग्राम को जला रहीं ज्वालाएँ हों॥
यही अमृत संकट-नाशक ही करता पूर्ण मनोरथ है।
सरस्वती के अटल अनुग्रह के पाने का प्रिय-पथ है॥
(विद्या के प्रचार के व्रत की सरस्वती है महाव्रती)।
श्वेत-कमल-दल पर बसती है हंसवाहना सरस्वती॥ ६॥

उदयाचल संस्थित-रवि-किरणों से उद्भासित पूर्वी देश।
छोटे-छोटे पैरों वाला अति विशालतम चीन प्रदेश॥

तो जान लो कि दुहाई है, यह बहुत ही सुगम है। मंत्र गुनगुनाना, पत्रों (पन्नों) को (ग्रंथों को) एक के ऊपर एक चुनकर रखना और उस पर चन्दन का तिलक लगाना तथा फूल चढ़ाना —यही करनेवालों का शास्त्र (पूजाक्रम) इसकी पूजा नहीं बनेगा। (श्वेत कमल०) ५ घर-घर में कला का बिलास! गली-गली में दो एक पाठशालाएँ, देश भर के नगरों तथा गाँवों में अनेक-अनेक विद्याशालाएँ, विद्या-व्यसनी-विहीन गाँवों को आग का ग्रास बना देना, यही संकटनाशक अमृत, मेरी माता का साथ (अनुग्रह) पाने का मार्ग है। (श्वेत कमल०) ६ हूणों का देश, यवनों का देश, उदीयमान सूर्य से प्रकाशित (पूरब के) देश, छोटे पैरों वालों का विशाल चीन देश, धनी फ़ारस का पुराना देश, गोरों का तुर्क देश, मिस्र, आबरण के समुद्र के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शेणहन्ऱदोर् शिऱ्ऱडिच् चीऩम्
शॆल्वप् पारशिहप् पळन्देशम्
तोणलत्त तुरुक्कुम् मिशिरम्
शूळ्हडऱ् कप्पुऱत्तिऩिल् इऩ्ऩम्
काणुम् पऱ्पल नाट्टिडै यॆल्लाम्
कल्वित् तेवियिऩ् ऑळि मिहुत् तोङ्ग (वॆळ्ळैत्) 7
ञाऩम् अॆऩ्बदोर् शॊल्लिऩ् पॊरुळाम्
नल्ल बारद नाट्टिडै वन्दीर्
ऊऩम् इऩ्ऱु पॆरिदिळैक्किऩ्ऱीर् !
ओङ्गु कल्वि युळैप्पै मऱन्दीर्
माऩ मऱ्ऱु विलङ्गुह ळॊप्प
मण्णिल् वाळ्वदे वाळ्वॆऩलामो ?
पोऩ दऱ्कु वरुन्दुदल् वेण्डा
पुऩमै तीर्प्प मुयलुवम् वारीर् ! (वॆळ्ळैत्) 8
इऩ्ऩऱुङ्गऩिच् चोलैहळ् शॆय्दल्
इऩिय नीर्त् तण् शुनैहळ् इयऱ्ऱल्
अऩ्ऩ शत्तिरम् आयिरम् वॆत्तल्
आलयम् पदिऩायिरम् नाट्टल्
पिऩ्ऩऱुळ्ळ तरुमङ्गळ् यावुम्
पॆयर् बिळङ्गि यॊळिर निऱुत्तल्
अऩ्ऩ याविऩुम् पुण्णियम् कोडि
आङ्गोर् एळैक्कु ऍळुत्तरि बित्तल् (वळ्ळैत्) 9
निदि मिहुन्दवर् पॊऱ्कुवै तारीर् !
निदि कुऱैन्दवर् काशुहळ् तारीर्

उस पार रहनेवाले विविध देश —इन सभी में विद्यादेवी की ज्योति उद्दीप्त हो। (श्वेत कमल०) ७ 'ज्ञान' शब्द का प्रत्यक्ष अर्थ 'भारत' है। उस अच्छे भारत देश में जनमे लोगो ! आज तुम लोग बहुत हलकी (मान घटानेवाली) बात कर रहे हो। उत्कृष्ट विद्या-परिश्रम को भूल गये हो। मान छोड़कर, पशुओं के समान संसार में जीना भी क्या जीवन कहा जा सकता है ? जो बीत गयी उसके लिए मत पछताना। इस अल्पता के निवारण का प्रयत्न करें, आओ। (श्वेत कमल०) ८ मधुर, सुगंधित फलों के उद्यान लगाना, मधुर शीतल जल के सोते बनाना, अन्नसत्र (सदावर्त) चलाना, दस हजार आलयों (देवालयों) का निर्माण और कितने ही धार्मिक काम, नाम प्रशस्त करने के लिए करना —इन सबसे अधिक, करोड़ (गुना) पुण्य का काम है एक दीन को अक्षर सिखाना (साक्षर या शिक्षित बनाना)। (श्वेत कमल०) ९ तुम, जिनके पास बहुत निधियाँ हैं, स्वर्ण-राशियाँ दो। निधि जिनके पास कम हो ऐसे तुम पैसे दो।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यवन देश औ' धन-वैभव से पूर्ण पुराना फ़ारस देश।
जो सागर के पार बसे हैं ऐसे विविध महायश देश॥
तुर्क देश गोरे लोगों का, हूण देश और मिश्र प्रदेश।
जगमग ज्योति दिव्य विद्या की इन देशों में करे प्रवेश॥
मिटा अविद्या-तम विद्या की ज्योति जगाती ज्योतिमती।
श्वेत-कमल-दल पर बसती है हंसवाहना सरस्वती॥ ७॥

ज्ञान-शब्द भारत का वाचक उसमें पुण्य-जन्म लेकर।
आज कर रहे हलकी बातें अपनी आन-बान खोकर॥
भूल गये तुम उत्तम-विद्या कठिन-परिश्रम भूल गये।
मान छोड़ पशु-सम जीते हो जीवन का क्रम भूल गये॥
बीत गयी सो बीत गयी उसके हित अब क्या पछताना?।
ऐसा यत्न करो मिट जाए सभी हीनता का बाना॥
(मिटा हीनता गौरव देती गौरव-गरिमा-ज्ञानवती)॥
श्वेत-कमल-दल पर बसती है हंसवाहना सरस्वती॥ ८॥

मधुर सुगन्धित फूल-फलों के बाग़-बगीचे लगवाना।
मधुर-सुशीतल-सलिल-प्रपूरित सरस-सरोवर बनवाना॥
अगणित देवालय बनवाना, सदाबर्त भी खुलवाना।
धार्मिक कार्यों को कर जग में यश पाना गौरव पाना॥
कोटि-गुना फल देनेवाला इन सब कामों से बढ़कर।
निरक्षरों को विद्या देकर उन्हें बना देना साक्षर॥
(ज्ञान-प्रभा बिखराती जग में विद्या-प्रभा-प्रकाशवती)
श्वेत-कमल-दल पर बसती है हंसवाहना सरस्वती॥ ९॥

जिनके पास बहुत निधियाँ हैं वे जन स्वर्णराशियाँ दें।
कम-हैसियत ग़नीमत समझें, पैसे या इकन्नियाँ दें॥

वह भी जिसके पास नहीं है, ऐसे तुम वाक् (द्वारा सहायता) दो। पौरुष वालो! श्रमदान करो। मधुर मधु-वाणी नारियो, सब वाणीदेवी की पूजायोग्य बातें करो। कुछ भी दो। कोई भी (सहायता का) काम करो—यह बड़ा काम स्थिर रूप से करो। आओ। (श्वेत कमल०) १०

नवरात्रि-गीत—६३

माता पराशक्ति— हे माता पराशक्ति! विश्व भर में व्याप्त हो। तुमको छोड़कर हमारे लिए आधार (आश्रय) कौन है? हे हमारे प्राण! कोई भी मार्ग बताओ! हे ब्रह्मा की माता! हम विनय करके जियेंगे। १ वाणी— वाणी, कला की सुन्दर वाक्शक्ति दिला देगी। वह श्रेष्ठ मोती-माला के समान बुद्धि-मुक्तामाला की धारिणी है। वह दृश्य भी है, दृश्य-दर्शक भी है। उस बहुत ही उन्नत स्थिति में रहने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अदुवुमऱ्ऱवर् वाय्च्चॊल् अरुळीर् !
आण्मैयाळर् उऴैप्पिऩै नल्हीर् !
मदुरत् तेमॊऴि मावर्हळॆल्लाम्
वाणि पूशैक् कुरियऩ पेशीर् !
ऎदुवुम् नल्हियिङ् गॆव्बहै यानुम्
इप्पॆरुन् दॊऴिल् नाट्टुवम् वारीर् ! (बॆळ्ळैत्) 10

नवरात्तिरिप् पाट्टु—63

मादा पराशक्ति (माता पराशक्ति)

(मूत्तम् ऒऩ्ऱाहिय मूर्त्ति)

मादा पराशक्ति वैयमॆलाम् नी निऱैन्दाय् !
आदारम् उऩ्ऩै यल्लाल् आरॆमक्कुप् पाऱिऩिले
एदायिऩुम् वऴि नी शॊल्वाय् ऎमदुयिरे !
वेदाविऩ् ताये ! मिहप्पणिन्दु वाऴ्वोमे ! 1

वाणि (वाणी)

वाणि कलैत्तॆय्वम् मणिवाक् कुदविडुवाळ्
आणि मुत्तॆप् पोल अऱिवु मुत्तु मालैयिऩाळ्
काणुहिऩ्ऱ काट्चि याय्क् काण्बवॆल्लाङ् गाट्टुवदाय्
माणुयर्न्दु निऱ्पाळ् मलरडियै शूऴ्वोमे ! 2

स्रीदेवि (श्रीदेवी)

पॊऩ्ऩरशि नारणनार् तेवि पुहऴरशि
मिऩ्ऩु नवरत्तिऩम् पोल् मेऩि यऴहुडैयाळ्
अऩ्ऩैयवळ् वैयमॆलाम् आदरिप्पाळ् स्रीदेवि
तऩ्ऩिरु पॊऱ्ऱाळे शरण् पुहुन्दु वाऴ्वोमे 3

पार्वति (पार्वती)

मलैयिले ताऩ् पिऱन्दाळ् शङ्गरऩै मालैयिट्टाळ्
उलैयिले यूदि उलहक् कऩल् वळर्प्पाळ्
निलैयिल् उयर्न्विडुवाळ् नेरे अवळ् पादम्
तलैयिले ताङ्गित् तरणिमिशै वाऴ्वोमे 4

बाली के कमल-चरणों की ही हम पूजा करेंगे। २ श्रीदेवी-- स्वर्ण-रानी, श्रीनारायण की पत्नी है, यशस्विनी है। चटकीले रत्नों के समान आभा वाली देह की है। वह माता सारे विश्व का पालन करेगी। हम श्रीदेवी के दोनों स्वर्ण-चरणों की शरण में जाकर जियेंगे। ३ पार्वती-- पर्वत पर जनमी। उसने शंकर को वरमाला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इतनी भी सामर्थ्य नहीं तो वाणी-बुद्धि प्रदान करो।
पुरुषार्थी! श्रम-दान, नारियो! देवी का गुणगान करो॥
मधुबयनी महिलाओ! देवी का पूजन-सम्मान करो।
निज बल के अनुसार सदा सब दान करो शुभ काम करो॥
देश-धर्म-हित त्याग-तपस्या! देवी उस पर दयावती।
श्वेत-कमल-दल पर बसती है हंसवाहना सरस्वती॥ १०॥

नवरात्रि-गीत—६३

माता पराशक्ति! तुम विस्तृत विपुल विश्व में हो व्यापक।
तुम्हें छोड़कर कौन हमारा है आश्रयदाता पालक॥
तुम ब्रह्मा की भी माता हो मुझे करा दो पथ-दर्शन।
हे प्राण! तुम्हारा वन्दन कर हम समुद बिता देंगे जीवन॥ १॥

कलामयी वाणी देती है हो प्रसन्न वाणी-बाला।
धारण करती विमल बुद्धि की वह मंजुल-मुक्ता माला॥
द्रष्टा वही दृश्य भी वह है अति उच्चस्थिति वाली है।
उसके पद-कमलों की पूजा हमें सुधा को प्याली है॥ २॥

श्रीदेवी सुवर्ण की रानी नारायण की वनिता है।
रत्नों की जगमग आभा से यशस्विनी संवलिता है॥
करती है सम्पूर्ण विश्व का मेरी ही माता पालन।
श्रीदेवी के स्वर्णिम चरणों में बीते मेरा जीवन॥ ३॥

शैल-सुता ने पहनायी थी श्री शंकर को वरमाला।
फूंक-फूंक वह धधकायेगी उर में पौरुष की ज्वाला॥
उन्नत-पद देनेवाले हैं श्रीदेवी के चारु-चरण।
शिरोधार्य कर उन चरणों को समुद बितायेंगे जीवन॥ ४॥

पहनायी। वह भट्ठी में फूंककर लोक की अग्नि को वर्धित करेगी। उन्नत स्थिति दिलानेवाली उस देवी के चरणों को शिरोधार्य करके हम धरती पर (श्रेष्ठ) जीवन बितायेंगे। ४

तीन मुहब्बतें—६४

(पहला—सरस्वती-प्रेम)

बालकपन में मैं उसकी रमणीयता देखकर मुग्ध हो गया। फिर पाठशाला की शिक्षा में मन नहीं लगा। तो भी श्वेत पुष्पशय्या पर उसकी वीणा, हाथ, प्रफुल्ल मुख सुमन— इनसे प्रकट अर्थ का अमृत देखकर मेरा नादान मन खो गया। री मैया! १

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुत्तु कादल्—64

(मुदलावदु— सरस्वदि कादल्)

राग— सरस्वति मनोहारि; ताळ— तिस्र एकम्

पिळ्ळैप् पिरायत्तिले— अवळ्, पॆण्मैयॆक् कण्डु मयङ्गि विट्टेनङ्गु
पळ्ळिप् पडिप्पिनिले— मदि, पऱ्ऱिड विल्लै यॆनिलुन् दनिप्पड
वॆळ्ळै मलरणै मेल्— अवळ्, वीणैयुङ् गैयुम् विरिन्द मुहमलर्
विळ्ळुम् पॊरुळमुदम्— कण्डेन्, वॆळ्ळै मनदु पऱि कॊडुत्तेन्, अम्मा ! 1
आडि वरुहैयिले— अवळ्, अङ्गॊरु वीदि मुनैयिल् निऱ्पाळ् कैयिल्
एडु तरित्तिरुप्पाळ्— अदिल्, इङ्गिद माहप् पदम् पडिप्पाळ् अदै
नाडि यरुहणैन्दाल्— पल, ञानङ्गळ् शॊल्लि इनिमै शॆय्वाळ् इन्रु
कूडि महिळ्ब मॆन्ऱाल्— विळिक्, कोणत्तिले नहै काट्टिच् चॆल्वाळ्, अम्मा ! 2
आऱ्ऱङ् गरै तनिले— तनि, यानदोर् मण्डब मीदिनिले तॆन्ऱऱ्
काऱ्ऱै नुहर्न् दिरुन्देन्— अङ्गु, कन्निक् कविदै कॊणर्न्दु तन्वाळ् अदै
एऱ्ऱु मन महिळ्न्दे— अडि, अॆन्नो डिणङ्गि मणम् बुरिवाय् अॆन्ऱु
पोऱ्ऱिय पोदिनिले— इळम्, पुन्नहै पूत्तु मऱैन्दु विट्टाळ्, अम्मा ! 3
शित्तम् दळर्न्द दुण्डो— कलैत्, तेवियिन् मीदु विरुप्पम् वळर्न्दॊरु
पित्तुप् पिडित्तदु पोल्— पहऱ्, पेच्चुम् इरविऱ् कळबुम् अवळिडै
बैत्त निनैवै यल्लाल्— पिऱ्, वाञ्चै युण्डो ? वय दङ्ङन मेयिरु
त्पतिरण्डा मळबुम्— वॆळ्ळैप्, पण्महळ् कादलैप् पऱ्ऱि निन्ऱेन्, अम्मा ! 4

(इरण्डाबदु लक्ष्मि कादल्)

राग— श्रीराग; ताळ— तिस्र एकम्

इन्द निलैयिनिले— अङ्गॊर्, इन्बप् पॊळिलि निडैयिनिल् वेऱॊरु
सुन्वरि वन्दु निन्ऱाळ्— अवळ्, शोदि मुहत्तिन् अळहिनैक् कण्डॆन्ऱन्

क्रीडा करके मेरे आते समय उधर गली के कोने में वह खड़ी रहती। उसके हाथ में 'तालपत्र' (ग्रंथ) रहता। वह उससे मनोहारी पद पढ़ती। उससे आकृष्ट होकर पास जाता, तो वह ज्ञान की बातें कहती और मन को लुभाती। मैं 'आज मिलेंगे क्या ?' कहता, तो आँख की कोर में हास झलकाकर चली जाती। री मैया ! २ मैं नदी तट पर ही अकेले एक मंडप में मलयपवन का आनन्द लेता रहा। वहाँ उस कन्या ने कविता लाकर दी। मैं उसको ग्रहण करके मुदित हुआ और बोला— री मेरे साथ खुशी से विवाह कर लो ! जब मैंने यह कहकर चिरौरी की, तब वह मुस्कुराती हुई ओझल हो गयी। री मैया ! ३ मेरा चित्त ऊब गया क्या ? कला की देवी के प्रति राग बढ़ा, मैं पागल-सा हो गया। दिवस में बोलना उसी को लेकर रहा तथा रात में स्वप्न उसी का आता रहा। मन हमेशा उसी के स्मरण में लगा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तीन प्रेम—६४

पहला— सरस्वती-प्रेम

उसकी सुन्दरता लखकर मैं मुग्ध हो गया बचपन में।
अतः पाठशाला की शिक्षा नहीं सुहाती थी मन में॥
श्वेत पुष्प-शय्या पर बैठी कर में वीणा लिये हुए।
है प्रफुल्ल मुख कमल-कुसुम-सम हास-सुधा को पिये हुए॥
मुख-प्रसून विकसित, वीणा, कर इनका अर्थामृत लखकर।
मेरा मन नादान खो गया मैया! सब सुध-बुध खोकर॥ १॥
क्रीडा करके जब आता तब वह पथ-बीच खड़ी रहती।
ताल-पत्र लेकर निज-कर में मंजुल मनहर पद पढ़ती॥
आकर्षित जाता समीप तो मन हरती कह ज्ञान-कथा।
पूछा— 'आज मिलेंगे?', हँसकर चल देती दे विरह-व्यथा॥ २॥
पा एकान्त शान्त सरिता-तट मलय-वात बहता सानन्द।
कविता लाकर दी कन्या ने मानस प्रमुदित हुआ अमन्द॥
मेरे साथ करो तुम परिणय मैंने जभी कहा सविनय।
अन्तर्धान हो गई थी वह मुसकाकर (उपजा विस्मय)॥ ३॥
प्रेम कलादेवी से कर मम ऊबा हृदय हुआ पागल।
दिन में उसकी ही चर्चा थी निशि में उसका स्वप्न सरल॥
सदा उसी की मधुर याद में मेरा यह मन लगा रहा।
उससे बढ़कर और मनोरथ मुझे न कोई सगा रहा॥
इस प्रकार बाईस वर्ष तक आयु व्यतीत हुई मेरी।
सितवर्णा-शारदा-प्रेम में पगी बनी मम मति चेरी॥ ४॥

दूसरा— लक्ष्मी-प्रेम

इतने में ही अन्य सुन्दरी प्रकट हुई शुभ उपवन में।
ज्योतित-मुख-सुषमा लख उसकी मैं बलिहार हुआ मन में॥

रहा। क्या इसको छोड़कर और कोई वांछा भी रही? उसी रीति से आयु बाईस साल की हुई; मैं तब तक श्वेतवर्ण, (सरस्वती) गीत की देवी के प्रेम में लगा रहा। री मैया। ४

(दूसरा—लक्ष्मी-प्रेम)

इतने में, वहाँ, एक सुहावने बाग में दूसरी एक सुन्दरी आकर प्रकट हुई। मैंने उसके ज्योति-भरे मुख के सौन्दर्य को देखकर अपने मन को कर के रूप में भेंट कर दिया। उसने अपना नाम 'लाल श्री' बताया। उस दिन से मैं चाहता हूँ कि उसका खूब कसकर आलिंगन कर लूँ। मैया! ५ वह मुस्कराती, तब मैं पूर्ण रूप से मुदित हो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शिन्दै तिरैहॊडुत्तेत्— अवळ्, शॆन्दिरु वॆन्ऱु पॆयर् शॊल्लि नाळ्, मऱ्ऱुम्
अन्दत् तिन मुदला— नॆञ्जम्, आरत्तळुविड वेण्डुहिन्ऱेन्, अम्मा ! 5

पुन्नहै शॆय्दिडुवाळ्— अऱ्ऱैप्, पोदु मुळुदुम् महिळ्न् दिरुप्पेन्, शऱ्ऱैन्
मुन्तिन्ऱु पार्त्तिडुवाळ्— अन्द, मोहत्तिले तलै शुऱ्ऱिडुङ् गाण्, पिन्नर्
ऍन्न पिळैहळ् कण्डो— अवळ्, ऍन्नैप् पुऱ्ऱकणित् तेहिडुवाळ्, अङ्गु
शिन्नमुम् बिन्नमुमा— मनञ्, शिन्दियुळ मिह नॊन्दिडुवेन्, अम्मा ! 6

काट्टु बळि हळिले— मलैक्, काट्चियिले पुन्नल् बीळ्च् चियिले, पल
नाट्टुप् पुऱङ्गळिले— नहर्, नण्णु शिल शुडर् माडत्तिले, शिल
बेट्टुबर् शार्बिन्निले— शिल, वीररिडत्तिलुम्, बेन्द रिडत् तिलुम्
मीट्टु मवळ् बरुवाळ्— कण्ड, विन्दैयिले यिन्ब मेऱ्कॊण्डु पोम्, अम्मा ! 7

(मून्ऱावदु काळि कावल्)

राग— पुन्नाह वराळि; ताळ— तिस्रऱ्ऱेएकम्

पिन्नोर् इराधिन्निले— करुम्, पॆण्मै यळहॊन्ऱु वन्ददु कण् मुन्बु
कन्नि वडिव मॆन्ऱे— कळि, कण्डु शऱ्ऱे यरुहिऱ् चॆन्ऱु पार्क्कैयिल्
अन्नै बडिवमडा ! इवळ्, आदि पराशक्ति देवियडा ! इवळ्
इन्नरुळ् बेण्डुमडा— पिन्नर्, यावु मलहिल् बशप्पट्टुप् पोमडा ! 8

शॆल्बङ्गळ् पॊङ्गि वरुम्— नल्ल, तॆळ्ळऱि वॆय्दि नलम् पल शार्न्दिडुम्;
अल्लुम् पहलु मिङ्गे— इवै, अत्तनै कोडिप् पॊरुळिन्नुळळे निन्ऱु
विल्लै यशप्पवळै— इन्द, वेलै यनैत्तैयुम् शॆय्युम् विनैच्चियैत्
तॊल्लै तविर्प्पवळै— नित्तम्, तोत्तिरम् पाडित् तॊळुदिदु वोमडा ! 9

जाता। थोड़ा सामने आकर वह मुझ पर नजर दौड़ाती, तो उसके मद में मेरा सिर चकराने लगता। फिर वह क्या गलती देखती, पता नहीं। वह मुझे ठुकराकर चली जाती। तब मेरा मन छिन्न-भिन्न हो जाता और बिखर जाता। और मैं बहुत दुखी हो जाता ! मैया ! ६ फिर वह जंगली मार्गों में, पर्वत-दृश्य में, जल-प्रपात में, अनेक देहाती स्थानों में, नगर-स्थित भवनों में, कुछ व्याधों के पास, कुछ वीरों तथा कुछ राजाओं के पास प्रकट हो आती। उसको देखने से जो विचित्र आनन्द प्राप्त होता, उससे अपार सुख मिल जाता। मैया ! ७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'रक्तवर्ण श्रीदेवी' उसने नाम बताया निज-पावन।
इच्छा यही प्रबल मेरे मन करूँ गाढ़तम आलिंगन॥ ५॥

महामुदित होता मैं जब वह मंद-मंद मुसकाती थी।
सिर चकराता संमुख आ जब मुझ पर दृष्टि फिराती थी॥
जाने क्या त्रुटि लखकर मेरी वह मुझको ठुकराती थी।
छिन्न-भिन्न हो हृदय बिखरता मन में व्यथा समाती थी॥ ६॥

फिर वह होती प्रकट पर्वतों के दृश्यों में, विपिनों में।
जल-प्रपात में, ग्राम-थलों में, नगरों के शुभ भवनों में॥
कुछ व्याधों के पास और कुछ वीरों, राजाओं के पास।
लखकर होता था अपार सुख होता था विचित्र उल्लास॥ ७॥

तीसरा— काली-प्रेम

एक रात फिर प्रकट हुई सौन्दर्यमयी नारी काली।
पहले कन्या समझा, ढिग जा देखा, माता छविशाली!॥
आदिशक्ति है, पराशक्ति है, इसकी कृपा हमें वाञ्छित।
वशीभूत सब हो जायेंगे जगतीतल के जीव (ललित)॥ ८॥

मम मति निर्मल हो जायेगी, उमड़ पड़ेंगे नभ में घन।
और प्राप्त हो जायेंगे फिर हमको अगणित हित साधन॥
कोटि-पदार्थों के अन्दर रह धनुष हिलाती वह दिन-रात।
सब कामों को करती, संकट हरती है, जननी विख्यात॥
उस जननी की भक्ति-भाव से स्तुति सुन्दरतम गायेंगे।
विनत-भाव से विनय करेंगे सभी काम बन जायेंगे॥ ९॥

(तीसरा-- काली-प्रेम)

फिर एक रात को एक काली नारी-सुन्दरता आँखों के सामने (साक्षात्) प्रकट हुई। 'यह कन्या-रूप है' --ऐसा सोचकर मैंने पास जा देखा, तो-- रे! यह तो माता का रूप है। यह आदि पराशक्ति है। रे, इसकी सुखद कृपा हमें चाहिए। फिर दुनिया में सब कुछ हमारे वश में हो जायगा। ८ धन उमड़ आयेंगे। बुद्धि स्वच्छ हो जायगी। अनेक हित प्राप्त हो जायेंगे। रात और दिन वह उतने करोड़ों वस्तुओं के अन्दर रहकर धनुष हिलाती है। वह यह सारा काम करनेवाली कर्त्री है। संकट को हरनेवाली है। उसकी रोज स्तुति गाकर विनय करेंगे, रे! ९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आऱुतुणै—65

ओम् शक्ति ओम् शक्ति ओम्-- पराशक्ति
ओम् शक्ति ओम् शक्ति ओम्
ओम् शक्ति ओम् शक्ति ओम् शक्ति— ओम् शक्ति
ओम् शक्ति ओम् शक्ति ओम्
गणपति रायन्— अवनिरु कालैप् पिडित् तिडुवोम्
गुण मुयर्न्दिडवे— विडुदलै कूडि महिऴ्न् दिडवे (ओम् शक्ति) 1
शॊल्लुक् कडङ्गावे— पराशक्ति शूरत्तनङ् गळॆल्लाम्
वल्लमै तन्दिडुबाळ्— पराशक्ति वाऴियॆऩ्ऱे तुदिप्पोम् (ओम् शक्ति) 2
वॆऱ्ऱि वडिवेलन्— अवनुडै बोरत्तिनैप् पुहऴ्वोम्
शुऱ्ऱि निल्लादे पो !— पहैये ! तुऴ्ळि वरुहुदु बेल् (ओम् शक्ति) 3
तामरैप् पूविनिले— शुरुदियैत् तनियिरुन् दुरैप्पाळ्
पूमणित् ताळिनैये- कण्णि लॊऱ्ऱिप् पुण्णिय मॆय्दिडुवोम् (ओम् शक्ति) 4
पाम्बुत् तलैमेले— नडञ् जॆय्युम् पादत्तिनैप् पुहऴ्वोम्
माम्बऴ वायिनिले— कुऴलिशै वण्मै पुहऴ्न्दिडुवोम् (ओम् शक्ति) 5
शॆल्बत् तिरुमहळैत्— तिडङ्गॊण्डु शिन्दनै शॆय्दिडुवोम्
शॆल्व मॆल्लान् दरुवाळ्— नमदॊळि तिक्कनैत्तुम् परवुम् (ओम् शक्ति) 6

विडुदलै वॆण्बा—66

शक्ति पदमे शरणॆन्ऱु नाम् पुहुन्दु
बक्तियिनार् पाडिप् पलहालुम्— मुक्तिनिलै

छः आधार—६५

ॐ शक्ति, ॐ शक्ति, ॐ पराशक्ति ! ॐ शक्ति, ॐ शक्ति ॐ, ! ॐ शक्ति, ॐ शक्ति, ॐ शक्ति ॐ ! गणपति राय-उसके दोनों पैरों को पकड़ लेंगे, (ताकि) गुण उन्नत हों, स्वतन्त्रता मिले और हम खुश रहें। (ॐ शक्ति०) १ पराशक्ति की शूरताएँ कहने में नहीं आ सकतीं। 'पराशक्ति की जय !' कहकर हम उसकी स्तुति करें। वह हमें सामर्थ्य (साहस आदि) देगी। (ॐ शक्ति०) २ विजयी सुन्दर 'वेल' (शक्ति)-धर है। उसकी वीरता की प्रशंसा करें। हे शत्रुता ! घेरकर खड़ी मत रह ! हट जा ! वे (शक्ति) घूमती आ रही हैं। (ॐ शक्ति०) ३ जो कमल-फूल पर अकेली विराजकर श्रुति सुना रही है, उस लक्ष्मी के मृदु सुन्दर चरणों को आँखों से लगा लें और पुण्य प्राप्त कर लें। (ॐ शक्ति०) ४ हम सर्प के सिर पर नाचनेवाले (कृष्ण) के पैरों का यश गायेंगे। आम के फल के समान उसके मुख पर रहनेवाली वंशी के संगीत का गुणगान करेंगे। (ॐ शक्ति०) ५ हम श्री की देवी का गंभीरता के साथ स्मरण करेंगे। वह सभी धन दे देगी। हमारा प्रकाश (यश) सभी दिशाओं में फैलेगा। (ॐ शक्ति०) ६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

छः सहारे—६५

ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, जय-जय-जय।
पराशक्ति जय, पराशक्ति जय, पराशक्ति जय, जय-जय-जय॥
सुंदर चरण-कमल-युगलों में हे गणपति! हम हैं अवनत।
हम स्वतंत्र हों, मुदित रहें हम, और गुणों में हों उन्नत॥
ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, जय-जय-जय।
पराशक्ति जय, पराशक्ति जय, पराशक्ति जय, जय-जय-जय॥ १॥
पराशक्ति का शौर्य अकथ है, पराशक्ति की जय-जय-जय।
स्तुति हम करें, हमें वह देगी बल - साहस - सामर्थ्य - विजय॥
ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, जय-जय-जय।
पराशक्ति जय, पराशक्ति जय, पराशक्ति जय, जय-जय-जय॥ २॥
विजयी शक्ति लिये है कर में, करें वीरता का वंदन।
शक्ति घुमाती आती माता दूर हटें सारे अरिजन॥
ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, जय-जय-जय।
पराशक्ति जय, पराशक्ति जय, पराशक्ति जय, जय-जय-जय॥ ३॥
कमल फूल पर जो विराजती, करती है श्रुतियों का गान।
उस लक्ष्मी के चरणों को छू प्राप्त करें पुण्यों की खान॥
ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, जय-जय-जय।
पराशक्ति जय, पराशक्ति जय, पराशक्ति जय, जय-जय-जय॥ ४॥
कालिय-सिर नर्तन करनेवाले का पद-यश हम गायें।
सरस-रसाल-समान-बाँसुरी ध्वनि के गुण गा मुद पायें॥
ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, जय-जय-जय।
पराशक्ति जय, पराशक्ति जय, पराशक्ति जय, जय-जय-जय॥ ५॥
श्रीदेवी का स्मरण करेंगे अति गंभीर भाव भर मन।
सारे जग में यश फलेगा, देगी देवी अतुलित धन॥
ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, ॐ शक्ति जय, जय-जय-जय।
पराशक्ति जय, पराशक्ति जय, पराशक्ति जय, जय-जय-जय॥ ६॥

स्वतन्त्रता—६६

महाशक्ति के पद-कमलों की सुखद शरण में जायेंगे।
भक्तिभाव से बार-बार हम उसकी महिमा गायेंगे॥

स्वतन्त्रता—६६

हम शक्ति के चरणों की शरण में जायेंगे, बार-बार भक्ति से उनकी महिमा गायेंगे। फिर मुक्ति की स्थिति पायेंगे। उससे हम चिन्ता का रोग दूर हो जायगा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काणबोम्; अदनाऱ् कवलैप् पिणि तीर्नदु
पूण्बोम् अमरप् पॉऱि 1
पॉऱि शिन्दुम् वॅङ्गनल् पोऱ् पॉय् तीर्नदु दॅय्व
वॅऱि कॉण्डाल् आङ्गदुवे वीडाम्– नॅऱि कॉण्ड
वॅयमॅलान् दॅय्व वलियन्ऱि वेऱिल्लै
ऐयमॅलान् तीर्नद दऱिबु 2
अऱिविले तोन्ऱिल् अवनियिले तोन्ऱुम्,
वऱिञरायप् पूमियिले वाळ्वीर् !— कुऱि कण्डु
शॅल्वमॅलाम् पॅऱ्ऱुच् चिऱप्पुऱवे शक्ति तरुम्
वॅल् वयिरच् चीर् मिहुन्द वेल् 3
वेलैप् पणिन्दाल् विडुदलैयाम् ! वेल् मुरुहन्
कालैप् पणिन्दाल् कवलै पोम्— मेलऱिवु
तन्नाले तान् पॅऱ्ऱु शक्ति शक्ति शक्ति यॅन्ऱु
शॊन्नाल् अदुवे शुहम् 4
शुहत्तिनै नान् वेण्डित् तॊळुदेन् ! अॅप्पोदुम्
अहत्तिनिले तुन्बुऱ् ऱळुदेन्— युहत्तिनिलोर्
मारुदलैक् काट्टि वलिमै नॅऱि काट्टि
आऱुदलैत् तन्दाळ् अवळ् 5

जयम् उण्डु—67

राग— कमास्; ताळ— आदि

पल्लवि (टेक)

जयमुण्डु पयमिल्लै मनमे— इन्द
जन्मत्तिले विडुदलै युण्डु निलैयुण्डु (जय)

अनुपल्लवि (अनुटेक)

पयनुण्डु बक्तियि नाले— नॅञ्जिऱ्
पदिवुऱ्ऱु कुलशक्ति शरणुण्डु पहैयिल्लै (जय)

और अमरता के अंगों से भूषित हो जायँगे। १ अंगारे छोड़नेवाली धधकती आग के समान झूठ को त्यागकर दैवी उन्मत्तता प्राप्त हो जाए तो वही मोक्ष है। जो अपने मार्ग पर चल रहा है, वह सारा विश्व दैवी बल के अलावा कुछ नहीं है। जहाँ संशय नष्ट हुआ वही ज्ञान है। २ जो चित्त में प्रकट होगा, वही संसार पर भी प्रकट होगा। हे दरिद्र बनकर संसार में जीवन बितानेवालो ! विजयी होने का उपाय 'वेल' (सुब्रह्मण्य देव के हाथ की शक्ति, उसकी पूजा) को समझ लो। वह सारी सम्पत्ति प्राप्त करके श्री में बढ़ने की शक्ति देगा। ३ 'वेल' का प्रणमन करो, तो मुक्ति है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चिन्ता-रोग मिटेगा सारा मुक्ति मनोरम पायेंगे।
और अमरता के अंगों से भूषित हो सरसायेंगे॥ १॥
अंगारे बरसाती भीषण प्रबल धधकती आग-समान।
झूठ त्याग जो पाते दैवी प्रमत्तता का शुभ वरदान॥
अपने पथ पर विश्व चल रहा दैवी बल से ही लो जान।
जहाँ नष्ट होता है संशय उसको ही कहते हैं ज्ञान॥ २॥

जो मन बीच प्रकट होवेगा जग में होगा प्रकट वही।
दीन दुखी बन जग में जीना कभी नहीं यह बात सही॥
हीरे-सी ब्रह्मण्य देव की शक्तिविजयिनी अपनाओ।
करो उपाय, मनाओ लक्ष्मी, हो सशक्त, सम्पति पाओ॥ ३॥

सबल शक्ति का वन्दन करके मधुर मुक्ति मिल जायेगी।
और शक्तिधर-पद-वन्दन से चिन्ता सभी नशायेगी॥
पाकर उत्तम ज्ञानशक्ति का करो स्मरण, वन्दन, अर्चन।
(वही करेगा दुःख-निवारण) वही सभी सुख का साधन॥ ४॥

सदा विलखता रोता था मैं, दुःखानल जलता मन में।
सुख की चाह लिये मैंने मन लगा दिया था पूजन में॥
पराशक्ति की परमकृपा से हुआ अरे! युग-परिवर्तन।
मिला उपाय सबल बनने का, मिला अपार धैर्य का धन॥ ५॥

जय है—६७

जय है, भय है नहीं, अरे मन! शुभगति है, हे जीवन्मुक्ति।
कुलदेवी शक्ति की शरण गह, शत्रु मिटे, मिल जाये भक्ति॥ टेक॥
जो जन करते स्मरण शक्ति के सदा स्वर्णमय चरण-कमल।
अचल पर्वतों-सा मिलता है उनको अतुलित दृढ़ भुजबल॥

(वेल) शक्तिधर मुरुगन के चरणों की वन्दना करो, तो चिन्ता मिट जायगी। उत्कृष्ट ज्ञान के फलस्वरूप 'शक्ति', 'शक्ति' कहो (शक्तिदेवी का स्मरण, जप, पूजा आदि करो) तो वही सुख है। ४ मैंने सुख की कामना करके पूजा की। हमेशा मन में दुखी रहा, रोया! उसने युग में परिवर्तन दिखाया, मुझे बलवान बनने का मार्ग दरसाया और धैर्य दिलाया। ५

जय है!—६७

जय है, भय नहीं! रे मन! इस जन्म में मोक्ष है, अच्छी स्थिति भी है। जय! (टेक) भक्ति का फल होगा! मन में सुस्थित कुलदेवता शक्ति की शरण है। (भक्त का कोई) शत्रु नहीं हैं (जय) पर्वत के समान उसके भुज हैं। और फिर शक्ति के स्वर्णचरण है। (भुजबल तथा शक्ति की भक्ति है)। समस्त नियम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शरणङ्गळ् (चरण)

पुयमुण्डु कुन्ऱत्तैप् पोले— शक्ति
पॊऱ्पाद मुण्डु अदन् मेले;
नियम मॆल्लाम् शक्ति निनैवन्ऱिप् पिऱि दिल्लै;
नॆऱियुण्डु, कुऱियुण्डु कुल शक्ति वॆऱियुण्डु (जय) 1

मदियुण्डु शॊल्वङ्गळ् शेर्क्कुम्— दॆय्व
वलियुण्डु तीमैयैप् पोक्कुम्—
विदियुण्डु तॊळिलुक्कु विळैवुण्डु, कुऱैविल्लै
विशनप् पॊय्क्कडलुक्कुक् कुमरन् कैक् कणैयुण्डु (जय) 2

अलै पट्ट कडलुक्कु मेले— शक्ति
अरुळॆन्नुन् दोणियि नाले,
तॊलै यॊट्टिक् करैयुऱ्ऱुत् तुयरऱ्ऱु विडुपट्टुत्
तुणिवुऱ्ऱ कुलशक्ति शरणत्तिल् मुडि तॊट्टु (जय) 3

आरिय दरिशनम्—68

ओर् कनवु

राग— श्रीराग; ताळ— आदि

कनवॆन्न कनवे— ऎन्ऱन्
कण् तुयिलादु नन्निनिले युऱ्ऱ (कन)
कानहङ् गण्डेन्— अडर्, कानहङ् गण्डेन्— उच्चि
वानहत्ते वट्ट मदियॊळि कण्डेन् (कन) 1

पॊऱ्ऱिरुक् कुन्ऱम्— अङ्गॊर्, पॊऱ्ऱिरुक् कुन्ऱम्— अवैच्
चुऱ्ऱि यिरुक्कुम् शुनैहळुम् पॊय्हैयुम्; (कन) 2

शक्ति-स्मरण के सिवा कुछ नहीं है। मार्ग है, मंजिल है और तीव्र शक्ति-भक्ति भी है। (जय०) १ (भक्ति से) बुद्धि (प्राप्य) है, (वह) निधियाँ इकट्ठा करेगी। ईश्वर का सहारा तथा बल है, वह हानियाँ दूर कर देगा। विधि है, अतः कृत्यों का फल (प्राप्त) होगा। कुछ कमी नहीं रहेगी। चिन्ता के झूठे सागर को सुखाने के लिए कुमार कार्तिकेय के हाथ का शर है। (जय०) २ हिलोरें मारते रहनेवाले सागर पर कृपा की नाव से दूर के उस किनारे जायँगे। तो दुख दूर होगा। मुक्ति होगी। सुदृढ़ मति से हम अपना सिर कुल-शक्ति के चरणों पर नवावेंगे और तब (जय०) ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

स्मरण, शक्ति का अर्चन-पूजन उसके सम न और संबल।
वही मार्ग है, वही लक्ष्य है, तीव्र शक्ति है, भक्ति विमल ॥ १ ॥
जय है, भय है नहीं, अरे मन ! शुभगति है, है जीवन्मुक्ति।
कुलदेवी शक्ति की शरण गह, शत्रु मिटे, मिल जाए भक्ति ॥ टेक ॥
ईश्वर का आश्रय है, बल है, होंगी सभी हानियाँ दूर।
विमल बुद्धि एकत्र करेगी सदा सभी निधियाँ भरपूर ॥
नहीं रहेगी कमी ज़रा भी, विधि है, होंगे कृत्य सफल।
स्कन्द-बाण से सूख जायगा चिन्ता का सागर चंचल ॥ २ ॥
जय है, भय है नहीं, अरे मन ! शुभगति है, है जीवन्मुक्ति।
कुलदेवी शक्ति की शरण गह शत्रु मिटे मिल जाए भक्ति ॥ टेक ॥
कृपा-नाव पर चढ़कर होंगे हम उर्मिल सागर के पार।
(मन की चाही) मुक्ति मिलेगी होंगे सब दुख दूर अपार ॥
(संशय सभी मिटा देंगे हम) मति में दृढ़ता लायेंगे।
कुलदेवी के चरण-कमल पर अपना शीश नवायेंगे ॥ ३ ॥
जय है, भय है नहीं, अरे मन ! शुभगति है, है जीवन्मुक्ति।
कुलदेवी शक्ति की शरण गह, शत्रु मिटे, मिल जाए भक्ति ॥ टेक ॥

आर्य-दर्शन (एक स्वप्न)—६८

हा ! यह कैसा सुखद स्वप्न है ? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥
(मैंने देखा स्वप्न कि) फैला हुआ विशाल घना वन था।
नभमंडल में पूर्णचन्द्र था, दृश्य अतीव सुहावन था ॥ १ ॥
हा ! यह कैसा सुखद स्वप्न है ? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥
वन में एक स्वर्ण-पर्वत था (जगमग करता सुन्दरतर)।
उसके चारों ओर सुशोभित थीं सरिताएँ औ' सरवर ॥ २ ॥
हा ! यह कैसा सुखद स्वप्न है ? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥

आर्य-दर्शन (एक स्वप्न)—६८

(हा) स्वप्न भी कैसा स्वप्न है ! मेरी आँख तो सोयीं नहीं। जागते में देखा गया वह (स्वप्न)। (टेक)। (मैंने) वन देखा ! घना वन देखा ! आकाश के मध्य गोल चन्द्र देखा ! (स्वप्न०) १ स्वर्ण-पर्वत, वहाँ एक स्वर्णपर्वत ! उसके चारों ओर रहे सरोवर तथा सरिताएँ ! (स्वप्न०) २

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बुद्द दरिशनम्

कुन्ऱत्तिन् मीदे— अन्दक्, कुन्ऱत्तिन् मीदे— तनि
निन्ऱदोर् आल नेडुमरङ् गण्डेन् (कन) 3
पोन् मरत्तिन् कीळ्- अन्दप्, पोन् मरत्तिन् कीळ्- वेरुञ्
जिन्मय मानदोर् तेवन् इरुन्दनन् (कन) 4
बुद्द बगवन्— अङ्गळ, बुद्द बगवन्— अवन्
शुत्त मैय्ञ् ञानच् चुडर्मुहम् कण्डेन् (कन) 5
कान्दियैप् पार्त्तेन्— अवन्, कादियैप् पार्त्तेन्— उप
शान्दियिल् मूळ्हित् तदुम्बिक् कुळित्तनन् (कन) 6
ईदुनल् विन्दै— अन्ऱे !, ईदुनल् विन्दै— बुद्दन्
शोदि मरैन्दिरुळ् तुन्ऱिडक् कण्डनन् (कन) 7
पाय्न्ददङ् गोळिये— पिन्नुम्, पाय्न्ददङ् गोळिये— अरुळ्
तोय्न्द देन्मेनि शिलिर्त्तिडक् कण्डेन् (कन) 8

किरुष्णारजुन दरिशनम्

कुन्ऱत्तिन् मीदे— अन्दक्, कुन्ऱत्तिन् मीदे— तनि
निन्ऱ पोर्ऱेरुम् परिहळुम् कण्डेन् (कन) 9
तेरिन् मुन् पाहन्— मणित्, तेरिन् मुन् पाहन्— अवन्
शीरिनैक् कण्डु तिहैत्तु निन्ऱे निन्दक् (कन) 10
ओमेन्ऱ मोळियुम्— अवन्, ओमेन्ऱ मोळियुम्— नीलक्
कानन्ऱन् उरुवुम् अव् वीमन्ऱन् तिऱलुम् (कन) 11

बुद्ध-दर्शन

पर्वत पर, उस पर्वत पर अकेला एक वटवृक्ष मैंने देखा। (स्वप्न०) ३ सुन्दर तरु के नीचे, उस सुन्दर तरु के नीचे चिन्मय रूप कोई देव थे। (स्वप्न०) ४ भगवान बुद्ध, वे भगवान बुद्ध थे। शुद्ध ज्ञान से दीप्त उनका मुख देखा। (स्वप्न०) ५ कान्ति देखी, उनकी कान्ति को देखा। वे उपशान्ति में गोते लगा रहे थे। (स्वप्न०) ६ यह अनोखा आश्चर्य है ! क्या ही अनोखा आश्चर्य है ! बुद्ध-ज्योति लुप्त हुई तथा देखा कि अँधेरा घना होता आ रहा है। (स्वप्न०) ७ वहाँ प्रकाश फैलता आया। फिर प्रकाश फैलता आया। वह कृपा भरता रहा— देखा, तो मेरे शरीर के रोंगटे खड़े हो गये। (स्वप्न०) ८

कृष्णार्जुन-दर्शन

मैंने पर्वत पर, उस पर्वत पर अकेला खड़ा रथ देखा तथा अश्व देखे। (स्वप्न०) ९ रथ के अग्रभाग में सारथि ! सुन्दर रथ के अग्रभाग में सारथि ! उनकी शान देखकर मैं चकित खड़ा रह गया ! (स्वप्न०) १० ॐ का उच्चारण, उनका ॐ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बुद्ध-दर्शन

उस पर्वत पर एक अकेला था सुंदर वट-वृक्ष विमल।
चिन्मय रूपी देव लसित थे उस सुंदर वट-तरु के तल ॥ ३-४ ॥
हा! यह कैसा सुखद स्वप्न है ? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥

वे शुभ चिन्मय देव मनोरम थे साक्षात् बुद्ध भगवान।
शुद्ध ज्ञान से दीप्त हो रहा था उनका आनन छविमान ॥ ५ ॥
हा! यह कैसा सुखद स्वप्न है ? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥

उनके मुख पर दमक रही थी एक अलौकिक निर्मल कान्ति।
मग्न हो गया था मेरा मन ऐसी थी वह शाश्वत शान्ति ॥ ६ ॥
हा! यह कैसा सुखद स्वप्न है ? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥

था कैसा आश्चर्य अनोखा, था कैसा आश्चर्य अपार।
लुप्त हो गई बुद्ध-ज्योति वह, कैसा घने तिमिर का भार ॥ ७ ॥
हा! यह कैसा सुखद स्वप्न है ? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥

तभी अचानक लगा फैलने वहाँ मनोरम प्रबल प्रकाश।
कृपा-भरा लखकर मेरे तन रोमाञ्चों का हुआ विकास ॥ ८ ॥
हा! यह कैसा सुखद स्वप्न है ? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥

कृष्णार्जुन-दर्शन

उस पर्वत पर एक अकेला रथ संस्थित था अश्व-सहित।
रथ-सम्मुख सारथि संस्थित था, देख शान मैं हुआ चकित ॥ ९-१० ॥
हा! यह कैसा सुखद स्वप्न है ? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥
अपने मुख से वह करता था ॐकार का उच्चारण।
था मन्मथ-सा रूप, भीम-सम बल को करता था धारण ॥ ११ ॥
हा! यह कैसा सुखद स्वप्न है ? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥

का उच्चारण; उनका मन्मथ का-सा रूप और भीम का बल, (स्वप्न०) ११ करुणा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरुळ् पॊङ्गुम् विळियुम्— ऍय्व, अरुळ् पॊङ्गुम् बिळियुम् काणिल्
इरुळ् पॊङ्गु नॆञ्जिऩर् वॆरुळ् पॊङ्गुन् दिहिरियुम् (कऩ) 12

कण्णऩैक् कण्डेन्— ऍङ्गळ्, कण्णऩैक् कण्डेऩ्— मणि
वण्णऩै ञाऩ मयिलिऩैक् कण्डेन् (कऩ) 13

शेऩैहळ् तोऩ्रुम्— वॆळ्ळच्, चेऩैहळ् तोऩ्रुम्— परि
यानैयुन् देरुम् अळविल तोऩ्रुम् (कऩ) 14

कण्णऩ् नऱ्ऱेरिल्— नीलक्, कण्णऩ् नऱ्ऱेरिल्— मिह
ऍण्णयर्न् दाऩॊर् इळैञऩैक् कण्डेऩ् (कऩ) 15

विशैयऩ् कॊलिवऩे !— विऱल्, विशैयऩ् कॊलिवऩे !— नऩि
इशैयुम् नऩ्गिशैयुमिङ् गिवऩुक् किऩ्नामम् (विशै) 16

वीरिय वडिवम् !— ऍऩ्ऩ, वीरिय वडिवम्!— इऩ्द
आरियऩ् नॆञ्जम् अयर्ऩ्द दॆऩ् विऩ्दै ! (विशै) 17

पॆऱ्ऱदऩ् पेऱे— शॆवि, पॆऱ्ऱदॆऩ् पेऱे— अऩ्दक्
कॊऱ्ऱवऩ् शॊऱ्कळ् शॆवियुऱक् कॊण्डेऩ् (कऩ) 18

वॆऱ्ऱियै वेण्डेऩ्— ऐय, वॆऱ्ऱियै वेण्डेऩ् !— उयिर्
अऱ्ऱिडु मेऩुम् अवर् तमैत् तीण्डेऩ्, (पॆऱ्ऱ) 19

शुऱ्ऱङ् गॊल्वेऩो ?— ऍऩ्ऱऩ्, शुऱ्ऱङ् गॊल्वेऩो ?— किळै
अऱ्ऱपिऩ् शॆय्युम् अरशुमोर् अरशो (पॆऱ्ऱ) ? 20

उमड़ाती आँखें, दिव्य करुणा उमड़ाती आँखें, जिसको देखने से अंधकारमय मनवाले डरें, ऐसा चक्र— मैंने देखा। (स्वप्न०) १२ कृष्ण को देखा ! हमारे कृष्ण को देखा। मणिवर्ण ज्ञान-पर्वत को देखा। (स्वप्न०) १३ सेनाएँ प्रकट हुईं। 'वेळ्ळमों' की संख्या में सेनाएँ। असंख्य अश्व, गज और रथ भी दिखने लगे। (स्वप्न०) १४ कृष्ण के श्रेष्ठ रथ में, नीले कृष्ण के श्रेष्ठ रथ में, बहुत ही शिथिलमन एक युवा को देखा। (स्वप्न०) १५ विजय (अर्जुन) है तो यह ! यह वीर विजय तो है। बहुत ही युक्त है उसका यह नाम। (स्वप्न०) १६ हा ! वीर रूप ! कैसा वीर रूप ! आर्य का मन कैसे शिथिल हुआ ? आश्चर्य ! (स्वप्न०) १७ पाया कैसा सौभाग्य ? मेरे कर्ण भाग्यवान रहे। उस राजा के कथनों को मैंने अपने कानों से सुना। (स्वप्न०) १८ मैं विजय नहीं चाहता ! आर्य, विजय नहीं चाहता ! प्राण भी नहीं रह जायँ, तो भी उनका स्पर्श (अस्त्रों से वध) नहीं करूँगा। (पाया०) १९ मैं क्या बन्धुओं को मारूँगा ? क्या अपने ही बन्धुओं को मारूँगा ? क्या बन्धुओं के मरने के बाद शासन भी कोई शासन (अर्थयुक्त) रहेगा ? (पाया०) २० बहुत ही कार्पण्य से, अत्यधिक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दिव्य दया-धारा बरसाते थे उनके दृग छविवाले।
चक्र सुदर्शन का कर दर्शन डर जाते मन के काले ॥ १२ ॥
हा! यह कैसा सुखद स्वप्न है? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥
जिस सारथि को देखा हमने वह थे कृष्णचंद्र भगवान।
दिव्य ज्ञान की महाखान थे जैसे पर्वत मणि की खान ॥ १३ ॥
हा! यह कैसा सुखद स्वप्न है? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥
अगणित हय-गज-रथ-पैदल थे घूम रहे दायें-बायें।
क्षण भर में ही प्रकट हो गईं थीं विशालतम सेनाएँ ॥ १४ ॥
हा! यह कैसा सुखद स्वप्न है? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥
श्यामवर्ण के कृष्णचन्द्र के दिव्य रम्य रथ के ऊपर।
अतिशय शिथिल-हृदयवाला था बैठा एक युवक सुंदर ॥ १५ ॥
हा! यह कैसा सुखद स्वप्न है? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥
(रथ पर जो था युवक सुशोभित अर्जुन वही वीर बलधाम)।
वही विजय भी कहलाता था अति उपयुक्त नाम सरनाम ॥ १६ ॥
हा! यह कैसा सुखद स्वप्न है? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥
वीर रूपधारी अर्जुन है वास्तव में है वीर अतुल।
है अतीव आश्चर्य आर्य का मन कैसे हो गया शिथिल ॥ १७ ॥
हा! यह कैसा सुखद स्वप्न है? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥
उस राजा के वर वचनों का मैंने सुना अमर आख्यान।
था अत्यन्त भाग्यशाली मैं भाग्यवान थे मेरे कान ॥ १८ ॥
हा! यह कैसा सुखद स्वप्न है? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥
विजय नहीं चाहता आर्य! मैं, नहीं चाहिए मुझे विजय।
नहीं करूँगा शस्त्र ग्रहण मैं चाहे हो प्राणों का क्षय ॥ १९ ॥
था अत्यन्त भाग्यशाली मैं भाग्यवान थे मेरे कान।
उस अर्जुन के वर वचनों का मैंने सुना अमर आख्यान ॥ टेक ॥
नहीं करूँगा निज हाथों से बन्धु-बान्धवों का संहार।
बिना बन्धुओं के शासन है मेरे लिए व्यर्थ निःसार ॥ २० ॥
था अत्यन्त भाग्यशाली मैं भाग्यवान थे मेरे कान।
उस अर्जुन के वर वचनों का मैंने सुना अमर आख्यान ॥ टेक ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मिऱ्ऱिय अरुळाल्— मिद, मिऱ्ऱिय अरुळाल्— अन्द
वॆऱ्ऱिलै वीरन् पल शॊल् विरित्तान् (कन्) 21

इम्मॊऴि केट्टान्— कण्णन्, इम्मॊऴि केट्टान्— ऐयन्
शॆम्मलर् वदनत्तिऱ् चिऱुनहै पूत्तान् (कन्) 22

विल्लिनै यॆडडा !— कॆयिल्, विल्लिनै यॆडडा ?— अन्द
पुल्लियर् कूट्टत्तैप् पूळ्दि शॆय्विडडा (विल्लिनै)! 23

वाडि निल्लादे;— मनम्, वाडि निल्लादे;— वॆऱुम्
पेडियर् ञानप् पिदऱ्ऱल् शॊल्लादे (विल्लिनै) 24

ऒन्ऱुळ दुण्मै— ऎन्ऱुम्, ऒन्ऱुळ दुण्मै— अदैक्
कॊन्ऱि डॊणादु कुऱैत्त लॊण्णादु (विल्लिनै) 25

तुन्ब मुमिल्लै— कॊडुन्, दुन्बमु मिल्लै— आदिल्
इन्ब मुमिल्लै पिऱप्पिऱप् पिल्लै (विल्लिनै) 26

पडैहळुन् दीण्डा— अदैप्, पडैहळुन् दीण्डा— अनल्
शुडवु मॊण्णादु पुनल् ननैयादु (विल्लिनै) 27

शॆय्दलुन् कडनै— अऱञ्, जॆय्दलुन् कडनै— अदिल्
ऎय्दुऱुम् विळैविनिल् ऎण्णम् वैक्कादे (विल्लिनै) 28

कृपा-भाव से कठोर धनुर्धर वीर ने अनेक बातें कहीं (स्वप्न०) २१ यह वचन सुना—कृष्ण ने, यह वचन सुना कृष्ण ने। लाल कमल-से अपने वदन पर उसने एक मन्द हास खिलने दिया। (स्वप्न०) २२ धनु को ले, रे ! हाथ में धनु को ले, रे ! उस तुच्छों की भीड़ को धूल बना दे, रे ! (धनु को०) २३ म्लान होकर मत खड़ा रह ! मन को मलिन करके मत खड़ा रह ! केवल क्लीबों का ज्ञान मत बक ! (धनु को०) २४ एक सत्य है। सदा एक सत्य है। उसका न वध कर सकते हो, न उसे छिन्न कर सकते हो। (धनु को०) २५ हानि नहीं, भयंकर शोक नहीं। उसके लिए न सुख है, न जन्म-मरण है। (धनु को०) २६ हथियार उसे नहीं छू सकते, उसे हथियार नहीं छू सकते। न आग जल सकती है, न जल गला सकता है। (धनु को०) २७ कर्म कर्तव्य है, धर्म-पालन करना तुम्हारा कर्तव्य है। उससे मिलनेवाले फलों पर ध्यान मत दे। (धनु को०) २८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अति-कापण्य-भाव से भरकर अतिशय कृपा-भाव से भर।
कठिन धनुर्धर वीर पार्थ ने कहे अनेक वचन सुंदर ॥ २१ ॥
हा! यह कैसा सुखद स्वप्न है? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥
कृष्णचद्र ने अर्जुन-मुख से सुने जभी ये दीन-वचन।
मन्द-हास की विमल-कांति से लाल कमल-सा खिला वदन ॥ २२ ॥
हा! यह कैसा सुखद स्वप्न है? सोये मेरे नयन नहीं।
देख रहा हूँ स्वप्न जागते, करता हूँ मैं शयन नहीं ॥ टेक ॥
अरे पार्थ! गांडीव धनुष को शीघ्र उठा ले अपने कर।
पापी नीच बांधवों को तू धूल बना शर बरसाकर ॥ २३ ॥
धनु को उठा हाथ में अर्जुन! त्याग हृदय की दुर्बलता।
क्षात्र-धर्म का पालन कर तू दिखा कर्म में तत्परता ॥ टेक ॥
म्लान वदन मत कर तू अर्जुन! मन मलीन मत अपना कर।
मत बक मुख से क्षुद्र ज्ञानमय नपुंसकों के-से अक्षर ॥ २४ ॥
धनु को उठा हाथ में अर्जुन! त्याग हृदय की दुर्बलता।
क्षात्र-धर्म का पालन कर तू दिखा कर्म में तत्परता ॥ टेक ॥
सत्य एक है सदा सनातन सत्य एक है सदा अटल।
छिन्न नहीं होता शस्त्रों से वह अबध्य है अमर अचल ॥ २५ ॥
धनु को उठा हाथ में अर्जुन! त्याग हृदय की दुर्बलता।
क्षात्र-धर्म का पालन कर तू दिखा कर्म में तत्परता ॥ टेक ॥
हानि न होती कभी सत्य की ग्रसता उसको शोक नहीं।
जन्म-मरण से रहित सत्य है सुख-दुख सकते रोक नहीं ॥ २६ ॥
धनु को उठा हाथ में अर्जुन! त्याग हृदय की दुर्बलता।
क्षात्र-धर्म का पालन कर तू दिखा कर्म में तत्परता ॥ टेक ॥
अस्त्र नहीं छू सकता उसको शस्त्र न पा सकता उसको।
अग्नि न उसे जला सकता है, जल न गला सकता उसको ॥ २७ ॥
धनु को उठा हाथ में अर्जुन! त्याग हृदय की दुर्बलता।
क्षात्र-धर्म का पालन कर तू दिखा कर्म में तत्परता ॥ टेक ॥
अर्जुन! निज कर्तव्य कर्म, औ' धर्म रहो करते पालन।
कर्मफलों पर ध्यान नहीं दो कर्मयोग का यह साधन ॥ २८ ॥
धनु को उठा हाथ में अर्जुन! त्याग हृदयकी दुर्बलता।
क्षात्र-धर्म का पालन कर तू दिखा कर्म में तत्परता ॥ टेक ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सूरिय दरिशनम्—69

राग— बूपाल

शुरुविय़िन् कण् मुनिवरुम् पिन्ने, तूमॊळिप् पुलवोर् पलर् तामुम्
पॆरिदु निन्ऱन् पॆरुमै यॆन्ऱेत्तुम्, पॆऱ्ऱि कण्डुनै वाळ्त्तिड वन्देन्;
परिदिये ! पॊरुळ् याविऱ्कुम् मुदले, बानुवे ! पॊन् शॆय् पेरॊळित् तिरळे;
करुदि निन्नै वणङ्गिड वन्देन्, कदिर् कॊळ् वाण्मुहम् काट्टुदि शऱ्ऱे 1
वेदम् पाडिय शोविय़ैक् कण्डु, वेळ्विप् पाडल्हळ् पादुदऱ् कुऱ्ऱेन्;
नाद वार् कडलिन्नॊलि योडु, नऱ्ऱ मिळ्च् चॊल् इशैयैयुञ् जेर्प्पेन्;
काद मायिरम् ओर् कणत्तुळ्ळे, कडुहियोडुम् कदिरिनम् पाडि
आदवा ! निन्नै वाळ्त्तिट वन्देन्, अणि कॊळ् वाण्मुहम् काट्टुदि शऱ्ऱे 2

आयिरु वणक्कम्—70

कडलिन् मीदु कदिर्हळै वीशिक्, कडुहि वान्मिशै एऱुदि यॆया !
पडरुम् वानॊळि यिन्बत्तैक् कण्डु, पाट्टुप् पाडि महिळ्वन पुट्कळ्
उडल् परन्द कडलुन् दन्नुळ्ळे, ऒव्वॊरु नुण्डुळियुम् वळि याहच्
चुडरुम् निन्ऱन् वडिवैयुट् कॊण्डे, शुरुदि पाडिप् पुहळ्हिन्ऱ दिङ्गे 1
ऎन्ऱनुळ्ळङ् गडलिनैप् पोले, ऎन्द नेरमुम् निन्नडिक् कीळे
निन्ऱु तन्नहत् तॊव्वोर् अणुवुम्, निन्ऱन् जोदि निऱैन्ददु वाहि
नन्ऱु वाळ्न्बिडच् चॆय्हुवे यॆया, आयिऱ्ऱित् कण् ऒळि तरुन् देवा !
मन्ऱु वाऱिडक् कॊण्डुल हॆल्लाम्, वाळ् नोक्किडुम् वळ्ळिय देवा ! 2

सूर्य-दर्शन—६९

श्रुति में मुनियों ने, अनन्तर पवित्र-वाणी कवियों ने आपकी महिमा को महान कहकर सराहा है। यह आपको मिला गौरव देखकर मैं आपकी स्तुति करने आया। हे परिधि ! सभी वस्तुओं के आदि ! हे भानु ! हे स्वर्ण-किरण-राशि ! मैं जान-बूझकर आपको नमस्कार करने आया। किरणों से युक्त अपने तेजोमय मुख को दिखायें तो जरा ! १ वेदों ने तुम्हारी ज्योति का (महिमा) गान किया। मैं उस ज्योति को लेकर यज्ञ-गान गाने आया हूँ। (वेद) नाद-सागर की मधुर ध्वनि में श्रेष्ठ तमिळ शब्दों का संगीत-नाद भी मिला दूँगा। एक क्षण में हजारों योजन फैल चलनेवाली तेज किरणों की महिमा गाकर, हे रवि ! मैं आपको बधाई देने आया हूँ। सुन्दर प्रकाशमय मुख को जरा दिखाइयेगा। २

रवि-नमस्कार—७०

हे प्रभु ! आप समुद्र पर किरणों को फैलाते हुए त्वरित गति से आकाश में चढ़ते हैं। फैलनेवाले आकाश का प्रकाश देखकर पक्षी खुशी से गाते हैं। यहाँ विशाल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सूर्य-दर्शन—६९

वेदों ने, फिर कवियों ने, हे रवि ! तव महिमा को गाया।
तेरे गौरव से नत मेरा मन भी स्तवन हेतु धाया॥
स्वर्णरश्मि की राशि, प्रभामंडल, तुम सबके आदि विभो !।
स्वेच्छा से हूँ नत विनीत, दर्शन मुझको दो भानु प्रभो !॥ १ ॥

वेदों ने हे सूर्य ! तुम्हारी दिव्य ज्योति का गान किया।
ज्योति-गान हित यज्ञ-भूमि में मैंने भी प्रस्थान किया॥
नाद-सिन्धु की ध्वनि-धारायें मधुर-मधुर लहरा दूँगा।
उसमें श्रेष्ठ तमिळ शब्दों का गीत-निनाद मिला दूँगा॥
पल भर में जो किरणें करतीं पार हज़ारों ही योजन।
उन किरणों की महिमा गाने आया आज भानु ! यह जन॥
हे रवि ! मैं दे रहा बधाई स्वीकृत कर लो अभिनन्दन।
अपने सुन्दरतम प्रकाशमय मुख का तुम दे दो दर्शन॥ २ ॥

सूर्य-नमस्कार—७०

सागर-तल पर किरणें फैला द्रुत गति से नभ में चढ़ते।
नभ में लख प्रकाश खग मुद से कलरव-मंत्रों को पढ़ते॥
विशद-सिन्धु के विन्दु-विन्दु में रूप तुम्हारा झलक रहा।
श्रुति-मंत्रों से कीर्ति गा रहा सागर का उर छलक रहा॥ १ ॥

हे प्रभु ! कृपा-दृष्टि हो मुझ पर, दें मुझको आशीष महान।
रहे आपकी ही छाया में मेरा मन भी सिन्धु-समान॥
दिव्य तेज से मेरे तन का अणु-अणु भर जाये, प्रभुवर !।
जीवन मिले पवित्र, (आप-सम जीवन पाऊँ अजर-अमर)॥
दिव्य सूर्य-मंडल में बसकर तुम प्रकाश फैलाते हो।
ब्रह्म ! उच्च आकाश-मंच पर चढ़ करके मुसकाते हो॥
सारे जग पर कृपा-दृष्टि बरसाकर सदा जिलाते हो।
हो उदार तुम देव ! दयामय ! दयादृष्टि दिखलाते हो॥ २ ॥

विस्तार का समुद्र भी अपनी बूंद-बूंद द्वारा आपके रूप का पान कर 'श्रुति' गाकर आपकी प्रशंसा गाता है। १ हे प्रभु ! आशीर्वाद दें कि मेरा मन भी समुद्र के समान हमेशा आपकी छाया में रहे, एक-एक अणु आपके तेज से भर जाय और अच्छा जीवन जिए। हे सूर्य में रहकर प्रकाश देनेवाले ब्रह्म ! आकाश में मंच बनाकर सारे संसार पर उसे जीवित रखने के लिए अपनी कृपा-दृष्टि डालनेवाले हे उदार देव ! २ तुम्हें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काबल् कॊण्डनै पोलुम् मण् मीदे, कण् पिऱळ् विऩ्ऱि नोक्कु हिऩ्ऱाये!
मादर् बूमियुम् निऩ् मिशैक् काबल्, मण्डिऩाळ्, इदिल् ऐयमॊऩ्ऱिल्लै;
शोदि कण्डु मुहत्तिल् इवट्के, तोऩ्ऱुहिऩ्ऱ पुदुनहै यॆऩ्ऩे!
आदित् ताय् तऩ्दै नीविर् उमक्के, आयिरन्दरम् अञ्जलि शॆय्वेऩ् 3

ज्ञान बानु—71

तिरुवळर् वाऴ्क्कै कीर्त्ति, तीरम् नल्लऱिवु वीरम्
मरुवु पल् कलैयिऩ् शोदि वल्लमै यॆऩ्ऩ वॆल्लाम्
वरुवदु ज्ञानत्ताले वैयह मुऴुदुम् ऍङ्गळ्
पॆरुमैताऩ् निलवि निऱ्कप् पिऱन्ददु ज्ञान बानु 1

कवलैहळ् शिऱुमै नोवु कैदवम्, वरुमैत् तुऩ् बम्
अवलमा मऩैत्तैक् काट्टिल् अवलमाम् पुलैमै यच्चम्
इवॆयॆलाम् अऱिविलामै ऍऩ्ऩबदोर् इरुळिऱ् पेयाम्
नवमुऱु ज्ञान बानु नण्णुह; तॊलैह पेय्हळ्; 2

अऩैत्तैयुम् तेवर्क्काक्कि अऱत्तॊऴिल् शॆय्युम् मेलोर्
मऩत्तिले शक्तियाह वळर्वदु नॆरुप्पुत् तॆय्वम्
दिऩत्तॊळि ज्ञानङ् गण्डीर् इरण्डुमे शेर्न्दाल् वाऩोर्
इऩत्तिले कूडि वाऴ्वर् मऩिदरॆऩ् ऱिशैक्कुम् वेदम् 3

पण्णिय मुयऱ्चि यल्लाम् पयनुऱ वोङ्गुम् आङ्गे
ऍण्णिय ऍण्ण मॆल्लाम् ऍळिदिले वॆऱ्ऱि यॆयदुम्
तिण्णिय करुत्ति नोडुम् शिरित्तिडु मुहत् तिऩोडुम्
नण्णिडुम् ज्ञान बानु अदऩै नाम् नऩ्गु पोऱ्ऱिऩ् 4

शायद भूमि से प्रेम हो गया है। तभी तो बिना पलक झपके उसे देख रहे हो। भूमि भी स्त्री तो है। वह भी तुम्हारे प्रति प्रेम से भर गयी। इसमें कोई संशय नहीं रहा। तुम्हारी ज्योति को देखकर इसके मुख पर जो अभिनव हँसी के भाव प्रकट होते हैं, उनका क्या कहा जाय? तुम दोनों आदि माता-पिता हो। सहस्र बार तुम्हारे प्रति हाथ जोड़ूँगा (प्रणमन करूँगा)। ३

ज्ञान-भानु—७१

श्री-वर्धित जीवन, धैर्य, बुद्धि, वीरता, कला-ज्ञान, ज्योति-सामर्थ्य आदि सब प्राप्त होते हैं ज्ञान से। विश्व भर में हमारी महिमा फैली रहे —तदर्थ उदित हुआ ज्ञान-भानु। १ चिन्ताएँ, रोग, कैतव, दरिद्रता का दुख —सब अवश्य जघन्य तथा नीच

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

धरती के प्रति प्रेम, तभी तो अपलक उसे देखते हो।
धरती भी है नारि, तभी तो उसका हृदय मोहते हो॥
ज्योति तुम्हारी पर मुग्धा वह मन्द-मन्द मुसकाती है।
हास अलौकिक अकथनीय छवि शब्दों में न समाती है॥
आदिजननि वह, आदिपिता तुम, दोनों का नित अभिनन्दन।
बार सहस्र तुम्हारे चरणों को अर्पित पूजन-वन्दन॥ ३॥

ज्ञान-भानु—७१

शौर्य, धैर्य, मति, कला-ज्ञान, श्रीवर्धित जीवन, ज्योतिर्बल।
मिलते हैं ये सभी ज्ञान से (है यह निश्चित मत अविचल)॥
निखिल विश्व में व्याप्त हमारी महिमा सदा रहे अविरत।
इसीलिए उस दिव्य देश में ज्ञान-भानु यह हुआ उदित॥ १॥

चिन्ता, रोग, दीनता, धोखा, ये सब हैं अति नीच जघन्य।
किन्तु नीच भय इन सबसे भी बढ़कर है अति नीच अनन्य॥
हैं ये घोर अविद्या-तम के वासी उग्र पिशाच सभी।
भग जायेंगे ज्ञान-भानु का होगा प्रबल प्रकाश जभी॥ २॥

शक्तिरूप में बढ़नेवाले दो ही हैं मन के भीतर।
एक अग्नि है और दूसरा ज्ञान-भानु है सुषमाकर॥
ज्ञान-भानु औ अग्निदेव जब ये दोनों मिल जाते हैं।
तब नर देव-तुल्य हो जाता यही वेद बतलाते हैं॥ ३॥

ज्ञान-भानु के आराधन से सब पदार्थ मिल जाते हैं।
होते सुदृढ़ विचार सभी के मुख-मंडल मुसकाते हैं॥
जो भी करें प्रयत्न, सफल वे होते, होते सफल सभी।
मन के सोचे सभी मनोरथ रंच न होते विफल कभी॥ ४॥

है। इन सबसे बढ़कर जघन्य है नीच भय! ये सभी अज्ञान-अन्धकार में पाये जाने वाले पिशाच हैं। अभिनव ज्ञान-भानु समीप आवे। पिशाच दूर हों। २ मन में शक्ति के रूप में बढ़नेवाली दो वस्तुएँ हैं। एक अग्निदेव है, दूसरा, दिन-प्रकाशक ज्ञान (भानु) है। वेदों का कहना है कि ये दोनों मिल जायँ, तो मानव देव-समूह में सम्मिलित हो जाएँगे। ३ जो भी प्रयत्न करें, वे सब सफल तथा उत्कृष्ट होंगे। जो भी सोचा जाय, वह सब सफल होगा। ज्ञान-भानु की आराधना करें, तो वह सुदृढ़ विचार के साथ, हँसते वदन के साथ प्राप्त हो जायगा! ४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सोम देवन् पुहऴ्—72

जय सोम, जय सोम, जय सोम देवा !
जय जय !

शरणम् (चरण)

नयमुडैय इन्विरनै नायहत् तिट्टाय्
वयमिक्क अशुररिन् मायैयेच् चुट्टाय्
वियनुलहिल् अनन्द विण् णिलवु पॅय्दाय्
तुयर् नीङ्गि यॅन्नुळञ् जुडर् कॊळच् चॅय्दाय्;
मयल् कॊण्ड कादलरै मण्मिशैक् काप्पाय्
उयवेण्डि इरु वरुळम् ऒन्ऱुरक् कोप्पाय्;
पुयलिरुण्डे कुमुऱि यिरुळ् वीशि वरल् पोऱ्
पॊयत्तिरऴ वरुवदैप् पुन्नहैयिल् माय्प्पाय् (जय)

वॅण्णि लावे !—73

अॅल्लै यिल्लादोर् वानक् कडलिडै वॅण्णि लावे— विऴिक्
किन्ब मऴिप्पदोर् तीवॅन् ऱिलहुबै वॅण्णिलावे !
शॊल्लैयुम् कळ्ळैयुम् नॅञ्जैयुञ् जेर्त्तिङ्गु वॅण्णि लावे !— निन्ऱन्
शोदि मयक्कुम् वहैयदु तानॅन् शॊल् वॅण्णिलावे !
नल्ल ऒळियिन् वहैपल कण्डिलन् वॅण्णिलावे !— (इन्द)
नन्नवै मऱन्दिडच् चॅय्वदु कण्डिलन् वॅण्णि लावे !
कॊल्लुम् अमिऴ्दै निहर्त्तिडुङ् गळ्ळॊन्ऱु वॅण्णिलावे— वन्दु
कूडियिरुक्कुदु निन्नॊळि योडिङ्गु वॅण्णिलावे ! 1
मादर् मुहत्तै निनक्किणै कूऱुवर् वॅण्णिलावे !— अःदु
त्रयविऱ् कवलैयिन् नोविऱ् कॅडुवदु वॅण्णिलावे !

सोमदेव का यश—७२

जय सोम, जय सोम, जय सोमदेव की, जय, जय ! (टेक) तुमने श्रेष्ठ इन्द्र को नायकत्व दिया। बलिष्ठ असुरों की माया को जला दिया। इस सुन्दर संसार पर आकाश से चाँदनी बरसायी। मेरे मन का दुख दूर किया और उसको प्रकाशमय बना दिया। मोह-मुग्ध प्रेमियों को तुम, इस संसार में, सुरक्षित रखनेवाले हो। उनके जीवन का उद्धार हो, इस वास्ते दो हृदयों को एक (सूत्र) में गूँथनेवाले हो। गरज के साथ अँधेरा फैलाते हुए आनेवाली आँधी के समान आनेवाली मिथ्या के वस्त्रों को एक मुस्कराहट से तितर-बितर कर दो। (जय सोम०)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सोमदेव का यश—७२

जय-जय सोमदेव की जय-जय, चन्द्रदेव की जय-जय-जय ।।
श्रेष्ठ इन्द्र को नायक पद पर तुमने ही आसीन किया ।
बलशाली असुरों की माया को तुमने ही जला दिया ।।
इस जग पर तुमने ही नभ से चारु चाँदनी बरसायी ।
दूर हुआ मन का सारा दुख जगमग दिव्य ज्योति छायी ।।
मोह-मुग्ध प्रेमी जन की तुम रक्षा करनेवाले हो ।
जीवन के उद्धार हेतु सर्वत्र बरसनेवाले हो ।।
एक सूत्र में दो हृदयों को सदा गूँथनेवाले हो ।
(सभी प्रेमियों के प्यारे हो सरस सुधा के प्याले हो) ।।
गरज-गरज कर तम फैलाकर जो घन आँधी-से घिरते ।
अपनी हास्य-प्रभा से उनके मिथ्या-दल को तुम हरते ।।
(खो जाता काला-काला तम हो जाता जग ज्योतिर्मय) ।
जय-जय सोमदेव की जय-जय, चन्द्रदेव की जय-जय-जय ।।

श्वेत चाँद—७३

तुम असीम नभ के सागर में द्वीप-समान सुहाते हो ।
श्वेत चन्द्र ! नयनाभिराम हो मंद-मंद मुसकाते हो ।।
मनोमोहिनी शब्द-सरीखी, सुरा-सरीखी मदवाली ।
कर देती उन्मत्त चन्द्र ! तव धवल ज्योति सुषमाशाली ।।
श्वेत चन्द्र ! मैं देख न पाता विमल ज्योति के विविध प्रकार ।
भूल न पाता दिवा स्वप्न से झलक रहे जो बहु आकार ।।
श्वेत चन्द्र ! तव किरणों से मिल कान्ति झलकती है ऐसी ।
सरस-सुधा से समता करनेवाली लाल-सुरा जैसी ।। १ ।।
श्वेत चन्द्र ! तुमको कवि कहते नारी के मुख का उपमान ।
चिन्ता, रोग, बुढ़ापा पर उसके मुख को कर देते म्लान ।।

श्वेत चन्द्र—७३

असीम आकाश सागर में, हे श्वेत चंद्र ! दृष्टि को आनन्द देनेवाले द्वीप के समान शोभायमान रहते हो । श्वेत चंद्र ! शब्द, सुरा तथा मन को मिलाकर, रे श्वेत चंद्र, तुम्हारी ज्योति उन्मत्त करा देती है । वह कैसे ? बताओ न श्वेत चंद्र ! मैं अच्छी ज्योति के विविध प्रकारों को देख नहीं पाता, हे श्वेत चंद्र ! यह दिवा-स्वप्न भूल नहीं पाता, श्वेत चंद्र ! खूनी अमृत की समानता करनेवाली सुरा-सी कुछ (वस्तु) हे श्वेत चंद्र ! तुम्हारी किरणों के साथ आ मिली हुई हैं । श्वेत चंद्र ! १ हे श्वेत चंद्र, लोग कहते हैं, नारी का मुख तुम्हारे समान है । पर वह (नारी-मुख)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कादलॊरुत्ति इळैय पिरायत्तळ् वॆण्णि लावे !— अन्दक्
कामन्ऱन् विल्लै यिणैत्त पुरुवत्तळ्, वॆण्णिलावे !
मीदॆऴुम् अत्बिन् विलैपुन् नहैयिनळ् वॆण्णिलावे— मुत्तम्
वेण्डिमुत् काट्टु मुहत्तिन् ऍऴिलिङ्गु वॆण्णिलावे !
शादल् अऴिदल् इलादु निरन्दरम् वॆण्णिलावे !— निन्
तण्मुहन् दन्निल् विळङ्गुव दॆन्नै कॊल् ? वॆण्णिलावे ! 2
निन्नॊळि याहिय पाऱ्कडल् मीदिङ्गु वॆण्लावे !— नन्गु
नीयुम् अमुदुम् ऍऴुन्दिडल् कण्डनन् वॆण्णिलावे !
मन्नु पॊरुळ्हळनैत्तिलुम् निऱ्पवत् वॆण्णिलावे !— अन्द
मायन् अप् पाऱ्कडल् मीदुऱल् कण्डनन् वॆण्णिलावे !
तुन्निय नील निऱत्तळ् पराशक्ति वॆण्णिलावे— इङ्गु
तोन्ऱुम् उलह वळे यॆन्बऱु कूऱुवर् वॆण्णिलावे !
पिन्निय मेहच् चडैमिशैक् कङ्गैयुम् वॆण्णिलावे !— नल्ल
पॆट्पुऱ नीयुम् विळङ्गुदल् कण्डनन् वॆण्णिलावे ! 3
कादलर् नंऱजै वॆदुप्पुवै नीयॆन्बर् वॆण्णिलावे !— निनैक्
कादल् शॆय्वार् नॆऱ्जिऱ् किन्नमुदाहुवै वॆण्णिलावे !
शोद मणि नॆडु वानक्कुळत्तिडै— वॆण्णिलावे !— नी
तेशु मिहुन्द वॆण् तामरै पोन्ऱुऱनै वॆण्णिलावे !
मोद वरुङ् गरु मेहत् तिरळिनै वॆण्णिलावे— नी
भुत्ति नॊळि तन् दळहुऱच् चॆय्हुवै वॆण्णिलावे !
तीदु पुरिन्दिड वन्दिडुम् तीयर्क्कुम् वॆण्णिलावे ! नलऱ्
जॆय्दॊळि नल्हुवर् मेलवरा मन्ऱो ? वॆण्णिलावे ! 4
मॆल्लिय मेहत्तिरैक्कुळ् मऱैन्दिडुम् वॆण्णिलावे !— उन्ऱन्
मेनि यळहु मिहैपडक् काणुदु वॆण्णिलावे !
नल्लिय लार्यव नत्तियर् मेनियै वॆण्णिलावे !— मूडु
नऱ्ऱिरै मेनि नयमिहक् काट्टिडुम् वॆण्णिलावे !
शॊल्लिय वार्त्तैयिल् नाणऱ्ऱनै पोलुम् वॆण्णिलावे !— निन्
शोदि वदनम् मुळुदुम् मऱैत्तनै वॆण्णिलावे !

उम्र के कारण, और चिन्ता तथा रोग से बिगड़नेवाला है। श्वेत चंद्र ! कोई अल्प-वयस्का प्रेमिका, हे श्वेत चंद्र, कामदेव के धनु के समान भौंहों वाली, जिसकी मुस्कुराहट हे श्वेत चंद्र, वर्धनशील प्रेम का मूल्य है (श्वेत चंद्र), (वह) चुम्बन की चाह में जब अपना मुख आगे करती है, हे श्वेत चंद्र, उसकी-सी सुन्दरता अविनाशी रूप में तुम्हारे शीतल मुख पर झलकती है। सो कैसे ? हे श्वेत चंद्र ! २ (आगे 'हे श्वेत चंद्र !' संबोधन छोड़कर बाक़ी अंशों का भाव दिया जा रहा है।) हे श्वेत चंद्र ! चाँदनी के क्षीरसागर में से, मैं देखता हूँ, तुम और अमृत उठ रहा है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सुन्दर काम-कमान-सरीखी तिरछी भौंहें वाली हो।
प्रेम-दान-सी हँसी मनोरम प्रतिपल वर्धनशाली हो॥
ऐसी नवयौवना प्रेमिका प्रियतम के मुख चुम्बन को।
बढ़ा रही हो मुसकाती-सी अपने मंजुल आनन को॥
उसके मंजुल मुखमंडल-सी श्वेत चंद्र! तव सुन्दरता।
झलक रही तव शीतल मुख पर अविनश्वर छवि शुचिस्मिता॥ २॥
तुम ज्योत्स्ना के क्षीरसिंधु से सरस-सुधा बरसाते हो।
(नभ-आँगन में दिव्य दीप से पुण्य-प्रभा फैलाते हो)॥
जो मायावी बसे हुए हैं सब जीवों के अन्तर में।
वे मायावी विराजते हैं अभय क्षीर के सागर में॥
शिव-समान यह नभमंडल है सघन नील सुषमाशाली।
व्यक्त रूप संसार उसी का बतलाते प्रतिभाशाली॥
मेघ-घटा-सा जटा-जाल है जिस पर गंगा लहराती।
चन्द्र! वहीं पर ज्योति तुम्हारी मन्द-मन्द है मुसकाती॥ ३॥
कवि कहते तुम वियोगियों के मद को देते हो संताप।
औ' सँयोगियों के हित बनते सुधा-कुंड शीतल निस्ताप॥
यह विशाल आकाश मनोरम शीतल सुधा-सरोवर है।
श्वेत कमल-सम, चन्द्र! वहीं तव मण्डल मंजु मनोहर है॥
जो मेघों के झुंड तुम्हारे मण्डल को ढकने आते।
मोती की-सी कान्ति उन्हें दे श्वेत चन्द्र! तुम चमकाते॥
जो अपकारी का हित करके अच्छा उन्हें बनाते हैं।
ऐसे जन ही जगतीतल में तुम-सम श्रेष्ठ कहाते हैं॥ ४॥
झीने मेघ-पटल के अन्दर जब तव मण्डल छिपता है।
पर्देवाली यवन-रमणियों के मुख के सम दिपता है॥
सुनकर अपनी अधिक प्रशंसा श्वेत चंद्र! तुम लजा गये।
इसीलिए क्या सुंदर मुख को घन-घूँघट में छिपा गये॥

यह भी देखता हूँ कि सभी जीवों के अन्दर रहनेवाले वे मायावी भी उस क्षीरसागर पर विराजमान हो रहे हैं। मैं यह भी देखता हूँ कि घने नीले रंग की पराशक्ति को —जिनको लोग 'यह व्यक्त संसार' ही बताते हैं, मेघ-जटा पर शान के साथ तुम हो और गंगा है। ३ लोग कहते हैं कि तुम प्रेमियों के मन को सन्तप्त करनेवाले हो। प्रेम करनेवालों के मन के लिए तुम अमृत बन जाते हो। शीतल, सुन्दर, विशाल आकाश रूपी तड़ाग के बीच तुम तेजोमय श्वेत कमल के समान रहते हो। तुम एक-दूसरे से टकराते हुए आनेवाले मेघों के समूहों की मोती का-सा प्रकाश देकर सुन्दर बना लेते हो। बुराई करने के लिए आनेवाले बुरे लोगों का भी हित करके उन्हें अच्छा बनानेवाले श्रेष्ठ लोग होते हैं न? ४ महीन मेघ-पटल के अन्दर छिपनेवाले, हे चंद्र! तुम्हारा रूप-सौन्दर्य अधिक (खिला हुआ) दिखता है! सुन्दर युवतियों के शरीर-सौन्दर्य को पर्दा अधिक (आकर्षक) करके दिखाता है। क्या इस प्रशंसा के वचन से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुल्लियन् शय्द पिळै पॊऱुत्तेयरुळ् वॆण्णिलावे !— इरुळ्
पोहिडच् चॆय्दु निन्तॆळिल् काट्टुदि वॆण्णिलावे 5

ती वळर्त्तिडुवोम् ! —74

याहप् पाट्टु

राग— पुन्नाग वराळि

पल्लवि (टेक)

ती वळर्त्तिडुवोम् !— पॆरुन्
दी वळर्त्तिडुवोम् !

शरणङ्गळ् (चरण)

आविय़ि नुळ्ळुम् अऱिवि निडैयिलुम् अन्बै वळर्त्तिडु वोम्- विण्णिन्
आशै वळर्त्तिडुवोम्— कळि आवल् वळर्त्तिडुवोम्— ऒरु
देवि महनैत् तिऱमैक्- कडवुळैच्, चॆङ्गदिर् वानवनै— विण्णोर् तमैत्
तेनुक् कळैप्पवनैप्— पॆरुन्दिरळ्, शेर्न्दु पणिन्दिडुवोम्— वारीर् (ती) 1

शित्तत् तुणिविनै मानुडर् केळ्वनैत्, तीमै यळिप्पवनै— नन्मै
शेर्त्तुक् कॊडुप्पवनै— पल, शीर्हळुडैयवनैप्— पुवि
अत्तनैयुञ् जुड रेऱत्— तिहळ्न्दिडुम्, आरियर् नायहनै- उरुत्तिरन्
अन्बुत् तिरुमहनै— पॆरुन्दिर, ळाहिप् पणिन्दिडुवोम् — वारीर् ! (ती) 2

कट्टुहळ् पोक्कि विडुदलै— तन्दिडुङ्, गण्मणि पोन्ऱवनै— ऍम्मैक्
कावल् पुरिबवनैत्— तॊल्लैक्, काट्टै यळिप्पवनैत्— तिशै
ऍट्टुम् पुहळ् वळर्न्दोङ्गिड वित्तैहळ्, याबुम् पळहिडवे— पुविमिशै
इन्बम् पॆरुहिडवे— पॆरुन्दिरळ्, ऍय्दिप् पणिन्दिडुवोम्— वारीर् (ती) 3

तुम लजा गये हो ? अपने छविमय वदन को पूरा छिपा गये हो ? मैं छोटा हूँ। मेरी की हुई भूल को क्षमा कर दो। अँधेरे को दूर करो और अपने सौन्दर्य को खोलकर दिखा दो। ५

अग्नि बढ़ायेंगे—७४

(यज्ञ-गान)

अग्नि प्रज्वलित करेंगे ! बड़ी अग्नि प्रज्वलित करेंगे ! (टेक) प्राणों में तथा बुद्धि के मध्य प्रेम को उज्ज्वल करेंगे। स्वर्ग के प्रेम को उद्दीप्त करेंगे। मन आतुरता को बढ़ायेंगे। देवी के पुत्र को, समर्थ ईश्वर को, लाल किरणों के देव को, देवों को अमृत पान के लिए निमन्त्रण देनेवाले (अग्निदेव) को हम सब बड़ी भीड़

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मैं छोटा हूँ मेरी त्रुटि को श्वेत चंद्र ! तुम क्षमा करो।
छिटका दो छवि-छटा निराली, अंधकार का भार हरो ॥ ५ ॥

अग्नि बढ़ाएँगे (तेज करेंगे)—७४

आज अग्नि प्रज्वलित करेंगे, आज अग्नि धधकायेंगे ॥ टेक ॥
हम प्राणों में और बुद्धि में विमल प्रेम उपजायेंगे।
आतुरता मत्तता बढ़ाकर स्वर्गिक प्रेम बढ़ायेंगे ॥
देवी के प्यारे सुपुत्र को सर्व-समर्थ महेश्वर को।
लाल-लपट वाले सुदेव को (देवदूत यज्ञेश्वर को) ॥
सुधा-पान हित देवगणों को सदा बुलानेवाले को।
एकत्रित हो नमन कर रहे अग्निदेव द्युतिवाले को ॥ १ ॥
(यज्ञभूमि में अग्निदेव को हम सब आज बुलायेंगे)।
आज अग्नि प्रज्वलित करेंगे, आज अग्नि धधकायेंगे ॥ टेक ॥

मन को दृढ़ता देनेवाले, हितकर, हानि-विनाशक हो।
मानव-मित्र, आर्य-नायक तुम, श्रीयुत, सर्वप्रकाशक हो ॥
रुद्रदेव के प्यारे सुत हो, अग्निदेव ! तुम सुषमाधाम।
हम सब जन एकत्रित होकर करते तुमको आज प्रणाम ॥ २ ॥
अग्निदेव का वन्दन करके जीवन सफल बनायेंगे।
आज अग्नि प्रज्वलित करेंगे, आज अग्नि धधकायेंगे ॥ टेक ॥

बन्धन सभी काट करके तुम मुक्ति दिलानेवाले हो।
आँखों के तारे से प्यारे, हम सबके रखवाले हो ॥
अग्निदेव ! तुम संकट-रूपी भीषण बन के दाहक हो।
मिल-जुलकर कर रहे वन्दना (हम सबके हित चाहक हो) ॥
दिग्-दिगन्त में कीर्ति व्याप्त हो, विद्या में पारंगत हों।
भूतल पर सुख की वर्षा हो, हम सब भाँति समुन्नत हों ॥ ३ ॥
(आज विश्व में हम स्वदेश की कीर्ति ध्वजा फहरायेंगे।
आज अग्नि प्रज्वलित करेंगे, आज अग्नि धधकायेंगे ॥ टेक ॥

लगाकर नमस्कार करेंगे, आओ ! (आग०) १ चित्त को दृढ़ता देनेवाले, मानव-मित्र, हानि-हंता, हितकारी, श्रीमान, सर्वप्रकाशक, आर्यनायक, रुद्र के प्रियपुत्र अग्नि को हम बड़ी भीड़ लगाते हुए जाकर नमस्कार करें। आओ ! (आग०) २ बन्धन काटकर मुक्ति दिलानेवाले आँख के तारे के समान प्यारे, हमारे रक्षक, झंझट-वन-मेटक, अग्नि को हम भीड़ में जाकर वन्दना करें, ताकि आठों दिशाओं में हमारा यश बढ़े और हम उन्नत हों, सभी विद्याओं से अभ्यस्त हो जायें और भू पर सुख बढ़े। (आग०) ३ मन की चिन्ताओं तथा रोगों को दूरकर हमें राहत देनेवाले, आयु को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नॆञ्जिऱ् कवलैहळ् नोवुहळ्— यावैयुम्, नीक्किक् कॊडुप्पवनै- उयिर्
नोळत् तरुबवनै— ऑळिर्, नेर्मैप् पॆरुङ् गनलै— नित्तम्
अञ्ज लञ्जे लॆन्ऱु कूऱि- ऍमक्कुनल्, आण्मै शमैप्पवनैप्- पल् वॆऱ्ऱिहळ्
आक्किक् कॊडुप्पवनैप् पॆरुन्दिरळ् आहिप् पणिन्दिडुवोम्— वारीर् (ती) 4
अच्चत्तैच् चुट्टङ्गु शाम्बरु मिन्ऱि, अऴित्तिडुम् वानवनैच्- चॆय्है
आऱ्ऱु मदिच् चुडरैत्— तडै, यऱ्ऱ पॆरुन्दिऱलै— ऍम्मुळ्
इच्चैयुम् वेट्कैयुम् आशैयुम्- कादलुम्, एऱ्ऱवीर् नल्लऱमुम्- कलन्दाळि
एऱ्ऱुन् दवक्कनलंप्-- पॆरुन्दिरळ्, ऍय्दिप् पणिन्दिडुवोम्— वारीर (ती) 5
वानहत्तैच् चॆन्ऱु तीण्डुवन् इङ्गॆन्ऱु, मण्डि यॆऴुन्दऴलैक्— कवि
वाणर्क्कु नल्लमुदैत्— तॊऴिल्, वण्णन् दॆरिन्दवनै— नल्ल
तेनैयुम् पालैयुम् नॆय्यैयुम् शोऱ्ऱैयुम्, तीम्बऴम् यावित्तैयुम्- इङ्गेयुण्डु
तेक्किक् कऴिप्पवनैप्- पॆरुन्दिरळ्, शेर्न्दुंपणिन् दिडुवोम्- वारीर् ! (ती) 6
शित्तिर माळिहै पॊन्नॊळिर् माडङ्गळ्, तेवत् तिरुमहळिर्— इन्बन्
देक्किडुन् देनिशैहळ्— शुवै, तेऱ्ऱिडु नल्लिळमै— नल्ल
मुत्तु मणिहळुम् पॊन्नुम् निऱैन्द, मुऴुक्कुडम् पऱ्पलवुम्— इङ्गेतर
मुऱ्पट्टु निऱ्पवनैप्- पॆरुन्दिरळ् मॊय्त्तुप् पणिन्दिडुवोम्— वारीर् ! (ती) 7

वेळ्वित् ती—75

राग— नाद नामक् किरियै; ताळ— चतुस्र एकम्

रिषिहळ् : ऍङ्गळ् वेळ्विक् कूड मीदिल्, एऱुदे ती ती— इन्नेरम्
बङ्गमुऱ्ऱे पेय्हळोडप्, पायुदे ती ती ! इन्नेरम् 1

लम्बा करनेवाले, ज्वलन्त आर्जव की चिनगारी को सदा 'अभय' देकर हमारे पौरुष को बढ़ानेवाले, अनेक विजयों को दिलानेवाले अग्नि को बड़ी संख्या में जाकर हम नमस्कार करें। आओ ! (आग०) ४ भय को जलाकर, उसकी राख को भी निश्शेष करके दूर करनेवाले, कार्यकारी मति के दीपक, अबाध बड़े पराक्रम को, हममें इच्छा, कामना, आशा, प्रेम तथा युक्त धर्म-विचार सबको मिलाकर ज्योति को जलानेवाले, तपस्या के उस अनल को हम सब भीड़ लगाकर नमस्कार करें, आओ ! (आग०) ५ यह कहते हुए कि मैं जाकर आकाश को छू लूंगा। घनी हो उठनेवाली ज्वाला को, कवियों के उत्कृष्ट अमृत को (प्रोत्साहन देनेवाले को), कार्य की युक्ति जाननेवाले को, श्रेष्ठ मधु, दूध, घृत, भात, मधुर फल आदि सभी का अति भोग करके मत्त रहनेवाले को हम बड़ी भीड़ में रहकर नमस्कार करें— आओ ! (आग०) ६ चित्र-महल, स्वर्णज्योति भवन, दिव्य नारियाँ, सुख-आगार, मधुर संगीत, रसिक तथा सुखद युवावस्था, श्रेष्ठ मोती, मणियाँ तथा स्वर्ण से भरे पूर्ण घट आदि देने के लिए जो प्रस्तुत हैं, उनको हम बड़ी भीड़ में घेरकर नमस्कार करें। आओ ! (आग०) ७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चिन्ताओं को तुम हरते हो, रोग समूल मिटाते हो।
शान्ति-सुधा मन में भरते हो, सबकी आयु बढ़ाते हो॥
ज्वलित सरलता की चिनगारी को तुम अभय बनाते हो।
पौरुष प्रबल बढ़ाते हो तुम, अरि पर विजय दिलाते हो॥ ४॥
अग्निदेव! हिल-मिलकर हम सब तव पग शीश झुकायेंगे।
आज अग्नि प्रज्वलित करेंगे, आज अग्नि धधकायेंगे॥ टेक॥

भय को भस्मीभूत बनाकर उसकी राख उड़ाते हो।
प्रेम, कामना, इच्छा, आशा जन-मन में उपजाते हो॥
समुचित धर्म-विचार सुझाते, मति के दीप जलाते हो।
प्रबल अबाध पराक्रम दे दे (सबको सबल बनाते हो)॥ ५॥
अग्निदेव हैं अग्नि तपस्या के सब मिल गुण गायेंगे।
आज अग्नि प्रज्वलित करेंगे, आज अग्नि धधकायेंगे॥ टेक॥

"नभ चुम्बन के लिए उभरती घनी धधकती ज्वाला को।
कवियों के मन-बीच छलकती साहस-सुधा रसाला को॥
कार्यपूर्ति की सरल युक्ति को" — इन सबके तुम ज्ञाता हो।
मधु, घृत, दूध, भात, फल छककर मत्त बने जगत्राता हो॥ ६॥
(हम सब मिलकर अग्निदेव पर श्रद्धा-सुमन चढ़ायेंगे)।
आज अग्नि प्रज्वलित करेंगे, आज अग्नि धधकायेंगे॥ टेक॥

"चित्र-विचित्र चित्रशालाएँ, स्वर्ण-ज्योति से दीप्त भवन।
दैवी दिव्य नारियाँ सुंदर, मधुर गीत, शुभ सौख्य-सदन॥
स्वर्ण-पूर्ण घट, मणि-मुक्ताएँ, रसमय सुखमय नवयौवन"।
अग्निदेव की कृपादृष्टि से ये पदार्थ पाते सब जन॥ ७॥
मिल-जुलकर हम अग्निदेव की कर वंदना मनायेंगे।
आज अग्नि प्रज्वलित करेंगे, आज अग्नि धधकायेंगे॥ टेक॥

यज्ञाग्नि—७५

ऋषिगण इस समय यज्ञवेदी में है पावन अग्नि धधकती।
भूतों, प्रेतों, असुरों को खाने के लिए लपकती॥ १॥

यज्ञाग्नि—७५

ऋषिगण— हमारी यज्ञवेदी में से आग ऊपर उछलती है। इस समय छिन्न होकर भूत भगाते हुए उछल रही आग! इसी समय! १ असुर— साथियो!

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

असुरर् : तोळ्रे नम् आवि वेहच्, चूळ्दे ती ती !— ऐयो नाम्
वाळ्वन्द काडु वेह, वन्ददे ती ती !— अम्मावो 2
रिषिहळ् : पॊन्ऩे यॊत्तोर् वण्ण मुऱ्ऱान्, पोन्दु विट्टाऩे— इन्नेरम्
शिन्ऩ माहिप् पॊय्यरक्कर्, शिन्दि वीळ्वारे !— इन्नेरम् 3
असुरर् : इन्दिरादि तेवर् तम्मै, एशि वाळ्न्दोमे— ऐयो नाम्
बॆन्दु पोह मानिडर्क्कोर्, वेद मुण्डामो ! अम्मावो ! 4
रिषिहळ् : वाऩे नोक्किक् कैहळ् तूक्कि वळरुदे ती ती !— इन्नेरम्
ज्ञाऩ मेऩि उदय कऩ्ऩि, नण्णि विट्टाळे !— इन्नेरम् 5
असुरर् : कोडि नाळाय् इव् वऩत्तिऱ्, कूडि वाळ्न् दोमे— ऐयो !नाम्
पाडि वेळ्वि मान्दर् शॆय्यप्, पण्बिळ्न्दोमे !— अम्मावो ! 6
रिषिहळ् : काट्टिल् मेयुङ् गाळे पोन्ऱान्, काणुवीर् ती ! ती ! इन्नेरम्
ओट्टि योट्टिप् पहैयै यॆल्लाम्, वाट्टु हिन्ऱाऩे ! इन्नेरम् 7
असुरर् : वलियिलादार् मान्द रॆन्ऱु, महिळ्न्दु वाळ्न्दोमे- ऐयो नाम्
कलियै वॆन्ऱोर् वेद वुण्मै, कण्डु कॊण्डारे !— अम्मावो ! 8
रिषिहळ् : वलिमै मैन्दऩ् वेळ्वि मुऩ्ऩोऩ्, वाय् तिऱन्दाऩे ! इन्नेरम्
मलियु नॆय्युन वेऩुमुण्डु, महिळ वन्दाऩे !— इन्नेरम् 9
असुरर् : उयिरै विट्टुम् उणर्वै विट्टुम्, ओडि वन्दोमे— ऐयो नाम्
तुयिलुडम्बिऩ् मीदिलुऩ् दी, तोऩ्ऱि विट्टाऩे अम्मावो 10

हमारे प्राणों को जलाते हुए घेरती है आग ! आग ! हाय ! हम जहाँ जीने आये, उस वन को जलाने आयी आग ! यह आग, री मैया ! २ ऋषिगण— स्वर्णवर्ण (अग्निदेव) आ गया ! इस समय ! छिन्न होकर वंचक राक्षस गिर जायँगे। इस समय ! ३ असुर— हम इन्द्रादि देवों की निन्दा करते हुए जीवित रहे। हाय ! जिसमें हम जल जाएँ— ऐसा भी कोई वेद मानवों के पास रहा है क्या री मैया ! ४ ऋषिगण— आकाश की तरफ़ हाथ (लपटें) उठाते हुए बढ़ती है आग ! इस समय ! ज्ञान-देह-उदय (ऊषा) बाला पास आ गयी —इस समय ! ५ असुर— करोड़ों दिनों से हम इस वन में इकट्ठा होकर जीवित रहे। हाय हम, मानवों के गान के साथ यज्ञ करते रहते अपनी स्थिति खो गये ! री मैया ! ६ ऋषिगण— देखो ! यह अग्निदेव वनचारी ऋषभ के समान है —इस समय ! सभी शत्रुओं को भगा-भगाकर त्रस्त करता है ! इस समय ! ७ असुर— मानवों को निर्बल समझकर हम खुश रहे ! हाय ! हम कलि को जीतकर वे वेद-तथ्य जान गये ! री मैया ! ८ ऋषिगण— बलवान राजा, यक्ष के पुरोगत देव ने अपना मुख खोल दिया ! अब ! पुष्कल घृत और मधु खाकर मोद करने आये ! इस समय ! ९ असुर— हाय ! प्राण छोड़कर, चेतना छोड़कर, हे मैया, हम भागे आये ! जड़ शरीर पर भी अग्निदेव लग गया रे ! री मैया ! १० ऋषिगण— देवदूत समरनाथ (अग्नि) हो-हल्ला कर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

असुर मित्रो ! मेरे प्राणों को यह भीषण आग जलाती
जग में हम जीने आये यह आग हमें सुलगाती ॥ २ ॥
मैया रे मैया ! मुझको यह अग्नि जलाने आयी ॥
(क्या करें कहाँ हम जाएँ यज्ञाग्नि बड़ी दुखदायी) ॥ टेक ॥

ऋषिगण परिपूत यज्ञवेदी पर हम स्वर्णिम अग्नि जलायें ।
वंचक राक्षस जल जायें हों छिन्न-भिन्न गिर जायें ॥ ३ ॥
इस समय यज्ञवेदी में है पावन अग्नि धधकती ।
भूतों, प्रेतों, असुरों को खाने के लिए लपकती ॥ टेक ॥

असुर इन्द्रादिक की निंदा कर हम जीवन सफल बिताते ।
है वेद कौन मनुजों में जिससे हम सब जल जाते ॥ ४ ॥
मैया रे मैया ! मुझको यह अग्नि जलाने आयी ।
क्या करें कहाँ हम जाएँ यज्ञाग्नि बड़ी दुखदायी ॥ टेक ॥

ऋषिगण नभ के चुम्बन को ऊपर उठती है पावक-ज्वाला ।
धर ज्ञान-देह आई है यह उदय कुमारी बाला ॥ ५ ॥
इस समय यज्ञवेदी में है पावन अग्नि धधकती ।
भूतों, प्रेतों, असुरों को खाने के लिए लपकती ॥ टेक ॥

असुर हम कोटि-कोटि दिवसों तक इस वन में जीवित रहते ।
पर यज्ञ-गीत मनुजों के हम सब के गुण-गण दहते ॥ ६ ॥
मैया रे मैया ! मुझको यह अग्नि जलाने आयी ।
क्या करें कहाँ हम जाएँ यज्ञाग्नि बड़ी दुखदायी ॥ टेक ॥

ऋषिगण वनचारी ऋषभ-सदृश ही यह अग्निदेव रव करता ।
संत्रस्त असुर भग जाते अरियों के मन भय भरता ॥ ७ ॥
इस समय यज्ञवेदी में है पावन अग्नि धधकती ।
भूतों, प्रेतों, असुरों को खाने के लिए लपकती ॥ टेक ॥

असुर हम मन में महामुदित थे मनुजों को निर्बल माना ।
कलियुग को जीत नरों ने वैदिक-विधान सब जाना ॥ ८ ॥
मैया रे मैया ! मुझको यह अग्नि जलाने आयी ।
क्या करें कहाँ हम जाएँ यज्ञाग्नि बड़ी दुखदायी ॥ टेक ॥

ऋषिगण हैं बलशाली राजा ये हैं पावक यज्ञ-पुरोहित ।
अपना मुख खोल रहे हैं अब खायेंगे मधु औ' घृत ॥ ९ ॥
इस समय यज्ञवेदी में है पावन अग्नि धधकती ।
भूतों, प्रेतों, असुरों को खाने के लिए लपकती ॥ टेक ॥

असुर हम प्राण छोड़कर भागे चेतना छोड़कर भागे ।
जड़ तन में अग्नि लगी है (सूझता नहीं कुछ आगे) ॥ १० ॥
मैया रे मैया ! हमको यह अग्नि जलाने आयी ।
क्या करें कहाँ हम जाएँ यज्ञाग्नि बड़ी दुखदायी ॥ टेक ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रिषिहळ् : अमरर् तूवत् समर नादत्, आर्त् तॅळुन्दाने !— इन्नेरम्
कुमरि मैन्दत् ऍमदु वाळ्विर्, कोयिल् कॊण्डाने— इन्नेरम् 11

असुरर् : वरुणत् मित्रत् अर्य मानुम्, मदुवै युण्वारे— ऐयो ! नाम्
पॅरुहु तीयिन् पुहैयुम् वॅप्पुम्, पिन्नि माय्वोमे ! अम्मावो ! 12

रिषिहळ् : अमर रॅल्लाम् वन्दु नम्मुत्, अविहळ् कॊण्डारे !- इन्नेरम्
नमत् मिल्लै पहैयुमिल्लै, नन्मै कण्डोमे ! इन्नेरम् 13

असुरर् : बहनु मिङ्गे यित्व मॅय्दिप्, पाडुहिन्ड्राने— ऐयो ! नाम्
पुहैयिल् वीळ इन्दिरन् शीर्, पॊङ्गल् कण्डीरो!-अम्मावो ! 14

रिषिहळ् : इळैयुम् वन्दाळ् कविदै वन्दाळ्, इरवि वन्दाने— इन्नेरम्
विळैयु मॅङ्गळ् तीयिनाले, मेन्मैयुर्ड्रोमे— इन्नेरम् 15

रिषिहळ् : अन्त मुण्बीर पालुम् नॅय्युम्, अमुदु मुण् बीरे !— इन्नेरम्
मिन्नि निन्ड्रीर् देवरॅङ्गळ्, वेळ्वि कॊळ्वीरे इन्नेरम् 16

रिषिहळ् : शोममुण्डु तेर्बु नल्हुम्, जोदि पॅर्ड्रोमे !— इन्नेरम्
तीमै तीर्न्दे वाळि यित्बम्, जेर्त्तु विट्टोमे— इन्नेरम् 17

रिषिहळ् : उडलुयिर् मेलुणर्विलुन् दी, ओङ्गि विट्टाने ! इन्नेरम्
कडवुळर् ताम् ऍम्मै वाळ्त्तिक्, कैकॊडुत्तारे— इन्नेरम् 18

रिषिहळ् : ऍङ्गुम् वेळ्वि अमररॅङ्गुम्, याङ्गणुम् तो ! तो ! इन्नेरम्
तङ्गुमित्बम् अमर वाळ्क्कै, शार्न्दु निन्ड्रोमे— इन्नेरम् 19

उठा है रे ! इस समय ! कुमारी के पुत्र ने हमारे जीवन में मन्दिर बना लिया ! इस समय ! ११ असुर— अरुण, मित्र, अर्यमा सब मधुपान करेंगे रे ! हाय ! हम तो बढ़ती आग की गरमी तथा धुएँ में उलझकर मर जायँगे ! री मैया हे ! १२ ऋषिगण— सभी देवों ने हमारे सम्मुख आकर हवियों को स्वीकार किया, इस समय ! अब न भय है, न शत्रु ही ! मंगल प्राप्त हो गया रे, इस समय ! १३ असुर— बक (कुबेर) भी इधर आकर खुशी-खुशी गाता है रे ! हाय ! हम धुएँ में गिरते हैं और इन्द्र श्रियों की प्राप्ति में बढ़ रहा है रे, री मैया ! १४ ऋषिगण— इच्छा आयी, कविता भी आयी ! रवि भी आया ! इस समय ! अपनी बढ़ती आग के कारण हमें गौरव मिला, इस समय ! १५ असुर— अन्न का सेवन करो ! दुग्ध, घृत तथा अमृत का अशन करो, इस समय ! हे तेजोमय देवो ! हमारे यज्ञ (की हवि) का भोग करो ! १६ ऋषिगण— सोमपान करके उन्नति देनेवाली ज्योति पा गये हम ! इस समय संकट दूर हो गया ! सुख मिल गया ! —इस समय ! १७ असुर— शरीर, प्राण, चेतना सभी पर आग व्याप्त हो गयी रे ! इस समय देवों ने ही हमें आशीर्वाद दिया, हाथ बँटाया ! इस समय ! १८ ऋषिगण— सर्वत्र यज्ञ (होते हैं) ! सब जगह देवता, सर्वत्र अग्निदेव रे ! इस समय ! हमने सुखमय अमर जीवन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऋषिगण यह देवदूत रणपति है कर उठा आज कोलाहल।
इस अग्नि, कुमारी-सुत का मन आज बना वासस्थल ॥ ११ ॥
इस समय यज्ञवेदी में यह पावन अग्नि धधकती।
भूतों, प्रेतों, असुरों को खाने के लिए लपकती ॥ टेक ॥

असुर ये मित्रावरुण अर्यमा सोमाहुतियाँ पायेंगे।
हम घोर धुएँ से घुटकर ज्वाला से जल जायेंगे ॥ १२ ॥
मैया रे मैया ! हमको यह अग्नि जलाने आयी।
क्या करें, कहाँ हम जाएँ यज्ञाग्नि बड़ी दुखदायी ॥ टेक ॥

ऋषिगण सब देवों ने सम्मुख आ हवि का स्वीकार किया है।
अरि-भय अब रंच नहीं है मंगल वरदान दिया है ॥ १३ ॥
इस समय यज्ञवेदी में यह पावन अग्नि धधकती।
भूतों, प्रेतों, असुरों को खाने के लिए लपकती ॥ टेक ॥

असुर आकर कुबेर भी देखो सुखपूर्वक गायन गाता।
हम धूम-राशि में घुटते, सुरपति समृद्धि अपनाता ॥ १४ ॥
मैया रे मैया ! हमको यह अग्नि जलाने आयी।
क्या करें कहाँ हम जायें यज्ञाग्नि बड़ी दुखदायी ॥ टेक ॥

ऋषिगण लो इला, सरस्वति आईं, छविशाली रवि भी आया।
प्रज्वलित अग्नि ने हमको गौरव दे बड़ा बनाया ॥ १५ ॥
इस समय यज्ञवेदी में यह पावन अग्नि धधकती।
भूतों, प्रेतों, असुरों को खाने के लिए लपकती ॥ टेक ॥

असुर घृत, दुग्ध, अमृत, अन्नादिक खाओ सुपुष्ट बन जाओ।
हे मम तेजोमय देवो ! मम यज्ञभाग अपनाओ ॥ १६ ॥
इस समय यज्ञवेदी में यह पावन अग्नि धधकती।
भूतों, प्रेतों, असुरों को खाने के लिए लपकती ॥ टेक ॥

ऋषिगण कर सोमपान हम सबने उन्नत प्रकाश को पाया।
संकट सब दूर हुए अब सुख का सावन सरसाया ॥ १७ ॥
इस समय यज्ञवेदी में यह पावन अग्नि धधकती।
भूतों, प्रेतों, असुरों को खाने के लिए लपकती ॥ टेक ॥

असुर तन, प्राण, चेतना सब पर व्यापी पावक की ज्वाला।
देवों ने हाथ बढ़ाया दे आशीर्वाद निराला ॥ १८ ॥
इस समय यज्ञवेदी में यह पावन अग्नि धधकती।
भूतों, प्रेतों, असुरों को खाने के लिए लपकती ॥ टेक ॥

ऋषिगण सर्वत्र यज्ञ होते हैं सर्वत्र अग्नि की ज्वाला।
सर्वत्र देव-पूजन है है जीवन सुखद निराला ॥ १९ ॥
इस समय यज्ञवेदी में यह पावन अग्नि धधकती।
भूतों, प्रेतों, असुरों को खाने के लिए लपकती ॥ टेक ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रिषिहळ्: वाळ्ह तेवर् वाळ्ह वेळ्वि, मान्दर वाळ्वारे— इन्नेरम्
वाळ्ह वैयम्! वाळ्ह वेदम्!, वाळ्ह ती ती! ती!– इन्नेरम् 20

किळिप् पाट्टु—76

तिरुवैप् पणिन्दु नित्तम् शॅम्मैत् तॊळिल् पुरिन्दु
वरुह वरुवदॆन्ऱे किळिये— महिळ्वुऱ्ऱि रुप्पोमडि; 1
वॆऱ्ऱि शॅयलुक्कुण्डु विदियिन् नियममॆन्ऱु
कऱ्ऱुत् तॆळिन्द पिन्नुम्— किळिये— कवलैप्पडलाहुमो? 2
तुन्ब निनैवुहळुम् शोर्वुम् पयमु मॆल्लाम्
अन्बिल् अळिपुम डो!— किळिये— अन्बुक्कळि विल्लै काण् 3
ञायिऱ्ऱै यॆण्णि यॆन्ऱुम् नडुमै निलै पयिन्ऱु
आयिर माण्डुलहिल्– किळिये– अळिवित्ऱि वाळ्वो मडि! 4
तूय पॆरुङ् गनलैच् चुप्पिर मण्णियनै
नेयत्तुडन् पणिन्दाल्— किळिये— नॆरुङ्गित् तुयर् वरुमो? 5

येशु किऱिस्तु—77

ईशन् वन्दु शिलुवैयिल् माण्डान्, अॆळुन्दु यिर्त्तनन् नाळ् ऒरु मून्ऱिल्
नेशमा मरिया मक्तलेना; नेरिले इन्दच् चॆय्दियैक् कण्डाळ्
देशत्तीर् इदन् उट्पॊरुळ् केळीर्, देवर् वन्दु नमक्कुट् पुहुन्दे
नाशमिन्ऱि नमै नित्तङ् गाप्पार्; नम् अहन्वैयै नाम् कॊन्ऱु विट्टाल् 1

प्राप्त कर लिया! इस समय— १९ ऋषिगण— जिए देव, जिए यज्ञ! मानव जिएँ! इस समय! पृथ्वी जिए! वेद जिए! आग जिए! आग, आग! अब! २०

शुक-गीत—७६

[इस गीत में शुक को संबोधित करके बातें कही जाती हैं। अत: यह 'शुक-गीत' कहा जाता हैं।]

री शुकी! श्री की आराधना करके, ईमानदारी का कार्य करें और 'जो आवे, वह आवे', के मनोभाव के साथ सन्तुष्ट रहें। १ विधि का नियम है कि कार्य सफल होता ही है। यह सीखने-समझने के बाद भी चिन्ता करना ठीक है क्या? २ री शुकी! दुख के विचार, थकावट, भय— सभी प्रेम से मिट जायँगे। और जान लो, प्रेम मर्त्य नहीं है। ३ सदा सूर्यदेव का स्मरण करें, तटस्थता का अभ्यास करें और सहस्र वर्ष संसार में जिएँ, अमर रहें। ४ पवित्र बड़े तेज-स्वरूप सुब्रह्मण्य की भक्ति के साथ आराधना करें, तो हे शुकी! क्या दुःख पास आएगा? ५

यीशु ख्रिस्तु—७७

यीशु (ईसा) क्रास पर शहीद हुए। फिर तीन दिन पश्चात् उठ गये और प्राणवान हुए। स्नेहशीला माँ मरिया मक्तलेना ने यह बात प्रत्यक्ष देखी। हे देशवासियो! इसका तात्पर्य सुनो! देव (ईश्वर) हमारे अन्दर प्रवेश करके हमें नित्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

असुर जय यज्ञदेव ! जय देवो ! जय मनुज, धरा की जय हो।
जय वेद, अग्नि की जय हो (सारा जग मंगलमय हो) ॥ २० ॥
इस समय यज्ञवेदी में यह पावन अग्नि धधकती।
भूतों, प्रेतों, असुरों को खाने के लिए लपकती ॥ टेक ॥

शुकगीत--७६

री शुकी ! आराधना श्री की करें।
काम हम ईमानदारी का करें ॥
जो मिले उससे सदा संतुष्ट हों।
(शुद्ध भावों से हृदय परिपुष्ट हों) ॥ १ ॥
विधि-नियम जग में, शुकी ! सबसे अटल।
अन्त में सत्कार्य होता है सफल ॥
जानकर यह तथ्य निश्चित रीति से।
तुम तजो चिन्ता, डरो मत भीति से ॥ २ ॥
री शुकी ! दुख के विचार, थकान, भय।
प्रेम पावन पा सभी मिट जायँगे ॥
प्रेम पावन जान लो नश्वर नहीं है।
(प्रेम पा नर ये अमर बन जायँगे) ॥ ३ ॥
नित्य प्रातः सूर्य का वन्दन करें।
कर्म हों निष्काम, यह धारण करें ॥
हम हज़ारों वर्ष तक जग में जियें।
हों अमर, अमरत्व का प्याला पियें ॥ ४ ॥
भक्ति-पूर्वक तेजमय पावन परम।
करें सुब्रह्मण्य की आराधना ॥
री शुकी ! दुख पास फटकेगा नहीं।
(साध लें यदि ये अलौकिक साधना) ॥ ५ ॥

यीशु ख्रिस्त—७७

हुए शहीद क्रास पर ईसा, हुए तीसरे दिन जीवित।
स्नेहमयी मरियम माता यह दृश्य देखकर हुई चकित ॥
देश-वासियो ! इस घटना का हमसे तुम तात्पर्य सुनो।
पैठ प्राण में हमें बचायेंगे ईश्वर, बस यही गुनो ॥
अहंकार को जीत सकें तो यह सब होना संभव है।
अहंकार में लीन रहें तो यह सब कार्य असंभव है ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्बु काण् मरिया मक्तलेना, आवि काणिदिर् येशु किऱिस्तु
मुन्बु तीमै वडिवित्तैक् कॊन्ऱाल्, मून्ऱु नाळिनिल् नल्लुयिर् तोन्ऱुम्
पॊन् बॊलिन्द मुहत्तिनिऱ् कण्डे, पोऱ्ऱु वाळ् अन्द नल्लुयिर् तन्नै
अन्बॆनुम् मरिया मक्तलेना, आहा! शालप् पॆरुङ्गळि यिःदे 2

उण्मै यॆन्ऱु शिलुवैयिऱ् कट्टि, उणर्वै आणित् तवङ् गॊण् डडित्ताल्
वण्मैप् पेरुयिर् येशु किऱिस्तु, वान मेन्नियिल् अङ्गु विळङ्गुम्
पॆण्मै काण् मरिया मक्तलेना, पेणुम् नल्लऱम् येशु किऱिस्तु
नुण्मै कॊण्ड पॊरुळितु कण्डीर्, नॊडियिलिःदु पयिन्ऱिड लाहुम् 3

अल्ला—78

पल्लवि (टेक)

अल्ला, अल्ला, अल्ला!

शरणङ्गळ् (चरण)

पल्लायिरम् पल्लायिरम् कोडि कोडि यण्डङ्गळ्
ऍल्लात् तिशैयिलुमो रॆल्लै यिल्ला वॆळि वानिले!
निल्लादु शुळन्ऱोड नियमञ् जॆय्दरुळ् नायहन्
शॊल्लालुम् मनत्तालुम् तॊडरॊणाद पॆरुञ् जोदि!
(अल्ला, अल्ला, अल्ला) 1

कल्लादव रायिनुम् उण्मै शॊल्लादव रायिनुम्
पॊल्लादव रायिनुम् तव मिल्लादव रायिनुम्
नल्लारुरै नीदियिन् पडि निल्लादव रायिनुम्
ऍल्लारुम् वन्देत्तु मळविल् यमबयङ् गॆडच्
चॆय्बवन् (अल्ला, अल्ला, अल्ला) 2

नाश से बचायेंगे—हाँ, अगर हम अहंता को जीत लें तो— १ जान लो 'मरिया मक्तलेना' प्रेम है और 'ईसा मसीह' आत्मा हैं। पहले बुराई के अस्तित्व को मारो, तो तीन दिन में श्रेष्ठ जीवन उठ प्रकट होगा। तब प्रेम (वात्सल्य) रूपी मक्तलेना स्वर्ण-छवि मुख पर उस श्रेष्ठ जीवन को पहचानकर उसको श्रद्धा से पालेगी। ओह, वह बहुत ही विशद आनंद है! २ सत्य रूपी क्रूस पर चढ़ाकर चेतना को तपस्या की कीलों से ठोंको, —तब आकाश रूपी शरीर में ईसा मसीह, यानी उत्कृष्ट जीवन शोभायमान होगा। 'नारीत्व' मरिया मक्तलेना है, तो उसका, पालक 'सद्धर्म' ईसा मसीह है। यह सूक्ष्म अर्थ जान लो। एक क्षण में इसका अभ्यास हो जायगा। ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मरिया मातु मक्तलेना को प्रेमरूप मनुजो ! मानो।
और पूज्य ईसा मसीह को आत्मा रूपी पहिचानो ॥
यदि जगतीतल से हो जाए सभी पाप-पुंजों का नाश।
तीन दिनों में ही जीवन का हो जायेगा श्रेष्ठ विकास ॥
निरख स्वर्ण-छवि मुखमंडल की औ' पहिचान श्रेष्ठ जीवन।
मरियम स्नेह-समेत करेगी उसका श्रद्धा से पालन ॥
यह अपार-आनन्द-प्रदायक, यह सुख-शान्ति-विधायक है।
(यह समस्त-संकट-नाशक है, यह प्रभु-प्रेम-प्रकाशक है) ॥ २ ॥

ईसा-सी चेतना बनी है सत्य-स्वरूपी क्रूस बना।
उग्र तपस्या की कीलों से कोमल तन छेदो अपना ॥
देह-गगन में ईसा-रूपी तब होगा उत्तम जीवन।
है नारीत्व मक्तलेना तो ईसा है सद्धर्म-सृजन ॥
सूक्ष्म-तत्त्व यह भली भाँति से हे मनुजो ! जानो, मानो।
क्षण भर में अभ्यास-प्राप्त तुम प्रेमरूप को पहिचानो ॥ ३ ॥

अल्लाह—७८

अगम असीम व्योम-मंडल में दिशा और विदिशाओं में।
कोटि-कोटि अणु घूम रहे हैं अविरत विविध विधाओं में ॥
इनके तुम्हीं व्यवस्थापक हो, सबके नायक तुम केवल।
तुम अवाङ्-मन-गोचर, या अल्लाह ! ज्योतिमय जग-सम्बल ॥ १ ॥

मिथ्यावादी, अज्ञानी हों, दुर्जन हों, कि तपस्या-हीन।
साधु-कथन को कभी न मानें ऐसे हों मतिहीन मलीन ॥
एकमेव अल्लाह-शरण गह, उससे यदि प्रार्थना करें।
तो वे शीघ्र द्रवित हो करके यम का भीषण त्रास हरें ॥ २ ॥

अल्लाह !—७८

अल्लाह ! अल्लाह ! अल्लाह ! (टेक) दसों हजार, दसों हजार, करोड़ों (ब्रह्म-) अंड असीम अंतरिक्ष में सभी दिशाओं में अटूट रीति से घूम रहे हैं। इसके व्यवस्थापक नायक, अवाक्-मन-गोचर, बड़े ज्योतिस्वरूप हैं —अल्लाह ! (अल्लाह !) १
अज्ञ हों कि असत्यवादी, खल हों कि तपस्याहीन, चाहे साधु-कथन न माननेवाले हों, सभी आकर उनकी स्तुति करें तो उनके यम-भय का निराकरण करनेवाले हैं अल्लाह ! (अल्लाह !) २

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

2 ज्ञानप् पाडल्हळ्

अच्चमिल्लै—79

(पण्डारप् पाट्टु)

अच्चमिल्लै अच्चमिल्लै अच्चमॆन्ब दिल्लैये
इच्चहत्तु ळोरॆलाम् ऍदिर्त्तु निन्ऱ पोदिनुम्
अच्चमिल्लै अच्चमिल्लै अच्चमॆन्ब दिल्लैये
तुच्चमाह ऍण्णि नम्मैत् तूऱुशॆय्द पोदिनुम्
अच्चमिल्लै अच्चमिल्लै अच्चमॆन्ब दिल्लैये
पिच्चै वाङ्गि उण्णुम् वाळ्क्कै पॆऱ्ऱु विट्ट पोदिनुम्
अच्चमिल्लै अच्चमिल्लै अच्चमॆन्ब दिल्लैये 1
इच्चै कॊण्ड पॊरुळॆलाम् इळन्बु विट्ट पोदिनुम्
अच्चमिल्लै अच्चमिल्लै अच्चमॆन्ब दिल्लैये
कच्चणिन्द कॊङ्गै मादर् कण्गळ्वीशु पोदिनुम्
अच्चमिल्लै अच्चमिल्लै अच्चमॆन्ब दिल्लैये
नच्चैवायि लेकॊणर्न्दु नण्बरूट्टु पोदिनुम्
अच्चमिल्ल अच्चमिल्लै अच्चमॆन्ब दिल्लैये
पच्चैयू नियैन्दवेऱ् पडैहळ्वन्द पोदिनुम्
अच्चमिल्लै अच्चमिल्लै अच्चमॆन्ब दिल्लैये
उच्चिमीदु वानिडिन्दु वीळु हिन्ऱ पोदिनुम्
अच्चमिल्लै अच्चमिल्लै अच्चमॆन्ब दिल्लैये 2

जय बेरिहै—80

पल्लवि (टेक)

जय बेरिहै कॊट्टडा !— कॊट्टडा
जय बेरिहै कॊट्टडा !

---

२ दार्शनिक ज्ञान-गीत

डर नहीं—७९

[पंडारम् का गीत : 'पंडारम्' शैव संत, साधु या मठाधीश को कहते हैं। उनके भजन के तर्ज़ में यह गीत लिखा गया है।]

डर नहीं, डर नहीं ! डर नामक चीज है ही नहीं ! इस जगत के सभी लोग (हमारा) सामना करने के लिए खड़े रहें तो भी डर नहीं, डर नहीं, डर नामक चीज

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

२. दार्शनिक ज्ञान-गीत

भय नहीं—७९

हम निर्भय हैं, हम निर्भय हैं, मन में भय का बीज नहीं।
भय कुछ नहीं, नहीं कुछ भय है, भय नामक कुछ चीज़ नहीं॥
मुक़ाबले में सारे मानव जग के यदि सम्मुख आयें।
तो भी कुछ भय नहीं, नहीं भय, भय नामक कुछ चीज़ नहीं॥
तुच्छ समझकर हमें, हमारा कैसा भी अपमान करें।
तो भी कुछ भय नहीं, नहीं भय, भय नामक कुछ चीज़ नहीं॥
यदि जीवन में भीख माँगकर किसी तरह भी गुज़र करें।
तो भी कुछ भय नहीं, नहीं भय, भय नामक कुछ चीज़ नहीं॥
यदि अपनी प्रिय सभी वस्तुएं मिट जाएँ या खो जाएँ।
तो भी कुछ भय नहीं, नहीं भय, भय नामक कुछ चीज़ नहीं॥ १॥
कंचुकि-कसे उरोजों वाली के कटाक्ष-शर लग जाएँ।
तो भी कुछ भय नहीं, नहीं भय, भय नामक कुछ चीज़ नहीं॥
यदि अपने ही मित्र पिला दें हमें भयंकर हालाहल।
तो भी कुछ भय नहीं, नहीं भय, भय नामक कुछ चीज़ नहीं॥
हमें डराने के हित आयें, मांस-भक्षिणी यक्षिणियाँ।
तो भी कुछ भय नहीं, नहीं भय, भय नामक कुछ चीज़ नहीं॥
यह विशाल आकाश अचानक यदि मस्तक पर टूट पड़े।
तो भी कुछ भय नहीं, नहीं भय, भय नामक कुछ चीज़ नहीं॥ २॥

जय-दुंदुभी (जय-भेरी)—८०

(शत्रु-हृदय में भय उपजाओ, भूतल-गगन गुँजाओ रे)।
जय दुंदुभी बजाओ वीरो! जय दुंदुभी बजाओ रे॥ टेक॥

है ही नहीं। हमको तुच्छ समझकर हमारा अपमान करें, तो भी डर नहीं, डर नामक चीज नहीं! भिक्षा माँगकर खाने का जीवन प्राप्त हो जाय, तो भी डर नहीं, डर नामक चीज है ही नहीं! सभी प्रिय वस्तुएँ खोनी पड़ें, तो भी डर नहीं, डर नामक चीज है ही नहीं! १ अँगिया-बद्ध स्तनों वाली का कटाक्ष लग जाय, तो भी डर नहीं, डर नामक चीज है ही नहीं। विष को लाकर मित्र उसे मुख पर रख खिला दें तो भी डर नहीं, डर नामक चीज है ही नहीं। ताजा मांस से लिप्त शक्तियाँ आवें, तो भी डर नहीं, डर नहीं, डर नामक चीज है ही नहीं। सिर पर आकाश फटकर गिरे, तो भी डर नहीं, डर नहीं। डर नामक चीज है ही नहीं! २

जय-दुंदुभी—८०

रे जय-दुंदुभी बजाओ! बजाओ! जय दुंदुभी बजाओ रे! (टेक) भय के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शरणङ्गळ् (चरण)

पयमैनुम् पेय्तनै यडित्तोम्— पॊय्म्मैप्
पाम्बैप् पिळन्दुयिरैक् कुडित्तोम्
वियनुल हनैत्तैयुम् अमुदैन नुहरुम्
वेद वाळ्वितक् कैप् पिडित्तोम् (जय बेरिहै) 1
इरविय नॊळि यिडैक् कुळित्तोम्— ऒळि
इन्नमुदितैक् कण्डु कळित् तोम्
करविनिल् वन्दुयिर्क् कुलत्तितै अळिक्कुम्
कालन् नडुनडुङ्ग विळित्तोम् (जय बेरिहै) 2
काक्कै कुरुवि ऎङ्गळ् जादि— नीळ्
कडलुम् मलैयुम् ऎङ्गळ् कूट्टम्
नोक्कुन् दिशैयॆलाम् नामन्रि वेरिल्लै
नोक्क नोक्कक् कळि याट्टम् (जय बेरिहै) 3

शिट्टुक् कुरुवियैप् पोले—81

पल्लवि (टेक)

विट्टु विडुदलैयाहि निर् पायिन्दच्
चिट्टुक् कुरुवियैप् पोले

शरणङ्गळ् (चरण)

ऎट्टुत् तिशैयुम् पऱन्दु तिरिहुवै
एऱियक् काऱ्ऱिल् विरैवॊडु नीन्दुवै
मट्टुप् पडाऎङ्गुम् कॊट्टिक् किडक्कुमिव्
वानॊळि यॆन्नुम् मदुविन् शुवैयुण्डु (विट्टु) 1
पॆट्टैयिनो डिन्बम् पेशिक् कळिप्पुऱ्ऱुप्
पीडैयिलाद दोर् कूडु कट्टिक् कॊण्डु
मुट्टै तरुङ् गुऱ्जैक् कात्तु महिळ्वॆय्दि
मुन्द वुणवु कॊडुत्तनबु शॆय्दिङ्गु (विट्टु) 2

भूत को (हमने) पीटा। झूठ के सर्प को चीरकर उसके प्राण पी डाले। विस्मयकारी विश्व को अमृत के समान भुगतनेवालों वेद-(सम्मत) जीवन को (हमने) अपनाया। (जय दुंदुभी०) १ हमने रवि-छवि में स्नान किया। प्रकाशामृत को पाकर मुदित हुए। वंचना करते हुए आकर प्राण हरनेवाले काल को कँपाते हुए हमने आँखों को तरेरा। (जय दुंदुभी०) २ कौवे, चिड़ियाँ हमारी जाति की हैं। विशाल समुद्र तथा बड़े पर्वत हमारे दल के हैं। किसी भी दिशा में देखो, हमको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भीषण भय का भूत भगाया, मिथ्या-सर्प मिटाया रे।
विश्व-सुधा-सम अद्भुत वैदिक-जीवन को अपनाया रे॥ १ ॥
शत्रु-हृदय में भय उपजाओ, भूतल-गगन गुँजाओ रे।
जय-दुंदुभी बजाओ वीरो ! जय-दुंदुभी बजाओ रे॥ टेक ॥
रवि की छवि से स्नान किया, पा ज्योति-सुधा हरषाया रे।
जो छल से हरता प्राणों को उस काल को कँपाया रे॥ २ ॥
शत्रु-हृदय में भय उपजाओ भूतल-गगन गुँजाओ रे।
जय-दुंदुभी बजाओ वीरो ! जय-दुंदुभी बजाओ रे॥ टेक ॥
गिरि-समुद्र निज कुल के जानो, खग-मृग बन्धु बनाओ रे।
सकल विश्व परिवार हमारा, नाचो मोद मनाओ रे॥ ३ ॥
शत्रु-हृदय में भय उपजाओ, भूतल-गगन गुँजाओ रे।
जय-दुंदुभी बजाओ वीरो ! जय-दुंदुभी बजाओ रे॥ टेक ॥

छोटी चिड़िया के समान—८१

इस लघु पक्षी के समान तुम मुक्त रहो, स्वच्छन्द रहो।
इस लघु पक्षी के समान तुम बंधन-मुक्त स्वतंत्र रहो॥
नभ उँड़ेलता ज्योति-सुधा है, रहो प्रसन्न उसे पीकर।
उड़ो दिशाओं-विदिशाओं में, तैरो तेज पवन-पथ पर॥
(बैठ पवन के पंखों पर तुम पवन-तुल्य नभ-बीच बहो)।
इस लघु पक्षी के समान तुम मुक्त रहो, स्वच्छन्द रहो॥ १ ॥
प्रेमालाप खगी (पत्नी) से, मौज मनाओ प्रमुदित मन।
सुखदायक घोंसला बनाओ (किसी विटप पर तृण चुन-चुन)॥
अंडे देकर बच्चे पैदा करो, करो उनका पालन।
प्यार करो प्यारे बच्चों से उन्हें खिलाओ चुन-चुन कण॥
(बहलाओ प्यारे बच्चों को सुन्दर-सुन्दर वचन कहो)।
इस लघु पक्षी के समान तुम मुक्त रहो, स्वच्छन्द रहो॥ २ ॥

छोड़ अन्य कुछ नहीं है। और हम देखते-देखते मोद का नाच करते हैं। (जय दुंदुभी०) ३

छोटी चिड़िया के समान—८१

छूटकर स्वतन्त्र होकर रहो तुम इस छोटी चिड़िया के समान ! (टेक) अगणित रूप से उँड़ेले जाते रहे इस आकाश के प्रकाश रूपी अमृत को पीकर आठों दिशाओं में उड़ते फिरो; हवा में चढ़कर तेज तैरो। (छूटकर०) १ स्त्री (चिड़िया) से प्रेमालाप करो, मौज उड़ाओ। सुखद घोंसला बना लो। फिर अंडे देकर उनसे निकले शावकों का पालन करो, खिलाओ और उनसे प्यार करो। (छूटकर०) २

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुऱ्ऱत्तिलेयुङ् गऴनि वॆळियिलुम्
मुन् कण्ड तानियम् तन्नैक् कॊणर्न्दुण्डु
मऱ्ऱप् पॊऴुदु कदै शॊल्लित् तूङ्गिप्पिन्
वैहऱै याहुमुन् पाडि विऴिप्पुऱ़ु (विट्टु) 3

विडुदलै वेण्डुम्—82

राग— नाट्टै

पल्लवि (टेक)

वेण्डुमडि ॲप्पोदुम् विडुदलै, अम्मा !

शरणङ्गळ् (चरण)

तूण्डु मिन्ब वाडै वीशु तुय्य तेन् कडल्
शूऴ निन्ऱ ती विलङ्गु शोदि वानवर्
ईण्डु नमदु तोऴराहि ॲम्मॊडमुदमुण्डु कुलव
नीण्ड महिळ्च्चि मूण्डु विळैय निनैत्तिडु मिन्बम्
अनैत्तुम् उदव (वेण्डुमडि) 1

विरुत्तिरादि दानवर्क्कु मॆलिव दिन्ऱिये
विण्णुम् मण्णुम् वन्दुपणिय मेन्मै तुन्ऱिये
पॊरुत्त मुऱनल् वेद मोर्न्दु पॊय्म्मै तीर मॆय्म्मै नेर
वरुत्त मऴिय वऱुमै यॊऴिय वैयम् मुऴुदुम्
वण्मै पॊऴिय (वेण्डुमडि) 2

पण्णिल् इनिय पाडलोडु पायुमॊळि यॆलाम्
पारिल् ॲम्मै उरिमै कॊण्डु पऱ्ऱि निऱ्कवे
नण्णि यमरर् वॆऱ्ऱि कूऱ नमदु पॆण्गळ् अमरर् कॊळ्ळ
वण्ण मिनिय देव महळिर् मरुव नामुम् उवहै
तुळ्ळ (वेण्डुमडि) 3

आँगनों तथा खेतों में पाये जानेवाले धान्य को लाकर खाओ, फिर कहानियाँ सुनाकर समय बिताओ। फिर सो जाओ। फिर सवेरा होने से पहले गीत गाते हुए जागो। (छूटकर०) ३

छुटकारा चाहिए !—८२

चाहिए हमेशा छुटकारा ! अरी ! माँ ! (टेक) एक द्वीप है, जिसके चारों ओर मधुसागर घेरे रहता है तथा प्रेरक उदीची वायु बहती रहती है। उस द्वीप के वासी तेजोमय देवगण हमारे मित्र बनें, हमारे साथ रहकर अमृत का अशन करके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

खेतों और आँगनों में बिखरे कण चुन-चुनकर खाओ।
ललित कथाएँ सुना-सुनाकर समय बिताओ, सो जाओ॥
जगो सबेरे से पहिले ही मंगल-प्रभातियाँ गाओ।
(इस प्रकार की जीवन-चर्या अपनाओ, दुख बिसराओ)॥
(धूप-छाँह जाड़ा-गर्मी से विचलित मत हो, सभी सहो)।
इस लघु पक्षी के समान तुम मुक्त रहो, स्वच्छन्द रहो॥ ३॥

छुटकारा चाहिए--८२

मुक्ति चाहिए मुझको माता! मुझको बंधन-मुक्ति चाहिए॥ टेक॥
एक द्वीप है जिसके चारों ओर घिरा है मधु का सागर।
प्रबल-प्रेरणा-प्रद उत्तर की वायु बह रही है अति मनहर॥
देव तेजमय सभी वहाँ के सुधा-पान कर मोद मनायें।
हम वे मिल-जुल मोद मनायें, मन-माने सब सुख मिल जाएँ॥
(बिता सकूँ मैं ऐसा जीवन मुझको ऐसी युक्ति चाहिए)।
मुक्ति चाहिए मुझको माता! मुझको बंधन-मुक्ति चाहिए॥ १॥
वृत्रादिक भीषण असुरों का हम न कभी लोहा मानेंगे।
धरा-गगन झुक जायँ मेरे सम्मुख, वह गौरव ठानेंगे॥
उचित रीति से चारों वेदों का समस्त अध्ययन करेंगे।
हम असत्य का त्याग करेंगे, सदा सत्य का वरण करेंगे॥
दुख-दारिद्र्य दूर हों सारे, सुख-समृद्धि की मुक्ति चाहिए।
मुक्ति चाहिए मुझको माता! मुझको बंधन-मुक्ति चाहिए॥ २॥
मधुर-मधुर स्वर वाले गीतों-साथ फैलता जो आता है।
देव-देवियों के जय-घोषों से सदैव जो सरसाता है॥
उस पर निज अधिकार समझकर उस प्रकाश को सुर अपनाएँ।
स्वर्णिम सुरबालाएँ, हम सब मोद-मग्न हो नाचें-गाएँ॥
(जिससे मिलें मोद के मोती ऐसी सुन्दर शुक्ति चाहिए)।
मुक्ति चाहिए मुझको माता, मुझको बंधन-मुक्ति चाहिए॥ ३॥

खुशी मनायें और दीर्घ आनन्द फैल जाय। जिनकी हम इच्छा करते हैं, वे सारे सुख मिल जायें। इसके लिए··· (छुटकारा०) १ हम वृत्रादि असुरों का लोहा नहीं मानेंगे। आकाश और पृथ्वी आकर हमारे सामने झुक जायें—ऐसे गौरवशाली बनेंगे। उचित रीति से हम वेदों का अध्ययन करें। असत्य को दूर करके सत्य का अनुसंधान करें। दुख, दरिद्रता आदि मिट जायें और समृद्धता भर जाय। —एतदर्थ (छुटकारा०) २ सुस्वर मधुर गीतों के साथ जो फैलता आता है, वह प्रकाश (मोद) हमारे साथ अधिकार के साथ लगकर स्थित हो। जयघोष के साथ देव हमारी स्त्रियों को अपना लें तथा सुवर्ण देवकन्याएँ हमारा आलिंगन करें तथा हम आनंदातिरेक से नाचें। तदर्थ··· (छुटकारा०) ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेण्डुम्—83

मनदि लुरुदि वेण्डुम्, वाक्कि निलेयिनिमै वेण्डुम्
निनैवु नल्लदु वेण्डुम्, नॆरुङ्गिन पॊरुळ् कैप्पड वेण्डुम्
कनवु मॆय्प्पड वेण्डुम्, कैवश मावदु विरैविल् वेण्डुम्
दनमुम् इन्बमुम् वेण्डुम्, तरणियिले पॆरुमै वेण्डुम् 1
कण् तिरन्दिड वेण्डुम्, कारियत्ति लुरुदि वेण्डुम्
पॆण् विडुदलै वेण्डुम्, पॆरिय कडवुळ् काक्क वेण्डुम्
मण् पयनुर वेण्डुम्, वानह मिङ्गु तन्पड वेण्डुम्
उण्मै निन्रिड वेण्डुम्, ओम् ओम् ओम् ओम् 2

आत्म जयम्—84

कण्णिल् तॆरियुम् पॊरुळिनैक् कैहळ् कवर्न्दिड माट्टावो ?—अड
मण्णिल् तॆरियुदु वानम्, अदुनम् वशप्पड लाहादो ?
ऍण्ण ऍण्णिप् पल नाळु मुयन्रिङ् गिरुदियिर् चोर् वोमो ?—अड
विण्णिलुम् मण्णिलुम् कण्णिलुम् ऍण्णिलुम् मेवु पराशक्तिये ! 1
ऍन्न वरङ्गळ्, पॆरुमैहळ्, वॆऱ्ऱिहळ्, ऍत्तनै मेन्मैहळो !
तन्नै वॆन्ऱालवै यावुम् पॆरुवदु शत्तिय माहु मॆन्ऱे
मुन्नै मुनिवर् उरैत्त मऱैप्पॊरुळ् मुऱ्ऱु मुणर्न्द पिन्नुम्
तन्नै वॆन्ऱाळुम् तिऱमै पॆरादिङ्गु ताळ्वुऱ्ऱु निऱ्पोमो ? 2

कालन्नुक्कु उरैत्तल्—85

राग— चक्करवाक; ताळ— आदि

पल्लवि (टेक)

काला ! उन्नै नान् शिरु पुल्लॆन मदिक्किऱेन्; ऍन्ऱन्
कालरु हे वाडा ! शऱ्ऱे उन्नै मिदिक्किऱेन्— अड (काला)

चाहिए—८३

मन में दृढ़ता तथा वाणी में मधुरता चाहिए। साधु विचार चाहिए। जिसके पास हम जाते हैं, वह वस्तु हाथ आनी चाहिए। स्वप्न सत्य हो जाय। मिलना हो, तो वह तुरन्त मिल जाय। धन तथा सुख चाहिए और धरती में गौरव मिलना चाहिए। १ आँखें खुल जायँ। कार्य में स्थिरता हो। स्त्री को स्वतंत्रता चाहिए। महान् ईश्वर रक्षा करें। पृथ्वी सुफला हो तथा आकाश इधर दिखायी दे। सत्य वाणी स्थायी रहे। ॐ ! ॐ ! ॐ ! ॐ ! २

आत्म-जय—८४

आँखों को जो चीजें दिखाई देती हैं, क्या उन्हें हाथ ग्रहण नहीं करें ? रे ! पृथ्वी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चाहिए—८३

वाणी में चाहिए मधुरता, मन में है दृढ़ता कांक्षित।
साधु विचार चाहिए हमको, वस्तु चाहिए मन-वांछित॥
स्वप्न सत्य हो जायँ हमारे, सब कुछ सत्वर मिल जाए।
धन मिल जाए, सुख सरसाये, सारा जग गौरव गाये॥ १॥
सब कामों में सुस्थिरता हो, बन्द नयन भी खुल जाएँ।
ईश्वर रक्षक, औ' स्वतंत्रता पायें दुर्बल अबलाएँ॥
सुजला सुफला हो यह वसुधा, भू पर गगन झुके श्यामल।
सदा सत्य वाणी स्थायी हो ॐ, ॐ हो ॐ सफल॥ २॥

आत्म-जय—८४

जिन्हें देखते हम नयनों से क्या न उन्हें हम छू सकते?।
क्या आकाश न वश में होगा, यद्यपि पृथ्वी से तकते?॥
सोच-सोचकर बहुत दिनों तक क्या यों ही उकतायेंगे?।
(क्या सृष्टी का ओर-छोर हम नहीं कभी भी पायेंगे?)॥
नभ-मंडल में, भूमंडल में, दृष्टि तथा मन में व्यापक।
हे पराशक्ति! तुम कहो, तुम्हीं हो सकल सृष्टि की संचालक॥ १॥
आत्मा पर यदि विजय प्राप्त हो, तो हों सभी कार्य संभव।
विजय, बड़ाई मिल जायेगी, मिल जायेंगे वर, गौरव॥
अति प्राचीन ऋषी-मुनियों का वेद-वाक्य यह मंगलमय।
इसे जान करके आत्मा पर होती प्राप्त विजय निश्चय॥
आत्मा पर शासन करनें की क्या सामर्थ्य न पाएँगे?।
आत्म-विजय के बिना भला क्या पतित बनें रह जायेंगे?॥ २॥

काल (यम) से कथन—८५

काल! तुझे मैं तुच्छ मानता लघु तिनके-सम है औकात।
मेरे पास तनिक तो आ तू, कसकर एक जमाऊँ लात॥

पर आकाश दिखायी देता है। क्या वह हमारे वश में न आयगा? सोच-सोचकर क्या बहुत दिनों तक प्रयास करके आखिर अब उकता जायेंगे? अरे! आकाश, पृथ्वी, दृष्टि तथा मन में आरूढ़ रहनेवाली हे पराशक्ति! (यह सब होने दो।) १ क्या वर? गौरव? विजय? कितनी ही बड़ाइयाँ। 'आत्मा पर विजय पा लो, तो वे सभी सत्य हो जायेंगे।' यह प्राचीन मुनियों का कहा वेद-वाक्य है। इसको जानने के बाद भी आत्मा पर विजय पाकर क्या उस पर शासन करने की सामर्थ्य का अर्जन किये बिना हम पतित होकर रहेंगे? २

काल (यम) से कथन—८५

रे काल, तुझे मैं लघु तृण मानता हूँ! मेरे पैर के पास आ जरा! लात मारूँ!

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शरणङ्गळ् (चरण)

वेलायुद विरुदिन मनदिर् पदिक्किरेन्— नल्ल
वेदान्द मुरैत्त ञानियर् तमै यॅण्णित् तुदिक्-किरेन्— आदि
मूला वॅन्रु कदरिय यानैयैक् काक्कवे— निन्रन्
मुदलैक्कु नेर्न्दवे मरुन्दायो कॅट्ट मूडने ! अड (काला) 1
आलाल मुण्डवनडि शरणॅन्र मार्क्कण्डन्— तन
दाबि कवरप्पोय् नी पट्ट पाट्टिनै यरिहुवेन्— इङ्गु
नालायिरम् कादम् विट्टहल् ! उन्नै विदिक्किरेन्— हरि
नारायण नाहनिन् मुन्ने उदिक्किरेन्— अड (काला) 2

मायैयैप् पळित्तल्—86

राग— काम्बोदी; ताळ— आदि

उण्मै यरिन्दवर् उन्नक् कणिप्पारो ? मायैये— मनत्
तिण्मैयुळ्ळारै नी शॅय्वदु मॉन्रुण्डो !— मायैये ! 1
अॅत्तनै कोडि पडै कॉण्डु वन्दालुम् मायैये-- नी
शित्तत् तॅळिवॅन्रुम् तीयिन् मुन् निर्पायो ?— मायैये ! 2
अॅन्नैक् कॅडुप्पदर् कॅण्ण मुर्राय् कॅट्ट मायैये !— नान्
उन्नैक् कॅडुप्प दुरुदियॅन् रेयुणर्— मायैये ! 3
शाहत् तुणियिर् समुत्तिर मॅम्मट्टु मायैये !— इन्दत्
तेहम् बॉय्यॅन् रुणर् तीररै यॅन् शॅय्वाय् !— मायैये ! 4
इरुमै यळिन्द पिन् अॅङ्गिरुप्पाय् ? अर्प मायैये !— तॅळिन्
दॉरुमै कण्डार् मुन्नम् ओडादु निर्पैयो ?— मायैये 5
नीदरुम् इन्बत्तै नेरॅन्रु कॉळ्वनो ? मायैये— शिङ्गम्
नाय्तरक् कॉळ्ळुमो नल्लर शाट्चियै— मायैये ! 6

(रे काल !) (टेक) मैं 'वेल् (साँग)' आयुध के लांछन को अपने मन पर लगा लेता हूँ। मैं श्रेष्ठ वेदान्त-वाक्य के वक्ता ज्ञानियों का स्मरण करके उनकी स्तुति करता हूँ। 'हे आदिमूल !' कहकर गजराज चिंघाड़ा। तब तेरे ग्राह का जो हुआ क्या तू उसे भूल गया ? रे (काल०) ! १ 'हलाहलपायी की शरण में गया' मार्कण्डेय ने कहा। तू उसके प्राण हरने के लिए जब गया तब तेरी क्या दुर्गति हुई —उसे मैं जानता हूँ। अब चार हज़ार योजन हटकर चल ! हरि नारायण के रूप में मैं तेरे सामने प्रकट हूँ। रे (काल०) ! २

माया की निन्दा—८६

दार्शनिक तेरी क्या गणना करेंगे ? री माया ! क्या तू उनका कुछ कर सकती है,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निज-मन-बीच लगा लेता हूँ शक्ति-शस्त्र के मैं लांछन।
शुभ वेदान्त-वाक्य के वक्ता मुनियों का करता वंदन॥
"आदिमूल" कहकर चिंघाड़ा था जब ग्राह-ग्रस्त गजराज।
'काल-रूप', क्या हुई 'ग्राह' की गति, वह भूल गया तू आज॥
काल! तुझे मैं सदा मानता लघु तिनके-सम है औकात।
मेरे पास तनिक तो आ तू, कसकर एक जमाऊँ लात॥ १॥
मार्कण्डेय हलाहल-पायी के चरणों की गया शरण।
दुर्गति बड़ी हुई थी तेरी, कर न सका तू प्राण-हरण॥
यह इतिहास ज्ञात है मुझको, मुझसे लाखों योजन हट।
नारायण हरि का स्वरूप मैं तेरे सम्मुख आज प्रकट॥
काल! तुझे मैं तुच्छ मानता लघु तिनके-सम है औकात।
मेरे पास तनिक तो आ तू, कसकर एक जमाऊँ लात॥ २॥

माया की निन्दा—८६

क्या तत्त्वज्ञ करेंगे तेरी गणना बतला री माया?।
दृढ़-मन-वालों का कर सकती क्या तू जतला री माया?॥ १॥
कोटि-कोटि सेनाएँ लेकर चाहे तू आ री माया!।
चित्त-शुद्धि की अग्नि-सामने टिक न सकेगी री माया!॥ २॥
अहित सोचती है मेरा, यह विदित मुझे है री माया!।
उलट विनाश करूँगा तेरा, निश्चय जान अरी माया!॥ ३॥
मरनेवालों को सागर की गहराई क्या री माया?।
जो तन मिथ्या जानें उनके लिए न भयकारी माया॥ ४॥
टिक पायेगी द्वन्द्व-नाश के बाद न हत्यारी माया।
सम्मुख लख अद्वैत, न भागे बिना खैर तेरी, माया!॥ ५॥
'तव प्रदत्त सुख' क्या मुझको भरमा सकता है री माया?।
श्वान-प्रदत्त-प्रशासन कैसे सिंह मान ले री माया?॥ ६॥

जो दृढ़ हैं? री माया (कह)! १ तू चाहे कितनी ही करोड़ सेना ला! री माया! तू क्या चित्त-शुद्धि रूपी अग्नि के सामने टिक सकेगी? री माया! २ तू मुझे बिगाड़ने की बात सोचती है। री बुरी माया! मैं तेरी हानि कर दूँगा। यह निश्चय जान! री माया! ३ मरते को समुद्र की गहराई क्या! जो धीर यह जानते हैं कि यह देह मिथ्या है, उनका तू क्या कर सकेगी? बोल री माया! ४ द्वंद्व के नाश के बाद तू रहेगी कहाँ। क्षुद्र माया! जो संशय दूर करके एकत्व (अद्वैतभाव) को समझ गये, क्या उनके सामने से तू भागे विना एक क्षण भी खड़ी रह सकती है? कह, री माया! ५ री माया! क्या तेरे द्वारा दिये हुए सुख को मैं सही माने मैं समझकर अपनाऊँगा? कुत्ता सुशासन (की व्यवस्था) कर दे, तो भी क्या शेर उसे स्वीकार करेगा? री माया! ६ अपने संकल्प से मैं तुझे ठकरा सकता हूँ। री माया!

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅन्निच्चै कॉण्डुन्नै यॅऱ्ऱिविड वल्लेन् मायैये !— इन्नि
उन्निच्चै कॉण्डॅनक् कॉन्ऱुम् वरादुकाण्— मायैये ! 7
यार्क्कुम् कुडियल्लेन् यानॅन्ब दोर्न् दन्नन् मायैये !— उन्ऱन्
पोर्क्कञ् जुबेन्नो ? पॉडि याक्कुवेन् उन्नै— मायैये ! 8

शङ्गु—87

शॅत्त पिऱहु शिवलोहम् वैकुन्दम्
शेर्न्दिडला मन्ऱे अॅण्णियिरुप्पार्
पित्त मन्निदर्, अवर् शॉलुञ् जात्तिरम्
पेयुरै यामॅन्ऱिङ् गूदेडा शङ्गम् ! 1

इत्तरै मीदिन्नि लेयिन्द नाळिन्निल्
इप्पॉळु देमुक्ति शेर्न्दिड नाटिच्
चुत्त अऱिवु निलैयिऱ् कळिप्पवर्
तूयव रामॅन्ऱिङ् गूदेडा शङ्गम् ! 2

पॉय्युरु मायैयैप् पॉय्यॅनक् कॉण्डु
पुलन्कळै वॅट्टिप् पुऱत्तिल् अॅऱिन्दे
ऐयुऱ लिन्ऱिक् कळित्तिरुप् पारवर्
आरिय रामॅन्ऱिङ् गूदेडा शङ्गम् ! 3

मैयुरु वाळ्विळि यारैयुम् पॉन्नैयुम्
मण्णॅनक् कॉण्डु मयक्कर् ऱिरुन्दारे
चॅय्युरु कारियम् तामन्ऱिच् शॅय्वार्
चित्तर्क ळामॅन्ऱिङ् गूदेडा शङ्गम् ! 4

अब तेरी इच्छा से मेरा कुछ लाभ नहीं होगा। जान ले, री माया ! ७ मैं समझ गया कि मैं किसी की (शासित) प्रजा नहीं हूँ। तो क्या मैं तेरे साथ युद्ध करने से डरूँगा ? मैं तेरे बुकनी बना लूँगा। इसे जान ले ! माया ! ८

शंख—८७

वे लोग पागल हैं, जो समझते हैं कि मरने के बाद शिवलोक मिलता है या वैकुण्ठ प्राप्त होता है। उनका कहा शास्त्र, भूत-बचन है —यह घोषणा करते हुए शंख बजा रे ! १ इसी धरती में, आज, अभी मुक्ति पाने की साधना में, शुद्ध चित् स्थिति में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दृढ़-संकल्पी मैं तुझको ठुकरा सकता हूँ री माया !।
तुझसे मेरा लाभ न सम्भव, निश्चय जान अरी माया !॥ ७ ॥
मैं न किसी की प्रजा-प्रशासित, जतन कोटि कर री माया !।
निर्भय, क्षण में चूर्ण करूँगा अरी गयी-गुज़री माया !॥ ८ ॥

शंख—८७

मरने पर शिवलोक मिलेगा या वैकुंठ मिले मरकर।
जो भी ऐसा समझ रहे हैं, जानो उनको पागल नर॥
उनकी बातें भूत-वचन हैं, कर ऐसी घोषणा सदा।
करके प्रबल घोषणा ऐसी उग्र नाद से शंख बजा॥ १ ॥

मुक्ति-प्राप्ति के सच्चे साधक वर्तमान इस धरती पर।
परम शुद्ध चेतन स्थिति में हैं रमनेवाले पावन नर॥
(उनके वंदन के, अभिनंदन के तू सारे साज सजा)।
कर दे प्रबल घोषणा जग में, उग्र नाद से शंख बजा॥ २ ॥

माया का मिथ्यात्व जानकर उसे असत्य आँकते हैं।
और इंद्रियों के विषयों को विष के सरिस त्यागते हैं॥
आत्मानन्द-लीन रहकर जो हैं संकल्प-विकल्प-विहीन।
ऐसे ही नर जगती-तल में कहलाते हैं आर्य-धुरीण॥
(उन आर्यों की यशगाथा के गानों से तू गगन गुँजा)।
कर दे प्रबल घोषणा जग में, उग्र नाद से शंख बजा॥ ३ ॥

कज्जल-कलित नयन-वाली हों, अथवा होवें स्वर्ण-ललित।
मिट्टी के सम सभी समझकर रहते अविरत मोह-रहित॥
जग के सभी कृत्य जो करते तामस अहंकार तजकर।
इस जगती-तल में ऐसे ही सिद्ध कहे जाते शुभ नर॥
(जन-जन के कानों में भर दे इन सिद्धों की कीर्ति-कथा)।
कर दे प्रबल घोषणा जग में, उग्र नाद से शंख बजा॥ ४ ॥

रमनेवाले पवित्र लोग हैं —यह घोषणा करते हुए शंख बजा रे ! २ माया मिथ्या है। उसे असत्य जानकर इन्द्रियों को काटकर दूर फेंककर जो बिना किसी संकल्प-विकल्प के आत्मानन्द में लीन रहते हैं, वे ही आर्य हैं। यह घोषणा करते हुए, शंख बजा रे ! ३ काजल-युक्त आँखों वालियों तथा स्वर्ण को मिट्टी मानकर जो मोह-विरत हैं, जो अहंकार त्यागकर अपने काम करते हैं, वे सिद्ध हैं। ऐसी घोषणा करते हुए शंख बजा रे ! ४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऱिवे दॆय्वम्—88

(कण्णिहळ्)

आयिरन् दॆय्वङ्गळ् उण्डॆन्ऱु तेडि, अलैयुम् अऱिविलिहाळ्— पल्
लायिरम् वेदम् अऱिवॊन्ऱे दॆय्वमुण् डामॆन्ऱल् केळीरो ? 1
माडनैक् काडनै वेडनैप् पोऱ्ऱि, मयङ्गुम् मदियिलिहाळ्— ऍद
नूडुम्निन् ऱोङ्गुम् अऱिवॊन्ऱे दॆय्वमॆन् ऱोदि यऱि यीरो ? 2
शुत्त अऱिवे शिवमॆन्ऱु कूऱुऱ्, जुरुदिहळ् केळीरो ?— पल
पित्त मदङ्गळि लेतडु मारिप् पॆरुमै यऴि वीरो ? 3
वेडम्पल् कोडियोर् उण्मैक् कुळवॆन्ऱु, वेदम् पुहन्ऱिडुमे— आङ्गोर्
वेडत्तै नीरुण्मै यॆन्ऱु कॊळ् वीरॆन्ऱऱळ्, वेदमऱि यादे ? 4
नामम् पल् कोडियोर् उण्मैक्कुळवॆन्ऱु, नान्मऱै कूऱिडुमे– आङ्गोर्
नामत्तै नीरुण्मै यॆन्ऱु कॊळ्वीरॆन्ऱऱ्व्, नान्मऱै कण्डिलदे ! 5
पोन्द निलैहळ् पलवुम् पराशक्ति, पूणुम् निळैयामे— उप
शान्त निलैये वेदान्त निलैयॆन्ऱु, शान्ऱवर् कण्डऩरे 6
कवलै तुऱन्दिङ्गु वाऴ्वदु वीडॆन्ऱु, काट्टुम् मऱैहळॆल्लाम्– नीविर्
अवलै निऩैन्दुमि मॆल्लुदल् पोलिङ्गु, अवङ्गळ् पुरिवीरो ? 7
उळ्ळ दऩैत्तिलु मुळ्ळॊळियाहि, ऒळिर्न्दिडम् आन्मावे— इङ्गु
कॊळ्ळऱ् करिय पिरममॆन् ऱेमऱै, कूवुदल् केळीरो ? 8
मॆळ्ळप् पल तॆय्वम् कूट्टि वळर्त्तु, वॆऱुङ् गदैहळ् शेर्त्तुप्— पल
कळ्ळ मदङ्गळ् परप्पुदऱ् कोर् मऱै, काट्टबुम् वल्लीरो ? 9
ऒन्ऱु पिरम मुळदुण्मै यःदुन् उणर्वॆनुम् वेद मॆलाम्— ऍन्ऱुम्
ऒन्ऱु पिरम मुळदुण्मै यःदुन्, उणर्वॆनक् कॊळ्बाये ! 10

बोध ही ईश्वर है !—८८

देव हजार हैं —यह मानकर खोजते फिरनेवाले मूर्खो ! कई सहस्र वेद कहते हैं कि 'बोध' एक ही ईश्वर है। क्या तुम वह बात नहीं सुनोगे ? १ माढ, काढ, वेद आदि की आराधना में भ्रान्त मतिहीनो ! सबमें व्याप्त 'बोध' ही ईश्वर है —क्या यह कथन नहीं जानोगे ? २ क्या उन श्रुति-कथनों को नहीं जानते, जो शुद्ध 'बोध' को ही शिव बताते हैं ? क्या तुम विविध भ्रान्त मतों में लड़खड़ाकर, मान खोकर मिटोगे ? ३ वेद घोषणा करते हैं कि सत्य के अनेक करोड़ रूप होते हैं। पर वेद यह नहीं जानते कि तुम उनमें एक (ही) रूप को सत्य मान चुके हो। ४ चतुर्वेद

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बोध ही ईश्वर है—८८

कोटि-कोटि देवों की सत्ता जो मानता मूर्ख नर है।
वेद सहस्र वचन कहते हैं एक बोध ही ईश्वर है॥ १ ॥

माढ़, काढ़, वेढ़ादि प्रेत क्या भूत-पिशाचों का पूजन।
सबमें व्याप्त बोध-ईश्वर को भूल, भटकते मूरख जन॥ २ ॥

शुद्ध बोध को ही शिव कहते, वे श्रुति-वाक्य नहीं जाने।
मान-हीन होकर मिटते हो, भ्रान्त मतों को हो माने॥ ३ ॥

वेद घोषणा करते— "होते एक सत्य के रूप अनेक"।
एक किसी को सत्य मानकर अन्धी भक्ति महा अविवेक॥ ४ ॥

चारों वेदों की वाणी है, "एक सत्य के नाम अनेक"।
किसी एक को सत्य मानना, अन्धी भक्ति महा अविवेक॥ ५ ॥

ये समस्त गतियाँ औ' स्थितियाँ पराशक्ति की ही जानो।
'शान्त स्थिति ही ब्राह्मी स्थिति है" —कहा साधुओं ने, मानो॥ ६ ॥

चिंता-रहित बिताना जीवन, यही मुक्ति, यह श्रुति-दर्शन।
'चिउड़ा' की उपलब्धि हेतु मत 'भूसी' व्यर्थ करो अर्जन॥ ७ ॥

आत्मा का प्रकाश शोभित है सब सत्ताओं के भीतर।
वेद उसी को घोषित करते अगम 'ब्रह्म' अज अविनश्वर॥ ८ ॥

विविध देवगण, विविध कथाएँ, विविध मृषा-मत, फैलायें।
हैं ये सब मतवाद अवैदिक (कैसे इनको अपनायें)॥ ९ ॥

वेद कह रहे एक 'ब्रह्म' है, जो है तव चेतनता-रूप।
शाश्वत सत्य ब्रह्म, चेतन सब एक रूप सिद्धांत अनूप॥ १० ॥

कहते हैं कि सत्य के अनेक करोड़ नाम होते हैं। पर वे यह नहीं जानते कि तुम उनमें एक को सत्य मान बैठे हो। ५ ये सब जो गति-स्थितियाँ हैं, पराशक्ति की ही हैं। साधुओं ने यह पहचान लिया कि 'उपशांत' स्थिति ही वेदान्त (ब्राह्मी) स्थिति है। ६ 'यहाँ चिन्ता का त्याग करके इहजीवन बिताना ही मुक्ति है' —यह सभी वेदों का दर्शन है। 'चिउड़े का ख्याल करके भूसी चबाने' का-सा यह निरर्थक काम करते रहोगे? ७ आत्मा ही सभी हस्तियों के अन्दर का प्रकाश बनकर शोभा देता है। 'वही अलभ्य ब्रह्म है' —यह वेद घोषित करते हैं; क्या उसे तुम नहीं सुनोगे? ८ धीरे-धीरे अनेक देवताओं को इकट्ठा करके अनेक पोली कहानियाँ भी रची जायें और अनेक चोर-मत फैलाए जायँ —इसका दिग्दर्शन करनेवाले किसी वेद को दिखा सकते हो क्या? ९ सारे वेद यही कहते हैं कि ब्रह्म एक (ही) है और वह तुम्हारी चेतना ही है। हाँ, ब्रह्म शाश्वत रहनेवाला है। वह सत्य है। तुम्हारी चेतना ही है। यह सिद्धान्त अपना लो। १०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

परशिव वॆळ्ळम्—89

उळ्ळुम् पुऱमुमाय् उळ्ळ तॆलान् दाऩाहुम्
वॆळ्ळ मॊऩ्ऱुण्डा मदऩैत् तॆय्वमॆऩ्बार् वेदियरे 1
काणुवऩ नॆञ्जिऱ् करुदुवऩ उट्करुत्तैप्
पेणुवऩ याबुम् पिऱप्पदऩ्द वॆळ्ळत्ते 2
ऍल्लै पिऱि वऱ्ऱुवाय् यादॆऩुमोर् पऱ्ऱिलदाय्
इल्लै युळदॆऩ्ऱऱिञर् ऍऩ्ऱुम् मयलॆय्दुवदाय् 3
वॆट्ट वॆळिया यऱिवाय् वेऱु पल शक्तिहळैक्
कॊट्टु मुहिला यणुक्कळ् कूट्टिप् पिरिप्पदुवाय् 4
तूल वणुक्क ळाय्च् चूक्कुमसाय्च् चूक्कुमत्तिऱ्
चालवुमे नुण्णिय दाय्त् तऩ्मैयॆलान् दाऩाहि 5
तऩ्मै यॊऩ् ऱिलाददुवाय्त् ताऩे ऒरु पॊरुळाय्त्
तऩ्मै पल वुडैत्ताय्त् ताऩ् पलवाय् निऱ्पदुवे 6
ऍङ्गुमुळान् याबुम् वलान् यावु मऱि वाऩॆऩवे
तङ्गु पल मदत्तोर् शाऱ्ऱु वदुम् इङ्गिदैये 7
वेण्डुवोर् वेट्कैयाय् वेट्पाराय् वेट्पारुक्
कीण्डु पॊरु ळायदऩै यीट्टुवदाय् निऱ्कुमिदे 8
काण्बार् तङ् गाट्चियाय्क् काण् बाराय्क् काण् पॊरुळाय्
माण्बार्न् दिरुक्कुम् वहुत् तुरॆक्क वॊण्णादे 9
ऍल्लान् दाऩाहि यिरुन्दिडिऩुम् इःदऱिय
वल्लार् शिलरॆऩ्बर् वाय्मै यॆल्लाङ् गण्डवरे 10
मऱ्ऱि दऩैक् कण्डार् मलमऱ्ऱार् तुऩ्ब मऱ्ऱार्
पऱ्ऱि दऩैक् कॊण्डार् पयऩऩैत्तुङ् गण्डारे 11

परशिव प्रलय (अखण्ड प्रकाश-मंडल)—८९

एक अखंड प्रकाश-प्रवाह है, जो बाहर और भीतर है और जो यहाँ का सारा अस्तित्व है। उसे ही वेदज्ञ ईश्वर कहते हैं। १ देखी हुई, सोची हुई, अंतःकरण को पालनेवाली सभी बातें उसी प्रवाह की उपज हैं। २ जिसकी सीमा नहीं, जिसके खण्ड नहीं, जो किसी से संलग्न नहीं, और जिसके बारे में, विद्वान लोग भी भ्रमित हैं कि वह है या नहीं है— ३ जो शून्य आकाश है, जो अनेक अन्य शक्तियों को बरसानेवाला मेघ है और जो अणुओं का घटन-विघटन करता है— ४ जो स्थूल अणु है, जो सूक्ष्म से सूक्ष्म, अति सूक्ष्म हैं, जो स्वयं सभी प्रकार हैं— ५ और (फिर भी) जो अपना विशिष्ट प्रकार कुछ नहीं रखता, जो अद्वैत रहते हुए भी अनेक प्रकार का है, वही अनेक बनकर प्रकट होता है। ६ विविध मतावलंबी कहते हैं कि वह सर्वव्यापी है, सर्वक्षम है तथा सर्वज्ञ है —वह यही है। ७ यही कामियों की कामना है। कामी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

परशिव प्रलय (अखण्ड प्रकाश-मण्डल)—८९

बाहर-भीतर भरा हुआ है एक अखंड प्रकाश-प्रवाह।
'ईश्वर' उसे वेद-विद कहते, वह समग्र अस्तित्व अथाह ॥ १ ॥

अन्तःकरण पालनेवाली देखी-सोची वार्ताएँ।
"उस प्रवाह की सभी उपज हैं" (ऐसा समझें-समझाएँ) ॥ २ ॥

जिसकी सीमा नहीं, और है जिसके कोई खण्ड नहीं।
और न जो संलग्न किसी से नाम नहीं, उपनाम नहीं ॥
भ्रमित हो रहे जिसके बारे में हैं बड़े-बड़े विद्वान।
उसकी सत्ता है कि नहीं है, इसका निश्चित उन्हें न भान ॥ ३ ॥
विविध शक्तियों को बरसानेवाला है वह सुन्दर घन।
विघटन-घटन कर रहा, अणुओं का वह विस्तृत शून्य गगन ॥ ४ ॥

है वह अतिशय सूक्ष्म सूक्ष्मतम और स्थूल से स्थूल वही।
है वह विविध प्रकारों वाला स्वयं, (जगत का मूल वही) ॥ ५ ॥

किसी समय वह अपना कुछ भी रखता नहीं विशिष्ट प्रकार।
वह अद्वैत बना रहता है फिर भी है विभिन्न आकार ॥
वह होता है प्रकट विश्व में अगणित विविध रूप धरकर।
(एकरूप हो करके भी वह सर्वरूप है परमेश्वर!) ॥ ६ ॥

उसे विविध मतवाले कहते, वह प्रभु सर्वव्यापक है।
वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमय है, सर्व-विश्व-संस्थापक है ॥ ७ ॥

वही कामना, वह ही कामी, काम्य वस्तु भी वही बना।
काम्य वस्तु का अर्जन वह ही (परमेश्वर गंभीर-मना) ॥ ८ ॥

द्रष्टा वही, दृश्य है वह ही, दृश्य वस्तु भी वही बना।
महानता से मंडित ऐसा अकथ ब्रह्म है विश्व-मना ॥ ९ ॥

सर्वरूप है आत्मा फिर भी कहते यही सर्व-सत्यज्ञ।
इस रहस्य को जान सकें जो ऐसे विरले जन ही विज्ञ ॥ १० ॥

इस सु-तत्त्व का ज्ञान जिन्हें है, करते जो यह तत्त्व ग्रहण।
उन्हें प्राप्त पुरुषार्थ सभी हैं, दुख-विहीन वे निर्मल-मन ॥ ११ ॥

भी तथा कामना से प्राप्य वस्तु भी। और उसका अर्जन भी वही। ८ द्रष्टा का दृश्य वह, दर्शक वह, दृष्ट वस्तु भी वह है। ऐसी महानता से युक्त वह परशिव-प्रवाह (ब्रह्म) है। उसका विश्लेषण करके बताना कठिन है। ९ स्वयं (अपनी आत्मा) ही सब कुछ है। तो भी सर्वसत्यज्ञों का कहना है कि इसे जान सकनेवाला बिरला ही है। १० जो यह तत्त्व देख सके हैं, वे निर्मल होते हैं और दुखहीन होते हैं। और जो इसको ग्रहण कर लेते हैं, उन्हें सभी पुरुषार्थ प्राप्त हो जाते हैं। ११ इस तत्त्व को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इप्पॊरुळैक् कण्डार् इडरुक्कोर् ऍल्लै कण्डार्
ऍप्पॊरुळुन् दाम् पॆऱ्ऱिङ् गिऩ्ब निलै यॆय्दुवरे 12
वेण्डुव बॆलाम् पॆऱुवार् वेण्डा रॆदऩैयुमर्
ऱीण्डु पुवि योरवरै यीशरॆऩप् पोऱ्ऱुवरे 13
ऑऩ्ऱुमे वेण्डा दुलहऩैत्तुम् आळुवर् काण्
ऍऩ्ऱुमे यिप्पॊरुळो डेहान्दत् तुळ्ळवरे 14
वॆळ्ळमडा तम्बि विरुम्बियपो दॆय्दि निऩ
दुळ्ळ मिशैत् तानमुद वूऱ्ऱाय्प् पॊऴि युमडा ! 15
याण्डु मिन्द इऩ्ब वॆळ्ळम् ऍऩ्ऱु निऩ्ऩुळ् वीऴ्वदऱ्के
वेण्डु मुपायम् मिह वॆऴि दाहुमडा ! 16
ऍण्ण मिट्टाले पोदुम् ऍण्णुवदे इव्विऩ्बत्
तण्णमुदै युळ्ळे तदुम्बप् पुरियुमडा ! 17
ऍङ्गुम् निऱैन्दिरुन्द ईशवॆळ्ळ मॆऩ्ऩहत्ते
पॊङ्गुहिऩ्ऱ दॆऩ्ऱॆण्णिप् पोऱ्ऱि निऩ्ऱाऱ् पोदुमडा ! 18
यादुमाम् ईशवॆळ्ळम् ऍऩ्ऩुळ् निरम्बिय दॆऩ्
ऱोदुवदे पोदुमदे उळ्ळुवदे पोदुमडा ! 19
कावित् तुणि वेण्डा कऱ्ऱैच् चडै वेण्डा
पावित्तल् पोदुम् परमनिलै यॆय्दुदऱ्के 20
शात्तिरङ्गळ् वेण्डा चदुर् मऱैहळेदुमिल्लै
तोत्तिरङ्ग ळिल्लै युळऩ् दॊट्टु निऩ्ऱाऱ् पोदुमडा ! 21
तवमॊऩ्ऱु मिल्लै यॊरु सादऩैयु मिल्लैयडा !
शिवमॊऩ्ऱे युळ्ळदॆऩच् चिन्दै शॆय्दाऱ् पोदुमडा ! 22
शन्वदमु मॆङ्गुमॆल्लान् दाऩाहि निऩ्ऱ शिवम्
वन्दॆऩुळे पायुदॆऩ्ऱु वाय् शॊऩ्ऩाऱ् पोदुमडा 23

जिसने जान लिया, उसने कष्ट का अन्त जान लिया। उसे सभी हित प्राप्त हो जायंगे तथा वह सुख-स्थिति को प्राप्त हो जाएगा। १२ जो किसी की भी चाह नहीं रखते, वे, जो भी चाहिए, सब प्राप्त कर लेंगे। लोकवासी उन्हें ईश्वर मानकर आदर करेंगे। १३ जो कुछ भी कामना नहीं करते, वे सारे संसार के शासक बन जाते हैं। वे हमेशा इस परमतत्त्व के साथ एकान्त में रहनेवाले होते हैं। १४ रे ! वह प्रवाह है ! छोटे भैया ! सुनो ! जब चाहे तब वह तुम्हारे मन में अमृतवारि बरसायेगा। १५ हमेशा यह सुख-प्रवाह तुम्हारे मन में बहता रहे, इसका उपाय सुगम ही है, रे ! १६ स्मरण केवल कर लो, पर्याप्त है। स्मरण मात्र ही इस शीतल, सुखद अमृत को तुम्हारे मन में भर देगा। १७ 'सर्वव्यापी ईश्वर-प्रवाह ही मेरे चित्त में भी उमड़ता रहता है।' —केवल यह विचार करो (सँजोये रखो), तो पर्याप्त है। १८ 'ईश्वर-प्रवाह ही सब कुछ है। वह मेरे मन में प्रवाहित है।' ऐसा अनुसंधान पर्याप्त है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जान लिया यह तत्त्व जिन्होंने उनके कष्ट नशाते हैं।
सभी भाँति हित होता उनका सुख-सम्पति सब पाते हैं॥ १२॥

किसी वस्तु की चाह न जिनको सब कुछ पाते हैं वे नर।
ईश्वर मान सभी जग के जन करते हैं उनका आदर॥ १३॥

अपने मन में नहीं कामना कुछ भी जो उपजाते हैं।
निश्चय-पूर्वक सारे जग के वे शासक बन जाते हैं॥
करते रहते सदा हृदय में वे इस परम तत्त्व का ध्यान।
वे एकान्त स्थान में रहते (करते प्रतिपल ज्ञान-विधान)॥ १४॥

वह प्रवाह है, सुन लो भाई ! (अमित मोद उपजायेगा)।
सदा-समर्थ, तुम्हारे मन में मधुर सुधा बरसायेगा॥ १५॥

सुख-प्रवाह यह सखे ! सर्वदा बहता रहे तुम्हारे मन।
इसका सुगम उपाय यही है (इसका यही सुगम साधन)॥ १६॥

स्मरण मात्र ही शीतल सुखप्रद सुधा हृदय में भर देगा।
स्मरण मात्र पर्याप्त तुम्हें है, वही कार्य सब कर देगा॥ १७॥

"सर्वव्यापी प्रभु-प्रवाह मम हृदय उमड़ता रहता है"।
—यह विचार पर्याप्त तुम्हें है (यही शास्त्र भी कहता है)॥ १८॥

"है सब कुछ ईश्वर-प्रवाह ही भरा हुआ वह मेरे मन"।
—है पर्याप्त खोज ऐसी ही, है केवल पर्याप्त स्मरण॥ १९॥

जटाजूट की नहीं ज़रूरत, क्या होंगे काषाय वसन।
बस केवल भावना परम-पद को पाने की है साधन॥ २०॥

शास्त्र-पाठ का, वेद-पाठ का, स्तोत्र-पाठ का काम नहीं।
है पर्याप्त चित्त की स्थिरता, उस बिन मिलता 'राम' नहीं॥ २१॥

वह न तपस्या से मिलता है, व्यर्थ साधना के साधन।
केवल 'शिव की मधुर भावना', है पर्याप्त यही चिन्तन॥ २२॥

सर्वव्यापक संतत शिव है मन में सतत प्रवाहित है।
अरे ! यही पर्याप्त तुम्हें है, यही विचार परम हित है॥ २३॥

उसका स्मरण पर्याप्त है। १९ काषाय-वस्त्र नहीं चाहिए। परम स्थिति प्राप्त करने के लिए जटा-जूट की आवश्यकता नहीं होती, केवल भावना पर्याप्त है। २० शास्त्राध्ययन की आवश्यकता नहीं होती। चतुर्वेद कुछ नहीं हैं। स्तोत्रों का कुछ काम नहीं है। केवल चित्त-स्पर्श पर्याप्त है। २१ अरे ! तपस्या (की आवश्यकता) नहीं, साधना (की आवश्यकता) नहीं। 'केवल शिव ही हैं' —यह भावना तथा चिन्तन ही पर्याप्त है। २२ जो सर्वत्र तथा सतत स्वयं है, वह 'शिव' है। यह कहते जाओ कि वह मेरे मन के अन्दर प्रवाहित हो रहा है। अरे ! वही पर्याप्त है। २३ अरे !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : JKS

नित्तशिव वॆळ्ळ मॆन्नुळ् वीऴ्न्दु निरम् बुदॆन्ऱुन्
शित्त मिशैक् कॊळ्ळुञ् जिरत्तै यॊन्ऱे पोदुमडा ! 24

पॊय्यो ? मॆय्यो ?—90

(उलहत्तै नोक्कि वित्तुदल्)

निऱ्पदुवे, नडप्पदुवे पऱप्पदुवे नीङ्ग ळॆल्लाम्
शॊऱ्पत्तन् दानो ?— पल तोऱ्ऱ मयक्कङ्गळो ?
कऱ्पदुवे, केट्पदुवे, करुदुवदे नीङ्गळॆल्लाम्
अऱ्प मायैहळो ? उम्मुळ् आऴ्न्द पॊरुळिल्लयो ? 1

वानहमे, इळवॆयिले, मरच्चॆऱिवे नीङ्ग ळॆल्लाम्
कानलिन् नीरो ?— वॆऱुङ् गाट्चिप् पिऴैतानो ?
पोनदॆल्लाम् कनवित्तैप् पोऱ् पुदैन्दऴिन्दे पोनदनाल्
नानुमोर् कनवो ?— इन्द ञालमुम् पॊय्तानो ? 2

कालमॆन्ऱे ऒरु नित्तैवुम् काट्चि यॆन्ऱे पल नित्तैवुम्
कोलमुम् पॊय्हळो ? अङ्गुक् कुणमुम् पॊय्हळो ?
शोलैयिले मरङ्गळॆल्लाम् तोन्ऱुवदोऱ् विदैयिलॆन्ऱाल्
शोलै पॊय्यामो ?— इदैच् चॊल्लीडु शेऱ्पारो ? 3

काण्बवॆल्लाम् मऱैयुमॆन्ऱाल् मऱैन्ददॆल्लाम् काण् बमन्ऱो ?
वीण् बडु पॊय्यिले— नित्तम् विदि तॊडर्न्दिडुमो ?
काण्बदुवे उऱुदि कण्डोम् काण्बवॆल्लाम् उऱुदियिल्लै
काण्बदु शक्तियाम्— इन्दक् काट्चि नित्तियमाम् 4

केवल वह श्रद्धा काफ़ी है, जिसमें यह विश्वास रहता है कि नित्य-शिव-प्रवाह मुझमें गिरकर भर रहा है। २४

झूठ है कि सच ?—९०

(संसार से प्रश्न)

हे स्थित रहनेवाले ! चलनेवाले, उड़नेवाले, क्या तुम सभी स्वप्न (मिथ्या) हो ? दृष्टिभ्रम हो ? हे सीखे जानेवाले, श्राव्य वस्तुओ, विचार के फलो ! क्या तुम सभी क्षुद्र माया हो ? क्या तुममें कोई गहरा सार नहीं है ? १ हे आकाश ! हे बाल-आतप ! हे तरु-समूह, क्या तुम सभी मृगजल ही हो ? क्या यह केवल मिथ्या दृश्य है ? जो बीत चुका है, वह सब स्वप्न के समान दफ़न होकर मिट गया है; अतः क्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दृढ़-विश्वास-भरी हो ऐसी है केवल श्रद्धा पर्याप्त।
सतत प्रवाहित नित्य, निरामय, शिव-प्रवाह है मुझमें व्याप्त ॥ २४ ॥

झूठ है कि सच (संसार से प्रश्न)—९०

हे स्थित रहनेवाले ! चलनेवाले ! हे उड़नेवाले !।
क्या तुम सब हो (स्वप्न) दृष्टि-भ्रम (भली भाँति देखे-भाले) ? ॥
जो कुछ सदा सुने जा सकते, जो हैं सीखे जा सकते।
क्या वे सब पदार्थ मिथ्या हैं, जो कि विचारे जा सकते ? ॥
क्षुद्र प्रपंच सकल माया का, कोई गहरा सार नहीं ?।
(क्या इसको मैं मिथ्या समझूँ ? कभी सत्य संसार नहीं ?) ॥ १ ॥

हे आकाश ! बाल-आतप हे ! हे तरुओं के पुंज प्रबल।
क्या तुम सब असत्य मिथ्या हो, क्या तुम सब केवल मृगजल ॥
सब कुछ बीता हुआ स्वप्न-सा मिटा भूमि में हुआ दफ़न।
क्या मैं भी, बस, एक स्वप्न हूँ; जग भी है मिथ्या (दर्शन) ॥ २ ॥

अरे ! काल का एक भाव यह और दृश्य के रूप अपार।
दृश्यजाल ये क्या मिथ्या हैं, मिथ्या है सब गुण-विस्तार ॥
एक बीज से ही उग आते उपवन के सारे तरुवर।
क्या फिर उपवन भी झूठा है ? (मुझे बताओ ज्ञान-प्रवर !) ॥
क्या इसको भी सत्य कथन में किया सम्मिलित जा सकता।
यह भी कोई बात अनोखी कौन मुझे समझा सकता ? ॥ ३ ॥

सभी व्यक्त अव्यक्त बनेंगे, तो भी दृश्य अदृश्य सभी।
होती नहीं अरे ! मिथ्या में विधि-विधान की क्रिया कभी ॥
जो कि दृश्य है वही सत्य है, जो अदृश्य वह सत्य नहीं।
दृक् काली है, दृश्य नित्य है, औ' 'असत्य' है सत्य नहीं ॥ ४ ॥

मैं भी एक स्वप्न हूँ ? क्या यह संसार भी झूठ है ? २ काल का एक भाव, दृश्य के अनेक रूप, ये विविध दृश्य-जाल —सभी झूठे हैं क्या ? क्या वहाँ 'गुण' भी मिथ्या है ? बगीचे के सभी तरु एक बीज से उग आते हैं, तो क्या बगीचा झूठा है ? इसको भी 'सूक्ति' में शामिल किया जा सकता है क्या ? (यह भी कोई बात है ?) ३ दृष्ट (पदार्थ) सब अदृश्य हो जायेंगे, तो अव्यक्त भी व्यक्त होंगे न ? व्यर्थ और मिथ्या में विधि-विधान भी जारी रह सकता है क्या ? जो दृश्य है, वह सत्य है। जो अदृश्य है वह सत्य नहीं है। दृक काली है। यह दृश्य नित्य है। ४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नान्—91

(इरट्टैक् कुऱळ् वॆण् शॆन्दुऱै)

वानिल् पऱक्किन्ऱ पुळ्ळॆल्लाम् नान्
मण्णिल् तिरियुम् विलङ्गॆल्लाम् नान्
कानिल् वळरुम् मरमॆलाम् नान्
काऱ्ऱुम् पुनलुम् कडलुमे नान् 1
विण्णिल् तॆरिहिन्ऱ मीनॆलाम् नान्
वॆट्ट वॆळियिन् विरिवॆलाम् नान्
मण्णिल् किडक्कुम् पुऴुवॆल्लाम् नान्
वारियिनुळ्ळे उयिरॆल्लाम् नान् 2
कम्बनिशैत्त कवि यॆल्लाम् नान्
कारुहर् तीट्टुम् उरुवॆल्लाम् नान्
इम्बर् वियक्किन्ऱ माडकूडम्
अॆऴिल् नहर् कोपुरम् यावुमे नान् 3
इन्निशै माद रिशैयुळे नान्
इन्बत् तिरळ्हळ् अनैत्तुमे नान्
पुन्निलै मान्दर्तम् पॊय्यॆलाम् नान्
पॊऱैयरुन् दुन्बप् पुणर्प्पॆलाम् नान् 4
मन्दिरङ् गोडि इयक्कुवोन् नान्
इयङ्गु पॊरुळिन् इयल्बॆलाम् नान्;
तन्दिरङ् गोडि शमैत्तुळोन् नान्
शात्तिर वेदङ्गळ् शाऱ्ऱिनोन् नान् 5
अण्डङ्गळ् यावैयुम् आक्किनोन् नान्
अवै पिऴैयामे शुळऱ्ऱु वोन् नान्;
कण्ड पल् शक्तिक् कणमॆलाम् नान्
कारण माहिक् कदित्तुळोन् नान् 6
नानॆनुम् पॊय्यै नडत्तुवोन् नान्
आनच् चुडर् वानिल् शॆल्लुवोन् नान्
आन पॊरुळ्हळ् अनैत्तिलुम् ऒन्ऱाय्
अऱिवाय् विळङ्गु मुदऱ् जोतिये नान् 7

मैं (अहम्)—९१

आकाश में उड़नेवाले सारे पक्षी 'मैं' ही हूँ। धरती पर फिरनेवाले सभी मृग 'मैं' ही हूँ। जंगल में बढ़नेवाले सभी तरु 'मैं' ही हूँ। पवन, जल, समुद्र भी 'मैं'

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मैं (अहम्)—९१

मैं ही नभमंडल में उड़नेवाला विहगों का हूँ यूथ।
मैं धरती पर फिरनेवाला ही हूँ यह पशुवंश-वरूथ॥
मैं ही वन में बढ़नेवाला (कोमल सुन्दर) तरुवर हूँ।
मैं ही पवन, सलिल हूँ मैं ही, मैं ही विस्तृत सागर हूँ॥ १ ॥
मैं नभ का नक्षत्र-पुंज हूँ, शून्य गगन का मैं विस्तार।
मैं मिट्टी का कीट-पुंज हूँ, मैं ही जलचर जीव अपार॥ २ ॥
कंब-रचित मैं मंजु काव्य हूँ, चतुर चितेरों का मैं चित्र।
अद्भुत दिव्य भवन हूँ मैं ही, मैं गोपुर, मैं नगर विचित्र॥ ३ ॥
मधुर गीत गाती वधुओं के गानों में मैं बसा हुआ।
सुख-संघात सभी के भीतर मैं ही तो हूँ लसा हुआ॥
नीचों के मिथ्या-वचनों में (मैं ही बसता हूँ हर काल)।
मैं ही तो (इस जगतीतल में) हूँ असह्य दुःखों का जाल॥ ४ ॥
कोटि-कोटि मंत्रों में भरता शक्ति (बढ़ाता प्रबल प्रभाव)।
सारी स्पन्द-शील वस्तुओं का मैं ही हूँ पूर्ण स्वभाव॥
विरचे तंत्र करोड़ों मैंने (ज्ञान सभी को देता हूँ)।
वेद-शास्त्र (उपनिषद्) आदि का मैं ही आदि प्रणेता हूँ॥ ५ ॥
कोटि-कोटि ब्रह्माण्डों का मैं रचनेवाला, कर्ता हूँ।
उन्हें अचूक घुमानेवाला (पालक हूँ, संहर्ता) हूँ॥
सभी शक्तियों के गण को मैं करता बल से धारण हूँ।
(जगतीतल की) सभी वस्तुओं का मैं (आदिम) कारण हूँ॥ ६ ॥
क्रियाशील मेरे ही कारण अहंकार का मिथ्याभाव।
मैं तेजोमय ज्ञान-गगन में चलता रहता सरल स्वभाव॥
विरचित सभी वस्तुओं में मैं बसा हुआ अद्वैत स्वरूप।
सबमें मति बन रहनेवाली मैं हूँ आदिम ज्योति अनप॥ ७ ॥

ही हूँ। १ आकाश में दिखनेवाले नक्षत्र, शून्य आकाश का विस्तार, मिट्टी के कीड़े, जलचर जीव सभी 'मैं' हूँ। २ कंब-रचित काव्य, चितेरों द्वारा अंकित चित्र, इह-लोक-विस्मयकारी भवन, सुन्दर नगर, गोपुर सभी 'मैं' हूँ। ३ 'मैं' मधुर गीत गाती स्त्रियों के गान में हूँ। 'मैं' सुख-संघात सभी में हूँ! नीच लोगों के झूठ भी 'मैं' हूँ। असह्य दुखों का जाल भी 'मैं' ही हूँ। ४ करोड़ों मंत्रों को शक्ति देता हूँ 'मैं'। स्पंदनशील सभी वस्तुओं का सारा स्वभाव 'मैं' हूँ। 'मैंने' करोड़ों तंत्र रचे हैं। शास्त्र, वेद आदि का प्रणेता भी 'मैं' ही हूँ। ५ सारे (ब्रह्म-) अंडों का कर्ता, उनको अचूक रीति से घुमानेवाला, शक्तियों के गण, सबका कारण सब 'मैं' ही हूँ। ६ 'अहम्' का मिथ्या भाव मेरे ही कारण क्रियमाण है। ज्ञान के तेजोमय आकाश में 'मैं' चलता हूँ। रचित सभी वस्तुओं में अद्वैत रूप से, मति बनकर रहनेवाली आदि ज्योति हूँ 'मैं'! ७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सित्तान्दच् चामि कोयिल्—92

सित्तान्दच् चामि तिरुक्कोयिल् वायिलिल्
दीप बॊळि युण्डाम्— पॆण्णे
मुत्तान्द वीदि मुऴुदैयुम् काट्टिड
मूण्ड तिरुच्चुडराम्;— पॆण्णे ! 1
उळ्ळत् तऴुक्कुम् उडलिऱ् कुऱैहळुम्
ओट्ट वरुञ् जुडराम्;— पॆण्णे
कळ्ळत् तऩङ्गळ् अऩैत्तुम् वॆळिप्पडक्
काट्ट वरुञ् जुडराम्;— पॆण्णे 2
तोऩ्ऱु मुयिर्हळ् अऩैत्तुम्नत् रॆऩ्बदु
तोऱ्ऱ मुऱुञ् जुडराम्;— पॆण्णे
मूऩ्ऱु वहैप्पडुम् कालनत् रॆऩ्बदै
मुऩ्ऩ रिडुञ् जुडराम्; —पॆण्णे 3
पट्टिऩन् दऩ्ऩिलुम् पार्क्क नऩ्ऱॆऩ्बदैप्
पार्क्क वॊळिर् शुडराम्— पॆण्णे
कट्टु मऩैयिलुङ् गोयिलनत् रॆऩ्बदैक्
काण वॊळिर्च् चुडराम्;— पॆण्णे 4

बक्ति—93

राग— बिलहरि

पल्लवि (टेक)

बक्तियिऩाले— दॆय्ब— बक्तियिऩाले

शरणङ्गळ् (चरण)

बक्तियिऩाले— इन्दप्
पारिऩि लॆय्दिडुम् मेऩ्मैहळ् केळडी !
शित्तन् दॆळियुम्— इङ्गु
शॆय्है यऩैत्तिलुम् शॆम्मै पिऱन्दिडुम्

सिद्धान्त-स्वामी का मन्दिर—९२

(रहस्यवाद की झलक)

'ज्योति' ज्ञान की ज्योति है। सिद्धान्त स्वामी के श्री मन्दिर के द्वार में दीप की ज्योति है। रे नारी ! वह मुक्तान्त वीथी को बरसाने के लिए उठी श्रीज्वाला है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सिद्धान्त-स्वामी का मन्दिर—९२

मन्दिर में सिद्धान्त-स्वामि के ज्योति ज्ञान की ज्योतित है।
दिव्य द्वार पर जगमग-जगमग ज्योति दीप की दीपित है॥
री नारी! मुक्तांत वीथियों का कण-कण दरसाने को।
उठी हुई यह श्रीज्वाला है (नवप्रकाश बरसाने को)॥ १॥

मन के मल को, तन की त्रुटियों को हरती है ज्योति विमल।
भेद खोलने सभी चोरियों का प्रकटी यह ज्योति धवल॥ २॥

व्यक्त विश्व में होनेवाले अच्छे हैं सब जीव सरल।
यही तत्त्व दरसाने के हित प्रकट हुई यह ज्योति विमल॥
(भूत, भविष्यत्, वर्तमान ये) त्रिविध काल हैं मंगलमय।
यह बतलानेवाली मंजुल दिव्य ज्योति का हुआ उदय॥ ३॥

ज्योति दिव्य दर्शन में सबको सहायता पहुँचाती है।
ज्योति नगर के सुन्दर शुभमय दृश्यों को दिखलाती है॥
दिव्य ज्योति के उस प्रकाश में कर सकते हम यह दर्शन।
सभी मनुष्यों के भवनों से अच्छा है मंदिर पावन॥ ४॥

भक्ति—९३

(भक्ति अतुल-आनंद-प्रदायक, भक्ति सकल-फल-दायक है।
भुक्ति-मुक्ति दोनों देती है, दुख में सबल सहायक है)॥ टेक॥
विमल भक्ति से होनेवाले लाभ सुनो तुम (हरसाकर)।
(ईश्वर-भक्ति करो हे मनुजो! प्रमुदित मन से सरसाकर)॥

री नारी! १ वह मन के मैल तथा शरीर की कमियों को (अर्थात् कर्मों में होनेवाली त्रुटियों को) दूर करने आयी हुई ज्योति है। री नारी! वह सभी चोरियों को प्रकट करने आयी हुई ज्योति है। २ व्यक्त होनेवाले सभी जीव अच्छे हैं—यह तथ्य दरसाने के लिए प्रकट आयी हुई ज्योति है वह। अरी नारी! त्रिविध काल भी मंगलमय है—यह बतानेवाली है वह ज्योति। ३ वह इस बात को देखने में सहायता देनेवाली ज्योति है कि नगर में भी शुभ दृश्य हैं। हम उस ज्योति के प्रकाश में यह देख सकते हैं कि घर से मन्दिर अच्छा है। ४

भक्ति!—९३

भक्ति से, ईश्वर-भक्ति से— (टेक) भक्ति से इस संसार में होनेवाले लाभ सुनो! अरी, चित्त साफ़ होता है। यहाँ जो भी करो उन कर्मों में विशिष्टता पैदा हो जाती है। उससे विद्याएँ आ जाती हैं। अच्छे वीरों की संगति प्राप्त की जाती है। मन में तत्व-ज्ञान उपजता है। चित्त की चंचलता दूर हो जाती है और दृढ़ता आ जाती

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वित्तैहळ् शेरुम्— नल्ल
वीररुऱवु किडैक्कुम्, मऩत्तिडैत्
तत्तुव मुण्डाम्, नॅञ्जिऱ्
चञ्जलम् नीङ्गि उऱुदि विळङ्गिडुम् (बक्ति) 1
कामप् पिशाशैक्— कुदि
काल् कॊण्डडित्तु विळुत्तिडलाहुम्; इत्
तामसप् पेयैक्— कण्डु
ताक्कि मडित्तिड लाहुम्; ॲऩ् नेरमुम्
तीमैयै ॲण्णि— अञ्जुन्
देम्बर् पिशाशैत् तिरुह यॆऱिन्दु पॊय्न्
नाम मिल्लाद— उण्मै
नामत्ति ऩालिङ्गु नन्मै विळैन्दिडुम् (बक्ति) 2
आशैयैक् कॊल्वोम्, पुलै
अच्चत्तैक् कॊऩ्ऱु पॊशुक्किडुवोम्,— कॆट्ट
पाश मऱुप्पोम्— इङ्गु
पार्वदि शक्ति विळङ्गुदल् कण्डवे
मोशञ् जॆय्यामल्— उण्मै
मुऱ्ऱिलुङ् गण्डु वणङ्गि वणङ्गियोर्
ईशऩैप् पोऱ्ऱि— इऩ्बम्
यावैयु मुण्डु पुहळ् कॊण्डु वाळ्हुवम् (बक्ति) 3
शोर्वुहळ् पोहुम्— पॊय्च्
चुहत्तिऩैत् तळ्ळिच् चुहम् पॆऱलाहुम्, नऱ्
पार्वैहळ् तोऩ्ऱुम्— मिडिप्
पाम्बु कडित्त विषमहऩ्ऱे नल्ल
शेर्वैहळ् शेरुम्— पल
शॆल्वङ्गळ् वन्दु महिळ्च्चि विळैन्दिडुम्

है। (भक्ति से०) १ काम-पिशाच को लात मारकर गिराना संभव हो जायगा। तामस भूत को पहचानकर मार गिराना सुलभ होगा। जिससे हम हमेशा संकट के ख्याल से डरते रहते हैं और निष्क्रिय हो जाते हैं, उस पिशाच को हम नोचकर दूर फेंक सकेंगे। झूठे नामों को त्यागकर सत्य-नाम को अपनाने से मंगल हो जायगा। (भक्ति से०) २ हम कामना को मार दें। नीच भय को मारकर जला दें। बुरे पाश को काट दें। हम यहाँ पार्वती-शक्ति को प्रकट होता देखकर, उसे धोखा न देकर उसकी आराधना करें। उसका प्रणमन करके, अद्वैत ईश्वर की पूजा करें। सभी सुखों का उपभोग करते हुए हम यशस्वी बनकर जिएँगे। (भक्ति से०) ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कर्म-कुशलता मिलती इससे, इससे मन होता निर्मल।
वर वीरों की संगति मिलती, विद्याएँ मिलतीं (उज्ज्वल)॥
मन को तत्त्व-ज्ञान मिलता है, मिटती मन की चंचलता।
(मिट जाती सारी अधीरता) आ जाती अनुपम दृढ़ता॥ १॥

भक्ति अतुल-आनन्द-प्रदायक, भक्ति सकल-फल-दायक है।
भुक्ति-मुक्ति दोनों देती है, दुख में सबल सहायक है॥ टेक॥
पदाघात से मार गिराओ (पल भर में ही) काम-पिशाच।
तामस भूतों को पहचानो बंद करो तुम उनका नाच॥
हम सदैव संकट के भय से (प्रतिपल) डरते रहते हैं।
निष्क्रिय (अकर्मण्य) बन जाते (सारे संकट सहते हैं)॥
उस पिशाच को मार-पीटकर अब हम दूर भगायेंगे।
झूठे नामों को त्यागेंगे सत्य नाम अपनायेंगे॥
सत्य नाम के अपनाने से (सब जग का) मंगल होगा।
(विमल भक्ति के अपनाने से स्वर्ग-सदृश भू-तल होगा)॥ २॥

भक्ति अतुल-आनन्द-प्रदायक, भक्ति सकल-फल-दायक है।
भुक्ति-मुक्ति दोनों देती है, दुख में सबल सहायक है॥ टेक॥
मार जलाएँ नीच भीतियाँ, मारें सभी कामनाएँ।
बुरे बन्धनों के पाशों को काट-काटकर बिखराएँ॥
प्रकट हुई पार्वती शक्ति का करें आज हम सब दर्शन।
धोखा (औ' छल-कपट) त्याग कर कर लें उसका आराधन॥
करके उसे प्रणाम करें अद्वैत-महेश्वर का पूजन।
जग में जियें यशस्वी बनकर हो (अपार) सुखमय जीवन॥ ३॥

भक्ति अतुल-आनन्द-प्रदायक, भक्ति सकल-फल-दायक है।
भुक्ति-मुक्ति दोनों देती है, दुख में सबल सहायक है॥ टेक॥
सभी थकावट मिट जायेगी, (हम प्रफुल्ल हो जायेंगे)।
झूठे सुख को तज देंगे हम, सच्चा सुख अपनायेंगे॥
होगी मंगल दृष्टि, प्राप्तियों से होगा जीवन भरपूर।
आलस-रूपी (विकट) सर्प के दंशन का विष होगा दूर॥
जिनके मिटने से मंगल है वे सारे मिट जायेंगे।
निधियाँ सभी मिलेंगी, सारे रोग (समूल) नशायेंगे॥

सभी थकावटें दूर हो जायेंगी। हम झूठे सुख को छोड़कर सच्चा सुख भोगेंगे। दृष्टि अच्छी होगी। आलस्य-सर्प-दंश का विष दूर हो जायगा। हमें अच्छी उपलब्धियाँ हो जायेंगी। अनेक निधियाँ प्राप्त होंगी। जिनके दूर होने में मंगल है, वे सब दूर हो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तीर्वैहळ् तीरुम्— पिणि
तीरुम् पल पल इन्बङ्गळ् शेर्न्दिडुम् (बक्ति) 4

कल्वि वळरुम्— पल
कारियङ् गैयुरुम्, वीरिय मोङ्गिडुम्
अल्ल लॊऴियुम्— नल्ल
आण्मै युण्डाहुम् अरिवु तॆळिन्दिडुम्
शॊल्लुव दॆल्लाम्— मऱैच्
चॊल्लिनैप् पोलप् पयनुळ दाहुम्, मॆय्
वल्लमै तोन्रुम्— दॆय्व
वाऴ्क्कैयुर् रेयिङ्गु वाऴ्न्दिडलाम्— उण्मै (बक्ति) 5

शोम्ब लऴियुम्— उडल्
शॊन्नपडिक्कु नडक्कुम्, मुडि शऱ्रुङ्
गूम्बुद लिन्रि— नल्ल
गोपुरम् बोल निमिर्न्द निलै पॆरुम्
वीम्बुहळ् पोहुम्— नल्ल
मेन्मै युण्डाहिप् पुयङ्गळ् परुक्कुम्, पॊय्प्
पाम्बु मडियुम्— मॆय्प्
परम् वॆन्रु नल्ल नॆरिहळुण्डाय् विडुम् (बक्ति) 6

शन्ददि वाऴुम्— वॆरुञ्
शञ्जलङ् गॆट्टु वलिमैहळ् शेर्न्दिडुम्
'इन्दप् पुविक्के— इङ्गॊर्
ईशनुण्डायिन् अरिक्कैयिट् टेनुन्रन्
कन्द मलर्त्ताळ्— तुणै
कादल् महवु वळर्न्दिड वेण्डुम्, ऎन्
शिन्दै यरिन्दे— अरुळ्
शॆय्दिड वेण्डुम्' ऎन्राल् अरुळॆय्दिडुम् (बक्ति) 7

जायँगे। रोग दूर हो जायगा तथा हमें विविध सुख मिल जायँगे। (भक्ति से०) ४ विद्या बढ़ेगी। अनेक कार्य सिद्ध हो जायँगे। वीरता बढ़ जायगी। अड़चनें दूर हो जायँगी! पौरुष पैदा होगा। बुद्धि सुलझ जायगी। जो भी हम कहेंगे, वे सब कथन वेदवाक्य के समान प्रभावकारी बन जायँगे। सच्ची शक्ति मिल जायगी और यहाँ दिव्य जीवन पाकर हम उत्कृष्ट जीवन जी सकेंगे। (भक्ति से०) ५ हमारी सुस्ती मिट जायगी। शरीर आज्ञाकारी बनेगा। सिर किसी भी तरह नहीं झुकेगा; वरन् गोपुर के समान सीधा रहेगा। व्यर्थ ढकोसले (मिथ्याचार) नहीं रहेंगे। हमें गौरव मिलेगा। हमारी भुजाएँ स्थूल (बलवान्) बनेंगी। असत्य का साँप मिट

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सबको सब सुख मिल जायेंगे (हृदय-कमल खिल जायेंगे)।
(हिल-मिलकर इस भूतल पर ही मानव स्वर्ग बसायेंगे) ॥ ४ ॥

भक्ति अतुल-आनन्द-प्रदायक, भक्ति सकल-फल-दायक है।
भुक्ति-मुक्ति दोनों देती है, दुख में सबल सहायक है ॥ टेक ॥

होगी विद्या-वृद्धि, सभी के कार्य सिद्ध हो जायेंगे।
बढ़ जायेगी (विपुल) वीरता विघ्न-वृन्द विनशायेंगे ॥
बुद्धि सुलझ जायेगी (जन-जन में) पौरुष जाग्रत होगा।
वेद-वाक्य के तुल्य हमारा सभी कथन आदृत होगा ॥
सच्ची शक्ति मिलेगी सबको पाकर उच्च दिव्य जीवन।
(शत वर्षों तक) सदा जियेंगे इस धरती पर सारे जन ॥ ५ ॥

भक्ति अतुल-आनन्द-प्रदायक, भक्ति सकल-फल-दायक है।
भुक्ति-मुक्ति दोनों देती है, दुख में सबल सहायक है ॥ टेक ॥

आज्ञाकारी देह बनेगी, सब सुस्ती मिट जायेगी।
ग्रीवा नहीं झुकेगी, गोपुर के समान तन जायेगी ॥
ढोंग मिटेगा, गौरव होगा, और बनेंगे भुज बलवान।
और असत्य रूपवाला भी मर जायेगा सर्प महान ॥
सत्य वस्तु की प्राप्ति, सत्य की होगी जग में सदा विजय।
सत्य मार्ग से हो जायेगा इस जग के जन का परिचय ॥ ६ ॥

भक्ति अतुल-आनन्द-प्रदायक, भक्ति सकल-फल-दायक है।
भुक्ति-मुक्ति दोनों देती है, दुख में सबल सहायक है ॥ टेक ॥

फूले और फलेगी संतति (हृदय-कमल खिल जायेगा)।
चंचलताएँ मिट जाएँगी बल (पौरुष) मिल जायेगा ॥
जग-प्रपंच का रचनेवाला, कहो, एक है परमेश्वर।
तो मैं यह दावा करता हूँ (जग के सम्मुख अविनश्वर) ॥
तुरत आपके पद-युगल का मैं लूँगा आश्रय (सुखकर)।
सदा पले प्रिय पुत्र आपका पा भवदीय कृपा सुन्दर ॥ ७ ॥

भक्ति अतुल-आनन्द-प्रदायक, भक्ति सकल-फल-दायक है।
भुक्ति-मुक्ति दोनों देती है, दुख में सबल सहायक है ॥ टेक ॥

जायगा। हमें सत्य परब्रह्म पर विजय प्राप्त हो जायगी। और सत्य-मार्ग विदित हो जायेंगे। (भक्ति से०) ६ संतति फूलेगी-फलेगी। व्यर्थ चंचलताएँ दूर हो जायेंगी और बल मिल जायगा। यह कहो कि 'अगर इस सृष्टि के कोई ईश्वर हैं' तो मैं दावा करता हूँ कि आपके सुगन्धित पदद्वय का मैं आश्रय कर लूंगा। आपका प्रिय पुत्र पले। आप मेरे मन को जानकर मुझ पर कृपा करें, तो अवश्य (ईश्वर की) कृपा प्राप्त हो जायगी। (भक्ति से०) ७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अम्माक्कण्णु पाट्टु—94

"पूट्टैत् तिऱप्पदु कैयाले— नल्ल, मनन् दिऱप्पदु मदियाले"
पाट्टैत् तिऱप्पदु पण्णाले— इन्ब, वीट्टैत् तिऱप्पदु पण्णाले 1
एट्टैत् तुडैप्पदु कैयाले— मन, वीट्टैत् तुडैप्पदु मॆय्याले;
वेट्टै यडिप्पदु विल्लाले— अन्बुक्, कोट्टै पिडिप्पदु शॊल्लाले; 2
काऱ्ऱै यडैप्पदु मनदाले इन्दक्, कायत्तैक् काप्पदु शॆय्हैयिले
शोऱ्ऱैप् पुशिप्पदु वायाले— उयिर्, तुणि वुऱुवदु तायाले 3 (पूट्टैत्)

वण्डिक्कारन् पाट्टु—95

(अण्णनुक्कुम् तम्बिक्कुम् उरैयाडल्)

"काट्टु वळि तनिले— अण्णे, कळ्ळर् पयमिरुन्दाल् ?" —ऍङ्गळ्
वीट्टुक्कुल तॆय्वम्— तम्बि, वीरम्मै काक्कुमडा" 1
"निऱुत्तु वण्डि यॆन्ऱे— कळ्ळर्, नॆरुङ्गिक् केट्कैपिले" —ऍङ्गळ्
कऱुत्त मारियिन् पेर्— शॊन्नाल्, कालनुम् अञ्जुमडा !" 2

कडमै अऱि योम्—96

कडमै पुरिवार् इन्बुऱुवार्, ऍन्नुम् पण्डैक् कदै पेणोम्;
कडमै यऱियोम् तॊळिलऱियोम्; कट्टॆन् बदनै वॆट्टॆन्बोम्; 1
मडमै शिऱुमै तुन्बम् पॊय्, वरुत्तम् नोवु मऱ्ऱिवै पोल्
कडमै नितैवुन् दॊलैत् तिङ्गु, कळियुर् ऱॆन्ऱुम् वाळ्हुवमे 2

'अम्माक्कण्णु' का गीत—९४

[अम्माक्कण्णु, प्यारी पुत्री या प्रिया का दुलार का नाम है। यह एक विशिष्ट तर्ज है।]

ताला खोलो हाथ से; मन खोलो मति से ! गीत खोलो राग से ! गृहस्थी खुलेगी गृहिणी से ! १ (ग्रन्थ के ताड़ के) पन्ने साफ़ करो हाथ से ! मन-गृह को साफ़ करो सत्य से ! शिकार मारो धनुष से तथा प्यार का क़िला जीतो वचन से ! २ पवन मन से रोका जाता है तथा यह शरीर कर्म से बाँधा जाता है। रोटी खाओ मुख से और जीवन दृढ़ होता है माता से ! ३

गाड़ीवान का गीत—९५

(बड़े भाई तथा छोटे भाई की बातचीत—) "जंगली रास्ता है, भाई ! अगर बैलों को उतारूँ तो ?" "भैया ! हमारी कुलदेवी वीरम्मा रक्षा करेगी।" १ "रोको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अम्माक् कण्णुका गीत—९४

ताले को ताली से खोलो, (निर्मल) मति से मन खोलो।
गृहिणी से खोलो सुगृहस्थी, रागों से गायन खोलो॥ १ ॥
(सदा) सत्य से खोलो मन-गृह, ताड़-पत्र कर से खोलो।
धनु से करो शिकार, प्यार का दुर्ग जीत लो, मधु बोलो॥ २ ॥
(उग्र) पवन मन से बँध जाता, कर्मों से तन बँध जाता।
मुख से खाओ अन्न, ज़िन्दगी को दृढ़ करती है माता॥ ३ ॥

गाड़ीवान का गीत—९५

"निर्जन वन है, विकट मार्ग है, चोरों का भय है भाई!"
"कुलदेवी वीरम्मा रक्षा करनेवाली सुखदायी"॥ १ ॥
"सम्मुख आकर 'गाड़ी रोको' धमकी देगा चोर अगर"।
"नाम जपो, काली देवी का, काल कराल जायगा डर"॥ २ ॥

कर्तव्य नहीं जानते—९६

कथन पुराना है यह— "होंगे सदा सुखी कर्तव्य-निधान"।
अपना यह कर्तव्य न पालन करते हैं हम आज अजान॥
ज्ञान न हमको कर्तव्यों का, धंधा नहीं जानते हैं।
'बाँधो' यदि कहता है कोई, 'काटो' उसे मानते हैं॥ १ ॥
रुदन, रोग, दुख, मौर्ख्य, अल्पता ये सब भी कर्तव्य समान।
निन्द्य अतः कर्तव्य मानकर त्याग उन्हें भी मुदित महान॥ २ ॥

गाड़ी, ऐसा (कहकर) चोर पास आकर धमकी दे तो?" "हमारी काली मारी देवी का नाम लो, तो काल भी डरेगा, भैया!" २

कर्तव्य नहीं जानते!—९६

कर्तव्य करनेवाले सुखी होंगे, यह पुराना कथन है। इसका पालन हम नहीं करते। कर्तव्य नहीं जानते, धन्धा नहीं जानते। 'बाँधो' कहा जाय, तो उसे 'काटो' कहेंगे। १ मूर्खता, क्षुद्रता, दुख, रुदन, रोग —इनके समान कर्तव्य-विचार भी छोड़कर, हम खुशी के साथ रहेंगे। (क्या इसमें व्यंग्य है? भारती ने अनेक पदों में भारतीयों की निष्क्रियता पर अपना असंतोष प्रकट किया है, पर यहाँ नैष्कर्म्य का दार्शनिक पाठ पढ़ाया गया है।) २

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्बुशॅय्दल्—97

इन्दप् पुवि तन्निल् वाळुम् मरङ्गळुम्
इन्ब नऱुमलर्प् पूञ् जॅडिक् कूट्टमुम्
अन्द मरङ्गळैच् चूळ्न्द कॉडिहळुम्
औडद मूलिहै पूण्डुपुल् यावॅयुम्
अॅन्दत् तॉळिल् शॅय्दु वाळ्वन्नवो ? 1

(वेऱु)

मानुडर् उळ्ळाविडिनुम् वित्तु नडाविडिनुम्
वरम्बु कट्टा विडिनुम् अन्ऱि नीर् पाय्च्चा विडिनुम्
वानुलदु नीर् तरुमेल मण्मीदु मरङ्गळ्
वहैवहैया नॅऱ्कळ् पुऱ्कळ मलिन्दिरुक्कुमन्ऱे ?
यानॅदर्कुम् अञ्जुहिलेन्, मानुडरे नीविर्
अॅन्मवत्तैक् कैक्कॉण्मिन्; पाडु पडल् वेण्डा
ऊनुडले वरुत्तादीर्; उणवियऱ्कै कॉडुक्कुम्
उङ्गळुक्कुत् तॉळिलिङ्गे अन्बु शॅय्दल् कण्डीर् ! 2

शॅन्ऱदु मीळादु—98

शॅन्ऱदिनि मीळादु मूडरे ! नीर्
अॅप्पोदुम् शॅन्ऱदैये शिन्वै शॅय्दु
कॉन्ऱळिक्कुम् कवलैयॅनुम् कुळियिल् वीळ्न्दु
कुमैयादीर् शॅन्ऱदनैक् कुऱित्तल् वेण्डाम्
इन्ऱु पुदिदाय्प् पिऱन्दोम् अॅन्ऱु नीविर्
अॅण्णमवॅत् तिण्णमुऱ इशैत्तुक् कॉण्डु
तिन्ऱु विळैयाडि यिन्बुऱ्ऱिरुन्दु वाळ्वीर्
तीमै यॅलाम् अळिन्दुपोम् तिरुम्बि वारा

प्यार करना— ९७

इस धरती पर तरु पलते हैं; मधुर, सुगन्धित फूलों के पौधों की राशियाँ, उन पेड़ों से लिपटी रहनेवाली लताएँ, जड़ी-बूटियाँ, घास आदि उगा रहता है, वे क्या धन्धा करते रहते हैं ? १ मान लो कि यद्यपि मनुष्य जोतते नहीं, बीज बोते नहीं, सीमा नहीं बाँधते और सिंचाई नहीं करते, तो भी स्वर्ग जल दे देगा, तब धरती पर तरु, नानाविध घास, पौधे, धान आदि कसरत से उगेंगे न ? मैं किसी के लिए नहीं डरता।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्यार करना—९७

मधुर सुगंधित फूलों वाले पलते धरती पर तरुवर।
उन पेड़ों से (लोल) लताएँ लिपटी रहती हैं सुन्दर॥
जड़ी-बूटियाँ-दूब-घास सब प्रतिपल उगती रहती हैं।
(अपने जीवन की रक्षा हित) ये क्या धन्धा करती हैं॥ १॥
यदि नर खेत नहीं जोतेंगे, बीज नहीं बोयेंगे नर।
अगर सिंचाई नहीं करेंगे, मेंड़ न बाँधेंगे दृढ़तर॥
तो भी स्वर्गलोक से (सुरपति) जल बरसायेगा (झरझर)।
घास-फूस, पौधे, अन्नादिक उग आयेंगे धरती पर॥
नहीं किसी से मैं डरता हूँ, मनुजो ! मेरा मत मानो।
सभी परिश्रम करना त्यागो (मौज करो, शिक्षा मानो!)॥
(अजगर नहीं चाकरी करते, पंछी कभी न करते काम)।
(प्रेम करो, मनमौज करो, सुख-चैन करो, हैं दाता राम)॥ २॥

गया सो लौट नहीं आया—९८

मूर्खो ! जो कुछ बीत गया है वह अब लौट न आयेगा।
बीती बातों को मत सोचो (व्यर्थ हृदय घबरायेगा)॥
बीती बातों का कर चिंतन मत मन में तुम पछताओ।
घातक चिन्ता के (अति गहिरे) गड्ढे में मत गिर जाओ॥
"आज मिला हमको नवजीवन"—यही भावना दृढ़ कर लो।
खाओ, खेलो (मौज मनाओ) खुशियों से मन को भर लो॥
(मानोगे यदि बात हमारी) सब संकट मिट जायेंगे।
(तुम्हें सताने, तुम्हें रुलानें) फिर न कभी वे आयेंगे॥

हे मनुष्य ! तुम मेरा मत मान लो। परिश्रम करना नहीं है। शरीर को दुख मत दो। प्रकृति भोजन देगी। यहाँ तुम्हारा कार्य केवल प्रेम (भक्ति) करना है। (यह एक दर्शन है। 'अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम। दास मलूका क्यों करै ? सबके दाता राम।' हाँ, इसमें भक्ति की महिमा पर विश्वास है, न कि सुस्ती का प्रचार।) २

गया सो लौट नहीं आयगा—९८

हे मूढ़ो ! जो गया सो अब लौट नहीं आयगा। तुम बीती बातों का ही चिन्तन करके, घातक चिन्ता रूपी गड्ढे में गिरकर मत पछताओ। बीती बातों का ख्याल नहीं करना चाहिए। 'आज हम नये पैदा हुए हैं।' —इस भावना को स्थिर रूप से निर्मित कर लो। खाओ, खेलो और खुश रहो। सारे संकट मिट जायेंगे। वे पुनः नहीं आयेंगे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मनत्तिर्कुक् कट्टळै—99

पेयायुळ्ळुज् जिरु मनमे ! पेणायॆन् शॊल् इनरुमुदल्
नीया यॊन्रुम् नाडादे ! निनदु तलैवन् यान् काण्
तायाम् शक्ति ताळिनिलुम् तरुममॆन यान् कुरिप्पविलुम्
ओयादेनिन् रुळैत्तिडुवाय् उरत्तेन् अडङ्गि उय्युदियाल्

मनप् पण्—100

मनमॆनुम् पॆण्णे ! वाळि, नी केळाय् !
ऑन्रैये पर्रि यूश लाडुवाय्
अडुत्तदै नोक्कि यडुत्तडुत् तुलवुवाय्
नन्रैये कॊळ्ळॆनिर् चोर्न्दु कैनळुवुवाय्
विट्टु विडॆन्रदै विडादु पोय् विळुवाय् 5
तॊट्टदै मीळ मीळवुन् दॊडुवाय्
पुदियदु काणिर् पुलनळिन् दिडुवाय्
पुदियदु विरुम्बुवाय् पुदियदै यञ्जुवाय्
अडिक्कडि मदुविनै अणुहिडुम् वण्डुपोल्
पळमैयाम् पॊरुळिर् परिन्दु पोय् वीळ्वाय् 10
पळमै यन्रिप् पार्मिशै येदुम्
पुदुमै काणोमॆनप् पॊरुमुवाय् चोच्चो
पिणत्तिनै विरुम्बुम् काक्कैये पोल
अळुहुदल् शादल् अञ्जुदल् मुदलिय
इळि पॊरुळ् काणिल् विरैन्ददिल् इशैवाय् 15

मन को आदेश—९९

भूत की तरह फिरनेवाले हे छोटे मन ! आज से मेरी बात मानो। तुम स्वयं अपनी ओर से कुछ मत खोजो। तुम्हारा पति मैं ही हूँ। यह याद रख लो। माता पराशक्ति के चरणों तथा मेरे द्वारा निर्दिष्ट धर्म में निरन्तर स्थित रहो और परिश्रम करो। मैं कह चुका— थम जाओ और तर जाओ।

मन-कन्या—१००

हे मन रूपी कन्या ! जिओ ! मेरी बात सुनो। तुम्हारा गुण विचित्र है। तुम किसी एक को ही पकड़कर झूलोगी। दूसरी चीज़ को देखकर बार-बार उसकी ओर लपकोगी। यदि कहा जाए— 'यह अच्छा है, इसे लो' तो उसे हाथ से खिसकने दोगी।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मन को आदेश—९९

अरे ! भूत-से फिरनेवाले ! सुन लो, मेरे छोटे मन ! ।
मानो आज बात तुम मेरी (आज त्याग दो तुम बचपन) ॥
अपने आप नहीं कुछ खोजो (खोज-बीन में नहीं झखो) ।
मैं ही (आज) तुम्हारा पति हूँ यह (सदैव तुम) याद रखो ॥
करते रहो सदा तुम माता पराशक्ति का पद-वन्दन ।
मेरे बतलाये सुधर्म का करते रहो सतत पालन ॥
(आलस तजकर) करो परिश्रम (उत्साहों से भर जाओ) ।
मैं कह चुका शान्त हो जाओ (भवसागर से) तर जाओ ॥

मन-कन्या—१००

हे मन-कन्ये ! जियो, हमारी बात सुनो तुम (भली प्रकार) ।
गुण विचित्र हैं सभी तुम्हारे करतीं सदा विषय-व्यापार ॥
एक वस्तु को कभी पकड़कर समुद झूलतीं (तन-मन वार) ।
कभी दूसरी वस्तु पकड़ने हेतु लपकती बारंबार ॥
अच्छाई गह लो, यदि कहता, तो तुम उसको तज देतीं ।
तजो बुराई, यदि मैं कहता, लपक उसे तुम गह लेतीं ॥ १-५॥

एक बार की छुई वस्तु को (सदा) छुओगी बारंबार ।
नयी वस्तु लख सभी इन्द्रियाँ कंपित होतीं (भय-सञ्चार) ॥
नयी वस्तु को देख-देखकर तुम अपार भय खाओगी ।
नयी वस्तुओं की शोभा लख उन्हें कभी अपनाओगी ॥
देख पुरानी (सुघर) वस्तुएँ फिर लट्टू हो जाओगी ।
मधु पर मँड़रानेवाले मधुकर समान मँड़राओगी ॥ ६-१० ॥

छोड़ पुरानी चीज़ें जग में नयी वस्तु है प्राप्त नहीं ।
इस कारण तुम दुःखित होगी (कभी झींखना शान्त नहीं) ॥
शव-प्रिय कौओं के समान मरना-डरना रोना-(खाना) ।
घृणित वस्तुएँ देख झपटकर चाहोगी तुम अपनाना ॥ ११-१५ ॥

यदि कहा जाए— 'यह छोड़ दो' तो उसे छोड़ोगी नहीं, वरन् उस पर जा गिरोगी । ५ स्पृष्ट चीज़ को बार-बार छुओगी । नयी चीज़ को देखो, तो तुम्हारी इन्द्रियाँ काँप जायँगी । नया चाहोगी भी, नये से डरोगी भी । मधु पर बार-बार मँड़रानेवाले भ्रमर के समान पुरानी चीज़ों पर तुम लट्टू होकर टूट पड़ोगी । १० कभी यह मानकर दुखी होगी कि दुनिया में पुरानी चीज़ों को छोड़कर, कोई नयी वस्तु मिलती ही नहीं है । छिः छिः शव-प्रिय कौओं के समान रोना, मरना, डरना— । घृणित बातों को देखो, तो जल्दी उन पर झपटकर चिपक जाओगी । तब भी— १५ मुझ पर अचल प्रेम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अङ्ङन्ने
ऎन्निडत् तॆन्रुम् मारु दलिल्ला
अन्बु कॊण् डिरुप्पाय् आवि कात्तिडुवाय्
कण्णिनोर् कण्णाय् कादिन् कादाय्प्
पुलन्पलप् पडुत्तुम् पुलना यॆन्नै 20
उलह वुरुळैयिल् ऒट्टुर् वहुप्पाय्
इन्बॆलान् दरुवाय् इन्बत्तु मयङ्गुवाय्
इन्बमे नाडि यॆण्णिलाप् पिऴै शॆय्वाय्
इन्बङ् गात्तुत् तुन्बमे यऴिप्पाय्
इन्ब मॆन्रॆण्णित् तुन्बत्तु वीऴ्वाय् 25
तन्नै यऱियाय् शहत् तॆलान् दॊळैप्पाय्
तन्पिन्निऱ्कुन् दनिप्परम् पॊरुळैक्
काणवे वरुन्बुवाय् काणॆनिऱ् काणाय्
शहततिन् विदिहळैत् तनित्तनि अऱिवाय्
पॊदुनिलै अऱियाय् पॊरुळैयुङ् गाणाय् 30
मनमॆनुम् पॆण्णे ! वाऴि नी केळाय् !
निन्नॊडु वाऴुम् नॆऱियु नन् गऱिन्दिडेन्
इत्तनै नाट्पोल् इनियु निन्निन्बमे
विरुम् बुवन्; निन्नै मेम्बडुत्तिडवे
मुयऱ्चिहळ् पुरिवेन्; मुत्तियुन् देडुवेन् 35
उन विऴिप् पडामल् ऎन् विऴिप्पट्ट
शिव मॆनुम् पॊरुळैत् तिनमुम् पोऱ्ऱि
उन्ऱनक् किन्बम् ओङ्गिडच् चॆय्वेन्

पहैवनुक्कु अरुळ्वाय्—101

पहैवनुक् करुळ्वाय्— नन्नॆञ्जे !
पहैवनुक् करुळ्वाय् !

रखती हो, मेरे प्राणों की रक्षा करती हो। मेरी आँखों की आँख, कानों का कान तथा इन्द्रियों को मजबूत बनानेवाली इन्द्रिय रहकर मुझे— २० दुनिया के पहिये में लगाकर घुमाओगी। मुझे सुख देती हो तथा सुख में मग्न होती हो। तुम सुख की ही खोज में अनेक अपराध करोगी। सुख की रक्षा करके दुख को मिटा दोगी। (इसके विपरीत) तुम सुख समझकर दुख में गिरकर फँस भी जाओगी। २५ तुम अपने को नहीं जानती, पर सारे जगत को छान डालोगी। अपने पीछे रहनेवाली उस अद्वैत परम वस्तु को देखने में भी क्लेश मानोगी। उसे दरसाने पर भी नहीं देखोगी। जगत की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मम प्राणों की रक्षा करतीं, मुझ पर रखतीं प्रेम अचल।
मम नयनों की नयन, कान की कान इन्द्रियों की दृढ़बल ॥ १६-२० ॥

(विशद) विश्व (-रथ) के चक्रों पर मुझको चढ़ा घुमाओगी।
मुझको (अतिशय) सुख दोगी (खुद) सुख-निमग्न हो जाओगी ॥
सुख के पाने हेतु करोगी तुम (असंख्य) अपराध (अपार)।
सुख की रक्षा हेतु करोगी सभी दुखों का तुम संहार ॥
सुख के धोखे में (मन-बाले !) तुम दुख को अपनाओगी।
दुख-दलदल के महापंक में फँसी कभी पछताओगी ॥२१-२५ ॥

अपना ज्ञान न हो पायेगा, सभी जगत तुम छानोगी।
अन्तर के अद्वैत तत्त्व को लखने से दुख मानोगी ॥
(सत्य-तत्त्व) दिखलाने पर भी देख नहीं तुम पाओगी।
सत्य-अर्थ का ज्ञान न होगा (उसे नहीं अपनाओगी) ॥
विस्तृत जग की गतिविधियों को पृथक्-पृथक् तुम मानोगी।
पर उनमें स्थित सहज सत्य को कभी नहीं पहिचानोगी ॥ २६-३० ॥

री मन-कन्ये ! जियो, हमारी बात सुनो तुम (देकर ध्यान)।
जीवन कैसे साथ बिताऊँ उस उपाय से भी अज्ञान ॥
तुम्हें मिले सुख आज और आगे भी तव सुख चाहूँगा।
यत्न करूँगा तव उन्नति औ' मुक्ति खोजकर लाऊँगा ॥ ३१-३५ ॥

तुम न देख पाई हो अब तक किन्तु मिले मुझको दर्शन।
सुखी बना दूँगा मैं तुमको करवाकर शिव का दर्शन ॥ ३६-४० ॥

शत्रु पर कृपा करो—१०१

अरि पर कृपा करो अच्छे मन ! अरि पर कृपा करो शुभ मन ! ॥

विधियों को अलग-अलग जानती हो, पर सामान्य गति नहीं जानोगी। तुम यथार्थ अर्थ भी नहीं जानती हो। ३० री मन-कन्या ! जियो ! मेरी बात सुनो। तुम्हारे साथ जीवन बिताने का उपाय भी मैं अच्छी तरह नहीं जान पाता। अब तक के जैसे आगे भी मैं तुम्हारा ही सुख चाहूँगा। मैं तुम्हें ऊपर उठाने का ही प्रयास करूँगा, और (तुमसे) मुक्ति की भी खोज करूँगा। ३५ तुम्हारी दृष्टि में जो नहीं आये हैं, पर जो मेरी दृष्टि के सामने आये हैं, उन शिवजी की मैं नित्य आराधना करूँगा और तुम्हारे सुख को बढ़ा दूँगा। ४०

शत्रु पर कृपा करो—१०१

शत्रु पर कृपा करो, अच्छे मन ! शत्रु पर कृपा करो। (टेक) धुएँ के मध्य आग रहती है। इस बात को हमने भूमि पर देखा ही है। रे सुमन ! हमने भूमि पर देखा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुहै नडुविनिल् ती यिरुप्पदैप्
पूमियिऱ् कण्डोमे— नन्नॆञ्जे !
पूमियिऱ् कण्डोमे !
पहै नडुविनिल् अन्बुरुवान नम्
परमन् वाऴ्हिन्ऱान्— नन्नॆञ्जे !
परमन् वाऴ्हिन्ऱान् ! (पहैवनुक्) 1

शिप्पियिले नल्ल मुत्तु विळैन्दिडुञ्
जॆय्दि यऱियायो ?— नन्नॆञ्जे !
कुप्पैयिले मलर् कॊञ्जुङ् गुरुक्कत्तिक्
कॊडि वळरादो— नन्नॆञ्जे ! (पहैवनुक्) 2

उळ्ळ निऱैविलोर् कळ्ळम् पुहुन्दिडिल्
उळ्ळम् निऱैवामो— नन्नॆञ्जे !
तॆळ्ळिय तेनिलोर् शिऱिदु नञ्जैयुम्
शेर्त्तपिन् तेनामो— नन्नॆञ्जे ! (पहैवनुक्) 3

वाऴ्वै निनैत्त पिन् ताऴ्वै निनैप्पदु
वाऴ्वुक्कु नेरामो ?— नन्नॆञ्जे !
ताऴ्वु पिऱर्क्कॆण्णत् तानऴि वानॆन्ऱ
शात्तिरङ् गेळायो ?— नन्नॆञ्जे ! (पहैवनुक्) 4

पोरुक्कु बन् दॆदिर्त्त कवुरवर्
पोल वन्दानुमवन्— नन्नॆञ्जे !
नेरुक् करुच्चुनन् तेरिऱ् कशै कॊण्डु
निन्ऱदुङ् गण्णनन्ऱो ?— नन्नॆञ्जे ! (पहैवनुक्) 5

तिन्न वरुम्बुलि तन्नैयुम् अन्बॊडु
शिन्दैयिऱ् पोऱ्ऱिडुवाय्— नन्नॆञ्जे !
अन्नै पराशक्ति अव्वुरुवायिनळ्
अवळैक् कुम्बिडुवाय्— नन्नॆञ्जे ! (पहैवनुक्) 6

ही है। शत्रुता के बीच प्रेममूर्ति, हमारा परम ईश्वर रहता है —रे सुमन ! परम पुरुष रहता है। (शत्रु पर०) १ सीपी में श्रेष्ठ मोती पैदा होता है —क्या यह बात नहीं जानते ? रे सुमन ! क्या कूड़े पर पुष्पोल्लसित माधवी लता नहीं फैलेगी ? रे सुमन ! (शत्रु पर०) २ पूर्ण मन में कोई कपट घुस गया, तो क्या पूर्ण रहेगा ? रे सुमन ! साफ़ शहद में थोड़ा विष घोल दो, तो क्या वह शहद रहेगा ? रे सुमन ! (शत्रु पर०) ३ उन्नयन को सोचने के बाद, पतन को सोचना क्या जीने के बराबर होगा ?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

धुएँ बीच पावक रहती है हमनें देखा धरती पर।
और शत्रुता में भी रहता प्रेम-मूर्तिमय परमेश्वर ॥
(परमेश्वर हर मन में जानो भूलो दुखदायी अनबन)।
अरि पर कृपा करो अच्छे मन ! अरि पर कृपा करो शुभ मन ! ॥ १ ॥

सीपी में मोती होता है विदित तुम्हें यह बात नहीं।
घूरे पर भी सुमन-लताएँ होतीं— क्या यह ज्ञात नहीं ॥
(द्वेष-पूर्ण मन बीच बसा लो प्रेम-मूर्ति अतिशय पावन)।
अरि पर कृपा करो अच्छे मन ! अरि पर कृपा करो शुभ मन ! ॥ २ ॥

मन में यदि छल मिला हुआ हो तो क्या सु-मन सरस होगा।
यदि मधु में विष घुला हुआ हो तो क्या वह मधु-रस होगा ? ॥
(द्वेष-भावना दूर भगाओ, विश्व बनेगा सभी स्वजन)।
अरि पर कृपा करो अच्छे मन ! अरि पर कृपा करो शुभ मन ! ॥ ३ ॥

उन्नति के पश्चात् पतन हो, क्या सुखमय जीवन होगा ?।
जो अन्य का पतन चाहेगा उसका शीघ्र पतन होगा ॥
सुना नहीं अब तक क्या तुमने यह शिक्षाप्रद शास्त्र वचन।
अरि पर कृपा करो अच्छे मन ! अरि पर कृपा करो शुभ मन ! ॥ ४ ॥

(प्रबल महाभारत के) रण में लड़नें को कौरव आये।
अर्जुन-रथ के सारथि बनकर रण में स्वयं कृष्ण आये ॥
(गीता-ज्ञान कहाँ वह रण !) क्या नहीं एक ही मधुसूदन !।
अरि पर कृपा करो अच्छे मन ! अरि पर कृपा करो शुभ मन ! ॥ ५ ॥

बाघ तुम्हें खाने आता हो करो प्रेम से तुम आदर ॥
पराशक्ति का रूप समझकर करो प्रणाम उसे प्रियवर।
हिंसा-भाव भुला दो मन से, मित्र बनेंगे जग के जन।
अरि पर कृपा करो अच्छे मन ! अरि पर कृपा करो शुभ मन ! ॥ ६ ॥

रे सुमन ! जो दूसरों को नीचा करना सोचेगा, तो उसे पतन मिलेगा —क्या इस शास्त्र-वचन को तुम नहीं सुनोगे ? रे सुमन ! (शत्रु पर०) ४ युद्ध में सामना करने के लिए कौरव आये। वैसे ही कृष्ण भी आये। पर वे अर्जुन के रथ पर कशा लेकर खड़े हो गये। तब क्या, वे ही कृष्ण नहीं थे ? रे सुमन ! (शत्रु पर०) ५ खाने के लिए आनेवाले बाघ का भी मन में प्रेम से आदर करो, रे सुमन ! क्योंकि माता पर शक्ति उसके रूप में आयी है। उसका प्रणमन करो। रे सुमन ! (शत्रु पर०) ६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तॆळिवु—102

ऎल्ला माहिक् कलन्दु निऱैन्दपिन्, ऐऴैमै युण्डोडा ?— मऩमे
पॊल्लाप् पुऴुविऩैक् कॊल्ल निऩैत्त पिन्, पुत्ति मयक्क मुण्डो ? 1
उळ्ळ दॆलामोर् उयिरॆन्ऱु तेर्न्द पिन्, उळ्ळङ् गुलैव दुण्डो— मऩमे
वॆळ्ळ मॆऩप् पॊऴि तण्णरु ळाऴ्न्द पिन्, वेदऩै युण्डो डा ? 2
शित्ति नियल्बु मदन् पॆरुञ् जक्तियिन्, शॆय्हैयुन् देर्न्दु विट्टाल्–मऩमे !
ऎत्तऩै कोडि इडर् वन्दु शूऴिनुम्, ऎण्णञ् जिऱिदु मुण्डो ? 3
शॆय्ह शॆयल्हळ् शिवत्तिडै निऩ्ऱॆऩत्, तेवनुऱैत् तऩऩे;— मऩमे !
पॊय् करुदाम लदन्वऴि निऱपवर्, बूदल मञ्जुवरो ? 4
आऩ्म वॊळिक् कडल् मूऴ्हित् तिळैप्पवर्क्, कच्च मुण्डोडा ?— मऩमे
तेऩ्मडै यिङ्गु तिऱन्ददु कण्डु, तेक्कित् तिरिवमडा ! 5

कऱ्पऩै यूर्—103

कऱ्पऩै यूरॆऩ्ऱ नहरुण्डाम्— अङ्गु
कन्दर्वर् विळैयाडु वराम्
शॊप्पऩ नाडॆऩ्ऱ शुडर्नाडु— अङ्गु
शूऴ्न्दवर् यावर्क्कुम् पेरुवहै 1
तिरुमणै यिदु कॊळ्ळैप् पॊर्क्कप्पल्— इदु
स्पानियक् कडलिल् यात्तिरै पोम्
वॆरुवुऱ मायवार् पलर् कडलिल्— नाम्
मीळबुम् नम्मूर् तिरुम्बु मुऩ्ऩे 2

निर्मलता—१०२

रे मन ! सारा संसार बनकर तू उसमें घुल-मिल जाए तो फिर क्या तुझे कंगाली (हीनता) का अनुभव होगा ? क्या इस दुष्ट कीड़े (क्षुद्र अहंकार) को मारने का विचार करने के बाद तेरी बुद्धि में भ्रम उत्पन्न होगा ? १ जो सब हैं, वे सब एक ही 'प्राण' हैं। यह निश्चय होने के बाद चित्त जर्जर क्यों हो जाए ? रे मन ! तू करुणा के प्रवाह में मग्न हो जाए तो क्या फिर कोई वेदना रह जायगी ? २ चित् का स्वभाव तथा उसकी महान शक्ति का कार्य जान लेने के बाद, रे मन ! कितनी ही करोड़ बाधाएँ क्यों न आयें, तो क्या चिन्ता होगी ? ३ शिवस्थिति पर स्थिर होकर काम करो —ऐसा भगवान् ने बताया। रे मन ! जो वंचना न करके उसमें स्थित हैं क्या वे भूतल से डरेंगे ? ४ जो आत्म-प्रकाश-सागर में गोते लगाते रहते हैं, क्या उनके लिए कोई डर भी है ? रे मन ! मधु-प्रवाह का मुँहाना खुल गया है। पहचान और उसे जमा कर ले, रे मन ! ५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निर्मलता--१०२

जब सारा संसार मिल गया हो तेरे मन में घुलकर।
दुःख-दीनता का तब अनुभव कैसे हो सकता दुखकर॥
अहंकार का दुष्ट कीट यह जैसे ही मर जायेगा।
विमल बुद्धि में फैला सारा भ्रम का तम विनशायेगा॥ १॥
"सबमें एक प्राण" --यह निश्चय कर होता न हृदय जर्जर।
हुआ मग्न मन दया-धार में, टिकता नहीं वेदना-(ज्वर)॥ २॥
चित्-स्वभाव को जान, जानकर उसकी महाशक्ति के कार्य।
अगणित चिन्ताएँ, बाधाएँ नहीं सतातीं सदा निवार्य॥ ३॥
संस्थित होकर ब्राह्मी स्थिति में (जग के सारे) काम करो।
ईश्वर का है कथन कि संस्थित-प्रज्ञ बनो, जग में विचरो॥
चाहे जितनी करो वंचना जो ब्राह्मी स्थिति में स्थित है।
नहीं डरेंगे वे भूतल से (उनका हृदय व्यवस्थित है)॥ ४॥
आत्मा के प्रकाश-सागर में नित्य लगाते जो गोते।
ऐसे आत्म-परायण मानव भय से नहीं भीत होते॥
उमड़ पड़ा है मधु प्रवाह की धारा का निर्मल निर्झर।
रे मन! उसको पहिचानो तुम रक्खो उसको संचित कर॥ ५॥

कल्पना-नगरी (स्वप्न-नगरी)---१०३

स्वप्नों की नगरी नामक है एक मनोहर दिव्य नगर।
ऐसा कहते लोग— "खेलते वहाँ अमित गन्धर्व-निकर"॥
स्वप्न-देश शोभित प्रदेश है, रहते हैं जो लोग वहाँ।
वे सब अति आनन्द-मग्न हैं, ऐसा है आनन्द कहाँ?॥ १॥
यह आसन जल के डाकू का है महान जंगी जलयान।
यह जलयान स्पेन सागर पर करनेवाला है प्रस्थान॥
जभी हमारे नगर लौटकर फिर जहाज़ यह आयेगा।
जाने कितने मनुजों का दल डर करके मर जायेगा॥ २॥

कल्पना-नगरी—१०३

[जानस्कर नामक एक अंग्रेजी के विद्वान् ने 'नक्षत्र-दूत' नामक पत्र में एक गीत प्रकाशित कराया था। यह उसका अनुवाद है।]

'स्वप्ननगरी' नामक एक नगर है। कहा जाता है— वहाँ गन्धर्व खेलते हैं। स्वप्न-देश शोभायमान देश है। वहाँ जो जाकर रहते हैं, उन सभी को महान आनन्द प्राप्त होता है। १ यह आसन (तख्त) जलवस्यु का जंगी जहाज है। यह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्नहर् तऩिलोर् इळवरशऩ्— नम्मै
अऩ्बोडु कण्डुरै शॅय्दिडुवाऩ्;
मऩ्ऩवऩ् मुत्तमिट् टॅऴुप्पिडवे— अवऩ्
मऩैवियुम् अॅऴुन्दङ्गु वऩ्दिडुवाळ् 3

अॅक्कालमुम् पॅरु महिऴ्च्चि— यङ्गे
अॅव्वहैक् कवलैयुम् पोरुमिल्लै;
पक्वुवत् तेयिलै नीर् कुडिप्पोम्— अङ्गु
पदुमैकैक् किण्णत्तिल् अळित् तिडवे 4

इऩ्ऩमुदिऱ् कदु नेराहुम्— नम्मै
योवात् विडुविक्क वरुमळवुम्
नऩ्ऩहर दऩिडै वाऴ्न्दिडु वोम्— नम्मै
नलिन्दिडुम् पेयङ्गु वारादे 5

कुऴन्दैहळ् वाऴ्न्दिडुम् पट्टणङ्गाण् अङ्गु
कोल् पन्दु याविऱ्कु मुयिरुण्डाम्
अऴहिय पॊऩ्मुडि यरशिहळाम्— अऩ्ऱि
अरशिळङ् गुमरिहळ् पॊम्मै यॅल्लाम् 6

शॅन्दो लशुरऩैक् कॊऩ्ऱिडवे— अङ्गु
शिऱुविऱ् हॅल्लाम् शुडर्मणि वाळ्
सन्तोषत्तुडऩ् शॅङ्गोलैयुम्— अट्टैत्
ताळैयुङ् गॊण्डङ्गु मऩै कट्टुवोम् 7

कळ्ळरव वीट्टिऩुट् पुहुन्दिडवे— वऴि
काण्ब दिलावहै शॅय्दिडुवोम् ओ !
पिळ्ळैप् पिरायत्तै इऴन्दीरे ! नीर्
पिऩ्ऩुमऩ् निलै पॅऱ वेण्डीरो ? 8

कुऴन्दैह ळाट्टत्तिऩ् कऩवै यॅल्लाम्— अन्दक्
कोल नऩ्ऩाट्टिडैक् काण् बीरे;
इऴन्दनल् लिऩ्बङ्गळ् मीट्कुऱलाम्— नीर्
एहुदिऱ् कऱपऩै नहरिऩुक्के 9

स्पेन-समुद्र में यात्रा करेगा। हमारे अपने नगर में लौटने से पहले अनेक आदमी डरकर मर जायेंगे। २ उस नगर में एक राजकुमार है। वह हमें देखकर हमसे प्रेम से वार्तालाप करेगा। राजा चुम्बन करके अपनी पत्नी को जगा देगा तो वह भी आ जायगी। ३ वहाँ सदा बड़ी बहार है। वहाँ कोई चिन्ता नहीं। कोई युद्ध नहीं। हम उम्दा चाय पियेंगे; उसे एक प्रतिमा हाथ के प्याले में भरकर हमें देगी। ४ वह (चाय) मधुर अमृत-सम रहेगी। जब तक 'सन्त ज्ञान' हमें छुड़ाने नहीं आयेंगे, तब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस नगरी में बसा हुआ है एक मनोहर राजकुमार।
वार्तालाप करेगा हमसे बड़े प्रेम से हमें निहार॥
भूप जगा देगा जब अपनी रानी को चुंबन करके।
तो वह रानी भी आ जायेगी (मन में सनेह भरके)॥ ३॥
वहाँ नहीं है कोई चिन्ता वह नगरी है सदा-बहार।
नहीं युद्ध की विभीषिका है, चाय पियेंगे बारंबार॥
सुन्दरता की प्रतिमा हमको भर-भरकर देती प्याले।
(छक-छक करके चाय पियेंगे हो जायेंगे मतवाले)॥ ४॥
मधुर-सुधा-सम सदा रहेगी वह नव सुन्दरता की खान।
तब तक वहाँ रहेंगे जब तक आयेंगे न छुड़ाने 'जान'॥
नहीं वहाँ पर पहुँच सकेगा हमें सतानेवाला भूत।
(ज़बरन् श्रम से नहीं सामना, मस्ती से होंगे मज़बूत)॥ ५॥
उस सुंदर नगरी में बच्चे बसे हुए हैं सुंदरतर।
गेंद और बल्लों को लेकर खेल खेलते हैं मनहर॥
मुकुट-धारिणी मंजु रानियाँ वहाँ सुहातीं सुंदर हैं।
गुड़ियों जैसी (सजी-सजायी) नृपकुमारियाँ (मनहर) हैं॥ ६॥
लाल चर्मवाले राक्षस को हनने का व्रत धारे हैं।
छोटी-छोटी-सी लकड़ी की चमकदार तलवारें हैं॥
हम सन्तोष-पूर्वक सुंदर आज्ञादण्ड चलायेंगे।
गत्तों और काग़ज़ों से हम घर अति मंजु बनायेंगे॥ ७॥
चोर न घुस पायें उस घर में कर लेंगे प्रबन्ध ऐसा।
जिसे खो चुके पा जायेंगे फिर से हम बचपन वैसा॥ ८॥
देख सकोगे उस नगरी में बच्चों के तुम खेल सकल।
जो सपनों से सुंदर होंगे जो होंगे अत्यन्त नवल॥
बचपन में खो चुके जिन्हें हो उनको लौटा लाओगे।
मीठे-मीठे सुख-स्वप्नों को स्वप्न-नगर में पाओगे॥ ९॥

तक हम उस अच्छे नगर में रहेंगे। हमें सतानेवाला भूत वहाँ नहीं आयगा। ५ वह ऐसा नगर है, जहाँ बच्चे रहते हैं। वहाँ गेंद, बल्ला सभी जीवंत हैं। सुन्दर किरीटधारिणी रानियाँ हैं और सभी गुड़ियाँ राजकुमारियाँ हैं। ६ लाल चमड़ेवाले राक्षस को मारने के लिए छोटी-छोटी लकड़ियाँ ही सुन्दर चमकदार तलवारें हैं। सन्तोष के साथ हम राजदण्ड और भवन को गत्ते के काग़ज़ से बनायेंगे। ७ हम ऐसा प्रबन्ध कर लेंगे कि चोर अन्दर न घुस आयें। ओह! हे बचपन खो चुके लोगो! क्या तुम फिर से वही स्थिति प्राप्त करना नहीं चाहोगे? ८ बच्चों के खेल के सारे स्वप्नों को तुम उस सौन्दर्य-युक्त नगर में देख सकोगे। क्या तुम खोये हुए मीठे सुखों को लौटा सकोगे? जाओ स्वप्ननगर को! ९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पल्वहैप् पाडल्हळ्

1 नीति

पुदिय आत्तिच् चूडि—1

(काप्रपु— परम् बॊरुळ् वाळ्त्तु)

आत्ति शूडि इळम्पिऱै यणिन्दु
मोनत् तिरुक्कुम् मुळ् वॆण् मेनियान्
करु निऱङ् गॊण्डुपाऱ् कडल्मिशैक् किडप्पोन्
महमदु नबिक्कु मऱैयरुळ् पुरिन्दोन्
एशुवित् तन्दै; ऍनप पल मदत्तिनर्
उरुवहत्ताले उणर्न्दुणरादु
पलवहै याहप् परविडुम् परम् बॊरुळ्
ऒन्ऱे; अदनियल् ऒळियुरुम् अऱिवाम्
अदनिलै कण्डार् अल्ललै अहऱ्ऱिनार्;
अदनरुळ् वाळ्त्ति अमरवाळ्वु ऍय्दुवोम्

नूल् (ग्रंथ)

अच्चम् तविर् ऊन् मिह विरुम्बु
आण्मै तवऱेल् ऍण्णुवदु उयर्वु
इळैत्तल् इहळ्च्चि एरु पोल् नड
ईहै तिऱन् ऐम पॊऱि आट्चि कॊळ्
उडलिनै उरुदि शॆय् 5 ऒऱ्ऱुमै वलिमैयाम् 10

१ नीति

['आत्ति शूडि' का अर्थ अगस्त्य पुष्पधारी है। तमिळ में अव्वैयार-कृत 'आत्ति शूडि' नामक एक ग्रंथ है, जिसमें अकारादि क्रम से आरम्भ होनेवाले सूत्र-सम वाक्यों में उपदेश मिलता है। वह शिवजी की प्रार्थना से आरम्भ होता है। यहाँ 'आत्ति शूडि' से आरम्भ होनेवाले इस ग्रंथ में कुछ अभिनव रीति से नवीन उपदेश दिया गया है। 'काप्पु' का अर्थ 'ईश्वर-वन्दना' है, जिसमें रक्षा करने की ईश्वर से प्रार्थना की जाती है।]

नान्दी—"परमवस्तु" की स्तुति—१

अगस्त्य पुष्पों तथा बालचन्द्र से अलंकृत सिरवाले, मौन स्थिति में (योगस्थ) रहनेवाले तथा पूर्ण रूप से श्वेतवर्ण-शरीर-धारी (शिवजी), काला रंग अपनाकर क्षीरसागर में पड़े रहनेवाले विष्णु, नबी मुहम्मद को वेद (ज्ञान) प्रदान करनेवाले,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पल्वहैप् पाडल्हळ्

१ नीति

नान्दी (परमवस्तु की स्तुति)—१

हे अगस्त्य के शुभ सुमनों से बालचन्द्र से शोभित भाल।
होकर लीन योग की स्थिति में हे प्रभु! महाकाल के काल!॥
क्षीर-सिंधु में सोनेवाले श्यामल-वर्ण विष्णु भगवान।
अखिल 'ब्रह्म' से नबी मुहम्मद-जैसे पाते रहते ज्ञान॥
सभी विविध मतवाले जिसके विविध रूप करते कल्पित।
लेकिन सच्चा रूप किसी को हुआ अभी तक नहीं विदित॥
करते सब जिनका आराधन तुम्हीं एक सबके ईश्वर।
तुम ईसा के पूज्य पिता हो (सकल जगत के परमेश्वर)॥
विदित तुम्हारा गुण है जग में बस केवल प्रकाशमय ज्ञान।
उसकी सच्ची स्थिति के ज्ञाता संकट-मुक्त, (न भय का भान)॥
एकेश्वर की अतुल कृपा की मंजुल महिमा गायेंगे।
और अमरता प्राप्त करेंगे (जग में अमर कहायेंगे)॥

ग्रंथ

पौरुष से मत डिगो, सकल भय को तुम त्यागो।
दुर्बलता है निन्दनीय (उससे तुम भागो)॥
दान वस्तुतः कौशल है, उसको अपनाओ।
(करो नित्य व्यायाम) देह को सुदृढ़ बनाओ॥ १-५ ॥
अपने तन पर रखो पूर्ण आस्था जग के जन!।
पाँच इन्द्रियाँ जीत करो तुम उन पर शासन॥
उच्च विचारों से परिपूरित हो अन्तस्तल।
चलो वृषभ-सम, और एकता को समझो बल॥ ६-१० ॥

ईसा मसीह के पिता —इस प्रकार अनेक मतावलम्बी लोग जिनके रूप की कल्पना करते हैं और ज्ञान प्राप्त करते हैं, फिर भी वे (जिनकी) सच्ची स्थिति को नहीं जानने पर भी जिनकी आराधना करते हैं, वह एक ही (परमवस्तु) है। उनका गुण प्रकाशमय बोध (ज्ञान) है। उनकी सच्ची स्थिति के ज्ञाता संकट-मुक्त हैं। हम उनकी कृपा की महिमा गावेंगे और अमरता को प्राप्त करेंगे।

ग्रन्थ

भय का त्याग करो, पौरुष से मत डिगो। कमजोर होना निंद्य है। दान कौशल है। शरीर को दृढ़ बनाओ। ५ शरीर के प्रति आशा रखो। ऊँचा (उदात्त) विचार करो। ऋषभ के समान चलो। पंचेन्द्रियों पर शासन करो। एकता बल है। १०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऑय्दल् ऑळि
ऑडदम् कुऱै
कऱ्ऱुदु ऑळुहु
कालम् अऴियेल्
किळै पल ताङ्गेल् 15
कीळोर्क्कु अञ्जेल्
कुन्ऱैन निमिर्न्दु निल्
कूडित् तॊऴिल् शॆय्
कॆडुप्पदु शोर्वु
केट्टिलुम् तुणिन्दु निल् 20
कॆत्तॊऴिल् पोर्रु
कॊडुमैयै ऍदिर्त्तु निल्
कोल् कॆक्कॊण् डुवाळ्
कव्वियदै विडेल्ये
शरित्तिरन् तेर्च्चि कॊळ् 25
शावदर्कु अञ्जेल्
शिदैया नॆञ्जु कॊळ्
शीऱुवोर्च् चीऱु
शुमैयिनुक्कु इळैत्तिडेल्
शूर्रैप् पोर्रु 30

शॆय्वदु तुणिन्दु शॆय्
शेर्क्कॆ अऴियेल्
शैहैयिल् पॊरुळुणर्
शॊल्वदु तॆळिन्दु शॊल्
शोदिडन् दन्नै यिहऴ् 35
शौरियम् तवऱेल्
ञमलि पोल् वाऴेल्
जायिऱु पोऱ्ऱु
ञिमिरॆन्न इन्बुऱु
ञॆहिऴ्वदु अरुळिन् 40
ञेयम् कात्तल् शॆय्
तन्मै इऴवेल्
ताऴ्न्दु तडवेल्
तिरुविन्नै वॆन्ऱुवाऴ्
तीयोर्क्कु अञ्जेल् 45
तुन्बम् मऱन्दिडु
तूऱ्ऱुदल् ऑळि
दॆय्वम् नी ऍन्ऱुणर्
देशत्तॆक् कात्तल् शॆय्
तैयलै उयर्वु शॆय् 50

थकना छोड़ दो। औषध (सेवन) कम करो। (जो) शिक्षा (पायी है उस) के अनुसार चलो। काल का अपव्यय मत करो। बहुत (मत-मतान्तर रूपी) शाखाएँ मत धारण करो। १५ धूर्तों से मत डरो। पर्वत के समान तनकर रहो। मिलकर काम करो। उकताहट (सब कुछ) बिगाड़ देगी। संकट में भी साहस करो। २० हस्त-कौशल का आदर करो। अत्याचार का सामना करो। दण्ड हाथ में धरकर रहो। विद्या से विराम मत लो। इतिहास में निपुणता प्राप्त करो। २५ मरने से मत डरो। मन अचल रखो। कोपिष्ठ से कोप करो। भार से हार मत मानो। शूरों का आदर करो। ३० जो करो सो साहस के साथ करो। मेल-जोल मत बिगाड़ो। इंगित का अर्थ जानो। जो कहना हो, उसे साफ़ समझकर कहना। ज्योतिष की निंदा करो। ३५ शौर्य से मत हटो। कुत्ते का जीवन मत जिओ। सूर्य की महिमा मानो। भ्रमर के समान सुखी रहो। कृपा से द्रवित हो जाओ। ४० मित्रता का निर्वाह करो। स्वभाव (श्रेष्ठता) मत त्यागो। नीचा होकर मत चलो। श्री को जीते रहो। खलों से मत डरो। ४५ दुख भूल जाओ। बुराई (निंदा) करते हुए फिरना छोड़ो। समझो कि 'तू ही ब्रह्म' ('तत्त्वमसि') है। देश की रक्षा करो। स्त्री का सम्मान करो। ५० प्राचीन से मत डरो। हार में मत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(थोड़ा-सा श्रम करने से ही) थके नहीं तन।
(स्वास्थ्य-नियम लो मान) करो कम ओषधि-सेवन ॥
सोखें मानो, व्यर्थ समय को नहीं बिताओ।
मत-मतान्तरों में न भटक जंजाल बढ़ाओ ॥ ११-१५ ॥

तने रहो गिरि-सम, धूर्तों से नहीं डरो तुम।
आपस में मिल-जुल करके सब काम करो तुम ॥
साहस-नौका पर चढ़ दुख का सिंधु तरो तुम।
ऊबो नहीं, अधैर्य-ऊब से सदा डरो तुम ॥ १६-२० ॥

सीखो मनुजो ! हस्तकला का आदर करना।
अत्याचारों से भिड़ जाओ (कभी न डरना) ॥
दण्ड हाथ में लिये रहो तुम (सदा भयंकर)।
विद्या से विराम मत लो (मनुजो ! जीवन भर) ॥
सम्मुख रख इतिहास, भविष्यत् का प्रकाश लो।
ले अतीत से सीख, भविष्यत् का विकास हो ॥ २१-२५ ॥

नहीं मृत्यु से डरो, और दृढ़ रखो सदा मन।
उस पर करो कोप करता जो तुम पर तर्जन ॥
चाहे जितना भार लदे पर हार न मानो।
वीरवरों शूरों को तुम सदैव सन्मानो ॥ २६-३० ॥

मेल बिगाड़ो मत, साहस से करो काम सब।
संकेतों से बात समझ लो सांकेतिक सब ॥
जो कुछ कहना तुम्हें सभी सुस्पष्ट कहो तुम।
ज्योतिष में न फँसो, उसको बस निन्द्य कहो तुम ॥ ३१-३५ ॥

अरे ! श्वान-सम तुम न बिताओ अपना जीवन।
शौर्य तजो मत, रहो भ्रमर से सदा मुदित मन ॥
(दीन-दुखी को देख) दया से सदा द्रवित हो।
रवि की महिमा मान (स्वस्थ हो सदा सुचित हो) ॥ ३६-४० ॥

तजो न उच्च स्वभाव, खलों से नहीं डरो तुम।
और मित्रता का भी पालन सदा करो तुम ॥
कभी नहीं तुम चलो जगत में नीचा बनकर।
श्री-समृद्धि को जीत रहो (प्रमुदित जीवन भर) ॥ ४१-४५ ॥

भूलो दुख को, त्यागो तुम पर-निंदा करना।
(सकल सच्चिदानन्द) ब्रह्म है, यही समझना ॥
महिलाओं का मान करो (दुख उनके हरना)।
करो देश की रक्षा, शुभ स्वदेश-व्रत रखना ॥ ४६-५० ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तॊन्मैक्कु अञ्जेल्
तोल्वियिल् कलङ्गेल्
तवत्तिन् निदम् पुरि
नन्रु करुदु
नाळॆल्लाम् विन् शॆय् 55

निनैप्पदु मुडियुम्
नीदि नूल् पयिल्
नुनियळवु शॆल्
नूलि नैप पहुत्तुणर्
नॆऱ्ऱि शुरुक्किडेल् 60

नेर् पडप्पेशु
नैयप् पुडै
नॊन्दवु शाहुम्
नोऱ्पदु कैविडेल्
पणत्तिनैप् पॆरुक्कु 65

पाट्टिनिल् अन्बु शॆय्
पिणत्तिनैप् पोऱ्ऱेल्
पीळैक्कु इडङ्गॊडेल्
पुदियन् विरुम्बु
पूमि इहळ्न्दिडेल् 70

पॆरिदिनुम् पॆरिदु केळ्
पेय्हळुक्कु अञ्जेल्
पॊय्म्मै इहळ्
पोर्त्तॊळिल् पळ्हु
मन्दिरम् वलिमै 75

मानम् पोऱ्ऱु
मिडिमैयिल् अळिन्दिडेल्
मीळुमाऱु उणर्न्दु कॊळ्
मुनैयिले मुहत्तु निल्
मूप्पिनुक्कु इडङ् गॊडेल् 80

मॆल्लत् तॆरिन्दु शॊल्
मेळि पोऱ्ऱु
मॊय्म्बुऱत् तबम् शॆय्
मोनम् पोऱ्ऱु
मौट्टियन् दनैक् कॊल् 85

यमनर् पोल् मुयऱ्चि कॊळ्
यावरैयुम् मदित्तु वाळ्
यौवनम् कात्तल् शॆय्
रसत्तिले तेर्च्चि कॊळ्
राजसम् पयिल् 90

घबड़ाओ। नित्य तपस्या करो। भला ही सोचो। सदा क्रियाशील रहो। ५५ जो सोचोगे, वह हो जायगा। नीति-ग्रन्थ का अध्ययन करो। लक्ष्य तक चलो। ग्रन्थ को, विश्लेषण करते हुए पढ़ो। भाल को मत सिकोड़ो (गुस्सा या घृणा मत दिखाओ)। ६० सीधी बात कहो। खूब मारो। जो जर्जर हो, वह मरेगा। व्रत का निर्वाह करना मत छोड़ो। धन को बढ़ाओ। ६५ गाने से प्रेम करो। शव का आदर मत करो। पीड़ा को स्थान मत दो। नवीन वस्तुएँ चाहो। भूमि को मत खो दो। ७० बड़े से बड़ा माँगो। भूतों से मत डरो। असत्य को दुत्कारो। युद्धकला का अभ्यास करो। मंत्र बल (-दाता) है। ७५ मान (गौरव) का मान (आदर) करो। कंगाली में मत मर मिटो। लौटना जानो। (किसी भी बात में) आगे रहो। वार्धक्य को ध्यान मत दो। ८० पाँव फूँककर धीरे-धीरे रखो। हल (कृषि) का पालन करो। सुदृढ़ रूप से तपस्या करो। मौन का पालन करो। मूढ़ता का हनन करो। ८५ यवनों के समान प्रयत्न सीखो। सभी का आदर करो। यौवन की रक्षा करो। रसिकता में कुशल बनो। राजस का अभ्यास करो। ९०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सबके हित-चिन्तक बन, सबका भला मनाओ।
(तुम सब हिम्मत हार) हार से मत घबराओ॥
नित्य तपस्या करो सर्वदा रहो क्रिया-रत।
"यह तो है प्राचीन" समझकर कभी डरो मत॥ ५१-५५॥

सदा नीति-ग्रन्थों का दृढ़ अभ्यास करो तुम।
लक्ष्य मानकर चलने का सुप्रयास करो तुम॥
विश्लेषण कर ग्रंथ नीति के करो अध्ययन।
मन-सोचा सब प्राप्त करोगे, दृढ़ रक्खो मन॥ ५६-६०॥

सीधी बात कहो, संहारो सभी (शत्रु जन)।
मर जायेगा शीघ्र बनेगा जो जर्जर तन॥
मत छोड़ो तुम कभी (अखंडित), व्रत का पालन।
(करके दृढ़ उद्योग) बढ़ाओ (नित अक्षय) धन॥ ६१-६५॥

करो गान से प्रेम, करो मत शव का आदर।
पीड़ा को दो नहीं कभी सुस्थान (रंच भर)॥
नई वस्तुओं को चाहो (अपनाओ उनको)।
रक्षा करना, नहीं गँवाना भूमि-रतन को॥ ६६-७०॥

युद्ध-कला का करो सतत अभ्यास अखंडित।
बल-दाता है मंत्र (बताते वैदिक पंडित)॥
भूतों से मत डरो, झूठ को है ठुकराना।
वस्तु बड़ी से बड़ी याचना उर में लाना॥ ७१-७५॥

आदर करो सदा गौरव का, स्वाभिमान-युत।
निर्धनता है पाप, निधनता में मरना मत॥
सदा कुपथ से लौटो, अत्ति न होने देना।
अग्रगण्य है शोभा, (अहम् न आने देना)॥ ७६-८०॥

भू पर रक्खो धीरे-धीरे पाँव फूँककर।
कृषि का पालन करो, तपस्या करो सुदृढ़तर॥
मूढ़-भाव को दूर करो तुम मार भगाओ।
(व्यर्थ बको मत) मौन-भाव को तुम अपनाओ॥ ८१-८५॥

यवनों की-सी यत्नशीलता सीखो प्रियवर!।
(करो निरादर नहीं) करो तुम सबका आदर॥
राजस का अभ्यास, रसिकता में प्रवीण हो।
यौवन-रक्षा में सचेत होओ, प्रवीण हो॥ ८६-९०॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रीदि तवरेल्
रुशि पल वॆन्रुणर्
रूपम् शॆम्मै शॆय्
रेहैयिल् कनि कॊळ्
रोदनम् तविर् 95
रौत्तिरम् पळहु
लवम् पल वॆळ्ळमाम्
लाहवम् पयिऱ्चि शॆय्
लीलै इव् उलहु
(उ) लुत्तरै इहळ् 100

(उ) लोहनूल् कऱ्ऱुणर्
लौहिकम् आऱ्रु
वरुवबै महिळ्न्दुण्
वाननूल् पयिऱ्चि कॊळ्
विदैयिनैत् तॆरिन्दिडु 105
वीरियम् पॆरुक्कु
वॆडिप्पुरप् पेशु
वेदम् पुदुमै शॆय्
वैयत् तलैमै कॊळ्
बौद्धल् नीक्कु 110

पाप्पाप् पाट्टु—2

ओडि विळैयाडु पाप्पा— नी, ओय्न्दिरुक्क लाहादु पाप्पा !
कूडि विळैयाडु पाप्पा— ऑरु, कुळन्दैयै वैयादे पाप्पा ! 1
शिन्नञ् जिरु कुरुवि पोल— नी, तिरिन्दु परन्दु वा पाप्पा !
वन्नप् परबै हळैक् कण्डु— नी, मनत्तिल् महिळ्च्चि कॊळ्ळु पाप्पा 2
कॊत्तित् तिरियु मन्दक् कोळि— अवैक्, कूट्टि विळैयाडु पाप्पा
अॆत्तित् तिरुडु मन्दक् काक्काय्— अदऱ्कु, इरक्कप् पडवेणुम् पाप्पा ! 3
पालैप् पॊळिन्दु तरुम् पाप्पा— अन्दप्, पशु मिह नल्लदडि पाप्पा
बालैक् कुळैत्तु वरुम् नाय्दान्— अदु, मनिदर्क्कुत् तोळनडि पाप्पा ! 4

रीति का उल्लंघन मत करो। विविध रुचियों का अस्तित्व मानो। रूप को ठीक ठीक करो। मर्यादा में फल प्राप्त करो। रुदन से बचो। ९५ रौद्र का अभ्यास करो। अनेक बूँदें प्रवाह बन जाती हैं। लाघव सीखो। यह संसार लीला है। कंजूस की निंदा करो। १०० लोक-सम्मत शास्त्र का ग्रन्थ पढ़ो। लौकिकता का निर्वाह करो। जो मिलता है, उसका भोग करो। नक्षत्र-शास्त्र सीख लो। बीज को चुन लो। १०५ वीरता को बढ़ा लो। खुलकर बोलो। वेद का नवीनीकरण करो। संसार का नेतृत्व करो। लोभ का त्याग कर दो। ११०

शिशु-गीत—२

दौड़ो, खेलो, नन्हे ! तुम्हें थका रहना नहीं चाहिए ! नन्हे ! (सबसे) मिलकर खेलो, नन्हे ! किसी बच्चे को गाली मत दो, नन्हे ! १ छोटे पंक्षी के समान तुम घूमकर उड़ आओ, नन्हे ! रंग-बिरंगे पक्षियों को देखकर, नन्हे, तुम मन में खुश हो जाओ। २ चुनकर खाता फिरता है वह कुक्कुट—उसे पास बुलाकर उसके साथ खेलो। छल से चुराएगा वह कौआ। उस पर तरस खाना है, नन्हे ! ३ दूध को बहाकर देती है, नन्हे, वह गाय बड़ी अच्छी है। दुम हिलाता आता है वह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पालन करते रहो रीति का करो न लंघन।
रुचियाँ विविध अनेक (उन्हें पहिचानो निज मन)॥
रूप सँवारो, तेजस्विता प्राप्त कर प्रियजन!।
बचो रुदन से (हो अधीर मत, करो न क्रन्दन)॥ ९१-९५॥
बूँद-बूँद मिल-मिलकर बन जाती है धारा।
करो रौद्र अभ्यास (योग का तन-मन द्वारा)॥
लीला यह संसार सभी है लीलाधर की।
धिक्कारो कंजूस, सीख सीखो लघुपन की॥ ९६-१००॥
पढ़ो मान्य सब शास्त्र निभाओ लौकिकताएँ।
कर खगोल अध्ययन हरो जग की विपदाएँ॥
करो प्रेम से भोग सहज में जो मिल जाए।
(रत्न-सरीखे) सभी बीज चुन लो (मनभाये)॥१०१-१०५॥
लोभ त्यागकर बनो विश्व के तुम नव-नायक।
नवीकरण वेदों का कर दो (वेद-विधायक)॥
स्पष्ट बात तुम कहो (गुप्त आशय सब खोलो)।
मन-भावों में विपुल वीरता का रस घोलो॥१०६-११०॥

शिशु-गान—२

खेलो-कूदो, दौड़ो नन्ही-नन्हो! सुन्दर।
तुमको थकना नहीं चाहिए बच्चो! पल भर॥
खेल-कूद कर सभी (मनाओ तुम खुशियालीं)।
अरे! नहीं दो कभी किसी बच्चे को गाली॥ १॥
छोटे पक्षी के समान तुम (मोद मनाओ)।
घूमो उसके ही समान (फुदको) उड़ आओ॥
रंग-बिरंगे विविध पक्षियों को लख पाओ।
खुश हो जाओ (मन में फूले नहीं समाओ)॥ २॥
वह मुर्गा खाता देखो दाने चुन-चुनकर।
पास बुलाकर खेलो तुम उससे हिल-मिलकर॥
नन्ही-नन्हो! सदा तरस उस पर तुम खाना॥
छल से अवसर पर खा जाय न काक सयाना। ३॥
देती तुमको दूध (सदा मन खुश हो जाता)।
बच्चो! कैसी भली तुम्हारी गैया माता॥
देखो, कुत्ता अपनी टेढ़ी पूँछ हिलाता।
तुम सबसे वह सदा मिलता है अपनाता॥ ४॥

कुत्ता, नन्हे वह मनुष्य का मित्र है। ४ गाड़ी खींचता है वह अच्छा घोड़ा। धान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वण्डि इळुक्कुम् नल्ल कुदिरै— नॅल्लु, वयलिल् उळुदु वरुम् माडु
अण्डिप् पिळैक्कुम् नम्मै आडु— इवै, आदरिक्क वेणु मडि पाप्पा 5

कालै ऍळुन्दवुडन् पडिप्पु— पिन्बु, कनिवु कॊडुक्कुम् नल्ल पाट्टु
मालै मुळुदुम् विळैयाट्टु— ऍन्ऱु, वळक्कप् पडुत्तिक् कॊळ्ळु पाप्पा 6

पॊय् शॊल्लक् कूडादु पाप्पा— ऍन्ऱुम्, पुऱम् जॊल्ल लाहादु पाप्पा
दॆय्वम् नमक्कुत् तुणै पाप्पा— ऑरु, तीङ्गु वर माट्टादु पाप्पा 7

पादहम् जॆय्बवरैक् कण्डाल्— नाम्, बयङ् गॊळ्ळ लाहादु पाप्पा
मोदि मिदित्तु विडु पाप्पा !— अवर्, मुहत्तिल् उमिळ्न्दु विडु पाप्पा 8

तुन्बम् नॆरुङ्गि वन्द पोदुम्— नाम्, शोर्न्दु विडलाहादु पाप्पा !
अन्बु मिहुन्द दॆय्व मुण्डु— तुन्बम्, अत्तनैयुम् पोक्कि विडुम् पाप्पा ! 9

शोम्बल् मिहक् कॆडुदि पाप्पा !– ताय्, शॊन्न शॊल्लैत् तट्टादे पाप्पा !
तेम्बि यळुङ् गुळन्दै नॊण्डि— नी, दिडङ् गॊण्डु पोरादु पाप्पा 10

तमिळ्त् तिरुनाडु तन्नैप् पॆऱ्ऱ— ऍङ्गळ्, तायॆन्ऱु कुम्बिडडि पाप्पा !
अमिळ्दिल् इनियदडि पाप्पा !— नम् आन्ऱोर्हळ् देशमडि पाप्पा 11

शॊल्लिल् उयर्वु तमिळ्च् चॊल्ले;— अदैत्, तॊळुदु पडित्तिडडि पाप्पा
शॆल्वम् निऱैन्द हिनुदुस्तानम्— अदैत्, तिन्नमुम् पुहळ्न् दिडडि पाप्पा 12

के खेत में हल खींचता है वह बैल। बकरी हमारे आश्रय में जीती है। इनका पालन करना चाहिए, नन्हे ! ५ सवेरे उठते ही पढ़ना, फिर दिल को द्रवित करनेवाला गीत गाना, शाम भर खेलना—यह आदत डाल लो, नन्हे ! ६ झूठ बोलना नहीं चाहिए, नन्हे ! कभी चुगली मत करो। ईश्वर हमारा सहायक है। कोई हानि नहीं होगी, नन्हे ! ७ पाप का काम करनेवालों से हमें भय नहीं करना चाहिए, नन्हे ! उन्हें पैरों तले रौंद दो। नन्हे ! उनके मुख पर थूक दो। ८ दुःख पास आवे, तो भी हमें मन को मारना नहीं चाहिए। नन्हे ! ईश्वर प्यार भरा है। वह सारे दुःखों को दूर कर देगा। नन्हे ! ९ आलस्य बहुत बुरा है, नन्हे ! माता के वचन का उल्लंघन मत करो। नन्हे ! सिसकने-रोनेवाली बच्ची लँगड़ी जैसी होती है। (अतः) तुम साहस के साथ लड़ो। नन्हे ! १० शुभ तमिळनाडु को जननी मानकर उसकी पूजा करो। नन्हे ! अमृत से भी यह (देश) मधुर है। नन्हे रे ! यह महात्माओं का देश है। ११ शब्दों में श्रेष्ठ तमिळ शब्द है। नन्हे ! उसको आदरपूर्वक पढ़ो। धन-समृद्ध है हिन्दुस्तान, उसकी रोज महिमा गाओ, नन्हे ! १२ उत्तर में हिमालय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

खींच रहा गाड़ी देखो, यह सुन्दर घोड़ा।
खींच रहा हल खेत बीच बैलों का जोड़ा॥
सदा तुम्हारे आश्रय में बकरी मन-भावन।
नन्ही-नन्हो ! करो सदा तुम इनका पालन॥ ५ ॥

सदा सबेरे नन्ही-नन्हो ! तुम उठ जाओ।
पढ़ो-लिखो, मन हरनेवाला गायन गाओ॥
साँझ-समय खेलो-कूदो आनंद मनाओ।
यह आदत लो डाल (कभी तुम दुख मत पाओ)॥ ६ ॥

कभी न बोलो झूठ (सीख सुन्दर अपनाओ)।
नन्ही-नन्हो ! नहीं किसी की चुगली खाओ॥
परमेश्वर है (सदा) सहायक (अरे !) तुम्हारा।
हानि न होगी देगा तुमको (सदा) सहारा॥ ७ ॥

अगर पाप करनेवाले मिल जायें दुर्जन।
मत होना भयभीत न करना कभी मलिन मन॥
नन्ही-नन्हो ! उन्हें पैर से तुम ठुकराना।
मुख पर देना थूक (न उनसे मेल बढ़ाना)॥ ८ ॥

यदि दुख आवे पास (नहीं तुम हिम्मत हारो)।
नन्ही-नन्हो ! नहीं डरो, मत मन को मारो॥
प्यार-भरा है ईश्वर उसको सदा पुकारो।
वह सारे दुख दूर करेगा नहीं बिसारो॥ ९ ॥

बहुत बुरा आलस है उसको नहीं धरो मन।
माता के वचनों का नहीं करो उल्लंघन॥
पंगु-सदृश बच्ची ही रोती और सिसकती।
तुम साहस से लड़ो (न विपदा कुछ कर सकती)॥ १० ॥

तमिळनाडु को जन्मदायिनी माता मानो।
उसकी पूजा करो सदा उसको सन्मानो॥
नन्ही-नन्हो ! मधुर सुधा से भी बढ़कर है।
देश महात्माओं का यह (अतिशय सुन्दर है)॥ ११ ॥

शब्द तमिळ के सर्वश्रेष्ठ सबसे सुंदर हैं।
तुम आदर से पढ़ो उन्हें (वे अति मनहर हैं)॥
धन-समृद्ध है प्यारा भारतवर्ष हमारा।
उसकी महिमा गाओ (वह प्राणों से प्यारा)॥ १२ ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वडक्किल् इमैय मलै पाप्पा— तॆऱ्किल्, वाळुम् कुमरि मुनै पाप्पा
किडक्कुम् पॆरिय कडल् कण्डाय्— इदन्, किळक्किलुम् मेऱ्किलुम् पाप्पा 13
वेद मुडैयदिन्द नाडु— नल्ल, वीरर् पिऱन्द दिन्द नाडु
शेद मिल्लाद हिन्दुस्तानम्— इदैत्, तॆय्वमॆन्ऱु कुम्बिडडि पाप्पा 14
शादिहळ् इल्लैयडि पाप्पा– कुलत्, ताळ्च्चि उयर्च्चि शॊल्लल् पावम्
नीदि उयर्न्द मदि कल्वि— अन्बु, निऱैय उडैयवर्हळ् मेलोर् 15
उयिर् हळिडत्तिल् अन्बु वेणुम्— दॆय्वम्, उण्डॆन्ऱु तानऱिदल् वेणुम्
वयिर मुडैय नॆञ्जु वेणुम्— इदु, वाळुम् मुऱैमैयडि पाप्पा 16

मुरशु—3

वॆऱ्ऱि अॆट्टुत् तिक्कुम् अॆट्टक् कॊट्टु मुरशे !
वेदम् अॆन्ऱुम् वाळ्ह अॆन्ऱु कॊट्टु मुरशे !
नॆऱ्ऱि यॊऱ्ऱैक् कण्णनोडे निर्त्तनम् शॆय्दाळ्
नित्त शक्ति वाळ्ह अॆन्ऱु कॊट्टु मुरशे !
ऊरुक्कु नल्लदु शॊल्वेन्— अॆनक्
कुण्मै तॆरिन्ददु शॊल्वेन्
शीरुक् कॆल्लाम् मुदलाहुम्— ऒरु
दय्वम् तुणै शॆय्य वेण्डुम् 1
वेद मऱिन्दवन् पार्प्पान्— पल
वित्तै तॆरिन्दवन् पार्प्पान्
नीदि निलै तवऱामल्— तण्ड
नेमङ्गळ् शॆय्बवन् नाय्क्कन् 2

पर्वत है। दक्षिण में रास कुमारी है। इसके पूर्व और पश्चिम में, देखो ! नन्हे, पड़ा रहता है विशाल समुद्र। १३ वेद हैं इस देश में। इसमें अच्छे वीर पैदा हुए। अविच्छिन्न है यह हिन्दुस्तान। इसे ईश्वर मानकर इसकी पूजा करो। १४ जातियाँ नहीं होतीं। कुल का ऊँच-नीच कहना पाप है। जिनके पास न्याय, श्रेष्ठ मति, विद्या, प्रेम विपुल हैं, वे ऊँचे हैं। १५ जीवों से प्रेम (करना) चाहिए। ईश्वर सत्य है —यह जान लेना चाहिए। वज्र-सम दिल चाहिए। यही जीवन की रीति है। रे नन्हे ! १६

नगाड़ा—३

नगाड़े बजाओ। विजय (-ध्वनि) आठों दिशाओं में फैले। बजाओ। ऐसे बजाओ कि वेद सदा रहे ! बजाओ कि जिसने भाल-नेत्र शिवजी के साथ नर्त्तन किया, वह नित्य शक्ति अमर रहे ! मैं बस्ती के लिए अच्छी बात कहूँगा। मुझे जो सत्य दीखता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इसकी उत्तर ओर हिमालय पर्वत संस्थित।
रास कुमारी इसकी दक्षिण ओर सुशोभित॥
पूर्व दिशा में शोभित मंजु (वंग) सागर है।
पश्चिम में लहराता लखो (अरब-)सागर है॥ १३॥

वेदों की नवज्योति उई है इस भारत में।
वीरों की उत्पत्ति हुई है इस भारत में॥
प्यारा भारतवर्ष हमारा अविच्छिन्न है॥
इसकी पूजा करो ईश से यह न भिन्न है॥ १४॥

जाति-भेद विध्वंसक है उसको मत मानो।
ऊँच-नीच का भेद-भाव तुम कभी न जानो॥
प्रेम, न्याय, शुभमति, विद्या के जो निधान हैं।
पूजनीय हैं वही, वही सबसे महान हैं॥ १५॥

सब जीवों से प्रेम करो सबको सन्मानो।
ईश्वर सत्यरूप है इसको (समझो) जानो॥
हृदय वज्र-सा दृढ़ कर लो (तो नहीं भीति है)।
नन्ही-नन्हो ! जग-जीवन की यही रीति है॥ १६॥

नगाड़ा—३

बजो दुन्दुभी ! विजय गुँजाएँ आठ दिशाएँ।
बजो दुन्दुभी ! गूँजें नभ में वेद-ऋचाएँ॥
त्रिनयन शिव के साथ नित्य करती जो नर्तन।
बजो दुन्दुभी ! "शक्ति" रहे वह अमर सनातन॥
बात कहूँगा मैं जिससे हो बस्ती का हित।
वही कहूँगा मुझे सत्य जो होगा भासित॥
सभी वैभवों के कहलाते आदिम कारण।
वह परमेश्वर बनें सहायक (विपति-विदारण)॥ १॥

जो वेदों में, विद्याओं में पारंगत है।
वही व्यक्ति ब्राह्मण कहलाने योग्य नियत है॥
न्याय न बिगड़े दंड-नियम ऐसा जो जाने।
वही श्रेष्ठ नायक क्षत्रिय है (वेद बखाने)॥ २

है, वह बताऊँगा। सभी वैभवों (अभ्युदय) का जो आदि कारण है, वह अकेला ईश्वर सहायता करे। १ वेद को जानता है पारपूपान (ब्राह्मण)। अनेक विद्याएँ जो जानता है, वह ब्राह्मण है। न्याय की गति न बिगड़े, यह जो दण्ड, नियम जानता है वह नायक (राजा या क्षत्रिय) है। २ सामान बेचनेवाला शेट्टि (श्रेष्ठ व्यापारी) है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पण्डङ्गळ् विऱ्पवन् शॆट्टि— पिऱर्
पट्टिनि तीर्प्पवन् शॆट्टि
तॊण्डरॆन्ऱोर् वहुप्पिल्लै— तॊळिल्
शोम्बलैप् पोल् इळिविल्लै 3
नालु वहुप्पुम् इङ्गॊन्ऱे— इन्द
नान्गिनिल् ऒन्ऱु कुऱैन्दाल्
वेलै तवऱिच् चिदैम्दै— शॆत्तु
वीळ्न्दिडुम् मानिडच् चादि 4
ऒऱ्ऱैक् कुडुम्बन् दनिले— पॊरुळ्
ओङ्ग वळर्प्पवन् तन्वै
मऱ्ऱैक् करुमङ्गळ् शॆय्वै— मनै
वाळ्न्दिडच् चॆय्बवळ् अन्नै 5
एवल्हळ् शॆय्बवर् मक्कळ्— इवर्
यावरुम् ओर् कुलम् अन्ऱो ?
मेवि अनैवरुम् ऒन्ऱाय्— नल्ल
वीडु नडत्तुदल् कण्डोम् 6
शादिप् पिरिवुहळ् शॊल्लि— अदिल्
ताळ् वॆन्ऱुम् मेलॆन्ऱुम् कॊळ्वार्
नीदिप् पिरिवुहळ् शॆय्वार्— अङ्गु
नित्तमुम् शण्डैहळ् शॆय्वार् 7
शादिक् कॊडुमैहळ् वेण्डाम्— अन्बु
तन्निल् शॆळित्तिडुम् वॆयम्
आदर वुऱ्ऱिङ्गु वाळ्वोम्— तॊळिल्
आयिरम् माण् बुऱच् चॆय्वोम् 8
पॆण्णुकुक् ञानत्तै बॆत्तान्— पुवि
पेणि वळर्त्तिडुम् ईशन्;
मण्णुक्कुळ्ळे शिल मूडर्— नल्ल
मादर ऱिबॆक् कॆडुत्तार् 9

दूसरों की भूख शान्त करता है शेट्टि। सेवक (नौकर या दास) नामक कोई वर्ग होता ही नहीं। कामचोरी के समान नीच कुछ नहीं होता है। ३ चारों वर्ग (वर्ण) यहाँ एक (सम-समान) हैं। इन चारों में से एक की भी कमी हो जाय तो कार्य शिथिल पड़ जायगा और मानव जाति ही गिरकर मर जायगी। ४ एक कुटुम्ब लें। अर्थ अर्जन करता व बढ़ाता है पिता। अन्य कार्य करके घर को जिलाये रखती है माता। ५ उनकी आज्ञा का पालन संतानें करती हैं। ये सब एक ही घर के नहीं हैं क्या ? हम देखते हैं कि ये सब मिल-जुलकर गृहस्थी चलाते हैं। ६ जाति-भेद बताकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वैश्य कहाता है क्रय - विक्रय करनेवाला।
अन्नादिक दे भूख सभी की हरनेवाला ॥
वर्ग नहीं कोई होता है सेवक नामक।
नीच काम चोरी - सम कोई नहीं भयानक ॥ ३ ॥

चारों वर्णों के नर एक समान यहाँ हैं।
(ऐसे उपयोगी समाज के भाग कहाँ हैं ?) ॥
चारों वर्णों बीच वर्ण कोई यदि कम हो।
मिट जाए नर जाति शिथिल सबका सब श्रम हो ॥ ४ ॥

पिता अर्थ-अर्जन करके परिवार जिलाता।
पालन-पोषण करके सबको सदा बढ़ाता ॥
करके घर के काम-काज (सुख - सुविधा - दाता)।
घर को जीवित रखती (ममतावाली) माता ॥ ५ ॥

उनकी सन्तानें करती हैं आज्ञा - पालन।
रहते सदा एक घर में हिल-मिल सब परिजन ॥
मिल - जुलकर गृह-कार्य सभी सारे निपटाते।
सुख - पूर्वक जग बीच गृहस्थी सदा चलाते ॥ ६ ॥

जाति - भेद का भेद-भाव कुछ जन बतलाते।
ऊँच - नीच का भेद-भाव (भीषण) उपजाते ॥
सदा न्याय में भेद किया करते हैं भारी।
नित्य कलह करते रहते अतिशय दुखकारी ॥ ७ ॥

जाति - भेद के कारण अत्याचार नहीं हो।
सुखी सभी संसार (विषम व्यवहार नहीं हो) ॥
बनकर आदर - पात्र रहें जग में हम जीवित।
अगणित उद्योगों - धन्धों को करें विनिर्मित ॥ ८ ॥

पृथ्वी के पालनकर्ता उस परमेश्वर ने।
बुद्धि नारियों को सौंपी उस जगदीश्वर ने ॥
पर कुछ स्वार्थी मूर्खों ने इस पृथ्वीतल पर।
शुद्ध-बुद्धि हर किया विकृत नारी का अन्तर ॥ ९ ॥

लोग उनमें ऊंच-नीच का भाव मानते हैं। वे न्याय में भेद करते हैं और नित्य झगड़ा करते हैं। ७ जाति के नाम पर अत्याचार न हो। प्रेम से संसार सुख-समृद्ध बना रहेगा। आदर के पात्र बनकर हम जी सकेंगे और हजार उद्योग-धंधे स्थापित कर देंगे। ८ भू-पालक ईश ने स्त्री को (भी) बुद्धि प्रदान की। पर पृथ्वी में कुछ मूर्खों ने नारियों की शुद्ध-बुद्धि को बिगाड़ दिया। ९ क्या दो आँखों में से एक को बाँधकर दृष्टि को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्गळ् इरण्डिनिल् ऑन्ऱैक्— कुत्तिक्
काट्चि कॆडुत्तिड लामो ?
पॆण्ग ळऱिवं वळर्त्ताल्— वैयम्
पेदैमै यऱ्ऱिडुङ् गाणीर् 10
दॆय्वम् पलपल शॊल्लिप्— पहैत्
तोयै वळर्प्पवर् मूडर्;
उय्व दनैत्तिलुम् ऑन्ऱाय्— ऍङ्गुम्
ओर् पॊरुळानदु दॆय्वम् 11
तोयिनैक् कुम्बिडुम् पार्प्पार्— नित्तम्
तिक्कै वणङ्गुम् तुरुक्कर्
कोयिर् चिलुवैयिन् मुन्नै— निन्ऱु
कुम्बिडुम् येशु मदत्तार् 12
यारुम् पणिन्दिडुम् दॆय्वम्— पॊरुळ्
यावित्तुम् निन्ऱिडुम् दॆय्वम्
पारुक्कुळ्ळे तॆय्वम् ऑन्ऱु— इदिल्
पऱ्पल शण्डैहळ् वेण्डाम् 13
वॆळ्ळै निऱत्तॊरु पूनै— ऍङ्गळ्
वोट्टिल् वळरुदु कण्डोर्;
पिळ्ळैहळ् पॆऱ्ऱ दप् पूनै— अवै
पेरुक् कॊरु निऱमाहुम् 14
शाम्बल् निऱमॊरु कुट्टि— करुञ्
जान्दु निऱमॊरु कुट्टि
पाम्बु निऱमॊरु कुट्टि— वॆळ्ळैप्
पालिन् निऱमॊरु कुट्टि 15
अन्द निऱमिरुन्दालुम्— अवै
यावुम् ऑरे तरमन्ऱो ?
इन्द निऱम् शिऱिदॆन्ऱुम्— इःदु
एऱ्ऱ मॆन्ऱुम् शॊल्ल लामो ? 16
वण्णङ्गळ् वेऱ्ऱुमैप् पट्टाल्— अदिल्
मालुडर् वेऱ्ऱुमै यिल्लै;
ऍण्णङ्गळ शॆय्हैह ळॆल्लाम्— इङ्गु
यावर्क्कुम् ऑन्ऱॆनल् काणीर् 17

बिगाड़ना ठीक है ? स्त्रियों की बुद्धि को विकसित होने दें, तो देखो, दुनिया जड़ता (अज्ञता) को दूर कर देगी। १० अनेक देशों के नाम बताकर मूर्ख लोग वैर की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दो आँखों में एक आँख को करके मीलित।
दृष्टि विकृत कर देना क्या होता है समुचित ?॥
अबलाओं की बुद्धि अरे ! होने दो विकसित।
जग से जड़ता मिट जायेगी जो है प्रसरित॥ १०॥

भिन्न - भिन्न देवों के अगणित नाम बताकर।
धधकाते हैं मूर्ख वैर की आग भयंकर॥
जड़-जंगम जो भी पदार्थ हैं इस धरती पर।
उन सबके ही बीच एक ही बसता ईश्वर॥ ११॥

ब्राह्मण करते अग्निदेव का (शुभ) पूजन हैं।
नित्य-दिशा के पूजक सारे तुर्क (यवन) हैं॥
गिरजाघर के सम्मुख संस्थित होकर (भाई !)।
नमन क्रास का सदा किया करते ईसाई॥ १२॥

ये सब जन पूजन करते हैं जिस ईश्वर का।
सबके अन्तर्यामी (व्यापक अखिलेश्वर का)॥
परब्रह्म वह एक सभी का है इस जग में।
झगड़े-झंझट व्यर्थ सभी होते पग-पग में॥ १३॥

पली हुई है एक श्वेत बिल्ली मेरे घर।
बच्चे दिये कई रँग के हैं अतिशय सुन्दर॥ १४॥

मटमैला है एक, एक अंजन-सा काला।
एक क्षीर-सम, सर्प-सरिस है एक निराला॥ १५॥

भिन्न-भिन्न है रंग एक माता के सुत सब।
कौन रंग है नीच, किसे हम श्रेष्ठ कहें अब॥ १६॥

वर्ण-भेद से भेद नहीं मनुजों में पाते।
एक-समान विचार, कार्य सबके दिखलाते॥ १७॥

आग को बढ़ाते हैं। जो भी रहते-जीते हैं, उन सभी में एक ही वस्तु अर्थात् ईश्वर विद्यमान है। ११ अग्निपूजक ब्राह्मण, नित्य-दिग्पूजक तुरुक, गिरजाघर के सामने खड़े होकर क्रास को नमस्कार करनेवाले ईसाई लोग, १२ उन सभी से पूजित ईश्वर, सभी वस्तुओं का अन्तर्यामी ब्रह्म—इस संसार में एक ही है। (अतः) इसमें विविध (प्रकार के) लड़ाई-झगड़े न हों। १३ सफ़ेद रंग की एक बिल्ली हमारे घर में पल रही है। उसने बच्चे दिये। वे अलग-अलग रंग के हैं। १४ एक बच्चा राख के रंग का है। काले अंजन का रंग लिये एक बच्चा है। सर्प के रंगवाला एक है। श्वेत क्षीर के समान रंगवाला एक बच्चा है। १५ रंग चाहे जो हो—क्या वे सब एक ही प्रकृति के नहीं हैं ? क्या हम यह कहें कि यह रंग नीच है और वह रंग श्रेष्ठ है ? १६ वर्ण-भेद हो तो भी मनुष्यों में भेद नहीं हो जाता। यह देखिए कि विचार तथा काम सबके समान ही होते हैं। १७ हे नगाड़े ! बजो इस बात को बताते हुए कि इस विशाल संसार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निहरॆन्ऱु कॊट्टु मुरशे— इन्द
नीणिलम् वाळ्बव रॆल्लाम्
तहरॆन्ऱु कॊट्टु मुरशे— पॊय्म्मैच्
चादि वहुप्पिनै यॆल्लाम् 18
अन्बॆन्ऱु कॊट्टु मुरशे— अदिल्
आक्क मुण्डामॆन्ऱु कॊट्टु
तुन्बङ्गळ् यावुमे पोहुम्— वॆऱुम्
जूदुप् पिरिवुहळ् पोनाल् 19
अन्बॆन्ऱु कॊट्टु मुरशे— मक्कळ्
अत्तनै पेरुम् निहराम्
इन्बङ्गळ् यावुम् पॆरुहुम्— इङ्गु
यावरुम् ऒन्ऱॆन्ऱु कॊण्डाल् 20
उडन् पिऱन्दार्हळैप् पोल— इव्
वुलहिल् मनिद रॆल्लारुम्;
इडम् पॆरिदुण्डु वैयत्तिल्— इदिल्
एदुक्कुच् चण्डैहळ् शॆय्वीर् 21
मरत्तिनै नट्टवन् तण्णीर्— नन्गु
वार्त्तै ओङ्गिडच् चॆय्वान्
शिरत्तै युडैयदु दॆय्वम्— इङ्गु
शेर्न्द उणवॆल्लै यिल्लै 22
वयिऱ्ऱुक्कुच् चोऱुण्डु कण्डीर् !— इङ्गु
वाळुम् मनिदरॆल् लोर्क्कुम्
पयिऱ्ऱि उळ्ळुदुण्डु वाळ्वीर् !— पिऱर्
पङ्गैत् तिरुडुदल् वेण्डाम् 23
उडन् पिऱन्दवर्हळैप् पोले— इव्
वुलहिनिल् मनिद रॆल्लोरुम्
तिडङ् गॊण्डवर् मॆलिन्दोरै— इङ्गु
तिन्ऱु पिळैत् तिडलामो ? 24
वलिमै युडैयदु दॆय्वम्— नम्मै
वाळ्न्दिडच् चॆय्वदु दॆय्वम्

के सभी निवासी समान हैं। झूठे जाति-भेद मिट जायँ—ऐसा यह घोषित करते हुए बज उठो। १८ प्रेम का ढिंढोरा पीटो। हे नगाड़े! उससे अभ्युदय होगा। ये खोखले तथा वंचक भेद दूर हो जायँगे, तो सभी संकट मिट जायँगे। १९ प्रेम की दुन्दुभी बजाओ, नगाड़े! सभी लोग आपस में सम हैं। अगर यह मान लेंगे, तो सुख बढ़ेंगे। २० संसार के सभी लोग सहोदर हैं, विश्व विशाल है। फिर आपस में क्यों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बजो दुंदुभी ! सब समान हैं इस भूतल पर।
इस विशाल संसार-बीच जो बसते हैं नर॥
थोथे झूठे जाति-भेद ये सब मिट जाओ।
बजो दुंदुभी ! करो घोषणा, विश्व गुँजाओ॥ १८॥
प्रेम-दुन्दुभी बजो (सभी जग होगा उन्नत)।
होगा नव अभ्युदय (बनेगा विश्व समुन्नत)॥
ये वंचक खोखले भेद सब मिट जायेंगे।
(जग के उग्र विकट) संकट सब कट जायेंगे॥ १९॥
अरी दुन्दुभी ! (मधुर) प्रेम का वाद्य बजाओ।
एक-समान सभी मानव हैं, यह बतलाओ॥
यदि यह (शुभ सिद्धान्त सभी मानव) अपना लें।
सुख-समृद्धि की वृद्धि तभी सम्भव सब पा लें॥ २०॥
जग के सभी मनुष्य सहोदर हैं, यह मानो।
विश्व विशाल (विचित्र अनोखा है पहचानो)॥
आपस में क्यों लड़ते-भिड़ते (वैर बढ़ाते)।
(बन्धु मानकर क्यों न प्रेम से गले लगाते)॥ २१॥
इस धरती पर अरे ! लगायेगा जो तरुवर।
उसे बढ़ायेगा जल से वह सींच - सींचकर॥
सावधान ईश्वर ने जग उत्पन्न किया है।
सबके खाने को उसने खाद्यान्न दिया है॥ २२॥
रखो दृढ़ विश्वास मिलेगा सबको भोजन।
भर जायेगा पेट (सभी होंगे सुतृप्त जन)॥
करो परिश्रम, खेती जोतो, भोजन पाओ।
और किसी का भाग कभी भी नहीं चुराओ॥ २३॥
इस जग के सारे मानव हैं सगे सहोदर।
सबल जियें क्यों बलहीनों को यहाँ सताकर॥ २४॥
ईश्वर है बलवान कर रहा सबका पालन।
चाहे वह हो सबल और चाहे निर्बल जन॥

लड़ते हो ? २१ जो पेड़ लगा चुका है वह उसे खूब पानी सींचकर बढ़ने देगा। ईश्वर सावधान है। यहाँ जो मिला है, उस खाद्य का कोई अन्त नहीं है। २२ पेट को खाना मिल जायगा— विश्वास कर लो। यहाँ रहनेवाले सभी लोगों का पेट भर जायगा। परिश्रम करो, खेती करो और भोजन करो। दूसरों का भाग चुराना नहीं है। २३ इस संसार के सभी इन्सान सहोदर हैं। फिर मजबूत लोग कमजोरों को खाकर (सताकर) क्यों जियें ? २४ ईश्वर बलवान है। वही हमारा पालन करता है। बच्चा निर्बल हो, तो भी क्या उसकी निर्बलता का फ़ायदा उठाकर उसको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मॆलिवु कण्डालुम् कुळ्ळन्दै— तन्नै
वीळ्त्ति मिदित् तिड लामो ? 25
तम्बि शर्र्रे मॆलिवान्नाल्— अण्णन्
तान्नडिमै कॊळ्ळ लामो ?
शॆम्बुक्कुम् कॊम्बुक्कुम् अञ्जि— मक्कळ्
शिर्र्रडिमैप् पड लामो ? 26
अन्बॆन्रु कॊट्टु मुरशे !— अदिल्
यार्क्कुम् विडुदलै उण्डु
पिन्बु मन्निदर्ह ळॆल्लाम्— कल्वि
पॆर्र्रुप् पदम् पॆर्र्रु वाळ्वार् 27
अरिवै वळर्त्तिड वेण्डुम्— मक्कळ्
अत्तन्नै पेरुक्कुम् ऒन्रराय्;
शिरियारै मेम्बडच् चॆय्दाल्— पिन्बु
दॆय्वम् ऎल्लारैयुम् वाळ्त्तुम् 28
पारुक्कुळ्ळे शमत्तन्मै— तॊडर्
पर्र्रुञ् जहोदरत् तन्मै
यारुक्कुम् तीमै शॆय्यादु— पुवि
यॆङ्गुम् विडुदलै शॆय्युम् 29
वयिर्र्रुक्कुच् चोरिड वेण्डुम्— इङ्गु
वाळुम् मन्निदरुक् कॆल्लाम्
पयिर्र्रिप् पल कल्वि तन्दु— इन्दप्
पारै उयर्त्तिड वेण्डुम् 30
ऒन्रॆन्रु कॊट्टु मुरशे !— अन्बिल्
ओङ्गॆन्रु कॊट्टु मुरशे !
नन्रॆन्रु कॊट्टु मुरशे !— इन्द
नान्निल मान्दरुक् कॆल्लाम् 31

गिराकर रौंद दिया जाय ? २५ छोटा भाई कमजोर हो, तो क्या बड़ा भाई उसे दास बना ले ? ताँबे (के सिक्कों से) तथा लाठी से डरकर क्या लोग नीच दास बन जायँ ? २६ प्रेम की घोषणा करते हुए बजो, नगाड़े ! उसमें सबको स्वतन्त्रता है। फिर लोग विद्यार्जन करेंगे, पद पायेंगे और श्रेष्ठ जीवन जियेंगे। २७ बुद्धि को पैनी बना लो—सभी लोगों की बुद्धि समान रूप से विकसित हो। छोटों को तारो, तो ईश्वर सबका भला करेगा। २८ विश्व में समता, स्नेह रखनेवाला सहोदरत्व—ये किसी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निर्बलता से फिर क्यों अनुचित लाभ उठाते ? ।
उसे गिराते रौंद-रौंदकर (क्यों इतराते) ।। २५ ।।

यदि हो निर्बल अनुज नहीं क्या अनुज कहाता ? ।
अग्रज उसको निबल जान क्या दास बनाता ।।
धन के लालच में आकर, लाठी से डरकर ।
बन जायेंगे नीच दास क्या इस जग के नर ? ।। २६ ।।

बजो दुन्दुभी ! करो प्रेम की प्रबल घोषणा ।
स्वतंत्रता है सबको सब मिल करो गर्जना ।।
विद्यार्जन कर विज्ञ सभी नर हो जायेंगे ।
जीवन होगा श्रेष्ठ उच्च पद सब पायेंगे ।। २७ ।।

सबकी बुद्धि समान रूप से ही बढ़ जाये ।
बुद्धि बना लो तीक्ष्ण, मूर्खता सब विनशाये ।
जो दीनों-दुखियों का दुख-दारिद्र्य हरेंगे ।
उन सब लोगों का ईश्वर भी भला करेंगे ।। २८ ।।

सभी विश्व पर स्नेह भाव हो समतावाला ।
और सहोदर - भाव - रूप सम्बन्ध निराला ।।
ये इस जग में नहीं किसी की हानि करेंगे ।
स्वतंत्रता संसार बीच सर्वत्र भरेंगे ।। २९ ।।

जो मानव हैं आज यहाँ के रहनेवाले ।
मिल जायें सबको सदैव भर-पेट निवाले ।।
शिक्षा दे सिखला दें हम विभिन्न विद्याएँ ।
इस प्रकार हम सारे जग को उच्च बनायें ।। ३० ।।

हे दुन्दुभी ! बजो तुम यह घोषणा कराओ ।
सभी एक हैं, मिल आपस में प्रेम बढ़ाओ ।।
भूमि-वासियों का मंगल कल्याण मनाओ ।
ऐसी (मधुमय राग-भरी) दुन्दुभी बजाओ ।। ३१ ।।

की हानि नहीं करेंगे और संसार में सर्वत्र स्वतन्त्रता ला देंगे । २९ यहाँ रहनेवाले सभी लोगों को पेट भर खाना देना चाहिए । शिक्षा देकर, विविध विद्याएँ सिखाकर इस संसार को ऊपर उठाना चाहिए । ३० 'सभी एक हैं' —यह घोषणा बजाओ नगाड़े ! ऐसा बजाओ (घोषित करो)—यही भूमि के सभी निवासियों के लिए भला, है । ३१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

2 समूहम्

पुदुमैप्पॆण्—4

पोऱ्ऱि पोऱ्ऱि ! ओर् आयिरम् पोऱ्ऱि ! निन्
पॊन्नडिक्कुप् पल्लायिरम् पोऱ्ऱि काण् !
शेऱ्ऱिले पुदिदाह मुळैत्तदोर्
शॆय्य तामरैत् तेमलर् पोलॊळि
तोऱ्ऱि निन्ऱनै बारद नाट्टिले
तुन्बम् नीक्कुम् सुदन्दिर बेरिगै
शाऱ्ऱि वन्दनै, मादरशे ! अॆङ्गळ्
शादि शॆय्द तवप्पयन् वाळि नी ! 1
मादर्क्कुण्डु सुदन्दिरम् अॆन्ऱुनिन्
वण्मलर्त् तिरुवायिन् मॊळिन्द शॊल्
नादन् दानतु नारदर् वीणैयो ?
नम्विरान् कण्णन् वेय्ङ्गुळल् इन्बमो ?
वेदम् पॊन्नुरुक् कन्निहै याहिये
मेन्मै शॆय्दमैक् कात्तिडच् चॊल्वदो ?
शादल् मूत्तल् कॆडुक्कुम् अमिळ्दमो ?
तैयल् वाळ्हपल् लाण्डुपल् लाण्डिङ्गे 2
अऱिवु कॊण्ड मनिद वुयिर्हळै
अडिमैयाक्क मुयल्बवर् पित्तराम्;
नॆऱिहळ् याविनुम् मेम्बट्टु मानिडर्
नेर्मै कॊण्डुयर् तेवर्हळादर्के
शिऱिय तॊण्डुहळ् तीर्त्तडिमैच् चुरुळ्
तीयिलिट्टुप् पॊशुक्किड वेण्डुमाय्;
नऱिय पॊन्मलर् मॆन् शिऱु वायिनाल्
नङ्गै कूऱुम् नवोनङ्गळ् केट्टिरो ? 3

---

२ समूह

समाज, आधुनिक तरुणी—४

आधुनिक तरुणी ! बधाई ! बधाई ! हज़ार बधाई ! तुम्हारे स्वर्णचरणों को अनेक सहस्र बधाई है ! (पोऱ्ऱि—आदर का, पूजा का, सम्मान का भाव दिखानेवाला शब्द है।) भारत देश में तुम पंक में उदित पंकज के समान नयी शोभा दिखाती हुई खड़ी हो। दुखहारी स्वतन्त्रता की भेरी बजाती आयी हो। हे नारी रानी ! हमारी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

२ समाज-सम्बन्धी कविताएँ

आधुनिक-तरुणी—४

हे आधुनिके ! तरुणि ! तुम्हें सौ बार बधाई।
स्वर्ण-चरण को, तरुणि ! हज़ारों बार बधाई॥
हो तुम विकसित हुई पंक में पंकज जैसी।
भारत-भू पर दिव्य छटा छिटकातीं कैसी॥
स्वतंत्रता की बजा रही भेरी दुखहारी।
तप का फल हो, धन्य हो गई जाति हमारी॥
चिरंजीव हो, जय हो, जय हो, जय हो नारी !।
(गूँज उठे सारे जग में जयकार तुम्हारी)॥ १ ॥
करी घोषणा तुमने अपने श्रेष्ठ वदन से।
"है स्वतंत्र नारी (दब सकती नहीं दमन से)"॥
नारद-वीणा सम निनाद वह स्वतंत्रता का।
कृष्णचन्द्र की मुरली-सा सुमधुर स्वर बाँका॥
श्रुति, बन स्वर्ण-सुन्दरी करती नहीं बड़ाई ?।
मृत्यु - वृद्धता हरनेवाली सुधा सुहाई !॥
चिरंजीव तुम रहो तरुणि ! शत-शत वर्षों तक।
नव गौरव से दीप्त तुम्हारा होवे मस्तक॥ २ ॥
बुद्धिमान मनुजों को जो जन दास बनाते।
वे नर पागल के समान ही हैं कहलाते॥
यदि मनुजों को सभी पथों में आगे बढ़कर।
बनना है (शुभ) देव (शुद्ध) सात्त्विक स्वरूप धर॥
सभी नीचता और दासता दूर भगायें।
दास - प्रतिज्ञा - पत्र जलाकर दूर बहायें॥
शुभ सुगन्ध से पूर्ण सनें हैं रसमय सुख से।
सुनें न अभिनव वचन देवि के सुन्दर मुख से ?॥ ३ ॥

जाति के तप का फल हो तुम। जय हो तुम्हारी। १ तुमने अपने उत्कृष्ट मुख से घोषणा भी की कि नारी का भी स्वतन्त्रता पर अधिकार है। वह नाद क्या नारद की बीणा का नाद (नहीं) है ? क्या वह हमारे प्रभु श्रीकृष्ण की मुरली की ध्वनि का माधुर्य (नहीं) है ? क्या वेद स्वर्ण-सुन्दर स्त्री बनकर हमारी बड़ाई के लिए (नहीं) कह रहा है ? क्या वह वार्धक्य तथा मरण को मिटानेवाला अमृत (नहीं) है ? हे नारी ! तुम जियो अनेक वर्ष ! (जय जीव) ! २ बुद्धिमान मानवों को दास बनाने का प्रयास करनेवाले लोग पागल हैं। अगर मनुष्यों को सभी मार्गों में आगे बढ़कर सात्त्विक रूप से देव बनना है, तो नीच दासता का इक़रारनामा जलाकर फेंक देना चाहिए। जिन्हें इस देवी ने अपने सुगन्धपूर्ण सुन्दर मुख से अधुनातन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Foundation, LKS

आणुम् पॅण्णुम् निहरॅनक् कॊळ्वदाल्
अऱिवि लोङ्गि इव्वैयहम् तऴैक्कुमाम्;
पूणु नल्लऱत् तोडिङ्गु पॅण्णुरुप्
पोन्दु निऱ्पदु ताय् शिव शक्तियाम्;
नाणुम् अच्चमुम् नाय्हट्कु वेण्डुमाम्;
ञान नल्लऱम् वीर सुदन्दिरम्
पेणु नऱ्कुडिप् पॅण्णिन् कुणङ्गळाम्;
पॅण्मैत् तॅय्वत्तिन् पेच्चुहळ् केट्टिरो ? 4
निलत्तिन् तन्मै पयिर्क्कुळ दाहुमाम्
नीशत् तॊण्डुम् मडमैयुम् कॊण्डताय्
तलत्तिल् माण्बुयर् मक्कळैप् पॅऱ्ऱिडल्
शालवे यरिदावदोर् शॅय्दियाम्;
कुलत्तु मादर्क्कुक् कऱ्पियल् बाहुमाम्
कॊडुमै शॅय्दु मऱिवै यऴित्तुमन्
नलत्तैक् काक्क विरुम् बुदल् तीमैयाम्;
नङ्गै कूरुम् वियप्पुहळ् केट्टिरो ? 5
पुदुमैप् पॅण्णिवळ् शॊऱ्कळुम् शॅय्हैयुम्
पॊय्मै कॊण्ड कलिक्कुप् पुदिदन्ऱिच्
चदुर् मऱैप्पडि मान्दर् इरुन्द नाळ्
तन्निले पॊडुवान् वळक्ककमाम्;
मदुरत्ते मॊऴि मङ्गैयर् उण्मै तेर्
मादवप् पॅरि योरुड नॊप्पुऱ्ऱे
मुदुमैक् कालत्तिल् वेदङ्गळ् पेशिय
मुऱैमै माऱिडक् केडु विळैन्ददाम् 6

रूप से घोषित किया है, उन नवीन वचनों को क्या आपने (नहीं) सुना ? ३ स्त्री-पुरुष की समानता मानी जाय, तो यह विश्व बुद्धि में वृद्धिंगत होगा तथा सुसमृद्ध होगा। वह यही कहती है। यहाँ जो धर्मनिष्ठ स्त्री के रूप में आयी है, वह माता शिवशक्ति है। लाज और भय कुत्तों को चाहिए। श्रेष्ठ कुल में जात स्त्रियों की पहचान है ज्ञान, उच्च धर्मपालन, वीरता तथा स्वतन्त्रता। उस नारीदेवी का यह वचन सुना (नहीं) आपने ? ४ वह कहती है कि धरती का गुण पौधों को प्राप्त होता है। नीच दासता और मूर्खता से युक्त माता-भूमि श्रेष्ठ संतान को जन्म दे —यह बहुत ही कठिन है ——यही उसका कहना है। कुलीन स्त्रियों के लिए शील (पातिव्रत्य) सहज गुण है। पर अत्याचार करके बुद्धि को बिगाड़कर उसका पालन करने पर मजबूर किया जाय, तो वह बुरा है। देवी का यह विस्मयकारी वचन सुना (नहीं) तुमने ? ५ आधुनिकता (बरतनेवाली) इस लड़की के वचन, कृत्य झूठ से भरे कलिकाल में नये

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"नर-नारी में यदि समानता मानी जाए।
तो हो विश्व समृद्ध बुद्धिशाली बन जाए॥
जो धार्मिक-पत्नी-स्वरूप बनकर है आई।
उसी "शक्ति माता" ने है यह बात बताई॥
पशुओं-श्वानों-हित समुचित है (विस्मय, व्रीडा)।
(निद्रा), भय, (आहार) और सुखमय रतिक्रीडा॥
ज्ञान, धर्म-पालन, स्वतंत्रता-भरी वीरता।
श्रेष्ठ-वंश-उत्पन्न स्त्रियों की यही श्रेष्ठता॥
कहती है शिव-शक्ति-रूपिणी नारी देवी।
सुना (मनोहर) वचन आपने (देवी-सेवी)?॥ ४॥

वह देवी शिवशक्ति बात कहती यह सुन्दर।
"धरती का गुण प्राप्त करेंगे सारे तरुवर॥
नीच दास औ' मूर्ख नारि की कोख प्राप्त कर।
श्रेष्ठ-सन्तती-जन्म (असंभव) दुष्कर दुस्तर॥
सहज-शील कुलवधुओं का पातिव्रत गुण है।
पर बलात् पालन करवाना अति दुर्गुण है॥
करके अत्याचार बुद्धि को विकृत बनाकर।
उसके पालन हेतु विवश करता कोई नर॥
तो वह अतिशय निन्दनीय, अत्यन्त अशुभ है"।
विस्मय-प्रद यह वचन सुना देवी का शुभ है?॥ ५॥

ये नव तरुणि आधुनिकता की ही परिणति हैं।
कर्म, वचन सब झूठ-नये "कलि" की उत्पति हैं॥
वेद-रीति-अनुसार जभी रहते थे सब जन।
तब यह शुभ व्यवहार निभाती थीं रमणी जन॥
"मधु-समान थी मधुर मनोहर उनकी वाणी"।
थीं प्राचीन काल में ऐसी शुभ कल्याणी॥
"जो सत्यज्ञ-महान-तपस्वी से थे सम्मत।
ऐसे वेदवाक्य कहतीं मुख से सब अविरत॥
वह क्रम बिगड़ा (समय चक्र के परिवर्तन से)।
यह अवनति हो गई (कही जाती न वदन से)॥ ६॥

हैं ही; साथ-साथ वे उन दिनों के आम व्यवहार थे, जिन दिनों लोग चतुर्वेदनिर्दिष्ट रीति से चलते थे। वह पुराना समय था, जब ये मधु-मधुर-वाणी नारियाँ सत्यज्ञ तथा महान तपस्वी गुरुजनों द्वारा सम्मत वेदवाक्य कहती थीं। वह क्रम बिगड़ा और यह हानि हो गयी। ६ सीधी अच्छी चाल, सीधी दृष्टि, धरती में निडर चाल, पूर्ण ज्ञान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निमिर्न्द नन्नडै नेर् कॊण्ड पार्वैयुम्
निलत्तिल् यार्क्कुम् अञ्जाद नॆऱिहळुम्
तिमिर्न्द ञानच् चॆरुक्कुम् इरुप्पदाल्
शॆम्मै मादर् तिऱम्बुव दिल्लै याम्;
अमिऴ्न्दु पेरिरुळा मऱि यामैयिल्
अवल मॆय्दिक् कवलैयिन्ऱि वाऴ्वदै
उमिऴ्न्दु तळ्ळुदल् पॆण्णऱमाहुमाम्
उदय कन्नि उरैप्पदु केट्टिरो (रे)! 7
उलह वाऴ्क् कैयिन् नुट्पङ्गळ् तेरबुम्
ओदु पऱ्पल नूल्वहै कऱ्कबुम्
इलहु शीरुडै नाऱ्ऱिशै नाडुहळ्
याबुऱ् जॆन्ऱु पुदुमै कॊणर्न्दिङ्गे
तिलह वाणुद लार् नङ्गळ् बारद
देशमोङ्ग उऴैत्तिडल् वेण्डुमाम्;
बिलहि वीट्टिलोर् पॊन्दिल् वळर्वदै
वीरप् पॆण्गळ् बिरैबिल् ऒऴिप्परान् 8
शात्तिरङ्गळ् पलपल कऱ्परान्!
शवुरियङ्गळ् पल पल शॆय्वरान्!
मूत्त पॊय्म्मैहळ् यावुम् अऴिप्परान्
मूडक् कट्टुहळ् यावुन् दहर्प्परान्
कात्तु मानिडर् शॆय्है यनैत्तैयुम्
कडवुळर्क् किनिदाहच् चमैप्परान्
एत्ति आण्मक्कळ् पोऱ्ऱिड वाऴ्वरान्
इळैय नङ्गैयिन् ऎण्णङ्गळ् केट्टिरो! 9
पोऱ्ऱि पोऱ्ऱि! जय जय पोऱ्ऱि! इप्
पुदुमैप् पॆण्णॊऴि वाऴि पल्लाण् डिङ्गे!

का गर्व —इन सबके होने से, वह कहती है, श्रेष्ठ स्त्रियाँ शील नहीं छोड़तीं। बड़े अज्ञान रूपी अन्धकार में मग्न होकर बुरी दशा में निश्चिन्त रहने की प्रवृत्ति को ठुकरा देना स्त्रीधर्म है —वह ऐसा कहती है। इस उदीयमान नवकन्या की बात तुम सुन रहे हो न? ७ संसार-जीवन के सूक्ष्म तत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना, पठनीय विविध ग्रंथों का अध्ययन, पहले से उन्नत रहनेवाले चारों दिशाओं के देशों में जाकर नवीन विषयों को इधर लाकर भारत देश की उन्नति के लिए निरन्तर परिश्रम करना —यह तिलक से अलंकृत खड्ग-सम भालवाली स्त्रियों को करना चाहिए। अलग रहकर घर रूपी कोटर में पलने की प्रथा को वीर नारियाँ शीघ्र मिटा देंगी। ८ वे कहती हैं— हम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"सीधी अच्छी चाल दृष्टि भी सरल महज हो।
निडर चाल हो भरी ज्ञान की गर्व-(गरज) हो॥
शीलवती कहलातीं ये सब गुण होने पर।
ऐसा हैं कह रही आधुनिक रमणी सुन्दर॥
जो अज्ञान-तिमिर में रमणी (डूब रही हैं)।
बुरी दशा में मूक पड़ी हैं ऊब रही हैं॥
उनकी यह दुर्दशा दूर करना सुकर्म है।
नव-नारी कह रही सुरक्षित तब सुधर्म है॥ ७ ॥

"जग-जीवन के सूक्ष्म तत्त्व का ज्ञान जान लें।
पढ़ने योग्य विविध ग्रंथों का सार छान लें॥
सभी दिशाओं के उन्नत देशों में जायें।
उन देशों से यहाँ नये विषयों को लायें॥
(यदि ऐसा श्रम करें नवल नारियाँ निरन्तर)।
तो भारत हो उन्नत विकसित सुखमय सुन्दर॥
तिलक-अलंकृत, खड्ग-सरिस जो मस्तक-वाली।
करें नारियाँ वह स्वदेश को उन्नतिशाली॥
घर के कोटर में पलने की प्रथा मिटायें।
वीर नारियाँ शीघ्र (देश को उच्च बनायें)॥ ८ ॥

"भिन्न-भिन्न शास्त्रों का वे अध्ययन करेंगी।
बढ़े अनेक असत्यों का वे दमन करेंगी॥
शौर्य दिखायेंगी वे अपने (उत्साहित-मन)।
शीघ्र तोड़ देंगी वे सारे अन्धे बन्धन॥
करके निज कर्तव्य ईश्वरार्पण कर देंगी।
पुरुषों से सम्मानित निज जीवन कर लेंगी"॥
सुनो, आधुनिक बालाओं के ये विचार हैं।
इन्हीं विचारों का करती वे सब प्रसार हैं॥ ९ ॥

हे आधुनिके रमणी ! तुमको आज बधाई।
चिरंजीव हो (उन्नति अपनी करो सवाई)॥

विविध शास्त्रों का अध्ययन करेंगी। हम अनेक शौर्य दिखायेंगी। हम पुराने पड़े हुए अनेक झूठों का निराकरण करेंगी। सारे अन्धे बन्धनों को तोड़ देंगी। सभी मानव-कृत्य करके ईश्वरार्पण करेंगी —ऐसा जीवन जियेंगी कि पुरुष भी हमें सम्मानित करें। क्या आपने सुने —बालाओं के ये विचार ? ९ बधाई, बधाई ! जय, जय ! बधाई ! इस आधुनिकता की नारी की शोभा अनेक वर्ष जिए। दुनिया को बदलकर,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

माऱ्ऱि वैयम् पुदुमै युऱच् चैय्दु
मनिदर् तम्मै अमरर् हळाक्कवे
आऱ्ऱल् कॊण्ड पराशक्ति यन्ऱै नल्
अरुळिन्ना लॊरु कन्ऱिहै याहिये
तेऱ्ऱि उण्मैहळ् कूऱिड वन्दिट्टाळ्
शॆल्वम् याविनुम् मेऱ्चॆल्वम् अॆय्दिनोम् 10

पॆण्गळ् वाळ्ह !—5

पॆण्मै वाळ्हॆन्ऱु कूत्तिडु वोमडा !
पॆण्मै वॆल्हॆन्ऱु कूत्तिडु वोमडा !
तण्मै इन्बमनर् पुण्णियञ् जेर्न्दन
तायिन् पेरुम् सति अॆन्ऱ नाममुम् 1
अन्बु वाळ्हॆन् ऱमैदियिल् आडुवोम्
आशैक् कादलैक् कैकॊट्टि वाळ्त्तुवोम्
तुन्बम् तीर्वदु पॆण्मैयि नालडा
शूरप् पिळ्ळैहळ् तायॆन्ऱु पोऱ्ऱुवोम् ! 2
वलिमै शेर्प्पदु ताय् मुलैप्पालडा !
मानञ् जेर्क्कुम् मनॆवियिन् वार्त्तैहळ्;
कलियळिप्पदु पॆण्गळ् अऱमडा !
कैहळ् कोर्त्तुक् कळित्तु निन् ऱाडुवोम् 3
पॆण्ण ऱत्तिनै आण्मक्कळ् वीरन्दान्
पेणुमायिन् पिऱहॊरु ताळ्विल्लै !
कण्णैक् काक्कुम् इरण्डिमै पोलवे
कादलिन्बत्तैक् कात्तिडु वोमडा ! 4

नवीन बनाकर मानवों को भी अमर बनाने की शक्ति रखनेवाली माता पराशक्ति की श्रेष्ठ कृपा से एक कन्या का रूप लेकर यह नयी मानव पुतली हमें ढाढ़स देने तथा सत्य समझाने के लिए प्रकट हुई और हमें (उसके रूप में) सर्वश्रेष्ठ निधि हाथ लग गयी। १०

देवियाँ जियें—५

अरे, हम नाचें यह कहते हुए कि नारीत्व जिए। नारीत्व जीते। माता के शब्द में तथा सती के नाम में शीतल सुख तथा पावन पुण्य मिल गये। १ प्रेम सुख से जिए। इस शान्ति के साथ हम नाचें। हम प्रेम-प्रणय की ताली बजाकर जय गायें। नारीत्व से ही, रे, दुख दूर होता है। शूर सन्तानों की माता मानकर हम उसको बधाई दें। २ अरे, बल देता है माता की छाती का दूध ही। पत्नी के वचन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जिये आधुनिक-नारी-शोभा शत वर्षों तक।
(नारी-गौरव से प्रदीप्त हो मंजुल मस्तक)॥
जो जग को परिवर्तित करती नया बनाती।
और नरों को अमर बना निज शक्ति दिखाती॥
ऐसी माता पराशक्ति ने कृपा दिखायी।
धरकर कन्या रूप नयी पुतली यह आयी॥
आयी है यह हमें सत्य को समझाने को।
ढाढ़स देने (शोक हमारा विनशाने को)॥
मिली हमें निधि श्रेष्ठ सभी निधियों से बढ़कर।
(नव-नारी हो प्रकट दे रही यह सुन्दर वर)॥ १०॥

देवियाँ जियें—५

"चिरंजीव नारीत्व रहे" —यह कहकर नाचें।
विजयी हो नारीत्व (उसी के गुण गण बाँचें)॥
कहकर माता शब्द सती का नामोच्चारण।
मुख शीतल होगा मिल जायें पुण्य सुपावन॥ १॥

प्रेम सुखी हो चिरजीवी हो (यह हम बाँचें)।
इसी शान्ति के साथ मुदित होकर हम नाचें॥
प्रेम-प्रणय की बजा तालियाँ हम जय गायें।
दुख हरता नारीत्व (यही समझें - समझायें)॥
शूर सुतों की माता को नारी हम मानें।
उसे बधाई दे करके उसको सम्मानें॥ २॥

माँ का ही है मधुर दूध अतिशय बलदायक।
वधू - वचन है मान बढ़ाते, सदा - सहायक॥
स्त्री का धर्माचरण कुटिल कलि का बल हरता।
कर में कर, मस्ती से नाचें (तजें अलसता)॥ ३॥

हो नारी का धर्म पुरुष - पौरुष से पोषित।
पतन न होगा और (न होगा कोई शोषित)॥
रक्षक बनकर जो दृग-रक्षा करतीं प्रतिक्षण।
उन पलकों - सम करें प्रणय-सुख का हम रक्षण॥ ४॥

हमारा मान बढ़ाने में सहायक होते हैं। कलि का नाश स्त्रियों का धर्माचरण ही करता है। अरे, हाथ मिलाकर मस्ती के साथ नाचें, आओ। ३ स्त्री के धर्म को पुरुष की वीरता पुष्ट करे, तो फिर कोई पतन नहीं होगा। आँख की रक्षक पलकों के समान हम प्रणय-सुख की रक्षा करें। ४ हम शक्ति-सुधा का पान करें। हम इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शक्ति यॆन्ऱ मदुवै युण्बोमडा
ताळङ् गॊट्टित् तिशैहळ् अदिरवे
ऒत्ति यल्लदोर् पाट्टुम् कुळल्हळुम्
ऊर्वियक्कक् कळित्तु निन्ऱाडुवोम् 5
उयिरैक् काक्कुम् उयिरिनैच् चेर्त् तिडुम्
उयिरिनुक् कुयिराय् इन्ऱ माहिविडुम्
उयिरिनुम् इन्दप् पॆण्मै इनिदडा
ऊडु कॊम्बुहळ्; आडु कळि कॊण्डे 6
'पोऱ्ऱि ताय्' ऎन्ऱु तोळ् कॊट्टि याडुवीर्
पुहळ्च्चि कूऱुवीर् कादऱ् किळिकट्के;
नूऱ्ऱि रणडु मलैहळैच् चाडुवोम्
नुण्णि डैप्पॆण् णॊनुत्ति पणियिले 7
'पोऱ्ऱि ताय्' ऎन्ऱु ताळङ्गळ् कॊट्टडा !
'पोऱ्ऱि ताय्' ऎन्ऱु पॊऱ्कुळलूदडा !
काऱ्ऱि लेऱियव् विण्णैयुऱ् जाडुवोम्
कादऱपॆण्गळ् कडैक्कण् पणियिले 8
अन्न मूट्टिय दॆय्व मणिक्कैयिन्
आणै काट्टिल् अन्नलै बिळङ्गुवोम्;
कन्नत्ते मुत्तम् कॊण्डु कळिप्पिनुम्
कैयैत् तळ्ळुम् पॊऱ्कैहळैप् पाडुवोम् 9

पॆण्गळ् विडुदलक् कुम्मि—6

काप्पु

पॆण्गळ् विडुदलै पॆऱ्ऱ महिळ्च्चिहळ्
पेशिक् कळिप् पॊडु नाम् पाडक्

तालियाँ बजाएँ कि दिशाएँ थर्रा उठें। लय के साथ गीत-गान तथा वाद्य-नाद करें और देश को विस्मित करते हुए आनन्द के साथ हम नाचें। ५ अरे, यह नारीत्व प्राणों का पालन करेगा; प्राणों को प्राणों से मिला देगा, प्राणों का प्राण-सुख बन जायगा। अरे यह नारीत्व प्राणों से भी प्रिय है। नरसिंघा बजाओ। मस्ती के साथ नाचो। ६ 'माता की जय !' कहकर कन्धे ठोंककर नाचो। प्रेम के शुकों (प्रियाओं) को महिमा के वचन सुनाओ। पतली कमरवाली तरुणी की आज्ञा हो तो हम एक सौ दो या दो सौ (इस प्रकार असंख्य) पर्वतों को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। ७ 'माता की जय' कहकर झाँझ बजाओ। माता की जय मनाते हुए मुरली बजाओ। हम प्रेमिका स्त्रियों की आँख की कोर का इंगित होने पर हवा पर चढ़कर आकाश से भी भिड़ जायँगे। ८ अन्न खिलानेवाले दिव्य मणिमय (सुन्दर) हाथ आज्ञा का संकेत करें तो हम आग को भी निगल जाएँगे। हम उन हाथों का यशोगान गायँगे, जो गाल में चुम्बन देने पर मन में मुदित होते हुए भी (चुम्बन देनेवाले पति के) हाथों को हटा देते हैं। ९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शक्ति-सुधा का पान करें (हम मोद मनाएँ)।
करतल - ध्वनि से (सभी) दिशाएँ थर्रा जाएँ ॥
लय से गाएँ, (मधुर) नाद से वाद्य बजाएँ।
देश सुविस्मित कर सुख से हम नाच दिखाएँ ॥ ५ ॥
यह नारीत्व करेगा प्राणों का परिपालन।
यह नारीत्व मिला देगा प्राणों को पावन ॥
यह प्राणों के लिए प्राण-सुख बन जाएगा।
नारीत्व प्राण से भी प्रियतर बन जाएगा ॥
(होकर प्रमुदित) नरसिंघे का वाद्य बजाओ।
मस्ती से नाचो (गाओ औ' मोद मनाओ) ॥ ६ ॥
"माता की जय" कहकर स्कन्ध ठोंककर नाचो।
प्रेयसियों के हेतु, वचन महिमा के बाँचो ॥
पतली कटिवाली तरुणी की आज्ञा पाकर।
चूर-चूर कर देंगे (पल में) शत-शत गिरिवर ॥ ७ ॥
माता की जय कहकर तुम तालियाँ बजाओ।
मुरली बजा-बजा माता की विजय मनाओ ॥
हम प्रेयसियों के कटाक्ष के संकेतों पर।
नभ से भिड़ जाएँगे चढ़कर (उग्र) पवन पर ॥ ८ ॥
अन्नद मणिमय दिव्य हाथ यदि आज्ञा देंगे।
पा करके संकेत आग भी हम निगलेंगे ॥
जो कपोल - चुंबन पर मन में प्रमुदित होकर।
प्रिय के हाथ हटा देते हैं (लज्जित होकर) ॥
हम उन हाथों की महिमा के गुण गाएँगे।
गुण गा-गाकर सुयश सकल दिशि फैलाएँगे ॥ ९ ॥

नारी-मुक्ति—६

(रक्षा का गीत)

मिला सुखद स्वातन्त्र्य नारियों को, हम प्रमुदित।
उस प्रमोद में आज गान गाते हम सुललित ॥

नारी-मुक्ति—६

(रक्षा का गीत)

[कुम्मि—स्त्रियाँ स्वतन्त्रता की खुशी में नाचती हैं। कुम्मि वह नृत्य है, जिसमें नारियाँ तालियाँ बजाते हुए गाती हैं और मनोहारी रीति से नाचती हैं।]

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्गळि लेयॊळि पोल वुयिरिल्
कलन्दॊळिर् दॆय्वम् नर् काप्पामे
कुम्मि यडि ! तमिळ्नाडु मुळुदुम्
कुलुङ्गिडक् कैहॊट्टिक् कुम्मि यडि !
नम्मैप् पिडित्त पिशाशुहळ् पोयिन
नन्मै कण्डो मॆन्रु कुम्मि यडि ! (कुम्मि) 1
एट्टैयुम् पॆण्गळ् तॊडुवदु तीमैयॆन्
ऱॆण्णि यिरुन्दवर् माय्न्दु विट्टार्
वीट्टुक्कुळ्ळे पॆण्णैप् पूट्टि वैप्पोमॆन्ऱ
विन्दै मन्दिर् तलै कविळ्न्दार् ! (कुम्मि) 2
माट्टे यडित्तु वशक्कित् तॊळुविनिल्
माट्टुम् वळक्कत्तॆक् कॊण्डु वन्दे
वीट्टिनिल् ऎम्मिडङ् गाट्ट वन्दार्; अदै
वॆट्टि विट्टो मॆन्रु कुम्मि यडि ! (कुम्मि) 3
नल्ल विलै कॊण्डु नायै विऱ्पार् अन्द
नायिडम् योशनै केट्पदुण्डो ?
कॊल्लत् तुणिविन्ऱि नम्मैयुम् अन्निलै
कूट्टि वैत्तार् पळि कूट्टि विट्टार् (कुम्मि) 4
कऱ्पु निलै यॆन्ऱु शॊल्ल वन्दार्, इऱु
कट्चिक्कुम् अःदु पॊदुविल् वैप्पोम्
वऱ्पुऱुत्तिप् पॆण्णैक् कट्टिक् कॊडुक्कुम्
वळक्कत्तैत् तळ्ळि मिदित्तिडुवोम् (कुम्मि) 5
पट्टङ्गळ् आळ्वदुम् शट्टङ्गळ् शॆय्वदुम्
पारिनिल् पॆण्गळ् नडत्त वन्दोम्

स्त्रियों को स्वतन्त्रता मिल गयी, हम खुश हो गये। उस आनन्द में हम गाना चाहते हैं। आँखों में ज्योति के समान प्राणों में मिश्रित रहनेवाला ज्योतिर्मय देव हमारा रक्षक होगा। 'कुम्मि' (नृत्य करते हुए तालियाँ) बजाओ। सारा तमिळनाडु हिल जाय, इस प्रकार नाचो। हमें ग्रसे हुए भूत हट गये। हमने भला देखा। इस ख्याल में, इस खुशी में नाचो। १ स्त्रियों का (ताल-) पत्रों को (पुस्तकों) को स्पर्श करना भी बुरा है —ऐसा समझनेवाले सब मर गये। उन लोगों के भी सिर झुक गये, जो कहते थे कि स्त्रियों को घर के अन्दर ताला लगाकर रखें। २ गाय-बैलों को पीटकर, उन्हें सताकर रस्सी से बाँधने की प्रथा को वे घर के अन्दर हम (स्त्रियों) पर लागू करने आये। उसे हमने काट दिया। यह कहकर 'कुम्मि' नाचो। ३ अच्छा मोल लेकर कुत्ते को बेचनेवाले विक्रेता में उस (कुत्ते) से पूछ लेने की आदत भी होगी क्या ? मारने का भी साहस न रखनेवाले लोगों ने हमारी भी (कुत्ते की-सी) गति कर दी और (अपनी) निन्दा को भी स्थान दे दिया। ४ चारित्र (पातिव्रत्य) की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जो नयनों की ज्योति और प्राणों में मिश्रित।
वह ज्योतिर्मय देव हमारा रक्षक निश्चित॥
कुम्मि-नाच नाचो, पीटो तालियाँ मनोहर।
तमिळनाडु हिल जाय आज ऐसा गूँजे स्वर॥
ग्रसे हुए थे भूत हमें, वे भागें सारे।
नाचो सुख से, "भला हुआ" यह मन में धारे॥ १॥

"पुस्तक छूना भी ललनाओं को वर्जित है"।
ऐसी मतिवाला न आज जग में जीवित है॥
आज झुकाये हुए सीस लज्जित हैं वे नर।
जो कहते थे स्त्रियाँ रखो ताले के अन्दर॥ २

गाय-बैल आदिक पशुओं को मार - पीटकर।
औ' रस्सी से बाँध यथा रखते घर अन्दर॥
यही प्रथा लादने स्त्रियों पर थे वे आये।
किन्तु सभी बन्धन अब हमने काट गिराये॥
इस प्रकार कह-कहकर (सारा गगन गुँजाओ)।
कुम्मि-नाच नाचो (औ' गाओ मोद मनाओ)॥ ३॥

श्वान बेचता है जो मानव धन को लेकर।
वह कुत्ते से नहीं पूछता क्रय-विक्रय नर॥
हमें मारने की न उन्हें थी हिम्मत भारी।
श्वान-समान हमारी भी गति कर दी सारी॥
इससे सारी दुनिया में अपवाद हुआ है।
(देख-दशा नारी को विशद विषाद हुआ है)॥ ४॥

पतिव्रता - माहात्म्य सभी मानव हैं गाते।
नर-नारी पर सम बन्धन वे क्यों न लगाते॥
विवश बनाकर बेचारी कन्या को सब जन।
बलपूर्वक बाँधते जकड़कर परिणय - बन्धन॥
यह (दुखदायी प्रथा आज हम) ठुकरायेंगे।
नारि - जाति में स्वतंत्रता शुभ सरसायेंगे॥ ५॥

आयीं हम नारियाँ पदों पर करने शासन।
आयीं हम नारियाँ न्याय का करने प्रणयन॥

बात करते हैं लोग। हम उसे दोनों वर्गों (स्त्री-पुरुष) के लिए समान (साधारण) मानें। मजबूर करके कन्या को विवाह-बन्धन में बाँध देने की प्रथा को ठुकरा दें, रौंद दें। ५ हम स्त्रियाँ संसार में पदों को वहन करने तथा क़ानून बनाने आदि का काम करने आयी हैं। बुद्धि की पहुँच में हम स्त्रियाँ पुरुषों से किसी विध कम नहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऎट्टु मऱिविनिल् आणुक् किङ्गे पॆण्
इळैप्पिल्लै काणॆन्ऱु कुम्मियडि ! (कुम्मि) 6
वेदम् पडैक्कवुम् नीदिहळ् शॆय्यवुम्
वेण्डि वन्दो मॆन्ऱु कुम्मि यडि !
शादम् पडैक्कवुम् शॆय्दिडुवोम्; दॆय्वच्
चादि पडैक्कवुम् शॆय्दिडु वोम् (कुम्मि) 7
काद लॊरुवनैक् कैप्पिडित्ते अवन्
कारियम् याविनुम् कैकॊडुत्तु
माद रऱङ्गळ् पळमै यैक् काट्टिलुम्
माट्चि पॆऱच् चॆय्दु वाळ्व मडि (कुम्मि) 8

पॆण् विडुदलै—7

विडुदलैक्कु महळिरॆल् लोरुम्, वेट्कै कॊण्डनम् वॆल्लुव मॆन्ऱे
तिड मनत्तिन् मदुक्कण्ण मीदु, शेर्न्दु नाम् पिरदिक्किनै शॆय्वोम्
उडैय वळ् शक्ति आण् पॆण् णिरण्डुम्, ऒरु निहर् शॆय्दुरिमै शमैत्ताळ्;
इडैयिलै पट्ट कीळ् निलै कण्डोर्, इदऱ्कु नामॊरुप् पट्टिरुप्पोमो ? 1
तिऱमैयाल् इङ्गु मेनिलै शेर्वोम्, तीय पण्डै इहळ्च्चिहळ् तेय्प्पोम्
कुऱैविलादु मुळुनिहर् नम्मैक्, कॊळ्व राण्ग ळॆनिलव रोडुम्
शिऱमै तीरनन् दाय्त् तिरु नाट्टैत्, तिरुम्ब वॆल्वदिल् शेर्न्दिङ् गुळैप्पोम्
अऱ विळुन्ददु पण्डै वळक्कम्, आणुक्कुप् पॆण् विलङ्गॆनुम् अःदे 2
विडियुम् नल्लॊळि काणुदि निन्ऱे, मेवु नागरिकम् पुदि दॊन्ऱे;
कॊडियर् नम्मै अडिमैहळ् ऎन्ऱे, कॊण्डु ताम् मुदल् ऎन्ऱनरन्ऱो ?

हैं। यह कहकर नाचें हम। ६ हम वेद बनाने तथा नीतिशास्त्रों का निर्माण करने आयी हैं। ताली बजाकर नाचो। हम खाना भी बनायेंगी, देवों की भी सृष्टि कर देंगी। ७ प्रेमी का हाथ पकड़कर, उसके सभी कार्यों में हाथ बँटायेंगी। स्त्री-धर्मों को पहले से अधिक गौरव योग्य बना देंगी ! अरी कुम्मि ! ८

स्त्री की मुक्ति—७

(हम) सारी स्त्रियाँ स्वतन्त्रता की अभिलाषा करती हैं। हम (उसे प्राप्त करने में) अवश्य सफल होंगी। हम मिलकर दृढ़ मन रूपी मधु के प्याले पर यह प्रतिज्ञा करें। स्वामिनी शक्ति ने स्त्री-पुरुष दोनों को समान बनाकर उनके अधिकार की भी व्यवस्था की। पर बीच में आयी है यह बुरी स्थिति, देखो ! क्या हम इस स्थिति को स्वीकार करके चुप रह जायें ? १ अपनी कुशलता से हम ऊँची स्थिति तक पहुँचेंगी। प्राचीन घृण्य अपमान पोंछ देंगी। अगर पुरुष पूर्ण रूप से हमें समान मान लेंगे, तो हम उनके साथ मिलकर पतन से भारत का उद्धार करने के लिए परिश्रम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विमल बुद्धि में हम न कभी पुरुषों से हैं कम।
यह कह-कहकर नाचें-गायें, मुदित-मना हम ॥ ६ ॥
आयीं हम नारियाँ यहाँ पर वेद बनानें।
आयीं हम नारियाँ यहाँ पर नीति रचानें ॥
(गृह-परिजन के लिए) बनायेंगी हम भोजन।
देवगणों की सृष्टि करेंगी भी हम पावन ॥
(आज मिला स्वातन्त्र्य मनोरम मोद मनाओ)।
ताली बजा - बजा कर नाचो (गायन गाओ) ॥ ७ ॥
प्रेमी का कर गह कामों में हाथ बँटाएँ।
स्त्री-धर्मों को पहले से गौरव अधिक दिलाएँ ॥
कुम्मि-नाच को नाच-नाचकर (मोद मनाएँ)।
(नारी ने पायी स्वतंत्रता गायन गाएँ) ॥ ८ ॥

नारी की मुक्ति—७

सभी नारियों के उर में है स्वतंत्रता की अभिलाषा।
"आज अवश्य सफल हम होंगी" (ऐसी है हमको आशा) ॥
दृढ़ मन-रूपी मधु-प्याले पर हम सब (आपस में) मिलकर।
सभी नारियाँ यही प्रतिज्ञा करें हृदय में दृढ़ होकर ॥
स्त्री-पुरुषों को शक्ति-स्वामिनी ने विरचा है एक समान।
और साथ ही साथ किये उनको समान अधिकार प्रदान ॥
किन्तु बीच में हुई दुर्दशा - ग्रस्त बिचारी अबलाएँ।
इसे भाग्य का फेर समझकर क्या हम सब चुप रह जाएँ ॥ १ ॥
अपने कौशल से हम सब अब ऊँचे पद को पायेंगी।
और सभी अपमान पुराने जड़-मूल से मिटायेंगी ॥
मानेंगे यदि पुरुष नारियों को अपने ही पूर्ण समान।
तो भारत - उन्नति में नारी - जाति करेगी श्रम का दान ॥
पैरों की बेड़ी मानी जाती थीं पहले अबलाएँ।
नष्ट हो गईं वे प्राचीन प्रथाएँ (अब न कभी आयें) ॥ २ ॥
ठहरो, नव सूर्योदय होगा फैलेगा (अभिराम) प्रकाश।
नयी सभ्यता का विकास है (क्रूर सभ्यता का है ह्रास) ॥
क्रूर जनों ने नेता बनकर हमें बनाया अपना दास।
उस (दुखदायक) रीति-नीति का आज हुआ जड़-मूल विनाश ॥

करेंगी। वह प्राचीन कुप्रथाएँ पूर्ण रूप से गिर (मिट) गयीं, जो यह मानती थीं कि स्त्री पुरुष की बेड़ी (का रूप) है। २ ठहरो! उदय हो जायगा। प्रकाश देखोगे। यह सभ्यता अर्वाचीन है। क्रूर लोगों (पुरुषों) ने हमें दास बनाया और कहा कि वे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अडियॊ डन्द वळक्कत्तैक् कॊन्ऱे, अऱिवु यावुम् पयिऱ्चियिल् वॆन्ऱे
कडमै शॆय्वीर् नन्देशत्तु वीरक्, कारिहैक् कणत्तीर् तुणिवुऱ्ऱे 3

तॊळिल्—8

इरुम्बैक् काय्च्चि उरुक्किडु वीरे !, यन्दिरङ्गळ् वहुत्तिडु वीरे !
करुम्बैच् चारु पिळिन्दिडु वीरे, कडलिल् मूळ्हि नन् मुत्तॆडुप् पीरे !
अरुम्बुम् वेर्वै उदिर्त्तुप् पुवि मेल्, आयिरन् दॊळिल् शॆय् दिडु वीरे !
पॆरुम् पुहळ् नुमक्के यिशैक्किन्ऱेन्, पिरम देवन् कलै यिङ्गु नीरे! 1

मण्णॆडुत्तुक् कुडङ्गळ् शॆय्वीरे !, मरत्तै वॆट्टि मनैशॆय्हु वीरे !
उण्णक् काय् कनि तन्दिडु वीरे, उळुदुनन् शॆय्प् पयिरिडु वीरे !
ऎण्णॆय् पाल् नॆय् कॊणर्न् दिडु वीरे, इळैयै नूऱ्ऱुनल् लाडैशॆय् वीरे !
विण्णि निन्ऱॆमै वानवर् काप्पार्, मेविप् पार्मिशै काप्पवर् नीरे ! 2

पाट्टुम् शॆय्युळुम् कोत्तिडु वीरे, परक नाट्टियक् कूत्तिडु वीरे !
काट्टुम् वैयप् पॊरुळ्हळिन् उण्मै, कण्डु शात्तिरम् शेर्त्तिडु वीरे !
नाट्टिले यऱम् कूट्टि वैप् पीरे, नाडुम् इन्बङ्गळ् ऊट्टि वैप् पीरे !
तेट्ट मिन्ऱि विळि यॆविर् काणुम्, दॆय्व माह विळङ्गुविर् नीरे ! 3

ही नेता हैं। कहा न ? उस रीति को मूल से मिटाकर बुद्धि के आधार पर की जाने वाली सभी बातों में, प्रयासपूर्वक आगे आकर अपना कर्तव्य करो। हे हमारे देश के वीर नारीगण ! साहस करो। ३

उद्योग-धंधा—८

लोहे को तपाकर पिघलाओ। यंत्रों का निर्माण करो। ईख का रस निचोड़कर निकालो। समुद्र में गोते लगाकर मोती लाओ। पसीना बहाकर भूमि पर हजारों धन्धे करो। तुम ब्रह्मदेव की कला के (के मूर्तरूप) हो। तुम्हें बड़ा यश मिलेगा—मैं बताता हूँ। १ मिट्टी के घड़े बनाओ। लकड़ी काटकर मकान बनाओ। खाने के लिए तरकारी, फल आदि पैदा कर दो। हल चलाओ, खूब खेती करो। तेल, दूध, घी आदि लाओ। सूत कातकर अच्छे कपड़े बुनो। देव तो आकाश में रहकर हमारा पालन करनेवाले हैं। पर भूमि पर आकर हमारी रक्षा करनेवाले तुम ही (कारीगर) हो। २ गाने तथा कविताएँ रचो। भरत नाट्यम् नृत्य करो। दुनिया के पदार्थों का रहस्य जानकर शास्त्रों का निर्माण कर दो। संसार में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विमल-बुद्धि से समझ-बूझकर करो निरन्तर तुम अभ्यास।
(जीवन-पथ पर) आगे आकर निज कर्तव्य करो (सोल्लास)॥
हे स्वदेश की वीर नारियो! दिखलाओ अपना साहस।
(प्राप्त करो नारी-स्वतंत्रता विकसित हो सबका मानस)॥ ३॥

उद्योग-धंधा—८

अरे! आग से तपा लौह को यन्त्र बनाओ।
सहज ईख से रस निकले वह विधि उपजाओ॥
लगा सिंधु में गोता (मंजुल) मोती लाओ।
बहा पसीना लाखों धंधे करो (-कराओ)॥
हो तुम पुतले ब्रह्मदेव की सृजन-कला के।
सुयश मिलेगा तुम्हें गहो श्रम भाँति-भाँति के॥ १॥

मिट्टी को लेकर तुम उससे घड़े बनाओ।
लकड़ी काट-काट करके घर बड़े बनाओ॥
खाने को फल, शाक आदि सब कुछ उपजाओ।
हल जोतो, कृषि करो, (अन्न का ढेर लगाओ)॥
दूध दुहो, घी मथो, तेल पेरो, सुख पाओ।
कात - कातकर सूत (मनोरम) वस्त्र बनाओ॥
देव हमारा पालन करते नभ में रहकर।
किन्तु धरा पर मेरे रक्षक तुम कारीगर!॥ २॥

कविताएँ तुम रचो, (मनोरम) गाने गाओ।
भरत-नाट्य का नाच, नाचकर (मोद मनाओ)॥
जग के सभी पदार्थों के रहस्य को जानो।
शास्त्र बनाओ (जग के सम्मुख सभी बखानो)॥
विश्व - बीच तुम करो धर्म का (शुभ) संस्थापन।
सँजो-सँजोकर दो तुम सब विधि सुख के साधन॥
दर्शन देता अकस्मात ज्यों प्रकटित होकर।
इस जगती के लिए बनो तुम, जैसे ईश्वर!॥ ३॥

धर्म स्थापित करो। सभी तरह के अभीष्ट सुखों का उपभोग करा दो। तुम अकस्मात् दर्शन देनेवाले ईश्वर बनो। ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मऱवन् पाट्टु—9

मण्वॆट्टिक् कूलि तिऩ लाच्चे !— अङ्गळ्
वाळ् वलियुम् वेल् वलियुम् पोच्चे !
विण्मुट्टिच् चॆऩ्ऱ पुहळ् पोच्चे !— इऩ्द
मेदिनियिल् कॆट्ट पॆयराच्चे ! 1
नाणिलहु विल्लि ऩॊडु तूणि— नल्ल
नादमिहु शङ्गॊलियुम् पेणि
पूणिलहु तिण् कदॆयुम् कॊण्डु— नाङ्गळ्
पोर् शॆय्द काल मॆल्लाम् मण्डु 2
कऩ्ऩङ् गरिय विरुळ् नेरम्— अदिल्
काऱ्ऱुम् पॆरु मळैयुम् शेरुम्
शिऩ्ऩक् करिय तुणियाले— अङ्गळ
देहमॆलाम् मूडि नरि पोले 3
एऴै यॆळियवर्हळ् वीट्टिल्— इऩ्द
ईऩ वयिऱ् पडुम् पाट्टिल्
कोऴै यॆलिह ळॆऩ्ऩवे— पॊरुळ्
कॊण्डु वन्दु..... 4
मुऩ्ऩाळिल् ऐयरॆल्लाम् वेदम्— ओद
मूऩ्ऱु मऴै पॆय्युमडा मादम्
इऩ्नाळिले पॊय्म्मैप् पार्प्पार्— इवर्
एडु शॆय्दुम् काशु पॆऱप् पार्प्पार् 5
पेराशैक् कारऩडा पार्प्पाऩ्— आऩाल्
पॆरिय दुरै अॆऩ्ऩिलुडल् वेर्प्पाऩ्

मरवन् का गीत—९

[मरवन् नामक एक जाति है। उस जाति के लोग वीर सैनिक होते थे। इसमें ब्राह्मणों की निंदा में कुछ कड़ी बातें कही गयी हैं। ब्राह्मणों का पतन बहुत दिन पहले हो गया है। आजकल तमिळनाडु में उनकी निन्दा तथा अपमान खूब किया जाता है। भारती भी ब्राह्मणों के आचरण से नाराज थे, यद्यपि सच्चे ब्राह्मणकृत्य में लगे ब्राह्मण के प्रति उनके मन में आदर था।]

हाय ! मिट्टी खोदकर उस मजदूरी से जीविका चलाना पड़ गया। हमारी तलवार की शक्ति तथा शक्ति (सांग) की महिमा चली ही गयी। हमारा यश गगन तक पहुँचा था। वह भी चला गया। इस मेदिनी पर हमारा बुरा नाम हो गया। १

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मरवन् का गीत--९

हाय ! खोदते मिट्टी हम करते मज़दूरी।
हाय ! जीविका चला रहे (आई मजबूरी)॥
तलवारों की शक्ति हमारी नष्ट हो गयी।
तथा शक्ति की भी महिमा भी सभी खो गयी॥
कभी सुयश था उच्च गगन तक व्याप्त हमारा।
नष्ट हो गया आज हमारा वह यश सारा॥
इस धरती पर अरे ! आज बदनाम हुए हम।
गुण - गौरव सब व्यर्थ हुए बेकाम हुए हम॥ १ ॥
प्रत्यंचा-युत धनुष, (बाण) तरकस को लेकर।
मधुर - नाद - युत शंख बजा (ध्वनि से भूतल भर)॥
वलय-सहित ले कठिन गदा निज कर में धारन।
करते थे हम युद्ध गया वह काल पुरातन॥ २ ॥
यह कलिकाल काल देखो अतिशय काला है।
आँधी-पानी और न्योतकर (मतवाला) है॥
छोटे काले कपड़े से तन ढका हुआ है।
यह छोटे सियार के ही सम छली हुआ है॥ ३ ॥
हाय ! दीन यह पेट दरिद्रों-दीनों के घर।
कितना संकट उठा रहा है (इस धरती पर)॥
कायर चूहों के समान यह दुबका रहता।
(ज़्यादा) हम क्या कहें (सभी संकट है सहता)॥ ४ ॥
पहले ब्राह्मण वेद-पाठ को दुहराते थे।
एक मास में तीन बार जल बरसाते थे॥
(भूल गये) ये झूठे ब्राह्मण (अपने को भी)।
त्याग सभी कर्तव्य बन गये धन के लोभी॥ ५ ॥
आज लोभ में लिप्त सदा ही ब्राह्मण रहता।
सुन "साहब" का नाम पसीना तन से बहता॥

डोरे के साथ धनुष, तूणीर, अच्छा सुनादयुक्त शंख, —इनका उपयोग करके, वलय-सहित कठोर गदा लेकर हम युद्ध करते थे। वह युग पुराना हो गया। २ यह बहुत काला युग है। उस पर आँधी-पानी मिल जाता है। छोटे काले कपड़े से शरीर ढककर छोटे सियार की भाँति— ३ दीन-दरिद्रों के घर में--हाय, यह दीन पेट कितना संकट उठाता है ! क्या कहा जाय ? कायर चूहों के समान ..... ४ पुराने-दिनों में ऐयार (ब्राह्मण) लोग वेद दुहराते थे और महीने में तीन बार बरसात होती थी। पर आज ये झूठे ब्राह्मण --कोई भी (बुरा-भला) करके पैसा बनाने के फेर में हैं। ५ अरे ! बामन बड़ा लालची है। पर बड़े साहब का नाम लेते ही उसका शरीर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यारा नालुम् कॊडुमै.....
..... 6

पिळ्ळैक्कुप् पूणूलाम् अॆन्बात्
पिच्चुप् पणङ् गॊडॆन्त् तिन्बात्
कॊळ्ळैक् केशॆन्.....
..... 7

शॊल्लक् कॊदिक्कुवडा नॆञ्जम्— वॆरुम्
जोर्रुक्को वन्ददिप् पञ्जम् ?
.....
..... 8

नायुम् पिळैक्कुम् इन्दप् पिळैप्पु
नाळॆल्लाम् मर्रिदिले उळैप्पु
पायुम्क डिनाय्प् पोलीशुक्— कारप्
पार्प्पानुक् कुण्डिदिले पीशु 9
शोरन् दॊळिलाक् कॊळ्वोमो ?— मुन्दैच्
चूरर् पॆयरै अळिप् पोमो ?
वीर मरवर् नामन्रो ?— इन्द
बीण् बाळ्क्चै वाळ्वदिन्नि नन्रो ? 10

नाट्टुक् कल्वि—10

(आङ्गिलत्तिल् रवीन्दिर नादर् अॆळुदिय पाडलिन् मॊळि पॆयर्प्पु)

विळक्किले तिरि नन्गु शमैन्ददु, मेवुवीर् इङ्गु तीक् कॊण्डु तोळरे ! कळक्क मुर्र इरुळ् कडन् देहुवार्, कालैच् चोदिक् कदिरवन् कोबिर्के तुळक्क मुर्रविण् मीन्निडम् शॆल्लुवार्, तॊहैयिल् शेर्न्दिड उम्मैयुम् कूविन्नार् कळिप्पु मिञ्जि ऒळियिन्नैप् पण्डॊरु, कालम् नीर् शॆन्रु तेडिय दिल्लैयो ? 1
अन्रु नुङ्गळ् कोडियिन्नै मुत्तिट्टे, आशै यॆन्र विण्मीन् ऒळिर् शॆय्ददे
तुन्रु नळ्ळिरुळ् मालै मयक्कत्ताल्, शोम्बि नीरुम् वळिनडै पिन्दिन्नीर्

स्वेद से तर हो जाता है। कोई भी हो, अत्याचार .....६ 'पुत्र का यज्ञोपवीत-संस्कार है' — कहकर रुपया माँगकर खा जायगा। लूट पर चलकर.....७ मन जलता है। क्या केवल भात का यहाँ अकाल हो जाय ? ८ कुत्ता भी ऐसा जीवन जीता है। तो भी इसमें परिश्रम भी दिन भर करना पड़ता है। पुलिसवाला झपटकर काटनेवाला कुत्ता है। और ब्राह्मण को भी इसमें फीस मिल जाती है। ९ क्या चोरी को धंधा मान लेंगे हम ? शूर पुरखों का क्या हम नाम मिटा देंगे? क्या हम वीर मरवर् नहीं हैं? क्या ऐसा बेकार जीवन जीना भी अच्छा है ? १०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अत्याचार सभी करता है (कभी न डरता)।
ब्राह्मण-भाव त्याग ढोंगी-सम जीता-मरता ॥ ६ ॥

"है यज्ञोपवीत बालक का आज हमारे"।
बना बहाना ऐंठ रहा धन हाथ पसारे ॥
लूट मचाता देख-देखकर मन जलता है।
हो भात का अकाल लखूँ कैसे पलता है ? ॥७-८॥

कुत्ता भी तो बिता रहा है ऐसा जीवन।
दिन भर करता किन्तु परिश्रम (उत्साहित मन) ॥
श्वान पुलिस-सम झपट किसी का अंग चबाते।
ब्राह्मण, पुलिस समान दक्षिणा हैं पा जाते ॥ ९ ॥

उचित मान लेंगे चोरी का धंधा क्या हम ?।
नाम मिटा देंगे पुरखों का शूरों का हम ॥
वीर सदा भी जाति हमारी, हम हैं मरवन्।
(ब्राह्मण-जैसा) व्यर्थ बिताना है क्या जीवन ? ॥ १० ॥

राष्ट्रीय शिक्षा—१०

ठीक रीति से लगी दीप में बत्ती सुन्दर।
आओ सब साथियो ! मशालों को ले-लेकर ॥
काला - काला तिमिर पार कर जानेवाले।
ज्योतिमान नक्षत्रों के ढिग जानेवाले ॥
अपने दल में तुम्हें मिलाने बुला रहे हैं ॥
(देखो अपने कोमल कर-तल हिला रहे हैं)।
बीत चुका प्राचीन काल का एक ज़माना।
जब प्रकाश खोजने पड़ा था तुमको जाना ॥ १ ॥

आशा रूपी नक्षत्रों ने चूम - चूमकर।
किया विभूषित जभी तुम्हारा झंडा सुंदर ॥

राष्ट्रीय शिक्षा—१०

(रबीन्द्रनाथ टैगोर की एक अंग्रेजी कविता की अनुवाद)

दीप में बत्ती ठीक लग गयी। साथियो, लौ लेकर आओ। काला अँधेरा पार कर जानेवाले, प्रकाशपूर्ण नक्षत्रों के पास पहुँचनेवाले अपने दल में मिलाने के लिए तुम्हें भी बुलाते हैं। क्या एक जमाना पहले नहीं रहा था जब तुम भी आनन्द-पूर्वक प्रकाश (ज्ञान) की खोज में गये थे ? १ तब तुम्हारे झंडे को आशा रूपी नक्षत्र ने चूमकर,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निन्ऱविन्दन नुङ्गळ् विळक्कॆलाम्, नीङ्गळ् कण्ड कनाक्कळॆल्लाम इशै
कुन्ऱित् तीक्कुऱि तोन्ऱुम्; इराप् पुट्कळ्, कूवु माऱॊत्तिरुन्दन काण्डिरो ! 2
इन्नु मिङ्गिरुळ् कूडि यिरुप्पिनुम्, एङ्गुहिन्ऱ नरहत् तुयिर्हळ् पोल्
ऒन्नु मिङ्गु वन्तत्तिडै काऱ्ऱ ताम्, ओङ्गुम् ओदै इरुन्दिडुम् आयिनुम्
मुन्नैक् कालत्तिल् निन्ऱॆळुम् पेरॊलि, मुऱै मुऱै पल ऊळियिन् ऊडुऱ्ऱे
पिन्नै इङ्गु वन् दॆय्दिय पेरॊलि, पोल मन्दिर वेदत्तिन् पेरॊलि 3
"इरुळै नीक्कि ऒळियिनैक् काट्टुवाय्, इऱप्पै नीक्कि अमिर् दत्तै ऊट्टुवाय्"
अरुळुम् इन्द मऱैयॊलि वन्दिङ्गे, आळ्न्द तूक्कत्तिल् वीळ्न्दिरुप्पीर् तमैत्
तॆरुळुऱत्तवुम् नीर ऎळुहिल्लिरो ?, तीय नाश उऱक्कत्तिल् वीळ्न्द नीर्
मरुळै नीक्कि अऱिदिर् अऱिदिरो ?, वान् ऒळिक्कु महाअर् इयाम् ऎन्ऱे 4

पुदिय कोणङ्गि—11

कुडु कुडु कुडु कुडु कुडु कुडु कुडु कुडु
नल्ल कालम् वरुहुदु; नल्ल कालम् वरुहुदु;
शादिहळ् शेरुदु शण्डैहळ् तॊलैयुदु

हाँ, शोभायमान कर दिया था। फिर घना अंधकार ! संध्या के झुटपुटे में, आलस्य के कारण तुम बिछुड़ गये। तुम्हारे सभी दीप बुझ गये। तुम्हारे स्वप्न भी अपना महत्त्व खो गये और आसार शुभ नहीं रह गये। वे अशुभ शकुन बतानेवाले रात के (उल्लू) पक्षियों के बोल के समान बन गये। तुम देखो न ? २ अब भी अन्धकार रहता है। दुखी नरक के जीवों के समान जंगल में हवा के ज़ोर से बहने का रव सुनायी देता है। तो भी प्राचीन समय में, जो मंगल ध्वनि निकली थी, वही आज यहाँ क्रम से काल को भेदकर आयी है और सुनाई देती है। यह मंत्रयुक्त वेद की उच्च ध्वनि है। ३ तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय--यह कृपामयी श्रुतिध्वनि इधर पहुँचकर निद्रा में लीन रहनेवाले तुम्हें जगा रही है। तो भी जाओगे नहीं क्या ? उसे बुरी विनाशक नींद में गिरे हुए तुम इस भ्रम को दूर करके ज्ञान का अर्जन करना नहीं जानोगे क्या ? आकाश के प्रकाश को 'अर्यमा' कहते हैं, क्या यह जानते हो ? ४

आधुनिक कोणङ्गि—११

["कोणङ्गि" का वाच्यार्थ है शरीर के अंगों को लचकाकर या वक्र बनाते हुए नाचनेवाला। पर यहाँ यह शब्द उस घूमते-फिरते ज्योतिषी को सूचित करता है, जो छोटा डमरू-सा बाजा बजाता हुआ घूमता-फिरता है और अपनी इच्छा के अनुसार काली या 'जवकायी' देवी की कृपा का आह्वान करके भविष्यवाणी बताता है। यहाँ यह कोणङ्गि बिलकुल आधुनिक काल की बातें करता है। वह डमरू (वाद्य) से कुडु कुडु का नाद निकालता है।]

कुडुकुडु कुडुकुडु कुडुकुडु कुडुकुडु। अच्छा काल आ रहा है। जातियाँ घुल-मिल रही हैं, झगड़े दूर होते जा रहे हैं। कह, री कह ! कह ! शक्ति महाकाली !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

फिर घिर आया अन्धकार अत्यन्त घना था।
संध्या का झुटपुटा समय आलस्य - सना था॥
उस आलस-वश बिछुड़ गये तुम सब (प्रकाश) से।
दीप सभी बुझ गये तुम्हारे (आस - पास से)॥
निज महत्त्व खो दिया, मिट गये स्वप्न तुम्हारे।
और नहीं रह गये (सौम्य) शुभ (शान्त) सहारे॥
(निविड़) निशा में अशुभ शकुन बतलानेवाले।
बने पक्षियों (में उलूक)-से वे भयवाले॥ २॥
अब भी घिरा हुआ देखो घनघोर अँधेरा।
गूँजा वन में तीव्र पवन का शोर घनेरा॥
तीव्र पवन का शोर गुँजाता ऐसे जंगल।
दुखी नरक के जीव कर रहे ज्यों कोलाहल॥
गूँजी जो प्राचीन काल में मंगल वाणी।
अरे! आज भी गूँज उठी है वह कल्याणी॥
काल-पटल को भेद यहाँ तक क्रम से आई।
मधुर वेद के मंत्रों की ध्वनि उच्च सुहाई॥ ३॥
अंधकार को दूर भगा मुझको प्रकाश दो।
मृत्यु हटाकर मुझे अमरता का विलास दो॥
यह मंगलमय वेदों की ध्वनि सुहा रही है।
निद्रा - मग्न भारतीयों को जगा रही है॥
सुनकर यह ध्वनि क्या न बढ़ोगे जीवन-पथ पर?।
पड़े रहोगे चेत-रहित निद्रा से घिरकर?॥
क्या यह भ्रम का तिमिर नहीं हरना चाहोगे?।
क्या न ज्ञान का अर्जन तुम करना चाहोगे?॥
यह प्रकाश आकाश - बीच पहचान रहे हो?।
इसे "अर्यमा" कहते हैं, क्या जान रहे हो?॥ ४॥

आधुनिक कोणङ्गि—११

कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, डमरू बोल॥ टेक॥
अच्छा समय जभी आता है (मन की कलियाँ खिल जातीं)।
झगड़े सभी दूर हो जाते सभी जातियाँ मिल जातीं॥
अरी! महाकाली देवी! तू कह दे अपना आनन खोल।
वेदपुरी - भारत - निवासियों के मंगल संदेश अमोल॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शॊल्लडि शॊल्लडि शक्ति माकाळी !
वेदपुरत् तारुक्कु नल्ल कुऱि शॊल्लु 1
तरित्तिरम् पोहुदु; शॆल्वम् वरुहुदु
पडिप्पु वळरुदु पावम् तॊलैयुदु
पडिच्चवन् शूदुम् पावमुम् पण्णिनाल्
पोवान् पोवान् ऐयो वॆतूऱु पोवान् ! 2
वेदपुरत्तिले वियापारम् पॆरुहुदु
तॊळिल् पॆरुहुदु तॊळिलाळि वाळ्वान्
शात्तिरम् वळरुदु शूत्तिरम् तॆरियुदु
यन्दिरम् पॆरुहुदु तन्दिरम् वळरुदु
मन्दिरम् ऍल्लाम् वळरुदु वळरुदु 3
कुडुकुडु कुडुकुडु कुडुकुडु कुडुकुडु;
शॊल्लडि शॊल्लडि मलैयाळ बगवती !
अन्दरि वीरि चण्डिहै शूलि
कुडुकुडु कुडुकुडु कुडुकुडु 4
कुडुकुडु कुडुकुडु कुडुकुडु कुडुकुडु
शामिमार्क् कॆल्लाम् तैरियम् वळरुदु
तॊप्पै शुरुङ्गुदु; शुरुशुरुप्पु विळैयुदु
अॆट्टु लच्चुमियुम् एऱि वळरुदु
पयन् दॊलैयुदु पावन् दॊलैयुदु
शात्तिरम् बळरुदु शादिकुऱैयुदु
नेत्तिरम् तिऱक्कुदु नियायम् तॆरियुदु
पळैय पयित्तियम् पटीलॆन्ऱु तॆळियुदु
वीरम् वरुहुदु मेन्मै किडैक्कुदु
शॊल्लडि शक्ति मलैयाळ बगवदि !
दर्मम् पॆरुहुदु दर्मम् पॆरुहुदु 5

वेदपुरी (भारत) के वासियों को मंगल सन्देश दे। १ दरिद्रता दूर हो रही है, धन आ रहा है। पढ़ना बढ़ रहा है। पाप मिट रहा है। पढ़ा-लिखा आदमी पाप और ठगाई करेगा, तो जायगा, जायगा, हाय-हाय कहता (मिट) जायगा। २ वेदपुरी में व्यापार बढ़ रहा है। उद्योग बढ़ रहा है। मजदूर (भली भाँति) जीवित रहेगा। शास्त्र बढ़ेंगे। रहस्य मालूम होते जाएँगे। सभी यंत्र विकसित होंगे, तंत्र विकसित होंगे, फिर मंत्र भी। कुडुकुडु कुडुकुडु कुडुकुडु कुडुकुडु। ३ कह री! री कह! केरल की भगवती! अंतरी, वीरी, चंडिके, शूलिनी! कुडुकुडु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(सभी भारतीयों के मन में तू आनन्द अलौकिक घोल)।
कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़ कुड़-कुड़, डमरू बोल ॥ १ ॥

शीघ्र दूर होगी दरिद्रता धन-वैभव सब आयेगा।
विद्याओं की बढ़ती होगी पाप सभी विनशायेगा ॥
पढ़ा-लिखा नर ठगी करेगा अथवा पाप कमायेगा।
तड़प-तड़प कर हाय-हाय कर कलप-कलप मर जायेगा ॥
न्याय-धर्म की उन्नति होवे कह उपदेश आज अनमोल।
कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कड़, डमरू बोल ॥ २ ॥

वेदपुरी भारत नगरी में पनपेंगे विस्तृत व्यापार।
सुख से श्रमिक जियेंगे सारे उभरेंगे उद्योग अपार ॥
होगी वृद्धि सभी शास्त्रों की होगा सूत्रों का प्रणयन।
तंत्र पलेंगे, मंत्र पलेंगे होगा सतत पठन - पाठन ॥
(जग के काम करेंगे सारे बुधजन शास्त्र तुला पर तोल)।
कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़ डमरू बोल ॥ ३ ॥

केरल की भगवती अरी! कह, अरी! अंतरी! कह री! कह।
कह री! कह, चंडिके! शूलिनी! वीरी! कह री! कह री! कह ॥
(अपने मर्म भरे वचनों से सब मनुजों के हृदय टटोल)।
कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड-कुड़ डमरू बोल ॥ ४ ॥

धैर्य बढ़ेगा स्वामिजनों का औ' पिचकेगा उनका पेट।
होगी वृद्धि अष्ट निधियों की होगा भय का मटियामेट ॥
पाप मिटेगा, शास्त्र बढ़ेंगे, जाति - भेद - विरहित जीवन।
नेत्र खुलेंगे, न्याय निभेगा, मिटे पुराना पागलपन ॥
फिर अनुपम वीरता जगेगी, अनुपम गौरव होगा प्राप्त।
पनपेगी फिर धर्म - भावना इस भारत भर में पर्याप्त ॥
री! केरल की पूज्य भगवती! कह शिवशक्ति! बजाकर ढोल।
कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़, कुड़-कुड़ डमरू बोल ॥ ५ ॥

कुड्कुड् कुड्कुड् कुड्कुड्। ४ कुड्कुड् कुड्कुड् कुड्कुड् कुड्कुड्। स्वामियों (बाबुओं) का धैर्य बढ़ रहा है, तोंद पिचकती जा रही है, चुस्ती बढ़ती जा रही है। आठों लक्ष्मियाँ उत्कर्ष पर हैं, भय दूर होगा। पाप भाग जायँगे। शास्त्र विकसित होंगे, जाति-भेद कम होंगे। नेत्र खुलेंगे। न्याय समझ में आयगा। प्राचीन पागलपन झट से दूर हो जायेगा। वीरता आयेगी। गौरव प्राप्त होगा। कह, शिवशक्ति (मलैयाळ)। केरल की भगवती! धर्म पनप जायगा। ५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

3 तनिप् पाडल्हळ्

कालैप् पॊऴुदु—12

कालैप् पॊऴुदिनिले कण् विऴित्तु मेनिलै मेल्
मेलैच् चुडर्बाऩै नोक्कि निन्ऱोम् विण्णहत्ते 1
कीऴ्त्त शैयिल् ञायिऱुताऩ् केडिल् शुडर् विडुत्ताऩ्
पार्त्त वॆळियॆल्लाम् पहलॊळियाय् मिऩ्निऱ्ऱे 2
तॆऩ्ऩै मरत्तिऩ् किळैयिडैये तॆऩ्ऱल् पोय्
मऩ्ऩप् परुन्दिऩुक्कु माला यिट्टुच् चॆऩ्ऱडुवे 3
तॆऩ्ऩै मरक्किळैमेऱ् चिन्दऩैयो डोर् काहम्
वऩ्ऩ मुऱ वीऱ्ऱिरुन्दु वाऩै मुत्त मिट्टडुवे 4
तॆऩ्ऩैप् पशुङ् गीऱ्ऱैक् कॊत्तिच् चिऱु काक्कै
मिऩ्ऩुहिऩ्ऱ तॆऩ् कडलै नोक्कि विऴित्तडुवे 5
वऩ्ऩच् चुडर् मिहुन्द वाऩहत्ते तॆऩ्ऱिशैयिल्
कऩ्ऩङ् गरुङ् गाहक् कूट्टम् वरक् कण्डदङ्गे 6
कूट्टत्तैक् कण्डःदु कुम्बिट्टे तऩ्ऩरुहोर्
पाट्टुक् कुरुवि तऩैप् पार्त्तु नहैत्तडुवे 7
शिऩ्ऩक् कुरुबि शिरिप् पुडऩै वन्दाङ्गु
कऩ्ऩङ् गरुङ् गाक्कै कण्णॆदिरे योर् किळै मेल् 8
वीऱ्ऱिरुन्दे "किक् किक्की! काक्काय् नी विण्णिडैये
पोऱ्ऱि यॆदै नोक् कुहिऱाय्? कूट्ट मङ्गुप् पोवदॆऩ्ऩै?" 9
अॆऩ्ऱवुडऩै काक्कै— "अॆऩ् तोऴा! नी केळाय्
मऩ्ऱ तऩैक् कण्डे मऩ "महिऴ्न्दु पोऱ्ऱुहिऱेऩ्" 10
अॆऩ्ऱ शॊल्लिक् काक्कै इरुक्कैयिलै आङ्गणोर्
मिऩ् तिहऴुम् पच्चैक् किळि वन्दु वीऱ्ऱिरुन्दे 11
"नट्पुक् कुरुविये ञायिर् ऱिळवॆयिलिल्
कट्पुलनुक् कॆल्लाम् कळियाहत् तोऩ्ऱ हैयिल् 12

---

३ फुटकर गीत

सबेरे का समय—१२

हम सबेरे जाग उठे और छत पर खड़े होकर आकाश में पश्चिम की तरफ़ देखते रहे। १ पूरब में सूर्य अक्षय किरणें फैलाता रहा। जहाँ देखो वहाँ दिन का प्रकाश चमक रहा था। २ नारियल के पेड़ की शाखाओं के बीच से मलय-पवन आ गया और राजा बाज (पक्षी विशेष) को माला पहनाकर चला गया। ३ नारियल के पेड़ की शाखा पर एक कौआ सुन्दर ढंग से बैठा और उसने आकाश का चुम्बन किया। ४ उस छोटे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

३ फुटकर गीत

सबेरे का समय—१२

हम, प्रभात के समय जगे निद्रा को तजकर।
पश्चिम का आकाश देखने लगे निरन्तर ॥ १ ॥
पूर्व दिशा में सूर्यप्रभा अक्षय फैलाता।
कण - कण में प्रकाश दिन का फैला दिखलाता ॥ २ ॥
नारिकेल तरु - शाखाओं से प्रवहित आता।
मलय-पवन, खगराज "बाज़" को हार पिन्हाता ॥ ३ ॥
एक काक उस नारिकेल पर (झूम रहा था)।
सुन्दरता से बैठा नभ को चूम रहा था ॥ ४ ॥
उस कौवे ने मारी चोंच हरी पत्ती पर।
दृष्टि उठाई, चमकदार दक्षिण - सागर पर ॥ ५ ॥
उस उज्ज्वल रंगीन गगन में शोर मचाता।
देखा, कौओं का दल दक्षिण दिशि से आता ॥ ६ ॥
उस समूह को उस कौवे ने नमन किया, फिर।
गाती निकट पक्षिणी को देखा फिर हँसकर ॥ ७ ॥
उस कौवे के पास विहँसती चिड़िया आयी।
उसके सम्मुख बैठ गई तरु पर मनभायी ॥ ८ ॥
उसने पूछा, अरे! काक! क्या नभ में लखते।
वह दल किसका जिसे समादर - सहित निरखते ॥ ९ ॥
बोला कौआ, देख रहा हूँ— ये सब भाई।
और खुशी से उन्हें दे रहा आज बधाई ॥ १० ॥
मौन हो गया इस प्रकार, फिर कौआ बोला।
तभी वहाँ पर एक आ गया शुक चमकीला ॥ ११ ॥
बोला तोता प्यारी चिड़िया! रवि की धूप खिली है।
है अतिशय सुखवर्धक सबको (सबको शान्ति मिली है) ॥ १२ ॥

कौए ने नारियल की हरी पत्ती पर चोंच मारकर चमकदार दक्षिणी समुद्र की तरफ़ ताका। ५ तब उसने देखा कि उस रंगीन तथा उज्ज्वल आकाश में दक्षिण की तरफ़ काले कौओं का एक झुण्ड आया। ६ उसने उस समूह को नमस्कार किया। फिर अपने पास बैठकर गानेवाली एक चिड़िया की तरफ़ देखकर वह हँस पड़ा। ७ वह चिड़िया हँसती हुई आयी और उसने उस अति काले कौए की आँख के सामने एक शाखा पर— ८ बैठकर पूछा—किक् किक् की! रे कौए! तुम आकाश में आदर के साथ क्या देख रहे हो? वहाँ जो दल जा रहा है वह क्या है? ९ उसके कहते ही कौए ने उत्तर दिया —मेरे साथी! सुनो! मैं सबको देख रहा हूँ और खुशी से बधाई दे रहा हूँ। १० यों कहकर काग चुप हुआ। तब वहाँ एक हरे चमकीले रंग का तोता आया और बैठ गया। ११ (वह बोला,) सखी चिड़िया! वह सूर्य का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नुम्मै महिळ्च्चियुडन् नोक्कि यिङ्गु वन्दिट्टेन् !
अम्मवो ! काहप् पॆरुङ्गूट्ट मःदॆन्ने ?" 13
ऍन्रु विनवक् कुरुवितान् इःदुरैक्कुम्
"नन्रु नी केट्टाय् पशुङ्गिळिये नानुमिङ्गु 14
मऱ्ऱदने योर्न्दिडवे काक्कैयिडम् वन्दिट्टेन्
कऱ्ऱरिन्द काक्काय् कळ्ळुह नी !" ऍन्ऱुदुवे 15
अप्पोदु काक्कै, "अरुमैयुळ्ळ तोळ्ऱ्हळे !
शॆप्पुवेन् केळीर् शिल नाळाक् काक्कैयुळ्ळे 16
नेर्न्द पुदुमैहळै नीर् केट्टऱि यीरो ?
शार्न्दु निन्ऱु कूट्ट मङ्गु शालैयिन् मेऱ् कण्डीरे ? 17
मऱ्ऱन्दक् कूट्टत्तु मन्नवनैक् काणीरे ?
कऱ्ऱरिन्द ञानि कडवुळैये नेरावान् 18
एळु नाळ् मुन्ने इऱै महुडन् दान् पुनैन्दान्
वाळियवन् ऍङ्गळ् वरुत्त मॆल्लाम् पोक्कि विट्टान् 19
शोऱ्ऱुक्कुप् पञ्ज मिल्लै; पोरिल्लै; तुन्बमिल्लै;
पोऱ्ऱर् कुरियान् पुदु मन्नन् काणीरो ?" 20
ऍन्ऱुरैत्तुक् काक्कै यिरुक्कैयिले अन्न मॊन्ऱु
तॆन् दिशैयिनिन्ऱु शिरिप्पुडने वन्ददङ्गे 21
अन्नमन्दत् तॆन्नै यरुहिनिलोर् माडमिशै
वन्नमुऱ् वीऱ्ऱिरुन्दु— "वाळ्ह तुणैवरे ! 22
कालैयिळ वॆयिलिल् काण्बदॆल्लाम् इम्बमन्ऱो;
शाल नुमैक् कण्डु कळित्तेन् शरुवि नीर् 23
एदुरैहळ् पेशि यिरुक्किन्ऱीर् ?" ऍन्ऱिडवे
बोदमुळ्ळ काक्कै पुहन्ऱदन्दच् चॆय्दि यॆल्लाम् 24
अन्नमिदु केट्टु महिळ्न् दुरैक्कुम्— "आङ्गाणुम् !
मन्नर् अऱम् पुरिन्दाल् वैय मॆल्लाम् माण्बु पॆऱुम् 25

बालातप है। वह सर्वत्र आनन्द का विस्तार करनेवाला है। १२ तब तुम्हें देखकर खुशी से इधर आ गया। री मैया ! कौओं का वह विशाल दल क्या है ? १३ तोते ने यह पूछा, तो चिड़िया ने कहा, बहुत (ठीक) पूछा तुमने। तोते ! मैं भी– १४ वही जानने के लिए इधर आयी हूँ। हे पढ़े-लिखे कौए ! तुम ही बताओ। उसने कौए से प्रार्थना की। १५ तब कौआ बताता है--हे प्यारे मित्रो ! मैं कहता हूँ। सुनो ! कुछ दिनों से कौओं में— १६ कुछ अनोखी बातें हो गयीं। तुमने सुना नहीं ? वहाँ देखो उस जमात को। १७ उस समूह के राजा को भी देख रहे हो न ? वह शिक्षित ज्ञानी है। ईश्वर के समान है। १८ सात दिन के पहले उसने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुम्हें देखकर इधर आ गया मोद - मग्न - मन।
अरे ! आ रहा कौओं का दलविपुल (कृष्ण-तन) ॥ १३ ॥
इस प्रकार चिड़िया से पूछा तोते ने जब।
"यही सोचती थी मैं भी" बोली चिड़िया तब ॥ १४ ॥
यही जानने हेतु इधर मैं भी आयी हूँ।
काक प्रबुद्ध ! तुम्हीं बतलाओ, चकराई हूँ ॥ १५ ॥
तब कौआ बोला, मित्रो ! मैं बतलाता हूँ।
जो कहता हूँ सुनो, तुम्हें मैं जतलाता हूँ ॥ १६ ॥
कौओं में कुछ हुई इधर हैं बातें अद्भुत।
सुना न होगा तुमने; देखो उनको दल - युत॥ १७ ॥
देख रहे हो उस समूह का जो नृपवर है।
वह शिक्षित है, ज्ञानवान, मानो ईश्वर है ॥ १८ ॥
सात दिनों से किया मुकुट को उसने धारण।
उसने सब कर दिया हमारा दुःख - निवारण ॥ १९ ॥
अब खाने की कमी नहीं है, युद्ध नहीं है।
दुःख नहीं, सम्माननीय यह भूप सही है ॥ २० ॥
जब कौआ चुप हुआ बात यह अपनी कहकर।
एक आ गया हंस वहाँ दक्षिण से उड़कर ॥ २१ ॥
बैठ गया नारियल - पार्श्ववर्ती वह छत पर।
जय हो मित्रो ! बोला शान समेत हंसवर ॥ २२ ॥
अरुणोदय में दृश्य सभी सुख - प्रद हैं सुन्दर।
मैं भी हुआ प्रसन्न (मित्रवर) तुम्हें निरखकर ॥ २३ ॥
तुम क्या चर्चा करते हो जब प्रश्न सुनाया।
बुद्धिमान कौए ने तब सब उसे बताया ॥ २४ ॥
सुन करके वह बात हुआ वह हंस प्रफुल्लित।
बोला नृप के धर्म - चरण से होता जग-हित ॥ २५ ॥

राजमुकुट पहना। जय हो उसकी। उसने हमारा सारा दुख दूर कर दिया। १९ अब हमें खाने की कमी नहीं है। कोई युद्ध नहीं। कोई दुख नहीं ! नया राजा सम्मान करने योग्य है ! देखा न ? २० यह कहकर कौआ चुप रहा, तो वहाँ एक हंस दक्षिण से हँसता हुआ आया। २१ वह हंस उस नारियल के पेड़ के पास एक छत पर बैठा। शान के साथ विराजमान होकर वह बोला— जय हो मित्रो ! २२ प्रातःकालीन बालातप में सभी दृश्य सुखद हैं न ? तुम्हें देखकर मैं भी खुश हुआ। इकट्ठा होकर– २३ तुम लोग क्या चर्चा कर रहे हो ? जब उसने यह पूछा, तो बुद्धिमान कौए ने यह समाचार सुनाया। २४ हंस ने वह सुना, तो उसे आनन्द हुआ। उसने कहा, हाँ, देखो ! राजा धर्माचरण करे, तो सारा संसार श्रेष्ठ बन जायगा। २५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऑऱ्ऱुमैयाल् मेन्मैयुण्डाम् ऑन्ऱै यॊन्ऱु तुन् बिऴैत्तल्
कुऱ्ऱमॆन्ऱु कण्डाल् कुऱैवुण्डो वाऴ्विनुक्के ?" 26
ऍन्ऱु शॊल्लि अन्नम् परन्दाङ्गे एहिऱ्ऱाल्
मन्ऱु कलैन्दु मऱैन्दन वप्पुट्कळॆल्लाम् 27
कालैप् पॊऴुदिन्निले कण्डिरुन्दोम् नाङ्गळिदै;
ञाल मऱिन्दिडवे नाङ्गळिदैप् पाट्टिशैत्तोम् 28

अनदिप् पॊऴुदु—13

कावॆन्ऱु कत्तिडुङ् गाक्कै— ऍन्ऱन्
कण्णुक्किन्निय करु निऱक् काक्कै
मेविप् पल किळै मीदिल्— इङ्गु
विण्णिडै अन्दिप् पॊऴुदिन्नैक् कण्डे
कूवित् तिरियुम् शिलवे— शिल
कूट्टङ्गळ् कूडित् तिशैदोऱुम् पोहुम्
देवि पराशक्ति यन्नै— विण्णिऱ्
शॆव्वॊळि काट्टि पिऱैतलैक् कॊण्डाळ् 1
तॆन्नै मरक्किळै मीदिल्— अङ्गोर्
शॆल्वप् पशुङ्गिळि कीच्चिट्टुप् पायुम्
शिन्नञ् जिऱिय कुरुवि— अदु
'जिव्' वॆन्ऱु विण्णिडै यूशलिट्टेहुम्
मन्नप् परुन्दॊ रिरण्डु— मॆल्ल
वट्टमिट्टुप् पिन् नॆडुन्दॊलै पोहुम्
पिन्नर् तॆरुविलोर् शेवल्— अदन्
पेच्चिन्निले 'शक्ति वेल्' ऍन्ऱु कूवुम् 2

मेल से उन्नति होगी। परस्पर पीड़न अपराध है --यह लोग समझ लें, तो फिर, जीवन में क्या कोई कष्ट होगा ? २६ यह सुनाकर हंस उड़ता चला गया। फिर सभा विसर्जित करके वे पक्षी भी चले गये। २७ हम प्रातःकाल में यह सब देखते रहे। दुनिया जान ले --इसलिए हमने इस विषय को गीत गाकर सुनाया। २८ (संकेत भारतीयों के मेल की ओर है।)

संध्या-समय—१३

'काएँ', 'काएँ' कहनेवाला कौआ, वह अति काला कौआ, मेरे मन को लुभानेवाला प्रिय पक्षी है। कुछ कौए अनेक डालों में बैठकर आकाश में संध्या को देखकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पर - पीडन अपराध, मेल से होती उन्नति।
यदि यह समझें लोग, न हो जीवन की दुर्गति ॥ २६ ॥
यह कहकर वह हंस चल दिया 'फुर' से उड़कर।
सभा विसर्जित करके खिसके वे सब खगवर ॥ २७ ॥
हम प्रातः यह दृश्य देखते रहे सुहाया।
जग के हित के लिए गीत में बना सुनाया ॥ २८ ॥

सन्ध्या-समय—१३

कौआ पक्षी "काँ - काँ - काँ - काँ" करनेवाला।
कौआ पक्षी है शरीर का अतिशय काला ॥
कौआ पक्षी मेरा हृदय लुभानेवाला।
(कौआ पक्षी है सबसे ही सदा निराला)
कुछ कौवे बैठकर वृक्ष की शाखाओं पर।
नभ में संध्या घिरी देख बोलते निरन्तर ॥
कुछ दल बाँध दिशाओं में हैं उड़ते जाते।
(विविध भाँति की चेष्टाए वे सदा दिखाते) ॥
देवी पराशक्ति ने तब तक गगन - पटल पर।
बाल-चन्द्र सिर धारा लाल कान्ति फैलाकर ॥ १ ॥
उधर नारियल के तरु की सुंदर डाली पर।
उड़ता एक हरा शुक करता हुआ मुखर स्वर ॥
और एक छोटी चिड़िया भी शोर मचाती।
'फुर' से उड़कर नभमंडल में है मँड़राती ॥
"बाज़ - राज" दो काट रहे धीरे से चक्कर।
बहुत दूर तक वे जाते हैं नभ में उड़कर ॥
देखो मुर्ग़ा एक बाँग दे रहा सड़क पर।
"वेल" (शक्ति) की शक्ति छिपी उसके स्वर-भीतर ॥ २ ॥

बोलते रहते हैं। कुछ दल बाँधकर दिशा-दिशा में उड़कर जाते हैं। उस समय देवी पराशक्ति ने आकाश में अपना लाल प्रकाश फैलाकर सिर पर बालचन्द्र धारण कर लिया। १ उधर नारियल की डाल पर एक प्यारा हरा शुक 'कीच', 'कीच' शब्द करता हुआ उड़ता है। एक अति छोटी चिड़िया चहचहाती हुई 'फर' से उड़कर आकाश में जाती है। दो राजा बाज धीरे-धीरे चक्कर काटते हुए फिर बहुत दूर उड़कर चले जाते हैं। फिर सड़क पर एक मुर्ग़ा आता है! वह बाँग देता है और उसके बोल में 'शक्ति वेल्' (षण्मुख का आयुध 'साँग' यहाँ 'वेल' कहलाता है) की-सी ध्वनि आती है। संस्कृत में 'शक्ति' ही उसका नाम है। अतः यहाँ सशक्त शक्ति का अर्थ किया जाना चाहिए।) २ लाल रंग के आकाश में मधुर चन्द्र

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शॆव्वॊळि वान्निल् मऱैन्दे— इळन्
देनिल वॆङ्गुम् पॊऴिन्ददु कण्डीर् !
इव्वळ वान्न पॊऴुदिल्— अवळ्
एऱि वन्दे युच्चि माडत्तिन् मीदु
कॊव्वै यिदऴ् नहै वीश— विऴिक्
कोणत्तैक् कॊण्डु निलवैप् पिडित् ताळ्
शॆव्विदु, शॆव्विदु, पॆण्मै !— आ !
शॆव्विदु, शॆव्विदु, शॆव्विदु कादल् 3
कादलिन्ना लुयिर् तोन्ऱुम्— इङ्गु
कादलिन्ना लुयिर् वीरत्ति लेऱुम्
कादलिन्ना लऱिवॆय्दुम्— इङ्गु
कादल् कविदैप् पयिरै वळर्क्कुम्
आदलि न्नालवळ् कैयैप्— पऱ्ऱि
अऱ्पुद मॆन्ऱिरु कण्णिडै यॊऱ्ऱि
वेदनै यिन्ऱि इरुन्देन्— अवळ्
वीणैक् कुरलि लोर् पाट्टिशैत्तिट्टाळ् 4

कादलियिन् पाट्टु

कोलमिट्टु विळक्किन्नै येऱ्ऱिक्
कूडिनिन्ऱु पराशक्ति मुन्नै
ओलमिट्टुप् पुहऴ्च्चिहऴ् शॊल्वार्
उण्मै कण्डिलर् वैयत्तु माक्कळ्;
आल मुऱ्ऱुम् पराशक्ति तोऱ्ऱम्
आनमॆन्ऱ विळक्किन्नै येऱ्ऱिक्
काल मुऱ्ऱुन् दॊऴुदिडल् वेण्डुम्
कादलॆन्बदोर् कोयिलिन् कण्णे 5

की मंद चाँदनी सर्वत्र बरसकर फैलने लगी। देखो, इस समय 'वह' धीरे-धीरे छत पर चढ़ आयी। उसके बिंब-फलाधर से मुस्कुराहट छिटक रही थी। उसने आँख के कोने से चाँदनी को ग्रस लिया। हाँ! नारीत्व सुन्दर है। सुन्दर, सुन्दर, सुन्दर प्रेम है। ३ प्रेम से प्राण उदित होते हैं। प्रेम से प्राण वीरता में बढ़ जाते हैं। प्रेम से बुद्धि प्राप्त होती है। और प्रेम कविता के पौधों को बढ़ायगा। इसलिए मैं उसके हाथ को लेकर अपनी दोनों आँखों पर लगाकर वेदनाहीन (सुखी) रहा। उसने वीणा की ध्वनि में एक गाना गाया। ४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लाल वर्ण के नभमंडल के विशद पटल पर।
फैल रही है मधुर - चन्द्र - चाँदनी मन्द तर॥
धीरे - धीरे चढ़कर संध्या छत पर आई।
बिम्बाधर से छिटक रही मुसकान सुहाई॥
निज कटाक्ष से उस संध्या ने ग्रसी चाँदनी।
सुन्दर है नारीत्व, प्रेम - प्रतिमा सुहावनी॥ ३॥
प्रबल प्रेम से प्राण उदित होते, बढ़ते हैं।
प्रबल प्रेम से प्राण वीरता पर चढ़ते हैं॥
प्रबल प्रेम से बुद्धि प्राप्त होती है निर्मल।
प्रबल प्रेम से कविता-तरु बढ़ता अति उज्ज्वल॥
इसीलिए मैं उसका कोमल हाथ पकड़कर।
अपनी दोनों आँखों पर फिर उसे लगाकर॥
हुआ वेदना-हीन और अतिशय सुख पाया।
उसने वीणा की ध्वनि में फिर गाना गाया॥ ४॥

प्रेमिका का गीत

रंगोली को बना जलातीं दीपक सुन्दर।
फिर समस्त रमणियाँ खड़ी होती हैं मिलकर॥
फिर सब मिलकर पराशक्ति के सम्मुख होकर।
उच्च स्वरों में स्तुति गाती हैं अतिशय मनहर॥
नहीं जानते सच्ची बातें हैं जग के जन।
सारा जग है पराशक्ति का रूप सनातन॥
उसके सम्मुख ज्ञान - स्वरूपी दीप जलाकर।
प्रेमदेव के सम्मुख करतीं पूजा सुन्दर॥ ५॥

प्रेमिका का गीत

[‘कोलम्’ को आजकल ‘रंगोली’ कहा जाता है जो उत्तर भारत में ‘चौक पूरने’ जैसा होता है। स्त्रियाँ सबेरे घर के सामने गोबर-मिश्रित पानी सींचकर साफ़ करती हैं। फिर झाड़ू लगाती हैं। चावल का आटा लेकर अपनी दो उँगलियों के मध्य से उस आटे से विविध चित्र बनाती हैं। यह घर के अन्दर भी उसे पवित्र करने के ख्याल से बनाये जाते हैं। यह मंगल-चिह्न भी समझा जाता है।] स्त्रियाँ ‘कोलम्’ बनाकर दीप जलाती हैं। फिर वे मिलकर खड़ी होती हैं और पराशक्ति के सामने उच्च स्वर में उसका स्तुति-गान करती हैं। पर विश्व के लोग सच्ची बात नहीं जानते। सारा विश्व पराशक्ति का ही रूप है। ज्ञान रूपी दिया जलाकर सदा पूजा करनी चाहिए। कहाँ? प्रेम-मन्दिर के सामने! ५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निलावुम् वान् मीनुम् कार्रुम्—14

(मनत्तै वाऴ्त्तुदल्)

निलावैयुम् वानत्तु मीनैयुम् कार्रैयुम् नेर्पड वैत्ताङ्गे
कुलावुम् अमुदक् कुऴम्बैक् कुडित्तॊरु कोल वॆऱि पडैत्तोम्;
उलावुम् मनच्चिरु पुऴ्ळिनै ॲङ्गणुम् ओट्टि महिऴ्न्दिडुवोम्;
पलाविन् कनिच्चुळै वण्डियिल् ओर् वण्डु पाडुवदुम् वियप्पो ? 1
तारहै यॆन्ऱु मणित्तिरळ् यावैयुन् शार्न्दिडप्पो मनमे
ईरच् चुवैयदि लूऱि वरुमदिल् इन्बुऱु वाय् मनमे
शीर विरुञ्जुडर् मीनॊडु वानत्तुत् तिङ्गळैयुञ् जमैत्ते
ओरऴहाह विऴुङ्गिडुम् उळ्ळत्तै ऒप्पदॊर् शलव मुण्डो ? 2
पन्ऱियैप् पोलिङ्गु मण्णिडैच् चेर्ऱिल् पडुत्तुप् पुरळादे
वॆन्ऱियै नाडियिव् वानत्तिल् ओड विरुम्बि विरैन्दिडुमे
मुन्ऱिलिल् ओडुमोर् वण्डियैप् पोलन्ऱु मून्ऱुलहुञ् जूऴ्न्दे
नन्ऱु तिरियुम् विमानत्तैप् पोलॊरु नल्ल मनम् पडैत्तोम् 3
तॆन्नैयिन् कीऱ्ऱुच् चल शल वॆन्ऱिडच् चॆय्दु वरुङ् गार्ऱे !
उन्नैक् कुदिरै कॊण्डेऱित् तिरियुमोर् उळ्ळम् पडैत्तु विट्टोम्
शिन्नप् पऱवैयिन् मॆल्लॊलि कॊण्डिङ्गु शेर्न्दिडु नऱ् कार्ऱे !
मिन्नल् विळक्किऱ्कु वानहङ् गॊट्टुमिव् वेट्टोलि येन् कॊणर्न्दाय् ? 4

चाँदनी, आकाश के नक्षत्र और पवन—१४

(मन को बधाई देना)

हमने चाँदनी, आकाश के नक्षत्रों तथा पवन को एकत्रित कर सजा रखा, तो एक अमृत का घोल मिला। हमने उसे पिया और हमें विचित्र पागलपन अनुभव हो गया। अब हम चंचल मन की छोटी चिड़िया को सब ओर भेजकर खुश होगे। कटहल के दानों से भरी गाड़ी में बैठकर भ्रमर गाने लगे, तो उसमें क्या विस्मय होगा ? १ रे मन ! चलो, तारों रूपी रत्नराशि के पास ! उनसे एक स्निग्ध रस निकल आयगा। उसको पीकर मुदित हो जाओ। श्रीविकसित तारों के साथ चन्द्र को भी एक साथ पक्व बनाकर उस सुंदर रूप को निगलनेवाले मन की समानता करनेवाला कोई धन भी होगा क्या ? (यह अप्रस्तुत विधान कल्पना की उत्तम सृष्टि है।) २ मेरा मन, धरती के पंक में, सूअर के समान नहीं लोटेगा। वह इस आकाश में विजय की चाह में दौड़ना चाहेगा। यह घर के सामने वाले आँगन में दौड़नेवाली गाड़ी के समान नहीं है; पर तीनों लोकों में घूम आनेवाले यान के समान मन हमें मिला है। ३ नारियल के पत्तों को 'चलचल' ध्वनि के साथ हिलाते आनेवाले पवन। तुमको घोड़ा बनाकर तुम पर सवार हो घूमनेवाला मन हमने पा लिया है। छोटे पक्षियों के मृदु स्वर को ले आने वाले अच्छे पवन। बिजली के दीप के लिए आकाश से निकलनेवाली यह काटनेवाली

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चाँदनी, आकाश के नक्षत्र और पवन—१४

(मन को बधाई देना)

नभमंडल - नक्षत्र - पुंज चाँदनी, समीरण।
इन सबको एकत्रित कर जब किया विमिश्रण ॥
तो अमृत का घोल बना, हमने पी डाला।
उससे पागलपन छाया विचित्र मतवाला ॥
चंचल मन के पक्षी को सब ओर भेजकर।
उपजेगी अतिशय प्रसन्नता मम उर - अन्तर ॥
कटहल के कोयों से भरी हुई गाड़ी पर।
बैठ अगर गाने लग जाये कोई मधुकर ॥
तो इसमें है बात नहीं कुछ भी विस्मय की।
(बात नहीं भय की, न बात कुछ भी संशय की) ॥ १ ॥
तारों रूपी रत्न-राशि के पास चलो मन।
उससे होगा एक सरस रस का मधु - वर्षण ॥
महामुदित हो जाओ तुम उस रस को पीकर।
(जीवन का आनन्द अलौकिक भोगो जीकर) ॥
विकसित तारों - साथ चन्द्र को पाक बनायें।
उसके अति सुन्दर स्वरूप को फिर खा जायें ॥
इस प्रकार के कार्य किया करता जो मन है।
उसकी समतावाला क्या कोई भी धन है? ॥ २ ॥
शूकर के समान धरती की कीचड़ में सन।
लोट कभी सकता न हमारा यह पावन मन ॥
विजय चाहने हेतु उड़ेगा उच्च गगन में।
है उस यान-समान घूमता जो त्रिभुवन में ॥
जो गाड़ी दौड़ती सदन - सम्मुख आँगन में।
इस गाड़ी को यान - सदृश मत समझो मन में ॥ ३ ॥
हिलते पत्र नारियल के, होती ध्वनि "हर - हर"।
पवन ! तुम्हारी झकझोरों से हहराते स्वर ॥
तुमको हमने है द्रुतगामी अश्व बनाया।
उस पर विचरण करनेवाला मन है पाया ॥
लघु विहगों के मृदु स्वर लानेवाले सु - पवन।
दीप जलाने को बिजली का यह क्यों तर्जन ॥
लाये नभ के बीच चमककर उगनेवाली।
विद्युद्दीप जलाने को ध्वनि तुम भयशाली ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मण्णुलहत्तुनल् लोशैहळ् कार्ऱेनुम् वानवन् कॊण्डु वन्दान्
पण्णिलिशैत्त वव् वॊलिहळनैत्तैयुम् पाडि महिळ्न् दिडुवोम्
नण्णि वरु मणि योशैयुम्, पिन्नङ्गु नाय्हळ् कुलैप्पदुवुम्
अॆण्णु मुन्ने 'अन्नक् कावडिप् पिच्चै' यॆन् ऱेङ्गिडु वान् कुरलुम् 5
वीदिक् कदवै अडैप्पदुम् कीळ्त्तिशै विम्मिडुम् शङ्गॊलियुम्
वाडुहळ् पेशिडु मान्दर् कुरलुम् मदलै अळुङ् गुरलुम्
एदॆदु कॊण्डु वरुहुदु कार्ऱिवै अॆण्णि लहप्पडुमो ?
शीदक् कदिर् मदि मेऱ्चॆन्ऱु पाय्न् दङ्गु तेनुण्णुवाय् मनमे ! 6

मळै—15

तिक्कुक्कळ् अॆट्टुम् शिदऱि— तक्कत्
तीम्तरिकिट तीम्तरिकिट तीम्तरिकट— तीम्तरिकिट
पक्क मलैहळ् उडैन्दु— वॆळ्ळम्
पायुदु पायुदु पायुदु— ताम तरिकिड
तक्कत् तदिङ्गिड तित्तोम्— अण्डम्
शायुदु शायुदु शायुदु— पेय् कॊण्डु
तक्कॆ यडिक्कुदु कार्ऱु— तक्कत्
ताम्तरिकिड ताम्तरिकिड ताम्तरिकिड ताम्तरिकिड 1
वॆट्टि यडिक्कुदु मिन्नल्— कडल्
वीरत्तिरै कॊण्डु विण्णै यिडिक्कुदु
कॊट्टि यिडिक्कुदु मेहम्— कू
कूवॆन्ऱु विण्णैक् कुडैयुदु कार्ऱु
चट्टच् चड चट्टच् चड डट्टा— अॆन्ऱु
ताळङ् गॊट्टिक् कन्नैक्कुदु वानम्

घोर ध्वनि तुम क्यों लाये ? ४ भूलोक की अच्छी ध्वनियों को पवन देव लाया। उन कभी ध्वनियों को गीतों में मिलाकर हम गायेंगे और खुशी मनायेंगे। पास होती आनेवाली घंटा-ध्वनि, फिर वहाँ कुत्तों का भौं-भौं शब्द, सोचने के पहले दीन भिखारी का स्वर 'अन्न कोवड भिक्षा'। ५ फिर ड्योढ़ी का कपाट बन्द करना, पूरब दिशा में उठनेवाला शंखनाद, तर्क करनेवाले मनुष्यों का नाद, बच्चों के रोने का स्वर क्या-क्या ला रहा है यह पवन ? क्या ये सब गिनती में आ सकते हैं ? रे मन ! शीतल किरणों पर चढ़ो; उधर झपटो और मधु पियो। ६

वर्षा—१५

आठों दिशाओं में बिखर— तक्कत् तीम तरिकिड·····। पास के पर्वत टूटे। —पानी का रेला आ रहा है —आ रहा है·····ब्रह्मांड गिरता है ! गिरता है !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अति समीप बजनेवाली घंटी - ध्वनि सुन्दर।
कुत्तों के 'भौं - भौं' करने का शब्द उग्रतर॥
"अन्नक्कावडिप्पिच्चै" की गुहार लगाता।
काँवर लिये भिखारी करुण पुकार सुनाता॥
पवन - देव लाया ये सब ध्वनियाँ समेटकर।
इन सब ध्वनियों का, गीतों के साथ मेल कर॥
हम सब जन हिल-मिल सुंदर गायन गायेंगे।
खुशी मनायेंगे (औ' सबको हरसायेंगे)॥ ५॥

ड्योढ़ी के कपाट उढ़काने का रव सुन्दर।
पूर्व दिशा से उठनेवाला उच्च शंख - स्वर॥
तर्क-वितर्क कर रहे मनुजों का रव खरतर।
बच्चों के रोने की ध्वनि अत्यन्त करुणतर॥
कितने शब्दों को लाता है मंद समीरण।
पवन-कृपाओं की गणना कर सके कौन जन!॥
रे मन! हिमकर की शीतल किरणों पर चढ़कर।
झपट - झपट मधुपान करो अतिशय छक - छककर॥ ६॥

वर्षा—१५

आठ दिशाओं में बिखरी हैं मेघ - घटाएँ।
'धड़ - धड़' रव कर टूट रहीं पर्वत - मालाएँ॥
जल का रेला रेल रहा है उमड़-घुमड़ कर।
फटता है ब्रह्मांड गिर रहा (मानो भू पर)॥
मानो है पिशाच करता उत्पात भयंकर।
उग्र पवन बढ़ रहा चल रही आँधी सर-सर॥ १॥

कौंध रही है बिजली नभ का हृदय चीरकर।
खोद रहा भीषण लहरों से नभ को सागर॥
गरज रहा है मेघ (नगाड़ा) बजा - बजाकर।
नोच रही नभ "कू-कू" करती हवा भयंकर॥

पिशाच सवार हो गया और पवन आँधी बनकर जोर से बह रहा है! —ताम् तरिकिड ताम् तरिकिट·····। १ बिजली काटती-सी कौंधती है। समुद्र वीर (भीम-) लहरों से आकाश को भेदता है। मेघ बज-बजकर गरजता है। क, क शब्द के साथ हवा आकाश को नोचती है। चट् चट् चट् चट् चड डट्टा की ध्वनि में जब ताल बजाकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॆट्टुत् तिशैयुम् इडिय— मऴै
अॆङ्ङनम् वन्ददडा तम्बि ! वीरा ? 2
अण्डम् कुलुङ्गुदु तम्बि !— तलै
आयिरम् तूक्किये शेडनुम् पेय् पोल्
मिण्डिक् कुदित् तिडुहिन्ऱान्;— तिशै
वॆऱ्पुक् कुदिक्कुदु वानत्तुत् तेवर्
शॆण्डु पुडैत्तिडु हिन्ऱार्— अॆन्न
वॆय्विहक् काट्चियैक् कण् मुन्बु कण्डोम् !
कण्डोम् कण्डोम् कण्डोम्— इन्दक्
कालत्तिन् कूत्तिनैक् कण् मुन्बु कण्डोम् 3

पुयऱ् काऱ्ऱु—16

(नळ वरुषम् कार्त्तिहै मासम् 8 ता. बुदन् किऴमै इरवु, ऒरु कणवनुम् मनैवियुम्)

मनैवि— काऱ्ऱडिक्कुदु कडल् कुमुऱुदु
कण्णै विऴिप्पाय् नायहने !
तूऱ्ऱल् कदवु शाळर् मॆल्लाम्
तॊळैत्तडिक्कुदु पळ्ळियिले
कणवन्— वानम् शिनन्ददु वैयहम् नडुङ्गुदु
वाऴि पराशक्ति कात्तिडवे !
दीनक् कुऴन्दैहळ् तुन्बप् पडादिङ्गु
देवि अरुळ् शॆय्य वेण्डुहिन्ऱोम्

आकाश हिनहिनाता है। आठों दिशाओं को तोड़ते हुए यह वर्षा आयी। कैसे ? रे भैया ! रे वीर ! २ ब्रह्मांड हिलते हैं। भैया ! हजार सिरवाला शेषनाग भी जोर लगाकर नाचता है। दिशा-पर्वत नाचते हैं। आकाश के देव गेंद उछालते हैं। ओह ! ओह ! हम क्या ही देवी-दृश्य आँखों के सामने देखते हैं। हाँ देखा, देखा ! देखा। इस काल के तांडव को हमने अपनी आँखों के सामने देखा। ३

तूफ़ान—१६

['नळ' वर्ष, कार्तिक महीना, आ वाँ दिन बुध की रात। तमिऴ देश में साठ संवत्सरों के नाम प्रभव, विभव आदि हैं। साठ संवत्सरों की एक माला पूरी होने पर फिर से 'प्रभव' से आरम्भ करके 'अक्षय' तक आती है। यह 'नळ' वर्ष सन् १९१६-१९१७ ई० में आया था।]

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'चट्-चट् ध्वनि से ताल बजा रव करता अंबर।
आयी वर्षा आठ दिशाएँ तोड़ वीरवर॥ २॥

मैया ! देखो हिलते हैं ब्रह्मांड भयंकर।
नाच रहा है शेषनाग भी ज़ोर लगाकर॥
आठ दिशाओं के पर्वत हैं सभी नाचते।
मानो नभ के देव ज़ोर से गेंद मारते॥
क्या ही ! दैवी दृश्य दृगों से आह ! निरखते।
तांडव - नृत्य - प्रभञ्जन, निज नयनों से लखते॥ ३॥

तूफ़ान—१६

कार्तिक मास आठवीं तिथि थी, थी बुधवासर की वह रात।
जब "नल" नामक संवत्सर का हुआ प्रवेश विश्व-विख्यात॥
"प्रभव-विभव-शुक्लादिक" होते साठ सभी ये संवत्सर।
और "प्रभव" से "अक्षय" तक ये होते क्रमशः प्रतिवत्सर॥
उन्निस सौ सोलह-सत्रह में "नल" नामक संवत् आया।
(उसी वर्ष तूफ़ान भयंकर था स्वदेश पर घहराया)॥

एक पति-पत्नी

पत्नी— हवा वह रही, गरज रहा है, हे प्रभु ! सागर।
भेद खिड़कियाँ, पट, गिरतीं बूँदें शय्या पर॥
पति— गगन कुपित हो गया काँपता है अवनी-तल।
पराशक्ति की जय हो, रक्षा करे सुमंगल॥
हम देवी से करें प्रार्थना अब मिल-जुलकर।
संकट आवे नहीं हमारी सन्तानों पर॥

एक पति-पत्नी

पत्नी—हे नायक, आँखें खोलो। हवा बह रही है; समुद्र गरज रहा है। बूँदें किवाड़ों, खिड़कियों को छेदकर शय्या पर गिर रही हैं। पति— आकाश नाराज़ हो गया। (इसलिए) भूमि काँप रही है। जय हो पराशक्ति की। वह हमारी रक्षा करे। हम देवी से प्रार्थना करें कि दीन संतानों पर कोई विपत्ति न आवे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मनैवि— नेर्रिरुन्दोम् अन्द वीट्टिनिले इन्द
नेरमिरुन्दाल् अॅन् पडुवोम् ?
कार्रॅन वन्ददु कूर्रमिङ्गे नम्मैक्
कात्तदु दॅय्व वलिमै यन्रो !

पिळैत्त तॅन्नन् दोप्पु—17

वयलिडै यिनिले— शॅळुनीर् मडुक् करैयिनिले
अय लॅवरु मिल्लै— तनिये आरुदल् कॉळ्ळ वन्देन् ! 1
कार्र डित्त दिले— मरङ्गळ् कणक्किडत् तहुमो ?
नार्रिनैप् पोले— शिदरि नाडॅङ्गुम् वीळ्न्दनवे 2
शिरिय तिट्टैयिले— उळदोर् तॅन्नञ् जिरु तोप्पु
वरियव नुडैमै— अदनै वायु पॉडिक्क विल्लै 3
वीळ्न्दन शिलवाम्— मरङ्गळ् मीन्दन पलवाम्
वाळ्न्दिरुक्क वॅन्रे अदनै वायु पॉरुत्तु :विट्टान् 4
तनिमै कण्डदुण्डु— अदिले सार मिरुक्कु दम्मा
पनि तॉलैक्कुम् वॅयिल्— अदुतेम्बाहु मदुर मन्रो ? 5
इरबि निन्रदु काण् विण्णिले– इन्ब वॉळित् तिरळाय्;
परवि यॅङ्गणुमे— कदिर्हळ् पाडिक् कळित्तनवे 6
निन्र मरत्तिडैये— शिरिदोर् निळलिनिल् इरुन्देन्
ऍन्रुम् कविदयिले— निलैयाम् इन्बम् अरिन्दु कॉण्डेन् 7

पत्नी— कल हम उस घर में रहे। अगर अब वहाँ रहते तो क्या-क्या कष्ट सहना पड़ता ! यहाँ यम हवा के रूप में आ रहा है। पर जिसने हमारी रक्षा की वह देव-शक्ति ही है।

बचा नारियल का बाग़—१७

खेतों के बीच में, समृद्ध जलाशय के किनारे, पास कोई नहीं था। — अकेले रहकर मैं मन को आश्वस्त करने आया। १ हवा के बहने से, कितने ही पेड़—गिनना सम्भव है क्या ? छोटे धान के पौधों के समान देश भर में गिरे और पड़े हुए थे। २ छोटे टीले पर एक छोटा-सा नारियल का बाग़ था। वह एक ग़रीब का था। अतः वायु ने उसे नष्ट नहीं किया था। ३ गिरे थे कुछ ही पेड़; बचे थे बहुत पेड़। वायु ने उसे जिलाने के विचार से छोड़ किया था। ४ निर्जनता मिली। उसमें भी कोई सार (प्रयोजन) है। मैया ! ओस को नष्ट करनेवाली धूप —वह भी कितनी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पत्नी— कल हम जिस घर में रहे आज भी यदि हम रहते।
तो जाने हम सब जन क्या क्या संकट सहते।
बन करके तूफ़ान वहाँ पर यम था आया।
किन्तु देव की सबल शक्ति ने हमें बचाया॥

बचा नारियल का बाग़—१७

उन खेतों के बीच, समृद्ध जलाशय तट पर।
उनके पास नहीं दिखता था कोई भी नर॥
देख वहाँ एकान्त अकेले में ही रहकर।
संतोष दिलाने लगा हृदय को साहस भर॥ १॥
चलने से तूफ़ान गिरे कितने ही तरुवर।
जिनको गिनना महा असंभव है अति दुष्कर॥
छोटे - छोटे धानों के पौधों-सम तरुवर।
पड़े हुए थे बिछे देश भर में भूतल पर॥ २॥
छोटा टीला एक वहाँ अतिशय शोभन था।
उस पर छोटा एक नारियल का उपवन था॥
उसका स्वामी एक ग़रीब अकिंचन जन था।
सदय हुआ तूफ़ान बचा अक्षत उपवन था॥ ३॥
केवल कुछ ही पेड़ गिरे थे, बचे अपरिमित।
वायुदेव ने छोड़ दिया था उनको जीवित॥ ४॥
मिला मुझे एकान्त मिला यह स्थल है निर्जन।
छिपा हुआ इसमें भी कोई प्रकृति - प्रयोजन॥
मैया निकली धूप, ओस की यह नाशक है।
कितनी सुन्दर मधुर मनोहर आकर्षक है॥ ५॥
नभ - मंडल में संस्थित सुन्दर रवि - मंडल था।
मधुर प्रकाश - पुंज बिखरा उज्ज्वल निर्मल था॥
रवि की किरणें सभी ओर फैलीं मुसकातीं।
गाती - सी आनन्दमयी-सी थी दिखलातीं॥ ६॥
उस स्थल पर जो लगा हुआ था सुन्दर तरुवर।
खड़ा रहा उसकी शीतल छाया में क्षण भर॥
(कविता का आनन्द अलौकिक मैंने जाना)।
कविता का चिर स्थायी सुख मैंने पहचाना॥ ७॥

मधुर है। ५ आकाश में सूर्य स्थित था, मधुर प्रकाश-पुंज बनकर। उसकी किरणें सर्वत्र फैलीं, गाती-सी आनन्दमय दिखीं। ६ जो पेड़ खड़ा था, उसकी छाँह में मैं खड़ा रहा। मैंने कविता में स्थायी सुख को देख लिया। ७ जय हो पराशक्ति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाऴ्ह पराशक्ति ! निऩैये वाऴ्त्तिडुवार् वाऴ्वार्
वाऴ्ह पराशक्ति— इदैयॆऩ् वाक्कु मऱवादे 8

अक्किऩिक् कुञ्जु—18

अक्किऩिक् कुञ्जॊऩ्ऱु कण्डेऩ्— अवै
अङ्गॊरु काट्टिलोर् पॊऩ्दिडै वॆत्तेऩ्;
वॆऩ्दु तणिन्ददु काडु— तऴल्
वीरत्तिल् कुञ्जॆऩ्ऱुम् मूप्पॆऩ्ऱुम् उण्डो ?
तत्तरिकिड तत्तरिकिड तित्तोम्

सादारण वरुषत्तुत् तूमकेदु—19

तिऩैयिऩ् मीदु पऩै निऩ्ऱाङ्गु
मणिच् चिऱु मीऩ्मिशै वळर्वाल् ऒळितरक्
कीऴ्त्तिशै वॆळ्ळियॆक् केण्मै कॊण्डिलहुम् 1
तूमकेदुच् चुडरे, वाराय् !
ऎण्णिल् पल कोडि योशऩै यॆल्लै
ऎण्णिला मॆऩ्मै इयऩ्ऱदोर् वायुवाल्
पुऩैन्द निऩ्ऩॊडु वाल् पोव वॆऩ्गिऩ्ऱार् 2
मण्णहत् तिऩैयुम् वाल् कॊडु तीण्डि
एऴैयर्क् केदुम् इडर् शॆयादे नी
पोदि यॆऩ् गिऩ्ऱार् पुदुमैहळ् आयिरम्
निऩैक्कुऱित् तऱिञर् निहऴ्त्तुहिऩ् ऱऩराल् 3

की। जो तुम्हारा स्मरण करते हैं, वे स्वयं सुख के साथ जीवित रहेंगे। जिये पराशक्ति ! --इसे मेरी वाक् कभी नहीं भूलेगी। ८

अग्नि-ढोटा (यह नया प्रयोग है)—१८

मैंने एक अग्नि-ढोटा (चिनगारी) को देखा। उसे एक जंगल के पेड़ के कोटर में छिपा रखा। जंगल जल गया। आग थम गयी। आग --वीरता में छोटा-बूढ़ा भी होता है क्या ?

साधारण वर्ष का धूमकेतु—१९

(तमिऴ संवत् चक्र में एक साल का नाम)

(मानो) कोदों पर ताड़ का पेड़ खड़ा हो (वैसे ही) जिसकी लम्बी बहुत छोटे सुन्दर नक्षत्र पर दुम शोभायमान है, और जो पूर्व दिशा के शुक्र नक्षत्र का साथी है- १

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जो जन देते सदा दूसरों को हैं जीवन।
सुखपूर्वक जग में जीवित रहते हैं वे जन॥
पराशक्ति की जय हो, जय हो, (जय कल्याणी)।
इसे भूल सकती न कभी भी मेरी वाणी॥ ८॥

अग्नि-ढोटा—१८

मैंने देखा एक अग्नि-शिशु जिसको कहते चिनगारी।
वन तरु के कोटर में मैंने उसे छिपाकर रक्खा री॥
उस चिनगारी से जल-भुनकर भस्म हुआ वह सारा वन।
क्षुद्र-वृद्ध हैं सम सशक्त जैसे चिनगारी का लघु-कण॥
बोलो सब मिलकर भर ज़ोम्।
तत्तरि, तत्तरि-किट, तत्तोम्॥

साधारण वर्ष का धूमकेतु—१९

कोदों के लघु पौधे पर ज्यों ताड़ खड़ा हो।
लघु तारे पर लंबी दुम का बहुत बड़ा हो॥
पूर्व दिशा में उदित शुक्र का साथी सुंदर।
धूमकेतु जगमगा रहा ज्वालाओं से भर॥ १॥
तेरे बारे में कहते हैं वैज्ञानिक जन।
नरम वायु की दुम फैली है लाखों योजन॥ २॥
अपनी लंबी दुम से भू-मंडल को छूकर।
दुनिया वालों की न हानि तू कोई भी कर॥
चल दोगे चुपचाप सभी यह जतलाते हैं।
लोग विचित्र हज़ारों बातें बतलाते हैं॥ ३॥
भारत देशवासियों के अब यही हाल हैं।
भूल गये निज ग्रंथ हुए सैकड़ों साल हैं॥
विदेशियों से हाल तुम्हारा हमने जाना।
हममें कोई था न तुम्हें जिसने पहिचाना॥ ४॥

ऐसे उस धूमकेतु की ज्वाला, तुम आओ। विचार करके लोग कहते हैं कि अनेक करोड़ योजन तक कुछ नरम वायु से बनी है तुम्हारी दुम। २ भूमि को भी अपनी दुम से स्पर्श करके, दीन-दुनियावालों की कोई हानि किये बगैर, तुम चले जाओगे —ऐसा लोग कहते हैं। तुम्हारे सम्बन्ध में लोग हज़ारों विचित्र बातें बताते हैं। ३ भारत देश में हम लोगों का यह हाल है कि उन्हें अपने प्राचीन ग्रंथों को भूले अनेक सौ वर्ष हो गये। तुम्हारी बात को भी हमने विदेशियों से सुनकर ही जाना। हममें ठीक ज्ञान रखनेवाले कोई नहीं हैं। ४ आओ ज्वाला! कुछ प्रश्न करूँगा। कहते हैं कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बारद नाट्टिल् परविय ऍम्मनोर्
नूऱ्कणम् मऱन्दु पऩ् नूऱाण्डायिऩ !
उऩदियल् अऩ्ऩियर् उरैत्तिडक् केट्टे
तॆरिन्दऩम्; ऍम्मुळे तॆळिन्दवर् ईङ्गिलै 4
वाराय् शुडरे ! वार्त्तै शिल केट्पेऩ्
तीयर्क् कॆल्लाम् तीमैहळ् विळैत्तुत्
तॊल्पुवि यदऩैत् तुयर्क् कडलाळ्त्ति नी
पोवै यॆऩ् गिऩ्ऱार् पॊय्यो मॆय्यो ? 5
आदित् तलैवि याणैयिऩ् पडि नी
शलित्तिडुऩ् दऩ्मैयाल् दण्डम् नी शॆय्वदु
पुवियिऩैप् पुऩिदमाप् पुऩैदऱ् केयॆऩ
विळम्बु हिऩ्ऱऩर् अदु मॆय्यो पॊय्यो ? 6
आण्डोर् ऍळुबत् तॆऩ्दिऩिल् ऑरु मुऱै
मण्णै नी अणुहुम् वळक्किऩै यायिऩुम्
इम्मुऱै वरविनाल् ऍण्णिलाप् पुदुमैहळ्
विळैपु मॆऩ्गिऩ्ऱार् मॆय्यो पॊय्यो ? 7
शित्तिहळ् पलवुम् शिऱन्दिडु ञाऩमुम्
मीट्टुम् ऍम्मिडै निऩ् वरविऩाल् विळैवदाप्
पुहलु हिऩ्ऱऩर्; अदु पॊय्यो मॆय्यो ? 8

अळहुत् तॆय्वम्—20

मङ्गियदोर् निल विऩिले कऩविलिदु कण्डेऩ्
वयदु पदिऩारि रुक्कुम् इळवयदु मङ्गै
पॊङ्गि वरुम् पॆरु निलवु पोऩ्ऱ वॊळिमुहमुम्
पुऩ्ऩहैयिऩ् पुदु निलवुम् पोऱ्ऱ वरुऩ् दोऱ्ऱम्
तुङ्ग मणि मिऩ् पोलुम् वडिवत्ताळ् वऩ्दु
तूङ्गादे यॆळुऩ्दॆऩ्ऩैप् पारॆऩ्ऱु शॊऩ्ऩाळ्
अङ्गदनिऱ् कण् विळित्तेऩ् अडडावो अडडा !
अळहॆऩ्ऩुऩ् दॆय्वऩ्दाऩ् अदुवॆऩ्ऱे अऱिन्देऩ् 1

तुम बुरे लोगों को हानि पहुँचाकर और इस प्राचीन भूमि को दुख-सागर में डुबोकर जाओगी। क्या यह सच या झूठ ? ५ आदि नायिका की आज्ञा के अनुसार चलते हो तुम। तुम इस लोक को सजा देते हो ताकि भूमि पवित्र बन जाय ! ऐसा भी लोग बताते हैं। वह बात सच है या झूठ ? ६ पचहत्तर सालों में एक बार तुम धरती पर जाने के आदी हो। तो भी अब की बार तुम्हारे आगमन से अनेक करिश्मे होंगे। क्या वह सच है या झूठ ? ७ कुछ लोगों का यह कथन है कि तुम्हारे प्रकट होने से हममें सिद्धियाँ सिद्ध होंगी और ज्ञान उत्पन्न होगा। वह झूठ है या सच ? ८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

धूमकेतु की ज्वाला (पुच्छल तारे!) आओ।
मैं कुछ प्रश्न करूँगा, तुम उनको समझाओ॥
कहते हानि बुरे लोगों को तुम पहुँचाकर।
जाओगे इस भूतल को दुख - सिंधु डुबाकर॥
क्या, यह सच्ची बात? अरे तुम सच-सच बोलो।
अथवा है यह झूठ (अरे! कुछ मुख तो खोलो)॥ ५॥
आदि नायिका की आज्ञा पालन करते हो॥
देकर दंड, लोक को तुम पावन करते हो॥
ऐसा इस दुनिया के कुछ जन जतलाते हैं।
क्या वे कहते झूठ या कि सच बतलाते हैं॥ ६॥
अरे! पिछत्तर साल बाद भू पर आते हो।
(आ करके जाने तुम क्या-क्या कर जाते हो)॥
क्या-क्या होंगे कहो करिश्मे! तुम आये अब।
यह सच है या झूठ? बताओ धूमकेतु! सब॥ ७॥
इस दुनिया में कुछ जन ऐसा भी बतलाते।
उदय तुम्हारे से सिद्धियाँ विविध हम पाते॥
उदय ज्ञान का होगा, यह कहते हैं कुछ जन।
मानें हम यह झूठ याकि सच मानें निज मन?॥ ८॥

सौन्दर्य-देवी—२०

मन्द चाँदनी में देखा यह सपना सुन्दर।
देखी थी सोलह वर्षों की कन्या मनहर॥
उसके मुख की शोभा थी अत्यन्त निराली।
जगमग-जगमग चारु चाँदनी थी छविशाली॥
तन पर रत्न-कान्ति-छवि, मुख पर हँसी सुहाती।
जिसे देखकर नयी चाँदनी भी शरमाती॥
जगा दिया मुझको "मत सोओ" ऐसा कहकर।
आँख खोल मैंने देखी वह कन्या सुन्दर॥ १॥

सौन्दर्य-देवी—२०

मन्द चाँदनी में मैंने एक सपना देखा, जिसमें लगभग सोलह साल की एक कन्या देखी। उसके चेहरे की शोभा उमड़ आनेवाली चाँदनी की-सी थी। नयी चांदनी भी जिसकी धाक मान ले ऐसा हास था उसके वदन पर। श्रेष्ठ रत्न की-सी थी उसके शरीर की कान्ति। उसने आकर मुझे जगाया और कहा, सोओ मत। आँख खोलकर देखो। तब मैंने आँख खोली। देखा तो-रे, रे, रे। १ जाना कि वह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'योहन्दान् शिऱन्ददुवो ? तवम् परिवो ?' ऎन्ऱेन्
'योगमे तवम् तवमे योहमॆन्' उरैत्ताळ्
'एहमो पॊरुळ् अन्ऱि इरण्डामो ?' ऎन्ऱेन्
'इरण्डुमाम् ऒन्ऱुमाम् यावुमाम्' ऎन्ऱाळ्
'दाहमऱिन् दीयुमरुळ् वान् मऴैक्के युण्डो ?
दाहत्तिन् तुयर् मऴैताम् अऱिन्दिडुमो ?' ऎन्ऱेन्
'वेहमुडन् अन्बिन्ऱेये वॆळिप् पडुत्ता' मऴैतान्
'विरुप्पुडन्ऱे पॆय्हुवदु वेऱामा ?' अन्ऱाळ् 2

'कालत्तिन् विदि मदियैक् कडन्दिडुमो ?' ऎन्ऱेन्
'कालमे मदियिनुक् कोर् करुवियाम् !' ऎन्ऱाळ्
'आलत्तिल् विरुम् बियदु नण्णुमो ?' ऎन्ऱेन्
'नालिले ऒन्ऱिरण्डु पलित्तिडलाम्' ऎन्ऱाळ्
'एलत्तिल् विडुवदुण्डो ऎण्णत्तै ?' ऎन्ऱेन्
'ऎण्णिन्ऱाल् ऎण्णियदु नण्णुङ्गाण्' ऎन्ऱाळ्
'मूलत्तैच् चॊल्लवो ? वेण्डामो ?' ऎन्ऱेन्
मुहत्तिलरुळ् काट्टिनाळ् मोहमदु तीर्न्देन् 3

ऒळियुम् इरुळुम्—21

वान्मॆङ्गुम् परिदियिन् शोदि मलैहळ् मीदुम् परिदियिन् शोदि
तान्ऱे नीर्क्कडल् मीदिलुम् आङ्गे तरैयिन् मीदुम् तरुक्कळिन् मीदुम्
कान्हत्तिलुम् पऱ्पल आऱ्ऱिन् करैहळ् मीदुम् परिदियिन् शोदि
मान्वन्ऱन् उळत्तिन्ऱिल् मट्टुम् वन्दु निऱ्कुम् इरुळिदु वॆन्ऱे ! 1

सौन्दर्य की देवी है। मैंने पूछा– योग श्रेष्ठ है या तपस्या ? उसने कहा– योग ही तप है; तप ही योग है। मैंने पूछा-- वस्तु एक ही है या दो ? उसने कहा-- दो भी, एक भी, सभी। मैंने पूछा-- प्यास को जानकर क्या मेघ जल देने की कृपा करता है ? क्या वह प्यास की टीस जानता है ? उसने कहा-- मेघ तेजी से बरसता है। फिर क्या कोई अन्य कारण है ? २ मैंने कहा--क्या समय की विधि मति को टाल सकती है ? उसने कहा-- काल ही मति का एक साधन है। मैंने पूछा, क्या दुनिया में इच्छित वस्तु मिल जाती है ? उसने कहा-- चार में से दो एक इरादे पूरे हो सकते हैं। मैंने पूछा --क्या इरादे नीलाम पर चढ़ाये जायें ? उसने कहा --संकल्प करो तो इच्छित चीज मिल जायगी। मैंने पूछा —(अपने पूछने के मूल) हेतु को कहूँगा या नहीं कहूँ ? उसने अपने मुख पर कृपा का भाव दिखाया। मेरा मोह भी (तत्काल) दूर हो गया। ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह तो "देवि सुन्दरी" ऐसा मैंने जाना।
कहो, योग औ' तप में श्रेष्ठ किसे है माना ?॥
बोली— "तप को योग, योग ही को तप जानो।
(तप में और योग में तुम कुछ भेद न मानो)"॥
मैंने पूछा— "एक वस्तु है अथवा दो हैं ?"।
बोली— "दो भी एक, एक भी दो, यों दो हैं"॥
मैंने पूछा— "प्यास देख घन जल बरसाता।
टीस प्यास की समझ मेघ क्या दया दिखाता ?"॥
बोली वह— "घन तेजी से जल बरसाता है।
सत्य यही वह करुणा अपनी दरसाता है"॥ २॥

प्रश्न— "कभी काल की गति क्या मति को टाल सकी है ?"।
उत्तर— "अरे ! काल ही मति का साधन, यही सही है"॥
प्रश्न— "क्या वस्तुएँ सभी मिल जाती हैं मन-वांछित ?"।
उत्तर— "होतीं कुछ ही सफल कामनायें मन-कांछित"॥
प्रश्न— "मनोकामना की नीलामी बोली जाए ?"।
उत्तर— "दृढ़ संकल्प करो इच्छित पदार्थ मिल जाए"॥
"हेतु कहूँ या नहीं कहूँ ?" जब वाञ्छा आए"।
तो निज मुख पर कृपा-भाव उसने दरसाए॥
सुनकर उसके वाक्य मोह मिट गया हमारा।
मन में लहरा उठी अलौकिक सुख की धारा॥ ३॥

प्रकाश और अन्धकार—२१

फैली रवि की ज्योति व्योम-मंडल के ऊपर।
फैली रवि की ज्योति पर्वतों के शिखरों पर॥
सागर पर, भू-तल पर, तरुओं पर, जंगल पर।
फैली रवि की ज्योति विविध नदियों के तट पर॥
(जग का कण-कण विमल ज्योति से पटा पड़ा है)।
मानव - मन में अंधकार क्यों घना बड़ा है ?॥ १॥

प्रकाश और अन्धकार—२१

आकाश भर में सूर्य की ज्योति है; पर्वतों पर भी सूर्य की ज्योति है। समुद्र पर, पृथ्वी पर, तरुओं पर, जंगल पर और अनेक नदियों के किनारों पर सूर्य की ज्योति पड़ रही है। पर केवल मानव के मन में अन्धकार भरा हुआ है—यह क्यों है ? १

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शोदि ऎन्नुम् करैयऱ्ऱ वॆळ्ळम् तोन्ऱि यॆङ्गुम् तिरै कॊण्डु पाय
शोदि ऎन्नुम् पॆरुङ्गडल् शोदिच् चूऱै माशऱु शोदि यन्नन्दम्
शोदि ऎन्नुम् निऱैविःदुलहैच् चूऴ्न्दु निऱ्प ऒरु तनि नॆञ्जम्
शोदि यन्ऱदॊर् शिऱ्ऱिरुळ् शेरक् कुमैन्दु शोरुम् कॊडुमैयि दॆन्ने ! 2
तेमलर्क् कॊर् अमुदन्न शोदि शेर्न्दु पळ्ळिनम् वाऴ्त्तिडुम् शोदि
काममुऱ्ऱु निलत्तॊडु नीरुम् कार्ऱुम् नन्गु तऴुवि नहैत्ते
तामयङ्गिनल् लिन्बुऱुञ् जोदि तरणि मुऱ्ऱुम् तदुम्बियिरुप्प
तीमै कॊण्ड पुलैयिरुळ् शेर्न्दोर् शिरिय नॆञ्जन् दियङ्गुव दॆन्ने ? 3
नीर्च् चुनैक् कणम् मिन्नुऱ्ऱिलह नॆडिय कुन्ऱम् नहैत्तॊळिल् कॊळ्ळ
कार्च् चडंक्करु मेहङ्ग ळॆल्लाम् कन्नहमॊत्तुच् चुडर् कॊण्डुलाव
तेर्च्चि कॊण्डु पल् शात्तिरम् कऱ्ऱुम् तॆबिट्टॊणा नल् लिन्बक् करुवाम्
वेर्च्चुडर् परमाण् पॊरुळ् केट्टुम् मॆलि वॊर् नॆञ्जिडं मेवुदल् ऎन्ने ? 4

शॊल्—22

(शॊल् ऒन्ऱु वेण्डुम् देव शंक्तिहळै नम्मुळ्ळे निलै पॆऱ्ऱच् चॆय्युम् शॊल् वेण्डुम्)

तेवर् वरुह वॆन्ऱु शॊल्वदो ?— ऒरु
शॆम्मैत् तमिऴ् मॊऴियै नाट्टिन्नाल्
आव लऱिन्दु वरुवीर् कॊलो ?— उम्मै
यन्ऱि ऒरु पुहलुम् इल्लैये 1

ज्योति रूपी तटहीन-प्रवाह तरंगाकुल होकर सर्वत्र बह रहा है। ज्योति का सागर, ज्योति का विपुल मात्रा में दान —अकलंक ज्योति अनन्त रूप से फैली है। ज्योति की पूर्णता इस लोक को घेरे रहती है। तब एक अकेला मन ज्योतिहीन अंधकार में घुटकर घुलता है, श्रान्त हो जाता है। यह क्रूरता क्यों ? २ मधुर फूल की एक ज्योति है। पक्षीगण मिलकर ज्योति की बधाई में चहकते हैं। कामना के साथ धरती, जल तथा पवन मिलते हैं और उस ज्योति में मग्न रहते हैं। वैसी ज्योति धरणी भर में व्याप्त है। तब बुराई के बीच अन्धकार से भरे लोगों के छोटे मन में क्या-क्या फैला है ? ३ जल-स्रोत शोभायुक्त है। बड़े पर्वत हँसते हैं। बरसात के काले मेघ स्वर्ण-सम ज्योति के साथ संचार करते हैं। पर अनेक शास्त्रों का अध्ययन करके भी, अक्षय आनन्द के मूल— परमात्मा की बात सुनने पर भी, साहस-हीनों (अज्ञों) के मन में जो क्रियाशील बना रहता है, वह (अंधकार) क्या है ? ४

शब्द—२२

(हमें एक शब्द चाहिए। ऐसा शब्द चाहिए जो दिव्य शक्तियों को हममें स्थायी बना रख सके।) देव आयें ! क्या ऐसा कहा जाय ? —एक श्रेष्ठ तमिऴ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ज्योति - प्रवाह तरंगित जग में सभी ओर है।
फैला है तट - हीन न दिखता ओर - छोर है॥
सभी ओर है अगम ज्योति - सागर लहराता।
सभी ओर हो रहा ज्योति का दान, विधाता!॥
सभी ओर अकलंक ज्योति फैली मन - भाई।
पूर्ण ज्योति घेरे रहती इस जग को भाई॥
सभी ओर हो रही ज्योति की जब बरसा है।
तब मेरा मन अंधकार में क्यों तरसा है?॥
ज्योतिहीन तम में घुटता घुलता मेरा मन।
क्यों ऐसी क्रूरता? श्रान्त है अतिशय उन्मन॥ २॥

मधुर फूल के बीच ज्योति जगमग ज्योतित है।
ज्योति - बधाई देने को खग - दल प्रमुदित है॥
विपुल - कामना - साथ पवन, जल, भू-तल मिलते।
मग्न ज्योति - सागर में होते (अतिशय खिलते)॥
भू-मंडल में भरी ज्योति की जगमग ज्वाला।
होन मनों में, अन्धकार फैला क्यों काला?॥ ३॥

सोते शोभा - युक्त, बड़े पर्वत हैं हँसते।
काले बादल स्वर्ण - ज्योति के साथ विलसते॥
कर अनेक शास्त्रों का गहन अध्ययन सुंदर।
औ' अक्षय सुखमूल नाम ईश्वर का सुनकर॥
साहस-हीनों, अज्ञों के भी मन में सक्रिय।
कौन "अंध" सम यह पदार्थ बतलाओ? हे प्रिय!॥ ४॥

शब्द—२२

हमको ऐसा शब्द चाहिए, हे ईश्वर! दे।
दिव्य शक्तियों को जो हममें स्थायी कर दे॥ टेक॥
"देव! पधारें —तमिळ शब्द बोलूँ मैं यह जब।
मेरी आतुरता लख आयें देव! आप तब॥
तुम्हें छोड़कर मुझे न कोई और सहारा।
(इसीलिए हे देव! तुम्हें दुख-सहित पुकारा)॥ १॥

शब्द का उच्चारण करूँ तो क्या, देव! तुम मेरी आतुरता जानकर आ जाओगे! तुम्हें छोड़कर अन्य आश्रय भी तो नहीं है। १ 'ॐ' कह दूँ तो क्या पर्याप्त होगा?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'ओम्' ऎन् ऱरैत्तुविडिऱ् पोदुमो ?— अदिल्
उण्मैप् पॊरुळऱिय लाहुमो ?
तीमै यऩैत्तु मिऱन् देहुमो ? ऎन्ऱ्ऩ्
शित्तम् तॆळिवु निलै कूडुमो ? 2
'उण्मै ऒळिर्ह' ऎऩ्ऱु पाडवो ?— अदिल्
उङ्गळ् अरुळ् पॊरुन्दक् कूडुमो ?
वण्मै उडैय दॊरु शॊल्लिऩाल्— उङ्गळ्
वाळ्वु पॆऱ विरुम्बि निऱ्किऱोम् 3
'तीयै अहत्तिऩिडै मूट्टुवोम्' ऎऩ्ऱु
शॆप्पुम् मॊऴि वलिय दाहुमो ?
ईयैक् करुड तिलै येऱ्ऱुवीर्— ऎम्मै
ऎऩ्ऱुऩ् दुयरमिऩ्ऱि वाळ्त्तु वीर् 4
वाऩ मऴै पॊऴिदल् पोलवे— नित्तम्
वन्दु पॊऴियु मिऩ्बङ् गूट्टुवीर्
काऩै अऴित्तु मऩै कट्टुवीर्— तुऩ्बक्
कट्टुच् चिदऱि विऴ वॆट्टुवीर् 5
विरियुम् अऱिवु निलै काट्टुवीर्— अङ्गु
वीऴुम् शिऱुमैहळै ओट्टुवीर्
तॆरियुम् ऒळि विऴियै नाट्टुवीर्— नल्ल
दीरम् पॆरुन् दॊऴिलिल् पूट्टुवीर् 6
मिऩ्ऩ लऩैय तिऱल् ओङ्गुमे— उयिर्
वॆळ्ळम् करैयडङ्गिप् पायुने
तिऩ्ऩुम् पॊरुळमुदम् आहुमे— इङ्गुच्
चॆय्है यदऩिल् वॆऱ्ऱि येऱुमे 7
दॆय्वक् कऩल् विळैन्दु काक्कुमे— नम्मैच्
चेरुम् इरुळऴियत् ताक्कुमे;
कै वत्तदु पशुम् बॊऩ् आहुमे— पिऩ्बु
कालऩ् पयमॊऴिन्दु पोहुमे 8

उससे सत्य वस्तु जानी जा सकती है ? क्या सभी बुराइयाँ मिट जायँगी ? क्या मेरा मन पवित्र हो जायगा ? २ क्या यह गाऊँ कि 'सत्य का प्रकाश हो ?' क्या उससे तुम (देव) लोगों की कृपा प्राप्त हो सकेगी ? हम अर्थपुष्ट एक शब्द कहकर तुम (लोगों) का-सा जीवन पाना चाहते हैं। ३ अगर यह गाऊँ कि हम हृदय में अग्नि का प्रकाश प्रज्वलित करेंगे, तो क्या वह शब्द सशक्त होगा ? हे मक्खी को गरुड़ की स्थिति में पहुँचा देनेवाले देव, सदा दुःखहीन रहने का आशीर्वाद मुझे दो। ४ आकाश से होनेवाली बारिश के समान प्रतिदिन आओ और सुख की वर्षा कर दो।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

क्या पर्याप्त (ॐ) वाणी मानी जा सकती ?।
उससे सत्य वस्तु क्या पहिचानी जा सकती ?॥
सब दोषों का कोष, कृपा पा विनशायेगा ?।
विमल भक्ति पाकर पवित्र मन हो जायेगा ?॥ २ ॥
क्या यह गाऊँ 'सदा सत्य का चिर प्रकाश हो"।
उस प्रकाश में देव-कृपा का भी विकास हो॥
अर्थपुष्ट हम एक शब्द चाहते सुनाना।
और चाहते आप - सरीखा जीवन पाना॥ ३ ॥
"अग्नि जलायेंगे उर में" —यदि हम यह गायें।
क्या यह शब्द सशक्त ताकि हम सब सुख पायें॥
लघु मक्खी को देव! गरुड़ के तुल्य कीजिए।
सदा रहूँ दुखहीन यही आशीष दीजिए॥ ४ ॥
नभ की वर्षा के समान तुम प्रतिदिन आओ।
और सदा सुख की सुंदर बरसात कराओ॥
मिटा - मिटाकर जंगल, सुंदर भवन बनाओ।
दुख के बंधन काट - काट करके छितराओ॥ ५ ॥
विकसित शुद्ध बुद्धि के सभी प्रकार दिखाओ।
हममें होनेवाली सब नीचता भगाओ॥
दृष्टि प्रकाश - पूर्ण कर दें, (हर लें अधीरता)।
शुभ कामों में बनी रहे सर्वदा धीरता॥ ६ ॥
बिजली की-सी शक्ति बढ़ेगी और पराक्रम।
जीवन का सुप्रवाह बहेगा सदा स-संयम॥
खाद्यवस्तुएँ सभी सुधा - सम सरसायेंगी।
सभी सफलताएँ कामों में मिल जायेंगी॥ ७ ॥
प्रखर शक्ति हो प्रकट करेगी रक्षा मेरी।
दूर करेगी हम पर घिरती घनी अँधेरी॥
छू देंगे हम जिसे स्वर्ण वह बन जायेगा।
सबका श्रम-भय पल भर में ही विनशायेगा॥ ८ ॥

जंगल मिटाकर भवन बना दो। जिससे दुख के बन्धन को काटकर उसे छिन्न-भिन्न कर दो। ५ विकासशील बुद्धि की स्थिति दिखा दो जिससे हम यहाँ होनेवाली नीचताओं को भगा दें। दृष्टि प्रकाशपूर्ण करो। अच्छे कामों में धीरता बनी रहे। ६ (फलतः) विद्युत् की-सी शक्ति बढ़ेगी। जीवन-प्रवाह किनारों के मध्य संयम के साथ बहेगा। खाने का पदार्थ अमृत हो जायगा। यहाँ कार्यों में सफलता होगी, हाँ (अवश्य) होगी। ७ दैवी आग (प्रखर शक्ति) प्रकट होकर हमारी रक्षा करेगी। वह हम पर आक्रमण करनेवाले अन्धकार से टकरायेगी। हाथ का अन्य पदार्थ स्वर्ण बन जायगा। फिर यम-भय दूर हो जायगा। ८ 'शक्ति-शक्ति' —गायें! सतत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'वलिमै वलिमै' ऎन्ऱु पाडुवोम्— ऎन्ऱुम्
वाळुम् शुडर्क् कुलत्तै नाडुवोम्
कलियैप् पिळन्दिडक्कै योङ्गिऩोम्— नॆञ्जिल्
कवलै इरुळऩैत्तुम् नीङ्गिऩोम् 9
'अमिऴ्दम् अमिऴ्दम्' ऎन्ऱु कूऱुवोम्— नित्तम्
अऩलैप् पणिन्दु मलर् तूवुवोम्;
तमिऴिल् पऴमऱैयैप् पाडुवोम्— ऎन्ऱुम्
तलैमैप् पॆऱुमै पुहऴ् कूऱुवोम् 10

कविदैत् तलैवि—23

वाळ्ह मऩैवियाम् कविदैत् तलैवि !
दिऩमुम् इव्वुलहिल् शिदऱिये निहऴुम्
पलपल पॊऱुळिलाप् पाऴ्पडु शॆय्दियै
वाळ्क्कप् पालैयिल् वळर्पल मुट्कळ् पोल्
पेदै युलहैप् पेदमैप् पडुत्तुम् 5
वॆऱुङ्गदैत् तिरळै वॆळ्ळऱिवुडैय
माया शक्तियिऩ् महळे ! मऩैक्कण्
वाऴ्बिऩै वहुप्पाय् वरुडम् पलविऩुम्
ओर् नाट् पोल मऱ्ऱोर् नाळ् तोऩ्ऱादु
पलविद वण्णम् वीट्टिडैप् परव 10
नडत्दिडुम् शक्ति निलैयमे ! नऩ् मऩैत्
तलैवी ! आङ्गत् तऩिप् पदर्च् चॆय्दिहळ्

प्रज्वलित ज्वाला-समूह की खोज में रहें। 'कलि' को चीरने के लिए हमने हाथ उठाया है। चित्त में जो चिन्ता का अन्धकार रहा, उस सबसे हम छूट गये हैं। ८ हम कहेंगे —'अमृत-अमृत' ! रोज अग्नि को नमस्कार करके उसपर हम पुष्प चढ़ायेंगे। तमिळ में प्राचीन वेद का गान करेंगे। सदा नेतृत्व का यश गायेंगे। १०

कविता-नायिका (स्वामिनी)—२३

गृहिणी काव्य-नायिका है। जिये वह (जय हो उसकी)। रोज इस दुनिया में इधर-उधर अनेक निरर्थक घटनाएँ घट रही हैं, और जीवन-मरु में बढ़ते काँटों के समान, अबोध संसार को भेदपूर्ण बनानेवाली व्यर्थ कथाएँ चल रही हैं। हे नादान! माया शक्ति की सुता (पत्नी) ! उन सबको लेकर गृहस्थी को रूप देनेवाली हो तुम ! अनेक वर्ष बीत जायेंगे, पर दिन बराबर नहीं लगते। एक दिन और दूसरे दिन में चित्रमय भेद बना रहेगा। विविध रंगों से घर को नित नया बनानेवाली हे शक्ति की निलय ! हे घर की अच्छी स्वामिनी ! इधर घटनेवाली सीठी-सी बातों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सदा शक्ति का नाम जपें उसके गुण गायें।
पल भर उसके चरण नहीं हम सब बिसरायें॥
सतत प्रज्वलित ज्वालाओं की खोज करें हम।
साहस कर कलियुग का कुटिल प्रभाव हरें हम॥
चिन्ता का जो अंधकार छाया था मन पर।
उस सबसे हम छूट गये (पा गये सभी वर)॥ ९॥
सदा रटेंगे "अमृत, अमृत" यह नाम मनोरम।
नमन अग्नि को नित्य, सुमन अर्पण कर उत्तम॥
तामिळ में प्राचीन वेद का गान करेंगे।
यश गायेंगे नेताओं का (मान करेंगे)॥ १०॥

कविता-नायिका (स्वामिनी)—२३

काव्य-नायिका! गृहिणी! नित घटतीं घटनाएँ।
व्यर्थ-निरर्थक इधर - उधर फैलीं सरसाएँ॥
जीवन-मरु में बढ़ते काँटों - सी दिखलाएँ।
यह अबोध जग भेदपूर्ण वे सदा बनाएँ॥
ऐसी हैं चल रहीं अनेकों व्यर्थ कथाएँ।
ले करके वे सब घटनाएँ व्यर्थ कथाएँ॥
माया-शक्ति-सुता! तुम पत्नी का स्वरूप धर।
हे नादान! पालतीं सतत गृहस्थी सुन्दर॥
इसी प्रकार बीत जायेंगे अगणित वत्सर।
किन्तु सभी दिन नहीं रहेंगे सदा बराबर॥
हर दिन-बीच सदैव रहेगा अद्भुत अन्तर।
(यही रहा है आदिकाल से नियम निरन्तर)॥
नवरंगों से सदा बनातीं घर नित नूतन।
हे घर की स्वामिनी! शक्ति का नवल - निकेतन॥
सीठी बातें इधर - उधर जो घटनेवाली।
फलदायक अनुभव में उन्हें बदलनेवाली॥
प्राणहीन ख़बरों में नूतन प्राण फूँककर।
और प्रकाशहीन ख़बरों में नव - प्रकाश भर॥
आकर्षण औ' अर्थ दिलानेवाली हो तुम।
सुन्दरता रस सरस पिलानेवाली हो तुम॥ १-१५॥

को फलदायक अनुभवों में बदलकर, और बेजान ख़बरों में जान फूँककर, प्रकाश-रहित समाचारों को प्रकाश (आकर्षण तथा अर्थ) दिलानेवाली तुम हो! १-१५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऩैत्तैयुम् पयत्निऱै अनुबवमाक्कि
उयिरिलाच् चॆय्दिहट्कु उयिर्मिहक् कॊडुत्तु
ऒळियिलाच् चॆय्दिहट्कु ऒळियरुळ् पुरिन्दु 15
वाऩ शात्तिरम् महा मदु वीऴ्च्चि
शिऩ्ऩप् पैयल् शेवहत् तिऱमै
ऎऩ वरु निहऴ्च्चि यावे यायिऩुम्
अऩैत्तैयुम् आङ्गे उऴ्हुर्च् चॆय्दु
इलौहिक वाऴ्क्कैयिल् पॊरुळिऩै इणैक्कुम् 20
पेदै माशक्तियिऩ् पॆण्णे ! वाऴ्ह !
काळियिऩ् कुमारि ! अऱङ्गात्तिडुह
वाऴ्ह ! मऩैयहत् तलैवि वाऴ्ह ! 23

कविदैक् कादलि—24

वाराय् ! कविदैयाम् मणिप्पॆयर्क् कादलि !
पऩ्ऩाळ् पऩ्मदि आण्डु पल कऴिन्दऩ
निऩ्ऩरुळ् वदऩम् नाऩ् नेरुऱक् कण्डे
अऩ्द नाळ् नीयॆऩै अडिमैयाक् कॊळ, याम्
मानिडर् कुऴात्तिऩ् मऱैवुऱत् तऩियिरुन्दु 5
अंण्णिला इऩ्बत्तु इरुङ्गडल् तिळैत्तोम्
कलन्दुयाम् पॊऴिलिडैक् कळित्त वऩ् नाट्कळिऱ्
पूम्बॊऴिऱ् कुयिल्हळिऩ् इऩ्गुरल् पोऩ्ऱ
तीङ्गुर लुडैत्तोऱ् पुऴ्ळिऩैत् तॆरिन्दिलेऩ्
मलरिऩत् तुऩ्ऱऩ् वाळ् विऴि यॊप्प 10
निलविय दॊऩ्ऱिऩै नेर्न्दिलेऩ्; कुळिर् पुऩऱ्
चुऩैहळिल् उऩ् मणिच् चॊऱ्कळ् पोल् तण्णिय
नीरुडैत् तऱिहिलेऩ्; निऩ्ऩॊडु तमियऩाय्

नक्षत्र-शास्त्र, महा मद का पतन, छोकरे का सेवा-चातुर्य—जो भी हो, तुम उन्हें (वर्णन में) सौन्दर्य (रस) प्रदान करते हो। लौकिक जीवन में अर्थ फूँकनेवाली अबोध कन्या ! जिओ तुम ! हे काली की सुता ! धर्म का रक्षण करो ! जय हो ! महाशक्ति हे घर की स्वामिनी, जिओ। १६-२३

कविता-प्रेमिका—२४

आओ ! कविता रूपी सुन्दर नाम की प्रिये ! तुम्हारा सुन्दर वदन देखे, मुझे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हो नक्षत्र - शास्त्र या शिशु का सेवा - कौशल।
पतन महा मद का हो (या हो कोई हलचल) ॥
इन सबके वर्णन में तुम रस हो बरसातीं।
कर सौंदर्य - प्रदान सभी अभिराम बनातीं ॥

लौकिक जीवन में तुम अर्थ फूँकनेवाली।
महाशक्ति हो तुम अबोध कन्या छविशाली ॥
हे काली की सुता ! तुम्हारी जय हो, जय हो।
करो धर्म की रक्षा जय हो, सदा विजय हो ॥
जग रूपी घर की स्वामिनी ! प्रकृति तुम ! जय हो।
धन, वैभव, समृद्धि, सम्पति, सुखदात्री ! जय हो ॥ १६-२३ ॥

कविता-प्रेमिका—२४

कविता-रूपी सुघर नामवाली प्रिय ! आओ।
आकर मुझको अपना सुंदर वदन दिखाओ ॥
बीते कितने मास (पड़ा हूँ मैं मन मारे)।
बीते कितने वर्ष तुम्हारा वदन निहारे ॥
उन्हीं दिनों था तुमने मुझको दास बनाया।
मनुजों से छिप, पास तुम्हारे मैं बस पाया ॥
अगणित सुख - सागर में गोते जभी लगाते।
गोते लगा - लगाकर मोद महान मनाते ॥
बाग - बगीचों बीच घूम जब खुशी मनाते।
तब कितनी थी मधुर कूक कोयल की पाते ॥
ऐसा मधुभाषी पक्षी फिर मिला न प्यारा।
तव असि - नयनों - सा न तीक्ष्ण था पुष्प निहारा ॥
देख रहा हूँ कितने सरस जलाशय निर्मल।
तव वाणी - सा मिला न मुझको कोई शीतल ॥

कितने ही महीने, कितने ही वर्ष हो गये ! उन दिनों तुमने मुझे अपना दास बनाया था और मैं भी मानव-समूह से छिपकर एकान्त में तुम्हारे पास रहा और हम अगणित सुख के अपार सागर में गोते लगाते मोद मनाते रहे। जब हम मिलकर बाग-बगीचों में घूमकर खुशी मनाते रहे, उन दिनों कोयलों की कूक कितनी मधुर थी ! ऐसी मधुर बोली बोलनेवाला पंछी बाद में मुझे कहीं नहीं दिखा। पुष्पों में तुम्हारी तलवार-सी आँखों का-सा कोई पुष्प नहीं देख पाया। मैं शीतल जलाशयों को देखता हूँ, पर तुम्हारी वाणी के समान शीतल जलवाला कोई नहीं मिलता। मैं तुम्हारे साथ अकेले

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीये उयिरऩत् तॆय्वमुम् नीयॆऩ
निऩ्ऩॆये पेणि नॆडुनाळ् पोक्किऩॆऩ् 15
वाऩहत् तमुदम् मडुत्तिडुम् पोळ्दु
मऱ्ऱद ऩिडैयोर् वञ्जहन् दॊडुमुळ्
बीळ्त्तिडैत् तॊण्डैयिल् वेदनै शॆय्दॆऩ
निऩ्ऩॊडु कळित्तु निऩैविऴऩ् दिरुन्द
अॆऩैत् तुयर्प् पडुत्तबन् दॆय्दिय दुलहिऱ् 20
कॊडियऩ यावुळुम् कॊडियदाम् मिडिमै
अडिना मुळ्ळिऩै अयल् शिऱि देहिक्
कळैन्दु पिऩ् वन्दु काण् पॊळ्ळुदु ऐयहो !
मऱैन्ददु दॆय्व मरुन्दुडैप् पॊऱ्कुडम्
मिडिमै नोय् तीर्प्पान् वीणर्तम् मुलहप् 25
पुऩ्ऩॊळ्ळिल् ऑऩ्ऱु पोऱ्ऱुदुम् ऑऩ्बाळ्
तॆऩ्दिशैक् कण्णॊरु शिऱ्ऱूर्क् किऱैवऩाम्
तिरुन्दिय ऑरुवऩैत् तुणैयॆऩप् पुहुन्दु अवऩ्
पणिशॆय् इशैन्देऩ्, पदहि नी ! ऑऩ्ऩैप्
पिरिन्दु मऱ्ऱहऩ्ऱऩै पेशॊणा निऩ्ऩरुळ् 30
इऩ्ब मत् तऩैयुम् इऴन्दु नाऩ् उऴन्ऱेऩ्
शिऩ्ऩाळ् कऴिन्द पिऩ् यादॆऩच् चॆप्पुहेऩ् !
निऩ्ऩॊडु वाळ्न्द निऩैप्पुमे तेय्न्ददु
कदैयिलोर् मुऩिवऩ् कडियदाञ् जाब
विळैविऩाल् पऩ्ऱिया वीऴन्दिडु मुऩ्ऩर्त् 35
तऩ् महऩिडै "ऑऩ् तऩय नी याऩ् पुलैप्
पऩ्ऱियाम् पोदु पार्त्तु निल्लादे !
विरैविलोर् वाळ् कॊडु वॆऱुप्पुडै यिव्वुडल्
तुणित्तॆऩैक् कॊऩ्ऱु तॊलैत्तलुऩ् कडऩाम्
पाव मिङ्गिल्लै यॆऩप् पणिप् पिःदाहलिऩ्" 40
तादै शॊऱ्कु इळैञऩ् तळर्वॊडुम् इणङ्गिऩाऩ्
मुऩिवऩुम् पऩ्ऱिया मुडिन्दपिऩ् मैन्दऩ
मुऩ्ऩवऩ् कूऱिय मॊऴियिऩै निऩैन्दुम्
इरुम् पुहळ् मुऩिवऩुक्कु इऴियदा मिव्वुडल्
अमैन्ददु कण्डुऩञ् जऴन्ऱिडल् कॊण्डुम् 45

रहा। मैंने तुम्हें प्राण माना; तुम्हें देवी माना और तुम्हारी सेवा में मैंने बहुत दिन बिताये। १५ समझो, कोई स्वर्ग का अमृत पान कर रहा हो और तब उसके गले में एक पीड़ादायक काँटा फँस गया हो। वैसे ही जब मैं तुम्ही संगति का आनन्द उठा रहा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

साथ तुम्हारे रहा तुम्हें प्राणों - सम माना।
बहुत दिनों तक की सेवा, देवी - सम जाना॥ १-१५ ॥
समझो कोई स्वर्ग- सुधा को पीता पायक।
फँस गया कंठ में कंटक अति पीड़ा - दायक॥
उसी भाँति जब भोग रहा था तव संगति - सुख।
मुझे सताने आया क्रूर ग़रीबी का दुख॥ १६-२५ ॥
फँसे हलक़ में काँटे को निकालने के हित।
ज़रा देर के लिए हुआ था बाहर निर्गत॥
और लौटकर देख रहा, हो विकल विवश अब।
अन्तर्हित हो गया मनोरम सुधा-कलश अब॥
पत्नी बोली मेरा यह अभाव हरने को।
पतित जगत में नीच नौकरी को करने को॥
जब दक्षिण में बसे राज्य-पालक ढिग जाकर।
कर ली थी नौकरी विवशता - वश दुख पाकर॥
अरी पापिनी! छोड़ गयीं तुम मुझे बिलखता।
दूर हुआ सुख, रहा संकटों में मैं घुलता॥
धीरे-धीरे गई तुम्हारी स्मृति भी घटती।
जीवन की घटनाओं की सुधि भी थी मिटती॥
एक कथा में बना शाप से मुनि था शूकर।
बनने से पहिले बोला निज सुत से मुनिवर॥
जब मैं शूकर बनूँ उठा लो खड्ग भयंकर।
और काट दो उससे मेरा घृणित कलेवर॥
पाप न होगा यह कर्तव्य तुम्हारा पावन।
तुम्हें उचित है मम आज्ञा का करना पालन॥ २६-४५ ॥

था, तब मुझे सताने के लिए आ गयी दुनिया की क्रूर वस्तुओं में सबसे क्रूर वस्तु दरिद्रता। २५ गले में जीभ के मूल में लगे रहे काँटे को दूर करने के वास्ते मैं ज़रा दूर हट गया। फिर वापस आकर देखता हूँ, तो हाय! अमृत कलश छिप गया था। अभाव दूर करने के लिए मुझसे उसने (मेरी पत्नी ने) कहा कि इन नालायकों की दुनिया में कोई नीच नौकरी कर लो। तब दक्षिण दिशा के छोटे राज्य के पालक के पास जाकर मैंने उसकी नौकरी स्वीकार की। हे पापिनी! (तब) तुम मुझे छोड़ गयी। सभी सुख दूर हो गया और मैं घुलता रहा। क्या कहूँ? धीरे-धीरे, तुम्हारे साथ बीते जीवन की याद भी घटती गयी। एक कथा है। उसमें एक मुनि शाप के कारण सूअर बन गया। सूअर बनने के पहले उसने अपने पुत्र से कहा, देखो बेटे! जब मैं सूअर बन जाता हूँ, तुम देखते मत खड़े रहो। तुरन्त तलवार लो और इस घृण्य शरीर को काटकर मेरा वध कर दो। यह तुम्हारा कर्तव्य है। उसमें पाप नहीं होगा, क्योंकि यह मेरी आज्ञा है। ४५ पिता की आज्ञा से, पुत्र हिचकते हुए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाळ् कॊडु पन्ऱियै माय्त्तिड लुऱ्ऱनन्
आयिडै मऱ्ऱव् वरुन्दवप् पन्ऱि
इन्नैयदु कूऱुम् ! 'एडा ! निऱ्क !
निऱ्क निऱ्क ! मुन्नर् याम् निनैन्द वाऱु
अत्तनैत् तुन्बुडैत् तन्ऱिव् वाळ्क्कै 50
काऱ्ऱुम् पुनलुम् कडिप्पुऱ् किळङ्गुम्
इन्नैय पल्लिन्बम् इदन्कणे युळवाम्
आऱेळ् तिङ्गळ् अहन्ऱपिन् वरुदियेल्
पिन्नॆनैक् कोरलाम्' पीळैयो डिव्वुरै
शॆवियुऱीइ मुडिशाय्त् तिळैयवन् शॆन्ऱनन् 55
तिङ्गळ् पल पोन पिन् मुनि महन् शॆन्ऱु
तादैप् पन्ऱियोर् तडत्तिडैप् पॆडैयॊडुम्
पोत्तिनम् पलवॊडुम् अन्बिनिऱ् पॊरुन्दि
आडल् कण्डयिर्त्तनन्, आऱ्ऱॊणा दरुहु शॆन्ऱु
"अॆन्दाय् ! अॆन्दाय् ! यादरो मऱ्ऱिदु ! 60
वेदनूलऱिन्द मेदहु मुनिवरर्
पोऱ्ऱिड वाळ्न्द निन् पुहळ्क्किदु शालुमो ?"
अॆनप्पल कूऱि इरङ्गिनन्; पिन्नर्
वाळ् कॊडु पन्ऱियै माय्त्तिडल् विळैन्दान्
आयिडै मुनिवन् अहम् पदत्तुरैक्कुम् 65
"शॆल्लडा ! शॆल्ह तोक्कुणत् तिळिञ !
अॆनक्किव् वाळ्क्कै इन्बुडैत् तेयाम्;
निनक् कदिल् तुन्बम् निहळुमेल् शॆन्ऱव्
वाळिनिन् नॆञ्जै वहुत्तु नी मडिह"
अॆन्ऱिदु कूऱि इरुन्दवप् पन्ऱि तन् 70
इनत्तॊडुम् ओडि इन्नुयिर् कात्तदु
इन्नदु कण्ड इळैयवन् करुदुम्

हो सही, सहमत हो गया। (उधर) मुनि भी सूअर बन गया। पुत्र ने पिता की आज्ञा याद करके और श्रेष्ठ मुनि, अपने पिता को इस घृणित शरीर में देखने से मन में दुखी होकर तलवार उठा ली और सूअर को मारने का उपक्रम किया। ५० तब उस तपस्वी सूअर ने कहा— रे! रुको, रुको! यह जीवन उतना दुखद नहीं लगता है, जितना हमने पहले समझा था। हवा, पानी, घास, कन्द आदि कितनी ही सुख की सामग्रियाँ हैं। छः-सात महीने बीत जायँ, तब आओ, तो मुझे मार सकते हो। यह सुनते ही पुत्र को दुख हुआ, तो भी आदर के कारण सिर झुकाकर वह चला गया। ६० अनेक महीने बीत गये। फिर (वहाँ) मुनि-पुत्र गया, तो क्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आज्ञा सुनकर हुई पुत्र को हिचक बहुत ही।
किन्तु अन्त में होना पड़ा उसे सहमत ही॥
मुनि शूकर बन गया घृणित तन देख दुखित हो।
याद पिता की आज्ञा को कर शान्त सुचित हो॥
शूकर को मारने हेतु ही दृढ़ निश्चय कर।
उस सुत ने तलवार उठाकर ली अपने कर॥ ४६-५०॥

तब शूकर ने कहा, अरे! तुम रुको, रुको सुत!।
नहीं मारना अभी मुझे रहना है जीवित॥
जितना पहले समझा इसको था दुख से युत।
यह जीवन लगता न मुझे अब उतना दुख-युत॥
घास, कन्द, जल, वायु प्राप्त सब सुख के साधन।
अरे! मास छः सात विलस तो लूँ यह जीवन॥
इसके बाद मुझे हे सुत! तुम मारो आकर।
यह सुन सुत अति खिन्न चल दिया सीस झुकाकर॥ ५१-६०॥

कई मास जब बीत गये फिर पुत्र गया वह।
देखा उसने एक शूकरी साथ रही रह॥
और अनेकों सन्तानें भी साथ वहाँ हैं।
सुख से वह शूकर निज जीवन बिता रहा है॥
यह लख खेद अपार हुआ सुत के मन-भीतर।
अति असह्य पीड़ा से बोला पितु-ढिग जाकर॥
पूज्य पिताजी! यह सब क्या है तुम्हें सुहाता?।
वेदज्ञों का वृन्द तुम्हारे था गुण गाता॥
इस प्रकार दुख-पूर्ण अनेकों बातें कहकर।
उसे मारने हेतु हुआ तब वह सुत तत्पर॥ ६१-७०॥
तब घबड़ाकर बोल उठा वह शूकर-मुनिवर।
अरे! भाग जा पुत्र बड़ा ही तू निकृष्ट नर॥
अरे! लग रहा यह मुझको अति सुखमय जीवन।
यदि तुमको दुख होता तो तू जाकर तत्क्षण॥

देखता है! पिता सूअर एक स्त्री सूअर के साथ है; अनेक संतानें हैं और वह उनके बीच मज़े में समय बिता रहा है। पुत्र को अपार खेद हुआ। उसने असह्य पीड़ा से 'पिता' के पास जाकर कहा—मेरे पिताजी! पिताजी! यह क्या है? वेदज्ञ बड़े लोगों की प्रशंसा के पात्र आपको क्या यह शोभा देता है? उसने अनेक बातें कहकर दुख प्रकट किया। फिर वह उस सूअर को मारने लगा। ७० तब घबड़ाकर मुनि ने कहा—रे, तू जा! अवगुण-युक्त नीच है तू! मेरे लिए यह जीवन बड़ा सुखमय है। अमर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"आहा ! मानिडर् अरुमैयिन् वीळ्न्दु
पुत्तिलै यॆय्दिय पोळ्ददिल् नॆडुङ्गाल्
तॆरु मरुहिन्रिलर् शिल पहल् कळिन्द पिन् 75
पुदियदा नीशप् पॊय्मै कॊळ् वाळ्विल्
विरुप्पुडैय वराय् वेरुता मॆन्रुम्
अरिन्दिलरे पोन्रदिर् कळिक्किन्रार्
ऎन् शॊल्हेन् मायैयिन् ऎण्णरुम् वञ्जम्"
तिमिङ्गिल वुडलुम् शिरिय पुन् मदियुम् 80
आरेळ् पॆण्डिरुम् उडैयदोर् वेन्दन्
तन्पणिक् किशैन्दॆन् तरुक्कॆलाम् अळिन्दु
वाळ्न्दनन् कदैयिन् मुनिपोल् वाळ्क्कै ! 83

मदु—25

बोगि

पच्चै मुन्दिरित् तेम्बळङ् गॊन्रु, पाट्टुप् पाडिनर् चारु पिळिन्दे
इच्चै तीर मदु वडित्तुण्बोम्, इःदु तीदॆन् रिडैयर्हळ् शॊल्लुम्
कॊच्चैप् पेच्चिर् कै कॊट्टि नहैप्पोम्, कॊञ्जु मादरुम् कूट्टुणुम् कळ्ळुम्
इच्चहत् तिनिल् इन्बङ्गळन्रो ?, इवर्रिन् नल्लिन्बम् वेरॊन्रुमुण्डो ? 1

इसमें तुझे दुख होता हो, तो जा, उसी तलवार से अपना गला काटकर मर जा। यह कहकर वराह अपने परिवार के साथ जान बचाकर भाग गया। ७५ यह देखकर वह बालक सोचता है—हाय ! मानव गिरते हैं तो उस नीच दशा में पहले कुछ दिन गड़बड़ाते हैं। पर जब दिन बीत जाते हैं, तब उसी पतित जीवन में वे रस लेने लगते हैं। अपनी भिन्न स्थिति को नहीं जानते-से वे उसी में मजा लूटते रहते हैं। क्या कहूँ माया की अकथ्य वंचना की (महिमा) ? ८० उसी मुनि के समान, मैं एक राजा जो तिमिंगल का-सा शरीर, छोटी बुद्धि, सात स्त्रियाँ आदि का स्वामी था, उसकी सेवा में लग गया और अपना सारा स्वाभिमान खोकर जीवन बिताता रहा। ८३

मद्य—२५

भोगी— ताजे मीठे काज-फलों को निचोड़कर, हम गाना गाते हुए रस निकालेंगे। तृप्ति भर मद्य छानेंगे और पियेंगे। यदि लोग कहें कि यह बुरा काम है, तो उस बेहूदा बात पर हम ताली बजाकर हँसेंगे। प्यार-दुलार करनेवाली स्त्रियाँ और मिलकर पिया जानेवाला मद्य दोनों, क्या इस संसार के सुख नहीं हैं ? इनसे बढ़कर क्या कोई अन्य आनन्द भी हो सकता है ? १ योगी—ताजा काजू है यह संसार।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इसी खड्ग से काट गला अपना, तुरन्त मर।
(मैं अब मरना नहीं चाहता मुझे क्षमा कर)॥
यह कहकर वह अपने प्यारे प्राण बचाकर।
भाग गया परिवार-सहित वह शूकर-मुनिवर॥ ७१-७५॥

लगा सोचने वह बालक यह दशा देखकर।
हा! जब पहले नीच दशा में गिरते हैं नर॥
तो पहले कुछ दिवस बहुत ही हैं घबड़ाते।
पर कुछ दिन के बाद वही जीवन अपनाते॥
उसी पतित जीवन में रस लेने लगते हैं।
मज़ा लूटते, नहीं कभी उससे भगते हैं॥
अधिक कहूँ क्या यह सब माया की छलना है।
(इसी भाँति व्यवहार सभी जग का चलना है)॥ ७६-८०॥

उसी मुनीश्वर के सम मैं भी नृप-अनुचर था।
ह्वेल-समान बदन उसका अति विस्तृत-तर था॥
थी उसकी लघु बुद्धि स्त्रियाँ थीं सात मनोहर।
हुआ उन्हीं की सेवा में तन-मन से तत्पर॥
अपना सारा स्वाभिमान ठुकराकर खोकर।
रहा बिताता वह जीवन (अपमानित होकर)॥ ८१-८३॥

मद्य—२५

भोगी— हम ताजे मीठे काजू के फल निचोड़कर।
सुरस निकालेंगे सुन्दरतम गाना गाकर॥
छक-छक करके मद्य पियेंगे छान-छानकर।
(झूमेंगे हम अपना सीना तान-तानकर)॥
जो मानव यह काम हमारा बुरा बतायें।
उनकी बातों पर हँसकर तालियाँ बजायें॥
प्रेममयी सौन्दर्यमयी कामिनियाँ सुन्दर।
और हृदय हुलसानेवाला मद्य मनोहर॥
ये दोनों इस भू-मंडल के सुख हैं सुन्दर।
क्या मिलता आनन्द कहीं भी इनसे बढ़कर॥ १॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

योगि

पच्चै मुन्दिरि यन्न दुलहम्, पाट्टुप् पाडि शिवक्कळि ऍय्दल्
इच्चै तीर उलहिन्नैक् कॊल्वोम्, इन्निय शारु शिव मदै उण्बोम्
कॊच्चै मक्कळुक् किःदॆळिदामो ?, कॊञ्जु मादॊरु कुण्डलि शक्ति
इच्चहत्तिल् इवैयिन्ब मन्ऱो ?, इवऱ्ऱिन् नल्लिन्बम् वेरुळदामो ? 2

बोगि

बॆऱ्ऱि कॊळ्ळुम् पडैहळ् नडत्ति, वेन्दर् तम्मुट् पॆरुम्बुहळ् ऍय्दि
ऒऱ्ऱै वॆळ्ळैक् कविहै उयर्त्ते, उलहम् अञ्जिप् पणित्तिड वाळ्वोम्
शुऱ्ऱु तेङ्गमळ् मन्मलर् मालै, तोळिन् मीदुरुप् पॆण्गळ् कुलावच्
चऱ्ऱुम् नॆञ्जिल् कवलुदल् इन्ऱित्, तरणि मीदिल् मदुवुण्डु वाळ्वोम् 3

योगि

वॆऱ्ऱि ऐन्दु पुलन् मिशैक् कॊळ्वोम्, वीळ्न्दु वाळिडै वैयहम् पोऱ्ऱुम्
ऒऱ्ऱै वॆळ्ळैक् कविहै मॆय्ञ्ञानम्, उण्मै वेन्दर् शिव निलै कण्डार्
मऱ्ऱवर् तम्मुट् चीर् पॆऱ वाळ्वोम्, वण्मलर् नऱु मालै तॆळिवाम् !
शुऱ्ऱि मार्बिल् अरुळ् मदुवुण्डे, तोहै शक्ति योडिन् बुऱ्ऱु वाळ्वोम् 4

गीत-गान शिव-आनन्द का भोग है। तृप्ति भर जग को निचोड़ देंगे। मधुर शिव-रस निकलेगा —उसे पियेंगे। अनाड़ियों के लिए यह सुगम होगा क्या ? प्यार-दुलार करनेवाली स्त्री कुंडलिनी है। इस जग में ये (शिव-रस, कुंडलिनी शक्ति आदि) क्या सुख नहीं हैं ? क्या इनसे भी अच्छा आनन्द मिल सकता है ? २ भोगी— विजयिनी सेनाएँ चलाकर, राजाओं के मध्य बड़ा यश अर्जित करके, और एक श्वेत छत्र के नीचे हम लोग ऐसा जीवन बितायेंगे और सारा लोक हमसे डरेगा और हमारी आज्ञा के अनुसार चलेगा। और सुगन्धित मालाधारिणी स्त्रियाँ हमारे साथ मोद-लीला करेंगी। चित्त में कोई चिन्ता नहीं होगी। इस भाँति हम धरती पर मद्य पीकर जियेंगे। ३ योगी—पंचेन्द्रियों पर हम योगी विजय पायेंगे। हमारे पैरों पर संसार गिरकर नमस्कार करेगा और हमारा आदर करेगा। सत्य ज्ञान ही एक श्वेत छत्र होगा। जो शिव-स्थिति पा चुके हों, वे सच्चे राजा हैं। उनके मध्य हम सम्मान से जियेंगे। सुगन्धित माला मन की निर्मलता है। उसे अपने वक्ष पर पहनेंगे और (ईश्वर-) कृपा का मद्य पीकर शक्ति नारी के साथ सुख से रहेंगे। ४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

योगी— है ताजा काजू सारा संसार मनोहर।
शिवानन्द भोगना गीत गाना है सुन्दर॥
सदा तृप्ति-हित विश्व सभी हम निचोड़ लेंगे।
जो मधुमय शिव-रस निकलेगा उसे पियेंगे॥
अनाड़ियों के लिए सदा यह कार्य अगम है।
बुद्धिमान के लिए सदा यह कार्य सुगम है॥
है कुंडलिनी शक्ति प्रेममय पत्नी सुन्दर।
इस जग में शिव-रस, कुंडलिनी है बस सुखकर॥
क्या इनसे जग में कोई आनन्द अधिकतर?।
(तजकर मद्य, कामिनी, पियो सुधारस सुन्दर)॥ २॥

भोगी— युद्धभूमि में सेनाएँ संचालित करके।
राजाओं के बीच बड़ा यश अर्जित करके॥
अरे! एक ही श्वेत छत्र के नीचे जाकर।
हम सब लोग बितायें ऐसा जीवन सुन्दर॥
जिससे हमसे यह समस्त संसार डरेगा।
और हमारी आज्ञा से सब काम करेगा॥
ललित सुगन्धित मालाधारी नव ललनाएँ।
सभी हमारे साथ करेंगी रति - लीलाएँ॥
नहीं चित्त में चिन्ता का होगा संचालन।
पीकर मद्य बितायेंगे हम जग में जीवन॥ ३॥

योगी— पाँच इन्द्रियों पर हम योगी जय पायेंगे।
सभी हमारे चरणों पर गिर सिर नायेंगे॥
सभी करेंगे जग के बीच हमारा आदर।
तन जायेगा सत्य ज्ञान का छत्र श्वेततर॥
ब्राह्मी स्थिति को प्राप्त करें, वे सच्चे नृपगण।
उनके बीच बितायेंगे सम्मानित जीवन॥
अरे! सुगंधित माला है मन की निर्मलता।
उसे हृदय पर धारण कर (पायें पावनता)॥
(ईश्वर-) कृपा सुधामृत पीकर सुख भोगेंगे।
शक्तिरूपिणी नारी के संग सुख भोगेंगे॥ ४॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बोगि

नल्ल गीदत् तॊळिलुणर् बाणर्, नडनम् वल्ल नहैमुह मादर्
अल्लल् पोह इवरुडन् कूडि, आडियाडिक् कळित्तिन्बङ् गॊळ्वोम्
शॊल्ल नावु कनियुदडा नर्, शुदियि लॊत्तुत् तुणैयॊडुम् पाडि
पुल्लुम् मार्बिनो डाडिक् कुदिक्कुम्, बोगम् बोलॊरु बोग मिङ्गुण्डो ? 5

योगि

नल्ल गीदम् शिवत्तिनि नादम्, नडन ञानियर् शिर् चबै याट्टम्
अल्लल् पोह इवरुडन् शेर्न्दे, आडियाडिप् पॆरुङ्गळि कॊळ्वोम्;
शॊल्ल नाविल् इनिक्कुदडा ! वान्, शुळलुम् अण्डत् तिरळिल् शुदियिल्
शॊल्लुम् पण्णॊडु शिर्चबै याडुम्, शॊल्वम् पोलॊरु शॊल्वमिङ् गुण्डो ? 6

ञानि

मादरोडु मयङ्गिक् कळित्तुम्, मदुर नल्लिशै पाडिक् कुदित्तुम्
कादल् शॆय्दुम् पॆरुम् पल इन्बम्, कळ्ळिल् इन्बम् कलैहळिल् इन्बम्
बूदलत्तिनै आळ्वदिल् इन्बम्, पॊय्म्मै यल्ल इव् वित्बङ्गळॆल्लाम्
यादुञ् जक्ति इयल्बॆनक् कण्डोम्, इनैय तुय्प्पम् इदयम् महिळ्न्दे 7
इन्बन् दुन्बम् अनैत्तुम् कलन्दे, इच्चहत्तिन् इयल् वलि याहि
मुन्बु पिन्बलदाहि यॆन्नाळुम्, मूण्डु शॊल्लुम् पराशक्ति योडे
अन्बिल् ऒन्ड्रिप् पॆरुञ्जिव योगत्, तड्रिवु तन्निल् ऒरुप्पट्टु निर्पार्
तुन्बु नेरिनुम् इन्बॆनक् कॊळ्वार्, तुय्प्पर् इन्बम् मिहच्चुबै कॊण्डे 8

भोगी—सुन्दर गानकला, चतुर गवैये, नृत्य-कुशल हँसमुख नारियाँ—इनसे मिलकर, संकट की चिन्ता दूर करके गाएँ, नाचें और आनन्द-भोग करें। अरे ! यह कहते-कहते जीभ भी मधुर हो जाती है। श्रुति-लय के साथ गाते हुए आलिंगन (–पाश) में (नारी को) लेकर नाचने-कूदने का जो भोग है, वैसा भोग (कहीं) क्या इधर हो सकता है ? ५ योगी—अच्छा गीत शिव का (नाम-) नाद है। चाहो तो नृत्य-ज्ञानी नटराज का चित्सभा-नृत्य देखो। हम इनसे मिलकर नाचें, गायें, तो चिन्ता मिट जायगी। हम भी बहुत बड़े आनन्द में मग्न हो जायेंगे। रे ! यह कहते-कहते जीभ में मिठास आ जाती है। घूमनेवाले (ब्रह्म-) अंडों के नाद-लय के साथ चित्सभा में नाचने का जो सौभाग्य है, वैसा क्या कुछ और है ? ६ ज्ञानी—स्त्रियों से मिलकर मुग्ध रहने का सुख, मधुर गीत तथा नाच का सुख, प्रेम करके मिलनेवाला सुख, मद्य-पान का सुख, कलाओं का सुख, भू-पालन का सुख —ये सब भोग झूठे नहीं हैं। क्योंकि हमने जान लिया है कि ये सब पराशक्ति की ही देन हैं। हम दिल को खुश करते हुए इन सबका भोग करेंगे। ७ पर, जो (पराशक्ति) सुख-दुख दोनों में है, जो इस जगत की मौलिक शक्ति है, जिसके न आदि है न अन्त, जो सतत क्रियाशील है, उस पराशक्ति के साथ भक्ति में लीन होकर जो भक्त या योगी महाशिवयोग में स्थित हैं, वे दुख को भी सुख के समान बहुत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : JKS

भोगी— सुन्दर गान-कला के ज्ञाता गायक सुचतुर।
नृत्य - कुशल नर्तक, हँसमुख सुन्दरियाँ मनहर ॥
इनसे मिलकर सब संकट चिन्ताएँ तजकर।
नाचें, गायें, मोद मनायें हम जीवन भर ॥
जो श्रुति-लय के साथ गीत गाती हो मनहर।
उस नारी का आलिंगन कर नाच - कूदकर ॥
जो मिलता आनन्द न रसना कह पाती है।
कहने से ही जीभ मधुर यह हो जाती है ॥ ५ ॥

योगी— मंगलमय शिव-नाद गीत अतिशय सुन्दर है।
ज्ञानी को नटराज - नृत्य अतिशय मनहर है ॥
होता है चित्सभा - मध्य नटराज नृत्य वर।
नाचें - गायें और मिटायें चिन्ता दुखकर ॥
होयेंगे आनन्द - मग्न अतिशय हम सब जन।
रसना मीठी हो जाती है कर यह वर्णन ॥
भ्रमण कर रहे ब्रह्मांडों के नाद - लय - सहित।
सदा चित्सभा - बीच नृत्य, सौभाग्य - समन्वित ॥
है जैसा आनन्द, कहीं वह नहीं सुलभ है।
त्रिभुवन में भी वह आनन्द महा दुर्लभ है ॥ ६ ॥

ज्ञानी— सुन्दरियों से हिल - मिलकर आनन्द मनाना।
और नाचना नृत्य, मनोरम गाने गाना ॥
करना प्रेम अपार, मद्य पीना सुख पाना।
भू-पालन सुख, विविध कलाओं को अपनाना ॥
ये सब भोग नहीं झूठे, यह हमने जाना।
पराशक्ति की देन सभी यह हमने माना ॥
हम इन सबका जीवन में उपयोग करेंगे।
मन में मोद मना इन सबका भोग करेंगे ॥ ७ ॥

एक रूप से सुख - दुख दोनों में जो व्यापक।
है इस जग की शक्ति (अलौकिक अतिशय) मौलिक ॥
क्रियाशील है, आदि - रहित है, अन्त - रहित है।
पराशक्ति में लीन भक्त जो भक्ति - सहित है ॥
या योगी शिव - महायोग में जो संस्थित हैं।
वे दुख को भी सुख - समान मानते मुदित हैं ॥
दुख को सुख - सम मान चाव से भोग रहे हैं।
कर जीवन का वे सच्चा उपयोग रहे हैं ॥ ८ ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इच्चहत्तोर् पॊरुळैयुन् दीरर्, इल्लैयॆन्ऱु वरुन्दुव दिल्लै
नच्चि नच्चि उळत्तॊण्डु कॊण्डु, नानिलत् तिन्बम् नाडुवदिल्लै
पिच्चै केट्पदुमिल्लै; इन्बत्तिल्, पित्तुक् कॊण्डु मयङ्गुव दिल्लै
तुच्च मॆन्ऱु शुहङ्गळैक् कॊळ्ळच्, चॊल्लु मूडर् शॊऱ् केट्पदुमिल्लै 9
तीदु नेर्न्दिडिन् अञ्जुवदिल्लै, तेऱु नॆञ्जिनोडे शिवङ् गण्डोर्
मादर् इन्बम् मुदलिय वॆल्लाम्, वैयहत्तुच् चिवन् वॆत्त वॆन्ऱे
आदरित्तवै मुऱ्ऱिलुम् कॊळ्वार्, अङ्गुम् इङ्गु मॊन्ऱा मॆन्त् तेर्वार्
यादुमॆङ्गळ् शिवन्ऱिरुक् केळि !, इन्बम् यावुम् अवनुडै इन्बम् 10
वेदमन्दिर नादम् ऒरु पाल्, वेयिन् कुऴल् मॆल्लॊलि ऒर् पाल्
कादल् मादरॊ डाडल् ऒरु पाल्, कळवॆम् पोरिडै वॆन्ऱिडल् ऒर्पाल्
बोद नल् वॆऱि तुय्त्तिडल् ऒर् पाल्, पॊलियुङ् कळ् वॆऱि तुय्त्तल् मऱ्ऱोर् पाल्
एदॆलाम् नमक्कु इन्बुऱ निऱ्कुम्, ऎङ्गळ् ताय् अरुट् पालदु वन्ऱे 11

सङ्गीर्त्तनम्

(मूवरुम् शेर्न्दु पाडुवदु)

मदुनमक्कु मदुनमक्कु मदुनमक्कु बिण्णॆलाम्
मदुरमिक्क हरिनमक्कु मदुवॆनक् कदित्तलाल्
मदुनमक्कु मदियुनाळुम् मदुनमक्कु वानमीन्
मदुनमक्कु मण्णुनीरुम् मदुनमक्कु मलैयॆलाम्

ही चाव के साथ भोगते हैं। ८ धीर पुरुष किसी भी वस्तु के अभाव से चिंतित नहीं होते। या मन को गुलाम बनाकर, लालच करके दुनियावी सुख के पीछे भी नहीं जाते। वे भीख नहीं माँगते; न सुख में पागल बनकर अपने को भूल जाते। वे उन मूढ़ों का उपदेश भी नहीं मानते, जो यह कहते हैं कि सांसारिक सुखों को तुच्छ मानो। (यानी 'वे यदृच्छा-लाभ-सन्तुष्टः द्वन्द्वातीतो विमत्सरः' रहते हैं।) ९ कुछ संकट हो, तो वे नहीं डरते। उनका मन दृढ़ है और ये शिवानुभव प्राप्त कर चुके होते हैं। स्त्री-सुख आदि को भी वे शिव-दत्त मानकर उसका खूब भोग करते हैं। उनके लिए जो यहाँ है, वह वहाँ भी है। सर्वत्र शिव की ही श्री-लीला है। जो भी सुख है, वह उसका ही सुख है। १० वेदमन्त्र-नाद एक ओर है, वंशी-मधुर-मृदु ध्वनि दूसरी ओर है। प्यारी स्त्रियों के साथ लीला एक ओर है, युद्ध-रंग में विजय पाना दूसरी ओर। बोध का आनन्द लूटना एक ओर, ओर मद्य की मस्ती दूसरी ओर। ये सब वहाँ प्राप्य हैं। हमें जो भी सुख देता है, वह सब हमारी माता की कृपा का रूप है। ११

संकीर्तन

(तीनों मिलकर गाते हैं।)

हमारे लिए मधु मद्य ही है! मद्य है। आकाश सारा मधु है। अति मधुर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

धीर पुरुष होते न अभावों से चिन्तित हैं।
मन परवश कर, लालच कर होते न व्यथित हैं॥
लौकिक सुख के कभी नहीं वे पीछे जाते।
भीख माँगते नहीं, न सुख में स्वत्व भुलाते॥
जो बतलाते तुच्छ सभी सांसारिक सुख हैं।
उन उपदेशों से भी रहते सदा विमुख हैं॥ ९ ॥
संकट पड़े हज़ार नहीं वे कुछ भी डरते।
दृढ़ मन से वे प्राप्त ब्रह्म का अनुभव करते॥
वनितादिक सुख को भी शिव का दिया मानकर।
करते हैं निष्काम भाव से भोग निरन्तर॥
यत्र - तत्र - सर्वत्र सदा है विचरण - शीला।
सारे जग में व्याप्त देखते शिव की लीला॥
जहाँ कहीं भी इस जग में सुख है दिखलाता।
वह समस्त सुख ही शिवकृपा-देन कहलाता॥ १० ॥
एक ओर है वेद - मंत्र का नाद मनोहर।
एक ओर है वंशी की मृदु ध्वनि अति सुमधुर॥
एक ओर प्रेयसियों की लीला अभिनय है।
एक ओर संग्राम-भूमि में (विमल) विजय है॥
एक ओर है आत्म - ज्ञान - आनन्द अलौकिक।
एक ओर मादक मदिरा की मस्ती लौकिक॥
ये सारे सुख यहाँ, वहाँ, सर्वत्र सुलभ हैं।
माता की यदि कृपा, नहीं कुछ भी दुर्लभ हैं॥ ११ ॥

संकीर्तन

(भोगी, योगी, ज्ञानी तीनों मिलकर गाते हैं)

आज हमारे लिए मद्य (अतिशय मादक) है।
आज हमारे लिए (मधुर) मधु नभ-व्यापक है॥
आज हमारे हित मधु 'हरि' का नाम मधुर है।
हम मधु उन्हें मानते हैं (परिणाम मधुर है)॥
चन्द्र - सूर्य - नक्षत्र मधुर मधु हमको सारे।
मिट्टी - जल - पर्वत सब मधु हैं हमको प्यारे॥

हरि भी हमारे लिए मधु है। उन्हें हम मधु ही मानते हैं। चन्द्र, दिन (सूर्य), नक्षत्र सभी हमारे लिए मधु है। मिट्टी, जल, पर्वत—सभी मधु हैं। हमारे लिए क्या हार क्या जीत– दोनों भी मद्य हैं। सभी कार्य मधु हैं। स्त्री-सुख मधु है, मद्यवर्ग भी मधु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मदुनमक्कॉर् तोल्विवॅऱ्ऱि मदुनमक्कु वितैयॅलाम्
मदुनमक्कु मादरित्बम् मदुनमक्कु मदुवहै
मदुनमक्कु मदुनमक्कु मदुमत्तत्तॉ डावियुम्
मदुरमिक्क शिवनमक्कु मदुवॅत्तक् कदित्तलाल् 12

शन्दिर मदि—26

राग— आनन्द बैरवि; ताळ— आदि

पच्चैक् कुळन्दैयडि— कण्णिऱ्, पावैयडि शन्दिर मदि !
इच्चैक्किनिय मदु— ऍन्ऱन्, इरुविळिक्कुत् तेनिलवु;
नच्चुत्तलैप् पाम्बुक्कुळ्ळे— नल्ल, नाहमणि युळ्ळ दॅन्बार् !
तुच्चप्पडु नॅञ्जिले— निन्ऱन्, शोदि वळरुदडी ! 1
पेच्चुक् किडमेदडि !— नी, पॅण् कुलत्तिन् वॅऱ्ऱि यडि
आच्चर्य मायै यडि !— ऍन्ऱन्, आशैक् कुमरि यडि !
नीच्चु निलै कडन्द— वॅळ्ळ, नीरुक्कुळ् विळुन्दवर् पोल्
तीच्चुडरै वॅन्ऱ वॉळि— कॉण्ड, देवि ! निन्नै विळन्देनडि ! 2
नीलक्कडलिन्निले— निन्ऱन्, नीण्ड कुळल् तोन्ऱु दडि !
कोल मदियिन्निले— निन्ऱन्, कुळिर्न्द मुहङ् गाणुदडि !
ञाल वॅळियिन्निले— निन्ऱन्, ञान वॉळि वीशुदडि !
काल नडैयिन्निले— निन्ऱन्, कादल् विळङ्गुदडि ! 3
(पच्चैक् कुळन् दैयडि)

4 शान्ऱोर्

तायुमानवर् वाळ्त्तु—27

ऍन्ऱुम् इरुक्क उळम् कॉण्डाय्, इन्बत् तमिळुक् किलक्कियमाय्
इन्ऱुम् इरुत्तल् शॅय्हिन्ऱाय् !, इऱवात् तमिळो डिरुप्पाय् नी !

है, मधु है ! मन, प्राण सभी मधु हैं। हम मधु का अर्थ जानते हैं, अतः शिव भी मधुमय हैं। (हम सबको सुख मानकर उसमें रमनेवाले शिव का भोग करना जानते हैं।) १२

चन्द्रमति (कल्पित बच्ची का नाम)—२६

चन्द्रमति छोटी बच्ची है, री ! वह आँख की पुतली है। इच्छा करने योग्य मधु है; मेरी दोनों आँखों के लिए मधुर चाँदनी है। लोग कहते हैं कि विषधर साँप के सिर में मणि होती है। मेरे तुच्छ मन के अन्दर तेरी ज्योति पल रही है। री ! १ इसमें चर्चा का स्थान कहाँ है री ! तू स्त्री-कुल की जीत है। आश्चर्यकारिणी माया है ! मेरी इच्छा की केन्द्र-कुमारी ! अगाध प्रवाह-जल में गिरे हुए के समान, हे ज्वाला-विजयिनी दीप्तिमती देवी ! मैं अपनी सुध खो गया री ! २ मुझे नीले समुद्र में तेरे नीले केश दिखते हैं। सुन्दर चन्द्र में तेरा शीतल मुख दिखाई

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हार - जीत दोनों लगते हैं हमको मधुमय।
सभी कार्य हमको लगते मधुमय (मंगलमय)॥
स्त्री-सुख, मदिरा मधु हैं, मन प्राण सभी मधु हैं।
मधु का अर्थ जानते उनको शिव भी मधु हैं॥ १२॥

चंद्रमति—२६

(कल्पित स्त्री का नाम)

छोटी बच्ची चारु चन्द्रमति है आँखों की पुतली है।
इच्छित मधु है दोनों नयनों के हित मधुर चाँदनी है॥
कहते लोग सर्प के शिर में सदा नागमणि मिलती है।
मेरे मन के भीतर तेरी ज्योति (अलौकिक) पलती है॥ १॥
इसमें चर्चा का न स्थान है, तू है रमणी-कुल की जीत।
तू आश्चर्यकारिणी माया मेरी इच्छा-केन्द्र पुनीत॥
तू है दीप्तिमयी शुभ देवी तू ज्वाला-विजयिनी बनी।
मैं अगाध-जल-पतित व्यक्ति - सम भूल गया सुध-बुध अपनी॥ २॥
तेरे नीले केशों की छवि नील-सिन्धु में छलक रही।
तेरे मुख की सुन्दर आभा चारु चंद्र में झलक रही॥
तेरी ज्ञान-ज्योति की फैली विस्तृत लोकों में आभा।
काल-प्रगति में दिखलाती है तेरी मंजु प्रेम-शोभा॥ ३॥

४ बड़े सज्जन लोग

तायुमानवर् स्तुति—२७

आप मधुर तामिळ-वाङ्मय में हैं जीवित, हैं अविनश्वर।
तमिळ - वाङ्मय जब तक होगा तब तक होंगे आप अमर॥
तायुमानवर् ! (सम्मानित !) यह तत्त्व आपने जाना था।
परम-तत्त्व है अमर और आनन्द-पूर्ण पहचाना था॥

देता है। अरी ! लोक के विस्तार में तेरे ज्ञान की ज्योति फैली दिखती है। समय की चाल में तेरे प्रेम की शोभा दिखाई देती है, री ! ३

४ बड़े सज्जन लोग

तायुमानवर्-स्तुति—२७

[ये बड़े भक्त कवि थे। नायक राजा के अमात्य भी रहे। तायुमानवर् का शाब्दिक अर्थ है—वह जो माता भी बने। कथा प्रचलित है कि शिवजी अपनी किसी भक्तिन का प्रण रखने के लिए प्रसवोन्मुख उसकी पुत्री के पास माता के रूप में गये, क्योंकि उसकी माता कावेरी की बाढ़ के कारण अपनी पुत्री के पास नहीं जा सकी।]

आपने मधुर तमिळ-साहित्य के रूप में अमर रहने की अभिलाषा की। आज

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऑन्ऱु पॊरुळ:दिन्बमॆन्, उणर्न्दाय् तायु मानवने
निन्ऱ परत्तु मात्तिरमो ?, निल्ला इहऴ्त्तुम् इरुप्पाय् नी

निवेदिता—28

अरुळिनुक्कु निवेदनमाय् अन्बिनुक्कोर् कोयिलाम् अडियेन् नॆञ्जिल्
इरुळुक्कु ञायिऱाय् ऍमदुयिर् नाडाम् पयिर्क्कु मऴैयाय् इङ्गु
पॊरुळुक्कु वऴियऱिया वऱिञर्क्कुप् पॆरुम्पॊरुळाय् पुन्मैत् तादच्
चुरुळुक्कु नॆरुप्पाहि विळङ्गिय ताय् निवेदितैयैत् तॊऴुदु निऱ्पेन्

अवेदानन्दा—29

शुरुदियुम् अरिय उपनिडत्तिन् तॊहुदियुम् पऴुदऱ उणर्न्दोन्
करुदिडऱ्करिय पिरम नन्निलैयैक् कण्डु पेरॊळियिडैक् कळित्तोन्
अरिदिनिऱ् काणुम् इयल् बॊडु पुविय़ित् अप्पुऱत् तिरुन्दु नण्पहलिल्
परिदियि नॊळियुम् शॆन्ऱिडा नाट्टिल् मॆय्यॊळि परप्पिडॆच् चॆन्ऱोन् 1

वेऱु

ऑन्ऱे मॆय्प् पॊरुळाहुम्; उयिर् कळॆल्लाम् अदन् वडिवाम् ओरुङ्गालै
ऍन् तेवन् उन् तेवन् ऍन्ऱुलहर् पहैप्पदॆल्लाम् इऴिवाम् ऍन्ऱु
नन्ऱेयिङ् गऱिवुऱुत्तुम् परमगुरु ञानमॆन्नुम् पयिरै नच्चित्
तिन्ऱे पाऴाक्किडु मैम्बुलन् गळॆन्नुम् विलङ्गिनत्तैच् चॆहुत्त वीरन् 2

भी आप जीवित हैं। अमर तमिऴ के साथ, आप भी अमर रहेंगे। हे तायुमानवर! आपने जान लिया था कि एक ही वस्तु अमर है और वह आनन्दमय है। क्या आप उस पराशक्ति में ही रहेंगे? आप इह में भी अमर रहेंगे!

निवेदिता—२८

[निवेदिता को भारती अपनी 'गुरुमणि' मानते हैं। उनका कहना है कि उन्होंने भारती को देशमाता का सच्चा रूप बताया है।] आप कृपा का वंदन हैं, प्रेम का मन्दिर, मेरे मन के अन्धकार के लिए (उसे दूर करनेवाले) रवि, हमारे उन्नत देश रूपी पौधों के लिए वर्षा और निर्धनों का धन हैं। दासता के जाल के लिए आग के रूप में रहनेवाली माता हैं। मैं आप निवेदिता देवी को नमस्कार करूँगा।

अभेदानन्द (श्री विवेकानन्द के शिष्य)—२९

श्रुति तथा उपनिषदों के समूह के त्रुटिहीन (परिपूर्ण) ज्ञाता, अचिन्त्य ब्रह्म-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पराशक्ति में लीन रहेंगे फिर भी तो हैं अविनश्वर।
लोक और परलोक कहीं भी, आप सदा हैं अजर-अमर॥

निवेदिता—२८

आप प्रेम का मंदिर सुन्दर आप कृपा का वंदन हैं।
मेरे मन के तम को करतीं रवि-समान विध्वंसन हैं॥
उन्नत दिव्य देश-तरुओं हित वर्षा, निर्धन का धन हैं।
और दासता-जाल-प्रदाहक अग्नि भयंकर भीषण हैं॥
हे निवेदिता बहिन ! तुम्हें करता हूँ बार-बार वन्दन।
(मन में प्रमुदित होकर करता आज तुम्हारा अभिनंदन)॥

अभेदानंद—२९

(श्री विवेकानन्द के शिष्य)

वे श्रुतियों के उपनिषदों के अनुपम ज्ञाता थे त्रुटिहीन।
ब्राह्मी स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर वे रहते थे उसमें लीन॥
जहाँ दुपहरी में न फैलता था दिनकर का किरण-विलास।
सत्य ज्ञान की दिव्य ज्योति का वहाँ दिखाने गये प्रकाश॥ १ ॥
यदि विचार कर देखो मन में तो है सत्य वस्तु बस एक।
और उसी के विविध रूप हैं इस जगती के जीव अनेक॥
(जब वेदों-उपनिषदों द्वारा यह सिद्धान्त सुनिश्चित है)।
तो तेरा-मेरा मन प्रभु कहकर झगड़ा करना अनुचित है॥
भली भाँति से इस रहस्य को समझानेवाले गुरुवर !।
ज्ञानवृक्ष के दिव्य फलों को खानेवाले (अजर-अमर !)॥
सभी इन्द्रियों को अपने वश में करनेवाले तुम हो।
कर्मवीर हो (भक्तिवीर हो, ज्ञानवीर मतवाले हो)॥ २ ॥

स्थिति का ज्ञान प्राप्त करके उस स्थिति में रमते रहनेवाले, बिरला ही प्राप्य गुणों के साथ भूमि के उस भाग में जहाँ दुपहर में भी रवि की ज्योति नहीं पहुँच सकती, जो सत्य ज्ञान की ज्योति फैलाने गये –(वे अभेदानन्द)। १ सोचकर देखो तो सत्यवस्तु एक ही है ! जीव उसके ही रूप हैं।. स्थिति यह है, तो 'मेरा देव', 'तुम्हारा देव' —कहकर झगड़ा करना हेय काम है। वे हैं —ऐसा सम्यक् रूप से समझानेवाले परमगुरु, ज्ञान रूपीपौधे को चाव से चरकर बिगाड़नेवाली पंचेन्द्रियों के निग्रह करनेवाले वीर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेऱु

वानन् दम्बुहळ् मेवि विळङ्गिय माशिलाद कुरवनच् चङ्गरन्
ञानन् दङ्गुमिन् नाट्टिनैप् पिन्नरुम् नण्णि नानैनल् तेशुऱु मव्विबे
कानन्दप् पॆरुञ् जोदि मऱैन्दपिन् अवनिळैत्त पॆरुन्दॊळि लाऱ्ऱिये
ऊनन् दङ्गिय मानिडर् तीदॆलाम् ऑळिक्कुमाऱु पिऱन्द पॆरुन्दवन् 3

वेऱु

तूय अबेदानन्द नॆनुम् पॆयर् कॊण्डॊळिर् तरुमिच् चुत्त ञानि
नेयमुडन् इन्नहरिल् तिरुप्पादञ् जात्तियरुळ् नॆञ्जिऱ् कॊण्डु
मायमॆलाम् नीङ्गि यिति दॆम्मवर् नन् नॆरि शारुम् वण्णम् ञानम्
तोयनति पॊळिन्दिडुमोर् मुहिल् पोन्ऱान् इवन् पदङ्गळ् तुदिक्किन् ऱोमे 4

ओवियर् मणि इरवि वर्मा—30

शन्दिर नॊळियै ईशन् शमैत्तु, अदु परुहवॆन्ऱे
वन्दिडु शादहप् पुळ् वहुत्तनन् अमुदुण्डाक्किप्
पन्दियिऱ् परुह वॆन्ऱे पडॆत्तनन् अमरर् तम्मै
इन्दिरन् माण्बुक् कॆन्न इयऱ्ऱिनन् वॆळिय यानै 1
मलरिनिल् नील वानिल् मादरार् मुहत्तिल् ऍल्लाम्
इलहिय अळहै ईशन् इयऱ्ऱिनान्; शीर्त्ति इन्द
उलहिनिल् ऍङ्गुम् वीशि ओङ्गिय इरवि वर्मन्
अलहिला अऱिवुक् कण्णाल् अनैत्तैयुम् नुहरुमाऱे 2
मन्नर् माळिहैयिल् एळैमक्कळिन् कुडिलिल् ऍल्लाम्
उन्नरुन् देशु वीशि ओङ्गिय इरवि वर्मन्

वे हैं— गगन तक गये यश के स्वामी, मानो अकलंक आविगुष्ठ शंकर ज्ञानाश्रय इस देश में फिर से (जिनके रूप में) आये हों, ऐसे तेजस्वी स्वामी विवेकानन्द के निधन के बाद, उनके कार्य को बढ़ाते हुए दोषयुक्त मानवों की बुराई को दूर करने के लिए जन्मे बड़े तपस्वी। ३ पवित्र अभेदानन्द नाम से शोभित ये पवित्र ज्ञानी प्रेम के साथ इस शहर में अपने श्रीचरण रखते हैं। उनके मन में कृपा है। हमारे लोग माया से छूटकर अच्छे मार्ग का अवलम्बन करें, तदर्थ ज्ञानोत्कट उपदेश की वर्षा करनेवाले मेघ के समान ये पधारे हैं। हम इनके चरणों की स्तुति करते हैं। ४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उच्च गगन-मंडल तक व्यापक विस्तृत यश के स्वामी हो।
क्या अकलंक आदि गुरु शंकर आये (अन्तर्यामी) हो॥
ज्ञान-निधान देश में ऐसे तुम अपार तेजस्वी हो।
पूज्य विवेकानन्द-शिष्य रह गुरु के भक्त मनस्वी हो॥
गुरु के निधन-अनन्तर उनका आगे कार्य बढ़ाते हो।
जग के दोषयुक्त मनुजों के दोष (समूल) मिटाते हो॥ ३ ॥
पूत अभेदानन्द नाम से ये स्वामीजी शोभित हैं।
हैं पवित्र ज्ञानी, विज्ञानी औ' सत्प्रेम - समन्वित हैं॥
जन, माया से छूट करें सच्चे पथ का ही अवलंबन।
इसीलिए वे ज्ञान-सुधा को बरसाते हैं घन-सम बन॥
इस नगरी को श्रीचरणों से किया आपने है पावन।
कृपा-सिन्धु हो हम सब करते हैं तव चरणों का वन्दन॥ ४ ॥

चित्रकार मणि रविवर्मा—३०

रची चंद्र की ज्योति, उसे पीनेवाला विरचा चातक।
रची सुधा, पीनेवाले भी रचे 'अमर', उसके चाहक॥
इन्द्रदेव को रचा बनाकर देवगणों का नृप (सम्मत)।
और उसे गौरव देने को रचा ईश ने ऐरावत॥ १ ॥
सरस-सुमन में, नील-गगन में, अबला मन में छवि विरची।
जग की सभी वस्तुओं में ईश्वर ने सुन्दरता सिरजी॥
इस समस्त जग में फैली है जिसकी सुंदर कीर्ति महान।
वे रविवर्मा मति - नयनों से करें सभी छवियों का पान॥ २ ॥
उच्च राज-प्रासादों में या कुटियाओं में निर्धन को।
अकथनीय शोभा दिखलाकर हरता है उनके मन को॥

चित्रकार मणि रविवर्मा—३०

[रविवर्मा तिरुवलन्दपुरम् के राजकुल में उत्पन्न हुए। उनके द्वारा अंकित चित्र बड़े विख्यात थे। दक्षिण में कोई ऐसा घर नहीं होगा, जहाँ उनके बनाये चित्र न पाये जाते हों। उत्तर भारत में भी घर-घर इनके चित्रों की प्रशंसा है।]

ईश्वर ने चन्द्र की ज्योति रची और उसको पीने के लिए ही चातक पक्षी भी सरजा। अमृत निर्मित किया और अमरों को भी रचा, ताकि वे पंक्ति में बैठकर उसका पान करें। उसने इन्द्र को गौरव दिलाने के निमित्त श्वेत गज (ऐरावत) भी रचा। १ ईश्वर ने पुष्प में, नील-गगन में और स्त्रियों के मुखों में सौन्दर्य रचा—ताकि जिसकी कीर्ति इस दुनिया भर में फैली और बढ़ी, वह रविवर्मा अपने अपार बुद्धि की आँख से उन सबका पान करे। २ राज-प्रासादों तथा ग़रीबों की कुटियों में भी वह अवर्णनीय शोभा दिखाकर मन को लुभा लेता था। वह, जो अति सुन्दर चित्र

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नन्तरो विधङ्गळ् तीट्टि नल्हिय पॅरुमान् इन्नाळ्
पॊन्नणि उलहु शॅन्ऱान् पुविप् पुहळ्, पोदुमन्बान् 3
अरम्बै ऊर्वशि पोलुळ्ळ अमर मॅल्लियार् शॅव्वि
तिऱम् पडवहुत्त ॲम्मान् शॅय्तॊऴिल् ऑप्पु नोक्क
बिरुम्बिये कॊल्लाम् इन्ऱु विण्णुल हडैन्दु विट्टाय्
अरम्बैयर् निन् कैच् चॅय्हैक्कु अऴिदलङ् गऱिबै तिण्णम् 4
कालवान् पोक्किल् ॲन्ऱुङ् गऴिहिलाप् पॅरुमै कॊण्ड
कोलवान् तॊऴिल्हळ् शॅय्दु कुलविय पॅरियोर् तामुम्
शील वाळ् वहऱ्ऱि ओर् नाट् शॅत्तिडल् उऱुदि यायिन्
ञाल वाळ्वित्तु मायम् नवित्ऱिडऱ् करिय दन्ऱो ? 5

सुप्पराम् दीट्चिदर्—31

अहबल्

कविदैयुम् अञ्जुवैक् कान् नूलुम्
पुवियित्तर् वियक्कुम् ओवियप् पॊऱ्पुम्
मऱ्ऱुळ पॅरुन्दॊऴिल् वहैहळिऱ् पलबुम्
वॅऱ्ऱि कॊण्डिलङ्गिय मेन्मैयार् बरद
नाट्टिनिल् इन्नाळ् अन्नियर् नलिप्प
ईट्टिय शॅल्वम् इऱन्दमैयानुम्
आण्डहैयॊडु पुहळ् अऴिन्दमै यानुम्
माण्डन पऴम्बॅरु माट्चियार् तॊऴिलॅलाम्;
देवर्हळ् वाळ्न्द शीर्वळर् पुवियिल्
मेविय कुरक्कर् विळङ्गुदल् पोल
नेरिलाप् पॅरियोर् निलविय नाट्टिल्
शीरिलाप् पुल्लर् शॅरिन्दु निऱ्कित्तऱार्
इवरिडै
शुरत्तिडै इन्नीर्च् चुन्नैयदु पोन्ऱुम्
अरक्कर् दङ् गुलत्तिडै वीडणनाहवुम्

अंकित करना था, आज स्वर्णभूमि स्वर्ग चला गया। शायद उसने धरती में प्राप्त यश पर्याप्त मान लिया हो। ३ उसने रम्भा-उर्वशी जैसी अप्सराओं के चित्र बनाये थे। शायद यह देखने के लिए कि हमारे चित्र असली देवांगनाओं की तुलना में कैसे उतरे हैं, वह अपनी इच्छा से व्योमलोक पहुँच गया। (हे रविवर्मा) वहाँ तुम देखोगे कि अप्सराएँ तुम्हारे हस्तकौशल पर जान देती हैं। ४ कालगति में अक्षय यश दिलानेवाले सुन्दर काम करनेवाले महान लोग भी इस श्रेष्ठ जीवन को त्याग देकर एक दिन मर जाते हैं। —यह एक ध्रुव सत्य रहा, तो भू-जीवन की माया का क्या कहा जाय ? उसे कहना भी कठिन है न ! ५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अतिशय सुन्दर चित्र बना वह स्वर्गलोक को विदा हुआ।
इस धरती पर प्राप्त सुयश से वह मानो संतुष्ट हुआ॥ ३॥
रम्भा और उर्वशी ऐसी मंजु अप्सराओं के चित्र।
चित्रकार श्री रविवर्मा ने विरचे थे अत्यन्त विचित्र॥
क्या असली अप्सरा-सरीखे, हमने चित्र उतारे हैं।
यही जानने को मानो वे स्वर्ग समोद पधारे हैं॥
वहाँ पहुँचकर तुम देखोगे प्रमुदित सभी अप्सराएँ।
सभी तुम्हारी चित्रकला पर न्यौछावर बलि-बलि जाएँ॥ ४॥
अमिट काल-गति में अविरल अक्षय यश भी देनेवाले।
शुभ कामों को करनेवाले महापुरुष महिमावाले॥
एक दिवस वे अपना जीवन त्याग स्वर्ग-पुर जाते हैं।
(किन्तु सदा के लिए विश्व में नाम अमर कर जाते हैं)॥
यही एक ध्रुव-सत्य जगत में (सत्पुरुषों ने बतलाया)।
अकथनीय है अति अपार है यह मायापति की माया॥ ५॥

सुब्बराम दीक्षित—३१

कविता रचनेवाले, रसमय गान-ग्रंथ रचनेवाले।
भू-वासी मनुजों से शंसित चित्रकला करनेवाले॥
सभी श्रेष्ठ उद्योग-कला में विजयशील महिमावाले।
तब भारत, भारत के वासी थे गुण-गौरव-यश वाले॥
विदेशियों से आज वही अब अपना भारत क्षीण हुआ।
पौरुष, धन, उद्योग, कला, यश सबसे देश विहीन हुआ॥
श्री-सम्पन्न सुरों की क्षिति पर आकर बसें यथा वानर।
वैसे आज महापुरुषों की भू पर बसे क्षुद्र पामर॥
मरुस्थली के मध्य मधुर जलवाले सरस-स्रोत-उपमान।
राक्षस-कुल के बीच राम के भक्त विभीषण-सम मतिमान॥

सुब्बराम दीक्षित—३१

जिस (भारत देश) में काव्य, सुरम्य गान-शास्त्र, भूवासियों द्वारा प्रशंसनीय चित्र-श्रेष्ठता और अन्य बड़े उद्योगों में कई सफल रूप से विद्यमान थे और जो भारत इस कारण से गौरवान्वित था, उस भारत देश में आज की स्थिति यह है कि विदेशियों द्वारा त्रस्त होने से भारत का सारा अर्जित धन लुप्त हो गया और पौरुष के साथ यश भी मिट गया, जिससे बड़े और पुराने गौरवपूर्ण उद्योग-धंधे नष्ट हो गये। देवों के श्रीपूर्ण लोक में मानो वानर आ बसकर खुश हो रहे हों, वैसे इस देश में, जहाँ उपमा-हीन बड़े लोग रहते थे, गुणहीन हेय लोग आकर संकुलित होकर रहे। इनके मध्य अकलंक सुब्बरामन नामक व्यक्ति, मानो रेगिस्तान में मधुर जलस्रोत, राक्षसकुल में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शेऱ्ऱिडत् तामरैच् चॆम्मलर् पोन्ऱुम्
पोऱ्ऱुदर् कुरिय पुनिद वान् कुलत्तिल्
नारद मुनिवन् नमर् मिशै यरुळाल्
बारद नाट्टिल् पळ माण्बुरुहॆन
मीट्टुमोर् मुऱै इवन् मेविनन् ऍन्न
नाट्टु नऱ्चीर्त्ति नलनुयर् पॆरुमान्
तोमऱु शुप्प रामनऱ् पॆयरोन्
नामहळ् पुळहुर् नम्मिडै वाळ्न्दान्
इन्नान् तानुम् ऍमैयहन् ऱेहिनन्
ऍन्ने नम्मवर् इयऱ्ऱिय पावम् !
इनियिव ननैयऱै ऍन्नाट् काण्बोम् ?
कनियऱु मरमॆनक् कडैनिलै युऱ्ऱोम्
अन्दो मऱलिनम् अमुदिनैक् कवर्न्दान्
नॊन्दो पयनिलै, नुवल यादुळदे ?

विरुत्तम्

कन्ननॊडु कोडै पोयिऱ्ऱु; उयर् कम्ब नाडनुडन् कविदै पोयिऱ्ऱु
उन्नरिय पुहळ्प् पार्त्त नॊडु वीरम् अहन्ऱुदैन उरैप्पर् आन्ऱोर्
ऍन्नह निन्ऱहलादोन् अरुट् चुप्प रामनॆनुम् इणैयिला विर्
पन्ननॊडु शुवै मिहुन्ब पण्बळनुम् अहन्ऱुदैनप् पहर लामे 1
कलैविळक्के ! इळशै यॆन्नुम् शिऱ्ऱुरिल् पॆरुञ् जोदि कदिक्कत् तोन्ऱुम्
मलैविळक्के ! ऍम्मनैयर् मन विरुळै माऱ्ऱवदऱ्कु बन्द आन
निलै विळक्के ! निनैप् पिरिन्द इशैत्तेवि नॆय्यहल निन्ऱ तट्टिन्
उलै विळक्के यॆनत्तळरुम्; अन्दो ! नी अहन्ऱुदुयर् उरैक्कर् पाऱ्ऱो ? 2
मन्नरैयुम् पॊय्ञ् आन मदक्कुरबर् तङ्गळैयुम् वणङ्ग लादेन्
तन्ननैय पुहळ्डैयाय् निनैक् कण्ड पॊळुदु तलै ताळ्न्दु वन्देन्

विभीषण, पंकज में पुण्डरीक जैसे प्रशंसनीय श्रेष्ठ कुल में आकर पैदा हुए। उन प्रकीर्तित गुणपूर्ण सुब्बरामन को देखकर लगता था, मानो नारदमुनि स्वयं ही भारत देश के नष्ट गौरव को पुनः प्राप्त कराने हेतु फिर से इधर आकर प्रकट हो गये हों। वे हमारे बीच सरस्वती देवी को आनन्द देते हुए जीवित रहे। वे भी हमें छोड़कर चल बसे। हाय, हमारे लोगों का किया पाप भी कैसा (भयावह) है ! भविष्य में उनके समान पुरुष को हम कहाँ देख सकेंगे ? फलों से हीन वृक्ष के समान हम निकृष्ट हो गये। हाय ! यम ने हमारे अमृत को हर लिया। दुख करने से कोई फ़ायदा नहीं है। कहने को क्या रहा है ?

(वृत्त छन्द का अनुवाद)

बड़ों ने कहा है कि कर्ण के साथ दानशीलता गयी। उच्च कंबनाडन के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पंक-बीच विकसित अति सुंदर सुरभित पंकज-तुल्य महान।
भारत-महिमा-वृद्धि-हेतु जन्मे हों, ज्यों नारद गुणवान॥
इन सबके समान अति पावन उच्च वंश में कीर्ति-निधान।
प्रकट सुब्बरामन नामक प्रभु दोषहीन गुण-गौरव-खान॥
सरस्वती को पुलकित करते वे हम सबके बीच रहे।
हमें त्याग कर चले गये वे क्या हम पापी नीच रहे॥
अब उनके समान गुण-मंडित देख कहाँ हम पायेंगे।
फल-विहीन तरुओं-समान ही हम निकृष्ट बन जायेंगे॥
आज कुटिल यमराज हमारा सुधा-कलश ले गया चुरा।
दुख करने से लाभ नहीं क्या कहें हुआ यह बहुत बुरा॥

(वृत्त छन्द का अनुवाद)

कहा बड़ों ने कर्ण (वीर) के साथ धरा से दान गया।
उच्च 'कम्ब' के साथ मनोरम काव्य-कला का मान गया॥
वीर पार्थ के साथ वीरता का यश मंजु महान गया।
सुब्बराम दीक्षित के सँग संगीत-कला का ज्ञान गया॥
श्रीयुत सुब्बरामजी दीक्षित थे कृपालु, अनुपम व्युत्पन्न।
मेरे मंजुल मन-मंदिर से कभी न वे हो सकते भिन्न॥ १॥
"इलशै" नामक सुलघु गाँव में ज्योति-प्रभासक पर्वत-दीप।
हम लोगों के हृदयाच्छादित तम के नाशक पर्वत-दीप॥
बिछुड़ आपसे गीतों की देवी हो जाएगी छवि-हीन।
घृत-विहीन दीपक-आभा-सी हो जायेगी म्लान-मलीन॥
(हाय! आपके विरह-जन्य दुख का न कभी सहना संभव)।
हाय आपके विरह-जन्य दुख की न कथा कहना संभव॥ २॥
झूठे धर्म-प्रचारक गुरु हों, या हों अभिमानी नृपजन।
नहीं झुकाता इनके सम्मुख मैं निज-मस्तक अवनत बन॥
किंतु यशस्वी सुब्बा स्वामी का करता था मैं वंदन।
मैं उनके सुंदर वचनों को रहा मानता देव-वचन॥

साथ काव्यकला गयी। अवर्णनीय यशस्वी पार्थ के साथ वीरता गयी। मेरे हृदय से जो अलग नहीं हो सकते, उन अप्रतिम व्युत्पन्न कृपालु सुब्बराम दीक्षित के साथ सरस संगीत-रस भी चला गया—ऐसा माना जा सकता है। १ हे कला के दीप! 'इळशै' नामक छोटे गाँव में बड़ी ज्योति फैलाने के लिए जनमे पर्वत-दीप! हम जैसों के मन के अन्धकार को दूर करने को आये स्थायी दीप। आपसे छूटकर संगीत की देवी घृतहीन दिये की लपट के समान म्लान हो रही है। हाय! क्या आपके वियोगजन्य दुख का वर्णन करना सम्भव है? २ मैं राजाओं के या झूठे धर्मप्रचारक गुरुओं के सामने सिर नहीं झुकाता। पर आपके अपने उतने ही यश के स्वामी को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन्नरुमैच् चॊऱ्कळैये दैय्विहमाम् ऎऩक् करुदि वन्देन् ! अन्दो !
इन्नमॊरु कालिळशैक् केहिडिन् इव् वॆळियन् मऩम् ऎऩ् पडादो ? 3

महामहोपात्तियायर्—32

शॆम्बरिदि ऒळि पॆऱ्ऱान्; पॆन्नऱवु शुवै पॆऱ्ऱुत् तिहळ्न्ददु; आङ्गण्
उम्बरॆलाम् इऱवामै पॆऱ्ऱ नरॆऩ्ऱु ऎवरे कॊल् उवत्तल् शॆय्वार् ?
कुम्ब मुनि यॆऩत् तोऩ्ऱुम् शामिना दप्पुलवन् कुऱैविल् कीर्त्ति
पम्बलुऱप् पॆऱ्ऱऩऩॆल् इदऱ्कॆऩ्गॊल् पेरुवहै पडैक्किऩ्ऱीरे ? 1
अऩ्ऩियर्हळ् तमिऴ्च् चॆव्वि यऱियादार्, इऩ्ऱॆम्मै आळ् वारेऩुम्
पऩ्ऩियर् शीर् महामहोपात्तिया यप्पदवि परिविऩ् ईन्दु
पॊऩ्ऩिलवु कुडन्दै नहर् शामिना दऩ्ऱऩक्कुप् पुहऴ् शॆय्वारेल्
मुऩ्ऩिवऩप् पाण्डियर् नाळ् इरुन्दिरुप्पिऩ् इवऩ् पॆरुमै मॊऴिय लामो ? 2
'निदि यऱियोम्, इव्वुलहत् तॊरु कोडि इऩ्ब वहै नित्तम् तुय्क्कुम्
गदि यऱियोम्' ऎऩ्ऱु मऩम् वरुन् दऱ्क कुडन्दै नहर्क् कलै ऴर् कोवे !
पॊदिय मलैप् पिऱन्द मॊऴि वाळ्वऱियुम् कालमॆलाम् पुलवोर् वायिल्
तुदि यऱिवाय्, अवर् नॆऴ्जिऩ् वाळ्त्तऱिवाय् इऱप्पिऩ्ऱित् तुलङ्गुवायो 3

देखकर मैं सिर झुकाकर नमस्कार करता रहा। मैं आपके वचनों को दिव्य वचन मानता आया। हाय ! और कभी इळशै जाऊँ, तो इस दीन का मन कैसी दशा को प्राप्त होगा ? ३

महामहोपाध्याय—३२

[महामहोपाध्याय वे० स्वामीनाथय्यर अत्युच्च विद्वान थे। अगर वे परिश्रम के साथ पुराने ग्रंथों तथा ताड़पत्रों का संग्रह करके न प्रकाशित कराते, तो तमिऴ के गौरव-प्रदायक सारे ग्रंथ दीमक के मुख में पड़कर खाक बन जाते। वे सरकारी कालेज में प्राध्यापक रहे। उनकी मृत्यु हो गयी। यह पद्य तब रचा गया, जब सरकार ने उन्हें महामहोपाध्याय की उपाधि से विभूषित किया।]

सूर्य को ज्योति मिल गयी। अमृत-स्वाद को प्राप्त होकर अधिक अच्छा हुआ। वहाँ देवों को अमरता सिद्ध हो गयी— इन बातों को सुनकर ऐसा (मूर्ख) कौन होगा, जो बधाई देते हुए खुश न होगा ? अगस्त्य मुनि के समान रहनेवाले विद्वान स्वामीनाथय्यर की अक्षय कीर्ति फैली तो तुम लोग क्या इतने खुश नहीं होते हो ? १ वे विदेशी हैं— तमिऴ का गौरव नहीं जानते। वे आज हमारे शासक हैं। तो भी उन्होंने आज 'महामहोपाध्याय' उपाधि स्वर्णमय (सुन्दर) कुंभकोणम् नगर के निवासी स्वामीनाथय्यर को आदर के साथ प्रदान करके अपना यश बढ़ा लिया है। अगर पांडिय राजाओं का राजकाल रहता, तो इनकी कैसी महिमा होती, क्या इसका कोई अनुमान भी किया जा सकता है ? २ हे पंडितवर, हे कुंभकोणम् के कलासम्राट् ! यह दुख न करें कि हमने निधि क्या चीज है, इसे नहीं जाना ! दुनिया में सहस्र विध सुख हैं। पर उनके भोग का उपाय हम नहीं जानते। मलयपर्वत पर उद्भूत तमिऴ भाषा जब तक जीना जानती है, तब तक आप पंडितों-विद्वानों के मुख की स्तुति के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हाय ! कभी अब "इलशै" जाऊँ तो कैसा होगा मम मन।
दीन दशा इस मन की होगी (अश्रु-भार से भरे नयन) ॥ ३ ॥

महामहोपाध्याय स्वामीनाथय्यर—३२

मिली सूर्य को ज्योति मनोरम तिमिर - विनाशक।
मिला अमृत को स्वाद मनोरम हृदयाह्लादक ॥
देवगणों को मिली अमरता मंगल - दायी।
ये बातें सुन समुद दे रहे सभी बधाई ॥
मुनि अगस्त्य - सम बुद्धिमान स्वामीनाथय्यर।
फैली अक्षय कीर्ति इसी से मुदित सभी नर ॥ १ ॥
नहीं विदेशी मधुर - तमिळ - गुण - गौरव - ज्ञाता।
आज बने वे हाय ! हमारे भाग्य - विधाता ॥
स्वर्णिम सुखद कुम्भकोणम् में जो रहते हैं।
जिन्हें सभी जन स्वामीनाथय्यर कहते हैं ॥
उनका आदर - सहित समोद मान करके ही।
महामहोपाध्याय उपाधि दान करके ही ॥
(कर उनका सम्मान बढ़ाया वैभव अपना)।
विदेशियों ने आज बढ़ाया गौरव अपना ॥
पाण्ड्य नृपों के राज्य-काल की होती गरिमा।
तो कैसी होती सम्मानित इनकी महिमा ॥
इसका कुछ अनुमान नहीं कर सकता कोई।
(इसका सही बखान नहीं कर सकता कोई) ॥ २ ॥
हैं अगणित प्रणाम तुमको हे हे पंडित वर !।
अतुल - कला - सम्राट् कुम्भकोणम् के सुन्दर ॥
दुख मत करो, न हमने है निधि को पहिचाना।
दुनिया में है विविध सुखों का विशद ख़ज़ाना ॥
(कैसे सुख का भोग करें ? हम नहीं जानते)।
उन भोगों का भी उपाय हम नहीं जानते ॥
जो अतिमंजु मलय-पर्वत पर जन्मी सुन्दर।
जब तक जीवित मधुर तमिळ - भाषा वह मनहर ॥
तब तक मुख-स्तुति भागी होंगे (मतिमानों के)।
सभी पंडितों के (गुणवानों) विद्वानों के ॥
उनके उर की मधुर बधाई से हो परिचित।
अमर सदा स्वामीनाथय्यर जग में शोभित ॥ ३ ॥

अधिकारी पात्र रहेंगे। आप उनके द्वारा दी हुई बधाई को जानेंगे और अमर होकर शोभायमान बने रहेंगे। ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॆङ्गटेशु रॆट्टप्प बूपति—33

[श्री अॆट्टयपुरम् राज राजेन्द्र महाराज वॆङ्गटेशु रॆट्टप्प बूपदि अवर्हळ् समूहत्तुक्कु कविराज श्री सुप्पिरमणिय बारदि अॆळुदुम् शीट्टुक् कविहळ्]

पारि वाळ्न्दिरुन्द शीर्त्तिप् पळन्दमिळ् नाट्टिन् कण्णे
आरिय ! नीयिन् नाळिल् अरशु वीऱ्ऱिरुक्किन् ऱायाल्
कारियङ् गरुदि निन्नैक् कविञर् दाङ्गाण वेण्डिन्
नेरिलप् पोदे यॆय्दि वळिपड निनैहिलायो ? 1
विण्णळ वुयर्न्द कीर्त्ति वॆङ्गटेशु रॆट्ट मन्ना
पण्णळ वुयर्न्द दॆन्पण पावळ वुयर्न्द दॆन्पा
अॆण्णळ वुयर्न्द वॆण्णिल् इरुम्बुहळ्क् कविञर् वन्दाल्
अण्णले परिशु कोडि अळित्तिड विरैहिलायो ? 2
कल्विये तोळिलाक् कॊण्डाय् ! कविदैये दॆय्वमाह
अल्लुनन् पहलुम् पोऱ्ऱि अदै वळि पट्टु निन्ऱाय् !
शॊल्लिले निहरिलाद पुलवर् निन् शूळलुऱ्ऱाल्
अॆल्लिनैक् काणप्पायुम् इडबम् पोल् मुऱ्पडायो ? 3

अॆट्टयपुरम्
1919 वर्ष, मे मादम् इरणडान्देदि } —सुब्रमणिय बारदि

वेंकटेशु रेट्टप्प भूपति—३३

[श्री अेट्टय्यपुरम् राजराजेन्द्र महाराज वेंकटेशुरेट्टप्प भूपति की सेवा में कविराज श्री सि० सुब्रह्मण्य भारती के द्वारा लिखे गये कविता-स्वरूप पत्र—]

भारती आरम्भकाल में इसी अेट्टय्यपुरम् (छोटी रियासत) के राजा के दरबारी कवि थे। उनका स्वभाव ही कुछ ऐसा था कि वे उसमें अधिक नहीं ठहर सके। पीछे जब वे (उन दिनों अंग्रेजों द्वारा शासित) भारत लौट आये, तब उनकी स्थिति आर्थिक तंगी के कारण बहुत ही बुरी हो गयी थी और उन्होंने राजा से सहायता की आशा की। तब ये दो पत्र (कविता-रूप में) लिखकर भेजे। कुछ फल नहीं निकला। इन पत्रों की भाषा के साथ भारती के स्वाभिमान के भाव भी विशेष रूप से देखने योग्य हैं। १ जिस देश में दानी पारि (तमिळ के इतिहास में सात दानियों के नाम प्रसिद्ध हैं। उनमें एक का नाम पारि था) रहता था, उस प्राचीन तमिळ देश में, हे आर्य ! आप इन दिनों राजासन पर विराजमान हैं। कुछ पाने के उद्देश्य से कोई कवि आपसे भेंट करने आए, तो क्या आप उसका सामने जाकर स्वागत नहीं करेंगे ? (प्रश्न भी है, विश्वास भी।) गगन तक उन्नत यशस्वी वेंकटेशु रेट्टप्प भूपति, मेरा राग (संगीत) जितना ऊँचा हो सकता है, उतना ऊँचा हो गया है और मेरा पद्य उतना उत्कृष्ट है जितना पद्य उत्कृष्ट हो सकता है। जितनी कल्पना उच्च हो सकती है, उतनी उन्नत कीर्ति वाले कवि आयें तो क्या, हे प्रभु ! आप करोड़ों का पुरस्कार, भेंट करने आगे सत्वर नहीं बढ़ आयेंगे ? २ आपने विद्या को 'व्यसन' माना। आप कविता को 'देवी' मानकर अहर्निश उसकी पूजा करते रहते हैं। अप्रतिम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेंकटेशु रेट्टप्प भूपति को लिखा पत्र—३३ (क)

श्री सुब्रह्मण्य भारती (प्रतिभा में ज्यों रवि थे)।
अॅट्टय्यपुरम् - भूपति के दरबारी कवि थे॥
निज - स्वभाव - वश वहाँ नहीं ज़्यादा टिक पाये।
जब भारत में लौट भारती फिर से आये॥
हुई बहुत दयनीय दशा थी निर्धनता में।
मदद हेतु दो पत्र लिखे नृप को कविता में॥
भाषा-भाव "भारती" का अति श्लाघनीय है।
स्वाभिमान का भाव भरा है, दर्शनीय है॥
यद्यपि पत्र लिखे, मन में आशा का ले बल।
व्यर्थ हुए वे पत्र, न कुछ भी प्राप्त हुआ फल॥ १॥
हुआ जहाँ पर "पारि" नाम का दानी सुललित।
उसी देश में, भूप! हुए सिंहासन - शोभित॥
तव समीप यदि कविजन आयें किसी कार्य-हित।
तो सम्मुख बढ़ क्या न करेंगे उनका स्वागत॥
वेंकटेशु रेट्टप्पु नृपति! (जग में अति विश्रुत!)।
कीर्ति आपकी नभ-मंडल तक फैली विस्तृत॥
मम संगीत - राग भी है अधिकाधिक उन्नत।
काव्य-भाव भी है अतिशय उत्कृष्ट समुन्नत॥
उच्च कल्पना से भी ऊँचे कवि यदि आयें।
तो क्या नृपवर! आप न स्वागत-हित हुलसायें॥
क्या न आप आगे बढ़कर उनका स्वागत कर।
करें पुरस्कृत उन्हें करोड़ों से हरषाकर?॥ २॥
सुना यही श्रीमान बड़े विद्या - व्यसनी हैं।
कविता से भी प्रीति आपकी बहुत घनी है॥
देवी मान अहर्निश करते कविता - पूजन।
यदि आयें तव ढिग वाणी के अनुपम कविजन॥
क्या न ऋषभ - सम आप देखने को धायेंगे।
क्या न प्रेम से अगवानी करने आयेंगे॥
उन्निस सौ उन्नीस दो मई आज सुदिन है।
वेंकटेशु को पत्र "भारती" का अर्पण है॥ ३॥

वाग्स्वामी कवि आपके पास आयें, तो क्या आप उन्हें देखने के लिए, झपटनेवाले ऋषभ के समान लपककर अगवानी करने नहीं आएँगे? ३

अॅट्टय्यपुरम्
२ मई, सन् १९१९

—सुब्रह्मण्य भारती

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

2

श्री अॆट्टयपुरम् महाराज राजेन्द्र
श्री वॆङ्गटेशु रॆट्टप्प बूपदि
अवर्हळ् समूहत्तुक्कु

कविराज श्री सि० सुप्पिरमणिय बारदि अॆळुदुम् ओलैत्तूक्कु :
राजमहा राजेन्द्र राजकुल शेकरन् श्री राजराजन्,

देशमॆलाम् पुहळ् विळङ्गुम् इळशै वॆङ्ग टेशु रॆट्ट शिङ्गन् काण्ग
वाशमिहु तुळाय्त् तारान् कण्णनडि, मऱवाद मनत्तान् शक्ति
दाशनॆनप् पुहळ् वळरुम् सुब्रमण्य, बारदि तान् शमैत्त तूक्कु 1

मन्नवने ! तमिळ् नाट्टिल् तमिळ् रिन्द, मन्नरिलै यॆन्ऱु मान्दर्
इन्नलुऱप् पुहत्ऱ वशै नी महुडम्, पुनैन्द पॊळु तीर्न्ददन्ऱे !
शॊन्नलमुम् पॊरुणलमुम् शुवै कण्डु, शुवै कण्डु तुय्त्तुत् तुय्त्तुक्
कन्नलिले शुवै यऱियुङ् गुळन्वैहळ् पोल्, तमिळ्च् चुवै नी कळित्ता यन्ऱे ! 2

पुवियनैत्तुम् पोऱ्ऱिड वान् पुहळ् पडैत्तुत्, तमिळ् मॊळियैप् पुहळिलेऱ्ऱुम्
कवियरशर् तमिळ् नाट्टुक् किल्लै यॆनुम्, वशयॆन्नाऱ् कळिन्ददन्ऱे ?
"शुवै पुदिदु; पॊरुळ् पुदिदु; वळम् पुदिदु, शॊऱ्पुदिदु शोदि मिक्क
नवकविदै अॆन्नाळुम् अळियाद, मा कविदै" अॆन्ऱु नन्गु 3

श्री अेट्टय्यपुरम् महाराज राजेन्द्र
श्री वेंकटेशु रेट्टप्प भूपति
की सेवा में

कविराज सि० सुब्रह्मण्य भारती का लिखा पत्र

राजमहाराजेन्द्र राजकुलशेखर, श्री राजराज—

यह पत्र देश भर में विख्यात इळसै (अेट्टय्यपुरम् का दूसरा नाम) के वेंकटेशु रेट्टपप्पसिंह देखें।

सुगन्धित तुलसी मालाधारी कृष्ण के चरणों को कभी विस्मृत न करनेवाले, 'शक्तिदास' बिरुद से ख्यातनामा सुब्रह्मण्य भारती द्वारा रचित पत्र है यह। १ हे राजन् ! लोग बहुत खिन्नता से कह रहे थे कि तमिळ देश में तमिळ का ज्ञाता कोई राजा नहीं है। यह अपवाद तब दूर हुआ न, जब आपने मुकुट धारण किया ? आप ईख चूसते बच्चों के समान, तमिळ भाषा के शब्द-सौष्ठव तथा भाव की सरसता का आस्वादन करके आनन्द पाते हैं न ? २ यह भी अपवाद रहा कि संसार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेंकटेशु रेट्टप्प भूपति को लिखा (दूसरा) पत्र—३३ (ख)

श्री अेट्टय्यपुरम् के विश्रुत महाराज राजेंद्र महान।
वेंकटेशु रेट्टय्यपुरम् नृप की सेवा में पत्र - प्रदान ॥
विश्व-विदित इलशैपुरवासी (अगणित-गुण-गण-गौरव-ग्राम)।
महाराज राजेंद्र राजकुल शेखर राम-राज अभिराम ॥
वेंकटेशु रेट्टप्प सिंह जी कविता-कला-कुशल रस-धाम।
सुब्रह्मण्य भारती द्वारा लिखा पत्र यह पढ़ें ललाम ॥
जो तुलसी की माला धारण करें सुगंधित।
उन हरि के चरणों को करते कभी न विस्मृत ॥
शक्तिदास की विरुदावलि से जो जग - विश्रुत।
कृपा - पत्र यह उन सुब्रह्मण्य - भारती - विलिखित ॥ १ ॥
लोग खिन्नता से कहते थे सब यह, राजन्!।
तमिळ देश में नहीं तमिळ-ज्ञाता अब नृप जन ॥
किया आपने जभी मुकुट मस्तक पर धारण।
इस कलंक का हुआ तभी श्रीमान् निवारण ॥
ज्यों बालक रस लेते गन्ना चूस - चूसकर।
उसी भाँति ही आप (सर्वदा मान्य भूपवर!) ॥
सदा तमिळ - भाषा के शब्द - चयन - सौष्ठव का।
भावों की सरसता (गुणों के भी गौरव का) ॥
लेते अनुपम स्वाद (हृदय में हरसाते हैं)।
कविता का रस पी करके बलि - बलि जाते हैं ॥ २ ॥
जो समस्त संसार बीच शुभ यश फैलाये।
मंजु तमिळ - भाषा की उन्नति कर दिखलाये ॥
ऐसा कोई तमिळ देश में आज न कविवर।
यह कलंक फैला था कब से इस धरती पर ॥
शब्द नवल हैं, भाव नवल हैं, नवल पुष्टता।
रस नवीन अत्यन्त नवल है मेरी कविता ॥
मैंने नूतनतम कविता का सिंधु बहाया।
इस प्रकार मैंने भी एक कलंक मिटाया ॥ ३ ॥

में यश फैलाकर तमिळ भाषा को उन्नत बनानेवाला कोई कविराज तमिळ देश में नहीं है। वह अपवाद भी मेरे कारण मिट गया न? यह नवीन है; भाव नवीन है तथा (रस-) पुष्टता नवीन है। नयी कविता है, महान कविता है—ऐसा खब है। ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पिरान्सॆन्नुम् शिऱन्द पुहऴ् नाट्टिलुयर्, पुलवोरुम् पिऱरुमाङ्गे
विराबु पुहऴाङ्गिलत्तीङ् गवियरशर्, तामु मिह वियन्दु कूऱिप्
पराबि यॆत्ऱन् तमिऴ्क् कवियै मॊऴि पॆयर्त्तुप्, पोऱ्ऱुहिन्ऱार्; पारोरेत्तुन्
दरादिपने ! इळशै वॆङ्गटेशु रॆट्टा !, निन्पाल् अत्तमिऴ् कॊणर्न्दॆन् 4

वेऱु

वियप्पु मिहुम् पुत्तिशैयिल् बियत्तहुमॆन् कविदैयिनै वेन्दने ! निन्
नयप्पडु सन्निदि तनिले नान् पाड नी केट्टु, नन्गु पोऱ्ऱि
जयप्परॆहळ् शाऱ्ऱुवित्तुच् चालुवॆहळ् पॊऱ्पैहळ्, जदि पल्लक्कु
वयप्परि वारङ्गळ् मुदर् परिशळित्तुप् पल्लूऴि वाऴ्ह नीये ! 5

अॆट्टयपुरम्
1919— मे 2 —सुब्रमणिय बारदि

हिन्दु मदाबिमान शङ्गत्तार्—34

मण्णुलहिन् मीदिनिले अॆक्कालुम् अमररप्पोल् मडिविल्लामल्
तिण्णमुर् वाऴ्न्दिडलाम् अदर्कुरिप उबायमिङ्गु शॊप्पक् केळीर्
नण्णियॆलाप् पॊरुळिलुम् उर्पॊरुळायच् चॆय्हैयॆलाम् नडत्तुम् वीऱायत्
तिण्णिय नल् लऱि वॊळियायत् तिहऴ्मॊरु परम् बॊरुळै अहत्तिल् शेर्त्तु 1
शॆय्हैयॆलाम् अदन् शॆय्है निनैवॆल्लाम् अदन् निनैवु दॆय्वमे नाम्
उय्हैयुऱ नामाहि नमक्कुळ्ळे यॊळिर्वदॆन उरुदि कॊण्डु

फ़्रांस नाम के अच्छे प्रकीर्तित देश के विद्वान, अन्य पंडित तथा विख्यात आंग्ल कविराज भी मेरी प्रशंसा करते हैं तथा मेरी कविताओं को अनूदित करके उनका सम्मान करते हैं। हे विश्वपूजित धराधिप, इळशै के वॆंकटेशु रेट्ट ! आपके पास वह तमिऴ (कविता) ले आया हूँ। ४ (छन्द-परिवर्तन) अपनी विस्मयकारी, संगीतमय, आश्चर्यकारी कविता को, हे राजन् ! आपके सन्निध मैं गाऊँ और आप सुनें और उनकी महिमा मानें। जय की दुन्दुभी बजवाकर, शालें, स्वर्णथैली, 'जति', पालकी आदि पुरस्कार (-परिवार) दिलवा दें। जय हो आपकी। आप अनेक वर्ष जियें। ५

अॆट्टय्यपुरम् —सुब्रह्मण्य भारती
२ मई, सन् १९१९

हिन्दू-मताभिमान-संघ—३४

इस धरती पर अमरों की भाँति सदा अन्नतमय रूप से निश्चय ही हम जी सकते हैं। उसका उपाय बताऊँगा। सुनें ! सभी वस्तुओं की अन्तर्यामी रहकर, सभी कार्यों को चलाती रहनेवाली शक्ति; सुदृढ़ चित् की ज्योति बनकर जो परमवस्तु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

फ्रांस देश के अति प्रसिद्ध विद्वान विज्ञवर।
आंग्ल देश के ख्यात नाम-वाले सुकवीश्वर॥
मेरी कविताओं का कर अनुवाद मनोहर।
हैं मेरी कर रहे प्रशंसा, करते आदर॥
वेंकटेशु के रेट्ट धराधिप ! हे जग-पूजित !।
करता हूँ मैं तमिळ - पत्र - कविता यह अर्पित॥ ४॥
शुभ संगीत भरी अतिशय अद्भुत विस्मय-कर।
आज आपके सम्मुख गाऊँ कविता सुन्दर॥
आप सुनें मेरी कविता (उसके गुण जानें)।
(गुण-गरिमा पहिचान मनोरम) महिमा मानें॥
स्वर्ण - भरी थैली दें शाल - दुशाले सुन्दर।
हाथी - घोड़े और पालकी यान मनोहर॥
विजय - दुन्दुभी मेरी इस प्रकार बजवायें।
आप अनेकों वर्ष जियें हम जय - जय गायें॥
उन्निस सौ उन्नीस दो मई आज सुदिन है।
वेंकटेशु को पत्र "भारती" का अर्पण है॥ ५॥

हिन्दू-मताभिमान-संघ—३४

हम अमरों की भाँति सदा इस शुभ धरती पर।
निश्चय - पूर्वक जियें अनन्त रूप धारण कर॥
बतलाऊँगा मैं उपाय इसका अति सुन्दर।
सुनें (सभी हो सावधान वह साधन सब नर)॥
सभी वस्तुओं की जो अन्तर्यामी बनकर।
जग के सभी कार्य करती है शक्ति सुदृढ़तर॥
सदा सुदृढ़ चैतन्य - ज्योति जो रहती बनकर।
परम-तत्त्व वह अपने शुभ मन में धारण कर॥ १॥
इस जग में जो कुछ भी होते कार्य निरन्तर।
कर लें हम विश्वास उसी के किये मानकर॥
जो कुछ हम विचारते वे उसके विचार हैं।
(भाँति - भाँति से करते हम जिनका प्रचार हैं)॥
बन मम रूप हमारे भीतर भासमान है।
करने मम उद्धार समुद्यत शक्तिमान है॥

रहती है, उसको मन में धारण करके; १ यह विश्वास मान लें कि जो भी होता है, वह उसकी कृति है; जो भी सोचते हैं, वह उसके विचार हैं, वह परम ही हमारा उद्धार करने, हम ही बनकर हमारे अन्दर भासमान है। और असत्य, खलता, क्रोध, आलस्य,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॊय् कयमै शिऩम् शोम्बर् कवलै मयल् वीण् विरुप्पम् पुऴुक्कम् अच्चम्
ऐयमॆऩुम् पेयॆ यॆल्लाम् ज्ञानमॆऩुम् वाळाले अऱुत्तुत् तळ्ळि 2

अॆप्पोदुम् आऩन्दच् चुडर् निलैयिल् वाऴ्ऩ्दु यिर्हट् किऩ्दु शॆय्वोर्
तप्पादे इव्वुलहिल् अमर निलै पॆऱ्ऱिडुवार्! शदुर् वेदङ्गळ्
मॆय्प्पाऩ शात्तिरङ्गळ् अॆऩुमिवऱ्ऱाल् इव्वुण्मै विळङ्गक् कूऱुम्
तुप्पाऩ मदत्तिऩैये हिन्दुमद मॆऩप्पुवियोर् शॊल्लुवारे 3

अरुमैयुऱु पॊरुळिलॆल्लाम् मिह अरिदायत् तऩैच्चारुम् अऩ्बर्क् किङ्गु
पॆरुमैयुऱु वाऴ्वळिक्कुम् नऱ्ऱुणैयाम् हिन्दुमदप् पॆऱ्ऱि तऩ्ऩैक्
करदिय दऩ् शॊर्पडि यिङ् गॊऴुहाद मक्कळॆलाम् कवलै यॆऩुम्
ऒरु नरहक् कुऴियदऩिल् वीऴ्ऩ्दु तविल् तऴिहिऩ्ऱार् ओय्विलामे 4

इत्तहैय तुयर् नोक्किक् किऱुदयुहऩ् दऩैयुलहिल् इशैक्क वल्ल
पुत्तमुदाम् हिन्दुमदप् पॆरुमैतऩैप् पारऱियप् पुहट्टुम् वण्णम्
तत्तु पुहऴ् वळप्पाण्डि नाट्टिनिऱ् कारैक्कुडियूर् तऩिले शाल
उत्तमराऩ् दऩ वणिहर् कुलत्तुदित्त इळैञर् पलर् ऊक्कम् मिक्कार् 5

उण्मैये तारक मॆऩ्ऱुणर्ऩ्दिट्टार् अऩ्बॊऩ्ऱे उऱुदि यॆऩ्बार्
वण्मैये कुल दरम मॆऩक्कॊण्डार् तॊण्डॊऩ्ऱे वऴियाक् कण्डार्

चिन्ता, भ्रम, व्यर्थ इच्छा, घबड़ाहट, डर, संशय आदि भूतों को ज्ञान की तलवार से काट कर— २ जो हमेशा आनन्द की ज्योतिस्थिति में जीते हैं और जीवों का हित करते हैं, वे इस संसार में अमरता प्राप्त करते हैं। इस तथ्य को जो संप्रदाय चतुर्वेदों तथा सत् शास्त्रों द्वारा विस्तार से बताता है, उसे ही संसार के लोग श्रेष्ठ तथा पवित्र हिन्दू धर्म बताते हैं। ३ बहुत ही मूल्यवान वस्तुओं में सबसे श्रेष्ठ है यह धर्म। उसके अनुयायियों के लिए गौरवमय जीवन दिलानेवाला सत्सहायक है। ऐसे हिन्दू धर्म की महिमा जानकर, जो उसके बताये मार्ग पर नहीं जाते, वे चिन्ता नाम के नरक के गड्ढे में गिरते हैं तथा निरन्तर कष्ट पाकर मिटते हैं। ४ यह हिन्दू धर्म ऐसे संकटों को दूर करता है। वही संसार में कृतयुग को ला सकता है। यह ताजा अमृत है। उसकी महिमा को विश्व भर में प्रकट कराते हुए, लोगों को समझाने के लिए प्रकीर्तित तथा समृद्ध पांड्य देश में (तमिळ देश का वह भाग जहाँ मदुरै, तिरुनॆलवेली, रामनाथपुरम् आदि ज़िले हैं, पांड्य देश कहा जाता है, क्योंकि वहाँ पांड्य राजा राज करते थे।) कारैक्कुडी नामक शहर में श्रेष्ठ 'धनवणिक' कुल में उत्पन्न अनेक उत्साही तरुण सामने आये। ५ उन्होंने जान लिया कि सत्य ही तारक है। उन्होंने प्रेम का महत्त्व जाना। दान देना अपने कुल का गौरव समझा। सेवा को अपना जीवन सिद्धान्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चिन्ता, भ्रम, आलस्य, क्रोध, खलता, असत्यता।
व्यर्थ - कामना, भय, संशय, उद्वेग, व्यग्रता ॥
इन भूतों को ज्ञान - खड्ग से काट - काटकर।
(जो जन जन - हित - साधक हैं इस जगती-तल पर) ॥ २ ॥
जो आनन्द - ज्योति में स्थित हो रहते जीवित।
जो सदैव करते जगती के जीवों का हित ॥
इस भूतल पर सदा अमर वे नर होते हैं।
(ऐसे ही नर प्रेम - बीज जग में बोते हैं) ॥
चारों वेदों तथा सभी - सत् - शास्त्रों द्वारा।
जो बतलाता सार - तत्त्व यह विस्तृत न्यारा ॥
उस मत को ही जग के सब जन हैं गुण गाते।
हिन्दू धर्म पवित्र श्रेष्ठ उसको बतलाते ॥ ३ ॥
मूल्यवान जग में जितने पदार्थ हैं सुन्दर।
सर्वश्रेष्ठ यह धर्म आज है इस धरती पर ॥
निज अनुयायी हेतु धर्म यह सत्य सहायक।
उनके हित अतिशय गौरवमय जीवन - दायक ॥
ऐसे हिन्दू धर्म की न जो महिमा माने।
इसके बतलाये पथ पर चलना नहिं जाने ॥
वे चिन्ता के नरक-कुंड में नर गिरते हैं।
सदा निरन्तर कष्ट भोग करके मरते हैं ॥ ४ ॥
ऐसा हिन्दू धर्म सभी संकट हरता है।
इस कलियुग में सार सत्ययुग का भरता है ॥
नूतन - सुधा - समान मधुर यह मंगलमय है।
(इस पर चलकर नहीं किसी को कुछ भी भय है) ॥
इसकी महिमा को सब जग को जतलाने को।
अनजाने को धर्म-तत्त्व यह समझाने को ॥
अति समृद्ध है पाण्ड्य देश जग बीच प्रकीर्तित।
"कारैक्कुडी" नाम का उसमें नगर सुशोभित ॥
जहाँ श्रेष्ठ "धनवणिक" वंश है अतिशय विश्रुत।
तरुण युवक उत्साही उस कुल के सपूत सुत ॥
उस कुल के नवयुवक साहसी (सरस सुहाये)।
(करने को उद्धार देश का) सम्मुख आये ॥ ५ ॥
तारक - मंत्र सत्य ही है यह उनने जाना।
और प्रेम का भी महत्त्व था सदा बखाना ॥
देना दान उन्होंने कुल - गौरव पहिचाना।
जीवन का सिद्धान्त सदा सेवा को माना ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऒण्मै युयर् कडबुळिडत् तन्बुडैयार् अव्वन्बिन् ऊऱ्ऱत् ताले
तिण्मैयुऱुम् हिन्दुमद अबिमान शङ्ग मॊन्ऱु शेर्त्तिट्टारे 6
पलनूल्हळ् पदिप्पित्तुम् पल पॆरियोर् पिरशङ्गम् पण्णुवित्तुम्
नलमुडैय कलाशालै पुत्तहशालै पलवुम् नाट्टियुन् दम्
कुलमुयर नहरुयर नाडुयर उळैक्किन्ऱार् कोडि मेन्मै
निलवुऱु इच् चङ्गत्तार् पल्लूऴि वाऴ्न्दॊळिर्ह निलत्तिन् मीदे ! 7

वेल्स् इळवर शरुक्कु नल् वरवु—35

(आशिरियप्पा)

वरुह शॆल्व ! वाऴ्महन् नीये !
वडमेऱ् ऱिशैक्कण् मापॆरुन् दॊलैयिन्नोर्
पॊऱ्चिऱु तीवहप् पुरवलन् पयन्द
नऱ्ऱवप् पुदल्व ! नल् वर वुन्दे !
मेदह नीयुम् निन् कावलङ्गिळियुम् 5
अॆन्ऱन्नक् काणुमा ऱित्तनै कादम्
वन्दनिर् ! वाऴ्दिर् ! अॆन् मनम् महिऴ्न् ददुवे
शॆल्व केळ् ! अॆन्नरुम् शेय्हळै निन्नुडै
मुन्नोर् आट्चि तॊडङ्गुऱु उम् मुन्नर्
नॆञ्जॆलाम् पुण्णाय् निन्ऱनन् या अन् 10
आयिरम् वरुडम् अन्बिला अन्नियर्
आट्चियिन् विळैत्त अल्लल्हळ् अॆण्णिल
पोन्नदै यॆण्णिप् पुलम् बियिङ् गॆन्पयन् ?

मान लिया। वे ज्योतिर्मय ईश्वर के भक्त हैं। उस भक्ति के बल पर उन्होंने हिन्दू-मताभिमान-संघ नामक सुसंगठित संस्था क़ायम की। ६ उन्होंने अनेक ग्रंथ छपवाये। अनेक महान लोगों के भाषणों का आयोजन करवाया। प्रयोजनवती कलाशाला (पाठशाला) तथा पुस्तकशाला स्थापित की। इस भाँति, वे अपने कुल को, नगर को तथा देश को उत्कर्ष पर लाने के लिए परिश्रम करते रहते हैं। यह संघ करोड़ों गौरव पाये। इस भूमि पर वह अनेक बर्ष पनपता रहे। ७

वेल्स राजकुमार का स्वागत—३५

(भारत देश कहता है—) पधारें प्रभु ! आ राजकुमार जियें ! उत्तर-पश्चिम में बहुत दूर में स्थित छोटे द्वीप के राजा के जनाये तपःपूत पुत्र ! आपका शुभ आगमन हो। महामहिम आप तथा आपकी प्यारी (स्त्री) मुझे देखने के लिए इतनी दूरी पार कर आये हैं। जय हो आपकी ! मेरा मन खुश हुआ। कुमार, सुनें ! मेरे पुत्रों पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ज्योतिर्मय ईश्वर के हैं वे भक्त युवक जन।
उसी भक्ति के बल पर (करके प्रबल संगठन)॥
हिन्दू - मताभिमान नाम की सुदृढ़ संगठित।
उन उत्साही युवकों ने की संस्था स्थापित॥ ६ ॥
प्रचारार्थ सैकड़ों ग्रंथ उनने छपवाये।
विविध महापुरुषों के भाषण भी करवाये॥
खुलवाईं सैकड़ों पाठशालाएँ सुन्दर।
ग्राम - ग्राम में खुले पुस्तकालय अति मनहर॥
निज स्वदेश की अपने कुल की और नगर की।
उन्नति करने हेतु जुटे हैं वे (घर - घर की)॥
(तन से मन से) कठिन परिश्रम वे करते हैं।
(करते सबको सुखी, सभी का दुख हरते हैं)॥
यह उपकारक - संघ कोटि - विधि गौरवमय हो।
चिरजीवी हो, अति उन्नत हो, (सदा विजय हो)॥ ७ ॥

वेल्स राजकुमार का स्वागत—३५

(भारत देश कहता है)

चिरजीवी हों (सभी बोलते जय - जयकारें)॥
स्वागत राजकुमार प्रेम से आप पधारें॥
उत्तर - पश्चिम कोनें में सुदूर पर संस्थित।
छोटा-सा है एक द्वीप अति सुन्दर शोभित॥
उस द्वीप के नृपति के हो तुम तपःपूत सुत।
शुभागमन हम मना रहे अतिशय प्रमोद - युत॥
महामहिम श्रीमान तथा प्रिय पत्नी सुन्दर।
आये दर्शन दिये, पार इतनी दूरी कर॥
हृदय प्रफुल्लित हुआ, हमारी बात सुनें अब।
तव पुरखों से पूर्व, विदेशी शासक थे जब॥
अतिशय अत्याचार हुए मेरे पूत्रों पर।
अब तक हैं भर सके न मन के घाव भयंकर॥ १-१० ॥
विदेशियों का निन्दनीय अन्यायी शासन।
रहा हज़ारों वर्ष देश में जमा सुदृढ़ बन॥
उस शासन पर घिरे सैकड़ों संकट के घन।
नष्ट हो गया भारत से वह दुखमय शासन॥

आपके पुरखों के शासन के होने से पहले मेरा मन व्रणपूर्ण रहा। १० यहाँ हजार वर्ष निंद्य विदेशियों का शासन रहा। तब उस शासन में असंख्य संकट थे। जो बीत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मऱ्ऱुन् नाट्टिनोर् वन्ददन् पिन्नर्
अहत्तिनिल् शिलपुण् आऱुदल् ऍय्दिन 15
पोर्त् तॊहै अडङ्गिऍन् एळैप्पुत्तिरर्
अमैदिपॆऱ् ऱुय्वरायिनर्; ऍनवे
बारद देवि पळैमै पोल् तिरुवरुळ्
पॊऴिलर लुऱ्ऱनळ् पॊरुळ् शॆयऱ्कुरिय
तॊऴिऱ्कणम् पलप्पल तोन्ऱिन; पिन्नुम् 20
कॊडुमदप् पाविहळ् कुऱुम्बॆलाम् अहन्ऱन
याऱ्ऱिनिऱ् पॆण्गळै ऍऱिबदूउम् इरदत्
तुरुळैयिऱ् पालरै उयिरुडन् माय्त्तलुम्
पॆण्डिरैक् कणवर्तम् पिणत्तुडन् ऍरित्तलुम्
ऍनप्पल तीमैहळ् इऱन्दुपट् टनवाल् 25
मेऱ्ऱिशै इरुळै वॆरुट्टिय ञान
ऍण् पॆरुङ् गदिरिन् ओरिरु किरणम् ऍन्
पालरिन् मीदु पडुदलुऱ् ऱनवे
आयिनुम् ऍन्नै ? आयिरङ् गोडि
तॊल्लैहळ् इन्नुम् तॊलैन्दन विल्लै 30
नल्हुर वादि नवमाम् तॊल्लैहळ्
आयिरम् ऍन्नैवन् दडैन्बुळ नुमराल्
ऍनिनुमिङ् गिवैयॆलाम् इऱैवन् अरुळाल्
नीङ्गुव वन्ऱि निलैप्पन वल्ल
नोयॆलान् दविर्प्पान् नुमरे ऍनक्कु 35
मरुत्तुवराह वन्दनर् ऍन्ब दूउम्
पॊय्यिलै आदलिऱ् पुहळ् पॆऱुम् आङ्गिल
नाट्टिन रॆन्ऱुम् नलमुर वाळ्हवे !
ऍन्नरुम् जेय्हळुम् इवरुम् नट्पॆय्दि
इरुपान् मैयर्क्कुम् इन्न लॊन्ऱिन्ऱि 40

गया, उसको लेकर प्रलाप करने से क्या फ़ायदा होगा ? आपके देश के लोगों के आगमन के बाद, मन के कुछ घाव भर गये। १५ युद्ध के जाल मिटे। मेरे दीन पुत्रों को शान्ति मिली। इसलिए भारत की देवी पहले जैसी कृपा बरसाने लगी है। वस्तुओं का निर्माण करने को अनेक कारखाने खड़े हुए। २० और क्रूर धर्म के पापियों की विषम चालें बन्द हुईं। नदियों में स्त्रियों को फेंकना, रथ के पहियों के नीचे बच्चों को डालकर मरवाना, स्त्रियों को पतियों के साथ चिता पर चढ़ाकर जलवा देना आदि अनेक बुराइयाँ दूर हो गयीं। २५ पश्चिमी देशों के अन्धकार को जिस ज्ञान की पुष्कल ज्योति ने दूर किया, उसकी दो-एक किरणें मेरी संतानों पर पड़ीं ही। तो भी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उसको बुरा-भला कहने से लाभ न अब कुछ।
आज आपके आने से वे घाव भरे कुछ ॥ ११-१५ ॥
मेरे दीन सुतों को शान्ति मिली सुखदायी।
मिटी युद्ध की विभीषिका अतिशय दुखदायी ॥
इसीलिए भारत की देवी भारत - भू पर।
बरसाती है सरस कृपा पहिले - सी सुन्दर ॥
उपयोगी सैकड़ों सभी सामान बनाने।
आज अनेक कारखाने खुल गये सुहाने ॥ १६-२० ॥
क्रूर धर्म के जो अनुयायी थे पापी जन।
उनकी चालें विषम हो गईं बन्द पुरातन ॥
निर्बल अबलाओं को नदियों बीच डुबाना।
रथ-पहियों से कुचल बालकों को मरवाना ॥
जीवित अबलाओं को पति के संग जलाना।
बंद हो गया दुष्कर्मों का ताना - बाना ॥ २१-२५ ॥
पश्चिम - देशों का छाया था घोर अँधेरा।
ज्ञान - ज्योति से दूर हो गया सभी घनेरा ॥
उसकी कुछ किरणें फैलीं मेरे पुत्रों पर।
अभी बहुत झगड़ों का छाया तिमिर भयंकर ॥ २६-३० ॥
आये आज अभाव आदि संकट तव कारण।
अगणित नये - नये रूपों को करके धारण ॥
जब परमेश्वर दया - दृष्टि निज दिखलायेंगे।
नहीं टिकेंगे पास दूर सब हो जायेंगे ॥
रोग - निवारक बन करके तव जन आये हैं।
इस सत्य - कथन में हम न तनिक सकुचाये हैं ॥
किये अमित उपकार इसलिए धन्य श्लाघ्य जन।
जियें सर्वदा आंग्ल - निवासी सुखमय जीवन ॥
मम प्रिय सुतों और उनमें मित्रता उदित हो।
हो न किसी का अहित (सदा सबका ही हित हो) ॥ ३१-४० ॥

क्या हुआ ? और भी हजार झंझटें हैं, जो अभी दूर नहीं हुई हैं। ३० आपके लोगों के कारण, अभाव आदि नये-नये संकट सहस्रों की संख्या में मुझे सताने आये हैं। तो भी ये सब ईश्वर की दया से दूर हो जायँगे; टिकेंगे नहीं। रोग-निवारक के रूप में भी आपके ही लोग आये हैं। यह सब है। इसलिए यशस्वी आंग्लदेशवासी शुभ जीवन जियें। मेरी प्यारी सन्तानें और वे दोनों— मित्र बने रहें। दोनों पक्षों का कुछ अहित न हो। ४० एक-दूसरे का अहित न करके वे मिल-जुलकर जियें। उस श्रीयुक्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऑरुवरै यॊरुवर् ऑऱुत्तिड लिलाबु
शॆव्विदित् वाळ्ह ! अच्चीर् मिहु शादियिन्
इऱैवनाम् उन्दै इन् बॊडु वाळ्ह !
वाळ्ह नी ! वाळ्हनिन् मनमॆनुम् इनिय
वेरिमॆत् मलर्वाळ् मेॊर नल्लनन्नम्
मऱ्ऱॆन् शेय्हळ् वाळिय ! वाळिय ! 46

5 सुय शरिदै

कन्नवु—36

"पॊय्यायप् पळङ्गदैयाय्क् कन्नवाय्
मॆल्लप् पोन्नदुवे" —पट्टिनत्तुप् पिळ्ळै

मुन्नुरै (प्रस्तावना)

वाळ्वु मुऱ्ऱुम् कन्नवॆनक् कूऱिय, मऱैव लोर्तम् उरै पिळै यन्ऱु काण्
ताळ्वु पॆऱ्ऱ पुवित्तलक् कोलङ्गळ्, शरद मन्ऱॆन्नल् यानुम् अऱिहुवेन्
पाळ्ह डन्द परनिलै यॆन्ऱवर्, पहरुम् अन्निलै पार्त्तिलन् पार्मिशै
ऊळ्ह डन्दु वरुवदुम् ऑन्ऱुण्डो ? उण्मै तन्निलोर् पादि युणर्न्दिट्टेन् 1
मायै पॊय्यॆन्नल् मुऱ्ऱिलुम् कण्डनन्, मऱ्ऱुम् इन्दप् पिरमत् तियल्बिन्नै
आय नल्लरुळ् पॆऱ्ऱिलन्; तन्नुडै, अऱिवि नुक्कुप् पुलप्पड लिन्ऱिये
तेय मीदॆव रोशॊलुञ् जॊल्लिन्नैच्, चॆम्मै यॆन्ऱु मन्नत्तिडैक् कॊळ्वदाम्
तीय बक्ति यियऱ्कैयुम् वाय्न्दिलेन्, शिऱिदु कालम् पॊऱुत्तिनुङ् गाण्बमे 2

समूह के राजा आपके पिता सुखी रहें। आपकी जय हो ! अपने मन रूपी सुगन्धित पुष्प में रहनेवाली आपकी प्यारी हंसिनी रानी मेरी की जय हो ! और जियें मेरी संतानें ! जय, जय ! ४६

५ आत्मकथा (स्व-चरित)

स्वप्न—३६

".....झूठ, पुरानी कहानी, स्वप्न बनकर, धीरे-धीरे लुप्त हो गया" —पट्टिनत्तुप् पिळ्ळै। सारा जीवन एक सपना है— ऐसा कहनेवाले वेदज्ञों का कथन ग़लत नहीं है। देखो ! ये गौण भूमितल के दृश्य शाश्वत नहीं हैं —यह मैं भी जानता हूँ। पर शून्य के पार की परा दशा जिसे कहते हैं, उसे मैंने संसार में नहीं देखा है। विधि के विपरीत क्या कुछ आयगा भी ? सत्य में से आधा ही मैंने जाना है ! १ माया झूठी है —यह मैं पूर्ण रूप से जानता हूँ। पर इस परब्रह्म का स्वरूप परखने का सौभाग्य नहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहित नहीं हम करें, बितायें हिल-मिल जीवन।
लहें पिता तव, नृप-समूह के, सुखमय शासन॥
मन के सुरभित सरस सुमन में बसनेवाली।
सम्राज्ञी "मेरी" हसिनि-सी अति (छविशाली)॥
उस रानी की जय हो और आपकी जय हो।
जय हो मेरी सन्तानों की (सबकी जय हो)॥ ४१-४६॥

५ आत्मकथा (स्व-चरित)

स्वप्न—३६

धीरे-धीरे सपना बनकर आज पुरानी।
उमड़ रही आँखों में झूठी विगत कहानी॥
कहते हैं वेदज्ञ कि सपना है यह जीवन।
झूठ न मानो उनका तत्त्व-भरा यह प्रकथन॥
दृश्य भूमि के सभी गौण हैं और अशाश्वत।
इस रहस्य से भली भाँति से हूँ मैं अवगत॥
परम-तत्त्व जो परम-शून्य के पार छिपा है।
किन्तु न मैंने उसे कभी जग-बीच लखा है॥
विधि-विपरीत न कुछ होता, यह मैंने माना।
अरे! सत्य का अर्ध रूप ही मैंने जाना॥ १॥

पूर्ण रूप से जान गया मैं, झूठी माया।
परब्रह्म का रूप लखूँ, सौभाग्य न पाया॥
इस स्वदेश के किसी व्यक्ति की कथनी सुन्दर।
बिना विचारे अपने मन में ठीक मानकर॥
उस पर अंध भक्ति करने की प्रकृति न मेरी।
जो मति-बाहर उसे मानती बुद्धि न मेरी॥
(करें शीघ्रता नहीं अरे!) कुछ देर ठहर कर।
देखें-भालें (सोच-समझ लें, उर धीरज धर)॥ २॥

प्राप्त है! अपनी समझ में न आनेवाली, पर, देश में कहीं किसी से कही हुई कथनी को मन में ठीक मानकर बुरी भक्ति करने का गुण भी मेरा नहीं है। पर, कुछ देर ठहरकर देखें। २ संसार ही बड़ा सपना है। उसमें खाकर, सोकर दूसरों की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उलहॆ लामॊर् पॆरुङ्गन वःदुळे, उण्डुऱङ्गि विडर्शॆय्दु शॆत्तिडुम्
कलह मानिडप् पूच्चिहळ् वाळ्क्कैयोर्, कनविलुङ् गनवाहुम्; इतनिडै
शिलदि नङ्गळ् उयिर्क्कमु दाहिये, शॆप्पु दर्क्करि दाहम यक्कुमाल्;
तिलद वाणुद लार्तरु मैयलान्, दॆय्वि हक्कन वन्नदु वाळ्हवे 3
आण्डोर् पत्तिनिल् आडियुम् ओडियुम्, आऱु कुट्टैयिन् नीच्चिनुम् पेच्चिनुम्
ईण्डु पन्मरत् तेऱियि ऱङ्गियुम्, ऎन्नॊ डॊत्त शिरियऱ इरुप्पराल्;
वेण्डु तन्दे विदिप्पिनुक् कञ्जियान्, वीदि याट्टङ्ग ळेदिलुङ् गूडिलेन्
तूण्डु नूर्कणत्तोडु तनियनाय्त्, तोळ मैपिऱि दिन्ऱि वरुन्दिनेन् 4

पिळ्ळैक् कादल

अन्न पोळ्दिनि लुऱ्ऱ कनविनै
अन्द मिळ्च् चॊलिल् ऎव्वण्णम् शॊल्लुहेन् ?
शॊन्न तीङ्गन वङ्गुत् तुयिलिडैत्
तोय्न्द दन्ऱु नन्नविडत् तोय्न्ददाल्
मॆन्न डैक्कनि यिन्शॊर् करुविळि
मेनि यॆङ्गुम् नऱुमलर् वीशिय
कन्नि यॆन्ऱुऱु दॆय्वद मॊन्ऱुनैक्
कण्डु कादल् वॆऱियिऱ् कलन्दनन् 5
"ऒन्ब दायपि रायत्त ळॆन्विळिक्
कोदु कावैच् चहुन्दलै यॊत्तनळ्"
ऎन्ब दार्क्कुम् वियप्पिनै नल्हुमाल्
ऎन्शॆय् हेन् ? पळि यॆन्मिशै युण्डुकॊल् ?

हानि करके मरने का कलहमय मानव-कृमियों का जीवन सपने के अन्दर सपना है। पर, उसमें कुछ दिन प्राणों का अमृत (मधुर अनुभव) मानकर, अकथ्य रीति से जो मुग्ध करता है, वह तिलक-धारी भाल वाली नारियों द्वारा होने जानेवाला प्रेम रूपी दिव्य सपना जिये ! (उसकी जय हो !) ३ दसवें साल में, नाचते दौड़ते, नदी-कुंड में तैरते, बात करते, ताल वृक्ष पर चढ़ते-उतरते—मेरे सामने छोटे लड़के रहते थे। पर मान्य पिता की आज्ञा से डरकर मैं किसी खेल में शामिल नहीं हुआ। प्रेरक पुस्तक-गणों के साथ, अकेले बिना किसी मित्र के संग के मैं दुखी रहा। ४

शैशव-प्रेम

उस समय जो सपना हुआ, उसको मधुर तमिऴ शब्दों में कैसे कहूँ ? वह मधुर स्वप्न सोते वक़्त नहीं हुआ था, पर जागरण में ही हुआ था। मृदु चाल, फल के समान मधुर वचन, काली आँख, शरीर भर में फूल महक उठा—ऐसी एक कन्या रूपी देवी को देखकर मैं प्रेम-नशे में डूब गया। ५ नौ साल की उम्रवाली वह (देवी)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह संसार स्वप्न है इसमें खा - पी - सोकर।
हानि दूसरों की कर बीज कलह के बोकर॥
नर रूपी कीड़ों का जीवन भयावना है।
जग के सपने के अन्दर दूजा सपना है॥
इस सपने को प्राणों की प्रिय सुधा मानकर।
अकथ रीति से मोह - जाल में डाल सानकर॥
लिया तिलक - धारिणी स्त्रियों से जिसको अपना।
जिये सकल संसार मोह रूपी यह सपना॥ ३॥
मम घर के सम्मुख रहते कुछ छोटे लड़के।
(नित्य देखता था मैं उनको उठकर तड़के)॥
कभी नाचते, कभी दौड़ते, बातें करते।
ताल - वृक्ष पर वे चढ़ते थे और उतरते॥
नदी - कुंड में कभी तैरते (देते फेरी)।
दस वर्षों की हुई अवस्था थी तब मेरी॥
मान्य पिताजी की आज्ञा से मैं भय खाकर।
किसी खेल में नहीं सम्मिलित होता जाकर॥
मित्रगणों के बिना अकेले था दुख सहता।
बस प्रेरक पुस्तकें, उन्हें ही पढ़ता रहता॥ ४॥

शैशव-प्रेम

उस बचपन में था मैंने जो सपना देखा।
मधुमय कहूँ तमिळ शब्दों में कैसे लेखा॥
मधुर स्वप्न वह सोते समय नहीं देखा था।
किन्तु जागरण में ही वह सपना पेखा था॥
थी कोमल मृदु चाल, फलों से मधुर वचन थे।
तन में कुसुमित गंध और अति श्याम नयन थे॥
ऐसी कन्या रूपी देवी एक देखकर।
प्रेम-नशा छा गया (हमारे तन पर, मन पर)॥ ५॥
नौ वर्षों की वह थी भोली कन्या मनहर।
कथा-प्रवर्णित शकुन्तला - सी थी वह सुन्दर॥
सुन करके यह बात करेंगे अचरज सब जन।
क्या मेरा अपराध बतायें मुझको सज्जन॥

मेरी आँख को प्रकीर्तित कथा की शकुन्तला के समान लगी। यह सबको आश्चर्य में डालेगा। क्या करूँ? क्या यह मेरा अपराध है? प्रेम रूपी बड़ी बाढ़ खींच ले जायगी,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्बॆनुम् बॆरु वॆळ्ळम् इळुक्कुमेल्
अदऩै यावर् पिळ्त्तिड वल्लरे ?
मुऩ्बु मा मुऩि वोर्तमै वॆऩ्ऱविल्
मुऩ्ऩ रेळॆक्कुळन्दैयॆऩ् शॆय्वऩे ? 6
वयदु मुऱ्ऱिय पिऩ्ऩुरु कादले
माशुडैत्तदु दॆय्विह मऩ्ऱुकाण्;
इयलु पुऩ्मै युडलुक् किऩ्बॆनुम्
ऍण्ण मुऱ्जिऱि देऩ्ऱदक् कादलाम्
नयमि हुन् दनि मादै मामणम्
नण्णु बालर् तमक्कुरित् तामऩ्ऱो ?
कयल्वि ळिच्चिऱु मानिऩैक् काणनाऩ्
काम ऩम्बुहळ् ऍऩ्ऩुयिर् कण्डवे 7
कऩहऩ् मैन्दऩ् कुमर गुरुपरऩ्
कऩियुम् ञाऩसम् बऩ्दऩ् दुरुवऩ् मऱ्
ऱैऩैयर् बालर् कडवुळर् मीदु ताम्
ऍण्णिल् बक्ति कॊण् डिऩ्ऩुयिर् वाट्टिऩोर्
मऩदि लेपिऱऩ् दोऩ् मन मुणणुवोऩ्
मदऩ देवऩुक् कॆऩ्ऩुयिर् नल्हिऩऩ्
मुऩमु रॆत्तवर् वाऩ्पुहळ् पॆऱ्ऱऩर्
मूड नेऩ्पॆऱ्ऱ तोदुवऩ् पिऩ्ऩरे 8
नीरॆ डुत्तु वरुवदऱ्क कवळ्मणि
नित्ति लप्पुऩ् ऩहैच्चुडर् वीशिडप्
पोरॆ डुत्तु वरु मदऩ् मुऩ् शॆलप्
पोहुम् वेळै यदऱ्कुत् तिऩऩ् दॊऱुम्
वेरॆ डुत्तुच् चुदऩ्दिर नऱ्पयिर्
वीळ्ऩ्दि डच्चॆय्दल् वेण्डिय मऩ्ऩर् तम्
शीरॆडुत्त पुलैयुयिर्च् चारऱ्हळ्
देशबक्तर् वरविऩैक् कात्तल् पोल् 9

तो कौन उससे बच सकता है ? पहले महर्षियों को जो जीत चुका था, उस (काम-) धनुष के सामने में दीन बालक क्या करूँ ? ६ आयु के बढ़ने के बाद जो प्रेम होता है, उसमें कलंक रह जाता है ! जान लो ! वह दिव्य (पवित्र) नहीं है। उसमें शरीर-सुख रूपी तुच्छ विचार के लिए जगह रह जाती है। सुहावनी श्रेष्ठ स्त्री से विवाह चाहनेवाले बालक को क्या वह अनुभव होगा ? उस मीनाक्षी, बालहरिणी को मैंने देखा और काम-शरों ने मेरी जान पर निशाना लगा दिया। ७ कनक के पुत्र (प्रह्लाद) कुमरगुरु पर (ये शैव-संत हैं। काशी में उन्होंने मठ स्थापित किया है), द्रवित-हृदय भक्त ज्ञान-सम्बन्ध, ध्रुव और कितने ही बालकों ने ईश्वर की अगाध भक्ति करके अपने प्राण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रेम-प्रवाह अपार खींच जब ले जायेगा।
कहो कौन उसमें बहने से बच पायेगा ? ॥
जीत चुका जो कामदेव था मुनियों का मन।
झेले कैसे उसके शर यह लघु - बालक तन ? ॥ ६ ॥
बड़ी आयु में जो होता है प्रेम तरंगित।
वह हो जाता है इस जगती - बीच कलंकित ॥
उस सुप्रेम में कभी नहीं होती पवित्रता।
शारीरिक वासना नष्ट करती पावनता ॥
जो सुन्दर कन्या से है विवाह को उत्सुक।
नहीं जानता कभी वासना को वह बालक ॥
बालमृगी - सी मीनाक्षी को मैंने देखा।
कामशरों ने था मेरे प्राणों को वेधा ॥ ७ ॥
मान्य कनक के पुत्र पूज्य गुरुवर कुमार पर।
शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति हेतु होकर अति तत्पर ॥
द्रवित - हृदय भक्तों ने अपने प्राण चढ़ाये।
ध्रुव ने भी थे इसी भाँति भगवान मनाये ॥
इसी भाँति हो गये भक्त कितने ही बालक।
प्राण निछावर किये (मान प्रभु को जग-पालक) ॥
मन मथनेवाले मन्मथ को मैंने निज मन।
किया समर्पित (रहने लगा तभी से उन्मन) ॥
हुए प्रशंसा - पात्र सभी शिशु - भक्त पुरातन।
मुझ मूढ़ को मिला क्या ? बतलाऊँगा (स्थिर-मन) ॥ ८ ॥
शुभ स्वतंत्रता के पौधे की जड़ें काटकर।
हैं चाहते गिराना जो उसको भू-तल पर ॥
इस प्रकार के श्री - विहीन चांडाल अपावन।
देख रहे ज्यों देशभक्त का पथ मनभावन ॥
उसी भाँति जब वह थी पानी भरने जाती।
मणि - मोती - सी हास्य - चाँदनी को छिटकाती ॥
युद्धोद्यत - सा सम्मुख मानो मदन विचरता।
मैं प्रतिदिन था सदा प्रतीक्षा उसकी करता ॥ ९ ॥

सुखाये थे। मन में जनित (मनोज), मन को खानेवाले मदनदेव को मैंने अपनी जान (अपना मन) अर्पित की। पहले कथित (बालक) उन्नत प्रशंसा के पात्र हुए। परन्तु मुझ मूढ़ को क्या मिला ? यह पीछे बताऊँगा। ८ पानी भरने जब वह मणि-मोती-सी हँसी की चाँदनी छिटकाते हुए, युद्धोद्यत मदन के आगे-आगे चलते रहते जब जाती, उस समय, रोज जैसे जड़ काटकर स्वतन्त्रता के पौधे को मिटाना चाहनेवाले राजा के श्रीहीन चांडाल-गुप्तचर देशभक्तों के आगमन की प्रतीक्षा करते हैं—९ वैसा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कात्ति रुन्दवळ् पोम्वळि मुऱ्ऱिलुम्
कण्गळ् पिन्नळ् हार्न्बु कळित्तिड
यात्त तेरुरु ळैप्पड़ मेळै तान्
याण्डु तेर्शॅलु माङ्गिळुप् पुऱ्ऱॅनक्
कोत्त चिन्दैयो डेहि यदिल् महिळ्
कॉण्डु नाट्कळ् पलक ळित्तिट्टनन्
पूत्त जोदि वदनम् तिरुम्बुमेल्
पुलन ळिन्दॉरु पुत्तुयि रॅय्दुवॅन् 10
पुलङ्ग ळोडु करणमुम् आवियुम्
पोन्दु नित्ऱ विरुप्पुडन् मानिडन्
नलङ्ग ळैडु विरुम्बुवन् अङ्गवै
नण्णु ऱुप्पॅऱल् तिण्णम दामॅन
इलङ्गु नूलुणर् ञानियर् कूऱुवर्
यानुम् मऱ्ऱदु मॅय्यॅनत् तेर्न्दुळेन्
विलङ्गि यऱ्कै यिलॅयॅनिल् यामॅलाम्
विरुम्बु मट्टिनिल् विण्णुऱ लाहुमे 11
शूळु माय वुलहि निऱ् काणुऱुन्
दोऱ्ऱम् यावैयुम् मानद माहुमाल्
आळु नॅञ्जहत् ताशैयिन् ऱुळ्ळदेल्
अदनु डैप्पॉरुळ् नाळै विळैन्दिडुम्
ताळु मुळ्ळत्तर् शोर्विनर् आडुपोल्
ताबित् ताविप् पलपॉरुळ् नाडुवोर्
वीळु मोरिडै यूऱ्ऱिनुक् कञ्जुवोर्
विरुम्बुम् यावुम् पॅऱारिबर् तामनऱे 12
विदियै नोवर्तम् नण्बरैत् तूऱ्ऱुवर्
वॅहुळि पॉङ्गिप् पहैवरै निन्दिप्पर्
शदिहळ् शॅय्वर् पॉय्च् चात्तिरम् पेशुवर्
शावहङ्गळ् पुरट्टुवर् पॉय्मै शेर्

प्रतीक्षा में रहकर, जाने का रास्ता भर, आँखों को उसके पृष्ठ-सौन्दर्य-दर्शन में आनन्द लेने देते हुए, रथ से बँधा ग़रीब जैसे रथ के साथ जाता हो, वैसा—उससे बँधे मन के साथ मैं जाता; उसमें आनन्द पाता। इस तरह मैंने अनेक दिन बिताये। जब खिलती ज्योति-सी उसका आनन मुड़ता, तो मैं संज्ञा खो जाता और मुझे एक नयी जान मिल जाती। १० इन्द्रियों, सेंद्रिय देह और प्राणों से लगकर जो भोग मनुष्य चाहता है, वह सब प्राप्त करना आवश्यक कार्य है—ऐसा शास्त्रज्ञ ज्ञानी लोग कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मधुर प्रतीक्षा में बैठा रहता मैं पथ पर।
देखा करते नयन पृष्ठ - सौंदर्य मनोहर॥
रथ से बँधा ग़रीब यथा रथ के सँग जाता।
वैसे ही मेरा मन उसके सँग लग जाता॥
जगमग ज्योति - समान मोड़ती जब निज आनन।
होता संज्ञाहीन, प्राण मिलते थे नूतन॥ १० ॥
अन्तःकरणों और इन्द्रियों, प्राणों द्वारा।
जो सुख - भोग चाहता है मानव (बेचारा)॥
वे सब सुख भोगना बहुत ही है आवश्यक।
यह कहते शास्त्रज्ञ ज्ञानिजन (निश्चयपूर्वक)॥
उन लोगों का कथन सत्य मैंने जाना था।
(आवश्यक हैं विषय - भोग मैंने माना था)॥
पशु - स्वभाव यह हो न मानवों में यदि व्यापित।
सब सांसारिक लोग स्वर्ग पायें मन - वांछित॥ ११ ॥
फैले चारों ओर दृश्य जो हैं सांसारिक।
वे हैं सब मानसिक, यही कहते वैज्ञानिक॥
जो कामना छिपी रहती है गहरे मन में।
वही बदल कर स्थूल कार्य बनती जीवन में॥
हीन - भावना जमी हुई है जिनके मन में।
जो बाधाओं से डरकर (पड़ते उलझन में)॥
बकरी के सम सदा छलाँगें जो भरते हैं।
थके हुए-से (धैर्य न जो मन में धरते हैं)॥
इस प्रकार जो नर इस जग में देखे जाते।
वे अपना मनचाहा प्राप्त नहीं कर पाते॥ १२ ॥
ऐसे नर विधि के विधान को बुरा बताते।
मित्रों को उलाहना देते नहीं अघाते॥
क्रोध दिखाकर शत्रुजनों की निन्दा करते।
झूठा ज्ञान बघार जालसाजी अनुसरते॥

मैंने भी उसे सच ही माना है। यह पशु-स्वभाव नहीं हो, तो संसार के हम सब अपनी इच्छा के अनुसार स्वर्ग पहुँच सकेंगे। ११ हमको घेरे रहनेवाले संसार के सभी दृश्य केवल मानसिक हैं। मन की गहराई में आज कोई इच्छा रही, वह कल कार्य या पदार्थ-रूप बन जायगी। पर हीन दिलवाले, थके हुए, बकरी के समान एक से दूसरे पर छलाँग मारते रहनेवाले, बीच में पड़नेवाली बाधा से डरनेवाले—ये सब मनचाहा प्राप्त नहीं कर सकेंगे। १२ वे विधि की शिकायत करेंगे; मित्रों को उलाहना देंगे, गुस्सा करके शत्रुओं की निन्दा करेंगे, जालसाजी करेंगे, झूठा शास्त्र

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मदियि निऱ्पुलै नात्तिहङ् गूऱुवर्
मायन् दिडाद निऱैन्द विरुप्पमे
गदिहळ् यावुम् तरुमॆन्न वोर्न्दिडार्
कण्णि लादवर् पोलत् तिहैप्पर् काण् 13
कन्नि मीदुऱु कादलिन् एऴैयेन्
कवलै युऱ्ऱन्न् कोडियॆन् शॊल्लुहेन् ?
पन्नि यायिरङ् गूऱिनुम् बक्तियिन्
पान्मै नन्गु पहर्न्दिड लाहुमो ?
मुन्नि वान् कॊम्बिऱ् ऱेनुक् कुऴन्ऱदोर्
मुडवन् काल्हळ् मुऴुमै कॊण् डालॆन्न
ऍन्नि यन्ऱु मऱ् रेङ्ङन्नम् वाय्न्ददो ?
ऍन्नि डत्तवळ् इङ्गिदम् पूण्डदे ! 14
काद लॆन्बदुम् ओर् वयिन् निऱ्कुमेल्
कडलिल् वन्द कडुविनै यॊक्कुमाल्
एद मिन्ऱि यिरुपुडैत् तामॆनिल्
इन्न मिर्दुम् इणैशॊल लाहमो ?
ओदॊणाद पॆरुन्दवम् कूडिनोर्
उम्बर् वाऴ्विनै यॆऴ्ळिडुम् वाऴ्विनोर्
माद रार् मिशै तामुऱुङ् गादलै
मऱ्ऱ वर्तरप् पॆऱ्ऱिडु मान्दरै 15
मॊय्क्कुम् मेहत्तिन् वाडिय मामदि
मूडु वॆम्बनिक् कीऴुऱु मॆन्मलर्
कैक्कुम् वेम्बु कलन्दिडु कलन्दिडु शॆय्य पाल्
काट्चि यऱ्ऱ कविनुरु नीळ्विऴि
पॊय्क् किळैत्तु वरुन्दिय मॆय्यरो
पॊन्न नारुळ् पूण्डिल रामॆनिल्

बघारेंगे। वे जन्मपत्रियाँ पलटेंगे; झूठ से मिली बुद्धि के कारण घृणित नास्तिकवाद बघारेंगे। सुस्थिर तथा पूर्ण पक्व इच्छाएँ ही सारी गतियाँ दिला सकेंगी। —वे यह नहीं जानते। वे नेत्रहीनों के समान भ्रमित रहेंगे। १३ कन्या पर हुए प्रेम के कारण मुझ बेचारे को करोड़ चिन्ताएँ सताने लगीं। मैं क्या कहूँ? हजार कहूँ तो भी भक्ति का रूप बताया जा सकता है? ऊपर शाखा पर स्थित छत्ते के शहद के लिए लालायित रहे लँगड़े के पैर मानो स्वस्थ हो गये हों —ऐसा क्या हुआ, वह कैसे घटित हुआ, मालूम नहीं, पर वह मेरे प्रति सहानुभूतिपूर्ण हो गयी। १४ प्रेम भी इकतरफ़ा रहे, तो वह समुद्रोत्पन्न विष के समान रहेगा; पर बिना किसी दोष के दोतरफ़ा होगा, तो क्या मधुर अमृत भी उसकी समानता कर सकेगा? अवश्य अवर्णनीय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(भाग्य परखते) जन्मपत्रियाँ पलट-पलट कर।
झूठी मति से नास्तिक मत मानते घृणिततर॥
"सुस्थिर दृढ़-संकल्प कार्य सब सफल बनाते"।
इस रहस्य को नहीं जानते (औ' अपनाते)॥
नेत्रहीन जन के समान वे भ्रमित रहेंगे।
(लक्ष्यहीन वे पथिक तुल्य ही थकित रहेंगे)॥ १३॥
उस कन्या से प्रेम हुआ इसके ही कारण।
करने लगीं कोटि चिन्ताएँ हृदय-विदारण॥
चाहे करे हज़ार भाँति से कोई वर्णन।
तो भी है क्या भक्ति-रूप का मिलता दर्शन?॥
मेरी उन सब चेष्टाओं को निरख-परख कर।
जान गई वह मेरे मन का प्रेम प्रबलतर॥
लगा शहद का छत्ता जो ऊँची डाली पर।
लालायित हो उसको पाने यथा पंगु नर॥
पूर्ण स्वस्थ उसके ज्यों लँगड़े पग हो जाएँ।
और उसे अपने अभीष्ट मधु-फल मिल जाएँ॥
ज्ञात नहीं यह कैसा विधि का खेल निराला।
हुई सहानुभूति-पूर्ण मुझ पर वह बाला॥ १४॥
एक ओर का प्रेम सिन्धु के विष के सम है।
दोनों में निर्दोष प्रेम — वह अमृतोपम है॥
जिससे करते प्रेम वही यदि मिल जाती है।
देवों को भी सुलभ न, यह घटना यदि आती है॥
अकथ उग्र तप से मिलता यह दैवी-जीवन।
यदि जिससे है प्रेम, उसे पा ले प्रमी-जन॥ १५॥
सघन घटा के बीच छिपा निष्प्रभ हिमकर ज्यों।
तरल ओस से ढका ठिठुरता पुष्प सुघर ज्यों॥
कटुक नीमरस मिला दूध अतिशय कटुतर ज्यों।
नयन हीन की श्यामा पुतली अति दुखकर ज्यों॥
कर असत्य व्यवहार दुखी जो बना हुआ तन।
इन सबके समान ही है वह भाग्य-हीन जन।

बड़ी तपस्या के फलस्वरूप प्राप्त, देवों के जीवन का भी परिहास करनेवाले होंगे वे लोग जिन्हें उस स्त्री से प्रेम प्राप्त हो जाय, जिससे वे प्रेम करते हैं। १५ छानेवाले मेघों के अन्दर मुरझाया हुआ चाँद, आच्छादक ओस के नीचे पड़ा हुआ मृदु फूल, कड़ुआ नीम-मिला श्रेष्ठ दूध, न देख सकनेवाली सुन्दर काली आँख, असत्य के कारण घुलकर दुखी बनी देह —यह उसकी ही है, जिसे स्वर्ण-सुन्दरियों की दया नहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कैक्किळैप् पॅयर् कॊण्ड पॅरुन्दुयर्
काद लःदु करुदबुन् दीयदाल् 16
तेवर् मन्नन् मिडिमैयैप् पाडल् पोल्
तीय कैक्किळै यान्नॆवन् पाडुदल् ?
आवल् कॊण्ड अरुम् बॆऱ्ऱ् कन्नि तान्
अन्बॆन नक्कङ् गळित्तिड लायिनळ्
पावम् तीमै पऴियॆदुन् देर्न्दिडोम्
पण्डैत् तेवयुगत्तु मनिदर् पोल्
कावल् कट्टु विदिवळक् कॆन्ऱिडुङ्
गयवर् शॆय्दिह ळेदुम् अऱिन्दिलोम् 17
कान हत्तिल् इरण्डु पऱवैहळ्
काद लुऱ्ऱदु पोलवुम् ! आङ्ङने
वान हत्तिल् इयक्क रियक्कियर्
मैयल् कॊण्डु मयङ्गुदल् पोलवुम्
ऊन हत्त तुवट्टुरुम् अन्बुतान्
ऒन्ऱु मिन्ऱि उयिर्हळिल् ऒन्ऱिये
तेन हत्त मणि मॊऴि याळॊडु
तॆय्व नाट्कळ् शिल कऴित् तेनरो 18
आदि रैत्तिरु नाळॊन्ऱिऱ् चङ्गरन्
आलयत् तॊरु मण्डबन् तन्निल् यान्
शोदि मानॊडु तन्नन् दनिय नायच्
चॊऱ्कळाडि यिरुप्प मऱ्ऱङ् गवळ्
पादि पेशि मरॆन्दु पिन् तोन्ऱित्तन्
पङ्ग यक्कैयिल् मैकॊणर्न्दे, 'ऒरु
शेदि ! नॆऱ्ऱियिल् पॊट्टुबैप् पेन्' ऎन्ऱाळ्
तिलद मिट्टनळ्; शॆय्है यऴिन्दनन् 19

मिली हो। 'कैक्किळै' नाम से जो एकतरफ़ा प्रेम प्रचलित है, वह बड़ा हानिकारक प्रेम है। उसे सोचना भी बुरा है। १६ देवराज की दरिद्रता सम्बन्धी गान जैसे, बुरे 'कैक्किळै' का कौन गान करेगा ? प्यारी तथा अप्राप्य वह कन्या मुझे प्रेम (का आनन्द) देने लगी ! पाप, बुराई हमने कुछ नहीं जाना। पुराने 'देवयुग के मानवों के समान पहरा, बन्धन, विविध झमेले आदि खलों की बातें हमें कुछ नहीं मालूम ! १७ जैसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"कैक्किलै" नामक इकतरफ़ा प्रेम सुप्रचलित ।।
है अत्यन्त हानिकर उसे सोचना अनुचित ।। १६ ।।

देवराज की दरिद्रता पर गाना वर्जित ।
वैसे ही "कैक्किलै" प्रेम अपनाना अनुचित ।।
मिलता दुर्लभ प्रेम सदा बालिका मधुर में ।
पाप - बुराई का विचार तक कहीं न मन में ।।
पहरा बन्धन और विविध अभियोग भयंकर ।
ये दुष्टों के कार्य हमें अवगत न असुन्दर ।।
देवयुगी पुरखों - जैसी देख - रेख - संशय ।
सभी भाँति हम सरल - स्वच्छ थे निश्छल अतिशय ।। १७ ।।

प्रेमपूर्ण दो विहग चहकते जैसे वन में ।
प्रेममुग्ध हों यक्ष - यक्षिणी स्वर्ग-सदन में ।।
दैहिक वह वासना - पूर्ण था प्रेम न मन में ।
बसे हुए थे एक प्राण दोनों के तन में ।।
मधुवाणी वाली उसको निज - हृदय बसाये ।
कुछ दैवी दिन हमने उसके साथ बिताये ।। १८ ।।

था आर्द्रा नक्षत्र पहुँचकर शिव के मंदिर ।
हम बैठे थे और ज्योतिमय हरिणी सुंदर ।।
करते वार्तालाप हृदय में अतिशय प्रमुदित ।
पल भर के लिए तभी वह हुई अलक्षित ।।
अपने कर में लाई मंजुतिलक की रोली ।
"तिलक लगाऊँगी मस्तक पर" फिर वह बोली ।।
फिर उसने मेरे मस्तक पर तिलक लगाया ।
क्रियाशून्य मैं रहा (नहीं कुछ भी कह पाया) ।। १९ ।।

बन में दो चिड़ियाँ प्रेम-बद्ध हों, जैसे स्वर्गलोक में यक्ष-यक्षी लोग प्रेम-मुग्ध रहते हों, वैसे ही (हम रहे) । मांस से सम्बन्धित होकर पेचीदा बननेवाले प्रेम का कोई अंश हमारे प्रेम में न रहा । दोनों के प्राण एक हुए । मधु-सी सुन्दर वाणी वाली उस लड़की के साथ कुछ दिव्य दिन हमने बिताये । १८ आर्द्रा नक्षत्र के दिन शंकर के मन्दिर के मंडप में, मैं अकेले उस ज्योतिर्मय हरिणी के पास, बैठकर वार्तालाप कर रहा था । तब बीच बातचीत के दौरान वह कहीं गायब हो गयी । वह अपने कमलहस्त पर तिलक का अंजन लेकर प्रकट हुई और बोली : एक बात है ! मैं तुम्हारे भाल पर तिलक लगाऊँगी । फिर उसने मेरे भाल पर तिलक लगाया । मैं क्रियाशून्य हो गया । १९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऎन्न यीन्ऱॆनक् कॆन्दु पिरायत्तिल्
एङ्ग विट्टुविण् णॆय्दिय ताय्तनै
मुन्नै यीन्ऱवन् शॆन्दमिळ्च् चॆय्युळाल्
मून्ऱु पोळ्दुञ् जिवनडि येत्तु वोन्
अन्न वन् तवप् पूशनै तीर्न्द पिन्
अरुच्चनैप् पडु तेमलर् कॊण्डु यान्
पॊन्नै यॆन्नुयिर् तन्नै यणुहलुम्
पूवे पुन्नहै नन्मलर् पूप्पळ काण् 20

आङ्गिलप् पयिऱ्चि

नॆल्लैयूर् शॆन्ऱव् वूणर् कलैत् तिरन्, नेरु माऱॆनै ऎन्दै पणित्तनन्;
पुल्लै युण्णॆन वाळरिच् चेयिनैप्, पोक्कल् पोलवुम् ऊन्बिलै वाणिहम्
नल्ल वॆन्ऱॊरु पार्प्पनप् पिळ्ळैयै, नाडु विप्पदु पोलवुम् ऎन्दैदान्
अल्लल् मिक्कदोर् मण्बडु कल्वियै, आरि यर्क्किङ् गरुवरुप् पावदै 21
नरियु यिर्च्चिऱु शेवहर् तादर्हळ्, नायॆ नत्तिरि यॊऱ्ऱर् उणविनैप्
पॆरिदॆ नक्कॊडु तम्मुयिर् विऱ्ऱिडुम्, पेडियर् पिऱर्क् किच्चहम् पेशुवोर्
करुदु मिव्वहै माक्कळ् पयिन्ऱिडुङ्, कलैप यिल्हन ऎन्नै विडुत्तनन्
अरुमै मिक्क मयिलैप् पिरिन्दुमिव्, वऱ्पर् कल्वियिन् नॆञ्जुपॊ रुन्दुमो ? 22

जो मुझे जन्म देकर मेरी पाँच वर्ष की उम्र में मुझे तरसते छोड़कर स्वर्ग पहुँच गयी, उस मेरी माता के पिता, जो श्रेष्ठ तमिळ के स्तुति गीतों से भगवान की पूजा करनेवाले थे, तपस्या-सी अपना ईश्वर-पूजन करके निर्माल्य पुष्प ले आयेंगे। उन्हें लेकर मैं स्वर्ग, अपने प्राण (उस कन्या) के पास जाता, तब वह सुन्दरी मुस्कुराहट रूपी सुन्दर मृदुल पुष्प को विकसित करती। २०

आंग्ल-विद्यार्जन

तिरुनेल्वेली जाकर उन हूणों (अंग्रेजों) की विद्या सीख आने की मेरे पिता ने आज्ञा दी। जैसे घास खाने के लिए भयंकर व्याघ्र-शावक को भेजा जाय, मांस-व्यापार की श्लाघा करके ब्राह्मणकुमार को उस व्यापार में लगाया जाय, वैसे मेरे पिता ने संकटदायी, मिट्टी जैसी (सारहीन) विद्या के, आर्यों (सुसंस्कृत लोगों) के लिए घृणित विद्या के—२१ लोमड़ी का-सा जीवन रखनेवाले छोटे नौकर, दास, कुत्तों के समान घूमनेवाले खुफिया लोग, भोजन को बड़ा मानकर अपनी जान बेचनेवाले नपुंसक लोग, दूसरों की हाँ में हाँ मिलानेवाले झूठे प्रशंसक—ऐसे लोग जिसका अर्जन करते हैं, उस विद्या के अर्जन के लिए मुझे भेजा। बहुत प्यारी कलापिनी के वियोग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुझे बिलखते छोड़ पाँचवें वर्ष विधाता।
स्वर्ग सिधारी मेरी जन्मदायिनी माता॥
उन माता के पिता तमिळ की स्तुतियाँ गाकर।
करते थे ईश्वर पूजन मन में हरसाकर॥
वे तप के ही तुल्य सदा ईश्वर-पूजन कर।
लाकर पूजा-पुष्प मुझे देते थे सुन्दर॥
स्वर्ग-प्राण-सम उस बाला के ढिग मैं जाकर।
देता था वे फूल उसे अतिशय हरषाकर॥
मेरे दिये ललाम फूल वह ले लेती थी।
बदले में मुसकान-सुमन सुन्दर देती थी॥ २० ॥

आंग्ल-विद्यार्जन

तिरुनेल्वेली जा सीखो अंग्रेजी विद्या।
ऐसी मेरे पूज्य पिता ने दी थी आज्ञा॥
जैसे भयद व्याघ्र-शावक को घास खिलाना।
जैसे मांस विप्र के बालक से बेचवाना॥
वैसे मेरे पूज्य पिता ने संकट-दायक।
आर्यजनों के लिए सदा जो घृणित प्रदायक॥
ऐसी मिट्टी-तुल्य बनानेवाली विद्या।
सीखो जाकर तुम यह दी थी मुझको आज्ञा॥ २१ ॥

घृणित लोमड़ी तुल्य निन्द्य है जिनका जीवन।
जिसे सीखते छोटे नौकर और दास जन॥
कुत्तों के समान जो करते रहते विचरण।
जिसे सीखते खुफ़ियाओं के हैं अगणित गण॥
जो भोजन को जग में सबसे बड़ा मानकर।
अपने प्राण बेचते निन्द्य नपुंसक-से नर॥
जो जन निन्द्य दूसरों की हाँ में हाँ सदा मिलाते।
करते झूठ प्रशंसा "जी हुज़ूर" कहलाते॥
जिस विद्या को पढ़ते हैं ऐसे निन्दित जन।
भेजा पूज्य पिता ने उसका करने अर्जन॥
प्रिय कलापिनी के वियोग से व्याकुल मम मन।
कैसे नीचों की विद्या कर सकता अर्जन?॥ २२ ॥

के दुःख में रहनेवाला मेरा मन नीचों की इस विद्या में कैसे लगेगा? २२ वे गणित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कणिदम् पन्निरण् डाण्डु पयिल्वर् पिन्
कार्हौळ् बानिलोर् मीनिलं तेर्न्दिलार्;
अणिशैय् काबियम् आयिरङ् गर्किनुम्
आळ्न्दि रुक्कुम् कवियुळम् काण्गिलार्;
वणिह मुम्बॊरुळ् नूलुम् पिदर्रुवार्;
वाळु नाट्टिर् पॊरुळ कंडल् केट्टिलार्;
तुणियु मायिरम् जात्तिर नामङ्गळ्
शोल्लु वारॆट् टुणैप्पयन् कण्डिलार् 23
कम्ब नॆन्नॊरु मानिडन् वाळ्न्ददुम्
काळि दासन् कविदै पुनैन्ददुम्
उम्बर् वानत्तुक् कोळॆयुम् मीनैयुम्
ओर्न्द ळन्ददोर् पास्करन् माट्चियुम्
नम्ब रुन्दिर् लोडॊरु पाणिनि
ञाल मीदिल् इलक्कणङ् गण्डदुम्
इम्बर् वाळ्बित् इरुदिकण् डुण्मैयिन्
इयल्बु णर्त्तिय शङ्गरन् एर्रमुम् 24
शेरन् तम्बि शिलम्बै इशैत्तदुम्
दॆय्व वळ्ळुवन् बाल्मरै शॆय्ददुम्
पारिल् नल्लिशैप् पाण्डिय शोळर्हळ्
पार ळित्तदुल् तरुमम् बळर्त्तदुम्
पेर रुट्चुडर् वाळ्कॊण् डशोकनार्
पिळैव डाडु पुवित्तलङ् गात्तदुम्
वीरर् वाळ्त्त मिलेच्चरतन् दीय कोल्
वीळ्त्ति वॆन्र शिवाजियिन् वॆर्रियुम् 25
अन्न यावुम् अरिन्दिलर् पारदत्
ताङ्गि लम्बयिल् पळ्ळियुट् पोहुनर्

वारह साल सीखेंगे। पर मेघाश्रय आकाश के नक्षत्रों का हाल नहीं जानेंगे। अलंकार-पूर्ण हजार काव्य सीखें, तो भी गहराई में रहनेवाला कवि-मन नहीं जानेंगे। व्यापारशास्त्र तथा अर्थशास्त्र बकेंगे, पर जिसमें रहते हैं उस देश की आर्थिक स्थिति नहीं जानेंगे। साहसपूर्ण बहुत शास्त्रों का नाम लेंगे, पर उनसे कुछ भी फ़ायदा नहीं प्राप्त करेंगे। २३ कम्बन नाम के एक मानव का रहना, कालिदास का काव्य रचना, देवलोक के ग्रहों और नक्षत्रों का रहस्य जाननेवाले भास्करन का गौरव, अविश्वसनीय कौशल के साथ पाणिनी का इस देश में व्याकरण बनाना, इह-जीवन का अंत जानकर सत्य की स्थिति बतानेवाले शंकराचार्य की बड़ाई— २४ चेर राजा के (छोटे) भाई (इळंगो) का 'शिलप्पधिकारम्' काव्य गाना, दिव्य वळ्ळुवन् का अतिश्रेष्ठ वेद

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बारह साल गणित की वह विद्या छानेंगे।
पर नभ के नक्षत्रों का न हाल जानेंगे॥
काव्य, कलाएँ, अलंकार सब पहचानेंगे।
कवि के गहरे मन को नहीं कभी जानेंगे॥
अर्थशास्त्र, व्यापार-शास्त्र ये सब छानेंगे।
पर स्वदेश की आर्थिक स्थिति न कभी जानेंगे॥
नाम सहस्रों शास्त्रों का साहस से लेंगे।
रंचमात्र भी लाभ नहीं उससे ये लेंगे॥ २३॥
कम्बन नामक एक मनुज का जग में रहना।
कालिदास का सुन्दर मधुमय कविता रचना॥
देवलोक के ग्रह नक्षत्रों के रहस्य को।
कहनेवाले भास्करन के गौरव - यश को॥
अकथनीय दक्षता - सहित व्याकरण बनाना।
पाणिनि मुनि की विद्वत्ता का अमर खज़ाना॥
मानव - जीवन को जो बतलाते हैं नश्वर।
और सत्य को सदा बताते हैं अविनश्वर॥
उन पावन शंकराचार्य की मंजुल महिमा।
(शुभवेदान्त - शास्त्र की अतिशय गौरव - गरिमा)॥ २४॥
चेर भूप के अनुज इलंगो-विरचित महिमा।
शिलप्पधिकारम् सुकाव्य की कैसी गरिमा॥
श्रेष्ठ - वेद - सम - वंदित "तिरुक्कुरल" की रचना।
दैवी कवि वल्लुव कर गये अमर साधना॥
पाण्ड्य, चोल भूपों का जग फैला यश पावन।
उनका धर्म - विवर्धन और राज्य - संचालन॥
कर में अति उत्तम करुणा की असि को लेकर।
भू - पालन भूपति अशोक का शोक सभी हर॥
अन्यायी म्लेच्छों का शासन - तंत्र मिटाना।
वीर - प्रशंसित वीर शिवाजी-सुयश बखाना॥ २५॥
इन सबका वृत्तान्त नहीं है उनको सुविदित।
जो बालक हैं अंग्रेज़ी स्कूलों में शिक्षित॥

(तिरुक्कुरल) रचना, संसार में यशस्वी पांडिय और चोल राजाओं का राज्य-पालन और धर्म-संवर्धन, बहुत ही उत्तम कृपा की तलवार लेकर अशोक का निर्दोष रीति से भूमि का पालन करना, वीरों की प्रशंसा का पात्र बनकर म्लेच्छों का बुरा शासन गिराकर शिवाजी द्वारा पायी हुई कीर्ति— २५ और अन्य ऐसी सब बातें वे नहीं जानते, जो भारत में आंग्ल-स्कूल में प्रवेश करते हैं। प्राचीन भारत की महिमा तथा आज उस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुन्नर् नाडु तिहळ्न्द पॅरुमैयुम्
मूणडि रुक्कुमिन् नाळिल् इहळ्च्चियुम्
पिन्नर् नाडुरु पॅऱ्ऱियुन् देऱ्हिलार्
पेडिक् कल्वि पयिन्ऱुळल् पित्तर्हळ्
ऍन्न कूरियमऱ् रॅङ्ङन् उणर्त्तुवेन्
इङ्गि वर्क्कॅन्न दुळ्ळम् ऍरिवदे ! 26

शूदि लाद वुळत्तिनन् ऍन्ददान्
शूळ्न्दं नक्कु नलञ्जॅयल् नाडिये
एदि लार्तरुङ् गल्बिप् पडुकुळि
एऱि युय्दऱ् करिय कॉडुम्बिलम्
तीदि यन्ऱ मयक्कमुम् ऐयमुम्
शॅय्है याविनुम् मेयशि रत्तैयुम्
वादुम् पॉय्मैयुम् ऍन्ऱवि लङ्गिनम्
वाळुम् वॅङ्गुहैक् कॅन्नै वळङ्गिनन् 27

ऐय रॅन्ऱुम् दुरैयॅन्ऱुम् मऱ्ऱॅनक्
काङ्गि लक्कलै यॅन्ऱॉन् ऱुणर्त्तिय
पॉय्य रुक्किदु कूऱुवन् केट्पिरेल्;
पॉळुदॅ दॅलामुङ्गळ् पाडत्तिल् पोक्किनान्
मॅय्य यऱ्ऱदु विळिकुळि वॅय्दिड
वीऱि ळन्दॅन्न दुळ्ळम् नॉय् दाहिड
ऐयम् विञ्जिच् चुदन्दिरम् नीङ्गियॅन्
अऱिवु वारित् तुरुम्बॅन् ऱलैन्ददाल् 28

पर छाया हुआ पतन, देश की सद्यःस्थिति —यह सब वे पागल क्या जानें, जो नपुंसक विद्या का अध्ययन करते हैं। मैं क्या कहकर, कैसे समझाऊँ कि मेरा दिल (किस प्रकार) जल रहा है। २६ निष्कपट मन के मेरे पिता ने उपाय करके मेरे ही हित का विचार करके, शत्रुओं द्वारा दी जानेवाली विद्या के गड्ढे में, जिससे गिरकर ऊपर नहीं आया जा सके, उस भयंकर बिल में, उस ग़ज़ब की गुहा में जिसमें हानिकारक भ्रम, शंका, सभी कार्यों में अश्रद्धा, जाल फ़रेब आदि लेकर प्राणीवर्ग रहते थे— मुझे दान कर दिया (फेंक दिया)। २७ ऐयरों (आर्य का बिगड़ा रूप, जो दक्षिण में ब्राह्मणों को सम्बोधित करने के लिए प्रयुक्त होता है। कभी वह समय था जब विद्यालयों में अधिकतर ब्राह्मण लोग ही अंग्रेज़ों के साथ रहकर शिक्षा पाते थे।) और दुरै कहलाने वाले अंग्रेज़ों तथा मुझे जिन्होंने आंग्ल-शिक्षा दी, उन झूठे लोगों को मैं यह एक बात

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुराचीन भारत की महिमा उसकी उन्नति।
और आज जो हुई भयंकर उसकी अवनति॥
और देश में वर्तमान फैली जो दुर्गति।
इन सबकी, जानते नहीं वे पागल हैं, गति॥
वे पागल नपुंसकों की विद्या पढ़ते हैं।
(देश - दशा - अनभिज्ञ बहुत बातें गढ़ते हैं)॥
मेरा मन जल रहा हाय ! कैसे समझाऊँ।
(देख-देख यह दशा निरन्तर अश्रु बहाऊँ)॥ २६॥

सब कार्यों में अश्रद्धा का भाव भयंकर।
जाल - फ़रेब, हानिकारक भ्रम, शंका दुस्तर॥
ये सब भीषण जन्तु मनुज - मन को जो डसते।
जिस भयकारक गहन गुफ़ा में हिल - मिल बसते॥
ऐसी गहन गुफा आंग्लों की विद्या जानो।
जिसमें गिर ऊपर न निकलता, वह बिल मानो॥
कपट - हीन मनवाले मेरे पूज्य पिता थे।
मेरे हित के ही उपाय को मन में ठाने॥
शत्रुजनों की विद्या - रूपी गर्त गहन में।
गिरने के हित दान कर दिया (प्रमुदित मन में)॥ २७॥

'ऐयर' कहलानेवाले शुभ आर्यजनों को।
और 'दुरै' कहलानेवाले आंग्ल - जनों को॥
इन दोनों को, और जिन्होंने मुझे पढ़ाया।
उन सबको मैं चाह रहा यह बात बताया॥
सारा समय पाठ रटने में सदा बिताया।
फल - स्वरूप हो गई हमारी जर्जर काया॥
हुआ हृदय संकीर्ण, गढ़े पड़ गये नयन में।
शंकाएँ बढ़ गईं (हमारे कोमल मन में)॥
स्वतंत्रता खो गई (वेदना हृदय भटकती)।
सागर पर तृण के समान थी बुद्धि भटकती॥ २८॥

समझाना चाहूँगा। वे सुनें:— सारा समय तुम्हारे पाठों (के सीखने) में बिताने के फलस्वरूप शरीर थका, आँखों का गड्ढा-सा बन गया, दिल छोटा हो गया; शंकाएँ बढ़ गयीं और स्वतन्त्रता चली गयी—इस स्थिति में मेरी बुद्धि समुद्र पर के तिनके के समान भटकती रही। २८ मेरे पिता का एक सहस्र तक खर्च हो गया। मुझे अनेक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शलवु तन्दैक्कों रायिरञ् जॅन्ऱदु
तोदॅन्तक्कुप् पल्लायिरञ् जेर्न्दन्त
नलमों रॅट्टुणै युङ्गण्डि लेन्तदे
नाऱ्प दायिरङ् गोयिलिऱ् चॊल्लुवेन् !
शिलमुन् शॅय्नल् विन्तैप्पद नालुम्नन्
देवि पारदत् तन्नै यरुळिनुम्
अंलैवु ङ्तत्तुनुम् पेरिरुळ् वीळ्न्दुनान्
अऴिन्दि डादोरु वाऱुपि ळॅत्तदे 29

मणम्

निन्तैक्क नॅञ्ज मुरुहुम्; पिऱर्क्किदं
निहळ्त्त नानन्नि कूशुल् दन्ऱिये
अॅन्तैदतिङ् गॅण्णि वरुन्दियुम् इव्विडर्
याङ्ङन् माऱुब दॅन्बदुम् ओर्न्दिलम्
अन्तैत्तोर् शॅय्दिमऱ् ऱेदॅन्निऱ् कूऱुवेन्
अम्म ! माक्कळ् मणमॅन्नुञ् जय्दिये
विन्तैत्तो डर्हळिल् मानुड वाळ्क्कैयुळ
मेवु मिम्मणम् पोऱ्पिऱि दिन्ऱुरो ! 30
वीडु ऱावणम् याप्पदै वीडॅन्बार्
मिहवि ळिन्द पॊरुळैप् पॊरुळॅन्बार्;
नाडुङ् गालॊर् मणमऱ्ऱु शॅय्हैये
नन्ल दोर्मण मामॅन्न नाट्टुवार्
कूडु मायिऱ् पिरमशरियङ् गोळ्
कूडु हिन्ऱिल दॅन्निऱ् पिऴैहळ् शॅय्दु
ईड ळिन्दु नरह वळिच्चॅल्वाय्
यादु शॅय्यिनुम् इम्मणम् शॅय्यल् काण् 31

सहस्र बुराइयाँ मिल गयीं। कोई भी लाभ नहीं हुआ। इसको मैं चालीस हजार मन्दिरों में (रहकर) कहूँगा (घोषित करूँगा)। पूर्वकृत किसी भाग्य से तथा देवी भारतमाता की कृपा से तुम्हारे भटकानेवाले घने अंधकार में फँसकर मरे बिना, मैं किसी तरह बच गया। २९

विवाह

मैं सोचने लगता हूँ तो दिल पानी-पानी हो जाता है। दूसरों से कहूँ तो मन जीभ बहुत लकुचायगी और सोचकर कितना ही क्यों पछताओ, पर इस संकट को सुधारने का उपाय समझ में नहीं आता। वैसी एक घटना का समाचार मैं अब सुनाऊँगा। भैया! वह बात है मनुष्यों का विवाह-संस्कार, संस्कारों की शृंखला में मानव-जीवन में जो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हुआ पिता का एक सहस व्यय इस शिक्षा पर।
और मुझे मिल गये हज़ारों दोष भयंकर॥
कहूँ देवता के सम्मुख कुछ लाभ न पाया।
अरे ! पूर्वकृत प्रबल भाग्य ने मुझे बचाया॥
भारतमाता की महनीय कृपा थी मुझ पर।
बचा मरण से, घने अँधेरे में मैं फँसकर॥ २९ ॥

विवाह

जभी सोचता मन पानी - पानी हो जाता।
और दूसरों से कहता अतिशय सकुचाता॥
चाहे जितना सोच - सोचकर मैं पछताता।
संकट सुधारने का कोई यत्न न आता॥
समाचार मैं तुमको अद्भुत एक सुनाता।
बन्धन है विवाह जिसमें मानव बँध जाता॥
संस्कारों की सुदृढ़ शृंखला है जीवन में।
अद्वितीय है यह विवाह की प्रथा भुवन में॥ ३० ॥
तामिळ - भाषा - बीच "वीडु" घर को बतलाते।
जिसका अर्थ 'मोक्ष' विद्वज्जन हैं जतलाते॥
बन्धन - कारक घर को सभी "मोक्ष" बतलाते।
हीन अर्थ को अर्थ सभी जन हैं जतलाते॥
"सुभ निवास" औ' "शुभ सुलाभ" है अर्थ "मणम" का।
पर विवाह - पर्याय शब्द है व्यर्थ "मणम" का॥
जिसमें नहीं "सुवास" और "शुभ-लाभ" नहीं है।
उसे "मणम" कहते यह समुचित बात नहीं है॥
यदि कर सकते हो तो ब्रह्मचर्य अपनाओ।
यदि न कर सको इसका पालन तो गिर जाओ॥
त्रुटियाँ करो और निज गौरव सभी मिटाओ।
नरक - मार्ग पर चलो (सदा रोओ, पछताओ)॥
इस जग में तुम चाहे जो भी करो विज्ञवर !।
किन्तु विवाह करो मत यह है अतिशय दुखकर॥ ३१ ॥

यह (विवाह) होता है, उसके समान कोई दूसरा नहीं है। ३० जो गृह को (वीडु = गृह है। तमिळ में वीडु की मूल धातु का अर्थ मुक्ति पाना है। उससे बना यह शब्द वीडु 'मोक्ष' का पर्यायवाची है।) पहुँचाने से रोकने के लिए रचा गया है, उसे लोग 'वीडु' कहते हैं। बहुत ही हीन (भौतिक) अर्थ को लोग (परम) अर्थ कहते हैं। विचार करो तो जिसमें मणम (= सुवास = अच्छा लाभ) नहीं है, उसे मणम (= विवाह) कहते हैं। हो सके तो 'ब्रह्मचर्य' को अपनाओ। नहीं कर पाओ, तो ग़लतियाँ करो, गौरव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वशिट्ट नुक्कुम् इरामर्कुम् पिन्नॊरु
वळ्ळु वर्क्कुम्मुम् वाय्त्तिट्ट मादर्पोल्
पशित्तॊ रायिरम् आण्डु तवञ्जॆय्दु
पार्क्कि नुम्पॆऱल् शाल वरिदुकाण्
पुशिप्प दुम्बरिन् नल्लमु दॆन्ऱॆणिप
पुलैयर् विर्ऱिडुम् कळ्ळुण लाहुमो ?
अशुत्तर् शॊल्बदु केट्कलीर् काळैयीर्;
आण्मै वेण्डिन् मणञ् जॆय्दल् ओम्बुमिन् 32
वेऱु तेयत् तॆवरॆदु शॆय्यिनुम्
वीळ्ञ्चि पॆऱ्ऱविप् पारद नाट्टिनिल्
ऊऱ ळिन्दु पिणमॆन वाळुमिव
वूनम् नीक्क विरुम्बुम् इळैयर्ताम्
कूऱु मॆन्दत् तुयर्हळ् विळैयिनुम्
कोडि मक्कळ् पळिबन्दु शूळिनुम्
नोऱु पट्टविप् पाळ्ञ्चॆयल् मट्टिनुम्
नॆञ्जत् तालुम् निन्नप्प दॊळिहवे 33
पाल रुन्दु मदलैयर् तम्मैये
पाद हक्कॊडुम् पादहप् पादहर्
मूलत् तॊडुकु लङ्गॆडल् नाडिय
मूड मूड निर् मूडप् पुलैयर् ताम्
कोल माह मणत्तिडै कूट्टुमिक्
कॊलैयै नुञ्जॆय लॊन्ऱिनै युळ्ळबुम्
शाल वित्तु मोरायिरम् आण्डिबर्
ताद राहि अळिहॆन्त् तोन्ऱुमे ! 34
आङ्गॊर् कन्नियैप् पत्तुप् पिरायत्तिल्
आळ नॆञ्जिडै यून्ऱि वणङ्गिन्न्
ईङ्गॊर् कन्नियैप् पन्निरण् डाण्डमुळ्
ऍन्दै वन्दु मणम्बुरि वित्तन्न्

खोओ तथा नरक-मार्ग पर जाओ ! कुछ भी करो; पर यह 'विवाह' मत करो। ३१ वशिष्ठ, श्रीराम तथा पीछे वळ्ळुवन को जैसी मिलीं, वैसी पत्नी पाना भूख के साथ हजारों साल तपस्या करने पर भी बड़ा कठिन है, इसे समझो। स्वर्गवासियों के अमृत का भोग कर रहे हैं—इस भ्रम में पड़कर नीच लोगों द्वारा बेची हुई ताड़ी को क्या पिया जाय ? ३२ अन्य देशों के लोग चाहे जो करें, इस पतित भारत भूमि में जहाँ साहस खोकर, लाशों के समान जाने की इस क्षुद्र स्थिति को सुधारने के इच्छुक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ज्यों वशिष्ठ, श्रीराम, वल्लुवर की भार्याएँ।
मिल सकतीं वैसी न करो तुम कोटि कलाएँ॥
भूखे वर्ष हज़ारों रहकर यदि तप ठानो।
इन जैसी पत्नियाँ सदा दुर्लभ तुम मानो॥
स्वर्ग - निवासी सदा सुधा पीते हैं सुन्दर।
उस भ्रम में क्या पी लोगे ताड़ी जघन्यतर॥ ३२ ॥
अधःपतित भारत - भूतल पर साहस खोकर।
शव - समान जी रहे आज हैं सभी युवक नर॥
इस दुर्गति को सुधारने के हैं जो इच्छुक।
वे न कभी भी हों विवाह के लिए समुत्सुक॥
चाहे जितना कष्ट झेलना पड़े भयंकर।
निन्दा चाहे करें करोड़ों ही मानव - वर॥
जली-कटी इस शून्य-क्रिया पर ध्यान नहीं दें।
(इस विवाह की भयद प्रथा को मान नहीं दें)॥
चाहे जो कर रहे अन्य देशों के नरवर।
पर न कभी हम करें विवाह - प्रथा का आदर॥ ३३ ॥
जो दुधमुँहे बालकों के विनाश के इच्छुक।
मूढ़, पातकी, क्रूर, नीच, चांडाल, (अभावुक)॥
वे विवाह - बन्धन में उन्हें बाँध देते हैं।
अति घातक यह काम, (महा अपयश लेते हैं)॥
यदि ऐसी ही प्रथा सदा ये अपनायेंगे।
तो हज़ार वर्षों गुलाम रह मिट जायेंगे॥ ३४ ॥
मैंने दसवें वर्ष एक कन्या को चाहा।
दिया हृदय में गूढ़ स्थान (सब भाँति सराहा)॥
अब बारहवें वर्ष पिता ने समुत्साह भर।
दिया दूसरी कन्या से मेरा विवाह कर॥

जवान लोग, कोई भी कष्ट क्यों न होवे, करोड़ों लोगों द्वारा निन्दित क्यों न हों, तो भी इस एक जली-कटी शून्य क्रिया पर सोचना भी छोड़ दें। ३३ दुग्धपायी शिशुओं की निर्मलता का नाश करना चाहनेवाले पातकी, अतिपातकी, क्रूर पातकी ये लोग, मूर्ख, अतिमूर्ख, विमूढ़ वे चांडाल, (नीच) आडंबर के साथ विवाह में उनको बांध देते हैं —यह काम घातक काम है। उसको सोचें तो मन में ऐसा विचार पैदा होगा कि ये हज़ार वर्ष गुलाम रहकर मिट जायेंगे! ३४ वहाँ, अपने दसवें साल में मैंने एक कन्या को हृदय में गूढ़ स्थान देकर उसकी अभिवन्दना की। अब मेरे पिता ने बारहवें साल के अन्दर एक (दूसरी) कन्या का मेरे साथ विवाह करा दिया। इसमें हानि है

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तीङ्गु मऱ्ऱिदि लुण्डॆन् ऱऱिन्दवन्
शॆयलॆ दिर्क्कुन् दिऱन्निल नायिन्नेन्
ओङ्गु कादऱ् ऱळ्ळॆव् वळवॆन्ऱन्
उळमै रित्तुळ दॆन्बदुङ् गण्डिलेन् 35
मऱ्ऱोर् पॆण्णै मणञ्जॆय्द पोळ्दुमुन्
माद राळिङक् कॊण्डदॊर् कादल्तान्
निऱ्ऱल् वेण्डु मॆन्नवुळत् तॆण्णिलेन्
निन्नैवै येयिन् मणत्तिऱ् चॆलुत्तिन्नेन्;
मुऱ्ऱॊ डऱ्बिन्निल् उण्मै यिरुन्ददाल्
मूण्ड पिन्नदॊर् केळियन् ऱॆण्णिन्नेन्
कऱ्ऱुङ् गेट्टुम् अरिवु मुदिरुमुन्
काद लॊन्ऱु कडमैयॊन् ऱायिन 36
मदनन् शॆय्युम् मयक्क मॊरुवयिन्
माक्कळ् शॆय्युम् पिणिप्पुमऱ् ऱोर्वयिन्
इदनिऱ् पन्निरण् डाट्टॆ यिळैञनुक्
कॆन्नै वेण्डुम् इडर्क्कुऱु शूळ्च्चिदान् ?
अॆदनि लेन्नुङ् गडमै विळैयुमेल्
अॆत्तु यऱ्हळ् उळ्ळन्ऱु मऱ्ऱॆन् शॆय्दुम्
अदनि लुण्मैयॊ डार्न्दिडल् शालुमॆन्ऱु
अऱमबि दिप्पदुम् अप्पॊळु दोर्न्दिलेन् 37
शात्ति रङ्गळ् किरियैहळ् पूशैहळ्
शहुन मन्दिरत् तालि मणियॆलाम्
यात्तॆ नैक्कॊलॆ शॆय्दन रल्लदु
यादु तरम सुऱ्ऱॆन्नल् काट्टिलर्
तीत्ति ऱन्कॊळ् अऱिवऱ्ऱ पॊय्च् चॆयल्
शॆय्दु मऱ्ऱवै आन नॆऱियॆन्बर्;
मूत्त वर्वॆऱुम् वेडत्तिन् निऱ्कुङ्गाल्
मूडप् पिळ्ळे अऱमॆवण् ओर्वदे ? 38

—यह मैं जानता था। तो भी इसका विरोध करने की शक्ति मुझमें नहीं रही। यह भी मैं जान नहीं पाया कि प्रेम की आग मेरा कितना दिल जला चुकी है। ३५ दूसरी कन्या से विवाह करते समय यह मैंने नहीं सोचा कि पहली प्रेमिका स्त्री के प्रेम को ही स्थिर रखना आवश्यक है। पर इसी विवाह पर मैं ध्यान दिये रहा। 'यह पूर्वजन्म का सम्बन्ध जारी है! इसलिए यह खेल चलता है' ऐसा विचार करके मैं, पठन-श्रवण से पक्व बुद्धि से युक्त होने से पहले ही प्रेम और कर्तव्य की द्विधा में पड़ गया। ३६ मदन द्वारा दिये गये एक ओर, [illegible] दूसरी ओर।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Digitized by eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इसमें है अति हानि बात यह जान रहा था।
पर विरोध की शक्ति न निज में मान रहा था॥
जला चुकी है प्रेम-अग्नि कितना मन मेरा।
यह भी सका न जान हाय! बेसुध तन मेरा॥ ३५॥
अरे! दूसरी कन्या से विवाह करने पर।
आवश्यक पहली का तजना प्रेम मनोहर॥
इसी ब्याह की हलचल में इस भाँति भुलाया।
यह आवश्यक बात ध्यान में सोच न पाया॥
पूर्व-जन्म-सम्बन्ध प्रेम (इसको पलने दो)।
जैसा है चल रहा खेल वैसा चलने दो॥
कच्ची मति का मैं विचार ऐसा निज मन में।
फँसा प्रेम-कर्तव्य-द्विधा की था उलझन में॥ ३६॥
इधर मदन का दिया मनोरम मोह सघन था।
उधर स्वजन का दिया मधुर परिणय-बंधन था॥
बारह-वर्षी बालक को तड़पानेवाला।
इससे बढ़कर क्या हो सकता कर्म-कसाला॥
सदा सभी के प्रति उदार भावों से भरके।
कष्ट उठा अगणित, दुःखों से कुछ भी करके॥
सच्चाई से कर्तव्यों को सदा निभाना।
सच्चा धर्म-विधान नहीं यह मैंने जाना॥ ३७॥
मंगल-सूत्र, मंत्र, घंटा, पूजन, आराधन।
शास्त्र, शकुन आदिक सब धर्म-कर्म के साधन॥
अरे! मार डाला मुझको इन सबने मिलकर।
दिखा धर्म का क्रम न दूसरा इन्हें छोड़कर॥
बुद्धि-हीन, झूठे, जो कार्य हानिकारक हैं।
उन्हें बताते धर्मकार्य सब हित-साधक हैं॥
वृद्ध लोग आडंबर ही को समुचित जाने।
तो अबोध बालक सुधर्म कैसे पहचानें॥ ३८॥

इससे बढ़कर बारह साल के लड़के को सतानेवाला कर्मजाल क्या हो सकता है? जिस किसी में, चाहे वह जो भी हो कर्तव्य का तकाजा है उसमें, किन्हीं दुखों से कष्ट उठाने पर भी, कुछ भी करके, ईमानदारी के साथ लगा रहना धर्म का विधान है —यह हमने नहीं जाना। ३७ शास्त्र, अनुष्ठान, पूजाएँ, शकुन, मन्त्र, मंगलसूत्र, घंटा आदि के संघात से मुझे लोगों ने मार दिया। इसको छोड़कर उन्होंने धर्म का क्रम नहीं दरसाया। हानि-सम्भव बुद्धिहीन व झूठे कार्य करके, वे उन्हें धर्मकार्य कहते हैं। वृद्ध लोग केवल दिखावे पर अड़े रहते हैं, तो अबोध बालक धर्म कैसे जान लें? ३८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तन्दै वऱुमै यॆय्दिडल्

इङ्गि दर्किडै यॆन्दै पॆरुन्दुयर्
ऍय्दि नित्रतन् तीय वऱुमै यान्
ओङ्गि नित्र पॆरुञ् जॆल्वम् यावैयुम्
ऊणर् शॆय्द शदियिल् इळन्दनन्
पाङ्गि नित्रु पुहळ्च् चिहळ् पेशिय
पण्डै नण्बर्हळ् कॆनॆहिळ्न् देहित्तर्;
वाङ्गि युय्न्द किळैञरुम् तादरुम्
वाळ्वु तेय्न्दपिन् यादु मदिप्परो ? 39
पार्प्प त्तक्कुलङ् गॆट्टळि वॆय्दिय
पाळ डैन्द कलियुह मादलाल्
वेर्प्प वेर्प्पप् पॊरुळ् शॆय्व दॊन्रंये
मेन्मै कॊण्ड तॊळिलॆत्तक् कॊण्डनन्;
आर्प्पु मिञ्जप् पलपल वाणिहम्
आर्रि मिक्क पॊरुळ् शॆय्दु वाळ्न्दनन्
नीर्प्प डुञ्जिरु पुर्पुद मामदु
नीङ्ग वेयुळङ् गुन्रित् तळर्न्दनन् 40
तीय माय वुलहिडै यॊन्रिनिल्
शिन्दै शॆय्दु विडायुरुङ् कालदै
वायडङ्ग मॆन्मेलुम् परुहिनुम्
मायत् ताहम् तविर्वदु कण्डिलम्
नेयमुर्रदु वन्दु मिहमिह
नित्त लुम्मदर् काशै वळरुमाल्
काय मुळ्ळ वरैयुङ् गिडप्पिनुम्
कयवर् माय्वदु काय्न्द उळम् कॊण्डे ! 41

पिता का दरिद्रता पाना

इस बीच मेरे पिता पर निष्ठुर दरिद्रता के कारण बड़ा संकट आ गया। जो अपरिमित रहा, वह सारा धन उन्होंने हूणों के किए षड्यंत्र के कारण खो दिया। जो बहुत आत्मीय थे और उनकी चापलूसी करते रहे, वे पुराने मित्र हाथ धोकर हट गये। उनसे धन लेकर रिश्तेदार बढ़े थे, वे तथा नौकर भी जीवन-आधार (धन) के घटने के बाद क्या आदर करेंगे ? ३९ यह कलियुग है, जिसमें ब्राह्मणवर्ग नष्ट-भ्रष्ट हो गया। इसलिए उन्होंने स्वेद बहा-बहाकर अर्थार्जन करना ही श्रेष्ठ धन्धा मान लिया था। बड़े कोलाहल के साथ वे (मेरे पिता) अनेक तरह के व्यापार करके खूब धन कमाकर जीवन बिताते थे। धन तो जल पर उठनेवाला बदबुद है। इसलिए वह मिट

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पिता का दरिद्रता पाना

इसी समय के बीच हमारे पूज्य पिता पर।
दरिद्रता का संकट आया बड़ा भयंकर।!
अंग्रेज़ों के (झूठे) षड्यन्त्रों के कारण।
खो बैठे थे पिता अपरिमित निज सारा धन॥
जो बनते आत्मीय प्रशंसा करते प्रतिक्षण।
साथ छोड़ हट गये पुराने सभी मित्रजन॥
उनसे धन ले जो सम्बन्धी धनी बने थे।
और सभी (विश्वासपात्र) जो भृत्य घने थे॥
जीवन का आधार-रूप धन मिट जाने पर।
आदर तजकर दूर हट गये साथ छोड़कर॥ ३९॥
इस कलियुग में नष्ट-भ्रष्ट हो गया विप्र-कुल।
(धन से होकर हीन हो गया अतिशय व्याकुल)॥
बहा पसीने का विप्रों ने अतः खज़ाना।
अर्थार्जन करना ही उत्तम धन्धा माना॥
कोलाहल के साथ विविध व्यापार चलाये।
कमा अपरिमित धन निज जीवन सुखी बनाये॥
जल-बुदबुद के तुल्य मिट गया वह सारा धन।
दीन बन गये सभी और हो गया म्लान मन॥ ४०॥
यह दुनिया अतिशय मायावी कहलाती है।
प्रतिपल रंग बदलती सबको दिखलाती है॥
एक वस्तु की इच्छा जब पूरी हो जाती।
तब मानव के लिए प्यास है वह बन जाती॥
छक-छक करके चाहे जितना पियो निरन्तर।
पर न बुझेगी यह मायावी प्यास भयंकर॥
ज्यों-ज्यों इच्छित वस्तु मनुज लहता जाता है।
त्यों-त्यों उसका लोभ अधिक बढ़ता जाता है॥
यदि होता ही रहे लाभ जब तक है जीवन।
तृष्णा से मरते हैं तो भी लोभी दुर्जन॥ ४१॥

गया और वे मन मारकर दीन हो गये। ४० इस बुरी मायावी दुनिया में एक वस्तु की इच्छा करो, तथा जब वह इच्छा प्यास बन जाती है, तो उसे बुझाने के लिए मुँह भर-भरकर (पानी) पीते रहो, तब भी देखोगे कि वह मायाविनी प्यास नहीं बुझती। इच्छा की वस्तु ज्यों-ज्यों अधिक मिलती जाती है, त्यों-त्यों उसका लोभ भी बढ़ता जायगा। जब तक शरीर बना रहता है, तब तक लाभ होता रहे, तो भी बेचारे लोग मरते हैं. प्यासा दिल लेकर ही मरते हैं। ४१ 'इच्छा की सीमा नहीं! विषय सुख में मग्न

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'आशैक् कोरळविल्लै विडयत्तुळ्
आऴ्न्द पित्तङ् गमैदियुण् डामॅन्
मोशम् पोहलिर्' ऍन्ऱिडत् तोदिय
मोति ताळिणै मुप्पॊऴु देत्तुवाम्
देशत् तार्पुहऴ् नुण्णीऱ् वोडुतान्
तिण्मै विञ्जिय नञ्जिन नायिनुम्
नाशक् काशिनिल् आशैयै नाटटिनन्
नल्लन् अन्दै तुयर्क्कडल् वीऴ्न्दनन् 42

पॊरुट् पॆरुमै

'पॊरुळि लार्क्किलै यिव्वुल' हॆन्ऱनुम्
पुलवर् तम्मॊऴि पॊय्म्मॊऴि यन्ऱुकाण्
पॊरुळि लार्क्किन मिल्लै तुणैयिलै
पॊऴुदॆ लामिडर् वॆळ्ळम्वन् दॆऱ्ऱुमाल्
पॊरुळि लार्पॊरुळ् शॆय्दल् मुदर्कडन्
पोऱ्ऱिक् काशिनुक् केङ्गि युयिर् विडुम्
मरुळर् तम्मिशै येपऴि कूऱुवन्
मामहट् किङ्गार् ऊन मुरैत्तिलन् 43
अऱमॊन् ऱेदरुम् मॆय्यिन्बम् ऍन्ऱनल्
लऱिञर् तम्मै अनुदिनम् पोऱ्ऱुवेन्
पिऱवि रुम्बि उलहिनिल् यान्पट्ट
पॊऴै ऍन्ततनै कोडि ! निनैक्कवुम्
तिऱन ळिन्दॆन् मनमुड वॆय्दुमाल्
तेशत्तळ्ळ इळैञर् अऱिमिनो !

होने के बाद शान्ति मिलेगी; यह सोचकर नष्ट मत होओ !' यह मुनि ने डाँटकर बताया है। उन मुनि के चरणों की तीनों जून वन्दना करें। देशवासियों द्वारा प्रशंसित कुशाग्र बुद्धि तथा सुदृढ़ मन के होने पर भी, इस नाशक धन पर मन लगाने के कारण अच्छे मेरे पिता दुःखार्णव में गिर गये। ४२

अर्थ की महत्ता

'जिसके पास अर्थ नहीं है, यह दुनिया उसकी नहीं है (इस संसार में वह सुख से जी नहीं सकता)।' यह हमारे तमिऴ के विद्वान (वळ्ळुवर) की वाणी झूठी नहीं है ! इसे जान लें। दरिद्रों की जाति नहीं होती, सायी नहीं होते। उसे सदा संकटों की बाढ़ आकर बहा ले जाती है। निर्धन का धन बनाना पहला कर्तव्य है। पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विषय - सुखों से अरे ! मिलेगी शान्ति मनोरम।
यह मानकर नष्ट मत होओ (मत पालो भ्रम)॥
इच्छा की सीमा न कहीं मुनि का यह प्रवचन।
तीनों समय करें उन मुनि - चरणों का वन्दन॥
देश - वासियों द्वारा (परम) प्रशंसित (प्यारे)।
दृढ़ मन और कुशाग्र - बुद्धि थे पिता हमारे॥
इस नाशक धन पर उनका अति मोहित मन था।
इसीलिए दुख के सागर में हुआ पतन था॥ ४२॥

अर्थ की महत्ता

अर्थ न जिसके पास उसे संसार व्यर्थ है।
यह विद्वान - वल्लुवर की वाणी यथार्थ है॥
जग में कभी कुलीन न माना जाता निर्धन।
और न होते हैं निर्धन के कभी मित्र - जन॥
उसे बहा ले जाती संकट - बाढ़ भयंकर।
धन का अर्जन निर्धन का कर्तव्य प्रथमतर॥
किन्तु निन्द्य हैं वे जो धन की पूजा करते।
उसके लिए तरसते, प्राण गँवाते, मरते॥
महनीया श्रीदेवी का कुछ दोष नहीं है।
सुखी न जिसमें धर्म और संतोष नहीं है॥ ४३॥
सदा धर्म ही सच्चे सुख को देनेवाला।
नीतिशास्त्र का है प्रसिद्ध यह वचन निराला॥
श्रेष्ठ ज्ञानियों में जिनने यह कहा वचन है।
आदर - पूर्वक उनके चरणों को वन्दन है॥
मैंने जग में अन्य वस्तुओं की इच्छा कर।
सहीं करोड़ों पीड़ाएँ अत्यन्त भयंकर॥
जिनके स्मरण-मात्र से पीड़ित होता मम मन।
(केले के पत्ते - सा थर - थर कँपता है तन)॥
भली भाँति समझो - बूझो देश के तरुण - जन !।
केवल एक धर्म है सच्चे सुख का साधन॥

में निन्दा उनकी करता हूँ, जो धन की पूजा करते हैं और उसके लिए तरसकर प्राण खपाते हैं। पर इसमें मैं महनीया श्रीदेवी का कुछ दोष नहीं मानता। ४३ धर्म ही सच्चा सुख दे सकता है। —यह जिन्होंने कहा है, उन श्रेष्ठ ज्ञानियों का मैं आदर करूँगा। अन्य चीजें चाहकर मैंने संसार में कितनी करोड़ों पीड़ाओं को सहन किया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऱमॊन् ऱेदरुम् मॆय्यिन्बम्; आदलाल्
अऱनै येतुणै यॆन्ऱुकॊण् डुय्दिराल् 44
वॆय्य कर्मप् पयन्गळिन् नॊन्दुतान्
मॆय्युणर्न्दिड लाहु मॆन्ऱाक्किय
दॆय्व मेयिदुनीदि यॆनिनुम् निन्
तिरुव रुट्कुप् पॊरुन्दिय दाहुमो ?
ऐयहो ! शिऱि दुण्मै विळङ्गुमुन्
आवि नॆयत् तुयरुऱल् वेण्डुमे !
पॆयप् पॆयवोर् आमैकुन् ऱेऱल्पोल्
पारुळोर् उण्मै कण्डिवण् उय्वराल् 45
तन्दै पोयिनन् पाळ्मिडि शूळ्न्ददु
तरणि मीदिनिल् अञ्जलॆन् बारिलर्
शिन्दैयिल् तॆळि विल्लै उडलिनिल्
तिऱनुमिल्लै उरनुळत् तिल्लैयाल्;
मन्दर् पाऱ्पॊरुळ् पोक्किप् पॆयिन्ऱदाम्
मडमैक् कल्वियाल् मण्णुम् पयनिलै
ऎन्द मार्क्कमुम् तोऱ्ऱिल दॆन्शॆय्हेन् ?
एन्पि ऱन्दनन् इत्तुयर् नाट्टिलै ? 46

मुडिवुरै

उलहॆ लामॊर् पॆरुङ्गत वःदुळे
उण्डु ऱङ्गि इडर्शॆय्दु शॆत्तिडुम्
कलह मानिडप् पूच्चिहळ् वाळ्क्कॆयोर्
कनविनुङ् गनवाहुम्; इदऱ्कु नान्
पल निनैन्दु वरुन्दियिङ् गॆन्पयन् ?
पण्डु पोनदे ऎण्णि यॆन्नावदु ?

स्मरण करने मात्र से मेरा मन टूट जाता है। हे देश के तरुण, यह जान लो ! धर्म ही सच्चा सुख दिला सकता है ! इसलिए उसी को सहायक बनाकर उन्नति करो। ४४ हे देव ! जिसने यह विधान बना रखा है कि कर्मफल भुगतने से पीड़ित होकर ही सत्य जाना जाय ! यह ठीक है; तो भी क्या वह तेरी करुणा (के स्वभाव) के योग्य होगा ? हाय रे ! थोड़ा सत्यज्ञान होने से पहले ही क्या इतना दुख मिले कि प्राण टूट जायें ? धीरे-धीरे कछुआ गिरि पर चढ़ता है। वैसे लोकवासी यहाँ (आहिस्ता-आहिस्ता सभ्रम कष्टों के बीच बढ़ें और) सत्य का ज्ञान पाकर तर जायँ। ४५ पिताजी चल बसे। मुझे नाशक कंगाली घेर गयी। इस संसार में 'मत डरो' कहनेवाला (अभयदायक) कोई नहीं रहा। मेरे जीवन में स्वस्थता नहीं है। मेरे शरीर में शक्ति नहीं है। मेरे दिल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मान धर्म को सदा सहायक करो समुन्नति।
(हों सारे दुख दूर, दूर हो सारी दुर्गति) ॥ ४४ ॥
अरे ! कर्म - फल - भोग भोगकर, पीड़ित होकर।
जाना जा सकता है सत्य (स्वरूप मनोहर) ॥
जिसने यह (भीषण) विधान हे देव ! बनाया।
क्या उसको निज दया योग्य तुमने ठहराया ॥
प्राण छूट जायें पहले ही यदि दुख पाकर।
तो क्या होगा ऐसा सत्य - ज्ञान अपनाकर ॥
धीरे - धीरे कछुआ जैसे चढ़ता गिरि पर।
धीरे - धीरे सत्य ज्ञान पा तर जायें नर ॥ ४५ ॥
पूज्य पिताजी हुए स्वर्गवासी जब मेरे।
तब नाशक निर्धनता ने घर डाले डेरे ॥
इस जग में "तुम डरो नहीं" यह कहनेवाला।
रहा न कोई मेरे कर को गहनेवाला ॥
चिन्तन में थी नहीं विमलता शक्ति न तन में।
और नहीं कुछ भी साहस था मेरे मन में ॥
जिस विद्या को सीखा व्यय करके अपार धन।
मिट्टी मोल न उस विद्या का (जग के आँगन) ॥
मार्ग न कोई मुझे सूझता (सबने त्यागा)।
दुखी देश में मैं क्यों पैदा हुआ (अभागा) ॥ ४६ ॥

उपसंहार

यह संसार स्वप्न है उसमें खा - पी सोकर।
हानि दूसरों की कर बीज कलह के बोकर ॥
नर रूपी कीड़ों का जीवन (भयावना है)।
जग के सपने के अन्दर दूजा सपना है ॥
इसके बारे में बहु बातें सोच - सोचकर।
दुख करने से लाभ नहीं कुछ भी है, प्रियवर ! ॥

में साहस भी नहीं है ! मन्दमति लोगों के पास, रुपया बहाकर सीखी हुई निरर्थक विद्या से मिट्टी तक का फ़ायदा नहीं है। मुझे कोई भी मार्ग नहीं सूझता। क्या करूँ ? मैं इस दुखी देश में पैदा ही क्यों हुआ ? ४६

उपसंहार

सारा संसार एक बड़ा सपना है ! उसमें खाकर, सोकर दूसरों का अहित करके मर जानेवाले मानव-कृमियों का कलहमय जीवन सपने के अन्दर सपना है। इनके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शिल दिनन्गळ् इरुन्दु मऱैवदिल्
शिन्दै शॆय्दवन् शॆत्तिडुवानडा ! 47
आन मुन्दुऱबुस्बॆऱ् ऱिलादवर्
नानिलत्तुत् तुयरन्ऱिक् काण्गिलर्
पोन दऱ्कु वरुन्दिलन् मॆय्त्तवप्
पुलमै योनदु वानत् तॊळिरुमोर्
मिनै नाडि वळैत्तिडत् तूण्डिलै
वीशलॊक्कु मॆनलै मऱक्किलेन्
आन दावदनैत्तैपुग् जॆय्वदोर्
अन्नैये ! इनियेनुम् अरुळ्वैयाल् 48

वेऱु

अऱिविलै तॆळिवु नॆञ्जिलै उरुदि, अहत्तिलै अन्बिनोर् वॆळ्ळम्
पॊऱिहळिन् मीदु तनि यरशाणै, पॊऱुदैलाम् निनदुपे ररुळिन्
नॆऱियिलै नाट्टम्, करुम योगत्तिल्, निलैत्तिडल् ऎन्ऱिवै यरुळाय्
कुऱिकुण मेदुम् इल्लदाय् अनैत्ताय्क्, कुलविडु तनिप्परम् बॊरळे ! 49

बारदि अऱुपत्ताऱु—37

कडवुळ् वाळ्त्तु— पराशक्ति तुदि

ऎनक्कु मुन्ने शित्तर् पलर् इरुन्दारप्पा !
यानुम् वन्देन् ऒरु शिल्तन् इन्द नाट्टिल्;

बारे में कई बातें सोचकर मेरे दुख करने से क्या लाभ है ? अरे ! कुछ दिनों तक रहकर गायब होने के इस चक्र में कोई चिन्ता करनेवाला मर जायगा (अनावश्यक रूप से चिन्ताग्रस्त होकर कष्ट पाएगा) । ४७ जिसे ज्ञान तथा संन्यास प्राप्त नहीं है, वह इस चतुर्विधा भूमि में दुख के अलावा कुछ नहीं देख सकता । अतः जो गया उसके लिए मैं दुख नहीं करूँगा । सच्चे तपस्वी, विद्वानों के आकाश में दीप्त नक्षत्र को पकड़ने के लिए यह काँटा फेंकने के समान है । इसे भी मैं नहीं भूलता । जो भी होता है, वह सब करानेवाली हे माता, आगे कम से कम कृपा तो करो । ४८

भिन्न छन्द

बुद्धि में संशय-हीनता, दिल में दृढ़ता, हृदय में प्रेम की बाढ़, इन्द्रियों पर अकेला शासन, सभी समय तुम्हारी कृपा की खोज में लगन, कर्मयोग में स्थिति —वगैरः ये सब मुझे दे दो —नाम, रूप, गुण के बिना सभी बनकर हुलसनेवाली है परवस्तु (परब्रह्म) ! ४९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह जगतीतल है विनाश का चक्र भयंकर।
कुछ दिन रह करके मर जायेगा चिन्तित नर ॥ ४७ ॥
जो हैं ज्ञानी नहीं, नहीं जो संन्यासी नर।
दुख भोगेंगे वही, चतुर्विध इस भूतल पर ॥
बीत गया जो समय, नहीं कुछ उसका दुख है।
(उसे सँभालो आज हमारे जो सम्मुख है) ॥
जो प्रदीप्त नक्षत्र मनोरम नभमंडल पर।
काँटे से उसको गहना चाहे कोई नर ॥
जैसे काँटे से तारे गहना न सुलभ है।
जैसे काँटे से तारे गहना दुर्लभ है ॥
उसी भाँति ही विद्वानों के नभमंडल पर।
सच्चा तपधारी भी मिलना है अति दुष्कर ॥
इस जग में जो कुछ भी होता है मिट जाता।
उसे बनाती औ' बिगाड़ती मेरी माता ॥
नहीं भूलता तथ्य कभी मैं यह अविनश्वर।
मेरी माता ! कृपा करो संतत तुम मुझ पर ॥ ४८ ॥

भिन्न छन्द

नाम - रूप - गुण - हीन सदा तुम हो हे ईश्वर ! ।
फिर भी सब कुछ बननेवाले हे परमेश्वर ! ॥
मति में नव - निर्मलता, मन में अतिशय दृढ़ता।
और इन्द्रियों पर शासन करने की क्षमता ॥
सदा तुम्हारी कृपा - खोज में लगन निराली।
कर्मयोग की सबल साधना गौरव - शाली ॥
हृदय - भूमि में हो शुभ प्रेम - प्रवाह प्रवाहित।
ये समस्त वस्तुएँ मुझे तुम दे दो याचित ॥ ४९ ॥

भारती छियासठी—३७

ईश्वर वन्दना — पराशक्ति-स्तोत्र

मेरे पहले भी अनेक थे तात ! सिद्ध - जन।
आया मैं भी देश-बीच हूँ एक सिद्ध - मन ॥

भारती छियासठी—३७

ईश्वर वन्दना — पराशक्ति-स्तोत्र

मेरे पहले अनेक सिद्ध थे—तात ! मैं भी, एक सिद्ध, आया हूँ इस देश में। मेरे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मनत्तिनिले निन्ऱिदनै ऍळुदु हिन्ऱाळ्
मनोन् मणियॅन् माशक्ति वैयत्तेवि;
दिनत्तिनिलें पुदिदाहप् पूत्तु निऱ्कुम्
शॅय्यमणित् तामरै नेर् मुहत्ताळ्; कादल्
वनत्तिनिले तन्नैयॊरु मलरैप् पोलुम्
वण्डिनैप् पोल् अॅनैयु मुरु माऱ्ऱि विट्टाळ् 1
तोराद कालमॅलाम् तानु निऱ्पाळ्
तॅविट्टाद इन्नमुदिन् शॅव्विदळ्च्चि
नीराहक् कनलाह वानाक् काऱ्ऱा
निलमाह वडिवॅडुत्ताळ्; निलत्तिन् मीदु
पोराह नोयाह मरणमाहप्
पोन्दिदनै अळित्तिडुवाळ्; पुणर्च्चि कॊण्डाल्
नेराह मोनमहानन्द वाळ्वै
निलत्तिन् मिशै अळित् तमरत्तन्मै ईवाळ्! 2
माकाळि पराशक्ति उमैयाळ् अन्नै
वेरवि गङ्गाळि मनोन् मणिमा मायि
पाहार्न्द ते मॊळियाळ् पडरुम् जॅन्दी
पाय्न्दिडुमोर् विळियुडैयाळ् परम शक्ति
आहार मळित्तिडुवाळ् अऱिवु तन्दाळ्
आदि परा शक्तियॅन दमिर्दप् पॊय्है
शोहा डविक्कुळॅनैप् पुहवॊट् टामल्
तुय्य शॅळुन्देन् पोले कविदै शॊल्वाळ् 3

मरणत्तै वॅल्लुम् वळि

पॊन्नार्न्द तिरुवडियैप् पोऱ्ऱि यिङ्गु
पुहलुवेन् यानऱियुम् उण्मै यॅल्लाम्

मन में रहकर यह लिख रही है—मनोन्मणि, मेरी महाशक्ति भूदेवी ! हर दिन विकसित नव-नव श्रेष्ठ सुन्दर कमल-सम मुखवाली ! प्रेम (भक्ति) के वन में वह फूल है और मुझे भ्रमर के रूप में परिवर्तित कर चुकी है ! १ अनन्त दिनों (काल) में वह स्थित रहेगी। न अघानेवाली मधुर अमृत के समान लाल अधरों वाली। उसने जल, अनल, आकाश, अनिल तथा थल का रूप लिया। वह इस पृथ्वी में युद्ध, रोग, मृत्यु आदि के रूप में आकर इसको मिटा देगी। उससे मिल जायँ तो सीधे इस संसार में मौन तथा महान सुखी जीवन को वह प्रदान कर अमरता दिला देगी। २ महाकाली, पराशक्ति, उमादेवी, माता, भैरवी, गंगाळी, मनोन्मणि महामाया—चासनी के समान मधुर वाणी तथा फैलनेवाली लाल आग निकालनेवाली दृष्टि से युक्त, परमशक्ति—भोजन दिला देगी। उसने बुद्धि दी है। वह आदि पराशक्ति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रतिदिन विकसित श्रेष्ठ कान्ति जिसकी छविशाली।
उस उत्तम सरसिज - समान सुन्दर मुखवाली ॥
कुसुम - सरिस, मम प्रेम - भक्ति - वन में शोभित है।
करती भ्रमर - रूप में मुझको परिवर्तित है ॥
महाशक्ति भूदेवी मम मन - मणि दिखती है।
मेरे मन में बसकर वह यह सब लिखती है ॥ १ ॥
शक्ति रहेगी सदा अनन्त काल तक संस्थित।
क्षिति, जल, अनल, अनिल, नभ बनकर है वह शोभित ॥
अरुण कान्ति वाले उसके नव मृदुल अधर हैं।
अक्षय - तृप्ति - प्रदायक सुधा - समान मधुर हैं ॥
युद्ध, मृत्यु औ' रोग रूप में जो भूतल पर।
कर देगी विनाश इन सबका प्रबल भयंकर ॥
यदि उससे मिल जायँ सभी ये जगती के जन।
देगी मौन महान अमित - सुख - संयुत - जीवन ॥
जो इस देवी की उपासना मानव करता।
मिटा मृत्यु - भय देती उसको सदा अमरता ॥ २ ॥
पराशक्ति, भैरवी, महामाया औ' माता।
उमा, महाकाली, गंगोली, मन - मणि ख्याता ॥
सरस चासनी के समान मधुवाणी - वाली।
लाल - अग्नि - ज्वालाओं - वाली दृष्टि निराली ॥
परम - शक्ति वह सारे जग की भोजन - दाता।
(विद्वानों के लिए) वही है बुद्धि - प्रदाता ॥
आदिशक्ति वह पराशक्ति (श्रुति में वर्णित) है।
मेरी मधुर सुधा के सरवर - सी शोभित है ॥
जाने देगी नहीं कभी वह मुझे शोक - वन।
मुझे सुनायेगी कविता घन - मधु - सम - पावन ॥ ३ ॥

मौत को जीतने का मार्ग

मैं स्वर्णिम श्रीचरणों की महिमा को गाकर।
जाना - सारा - सत्य सुनाऊँगा (हरषाकर) ॥

मेरे लिए अमृत का सरोवर है ! मुझे शोकाटवी में घुसने न देकर पवित्र गाढ़े शहद के समान कविता सुनायगी। ३

मौत को जीतने का मार्ग

स्वर्ण —(सौन्दर्य तथा मूल्य) युक्त श्रीचरणों की महिमा गाकर, मैं वह सारा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुन्नोर्हळ् ऍव्वुयिरुम् कडवुळ् ऍन्ऱार्
मुडिवाह अव्वुरैयै नान् मेऱ् कॊण्डेन्
अन्नोर्हळ् उरैत्त दन्ऱिच् चॆय्हैयिल्लै
अद्वैद निलै कण्डाल् मरण मुण्डो ?
मुन्नोर्हळ् उरैत्त पल शित्तरल्लाम्
मुडिन्दिट्टार् मडिन्दिट्टार् मण्णाय् विट्टार् 4
पॊन्दिले युळ्ळाराम् वन्तति लॆङ्गो
पुदर्हळिले यिरुप्पाराम् पॊदियै मीदे
शन्दिले शवुत्तियिले निऴलैप् पोले
शऱ्ऱेयङ् गङ्गे तॆन्पडु हिन्ऱाराम्
नॊन्द पुण्णैक् कुत्तुवदिल् पयनॊन्ऱिल्लै
नोवाले मडिन्दिट्टान् पुत्तन् कण्डीर्
अन्दणनाम् शङ्गरा चार्यन् माण्डान्
अदऱ् कडुत्त इरामानुजनुम् पोनान् ! 5
शिलुवैयिले अडियुण्डु येशु शॆत्तान्
तोयदॊरु कणैयाले कण्णन् माण्डान्
पलर् पुहऴुम् इरामनुमे याऱिल् वीऴ्न्दान्
पार्मीदु नान्शाहा दिरुप्पेन् काण्बीर् !
मलिवु कण्डीर् इव्वुण्मै पॊय्कू ऱेन्यान्
मडिन्दानुम् पॊय्कूऱेन् मानुडर्क्के
नलिवु मिल्लै शावु मिल्लै केळीर्, केळीर् !
नाणत्तेक् कवलैयिन्ऱि चित्तत्तैप् पॊय्यै 6

अशुरर्हळिन् पॆयर्

अच्चत्तै वेट्कैतन्नै अऴित्तु विट्टाल्
अप्पोदु शावुमङ्गे अऴिन्दु पोहुम्;

सत्य सुनाऊँगा जो मैं जानता हूँ। पूर्वजों ने कहा कि सभी जीव ईश्वर हैं। मैंने भी उसे अन्तिम निष्कर्ष के रूप में मान लिया है। उनका कथन है, पर कार्य नहीं है ! अद्वैत स्थिति पाने के बाद क्या मौत भी होगी ? पूर्वजों के निर्दिष्ट अनेक सिद्ध अन्त पा गये, मर गये तथा मिट्टी बन गये। ४ (सिद्ध) लोग कहते हैं कि वे खोखले में रहते हैं, वन में कहीं झाड़ियों में रहते होंगे। पोदिहै पर्वत पर, गली में, चौराहे पर, छाया की तरह कुछ यहाँ-वहाँ दिखाई देते रहते हैं। कच्चे घाव को नोचने से लाभ नहीं है। देखो ! बुद्ध रोग के कारण मर गया। ब्राह्मण शंकर मरा। उसके बाद रामानुज चल बसा ! ५ क्रास में टाँका जाकर यीशु मरा। एक घातक बाण से कृष्ण मरा। बहुतों से प्रशंसित राम भी नदी में डूब गया। पृथ्वी पर मैं अमर रहूँगा ! देखोगे ! यह आसान है, इसे जानो। मैं असत्य भाषण नहीं करूँगा।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सभी जीव ईश्वर हैं पूर्वज बतलाते हैं।
हम निष्कर्ष रूप में उसको अपनाते हैं॥
वे केवल कहते हैं किन्तु नहीं करते हैं।
पा अद्वैत - दशा भी क्या कोई मरते हैं॥
सिद्ध अनेकों हुए पूर्वजों द्वारा वर्णित।
मिट्टी में मिल गये, मर गये, (रहे न जीवित)॥ ४ ॥
सिद्ध खोखलों में, झाड़ों में, वन में रहते।
(यही सदा से रहे हमारे पुरखे) कहते॥
गिरियों बीच, गली - कूचों में, चौराहों पर।
छाया से दिखलाई देते यहाँ - वहाँ पर॥
लाभ न कुछ कच्चे घावों को कुरेदने से।
(विष ही सदा निकलता है ज्यादा मथने से)॥
बुद्ध रोग - वश मरे, मरे भी ब्राह्मण शंकर।
रामानुज चल बसे, रहे कोई न यहाँ पर॥ ५ ॥
ईसा भी मर गये क्रास में टाँके जाकर।
मरे कृष्ण भी (एक व्याध के) शर को खाकर॥
विश्व - प्रशंसित मरे राम सरयू में धँसकर।
किन्तु सदा मैं अमर रहूँगा इस पृथ्वी पर॥
देखोगे यह सरल सत्य है, इसको जानो।
मैं असत्य - भाषण न करूँगा, इसको मानो॥
मरने पर भी झूठ न मनुजों से बोलूँगा।
मौत रहेगी दूर कभी कमज़ोर न हूँगा॥
लज्जा, चिन्ता, क्रोध, असत्य, कामना औ' भय।
इन सब असुरों के कुल का जब कर देंगे क्षय॥ ६ ॥

असुरों के नाम

मिटते भय - वासना मौत भी मिट जायेगी।
बतलाऊँगा, जब आवश्यकता आयेगी॥

मरूँगा, पर मानवों से झूठ नहीं बोलूँगा। कमज़ोर होना नहीं है; मौत भी नहीं है। सुनो, सुनो ! लज्जा, चिन्ता, क्रोध, असत्य को—(छोड़ देने से मौत चली जाएगी)। ६

असुरों के नाम

हम डर को तथा कामना को मिटा देंगे, तो वहाँ मौत भी 'नहीं' हो जायगी। बाक़ी (अन्य) पीछे कहूँगा। पहले क्रोध को जीत लें। फिर मेदिनी पर मृत्यु नहीं है। दूसरों के धन को तुच्छ मान लेने से चारों ओर रहनेवाला सारा, ईश्वर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मिच्चत्तैप् पिन् शॊल्वेन्, शिनत्तै मुन्ने
वॆन्ऱिडुवोर् मेदिनियिल् मरणमिल्लै;
तुच्च मॆनप् पिऱर् पॊरुळैक् करुदलाले
शूळ्न्द दॆल्लाम् कडवुळॆन्ऱ् चुरुदि शॊल्लुम्
निच्चय मान् ञानत्तै मऱत्त लाले
नेर्वदे मानुडर्क्कुच् चिनत्ती नॆञ्जिल् 7

शिनत्तिन् केडु

शिनङ् गॊळ्वार् तमैत्तामे तीयाङ् चुट्टुच्
चॆन्तिडुवा रोप्पावार्; शिनङ् गॊळ्वार् ताम्
मनङ् गॊण्डु तङ्गळुत्तैत् तामे वॆय्य
वाळ्कॊण्डु किळित्तिडुवार् मानुवाराम्
दिनङ् गोडि मुऱै मनिदर् शिनत्तिल् वीळ्वार्
शिनम्बिऱर् मेऱ् ऱाङ्गॊण्डु कवलैयाहच्
.....

शॆय्द दॆगित् तुयर् कडलिल् वीळ्न्दु शावार् 8
माकाळि पराशक्ति तुणैये वेण्डुम्
वैयहत्तिल् ॲदर्क्कुम् इनिक् कवलै वेण्डा
शाहाम लिरुप्पदुनम् शदुरालन्ऱु
शक्ति यरुळालन्ऱो पिऱन्दोम् पार्मेल्
पाहान् तमिळि निले पॊरुळैच् चॊल्वेन्
पारोर् नीर् केळीरो, पडैत्तोल् काप्पान्
वेहाद मनङ्गॊण्डु कळित्तु वाळ्वीर्
मेदिनिचि लेदुवन्दाल् ॲमक् कॆन्नॆन्ऱे 9

हैं। —ऐसा श्रुति कहती है। इस निश्चित महाज्ञान को भूल जाने से ही मानवों के मन में क्रोध की अग्नि जल उठती है। ७

क्रोध से हानि

क्रोध करनेवाले अपने आपको आग में जलाकर मरनेवाले के समान होंगे। क्रोध करनेवाले अपना गला अपनी इच्छा से भयंकर खड्ग से चीरनेवाले के समान होंगे। मनुष्य रोज़ करोड़ों बार क्रोध के वश में हो जाते हैं—क्रोध दूसरों पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यदि जग में लें जीत सभी जन क्रोध भयंकर।
तो न मृत्यु का भय होगा इस अवनीतल पर॥
जो पर-धन को तुच्छ मानता है जग में नर।
सर्वव्यापक भासित होता उसको ईश्वर॥
इस प्रकार का वाक्य भगवती श्रुति कहती है।
निर्मल मति है वही वाक्य जो यह गहती है॥
जो इस निश्चित महाज्ञान को करता विस्मृत।
उसके मन में क्रोधानल होता है जागृत॥ ७॥

क्रोध से हानि

इस जग में जो व्यक्ति क्रोध के करनेवाले।
हैं वे निज को जला आग में मरनेवाले॥
अपनी इच्छा से ले करके खड्ग भयंकर।
गला काटते अपने कर से हैं क्रोधी नर॥
कोटि बार प्रति-दिवस क्रोध के वश होते हैं।
क्रोध दूसरों पर करके (धीरज खोते हैं)॥
किये क्रोध में कर्म सोचकर चिन्तित होंगे।
डूब घोर दुख के सागर में वे मृत होंगे॥ ८॥

महाकालिका पराशक्ति यदि बने सहायक।
फिर जग में चिन्ता कोई न रही भयदायक॥
अमर नहीं हम हो सकते हैं निज-कौशल से।
मिला हमें नर-जन्म शक्ति की कृपा-विमल से॥
सरस चाशनी के समान मधुमयी तमिळ में।
सच्ची बात बताऊँगा (शुभ स्वर स्नेहिल में)॥
सुन लो भू-वासियो! करेगा सर्जक रक्षण।
जो न कभी निर्बल हो, कर लो, तुम ऐसा मन॥
यही सोचकर रहो सदैव अमित आनन्दित।
कुछ भी हो धरती पर हम क्यों होवें चिन्तित॥ ९॥

करके.....वे किये पर सोच करते-करते दुःखसागर में गिरकर डूब मरेंगे। ८ महाकाली, पराशक्ति का साथ हो जाना चाहिए। फिर संसार में किसी प्रकार की चिन्ता न होगी। अमर रहना भी हमारे कौशल से नहीं हो सकता। शक्ति (देवी) की कृपा से ही हम जनमे न! चाशनी के समान (मधुर) तमिळ में मैं सच्ची बात बताऊँगा। हे भूवासियो! सुनो न! सर्जक रक्षा करेगा। जो नहीं 'पके' (कमजोर न हो), ऐसा मन बना लो; आनन्दित रहो! यह सोचकर कि मेदिनी पर कुछ भी हो, हमारी बला से। ९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तेम्बामै

"बडकोडिङ् गुयर्न्दॆन्ने शाय्न्वा लॆन्ने
वान्पिरॆक्कुत् तॆम्कोडु" पार्मी दिङ्गे
विडमुण्डुम् जाहामलिरुक्कक् कऱ्ऱाल्
वेऱॆदुदान् यादायिन् ऍमक्किङ् गॆन्ने ?
तिडङ् गॊण्डु वाळ्न्दिडु वोम् तेम्बल् बेण्डा
तेम्बुवदिल् पयनिल्लै तेम्बित् तेम्बि
इडरुऱ्ऱु मडिन्दवर्हळ् कोडि कोडि
ऍदर्कुनिति अञ्जादीर् पुवियि लुळ्ळीर् ! 10

पॊऱुमैयिन् पॆरुमै

तिरुत्तणिहै मलैमेले कुमार देवन्
तिरुक्कॊलु वीऱ् ऱिरुक्कु मदम् पॊरुळैक् केळीर् !
तिरुत्तणिहै यॆन्बदिङ्गु पॊऱुमैयिन्पेर्
शॆन्दमिळ् कण्डीर् पहुदि : 'तणि' यॆनुञ्जॊल्
पॊरुत्तमुऱुन् दणिहैयिनाल् पुलमै शेरुम्
'पॊऱुत्तदरे पूमियिनै आळवार्' ऍन्नुम्
अरुत्तमिक्क पळमॊळियुम् तमिळि लुण्डाम्
अवनियिले पॊऱैयुडैयान् अवने तेवन् 11
पॊऱुमैयिनै अरक्कडवुळ् पुदल्व नॆन्नुम्
युदिट्टिरनुम् नॆडुनाळिप् पुविमेल् कात्तान्
इऱुदियिले पॊरुमै नॆऱि तवऱि विट्टान्
आदलार् पोर्पुरिन्दान् इळैया रोडे;

हताश नहीं होना

उत्तरापथ (उत्तरपर्वत) ऊपर उठ जाए तो क्या ? दक्षिणापथ (दक्षिणपर्वत) चंद्र तक नीचे (धँस) जाए, तो क्या ? पृथ्वी पर यहाँ विष खाकर भी अमर रहने की कला सीख लें, तो क्या कुछ भी हो, कहीं भी हो, तो हमारा क्या नुकसान हो जायगा ? हम साहस से जियेंगे ! हमें पस्त होकर रोना नहीं है । रोने से फ़ायदा नहीं है ! रो-रोकर (घट-घटकर) संकट उठाते हुए मरे करोड़ों, करोड़ों लोग । हे भूवासियो ! किसी से भी मत डरो ! १०

सब्र (क्षमा, शमन) की महत्ता

'तिरुत्तणिहै' पर्वत (जो मद्रास के पास मुरुगन या कार्तिकेय का दिव्य स्थल है) परकुमार देव दरबार लगाये बैठे हैं । उसका मतलब सुनो । तिरुत्तणिहै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हताश नहीं होना

अगर उत्तरापथ होवें उन्नत या अवनत।
तो क्या होगी लाभ - हानि हम सबको अधिगत ॥
दक्षिण की धरती पर भीषण विष को पीकर।
सीखे कला अमर रहने की यदि रजनीकर ॥
(तो हे! धरती पर बसनेवाले प्रबुद्ध नर !)।
हानि किसी की क्या होगी ? बतलाओ आकर ॥
साहस - पूर्वक सदा रहेंगे सब जीवित हम।
पस्त न होंगे (और नहीं उत्साह - रहित हम) ॥
हो सकता न कभी रोने से कोई भी हित।
रो - रोकर, संकट सह, हुए करोड़ों ही मृत ॥
हे भूतल - वासियो ! किसी से नहीं डरो तुम।
(निर्भय होकर साहस से जग में विचरो तुम) ॥ १० ॥

क्षमा, शमन की महत्ता

श्रेष्ठ "तिरुत्तणिहै" पर्वत पर होकर संस्थित।
सभा लगाकर कार्तिकेय हो रहे सुशोभित ॥
शब्द "तिरुत्तणिहै" तमिळ भाषा का सार्थक।
अर्थ सुनो है नाम "क्षमा" का पर्यायार्थक ॥
"तणि" नामक है धातु, उसी से हुआ विनिर्मित।
"शमन", "क्षमा", "कम करो", "बुझाओ", - अर्थ अपरिमित।
"युक्त शमन" से विद्वत्ता पायेंगे बुध - जन ॥
और बनेंगे "क्षमा" - शील वसुधा का शासन।
है ऐसी लोकोक्ति तमिळ - भाषा में सार्थक ॥
क्षमाशील ही होगा ईश्वर धरा - प्रशासक ॥ ११ ॥
धर्मपुत्र थे हुए युधिष्ठिर इस धरती पर।
बहुत दिनों तक किया क्षमा का पालन (सुन्दर) ॥
किन्तु अन्त में क्षमा-मार्ग से हुए विरत वह।
हुए इसी से अनुजों के सँग युद्ध - निरत वह ॥

'क्षमा' का दूसरा नाम है। वह श्रेष्ठ तमिळ शब्द है। धातु 'तणि' है। (तणि का अर्थ 'कम करो, बुझाओ' है। 'तणिकै' का अर्थ 'शमन' या 'क्षमा' है)। युक्त शमन से विद्वत्ता आयगी। क्षमा करनेवाले भूमि का शासन करेंगे—ऐसी एक सार्थक सूक्ति तमिळ भाषा में है। भूमि पर जो 'क्षांत' (क्षमाशील) होगा, वही ईश्वर होगा। ११ धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने भूमि पर रहकर बहुत दिन 'क्षमा' का पालन किया। पर अन्त में 'क्षमा' के मार्ग से वह च्युत हो गया। तभी उसने अपने छोटे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॊऱुमै यिन्ऱिप् पोर्शॆय्दु परद नाट्टैप्
पोर्क्कळत्ते अळित्तु विट्टुप् पुविय़िन् मीदु
वऱुमैयैयुङ् गलियिन्नैयुम् निऱुत्ति विट्टु
मलैमीदु शॆन्ऱान् पिन् वानञ् जॆन्ऱान् 12
आन्नालुम् पुविय़िन् मिशै उयिर्ह कॆल्लाम्
अनियाय मरणमॆय्दल् कॊडुमै यन्ऱो ?
तेन्नान् उयिरैविट्टुच् चाहलामो ?
शॆत्तिडऱ्कुक् कारणम् यादॆन् बीरेल्
कोन्नाहिच् चात्तिरत्तै याळु माण्बार्
जगदीश चन्द्र वसु कूऱुहिन्ऱान्
"ज्ञान्नानु बवत्तिलिदु मुडिबाङ् गण्डीर् !"
"नाडियिले अदिर्च्चि यिन्नाल् मरणम्" ऎन्ऱान् 13
कोबत्ताल् नाडियिले अदिर्च्चि बुण्डाम् !
कॊडुङ्गोबम् पेरदिर्च्चि; शिऱिय कोबम्
आबत्ताम् अदिर्च्चियिले शिऱियदाहुम्
अच्चत्ताल् नाडियॆलाम् अविन्दु पोहुम्;
ताबत्ताल् नाडियॆलाम् शिदैन्दु पोहुम्;
कवलैयिन्नाल् नाडियॆलाम् तळलाय् वेहुम्
कोबत्तै वॆन्ऱिडले पिऱबऱ्ऱैत् तान्
कॊल्व दऱ्कु वळियॆन् नान् कुऱित्तिट्टेन्ने 14

कडवुळ् ऎङ्गे इरुक्किऱार् ?

"शॊल्लडा ! हरियॆन्ऱ कडवुळ् ऎङ्गे ?
शॊल्" लॆन्ऱु हिरणियन्तान् उऱुमिक् केट्क
नल्लदॊरु महन् शॊल्वान्— "तूणिलुळ्ळान्
नारायणन् तुरुम्बि लुळ्ळान्" ऎन्ऱान्
वल्लपॆरुङ् गडबुळिला अणुवॊन् ऱिल्लै
महाशक्ति यिल्लाद वस्तु विल्लै

भाइयों के साथ युद्ध किया। 'क्षमा' न रहने से उसने भारत को युद्ध के द्वारा युद्धाजिर में मटियामेट किया; भूमि पर दरिद्रता तथा कलि को छोड़ दिया; फिर भी वह पर्वत पर गया और स्वर्ग चला गया। १२ तो भी भू पर जीवों का बेमौत मरना नृशंस है न ? क्या मधु-सम प्राण छोड़कर मरा जाय ? इस मृत्यु का क्या कारण है ? यह पूछो तो, अपने क्षेत्र में जो वे राजा रहे, वे महान जगदीशचन्द्र बसु कहते हैं— ज्ञानानुभव से प्राप्त निष्कर्ष है यह ! नस पर आघात का होना ही मौत है। १३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

धर्मराज हो सके अन्त तक नहीं क्षमा - रत।
तभी युद्ध नें किया उन-सहित भारत गारत॥
दरिद्रता, कलियुग इनको फैलाकर भूपर।
स्वयं स्वर्ग को किया गमन हिमगिरि पर चढ़कर॥ १२ ॥

है नृशंसता मरना जीवों का भूतल पर।
बिना मौत मरना, या मधु - सम - जीवन तजकर॥
भला मृत्यु का क्या कारण ? इस जटिल प्रश्न पर।
बसु जगदीशचन्द्र कहते हैं वैज्ञानिक वर॥
उनके अनुभव से निकला निष्कर्ष यही है।
नस ऊपर आघात उन्होंने मौत कही है॥ १३ ॥

क्रोधित होने पर लगता आघात नसों पर।
अतिशय भीषण क्रोध उग्र आघात भयंकर॥
कम क्रोधित होने को भी विपदा ही मानो।
है जितना कम क्रोध घात उतना कम जानो॥
भय से सारी नसें नष्ट - सी हो जाती हैं।
नसें छिन्न - विच्छिन्न दुःख से हो जाती हैं॥
विजय क्रोध पर प्रबल पराजय दुर्गुण-दल की।
सांकेतिक दे चुका सूचना इसके बल की॥ १४ ॥

ईश्वर कहाँ है ?

पूछा जभी हिरण्यकशिपु नें गुरु - गर्जन कर।
कह रे ! कहाँ बसा है वह हरि नामक ईश्वर॥
तो सपूत ने कहा समर्थ महान् महेश्वर।
नारायण खम्भे में है, तृण के भी अन्दर॥
ऐसी कोई वस्तु नहीं इस जगती - तल पर।
महाशक्ति वह नहीं व्याप्त हो जिसके भीतर॥

क्रोध से नसों पर आघात हो जाता है। भयंकर क्रोध अत्यन्त घोर आघात है ! कम क्रोध भी विपदा है, आघात कम होता है, उतना ही। डर से नसें बिल्कुल नष्ट हो जाती हैं। दुखताप से सारी नसें छिन्न हो जाती हैं। क्रोध पर जीत पाना, अन्यों (दुर्गुणों, घातक तत्त्वों) को मारने का मार्ग है —इसी का मैंने संकेत किया है। १४

ईश्वर कहाँ है ?

'कह रे ! हरि नाम का ईश्वर है कहाँ ? कह दे'—ऐसा हिरण्यकशिपु ने गरजकर पूछा, तो वह सत्पुत्र (प्रह्लाद) बोला —नारायण स्तम्भ में है, नारायण तृण (तिनके) में है। जिसमें समर्थ महान ईश्वर नहीं हो, ऐसी कोई वस्तु नहीं है। ऐसी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अल्ललिल्लै अल्ललिल्लै अल्ललिल्लै;
अनैत्तुमे दैय्व मॆन्ऱाल् अल्ल लुण्डो ? 15
केळप्पा शोडने कळुदै यॊन्ऱैक्
'कोळान' पन्ऱि यिनैत् तेळैक् कण्डु
ताळैप् पार्त् तिरुकरमुज् जिरमेऱ् कूप्पिच्
चङ्गर शङ्गर वॆन्ऱु पणिदल् वेण्डुम्
कूळत्तै मलत्तिनैयुम् वणङ्गल् वेण्डुम्
कूडि निन्ऱ पॊरुळ नैत्तिन् कूट्टम् दैय्वम्
मीळत्तान् इदैत्तॆळिवा विरित्तुच् चॊल्वेन्
बिण् मट्टुम् कडवुळन्ऱु मण्णुम् अःदे 16
शुत्त अऱिवे शिव मॆन् ऱुरैत्तार् मेलोर्
शुत्त मण्णुम् शिवमॆन्ऱे उरैक्कुम् वेदम्
वित्तहनाम् कुरुशिवमॆन् ऱुरैत्तार् मेलोर्
वित्तैयिलाप् पुलैयनु मःदॆन्नुम् वेदम्
पित्तरे अनैत्तुयिरुङ् गडवुळॆन्ऱु
पेशुवदु मॆय्यानाल् पॆण्डि रन्ऱुम्
नित्तनुम दरुहिनिले कुळन्दै यॆन्ऱुम्
निऱ्पनवुन् दैय्व मन्ऱो निहळ्त्तु वीरे ? 17
उयिर्ह ळॆल्लाम् दैय्व मन्ऱिप् पिरवॊन्ऱिल्लै
ऊर्वनवुम् पर्प्पनवुम् नेरे दैय्वम्
पयिलु मुयिर् वहैमट्टु मन्ऱि यिङ्गु
पार्क्किन्ऱ पॊरुळॆल्लाम् दैय्वम् कण्डीर्
वॆयिलळिक्कुम् इरवि मदि बिण्मीन् मेहम्
मेलुमिङ्गु पलपलवाम् तोऱ्ऱङ् गॊण्डे
इयलुहिन्ऱ जडप्पॊरुळ्हळ् अनैत्तुम् दैय्वम्
अॆळुदुकोल् दैय्व मिन्द अॆळुत्तुम् दैय्वम् ! 18

वस्तु नहीं है, जिसमें महाशक्ति नहीं हो। सभी को ईश्वर मान लो, तो संकट नहीं, संकट नहीं, संकट नहीं। तो फिर क्या कोई संकट रहेगा ? १५ सुनो रे शिष्य ! गधे को, नीच सूअर को, या बिच्छू को देखो तो उसके पैरों पर दृष्टि लगाकर दोनों हाथ जोड़े सिर पर धारण करके 'शंकर, शंकर' का उच्चारण करते हुए नमस्कार करना चाहिए। मैल को, मल को भी नमस्कार करना चाहिए। सभी मिले पदार्थों का संघात ईश्वर है। फिर इसको साफ़ करके विस्तार के साथ कहूँगा। स्वर्ग ही ईश्वर नहीं —पृथ्वी भी ईश्वर है १६ शुद्ध ज्ञान को ही 'शिव' कहते हैं बड़े लोग। शुद्ध मिट्टी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यदि मन से लो मान सभी को तुम परमेश्वर।
तो सब संकट कटें मिटें दुख - द्वन्द्व भयंकर ॥ १५ ॥

गर्दभ को, शूकर को, या बिच्छू को लखकर।
उनके पैरों पर सुदृष्टि अपनी सुस्थिर कर
दोनों हाथ जोड़कर अपने सिर पर धरकर।
अपने मुख से उच्चारण कर "शंकर, शंकर" ॥
सुन, रे शिष्य! अरे मल का भी तू वंदन कर।
सभी पदार्थों का संघात - रूप है ईश्वर ॥
फिर इसका सुस्पष्ट करूँगा विस्तृत वर्णन।
नहीं स्वर्ग ही देव धरा भी देव सुपावन ॥ १६ ॥

शुद्ध ज्ञान को ही महान् जन शिव बतलाते।
शुद्ध मृत्तिका में भी शिव, यह वेद बताते ॥
गुरु है शिव का रूप, कथन करते विद्वज्जन।
गुरु है शिव का रूप, इसे बतलाते गुरुजन ॥
जो विद्या से हीन, नीच, चांडाल, अपावन।
वह भी है शिव - रूप बताते वेद पुरातन ॥
सभी जीव ईश्वर - स्वरूप यदि सत्य कथन यह।
तो पत्नी, पार्श्वस्थ पुत्र, क्या ईश नहीं कह? ॥ १७ ॥

सभी जीव ईश्वर - स्वरूप से भिन्न नहीं हैं।
उड़ने और रेंगनेवाले जन्तु वही हैं ॥
यह न समझना ईश्वर केवल प्राणी चेतन।
ईश्वर का ही रूप सभी जड़ दृश्य वस्तु गण ॥
नव - प्रकाश - दायक रवि, शशि, नक्षत्र, मेघ - गण।
ईश्वर ही के रूप सभी जड़ द्रव्य अचेतन ॥
मेरी यह लेखनी इसे भी ईश्वर जानो।
और लेख को भी तुम परमेश्वर ही मानो ॥ १८ ॥

भी शिव है —यह वेद कहता है। विद्वान् गुरु को 'शिव' कहते हैं बड़े लोग। 'विद्याहीन चांडाल भी वही (शिव है)' —यह वेद कहता है। हे पागल, सभी जीवों को ईश्वर कहना सत्य है, तो फिर स्त्री, नित्य पार्श्वस्थ शिशु आदि जो हैं, क्या वे भी ईश्वर नहीं हैं? कहो। १७ सभी जीव ईश्वर के सिवा कुछ अन्य नहीं हैं। रेंगनेवाले, उड़नेवाले सभी जन्तु बिलकुल ईश्वर ही हैं। जीवित प्राणी ही नहीं, पर दृश्य सभी वस्तुएँ देव हैं —इसे मान लो। धूप देनेवाला सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, मेघ और कितने ही अन्य रूपधारी (पदार्थ) हैं, जड़ हैं — वे सभी ईश्वर ही हैं। लेखनी ईश्वर है; यह लेखन भी देव है। १८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुरुक्कळ् तुदि (कुळ्ळच् चामि पुहळ्)

ञानगुरु देशिहनैप् पोऱ्ऱु हिन्ऱेन्
नाडनैत्तुन् दानावान् नलिनि लादान्
मोनगुरु तिरुवरुळाल् पिऱप्पु माऱि
मुऱ्ऱिलुम् नाम् अमरनिलै शूऴ्न्दु विट्टोम्
तेननैय पराशक्ति तिऱत्तैक् काट्टिच्
चित्तिनियल् काट्टिमनल् तळिवु तन्दाळ्
वानहत्तै इव्वुलहि लिरुन्दु तीण्डुम्
वहैयुणर्त्तिक् कात्त पिरान् पदङ्गळ् पोऱ्ऱि ! 19
अॅप्पोदुम् गुरुचरणम् निनैवाय्, नॅञ्जे !
अॅम्बॅरुमान् चिदम्बर देशिकन् ताळ् अॅण्णाय्
मुप्पाऴुङ् गडन्द पॅरु वॅळियैक् कण्डान्
मुत्ति यॅनुम् वानहत्ते परिदि यावान्
तप्पाद शार्न्द निलै अळित्त कोमान्
तवम् निऱैन्द माङ्गॊट्टैच् चामित् तेवन्
कुप्पाय ञानत्ताल् मरण मॅन्ऱ
कुळिर् नीक्कि यॅनैक् कात्तान् कुमार देवन् 20
देशत्तार् इवन् पॅयरैक् कुळ्ळच् चामि
देवर् पिरान् अॅन्ऱुरैप्पार्; तॅळिन्द ञानि
पाशत्तै अऱुत्तु विट्टान् पयत्तैच् चुट्टान्
पावनैयाल् परवॅळिक्कु मेले तॊट्टान्
नाशत्तै अऴित्तु विट्टान् यमनैक् कॊन्ऱान्
ञान गङ्गै तनैमुडिमो देन्दि निन्ऱान्
आशैयॅनुम् कॊडिक्कॊरु ताळ् मरमे पोन्ऱान्
आदियवन् शुडर् पादम् पुहळ्हिन् ऱेन्ने 21

गुरु की स्तुति (वामन स्वामी का यश)

मैं ज्ञानगुरु देशिक की वन्दना करता हूँ। सारा देश उसका है और वह अक्षय है। मौन-गुरु की कृपा से हम जन्म बदलकर बिलकुल अमर स्थिति को प्राप्त हो गये। मधुसम पराशक्ति ने अपना कौशल दिखलाकर, सिद्धि का तत्त्व बताकर मन को असंशयता दिला दी। आकाश को इस संसार में रहकर स्पर्श करने का उपाय बताकर, जिन्होंने हमारी रक्षा की है, उनके चरणों को मेरा नमस्कार है। १९ रे मन ! सदा गुरु-चरण-स्मरण करो। हमारे प्रभु चिदंबर-देशिक के चरणों का स्मरण करो। तीनों शून्य पार करके जिसने विशाल आकाश को देख लिया, वह मुक्ति-गगन का सूर्य होगा। अचूक योगस्थिति दिलानेवाले राजा, तपस्या में पूर्ण, माङ्गोट्टे स्वामी देव हैं ('माङ्गोट्टे' [illegible] कर्तें के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गुरु की स्तुति (वामन स्वामी का यश)

करता हूँ मैं आज ज्ञानगुरु 'देशिक' - वन्दन।
है सब उसका देश और वह है अक्षय - तन॥
मौन शान्त गुरु - कृपा प्राप्त कर, जन्म बदल कर।
अमरस्थिति को प्राप्त हो गये हैं हम सब नर॥
मधु - सम पराशक्ति ने निज कौशल दिखलाकर।
मन निःसंशय किया सिद्धि का तत्त्व बताकर॥
इस जग में रहकर, संस्थित हो अवनी - तल पर।
नभ के छूने के उपाय को भी बतलाकर॥
किया जिन्होंने सभी संकटों से मम रक्षण।
बार - बार करता उनके चरणों का वन्दन॥ १९ ॥
रे मेरे मन ! गुरु-चरणों का सदा स्मरण कर।
मम प्रभुवर्य चिदम्बर देशिक के पग सिर धर॥
लखा विशद नभ जिसने तीनों शून्य पार कर।
कहलायेगा मुक्ति - गगन का वह (नव) दिनकर॥
अति अचूक योग-स्थिति देनेवाले नृपवर।
"माङ्गोट्टै स्वामी" प्रसिद्ध जो दिव्य देव वरः॥
बदला करता कुर्ते के सम जीव जीर्ण तन।
आत्मा अविनश्वर है दे यह ज्ञान सनातन॥
विकट मृत्यु - भय की शीतलता से रक्षा कर।
श्री कुमार ने बचा लिया मुझको करुणा कर॥ २० ॥
इनका नाम "देवधाता श्री कुळच्चामि" कहते सब जन।
जिसको कहते हिन्दी-भाषा-भाषी हैं स्वामी वामन॥
ये अति दिव्य विमल ज्ञानी हैं भ्रम-पाशों के नाशक हैं।
भय को भस्मीभूत बनाते परम व्योम के स्पर्शक हैं॥
ये विनाश के भी नाशक हैं, अंतक के भी अंतक हैं।
दिव्य ज्ञान-गंगा की धारा धारे ये निज मस्तक हैं॥
आशा की लतिका के हित में ये विनम्र-तर तरुवर हैं।
उज्ज्वल चरणों का यश गाता आदिपुरुष वह ईश्वर हैं॥ २१ ॥

ज्ञान (यानी 'शरीर कुर्ते के समान है, उसे उतारकर फेंक दो' वाला ज्ञान) से मृत्यु-भय की ठंड को दूर करके कुमार देव ने मुझे बचा दिया। २० देशवासी लोग इनके नाम को कुळळच्चामि (वामन स्वामी) देवधाता कहते हैं। वह विमल ज्ञानी है। उसने पाश को काट दिया; भय को जला दिया; 'भावना' के बल पर आकाश पर जो है उसे छू दिया। उसने नाश का नाश कर दिया; यम का वध कर दिया। वह ज्ञान-गंगा को चोटी पर धारण करता है। वह आशा-लता के लिए झुके तरु के समान है। वह आदि (पुरुष) है। मैं उसके उज्ज्वल चरणों का यश गाता हूँ। २१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वायिनाल् शॊल्लिडवुम् अडङ् गादप्पा
वरिशयुडन् ऎऴुदिवैक्क वहैयु मिल्लै
आयिरङ्रैच् चङ्गिलियाल् अळक्क लामो ?
आनगुरु पुहऴिनै नाम् वहुक्क लामो ?
आयिर नूल् ऎऴुदिडिनुम् मुडिवुरादाम्
ऐयनवन् पॆरुमैयै नान् शुरुक्किच् चोल्वेन्
काय कल्पञ् जॆय्दु विट्टान्; अवन् वाऴ् नाळैक्
कणक्किट्टु वयदुरैप्पार् यारुम् इल्लै 22

गुरु दरिशनम्

अन्ऱॊरु नाट् पुदुवैनहर् तनिले कीर्त्ति
अडैक्कलञ् जेर् ईश्वरन् तर्मराजा
ऎन्ऱ पॆयर् वीदियिलोर् शिऱिय वीट्टिल्
इराजारा मैयऩैन्ऱ नाहैप् पार्प्पान्
मुन्ऱनदु पिदा तमिऴिल् उपनिडदन्तै
मॊऴि पॆयर्त्तु वैत्तदनैत् तिरुत्तच् चॊल्लि
ऎन्ऱनै वेण्डिक् कॊळ्ळ यान् शॆन्ऱाङ्गण्
इरुक्कैयिले अङ्गुवन्दान् कुळ्ळच् चामि 23
अप्पोदु नान् कुळ्ळच् चामि कॆयै
अन्बुडनै पऱियिदु पेशलुऱ्ऱेन्
"अप्पनै ! देशिकनै ! आनि ऎन्बार्
अवनियिले शिलर् निन्नैप् पित्तन् ऎन्बार्
शॆप्पुरुनल् लष्टांग योग शित्ति
शेर्न्दवनैन् ऱुनैप् पुहऴ्वार् शिलरैन् मुन्नै
ऒप्पनैहळ् काट्टामल् उण्मै शॊल्वाय्
उत्तमनै ! ऎनक्कु निनै उणर्त्तुवाये 24

वर्णन में (उसका यश) नहीं आ (समा) सकता है। हे तात ! क्रम से लिखने का मार्ग भी नहीं है। क्या सूर्य को साँकल से मापा जा सकता है? क्या ज्ञान-गुरु की महिमा की श्रेणी बनायी जा सकेगी? हजार किताबों में लिखो, तो भी वह पूरा नहीं हो सकता। मैं स्वामी के यश को संक्षेप में कहूँगा—उन्होंने कायाकल्प कर लिया है। उनकी आयु को गिनकर बता सकनेवाला कोई नहीं है। २२

गुरु-दर्शन

तब एक दिन, 'कीरति-अडैक्कलजेर ईश्वरन धर्मराज' नामक एक सड़क पर स्थित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उनके यश का नहीं किया जा सकता वर्णन।
और नहीं भी हो सकता है क्रम से लेखन॥
नहीं सूर्य को साँकल से मापा जा सकता।
कौन ज्ञान - गुरु - महिमा की सीढ़ी पा सकता॥
ग्रंथ हज़ारों लिखा न होगा पूरा प्रकथन।
करता हूँ संक्षिप्त रूप से मैं यश - वर्णन॥
है उनने काया का काया - कल्प लिया कर।
उनकी आयु न बतला सकता कोई भी नर॥ २२ ॥

गुरु-दर्शन

"जेर् ईश्वरन् धर्मराज कीरति (सु) अडैक्कल"।
इस नाम से प्रसिद्ध सड़क थी वहाँ (अति नवल)॥
उस पर "नाग - पट्टणम्" नामक एक स्थान था।
वहाँ विप्र "राजा रामय्यन्" का मकान था॥
वह ब्राह्मण निज पूज्य पिता द्वारा अनुवादित।
एक उपनिषद् का लाया अनुवाद, विनय - युत॥
की प्रार्थना विप्र नें उसको सुधारने की।
की मैंने स्वीकार प्रार्थना सँवारने की॥
वह अनुवाद सही करने हित वहाँ गया जब।
उसी स्थान पर थे आये वामन स्वामी तब। २३ ॥
वामन स्वामी का, मैंने प्रेम से पकड़, कर।
यों कहना आरंभ किया मन में प्रमोद भर॥
हे देशिक ! आपको कह रहे हैं सब ज्ञानी।
और बताते कुछ पागल भी हैं, अज्ञानी॥
कुछ अष्टांग - योग - ज्ञाता आपको बताते।
सिद्ध बताकर करें प्रशंसा, नहीं अघाते॥
अलंकार - रंजित बातें मुझको न सुनायें।
कहकर उत्तम सत्य मुझे सुस्पष्ट बतायें॥ २४ ॥

छोटे घर में राजा रामय्यन् नाम के एक नागपट्टणम् (स्थान के निवासी) के ब्राह्मण ने मुझसे अपने पिता द्वारा कृत उपनिषद् के अनुवाद को सुधारने की प्रार्थना की। मैं वहाँ गया और जब मैं वहाँ रहा, तब वामन स्वामी वहाँ आये। २३ तब मैंने उन वामन स्वामी के हाथ को प्रेम से पकड़कर, यों कहना आरम्भ किया। हे तात ! देशिक ! लोग आपको ज्ञानी कहते हैं। भूमि में कुछ लोग (विक्षिप्त) कहनेवाले भी हैं। मेरे सामने कुछ लोग आपको 'अष्टांग-योग-सिद्ध' कहकर आपकी प्रशंसा भी करते हैं। अलंकार-युक्त (भाषा में) वार्ताएँ न कहते हुए हे उत्तम ! सत्य कहिए। अपने को मुझे स्पष्ट रूप से जता दीजिए। २४ कौन हैं आप ? आप में क्या सामर्थ्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यावऩ् नी ? निऩक्कुळ्ळ तिऱमै ऎऩ्ऩे ?
यादुणर्वाय् कऩ्दै शुऱ्ऱित् तिरिवदॆऩ्ऩे ?
देवऩैप्पोल् विऴिप्प दॆऩ्ऩे शिऱियारोडुम्
तॆरुविले नाय्हळोडुम् विळैयाट्टॆऩ्ऩे ?
पावऩैयिल् पित्तरैप्पोल् अलैवदॆऩ्ऩे ?
परमशिवऩ् पोलुरुबम् पडैत्त दॆऩ्ऩे ?
आवलुऱ्ऱु निऩ्ऱ दॆऩ्ऩे ? अऱिन्द दॆल्लाम्
आरियऩे ऎऩक्कुणर्त्त वेण्डुम्" ऎऩ्ऱेऩ् 25
पऱ्ऱियहै तिरुहियऩ्दक् कुळ्ळच्चामि
परिन्दोडप् पार्त्ताऩ् याऩ् विडवे यिल्लै
शुऱ्ऱु मुऱ्ऱुम् पार्त्तुप् पिऩ् मुऱुवल् पूत्ताऩ्
तूयतिरुक् कमलपदत् तुणैयैप् पार्त्तेऩ्
कुऱ्ऱ मऱ्ऱ देशिकऩुम् तिमिऱिक् कॊण्डु
कुबित्तोडि अव्वीट्टुक् कॊल्लै शेर्ऩ्दाऩ्
मऱ्ऱवऩ् पिऩ् याऩोडि विरैऩ्दु शॆऩ्ऱु
वाऩवऩक् कॊल्लैयिल् मऱित्तुक कॊण्डेऩ् 26

उपदेशम

पक्कत्तु वीडिडिऩ्दु शुबर्हळ् वीऴ्ऩ्द
पाऴ्मऩै यॊऩ् ऱिरुऩ्ददङ्गे; परम योगि
ऒक्कत्तऩ् अरुळ् विऴियाल् ऎऩ्ऩै नोक्कि
ऒरु कुट्टिच् चुवर् काट्टि परिदि काट्टि
अक्कणमे किणऱ्ऱुळ् तऩ् विम्बङ् गाट्टि
'अऱिदि कॊलो ?' ऎऩक् केट्टाऩ्; 'अऱिन्देऩ्' ऎऩ्ऱेऩ्

है ? आप क्या जानते हैं ? आप गुदड़ी पहनकर क्यों फिरते हैं ? 'देव' के समान क्यों ताकते हैं ? छोकरों के तथा सड़कों में कुत्तों के साथ क्रीड़ा क्यों करते हैं ? भावना (कल्पना) में पागल के समान घूमते-फिरते क्यों हैं ? आपने परमेश्वर के समान क्यों वेश धारण किया है ? किसकी अभिलाषा लेकर खड़े हैं ? जो भी जानते हैं, हे आर्य ! वह सब मुझे समझाएँ । —कहा मैंने । २५ पकड़ा हुआ हाथ छोड़कर वे वामन स्वामी भागना चाहते थे । पर मैंने नहीं छोड़ा । चारों ओर दृष्टि दौड़ाने के बाद वे मुस्कुराये । मैंने उनके चरण-कमल-द्वय पर अपनी आँख लगायी । तो विमल देशिक ने भी झटका देकर अपना हाथ छुड़ा लिया । फिर वे छलाँग मारकर भागे और उस टूटे घर के पिछवाड़े पहुँच गये । मैं भी उनके पीछे-पीछे दौड़ता गया और उन 'आकाशवासी' को वहाँ रोककर खड़ा रहा । २६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

क्या सामर्थ्य आपमें ? औ' कौन आप हैं ? ।
है क्या ज्ञान आपको ? (कैसे मौन आप हैं) ? ।।
गुदड़ी पहने हुए फिर रहे हैं क्यों गुरुवर ? ।
देव - समान ताकते क्यों रहते हैं प्रभुवर ? ।।
कुत्तों और छोकरों से मिलकर सड़कों पर ।
क्यों क्रीड़ा करते रहते संतत विस्मय - कर ।।
विविध - भावना - ग्रस्त पागलों से क्यों फिरते ? ।
परमेश्वर के तुल्य वेष क्यों धारण करते ? ।।
खड़े हुए क्या अभिलाषा ले ? यह बतलायें ।
जो भी हैं जानते, आर्य ! वह सब समझायें ।। २५ ।।
अपने पकड़े हुए हाथ को खींच छुड़ाकर ।
वामन स्वामी थे भागना चाहते सत्वर ।।
हमसे अपना हाथ किसी विधि छुड़ा न पाये ।
चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर फिर मुसकाये ।।
मैंने दृष्टि जमायी उनके चरण - कमल पर ।
छुड़ा लिया उनने अपना कर झटका देकर ।।
फिर वे तेजी से भागे लम्बी छलाँग भर ।
पहुँच गये पिछवाड़े में वे उस टूटे घर ।।
पहुँच धर लिया "नभवासी" को दौड़ वहाँ पर ।
खड़ा हो गया था मैं उनकी राह रोक कर ।। २६ ।।

उपदेश

वहाँ एक घर का (उजाड़ निर्जन) खँड़हर था ।
दीवारें थीं टूट गिर गईं ऐसा घर था ।।
उन योगी ने कृपादृष्टि से मुझे देखकर ।
दृष्टि फिरायी भग्न - भित्ति पर और सूर्य पर ।।
इनकी ओर उठा उँगली संकेत किया फिर ।
और कुएँ में दिखलाया प्रतिबिम्ब निज - स्थिर ।।
पूछा उसने मुझसे क्या तुमने कुछ जाना ? ।
मैं बोला संकेत आपका है पहचाना ।।

उपदेश

वहाँ एक घर का खण्डहर था, उसकी दीवारें टूटकर गिर गयी थीं। उन परमयोगी ने 'सम रूप' से मुझे कृपादृष्टि से देखा। फिर एक टूटी दीवार तथा सूर्य की ओर उँगली से इशारा किया। उसी क्षण, वहाँ कुएँ में उन्होंने अपना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मिक्क महिळ् कॊण्डवनुम् शॆन्ऱान्; यानुम्
वेदान्द मरत्तिलॊरु वेरैक् कण्डेन् 27
देशिकन्कै काट्टि यॆन्क् कुरैत्त शॆय्दि
शॆन्दमिऴिल् उलहत्तार्क् कुणर्त्तु हिन्ऱेन्
"वाशियैनी कुम्बहत्ताल् वलियक् कट्टि
मण्बोले शुवर्पोले वाळ्दल् वेण्डुम्
तेशुडैय परिदियुरुक् किणऱ्ऱिनुळ्ळे
तॆरिवदु पोल् उनक्कुळ्ळे शिवनैक् काण्बाय्
पेशुवदिल् पयनिल्लै अनुब वत्ताल्
पेरिन्बम् अॆय्दुवदे ज्ञानम्" ऎन्ऱान् 28
कैयिलॊरु नूलिरुन्दाल् विरिक्कच् चॊल्वेन्
करुत्तै यदिल् काट्टिडुवेन्; वानैक् काट्टि
मैयिलहु विऴियाळिन् काद लॊन्ऱे
वैयहत्तिल् वाळुनॆरि यॆन्ऱु काट्टि
ऐयनैनक् कुणर्त्तियन पलवाम् ज्ञानम्
अदऱ्कवन् काट्टिय कुरिप्पो अनन्द माहुम्
पॊय्यऱिया ज्ञानगुरु शिदम् बरेशन्
पूमिवि ना यहन्कुळ्ळच् चामि यङ्गे 29
मऱ्ऱॊरुनाळ् पऴङ्गन्बै यऴुक्कु मूट्टै
वळमुऱवे कट्टियवन् मुदुहिन् मीदु
कऱ्ऱवर्हळ् पणिन्देत्तुम् कमल पादक्
करुणैमुनि शुमन्दु कॊण्डॆन् नदिरे वन्दान्
शऱ्ऱुनहै पुरिन्दवन् पाल् केट्क लानेन्
'तम्बिरानै इन्दत् तहैमै ऎन्नै ?
मुऱ्ऱुमिदु पित्तरुडैच् चॆय्है यन्ऱो ?
मूट्टैच्चुमन् दिडुवदॆन्नै ? मॊऴिवाय्' ऎन्ऱेन् 30

प्रतिबिम्ब दिखाया । 'क्या इसे जानते हो ?' यह पूछा । तो मैंने कहा कि मैं समझ गया । बहुत खुश होकर वे चले गये । मैंने भी वेदान्त-दर्शन की एक जड़ को पहचान लिया । २७ देशिक (स्वामी, साधु, महात्मा) ने इन्हें दिखाकर, जो इंगित किया, उसके (द्वारा सूचित) सन्देश को मैं लोगों के वास्ते साफ़ तमिऴ में समझाऊँगा । 'बाशि' को कुंभक से खूब बाँधकर मिट्टी के समान या दीवार के समान जीवन बिताना चाहिए । कुएँ में तुम तेजोमय सूर्य को देखते हो, वैसे ही अपने अन्दर 'शिव' को देख सकते हो । बोलने से फ़ायदा नहीं है । अनुभव से परम सुख प्राप्त करना ही ज्ञान है । २८ यदि हाथ में एक ग्रंथ रहा तो मैं विस्तार से बता सकूँगा । अपने मन्तव्य को उसमें साफ़ कहूँगा । आकाश को दिखाकर और अंजन-लगी आँखोंवाली

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चले गये वे (योगिवर्य मुझ पर) खुश होकर।
जान लिया वेदान्त - शास्त्र का मूल (मनोहर) ॥ २७ ॥

जो देशिक स्वामी ने कर संकेत सुझाया।
उसे तमिऴ में साफ़ बताता हूँ (मनभाया) ॥
कुंभक से इंद्रियाँ ("वाशि") को सविधि बाँधकर।
मिट्टी, भित्ति - समान बिताओ जीवन नरवर ! ॥
कूप - मध्य ज्यों बिंबित रवि का बिंब मनोहर।
उसी भाँति तुम 'शिव' को देखो अपने अन्दर ॥
बहुत बोलने से न लाभ कुछ भी होता है।
अनुभव का सुख परम ज्ञान का शुभ सोता है ॥ २८ ॥

लिखकर ग्रंथ इसे विस्तृत कर बतलाऊँगा।
मैं उसमें मंतव्य साफ़ निज समझाऊँगा ॥
आर्य महात्मा ने नभ - तल की ओर दिखाकर।
समझाया यह मुझे अनन्त ज्ञान जतलाकर ॥
अंजन - अंजित - नयनी का शुभ प्रेम भूमि पर।
है (मानव) जीवन का सच्चा मार्ग (मनोहर) ॥
इसके अतिरिक्त गुप्त सद - ज्ञान अपरिमित हैं।
जिनसे ज्ञानी वामन स्वामी - योगिराज हैं ॥
वे असत्य - अनभिज्ञ ज्ञान - गुरु, भूमि - विनायक।
वामन स्वामी चिदम्बरेश (ज्ञान - गुण - दायक) ॥ २९ ॥

फटे गूदड़ों का मैले कपड़ों का गट्ठर।
बाँध - बूँधकर उसको लादे हुए पीठ पर ॥
कमल - चरण, करुणामय, विद्वद् - वन्द्य, सुहाये।
इस प्रकार का रूप लिये मम सम्मुख आये ॥
यह विलोक कर मैंने उनसे पूछा हँसकर।
महाराज ! क्या हाल बनाया यह विस्मय - कर ॥
बतलायें क्यों आप ढो रहे हैं यह गट्ठर।
यह तो काम पागलों जैसा, अरे ! सरासर ॥ ३० ॥

का प्रेम ही भूमि पर जीने का सच्चा मार्ग है —यह जताकर आर्य महात्मा ने जो-जो मुझे समझाये, वे 'ज्ञान' अनेक हैं। तदर्थ जो इंगित किये गये वे भी अनन्त हैं। असत्य न जाननेवाले ज्ञान-गुरु चिदम्बरेश, भुवन-नायक, वामन स्वामी— २९ दूसरे एक दिन पुराना गूदड़ तथा मैले कपड़ों का बड़ा गट्ठर अपनी पीठ पर बाँधे हुए, वे विद्वद्वंद्य कमलपाद करुणामय मुनि मेरे सामने आये। मैंने कुछ हँसते हुए उनसे पूछा—, हे महाराज ! यह क्या हाल है ? यह बिलकुल पागल का काम है न ! आप यह गट्ठर क्यों ढो रहे हैं ? —मैं बोला। ३० मुस्कराकर आर्य (श्रेष्ठ स्वामी) ने उत्तर में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुत्तहैपूत् तारियतुम् पुहलु हित्तरान्
'पुरत्ते नान् शुमक्किन्रेन्; अहत्तितुळळे
इत्तनवीरु पळङ्गुप्पै शुमक्कि रायनी'
ऍन्रुरैत्तु विरैन्दवनुम् एहि विट्टान्
मत्तवन् शॊर् पॊरुळित्तैयान् कण्डु कॊण्डेन्
मत्तति तुळ्ळे पळम् बॊय्हळ् वळर्प्पदाले
इत्तलुरर मान्दरैल्लाम् मडिवार् वीणे
इरुदयत्तिल् त्रिडुदलैयै इशैत्तल् वेण्डुम् 31
शॆन्रदिति मॊळादु मूडरे नीर्
ऍप्पॊदुम् शॆन्रदैये शिन्दै शॆप्दु
कॊन्रु ळिक्कुम् कवलैयॆतुम् कुळियिल् बीळ्न्दु
कुमैयादरि शॆन्रदनैक् कुरित्तल् वेण्डा !
इन्रु पुदिदाय्प् पिरन्दोम् ऍन्रु नॆञ्जिल्
ऍण्णमदैत् तिण्णमुर इशैत्तुक् कॊण्डु
तिन्रुविळै याडियिन्बुर् रिरुन्दु वाळ्वीर्;
अःदिन्रिच् चॆन्रदैये मीट्टुम् मीट्टुम् 32
मॆन्मेलुम् निनैन्दळुदल् वेण्डा अन्दो !
मेदैयिल्ला मानुडरे मेलुम् मेलुम्
मॆन्मेलुम् पुदिय कार् रॆम्मुळ् वन्दु
मॆन्मेलुम् पुदियबुयिर् विळैत्तल् कण्डीर्
आत्मा वॆन्रे करुमत् तॊडर्बे यॆण्णि
अरिवु मयक्कङ् गॊण्डु कॆडुहिन्रु रीरे ?
मान् मानुम् विळियुडैयाळ् शक्ति देवि
वशप्पट्टुत् तनैमरन्दु वाळ्दल् वेण्डुम् 33
शॆन्र वित्तैप् पयन्गळॆनैत् तीण्ड माट्टा
श्रीदरन् यान् शिवकुमा रन्या नन्रो ?

कहा— मैं बाहर ढोता हूँ। तुम अन्दर ढोते हो बहुत प्राचीन मैलों का गट्ठर ! यह कहकर वे जल्दी भाग गये। महाराज के कथन का अर्थ मैंने जान लिया। मन में पुराने असत्यों को पालने से जो मानव त्रस्त हैं, वे व्यर्थ मर जायेंगे। हृदय में स्वतन्त्रता का विचार उत्पन्न करना है। ३१ हे मूर्ख लोगो ! जो गयो, सो गया (लौट नहीं आयगा)। बीती बातें सोचकर घातक चिन्ता के गड्ढे में मत गिरो। और घुटो मत। बीती हुई को मत कहो। आज हम नये जनमे हैं—यह विचार हृदय में दृढ़ रूप से बसा लो। खाओ, खेलो और सुखी रहो। उसको छोड़कर बीती बातें बार-बार— ३२ उत्तरोत्तर सोच-सोचकर मत रोओ ! हाय ! बुद्धिहीन मानव ! उत्तरोत्तर आगे-आगे नयी हवा, उत्तरोत्तर नयी जान भर देती है —देख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुसकाकर तब दिया श्रेष्ठ स्वामी ने उत्तर।
(जिसको सुनकर के अवाक् मैं हुआ निरुत्तर)॥
"मैं बाहर ढो रहा, ढो रहे हो तुम भीतर।
फटे - पुराने सड़े - गले पापों का गट्ठर"॥
यह कह करके भाग गये वे स्वामी सत्वर।
समझ गया मैं उन वचनों का अर्थ (गूढ़तर)॥
मन में पाले हुए मनुज जो पाप पुराने।
वे मर जायेंगे होकर के त्रस्त (अयाने)॥
(पाप - पुंज, छल - कपट, झूठ सब दुर्गुण तजकर)।
तुम स्वतंत्र - मन बनो मानवो! (निर्भय बनकर)॥ ३१ ॥
जो बीता सो लौट नहीं फिर से आयेगा।
बीती बातें सोच - सोच मन घबरायेगा॥
घातक चिन्ता के गड्ढे में गिरो न मूर्खो!।
धुएँ तुल्य बीती बातों में घुटो न मूर्खो!॥
"आज हुआ नव जन्म हमारा" दुनियावालो!।
यह विचार दृढ़ता से अपने हृदय बसा लो॥
खाओ खेलो, सुखी रहो, मन मोद मनाओ।
बीती बातें बार - बार तुम मत दुहराओ॥ ३२ ॥
बीती बातें सोच - सोचकर मत तुम रोओ।
(धैर्य धरो अपने मन में मत साहस खोओ)॥
नयी हवा बह रही उत्तरोत्तर है आगे।
नयी जान तन में भर देती (मृत भी जागे)॥
बुद्धिमान मानव! विलोक ले, तू विचार ले।
(अपनी सभी पुरानी तू त्रुटियाँ सुधार ले)॥
भ्रांत - बुद्धि से कर्म - जाल को जीव मानकर।
तुम (होते पथ - भ्रांत) बिगड़ जाते (दुख पाकर)॥
मृग - नयनी श्रीशक्ति देवि के वश में होकर।
अपनेपन को भूल, बिताओ जीवन सुखकर॥ ३३ ॥
"मुझे नहीं छू सकता है गत कर्मों का फल।
मैं श्रीधर हूँ, शिवकुमार हूं, (मन का निर्मल)॥

लो। कर्मक्रम को आत्मा मानकर (ग़लती से) भ्रान्तमति बनकर बिगड़ जाते हो। हरिणी-की-सी आँखों वाली देवी शक्ति के वश में होकर अपने को भूलकर जीवन बिताना चाहिए। ३३ "विगत कर्मों का फल मुझे छू नहीं सकता। मैं श्रीधर हूँ; शिवकुमार हूँ न? इसी क्षण मैं नया जनमा हूँ। मैं अभिनव हूँ! ईश्वर हूँ! अमर हूँ!" — जिन लोग इस अटल विश्वास पर इस संसार में देवों के समान जीवन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नन्ऱिन्दक् कणम्बुदि दाय्प् पिऱन्दु विट्टेन्
'नान् पुदियन् नान कडवुळ् नलिवि लादोन्'
ऎन्ऱिन्द वुलहिन्मिशे वानोर् पोले
इयन्ऱिडुवार् शित्त रॆन्बार् परम तर्मक्
कुन्ऱिन्मिशै यॊरुपाय्च्च लाहप् पाय्न्दु
कुऱिप्पऱ्ऱार् केडर्ऱार् कुलैद लर्ऱार् 34

कुऱियनन्द मुडैयोराय्क् कोडि शॆय्दुम्
कुवलयत्तिल् बिन्नैक् कडिमैप् पडादा राहि
वॆऱियुडैयोन् उमैयाळै इडत्ति लेर्ऱान्
वेदगुरु परमशिवन् वित्तै पॆर्ऱुच्
चॆऱिवुडैय पळविन्नैयाम् इरुळैच् चॆर्ऱुत्
तीयिन्नेप् पोल् मण्मीदु तिरिवार् मेलोर्
अऱिवुडैय शीडा नी कुऱिप्पै नीक्कि
अनन्दमाम् तॊळिल् शॆय्दाल् अमरनावाय् 35

केळप्पा ! मेर्च्चॊन्न उण्मै यॆल्लाम्
केडर्ऱ मदि युडैयान् कुळ्ळच् चामि
नाळुम्पल् काट्टालुम् कुऱिप्पि नालुम्
नलमुडैय मॊऴि यालुम् विळक्कित् तन्दान्
तोळैप् पार्त् तुक्कळित्तल् पोले यन्नान्
तुणै याडिहळ् पार्त्तु मनम् कळिप्पेन् याने
वाळैप् पार्ल् तिन्ब मुऱु मन्नर् पोर्ऱुम्
मलर्त्ताळान् माङ्गॊट्टेच् चामि वाळ्ह 36

बिताते हैं। वे परम-धर्म-शिखर पर एक ही छलाँग लगाकर जाते हैं तथा नाम और रूप का त्याग करके, हानि-रहित हो जाते हैं और कभी नहीं भटकते। ३४ अनन्त कामों में व्यस्त रहें, करोड़ काम करते रहें, तो भी बड़े महात्मा लोग संसार में कर्म के (अधीन) दास नहीं बनते; उन्मत्त होकर उमा को बायें अंग में रखनेवाले वेदगुरु शिवजी की विद्या का अभ्यास करके, घने प्रारब्ध कर्मों के अन्धकार को दूर करके वे आग के समान पृथ्वी पर घूमते रहते हैं। पर हे शिष्य ! तुम कामना त्यागकर अनन्त कार्य करो तो अमर बनोगे। ३५ सुनो ! निर्दोष वामन स्वामी ने ऊपर कहे हुए सारे तथ्यों को रोज के अनेक दृष्टान्तों तथा इंगितों और शुभ शब्दों द्वारा मुझे साफ़ समझा दिया। अपनी भुजाएँ देखकर जैसे मनुष्य गर्व तथा आनन्द का अनुभव करता है, वैसे ही मैं भी उनके चरणद्वय को देखकर मुदित होता हूँ। तलवार देखकर मद-मस्त होनेवाले राजा लोग जिनके चरण-कमलों की वन्दना करते हैं, उन गुठली स्वामी की जय हो। ३६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding: IKS

नया जन्म मैंने पाया है मैं नूतन हूँ।
मैं ईश्वर हूँ अजर (अमर हूँ चिर - चेतन) हूँ॥

करके यह विश्वास अटल जग - बीच सिद्ध जन।
देवों - सदृश बिताते हैं वे अपना जीवन॥

ऐसे मानव परम-धर्म के उच्च - शिखर पर।
एक बार में कूद पहुँच जाते हैं सत्वर॥

नाम - रूप (औ' लाभ - हानि सब) तजकर रहते।
(हो जाते स्थिर - बुद्धि) नहीं वे कभी भटकते॥ ३४॥

कर्म करोड़ों करें, अनन्त कार्य अपनाकर।
कर्म - लिप्त होते न महात्मा इस जगती पर॥

वाम अंग में जो उन्मत्त, उमा को रखते।
जिन्हें वेद - गुरु श्री शिवशंकर सब जन कहते॥

उनकी विद्या का करके अभ्यास निरन्तर।
और घने प्रारब्ध - कर्म के तम को हर कर॥

अग्नि - समान चमकते भूतल - बीच विचरते।
(ऐसे महापुरुष यह भूतल पावन करते)॥

शिष्य ! करो सब काम, कामनाओं को तजकर।
अमर बनोगे (विश्व बीच हे शिष्य ! निरन्तर)॥ ३५॥

दोष - हीन वामन स्वामी ने ये सारे मत।
देकर के दृष्टांत अनेकों करके इंगित॥

शुभ शब्दों द्वारा सब साफ़ - साफ़ समझाये।
खोल ज्ञान के नेत्र सभी भ्रम दूर भगाये॥

जैसे अपनी (सुंदर सबल) भुजाएं लखकर।
गर्वित औ' आनन्दित होता है कोई नर॥

वैसे मैं भी उनके पद - कमलों को लखकर।
अति आनन्द - मग्न होता था अपने अन्तर॥

असि लखकर मतवाले बननेवाले नृप जन।
जिनके पावन पद - कमलों का करते वन्दन॥

उन पद - कमलों वाले गुठली स्वामी की जय।
(भक्त जनों के मन के अन्तर्यामी की जय)॥ ३६॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कोविन्द शुवामि पुहळ्

माङ्गॊट्टैच् चामि पुहळ् शिऱिदु शॊन्नोम्;
वण्मै तिहळ् कोविन्द ञाऩि पार्मेल्
याङ्गऱ्ऱ कल्वियॆलाम् पलिक्कच् चॆय्दान्
ऎम्बॆरुमान् पॆरुमै यॆयिङ् गिशॆक्कक् कोळीर् !
तीङ्गऱ्ऱ कुणमुडैयान् पुदुबै यूरार्
शॆय्द पॆरुन् दवत्ताले उदित्त देवन्
पाङ्गुऱ्ऱ माङ्गॊट्टैच् चामि पोले
पयिलुमदि वर्णाशिर मत्ते निऱपोन् 37
अन्बिऩाल् मुक्ति यॆऩ्ऱान् पुद्दल् अन्नाळ्;
अदनैयिन्नाट् कोविन्द सामि शॆय्दान्
तुन्बमुऱुम् उयिर्क् कॆल्लाम् तायैप्पोले
शुरक्कुमरु ळुडैयपिरान् तुणिन्द योगि;
अन्बिनुक् कडलैयुन्दान् विळुङ्ग वल्लान्
अन्बिनैये तॆय्बमॆन्बान् अन्बे यावान्
मन्बदैहळ् यावुमिङ्गे दॆय्वम् ऎन्ऱ
मदियुडैयान् कवलैयॆऩुम् मयक्कम् तीर्न्दान् 38
पॊन्नडियाल् ऎन्मनैयैप् पुऩिद माक्कप्
पोन्दाऩिम् सुऩियॊरु नाळ्; इऱन्द ऎन्दै
तन्नुरुवङ् गाट्टिऩान्; पिऩ्ऩर् ऎऩ्ऩॆऩ्
तरणिमिशैप् पॆऱ्ऱवळिन् वडिव मुऱ्ऱान्;
अन्नवन्मा योगियॆऩ्ऱुम् परम ञाऩत्
तनुबूदि युडैयऩॆऩ्ऱुम् अऱिन्दु कॊण्डेन्
मन्नवनैक् कुरुवॆऩनान् शरण डेन्देन्
मरण बयम् नीङ्गिऩेन् वलिमै पॆऱ्ऱेन् 39

गोविन्द स्वामी का यश

गुठली स्वामी का थोड़ा-सा यश मैंने कहा। उदार ज्ञानी गोविन्द ने इस संसार में मेरी सीखी विद्या को फलीभूत बनाया। मैं अपने प्रभु महात्मा की महिमा अब गाऊँगा, सुनो ! वे निर्दोष गुणों वाले हैं। पुदुबै (पांडिचेरी) के वासियों के तप के फलस्वरूप जनमे देव हैं वे। वे योग्यता-युक्त गुठली स्वामी के समान प्रचलित वर्णाश्रम-धर्म पर स्थित हैं। ३७ बुद्ध ने उन दिनों कहा था कि प्रेम से मुक्ति मिलती है। उसे आज गोविन्द स्वामी ने सत्य करके दिखाया। वे दुखी सांसारिक जीवों के लिए, माता की तरह स्रव कर आनेवाली करुणा से युक्त महात्मा हैं। वे सुस्थिर योगी हैं। प्रेम में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गोविन्द स्वामी का यश

गुठली स्वामी की मैंने कुछ कीर्ति बखानी।
श्री गोविन्द उदार तथा अतिशय थे ज्ञानी॥
इस जग में मैंने जो कुछ विद्या-धन पाया।
उस विद्या को था इनने ही सफल बनाया॥
अब इन महापुरुष प्रभु की महिमा गाऊँगा।
वे निर्दोष गुणों वाले हैं (बतलाऊँगा)॥
पुदुवै - निवासियों के शुभ तप के ही कारण।
धरणी-तल पर जन्म किया था उनने धारण॥
गुठली स्वामी के समान योग्यता - सहित हैं।
शुभ वर्णाश्रम - धर्म - बीच उन-सम ही स्थित हैं॥ ३७॥
मिलती मुक्ति प्रेम से, गौतम ने बतलाया।
उसे आज गोविन्द देव ने कर दिखलाया॥
जैसे सुत के लिए द्रवित होती है माता।
वैसे ही ये करुण दुःखियों के सुखदाता॥
इनका प्रेम - सिन्धु था सागर से भी बढ़कर।
और मानते सदा प्रेम को ही ये ईश्वर॥
स्वयं प्रेम के रूप और सुस्थिर योगीश्वर।
सारे जग - जीवों को सदा मानते ईश्वर॥
वे चिन्ता से रहित और भ्रम से विमुक्त थे।
(थे निर्भ्रम निश्चिन्त सर्वदा योग - युक्त थे)॥ ३८॥
एक दिवस निज - स्वर्ण - पगों से यहीं मुनीश्वर।
आये पावन करने को सत्वर मेरा घर॥
पहले मेरे मरे पिता का रूप दिखाया।
फिर मेरी जननी माता का रूप बनाया॥
वे महान योगी हैं, तब मैंने यह जाना।
परम ज्ञान - अनुभव रखनेवाले हैं माना॥
उनको गुरुवर मान हुआ उनकी शरणागत।
बना बली मैं, और मृत्यु-भय हुआ विनिर्गत॥ ३९॥

समुद्र को भी निगलनेवाले (समुद्र से भी अधिक प्रेम रखनेवाले), प्रेम को ही ईश्वर माननेवाले, स्वयं प्रेम-स्वरूप हैं। यहाँ सारे जीव ईश्वर हैं—यह मति रखनेवाले और चिंता तथा भ्रम से उन्मुक्त हैं। ३८ ये मुनीश्वर एक दिन मेरे गृह को अपने स्वर्णचरणों से पुनीत करने के हेतु आये। उन्होंने मेरे मृत पिता का रूप दिखाया। फिर मेरी जननी माता का रूप धारण किया। तब मैंने जान लिया कि वे महान योगी हैं, और परम ज्ञान की अनुभूति रखनेवाले हैं। उन महाराज को गुरु मानकर मैं उनकी शरण में गया। तथा मृत्युभय-रहित होकर मैं बलवान बना। ३९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

याळ्प् पाणत्तुच् चुवामियिन् पुहळ्

कोविन्द सामिपुहळ् शिरिदु शॊन्नेन्
कुवलयत्तिन् विळि पोन्ऱ याळ्प् पाणत्तान्
तेविपदम् मऱवाद दीर ञानि
चिदम्बरत्तु नडराज मूर्त्ति यावान्
पावियरैक् करैयेऱ्ऱुम् ञानत् तोणि
परमपद वायिलॆन्नुम् पार्वै याळन्
काविवळर् तडङ्गळिले मीन्गळ् पायुम्
कळनिहळ् शूळ् पुदुवैयिले अवनैक् कण्डेन् 40
तङ्गत्ताऱ् पदुमै शॆय्दुम् इरव लिङ्गम्
शमैत्तुमवऱ् रिन्निलीशन् ताळैप् पोऱ्ऱुम्
तुङ्गमुऱु बक्तर् पलर् पुविमो दुळ्ळार्
तोळरे ! ऍन्नाळुम् ऍनक्कुप् पार्मेल्
मङ्गळञ्जेर् तिरुविळियाल् अरुळैप् पॆय्युम्
वानवर् कोन् याळ्प् पाणत् तीशन् तन्नैच्
चङ्गरनॆन् ऱॆप्पोदुम् मुन्ने कॊण्डु
शरणडेन्दाल् अदु कण्डीर् शर्वशिद्दि 41

कुवळैक् कण्णन् पुहळ्

याळ्प्पाणत् तैयनैयॆन् निडङ्गॊणर्न्दान्
इणैयडियै नन्दिपिरान् मुदुहिल् वैत्तुक्
काळ्प्पान कयिलै मिशै वाळ्वान् पार्मेल्
कनत्त पुहळ्क् कुवळैयूर्क् कण्णन् ऍन्बान्

याळ्प्पाणम् के स्वामी का यश

गोविन्द स्वामी का यह थोड़ा-सा यश मैंने कहा। वे पृथ्वी की आँख के समान याळ्प्पाणम् (श्रीलंका का कोलंबो नगर) के वासी, देवी के चरणों को न भूलनेवाले, धृतियुक्त ज्ञानी चिदम्बरम् के नटराज (सदृश) हैं। पापियों को तारनेवाली ज्ञान-नौका तथा परम पद के द्वार के समान दृष्टिवाले उनको मैंने कुमुदों से भरे, उन खेतों से आवृत 'पुदुवै' में देखा, जहाँ जलाशयों में मछलियाँ तैरती हैं। ४० स्वर्ण की प्रतिमा बनाकर, रथ-लिंग (रथ के रूप में बाण) बनाकर उनमें शिवजी का आवाहन करके उनके चरणों की पूजा करनेवाले अनेक भक्त इस पृथ्वी पर हैं। साथियो ! मेरे लिए मंगल दृष्टि द्वारा करुणा बरसानेवाले याळ्प्पाणम् के ईश (महात्मा) को शंकर मानकर उन्हें पुरस्सर करके मैं शरण जाऊँ, तो वही सर्वसिद्धि है। इसे आप देख लें। ४१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

याल्प्पाणम् के स्वामी का यश

श्री गोविन्द स्वामि का यश कुछ मैंने गाया।
(उनका यश गाकर अपने को धन्य बनाया)॥
पृथ्वी के नयनों - समान कोलम्बो - वासी।
देवी - चरणों के चिन्तक धृति - युक्त (उदासी)॥
चिदम्बरम् नटराज - सरीखे (ज्ञानी सुन्दर)।
जिनकी दृष्टि परम - पद का है द्वार मनोहर॥
अधम पापि - पुंजों को सदा तारनेवाली।
वे हैं मानो दिव्य - ज्ञान - नौका छविशाली॥
कुमुद - मीन से भरे सरों, खेतों से आवृत।
कोलम्बो में देखा मैंने उनको शोभित॥
तमिळ सुभाषा में "यालप्पाणम्" कहते जन।
हिन्दी भाषा में "कोलम्बो" कहते नर - गण॥ ४०॥
बना स्वर्ण की प्रतिमा औ' रथ-लिंग मनोहर।
फिर उनमें श्री शिवशंकर का आवाहन कर॥
उनकी पूजा करनेवाले भव्य भक्त नर।
अब भी वर्तमान हैं इस विस्तृत भू - तल पर॥
जिनकी मंगल दृष्टि दया बरसाती मुझ पर।
कोलम्बो के उन सुसंत को शिव - सम भजकर॥
उनके चरणों की सु - शरण में यदि मैं जाऊँ।
तो मैं इस संसृति में सर्व - सिद्धियाँ पाऊँ॥ ४१॥

कुवळै कण्णन् का यश

अति कठोर - कैलाश - शिखर - वासी परमेश्वर।
जो सवार होते नन्दीश्वर - वृष वाहन पर॥
नन्दीश्वर की कठिन पीठ का घर्षण पाकर।
है घट्ठा पड़ गया पगों में जिनके खर-तर॥
ऐसे थे कोलम्बो - वासी स्वामी पावन।
उन्हें बुला लाये कुवलैयर - वासी कण्णन्॥

कुवळै--कण्णन् का यश

(ये एक व्यक्ति थे, जिनसे भारती की प्रगाढ़ मित्रता थी।) नंदी की पीठ पर चरणद्वय को रखने से जिनके पदों में घट्ठा पड़ गया था, वे कैलासपति याळ्प्पाणम् के स्वामी (साधु महात्मा) को मेरे पास लाये थे। पृथ्वी पर विपुल यश के अधिकारी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पार्प्पारक् कुलत्तितिले पिर्न्दान् कण्णन्
परैयरैयुम् मऱवरैयुम् निहराक् कॊण्डान्
तीर्प्पान शुरुदि वळि तन्निऱ् चेर्न्दान्
शिवनडियार् इवत्मीदु करुणै कॊण्डार् 42
महत्तान मुनि वरॆल्लाम् कण्णन् तोळर्
वानवरॆल् लाङ्गण्णन् अडिया रावार्
मिहत्तानु मुयर्न्दतुणि वुडैय नॆञ्जिन्
वीरर्पिरान् कुवळैयूर्क् कण्णन् ऍन्बान्
जहत्तितिल् लोर् उवमैयिला याळ्प्पा णत्तुच्
चामिदनै यिवनॆन्ऱन् मनैक्कॊ णर्न्दान्
अहत्तितिले अवत्पाद मलरैप् पूण्डेन्
"अन्ऱैयप् पोदैवी डदुवे वीडु" 43
पाङ्गान कुरुक्कळै नाम् पोऱ्ऱिक् कॊण्डोम्
पारितिले पयन्दॆळिन्दोम्; पाश मऱ्ऱोम्
नीङ्गाद शिवशक्ति यरुळैप् पॆऱ्ऱोम्
निलत्तिन् मिशै अमरनिलै युऱ्ऱोम् अप्पा !
ताङ्गामल् वैयहत्तै अळिक्कुम् वेन्दर्
तारणियिल् पलरुळ्ळार् तरुक्कि वीळ्वार्
एङ्गामल् अञ्जामल् इडर्शॆय् यामल्
ऍन्ऱु मरुळ् जातियरे ऍमक्कु वेन्दर् 44

पॆण् विडुदलै

पॆण्णुक्कु विडुदलैयॆन् ऱिङ्गोर् नीदि
पिऱप्पित्तेन्; अदऱ्कुरिय पॆऱ्ऱि केळीर्

वे कण्णन ब्राह्मण-कुल में पैदा हुए थे। वे परैयरों (हरिजनों) तथा मऱवरों (शूद्रों) को अपने समान माननेवाले थे। वे निर्धारित श्रुति-मार्ग के पथिक थे और उन पर शिवभक्तों की कृपा थी। ४२ सारे महान मुनि लोग कण्णन् के मित्र थे। समस्त देवता कण्णन् के दास हैं। कुवळै कण्णन् बहुत ही श्रेष्ठ साहसी वीर स्वामी हैं। जगत भर में उपमाहीन याळ्प्पाणम् के साधु को ये ही मेरे घर पर लाये थे। मैंने हृदय में उनके चरणकमलों को धारण कर लिया है। बस! उसी क्षण मुक्ति है, यही मुक्ति है।" ४३ हमने योग्य गुरुओं का गौरव किया। हम भूमि पर भय-हीन हो गये। हमारा पाश छूट गया। हम शिव-शक्ति की अक्षय कृपा के पात्र हो गये। धरती पर अमरता हमने पा ली। हे बाबा! पालन न करके जगत का नाश करनेवाले राजा लोग अनेक हैं इस भूमि में। वे अहंकार से फिसलकर गिर जायेंगे। पर वे ही ज्ञानी हमारे लिए राजा हैं, जो न किसी की चाह करते हैं, न किसी से डरते हैं; न किसी का अहित करते हैं, पर हमेशा दूसरों पर कृपा ही करते हैं। ४४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुवलैयर के कण्णन् का यश फैला भू पर।
कुवलैयर के कण्णन् थे द्विज - कुल के सुत वर॥
शूद्रों और हरिजनों को निज - सरिस मानकर।
वे चलते थे सदा वेद - निर्धारित पथ पर॥
शिवभक्तों की अतुल कृपा थी उनके ऊपर।
(कुवलैयर के कण्णन् थे मेरे सुमित्र - वर)॥ ४२॥
हैं कण्णन् के मित्र सभी महनीय मुनीश्वर।
हैं कण्णन् के दास सभी स्वर्ग के देववर॥
कुवलैयर के कण्णन् श्रेष्ठ साहसी नर हैं।
कुवलैयर के कण्णन् स्वामी वीर - प्रवर हैं॥
जिनकी उपमा नहीं विश्व में कोई पाये।
उन कोलम्बो के स्वामी को ये ही लाये॥
किये उन्हीं के चरण - कमल मैंने उर धारण।
मिली उसी क्षण मुक्ति (हुआ सब कष्ट निवारण)॥ ४३॥
किया योग्य गुरुओं का गौरव - गान (अनामय)।
हुए भूमि पर इसीलिए हम (अतिशय) निर्भय॥
टूट - टूटकर सभी (जटिल - तम) पाश खो गये।
हम अटूट शिव - शक्ति - कृपा के पात्र हो गये॥
धरती पर (अति सुखद) अमरता हमने पायी।
जग - पालन करते न भूप बहु जग - दुख - दायी॥
इस प्रकार जो अहंकार से इतरायेंगे।
ऐसे नृप निज ऊँचे पद से गिर जायेंगे॥
चाह नहीं कुछ, औ' न किसी से भी जो डरते।
अहित न करते कृपा सभी पर हैं जो करते॥
ऐसे ज्ञानी संत अनेकों हैं भूतल पर।
वही हमारे लिए आज हैं मान्य भूप - वर॥ ४४॥

नारी-स्वतंत्रता

मैंने की नारी - स्वतंत्रता - नीति प्रवर्तित।
सुन लें (उसका आप सुदृढ़) आधार (सुनिश्चित)॥

नारी-स्वतंत्रता

'स्त्रियों की स्वतन्त्रता' की नीति मैंने चालू की है। उसका आधार सुनें। पृथ्वी के सभी ईश्वर हैं, तो क्या गृहिणी भी ईश्वर नहीं है? हे नष्टमति! तुम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मण्णुक्कुळ् ऍव्वुयिरुम् तॆय्व मॆन्ऱाल्
मनैयाळुम् दॆय्व मन्ऱो ? मदिकॆट् टीरे !
विण्णुक्कुप् पऱप्पदु पोल् कदैहळ् शॊल्वीर्
विडुदलैयॆन् बीर करुणै वॆळ्ळ मॆन्बीर्
पॆण्णुक्कु विडुदलैनी रिल्लै यॆन्ऱाल्
पिन्निन्द उलहिनिले वाऴ्क्कै यिल्लै 45

ताय् माण्बु

पॆण्डाट्टि तनैयडिमैप् पडुत्त वेण्डिप्
पॆण् कुलत्तै मुऴुद डिमैप् पडुत्त लामो ?
कण्डार्क्कु नहैप् पॆन्नुम् उलहवाऴ्क्कै
कादलॆनुम् कदैयिनिडैक् कुऴप्प मन्ऱो ?
उण्डाक्किप् पालूट्टि वळर्त्त तायै
उमैयवळॆन् ऱरियीरो ? उणर्च्चि कॆट्टीर् !
पण्डाय्च्चि औवै अन्नैयुम् पिदावुम्
पारिडै मुन्नऱि दॆय्वम् ऍन्ऱाळ् अन्ऱो ? 46
ताय्क्कु मेल् इङ्गेयोर् दॆय्व मुण्डो
ताय्पॆण्णे यल्लळो ? तमक्कै तङ्गै
वाय्क्कुम् पॆण् महवॆल्लाम् पॆण्णे यन्ऱो ?
मनैवि यॊरुत् तियै यडिमैप् पडुत्त वेण्डित्
ताय्क्कुलत्तै मुऴ्दडिमैप् पडुत्त लामो ?
"तायैप्पो लेपिळ्ळै" ऍन्ऱु मुन्नोर्
वाक्कुळदन् ऱोपॆण्मै अडिमै युऱ्ऱाल्
मक्कळॆलाम् अडिमैयुऱल् वियप्पॊन् ऱामो ? 47
वीट्टिलुळ्ळ पळक्कमे नाट्टि लुण्डाम्
वीट्टिनिले तनक्कडिमै पिऱराम् अन्बान्
नाट्टिनिले.....
नाडोऱुम् मुयन्ऱिडुवान् नलिन्दु शावान्

आकाश में उड़ते हुए-से कहानियाँ कहते हो। स्वतन्त्रता कहते हो— 'करुणा की बाढ़' बघारते हो। और यह कहोगे कि स्त्रियों को स्वतन्त्रता नहीं है, तो इस संसार में जीना नहीं है। ४५ मातृ-गौरव जोरू को अधीन रखना चाहकर भी क्या स्त्रीकुल को ही दास बनाया जा सकता है ? देखनेवाले हसें —ऐसा हमारा जीवन स्त्री-प्रेम की गड़बड़ी से ही पैदा हुआ है न ? जन्म देकर, दूध पिलाकर, जिसने पाला, वह माता उमादेवी है। क्या यह नहीं जानते हो ? हमारी पुराने काल की बूढ़ी माता औवे ने क्या यह नहीं कहा है कि माता तथा पिता (सर्व-) प्रथम सम्मान्य ईश्वर हैं। ४६ माता से बढ़कर क्या कोई

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कहता है वेदान्त सृष्टि सारी ईश्वर है।
तो क्या फिर यह नहीं दीन 'नारी' ईश्वर है॥
उड़ते हो नभ - बीच कथा कल्पित कहते हो।
बघारते करुणा, स्वतंत्रता को गहते हो॥
पा न सके नारी स्वतंत्रता यदि इतने पर।
तो फिर जीना व्यर्थ तुम्हारा इस भूतल पर॥ ४५ ॥
नारी - स्वतंत्रता का उमड़ा - जोश दबाकर।
क्या जा सकता रखा स्त्रियों को दास बनाकर॥
हँसनेवाले हँसें, व्यर्थ है उनका हँसना।
नारी से उत्पन्न हुआ यह जीवन अपना॥
जन्म दिया औ' दूध पिलाकर जिसने पाला।
वह माता देवी - समान है पूज्य विशाला॥
थी प्राचीन काल में बूढ़ी 'औवै' माता।
प्रथम पूज्य बतलाये उसने पितु औ' माता॥
नहीं जानते क्या तुम (यह इतिहास मनोहर)।
मान्य पिता - माता को है बतलाया ईश्वर॥ ४६ ॥
है कोई देवता नहीं माता से बढ़कर।
क्या माता नारी न कहाती है भूतल पर?॥
हो अनुजा, अग्रजा, सुता हों अथवा प्यारी।
क्या न ये सभी जग में हैं कहलातीं नारी॥
यदि परतंत्र बनाओगे तुम महिलाओं को।
तो दासियाँ बनाओगे तुम माताओं को॥
जैसी माता होगी सुत भी वैसे होंगे।
माता दासी, दास न तो सुत कैसे होंगे?॥ ४७ ॥
जिस नर का घर में जैसा स्वभाव बन जाता।
वह स्वदेश में भी निज प्रभाव दिखलाता॥
घर में सबको दास समझकर जो जानेगा।
वह स्वदेश में सबको सदा दास मानेगा॥

देव इधर है? क्या वह माता स्त्री नहीं है? बड़ी बहिन, छोटी बहिन, हमें प्राप्त होने वाली स्त्री-शिशु– क्या ये सब स्त्रियाँ नहीं हैं? क्या एक पत्नी को अधीन बनाये रखना चाहकर मातृकुल को ही दासी बनाओगे? जैसी माता, वैसी संतान! ऐसी एक पुरानी सूक्ति है न? स्त्री दासी बन जाए, तो सभी संतानों के गुलाम बन जाने में क्या आश्चर्य होगा? ४७ घर की आदत ही देश में पायी जाएगी। जो घर में सभी को अपना गुलाम कहता है, वह देश में ……। वह रोज प्रयत्न करेगा, कमजोर बनकर मर जायगा। हम वन के पक्षियों की तरह जियें। बाबा! प्रेम हो, तो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काट्टिलुळ्ळ पऱबैहळ्वोल् वाळ्बोम् अप्पा !
कादलिङ्गे उण्डायिऱ् कवलै यिल्लै
पाट्टिनिलै कादलैनान् पाडवेण्डिप्
परमशिवन् पादमलर् पणिहिन्ऱेनै 48

कादलिन् पुहळ्

कादलिनाल् मानुडर्क्कुक् कलवि युण्डाम्
कलबियिलै मानुडर्क्कुक् कवलै तीरुम्;
कादलिनाल् मानुडर्क्कुक् कविदै युण्डाम्
गानमुण्डाम् शिऱ्प मुदऱ् कलैह् ळुण्डाम्
आदलिनाल् कादल् शॆय्वीर् उलहत्तीरे
अःदन्ऱो इय्बुलहत् तलैमै यिन्बम्
कादलिनाल् शाहाम लिरुत्तल् कूडुम्;
कवलै पोम् अदनालै मरणम् पॊय्याम् 49
आदि शक्ति तनैयुडम्बिल् अरनुम् कोत्तान्
अयन् वाणि तनैनाबिल् अमर्त्तिक् कॊण्डान्
शोदि मणि मुहत्तिनळैच् चॆल्व मॆल्लाम्
शुरन्दरुळुम् विळि याळैत् तिरुवै मार्बिल्
मादवनुम् एन्दितान् ! वानोर्क् केनुम्
मादरिन्बम् पोऱ्पिऱिदोर् इन्बम् उण्डो ?
कादल् शॆयुम् मनैबियै शक्ति कण्डीर्
कडवुळ् निलै अबळालै ऍय्द वेण्डुम् 50
कॊङ्गैहळे शिवलिङ्गम् ऍन्ऱु कूऱिक्
कोक्कबिऱन् काळिदा शनुम्पू जित्तान्;
मङ्गैतनैक् काट्टिनिलुम् उडन्कॊण् डेहि
मऱ्ऱवट्का मदिमयङ्गिप् पॊन्मान् पिन्ऱे

चिन्ता नहीं होगी। गीतों में प्रेम-महिमा को गाने की इच्छा से मैं परमेश्वर के चरण-कमल का प्रणमन करता हूँ। ४८

प्रेम की महिमा

प्रेम से मानव को संभोग-सुख मिलेगा; संभोग-सुख में मनुष्य को चिन्ता दूर हो जायगी। प्रेम से मनुष्य को कविता मिलेगी, गान मिलेगा, शिल्प आदि कलाएँ (कला-वृत्तियाँ) मिलेंगी। इसलिए दुनियावालो ! —प्रेम करो। वही इस संसार का मूर्धन्य सुख है न ! प्रेम से अमर रह सकते हो ! चिन्ता दूर होगी, अतः मृत्यु मिथ्या हो जायगी। ४९ हर ने आदिशक्ति को अपने शरीर में मिला लिया। अज ने वाणी को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दास बनाने का वह रोज़ प्रयत्न करेगा।
बन करके कमज़ोर हाय ! (बे - मौत) मरेगा ॥
वन-विहगों की भाँति जियें बनकर स्वतंत्र हम।
यदि हो मन में प्रेम नहीं कुछ भी चिन्ता - ग़म ॥
गीतों में मैं मधुर प्रेम भरने मन - भावन।
परमेश्वर के चरण - कमल में करता प्रणमन ॥ ४८ ॥

प्रेम की महिमा

मधुर प्रेम से नर संभोगों का सुख पाता।
संभोगों का सुख पा चिन्ता दूर भगाता ॥
मधुर प्रेम से मानव को मिलती है कविता।
मिलते हैं संगीत, शिल्प औ' कला - कुशलता ॥
इस कारण तुम प्रेम करो हे दुनिया - वालो !।
यह जग का सर्वोत्तम सुख है इसको पा लो ॥
चिन्ता होगी दूर मृत्यु - भय नहीं गिनोगे।
(प्रेम करो मानवो !) प्रेम से अमर बनोगे ॥ ४९ ॥
आदिशक्ति शंकर ने अर्धाङ्गिनी बना ली।
निज - रसना पर ब्रह्मा ने शारदा बिठा ली ॥
ज्योतित - मणि - वदना लक्ष्मी धन देनेवाली।
विष्णुदेव ने निज वक्षस्थल बीच बसा ली ॥
स्त्री - सुख से बढ़ सुखद न कोई सुख न्यारा है।
स्त्री - सुख देवगणों को भी सबसे प्यारा है ॥
प्रेममयी पत्नी को देवी - रूपा जानो।
ईश्वर की प्राप्ति में सहायक उसको मानो ॥ ५० ॥
कालिदास कविराज कामिनी के सुन्दर स्तन।
बतलाकर शिवलिंग - सदृश करते थे पूजन ॥
नारी को निज साथ भयंकर वन ले जाकर।
उसके हठ - सम्मुख अपनी सब बुद्धि गँवाकर ॥

जीभ में बिठा लिया। ज्योति-मणि-मुखी, धनदाती श्री लक्ष्मी को माधव ने अपने श्रीवक्ष में धारण कर लिया। देवों के लिए भी हो—क्या स्त्री-सुख के समान कोई दूसरा सुख हो सकता है ? प्रेम करनेवाली पत्नी ही 'शक्ति' (देवी) है, इसे जान लें। ईश्वर-स्थिति उसके ही द्वारा प्राप्त करनी चाहिए। ५० कवियों में राजा कालिदास ने स्तनों को शिवलिंग कहकर उनकी पूजा की। स्त्री को जंगल में ले जाकर, फिर उसके लिए अपनी बुद्धि को मोह में डालकर, सिंह-सम वीरवर श्रीधर स्वर्णमृग के पीछे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शिङ्ग निहर् वीरर् पिरान् तॅळिवित् मिक्क
श्रीदरनुम् शॅन्ऱु पल तुन्ब मुऱ्ऱान्
इङ्गुपुवि मिशैक्काबि यङ्ग ळॅल्लाम्
इलक्किय मॅल्लाङ् गादर् पुहळ्च्चि यन्ऱो ? 51
नाडहत्तिल् काबियत्तिल् काद लॅन्ऱाल्
नाट्टित्र्ताम् बियप्पॅय्दि नन्ऱाम् ॲन्बर्;
ऊडहत्ते बीट्टिनुळ्ळे किणऱ्ऱो रत्ते
ऊरिलिले कादलॅन्ऱाल् उऱुमु हिन्ऱार्;
पाडै कट्टि अदैक्कॊल्ल वळिशॅय् हिन्ऱार्
पारिनिले कादलॅन्नुम् पयिरै माय्क्क
मूडरॅलाम् पॊऱामैयिनाल् बिदिहळ् शॅय्दु
मुऱै तवऱि इडरॅय्दिक् कॅडुहिन् ऱारे 52
कादलिले इन्ब मॅय्दिक् कळित्तु निन्ऱाल्
कन्नमान मन्नवर् पोर् ॲण्णुबारो ?
मादरुडन् मन्नमॊन्ऱि मयङ्गि विट्टाल्
मन्दिरिमार् पोर्त्तॊळिलै मनङ्गॊळ् वारो ?
पादिनडुक् कलवियिले कादल् पेशिप्
पहलॅल्लाम् इरवॅल्लाम् कुरुवि पोले
कादलिले मादरुडन् कळित्तु वाळ्न्दाल्
पडैत्तलैवर् पोर्त् तॊळिलैक् करुदु वारो ? 53

विडुदलैक् कादल्

कादलिले विडुदलैयॅन् ऱाङ्गोर् कॊळ्है
कडुहिवळर्न् दिडुमॅन्बार् यूरोप् पाविल्;

गये और उन्होंने अनेक कष्ट उठाये। इधर दुनिया भर में साहित्य प्रेम की प्रशंसा ही (करता) है न ! ५१ नाटक में, साहित्य में प्रेम की बात हो, तो देशवासी विस्मित होते हैं और कहते हैं—वाह ! शाबाश ! पर बीच-बीच में, घर के अन्दर, कुएँ के पास, बस्ती में प्रेम की बात उठे, तो लोग गरजते हैं। वे अर्थी बनाकर उसे मार देने की कोशिश करते हैं। दुनिया में ये सब मूर्ख, प्रेम रूपी अंकुर को मिटाने के लिए, ईर्ष्यावश, अनेक विधियाँ बनाकर क्रम भंग करते हैं और बाधा पाकर बिगड़ जाते हैं। ५२ प्रेम में सुख पाकर मुदित रहें, तो क्या गौरववान राजा लोग युद्ध की बात सोचेंगे ? स्त्री में एकचित्त होकर मोह-मुग्ध बने रहें, तो क्या मंत्री लोग युद्ध-कर्म के विचार को मन में लायेंगे ? संभोगमध्य प्रेमालाप करके, दिन-रात चिड़ियों की तरह स्त्रियों के साथ प्रेम करके सुखी रहें, तो सेनानायक युद्ध-कार्य की ओर क्या ध्यान देंगे ? ५३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सिंह - समान पराक्रम - शाली श्रेष्ठ वीर - वर।
लगे स्वर्ण - मृग के पीछे श्रीराम धनुर्धर ॥
लंकापति दश-वदन गया ले सीता को हर।
सहे कष्ट श्रीरामचंद्र ने बड़े भयंकर ॥
इस जग में जितना साहित्य प्राप्त विस्तृत है।
सभी प्रेम की प्रबल - प्रशंसा से पूरित है ॥ ५१ ॥

कविता में, नाटक में देख प्रेम का वर्णन।
धन्यवाद दे महामुदित - मन होते सब जन ॥
पर बस्ती में, कूप - समीप, भवन के भीतर।
सुनकर प्रेम - प्रसंग गरजते महा - भयंकर ॥
बना प्रेम की अर्थी उसे जलाना चहते।
मधुर प्रेम का अंकुर मूर्ख मिटाना चहते ॥
ईर्ष्यावश ये नियम अनेकों सदा बनाते।
सहज प्रकृति - क्रम तोड़, विघ्न पा क्रोध दिखाते ॥ ५२ ॥

मुदित रहें यदि सदा प्रेम के सुख को पाकर।
गौरवशाली नृप न करेंगे युद्ध कठिनतर ॥
प्रिया - प्रेम में मुग्ध रहें यदि सभी मंत्रि - गण।
युद्ध कर्म का कभी विचार न लायेंगे मन ॥
निज - प्रेयसियों - साथ लीन हों सेना - नायक।
प्रेमालाप भोग - सुख में खग-सम सुख - दायक ॥
युद्ध कार्य की ओर तो कभी ध्यान न देंगे।
(मधुर - प्रेम - सम और किसी को मान न देंगे) ॥ ५३ ॥

स्वच्छन्द प्रेम

योरप में स्वच्छन्द - प्रेम की बाढ़ बढ़ी है।
(वहाँ प्रेम में स्वतंत्रता अति बढ़ी - चढ़ी है) ॥
वहाँ स्त्रियाँ स्वच्छन्द, न बन्धन वह सहती हैं।
निज - इच्छा - अनुसार पुरुष - सँग रह सकती हैं ॥

स्वच्छन्द प्रेम

'स्वच्छन्द प्रेम का सिद्धान्त यूरोप में तेजी से बढ़ रहा है।' —ऐसा लोग कहते हैं। वे कहते हैं कि स्त्रियाँ अपनी इच्छा के अनुसार पुरुषों के साथ रह सकती हैं;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मादरॆलाम् तम्मुडैय विरुप्पिन् वण्णम्
मनिदरुडन् वाळ्न्दिडलाम् ऎन्बार् अन्नोर्
पेदमिन्रि मिरुहङ्गळ् कलत्तल् पोले
पिरियम् वन्दाल् कलन्दन्बु पिरिन्दु विट्टाल्
वेदनैयॊन् ड्रिल्लादे पिरिन्दु शॆन्ड्र
वेरॊरुवन् रतैक्कूड वेण्डुम् ऎन्बार् 54
वीरमिला मनिदर् शॊल्लुम् वारत्तै कण्डीर्
विडुदलैयाङ् गादलॆनिल् पॊय्मै कादल् !
शाररैप् पोल् आण्मक्कळ् पुविमिन् मीदु
शुवैमिक्क पॆज्मैनल मुण्णु हिन्ड्रार्
कारणन्दान् यादॆनिलो आण्ग ळॆल्लाम्
कळबिन्बम् विरुम् बुहिन्ड्रार्; कड्पे मेलॆन्ड्र
ईरमिन्रि यॆप्पोदुम् आदेशङ्गळ्
ऎडुत्तॆडुत्तुप् पॆण्गळिडम् इयम्बु वारे ! 55
आणॆल्लाम् कड्पैविट्टुत् तवड्र शॆय्दाल्
अप्पोदु पॆण्मैयुङ्गड् पळिन्दि डादो ?
नाणड्र वारत्तै यन्ड्रो ? वीटटैच् चुट्टाल्
नलमान कूरैयुन्दान् ऎरिन्दि डादो ?
पेणुमॊरु कादलिनै वेण्डि यन्ड्रो
पॆण्मक्कळ् कड्पुनिलै पिरळु हिन्ड्रार् ?
काणुहिन्ड्र काट्चियॆलाम् मडैत्तु वैत्तुक्
कड्पुक्कड् पॆन्ड्रलहोर् कदैक्किन् ड्रारे ? 56

शरवमद समरसम्

(कोविन्द शुवामियुडन् उरैयाडल्)

'मीळबुमङ् गॊरुपहलिल् वन्दान् ऎन्ड्रन्
मनैयिडत्ते कोविन्द वीर जाति

बिना भेद के, पशुओं की तरह जब इच्छा होती है तब मिलो; प्रेम छूट गया तो बिना किसी वेदना के अलग हो जाओ और अन्य किसी पुरुष से मिल जाओ। ५५ यह कायर (वीरताहीन) मनुष्य का कथन है। देखो ! स्वच्छंद प्रेम का अर्थ मिथ्या प्रेम है। चोरों के समान पुरुष बहुत ही सरस स्त्रीसंभोग-सुख का भोग करना चाहते हैं। इसका क्या कारण है ? पूछो तो, सभी पुरुष चोरी का सुख चाहते हैं, पर 'पातिव्रत्य ही श्रेष्ठ है', यह उपदेश वे निष्ठुरता से स्त्रियों को बार-बार देते हैं। ५६ सभी पुरुष चरित्र खोकर यदि अपराध करें, तो क्या स्त्री भी शील नहीं खो देगी? उनका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भेद - भाव कुछ नहीं जभी होती अभिलाषा।
मिल पुरुषों से पशु - सम हरतीं प्रेम - पिपासा ॥
एक पुरुष से प्रेम टूट यदि उनका जाता।
उसे त्यागतीं दुःख न कुछ भी मन में आता ॥
और किसी दूसरे पुरुष से मिल जाती हैं।
कहते लोग (नहीं इसमें वे सकुचाती हैं)) ॥ ५४ ॥

इस प्रकार वीरता - हीन कहते (कायर नर)।
मिथ्या - प्रेम स्वतंत्र - प्रेम का अर्थ नहीं वर ॥
चोरों के समान चोरी से ये सब पामर।
स्त्री - सुख का संभोग भोगना चाह रहे नर ॥
क्या कारण है ? पूछो, क्यों यह मार्ग गहे हैं ?।
सभी पुरुष यह चोरी का सुख चाह रहे हैं ॥
बार - बार उपदेश दे रहे (जोश न कम है)।
कहते पातिव्रत्य धर्म ही सर्वोत्तम है ॥ ५५ ॥

यदि चरित्र को त्याग, करें अपराध सभी नर।
तो क्या स्त्री भी शील नहीं खो देगी सत्वर ? ॥
इस प्रकार का कथन अरे ! निर्लज्ज कथन है।
छप्पर जलता क्या न ? अगर जल रहा सदन है ॥
खोती हैं नारियाँ शील पड़ प्रेम - जाल में।
हाय ! हाय ! डूबतीं दुःख - सागर विशाल में ॥
सम्मुख की सच्ची बातों को दुरा - छिपा कर।
"शील - शील" की लोग कहानी गढ़ते सुन्दर ॥ ५६ ॥

सर्व-धर्म-सार

(गोविंद स्वामी से वार्त्तालाप)

स्वामी श्री गोविन्द वीर ज्ञानी अति प्यारे।
मेरे घर में एक बार वे पुनः पधारे ॥

यह निर्लज्ज कथन है। घर जलाओ, तो छाजन भी नहीं जलेगा ? स्त्रियाँ भी तो शील को प्रेम की इच्छा से ही खोती हैं न ? जो सामने होता है, उस सबको छिपाकर लोकवासी 'शील-शील' की कहानी गढ़ते हैं। ५६

सर्व-धर्म-सार — गोविन्द स्वामी से वार्तालाप

फिर एक दिन, एक बार पधारे मेरे घर में, गोविन्द स्वामी वीर-ज्ञानी ! वे भू-पालन के लिए अवतरित थे। वे सभी महीपतियों से श्रेष्ठ हैं। वे प्रेम में राजा हैं !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आळवन् दान् पूमियिनै अवनि वेन्दर्
अनै वरुक्कुम् मेलानोन् अन्बु वेन्दन्
ताळैप्पार्त् तॊऴिर्दरुनन् मलरैप् पोले
नम्बिरान् वरवुकण्डु मनम् मलर्न्देन्
'वेळैयिले नमदु तॊऴिल् मुडित्तुक् कॊळ्मोम्
वॆयिलुळ्ळ पोदिनिले उलर्त्तिक् कॊळ्वोम् 57
कार्रुळ्ळ पोदेनाम् तूर्रिक् कॊळ्वोम्
कनमान गुरुवै यॆदिर् कण्ड पोदे
मार्रान अहन्दैयिनैत् तुडैत्तुक् कॊळ्वोम्
मलमान मरदियिनै मडित्तुक् कॊळ्वोम्
कूर्रान अरक्करुयिर् मुडित्तुक् कॊळ्वोम्
कुलैवान मायैतनै अडित्तुक् कॊल्वोम्
पेर्रालै गुरुवन्दान्; इवन्पाल् ज्ञानप्
पेर्रै यॆल्लाम् पॆरुवोम्याम्' ऎन्रॆ नुळ्ळे 58
शिन्दित्तु "मॆय्प्पॊरुळै उणर्त्ताय् ऐये!
तेय्वॆन्र मरणत्तैत् तेय्क्कुम् वण्णम्
वन्दित्तु निनैक्केट्टेन् कूराय्" ऎन्रेन्
वानवनाम् कोविन्द सामि शॊल्वान्
अन्दमिला मादेवन् कयिलै वेन्दन्
अरविन्द शरणङ्गळ् मुडिमेर् कॊळ्वोम्;
पन्द मिल्लै, पन्दमिल्लै, पन्दम् इल्लै
पयमिल्लै पयमिल्लै; पयमे इल्लै 59
अदुवेनी यॆन्बदुमुन् वेद वोत्ताम्
अदुवॆन्रार् ऎदुवॆननान् अरैयक् केळाय्!
अदुवॆन्रार् मुन्निरुकुम् पॊरुळिन् नामम्
अवनियिले पॊरुळॆल्लाम् अदुवाम्; नीयुम्

सूर्य को देखकर खिलते अच्छे (कमल के) फूल के समान, उनके आगमन से मेरा मन खिल उठा। '(अनुकूल) समय रहते अपना काम बना लें; धूप है तभी सुखा लें'। ५७ हवा बहती है तभी धान ओसा लें। गौरववान गुरु सामने मिल गये—अभी शत्रु, अहंभाव को पोंछ लें। अविद्या के मल को मिटा लें। अन्दर के रिपु-राक्षसों को जान से मार दें। कँपानेवाली माया को प्रहार करके हत कर दें। ये भाग्य के कारण आये हैं। इनसे ज्ञान की उपलब्धि कर लें। ऐसा मन में सोचकर (कहा मैंने)—हे स्वामी! सत्यार्थ समझा देने की कृपा करें। ५८ मैं आपकी वन्दना करके कहता हूँ—'क्षय नामक मृत्यु का क्षय कराने का मार्ग बता दें।' तो देवोन्नत गोविन्द स्वामी बोले—हम कैलासपति अक्षर महादेव के चरणकमलों को सिर पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भू-पालन के हेतु हुए अवतरित धरा पर।
सभी भूमि - पतियों से थे वह सदा श्रेष्ठतर॥
जैसे रवि को देख कमल - दल होता विकसित।
उसी भाँति हो गया हमारा भी मन प्रमुदित॥
जब तक धूप तभी तक सभी सुखा सकते हैं।
जब तक समय तभी तक काम बना सकते हैं॥ ५७ ॥
जब तक बहती हवा तभी तक धान ओसा लें।
गौरव - मय गुरु मिले 'अहं' का शत्रु भगा लें॥
प्रबल अविद्या के मल को सम्पूर्ण मिटा लें।
अन्तर के रिपु - रूप राक्षसों को हन डालें॥
हृदय कँपानेवाली माया पर प्रहार कर।
कर देंगे संहार (हृदय में वीर - भाव भर)॥
मेरे (भूरि) भाग्य से ये आये मेरे घर।
कर लें इनसे प्राप्त ज्ञान की ज्योति प्रभास्वर॥
ऐसा मन में सोच कहा मैंने, हे स्वामी !।
समझा दें सत्यार्थ मुझे (हे अन्तर्यामी !)॥ ५८ ॥
पूछ रहा हूँ प्रभो ! आपका करके वन्दन।
मृत्यु मिटाने का पथ मुझे बताये श्रीमन् !॥
स्वामी श्री गोविन्द तभी बोले देवोन्नत।
(सुनकर पावन वचन हुआ तन - मन सब हर्षित)॥
"महादेव अक्षर कैलासाधिप कहलाते।
उनके पद - कमलों को जो नर शीश चढ़ाते॥
उनको बन्धन नहीं, नहीं है उनको बन्धन।
उनको है भय नहीं, नहीं भव का है बन्धन॥ ५९ ॥
उपनिषदों में वाक्य "तत्त्वमसि" बतलाया है।
"तुम वह हो" यह अर्थ उसी का समझाया है॥
"वह" है कौन ? तत्त्व इसका मैं समझाता हूँ।
"वह" कहलाता परमतत्त्व, यह बतलाता हूँ॥
जग - प्रपंच के बीच सभी जो रहनेवाले।
वे पदार्थ "वह" "परमतत्त्व" के रूप निराले॥

धारण कर लें। तब बन्धन नहीं होगा; बन्धन नहीं होगा, बन्धन नहीं होगा; भय नहीं, भय नहीं, भय नहीं होगा। ५९ पहले जान लो कि 'तुम वह हो (तत्त्वमसि)' —यह वेद का घोष है। 'वह' क्या है ? यह मैं समझाता हूँ, सुनो ! 'वह' पहले से रही 'वस्तु (परमतत्त्व)' का नाम है ! सृष्टि में रहनेवाले पदार्थ सभी 'वह' हैं। तुम भी 'वह' को छोड़ कुछ नहीं हो। इसलिए संसार में जो भी आवे, अचल रहो ! हे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अदुवन्ऱिप् पिऱिदिल्लै; आद लाले
अवनियिन्मी देंदुबरिनुम् अशैबु ऱामल्
मदुवुण्ड मलर्मालै इरामन् ताळै
मनत्तिनिले निऱुत्ति यिङ्गु वाळ्वाय् शीडा ! 60
पारान उडम्बिनिले मयिर्ह ळैप्पोल्
पलप्पलवाम् पूण्डुवरुम् इयऱ् कैयाले
नेराह मानुडर्ताम् पिऱरैक् कोल्ल
निनैयामल् वाळ्न्दिट्टाल् उळुदल् वेण्डा
कारान निलत्तैप् पोयत् तिरुत्तल् वेण्डा
काल्बाय्हळ् पाय्च्चुबदिल् कलहम् वेण्डा
शीरान मळैपैय्युम् तैय्व मुण्डु
शिवन्शैत्ता लन्ऱिमण्मेल् शेळुमै युण्डु 61
आदलाल् मानिडर्हळ् कळवै विट्टाल्
अनैवरुक्कुम् उळैप्पिन्ऱि उणवुण् डाहुम्;
पेदमिट्टु कलहमिट्टु वेलि कट्टिप्
पिन्नदऱ्कुक् कावलैन्ऱु पेरुमिट्टु
नीदमिल्लाक् कळ्वदनैऱि याथिऱ् ऱप्पा !
निनैक्कुङ्गाल् इदु कोडिय निहळ्च्चि यन्ऱो ?
पादमलर् काट्टि निनै अन्नै कात्ताळ्;
पारिलिनित् तरुमम् नी पहरु वाये 62
ओरुमोळियै पलमोळिक्कुम् इडङ् गोडुक्कुम्
ओरुमोळियै मलमोळिक्कुम् ओळिक्कुम् अन्ऱ
ओरुमोळियैक् करुत्तिनिले निऱुत्तुम् वण्णम्
ओरुमोळि 'ओम् नमच्चिवाय' अन्बर्;

शिष्य ! मधुसिक्त मालाधारी श्रीराम के चरणों को मन में स्थिर रूप से धारण करके यहाँ जीवन बिताओ ! ६० भूमि रूपी शरीर पर रोमों के समान विविध पौधे प्राकृतिक स्वभाव से उग आते हैं। अगर मानव दूसरों का वध करने की इच्छा न करके जिएँ, तो हल चलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। बंजर धरती को सुधारने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। नहरों द्वारा में पानी सींचने में कलह नहीं मचेगा। ठीक तरह से पानी बरसेगा। जब तक ईश्वर हैं, शिव मर नहीं जाय, तब तक भू पर समृद्धि रहेगी ! ६१ इसलिए मानव चोरी (वंचना) को छोड़ दें, तो सबके लिए परिश्रम के बिना ही भोजन मिल जायगा। भेदकारी कलह मचाकर, चहारदीवारी बाँधकर —फिर उसको सुरक्षा का नाम देकर अन्यायी लोग चोरों की नीति बना चुके हैं। बाबा ! सोचो, क्या यह क्रूर कर्म नहीं है ? जगदम्बा माता ने अपने चरणकमल दिखाकर (उनके आश्रय में) तुम्हारा पालन किया है। संसार में इस धर्म का प्रसार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुम भी हो वह परमतत्त्व, कुछ अन्य नहीं हो।
अचल रहो जग बीच न विचलित कभी कहीं हो॥
मालाधारी रामचंद्र के चरण - मनोहर।
अपने मन में अचल भाव से तुम धारण कर॥
हे मेरे प्रिय शिष्य ! बिताओ सुखमय जीवन।
(सुख - सुगंधि से सुरभित हो जीवन का उपवन)॥ ६० ॥
रोओं के समान इस भूतल के शरीर पर।
उग आते प्राकृतिक रूप से पौधे सुन्दर॥
यदि मानव जग - बीच किसी का करे न अनहित।
वध न किसी का करे रहे जग में यों जीवित॥
तो फिर नहीं ज़रूरत "हल" को सँचारने की।
नहीं ज़रूरत बंजर धरती सुधारने की॥
कलह न होगी नहरादिक से जल - सिंचन में।
ठीक तरह से जल बरसेगा जग - आँगन में॥
जब तक हैं शिव अमर, अमर है जग में ईश्वर।
तब तक व्याप्त समृद्धि रहेगी इस भूतल पर॥ ६१ ॥
यदि इस जग के नर तज दें चोरी औ' वंचन।
बिना परिश्रम के तो सब नर पायें भोजन॥
भेद - नीति से फूट डालकर, कलह मचाकर।
घेर - घार, दीवारें चारों ओर उठाकर॥
इन कामों को देश - सुरक्षा का सुनाम धर।
अन्यायी चोरों की रीति - नीति अपनाकर॥
जो करते नर, कहो, क्रूर वे कर्म नहीं क्या ?।
(चोरी - ठगी - डकैती के ये कर्म नहीं क्या ?)
जगदम्बा माता ने देकर चरण - सहारा।
सदा विश्व में लालन - पालन किया तुम्हारा॥
निखिल विश्व में इसी धर्म को तुम फैलाओ।
अपने लिए न जड़ - जंगम को कभी सताओ॥ ६२ ॥
एक शब्द है सब शब्दों को स्थान दिलाता।
एक शब्द है जो मन का मल सभी मिटाता॥
एक शब्द है जो मन में अति सुख सरसाता।
वह सुशब्द है "नमः शिवाय" संत - कुल गाता॥

करो। ६२ जो एक ही शब्द अनेक शब्दों को स्थान देगा, जो एक शब्द मैल को मिटा देगा, इस एक बात को मन में धारण करने के लिए उन्होंने जो एक शब्द (मंत्र)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'हरि हरि' यॆन्ऱिडिनुम् अःदे 'राम राम'
शिव शिव वॆन्ऱिट् टालुम् अःदेयाहुम्
तॆरिवुऱवे 'ओम् शक्ति' यॆन्ऱु मेलोर्
जॆबम् बुरिव दप्पॊरुळिन् पॆयरे याहुम् 63
शारमुळ्ळ पॊरुळिनै नान् शॊल्लि विट्टेन्;
शञ्जलङ्गळ् इनि वेण्डा शरदन् दॆय्वम्
ईरमिला नॆञ्जुडैयार् शिवनैक् काणार्
ॲप्पोदुम् अरुळॆमनत् तिशैत्तुक् कॊळ्वाय्;
वीरमिला नॆञ्जुडैयार् शिवनैक् काणार्;
ॲप्पोदुम् वीरमिक्क विनैहळ् शॆय्वाय्
पेरुयर्न्द एहोवा अल्ला नामम्
पेणुमवर् पदमलरुम् पेणल् वेण्डुम् 64
पूमियिले कण्डम् ऐन्दु मदङ्गळ् कोडि !
पुत्त मदम् शमण मदम् पार्सि मार्क्कम्
शामियॆन्न येशुपदम् पोऱ्ऱुम् मार्क्कम्
शनातनमाम् हिन्दु मदम् इस्लाम् यूदम्
नाममुयर् शीनत्तुत् 'तावु' मार्क्कम्
नल्ल कण्पूरि मदम् मुदलाप् पार्मेल्
यामऱिन्द मदङ्गळ् पल उळवाम् अन्ऱे
याविनुक्कुम् उट्पुदैन्द करुत्तिङ् गॊन्ऱे 65
पूमियिले वळङ्गि वरुम् मदत्तुक् कॆल्लाम्
पॊरुळिनैनाम् इङ्गॆडुत्तुप् पुहलक् केळाय्
शामि नी; शामि नी; कडवुळ् नीये
तत्वमसि; तत्वमसि नीये अःदाम्
पूमियिले नी कडवु ळिल्लै यॆन्ऱु
पुहल्वदुनिन् मनत्तुळ्ळे पुहुन्द मायै

दिया, वह है 'नमः शिवाय'। —यह (महात्माओं ने) कहा है। 'हरि, हरि' भी वही एक शब्द है। 'राम, राम', 'शिव, शिव' भी वैसा ही शब्द है! साफ़-साफ़ 'ॐ शक्ति', 'ॐ शक्ति' कहकर जो जप करते हैं, वह भी उसी (वस्तु) तत्त्व का नाम है। ६३ सारभूत अर्थ को मैंने बता दिया। अब इसमें कोई संशय या चंचल विचार न रहे! स्नेह-हीन मनवाले लोग शिवजी का साक्षात्कार नहीं कर सकेंगे। सदा उनकी कृपा को मन में धारण कर लो। वीरता-रहित दिल वाले लोग शिव को देख नहीं सकेंगे। अतः सदा वीरता-पूर्ण कार्य करो। उच्च महिमावाले यैहोवा (यहव), अल्ला आदि के नाम को जपनेवालों के चरणकमलों में भी श्रद्धा रखनी चाहिए। ६४ इस भू पर पाँच भू-खण्ड हैं। करोड़ धर्म हैं। बुद्ध धर्म, जैन धर्म, पारसी धर्म, यीशु को स्वामी मानकर उनके पदों की वन्दना करनेवाला मार्ग, सनातन हिन्दू मत, इस्लाम,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"हरि - हरि", "कृष्ण - कृष्ण" तो भी वह शब्द सुघर है।
"राम - राम", "शिव - शिव" भी शब्द वही मनहर है॥
"ॐ शक्ति" कह, "ॐ शक्ति" कह, जो जप करते।
वे भी उसी तत्त्व को अपने मन में धरते॥ ६३ ॥
इस प्रकार सब सार - तत्त्व मैंने समझाया।
संशय को, चंचल विचार को दूर भगाया॥
प्रेम - भक्ति शुभ नहीं तरंगित है जिनके मन।
वे शंकर का कभी नहीं कर सकते दर्शन॥
शिवशंकर की कृपा सदा निज मन में भर लो।
(मन - मंदिर में शिवशंकर का दर्शन कर लो)॥
जिनके मन में नहीं वीरता, जो कायर हैं।
शिवशंकर को नहीं देख सकते वे नर हैं॥
"अल्लाह", "यहोवा" इनके जपनेवालों पर।
भी श्रद्धा - विश्वास बनाये रखो निरन्तर॥
सदा वीरता - पूर्ण कार्य तुम करो मानवो!।
(भव - सागर से सुगम रीति से तरो मानवो !)॥ ६४ ॥
इस भूतल के पाँच खंड हैं, विविध धर्म हैं।
बुद्ध - धर्म औ' जैन - धर्म, पारसी - धर्म हैं॥
ईसा को प्रभु मान किया करता पद - वन्दन।
ऐसा ईसाई - मत है प्रचलित जग - आँगन॥
सत्य सनातन - धर्म जिसे कहते हिन्दू - मत।
चीन देश में प्रचलित अति प्रसिद्ध चाऊ मत॥
कन्फूशियस, यहूदी, औ' इस्लाम आदि मत।
और न जाने कितने मत इस जग में अविदित॥
यद्यपि इस जग - बीच धर्म फैले अनेक हैं।
किन्तु सभी धर्मों का अंतिम लक्ष्य एक है॥ ६५ ॥
सुन लो, जग के सब धर्मों का सार बताता।
(भिन्न - भिन्न नामों से जग, प्रभु के गुण गाता)॥
तुम स्वामी हो, तुम स्वामी हो, तुम ईश्वर हो।
तुम्हीं "तत्त्वमसि", तुम्हीं "तत्त्वमसि", "तुम ही वह" हो॥
जो कहते संसार - बीच भगवान न पाया।
यह सब उनके मन में घुसी हुई है माया॥

यहूदी, चीन का प्रसिद्ध ताऊ मार्ग, श्रेष्ठ 'कन्फूशियस' मार्ग —आदि अनेक मत हैं, जिनके बारे में हमें कुछ ज्ञात हैं। उन सबका रहस्यार्थ एक ही है ! ६५ हम भू पर सभी धर्मों का सारार्थ बताते हैं— सुन लो ! स्वामी तुम हो, स्वामी तुम हो !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शामिनी अम्मायै तन्नै नीक्किच्
चदाकालम् 'शिवोह' मॅन्रु शादिप्पाये 66

6 वशन कविदै

काट्चि—1

मुदर् किळै— इन्बम्

इव्वुलहम् इनियदु; इदिलुळ्ळ वान् इनिमैयुडैत्तु; काऱ्ऱुम् इनिदु, ती इनिदु, नीर् इनिदु, निलम् इनिदु।

जायिऱु नन्ऱु; तिङ्गळुम् नन्ऱु। वानत्तुच् चुडर्हळॅल्लाम् मिह इनियन। मळै इनिदु। मिन्नल् इनिदु; इडि इनिदु।

कडल् इनिदु। मलै इनिदु। काडु नन्ऱु। आऱुहळ् इनियन। उलोहमुम् मरमुम् शॅडियुम्, कॉडियुम्, मलरुम्, कायुम्, कनियुम् इनियन।

पऱवैहळ् इनिय। ऊर्वनवुम् नल्लन। विलङ्गुह ळॅल्लाम् इनियवै। नीर् वाळ्वनवुम् नल्लन।

मनिदर् मिहवुम् इनियर्। आण् नन्ऱु; पॅण् इनिदु; कुळन्दै इन्बम्, इळमै इनिदु। मुदुमै नन्ऱु। उयिर् नन्ऱु। शादल् इनिदु। 1

उडल् नन्ऱु। पुलन्गळ् मिहवुम् इनियन। उयिर् शुवैयुडैयदु। मनम् तेन्। अऱिवु तेन्। उणर्वु अमुदम्। उणर्वे अमुदम्। उणर्वु तॅय्वम्। 2

मनम् तॅय्वम्। चित्तम् तॅय्वम्। उयिर् तॅय्वम्। काडु मलै अरुवि, आऱु, कडल् निलम्, नीर्, काऱ्ऱु, ती, वान्, जायिऱु, तिङ्गळ् वानत्तुच् चुडर्हळ्— अॅल्लाम् तॅयवङ्गळ्।

उलोहङ्गळ्, मरङ्गळ् शॅडिहळ्, विलङ्गुहळ्, पऱवैहळ्, ऊर्वन नीन्दुवन, मनिदर्— इवै अमुदङ्गळ्। 3

ईश्वर तुम हो! तत्त्वमसि! तत्त्वमसि! तुम ही 'वह' हो! यहाँ संसार में 'भगवान नहीं हैं।' —यह कहना मन में पैठी माया है। हे स्वामी! तुम उस माया को हटाकर सदा सर्वथा 'शिवोऽहम्' की साधना करो। ६६

६ वचन-कविता (गद्य काव्य, नयी कविता)

दृश्य—१

पहली शाखा—सुख

यह लोक मधुर है। इसमें रहनेवाला आकाश मधुर है। पवन भी मधुर है। अग्नि मधुर है। जल मधुर है। थल मधुर है। रवि भला है। चंद्र भी भला है। आकाश की ज्योतियाँ सभी बड़ी मधुर हैं। बारिश मधुर है। बिजली मधुर है। गाज मधुर है। समुद्र मधुर है। पर्वत मधुर है। वन भला है। नदियाँ मधुर हैं। धातुएँ, तरु, पौधे, लता, पुष्प, कच्चा फल और पक्व फल मधुर हैं। पखेरू मधुर हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हे स्वामी ! तुम उस माया को दूर हटाओ।
सदा "शिवोऽहम्" की सुसाधना को अपनाओ ॥ ६६ ॥

६ वचन-कविता (गद्य-काव्य, नयी कविता)

दृश्य—१

पहली शाखा—सुख

मधुर - मधुर यह लोक, मधुर नभ इसमें व्यापक।
अनिल मधुर, जल मधुर, मधुर थल, मधुमय पावक ॥
वर्षा मधुर, मधुर है बिजली, वज्र मधुर है।
गगन - ज्योतियाँ मधुर (धरातल, सकल मधुर है) ॥
मंगलमय रवि, मंगलमय शशि, मधुमय सागर।
कानन मधुर, मधुर सरिताएँ, मधुमय भूधर ॥
मधुर पुष्प, पौधे, तरु, लतिका, धातु मनोहर।
मधुर - मधुर कच्चे - पक्के फल, मधुर विहगवर ॥
मधुर रेंगनेवाले प्राणी, मधुमय जलचर।
मधुर सभी पशुगण, मानव हैं मधुर मनोहर ॥
सुन्दर नारी मधुर, मधुर भी सुन्दर नर है।
जीवन अतिशय मधुर, मरण मधुमय मनहर है ॥
(मादक) यौवन मधुर, मधुर (भोला) बचपन है।
मधुर वृद्धपन (शान्त सौम्य गंभीर गहन) है ॥ १ ॥
मधुर इन्द्रियाँ, रुचिर प्राण, तन मंगलमय है।
मन-मति मधुर, देव है अनुभव अमृत - निलय है ॥ २ ॥
चित्तदेव, मनदेव, (मनोरम) प्राणदेव हैं।
सरिता, सागर, गिरिवर, विपिन महान देव हैं ॥
देव गगन के ज्योति - पुंज हैं, अनिल - अनल हैं।
देव सूर्य, शशि, नभमंडल हैं, औ' जल - थल हैं ॥
सभी रेंगनेवाले प्राणी, सभी वारिचर।
सभी अमृत हैं पशु, पक्षी, तरु, पौधे औ' नर ॥ ३ ॥

रेंगनेवाले जंतु भी अच्छे हैं, सभी पशु मधुर हैं, जलचर भी भले हैं। मानव बहुत मधुर है। पुरुष भला है। स्त्री भली है। शिशु सुखदायक है। युवावस्था मधुर है। वृद्धावस्था भली है। जीना भला है; मरना मधुर है। १ शरीर भला है। इन्द्रियाँ बहुत मधुर हैं। प्राण मधुर हैं। मन मधुर है। बुद्धि मधु है। अनुभव अमृत है। अनुभव ही अमृत है। अनुभव देव है। २ मन देव है। चित्त देव है। प्राण देव हैं। जंगल, गिरि, सरिता, नदी, समुद्र, थल, जल, अनिल, अनल, आकाश, रवि, सोम, आकाश के प्रकाश-पुंज सभी देव हैं। धातुएँ, तरु, पौधे, पशु, पक्षी, रेंगनेवाले,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इव्वुलहम् ऑन्ऱु। आण् पॆण्, मऩिदर् तेवर्, पाम्बु, पऱवै काऱ्ऱु कडल् उयिर् इऱप्पु— इवै यऩैत्तुम् ऑन्ऱे।

जायिऱु वीट्टुच् चुवर्, ई, मलैयरुवि, कुऴल्, कोमेदहम्— इव् वऩैत्तुम् ऑन्ऱे।

इऩबम् तुऩबम् पाट्टु वण्णाऩ् कुरुवि। मिऩ्ऩल्, परुत्ति इःदॆल्लाम् ऑन्ऱु।

मूडऩ्, पुलवऩ्, इरुम्बु, वॆट्टुक् किळि— इवै ऑरु पॊरुळ्। वेदम् कडल्मीऩ् पुयल् काऱ्ऱु मऩ्लिहै मलर्— इवै ऑरु पॊरुळिऩ् पल तोऱ्ऱम्।

उऴ्ळ दॆल्लाम् ऑरे पॊरुळ् : ऑन्ऱु।

इऩ्द ऑऩ्ऱिऩ् पॆयर् "तान्" 'तानॆ' तॆय्वम्; 'तान्' अमुदम् इऱवाबदु। 4

ऍल्ला उयिरुम् इऩ्बम् ऍय्दुह। ऍल्ला उडलुम् नोय् तीर्ह। ऍल्ला उणर्वुम् ऑऩ्ऱाद लुणर्ह। 'तान्' वाऴ्ह। अमुदम् अप्पोदुम् इऩ्ब माहुह। 5

तॆय्वङ्गळे वाऴ्त्तु हिऩ्ऱोम्। तॆय्वङ्गळ् इऩ्ब मॆय्दुह। अवै वाऴ्ह। अवै वॆल्ह! तॆय्वङ्गळे!

ऍऩ्ऱुम् बिळङ्गुवीर्; ऍऩ्ऱुम् इऩ्बम् ऍय्दुवीर्; ऍऩ्ऱुम् वाऴ्बीर्; ऍऩ्ऱुम् अरुळ् पुरिवीर्; ऍबऱ्ऱैयुम् काप्पीर्। उमक्कु नऩ्ऱु, तॆय्वङ्गळे!

ऍम्मै उण्बीर्, उलहत्तुक्कु उणवावीर्, उलहत्तै उण्बीर्, उलहत्तु उणवाबीर्। उमक्कु नऩ्ऱु तॆय्वङ्गळे!

कात्तल् इऩिदु। काक्कप् पडुदलुम् इऩिदु। अऴित्तल् नऩ्ऱु। अऴिक्कप् पडुदलुम् नऩ्ऱु। उण्बदु नऩ्ऱु। उण्णम् पडुदलुम् नऩ्ऱु। शुवै नऩ्ऱु, उयिर् नऩ्ऱु, नऩ्ऱु, नऩ्ऱु। 6

उणर्वे नी वाऴ्ह! नी ऑन्ऱु, नी ऑऴि। नी ऑन्ऱु। नी पल। नी नट्पु। नी पहै। उऴ्ळदुम् इल्लाबदुम् नी। अऱिवदुम् अऱियाददुम् नी।

तैरनेवाले, मानव —ये सब अमृत हैं। ३ यह लोक एक है। पुरुष, स्त्री, मानव, सुर, सर्प, पक्षी, पवन, समुद्र, जीवन-मरण —ये सब एक ही हैं। रवि, घर की दीवार, मक्खी, गिरि-सरिता, बाँसुरी, गोमेदक —ये सब एक ही हैं। सुख, दुख, गीत, धोबी, चिड़िया, बिजली, कपाल —ये सब एक हैं। मूर्ख, पंडित, लोहा, शलभ —ये एक ही वस्तु हैं। वेद, समुद्र की मछली, आँधी, बल्लिका —ये एक ही वस्तु के विभिन्न रूप हैं। जो हैं, वे सभी एक ही वस्तु हैं। एक। इस 'एक' का नाम ही 'सब' है, 'आत्मा', 'आत्मादेव' है! आत्मा अमृत है, अमर है! ४ सभी जीव सुख को प्राप्त करें। सभी शरीर रोगमुक्त हों। अनुभव भी एक हैं, इसे समझें। आत्मा जिए। अमृत सदा मधुर बना रहे। ५ हम देवताओं को बधाई देते हैं। देवता सुखी बनें। वे जिएँ। वे विजयी हों। हे देवताओ, तुम सदा रहोगे, सदा सुख भोगोगे, सदा जिओगे। तुम सदा कृपा करोगे। सबकी रक्षा करो। तुम्हें शुभ हो, देवताओ!

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लोक एक है; एक नारि, नर हैं; सुर, नर हैं।
एक सर्प, पक्षी हैं; और पवन, सागर हैं॥
गोमेदक, बाँसुरी, मक्षिका, सरिता, गिरिवर।।
एक सभी गृह-भित्ति, मरण, जीवन औ' दिनकर॥
सुख - दुख, धोबी, चिड़िया, गीत, शलभ औ' बिजली।
वेद, मल्लिका, आँधी औ' सागर की मछली॥
लोहा, पंडित, मूर्ख एक इन सबको जानो।
एक वस्तु के विविध रूप इनको तुम मानो॥
आत्मदेव है औ' स्व - देव, यह एक तत्त्व है।
आत्मरूप है अजर - अमर, (अतिशय महत्त्व) है॥ ४ ॥

सभी जीव हों सुखी, सकल तन रोग - रहित हों।
अनुभव एक, अमृत मधु, आत्मा चिर - जीवित हो॥ ५ ॥

देवगणों को आज दे रहे मधुर वधाई।
सुखी बनें, वे जियें विजय पायें मनभाई॥
देवो ! सदा जियो, सुख भोगो, सदा रहो तुम।
सबकी रक्षा करो, सदा ही कृपा करो तुम॥
देवो ! हो कल्याण, सभी जग को भोजन दो।
बदले में तुम सभी जनों से निज भोजन लो॥
भला तुम्हारा हो - देवो ! (निज धर्म न खोना)।
रक्षा करना मधुर, मधुर है रक्षित होना॥
शुभ करना संहार, किया जाना भी शुभ है।
शुभ खाया जाना तथैव खाना भी शुभ है॥
शुभ है सुमधुर स्वाद और शुभ प्राण मनोहर।
(यत्र - तत्र - सर्वत्र व्याप्त) शुभ ही शुभ सुन्दर॥ ६ ॥

हे अनुभूति ! प्रकाश - स्वरूप एक है तू ही।
एक - अनेक, शत्रुता - मैत्री, भी है तू ही॥
तू ही तो है भाव - रूप तू ही अभाव है।
तू ही ज्ञाता पूर्ण और तू अज्ञ - भाव है॥

हमें (अन्न-सा) भोग लो ! लोकों के लिए भोजन बनो। लोक को खाओ। लोक का भोजन बनो। तुम्हारा भला हो, देवताओ ! रक्षा करना मधुर है। रक्षित होना भी मधुर है। संहार करना भी भला है। संहार किया जाना भी भला है। खाना भला है ! खाया जाना भी भला है। स्वाद भला है ! प्राण भले हैं। भला है, भला है ! ६ अनुभूति ! तू जिए ! तू एक है ! तू प्रकाश है। तू एक है, तू अनेक है। तू मैत्री है, तू शत्रुता है। भाव-अभाव तू है। ज्ञाता तू है। अज्ञात तू

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नन्रुम् तीदुम् नी। नी अमुदम्। नी शुवै। नी नन्रु। नी इन्बम्।7

इरण्डाङ् गिळै— पुहळ्

आयिरु

ऒळि तरुवदु यादु? तीराद इळमै युडैनदु यादु? वॆय्यवन् यावन्? इन्बम् ऎवनुडैयदु? मळै ऎवन् तरुहिन्रान्? कण् ऎवनुडैयदु? उयिर् ऎवन् तरुहिन्रान्? पुहळ् ऎवन् तरुहिन्रान्? पुहळ् ऎवनुक्कुरियदु? अरिवु ऎदुपोल् शुडरुम्? अरिवुत् तॆय्वत्तिन् कोयिल् ऎदु? आयिरु। अदु नन्रु।1

नी ऒळि। नी शुडर्। नी विळक्कम्। नी काट्चि। मिन्नल्। इरत्तिनम्। कनल्। तीक्कॊळुन्दु— इवैयॆल्लाम् निनदु निहळ्च्चि। कण् निनदु वीडु।

पुहळ्, वीरम् इवै निनदु लीलै। अरिवु निन् कुरि। अरिविन् कुरि नी। नी शुडुहिन्राय् वाळ्ह। नी काट्टुहिन्राय्, वाळ्ह। उयिर् तरुहिन्राय्, उडल् तरुहिन्राय्, वळर्क्किन्राय्। माय्क्किन्राय्, नीर् तरुहिन्राय्। कार्रै वीशु हिन्राय् वाळ्ह।2

वैहरैयिन् शंमै इनिदु। मलर्हळ् पोल नहैक्कुम् उषै वाळ्ह।

उषैये नाङ्गळ् तॊळुहिन्रोम्। अवळ् तिरु। अवळ् विळिप्पुत् तरुहिन्राळ्। तॆळिवु तरुहिन्राळ्। उयिर् तरुहिन्राळ्। ऊक्कन् दरुहिन्राळ्। अळहु तरुहिन्राळ्। कविदै तरुहिन्राळ्। अवळ् वाळ्ह।

है! भला व बुरा तू है। तू अमृत है! तू स्वाद है। तू भला है! तू सुख है! ७

दूसरी शाखा—यश

(सूर्य)

प्रकाश कौन देता है? अक्षय जवानी क्या है? तापक कौन है? सुख किसका है? वर्षा कौन देता है? आँख किसकी है? प्राण कौन देता है? यश कौन देता है? यश पर किसका हक़ है? बुद्धि किसके समान जलेगी? बुद्धिदेवता का मन्दिर कौन-सा है? यह (सब) सूर्य है, वह भला है। १ तुम प्रकाश हो। तुम ज्वाला हो। तुम दीप्ति हो। तुम दृश्य हो। बिजली है, रत्न-अंगारा, अग्नि-ज्वाला —ये सब तुम्हारे कार्य हैं। नेत्र तुम्हारा निकेतन है। यश, वीरता —ये तुम्हारी लीलाएँ हैं! तुम बुद्धि का चिह्न हो। बुद्धि का निशाना तुम हो। तुम जलाते हो, जिओ। तुम दरसाते हो, जिओ। प्राण देते हो, शरीर देते हो, पालते हो, मारते हो। जल देते हो। पवन को चालित करते हो। जिओ। २ लड़के की लाली सुहावनी है। सुमनों के समान मुस्कुरानेवाली उषा की जय हो। उषा की हम वन्दना करते हैं। वह श्री है। वह जागरण देती है। निर्मलता देती है। जान देती है। वह प्रेरणा देती है। वह सौन्दर्य देती है। वह कविता देती है। जिए वह। वह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तू ही मंगल - रूप, तथैव अमंगलमय है।
तू ही सुधा, स्वाद है, शुभमय है, सुखमय है ॥ ७ ॥

दूसरी शाखा — यश

सूर्य

देता कौन प्रकाश ? कौन है अक्षय यौवन ?।
देता गरमी कौन ? कौन देता सुख - साधन ? ॥
वर्षा देता कौन ? कौन देता है लोचन ?।
देता कौन प्राण ? यश देता कौन सुपावन ? ॥
किसका यश पर स्वत्व ? जलेगी मति किसके सम ?।
बुद्धिदेव का कहो कौन है मंदिर अनुपम ? ॥
इन सब प्रश्नों का बस उत्तर एक एव है।
इन सबका करनेवाला शुभ सूर्य देव है ॥ १ ॥
तुम ज्वलन्त - ज्वाला - स्वरूप हो, तुम प्रकाश हो।
दृश्य तुम्हीं हो हे दिनकर ! तुम दीप्ति - भास हो ॥
बिजली, द्युतिमय रत्न, अग्नि, ज्वाला, अंगारे।
हे ज्योतिर्मय सूर्य ! सभी ये कार्य तुम्हारे ॥
यश - वीरता तुम्हारी लीला, नयन निकेतन।
लक्ष्य बुद्धि के तुम्हीं, लक्ष्य तब बुद्धि सु-पावन ॥
चिरजीवी हो जियो सूर्य ! तुम, जगत जलाते।
चिरजीवी हो जियो सूर्य ! तुम, जग दरसाते ॥
तुम देते हो प्राण, तुम्हीं तो देते हो तन।
तुम्हीं चलाते पवन, तुम्हीं जल देते पावन ॥
और तुम्हीं संहार विश्व का करते भीषण।
जियो सूर्य ! तुम सकल सृष्टि का करते पालन ॥ २ ॥
सुहावनी लगती अतिशय प्रभात की लाली।
सुमनों के समान मुसकाती उषा निराली ॥
उषा - सुन्दरी का हम सब करते हैं वन्दन।
वह श्री है, वह हमको देती दिव्य जागरण ॥
वही प्राण देती है, वह देती निर्मलता।
वही प्रेरणा देती, वह देती सुन्दरता ॥
चिरजीवी हो, वह हमको देती है कविता।
वह मधु है, यह मन - मधुकर है उसे चाहता ॥

मधु है; चित्त रूपी भ्रमर उसे चाहता है। वह अमृत है। वह नहीं मरती। वह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अवळ् तेन्। शित्त वण्डु अवळै विरुम्बुहिन्ड्रदु। अवळ् अमुदम्। अवळ् इड्प्पडिल्लै। वलिमैयुडन् कलक्किन्ड्राळ्। वलिमैतान् अळ्हुडन् कलक्कुम्। इनिमै मिहवुम् पॅरिदु।

वड मेरुविले पलवाहत् तॉडर्न्दु वरुवाळ्। वानडियॅच् चूळ नहैत्तुत् तिरिवाळ्। अवळुडैय नहैप्पुक्कळ् वाळ्ह।

तॅर्के नमक्कु ऑरुत्तियाह वरुहिन्ड्राळ्; अन्बु मिहुदियाल्। ऑन्ड्रु पलविनुम् इनिदन्ड्रो? वैहरै नन्ड्रु। अदनै वाळ्त्तु हिन्ड्रोम्। 3

नी शुडुहिन्ड्राय्। नी वरुत्तन् वरुहिन्ड्राय्। नी विडाय् तरुहिन्ड्राय्, शोर्वु तरुहिन्ड्राय्, पशि तरुहिन्ड्राय्। इवै इनियन।

नी कडल्नीरै वर्ड्डिक्किड्राय्। इनिय मळै तरुहिन्ड्राय्। वान वॅळियिले विळक्केर्ड्रु हिड्राय्। इरुळैत् तिन्ड्रु विडुहिड्राय्। नी वाळ्ह। 4

ञायिरे! नी इरुळै अंन्न शॅय्दु विट्टाय्? ओट्टिन्नाया? कॉन् ड्राया? विळुङ्गिविट्टाया? कट्टि मुत्तमिट्टु निन् कदिर् हळाहिय कैहळाल् मरैत्तु विट्टाया? इरुळ् निन्नक्कुप् पहैया? इरुळ् निन् उणवुप् पॉरुळा? अदु निन् कादलिया? इर वॅल्लाम् निन्नैक् काणाद मयक्कत्तिल् इरुण्डिरुन्ददा? निन्नैक् कण्डवुडन् निन्नॉळि तानुङ् गॉण्डु निन्नैक् कलन्दुविट्टदा? नीङ्गळ् इरुवरुम् ऑरु ताय् वयिर्ड्रुक् कुळन्दैहळा? मुन्नुम पिन्नुमाह वन्दु उलहत्तैक् काक्कुम् बडि उङ्गळ् ताय् एविर्ड्रुक्किड्राळा? उङ्गळुक्कु मरणमिल्लैया? नीङ्गळ् अमुदमा? उङ्गळैप् पुहळ्हिन्ड्रेन्।

ञायिरे उन्नैप् पुहळ्हिन्ड्रेन्। 5

बल से मिलती है। बल ही सौन्दर्य से संगम करेगा। मधुरता बहुत बड़ी है। उत्तरी मेरु पर कई तरह से (वह लाली) लगी आती है। वह क्षितिज को घेरकर हँसती फिरेगी। उसकी हँसियाँ जिएँ। दक्षिण में हमारे लिए अकेली आती है। प्रेमाधिक्य में अकेला अनेकों से अधिक मधुर है न? उषाकाल भला है। हम उसको बधाई देते हैं। ३ तुम जलाते हो। तुम दुःख देते हो। तुम पिपासा देते हो। थकावट देते हो। तुम बुभुक्षा देते हो। ये सब मधुर हैं। तुम समुद्र को सुखाते हो। मधुर वर्षा देते हो। तुम आकाश के मैदान में दीप जलाते हो। तुम अंधकार को खा जाते हो। तुम जिओ। ४ हे सूर्य! तुमने अंधकार का क्या कर डाला? क्या उसे भगा दिया? क्या उसका वध कर दिया? क्या उसे निगल डाला? क्या आलिंगन-चुम्बन करते अपनी किरण रूपी हाथों से छिपा दिया? क्या अंधकार तुम्हारा शत्रु है? क्या वह तुम्हारा खाद्य पदार्थ है? क्या वह तुम्हारी प्रेमिका है? क्या वह रात भर तुम्हें न देखने से उत्पन्न मोह से काला बना था? क्या तुमको देखते ही तुम्हारी रोशनी उसे भी लेकर तुममें लय हो गयी? क्या तुम दोनों एक ही माता के पेट के शिशु हो न? आगे-पीछे आकर लोक-भरण करने के लिए क्या तुम्हारी माता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कभी नहीं वह मरती है, यह सुधामयी है।
बल से वह मिलती (सदैव ही प्रभामयी) है॥
बल ही तो सुन्दरता से करता है संगम।
इस महि - मंडल - मध्य मधुरता महा महत्तम॥
विविध रूप धर मेरु उत्तरी पर है लसती।
और छितिज को घेर - घेर कर सदा विहँसती॥
चिरंजीव हो जगती - तल में उसकी हँसियाँ।
आती दक्षिण ओर बाँटती हमको खुशियाँ॥
उमड़ रहा है प्रेम मधुर है मनभावन है।
इस प्रकाशमय उषाकाल का अभिनंदन है॥ ३ ॥
तुम ही दुख देते हो सब कुछ तुम्हीं जलाते।
तुम ही देते प्यास थकावट तुम उपजाते॥
तुम देते हो भूख तुम्हीं हो सिन्धु सुखाते।
वर्षाऋतु में तुम्हीं मधुर जल हो बरसाते॥
तुम्हीं गगन के आँगन में हो दीप जलाते।
तुम (प्रकाश का मुख पसार) तम को खा जाते॥
ये मनमोहक दृश्य मधुर हैं, हैं मंगलमय।
चिरजीवी हो सूर्य! तुम्हारी हो अक्षय जय॥ ४ ॥
रवि! बतला दो तुमने तम का क्या कर डाला?।
भगा दिया? वध किया? खा गये बना निवाला?॥
अपने किरण - करों से कर चुंबन - आलिंगन।
छिपा दिया तम - शत्रु तुम्हारा था जो भोजन॥
या तम तव प्रेमिका, रात भर मिले न दर्शन।
उसके तन छा गया शोक से था कालापन॥
प्रातःकाल तुम्हारा पाकर पावन दर्शन।
प्रभा - पुंज में हुई लीन तम - प्रिया सुहावन॥
या तुम दोनों एक जननि के पुत्र सहोदर?।
लोक - भरण करते हो आगे - पीछे आकर?॥
इसीलिए भेजा था क्या माता ने तुमको?।
अरे! मृत्यु आती न कभी अपनाने तुमको॥
अमृत - रूप रवि! करता मैं वन्दना तुम्हारी।
करता सदा प्रशंसा औ' अर्चना तुम्हारी॥ ५ ॥

ने तुम्हें भेजा था? क्या तुम्हें मौत नहीं आती? तुम अमृत हो, मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ। हे सूर्य, मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ। ५. री रोशनी! तू कौन है? क्या तू

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऒळिये नी यार् ? जायिऱ्ऱिन् महळा ? अन्ऱु नी जायिऱ्ऱिन्ऱ् उयिर्। अदन् तॆय्वम्।

जायिऱ्ऱिनिडत्ते निन्नैत् तान् पुहळ्हिन्ऱोम्। जायिऱ्ऱिन् वडिवम् उडल्। नी उयिर्। ऒळिये। नी ऎप्पोदु तोन्ऱिनाय् ? निन्नै यावर् पडैत्तनर् ? ऒळिये नी यार् ? उनदियल्बु यादु ?

नी अरिविन् महळ् पोलुम्। अरिवु तान् तूङ्गिक् किडक्कुम् तॆळिवु नी पोलुम्, अरिविन् उडल् पोलुम्। ऒळिये निनक्कु वानवॆळि ऎत्तनै नाट् पळक्कम् ? उनक्कु अदनिडत्ते इव्वहैप् पट्ट अन्बु यादु पऱ्ऱियदु ? अदनुडन् नी ऎप्पडि इरण्डऱक् कलक्किऱाय् ? उङ्गळै यॆल्लाम् पडैत्तवळ् वित्तैक् कारि। अवळ् मोहिनि मायक्कारि। अवळैत् तॊळुहिन्ऱोम्। ऒळिये वाळ्ह। 6

जायिऱे ! निन्निडत्तु ऒळि ऎङ्ङनम् निऱ्कित्ऱदु ? नी अदनै उमिळ् हिन्ऱाय् ? अदु निन्नैत् तिन्नुहिऱदा ? अन्ऱि ऒळि तविर नी वेऱॊन्ऱु मिल्लैया ?

विळक्कुत् तिरि काऱ्ऱाहिच् चुडर् तरुहिन्ऱदु। काऱ्ऱुक्कुम् शुडरुक्कुम् अव्वहै उऱवु ? काऱ्ऱिन् बडिवे तिरियन्ऱऱिवोम्। ऒळियिन् वडिवे काऱ्ऱु वोलुम्। ऒळिये नी इनिमै। 7

ऒळिक्कुम् वॆम्मैक्कुम् ऎव्वहै उऱवु ? वॆम्मै येऱ ऒळि तोन्ऱुम्। वॆम्मैयैत् तॊळु हिन्ऱोम् ? वॆम्मै ऒळियिन् ताय् ऒळियिन् मुन्नुरुवम्। वॆम्मैये नी तो !

ती दान् वीरत् तॆय्वम्। ती दान् जायिऱु।

सूर्य की बेटी है ? नहीं, तू तो सूर्य की जान, उसकी देवी है। सूर्य के बहाने तेरी ही हम प्रशंसा करते हैं। सूर्य का रूप शरीर है, तू (उसकी) जान है। री रोशनी ! तू कब प्रकट हुई ? तुझे किसने निर्मित किया ? री रोशनी ! तू कौन है ? तेरा स्वभाव क्या है ? तू बुद्धि की पुत्री है शायद ! बुद्धि की निद्रा में ही तू जागृति है ! बुद्धि शरीर है शायद ! री रोशनी ! आकाश से तेरा कितने दिनों का परिचय है ? तेरा उसके साथ ऐसा प्रेम किससे सम्बद्ध है ? तू कैसे इस तरह उससे अपृथक् मिल जाती है ? तू सबका निर्माण करनेवाली जादूगरनी है ! वह मोहिनी है, मायाविनी है। हम उसकी स्तुति करते हैं ! हे रोशनी ! तू जिए। ६ हे सूर्य ! तुममें प्रकाश कैसे स्थित होता है ? क्या तुम उसे उगलते हो ? क्या वह तुम्हें खाता है ? या क्या प्रकाश के सिवा तुम कुछ और नहीं हो ? दीप की बाती पवन बनकर प्रकाश देती है। पवन और ज्वाला का क्या रिश्ता है ? बात का रूप ही बाती है, इसे हम जानते हैं। प्रकाश का रूप बात है शायद; हे प्रकाश, तू मधुर है। ७ प्रकाश और उष्ण (ताप) का कैसा नाता है ? जब उष्ण बढ़ता है, तब प्रकाश प्रकट हो जाता है। हम उष्ण की वन्दना करते हैं। उष्णता प्रकाश की माता है, उष्ण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरी ! प्रभा ! तू कौन ? बता, क्या सूर्य-सुता है ? ।
देव, प्राण उसकी जो कहलाता सविता है ।।
रवि में सब तेरे ही यश का करते वर्णन ।
तू है प्राण - स्वरूप सूर्य का बिंब बना तन ।।
प्रभा ! हुई कब प्रकट ? तुझे किसनें प्रकटाया ? ।
क्या स्वभाव है, कौन बता, क्या तेरी माया ? ।।
ऐसा होता ज्ञात कि तू बुद्धि की सुता है ।
मति सोती जब तब भी तू जागरण-रता है ।।
मति तेरा तन, पर तू प्राण-रूप निश्चय है ।
बता प्रभा ! नभ से तेरा कब से परिचय है ? ।।
कब से नभ से हुआ प्रेम-सम्बन्ध मनोहर ।
एकरूप हो जाती नभ से तू घुल-मिलकर ।।
तू सब जगत बनानेवाली जादूगरनी ।
तू है मायाविनी, बनी तू महा - मोहिनी ।।
अरी प्रभा ! हम सब जन तेरी ही स्तुति गाते ।
चिरजीवी हो जग में तू, हम यही मनाते ।। ६ ।।
हे रवि ! कैसे तुममें यह प्रकाश है आता ? ।
उसे निगलते तुम, या वह तुमको अपनाता ? ।।
क्या प्रकाश के सिवा, सूर्य ! कुछ और नहीं हो ? ।
(सभी ग्रहों में क्या सबके सिर-मौर नहीं हो) ।।
दीपक - बाती बनकर पवन प्रभा छिटकाती ।
पावक और पवन का शुभ सम्बन्ध दिखाती ।।
विमल पवन का रूप, जानते हम, "बाती" है ।
पवन ज्योति का रूप "बात" यह कहलाती है ।।
हे प्रकाश ! तू मधुर मनोहर मंगलमय है ।
(तेरी सुखद छत्र - छाया में जग निर्भय है) ।। ७ ।।
अग्नि प्रतापी देव, अग्नि ही सूर्य मनोहर ।
और अग्नि का धर्म प्रसिद्ध प्रकाश प्रबलतर ।।
अग्नि प्रज्वलित हो, हम उसमें डाल रहे घृत ।
डाल रहे हम स्निग्ध ताकि हो अग्नि प्रज्वलित ।।
अग्नि प्रज्वलित हो, हम यज्ञ कर रहे पावन ।
अग्नि प्रज्वलित हो, हम उसका करते वन्दन ।।

का वह प्रथम रूप है । हे उष्ण, तुम अग्नि हो । अग्नि ही प्रतापी देव है । अग्नि ही सूर्य है । अग्नि का स्वभाव (धर्म) ही प्रकाश है । अग्नि जले । उसमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तीयिन् इयल्बे ऒळि। ती ऎरिह ! अदन्निडत्ते नॆय् पॊळिहिन्ऱोम्। ती ऎरिह ! अदन्निडत्ते तशै पॊळिहिन्ऱोम्। ती ऎरिह। अदन्निडत्ते शॆन्नीर् पॊळि हिन्ऱोम्। ती ऎरिह। अदऱ्कु वेळ्वि शॆय्हिन्ऱोम्। ती ऎरिह।

अऱत्ती; अऱिवुत् ती; उयिर्त् ती। विरदत् ती। वेळ्वित् ती। शिनत् ती। पहैमैत् ती। कॊडुमैत् ती ! इवैयनत्तैयुम् तॊळुहिन्ऱोम्। इवऱ्ऱैक् काक्किन्ऱोम्। इवऱ्ऱै आळुहिन्ऱोम्। तीये ! नी ऎमदु उयिरिन् तोळन्। उत्नै वाळ्त्तुहिन्ऱोम्।

निन्नैप् पोल् ऎमदुयिर् नूऱाण्डु वॆम्मैयुम् शुडरुम् तरुह। तीये, निन्नैप् पोल ऎमदुळ्ळम् शुडर् विडुह। तीये, निन्नैप् पोल ऎमदऱिवु कनलुह ! नायिऱ्ऱि निडत्ते, तीये, निन्नैत्तान् पोऱ्ऱुहिन्ऱोम्। नायिऱ्ऱत् तॆय्वमे, निन्नैप् पुहळ्हिन्ऱोम्। निन्नदॊळि नन्ऱु; निन् शॆयल् नन्ऱु, नी नन्ऱु। 8

वानवॆळि ऎन्नुम् पॆण्णं ऒळियॆन्नुम् तेवन् मणन्दिरुक् किन्ऱान्। अवर्ह-ळुडैय कूट्टम् इनिदु। इदनैक् काऱ्ऱत् तेवन् कण्डान्। काऱ्ऱु वलिमै-युडैयवन्।

इवन् वान् वॆळियैक् कलक्क विरुम्बिनान्। ऒळियै विरुम्बुबदु पोल वानवॆळि इवनै विरुम्ब विल्लै। इवन् तनदु पॆरुमैयै ऊदिप् पऱैयडिक्किऱान्।

वॆळियुम् ऒळियुम् इरण्डु उयिर्हळ् कलप्पदु पोल् कलन्दन। काऱ्ऱत् तेवन् पॊऱामै कॊण्डान्। अवन् अमैदियिन्ऱि उळ्ळुहिऱान्। अवन् शीऱ्ऱुहिऱान्। पुडैक्किन्ऱान्। कुमुऱुहिन्ऱान्। ओलमिडुहिन्ऱान्, शुळ्ळु-हिन्ऱान्, तुडिक्किन्ऱान्, ओडुहिन्ऱान्, ऎळुहिन्ऱान्, निलैयिन्ऱिक्

(हम) घी डालते हैं, अग्नि जले। उसमें मैदा डालते हैं, अग्नि जले ! उसका यज्ञ करते हैं, अग्नि जले। धर्माग्नि, बुद्धि-अग्नि, प्राणाग्नि, व्रताग्नि, यागाग्नि, कोपाग्नि, वैराग्नि, क्रूराग्नि —इन सबकी हम वन्दना करते हैं। इनको पालते हैं। इन पर शासन करते हैं। हे अग्नि ! तुम हमारे प्राणों के मित्र हो। तुमको बधाई देते हैं। तुम्हारी तरह हमारे प्राण भी सौ बरस उष्ण तथा प्रकाश दें। हे अग्नि ! तुम्हारी भाँति हमारा मन प्रज्वलित हो। हे अग्नि ! तुम्हारी ही भाँति हमारी बुद्धि प्रज्वलित हो। हे अग्नि ! सूर्य के रूप में हम तुम्हारी ही पूजा करते हैं। हे सूर्यदेव ! हम तुम्हारी प्रशंसा करते हैं। तुम्हारा प्रकाश भला है। तुम्हारा कार्य भला है। तुम भले हो। ८ अन्तरिक्ष नाम की कन्या से प्रकाश रूपी देव ने विवाह किया है। उनका संगम सुहावना है। इसको पवनदेव ने देखा। पवन बलवान है। इसने अंतरिक्ष से संगम करना चाहा। प्रकाश को जैसे अन्तरिक्ष ने पसन्द किया, वैसे पवन देव को नहीं किया। यह अपनी डींग फूँक-फूँककर मारता है ! अन्तरिक्ष और प्रकाश दो प्राणों के समान एकात्म हुए। इससे पवनदेव को ईर्ष्या हुई। वह अशांत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

धर्म-अग्नि की, बुद्धि-अग्नि की; प्राण-अग्नि की।
याग-अग्नि की, कोप-अग्नि की, वैर-अग्नि की॥
क्रूर अग्नि की, औ' व्रताग्नि की अति प्रमुदित मन।
सभी अग्नियों की करते वन्दना सभी जन॥
सभी अग्नियों का हम सब पालन करते हैं।
सभी अग्नियों पर हम सब शासन करते हैं॥
अग्निदेव! शुभ मित्र प्राण-प्रिय हो तुम पावन।
अग्निदेव! कर रहे तुम्हारा हम अभिनन्दन॥
अग्नि! तुम्हारे ही समान प्राण भी हमारे।
शत वर्षों तक ज्योति उष्णता देवें प्यारे॥
अग्नि! तुम्हारे ही सम मेरी मति द्योतित हो।
अग्नि! तुम्हारे ही सम मेरा मन ज्योतित हो॥
अग्नि! तुम्हारा ही रवि में हम करते पूजन।
सूर्यदेव! कर रहे तुम्हारा सब यश गायन॥
मंगलमय है उज्ज्वल धवल प्रकाश तुम्हारा।
मंगलमय है कार्य - कलाप - विकास तुम्हारा॥ ८॥
नभ - कन्या से किया प्रकाश - देव ने परिणय।
पवनदेव ने देखा उनका संगम सुखमय॥
नभ - कन्या से उसने संगम करना चाहा।
पर प्रकाश सह सका न यह संगम अनचाहा॥
डींग हाँकता, पवनदेव ने मस्तक ताना।
पर प्रकाश ने नभ - कन्या से संगम ठाना॥
दो प्राणों - सम नभ - प्रकाश हो गये संगमित।
पवन - देव के मन में ईर्ष्या हुई अपरिमित॥
काट रहा वह चक्कर चारों ओर बिलखता।
फुफकारता, चीखता, भ्रमता और उबलता॥
उठता, भगता और पीटता छट - पट करता।
अस्थिर - लोडित होकर चारों ओर विचरता॥
देख पवन को इस प्रकार उत्पात मचाते।
नभ - प्रकाश मिल दोनों उसकी हँसी उड़ाते॥

होकर चक्कर काटता है। वह फुफकारता है, पीटता है, उबलता है, चीत्कार करता है; घूमता है; छटपटाता है, भागता है, उठता है, अस्थिर होकर बिलोडित होता है। अन्तरिक्ष और प्रकाश दोनों मौन में मिलकर हंसते हैं। पवनदेव बलवान है। उसकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कलङ्गुहिन्ऱ्रान्। वॆळियुम् ऒळियुम् मोनत्तिले कलन्दु नहै शॆय्हिन्ऱ्रन। कार्ऱुत् तेवन् वलिमै युडैयवन्। अवन् पुहळ् पॆरिदु। अप्पुहळ् नन्ऱु। आनाल् वानवॆळियुम् ऒळियुम् अवनिलुम् शिऱन्दन।

अवै मोनत्तिल् कलन्दु नित्तम् इन्बुऱुवन। अवै वॆऱ्ऱियुडैयन। आयिऱ् नी दान् ऒळित् तॆय्वम्। निन्नैये वॆळिप्पॆण् नन्गु कादल् शॆय्हिऱाळ् उङ्गळ् कूट्टम् मिह इनिदु। नीविर् वाळ्ह। 9

आयिऱ् निन् मुहत्तैप् पार्त्त पॊरुळॆल्लाम् ऒळि पॆऱुहिन्ऱ्रदु।

पूमि शन्दिरन्, शॆव्वाय्, बुदन्, शनि, वॆळ्ळि, वियाळन्, यूरेनस् नॆप्त्यून् मुदलिय पल नूऱु वीडुहळ्। इवै ऎल्लाम् निन् कदिर्हळ् पट्ट मात्तिरत्तिले ऒळियुऱ नहै शॆय्हिन्ऱ्रन।

तीप्पन्दिलिरुन्दु पॊऱिहळ् वीशुवदु पोल इवै यॆल्लाम् आयिऱ्ऱिलिरुन्दु वॆडित्तु वॆळिप्पट्टन ऎन्बर्। इवर्ऱैक् कालमॆन्नुम् कळवन् मरुविनान्। इवै ऒळि कुन्ऱिप् पोयिन। ऒळियिळन्दनवल्ल। कुऱैन्द ऒळियुडैयन। ऒळियऱ्ऱ पॊरुळ् शहत्तिले यिल्लै। इरुळॆन्बदु कुऱैन्द ऒळि।

शॆव्वाय् बुदन् मुदलिय पॆण्गळ् आयिऱ्ऱै वट्ट मिडुहिन्ऱ्रन। इवै तमदु तन्दै मीदु कादल् शॆलुत्तु हिन्ऱ्रन। अवन् मन्दिरत्तिले कट्टुण्डु वरै कडवादु शुळल् हिन्ऱ्रन। अवनुडैय शक्ति यॆल्लैय ऎन्ऱुम् कडन्दु शॆल्ल माट्टा। अवन् ऎप्पोदुम् इवर्ऱै नोक्कि यिरुक्किन्ऱ्रान्। अवनुडैय ऒळिय मुहत्तिल् उडल् मुळुदुम् नऩैयुम् पॊरुट्टाहवे इवै उरुळुहिन्ऱ्रन। अवनॊळियै इवै मलरिलुम्, नीरिलुम् कार्ऱिलुम् पिडित्तु वैत्तुक् कॊळ्ळुम्।

महिमा बड़ी है। उसकी महिमा भली है, पर अन्तरिक्ष तथा प्रकाश उससे बेहतर हैं। वे मौन में मिलकर हर दिन सुख पाते हैं। वे विजयी हैं। हे सूर्य! तुम ही प्रकाश-देव हो। तुमसे अन्तरिक्ष-कुमारी बहुत प्रेम करती है। तुम दोनों का मिलन बहुत मधुर है! तुम जिओ। ९ हे रवि! तुम्हारा मुख देखनेवाले सभी पदार्थ दीप्ति को प्राप्त हो जाते हैं। भूमि, सोम, मंगल, बुध, शनि, शुक्र, बृहस्पति, यूरेनस, नैप्च्यून् आदि अनेक सौ ग्रह हैं। ये सब तुम्हारे स्पर्श मात्र से दीप्ति पाकर मुस्कुराते हैं। लोग कहते हैं— आग की मशाल (अग्निपुंज) से जैसे अंगारे छूटते हैं, वैसे ही ये सब सूर्य से टटकर छूटे हैं। चोर कालदेव ने इनका आलिंगन किया। वे मंद-प्रकाश हो गये। वे पूर्णतः प्रभाहीन नहीं हुए। वे कम दीप्त हैं। प्रकाश-शून्य वस्तु जगत में है ही नहीं। अंधकार का अर्थ 'कम प्रकाश' है। मंगल, बुध आदि बालाएँ सूर्य के चारों ओर घूमती हैं। ये अपने पिता से प्रेम करती हैं। उसके जादू से बँधकर, बिना सीमा का उल्लंघन किये, घूमती हैं। वे उसकी शक्ति की परिधि को पार कर कभी भी नहीं जायँगी। वह (सूर्य) सदा उनकी ओर दृष्टि लगाये हुए रहता है। वे इस भाँति घूमती-फिरती हैं कि प्रकाशमान मुख की ज्योति से उनके शरीर सदा 'सने' रहें।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पवनदेव बलवान बड़ी है उनकी महिमा।
पर उनसे भी बढ़कर नभ - प्रकाश की गरिमा॥
मौन - भाव से नभ - प्रकाश मिल सुख पाते हैं।
इसीलिए वे जग के विजयी कहलाते हैं॥
हे रवि! तुम्हीं प्रकाश - देव हो महिमा - मंडित।
नभ - कन्या करती है तुमसे प्रेम अखण्डित॥
तुम दोनों का संगम अतिशय मधुर मनोहर।
चिरजीवी तुम रहो सदा इस जगती-तल पर॥ ९॥
हे रवि! जो देखते तुम्हारा हैं मुख - मंडल।
वे सब पाकर प्रभा जगमगाते हैं उज्ज्वल॥
भूमि, सोम, बुध, शुक्र, बृहस्पति, शनि औ' मंगल।
यूरेनस औ' नॅपच्यून शतक ग्रह उज्ज्वल॥
ये ग्रह चारों ओर तुम्हारे चक्कर खाते।
स्पर्श मात्र से दीप्ति तुम्हारी पा मुसकाते॥
जैसे आतिशबाज़ी से झरते अंगारे।
रवि से टूटे उसी भाँति ये ग्रह के तारे॥
चोर काल ने जभी किया इनका आलिंगन।
मंद - ज्योति के बने तभी से सारे ग्रहगण॥
ऐसी वस्तु न कोई जो ज्योति से रहित है।
काला अंधकार भी अल्प - प्रकाश - सहित है॥
मंगल - बुध - आदिक कन्याएँ मंजु विचरतीं।
घूम - घूमकर रवि की सदा प्रदक्षिण करतीं॥
पूज्य पिता के प्रति करतीं वे प्रेम प्रकाशन।
मंत्र - बँधी - सी कभी न करतीं सीमोल्लंघन॥
जा न सकेंगी सूर्य - शक्ति की परिधि पार कर।
सदा सूर्य की ओर किये निज दृष्टि मनोहर॥
रवि - मुख - आभा से आभासित सदा रहे तन।
इस प्रकार कर रहीं चतुर्दिक् रवि के नर्तन॥
रवि की ज्योति जगत में ये वितरित करती हैं।
सुमनों में जल और पवन में ये भरती हैं॥
रवि है उत्तम देव विश्व के सब स्थानों पर।
भरता सबमें प्राण निज करों से छू - छूकर॥

उसकी ज्योति को ये सुमनों, जल तथा पवन में पकड़ रखती हैं। रवि उत्तम देव है। उसके हाथ के छुए हुए सभी स्थानों में प्राण प्रकट होते हैं। फूल उसी को चाहता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ञायिऱु मिहच्चिर्न्द देवन्। अवन् कैप्पट्ट इडमॆल्लाम् उयिरुण्डाहुम्। अवऩैये मलर् विरुम्बुहिन्ऱदु। इलैहळ् अवनुडैय अऴहिले योहमॆय्दि यिरुक्किन्ऱऩ। अवऩै नीरुम् निलमुम् कार्ऱुम् उहन्दु कळियुऱुम्। अवऩै वान् कव्विक् कॊळ्ळुम्। अवनुक्कु मऱ्ऱॆल्लात् तेवरुम् पणि शॆय्वर्। अवन् पुहऴैप् पाडुवोम्। अवन् पुहऴ् इनिदु। 10

पुलवर्हळे, अऱिवुप् पॊरुळ्हळे, उयिर्हळे, पूदङ्गळे, शत्तिहळे ऎल्लोरुम् वरुवीर्। ञायिऱ्ऱॆत् तुदिप्पोम्। वारुङ्गळ्।

अवन् नमक्कॆल्लाम् तुणै। अवन् मऴै तरुहिन्ऱान्। मऴै नऩ्ऱु मऴैत् तॆय्वत्तै वाऴ्त्तु हिन्ऱोम्।

ञायिऱु वित्तै काट्टुहिऱान्। कडल् नीरैक् कार्ऱुक्कि मेले कॊण्डु पोहिऱान्। अदऩै मीळवुम् नीराक्कुम्बडि कार्ऱै एवुहिन्ऱान्। मऴै इऩिमै युऱप् पॆय्हिन्ऱदु। मऴै पाडुहिन्ऱदु। अदु पल कोडि तन्दिहळुडैयवोर् इशैक्करुवि।

वानत्तिलिरुन्दु अमुद वयिरक्कोल्हळ् विऴुहिन्ऱऩ। पूमिप् पॆण् विडाय् तीर्हिऱाळ्। कुळिर्च्चि पॆऱुहिन्ऱाळ्। वॆप्पत्ताल् तण्मैयुम् तण्मैयाल् वॆप्पमुम् विळैहिन्ऱऩ। अनैत्तुम् ऒन्ऱादलाल्।

वॆप्पम् तवम्। तण्मै योगम्। वॆप्पम् आण्; तण्मै पण्। वॆप्पम् वलियदु। तण्मै इऩिदु। आगिलुम् पॆण् शिऱन्ददन्ऱो? नाम् वॆम्मैत् तॆय्वत्तैप् पुहऴ् हिन्ऱोम्। अदु वाऴ्ह। 11

नाम् वॆम्मैयैप् पुहऴ् हिन्ऱोम्। वॆम्मैत् तॆय्वमे, ञायिऱे, ऒळिक्कुन्ऱे अमुदमाहिय उयिरिन् उलहमाहिय उडलिले मीन्गळाहत् तोन्ऱुम् विऴिहळिन् नायहमे!

है। पत्र उसके सौन्दर्य में ही योगस्थ रहते हैं। उसे जल, थल तथा अनिल पसन्द करते हैं तथा मुदित रहते हैं। उसे आकाश ग्रस लेगा। अन्य सभी देवता उसकी सेवा करते हैं। हम उसका यश गायेंगे। उसका यश मधुर है! १० हे कवियो (विद्वानो), हे बुद्धियुक्त वस्तुओ, हे जीवो, हे भूतो, हे शक्तियो, सभी आ जाओ। हम सब सूर्य की स्तुति करें। आओ। वह हम सबका सहायक है। वह वर्षा देता है। वर्षा भली है। हम वर्षा-देव का जयगान करते हैं। सूर्य खेल दिखाता है। वह समुद्र के जल को हवा बनाकर ऊपर ले जाता है। फिर उसे पानी बनाने के लिए हवा को प्रेरित करता है। वर्षा सुख से बरसती है! वर्षा गाती है। वह अनेक करोड़ तंत्रियों का गीतवाद्य है! आकाश से अमृतमय हीरे की लड़ियाँ गिरती हैं। भूमि सुन्दरी प्यास से निवृत्त होती है और शीतलता पाती है। उष्ण से शीतलता तथा शीतलता से उष्ण पैदा होता है! —क्योंकि सभी एक हैं। उष्ण तप है; शीतलता योग है! उष्ण पुरुष है; शीतलता स्त्री है। उष्ण बलवान है; शीतलता मनोहारी है। पुरुष से नारी श्रेष्ठ है न! हम उष्ण के देव की प्रशंसा करते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पत्र उसी की सुन्दरता में डूबे रहते।
फूल फूलते उसे देखकर, उसको चहते॥
उसे चाहता अनिल, चाहते उसको जल-थल।
अंत समय में उसको ग्रस लेता नभ-मंडल॥
सभी देवगण उसकी शाश्वत सेवा करते।
उसका यश गाकर हम निज मन में मुद भरते॥ १० ॥
आओ हे कवियो! विद्वानो! औ' मतिमानो!।
आओ भूतो! और शक्तियो! सभी महानो!॥
सूर्यदेव की करें प्रार्थना हम सब मिलकर।
हम सबका वह सदा सहायक है प्रभु भास्कर॥
वह वर्षा देता है, वर्षा अति सुखदाई।
हम प्रसन्न हो वर्षा को दे रहे बधाई॥
नभ-मंडल में सूर्य अनेकों खेल दिखाता।
सागर-जल को धुआँ बना ऊपर ले जाता॥
उसे पवन से प्रेरित कर पानी बरसाता।
सुख से वर्षा होती, वर्षा-गीत सुहाता॥
गीत-वाद्य वर्षा का कोटि तंत्रियोंवाला।
नभ से हीरक-लड़ियाँ गिरतीं, (टूटी-माला)॥
प्यास भूमि-बाला की सारी मिट जाती है।
मिट जाती है गरमी, शीतलता पाती है॥
शीतलता से तपन, तपन से शीतलता है।
एक-दूसरे के ये दोनों जनक पिता हैं॥
अगर तपन तप तीव्र, योग तो है शीतलता।
अगर तपन है पुरुष, नारि है तो शीतलता॥
अगर तपन बलवान, मनोहर तो शीतलता।
कम न तपन से, वरन् श्रेष्ठतर है शीतलता॥
हम सब करते तपनदेव के यश का वर्णन।
चिरजीवी हो तपन सर्वदा नित नव नूतन॥ ११ ॥
तपनदेव की प्रबल प्रशंसा हम करते हैं।
(तपनदेव के पद-कमलों को सिर धरते हैं)॥
तपनदेव! हे सूर्यदेव! हे प्रकाश-पर्वत!।
हे प्राणों के लोक! प्राण के सागर शाश्वत!॥

हैं। वह चिरंजीव रहे। ११ हम उष्ण की प्रशंसा करते हैं। हे उष्ण देवता सूर्य, हे प्रकाश-गिरि, हे अमृतमय प्राणों के लोक, शरीर में मछली की तरह दिखनेवाली

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पूमियाहिय पॅण्णिन् तन्दै याहिय कादले ! बलिमैयिन् ऊऱ्ऱे, आऴि मऴैये उयिर्क् कडले ।

शिवनॅन्नुम् वेडन् शक्ति यन्नुम् कुऱत्तियै उलह मॅन्नुम् पुनङ् गाक्कच् चॊल्लि वैत्तु विट्टुप् पोन विळक्के ।

कण्ण नॅन्नुम् कळ्वन् अरिवॅन्नुम् तन् मुहत्तै मूडिवैत् तिरुक्कुम् ऑऴि यॅन्नुम् तिरैये ! ञायिऱे । निन्नैप् परवु हिन्ऱोम् ।

मऴैयुम् निन् महळ् । मण्णुम् निन् महळ् । काऱ्ऱुम् कडलुम् कनलुम् निन् मक्कळ् । वॅऴि निन् कादलि; इडियुम् मिन्नलुम् निनदु वेडिक्कै ! नी देवर्हळुक्कुत् तलैवन् । निन्नैप् पुहळ्हिन्ऱोम् ।

तेवर्हळॅल्लाम् ऑन्ऱे । काण् बन वॅल्लाम् अवरुडल् । करुदुवन अवरुयिर् । अवर्हळुडैय ताय् अमुदम् । अमुदमे तॅय्वम् । अमुदमे मॅय्यॊऴि । अःदु आत्मा । अदनैप् पुहळ्हिन्ऱोम् । अदन् वीडाहिय ञायिऱ्ऱैप् पुहळ् हिन्ऱोम् । ञायिऱ्ऱिन् पुहळ् पेशुदल् नन्ऱु । 12

मऴै पॅय्हिऱदु । काऱ्ऱडिक्किन्ऱदु । इडि कुमुऱुहिन्ऱदु । मिन्नल् वॅट्टु हिन्ऱदु ।

पुलवर्हळे, मिन्नलैप् पाडुवोम्, वारुङ्गळ् । मिन्नल् ऑऴित् तॅय्वत् तिन् ऑरु लीलै —ऑऴित् तॅयवत्तिन् ऑरु तोऱ्ऱम् । अदनै यवनर् वणङ्गि ऑऴि पॅऱ्ऱनर् । मिन्नलत् तॊऴुहिन्ऱोम् । अदु नम्मुऱवै ऑऴि युऱच् चॅय्ह । मेहक् कुऴन्दैहळ् मिन्नऱ्पूच् चॊरिहिन्ऱन । मिन् शक्ति इल्लाद इडमिल्लै । अल्लात् तॅय्वङ्गळुम् अङ्गनमे ! करुङ्गल्लिले, बॅण्

आँखों के नायक, भूमिदेवी के पिता रूपी प्रेम, हे बल के स्रोत, हे प्रकाश-वर्षा, हे प्राण-समुद्र, शिव व्याध ने शक्ति-जिप्सी को लोक रूपी बाग की रक्षा के लिए जिसे छोड़ रखा है, हे वही दीप, चोर कृष्ण के अपने मेधा रूपी मुख पर डाले गये प्रकाश रूपी पर्दे, हे रवि, हम तुम्हारी पूजा करते हैं। वर्षा भी तुम्हारी पुत्री है। पृथ्वी भी तुम्हारी पुत्री है ! पवन, समुद्र और अनल तुम्हारी सन्तानें हैं। अन्तरिक्ष तुम्हारी प्रेमिका है। अशनि तथा विद्युत् तुम्हारा खेल है। तुम देवताओं के सरदार हो ! हम तुम्हारी प्रशंसा करते हैं। देव सभी एक हैं; सभी दृश्य उनके शरीर हैं। सभी चिन्तन उनके प्राण हैं। अमृत उनकी माँ है। अमृत ही ईश्वर है। अमृत ही सच्ची ज्योति है। वह आत्मा है। उसकी प्रशंसा करते हैं। उसका निकेतन सूर्य है। हम उस सूर्य की प्रशंसा करते हैं। सूर्य की प्रशंसा करना अच्छा है। १२ पानी बरसता है। हवा बहती है। अशनि थर्राती है ! बिजली चमकती है ! कविओ (विद्वानो), हम विद्युत् (की महिमा) को गायेंगे। आओ ! बिजली प्रकाशदेव की लीला है, प्रकाशदेव का एक रूप है। यवनों ने उसकी पूजा करके प्रकाश प्राप्त किया। हम उस बिजली की पूजा करते हैं ताकि वह हमारी बुद्धि को दीप्त करे। मेघ-शिशु विद्युत् पुष्पों को बिखेरते हैं। ऐसा कोई स्थान नहीं है, जहाँ विद्युत् की शक्ति नहीं हो। सभी देव वैसे ही हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुम हो बल के स्रोत, मीन-नयनों के नायक।
भू-देवी के पिता-प्रेम हो प्रकाश-वर्षक॥
शिव है व्याध, शक्ति है जिप्सी, जग-उपवन में।
रक्षा-हित रवि-दीप जलाया नभ-आँगन में॥
चोर कृष्ण ने अपने मेघा-रूपी मुख पर।
रवि-प्रकाश रूपी पर्दा डाला अति सुन्दर॥
सूर्यदेव! हम सभी कर रहे हैं तव पूजन।
वर्षा-पृथ्वी ये दोनों तव पुत्री पावन॥
अनल, पवन औ' सिन्धु सभी सन्ततियाँ प्यारी।
अन्तरिक्ष रमणीय परम प्रेमिका तुम्हारी॥
वज्र और बिजली हैं खेल तुम्हारे सुन्दर।
सभी देवताओं के हो सरदार मनोहर॥
हम सब जन कर रहे प्रशंसा आज तुम्हारी।
विनय तुम्हारी है (समस्त जग-मंगल-कारी)॥
सकल देव हैं एकमेव बस, दृश्य-जगत तन।
समझो उसके प्राण— समग्र मनन औ' चिन्तन॥
सुधा स्वयं वह, सुधा-जनित वह सबका ईश्वर।
सुधा वस्तुतः ज्योति, सुधा आत्मा अविनश्वर॥
वही सूर्य में, उसकी और सूर्य की शंसा।
ब्रह्म धन्य! रवि धन्य! सकल की धन्य प्रशंसा!॥ १२॥
सलिल बरसता, हवा बह रही, गाज गमकती।
बार-बार चमचम चपला नभ-बीच चमकती॥
कवियो! आओ हम बिजली के गायन गायें।
बिजली की करके पूजा हम उसे मनायें॥
ज्योति-देव से नवल ज्योति बिजली ने पायी।
करे हमारी बुद्धि दीप्त वह मंगल-दायी॥
फूल बिखेर रहे बिजली के घन-शिशु सुन्दर।
ऐसा कोई स्थान न विद्युत्-शक्ति जहाँ पर॥
काले पत्थर में, सित सिकता के सागर में।
हरे-भरे पत्तों में, रक्त-प्रसून-निकर में।
नीले मेघों में, (हहराती उग्र) पवन में।
(उच्च-गगन-चुंबी-शिखरों वाले) गिरि-गण में॥

काले पत्थर में, सफ़ेद बालू में, हरे पत्र में, लाल फूल में, नीले मेघ में, हवा में, पर्वत में— सर्वत्र विद्युत्-शक्ति सुप्त रहती है। हम उसकी वन्दना करते हैं। हमारी आँखों में बिजली पैदा हो! हमारे हृदय में बिजली झूलकर फैले। हमारे दाहिने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मणलिले, पच्चै इलैयिले शॅम्मलरिले, नील मेहत्तिले, काऱ्ऱिले, वरैयिले —ॲङ्गुम् मिन्शक्ति उऱङ्गिक् किडक्किन्ऱदु। अदनैप् पोऱ्ऱ हिन्ऱोम्।

नमदु विळिहळिले मिन्नल् पिऱन्दिडुह। नमदु नॅञ्जिले मिन्नल् बिशिऱिप् पाय्ह। नमदु वलक्कैयिले मिन्नल् तोन्ऱुह। नमदु पाट्टु मिन्नलुडैत्ताहुह। नमदु वाक्कु मिन्पोल् अडित्तिडुह।

मिन् मॅलियदै कॊल्लुम्। बलियविले वलिमै शेर्क्कुम्। अदु नम् वलिमैयै वळर्त्तिडुह।

ऑळियै मिन्नलै शुडरै, मणियै ञायिऱ्ऱै, तिङ्गळै, बानत्तु बीडुहळै, मीन्गळै— ऑळियुडैय अनैत्तैयुम् वाळ्त्तु हिन्ऱोम्।

अनैत्तैयुम् वाळ्त्तुहिन्ऱोम्। ञायिऱ्ऱै वाळ्त्तुहिन्ऱोम्। 13

शक्ति—2

शक्ति वॆळ्ळत्तिले ञायिऱु ऑरु कुमिळियाम्। शक्तिप् पॊय्हैयिले ञायिऱु ऑरु मलर्। शक्ति अनन्दम्। ॲल्लैयऱ्ऱदु, मुडिवऱ्ऱदु। अशै यामैयिल् अशैवु काट्टुवदु।

शक्ति अडिप्पदु, तुरत्तुबदु कूट्टुवदु, पिणैप्पदु कलप्पदु, उदऱुवदु पुडैप्पदु, बीशुवदु, शुळऱ्ऱुवदु, कट्टुवदु, शिदऱडिप्पदु, तूऱ्ऱुवदु ऊदिविडुबदु, निऱुत्तुवदु, ओट्टुबदु, ऑन्ऱाक्कुवदु पलवाक्कुवदु।

शक्ति कुळिर् शॆय्वदु, अनल् तरुबदु, कुदुकुदुप्पुत् तरुवदु कूतूहलन् दरुवदु, नोवु तीर्प्पदु, इयल्बु तरुवदु, इयल्बु माऱ्ऱुवदु शोर्वु तरुवदु, ऊक्कन् दरुवदु, ॲळुच्चि तरुवदु, किळर्च्चि तरुवदु मलर्विप्पदु, पुळहञ् जॆय्वदु, कॊल्बदु, उयिर्तरुवदु। शक्ति महिळ्च्चि तरुवदु, शिनन् दरुबदु वॆऱुप्पुत्

हाथ में बिजली प्रकट हो। हमारा गाना बिजली से भरा रहे। हमारी वाणी बिजली के समान चमक उठे। बिजली कमजोर को मार देगी। बल में बल मिला देगी। वह हमारे बल को बढ़ावे! प्रकाश की, बिजली की, ज्वाला की, रत्न की, सूर्य की, सोम की, आकाश के ग्रहों की, नक्षत्रों की—दीप्तिमय सभी की हम पूजा करते हैं। हम सभी को बधाई देते हैं। हम सूर्य को बधाई देते हैं। १३

शक्ति—२

शक्ति-प्रवाह में सूर्य एक बुदबुद है। शक्ति तड़ाग में सूर्य एक फूल है। शक्ति अनन्त है। शक्ति असीम है। शक्ति अपार है। वह अचलता में चंचलता दिखाती है। पीटना, भगाना, मिलाना, बाँधना, मिश्रित करना, पटक देना, फेंकना, घुमाना, एकत्र करना, बिखेरना, ओसाना, फूंक देना, खड़ा करना, चलाना, एक बनाना, अनेक बनाना —यह (करनेवाली) शक्ति है। शक्ति शीतलता प्रदान करनेवाली है, गरमी देनेवाली है। वह गुदगुदाती है, कुतूहल पैदा कर देती है। बीमारी दूर करना, प्रकृत गुण देना, स्वभाव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

है सर्वत्र रम रही विद्युत् - शक्ति सघन - तन ।
हम सब जन मिलकर करते हैं उसका वन्दन ।।
हो बिजली की शक्ति भरी मेरे नयनों में ।
बहती हो बिजली की धारा सभी मनों में ।।
बिजली की ही शक्ति भरी हो दक्षिण कर में ।
हो बिजली की तान, गान मेरे मनहर में ।।
चमक उठे बिजली - सी मेरी मंजुल वाणी ।
(फड़क रही हो नस - नस में बिजली कल्याणी ।।
बिजली देती मार सर्वदा ही निर्बल को ।
बल में बल को मिला (बनाती प्रबल सबल को) ।।
वह बिजली की शक्ति बढ़ावे मेरे बल को ।
(अरि-दल को दल कर, जीतें सब भू-मंडल को) ।।
हम प्रकाश, नक्षत्र, दामिनी औ' ज्वाला का ।
रत्नों का, रवि - शशि का, नभ का, ग्रह - माला का ।।
करते हैं इन सभी ज्योतियों का हम पूजन ।
करते हैं हम सूर्यदेव का शुभ अभिनंदन ।। १३ ।।

शक्ति—२

शक्ति - प्रवाह - मध्य बुद्बुद - सम त्रिभुवन भास्कर ।
शक्ति - सरोवर - मध्य फूल - सम खिला प्रभाकर ।।
शक्ति अनन्त अपार असीम (कही जाती है) ।
शक्ति अचलता में चंचलता दिखलाती है ।।
शक्ति पीटना, शक्ति बाँधना, शक्ति मिलाना ।
शक्ति पटकना, शक्ति फेंकना, शक्ति घुमाना ।।
बिखराना है शक्ति, शक्ति एकत्रित करना ।
शक्ति चलाना, शक्ति भगाना, मिश्रित करना ।।
शक्ति उठाना, शक्ति फूँकना, शक्ति औंसाना ।
एक बनाना शक्ति, शक्ति है बहुत बनाना ।।
गरमी देती शक्ति, शक्ति देती शीतलता ।
शक्ति गुदगुदी करती, देती कौतूहलता ।।
रोग - निवारक शक्ति, प्राकृतिक गुण वह देती ।
शक्ति स्वभाव बदलती, शक्ति थकावट देती ।।
विस्मय देती शक्ति, शक्ति है प्रेरित करती ।
देती शक्ति उमंग, शक्ति है पुलकित करती ।।

बदलना, थकावट दिलाना, उत्साह देना, प्रेरित करना, उमंग देना, विकास कर देना,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तरुवदु उवप्पु तरुवदु, पहैमै तरुवदु, कादल् मूट्टुवदु, उरुदि तरुवदु, अच्चन् दरुवदु, कौदिप्पुत् तरुवदु, आऱ्ऱुवदु।

शक्ति मुहर्वदु, शुवैप्पदु, तीण्डुवदु, केट्पदु, काण्बदु। शक्ति निनैप्पदु, आरायूवदु कणिप्पदु, तीर्मानञ् जैय्वदु, कनाक् काण्बदु, कर्पनै पुरिवदु, तेडुवदु, शुळल्वदु, पऱ्ऱि निऱ्पदु, ऍण्णमिडुवदु पहुत्तऱिवदु।

शक्ति मयक्कन् दरुवदु; तळिवु तरुवदु। शक्ति उणर्वदु। पिरमन् महळ्, कण्णन् तङ्गै, शिवन् मनैवि, कण्णन् मनैवि; शिवन् महळ् पिरमन् तङ्गै। पिरमनुक्कुम्, कण्णनुक्कुम् शिवनुक्कुम् ताय्।

शक्ति मुदर्पोरुळ्। पोरुळिल्लाप् पोरुळिल् विळैविल्ला विळैवु।

शक्तिक् कडलिले आयिरु ओर् नुरै। शक्ति वीणैयिले आयिरु ऑरु वीडु; ऑरु स्वर स्थानम्।

शक्तिक् कूत्तिले ऑळि ऑरु ताळम्; शक्तियिन् कलैहळिले ऑळि यॊन्ऱु। शक्ति वाळ्ह। 1

काक्कै कत्तुहिऱदु। जायिरु वैयह माहिय कळनियिल् वयिरवॊळियाहिय नीर् पाय्च्चुहिऱदु; अदनै मेहङ्गळ् वन्दु मऱैक्किन्ऱनळै अःदु मेहङ्गळै ऊडुरुविच् चॆल्लुहिन्ऱदु; मेहमाहिय शल्लडैयिल् ऑळि याहिय पुलनै वडि कट्टुम्बोदु मण्डि कीळुम् तॆळिवु मेलुमाह निऱ्किन्ऱन।

कोळि कूवुहिन्ऱदु। ऍऱुम्बु ऊर्न्दु शॆल्लुहिऱदु; ई पऱक्किऱदु। इळैमन् शित्तिरत्तिले करुत्तुच् चॆलुत्तुहिरान्। ईवै यनैत्तुम् महा शक्तियिन् तॊळिल्। अवळ् नम्मै कर्म योहत्तिल् नाट्टुह। नलक्कुच् चॆय्है इयल बाहुह।

पुलकित कर देना, वध करना, जिलाना आदि काम करनेवाली शक्ति है। शक्ति आनन्द देती है। वह क्रोध, घृणा, आनन्द, शत्रुता आदि (तत्त्व) दिलानेवाली है। वह प्रेम और दृढ़ता दिलानेवाली है। वह भय दिलाती है, उबाल देती है और शमन करती है। शक्ति सूँघना है। वह स्वाद लेना, स्पर्श करना, श्रवण, दर्शन, स्मरण, अन्वेषण, गणना, निर्धारण, स्वप्न-दर्शन, कल्पना, खोज, घूमना, पकड़े रहना, सोचना, विश्लेषण करना है। शक्ति मोहित करना, स्वच्छता देना, अनुभव है। वह ब्रह्मा की पुत्री है। कृष्ण की छोटी बहिन है। शिव की पत्नी है। कृष्ण की पत्नी, शिव की पुत्री, ब्रह्मा की छोटी बहिन है। ब्रह्मा, कृष्ण तथा शिव की माता है। शक्ति आदिवस्तु है। वस्तुताहीन वस्तु का फलताहीन फल है। शक्ति-समुद्र में सूर्य झाग है! शक्ति वीणा में सूर्य एक गृह (स्वर-स्थान) है। शक्ति-नृत्य में प्रकाश एक ताल है। शक्ति की कलाओं में प्रकाश एक (कला) है। शक्ति की जय। 1 कौआ बोलता है। सूर्य विश्व के खेत में हीरे की किरणों रूपी जल सींचता है। उसे मेघ आकर छिपा देते हैं। वह मेघों के आर-पार जाती है। मेघ रूपी चलनी में प्रकाश रूपी इन्द्रियों को छानते हैं, तो तलछट नीचे तथा साफ़ भाग ऊपर रह जाता है। मुर्गा बाँग देता है। चींटी रेंगती जाती है। मक्खी उड़ती है। तरुण, चित्र में चित्त लगाता है। ये सब महाशक्ति के कृत्य हैं। वह हमें कर्मयोग में लगा दे। हमारे लिए कर्म ही

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देती शक्ति विकास, शक्ति करती आनन्दित !
शक्ति मारती, शक्ति सभी को करती जीवित ॥
भय भर देती शक्ति, सभी के हृदय अपरिमित ।
उबालती है शक्ति, शक्ति करती है प्रशमित ॥
छूना, चखना और सूँघना, दर्शन करना ।
चुनना, गिनना, अन्वेषण, निर्धारण करना ॥
स्वप्न देखना और पकड़ना तथा सोचना ।
स्मरण, कल्पना और घूमना तथा खोजना ॥
मोहित करना, स्वच्छ बना विश्लेषण करना ।
शक्तिरूप है इन कार्यों का पालन करना ॥
ब्रह्मा की है सुता शक्ति, शिव की है तनुजा ।
शिव की पत्नी शक्ति, शक्ति केशव की अनुजा ॥
शक्ति कृष्ण की पत्नी, अज - अनुजा विख्याता ।
ब्रह्मा, विष्णु और शंकर की भी है माता ॥
आदिवस्तु है शक्ति (शक्ति से जग चलता है) ।
शक्ति वस्तुताहीन, वस्तु की निष्फलता है ॥
शक्ति - सिन्धु में फेन - पुंज के सम दिनकर है ।
शक्ति - तंत्रिका में रवि श्रुति है लघुतम स्वर है ॥
शक्ति - नृत्य में एक ताल है ज्योति अपरिमित ।
शक्ति - कला में एक कला है ज्योति असीमित ॥ १ ॥
काक बोलता, सूर्य, विश्व के खेत सुहावन ।
हीरे की किरणों के जल से करता सिंचन ॥
किन्तु छिपा लेते हैं बादल उसको आकर ।
शक्ति निकल जाती मेघों को आर - पार कर ॥
जब छानते प्रकाश मेघ - चलनी में रखकर ।
तलछट नीचे, साफ़ भाग रह जाता ऊपर ॥
मक्खी उड़ती, मुर्गा अपनी बाँग सुनाता ।
चींटी चलती, तरुण चित्र में चित्त लगाता ॥
महाशक्ति के सभी कृत्य हैं ये (विस्मयकर) ।
कर्मयोग में हमें लगा दे वह (करुणाकर) ॥
(कृपा करे वह हम पर) हममें धर्म-कर्म हों ।
मन को कभी उबानेवाले नहीं कर्म हों ॥
सरस कर्म हों, सुखद कर्म हों, सबल कर्म हों ।
फलदायी हों कर्म हमारे सफल कर्म हों ॥

धर्म हो ! सरस काम, सुखद काम, बली कृत्य, उकताहट न देनेवाला कार्य, उगनेवाला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रसमुळ्ळ शॆय्है, इन्ब मुडैय शॆय्है। वलिय शॆय्है। शलिप्पिल्लाद शय्है। विळैयुम् शॆय्है। परवुम् शॆय्है। कूडि वरुम् शॆय्है। इरुदियऱ्ऱ शॆय्है।

नमक्कु महाशक्ति अरुळ् शॆय्ह।

कविदै कावल् ऊट्टुदल्, वळर्त्तल् माशॆडुत्तल् नलन् दरुदल् ऑळि पॆय्दल्— इच् चॆयल्हळ् नमक्कु महाशक्ति अरुळ् पुरिह।

अन्बु नीर् पाय्च्चि, अऱिवॆनुम् एरुळ्ळुदु, शात्तिरक् कळै पोक्कि बेदप् पयिर् शॆय्दु, इन्बप् पयन्ऱिन्दु तिन्बदऱ्कु महाशक्तियिन् तुणै वेण्डुहिऱोम्। अदन्ऱै अवळ् तरुह। 2

इरुळ् वन्ददु। आन्दैहळ् महिळ्न्दन्।

काट्टिले कादलन्ऱै नाडिच्चॆन्ऱ ऑरु पॆण् तन्निये कलङ्गिप् पुलम्बिन्ऱाळ्।

ऑळि वन्ददु; कादलन् वन्दान्, पॆण् महिळ्न्दाळ्।

पेयुण्डु, मन्दिर मुण्डु, पेयिल्लै मन्दिर मुण्डु। नोयुण्डु मरुन्दुण्डु। अयर्वु कॊल्लुम्। अदन्ऱै ऊक्कम् कॊल्लुम्। अवित्तै कॊल्लुम्। अदन्ऱै वित्तै कॊल्लुम्।

नाम् अच्चम् कॊण्डोम्; ताय् अदन्ऱै नीक्कि उरुदि तन्दाळ्। नाम् तुयर् कॊण्डोम्। ताय् अदै माऱ्ऱिक् कळिप्पुत् तन्दाळ्। कुन्निन्द तलैयै निमिर्त्तिन्ऱाळ्; शोर्न्द विळियिल् ऑळि शेर्त्ताळ्। कलङ्गिय नॆञ्जिले तॆळिवु वॆत्ताळ्। इरुण्ड मदियिले ऑळि कॊडुत् ताळ्। महाशक्ति वाळ्ह। 3

"मण्णिले वेलि पोडलाम्। वान्तत्तिले वेलि पोडलामा ?" ऎन्ऱान् राम किरुष्ण सुन्नि।

काम, फैलनेवाला काम, सफल कार्य, अनन्त कार्य —ये सब महाशक्ति हमें देने की कृपा करे। कविता, रक्षण, खिलाना, पालना, कलंक निकालना, भला करना, प्रकाशित करना, —महाशक्ति ये कार्य हमें दे। प्रेम-जल सींचकर, बुद्धि का हल चलाकर, शास्त्र द्वारा नींद निराकर, वेद का पौधा उगाकर, सुख-फल जानकर खाने के लिए महाशक्ति की सहायता हम चाहते हैं। वह उसे हमको प्रदान करे। २ अन्धकार हुआ। उल्लू खुश हुए। वन में प्रेमी की खोज में गयी नारी ने अकेली घबड़ाकर प्रलाप किया। प्रकाश छिटका। प्रेमी आया। नारी आनन्दित हुई। भूत है, मंत्र (झाड़-फूंक) है। भूत नहीं, (तब भी) मंत्र है। रोग है, तो दवा है! थकावट मार देगी। उस (थकावट) को उत्साह मिटा देगा। अविद्या मारक है। उसे विद्या मिटा देगी। हमने भय खाया। अम्बा ने उसे दूर करके साहस दिया। हम दुखी रहे। अम्बा ने उसे बदलकर आनन्द दिया। (आनन्द में उसे बदल दिया।) झुके सिर को ऊपर उठाया। थकी हुई (निष्प्रभ) आँखों में प्रभा भरी। भ्रान्त मन में निर्मलता स्थापित की। मंद मति में प्रकाश फैला दिया। महाशक्ति की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इस प्रकार अगणित अनन्त सम्पूर्ण कर्म हों।
महाशक्ति की महाकृपा से तूर्ण कर्म हों॥
कविता करना, पहरा देना और खिलाना।
तन पालना, सभी के कुटिल कलंक मिटाना॥
सदा प्रकाशित करना औ' सबका हित करना।
सभी कर्म दे महाशक्ति (सबका दुख हरना)॥
चला सुमति - हल, प्रेम - सलिल से सींच - सींचकर।
उगा वेद का वृक्ष, शास्त्र से नींद निराकर॥
मधुर सरस सुख रूपी अगणित फल उपजाएँ।
महाशक्ति दे सहायता हम मोद मनाएँ॥ २॥
अंधकार छा गया, उलूक हुए सब प्रमुदित।
चली प्रेमिका प्रेमी से मिलने अति हर्षित॥
प्रेमी को खोजने गई वन में एकाकी।
उस नारी ने कर प्रलाप निज प्रकट व्यथा की॥
इसी समय नभ-बीच हुआ रजनीकर समुदित।
छिटकी ज्योत्स्ना, आया प्रेमी, हुई प्रफुल्लित॥
तंत्र - मंत्र सब माता भूत भगानेवाली।
रोगों की है दवा थकान मिटानेवाली॥
है अदम्य उत्साह थकावट का उत्सारक।
निर्मल विद्या प्रबल अविद्या की संहारक॥
भय का भूत भगाया हमको साहस देकर।
दुखी हुए तो, माँ ने दिया हर्ष का सागर॥
उसने मेरे झुके शीश को पकड़ उठाया।
बुझे दृगों में प्रभा भरी (उल्लास जगाया)॥
भ्रांत हृदय में निर्मलता का स्रोत बहाया।
मंद - बुद्धि में नव - प्रकाश का दीप जलाया॥
महाशक्ति की जय हो, जय हो (हमने गाया)।
(महाशक्ति की फैली जग में अद्भुत माया)॥ ३॥
"पृथ्वी पर दीवार बनायी जा सकती है।
नभ में क्या दीवार उठायी जा सकती है ?"॥
रामकृष्ण ने पूछा— "जड़ बाँधी जा सकती।
और शक्ति की आँधी क्या बाँधी जा सकती ?॥

जय हो। ३ पृथ्वी पर चहारदीवारी बनायी जा सकती है; (पर) क्या आकाश में ऐसी चहारदीवारी उठायी जा सकती है ? —ऐसा पूछा मुनि रामकृष्ण ने ! जड़ को बाँधा जा सकता है। शक्ति को बाँधा जा सकता है क्या ? शरीर को बाँधा जा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जडत्तैक् कट्टलाम्। शक्तियैक् कट्टलामा ? उडलैक् कट्टलाम् उयिरैक् कट्टलामा ?

उयिरैक् कट्टु उळ्ळत्तैक् कट्टलाम्।

अॅन्निडत्ते शक्ति अॅनदुयिरिलुम् उळ्ळत्तिलुम् निऱ्किन्ऱाळ्। शक्तिक्कु अनन्तमान कोयिल्हळ् वेण्डुम्। तॊडक्कमुम् मुडिवु मिल्लाद कालत्तिले निमिषन् दोरुम् अवळुक्कुपु पुदिय कोयिल्हळ् वेण्डुम्। इन्द अनन्दमान कोयिल्हळिले ऒन्ऱुक्कु नान् अॅन्ऱु पॆयर्। इदनै ओयामल् पुदुप्पित्तुक् कॊण् डिरुन्दाल् शक्ति इदिल् इरुप्पाळ्। इदु पळैमैप् पट्टुप् पोनवुडन्, इदै विट्टु विडुवाळ्। इप्पोदु अवळ् अॅन्नुळ्ळे निऱैन्दिरुक् किऱाळ्।

इप्पोदु अॅनदुयिरिले वेहमुम् निऱैवुम् पॊरुन्दि इरुक्किन्ऱन। इप्पोदु अॅनदुडलिले, शुहमुम् वलिमैयुम् अमैन्दिरुक्किन्ऱन इप्पोदु अॅन्नुळ्ळत्तिले तॆळिवु निलविडुहिन्ऱदु। इदु अॅनक्कुप् पोदुम्।

शॆन्ऱदु करुद माट्टेन्। नाळैच् चेर्वदु निनैक्क माट्टेन्।

इप्पोदु अॅन्नुळ्ळे शक्ति कॊलु वीऱ्ऱिरुक्किन्ऱाळ्। अवळ् नीडूळि वाळ्ह। अवळैप् पोऱ्ऱुहिन्ऱेन्। पुहळ्हिन्ऱेन्। वाय् ओयामल् वाळ्त्तुहिन्ऱेन्। 4

"मण्णिले वेलि पोडलाम्। वानत्तिले वेलि पोडलामा ?" पोडलाम्। मण्णिलुम् वानन् दानै निरम्बियिरुक्किन्ऱदु। मण्णैक् कट्टिनाल् अदिलुळ्ळ वानत्तैयुम् कट्टिय दाहादा ?

उडलैक् कट्टु उयिरैक् कट्टलाम्। उयिरैक्कट्टु, उळ्ळत्तैक् कट्टलाम्। उळ्ळत्तैक् कट्टु शक्तियैक् कट्टलाम्। अनन्द शक्तिक्कुक् कट्टुप् पडुवदिले वरुत्त मिल्लै।

अॅन् मुन्नै पञ्जुत् तलैयणै किडक्किऱदु। अदऱ्कु ऒरु वडिवम् ओरळवु।

सकता है। शरीर को बाँध लो, (तो) चित्त को भी बाँधा जा सकता है (शरीर पर नियन्त्रण रखा जा सकता है); पर क्या प्राणों को बाँधा जा सकता है? मेरे पास शक्ति (है, वह) मेरे प्राणों में तथा मेरे मन में स्थित है। शक्ति के लिए अनन्त मन्दिर चाहिए। अनादि अनन्त काल (गति) में घड़ी-घड़ी उसके लिए नये-नये मन्दिर चाहिए। इन अनन्त मन्दिरों में एक का नाम 'अहम्' है। इसको बराबर नया बनाये रखो, तो शक्ति उसमें वास करेगी। ज्यों ही यह पुराना हो जाए वह उसे छोड़ देगी। अब वह मुझमें खूब व्याप्त है! अब मेरे प्राणों में वेग तथा पूर्णता व्याप्त हुई है! अब मेरे शरीर में सुख और बल भरे हैं। अब मेरे मन में निर्मलता व्याप्त है! —यह मेरे लिए पर्याप्त है! मैं बीती बात नहीं सोचूँगा। कल जो होगा, उसको भी नहीं सोचूँगा। अब मेरे अन्दर शक्ति दरबार लगाये विराजी है। वह चिरंजीव रहे! मैं उसकी स्तुति करता हूँ। उसकी प्रशंसा करता हूँ। मैं बिना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

क्या बँध सकते प्राण और जब बँध सकता तन ?"।
मम प्राणों में मन में स्थित है शक्ति सुपावन ॥
अगम अनादि अनन्त काल तक घड़ी - घड़ी पर।
सदा शक्ति के लिए चाहिए अगणित मन्दिर ॥
सभी मन्दिरों में है "अहंभाव" का मन्दिर।
शक्ति बसेगी इसमें जो यह रहे अनश्वर ॥
तज देगी इसको ज्यों ही वह हुआ पुरातन।
मेरे भीतर भरी हुई है शक्ति सनातन ॥
मम प्राणों में वेग - पूर्णता - सहित भरी है।
मम तन में बल की सुख की सरिता लहरी है ॥
मेरे मन में निर्मलता (भरपूर) व्याप्त है।
है मुझको पर्याप्त (मुझे जो हुई प्राप्त है) ॥
सोचूँगा अब कभी नहीं मैं बातें बीती।
और न आगे की भी सोचूँगा मन - चीती ॥
शक्ति सजा दरबार, सुशोभित मेरे भीतर।
चिरजीवी वह रहे कर रहा स्तुति मैं (सुन्दर) ॥
मैं उसकी कर रहा प्रशंसा (हो प्रमुदित - मन)।
वाणी का अविराम कर रहा हूँ अभिनन्दन ॥ ४ ॥
पृथ्वी पर दीवार उठायी जा सकती है।
क्या नभ में दीवार बनायी जा सकती है ॥
पृथ्वी में भी तो (अनन्त) आकाश भरा है।
क्या न बँधेगा नभ जब यह बँध गई धरा है ? ॥
बँध जायेंगे प्राण, अगर तन बँध जायेगा।
प्राणों को दो बाँध, स्वतः मन बँध जायेगा ॥
मन को वश में करो शक्ति वश हो जायेगी।
बँधकर शक्ति अनन्त, न दुख मन में लायेगी ॥
रुई भरा तकिया है मेरे सम्मुख संस्थित।
रूप - नियम - परिमाण एक ही यहाँ व्यवस्थित ॥

वाणी को विराम दिये उसे (लगातार) बधाई देता हूँ। ४ पृथ्वी पर चहारदीवारी उठायी जा सकती है। (पर) क्या आकाश में वह बनायी जा सकती है ? हाँ ! बनायी जा सकती है ! पृथ्वी में भी तो आकाश भरा है ! पृथ्वी को बाँध दें, तो उसमें रहनेवाला आकाश भी बाँधा गया नहीं माना जायगा क्या ? शरीर को बाँध दो, प्राण भी बँध जायँगे। प्राणों को बाँधो; मन बन्धन में रह जायगा। मन को अधीन कर लो, शक्ति हाथ में आ जायगी। अनन्त शक्ति को बंध जाने में दुख नहीं होता। मेरे सामने रूई का तकिया पड़ा है। उसका एक रूप, एक परिणाम तथा एक नियम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऒरु नियमम् एऱ्पट्टिरुक्किन्ऱदु। इन्द नियमत्तै अऴियाद पडि, शक्ति पिन्ने निन्ऱु कात्तुक् कॊण्डिरुक्किऱाळ्। मनिद जादि इरुक्कु मळवुम् इदे तलैयणै अऴिवॆय्दादपडि काक्कलाम्।

अदनै अडिक्कडि पुदुप्पित्तुक् कॊण्डिरुन्दाल् अन्द वडिवत्तिले शक्ति नीडित्तु निऱ्कुम्। पुदुप्पिक्का बिट्टाल् अव् वडिवम् माऱुम्।

अऴुक्कुत् तलैयणै, ओट्टैत् तलयणै पळैय तलैयणै— अदिलुळ्ळ पञ्जै यॆडुत्तुप् पुदिय मॆत्तैयिले पोडु। मेलुऱैयैक् कन्दॆयॆन्ऱु वॆळियै ऎऱि। अन्द 'वडिवम्' अऴिन्दु विट्टदु।

वडिवत्तैक् कात्ताल् शक्तियैक् काक्कलाम्। अदावदु शक्तियै अव्वडिवत्तिलेये काक्कलाम्। वडिवम् मारिनालुम् शक्ति माऱुवदिल्लै। ऎङ्गुम् ऎदनिलुम्, ऎप्पोदुम् ऎल्लाविदत् तॊऴिल्हळुम् काट्टुबदु शक्ति। वडिवत्तैक् काप्पदु नन्ऱु, शक्तियिन् पॊरुट्टाह।

शक्तियैप् पोऱ्ऱदल् नन्ऱु वडिवत्तैक् काक्कुमाऱु। आनाल् वडिवत्तै मात्तिरम् पोऱ्ऱबोर् शक्तियै इऴन्दु विडुवर्। 5

पाम्बुप् पिडारन् कुऴलूदुहिन्ऱान्।

"इनिय इशै शोहमुडैयदु" ऎन्बदु केट्टुऴ्ळोम्। आनाल् इप्पिडारन् ऒलिक्कुम् इशै मिहवुम् इनिय दायिनुम् शोहरसन् दविर्न्ददु। इःदोर् पण्डिदन् तर्क्किप्पदु पोलिरुक्किन्ऱदु। ऒरु नावलन् पॊरुळ् निरैन्द शिऱिय शिऱिय वाक्कियङ्गळै अडुक्किक् कॊण्डु पोबदु पोलिरुक्किऱदु। इन्दप् पिडारन् ऎन्न बादाडुहिऱान् ?

"तान तन्दत्तान तन्दत्ता— तनत्
तान तन्दन तान तन्दन ता—
तन्दनत्तन तन्दनत्तन ता।"

बना है ! शक्ति देवी इसके पीछे रहकर इसकी रक्षा कर रही है, ताकि यह व्यवस्था न बिगड़े। जब तक मानव-जाति रहती है, तब तक इस तकिये को नष्ट होने से बचाया जा सकता है। उसका बार-बार नवीनीकरण करते रहेंगे, तो उस 'रूप' के अन्दर शक्ति बनी रहेगी। अगर नवीनीकरण नहीं किया जाय, तो वह 'रूप' बदल जायगा। गन्दा तकिया, फटा तकिया, पुराना तकिया— उसकी रूई निकालकर नये गद्दे में भर दो। पोल को गुदड़ी समझकर फेंक दो। वह 'रूप' मिट गया। रूप को बचाओ, तो शक्ति की रक्षा करोगे। यानी, शक्ति को उस रूप में सुरक्षित रख सकते हो ! रूप के बदलने पर भी शक्ति नहीं बदलती। सब कहीं, सब किसी में, सब समय, और सब तरह के कार्य दिखानेवाली है शक्ति देवी। शक्ति की कृपा के लिए रूप की रक्षा भली (उपयुक्त) है। रूप की रक्षा के लिए शक्ति की स्तुति भली (आवश्यक) है (लाभकर है)। पर केवल रूप की रक्षा में लगे हुए लोग शक्ति को खो बैंगे। ५ सँपेरा बीन बजाता है। हमने सुना है कि मधुर संगीत शोकमय होता है। पर इस सँपेरे के संगीत में मधुरता है, फिर भी यह शोकरस-हीन है। यह पंडित के 'तर्क' करने के समान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रक्षा करती सदा शक्ति इसके पीछे रह।
जिससे इसकी नहीं व्यवस्था बिगड़ सके यह ॥
जब तक मानव - जाति धरातल पर है बसती।
तब तक इस तकिये की रक्षा की जा सकती ॥
बार - बार यदि करते रहे इसे तुम नूतन।
बनी रहेगी तो उसमें स्थिर शक्ति सनातन ॥
नवीकरण यदि इसका नहीं किया जायेगा।
इसका रूप बदल जायेगा, फट जायेगा ॥
फटे - पुराने - गंदे तकिये को भी लेकर।
भर दो उसकी रुई नये गद्दे के भीतर ॥
फेंको तकिये का गिलाफ गूदड़ विचार कर।
मिट जायेगा यों तकिये का रूप मनोहर ॥
करो रूप को रक्षित, शक्ति सुरक्षित होगी।
स्थूल रूप से संस्थित शक्ति सुरक्षित होगी ॥
रूप बदलता किन्तु शक्ति है नहीं बदलती।
वह सर्वत्र सदैव सभी में सब विधि बसती ॥
शक्ति - कृपा - प्राप्त्यर्थ रूप को करो सुरक्षित।
करो शक्ति की स्तुति स्वरूप की रक्षा के हित ॥
किन्तु रूप की केवल जो रक्षा करते हैं।
वे खो देते शक्ति न उसको धर सकते हैं ॥ ५ ॥

बजा रहा है देखो अपनी बीन सँपेरा।
सुना कि मधु - संगीत - बीच है शोक - बसेरा ॥
किन्तु मधुरता भरी सँपेरे के गानों में।
नहीं शोक - रस की छाया इसकी तानों में ॥
यह संगीत किसी पंडित के तर्क - सरीखा।
(जाने यह संगीत कहाँ से इसने सीखा ?) ॥
उपन्यास - लेखक ज्यों लघु-लघु वाक्य सजाता।
उसी भाँति यह अपनी सुन्दर बीन बजाता ॥
"तन् दत् तान, तान तन् दत् ता" —बीन बजाता।
"तानं तन् दन्, तानं तन् दन् ता" —यह गाता ॥
"तन दन् ततन्, ततन् तन दन् ता" —राग मिलाता।
इस प्रकार वह बीन बजाकर तान सुनाता ॥

है ! मानो कोई उपन्यासकार अर्थ-गर्भित छोटे-छोटे वाक्यों को सजाता जाता हो। यह सँपेरा वाद प्रस्तुत करता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अव् विदमाहप् पल वहैहळिल् माऱ्ऱिच् चुरुळ् चुरुळाह वाशित्तुक् कॊण्डु पोहिऱान्। इदऱ्कुप् पॊरुळॆन्न ?

ऒरु कुऴन्दै इदऱ्कुप् पिन् वरुमाऱु पॊरुळ् शॊल्ल लायिऱ्ऱु:—

"काळिक्कुप् पूच् चूट्टिनेन्, अदैक् कऴुदै यॊन्ऱु तिन्न वन्ददे !"

पराशक्तियिन् पॊरुट्टु इन्द उडल् कट्टिनेन्। अदैप् पावत्ताल् विळैन्द नोय् तिन्न वन्ददु। पराशक्तियैच् चरणडन्देन्। नोय् मऱैन्दुविट्टदु। पराशक्ति ऒळियेऱि ऎन् अहत्तिले विळङ्गलायिन्नळ्। अवळ् वाऴ्ह। 6

पाम्बुप् पिडारन् कुऴलूदु हित्ऱान्। कुऴलिले इशै पिऱन्ददा ? तॊळैयिले इशै पिऱन्ददा ? पाम्पुप् पिडारन् मूच्चिले पिऱन्ददा ? अवनुळ्ळत् तिले पिऱन्ददु, कुऴलिले वॆळिप्पट्टदु।

उळ्ळम् तन्निये ऒलिक्कादु। कुऴल् तन्निये इशै पुरियादु। उळ्ळम् कुऴलिले ऒट्टादु। उळ्ळम् मूच्चिले ऒट्टुम्। मूच्चु कुऴलिले ऒट्टुम्। कुऴल् पाडुम्। इःदु शक्तियिन् लीलै।

अवळ् उळ्ळत्तिले पाडुहिऱाळ्। अदु कुऴलिन् तॊळैयिले केट्किऱदु।

पॊरुन्दाद पॊरुळ्हळैप् पॊरुत्ति वैत्तु अदिले इशैयुण्डाक्कुदल्-शक्ति।

तॊम्पप् पिळ्ळैहळ् पिच्चैक्कुक् कत्तुहिन्ऱन्न। पिडारन् कुऴलैयुम् तॊम्बक्कुऴन्दैहळिन् कुरलैयुम् यार् शुरुति शेर्त्तु विट्टदु ? शक्ति।

"जरिहै वेणुम्; जरिहै !" ऎन्ऱॊरुवन् कत्तिक् कॊण्डु पोहिरान्; अदे

तान तन्दत्तान तन्दत् ता तन्त् तानं तन्दन् तान् तनदन् ता
तनदन्त्तन् तनदन्त्तन ता (ये संगीत के स्वर हैं।)

वह इस तरह अनेक प्रकारों से बारी-बारी से (स्वरक्रम) बदलकर बजाता जाता है। इसका क्या मतलब है ? एक शिशु इसका निम्नोक्त तात्पर्य बताने लगा। कालीदेवी को मैंने सुमन अर्पित किया। उसे खाने के लिए एक गधा आ गया। पराशक्ति के लिए मैंने यह शरीर रचा। उसमें पाप से उत्पन्न रोग उसे खाने आ गया। पराशक्ति की शरण में गया, तो रोग छिप गया। पराशक्ति प्रभा-बहुल बनकर मेरे हृदय में शोभित हुई। जय हो उसकी ! ६ सँपेरा बीन बजाता है ! क्या बीन में से संगीत निकला ? या रन्ध्रों में से निकला ? या सँपेरे की साँस से निकला ? उसके दिल से निकला— बीन में प्रकट हुआ। दिल अकेले (या स्वयं अपने में) स्वर-युक्त नहीं होता। बाजा स्वयं संगीत नहीं बना सकता। दिल बीन में नहीं मिल सकता। दिल साँस से लग सकता है। साँस बीन से लग सकती है। बीन (बज सकती है) गा सकती है। यह शक्ति की लीला है। वह दिल में गाती है। वह बीन के रंध्रों में सुनाई देती है। बेमेल वस्तुओं में मेल बनाकर उससे संगीत निकालना —यह शक्ति है। मदारी के शिशु भिक्षा माँगते चिल्लाते हैं। सँपेरे की बीन तथा मदारी के शिशुओं के कंठों की स्वर-संगति किसने बनायी ? शक्ति ही ने। क्या जरी है ? चाहिए जरी, ऐसा कोई चिल्लाता हुआ आ जाता है। उसी स्वर में। वाह ! मैंने अर्थ जान लिया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विविध भाँति से बारी - बारी बदल - बदलकर।
अपनी बीन बजाता सुन्दर मधुर मनोहर ॥
एक सरल शिशु ने यों इसका अर्थ बताया।
"मैंने पुष्प - हार श्रीकाली को पहनाया ॥
उसको खाने - हेतु एक गर्दभ था आया।
तो तत्काल रोग ने आकर मुझे दबाया ॥
पराशक्ति की शरण गया तब रोग नशाया।
पराशक्ति का प्रभा - पुंज मेरे उर छाया ॥
जय हो, जय हो, पराशक्ति की जय-जय-जय हो।
पराशक्ति को भजनेवाला जन निर्भय हो" ॥ ६ ॥
देखो एक सँपेरा है तूमड़ी बजाता।
और तूमड़ी से सुन्दर संगीत गुँजाता ॥
क्या सुन्दर संगीत तूमड़ी से है निकला।
या उसके सुन्दर - सुन्दर छिद्रों से निकला ॥
या कि सँपेरे की सुन्दर साँसों से निकला।
हुआ तूमड़ी से या उसके उर से ही निकला ॥
अपने आप नहीं होता है अन्तर गुंजित।
अपने आप नहीं होता है बाजा मुखरित ॥
हृदय कभी भी नहीं बीन से है मिल सकता।
सदा हृदय में है साँसों का सरगम बजता ॥
साँसें बढ़कर सदा तूमड़ी से टकरातीं।
और तूमड़ी भी बज - बजकर गीत गुँजाती ॥
महाशक्ति की यह सब लीला दिखलाती है।
महाशक्ति ही सबके अन्तर में गाती है ॥
वही तूमड़ी के छिद्रों से ध्वनि आती है।
(उसी राग को सदा तूमड़ी दुहराती है) ॥
अनमिल चीज़ें मिला - मिला संगीत बजाना।
महाशक्ति का यह प्रभाव है बड़ा पुराना ॥
भीख माँगते हुए मदारी - शिशु चिल्लाते।
(भाँति-भाँति के राग मनोहर सुन्दर गाते) ॥
भरे मदारी - शिशु - कंठों में इसने गाने।
और तूमड़ी में इसने स्वर भरे सुहाने ॥
"ज़री चाहिए, ज़री चाहिए" यह चिल्लाता।
यही मधुर स्वर गाता ज़री बेचने आता ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शुरुदियिल्। आ! पॊरुळ् कण्डु कॊण्डेन्। पिडारन् उयिरिलुम् तॊम्बक् कुऴन्देहळिन् उयिरिलुम् जरिहैक्कारन् उयिरिलुम् ऒरे शक्ति विळैयाडुहिन्ऱदु।

करुवि पल। पाणन् ऒरुवन्। तोऱ्ऱम् पल। शक्ति ऒन्ऱु। अःदु वाऴ्ह। 7

पराशक्तियैप् पाडुहिन्ऱोम्। इवळ् ऎप्पडि उण्डायिनाळ्? अदु तान् तॆरिय विल्ल। इवळ् ताने पिऱन्द ताय्। तान् ऎन्ऱ परम् बॊरुळिसिडत्ते। इवळ् ऎदिलिरुन्दु तोन्ऱिनाळ्? तान् ऎन्ऱ परम् बॊरुळिलिरुन्दु ऎप्पडित् तोन्ऱिनाळ्? तॆरियादु।

पडैप्पु नमदु कण्णुक्कुत् तॆरियादु। अऱिवुक्कुम् तॆरियादु।

शावु नमदु कण्णुक्कुत् तॆरियुम्; अऱिवुक्कुम् तॆरियादु।

वाऴ्क्कै नमदु कण्णुक्कुत् तॆरियुम्; अऱिवुक्कुम् तॆरियुम्। वाऴ्क्कै यावदु शक्तियैप् पोऱ्ऱुदल् इदन् पयन् इन्ऱु मॆय्दल्।

उळ्ळम् तॆळिन् दिरुक्क, उयिर् वेहमुम् शूडुम् उडैयदाह, उडल् अमैदियुम् वलिमैयुम् पॆऱ्ऱिरुक्क। महाशक्तियिन् अरुळ् पॆऱुदले वाऴ्दल्। नाम् वाऴ्हिन्ऱोम्। नम्मै वाऴ्वुऱच् चॆय्द महाशक्तियै मीट्टुम् वाऴ्त्तु हिन्ऱोम्। 8

काऱ्ऱु—3

ऒरु वीट्टु मेडैयिले ऒरु पन्दल्; ओलैप् पन्दल्। तॆन्नोलै।

कुरुक्कुम् नॆडुक्कुमाह एळॆट्टु मूङ्गिऱ् कऴिहळैच् चादारणक् कयिऱ्ऱाल् कट्टि, मेले तॆन्नङ् गिडुहुहळै विरित्तिरुक्किऱदु।

संपेरे की जान में, मदारी के शिशुओं के प्राणों में, तथा जरीवाले की जान में एक ही शक्ति खेल रही है! बाजे विविध हैं! पर गवैया एक है। दृश्य अनेक हैं, पर शक्ति एक है। जय हो उसकी। ७ हम पराशक्ति (की महिमा) को गाते हैं। यह कैसे पैदा हुई! वही हमें विदित नहीं है। वह स्वयंभू माता है। आत्मा रूपी परम तत्त्व से यह उद्भूत है। यह किससे प्रकट हुई? 'आत्मा' रूपी परम तत्त्व से यह कैसे पैदा हुई? हम नहीं जानते। हमारी आँखों को सृष्टि नहीं दिखती। उसे बुद्धि भी नहीं जानती। मृत्यु को हमारी आँखें जानती हैं। पर वह बुद्धि-गोचर नहीं है। जीवन हमारी आँखों तथा बुद्धि द्वारा भी ग्राह्य है! जीवन का मतलब शक्ति की सेवा है! इसका फल सुख की प्राप्ति है। चित्त निर्मल हो; प्राण वेग तथा गर्मी से युक्त हों; शरीर शान्त तथा बलवान हो। महाशक्ति की कृपा पाने के लिए ही जीवन है। हम जी रहे हैं। हम उस महाशक्ति की फिर से स्तुति करते हैं, जिसने हमें जीने दिया है! ८

वायु—३

एक घर के चबूतरे पर एक पंडाल है। 'ओलै' (नारियल के पत्ते को बुनकर लम्बा चौकोर 'चिक'-सा बनाया जाता है। उसे ओलै कहते हैं।) का पंडाल है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन सबका है अर्थ हृदय में हमने जाना।
(एक सभी का स्वर है, हमने यह पहचाना)॥
ज़री बेचनेवाले के प्राणों के भीतर।
और मदारी के शिशु के कंठों के अन्दर॥
सरस सँपेरे की तूँबी के छिद्राभ्यन्तर।
एक शक्ति ही बसी हुई है सबके भीतर॥
विविध भाँति के वाद्य, एक ही पर गायक है।
दृश्य अनेक, सुशक्ति एक ही पर दर्शक है॥
जय हो, जय हो, उस सुशक्ति की जय हो, जय हो।
सर्वव्यापक शक्ति समझ लो, सदा अभय हो॥ ७॥

पराशक्ति की मंजुल महिमा हैं हम गाते।
कैसे पैदा हुई? भेद यह समझ न पाते॥
नहीं किसी से हुई, स्वयम्भू है यह माता।
आत्म-तत्त्व से व्यक्त हुई (यह वेद बताता)॥
आत्म-तत्त्व से व्यक्त हुई यह किस प्रकार है?।
(बुद्धि नहीं कुछ कर सकती इसका विचार है)॥
सत्य सृष्टि का रूप नहीं लख पाते लोचन।
और बुद्धि भी कर सकती है नहीं विवेचन॥
हैं पहचानते मृत्यु को सदा हमारे लोचन।
पर न कभी भी बुद्धि-ग्राह्य है वह सकती बन॥
बुद्धि-ग्राह्य है, नयन-ग्राह्य है, मानव-जीवन।
जीवन का है अर्थ शक्ति का अहिनिशि सेवन॥
जीवन का फल है प्रसिद्ध सब विधि सुख पाना।
(है फल महाशक्ति की करुणा को अपनाना)॥
वेग-उष्णता-युक्त प्राण हों, निर्मल मन हो।
शान्त तथा बलवान हमारा सुन्दर तन हो॥
महाशक्ति की कृपा-प्राप्ति-हित यह जीवन हो।
(सदा शक्ति के चरणों का ही अवलंबन हो)॥
महाशक्ति की स्तुति हम करते, पुनि-पुनि वन्दन।
महाशक्ति ने दिया हमें यह सुखमय जीवन॥ ८॥

वायु—३

घर के चबूतरे पर है पंडाल सुशोभित।
चटाइयों से किया गया पंडाल विनिर्मित॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऒरु मूङ्गिऱ् कळियिले कॊञ्जम् मिच्चक् कयिऱु तॊङ्गु हिऱदु। ऒरु चाण् कयिऱु। इन्दक् कयिऱु ऒरुनाळ् सुहमाह ऊशलाडिक् कॊण्डिरुन्ददु। पार्त्ताल् तुळिक्कूडक् कवलै इरुप्पदाहत् तॆरियविल्लै। शिल समयङ् गळिल् अशैयामल् उस्मॆन्ऱिरुक्कुल्। कूप्पिट्टाऱ् कूड एनॆन्ऱु केट्कादु।

इन्ऱु अप्पडि यिल्लै। 'कुशाल्' वळियिलिरुन्ददु।

ऎनक्कुम् इन्दक् कयिऱ्ऱुक्कुम् शिनेहम्। नाङ्गळ् अडिक्कडि वार्त्तै शॊल्लिक् कॊळ्वदुण्डु।

'कयिऱ्ऱि निडत्तिल् पेशिनाल् अदु मऱुमॊळि शॊल्लुमा ?

पेशिप्पार्, मऱुमॊळि किडैक्किऱ्दा इल्लैया ऎन्बदै।

आनाल् अदु सन्दोषमाह इरुक्कुम् समयम् पार्त्तु वार्त्तै शॊल्ल वेण्डुम्। इल्ला विट्टाल् मुहत्तैत् तूक्किक् कॊण्डु शुम्मा इरुन्दु विडुम्, पॆण्गळैप् पोल।

ऎदु ऎप्पडि यिरुन्दालुम्, इन्द वीट्टुक् कयिऱु पेशुम्। अदिल् सन्देहमे यिल्लै। ऒरु कयिऱा शॊन्नेन् ? इरण्डु कयिऱु उण्डु। ऒन्ऱु ऒरु शाण्; मऱ्ऱॊन्ऱु मुक्काल् शाण्।

ऒन्ऱु आण्। मऱ्ऱॊन्ऱु पॆण्। कणवनुम् मनैवियुम् अवै यिरण्डुम्; ऒन्ऱैयॊन्ऱु कामप् पार्वैहळ् पार्त्तुक् कॊण्डुम् पुन् शिरिप्पुच् चिरित्तुक् कॊण्डुम्, वेडिक्कैप् पेच्चुप् पेशिक् कॊण्डुम् रशप् पोक्किले यिरुन्दन।

अत्तरुणत्तिले नान् पोय्च् चेर्न्देन्। आण् कयिऱ्ऱुक्कुक् कन्दन् ऎन्ऱु पॆयर्। पॆण् कयिऱ्ऱुक्कुप् पॆयर् वळ्ळियम्मै।

(मनिदर्हळैप् पोलवे तुण्डुक् कयिऱुहळुक्कुम् पॆयर् वैक्कलाम्।)

नारियल के औलैयों का। आर-पार सात-आठ बाँसों को बिछाकर मामूली रस्सी से उन्हें बाँधा गया है। उसके ऊपर नारियल के 'औलैयों' को बिछाया गया है। एक बाँस से एक छोटी रस्सी लटक रही है। एक बित्ते रस्सी है। एक दिन यह रस्सी सुखपूर्वक झूल रही थी। देखो तो उसे कोई चिन्ता रही है --ऐसा नहीं दिखता था। कभी वह बिना हिले-डुले गुमसुम रहती है। बुलाओ तो भी नहीं पूछती कि क्या है। आज की स्थिति वैसी नहीं थी। वह खुशी के दौर में थी। मैं और यह रस्सी दोनों मित्र थे। हम बार-बार आपस में मिलकर वार्तालाप किया करते थे। 'रस्सी से बात करो, तो क्या वह उत्तर देगी ?' --बात करके देखो कि उत्तर मिलता है कि नहीं। पर सावधान ! जब वह खुश हो, तब उससे बात करनी चाहिए। नहीं तो चेहरा उदास बनाकर वह चुप रह जायगी, नारियों की तरह ! चाहे जो हो ! इस घर की रस्सी बोलती है। उसमें कोई सन्देह नहीं रहता। मैंने क्या 'एक रस्सी' कहा था ? वह ग़लत है। दो रस्सियाँ थीं। पहली एक बित्ते की थी और दूसरी पौन बित्ते की। एक पुरुष है, दूसरी स्त्री। वे पति-पत्नी थे। वे आपस में प्रेम की नज़र डालते, हँसी-दिल्लगी करते, हँसते तथा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सात आठ बाँसों को आरपार लिटाकर।
और उन्हें रस्सी से भली प्रकार बाँधकर॥
उसके ऊपर चटाइयों को बिछा - बिछाकर।
नारिकेल - पत्रों का यों "ओलै" (पण्डाल) मनोहर॥
एक बाँस से छोटी रस्सी लटक रही है।
वह रस्सी केवल बालिश्त एक भर ही है॥
कभी नहीं हिलती - डुलती गुमसुम रहती है।
कभी बुलाने पर न पूछती या कहती है॥
किन्तु आज उसकी न रही थी हालत वैसी।
वह थी झूम रही निश्चित मौज में कैसी॥
वह थी आज प्रसन्न, मित्रवर थे हम दोनों।
मिलकर वार्तालाप किया करते हम दोनों॥
बात करो रस्सी से तो वह क्या उत्तर देगी ?।
करके देखो बात भला क्या उत्तर देगी ?॥
सावधान, तब बात करो, जब हो प्रसन्न वह।
चुप होगी अन्यथा, हुई यदि मन - विषण्ण वह॥
निःसन्देह बोलती है इस घर की रस्सी।
सही नहीं वह शब्द कहा जो मैंने "रस्सी"॥
नहीं एक रस्सी थी, दो रस्सियाँ सुघर थीं।
(पास - पास लटकी वे दोनों इधर - उधर थीं)॥
केवल बित्ते भर की रस्सी पहले वाली।
और पौन बित्ते की रही दूसरी वाली॥
उनमें एक पुरुष थी और दूसरी नारी।
पति थी उनमें एक दूसरी पत्नी प्यारी॥
प्रेम - दृष्टि से एक - दूसरे को लखते थे।
हँसी - मसखरी करते थे (खुलकर) हँसते थे॥
इस प्रकार वे सरस केलि करते रहते थे।
एक - दूसरे के मन को हरते रहते थे॥
उनमें जो था पुरुष नाम उसका "कंदन" था।
स्त्री का नाम "वल्लियम्मै" अतिशय शोभन था॥
एक दिवस मैं पहुँच गया सहसा उस थल पर।
बढ़ा रहा था "कंदन" हाथ "वल्लियम्मै" पर॥

सरस केलि में लगे रहते थे। उस समय मैं वहाँ जा पहुँचा। पुरुष रस्सी का नाम 'कंदन' था। स्त्री रस्सी का नाम 'वळिळयम्मै' था। (मनुष्यों के समान रस्सी के टुकड़ों का भी नामकरण किया जा सकता है।) कंदन वळिळयम्मै पर हाथ डालने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कन्दन् वळ्ळि यम्मै मीदु कैयैप्पोड वरुहिऱदु। वळ्ळि यम्मै शिरिदु पिन् वाङ्गुहिऱदु। अन्द सन्दर्प्पत्तिले नान् पोय्च् चेर्न्देन्।

अॅन्न कन्दा शौक्कियम् ताना ? ऑरु वेळै नान् सन्दर्प्पन् दवरि वन्दु विट्टेनो, अॅन्नवो ? पोय् मऱ्ऱॊरु मुऱै वरलामा ? अॅन्ऱु केट्टेन्।

अदऱ्कुक् कन्दन्:- "अड पोडा, वैदीह मनुषन्! उन् मुन्ने कूड लज्जैया? अॅन्नडि वळ्ळि, नमतु सल्लाबत्तै ऐयर् पार्त्तदिले उनक्कुक् कोबमा ?" अॅन्ऱदु।

"शरि,शरि! अॅन्निडत्तिल् ऑन्ऱुम् केट्क वेण्डाम् अॅन्ऱदु" वळ्ळियम्मै।

अदऱ्कुक् कन्दन् कडकड वॅन्ऱु शिरित्तुक् कॆ दट्टिक् कुदित्तु, नान् पक्कत्तिलिरुक्कुम् बोदे वळ्ळियम्मैयैक् कट्टिक् कॊण्डदु।

वळ्ळियम्मै कीच्चुक् कीच्चॆन्ऱु कत्तलायिऱ्ऱु। आनाल् मनदुक्कुळ्ळे वळ्ळि यम्मैक्कुच् चन्दोषम्। नाम् सुहप्पडुबदैप् पिऱर् पार्प्पदिले नमक्कुच् चन्दोषन् दाने ?

इन्द वेडिक्कै पार्प्पदिले अॅनक्कु मिहवुम् तिरुप्ति दान्। उळ्ळत्तैच् चॊल्लि विडुबदिले अॅन्न कुऱ्ऱम् ? इळमैयिन् सल्लाबम् कण्णुक्कुप् पॆरियदोर् इन्व मन्ऱो ?

वळ्ळियम्मै अदिहक् कूच्चलिडवे कन्दन् अदै विट्टु विट्टदु।

शिल क्षणङ्गळुक्कुप् पिन् मरुपडि पोय्त् तळुविक् कॊण्डदु।

मरुपडियुम् कूच्चल्। मरुपडियुम् विडुदल्। मरुपडियुम् तळुवल्। मरुपडियुम् कूच्चत्। इप्पडियाह नडन्दु कॊण्डे वन्ददु। "अॅन्न, कन्दा, वन्दवॅनिडत्तिल् ऑरु वार्त्तै कूडच् चॊल्ल माट्टेनॆन्ऱिऱाय् ? वेऱॊरु समयम् वरुहिऱेन्। पोहट्टुमा ?" अॅन्ऱेन्।

आता है ! वळ्ळियम्मै पीछे हट जाती है। उस मौके पर मैं जा पहुँचा। मैंने पूछा-- क्या कंदन ? कुशल तो है ? शायद, मैं बेमौके आ गया हूँ। जाऊँ ? फिर कभी आऊँगा। कंदन ने उत्तर दिया-- जा रे, दकियानूस ! क्या तुम्हारे सामने भी लाज की जाती है ? क्यों री वळ्ळि ! हमारे प्रेम-संलाप को ऐयर ने (तमिळनाडु में ब्राह्मणों को 'ऐयर' कहकर सम्बोधित करते हैं।) देख लिया --उस पर तुमको गुस्सा है क्या ? बस-बस ! मुझसे कुछ मत पूछो-- कहा वळ्ळियम्मै ने। उसके उत्तर में कंदन ठठाकर हंसा। वह ताली बजाकर उछला। फिर मेरे पास रहते भी उसने वळ्ळियम्मै को कसकर पकड़ लिया। वळ्ळियम्मै चीखने लगी। पर मन-ही-मन उसे मोद हो रहा था। हमारे सुख को दूसरे जब देखते हैं, तब हमें आनन्द होता है न ! यह तमाशा देखते हुए मुझे तृप्ति हो रही थी। सच्ची बात को बताने में क्या दोष है ? तरुण लोगों का प्रेम-संलाप आँखों के लिए बहुत ही सुखदायक नहीं है क्या ? वळ्ळियम्मै बहुत चीखी चिल्लायी, तो कन्दन ने उसे छोड़ दिया। कुछ क्षणों के बाद वह फिर से जाकर लिपट गयी। फिर से चीख ! फिर से छोड़ना। फिर से आलिंगन, फिर से चिल्लाहट। यही क्रम होता रहा। मैंने कहा—

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और वल्लियम्मैं हट जाती थी सकुचाकर।
पूछी मैंने उन दोनों की कुशल मनोहर॥
शायद मैं बे-मौक़े आया आज यहाँ पर।
जाता हूँ मैं फिर आऊँगा कभी मित्रवर!॥
कन्दन ने तब दिया तुरत ही उसका उत्तर!।
जा रे दकियानूस! लाज तव सम्मुख क्यों कर?॥
क्यों री! वल्लि! बता क्या प्रेम-कलाप हमारा।
देख लिया ऐयर ने निज-नयनों के द्वारा?॥
इसीलिए रे वल्लि! बता क्या तू क्रोधित है?।
कहा वल्लि नें "कुछ मत पूछो यह अनुचित है"॥
सुनकर ठट्ठा मार हँस पड़ा था तब कन्दन।
उछला ताली बजा-बजाकर (वह प्रमुदित-मन)॥
फिर मेरे सामने वल्लि को पकड़ा कसकर।
और लगी चीखने वल्लियम्मै (सुख-कातर)॥
पर मन ही मन में तो थी वह अतिशय प्रमुदित।
अपने सुख को दिखा सभी होते आनन्दित॥
तृप्ति मिल रही थी मुझको यह कौतुक लखकर।
सच्ची बात बताने में न दोष रत्ती भर॥
तरुण जनों का मधुर प्रेम-संलाप मनोहर।
नयनों को लगता सुखदायक अतिशय सुन्दर॥
वल्लि बहुत ही जब चीखी, चिल्लायी (अतिशय)।
तो कंदन ने छोड़ दिया उसको (निःसंशय॥
ज़रा देर के बाद स्वयं वह लिपटी आकर।
फिर चीखी, फिर अलग हुई वह साथ छुड़ाकर॥
बार-बार आलिंगन करना औ' चिल्लाना।
बहुत देर तक क्रम यह होता रहा पुराना॥
मैंने कहा "बात यह क्या? बतलाओ कंदन!।
अभ्यागत से बात न तुम करते (हो इस क्षण)॥
खैर फिर कभी मैं आऊँगा, अब मैं जाता"।
कन्दन बोला— "दकियानूस! कहाँ तू जाता?॥
देख रहा तू सभी तमाशे की झाँकी है।
इस पर बस कुछ लेन-देन मेरा बाक़ी है॥
बात करूँगा लेन-देन यह पूरा करके।
मत जाओ, तुम रुको ज़रा मन धीरज धरके"॥

कन्दन! यह क्या है? आगत से एक बात भी नहीं कहते! फिर कभी आऊँगा। अब चलूँ? कन्दन ने कहा, हे दकियानूस! तमाशा तो देख ही रहे हो! इससे कुछ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अड पोडा ! वैदिहम् ! वेडिक्कै ताने पार्त्तुक् कॊण् डिरुक्किराय् ! इन्नुम् शिरिदु नेरम् निन्रु कॊण्डिरु। इवळिडम् शिल विवहारङ्गळ् तीर्क्क वेण्डि यिरुक्किरदु। तीर्न्दुडन् नीयुम् नानुम् शिल विषयङ् गळ् पेशलाम् ऎन्रिरुक्किरेन्। पोय् विडादे, इरु ऎन्रदु।

निन्रु मॆन्मेलुम् पार्त्तुक् कॊण्डिरुन्देन्।

शिरिदु नेरम् कळिन्दवुडन्, पॆण्णुम् इन्ब मयक् कत्तिले नान् निरपदै मरन्दु नाणत्तै विट्टु विट्टदु।

उडने पाट्टु नेर्त्तियान तुक्कडाक्कळ्। ऒरु वरिक्कु ऒरु वर्ण मॆट्टु।

इरण्डे 'सङ्गदि' पिन्बु मर्ऱॊरु पाट्टु। कन्दन् पाडि मुडिन्दवुडन् वळ्ळि; इदु मुडिन्दवुडन् अदु मार्ऱि मार्ऱिप् पाडिकोलाहलम्।

शर्रु नेरम् ऒन्रै यॊन्रु तॊडामल् विलहि निन्रु पाडिक् कॊण्डे यिरुक्कुम्। अप्पोदु वळ्ळि यम्मै तालाहवे पोय्क् कन्दनैत् तीण्डुम्।

अदु तळुविक् कॊळ्ळ वरुम्। इदु ऒडुम्। कोलाहलम्। इङ्ङनम् नॆडुम् पॊळुदु शॆन्रपिन् वळ्ळि यम्मैक्कुक् कळियेऱि विट्टदु।

नान् पक्कत्तु वीट्टिले दाहत्तुक्कु जलम् कुडित्तु विट्टु वरप् पोनेन्।

नान् पोवदै अव्विरण्डु कयिरुहळुम् कवनिक्क विल्लै।

नान् तिरुम्बि वन्दु पार्क्कुम् पोदु वळ्ळि यम्मै तूङ्गिक् कॊण्डिरुन्ददु। कन्दन् ऎन् वरवै ऎदिर् नोक्कि यिरुन्ददु।

ऎन्नैक् कण्डवुडन्, ऎङ्गडा पोयिरुन्दाय् वैदिहम् ? शॊल्लिक् कॊळ्ळामल् पोय्विट्टाये ऎन्रदु।

लेन-देन बाक़ी है। उसे पूरा करने के बाद तुमसे कुछ बातें कहना चाहूँगा। मत जाओ। थोड़ा ठहर जाओ। मैं खड़ा होकर उत्तरोत्तर देखता रहा। कुछ समय बीता। स्त्री काम-मोह में यह भूल गयी कि मैं खड़ा हूँ और उसने लाज त्याग दी। फिर गाना— उसमें सुहावने स्वर-परिवर्तन ! एक पंक्ति का एक तर्ज़ ! दो ही विशिष्ट गीत-प्रकार। कन्दन के गा चुकने पर वळ्ळि गायी। वळ्ळि के गा चुकने पर कन्दन गाया। इस तरह बारी-बारी से गाते हुए दोनों कोलाहल मचा रहे थे। कुछ देर वे दोनों अलग-अलग रहकर गाते। तब वळ्ळि खुद जाकर कन्दन को छेड़ती। कन्दन आलिंगन करने आता तो यह भाग जाती। कोलाहल ! इस तरह बहुत देर के बीतने पर वळ्ळियम्मै को मस्ती आ गयी ! मैं पड़ोस के घर में जल पीकर लौट आने का विचार करके चला। उन दोनों ने मेरा जाना नहीं देखा। जब मैंने लौटकर देखा, तो वळ्ळियम्मै सो रही थी। कन्दन मेरे आने की प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे देखते ही उसने पूछा—रे लकीर के फ़क़ीर, कहाँ गये थे ? बिना कहे ही चले गये ! मैंने संकेत किया कि लगता है— अम्मा (देवी) को प्रगाढ़ निद्रा लग गयी है। हा ! हा ! उसी क्षण रस्सी से फूटकर जो मेरे सामने खड़ा हो गया, उस देवता की महिमा क्या कहूँ ? वायुदेव प्रकट हुआ। मैंने सोचा था कि उसका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मैं रुक करके सभी देखता रहा निरन्तर।
इसी भाँति कुछ समय बिताया बैठ वहाँ पर॥
काम - मोह में पड़कर लज्जा त्यागी सारी।
मैं सम्मुख हूँ, भूल गई यह भी वह नारी॥
गाया गीत तभी कन्दन ने एक सुहावन।
गाते - गाते किया अचानक स्वर - परिवर्तन॥
भिन्न - भिन्न प्रत्येक पंक्ति की तर्ज़ बनाकर।
इस प्रकार गाये दो गीत विशिष्ट मनोहर॥
गाया गीत वल्लि ने उसके गा चुकने पर।
फिर कंदन ने गाया वह समाप्त होने पर॥
इस प्रकार गा - गाकर गाना बारी - बारी।
मचा रहे थे वे दोनों कोलाहल भारी॥
अलग - अलग रह कुछ क्षण गाते गीत मनोहर।
फिर कन्दन को वल्लि छेड़ती थी खुद जाकर॥
जब कन्दन आगे बढ़ता करने आलिंगन।
तो भग जाती, फिर करती कोलाहल का स्वन॥
इस प्रकार जब बहुत देर हो गयी सुहायी।
तो फिर पुनः वल्लियम्मै पर मस्ती छायी॥
मैं पड़ोस के घर जल पीने हेतु सिधाया।
उन दोनों ने मेरा जाना देख न पाया॥
देखा सोती हुई वल्लि को मैंने आकर।
था मेरी कर रहा प्रतीक्षा कन्दन तत्पर॥
कन्दन ने तब पूछा तत्क्षण मुझे देखकर।
"अरे लकीर - फ़क़ीर! कहे बिन गया भागकर"॥
तब मैंने वल्लि की ओर था किया इशारा।
गाढ़ी निद्रा में सोती की ओर निहारा॥
हा! उस रस्सी के भीतर से तभी निकलकर।
वायुदेव हो गये प्रकट प्रत्यक्ष रूप धर॥
मैंने सोचा, होगा अति विशाल तन बढ़कर।
हीरक - नोक - तुल्य प्रकटा वह ज्योति - रूप धर॥
"वायुदेव! प्रत्यक्ष ब्रह्म तुम, नमस्कार है।"
(वेद प्रार्थना जिनकी करता इस प्रकार है)॥

शरीर फूलकर बड़ा विशाल होगा। पर वह हीरे की सूची के समान प्रकाश के रूप में रहा। 'नमस्ते वायो, त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्माऽसि'। जब वह प्रकट हुआ, तब आकाश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अम्मा नल्ल नित्तिरै पोलिरुक्किरदे ? अॅन्ऱु केट्टेन् । आहा ! अन्द क्षणत्तिले कयिऱ्ऱिलिरुन्दु वॅडित्तु वॅळिप्पट्टु अॅन् मुन्ने निन्ऱ देवनुडैय महिमैयै अॅन्नॅन्ऱु शॊल्वेन् ?

काऱ्ऱुत् तेवन् तोन्ऱि नान् । अवनुडल् विम्मि विशालमाह इरुक्कुमॅन्ऱु निनैत्तिरुन्देन् । वयिर ऊशि पोल् ऒळि वडिवमाह इरुन्ददु । 'नमस्ते वायो, त्वमेव प्रत्यक्षम् ब्रह्मासि' काऱ्ऱै पोऱ्ऱि नीये कण् कण्ड बिरमम् ।

अवन् तोन्ऱिय पॊऴुदिले नान मुऴुदुम् प्राण शक्ति निरम्बिक् कनल् वीशिक् कॊण्डिरुन्ददु ।

आयिर मुऱै अञ्जलि शॆय्दु वणङ्गि नेन् ।

काऱ्ऱुत्तेवन् शॊल्वदायित 'महने ! एदडा केट्टाय् ? अन्दच् चिऱिय कयिऱु उऱङ्गुहिऱदा अॅन्ऱु केट्किऱाया ?

इल्ले, अदु अॅन्नुप् पोय् विट्टदु । नान् प्राण शक्ति ।

अॅन्नुडने उऱवु कॊण्ड उडल् इयङ्गुम् । अॅन् उऱविल् लाददु शवम् । नान् प्राणन् । अॅन्नाले तान् अच्चिऱु कयिऱु उयिर्त्तिरुन्ददु । सुहम् पॆऱ्ऱदु । शिऱिदु कळैप्पॆय्दिय वुडने अदे उऱङ्ग-इऱक्क विट्टुविट्टेन् । तुयिलुम् शावुतान् । शावुम् तुयिले । नान् विळङ्गु मिडत्ते अव्विरण्डुम् इल्ले । मालैयिले वन्दु ऊदुवेन् । अदु मऱुपडि पिऴैत्तु विडुम् ।

नान् विऴिक्कच् चॆय्हिऱेन् । अशैयच् चॆय्हिऱेन् । नान् शक्ति कुमारन् । अॅन्नै वणङ्गि वाऴ्ह अॅन्ऱान् ।

"नमस्ते वायो ! त्वमेव प्रत्यक्षम् ब्रह्मासि त्वमेव प्रत्यक्षम् ब्रह्म वदिष्यामि" । 1

नडुक्कडल् । तनिक् कप्पल् । वानमे शिन्नदु वरुवदु पोन्ऱ पुयऱ् काऱ्ऱु । अलैहळ् शारि वीशुहिन्ऱन । निर्त्तूळिप्पडुहिन्ऱन । अवै मोदि वॅडिक्किन्ऱन । शूऱै याडुहिन्ऱन । कप्पल् निर्त्तनञ् शॆय्हिऱदु; मिन्

भर में प्राण-शक्ति भरी दीप्ति बिखेर रही थी। मैंने हजार बार अंजलि की (हाथ जोड़े) और प्रणमन किया। पवनदेव के कथन ये थे-- पुत्र ! क्या पूछा, अरे ! यह छोटी रस्सी सोती है क्या ? --यही न पूछा तुमने ! नहीं, वह मर गयी है ! मैं प्राणदायी शक्ति ही हूँ। मुझसे संबद्ध शरीर क्रियाशील रहेगा। मेरे साथ जिसका सम्बन्ध नहीं हो, वह शव है। मैं प्राण-शक्ति हूँ। मेरे ही कारण वह छोटी रस्सी प्राणवती थी। वह सुख प्राप्त कर रही थी। वह थोड़ा थक गयी, तो मैंने उसे सोने-मरने दे दिया। निद्रा भी मृत्यु ही है। मृत्यु भी निद्रा है ! जहाँ मेरा सान्निध्य है, वहाँ दोनों नहीं होंगी। शाम को मैं आकर फूँकूँगा। वह फिर से प्राणवती हो जायगी। मैं जगाता हूँ; हिलाता हूँ। मैं शक्तिकुमार हूँ। मेरा नमस्कार करके जिओ --पवन ने कहा। नमस्ते वायो ! त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्माऽसि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। १ मध्य समुद्र। अकेला जहाज। ऐसी आँधी,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वायुदेव जब प्रकट हुए तब नभ - मंडल पर।
बिखर रही थी प्राण - शक्ति की दीप्ति मनोहर॥
किया प्रणाम हज़ार बार कर जोड़ - जोड़कर।
तब बोले वे वायुदेव सुन, अरे पुत्रवर!॥
'क्या रस्सी सोती?" पूछा तुमने सुपुत्रवर!।
वह सोती है नहीं, गई अब वह रस्सी मर॥
प्राण - दायिनी शक्ति मुझे ही जानो निश्चित।
मुझको पाकर क्रियाशील तन होता प्रचलित॥
मैं हूँ जिसमें नहीं, वस्तु वह शव - समान है।
प्राण - शक्ति कह, विश्व रहा मुझको बखान है॥
प्राणवती थी वह रस्सी मेरे ही कारण।
मेरे कारण प्राप्त कर रही थी सुख - साधन॥
श्रम करके थक गयी जभी वह रस्सी सुन्दर।
मैंने उसको त्यागा, वह सो गई, गई मर॥
निद्रा मृत्यु, मृत्यु निद्रा, दोनों संबंधित।
वर्तमान मैं जहाँ वहाँ दोनों न सुनिश्चित॥
जब मैं स्पर्श करूँगा संध्या - बेला आकर।
तब यह प्राणवान हो जायेगी अँगड़ाकर॥
मैं सब विश्व जगाता, सबको सदा हिलाता।
शक्ति - कुमार विश्व में मैं ही हूँ कहलाता॥
जियो जगत में सदा मुझे तुम नमस्कार कर।
इस प्रकार श्रीवायुदेव बोले (करुणाकर)॥
वायुदेव! प्रत्यक्ष ब्रह्म तुम, तुम्हें नमन है।
"हो प्रत्यक्ष ब्रह्म तुम" (कहता वेद - वचन है)॥ १॥
बीच - समुद्र जहाज़ अकेला, आँधी आयी।
मानो नभ के उर में क्रोध - घटा घहरायी॥
लहरों की कतार उठ - उठ उत्पात मचाती।
लूट मचातीं लहरें फूट - फूट टकरातीं॥
है जहाज़ नाचता (सिन्धु के मध्य मचलता)।
विद्युत् - गति से वह ऊपर की ओर उछलता॥
चट्टानों से वह जहाज़ जाकर टकराया।
दो सौ मनुजों के प्राणों का हुआ सफ़ाया॥

मानो आकाश ही क्रुद्ध होता जा रहा हो। लहरें पंक्तियाँ बाँधते हुए लगातार उठ रही हैं। ऊधम मचा रही हैं। वे टकराकर फूट पड़ती हैं। लूट मचा रही हैं। जहाज नाच रहा है। विद्युत्गति से ऊपर उछलता है। वह चट्टान से टकरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेहत्तिले एर्र्प्पडुहिन्र्रु। पाऱैयिल् मोदि विट्टदु। हतम्। इरुनूरु उयिर्हळ् अऴिन्दन, अऴियुमुन् अवै युह मुडिविन् अनुबवम् अॅङ्ङनमिरुक्कुमॅन्बदैयुम् अऱिन्दु कॊण्डु पोयिन।

ऊऴि मुडिवुम् इप्पडियॆ तानिरुक्कुम्। उलहम् ओडु नीराहि विडुम्। ती, नीर् शक्ति काऱ्ऱाहि विडुवाळ्।

शिवन् वॆऱियिले इरुप्पान्। इव् वुलहम ऑन्ऱॆन्बदु तोन्ऱुम्। अःदु शक्तियॆन्बदु तोन्ऱुम्। अवळ् पिन्ऩे शिवन् निऱ्पदु तोन्ऱुम्।

काऱ्ऱे पन्दल् कयिऱुहळै अशैक्किऱान्। अवऱ्ऱिल् उयिर् पॆय्हिरान्। काऱ्ऱे नीरिल् शूऱावऴि काट्टि, वानत्तिल् मिन्नॆऱ्ऱि, नीरै नॆरुप् पाक्कि, नॆरुप्पै नीराक्कि नीरैत् तूळाक्कित् तूळै नीराक्किच् चण्ड मारुदम् शॆय्हिऱान्।

काऱ्ऱे युह मुडिवु शॆय्हिऱान्। काऱ्ऱे काक्किन्ऱान्। अवन् नम्मैक् कात्तिडुह। नमस्ते वायो, त्वमेव, प्रत्यक्षम् ब्रह्मासि। 2

काऱ्ऱुक्कुक् कादु निलै। शिवनुडैय कादिलै काऱ्ऱु निऱ्किऱान्। काऱ्ऱिल्ला विट्टाल् शिवनुक्कुक् कादु केट्कादु। काऱ्ऱुक्कुक् कादिल्लै। अवन् शॆविडन्।

कादुडैयवन् इप्पडि इरैच्च लिडुवाऩा? कादुडैयवन् मेहङ्गळै आन्ऱो डॊन्ऱु मोव विट्टु इडियिडिक्कच् चॊल्लि वेडिक्कै पार्प्पाऩा? कादुडैयवन् कडलैक् कलक्कि विळैयाडु वाऩा? काऱ्ऱै, ऑलियै, वलिमैयै वणङ्गुहिन्ऱोम्। 3

पालैवऩम्। मणल् मणल्, मणल्, पल योजऩै दूरम् ऑरे मट्टमाह नात्गु दिशैयिलुम् मणल्।

मालै नेरम्। अव् वनत्तिन् वऴियॆ ऑट्टॆहळिन् मीदेऱि ऑरु वियापारक् कूट्टत्तार् पोहिऱार्हळ्।

वायु चण्डऩाहि वन्दु विट्टान्। पालै वऩत्तु मणल्ह ळॆल्लाम् इडै

गया। हत! दो सौ जानें चली गयीं। मरने से पहले वे यह जान गयीं कि युगान्त का अनुभव कैसा होगा। युगान्त भी ऐसा ही रहेगा। लोकसृष्टि प्रवहमान जल हो जायगा। अग्नि जल हो जायेगा। शक्ति वायु बन जायगी। शिव मस्ती में रहेंगे। लोक एक दिखेंगे। वह शक्ति है-- यह भी विदित हो जायगा। उस (शक्ति) के पीछे शिव का खड़ा रहना दिखेगा। पवन ही पंडाल की रस्सियों को हिलाता है। उनमें जान भरता है, जल को आग बनाता है, जल को धूल बनाता है और धूल को जल बनाकर चंड काम करता है। पवन ही युग का अन्त करता है। पवन ही बचाता है। वह हमारी रक्षा करे! नमस्ते वायो! त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्माऽसि। २ पवन का स्थान कर्ण है। शिव के कर्ण में पवन स्थित है। पवन नहीं रहे, तो शिव को सुनायी नहीं देगा। पवन के कर्णेन्द्रिय नहीं है, वह बहरा है। जिसके कान हों, क्या वह इस तरह शोर मचाता? वह मेघों को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मरने से पहले ही उन मनुजों ने जाना।
प्रलय - काल का अनुभव अपने मन में माना॥
प्रलय - काल में भी ऐसा ही हो जायेगा।
विश्व - प्रपंच सभी जल बनकर लहरायेगा॥
अग्निरूप में जल परिवर्तित हो जायेगा।
अग्नि - शक्ति बन वायु विश्व में घहरायेगा॥
एकाकार लोक सब होंगे शिव मतवाले।
वह है शक्ति जान जायेंगे (विज्ञ निराले)॥
और शक्ति के पीछे होंगे शंकर संस्थित।
वायु हिलाता मंडप की रस्सियाँ सुनिश्चित॥
उनमें भरता प्राण सलिल को आग बनाता।
जल को धूल, धूल को जल, प्रचंड दिखलाता॥
वायुदेव ही युग का अंत प्रलय करता है।
वायुदेव सबकी रक्षा निश्चय करता है॥
वायुदेव! प्रत्यक्ष ब्रह्म हो, नमस्कार है।
भगवन्! रक्षा करो! (शक्ति तव अति अपार है)॥ २॥
वायुदेव का स्थान कर्ण, शिव - कर्णों में स्थित।
वायु न हो तो शिव का बहरा होना निश्चित॥
वायुदेव के कान नहीं हैं, है वह बहरा।
इसीलिए वह जग में शोर मचाता गहरा॥
वह मेघों को भिड़ा परस्पर टकराता है।
मेघ कड़कते, देख तमाशा, मुस्काता है॥
क्रीडा करता है विस्तृत सागर को मथकर।
पवन - शब्द औ' बल के सम्मुख विनत सभी नर॥ ३॥
है यह रेगिस्तान बालुका फैली (उज्ज्वल)।
बालू का मैदान योजनों फैला (समतल)॥
एक काफ़िला हो सवार ऊँटों के ऊपर।
जाता संध्या - समय पास के वन से होकर॥
इतने में आ गया प्रबल तूफ़ान भयंकर।
लगे बालुका के कण उड़ने नभ - मंडल पर॥

आपस में टकराकर कड़कने देकर क्या तमाशा देखेगा? क्या वह समुद्र को मथकर केलि करेगा? हम पवन को, शब्द को, बल को नमस्कार करते हैं। ३ रेगिस्तान—बालू-बालू-बालू—अनेक योजन दूर बालू का सपाट मैदान—चारों ओर बालू। संध्या समय! उस वन में से एक काफ़िले के व्यापारी ऊँटों पर सवार होकर जा रहे हैं। पवन चंड मारुत बनकर आ गया। रेगिस्तान के बालूकण अन्तरिक्ष में घूमते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वान्तत्तिले शुळल्हिन्ऱन। ऒरु कृषणम्। यम वादनै। विया बारक् कूट्टम् मुळुदुम् मणलिले अळिन्दु पोहिऱदु। वायु कॊडियोन्। अवन् रुद्रन्। अवनुडैय ओशै अच्चन् दरुवदु। अवनुडैय शॆयल्हळ् कॊडियन। काऱ्ऱै वाळ्त्तु हिन्ऱोम्। 4

वीमनुम् अनुमानुम् काऱ्ऱिन् मक्कळ् ऎन्ऱु पुराणङ्गळ् कूऱुम्। उयिरुडैयन वॆल्लाम् काऱ्ऱिन् मक्कळ ऎन्बदु वेदम्। उयिर्दान् काऱ्ऱु। उयिऱ पॊरुळ्, काऱ्ऱु अदन् शॆय्है। पूमित् ताय् उयिरोडिरुक् किऱाळ्। अवळुडैय मूच्चे पूमियि लुळ्ळ काऱ्ऱु। काऱ्ऱै उयिर्।

अवन् उयिऱ हळै अळिप्पवन्। काऱ्ऱै उयिऱ। ऎन्नवे उयिऱहळ् अळिव दिल्लै। शिऱऱुयिर् पेरुयिरोडु शेऱहिऱदु। मरण मिल्लै। अहिल उलहमुम् उयिर् निलये। तोन्ऱुदल् वळर्दल्, माऱुदल् मऱैदल् ऎल्लाम् उयिर्च्चॆयल्। उयिरै वाळ्त्तु हिन्ऱोम्। 5

काऱ्ऱै वा। महरन्दत् तूळैच् चुमन्दु कॊण्डु, मन्तत्तै मयलुऱुत् तुहिन्ऱ इन्निय वाशनैयुडन् वा। इलैहळिन् मीदुम् नीरलै हळिन् मीदुम् उराय्न्दु, मिहुन्द प्राण रसत्तै ऎङ्गळुक्कुक् कॊण्डु कॊडु। काऱ्ऱै वा। ऎमदु उयिर् नॆरुप्पै नीडित्त, निन्ऱु नल्लॊळि तरुमाऱु नन्ऱाह वीशु। शक्ति कुऱैन्दु पोय्, अदन्नै अवित्तु विडादे। पेय्पोल वीशि अदन्नै मडित्तु विडादे। मॆदुवाह नल्ल नयन्तुडन् नॆडुङ्गालम् निन्ऱु वीशिक् कॊण्डिरु। उन्नक्कुप् पाट्टुक्कळ् पाडुहिऱोम्। उन्नक्कुप् पुहळ्च्चिहळ् कूऱुहिऱोम्। उन्नै वळि पडुहिन्ऱोम्। 6

हैं। एक ही क्षण—यम-वेदना। कारवाँ-का-कारवाँ बालू में धँसकर मिट जाता हैं! पवन क्रूर है! वह रुद्र है। उसकी ध्वनि डरावनी है। उसके कृत्य नृशंस हैं। हम पवन की जय गाते हैं। ४ पुराणों का कहना है कि भीम और हनुमान पवन के पुत्र हैं। वेदों का कहना है कि प्राणवान् सभी पवन के पुत्र हैं। जीवन ही प्राण है। जीवन वस्तु है; पवन उसकी प्रक्रिया है। भू-माता जीवन्त है। उसकी साँस ही भूमि पर का पवन है। पवन ही प्राण है। वह जीवों का संहारक है। पवन ही प्राण है। इसलिए प्राणी नहीं मिटते। छोटे प्राण बड़े प्राणों में लय हो जाते हैं; पर वे मरते नहीं। सारा लोक प्राणों का स्थान है। पैदा होना, बढ़ना, बदलना; तिरोहित होना—सभी प्राणों की प्रक्रियाएँ हैं। हम प्राणों की जय गाते हैं। ५ हे वायो! आओ! मकरन्द-चूर्ण को ढोते हुए, मनमोहक सुगन्धि के साथ आओ। पत्रों पर तथा जल की लहरों पर रेंगते हुए आओ और हमें प्राण-रस (शक्ति) प्रदान करो। वायो! आओ। हमारे प्राणाग्नि को, बहुत देर तक स्थिर रहकर श्रेष्ठ प्रकाश देनेवाला बनाते हुए बहो। दुर्बल होकर उसे मत बुझा दो। पिशाच के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

क्षण भर में ही दबा काफ़िला बालू भीतर।
यम - यातना - समान वेदना भीषण पाकर॥
वायु क्रूर है, रुद्र - रूप है, ध्वनि भय - दायक।
उसके कृत्य नृशंस (भीत) जय गाते गायक॥ ४॥

भीम और हनुमान वायु के युगल सुवन हैं।
सभी पुराण एक स्वर से कह रहे कथन हैं॥
प्राणवान सब वायु - पुत्र हैं वेद - वचन है।
जीवन ही है प्राण, वस्तु भी तो जीवन है॥
जीवन की प्राणों की ही प्रक्रिया पवन है।
भू-माता, जीवन्त साँस उसकी सु - पवन है॥
वायु प्राण भी है, जीवों का संहारक है।
वायु प्राण है, सभी प्राणियों का धारक है॥
छोटे प्राण बड़े प्राणों में लय हो जाते।
प्राण नहीं मरते (न कभी भी क्षय हो पाते)॥
सारा जग-प्रपच प्राणों का स्थान कहाता।
सारा जग प्राणों की ही जयकार मनाता॥
जन्म, वृद्धि, परिवर्तन, नाश —समस्त दशाएँ।
प्राणों की ही कहलाती हैं सभी क्रियाएँ॥ ५॥

वायुदेव ! आओ, मकरन्द-पराग-भार ले।
वायुदेव ! आओ, मनमोहक-गंध-सार ले॥
आवो तुम रेंगते हुए पत्तों पर जल पर।
हमको करो प्रदान प्राण-रस (मधुर मनोहर)॥
करो हमारे प्राण-अनल को सुचिर-स्थायक।
आओ प्राण-अनल को करो प्रकाश-प्रदायक॥
दुर्बल होकर प्राण-अनल को नहीं बुझाओ।
मत पिशाच-सम बह करके तुम उसे नशाओ॥
उत्तम लय के साथ मन्द-गति को तुम गहते।
स्थिर-स्वरूप से रहो अनन्त-काल तक बहते॥
करते हम तव प्रबल प्रशंसा यश गाते हैं।
तव पूजा करते हैं (अतिशय सुख पाते हैं)॥ ६॥

समान (प्रचण्ड रूप से) बहकर उसे गुल मत कर दो। मन्द-मन्द, श्रेष्ठ लय के साथ चिर काल तक सुस्थिर रूप से बहते रहो। हम तुम्हारा (महिमा-) गान गाते हैं। तुम्हारी प्रशंसा करते हैं। तुम्हारी पूजा करते हैं। ६ छोटी चींटी को देखो।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शिऱ्ऱॆरुम् वैप् पार्। ऍत्तनै शिऱियदु। अदऱ्कुळ्ळे कै, काल् वाय् वयिऱ ऍल्ला अवयवङ्गळुम् कणक्काह वैत्तिरुक्किऱदु।

यार् वैत्तनर्? महा शक्ति। अन्द उऱुप्पुक्क ळॆल्लाम् नेराहवे तॊळिल् शॆय्हिन्ऱन। ऍऱुम्बु उण्णु हिन्ऱदु। उऱङ्गु हिन्ऱदु। मणम् शॆय्दु कॊळ्ळु हिन्ऱदु। कुळन्दै पॆऱुहिऱदु। ओडुहिऱदु। तेडुहिऱदु। पोर् शॆय् हिऱदु। नाडु काक्किऱदु। इदर्कॆल्लाम् काऱ्ऱुत् तान् आदारम्।

महा शक्ति काऱ्ऱैक् कॊण्डु तान् उयिर् विळैयाट्टु विळैयाडुहिन्ऱाळ्। काऱ्ऱैप् पाडुहिऱोम्। अदु अऱिविले तुणिवाह निऱ्पदु! उळ्ळत्तिले विरुप्पु बॆऱुप्पुक् कळावदु! उयिरिले उयिर् तानाह निऱ्पदु। वॆळियुलहत्तिले अदन् शॆय्हैयै नाम् अऱिवोम्; नाम् अऱिवदिल्लै। काऱ्ऱुत् तेवन् वाळ्ह। 7

मळैक् कालम्, मालै नेरम्। कुळिर्न्द काऱ्ऱु वरुहिऱदु। नोयाळि उडम्बै मूडिक्कॊळ्ळुहिरान्, पयनिल्लै।

काऱ्ऱुक्कु अञ्जि उलहत्तिले इन्बत्तुडन वाळमुडियादु। पिराणन् काऱ्ऱायिन् अदऱ्कु अञ्जि वाळ्वदु उण्डो? काऱ्ऱु नम् मीदु वीशुह! अदु नम्मै नोयिन्ऱिक् कात्तिडुह। मलैक्काऱ्ऱु नल्लदु। कडल् काऱ्ऱु मरुन्दु। वान् काऱ्ऱु नन्ऱु। ऊऱक्काऱ्ऱै मनिदर् पहैवनाक्कि विडुहिन्ऱनर्। अवर्हळ् काऱ्ऱुत् तॆय्वत्तै नेरे वळि पडुवदिल्लै।

अदनाल् काऱ्ऱुत् तेवन् शिन मॆय्दि अवर्हळै अळिक्किरान्। काऱ्ऱुत् तेवनै वणङ्गुवोम्। अवन् वरुम् वळियिल् शेऱु तङ्गलाहादु। नाऱ्ऱम् इरुक्क लाहादु। अळुहिन पण्डङ्गळ् पोडलाहादु। पुळुदि पडिन्दु इरुक्क

उसी (छोटे शरीर) में हाथ-पैर, मुख, पेट सब सुव्यवस्थित रूप से बनाकर रखे गये हैं। किसने रखे? महाशक्ति ने। वे अवयव सीधे अपने काम कर रहे है। चींटी खाती है। सोती है। विवाह करती है। बच्चे पैदा करती है, दौड़ती है, कमाती है! युद्ध करती है। (अपने) देश की रक्षा करती है! इन सबका वायु ही आधार है। महाशक्ति हवा द्वारा ही जीव-लीला खेलती है। हम वायु (की महिमा) को गाते हैं। वही बुद्धि में साहस बनकर खड़ी है! मन में चाह, घृणा आदि वही है। प्राणों में प्राण स्वयं बनी रहती है। बाहरी संसार में हम उसके कृत्यों को जानते हैं। नहीं भी जानते हैं। पवनदेव जिए। उसकी जय हो! ७ वर्षा का काल। शाम का समय। शीतल बयार आती है। रोगी शरीर को ढँक लेता है, पर कोई लाभ नहीं। वायु से डरकर (बचकर) इस संसार में सुख से नहीं जिया जा सकता। प्राण तो वायु है, तो क्या उससे डरकर रहा जा सकता है! हवा हम पर बहे (लगे)। वह हमें रोग से बचा ले। पर्वतीय हवा अच्छी है। समुद्री हवा दवा है, आकाश की हवा अच्छी है। बस्ती की हवा को मनुष्य शत्रु बना देते हैं। वे वायुदेवता की ठीक से पूजा नहीं करते। इसलिए वायुदेवता क्रुद्ध होकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देखो, छोटी चींटी को उसके तन में स्थित।
हाथ, पैर, मुख, पेट सभी हैं परम व्यवस्थित ॥
महाशक्ति ने इसके सारे अंग बनाये।
निज-निज कर्म कर रहे सारे अंग सुहाये ॥
चींटी, सोती, खाती (नित्य उदर भरती है)।
वह विवाह करती, बच्चे पैदा करती है ॥
वह दौड़ती, कमाती है (अर्जन करती है)।
करती युद्ध, देश निज की रक्षा करती है ॥
इन सबका आधार पवन है, और पवन से—।
शक्ति जीव-लीला का करती संचालन है ॥
वायुदेव की गाते हैं हम (मंजुल) महिमा।
वही बुद्धि में बनकर संस्थित साहस-गरिमा ॥
मन में इच्छा और घृणा बनकर संस्थित है।
प्राणों में भी बनकर प्राण वही स्पन्दित है ॥
बाह्य-जगत में जो हैं उसके कृत्य चिरंतन।
कुछ से हैं अनभिज्ञ और कुछ से सुविज्ञ जन ॥
वायुदेव चिर-काल-अवधि तक रहें सुजीवित।
जय हो, सदा रहें वे जगती-तल में संस्थित ॥ ७ ॥

है (प्रिय) वर्षा-काल सांध्य-बेला सुन्दर है।
बहता शीतल (मंद सुगंधित) पवन (सुघर) है ॥
(शीतलता के भय से) रोगी ढक तन लेता।
यद्यपि इससे लाभ न कुछ रोगी को होता ॥
वायुदेव से (अंग छिपाकर उससे) डरकर।
सुख से नहीं जिया जा सकता इस भूतल पर ॥
प्राणरूप है वायु (भला) तब उससे डरकर।
कैसे (कहो) रहा जा सकता है (भूतल पर?) ॥
अंग-अंग को छू-छू करके वायु हमारे।
रोग-दोष सब दूर करे (पल-भर में) सारे ॥
है पर्वत की वायु मनोरम अति सुखदायक।
सिन्धु-वायु औ' वायु गगन की स्वास्थ्य-प्रदायक ॥
गगन-वायु (अतिशय) सुखकर है (मनभावन) है।
पर बस्ती की वायु प्रदूषित करता जन है ॥
नहीं वायु का भली भाँति करते वे अर्चन।
इसीलिए हो क्रुद्ध वायु कर देती विनशन ॥

उन्हें नष्ट कर देता है। हम वायुदेवता को नमस्कार करें। उसके आगमन के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लाहादु। ऍव्विदमान अशुत्तमुम् कूडादु। कार्रु वरुहिन्ऱान्। अवन् वरुम् वऴियै नन्ऱाहत् तुडैत्तु नल्ल नीर् तॆळित्तु वैत्तिडुवोम्। अवन् वरुम् वऴियिले शोलैहळुम् पून्दोट्टङ्गळुम् शैय्दु वैप्पोम्। अवन् वरुम् वऴियिले कर्पूरम् मुदलिय नरुम् पॊरुळ्हळैक् कॊळुत्ति वैप्पोम्। अवन् नल्ल मरुन्दाह वरुह। अवन् नमक्कु उयिराहि वरुह। अमुदमुद माहि वरुह। कार्ऱै वऴि पडुहिन्ऱोम्। अवन् शक्ति कुमारन्। महाराणियिन् मैन्दन्। अवनुक्कु नल् वरवु कूरुहिन्ऱोम्। अवन् वाऴ्ह। 8

कार्ऱे वा। मॆदुवाह वा। जन्नल् कदवै अडित्तु उडैत्तु विडादे। कायिदङ्गळै यॆल्लाम् ऍडुत्तु विशिऱि ऍऱियादे। अलमारिप् पुत्तङ्गळैक् कीऴे तळ्ळि विडादे। पार्त्ताया? इदो, तळ्ळि विट्टाय्! पुत्तहत्तिन् एडुहळैक् किऴित्तु विट्टाय्। मरुपडि मऴैयैक् कॊण्डु वन्दु शेर्त्ताय्। वलियिऴन्द वऱ्ऱैत् तॊल्लैप् पडत्ति वेडिक्कै पार्प्पदिले नी महा समर्त्तन्।

नॊय्न्द वीडु, नॊय्न्द कदवु, नॊय्न्द कूरै, नॊय्न्द मरम् नॊय्न्द उडल्, नॊय्न्द उयिर्, नॊय्न्द उळ्ळम् इवऱ्ऱैक् कार्रुत् तेवन् पुडैत्तु नॊरुक्कि विडुवान्। शॊन्नालुम् केट्क माट्टान्। आदलाल् मानिडरे वारुङ्गळ्, वीडुहळैत् तिण्मैयुऱक् कट्टुवोम्। कदवुहळै वलिमैयुऱच् चेर्प्पोम्। उडलै उरुदि कॊळ्ळप् पऴुहुवोम्। उयिरै वलिमैयुऱ निरुत्तुवोम्। उळ्ळत्तै उरुदि शैय्वोम्। इङ्ङनम् शॆय्दाल् कार्रु नमक्कुत् तोळ्नाहि

मार्ग में पंक नहीं रहना चाहिए। दुर्गन्ध नहीं रहे। सड़ी वस्तुओं को नहीं छोड़ना चाहिए। धूल जमी नहीं रहे। किसी भी तरह का मैल नहीं रहना चाहिए। उसके आगमन के मार्ग को खूब झाड़-पोंछकर, जल सींचकर रखें। उसके आने के रास्ते में बाग़ और फुलवारियाँ बना दें। उसके आने के मार्ग में कपूर आदि सुगन्धित वस्तुएँ जलावें। वह अच्छी दवा के रूप में आवे। वह हमारे प्राण बनकर आये। वह अमृत बनकर आये। हम वायु का पूजन करते हैं। वह शक्तिकुमार है। महारानी का पुत्र है। हम उसका सुस्वागत करते हैं। जिये वह। ८ हे वायो, आओ। मंद-मंद आओ। खिड़की के किवाड़ को अपने आघात से मत तोड़ो। काग़ज़ों को लेकर मत बिखेरो। अलमारी की पुस्तकों को नीचे मत गिरा दो। देखो, देखो! तुमने गिरा ही दिया। पुस्तकों के पन्नों को फाड़ दिया। फिर से बारिश ले आये! कम बलवानों को त्रस्त करके तमाशा देखने में तुम बड़े समर्थ हो! जर्जर घर, कमज़ोर कपाट, बिगड़ा छाजन, जर्जर तरु, निर्बल शरीर, निर्बल प्राण, जर्जर मन —इनको पवनदेव पीटकर धूल में मिला देगा। कहो तो मानेगा नहीं। इसलिए हे मनुष्यो, आओ, घरों को मज़बूत बना लें।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करो नमन, रख ध्यान कि उनके पथ पर।
सड़ी वस्तुएँ हों न पंक या धूल-बवंडर ॥
मैल नहीं हो, रंच-मात्र दुर्गन्ध नहीं हो।
(वायु-प्रदूषक तत्त्वों से संबंध नहीं हो) ॥
उसके पथ को रखें सर्वदा झाड़-पोंछकर।
(धूल दबायें) शीतल जल से सींच-सींचकर ॥
उसके पथ पर बाग-बगीचे सदा लगायें।
उसके पथ पर (अगर, धूप,) कर्पूर जलायें ॥
यों आयेगा वायु लाभ-प्रद औषध बनकर।
वह आयेगा प्राण-रूप बनकर भूतल पर ॥
(अमर बनायेगा वह सबको सरस) सुधा बन।
नमस्कार हम करते, करते उसका पूजन ॥
शक्ति-महारानी का है वस्तुतः वही सुत।
चिरजीवी हो, हम सब करते उसका स्वागत ॥ ८ ॥
वायुदेव ! तुम आओ, मंद-मंद तुम आओ।
नहीं चोट से खिड़की के पट तोड़ गिराओ ॥
(इधर-उधर) तुम नहीं काग़ज़ों को बिखराओ।
अलमारी की नहीं पुस्तकें भूमि गिराओ ॥
अरे ! पुस्तकों को तुमने भूमि पर गिराया।
माने नहीं ! फाड़ पन्नों को भी बिखराया ॥
अरे ! साथ ही साथ प्रबल वर्षा ले आये।
दे दुर्बल को त्रास, तमाशे पर मुसकाये ॥
जर्जर घर, कमज़ोर किवाड़े, बिगड़ा छाजन।
जर्जर तरु, बलहीन प्राण औ' जर्जर तन-मन ॥
प्रबल वायु इन सबको पीट-पाटकर सत्वर।
धूलि-धूसरित कर देगा, भू पर लुंठित कर ॥
चाहे जितना कहो नहीं कुछ भी मानेगा।
(वायुदेव अपना सदैव ही हठ ठानेगा) ॥
इस कारण मानवो ! भवन मज़बूत बनाओ।
और घरों में तुम कपाट भी सुदृढ़ लगाओ ॥
अपने तन में भी सदैव तुम दृढ़ता लाओ।
प्राणों को सुस्थिर करके मज़बूत बनाओ ॥
यदि तुम ऐसा करो (नहीं संकट आयेगा)।
वायुदेव भी मित्र तुम्हारा बन जायेगा ॥

कपाटों को मज़बूत बना लें। शरीर को सुदृढ़ बना लें। प्राणों को सुस्थिर स्थापित करें। ऐसा करें तो पवन हमारा मित्र बन जायगा। पवन छोटी आग को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विडुवान् । कार्रु मॅलिय तॉयै अवित्तु विडुवान् । वलिय तीयै वळर्प्पान् । अवन् तॉळमै नन्रु । अवनै नित्तमुम् वाळ्त्तु हिन्ड्रोम् । 9

मळै पॅय्हिड्रदु । ऊर् मुळुवदुम् ईरमाहि विट्टदु । तमिळ् मक्कळ् ऍरुमैहळैप्पोल ऍप्पोदुम् ईरत्तिलेये निर्किरार्हळ् । ईरत्तिलेये उट्कारु हिरार्हळ् । ईरत्तिलेये नडक्किड्रार्हळ् । ईरत्तिलेये पडुक्कि ड्रार्हळ् । ईरत्तिलेये शमैयल्, ईरत्तिलेये उणवु ।

उलर्न्द तमिळन् मरुन्दुक्कुक् कूड अहप्पड माट्टान् । ओयामल् कुळिर्न्द कार्रु वीशुहिड्रदु । तमिळ् मक्कळिले पलरुक्कुज्वरम् ण्उडा हिड्रदु । नाळ् तोरुम् शिलर् इड्रन्दु पोहिड्रार्हळ् । मिञ्जियिरुक्कुम् मूडर् विदिवशम् ऍन्गिरार्हळ् । आमडा, विदिवशन्दान् । 'अरिविल्ला दवर्-हळुक्कु इन्बमिल्लै' ऍन्बदु ईशनुडैय विदि ।

शास्त्र मिल्लाद देशत्तिले नोय्हळ् विळैवदु विदि । तमिळ् नाट्टिले शास्त्रङ् गळिल्लै । उण्मैयान शास्त्रङ्गळै वळर्क्कामल् इरुप्पन वड्रैयुम् मड्रन्दुविट्टुत् तमिळ् नाट्टुप् पार्प्पार् पॉय्क् कदैहळै मूडरिडङ् गाट्टि वयिरु पिळैत्तु वरुहिड्रार्हळ् । कुळिर्न्द कार्ड्रैया विषमॅन्रु निनक्किड्राय् ? अतु अमिळ्दम् । नी ईरमिल्लाद वीडुहळिल् नलुल उडैहळुडन् कुडियिरुप्पायानाल् । कार्रु नन्रु, अदनै वळि पडुहिन्ड्रोम् । 10

कार्ड्रॅन्रु शक्तियैक् कूरुहिन्ड्रोम् । एड्रुहिड्र शक्ति, पुडैक्किड्र शक्ति, मोदुहिड्र शक्ति, शुळड्रुवदु, ऊदुवदु । शक्तियिन् पल वडिवङ्गळिले कार्रुम्

बुझा देगा, पर बड़ी आग को प्रज्वलित करके पालेगा। उसकी मित्रता भली है ! हम रोज उसकी स्तुति करते हैं। ९ बारिश होती है। सारा गाँव गीला हो गया। तमिळ लोग भैंसों की भाँति हमेशा सील में ही खड़े रहते हैं। सील में ही बैठते हैं। सील में ही चलते हैं, सील में ही बैठे रहते हैं, सील में ही रसोई बनाते हैं, सील में ही खाते हैं। सूखा तमिळ (मनुष्य) 'दवा के लिए' भी नहीं मिलेगा। लगातार शीतल हवा बहती है ! तमिळ लोगों में अनेकों को ज्वर हो जाता है। रोज कुछ लोग मर जाते हैं। जो बचे हैं, वे बेवकूफ़ लोग 'विधिवश' की बात करते हैं। रे हाँ ! 'विधिवश' ही। बुद्धिहीनों को सुख प्राप्त नहीं होगा —यह ईश्वर की 'विधि' है। जिस देश में शास्त्र नहीं होते, उस देश में रोगों का होना 'विधि' है। तमिळ देश में 'शास्त्र' नहीं है। (भारती 'विज्ञान' को शास्त्र कहते हैं।) सच्चे शास्त्रों को बिना पाले, जो भी हैं, उनको भूलकर, तमिळनाडु के ब्राह्मण झूठी कहानियों को बेवकफ़ों के सामने खोलकर पेट पाल रहे हैं। शीतल हवा को विष समझते हो ? वह ही अमृत है ! बिना सील के घरों में अच्छे वस्त्र पहने रहोगे, तो हवा भली है। हम उसका स्तवन करते हैं। १० हम शक्ति को वायु कहते हैं। चढ़ाने की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लघु दीपक की लौ को वायु बुझा ही देगा।
किन्तु बड़ी ज्वाला को वायु बढ़ा ही देगा॥
वायुदेव की मधुर मित्रता है मंगलमय।
हम प्रतिदिन स्तुति करते, कहते वायुदेव जय ! ॥ ९ ॥
हुई प्रबल बरसात (गगन से गिरती धारा)।
जल से भीगा गाँव हो गया गीला सारा॥
चाहे जितनी हो वर्षा, कितनी ही सीलन।
भैंसों के ही भाँति खड़े रहते तामिळ-जन॥
सीलन में बैठते उसी में हैं वे चलते।
सीलन में ही बना रसोई भोजन करते॥
नहीं दवा के लिए मिलेगा सूखा तामिळ।
लगातार बहती रहती है पवन सुशीतल॥
वहाँ अनेकों तमिळ जनों को हो जाता ज्वर।
प्रतिदिन ज्वर से ग्रस्त अनेकों ही जाते मर॥
मूर्ख लोग यह खेल भाग्य का हैं बतलाते।
बुद्धिहीन इस जग में कभी नहीं सुख पाते॥
नहीं व्याप्त जिस देश-बीच शुभ शास्त्र-ज्ञान है।
रोग-दोष की वृद्धि वहाँ विधि का विधान है॥
तमिळ-देश में शास्त्र नहीं, विज्ञान नहीं है)।
(तमिळ-वासियों को इस कारण ज्ञान नहीं है)॥
सच्चे शास्त्रों को वे कभी नहीं पढ़ते हैं।
झूठी कल्पित कहानियाँ मन से गढ़ते हैं॥
मूर्खों के सामने बैठकर उन्हें सुनाते।
पेट पालते हैं (पुरखों का ज्ञान भुलाते)॥
तमिळनाडु के ब्राह्मण यों ज़िन्दगी बिताते।
(स्वयं भ्रमित हैं और दूसरों को भरमाते)॥
शीत वायु को समझ रहे विष वे आरत हैं।
किन्तु अमृत वह, जो न समझते वे ही मृत हैं॥
सीलन-रहित घरों में यदि तुम सदा रहोगे।
अपने तन पर वस्त्र भले हितकर पहनोगे॥
तो तुम-सबके लिए वायु है अति उपकारक।
हम स्तुति करते वायुदेव की (दुःख-निवारक)॥ १० ॥
शक्ति चढ़ाने और पीटने, टकराने की।
शक्ति फूंक देने की और घुमा लाने की॥

शक्ति, पीटने की शक्ति, टकराने की शक्ति, घुमाना, फूंकना आदि की शक्ति। शक्ति के अनेक रूपों में वायु भी एक है। सभी देवता शक्ति की ही कलाएँ (अंश)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऑन्ऱु। अॅल्लात् तॅय्बङ्गळुम् शक्तियिन् कलैहळेयाम्। शक्तियिन् कलैहळेपे तॅय्बङ्गळॅन्गिऱोम्। काऱ्ऱु शक्ति कुमारन्। अवनै वळि पडुहिऱोम्। 11

काक्कै पऱन्दु शॅल्हिऱदु। काऱ्ऱिन् अलैहळिन् मीदु नीन्दिक् कॉण्डु पोहिऱदु। अलैहळ् पोलिरुन्दु मेले काक्कै नीन्दिच् चॅल्बवऱ्कु इडमाहुम् पॉरुळ् यादु? काऱ्ऱु। अन्ऱु अदन्ऱु काऱ्ऱु। अदुकाऱ्ऱिन् इडम्। वायु निलैयम्। कण्णुक्कुत् तॅरियादपडि अत्तनै नुट्पमाहिय पूदत्तूळ्हळे (काऱ्ऱडिक्कुम् पोदु) नम् मीदु वन्दु मोदुहिन्ऱन। अत् तूळ्हळैक् काऱ्ऱॅन्बदु उलह वळक्कु। अबै वायुवल्ल। वायु एऱिवरुम् तेर्। पनि-क्कट्टियिले शूडेऱ्ऱिनाल् नीराह माऱिबिडु हिऱदु। नीरिले शूडेऱ्ऱिनाल् वायुबाहि बिडुहिऱदु। तङ्गत्तिले शूडेऱ्ऱिनाल् तिरवमाह उरुहि विडुहिऱदु। अत्तिर वत्तिले शूडेऱ्ऱिनाल् 'वायु' वाहिन्ऱदु।

इङ्ङनमे उलहत्तुप् पॉरुळ्हळ नैत्तैयुम् 'वायु' निलैक्कुक् कॉण्डु वन्दु बिडलाम्। इन्द 'वायु' पौदिहत् तूल्। इदनै ऊर्न्दु वरुम् शक्तियं ये नाम् काऱ्ऱुत् तेबॅन्ऱु वणङ्गुहिऱोम्।

काक्कै पऱन्दु शॅल्लुम् वळि काऱ्ऱन्ऱु। अन्द वळियै इयक्कुबवन् काऱ्ऱु। अदनै अव्वळियिले तूण्डिच् चॅल्बवन् काऱ्ऱु। अवनै वणङ्गुहिन्ऱोम्। उयिरैच् चरणडैहिन्ऱोम्। 12

अशैहिन्ऱ इलैयिले उयिर् निऱ्किऱदा? आम्। इरैहिन्ऱ कडल्नीर उयिराल् अशैहिन्ऱदा? आम्। कूरैयिलिरुन्दु पोडुम् कल् तरयिले विळुहिन्ऱदु। अदल् चलनम् अॅदनाल् निहळ्बदु? उयिरु डैमैयाल् ऑडुहिन्ऱ

हैं। शक्ति की कलाओं को ही हम देवता कहते हैं। वायुदेव शक्ति-पुत्र हैं। हम उनकी पूजा करते हैं। ११ कौआ उड़ता जाता है। वह पवन की लहरों पर तैरता जाता है। लहरों के रूप में रहकर, अपने ऊपर कौए को तैरने देनेवाली वस्तु कौन-सी है? वायु। नहीं। वह वायु नहीं है। वह वायु का स्थान है। वायु-निलय है। आँखों के लिए अदृश्य, उतने सूक्ष्म भूत-कण ही (हवा के बहते समय) हमारे ऊपर आ टकराते हैं। उन कणों को वायु कहना लोक-रीति है। वे (कण) वायु नहीं हैं। वायु की सवारी का रथ है। बर्फ़ को गरम करो, तो वह जल में बदल जाती है। जल में ताप दो, तो वह वायु (भाप) में परिवर्तित हो जाती है। सोने को गरम करो, तो वह पिघलकर द्रव पदार्थ बन जाता है। उस द्रव को भी गरम करो, तो वह 'वायु' बन जाता है। इस तरह संसार के सभी पदार्थों को 'वायु' स्थिति में लाया जा सकता है। यह वायु 'भूत-कण' है। जो जिस पर सवार होकर आती है, उसी शक्ति को हम वायु कहते हैं और उसकी पूजा करते हैं। कौए के उड़कर चलने का मार्ग 'वायु' नहीं है। उस मार्ग को सक्रिय बनानेवाला वायुदेव है। हम उसकी पूजा करते हैं। हम प्राणों की शरण जाते हैं। १२ क्या हिलते पत्ते में प्राण स्थित हैं। हाँ! क्या गरजते समुद्र का जल प्राणों से हिलता है? हाँ!

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विविध शक्ति में सभी जगह बस देव पवन हैं।
इसीलिए शक्ति को कह रहे सभी पवन हैं॥
सभी देव-गण शक्ति-कलाएँ कहलाते हैं।
शक्ति-कला को अतः देव हम बतलाते हैं॥
वायुदेव है महाशक्ति का पुत्र सुहावन।
इसीलिए हम सब करते हैं उसका पूजन॥ ११ ॥

कौवा उड़ता (आसमान में है मँड़राता)।
(चपल) वायु की लहरों बीच तैरता जाता॥
कौन वस्तु फैली लहरों का रूप बनाकर।
तैर रहा तेजी से कौआ जिसके ऊपर ?॥
वायु नहीं वह, वायु नहीं है, वायु-स्थान है।
वायु-निलय है, कहकर जग करता बखान है॥
सूक्ष्म अदृश्य विविध कण हमसे आ टकराते।
वे ही कण जग-बीच वायु बतलाये जाते॥
वायु नहीं वह वायु-सवारी, रथ, वाहन है।
बर्फ़ गर्म होने पर, पानी जाता बन है॥
गर्म करो जल भाप रूप वह बन जाता है।
स्वर्ण गर्म हो द्रव-स्वरूप में दिखलाता है॥
गर्म करो तो वह द्रव वायु-रूप बन जाता।
वायु-रूप ही जग का हर पदार्थ हो जाता॥
भौतिक कण यह वायु, इसी पर चढ़ जो आती।
वही शक्ति ही वायु-शक्ति बतलायी जाती॥
उसी शक्ति का (जग के सब जन) करते पूजन।
कौवे के उड़ने के पथ को कहो मत पवन॥
वायुदेव ही उस पथ को सक्रिय करते हैं।
वायुदेव का पूजन कर हम (मन भरते) हैं॥
वायु-रूप प्राणों की (सुखद) शरण हम जाते।
(वायुदेव की हम सब मंजुल महिमा गाते)॥ १२ ॥

तरु के हिलते हुए पत्र में प्राण सुसंस्थित।
और सिन्धु का जल होता प्राणों से तरलित॥
छत से फेंका हुआ भूमि पर गिरता पत्थर।
प्राणों से ही उसको मिलती है गति सत्वर॥
अविरत गति से जो बहता रहता है नाला।
वह भी है जीवित स्थिति वाला (प्राणों वाला)॥

छत पर से फेंका गया पत्थर भूमि पर गिरता है। उसको गति किससे मिली ?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बाय्क्काल् अॅन्द निलैमैयिल् उळदु ? उयिर् निलैयिल्। ऊमैयाह इरुन्द कार्रु ऊदत् तॊडङ्गि विट्टदे ! अदर्कु अॅन्न नेरिट्टिरुक्किरदु ? उयिर् नेरिट्टिरुक्किरदु ?

वण्डियै माडु इळुत्तुच् चॅल्हिरदु ! अङ्गु माट्टिन् उयिर् वण्डियिलुम् एरुहिरदु। वण्डि शॅल्लुम् पोदु उयिरुडने तान् शॅल्लु हिरदु।

कार्राडि ? उयिरुळ्ळदु। नीरावि वण्डि उयिरुळ्ळदु। पॅरिय उयिर्। यन्दिरङ्गळॅल्लाम् उयिरुडैयन।

पूमिप्पन्दु इडैविडामल् मिक्क विशैयुडन् शुळल् हिन्रदु। अवळ् तीराद उयिरु डैयवळ्। पूमित्ताय् एनवे अवळ् तिरुमे निमिलुळ्ळ ऑव्वॊन्रुम् उयिर् कॊण्डदैयाम्।

अहिलम् मुळुदुम् शुळलुहिरदु। शन्दिरन् शुळलहिन्रदु। आयिरु शुळलहिन्रदु। कोडि कोडि कोडि कोडि योजनै दूरत्तुक् कप्पालुम् अदर्-कप्पालुम्, अदर्कप्पालुम् शिदरिक् किडक्कुम् वानत्तु मीन्ग ळॅल्लाम् ओयादु शुळन्रु कॊण्डेतानिरुक्किन्रन। अॅन्नवे इव्वैयहम् उयिरुडैयदु। वैयहत्तिन् 'उयिरॅये' कार्रॅन् गिरोम्। अवनै मुप्पोदुम् पोर्रि वाळ्त्तुदल् शॅय्हिन्रोम्। 13

कार्रॅप् पुहळ् नम्माल् मुडियादु। अवन् पुहळ् तीरादु। अवनै रिषिहळ् 'प्रत्यक्षम् ब्रह्म' अॅन्रु पोर्रु हिरार्हळ्।

प्राण वायुवैत् तॊळुहिन्रोम्। अवन् नम्मैक् कात्तिडुह। अपाननैत् तॊळु हिन्रोम्। अवन् नन्मैक् काक्क। व्याननैत् तॊळुहिन् रोम्। अवन् नम्मैक् काक्क। समाननैत् तॊळुहिन्रोम्। अवन् नम्मैक् काक्क। कार्रिन शॅयल्हळै यॅल्लाम् परवुहिन्रोम्। उयिरै वणङ्गु हिन्रोम्। उयिर् वाळ्ह। 14

प्राणवान होने के नाते बहनेवाला नाला किस स्थिति में है ? जीवित स्थिति में। गूंगा रहा पवन फूँकने लगा है। उसको क्या हो गया है ? वह जीवित हो गया है ! गाड़ी को बैल खींचता जाता है। वहाँ बैलों का प्राण गाड़ी पर भी चढ़ गया है ! जब गाड़ी चलती है, तब वह जीवन के साथ ही (अनुप्राणित हो) चलती है। पतंग जीवित है ! भाप की गाड़ी 'सप्राण' है। बड़े प्राण ! सभी यंत्र सप्राण हैं। भूमि रूपी लट्टू बहुत जोर के साथ घूमता है। वह अमिट प्राणों वाली है। —वह भू-माता ! इसलिए उसके श्रीशरीर पर का हर पदार्थ 'सप्राण' ही है। सारा विश्व घूमता है। चन्द्र घमता है। सूर्य घूमता है। करोड़-करोड़-करोड़ योजन की दूरी के उस पार, उससे भी दूर, उससे भी दूर उधर बिखरे जो पड़े हैं, वे आकाश के तारे भी बिना रुके, लगातार घूम ही रहे हैं। इसलिए यह सृष्टि प्राणवान है। सृष्टि के प्राणों को ही हम वायु कहते हैं। हम तीनों काल उसकी स्तुति करके जय गाते हैं। १३ पवन की प्रशंसा हमारे लिए साध्य नहीं है। उसका यश क्षय होनेवाला नहीं है (वह अक्षय है)। उसको ऋषिगण 'प्रत्यक्षं ब्रह्म' कहकर उसकी जय गाते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गूंगा शान्त पवन हो जाता है संचालित।
वह भी प्राणों से भर करके होता जीवित ॥
बैल खींचते रहते हैं गाड़ी को अविरत।
प्राणशक्ति बैलों की है गाड़ी में संस्थित ॥
जब गाड़ी चलती है (अविरत गति से पथ पर)।
तो उसमें भी भरे हुए हैं प्राण मनोहर ॥
उड़नेवाला है पतंग प्राणों से जीवित।
और भाप की गाड़ी भी है प्राण-समन्वित ॥
प्राण सभी यंत्रों में भरकर झूम रहा है।
पृथ्वी का लट्टू प्राणों से घूम रहा है ॥
अमिट (अमित) प्राणों वाली है यह भू-माता।
उसके तन का हर पदार्थ सप्राण दिखाता ॥
सारा विश्व-प्रपंच घूमकर झूम रहा है।
चन्द्र घूमता और सूर्य भी घूम रहा है ॥
कोटि-कोटि योजनों दूर दिखलाते बिखरे।
दूर दूर तक फैले जो तारे हैं निखरे ॥
वे तारे भी बिना रुके घूमते निरंतर।
जग-प्रपंच यह प्राणवान है मधुर मनोहर ॥
जग-प्रपंच के प्राणों को हम वायु बताते।
हम तीनों कालों में स्तुति करते, जय गाते ॥ १३ ॥
वायु-प्रशंसा नहीं हमारे लिए साध्य है।
उसके अक्षय यश का वर्णन अति असाध्य है ॥
ऋषिगण कह "प्रत्यक्ष ब्रह्म" उसकी जय गाते।
पूजा करते प्राण-वायु की हम (सुख पाते) ॥
पूजा करते, रक्षा मेरी करे प्राण भी।
पूजा करते, करे सुरक्षा मम अपान भी ॥
पूजा करते, रक्षा मेरी करे व्यान भी।
पूजा करते, करे सुरक्षा मम उदान भी ॥
पूजा करते, करे सुरक्षा मम समान भी।
(पूजित पाँचों प्राण बनायें प्राणवान भी) ॥
सभी वायु के कृत्यों की हम महिमा गाते।
प्राण जियें, प्राणों की पूजा कर सुख पाते ॥ १४ ॥

हम प्राणवायु की पूजा करते हैं। वह हमारी रक्षा करे। हम अपान की पूजा करते हैं। वह हमारी रक्षा करे। हम व्यान की पूजा करते हैं। वह हमारी रक्षा करे। हम उदान की पूजा करते हैं। वह हमारी रक्षा करे। हम समान की पूजा करते हैं। वह हमारी रक्षा करे। हम वायु के सारे कृत्यों की महिमा गाते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उयिरे, निन्नदु पॅरुमै यारुक्कुत् तॅरियुम् ? नी कण् कण्ड तॅय्वम्। ऍल्ला विदिहळुम् निन्नाल् अमैवन्न। ऍल्ला विदिहळुम् निन्नाल् अळिवन्। उयिरे, नी कार्ऱु; नी ती; नी निलम्; नी नीर्; नी वान्नम्। तोन्ऱुम् पॊरुळ्हळिन् तोर्ऱ नॅरि नी। मारुवन्नवर्ऱै मारुविप्पदु निन् तॊळिल्। पऱक्कित्ऱ् पूच्चि, कॊल्लुहित्ऱ पुलि ऊर्हित्ऱ पुळु इन्दप् पूमियिलुळ्ळ ऍण्णर्ऱ उयिर्हळ् ऍण्णर्ऱ उलहङ्गळिलुळ्ळ ऍण्णेयिल्लाद उयिर्तॊहैहळ् इवैयॅल्लाम् निन्नदु विळक्कम्।

मण्णिलुम्, नीरिलुम्, कार्ऱिलुम् निरम्बिक् किडक्कुम् उयिर्हळैक् करुदु हित्ऱोम्। कार्ऱिले ऒरु शदुर अडि वरम्बिल् लक्षक्कणक्कान शिऱिय जन्लुक्कळ् नमदु कण्णुक्कुत् तॅरियामल् वाळ्हित्ऱन्न।

ऒरु पॅरिय जन्तु। अदन् उडलुक्कुळ् पल शिरिय जन्तुक्कळ्। अवर्ऱुळ् अवर्ऱिलुम् जिऱिय पल जन्तुक्कळ्। अवर्ऱुळ् इन्नुम् जिरियवै इङ्ङनम् इव्वैयह मुळुदिलुम् उयिर्हळैप् पॊदित्तु वैत्तिरुक्किऱदु।

महत्— अदनिलुम् पॅरिय महत्—अदनिलुम् पॅरिदु—अदनिलुम् पॅरिदु—

अणु—अदनिलुम् शिऱिय अणु—अदनिलुम् शिऱिदु—अदनिलुम् शिऱिदु—

इरु वळियिलुम् मुडिबिल्लै। इरु पुऱत्तिलुम् अनन्दम्। पुलवर्हळे, कालैयिल् ऍळुन्दवुडन् उयिर्हळै यॅल्लाम् पोर्ऱुवोम्। "नमस्ते वायो, त्वमेव प्रत्यक्षम् ब्रह्मासि।" 15

हम प्राणों की पूजा करते हैं। प्राण जियें। १४ हे प्राण ! तुम्हारी महिमा को कौन जानता है ? तुम आँखों देखे देवता हो ! सारी विधियाँ तुमसे ही स्थिति पाती हैं। सब विधियाँ मिटती हैं, तुम्हारे ही कारण, हे प्राण ! तुम वायु हो, तुम आग हो, तुम पृथ्वी हो, तुम आकाश हो, व्यक्त वस्तुओं का व्यक्तित्व तुम हो। परिवर्तित होनेवाली वस्तुओं को परिवर्तित करना तुम्हारा काम है। उड़नेवाला कीड़ा, संहारक व्याघ्र, रेंगनेवाला कीड़ा, इस दुनिया में रहनेवाले अनगिनत जंतु, अगणित लोकों में रहनेवाली बेशुमार जीव-राशियाँ —ये सब तुम्हारी अभिव्यक्ति हैं पृथ्वी में, जल में और वायु में, जो जीव भरे हैं, हम उनके बारे में विचार करते हैं। हवा में एक वर्गफुट के स्थान में लाखों जन्तु, हमारी दृष्टि में पड़े बिना जीते हैं। एक बड़ा जीव —उसके शरीर के अन्दर उनसे भी छोटे अनेक जीव। उनमें और भी छोटे जीव ! —इस भाँति सृष्टि भर में जीवों को भरकर रखा गया है। महत्, उससे भी बड़ा महत्, उससे भी बृहत्— उससे भी बड़ा महत्—। अणु, उससे भी छोटा अणु, उससे भी छोटा अणु, उससे भी छोटा……। दोनों ओर अन्त नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्राण ! तुम्हारी महिमा जग में कौन जानता ? ।
तुम प्रत्यक्ष देवता, सारा विश्व मानता ।।
विधि-विधान तुमसे ही सारे स्थिति पाते हैं ।
(तुमसे ही उत्पत्ति) तुम्हीं से मिट जाते हैं ।।
अरे प्राण ! (शुभ) वायु तुम्हीं हो तुम्हीं अनल हो ।
तुम नभ-तल हो, और तुम्हीं (बिस्तृत) भू-तल हो ।।
व्यक्त वस्तुओं में व्यक्तित्व (ललाम) तुम्हारा ।
सब पदार्थ परिवर्तित करना काम तुम्हारा ।।
उड़नेवाला कीड़ा और व्याघ्र संहारक ।
और रेंगनेवाला कीड़ा (जीवन-धारक) ।।
इस दुनिया में रहनेवाले जीव अपरिमित ।
विविध-लोक-वासिनी जीव-राशियाँ असीमित ।।
प्राणदेव ! ये सभी तुम्हारी अभिव्यक्ति हैं ।
(तुमसे ही पाते जगती में सभी शक्ति हैं) ।।
पृथ्वी में, जल में, समीर में जीव भरे हैं ।
(कभी-कभी) करते इन पर विचार (गहरे) हैं ।।
एक वर्ग-फुट के भीतर (इस अम्बर-तल में) ।
भरे पड़े हैं लाखों जन्तु वायु-मण्डल में ।।
हैं वे इतने सूक्ष्म, नहीं दिखलाई पड़ते ।
शून्य वायु में चलते-फिरते जीते-मरते ।।
बड़े जीव के भीतर छोटे जीव अपरिमित ।
उससे भी छोटे उसमें हैं जीव असीमित ।।
इस प्रकार जीवों से सब जग भरा पड़ा है ।
महत् तत्त्व है बड़ा दूसरा और बड़ा है ।।
अणु लघु है उससे भी दूजा अणु लघुतर है ।
उससे भी तो लघुतम अणु संप्राप्त इतर है ।।
(है महान् से महत् और अणु से भी अणुतर) ।
दोनों छोर अनन्त, अन्त है नहीं कहीं पर ।।
(वह तो "अणोरणीयान् महतो महीयान्" है ।
इस प्रकार उपनिषद-वाक्य करता बखान है ।।
कवियो ! प्रातः करो सभी जीवों का वन्दन ।
वायु तुम्हीं प्रत्यक्ष ब्रह्म हो तुमको प्रणमन ।। १५ ।।

दोनों ओर अनन्तता है । हे पंडितो (कवियो), प्रातःकाल में उठते ही सभी जीवों को नमस्कार करें । 'नमस्ते वायो, त्वमेव प्रत्यक्षं ब्राह्मासि' । १५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कडल्—4

कडले कार्ऱैप् परप्पुहिन्ऱदु। विरैन्दु शुऴलुम् पूमिप्पन्दिल् पऴ्ऴङ्गळिले तेङ्गियिरुक्कुम् कडल् नीर् अन्दच् चुऴर्चियिले तलैकीऴाहक् कविन्दु तिशैवॆळियिल् एन् शिदरिप् पोय् विडविल्लै ?

पराशक्तियिन् आणै। अवळ् नमदु तलै मीदु कडल् कविऴ्न्दु विडादपडि आदरिक्किराळ्।

अवळ् तिरुनामम् वाऴ्ह। कडल् पॆरिय ऐरि। विशालमान कुऴम्। पॆरुङ्गिणऱु। गिणऱु नम् तलैयिले कविऴ्हिऱदा? अदु पऱ्ऱिये कडलुम् कविऴ विल्लै, पराशक्तियिन् आणै।

अवळ् मण्णिले आकर्षणत् तिऱमैयै निऱुत्तिनाळ्। अदु पॊरुळ्हळै निलै प्पडुत्तु हिन्ऱदु। मलै नमदु तळै मेले पुरळविल्लै। कडल् नमदु तलै मेले कविऴ्विल्लै। ऊर्हळ् कलैन्दु पोहविल्लै। उलहम् ऎल्ला वहैयिलुम् इयल् पॆऱुहिन्ऱदु। इःदॆल्लाम् अवळुडैय तिरुवरुळ्। अवळ् तिरुवरुळै वाऴ्त्तु हिन्ऱोम्। 1

वॆम्मै मिहुन्द पिरदेशङ्गळिलिरुन्दु वॆम्मै कुन्ऱिय पिरदेशङ्गळुक्कुक् कार्ऱु ओडि वरुहिऱदु। अङ्ङनम् ओडि वरुम्पोदु कार्ऱु मेहङ्गळैयुम् ओट्टिक् कॊण्डु वरुहिऱदु। इव्वण्णम् नमक्कु वरुम् मऴै कडर्पारिशङ्गळिलिरुन्दे वरुहिन्ऱदु।

कार्ऱे, उयिर्क् कडलि लिरुन्दु ऎङ्गळुक्कु निऱैय उयिर् मऴै कॊण्डु वा। उन्नक्कुत् तूप दीपङ्गळ् एऱ्ऱि वैक्किरोम्। वरुणा, इन्दिरा, नीविर् वाऴ्ह। इप्पोदु नल्ल मऴै पॆय्युम्बडि अरुळ् पुरिय वेण्डुम्।

ऎङ्गळुडैय पुलङ्गळॆल्लाम् काय्न्दु पोय् विट्टन। शूट्टिन् मिहुदियाल्

समुद्र—४

समुद्र ही हवा को फैलाता है। तेज घूमनेवाली भूमि की गेंद पर गड्ढों में, जो समुद्र-जल है, वह भूमि के घूमते समय औंधा होकर क्यों नहीं छितरता? पराशक्ति की आज्ञा से ही (ऐसा हो जाता है)। वह समुद्र को हमारे सिर पर औंधा होने न देकर हमारी रक्षा करती है। उसका श्रीनाम जिए! समुद्र बड़ी झील है, बिशाल तड़ाग है, बड़ा कुआँ है। क्या कुआँ हमारे सिर पर गिरता है? उसी प्रकार समुद्र भी उलटकर नहीं गिरता। यह पराशक्ति की आज्ञा है। उसने पृथ्वी में आकर्षण शक्ति स्थापित कर दी। वह वस्तुओं को स्थिति देती है। पर्वत हमारे सिर पर नहीं लुढ़कता! समुद्र हमारे सिर पर नहीं गिरता। ग्राम तितर-बितर नहीं हो जाते। सारी सृष्टि सभी तरह से सुस्थिर रह पाती है! यह सब उस (शक्ति) की कृपा है। उसकी श्रीकृपा को हम बधाई देते हैं। 1 अधिक गरम प्रदेशों से कम गरम प्रदेशों की ओर हवा बहती आती है। जब वह इस प्रकार बहती आती है, तब वह हवा मेघों को भी चला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कडल (समुद्र)—४

सागर ही (सर्वत्र) पवन को फैलाता है।
भू-कन्दुक यह तेजी से भ्रमता जाता है॥
इसके गड्ढों-बीच भरा है जो सागर-जल।
गिरकर क्यों न फैलता जब औंधा होता तल ?॥
पराशक्ति की आज्ञा से सब जग संचालित।
वह सागर को थाम बनाती हमको रक्षित॥
गिरने देती नहीं सिन्धु-जल औंधा सिर पर।
पराशक्ति का नाम विश्व में सदा हो अमर॥
सागर बड़ी झील है औ' बिशाल सरवर है।
बड़े कुएँ-सा ये औंधा सबके सिर पर है॥
उलटा होकर भी न सिन्धु सिर पर गिरता है।
पराशक्ति की आज्ञा का पालन करता है॥
उसने पृथ्वी में आकर्षण शक्ति भरी है।
सभी वस्तुओं को स्थिति देती (कृपाकरी) है॥
पर्वत नहीं हमारे सिर पर कभी लुढ़कता।
और सिन्धु भी नहीं हमारे सिर पर गिरता॥
अस्त-व्यस्त होते न ग्राम हैं, सभी व्यवस्थित।
उसकी ही पा शक्ति प्रपंच विश्व का संस्थित॥
महाशक्ति की सभी कृपा है यह सुखदाई।
उसकी अमित कृपा को हम दे रहे बधाई॥ १ ॥
अधिक-गर्म देशों से कुछ कम-गर्म देश पर।
बहती रहती (निखिल विश्व में) वायु निरन्तर॥
अपने साथ वायु मेघों को भी ले जाती।
इस प्रकार वह है वर्षा में जल बरसाती॥
सदा सिन्धु से ही हमको वर्षा मिलती है।
(सागर की ही मानसून बादल भरती है)॥
वायुदेव ! तुम (अमित कृपा जग पर दिखलाओ)।
प्राणवान सिन्धु से प्राणप्रद वर्षा लाओ॥
धूप-दीप आदिक प्रस्तुत हैं तव स्वागत में।
वरुण, इन्द्र तुम जियो, सु-वर्षा करो जगत में॥

लाती है। इस भाँति, हमें जो वर्षा मिलती है वह समुद्र की ओर से ही मिलती है। हे वायो ! प्राणवान समुद्र से हमारे लिए भरपूर प्राणवान वर्षा लाओ। हम तुम्हारे स्वागत में धूप-दीप आदि तैयार रखते हैं। वरुण, इन्द्र, तुम जिओ। हमें वरदान दो—अब अच्छी वर्षा हो। हमारे खेत सब सूख गये हैं। गरमी के आधिक्य के कारण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍङ्गळ् कुळन्दैहळुक्कुम्, कन्ऱु कालिहळुक्कुम् नोय् वरुहिऱदु। अदनै माऱ्ऱि यरुळ वेण्डुम्।

पहल् नेरङ्गळिल् अनल् पॊऱुक्क मुडियविल्लै। मनम् 'हा, हा' ऍन्ऱु पऱक्किऱदु।

पऱवैहळॆल्लाम् वाट्ट मॆय्दि निळलुक्काहप् पॊन्दुहळिल् मऱैन्दु किडक्किन्ऱन। पल दिनङ्गळाह मालै तोऱुम् मेहङ्गळ् बन्दु कूडुहिन्ऱन।

मेह मूट्टत्ताल् काऱ्ऱु निन्ऱु पोय्, ओरिलै कूड अशयामल् पुळुक्कम् कॊडिदाह इरुक्किऱदु। शिऱिदु पॊळुदु कळिन्दबुडन् पॆरिय काऱ्ऱुक्कळ् वन्दु मेहङ्गळै अडित्तुत् तुरत् तिक्कॊण्डु पोहिन्ऱन। इप्पडिप् पल नाट्कळाह एमान्दु पोहिन्ऱोम्।

इन्दिरा, वरुणा, अर्यमा, पगा; मित्तिरा, उङ्गळ् करुणैयैप् पाडुहिऱेन्। ऍङ्गळ् ताबमॆल्लाम् तीरन्दु उलहम् तळैक्कुमाऱु इन्ब मळै पॆय्दल् वेडुण्म्।2

जगत् चित्तिरम्—5

(शिऱु नाडहम्)

मुदऱ् काट्चि

इडम्— मलैयडि वारत्तिल् ऒरु काळि कोयिल्।

नेरम्— नडुप्पहल्।

काक्कैयरशन्— (कोयिलै ऍदिर्त्त तडाहत्तिन् इडैयिलिरुन्द तॆप्प मण्डबत्तिन् उच्चियिल् एऱि उट्कार्न्दु कॊण्डु सूर्यनै

हमारे बच्चों तथा बछड़ों-ढोरों को रोग हो जाता है। उसको बदलने की कृपा करो। दिन के समय, आग-सी जलती है। हम सह नहीं पाते। मन 'हाय-हाय' करके तरसता है। सभी पक्षी म्लान होकर छाँह की खोज में कोटरों में छिपे पड़े हैं। अनेक दिनों से मेघ आकर घुमड़ते हैं। मेघों के आच्छादन से पवन रुक गया है। एक पत्र भी नहीं हिलता। ऊमस भयंकर है! कुछ देर के बाद पवन आते हैं तथा मेघों को भगा ले जाते हैं। इस भाँति, हम बहुत दिन से धोखा खाते रहते हैं। हे इन्द्र, हे वरुण, हे अर्यमा, हे भग, हे मित्र, हम तुम लोगों की करुणा का महिमागान करते हैं। हमारा ताप दूर करने तथा संसार को हरा-भरा करने के लिए सुखमय बारिश करा दें। २

जगत्-चित्र—५

(लघु नाटक)

पहला दृश्य

स्थान— पर्वत की तलहटी में काली का एक मन्दिर।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

खेत सूख सब गये अधिक गर्मी के कारण।
बच्चे, बछड़े, ढोर रोग-पीड़ित हैं सब जन॥
इन सबके रोग को हरो (दुख दूर करो तुम)।
(करते हैं कर-बद्ध प्रार्थना) कृपा करो तुम॥
दिन में जलती आग, नहीं हम हैं सह पाते।
मन बिलखाता हाय-हाय करते चिल्लाते॥
मुरझाये पक्षी कोटर में छिपे पड़े हैं।
नभ-मंडल में मेघ घुमड़ते बड़े-बड़े हैं॥
मेघों के घिरने से नहीं पवन चलता है।
उमस भयंकर व्याप्त न पत्ता तक हिलता है॥
जरा देर के बाद वायु आता हहराता।
अपने साथ भगा वह मेघों को ले जाता॥
इस प्रकार हम बहुत दिनों से धोखा खाते।
इसीलिए हम आज सभी यह विनय सुनाते॥
इन्द्र! वरुण! अर्यमा! मित्र! भग! तुम्हें बुलाते।
तुम लोगों की करुणा के हम गायन गाते॥
सभी देव हम पर करुणा की दृष्टि फिरायें।
(इस तपती धरती पर) सुखमय जल बरसायें॥
ताप हमारा हरो हृदय शीतल सिहरा हो।
यह सारा संसार (सुखी हो) हरा-भरा हो॥ २॥

जगत-चित्र—५

(छोटा नाटक)

पहला दृश्य

जगत-चित्र छोटा नाटक है उसका पहला दृश्य (सुघर)।
गिरि-तल पर काली का मंदिर समय दोपहर का (सुंदर)॥
कागराज मन्दिर के सम्मुख संस्थित है एक सरोवर (अतिसुन्दर)।
उस तडाग में तैर रहा है एक "तैप्प मंडप" (मनहर)॥
उस मंडप के उच्च शिखर पर बैठा एक काक खगवर।
बोल रहा है सूर्यदेव के सम्मुख वह अपना मुख कर॥

समय-- मध्याह्न।
कागराज-- (मन्दिर के सामने, तालाब के बीच के तेप्प-मंडपम् के शिखर पर बैठा हुआ सूर्य को लक्ष्य करके कहता है।)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नोक्किच् चॊल्हिऱान्:—)

"ऍङ्गो वाळ्" !

नील मलैहळ् निरम्ब अळहियन। वानम् अळहियदु। वान् वॆळि इनिदु। वान् वॆळियै मरुविय निन्नॊळि इनिय वऱ्ऱळॆल्लाम् इनिदु।

'ऍङ्गे,' ऍङ्गो ऍनवुम्, अन्ऱि किलुकिलु किलुकिलु ऍनवुम् 'किक्की, किक्की ऍनवुम्, केक्क केक्क— केट्क केट्क' ऍनबुम् कॆक्कॆक्के, कुक्कुक् कुक्कुक् कुक्कुक् कुक्कुक् कुक्कुक् कुक्कुक् कूवे' ऍन्ऱुम्, 'कीच्, कीच् कीच् कीच्, किशु किशु किशु कीच्' ऍन्ऱुम् 'रङ्ग रङ्ग' —ऍन्ऱुम् पल्लायिर वहैयि निल् इशैक्कुम् कुयिल्हळुम् किळिहळुम् कुलवु पल जादिप् पुट्कळुम् इनिय पूङ्गुर लुडैयन।

ऍनिनुम् इत्तनै यिन्बत्तिनिडैये उयिर्क्कुलत्तिन् उळत्ते मात्तिरम् इन्ब मुऱविल्लै। इःदॆन्ने !— काक्का ! काक्का ! 'ऍङ्गो वाळ्।' इदैक् केट्टु मऱ्ऱ पक्पि हळॆल्लाम् कत्तुहिन्ऱन— आम्, आम् आमाम् आमाम् आमामडा, आमामडा।

आमाम्। ऍङ्गो वाळ्, ऍङ्गो वाळ् ! नन्ऱाह उरैत्ताय्। मनन्दान् शत्तुरु। वेरु नमक्कुप् पहैये किडैयादु। मनन्दान् नमक्कुळ्ळेये उट्पहैया इरुन्दु कॊण्डु नम्मै वेररुक् किऱदु। अडुत्तुक् केडुक्किऱदु।

मनन्दान् पहै। अदैक् कॊत्तुवोम् वारुङ्गळ्। अदैक् किळिप्पोम् वारुङ्गळ्। अदैक् किळिप्पोम् वारुङ्गळ्। अदै वेट्टै याडुवोम् वारुङ्गळ् !"

[दक्षिण के मन्दिरों में तालाब के जल पर तेप्पम यानी सुसज्जित बेड़ा-सा तैरने वाला मंडप बनाकर उस पर उत्सव मूर्ति को स्थापित करके झाँकी दिखाने की प्रथा है। उस तालाब के बीच में एक छोटा-सा मन्दिर के समान, मंडप बना रहता है। मूर्ति को उस मंडप में रखकर भक्तजनों को दर्शन करने का अवसर दिया जाता है। उसको 'तेप्प-मंडपम्' कहते हैं।]

कहीं (भी) रहो। (कौआ जो 'काँव-काँव' करता है, उसकी ध्वनि 'ऍंगोवाळ्' कहती-सी रहती है —यह कल्पना की गयी है। उसका अर्थ होता है —चाहो, कहीं भी जीवित रहो। या मेरे राजा, जीते रहो)। नीले पर्वत बहुत ही सुन्दर हैं। आकाश सुन्दर है। अन्तरिक्ष मधुर है। अन्तरिक्ष से मिली रहनेवाली प्रभा मधुर पदार्थों में सबसे अधिक मधुर है। 'ऍंगो, ऍंगो' और 'किलु, किलु'; 'किक्की, किक्की', 'केक्क, केक्क' 'केट्क, केट्क', 'केक्केक्के, कुक्कुक्, कुक्कुक्, कुक्कुक्, कुक्कुक्, कुक्कुक्'; 'चीच् कीच् कीच् कीच्'— 'किशु किशु किशु कीच्'— ऐसा और 'रंग, रंगा' —ऐसा अनेक सहस्र प्रकारों से बोलनेवाले विविध पक्षी हैं, जैसे कोयलें व तोते। उनके मधुर मृदु स्वर हैं। तो भी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"अँगोवाल" बोलकर कहता (उसका तुम यह अर्थ गहो)।
मेरे राजा कहीं रहो तुम जीते रहो (प्रसन्न रहो)॥
नीले पर्वत अति सुंदर हैं नभ-तल भी अति सुन्दर है।
अंतरिक्ष है मधुर, प्रभा भी उसकी मधुर-मधुरतर है॥
"अँङ्गो अँङ्गो", "किलुकिलु किलुकुलु", "किक्की किक्की"
ये खग-स्वर।
"केक्क केक्क" औ' "केट्क केट्क", कैक् "कैक्ले" ये सब
शब्द मुखर॥
"कुक्कुक्-कुक्कुक् कुक्कुक्-कुक्कुक् कुक्कुक्कू" की ध्वनि
सुमधुर।
"कीच् कीच्" औ' "कीच् कीच्", "किशु किशु किशु कीच्"
नाद मनहर॥
"रँग रंगा" आदिक अनेक विधियों से मधुर-मधुर मृदु-स्वर।
कोयल, तोते आदिक अगणित पक्षी बोल रहे सुन्दर॥
है सुख का साम्राज्य राजता इस विस्तृत भूमंडल पर।
केवल मानव के ही मन में सुख-संतोष नहीं लव भर॥
काक कह रहा काँव-काँव का बोल-बोलकर स्वर अबिरत।
कहीं रहो तुम चिरजीवी हो (सुखी प्रसन्न रहो संतत)॥

सब पक्षी यह सुनकर के सारे पक्षी एक साथ चिल्लाते हैं।
"हाँ हाँ हाँ हाँ, अरे अरे हाँ, अरे अरे हाँ" गाते हैं॥
जीते रहो कहीं भी हो तुम, यह तुमने है खूब कहा।
मन ही तो है शत्रु हमारा, और न कोई शत्रु रहा॥
मन आन्तरिक शत्रु है, मेरी जड़ें खोदता रहता है।
आस्तीन का साँप बना है (चुपके-चुपके डसता है)॥
उस वैरी मन को नोचेंगे उसके चोंचें मारेंगे।
आओ उसे चोट दे करके, कर शिकार संहारेंगे॥

इतने सुख के साम्राज्य के बीच केवल जीव-राशि के मन में सुख नहीं रहता। यह क्यों है? काँव-काँव-- कहीं (भी) जीते रहो!

[यह सुनकर अन्य पक्षी चिल्लाते हैं।]

हाँ, हाँ! हाँ हाँ! अरे हाँ! अरे हाँ! हाँ! कहीं जीते रहो, कहीं जीते रहो। खूब कहा। मन ही शत्रु है, हमारा कोई और शत्रु नहीं है। मन ही हमारा अन्तश्शत्रु बना रहकर हमारी जड़ ही उखाड़ डालता है! वह आस्तीन का साँप है! मन ही शत्रु है। उस पर चोंच मारेंगे। आओ, उसको नोचें। आओ, उसको चीर दें। आओ, उसका शिकार करें।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इरण्डाम् काट्चि

वानुलहम्— इन्दिर सबै ।
देवेन्दिरन् कॉलु वीऱ्ऱिरुक् किऱान् ।

देव सेवकन्— देव देवा !
इन्दिरन्— शॉल् ।
देव सेवकन्— वॅळिये नारदर् वन्दु कात्तिरुक्किऱार् । तङ्गळैत् तरिशिक्क वेण्डुमॅन्ऱु शॉल्लुहिऱार् ।
इन्दिरन्— वरुह ।

(नारदर् पाडिक्कॉण्डे वरुहिऱार् ।)

"नारायण, नारायण, हरि, हरि ! नारायण, नारायण !"

इन्— नारदरे नारायणन् ॲङ्गिरुक्किऱान् ?
ना— नी अवनैप् पार्त्तदु किडैया दो ?
इन्— किडैयादु ।
ना— सर्व पूदङ्गळिलुम् इरुक्किऱान् ।
इन्— नरहत्तिलिरुक्किऱाना ?
ना— आम् ।
इन्— तुन्बत्ति लिरुक्किऱाना ?
ना— आम्
इन्— मरणत्ति लिरुक्किऱाना ?
ना— आम्
इन्— उङ्गळुडैय सर्व नारायण सिद्दान्दत्तिन् तुणिवु यादु ?
ना— ॲल्ला वस्तुक्कळुम्, ॲल्ला लोहङ्गळुम्, ॲल्ला निलैमैहळुम् अल्लात् तन्मैहळुम्, ॲल्ला शक्तिहळुम्, ॲल्ला रुबङ्गळुम् ॲल्लाम् ऑन्ऱुक्कॉन्ऱु समानम् ।
इन्— नीरुम् कळुदैयुम् समानन्दाना ?

दूसरा दृश्य

स्थान-- स्वर्गलोक, इन्द्र-सभा ।

(देवेन्द्र दरबार में विराजमान है ।)

देव-भृत्य-- देवाधिदेव !
इन्द्र-- कहो ।
देव-भृत्य-- बाहर नारद पधारे हैं, प्रतीक्षा कर रहे हैं । आपके दर्शन करना चाहते हैं ।
इन्द्र-- पधारें ।

(नारद गाते हुए आ रहे हैं-- नारायण, नारायण, नारायण, हरि, हरि···)

इन्द्र-- हे नारद ! नारायण कहाँ हैं ?
नारद-- क्या तुमने उन्हें नहीं देखा है ?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दूसरा दृश्य

स्वर्ग-लोक में इन्द्र-सभा का दृश्य दूसरा राज रहा।
देव-सभा के बीच (विलोको) है देवेन्द्र विराज रहा॥

देव-भृत्य — देव-भृत्य आकर के बोला, हे देवाधिदेव ! प्रभुवर !
इन्द्र — कहा इन्द्र ने "जो कहना है बोलो तुम निर्भय होकर॥"
देव-भृत्य — देव-भृत्य बोला— "मुनि नारद आज पधारे हैं, श्रीमन् ! ।
हैं कर रहे प्रतीक्षा बाहर किया चाहते हैं दर्शन॥"
इन्द्र — इन्द्रदेव ने कहा— "पधारें", यह सुनकर नारद मुनिवर।
नारायण-नारायणं, हरि-हरि आये गाते गान मधुर॥
इन्द्र — इन्द्रदेव ने पूछा, "नारद ! कहाँ बसे हैं नारायण ?"
नारद — नारद ने पूछा— "क्या तुमने उनका नहीं किया दर्शन ?"
इन्द्र — इन्द्रदेव बोले— "नारायण का न किया हमने दर्शन।"
नारद — नारद बोले— "सभी प्राणियों में बसते हैं नारायण।"
इन्द्र — इन्द्रदेव ने पूछा— "क्या हैं नरक-कुंड में नारायण ?"
नारद — बोले नारद— "नरक-कुंड में भी नारायण का आसन।"
इन्द्र — इन्द्रदेव ने पूछा— "क्या दुख में भी नारायण का वास ?"
नारद — बोले नारद— "नारायण का दुख में भी है नियत निवास।"
इन्द्र — इन्द्रदेव ने पूछा— "क्या वह बसे मरण के भी भीतर ?"
नारद — बोले नारद— "नारायण हैं बसे मरण के भी अन्दर।"
इन्द्र — इन्द्रदेव ने पूछा— "सर्वं नारायणम्" बखान रहे।
यह कैसा सिद्धान्त ? भला क्या निर्णय इसका जान रहे ?"
नारद — नारद बोले— "सभी वस्तुएँ, सभी शक्तियाँ, सभी प्रमान।
सभी लोक औ' सारी स्थितियाँ, सभी परस्पर रूप समान॥"
इन्द्र — इन्द्रदेव बोले— "नारद ! क्या तुम औ' गर्दभ एक समान ?"

इन्द्र-- नहीं।
नारद-- सभी भूतों में हैं।
इन्द्र-- नरक में हैं ?
नारद-- जी हाँ, हैं।
इन्द्र-- दुख में रहते हैं ?
नारद-- हाँ, हाँ।
इन्द्र-- क्या मरण में हैं ?
नारद-- हाँ, हैं।
इन्द्र-- तुम्हारे 'सर्वनारायण' सिद्धान्त का निर्णय क्या है ?
नारद-- सभी वस्तुएँ, सभी लोक, सभी स्थितियाँ, सभी प्रकार, सभी शक्तियाँ, सभी रूप आपस में समान हैं।
इन्द्र-- तुम और गधा --दोनों समान हैं ?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ना— आम्
इन्— अमिरुत पानमुम् विष पानमुम् समानमा ?
ना— आम्
इन्— सादुवुम् दुष्टनुम् समानमा ?
ना— आमाम्
इन्— असुरर्हळुम् देवर्हळुम् समानमा ?
ना— आम्
इन्— ज्ञानमुम् अज्ञानमुम् समानमा ?
ना— आम् ।
इन्— सुहमुम् दुक्कमुम् समानमा ?
ना— आम्
इन्— अदैप्पडि
ना— सर्वम् विष्णुमयम् जगत्—
(पाडुहिरार्) नारायण नारायण, नारायण नारायण ।

मूनरम् काट्चि

इडम्— मण्णुल हत्तिल् ऒरु मलैयडि वारत्तिल्— ऒरु काळि
कोयिलुक् कॆदिरे शोलॆयिल्
किळि पाडुहिरदु: दैर्या, दैर्या दैर्या
तन् मनप् पहैयैक् कॊन्रु तमो कुणत्तै वॆन्रु
उळ्ळक् कवलै यरुत्तु ऊक्कन् दोळिर् पॊङ्गत्तु
मनदिल् महिळ्च्चि कॊण्डु मयक्क मॆल्लाम् विण्डु
सन्दोषत्तैप् पूण्डु दैर्या, हुक्कुम् हुक्कुम्;
हुक्कुम् हुक्कुम् आमडा तोळा !
आमामडा ऎङ्गो वा ऎङ्गो वा
दैर्या दैर्या, दैर्या ।

नारद-- हाँ ।
इन्द्र-- अमृत-पान, विष-पान --दोनों समान हैं ?
नारद-- हाँ ।
इन्द्र-- साधु तथा दुष्ट दोनों समान हैं ?
नारद— हाँ !
इन्द्र-- क्या असुर और देव समान हैं ?
नारद-- हाँ ।
इन्द्र-- क्या ज्ञान और अज्ञान समान हैं ?
नारद-- हाँ ।
इन्द्र-- सुख और दुख समान हैं ?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नारद बोले नारद— "निश्चयपूर्वक हम औ' रासभ एक समान।"
इन्द्र इन्द्रदेव बोले— "क्या सम हैं सुधा-पान औ विष का पान ?"
नारद बोले नारद— "सुधा-पान विष-पान उभय हैं एक समान।"
इन्द्र बोले इन्द्रदेव— "बतलाओ क्या सम हैं सज्जन-दुर्जन ?"
नारद बोले नारद— "दोनों सम हैं सदा साधुजन औ, खल-जन।"
इन्द्र बोले इन्द्र— "असुर-सुर दोनों ये भी क्या हैं एक समान ?"
नारद बोले नारद— "सुर-असुरों को एक-समान गिनो मतिमान !"
इन्द्र बोले इन्द्र— "समान-रूप हैं क्या ये ज्ञान और अज्ञान ?"
नारद बोले नारद— "ज्ञान और अज्ञान उभय हैं एक-समान।"
इन्द्र बोले इन्द्रदेव— "क्या सुख-दुख दोनों एक-समान कहो ?"
नारद बोले नारद— "सुख-दुख दोनों मन में एक-समान गहो।"
इन्द्र इन्द्रदेव बोले— "है कैसा यह आश्चर्य-जनक वृत्तान्त ?"
नारद नारद बोले— " 'सारा जग हरि-रूप' भजो नारायण शान्त।"

तीसरा दृश्य

पर्वत की तलहटी मनोरम, शोभित सुन्दर भू-तल पर।
काली-मंदिर वहाँ बना है सम्मुख है उपवन मनहर॥
तोता (गाता है) दृश्य तीसरा "दैर्या दैर्या दैर्या" कह तोता गाता।
अपने मन के वैरी को जीतो, मारो (यह बतलाता)॥
चित की चिंता काट तमोगुण पर (सत्वर) जय प्राप्त करो।
मन में मोद, भुजाओं में तुम (सदा प्रबल) उत्साह भरो॥
सभी भ्रन्तियों को सुलझालो निज मन में संतोष धरो।
"दैर्या हुक्कुं हुक्कुं" तुम जाओ, जहाँ कहीं विचरो॥
"दैर्या दैर्या दैर्या" अविरत रटता तोता (मतवाला)।
मानो कहता है वह सबसे सुख पाता धीरज वाला॥

नारद— हाँ।
इन्द्र— सो कैसे ?
नारद— सर्वम् विष्णुमयं जगत्। (गाते हैं— नारायण, नारायण, नारायण, नारायण···)

तीसरा दृश्य

स्थान— भूलोक के किसी पर्वत की तराई में काली के मन्दिर के सामने, उपवन में। तोता गाता है— दैर्या दैर्या दैर्या (शुक की बोली का कुछ स्पष्ट रूप बिलाने का प्रयास यहाँ हुआ है।) अपने मन के शत्रु को मारो, तमोगुण को जीतो, चित्त की चिन्ता को काटो, भुजाओं में स्पन्दन ला दो, मन में मोद अनुभव कर लो, सब भ्रान्ति को छोड़ दो। सन्तोष को धारण करो— दैर्या हुक्कुं हुक्कुं। हुक्कुं, हाँ रे मित्र, हाँ, रे ! कहीं आओ, कहीं आओ (उसकी बोली का कल्पित अर्थ)। दैर्या दैर्या दैर्या (धीरजवाला)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुयिल्हळ्— सबाष् ! सबाष् ! सबाष् !

कुरुविहळ्— डिर् र् र् र् र्, डिर् र्र्...

नाहणवाय्— 'जीव, जीव जीव जीव जीव जीव'

कुरुविहळ्— शिव शिव, शिव, शिव शिव शिवा, शिव शिवा ।

काक्कै— अँङ्गो वाळ् ! अँङ्गो वाळ् ।

किळि— केळीर् तोळर्हळे ! इव्वुलहत्तिल् तर्कॉलैयैक् काट्टिलुम् पॅरिय कुर्रम् वेरिल्लै ! तन्नै तान् मनत्ताल् तुन्बुरुत्तिक् कॉळ्ववैक् काट्टिलुम् पॅरिय पेदैमै वेरिल्लै ।

काक्कै— अक्का, अक्का— काबु ! काबु !

कुरुवि— कॉट्टडा, कॉट्टडा, कॉट्टडा !

किळि— हुक्कुक्कू !— कादलैक् काट्टिलुम् वेरु इन्बमिल्लै ।

अणिर् पिळ्ळै— हुक्कुम्, हुक्कुम्, हुक्कुम्, हुक्कुम् !—

पशुमाडु— वॅयिलैप्पोल् अळहान पदार्त्तम् वेरिल्लै ।

अणिल्— पशुवे ! इन्द मिह अळहिय वयिलिल् अँन् कण्णुक्कुप् पुलप्पडुम् वस्तुक्कळुक्कुळ्ळेये उन् कण्णैप् पोल् अळहिय पॅरुळ् पिरि दॉन्रिल्लै ।

नाहणवाय्— डुबुक् ! पाट्टैक् काट्टिलुम् रसमान तॉळिल् वेरिल्लै ।

अँरुमै माडु— पक्षि जादिहळुक्कुळ्ळ सन्दोषमुम् जीव आरवारमुम् आट्ट ओट्टमुम्, इनिय कुरलुम् मिरुह जादियारुक्कुम् मनुष्य जादियारुक्कुम् इल्लैये ? इवन् कारणम् यादु ?

नाहणवाय्— डुबुक् ! वॅयिल् कार्र्, ऑळि इवर्रिन् तोण्डुदल् मिरुह मनिदर्हळैक् काट्टिलुम् अँङ्गळक् कदिहम् । अँङ्गळुक्कु

कोयलें-- शाबाश ! शाबाश ! शाबाश !

चिड़ियाँ-- डिर्र्र्.....डिर्.....

नाहणवाय (एक जाति का पक्षी-- सारिका ?) --जीव, जीव, जीव, जीव, जीव, जीव ।

कुरुविहळ्-- शिव, शिव, शिव, शिव; शिवा, शिवा, शिवा ।

काग-- अँगो वाळ्, अँगो वाळ् (कहीं जीते रहो । कहीं जीते रहो)

तोता-- सुनो मित्रो ! इस जगत में आत्महत्या से बढ़कर कोई बड़ा अपराध नहीं है । अपने आपको अपने मन से दुखी करने से बढ़कर कोई बड़ी मूर्खता नहीं है ।

काग-- अक्का, अक्का (बहन, बहन), काबु-काबु (कौए की बोली)

चिड़िया— कोट्टडा ! कोट्टडा ! कोट्टडा !

तोता— हुक्कुक्कु ! (प्रेम से बढ़कर कोई बड़ा सुख नहीं है !)

गिलहरी-- हुक्कुम्, हुक्कुम्, हुक्कुम्, हुक्कुम् !

गाय-- धूप के समान सुन्दर वस्तु और नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कोयलें शाबाशी दी सभी कोयलों ने सुन तोते का संवाद।
चिड़ियाँ सभी पक्षियों ने दुहराया "डिर्र डिर्र डिर् डिर्" कर नाद ॥
नाहणवाय् (मैना) "जीव जीव" कहता है देखो सुंदर पक्षी नाहणवाय्।
कुरुविहळ् कहता है कुरुविहळ् "शिवा-शिव, शिव-शिव शिव-शिव
(नमः शिवाय) ॥
काग "अेङ्गोबाल" काक कहता है उसका यह तुम अर्थ गहो।
जीते रहो सदा तुम मनुजो! जग में चाहे जहाँ रहो ॥
तोता तोता बोला— "सुनो मित्रवर! इस (विशाल) जगती-तल पर।
है अपराध आत्महत्या से कहीं नहीं कोई बढ़कर ॥
और स्वयं अपने ही मन को दुखी बनाने से बढ़कर।
कोई नहीं मूर्खता मित्रो! है इस विस्तृत भू-तल पर ॥
काग कौवा बोला—"अक्का अक्का" आशय जिसका "बहन बहन"।
चिड़िया चिड़िया ने—"कोट्टडा कोट्टडा" कहकर किया कलित कूजन ॥
तोता तोता बोला "हुक् कुक्कू" (यह अपने मुख से शब्द सुघर)।
जिसका अर्थ "नहीं सुख कोई कहीं प्रेम से है बढ़कर ॥"
गिलहरी तभी गिलहरी 'हुक्कुम्-हुक्कुम् हुक्कुम्-हुक्कुम्" बोली स्वर।
गाय गैया बोली— "वस्तु न कोई कहीं धूप के सम सुन्दर ॥"
गिलहरी तभी गिलहरी बोली— "सुन री! गैया! (मन में धीरज धर)।
इस सुहावनी धूप-बीच जो चीज़ें हैं दिखतीं सुन्दर ॥
उन चीज़ों में मेरी गैया! तेरे नयनों से बढ़कर।
मुझे नहीं लगता इस जग में कोई भी पदार्थ सुन्दर ॥"
नाहणवाय बोली मैना— "डुबुक् डुबुक्" स्वर कहते जिसको नाहणवाय।
मधुर-गीत से बढ़कर जग में कोई नहीं सरस व्यवसाय ॥
भैंसा बोला भैंसा— "पक्षि-जाति में जैसी जीवन की हलचल।
मधुर कंठ है, दौड़-धूप है, है जैसा संतोष सरल ॥
वैसा सुख-संतोष नहीं पशुओं में मनुजों में पाते।
क्या है इसका कारण? बोले हम कुछ भी न समझ पाते ॥
मैना बोली मैना— "डुबुक् डुबुक्" कह धूप, प्रकाश, हवा का स्पर्श।
हमको होता पशु औ' मानव से भी बढ़कर सुलभ सहर्ष ॥

गिलहरी— री गैया! इस सुन्दर धूप में मेरी दृष्टि में जो चीजें आती हैं, उनमें तुम्हारी आँखों के समान सुन्दर पदार्थ दूसरा नहीं है।
नाहळवाय्— डुबुक्! गीत से अधिक सरस कोई धन्धा नहीं है।
भैंसा— पक्षी जाति में जो सन्तोष, जीवट का कोलाहल, दौड़-धूप, सुन्दर कंठ है, वह पशु जाति तथा मानव जाति में नहीं है। इसका क्या कारण है?
नाहळवाय्— डुबुक्! धूप, हवा, प्रकाश आदि का स्पर्श पशुओं और मानवों से हमें अधिक प्राप्त होता है! हमारा शरीर छोटा है। इसलिए खुराक भी कम लगता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उडम्बु शिरिदु। आदलाल् तोलि शॊऱ्पम्। अदैच् चिरिदु चिरिदाह नॆडु नेरम् तिन्गिऱोम्। आदलाल् अॆङ्गळुक्कु उणविन्बम् अदिहम्। मिरुह मलिद जादियार् हळुक्कुळ् इरुप्पदैक् काट्टिलुम् अॆङ्ग ळुक्कुळ्ळे कादलिन्बम् अदिहम्। आदलाल् नाङ्गळ् अदिह सन्दोषमुम् पाट्टुम् नहैप्पुम् कॊञ्जु मॊळिहळुमाहक् कालङ् गळिक्किऱोम्। इरुन्दालुम् किळियरुम् शॊल्लियदु पोल् कालन्तुक्कुत् तूदनाहिय मनक्कुऱै यॆन्नुम् पेय् अॆङ्गळ् कुलत्तैयुम् अळित्तु विडत्तान् शॆय्हिऱदु। अदऱ्कु निवारणम् तेडवेण्डुम्। कवलैयैक् कॊल्लुवोम् वारुङ्गळ्। अतिरुप्तियैक् कॊत्तुवोम्; कॊल्लुवोम्।

वऱ्ऱ पक्षिहळ्— वारुङ्गळ्, वारुङ्गळ्, वारुङ्गळ्। तुयरत्तै अळिप्पोम्, कवलयैप् पळिप्पोम्, महिळ्वोम्, महिळ्वोम् महिळ्वोम्।

नान्गाम् काट्चि

इडम्— कडऱ्करै।

नेरम्— नळ्ळिरवु; मुऴु निलाप् पॊऴुदु।

इरण्डु पाम्बुहळ् ऒरु पालत् तडियै इरुट् पुदरिनिन्ऱुम् वॆळिप्पट्टु निला वीशि ऒळिरुम् मणल् मीदु वरुहिन्ऱन।

आण् पाम्बु— उन्नुडन् कूडि वाळ्वदिल् अॆनक्किन् बमिल्लै। उन्नाल् अॆनदु वाळ्नाळ् विषमयमाहिऱदु। उन्नाले तान् अॆन् मनम् अॆप्पोदुम् अनलिल् पट्ट पुळुवैप्पोल् तुडित्तुक् कॊण्डिरुक्किऱदु।

पॆण् पाम्बु— उन्नुडन् कूडि वाळ्वदिल् अॆनक् किन्बमिल्लै। उन्नाल् अॆनदु वाळ् नाळ् नरह माहिऱदु। उन्नाल् अॆन् मनम् तळलिऱ पट्ट पुळुवैप्पोल् इडैयऱादु तुडिक्किऱदु।

है। उसे भी धीरे-धीरे हम बहुत देर तक खाते रहते हैं। इसलिए हमें भोजन-सुख अधिक होता है। पशु-जाति और मानव-जाति से हममें प्रेम-सुख भी अधिक होता है। इसीलिए हम अधिक आनन्द, गीत, हँसी, दुलार की वाणी आदि के साथ जीवन बिताते हैं। तो भी शुकराज के कहे अनुसार काल (यम) का जो दूत है, वह चिन्ता नामक भूत हमारे कुल का भी नाश करता ही है! उसका निवारण ढूँढ़ लेना चाहिए। चिन्ता का वध करें, आओ! अतृप्ति पर चोंच मारें। उसका वध कर दें, आओ!

अन्य पक्षी— आओ, आओ, आओ! दुख को मिटा दें। चिन्ता का परिहास करें। आनन्दित रहें, आनन्दित रहें, मुदित रहें।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हम लोगों का तन छोटा है इसीलिए कम है भोजन।
धीरे-धीरे बहुत देर तक करते रहते हम भक्षण॥
इसीलिए भोजन-सुख मिलता तुम दोनों से है बढ़कर।
और प्रेम-सुख भी तुम दोनों से बढ़कर मिलता मनहर॥
इसीलिए हम अपना जीवन अति-सुख-सहित बिताते हैं।
करते हैं दुलार की वाणी (प्रतिपल) हँसते गाते हैं॥
तो भी शुक-कथनानुसार ही महा भयंकर यम का दूत।
खग-कुल को भी ग्रसता रहता उसकी चिन्ता नामक भूत॥
उसे हटाने का उपाय हम सोचें, उसको दूर करें।
चोंचें मार अतृप्ति भगा, चिन्ता को चकनाचूर करें"॥

अन्य पक्षी बोल उठे मिलकर सब पक्षी— "आओ आओ (धैर्य गहें)।
दुःख मिटायें, चिन्ता काटें, आनन्दित हों, मुदित रहें"॥

चौथा दृश्य

चौथा दृश्य, समुद्र-किनारा, आधी रात, चाँदनी है।
पुल के नीचे एक अँधेरी झाड़ी घनी सुहानी है॥
उससे निकला साँप-साँपिनी का जोड़ा अतिशय विषधर।
रेंग रहा वह, रसिक चाँदनी की प्रकाशमय बालू पर॥

नर साँप बोला साँप— "तुम्हारे संग रह सुख न मुझे मिलता निश्चय।
अरे! तुम्हारे कारण मेरा जीवन हो जाता विषमय॥
और तुम्हारे ही कारण है सदा तड़पता मेरा मन।
तड़प रहा हो प्रबल आग में जैसे किसी कीट का तन"॥

साँपिन बोली साँपिन— "अरे! तुम्हारे ही कारण तो निःसंशय।
मेरा यह सारा जीवन है नरक-समान हुआ दुखमय॥
अरे! तुम्हारे ही कारण है सदा तड़पता मेरा मन।
तड़प रहा हो प्रबल आग में जैसे किसी कीट का तन"॥

चौथा दृश्य

स्थान— समुद्र-तट।

समय— आधी रात! सम्पूर्ण चाँदनी की रात! दो साँप पुल के नीचे अंधकार-पूर्ण झाड़ी से बाहर निकलकर चाँदनी-सी प्रकाशमय बालू पर रेंगते हुए आते हैं।

नर साँप— तुम्हारे साथ रहकर जीने में मुझे सुख नहीं मिलता। तुम्हारे कारण मेरे जीवन के दिन विषैले हो जाते हैं। तुम्हारे ही कारण मेरा मन हमेशा आग में गिरे कीड़े के समान तड़पता रहता है!

साँपिन— तुम्हारे साथ रहकर जीवन बिताने में मुझे कोई सुख नहीं है। तुम्हारे कारण मेरा जीवन नरक हो रहा है। तुम्हारी वजह से मेरा मन आग में पड़े कीड़े के समान निरन्तर तड़पता रहता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आण् पाम्बु— नान् उन्नैप् पहैक्किरेन् ।
पॆण् पाम्बु— नान् उन्नै विरोदिक्किरेन् ।
आण् पाम्बु— नान् उन्नैक् कॊल्लप् पोहिरेन् ।
पॆण् पाम्बु— नान् उन्नैक् कॊल्लप् पोहिरेन् ।
ऒन्ऱै यॊन्ऱु कडित्तु इरण्डु पाम्बुहळुम् मडिहिन्ऱन ।

ऐन्दाम् काट्चि

कडङ्करै

देवदत्तन् ऎन्ऱ मनिद इळैञन् : निला इनियदु । नील वान् इनियदु । तॆण्डिरैक् कडलिन् शीर् ऒलि इनियदु । उलहम् नल्लदु । कडवुळ् ऒळिप्पॊरुळ् । अऱिवु कडवुळ् । अदिनिलै मोक्षम् ।

विडुदलैप् पट्टेन् । अशुररै वॆन्ऱेन् । नाने कडवुळ् । कडवुळे नान् । कादलिन्बत्तार् कडवुळ् निलै पॆऱ्ऱेन् ।

विडुदलै—6

(नाडहम्)

अङ्गम्— 1] [काट्चि— 1

इडम्— वानुलहम् ।

कालम्— कलि मुडिवु ।

पात्तिरङ्गळ्— इन्दिरन्, वायु, अग्नि, ऒळि (सूरियन्), सोमन्, इरट्टैयर् (अशुविनि देवर्) मरुत्तुक्कळ्, वसुक्कळ्, त्वष्टा, विशुवे देवर् मुदलायिनोर् ।

साँप-- मैं तुमसे शत्रुता करता हूँ ।
साँपिन-- मैं तुम्हारा विरोध करती हूँ ।
साँप-- मैं तुमको मारनेवाला हूँ ।
साँपिन-- मैं तुमको मारनेवाली हूँ ।
(आपस में एक-दूसरे को काटते हैं और दोनों मर जाते हैं ।)

पाँचवाँ दृश्य

स्थान— समुद्र-तट ।
देवदत्त नामक तरुण मानव-- चाँदनी मधुर है । नीला आसमान मधुर है ! स्वच्छ लहरों वाले समुद्र का सुस्वर घोष मधुर है । संसार अच्छा है । ईश्वर प्रकाशमय वस्तु है । बुद्धि ईश्वर है । उसका पद मोक्ष है ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

साँप बोला साँप— "अरी साँपिन ! मैं तुझे समझता हूँ दुश्मन" ।
साँपिन बोली साँपिन— "मैं भी तुझसे रखती हूँ विरोध भीषण" ।।
साँप बोला साँप— "अरी ! ओ साँपिन ! मैं अब तुझको लूँगा डस" ।
साँपिन बोली साँपिन— "मैं भी तुझको डस लूँगी (मत अरे ! विहँस) ।।
इस प्रकार कह एक-दूसरे को वे दोनों डसते हैं ।
मर जाते वे एक-दूसरे को जैसे ही ग्रसते हैं ।।

पाँचवाँ दृश्य

(देवदत्त नाम का तरुण मानव)

दृश्य पाँचवाँ है—समुद्र-तट, देवदत्त है एक युवक ।
नील गगन पर, मधुर गगन पर मधुर चाँदनी रही चमक ।।
निर्मल लहरों वाले सागर का है मधुर घोष सुन्दर ।
यह जगती-तल अतिशय सुन्दर, है प्रकाशमय परमेश्वर ।।
मति है ईश्वर, उसका पद है मोक्ष, मुक्त मुझको जानो ।
मैंने असुर हराये मुझको ही तुम परमेश्वर मानो ।।
प्रबल प्रेम-सुख द्वारा मैंने परमेश्वर का पद पाया ।
मैं अनन्त-महिमा-शाली हूँ, यह सब जग मेरी माया ।।

मुक्ति—६

(लघु नाटक)

अंक १—दृश्य १

मुक्ति नाम का यह नाटक है, स्वर्गलोक है इसका स्थान ।
और काल, कलिकाल अंत है, है यह पहला अंक प्रधान ।।
पात्र अग्नि, वायु, रवि, सोम, इन्द्र, वसु और युगल अश्विनीकुमार ।
त्वष्टा, विश्वेदेव, मरुद्गण—पात्र सभी ये देव उदार ।।

मैं मुक्त हूँ । मैंने असुरों को हराया । मैं ही ईश्वर हूँ । ईश्वर ही मैं हूँ । प्रेम-सुख से मैंने ईश्वर का पद पाया है ।

मुक्ति—६

(लघु नाटक)

अंक—१] [दृश्य—१

स्थान— स्वर्गलोक ।
समय— कलिकाल का अन्त ।
पात्र— इन्द्र, वायु, अग्नि, सूर्य, सोम, जुड़वें देव (अश्विनीकुमार), मरुद्गण, वसु, त्वष्टा, विश्वेदेव आदि ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन्दिरन्— उमक्कु नन्ऱु, तोऴरे !

मऱ्ऱवर्— तोऴा उनक्कु नन्ऱु ।

इन्दिरन्— पिरम्म देवन् नमक्कोर् पणियिट्टान् ।

मऱ्ऱोर्— याङ्ङनम् ।

इन्दिरन्— 'मण्णुलहत्तु मानुडन् तन्नैक् कट्टिय तळै ऍल्लाम् शिदऱ्ह' ऍन्ऱु ।

अग्नि— वाऴ्ह तन्दै; मानुडन् वाऴ्ह ।

मऱ्ऱोर्— तन्दै वाऴ्ह । तन्नि मुदल् वाऴ्ह । उण्मै वाऴ्ह । उलह मोङ्गुह । तीदु कॆडुह । तिऱमै वळर्ह ।

ऒळि— उण्मैयुम् अऱिवुम् इन्ब मुमाहि पलवॆन्नत् तोन्ऱिप् पलविन्नै शॆय्दु पल पयन् उण्णुम् परम नऱ् पॊरुळै, उयिर्क् कॆलान् दन्दैयै, उयिर्क् कॆलाम् तायै, उयिर्क्कॆलान् दलैवन्नै, उयिर्क् कॆलान् दुणैवन्नै, उयिर्क्कॆलाम् उयिरै, उयिर्क्कॆलाम् उणर्वै अऱिविलै कण्डु पोऱ्ऱि नॆऱियिन्निल् अवन् पणि नेर्पडच् चॆय्वोम् ।

इन्दिरन्— नन्ऱु तोऴरे, अमिऴ्द मुण्बोम् ।

मऱ्ऱोर्— अमिऴ्दम् नन्ऱे, आम् अःदुण्बोम् ।
(ऍल्लारुम् अमिर्द पानम्शॆय्हिऱार्हळ् ।)

इन्दिरन्— नित्तमुम् वलिदु ।

वायु— नित्तमुम् पुदिदु ।

अग्नि— तीरा विरैवु ।

इरट्टैयर्— मारा इन्बम् ।

मरुत्तुक्कळ्— ऍन्ऱुम् इळैमै ।

ऒळि— ऍन्ऱुन् वॆळिवु ।

इन्द्र— मित्रो ! भला हो तुम्हारा !

अन्य— मित्र, भला हो आपका !

इन्द्र— ब्रह्मा ने हमें एक आज्ञा दी है ।

अन्य— कैसी ?

इन्द्र— 'पृथ्वी के मानवों को बाँधनेवाले सारे बन्धन टूट जायँ' ।

अग्नि— जय पिता की, जय मनुष्य की ।

अन्य— पिता की जय हो, अद्वय मूल वस्तु की जय हो ! सत्य की जय हो । प्रपंच उन्नत हो । बुराई का बुरा हो ! कौशल बढ़े । हम उस परमात्मा को अपनी बुद्धि में देखें, धारण करें, स्तुति करें और उसकी सेवा को सीधे तौर से करें; जो परमात्मा सच्चिदानन्द है, जो अनेक रूपों में व्यक्त होता है, अनेक कार्य करता है और विविध फलों को भोगता है; जो सभी जीवों का पिता है,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन्द्र बोले इन्द्रदेव— "हे मित्रो ! होवे तुम सबका कल्याण ।
अन्य देव "और आपका भी मंगल हो" —बोले सभी देव मतिमान ।।
इन्द्र बोले इन्द्र "आज ब्रह्मा ने देवो ! दी आज्ञा हमको" ।
अन्य देव बोले देव— "बताओ सुरपति ! दी कैसी आज्ञा तुमको ?" ।।
इन्द्र बोले इन्द्र— "कहा ब्रह्मा ने सुनो देवपति ! सुस्थिर मन ।
जो मनुजों को बाँध रहे वे टूट जायँ सारे बन्धन" ।।
अग्नि बोले अग्नि— "पितामह की जय और मानवों की जय जय ।"
अन्य देव सदा सत्य की जय हो जग में, जय जय मूल वस्तु अद्वय ।।
बुरा सदा हो बुराइयों का विश्व-प्रपंच समुन्नत हो ।
हो कौशल की वृद्धि (विश्व में कभी न कोई अवनत हो) ।।
परमपिता उस परमात्मा का करें बुद्धि में हम दर्शन ।
सरल भाव से स्तुति-सेवा कर उसे करें मन में धारण ।।
जो सच्चिदानन्द परमात्मा जो अनेक रूपों में व्यक्त ।
विविध कार्य जो करता, होता विविध फलों में भोगासक्त ।।
सबका साथी है, नायक है और पिता है, माता है ।
जो प्राणों का प्राण और जो अनुभव-गम्य कहाता है ।।
इन्द्र बोले इन्द्र— "मित्रवर ! हम सब आज सुधा का पान करें" ।
अन्य देव सुरगण बोले— "अमृत श्रेष्ठ है, उसे पियें (गुणगान करें)" ।।
ऐसा कहकर सभी सुरों ने अमृत पिया रुचि से छक-छक ।
इन्द्र बोले इन्द्र— "दिनोंदिन है यह सुधा हमारी बल-वर्धक" ।।
अन्य देव अन्य देवगण बोले— "यह तो नित नवीन है" ।
अग्नि बोले अग्नि— "अमिट फुर्ती-दायक प्रवीण है" ।।
अश्विनीकुमार बोले अश्विनीकुमार— "अचल, सुखदायक है यह" ।
मरुत् बोले मरुत— "सदा यौवन-संचालक है यह" ।।
सूर्य बोले सूर्य— "सदैव स्वच्छ है (अति निर्मल है) ।
(यह पीनेवाले के तन में भरता बल है)" ।

माता है, नायक है और साथी है ! जो प्राणों का प्राण है और जीवों का गूढ़तम अनुभव (गम्यभाव) है ।

इन्द्र— अच्छा है मित्रो ! हम अमृत का अशन करें ।
अन्य— अमृत श्रेष्ठ है ! हाँ उसका सेवन करें । (सभी अमृत-पान करते हैं ।)
इन्द्र— दिनोंदिन बलवर्धक है !
अन्य— नित नवीन है ।
अग्नि— निरन्तर त्वरा है ।
अश्विनी— अचल सुख ।
मरुत्— सदा यौवन ।
सूर्य— सदा स्वच्छ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अग्नि— मण्णुलहत्तु मानिडर् वडिक्कुम्
सोमप् पालुमिव् वमिऴ्दमुम् ओर् सुवै ।
इन्दिरन्— मण्णुलहत्तु मक्कळे नीविर्
इन्बङ् गेट्पीर् ऍण्णिय मऱप्पीर्
शॅयल् पल शॅय्वीर् शॅय्हैयिल् इळैप्पीर्
ऍण्णळ वदनाल् एऴुल हित्तैयुम्
विऴुङ्गुदल् वेण्डुवीर् मोळवुम् मऱप्पीर्
तोऴरॅन् ऱॅम्मै नित्तमुम् शार्न्दीर्
सोमप् पालॊडु शॊल्लमु दूट्टुवीर्
तुम्मैये अवुणर् नोवुऱ्च् चॅय्वार् ?
आ अ अ; मऱवुक् कुऱम्बा, अरक्का
विरुत्तिरा, ऑऴियिनै मऱैत्तिडुम् वेडा,
नमुशिप् पुऴुवे, वलने नलि शॅयुन्
दुन्बमे अव्चमे, इरुळे तॊऴुम्बर् हाळ्
पॅयर् पल काट्टुम् ऑरु कॊडुम् पेये
उरुप्पल काट्टुम् ऑरु पुलैप् पाम्बे
पडैपल कॊणर्न्दु मयक्किडुम् पाऴे,
एडा वीऴ्न्दनै यावरुम् वीऴ्न्दीर्
अरक्करे, मनिद अऱिवॅनुङ् गोयिलै
विट्टु नो रॊऴिन्दाल् मेविडुम् पॊन्नुलहम्
मुन्दै वाऴ् तॊडङ्गि मानुडर् तमक्कुच्
चीर्दर निनैत्तु नाम् शॅय्वदै यॆल्लाम्
मेहक् करुम्बुलै विरुत्तिरन् कॆडुत्तान्
वलियिलार् दे 'वर्; वलियवर् अरक्कर्
अऱमे नॊय्यदु; मऱमे वलियदु

अग्नि-- पृथ्वी में मानव जो सोमरस छानते हैं उसका और अमृत का स्वाद एक रस है।
इन्द्र-- पृथ्वी के लोगो ! तुम लोग सुख माँगते हो, पर भाव भूल जाते हो । कर्म अनेक करते हो, पर कार्य में थक जाते हो । कल्पना में सातों लोकों को निगलना चाहते हो, फिर भूल जाते हो । मित्र बनाकर तुम लोग हमसे मिले। हमें सोमरस के साथ मंत्रामृत भी तुमने पिलाया । क्या दानवों ने तुम्हें दुखी कर दिया ? हा हा ! पापी ! शरारती ! राक्षस ! वृत्र ! प्रकाश को ढँकनेवाले निषाद! नृशंस नमुचि कीड़े! हे बली! कष्ट देनेवाले दुख! डर! अन्धकार! हे नीचो ! अनेक नाम रखनेवाले एक क्रूर भूत ! अनेक रूप दिखानेवाले एक नीच सर्प ! अनेक सेनाएँ लाकर भ्रान्त करनेवाले शून्य ! रे ! गिरे तुम ! तुम गिर गये । हे राक्षस ! मानव-मति रूपी मन्दिर को तुम छोड़ आओ, तो स्वर्ण-युग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अग्नि बोले अग्नि— "मनुज जो पीता सोम विमल है।
वही जानता सुधा सोम-सम मधुर अमल है" ॥

इन्द्र बोले इन्द्र— "धरातलवासी कहलाते हो।
सुख माँगते सोचते किन्तु भूल जाते हो ॥
करते कर्म अनेक, कार्य में थक जाते हो।
सातों लोक विशाल कल्पना में लाते हो ॥
किन्तु भूल जाते हो (याद न रख पाते हो)।
(अरे मानवो ! अपनी त्रुटि न जान पाते हो) ॥
बनकर मित्र मिले तुम हमसे प्रेम निभाया।
मंत्रामृत भी हमें सोम-रस साथ पिलाया ॥
किन्तु दानवों ने तब (कोमल) हृदय दुखाया।
(छीन लिये सुख सारे दुख की डाली छाया) ॥
अरे वृत्र ! पापी ! शरारती ! राक्षस भीषण।
रवि-प्रकाश का बन जाता है तू आच्छादन ॥
बली, निषाद, नृशंस कीट, दुख देनेवाले।
दुख, भय, अंधकार आदिक बहु नाम निराले ॥
बहु नामों वाले तुम क्रूर भूत (भयदायक)।
बहु रूपों वाले तुम नीच भुजंग भयानक ॥
बहु सेनाएँ लाकर भ्रान्त बनानेवाले।
शून्य रूप ! तुम पतित हुए (दुख ढानेवाले) ॥
मानव का मति-रूपी मन्दिर तज दोगे जब।
अरे राक्षसो ! (मधुर) स्वर्ण युग आयेगा तब ॥
अति प्राचीन मानवों को श्रीमान बनाने।
जो-जो (पावन) कर्म (लाभ-प्रद) हमने ठाने ॥
काले मेघ-समान वृत्र दानव ने आकर।
व्यर्थ उन्हें कर दिया (कष्ट सबको पहुँचाकर) ॥
"राक्षस हैं बलवान, देव-दल सभी अबल है।
धर्म क्षीण है, किन्तु (भयंकर) पाप प्रबल है ॥
है असत्य पर्वत सम, सत्य शुष्क पत्ता है।
दुख विजयी है और पराजित सुख-सत्ता है" ॥
जभी किंवदन्ती ऐसी फैली पृथ्वी पर।
चकित हो गये तभी (सभी भूतल-वासी) नर ॥

हो जायगा। पुराने काल से मानवों को श्रीमान् बनाने के विचार से हमने जो (कार्य) किये उन सभी को काले मेघ के समान वृत्र ने बेकार कर दिया। निर्बल है देव, बलवान है राक्षस ! धर्म क्षीण है, पाप बलवान है। सत्य सूखा पत्ता है, असत्य पर्वत है। सुख ही दीन होगा, दुख जीतेगा। ऐसी किंवदंती हुई

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मय्ये शैत्तै; पॊय्ये कुन्ऱम्
इन्बमे शोर्वदु; तुन्बमे वॆल्वदु"
ऎन्ऱोर् वार्त्तैयुम् पिऱन्ददु मण्मेल्
मानुडर् तिहैत्तार्; मन्दिरत् तोळ्राम्
विशुवा मित्तिरन् वशिट्टन् काशिबन्
मुदलियोर् शॆय्द मुदल् नूल मरैन्ददु
पॊय्न्नूल् पॆरुहित्त, पूमियिन् कण्णे
वेदङ् गॆट्टु वॆरुङ्गदे मलिन्ददु !
पोदच् चुडरॆप् पुहैयिरुळ् शूळ्न्ददु
तवमॆलाङ् गुऱन्दु शदि पल वळर्न्ददन्
ऎल्लाप् पॊळ्दिनुम् एळै मानुडर्
इन्बङ् गरुदि इळैत्तनर् मडिन्दार्
गङ्गै नीर् विरुम्बिक् कानल नीर् कण्डार्
अमुदम् वेण्डि विडत्तिनै युण्डार्
एऎ !
वलियरे पोलुमिव् वञ्जह अरक्कर्
∴ ∴ ∴
विदियिन् पणिदान् विरैह
मदियिन् वलिमैयाल् मानुडन् ऒङ्गुह
ऒळि— ऒरुवनैक् कॊण्डु शिरुमै नीक्कि
नित्तिय वाळ्विले निलै पॆऱच्चॆय्दाल्
मानुडच् चादि मुळ्दुनल् वळिप्पडुम्;
मानुडच् चादि ऒन्ऱु; मनत्तिलुम्
उयिरिलुम् तॊळिलिलुम् ऒन्ऱे याहुम्
ती— बरद कण्डत्तिल् पाण्डिय नाट्टिले
विरदन् दवऱिय वेदियर् कुलत्तिल्
वशुपदि ऎन्ऱोर् इळैञन् वाळ्हिन्ऱान्
तोळिले मॆलिन्दान् तुयरिले अमिळ्न्दान्

पृथ्वी पर ! मानव चकरा गये। मंत्रदृष्टा विश्वामित्र, वसिष्ठ, कश्यप आदि का रचा मूल ग्रंथ दूर गया। भूमि में मिथ्या ग्रंथ बहुत हुए। वेद बिगड़े, पोली कहानियाँ वर्धित हुईं। बोध की ज्वाला को धुआँ तथा अन्धकार घेर गया। तपस्या कम हुई। साजिशें बढ़ीं। सभी समय गरीब मानव सुख चाहकर क्षीण हुए। हत हुए। उन्होंने गंगा का जल चाहा, पर मृगजल पाया। अमृत माँगा, पर विष को खाया। हेः हेः ! ये वंचक राक्षस शायद बलवान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कश्यप, विश्वामित्र, वसिष्ठ आदि से विरचित।
ग्रंथ नष्ट हो गये मंत्र-द्रष्टा-मुनि-निर्मित॥
मिथ्या-ग्रंथ अनेकों हुए भूमि पर विरचित।
वेद विकृत हो गये, कथाएँ झूठी वर्धित॥
घिरा अज्ञता-तिमिर धुएँ-सा काला-काला।
जिससे ढककर हुई मलीन ज्ञान की ज्वाला॥
हुई तपस्या क्षीण बढ़े षडयंत्र (भयंकर)।
सुख-आशा में क्षीण हो गये सभी दीन नर॥
गंगा-जल माँगा, पाया मृग-तृष्णा का जल।
माँगा (पावन) अमृत, उन्हें पर मिला हलाहल॥
हैं अतिशय बलवान आज ये वंचक राक्षस।
(इनके सम्मुख आज सभी भूले निज साहस)॥
विधि का कार्य-कलाप तीव्र गति से प्रचलित हो।
(विमल) बुद्धि के बल से (फिर) मानव उन्नत हो"॥

प्रकाश (सूर्य) बोले रवि— "यदि एक बुद्धि को नर अपनाये।
उसके द्वारा सभी क्षीणता दूर भगाये॥
सारी मानव-जाति अमर जीवन पा जाये।
अब तक जो पथ-भ्रान्त, सही पथ पर आ जाये॥
सारी मानव-जाति एक है (निश्चित जानो)।
कर्म और प्राणों में उसे एक-सम मानो॥

अग्नि बोले अग्निदेव— "भारत के पाण्ड्य-देश में।
व्रत-जीवन से रहित विप्र-कुल-सन्निवेश में॥
वसुपति नामक एक तरुण है बसा वहाँ पर।
भुज-बल में कम है, निमग्न है दुख के सागर॥
वह प्रति दिवस जूझता है दरिद्र-कूकर से।
क्या करना है? नहीं जानता (बुद्धि प्रखर से)॥

ही हैं। विधि का काम तेज हो! बुद्धि के बल से मानव उन्नत हो!

सूर्य— किसी एक मनुष्य के द्वारा क्षीणता का नाश कराकर (मानव-जाति) को अमर जीवन में स्थिर स्थापित कर लें, तो सारी मानव-जाति ठीक रास्ते पर आ जायगी। मानव-जाति एक ही है। मन में, प्राणों में तथा कर्म में वह एक ही (समान) है!

अग्नि— भरतखण्ड के पांडिय देश में व्रत-जीवन से डिगे हुए ब्राह्मण-कुल में वसुपति नामक एक तरुण रहता है। भुज-बल में वह कम है। दुख में डूबा है वह। रोज वह दरिद्रता रूपी से श्वान से जूझता रहता है। वह नहीं जानता कि क्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाळुम् वऱुमै नायॊडु पॊरुवान्
शॆय्विनै यऱियान् दॆय्वमुन् दुणियान्
ऐय वलैयिल् अहप्पड लायिनन्
इवनैक् काप्पोम् इवन् पुवि काप्पान्

कार्रु— उयिर् वळङ् गॊडुत्तेन् उयिराल् वॆल्ह।
इन्दिरन्— मदिवलि कॊडुत्तेन् वसुपदि वाळ्ह।
सूरियन्— अऱिविलै ऑळियै अमैत्तेन्; वाळ्ह।
तेवर्— मन्दिरङ् गूऱवोम्। उण्मैयै तॆय्वम्।
कवलैयऱ्ऱिरुत्तलै वीडु, कळियै
अमिऴ्दन् पयन् वरुम् जॆय्हैयै अऱमाम्
अच्चमै नरहम्; अदनैच् चुट्टु
नल्लदै नम्बि नल्लदै शॆय्ह।
महनै वसुपदि, मयक्कन् दॆळिन्दु
तवत्तॊळिल् शॆय्दु तरणियैक् काप्पाय्।

काट्चि—2

पाण्डिय नाट्टिल् वेदपुरम् कडऱ्करै। वसुपदि तनियै निलवैप् पार्त्तुक्
कॊण्डिरुक्किरान्।

वसुपदि पाडुहिरान्—

निलवुप् पाट्टु

वाराय् निलवे वैयत् तिरुवे
वॆळ्ळैत् तीविल् विळैयुङ् गडले

करना है? देव-विश्वास भी नहीं रखता! सन्देह-जाल में फँसा रहता है! इसको हम सुरक्षित कर दें, तो वह संसार की रक्षा करेगा।

वायु— उसे हमने पुष्ट प्राण दिये। प्राणों से वह जीत ले।

इन्द्र— मैंने बुद्धि-बल प्रदान किया उसे! वसुपति की जय हो।

सूर्य— उसकी बुद्धि में तेज रख दिया! चिरंजीव रहे वह।

देव— हम मंत्रों का पठन करेंगे। सत्य ही ईश्वर है! निश्चिन्त रहना ही मुक्ति है! आनन्द अमृत है! फलदायक कर्म ही धर्म है! भय नरक है। उसको जला दो! भले पर विश्वास करो; भला ही करो। हे पुत्र वसुपति! भय छोड़ो। तपस्या करो। धरती की रक्षा करो।

दृश्य—२

(पांडिय देश में वेदपुरी। समुद्र-तट। वसुपति अकेले खड़ा रहकर चाँदनी को निहार रहा है।)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और न है विश्वास उसे कुछ भी देवों पर।
फँसा हुआ संदेह-जाल में वह (विमूढ़ नर)॥
यदि हम उस (ब्राह्मण-बालक) के होवें पालक।
तो वह ब्राह्मण-तनय बनेगा जग-प्रतिपालक"॥

वायु बोले वायु—"सुपुष्ट प्राण मैंने दे डाले।
उन प्राणों से जग को जीते, जग को पा ले"॥

इन्द्र बोले इन्द्र—"दिया है मैंने उसे बुद्धि-बल।
वसुपति की जय हो (औ' होवे उसका मंगल)"॥

सूर्य बोले सूर्य—"बुद्धि में मैंने तेज भरा है।
चिरंजीव हो (जब तक जीवित वसुंधरा है)"॥

देवगण बोले देव—"करेंगे हम सब मंत्रोच्चारण।
सदा सत्य है ईश्वर (करो हृदय में धारण)॥
है निश्चित दशा कहलाती मुक्ति (मनोरम)।
और (अमित) आनंद (सदा है सरस) सुधा(-सम)॥
फल-दायक कर्म ही धर्म है, नरक (महा-)भय।
उसे जला दो (सभी मानवो! हो तुम निर्भय)॥
करो सदा विश्वास भलों का, भला करो तुम।
हे वसुपति! प्रिय पुत्र! सभी भ्रम-जाल हरो तुम॥
पुत्र! तपस्या करो (सदा तुम अटल अखंडित)।
जिससे होवे (सकल विश्व औ') धरणी का हित॥

दृश्य—२

दृश्य दूसरा, वेद पुरी के पाण्ड्य देश में।
एकाकी वसुपति, समुद्र तट के प्रदेश में॥
देख रहा है (नभ-मंडल की विमल) चाँदनी।
(लगती है उसके नयनों को जो सुहावनी)॥

चाँदनी-गीत

आओ, आओ, भू-मंडल की शोभा सुंदर।
आओ, श्वेत द्वीप में प्रवहित सागर॥

चाँदनी गीत

हे चाँदनी, हे भूमि की श्री, आओ! सफ़ेद द्वीप में पैदा होनेवाले सागर,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वान्प् पॅण्णित् मदमे
ऑळिये, वाराय् निलवे वा 1

मण्णुक्कुळ्ळे अमुदैक् कूट्टिक्
कण्णुक्कुळ्ळे कळियैक् काट्टि
अॅण्णुक्कुळ्ळे इन्बत् तॅळिवाय्
वाराय् निलवे वा 2

इन्बम् वेण्डिल् वानैक् काण्बीर्
वानॉळि तन्नै मण्णिर् काण्बीर्
तुन्बन् दानोर् पेदैमै यन्ऱे !
वाराय् निलवे वा 3

अच्चप् पेयैक् कॉल्लुम् पडैयाम्
वित्तैत् तेनिल् विळैयुङ् गळियाय्
वाराय् निलवे वा 4

आकाश की सुन्दर मस्ती, हे प्रकाश ! आओ ! हे चाँदनी, आओ ! १ पृथ्वी में अमृत घोलते, आँखों में आनन्द भरते, चिन्तन में मनोहारी सुख बनो, आओ ! हे चाँदनी, आओ ! २ हे लोगो ! मोद चाहो, तो आकाश को देखो। आकाश के प्रकाश को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गगन-सुन्दरी की मस्ती तुम (मस्त बनाओ)।
हे प्रकाश (सुन्दरी) चाँदनी ! आओ, आओ ॥ १ ॥

पृथ्वी में तुम सुधा घोलती (सुमधुर) आओ।
नयनों में सुख को उँड़ेलती (सुखकर) आओ ॥
चिन्तन में बनकर आनन्द मनोहर आओ।
(हँसती खिलती चपल) चाँदनी (सुंदर) आओ ॥ २ ॥

अरे मानवो ! मोद चाहते तो नभ पेखो।
और गगन की ज्योति धरा-तल पर तुम देखो ॥
है अज्ञान-जन्य दुख-अनुभव (मत दुख पाओ)।
(दुख हरती, सुख भरती विमल) चाँदनी आओ ॥ ३ ॥

विद्या-सेना भय का भूत भगानेवाली।
विद्या मधुमय सुख-सागर सरसानेवाली ॥
विद्या का आनंद प्राण-मन में छिटकाओ।
(विद्या-सुधा पिलाती मधुर) चाँदनी आओ ॥ ४ ॥

पृथ्वी में देखो ! दुख का अनुभव अज्ञान है ! आओ। हे चाँदनी ! आओ। ३
विद्या डर के भूत को मारनेवाली सेना है। उस विद्या-मधु से उत्पन्न होनेवाले आनन्द के रूप में आओ। हे चाँदनी ! तुम आओ ! ४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुप्पेरुम् पाडल्हळ्

1 कण्णन् पाट्टु

कण्णन् अंन् तोळन्— 1

पुन्नागवराळि— तिस्र जाति, एक ताळम्; वत्सल रसम्

पॊन्नविर् मेनिच् चुबत्तिरै मादैप्
पुरङ्गॊण्डु पोव दर्के— इनि
अॆन्न वळियॆन्रु केट्किल्— उपायम्
इरुकणत् तेयुरैप्पान्;— अन्दक्
"कन्नन् बिल्लाळर् तलैवनैक् कॊन्ड्रिडक्
काणुम् वळियॊन् ड्रिल्लेन्— वन्दिङ्गु
उन्नै यडैन्दनन्" अॆन्निल् उबायम्
ऒरुकणत् तेयुरैप्पान् 1
कानहत्ते शुरु नाळिलुम् नॆञ्जिड्
कलक्क मिलादु शॆय्वान्;— पॆरुञ्
जेनैत् तलैनिन्रु पोर्शॆय्युम् बोदिनिल्
तेर्नडत् तिक्कॊडुप् पान्;— अॆन्रन्
ऊन्नै वरुत्तिडु नोय्वरुम् बोदिनिल्
उर्र मरुन्दु शॊल्वान्;— नॆञ्जम्
ईनक् कवलैह ळॆय्दिडुम् बोदिल्
इदञ् जॊल्लि मार्ड्रिडु वान् 2
पिळैक्कुम् वळिशॊल्ल बेण्डुमॆन्ड्रा लॊरु
पेचचिनि लेशॊल्लु वान्;
उळैक्कुम् वळिवित्तै याळुम् वळिपयन्
उण्णुम् वळि युरैप् पान्;
अळैक्कुम् बॊळुदिनिर् पोक्कुच् चॊल्लामल्
अरैनॊडिक् कुळ्वरु वान्;

---

१ कान्हा-गीत

कान्हा : मेरा साथी—१

'स्वर्ण-कांति से युक्त देहवाली सुभद्रा को भगा ले जाने का अब क्या मार्ग है' यह पूछो, तो दो क्षण में मेरा साथी कान्हा बता देगा। 'धनुर्धरों के उस नायक का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुप्पेरुम् पाडल्हळ्

१ कान्हा-गीत

कान्हा : मेरा साथी—१

"कैसे हम ले जायँ सुभद्रा स्वर्ण-समान देहवाली ?"।
यह पूछो तो शीघ्र बता देगा चट कान्हा (वनमाली)॥
"धनुर्धरों में श्रेष्ठ कर्ण के वध का है अब कौन उपाय ?।
आया शरण तुम्हारी कान्हा, कहो कृष्ण ! मैं हूँ असहाय"॥
यदि मैं ऐसे वचन कहूँगा साथी कान्हा के सम्मुख।
"सुन अर्जुन !" कह शीघ्र बतायेगा, न करेगा मुझे विमुख॥ १॥

भीषण वन में भी वह मेरे भय सम्पूर्ण मिटायेगा।
(वन सारथी) युद्ध में मेरा रथ भी वही चलायेगा॥
मम तन जर्जर करनेवाला रोग अगर लग जायेगा।
तो कान्हा उसकी भी कोई दवा (अचूक) बतायेगा॥
हृदय हीन - चिन्ताओं से जब आकुल हो घबरायेगा।
तो वह हितकर बातें कहकर (मेरा मन) बहलायेगा॥ २॥

यदि मैं पूछूँगा— "बतलाओ, मुझे जीविका का साधन"।
तो तत्काल उपाय बतायेगा (कान्हा सच्चा प्रिय - जन)॥
कर्ममार्ग बतलायेगा वह और कर्म का साधन भी।
कर्मफलों के भोगों का वह बतलायेगा पालन भी॥
बिना बहाना किये, बुलाने पर, तत्क्षण आ जायेगा।
(बारापार न जिसका ऐसा यदि साथी बन जायेगा)॥

का वध करने का कोई मार्ग नहीं दिखता ! इधर तुम्हारी शरण में आया हूँ।' कहने पर एक क्षण में उपाय बता देगा। १ वन में घूमते समय भी वह मन में कोई डर आने नहीं देगा। बड़ी सेना के आगे युद्ध करते समय रथ चलायगा। मेरे शरीर को जर्जर करनेवाला कोई रोग आ जाय, तो वह उचित दवा बतलायगा। मन में हीन चिन्ताएं उठें, तो हितकारी बातें बताकर वह बहला देगा। २ 'जीविका का मार्ग बताओ', कहने पर वह बात की बात में बता देगा। कर्म का मार्ग, कर्म-साधन का मार्ग, फल भुगतने का रास्ता —सब बतायगा। बुलाने पर बिना कोई बहाना किये, आधे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मऴैक्कुक् कुडैपशि नेरत् तुणवॅन्ऱन्
वाऴ्विनुक् कॅङ्गळ् कण्णन् 3
कैट्ट पॊऴुदिल् पॊरुळ् कॊडुप्पान्; शॊल्लुङ्
गेलि पॊऱुत्तिडु वान्;— अॅन्नै
आट्टङ्गळ् काट्टियुम् पाट्टुक्कळ् पाडियुम्
आऱुदल् शॆय्दिडु वान्;— अॅन्ऱन्
नाट्टत्तिऱ् कॊण्ड कुऱिप्पिनै इःवॅन्ऱु
नान्शॊल्लुम् मुन्नुणर् वान्;— अन्बर्
कूट्टत्ति लेयिन्दक् कण्णनैप् पोलन्बु
कॊण्डवऱ् वेऱुळ रो ? 4
उळ्ळत्ति लेकरु वङ्गॊण्ड पोदिनिल्
ओङ्गि यडित् तिडुवान्;— नॅञ्जिल्
कळ्ळत्तैक् कॊण्डॊरु वार्त्तैशॊन् नालङ्गु
कारि युमिऴ्न्दिडु वान्;— शिऱु
पळ्ळत्ति लेनॆडु नाळऴु हुङ्गॆट्ट
पाशियै यॆऱ्ऱि विडुम्— पॆरु
वॆळ्ळत्तैप् पोलरुळ् वार्त्तैहळ् शॊल्लि
मॆलिवु तविर्त्तिडु वान् 5
शिन्नक् कुऴन्दैहळ् पोल्विळै याडिच्
चिरित्तुक् कळित्तिडु वान्;— नल्ल
वन्न महळिर् वशप्पड वेपल
मायङ्गळ् शूऴन्दिडु वान्— अवन्
शॊन्न पडिनड वाविडि लोमिहत्
तॊल्लै यिऴैत्तिडु वान्;— कण्णन्
तन्नै यिऴन्दु विडिल् ऐयहो ! पिन्
शहत्तिनिल् वाऴ्वदि लेन् 6
कोबत्ति लेयॊरु शॊल्लिऱ् चिरित्तुक्
कुलुङ्गिडच् चॆय्दिडु वान्— मनस्
ताबत्तिले यॊन्ऱु शॆय्दु महिऴ्च्चि
तळिर्त्तिडच् चॆय्दिडु वान्;— पॆरुम्

क्षण में वह आ जायगा। मेरे जीवन में हमारा कान्हा बारिश का छाता है; भूख का भोजन है। ३ माँगते समय वह धन दिलायगा। हँसी-दिल्लगी करो, तो सुन लेगा। नृत्य करके, गाने गाकर मेरा दिल बहलायगा। मेरे मन की बात को, वह मेरे कहने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरे जीवन में कान्हा है वर्षा के छत्र के समान।
भूखे के हित (मेरा कान्हा) है (सुन्दर) भोजन (पकवान)॥ ३ ॥
आवश्यकता पड़ने पर माँगो तो कान्हा धन देगा।
और हँसी - दिल्लगी करो तो बुरा न माने, सुन लेगा॥
नाच दिखाकर, गाना गाकर, मेरा मन बहलायेगा।
मेरे मन की बात बिना ही कहे जान वह जायेगा॥
(यों तो मेरे मित्र अनेकों भरा हुआ है जग सारा)।
पर मित्रों में मुझे न कोई कान्हा के समान प्यारा॥ ४ ॥

मन में गर्व करूँ तो मेरा गर्व खर्व वह कर देगा।
मन में कपट रखूँ तो मुझको झिटक निरादर से देगा॥
बहुत दिनों से छोटे गड्ढे में सड़नेवाली काई।
दूर बहाकर उसे करेगा, विकट बाढ़ ज्यों घहराई॥
अपने दया भरे वचनों से (मन में धैर्य बँधायेगा)।
उसी बाढ़ - सम मेरे (सारे दुख) दारिद्र्य बहायेगा॥ ५ ॥
छोटे शिशुओं के समान वह क्रीड़ा (विविध) दिखायेगा।
(हमें हँसायेगा) हँस-हँसकर खुशियाँ (खूब) मनायेगा॥
सुन्दर - सुन्दर बालाओं से (प्रेम - प्रपंच निभायेगा)।
उनको वश में करने के हित माया विविध रचायेगा॥
यदि उसके कथनानुसार कोई न कभी चल पायेगा।
(तो वह अतिशय क्रोधित होगा) आफ़त बहुत मचायेगा॥
मेरा ऐसा साथी कान्हा, अगर कहीं भी खो जाए।
तो इस जग में मेरा जीवन मरण-तुल्य ही हो जाए॥ ६ ॥

यदि कोई भी क्रोधित हो तो उसका एक शब्द सुनकर।
हँसते - हँसते लोट - पोट वह हो जायेगा तत्क्षण नर॥
कभी किसी के यदि मन में कुछ मन-मुटाव हो जायेगा।
तो वह उसे दूर कर उसके मन को मुग्ध बनायेगा॥

से पहले ही जान लेगा। क्या प्रेमियों की भीड़ में इस कान्हा के समान प्यारा कोई और है? ४ चित्त में गर्व करूँ, तो वह ज़ोर से पीटेगा। मन में कपट करके कोई बात करो, तो खखारकर वह थूक देगा। छोटे गड्ढे में बहुत दिन से सड़ती रहनेवाली काई को दूर फेंक देनेवाली बड़ी बाढ़ के समान दयामय वचन कहकर वह दैन्य दूर कर देगा। ५ वह छोटे शिशुओं के समान क्रीड़ा करके हँसेगा और खुशी मनायगा। अच्छी तथा सुन्दर बालाओं को वश में करने के लिए अनेक मायाएँ रचेगा। उसकी बात के अनुसार न चलो, तो बहुत विपत्तियाँ उत्पन्न कर देगा। कान्हा को खो दूँ, तो हाय रे! फिर जगत में जीना नहीं होगा। ६ हमारे कोप के समय वह एक ही शब्द कहकर हँसते-हँसते लोट-पोट होने (को बाध्य कर) देगा।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आबत्ति निल्वन्दु पक्कत्ति लेनिन्रु
अदनै विल्क्किडु वान्;— शुडर्त्
तीबत्ति लेविळुम् पूच्चिहळ् पोल् वरुन्
दीमैहळ् कॊन्ड्रिडु वान् 7
उण्मै तवरि नडप्पवर् तम्मै
उदेत्तु नशुक्किडु वान्;— अरुळ्
वण्मैयि नालवन् मात्तिरम् पॊय्हळ्
मलैमलै यावुरैप्पान्;— नल्ल
पॆण्मैक् कुणमुडैयान्;— शिल नेरत्तिल्
पित्तर् कुणमुडै यान्;— मिहत्
तण्मैक् कुणमुडै यान्— शिल नेरम्
तळलिन् कुणमुडैयान् 8
कॊल्लुङ् गॊलैक्कञ्जि डाद मऱवर्
कुणमिहत् तानुडै यान्;— कण्णन्
शॊल्लु मॊळिहळ् कुळन्दैहळ् पोलॊरु
शूदरि यादुशॊल् वान्— ऎन्ऱुम्
नल्लव रुक्कॊरुतीङ्गु नण्णाडु
नयमुऱक् कात्तिडु वान्;— कण्णन्
अल्लव रुक्कु विडत्तिनिल् नोयिल्
अळलिनि लुङ्गॊ डियान् 9
कादल् विळैय मयक्किडुम् पाट्टिनिल्
कण्महिळ् शित्तिरत् तिल्— पहै
मादुम् पडैत्तॊळिल् याविनु मेतिऱम्
मुऱ्ऱिय पण्डिदन् काण्;— उयर्
वेद मुणर्न्द मुनिव रुणर्विनिल्
मेवु परम्पॊरुळ् काण्— नल्ल
गीदै युरैत्तनै इन्बुऱच् चॆय्दवन्
कीर्त्तिहळ् वाळ्त्तिडुवेन् 10

मनमुटाव के अवसर पर कुछ करके आनन्द को हुलसने देगा। बड़ी विपदा में पास आकर उसे हटा देगा। आनेवाले संकटों को जलते दीप में गिरते कीड़ों के समान वह मिटा देगा। ७ वह सत्य से डिगकर चलनेवालों को लात से रौंद देगा। पर घनी कृपा के कारण वह स्वयं पर्वतों के समान झूठ बोलेगा। वह अच्छे स्त्री-सुलभ गुणों से युक्त है। कभी पागल के गुणों वाला होगा। वह बहुत शीतल (मीठे) स्वभाव वाला है। वह कभी आग का-सा गुण भी धारण करेगा। ८ वह खून

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यदि उसके प्रिय जन पर कोई भारी संकट आयेगा।
तो वह तत्क्षण आकर पल में संकट सभी मिटायेगा॥
जलते दीपक पर गिर-गिरकर ज्यों पतंग जल जाते हैं।
उसी भाँति (उसकी करुणा से) सब संकट टल जाते हैं॥ ७॥

सत्य-मार्ग को तजकर जो नर चलते हैं असत्य-पथ पर।
उन सब (अधम पापियों) का यह सर्वनाश है देता कर॥
पर जिस जन पर इस कान्हा की घनी कृपा होती अतिशय।
उसके हित में पर्वत-सम वह झूठ बोल देगा निश्चय॥
नारी-सुलभ गुणों को प्रकटा कान्हा कभी दिखाता है।
और कभी पागल समान ही पागलपन अपनाता है॥
शीतल-सलिल-समान कभी उसका स्वभाव दिखलाता है।
कभी प्रज्वलित ज्वाला के सम वह क्रोधित हो जाता है॥ ८॥

(दुष्टों के) वध में न हिचक है, कभी न जो डरनेवाला।
निर्भय वीरों का गुण रखता मेरा कान्हा (मतवाला)॥
(भोले) शिशुओं के समान वह निश्छल बातें करता है।
और सज्जनों को पापों से सदा बचाता रहता है॥
(दुर्जन और पापियों के हित बना महा-प्रलयंकर है)।
रोग-अग्नि औ' विष-समान ही उनके लिए भयंकर है॥ ९॥

प्रेम-जनक मोहक गीतों की (मंजुल मादक) गान-कला।
नयनानन्द-दायिनी (सुन्दर) चित्रों की निर्माण-कला॥
शत्रु मिटानेवाली (भीषण) शस्त्र-कला (अतिभय-दायक)।
सकल-कला की खान (कान्ह) है (सभी कलाओं का नायक)॥
वेदों के ज्ञाता, उन्नत, मुनियों की मनोभावना में।
बसनेवाला परमतत्त्व वह (सात्त्विक सौम्य साधना में)॥
गीता-(ज्ञान) सुनाया जिसने मुझको सत्पथ दिखलाया।
मैं उसकी महिमा गाऊँगा (है कैसा साथी पाया!)॥ १०॥

करने से न डरनेवाले वीरों का गुण खूब रखनेवाला है। कान्हा जब कहे कुछ, शिशु के समान निष्कपट शब्द कहेगा। वह सदा साधुओं को बुराई से बचा लेगा। अन्यों के लिए कान्हा विष, रोग तथा अग्नि से भी भयंकर है। ९ प्रेम-जनक मोहक गीत में, आँखों को आनन्द देनेवाली चित्रकारी में, शत्रु से टकरानेवाले हथियार-कार्य में—— सबमें वह पूर्ण दक्ष विद्वान् है। इसे जानते हैं? उन्नत वेदज्ञ मुनियों की भावना में रहनेवाली परमवस्तु है वह। इसे जान लें। अच्छी गीता सुनाकर मुझे जिसने सुख दिलाया, मैं उसकी महिमा गाऊँगा। १०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णन् ऎन् ताय्— 2

(नॊण्डिच् चिन्दु)

उण्ण उण्णत् तॆविट्टादे— अम्मै
उयिरॆनुम् सुलैयिन्निल् उणर्बॆनुम् पाल्;
वण्णमुऱ वैत्तॆनक्के— ऎन्ऱन्
वायिनिऱ् कॊण् डूट्टुमोर् वण्मैयुडैयाळ्,
कण्णनॆनुम् पॆयरुडैयाळ्— ऎन्नक्
कट्टिनिरै वान् ऎनुन्दन् कैयि लणैत्तु
मण्णॆनुन्दन् मडियिल् वैत्ते— पल
मायमुरुङ् गदैशॊल्लि मनङ्गळिप् पाळ् 1
इन्बमॆनच् चिल कदैहळ्— ऎनक्
केऱ्ऱमॆन्ऱुम् वॆऱ्ऱि यॆन्ऱुम् शिल कदैहळ्
तुन्ब मॆनच् चिल कदहळ्— कॆट्ट
तोल्वियॆन्ऱुम् वीळ्च्चि यॆन्ऱुम् शिल कदैहळ्
ऎन्परुवम् ऎन्ऱन् विरुप्पम्— ऎनुम्
इवर्ऱिनुक् किणङ्गवॆन् नुळमऱिन्दे
अन्बॊडवळ् शॊल्लि वरु वाळ्— अदिल्
अऱ्पुदमुण् डाय्प्पर वशमडै वेन् 2
विन्दै विन्दैयाह ऎनक्के— पल
विदविदत् तोऱ्ऱङ्गळ् काट्टुविप्पाळ्
शन्दिरनॆन् रॊरु बॊम्मै— अदिल्
तण्णमुदम् पोल ऒळि परन्दॊळुहुम्;
मन्दै मन्दैया मेहम्— पल
वन्न मुरुम् बॊम्मैयदु मळै पॊऴियुम्
मुन्द ऒरु शूरिय नुण्डु— अदन्
मुहन्दॊळि कूऱुदऱ् कॊऱ मॊऴियिलैये 3

कान्हा : मेरी माँ—२

मैं माता के जीवन रूपी स्तन का भावना रूपी दूध पीते-पीते नहीं अघाता। उत्तम रीति से मेरे मुख में रखकर पिलाने की उदारता रखनेवाली है वह। वह 'कान्हा' नाम-धारिणी है। मुझे आलिंगन में लेकर विशाल आकाश रूपी अपने हाथों में लेकर, पृथ्वी रूपी गोद में रखकर, वह अनेक माया-भरी कहानियाँ कहती और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कान्हा : मेरी माँ—२

जननी - जीवन रूपी स्तन पय - पान कराता।
दूध भावना - रूपी पीते नहीं अघाता॥
भली भाँति से मेरे मुख में स्तन को रखकर।
दूध पिलाने की उदारता रखती सुखकर॥
कान्हा नामक वह प्रसिद्ध मेरी माता है।
मुझे हृदय से लगा (मनोरम सुखदाता है)॥
वह विशाल नभ रूपी कर में मुझे उठाकर।
पृथ्वी रूपी (मृदुल) गोद में मुझे लिटाकर॥
माया रूपी कहानियाँ है मुझे सुनाती।
इस प्रकार वह मेरे मन को है बहलाती॥ १॥

सुख रूपी कुछ (सुखद) कथाएँ मुझे सुनाती।
दुख रूपी कुछ (दुखद) कथाएँ भी कह जाती॥
पतन - पराजय की अनेक गाती गाथाएँ।
और विजय की (विरद) सुनाती (विविध) कथाएँ॥
मेरी आयु और मेरी रुचि को भी लखती।
सुना प्यार से कहानियाँ मेरा मन रखती॥
उन कहानियों में मैं अद्भुत रस पाऊँगा।
सुन - सुनकर मन में निहाल होता जाऊँगा॥ २॥

वह अनेक झाँकियाँ विचित्र मुझे दिखलाती।
(कान्हा प्रिय माता है, कान्हा ही है साथी)॥
चन्द्र - खिलौना देकर मेरा मन बहलाती।
शीतल - सुधा - समान चाँदनी को सरसाती॥
रंग - बिरंगे मेघ - वृन्द नभ में छा जाते।
बड़ी शान से वे धरती पर जल बरसाते॥
उद्भासित है सूर्य - प्रभा से नभ का आँगन।
ऐसी भाषा नहीं कर सकूँ उसका वर्णन॥ ३॥

मनोरंजन करा लेती है। १ सुखद कथाएँ, मेरे लिए बढ़ती तथा विजय की कुछ कथाएँ, दुख की कुछ कहानियाँ, बुरी हार और पतन की कुछ कथाएं —इनको, मेरी आयु, मेरी चाह के अनुरूप, मेरा मन रखकर वह प्यार के साथ कहती जायगी। मैं उनमें अद्भुत रस पाकर निहाल हो जाऊँगा। २ वह विचित्र-विचित्र अनेक झाँकियाँ दिखायेगी। चन्द्र नाम का एक खिलौना है —उससे शीतल अमृत के समान रोशनी फैलकर बहती है। बृन्दों में मेघ! वे अनेक रंगों में शान से रहते हैं और वर्षा करते हैं। प्रथम एक सूर्य है। उसके प्रकाश का जिसमें वर्णन करूँ ऐसी भाषा नहीं है। ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वानत्तु मीन्ग ळुण्डु— शिऱु
मणिहळैप् पोल्मिन्नि निऱैन्दिरुक्कुम्;
नानत्तै कणक्किडवे— मनम्
नाडिमिह मुयल्हिनुम् कूडुवदिल्लै;
कानत्तु मलैह ळुण्डु— ऍन्दक्
कालमुमो रिडम्बिट्टु नहर्व दिल्लै;
मोनत्ति लेयिरुक्कुम्— ऑरु
मॊळियुरै यादुविळै याडवरुङ् गाण् 4
नल्ल नल्ल नदिहळुण्डु— अवै
नाडङ्गुम् ओडिविळै याडि वरुङ् गाण्
मॆल्ल मॆल्लप् पोयवैताम्— विळुम्
विरिकडऱ् पॊम्मैयदु मिहप् पॆरिदाम्;
ऍल्लैयदिऱ् काणुव दिल्लै;— अलै
ऍऱ्ऱिनुरै कक्कियॊरु पाट्टिशैक्कुम्;
ऒल्लॆनुमप् पाट्टिनिले— अम्मै
ऒमॆनुम् पॆयरॆन्ऱुम् ऒलित्तिडुङ् गाण् 5
शोलैहळ् काविनङ्गळ्— अङ्गु, शूऴ्तरुम् पलनिऱ् मणिमलर् हळ्
शालवुम् इनियनवाय्— अङ्गु, तरुक्कळिल् तूङ्गिडुम् कनिवहै हळ्
नालमुऱ्ऱिलुम् निऱैन्वे— मिह, नयन्दरुम् पॊम्मैहळ् ऍनक्कॆनवे;
कोलमुम् जुवैयु मुऱ— अवळ्, कोडिपल, कोडिहळ् कुवित्तुवैत् ताळ् 6
तिन्ऱिडप् पण्डङ्गळुम्— शॆवि, तॆविट्टऱक् केट्कनऱ् पाट्टुक् कळुम्
ऒन्ऱुऱप् पऴहुदऱ्के— अऱि, वुडैयमॆय्त् तोऴरुम् अवळ् कॊदुत्ताळ्
कॊन्ऱिडु मॆन इनि दाय्— इन्बक्, कॊडुनॆरुप्पाय् अनऱ् चुवैयमुदाय्
नन्ऱियल् कादलुक्के— इन्द, नारियर् तमैयॆनैच् चूऴवैत्ताळ् 7

आकाश की मछलियाँ (तारिकाएँ) हैं। वे छोटी मणियों के समान चमकती हैं और आकाश को भरे रहती हैं। तारों का गणन करूँ --मन इसका प्रयत्न करता है, पर वह साध्य नहीं होता। जंगली पर्वत हैं। वे कभी भी अपने स्थान से नहीं हटते। मौन ही रहते हैं। बिना एक शब्द उच्चारे, खेलने आते हैं, देख लो। ४ देखो, अच्छी-अच्छी नदियाँ हैं। वे देश भर में, दौड़ती तथा खेलती आती हैं। धीरे-धीरे बहकर वे जिस विशाल सागर में गिरती हैं, वह (सागर रूपी) खिलौना बहुत बड़ा खिलौना है। उसकी सीमा नहीं देखी जाती। तरंगें उछालकर, झाग वमन कर वह एक गाना गाता है! 'ओत्' शब्द के साथ होनेवाले उस गीत में माता का ॐ-कार रूपी नाम सदा स्वरित होता है, देख लो। ५ बाग़-बगीचे! वहाँ रंग-बिरंगे मणिवर्ण फूल! बहुत ही मधुर बहुविध फल, जो तरुओं में से लटक रहे हैं। संसार भर में ये सब श्रेष्ठ खिलौने— मेरे लिए ही उसने उनके रंगीन तथा स्वादयोग्य ढेर लगा रखे हैं। ६ खाने के लिए पदार्थ— कान न अघायें, ऐसे श्रवण-योग्य अच्छे गीत; एक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नभ-मंडल के (मंजु) मीन हैं तारे (सुन्दर)।
चमक रहे छोटी मणियों के तुल्य मनोहर ॥
उन मणियों से भरा हुआ है सारा अंबर।
(मम माता की ज्योति दमकती नभ - मंडल पर) ॥
मणि-तारों की गणना करनें को मन करता।
साध्य नहीं पर वह प्रयत्न है मुझको लगता ॥
विविध वनों में भरे हुए पर्वत हैं अगणित।
मौन अडिग रहते न स्थान से होते विचलित ॥
देखो वे (सर्वदा समोद) खेलने आते।
एक शब्द भी अपने मुख से नहीं सुनाते ॥ ४ ॥
सुन्दर - सुन्दर नदियाँ देखो कैसी शोभित।
ये सम्पूर्ण देश में हैं हो रही प्रवाहित ॥
दौड़ - दौड़कर सदा खेलनें ये आती हैं।
(कलकल - छलछल सुन्दर स्वर से ये गाती हैं) ॥
जिस विशाल सागर में गिरतीं धीरे बहकर।
(ललित) खिलौना अति विशाल - तम है वह सागर ॥
उसकी सीमा का न अन्त कोई भी पाता।
उठा तरंगें झाग बनाता, गायन गाता ॥
"ओल्" शब्द-मय है वह उसका गीत (मनोहर)।
ॐ नाम माता का पावन है गुंजित स्वर ॥ ५ ॥
बाग़ - बगीचे उसने मुझको दिये मनोहर।
रंग - बिरंगे फूल दिये मणियों से (भास्वर) ॥
तरु की शाखाओं में लटके हुए (मनोहर)।
मधुर - स्वाद - युत बहु फल मुझे दिये (हरषाकर) ॥
सर्वश्रेष्ठ रंगीन खिलौने ये (मनमाने)।
ढेर हमारे लिए लगाये हैं माता ने ॥ ६ ॥
खाद्य - पदार्थ अनेक दिये जिनको हम खायें।
श्रवण योग्य शुभ गीत दिये जिनसे न अघायें ॥
सच्चे साथी बुद्धिमान हैं दिये मित्रवर।
(जो सदैव करते सहायता, सच्चे हितकर) ॥
प्रेम मधुर औ' क्रूर अग्नि के ही तो सम है।
प्रेम अग्नि है, किन्तु स्वाद तो, अमृतोपम है ॥
प्रेम - अग्नि औ' प्रेम - स्वाद - फल मधुर मनोहर।
चखूँ युगल, इसलिए स्त्रियों से रखा घेरकर ॥ ७ ॥

बनकर साथ रहने के लिए बुद्धिमान् सच्चे मित्र —उस माता ने दिये। जो प्रेम मधुर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इऱुहुडैप् पऱवैहळुम्— निलन्, दिरिन्दिडुम् विलङ्गुहळ् ऊर्वन हळ्
अऱैकडल् निऱैन्दिडवे— अॅण्णिल्, अमैत्तिडऱ् कॉरियपल् पहैप्पडवे
शुऱवुहळ् मीन्वहैहळ्— अॅनत्, तोळ्ऱ्हळ् पलरुमिङ् गॅनक्कवित् ताळ्;
निऱैबुऱ इन्बम् वॅत्ताळ्— अदै, निनैक्कवुम् मुळुदिलुङ् गूडुदिल्लै 8
शात्तिरङ् गोडि वॅत्ताळ्;— अवै
तम्मिनुक्कु उयर्न्दोर् ज्ञानम् वॅत्ताळ्
मीत्तिडुम् पॉळुदिनिले नान्
वेडिक्कै युऱक् कण्डु नहैप् पदऱ्के
कोत्तपॉय् वेदङ्गळुम्— मदक्
कॉलैहळुम् अरशर्तम् कूत्तुक्कळुम्
मूत्तवर् पॉय्नडैयुम्— इन
मूडर्तम् कवलैयुम् अवळ्पुनैन्दाळ् 9
वेण्डिय कॉडुत्तिडु वाळ्;— अवै
विरुम्बुमुन् कॉडुत्तिड विरैन्दिडु वाळ्;
आण्डरुळ् पुरिन्दिडु वाळ्— अण्णन्
अरुच्चुनन् पोलैनै आक्किडुवाळ्
याण्डुमॅक् कालत् तिलुम्— अवळ्
इन्नरुळ् पाडुनर् ऱॉळिल् पुरिवेन्;
नीण्डदोर् पुहळ्वाळ्वुम्— पिऱ
निहररु पॅरुमैयुम् अवळ् कॉडुप्पाळ् 10

कण्णन् अॅन् तन्दै— 3

(नॉण्डिच् चिन्दु)

पिरदान रसम्— अऱ्पुदम्

पूमिक् कॅनैय नुप्पिनान्;— अन्दप्, पुदुमण्ड लत्तिलैन् तम्बिह ळुण्डु;
नेमित्त नॅरिप्पडिये— इन्द, नॅडुवॅळि यॅङ्गणुम् नित्तम् उरुण्डे

तथा क्रूर, अग्नि एवं अग्नि के स्वाद का अमृत है, उस अच्छे प्रकार के प्रेम के लिए मुझे स्त्रियों से घिरा रखा। ७ पंख वाले पक्षी; धरती पर घूमनेवाले पशु, रेंगनेवाले, शब्दायमान समुद्र को भरे रहनेवाले, असंख्य वर्गों के मगर-मच्छ —ऐसे कितने मित्र उसने मुझे दिये। सुख भरपूर दिया। (उसके बारे में) पूर्ण रूप से सोचना भी असाध्य है। ८ उसने करोड़ों शास्त्र रच दिये हैं। उनसे ऊपर कोई ज्ञान है, उसका भी उसने विधान किया है। समय बचा तो मैं विनोद देख लूँ, इसके लिए उसने झूठे वेद, साम्प्रदायिक हत्याएँ, वृद्धों की झूठी चालें, सांप्रदायिक मूढ़ों की चिन्ताएँ —यह सब उसने रचा। ९ जो चाहो, वह दे देगी। वह उन्हें इच्छा करने के पूर्व ही

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(नभ में उड़नेवाले) पंखों वाले खगवर।
भू पर विचरण करनेवाले पशु (अति सुन्दर)॥
धरती - बीच रेंगनेवाले (विविध) जन्तुवर।
मगर - मच्छ आदिक सागर के प्राणी (जलचर)॥
इस प्रकार के मित्र अनेकों दिये (मनोहर)।
दिये अमित सुख इतने जिन्हें सोचना दुष्कर॥ ८ ॥
कोटि कला - विज्ञान, शास्त्र सबका विधान है।
इनसे बढ़कर दिया ज्ञान जो अति महान है॥
खाली समय बचे तो मन को बहलाने को।
झूठे ग्रन्थ रचे विनोद (-सुख बरसाने को)॥
वृद्ध जनों की झूठी चालें रचीं (उग्रतर)।
और साम्प्रदायिक हत्याएँ रचीं (भयंकर)॥
नाना जाति - भेद की कटुता को फैलायें।
मूढ़ों की ऐसी विरचीं विचार - धारायें॥ ९ ॥
दे देगी वह सभी वस्तुएँ मन की वांछित।
बिना याचना के ही देगी वस्तु (अयाचित)॥
दया दिखाकर (सदा) करेगी शासन मुझ पर।
अर्जुन के ही तुल्य करेगी मुझे श्रेष्ठतर॥
किसी काल में जहाँ कहीं पर भी मैं जाऊँ।
उसकी मंगलमयी दया के गायन गाऊँ॥
तो वह देगी मुझे विपुल यश, लंबा जीवन।
और दिलायेगी वह अनुपम गौरव (का धन)॥ १० ॥

कान्हा : मेरा पिता—३

उसने भेजा मुझे (दया कर) इस धरती पर।
जिस मंडल में बसे हमारे विविध भ्रातृवर॥
मेरा है जो वर्ग उसी के ही समस्त जन।
विविध भूमियों पर करते हैं इच्छित शासन॥

देने की उतावली करेगी। मुझे शासित करके मुझ पर दया करेगी। वह मुझे श्रेष्ठ भ्राता अर्जुन के समान बना देगी। मैं कहीं भी, किसी समय भी, उसकी मंगलकारिणी दया का महिमा-गान करने का कार्य करूँगा। वह मुझे विपुल यश-भरा दीर्घ जीवन और अन्य अनुपम गौरव दिला देगी। १०

कान्हा : मेरा पिता—३

उसने भूमि पर मुझे भेजा। इस नये भू-मंडल में मेरे अनेक छोटे भाई हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पोमित् तरैहळि लॅल्लाम्— मनम्, पोलविरुन् दाळुबवर् अॅङ्ग ळिनत्तार्
शामि इवर्रिनुक् कॅल्लाम्— अॅङ्गळ्, तन्दैयवन् शरिदैहळ् शिरि दुरैप्पेन् 1

शॅल्वत्तिर्कोर् कुरैयिल्लै— अॅन्दै
शेमित्तु वैत्त पॉन्नुक् कळबॉन् रिल्लै;
कल्वियिल् मिहच् चिरन्दोन्— अवन्
कविदैयिन् इनिमैयॉर् कणक्कि लिल्लै;
पल्वहै माण्बिनिडैये— कॉज्जम्
पयित्तियम् अडिक्कडि तोन्रुवदुण्डु;
नल्वळि शॅल्लुबवरै— मनम्
नैयुम्वरै शोतनैशॅय् नडत्तै युण्डु 2
नावु तुणिहुवदिल्लै— उण्मै
नामत्तै वॅळिप्पड उरैप्पदर्के;
यावरुन् दॅरिन्दिडवे— अॅङ्गळ्
ईशनॅन्रुम् कणणनॅन्रुम् शॉल्लुव दुण्डु
मूवहैप् पॅयर्पुनैन्दे— अवन्
मुहमरि यादवर् शण्डैहळ् शॅय्वार्;
तेवर् कुलत्तवन् अॅन्रे— अवन्
शैय्दितॅरि यादवर् शिलरुरैप्पार् 3
पिरन्ददु मरक्कुलत्तिल्— अवन्
पेदमर वळर्न्ददु इडैक्कुलत्तिल्;
शिरन्ददु पार्प्पनरुळ्ळे— शिल
शॅट्टिमक्क ळॉडुमिहप् पळक्क मुण्डु;
निरन्दनिर् करुमै कॉण्डान्— अवन्
नेयमुरक् कळिप्पदु पॉन्निरप् पॅण्गळ्;
तुरन्द नडैह ळुडैयान्— उङ्गळ्
शूनियप् पॉय्च् चात्तिरङ्गळ् कण्डु नहैप्पान् 4

नियमित मार्ग पर ही विशाल अवकाश में रोज लोटते चलनेवाले इन लोकों में अपनी इच्छानुसार रहकर शासन करते रहते हैं। हे स्वामी! मैं इनके —हमारे पिता के कुछ चरित्र सुनाऊँगा। १ उसके पास धन की कोई कमी नहीं। मेरे पिता ने, जो स्वर्ण बचाकर रखा है, उसका कोई माप नहीं। वह विद्या-विदग्ध है। उसकी कविताओं की मधुरता किसी गिनती में नहीं आती। इतनी विशिष्ट श्रेष्ठताएँ होने पर भी उसमें कभी-कभी थोड़ी विक्षिप्तता भी दिखाई देती है। सन्मार्ग पर चलनेवालों के मन को जर्जर करते हुए उनकी परीक्षा लेने का स्वभाव भी उसमें है। २ उसके सच्चे नाम का उच्चारण करने का साहस जीभ नहीं करती। सबको जताते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विविध भूमियाँ वे चलतीं नित नियमित पथ पर।
इस विशाल आकाश - उदर में गतिमय होकर॥
इस प्रकार के (गौरवशाली) पिता हमारे।
तुम्हें सुनाऊँगा चरित्र मैं उनके (सारे)॥ १॥
कमी नहीं है उनको कभी ज़रा भी धन की।
माप नहीं उनके सारे संचित कंचन की॥
वे हैं विद्या - कुशल मधुर उनकी कविताएँ।
वे अनुपम हैं (ललित रसों की हैं सरिताएँ)॥
यद्यपि सभी श्रेष्ठताओं के हैं वह भाजन।
कभी - कभी दिखला देते पर कुछ पागलपन॥
जो जन सच्चे धर्म - मार्ग पर चलनेवाले।
उन पर वे डालते भयंकर कड़े कसाले॥
कठिन परीक्षा इस प्रकार भक्तों की लेते।
है यह उनकी प्रकृति (अन्त में गौरव देते)॥ २॥
रसना में साहस न करे जो नामोच्चारण।
बाह्य रूप में उसे कृष्ण कहने का प्रचलन॥
मुख्य नाम तज किन्तु विविध नामों को रखते।
तब जाहिल आपस में लड़ते और झगड़ते॥
उसका सच्चा ज्ञान न जिनको वे मनमाने।
उसे देव - कुल का बतलाते हैं अनजाने॥ ३॥
जन्म लिया उनने प्रसिद्ध वीरों के कुल में।
उनका पालन हुआ किन्तु जाकर गोकुल में॥
ब्राह्मण - कुल से हुए प्रतिष्ठित औ' सम्मानित।
और श्रेष्ठियों से भी थे सदैव वे परिचित॥
यद्यपि तन पर श्याम वर्ण की छवि धारे हैं।
स्वर्ण - वर्ण वाली सुन्दरियों के प्यारे हैं॥
झूठे और खोखले तव शास्त्रों को लखकर।
वह संन्यस्त - स्वभाव हँसेगा अतिशय उन पर॥ ४॥

हुए उसे हमारा ईश्वर, कृष्ण (या कान्हा) कहने की रीति है। तीन तरह के नाम कल्पित करके उसका मुख न जाननेवाले आपस में लड़ते-झगड़ते हैं। वह भी होता है। उसका सच्चा ज्ञान न रखनेवाले उसे देवकुलोत्पन्न बताते हैं। ३ वह जनमा वीरों के कुल में और पला बिना भेदभाव के, ग्वाल-कुल में। प्रतिष्ठा हुई उसकी ब्राह्मण-कुल में। कुछ श्रेष्ठियों से भी उसका खूब परिचय था। वह रंग में काला है, पर उसकी प्रेम-केलि होती है स्वर्णवर्ण तरुणियों के साथ। वह संन्यस्त चाल-चलनवाला है। तुम्हारे खोखले झूठे शास्त्रों को देखकर वह हँसेगा। ४ वह ग़रीबों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एळैहळैत् तोळमै कॊळ्वान्— शॊल्वम्
एऱियार् तमैक्कण्डु शोऱि विळुवान्;
ताळ्वरुन् दुन्ब मदिलुम— नॆञ्जत्
तळर्च्चि कॊळ्ळादवर्क्कुच् चॆल्व मळिप्पान्
नाळिहैक्कॊर् पुत्ति उडैयान्;— ऒरु
नाळिरुन्द पडिमऱ्ऱॊर् नाळिनिलिल्लै पल
पाळिडत्तै नाडि यिरुप्पान्;— पल
पाट्टिनिलुम् कदैयिनिलुम् नेरम ळिप्पान् 5
इन्बत्तै इनिदॆन्नवुम्— तुन्बम्
इनिदिल्लै ऎन्ऱुमवन् ऎण्णुवदिल्लै;
अन्बु मिहवुडैयान्;— तॆळिन्
दऱिविनिल् उयिर्क्कुलम् एऱ्ऱु मुऱवे
वन्बुहळ् पल पुरिवान्— ऒरु
मन्दिरियुण् डॆन्दैक्कु विदियॆन्बवन्;
मुन्बु विदित्त दलैये— पिन्बु
मुऱैप्पडि अऱिन्दुण्ण मूट्टि विडुवान् 6
वेदङ्गळ् कोत्तु वैत्तान्— अन्द
वेदङ्गळ् मनिदर्तम् मॊळियि लिल्लै
वेदङ्ग ळॆन्ऱु पुवियोर्— शॊल्लुम्
वॆऱुङ्गदैत् तिरळिलव् वेदमिल्लै;
वेदङ्गळॆन्ऱवऱ् ऱुळळे— अवन्
वेदत्तिऱ्चिऱ् शिल कलन्ददुण्डु;
वेदङ्गळन्ऱि यॊन्ऱिल्लै— इन्द
मेदिनि मान्दर् शोलुम् वार्त्तैहळॆल्लाम् 7
नालु कुलङ्गळ् अमैत्तान्— अदे
नाशमुऱप् पुरिन्दनर् मूड मनिदर्,

से मैत्री कर लेगा। धन-मत्त लोगों को देखकर नाराज होगा। झुकाते हुए आनेवाले संकट-काल में भी, जो मन को शिथिल होने नहीं देते, उनको वह निधियाँ देगा। पल-पल में बदलते मन वाला है वह। एक दिन (आज) जैसा रहा, दूसरे दिन वह वैसा नहीं रहेगा। अनेक शून्य स्थानों को खोजकर वह वहाँ रहेगा। अनेक गीतों तथा कहानियों को सुनने में समय बितायगा। ५ वह सुख को सुख तथा दुख को असुखकर नहीं मानता। वह बहुत ही स्नेह रखनेवाला है! बुद्धि सुलझाकर मानव उन्नति करे—एतदर्थ वह अनेक विपरीत कार्य करेगा। उस मेरे पिता के एक मंत्री है, जो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दीन जनों का मित्र बनेगा (साधेगा हित)।
धन - मद में मतवालों को लख होगा क्रोधित ॥
अवनति - दायक कठिन संकटों के पड़ने पर।
मन को शिथिल नहीं होने देते हैं जो नर ॥
उनको निधियाँ देगा वह (अतिशय करुणाकर)।
पल - पल में है हृदय बदलता उसका (सुन्दर) ॥
है वह जैसा आज न वैसा कल होगा वह।
शून्यस्थान अनेक खोजकर वह लेगा रह ॥
सुनकर गीत अनेक कथाएँ (अगणित सुनकर)।
समय बितायेगा वह अपना (सुमधुर सुन्दर) ॥ ५ ॥
नहीं मानता है वह तो सुख को भी सुखकर।
नहीं मानता है वह तो दुख को भी दुखकर ॥
करे समुन्नति मानव अपनी मति सुलझाकर।
अतः करेगा कार्य (महा)-विपरीत (जटिलतर) ॥
वह अपार सुस्नेह सभी पर दिखलाता है।
उसका एक सचिव है जो विधि कहलाता है ॥
समझ - बूझकर कर्म - भोग पहले से निश्चित।
उन्हें भोगने - हेतु करेगा सबको प्रेरित ॥ ६ ॥
सब वेदों का उसने ही संकलन किया है।
किन्तु नहीं मानव - भाषा में कथन किया है ॥
भूतल - वासी जिनको आज वेद बतलाते।
वे तो निरे कहानी - संग्रह हैं दिखलाते ॥
इन लौकिक वेदों में भी कुछ अंश मिले हैं।
धरती के सत्पुरुषों के जो वचन घुले हैं ॥
वही वस्तुतः वेद - वचन हैं, यह निश्चय है।
अन्य सकल पोथों की गाथा में संशय है ॥ ७ ॥
उसने नर - समाज में चार वर्ण उपजाये।
मूढ़ मानवों ने वे वर्ण सभी विनशाये ॥

विधाता कहलाता है। पहले ही जो विहित है, उसको क्रम से जानकर वह (जीवों को) भुगतने देगा। ६ वेदों का संकलन कर रखा है उसने। पर वे वेद मानव-भाषाओं में नहीं हैं। भूलोकवासी जिन्हें वेद कहते हैं, उन निरे कहानी-संग्रहों में वे वेद नहीं हैं। जिनको वेद कहा जाता है, उनमें कुछ-कुछ उसके वेदों से मिले हुए हैं—यह बात है! भूमि के ये मानव जो कहते हैं, वे वेद के सिवा कुछ नहीं हैं। ७ उसने चार कुल (वर्ण) बनाए। उस व्यवस्था को मूढ़ मानवों ने नष्ट होने दिया। जो शील, कुल तथा कर्म में श्रेष्ठ हैं, वे ही उत्तम हैं। उच्च-नीच का यह भेद केवल वंश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शीलम् अऱिवु करुमम्— इवै
शिऱन्दवर् कुलत्तिनिऱ् चिऱन्दवराम्;
मेलवर् कीळवर् ऎन्ऱे— वॆरुम्
वेडत्तिऱ् पिऱप्पिनिल् विदिप्पन्नवाम्
पोलिच्चुवडियै यॆल्लाम्— इन्ऱु
पॊशुक्कि विट्टालॆवर्क्कुम् नन्मैयुण्डॆन्वान् 8
वयदु मुदिर्न्दु विडिन्नुम्— ऎन्वै
वालिबक् कळैयॆन्ऱुम् माऱुवदिल्लै;
तुयरिल्लै मूप्पुमिल्लै— ऎन्ऱुम्
शोर्विल्लै; नोयॊन्ऱु तॊडुवदिल्लै
पयमिल्लै, परिवॊन्ऱिल्लै— ऎवर्
पक्कमुम्निन् ऱॆदिर्प्पक्कम् वाट्टुवदिल्लै
नयमिहत् तॆरिन्दवन् काण्— तन्नि
नडुनिन्ऱु विदिच्चॆयल् कण्डु महिळ्वान् 9
तुन्बत्तिल् नॊन्दु वरुवोर्— तम्मैत्
तूवॆन् ऱिहळ्न्दु शॊल्लि लन्बु कन्निवान्;
अन्बिनॆक् कैक्कॊळ्ळॆन्बान्— तुन्बम्
अत्तनैयुम् अप्पॊळुदु तीर्न्दिडुम् ऎन्बान्;
ऎन्बुडै पट्टपॊळुदुम्— नॆञ्जिल्
एक्कमुऱप् पॊऱुप्पवर् तम्मै उहप्पान्;
इन्बत्तै ऎण्णु बवर्क्के— ऎन्ऱुम्
इन्बमिहत् तरुवदिल् इन्बमुडैयान् 10

कण्णन् : ऎन् शेवहन्—4

हूलिमिहक् केट्पार् कॊदुत्तदॆलाम् ताम् मऱप्पार्;
वेलै मिहवॆत्तिरुन्दाल् वीट्टिलै तङ्गिडुवार्;

तथा जन्म के आधार पर किया जाता है। वह यही कहता है कि सब नकली ग्रंथों को जला दो, तो सभी का हित होगा। ८ वह आयु में बड़ा हो गया है, तो भी तरुणाई का मुख-भाव नहीं गया है। उसके लिए दुख नहीं, वार्धक्य नहीं, थकावट नहीं और बीमारी उसे नहीं छूती। भय नहीं, कोई सहानुभूति नहीं; किसी एक के पक्ष में रहकर विपक्षी को सताने की उसमें आदत नहीं है। वह चातुर्य खूब जानता है। मध्यस्थ तथा अलिप्त रहकर वह विधाता का कार्य देखकर खुश होगा। ९ दुख-जर्जर होकर जो आते हैं, उनको धत् बताकर, उनकी निन्दा करके वह शरारत करेगा। वह कहेगा कि प्रेम को अपनाओ, तब सारा दुख दूर हो जायगा। हड्डियाँ टूटें, तब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शील - कर्म - कुल इन तीनों में जो बढ़कर हैं।
वही (जगत में कहलाते) सर्वोत्तम (नर) हैं॥
ऊँच-नीच का भेद-भाव (जो) जग में प्रचलित।
उसका है आधार जन्म औ' वेश (सु-परिचित)॥
इन नकली ग्रंथों को जभी जला दोगे तुम।
तभी सभी का हित होगा (हरषाओगे तुम)॥ ८॥
बड़ी आयु है तो भी तरुणों-सा मुख (शोभित)।
दुःख, बुढ़ापा, थकन नहीं होते परिलक्षित॥
भय से नहीं भीत, रोगों से नहीं प्रपीड़ित।
उसमें है न सहानुभूति जन - विशेष के प्रति॥
किसी एक का पक्षपात करके (मनमाना)।
नहीं जानता विपक्षियों को कभी सताना॥
तुम हो मात - पिता - सहचर सब कुछ मेरे हित।
चतुर और निर्लिप्त (वासनाओं से विरहित)।
(उदासीन) मध्यस्थ भाव से होकर संस्थित।
विधि के कार्य - कलाप देख (होता है प्रमुदित)॥ ९॥
जो दुख से जर्जर हैं उनको धता बताकर।
निन्दा करके और विविध उत्पात मचाकर॥
उनसे कहता है, तुम लोग प्रेम अपनाओ।
इस प्रकार अपने सारे दुख दूर भगाओ।
टूटें भले हड्डियाँ पर जो दुख सह लेगा।
ऐसे धीरज वाले को ही वह चाहेगा॥
जो जन सुख के लिए शरण इसकी आता है।
उस जन को सुख देकर के यह सुख पाता है॥ १०॥

कान्हा : मेरा सेवक—४

हैं नौकर माँगते बड़ी लंबी मजदूरी।
दिया-लिया सब भूल (जताते हैं मजबूरी)॥

भी जो दुख करते हुए भी सह लेंगे, उनको वह चाहेगा। सदा सुख-भाव रखनेवालों को सुख देने में वह सुख माननेवाला है। १०

कान्हा : मेरा सेवक—४

(नौकर) अधिक मजदूरी माँगते हैं। दिया गया सब भूल जाते हैं। जब काम अधिक है, तब वे अपने घर में ही रह जाते हैं। रे, कल क्यों नहीं आया? तो पूछने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एन्नटा नी नेऱ्ऱैक् किङ्गुवर विल्लै यॆन्ऱाल्
पान्नैयिले तेळिरुन्दु पल्लाल् कडित्त दॆन्बार्;
वीट्टिले पॆण्डाट्टि मेल् पूदम् वन्ददॆन्बार 5
पाट्टियार् शॆत्तुविट्ट पन्निरण्डाम् नाळॆन्बार्;
ओयामल् पॊय्युरैप्पार् ऒन्ऱुरैक्क वेरुशॆय्वार्;
तायादि योडु तन्नियिडत्ते पेशिडुवार्;
उळ्वीट्टुच् चॆय्दियॆल्लाम् ऊरम् बलत्तुरैप्पार्;
ऎळ्वीट्टिल् इल्लैयॆन्ऱाल् ऎङ्गुम् मुरशऱैवार्; 10
शेवहराल् पट्ट शिरममिह उण्डु कण्डीर्;
शेवहरिल् लाविडिलो शॆय्है नडक्कविल्लै
इङ्गिदन्नाल् यानुम् इडर्मिहुन्दु बाडुहैयिल्
ऎङ्गिरुन्दो वन्दान् इडैच् चादिनान् ऎन्ऱान्
"माडुकन्ऱु मेय्त्तिडुवेन् मक्कळै नान् कात्तिडुवेन् 15
वीडुपॆरुक्कि विळक्केऱ्ऱि वैत्तिडुवेन्;
शॊन्नपडि केट्पेन्; तुणिमणिहळ् कात्तिडुवेन्
शिन्नक् कुळन्दैक्कुच् चिङ्गारप् पाट्टिशॆत्ते
आट्टङ्गळ् काट्टि अळादपडि पार्त्तिडुवेन्
काट्टुवळि यान्नालुम् कळ्ळर्पय मान्नालुम् 20
इरविऱ् पहलिले ऎन्नेर मान्नालुम्
शिरमत्तैप् पार्प्पदिल्लै तेवरीर् तम्मुडने
शुऱ्ऱुवेन् तङ्गळुक्कोर् तुन्बमुरा मऱ्काप्पेन्
कऱ्ऱ वित्तैयेदु मिल्लै काट्टु मन्निदन्; ऐये!
आन्न पॊळुदुङ् गोलडि कुत्तुप्पोर् मऱ्पॊर् 25

पर बहाना बताते हैं कि घड़े में रहकर बिच्छू ने अपने दाँत से काटा था। या कहते हैं कि पत्नी पर भूत सवार हो आया था। ५ या यह कहते हैं कि नानी की मृत्यु का बारहवाँ दिन है! वे सतत झूठ कहते हैं। एक कहो, तो दूसरा करते हैं। हमारे ज्ञातियों से अकेले में बात करते हैं। घर का सारा रहस्य वे बस्ती की खुली सभा में खोल देते हैं। तिल (छोटी-सी वस्तु) घर में नहीं हो, तो सब कहीं ढिंढोरा पीट देते हैं। १० नौकरों के कारण कष्ट जो हमने सहे, वे बहुत थे। नौकर न हों, तो काम भी नहीं होता। इससे जब मैं कष्ट पाकर मुरझा रहा था, तब कहीं से (वह) आया और बोला— "ग्वाल-जाति का हूँ ('इडै' का 'मध्यस्थ' भी अर्थ है— अवतार मध्यस्थ जाति का समझा जाता है।) मैं गाय-बछड़े को चराऊँगा। बच्चों की देखभाल करूँगा। १५ मैं घर में झाड़ू लगाऊँगा। दीप जला रखूँगा। कथनानुसार चलूँगा। कपड़े-लत्ते की रक्षा करूँगा। छोटे बच्चों को, मोहक गीत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जब होता है काम अधिक तो कभी न आते।
पूछें क्यों आये न? बहाने तो बतलाते॥
मुझे घड़े में बैठे बिच्छू ने कल काटा।
या पत्नी पर हुआ भूत का विकट झपाटा॥ १-५॥

कल मेरी मृत नानी का था बारहवाँ दिन।
यों अनेक वे झूठ बोलते रहते अनगिन॥
एक काम यदि कहो उसे तज दूजा करते।
जाति-जनों के कान चुगलियों से वे भरते॥
घर का सारा भेद आम लोगों में कहते।
घर में यदि कुछ कमी, ढिंढोरा लिये पीटते॥ ६-१०॥

कष्ट अनेकों सहे नौकरों के ही कारण।
नौकर न हों काम भी तो न कभी पाता बन॥
इस प्रकार जब मैं मुरझाया कष्ट उठाकर।
तभी कहीं से (मम समीप) आया वह नौकर॥
बोला वह नौकर कि जाति का मैं हूँ ग्वाला।
बच्चे पालूँगा, गायों का भी रखवाला॥ ११-१५॥

घर में झाड़ दूँगा औ' दीपक बालूँगा।
सारे मैले कपड़े - लत्ते धो डालूँगा॥
छोटे बच्चों को मनमोहक गीत सुनाकर।
उनको सुन्दर खेल - तमाशे भी दिखलाकर॥
वे न ज़रा भी रोयें, ऐसा यत्न करूँगा।
वन या चोर —सदा विपदा में साथ रहूँगा॥ १६-२०॥

रात हो कि दिन, श्रम से नहीं डरूँगा।
कष्ट आपको न हो, सदा मैं साथ रहूँगा॥
हो न आपको दुःख करूँगा रक्षा (प्रतिपल)।
यद्यपि हममें नहीं ज़रा भी विद्या का बल॥
हे स्वामी! मैं (महा) - जंगली मूर्ख व्यक्ति हूँ।
लाठी, मुष्टियुद्ध, कुश्ती में मैं सशक्त हूँ॥ २१-२५॥

सुनाकर, खेल-तमाशे दिखाकर, देख लूंगा। वे नहीं रोयें। जंगली मार्ग हो या चोरों का भय हो— २० रात हो कि दिन, हमेशा, बिना श्रम की परवाह किये, मैं श्रीमान् के साथ-साथ घूमूंगा। मैं आपकी इस प्रकार रक्षा करूँगा कि आपको कोई दुख न हो। सीखी विद्या कुछ नहीं है! जंगली मनुष्य हूँ। स्वामी, तो भी लाठी चलाना, मुष्टियुद्ध, मल्लयुद्ध— २५ मैं जानता हूँ। ज़रा भी विश्वासघात नहीं करूंगा।"

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नान्ऱिवेन्; शर्ऱुम् नयवऱ् जन्नैपुरियेन्"
ऎन्ऱुपल शॊल्लि निन्ऱान्, 'एदुपॆयर् शॊल्' ऎन्ऱेन्
"ऒन्ऱुमिल्लै कण्णन्नॆन्बार् ऊरिलुळ्ळोर् ऎन्नै" यॆन्ऱान्
कट्टुऱुदि युळ्ळवुडल्; कण्णिले नल्लकुणम्
ऒट्टऱवे नन्ऱा उरैत्तिडुञ्जॊल्— ईङ्गिवऱ्ऱाल् 30
तक्कवन्नॆन् ऱुळ्ळत्ते शार्न्द मिळ्ळ्चियुडन्,
"मिक्कवुरै पलशॊल्लि विरुदुपल शार्ऱुहिऱाय्;
कूलियॆन्न केट्किन्ऱाय् ? कूऱु" हन्ऱेन् "ऐयन्नै !
तालिकट्टुम् पॆण्डाट्टि सन्ददिह ळेदुमिल्लै;
नान्नोर् तन्नियाळ् ! नरैतिरै तोन्ऱा विडिन्नुम्— 35
आन्नवयदिर् कळविल्लै; तेवरीर्
आदरित्तार् पोदुम् अडियेन्नै; नॆञ्जिलुळ्ळ
कादल् पॆरिदॆन्नक्कुक् काशु पॆरिदिल्लै" ऎन्ऱान्
पणडैक् कालत्तुप् पयित्तियत्तिल् ऒन्ऱॆन्नवे
कण्डु मिहवुम् कळिप्पुडने नान्नवन्ने 40
आळाहक् कॊण्डुविट्टेन् अन्ऱु मुदर्कॊण्डु
नाळाह नाळाह नम्मिडत्ते कण्ण नुक्कुप्
पर्ऱु मिहुन्दुवरल् पार्क्किन्ऱेन्; कण्णनाल्
पॆर्ऱुवरु नन्मैयॆल्लाम् पेशि मुडियादु
कण्णै इमैयिरण्डुम् काप्पदुपोल्, ऎन्ऱुकुडुम्बम् 45
वण्णमुऱक् काक्किन्ऱान् वायमुणुत्तल् कण्डऱियेन्
वीदि पॆरुक्कुहिऱान् वीडुशुलत साक्कुहिऱान्

ऐसी कई बातें कहकर वह खड़ा रहा। 'क्या नाम है ? कहो !' मैंने पूछा, तो उसने कहा— 'कुछ नहीं। गाँव वाले कण्णन कहते हैं मुझे'। सुगठित शरीर, आँखों में अच्छे भाव, श्रोता को वश में करते हुए अच्छी रीति से कहे गये शब्द --इनसे (प्रभावित होकर)। ३० 'योग्य है' —इस भाव के उठने से मन में उल्लास पैदा हुआ। मैंने कहा— "बहुत बातें बताकर अपनी अनेक विरुदें बताते हो। क्या मजदूरी माँगते हो ? बताओ"। "मंगल-सूत्र-बद्ध पत्नी, संततियाँ कुछ नहीं मेरे, मैं अकेला आदमी हूँ। बाल पकना, चमड़े में झुर्रियाँ पड़ना, कुछ नहीं दिखता-- ३५ तो भी बीती आयु का कोई हिसाब नहीं। श्रीमान् मुझे सहारा दें --इतना काफ़ी है। मन का प्रेम मेरे लिए बहुत बड़ा है, पैसा कुछ नहीं"। --उसने कहा। उसे प्राचीन काल के पागलों में से एक समझकर बहुत मोद के साथ मैंने-- ४० अपना सेवक बना लिया। उस दिन से देखता हूँ कि दिन के चलते-चलते कान्हा के प्रति मेरा लगाव बढ़ता जाता है। कान्हा द्वारा प्राप्त भलाइयों का वर्णन नहीं हो सकता। जैसे दोनों पलकें आँखों की रक्षा करती हैं, वैसे मेरे कुटुम्ब का-- ४५ वह श्लाघ्य रीति से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और कभी विश्वासघात मैं नहीं करूँगा।
(जो दे देंगे मुझे प्रेम से वह ले लूँगा)॥
मौन हो गया इस प्रकार वह बातें कहकर।
मैंने पूछा नाम, दिया तब उसने उत्तर॥
उसने मुझसे कहा ग्रामवासी सारे जन।
मेरा नाम पुकार सदा कहते हैं "कृष्णन्"॥
मैंने देखा था उसका अतीव सुगठित तन।
आँखों में अच्छे भावों का था उद्वेलन॥
भली भाँति से उसने (सुन्दर) कहे वचन थे।
हुआ प्रभावित उनसे मैं (वे वशीकरण थे)॥ २६-३०॥
"योग्य व्यक्ति है" ऐसा भाव उठा उर (पावन)।
जिससे हुआ अतीव उल्लसित था मेरा मन॥
गाते हो अपने गुण, बातें बहुत बनाते।
मज़दूरी क्या माँग रहे हो? नहीं बताते॥
वह बोला— "स्वामी! मैं तो हूँ व्यक्ति अकेला।
पत्नी और बाल-बच्चों का नहीं झमेला॥
नहीं पके हैं बाल, झुर्रियाँ नहीं वदन पर।
अभी नहीं मैं वृद्ध, (आयु का ज्ञात न अन्तर)॥ ३१-३५॥
है इतना पर्याप्त मुझे आश्रय दें श्रीमन।
स्वामी की बस प्रीति चाहता है मेरा मन॥
और न उर कामना, कमाऊँ मैं किञ्चित धन।
इस प्रकार बोला नौकर अतिशय विनीत बन॥
उसे पुराना पागल जान प्रफुल्लित होकर।
मैंने उसको बना लिया तब अपना नौकर॥ ३६-४०॥
इस प्रकार ज्यों-ज्यों था समय बीतता जाता।
त्यों-त्यों कान्हा से लगाव मम बढ़ता जाता॥
उसने मुझ पर किये (अमित) उपकार (सुशोभन)।
उनका मुझसे नहीं किया जा सकता वर्णन॥
जिस प्रकार पलकें करतीं नयनों का रक्षण।
उसी भाँति से किया हमारे कुल का पालन॥ ४१-४५॥
कभी सुनी उसके मुख से मैंने न शिकायत।
गलियों तक झाड़ू देता रहता था (संतत)॥

पालन करता है। कभी मैंने उसे शिकायत (धीमी आवाज़ में, अस्पष्ट भी) करता नहीं सुना है! गली में झाड़ू देता है। घर को साफ़ रखता है। दासियाँ अपराध

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तादिवर्शॆय् कुऱ्ऱमॆल्लाम् तट्टि यडक्कुहिऱान्
मक्कळुक्कु वात्ति वळर्प्पुत्ताय् वैत्तियत्ताय्
ऒक्कनयङ् गाट्टुहिऱान्; ऒन्ऱुङ् गुऱैविन्ऱिप् 50
पण्डमॆलाम् शेर्त्तुवैत्तुप् पाल्वाङ्गि मोर्वाङ्गिप्
पॆण्डुहळैत् ताय्पोऱ् पिरियमुऱ आदरित्तु
नण्बत्ताय् मन्दिरियाय् नल्ला शिरियत्तुमाय्;
पण्बिले तॆय्वमाय्प् पार्वैयिले शेवहत्ताय्
ऎङ्गिरुन्दो वन्दान् इडैच्चादियॆन्ऱु शॊन्नान् 55
इङ्गिवत्तै यात्पॆऱ्वे ऎन्न तवञ्जॆय्दु विट्टेन् !
कण्णन् ऎन्नदहत्ते काल्वैत्त नाळ्मुदलाय्
ऎण्णम् विचारम् ऎदुवुमवन् पॊऱुप्पाय्च्
चॆल्वम् इळमाण्बु; शीर्शिऱप्पु नऱ्कीर्त्ति
कल्वि अऱिवु कविदै शिवयोगम् 60
तॆळिवे वडिवाम् शिवज्ञानम् ऎन्ऱुम्
ऒळिशेर् नलमनैत्तुम् ओङ्गिवरु हिन्ऱत्तकाण् !
कण्णत्तै नान् आट्कॊण्डेन् ! कण्कॊण्डेन् ! कण्कॊण्डेन् !
कण्णत्तै याट्कॊळळक् कारणमुम् उळ्ळत्तवे ! 64

कण्णन् ऎन् अरशन्—5

पहैमै मुऱ्ऱि मुदिर्न्दिडु मट्टिलुम्
पार्त्तिरुप्प दल्ला लॊन्ऱुञ् जॆय्दिडान्;

करें, तो उन्हें डाँटकर विवस्त्र बना देता है। ५० बच्चों के लिए अध्यापक, धाय तथा वैद्य बनकर स्निग्ध रीति से अच्छा करता है। बिना किसी की भी कमी के, सभी वस्तुओं का संग्रह करके रखता है! वह दूध ले आता है, छाछ खरीद लाता है। घर की स्त्रियों का माता के समान आदर के साथ हित करता है। मित्र, मंत्री तथा श्रेष्ठ गुरु, गुण में देव तथा देखने में नौकर —यह कहीं से आया और अपने को उसने 'ग्वाल-जाति' का बताया। ५५ (मानो) मैंने इसे यहाँ पाने के लिए कितना ही तप किया है। जब से कान्हा ने मेरे घर में या ('गृहम्' का 'घर' के अलावा 'हृदय' अर्थ भी है) हृदय में पैर रखा, उस दिन से विचार, चिन्ता सब उसका दायित्व हो गया। धन, यौवन, गौरव, सत्कीर्ति, विद्या, कविता, शिव-योग, शुद्ध शिव-ज्ञान, सदा-- ६० प्रकाशमान सभी भलाइयाँ उन्नत होती आती हैं —देख लो। कान्हा को सेवक क्या बना लिया-- आँखें पा लीं। आँखें पा लीं (कण्णन् में जो 'कण' है, उसका अर्थ 'आँख' है। वे सभी के नेत्र-स्वरूप हैं-- यानी सभी आँखों की वे सच्ची आँख या दृष्टि है। अतः वह 'कण्णन्' कहा जाता है।) आँखें पा लीं। कान्हा को सेवक बनाने के कारण भी होते हैं अवश्य। ६४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

घर को सदा साफ़ रखता था वह सेवा-रत।
लाता दूध ख़रीद, छाँछ लाता था (अविरत)॥
यदि करतीं अपराध दासियाँ, उन्हें डाँटकर।
नम्र बनाता था उनको (सप्रेम समझाकर)॥
बच्चों का वह धाय, चिकित्सक, अध्यापक था।
सभी भाँति करता वह उनका हित (व्यापक) था॥
सभी वस्तुओं का संग्रह करके रखता था।
कमी न उसके कामों में (कोई लखता था)॥
सभी स्त्रियों का करता माता-सम हित आदर।
मंत्री, मित्र, देव, गुरु—सब कुछ था वह नौकर॥
क्या जाने, किस देश ? कहाँ से ? था वह आया ?।
आ करके अपने को था ग्वाला बतलाया॥ ४६-५५॥

(कान्हा मेरा धन्य ! पिता, माता, सहचर है)।
(और वही सेवक ! सब कुछ, अतीव सुखकर है)॥
कितना ही तप किया इसे तब मैंने पाया।
चलकर अपने आप हमारे घर वह आया॥
जब से कान्हा ने मेरे घर किया पदार्पण।
चिन्ता और विचार उसे सब हुए समर्पण॥
विद्या, कविता, सुयश, योग, गौरव, धन, यौवन।
और शुद्ध शिव - ज्ञान प्रकाशित सारे सद्गुण॥
उसी दिवस से ये सब होते जाते उन्नत।
कान्ह हमारा भृत्य सदा करता रहता हित॥ ५६-६०॥

कान्हा को सेवक क्या पाया ? आँखें पा लीं।
ज्ञान - चक्षु मिल गये, कृपाएँ हैं अपना लीं॥
बन जाता है प्यारा कान्हा सेवक जिसका।
(बन जाता है यह सारा जग सेवक उसका)॥ ६१-६४॥

कान्हा : मेरा राजा—५

जब तक नहीं शत्रुता पूर्ण प्रखर हो जाती।
जब तक नहीं चरम सीमा पर वह जा पाती॥

कान्हा : मेरा राजा—५

शत्रुता पक्की बनकर जब तक बिलकुल उसकी हद नहीं हो जाती, तब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नहैपुरिन्दु पॊरुत्तुप् पॊरुत्तैयो
नाट्कळ् मादङ्गळ् आण्डुहळ् पोक्कुवान् 1

कण्णन् वॆन्ऱु पहैमै यळिन्दुनाम्, कण्णिऱ् काण्ब दरिदॆन्ऱत् तोन्ऱुमे;
ऎण्णमिट् टॆण्णमिट्टुच् चलित्तुनाम्, इळन्द नाट्कळ् युहमॆन्ऱप् पोहुमे 2

पडैहळ् शेर्त्तल् परिशन्नम् शेर्त्तिडल्
पणमुण् डाक्कल् ऎदुवुम् पुरिन्दिडान्
"इटैयन् वारमिलादवन् अञ्जिनोन्"
ऎन्ऱवऱ् शॊलुम् एच्चिऱ्कु नाणिलान् 3

कॊल्लप् पूद मनुप्पिडु मामन्ने
कोलुयर्त्तुल हाण्डु कळित्तिड
मुल्लं मॆन्नहै मादर्क्कुम् पाट्टिऱ्कुम्
मोह मुऱुप् पॊळुदुहळ् पोक्कुवान् 4

वान् नोर्क्कु वरुन्दुम् पयिरॆन्न
मान्दवर् मऱ्ऱिवण पोर्क्कुत् तविर्क्कवुम्
तान्नम् कीर्त्तनै ताळङ्गळ् कूत्तुक्कळ्
तन्निमै वेय्ङ्गुळल् ऎन्ऱिवै पोऱ्ऱुवान् 5

कालिनैक् कैयिनाल् पऱ्ऱिक् कॊण्डुनाम्
कदियॆमक् कॊन्ऱु काट्टुवै यॆन्ऱिट्टाल्

तक वह उसे देखते रहने के सिवाय कुछ नहीं करेगा। हँसते हुए क्षमा करते-करते, हाय! दिन, मास, बरसों बिता देगा। १ हमें यह लगता है कि कान्हा शत्रुता का अन्त कर देगा; किन्तु हमें वह (दिन) देखने को मिलना कठिन है। वैसा (वह समय कब आयेगा, यह) सोचते-सोचते उकताहट के साथ जो दिन हम व्यय करेंगे, वे युग बन जायँगे। २ सेना इकट्ठा करना, परिजन एकत्रित करना, धन-अर्जन करना —कुछ नहीं करेगा। 'ग्वाला है, वीर नहीं है। डर गया' —यह कहने पर भी इस हेठी से भी वह नहीं शरमाता। ३ उसको मारने के लिए जिसने भूत को भेजा था, उस मामा के राज-दण्ड उन्नत करते, भूमि का शासन करते, सुखी रहते समय भी वह जुही की कली-से दाँतवाली तरुणियों तथा उनके गीतों पर मुग्ध होकर समय बिताता रहेगा। ४ आकाश की बूंदों के लिए तरसनेवाले पौधों के समान जब लोग इधर युद्ध की प्रतीक्षा में छटपटाते रहे, तब वह गान, कीर्तन, वाद्य, नृत्य, अकेले में मुरली बजाना —आदि को महत्त्व देता रहा! ५ उसका चरण पकड़कर अगर हम विनय करें कि हमारे लिए गति (मार्ग) दिखाओ, तो वह (गूढ़ शब्दों में) कहेगा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तब तक (मेरा कान्ह) देखता ही रहता है।
तब तक (शत्रु-विरुद्ध) नहीं कुछ भी करता है॥
दिन औ' मास बिता देगा वह हँसते - हँसते।
होंगे वर्ष व्यतीत क्षमा ही करते - करते॥ १ ॥

कान्ह करेगा अन्त शत्रुता का आखिर कब ?।
वह दिन हमें देखना भी शायद दुष्कर अब॥
इस प्रकार सोचते - सोचते औ' उकताते।
हो जायेंगे युग व्यतीत यों ही (पछताते)॥ २ ॥

"नहीं सजेगा सैन्य, बुलायेगा नहिं परिजन।
नहीं करेगा (रंच मात्र भी) धन का अर्जन॥
वह अहीर है, वीर नहीं है, है भय - कातर"।
यह सुनता उपहास, न फिर भी होता आतुर॥
सुन यह भी अपवाद, न वह होता है लज्जित।
और नहीं अपमानों से होता है विचलित॥ ३ ॥

इसका मामा कंस शत्रु था इसका दुखकर।
इसे मारने को भेजे बहु असुर भयंकर॥
जब वह वैरी कंस भूमि पर करता शासन।
राजदंड उन्नत करके रहता हर्षित - मन॥
(यह कान्हा तब भी निश्चिन्त बना रहता था।
सदा गोपियों के सुस्नेह - सना रहता था)॥
नव-तरुणी हो जुही - कली - से दाँतों वाली।
अथवा हो कोई (कुब्जा) वृद्धा (छविशाली)॥
सब पर वह अपना अति घना प्रेम दरसाता।
(इसी भाँति निश्चिन्त भाव से) समय बिताता॥ ४ ॥

जिस प्रकार नभ से बूँदों को बरसाने को।
तरस रहे हों पौधे जैसे जल पाने को॥
उसी भाँति जब युद्ध - प्रतीक्षा में (घबराते)।
छटपटा रहे थे सब जन नित खैर मनाते॥
तब भी इसे सुहाता सदा नाचना - गाना।
देना दान, सुकीर्तन करना, मुरलि बजाना॥ ५ ॥

यदि हम उसके चरण पकड़कर विनय सुनायें।
और कहें— "हमको सद्गति का मार्ग दिखायें"॥
गूढ़ गिरा में तब वह इस प्रकार है कहता।
"गहो चार में एक, मिलेगी तुम्हें सफलता"॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नालि लॊन्ऱु पलित्तिडुङ् गाणॆन्बान्,
नामच् चॊल्लित् पोरुळॆङ् गुणर्वदे ? 6
नाम वन्बलि नम्बि यिरुक्कवुम्, नाण मिन्ऱिप् पदुङ्गि वळरुवान्
तीमै तन्नै विलक्कवुम् जॆय्हुवान्, शिऱुमै कॊण्डॊळित् तोडवुम् जॆय्हुवान् 7
तन्दि रङ्गळ् पयिलवुम् जॆय्हुवान्
शबुरि यङ्गळ् पळहवुम् जॆय्हुवान्
मन्दि रत्तिऱ् नुम्बल काट्टुवान्
बलिमै यिन्ऱिच् चिऱुमैयिल् वाळ्हुवान् 8
कालम् वन्बुकै कूडुमप् पोदिलोर्, कणत्ति लेपुदि दाह विळङ्गुवान्;
आल काल बिडत्तिनैप् पोलवे, अहिल मुऱ्ऱुम् अशैन्दिडच् चीऱुवान् 9
वेरुम् वेरडि मण्णु मिलामले
वॆम्बुपोहप् पहैमै वॊशुक्कुवान्;
पारुम् वानमुम् आयिर माण्डुहळ्
पट्ट तुन्बङ्गळ् कणत्तिडै माऱ्ऱुवान् 10
शक्करत्तै यॆडुप्प दॊरुकणम्
तरुमम् पारिल् तळैत्तल् मऱुकणम्
इक्कणत्तिल् इडैक्कण मॊन्ऱुणडो ?
इदनुळ् ळैपहै माय्त्तिड वल्लन्काण् ! 11
कण्णनॆङ्गळ् अरशन् पुहळिनैक्, कविदै कॊण्डॆन्दक् कालमुम् पोऱ्ऱुवेन्;
तिण्णैबायिल् पॆरुक्कवन् देनेनैत्, तेशम् बोऱ्ऱत् तन्मन्दिरि याक्किनान् 12
नित्तच् चोऱ्ऱिनुक् केवल् शॆयवन्देन्, निहरिलाप् पॆरुञ्जॆल्व मुदविनान्
बिस्तैनन्गु कल्लादवन् ऎन्नुळे, वेदनुट्पय् विळङ्गिडच् चॆय्दिट्टान् 13

कि चार में एक कारगर होगा ! उसका अर्थ हम कहाँ से जानें ? ६ जब हम उसके बल का आश्रय लिये रहते हैं, तब वह निर्लज्ज कहीं लुक-छिपकर आ जायगा। कभी संकटों को दूर करेगा, तो कभी हल्कापन दिखाकर छिपकर भाग जायगा। ७ वह आलसाजी का अभ्यास करेगा, तो शौर्य का भी अभ्यास करेगा। मंत्र-दक्षता भी प्रकट करेगा, तो कभी निर्बल बनकर हीनता का जीवन बितायगा। ८ जब मौका आकर मिल जाता है, तब वह एक क्षण नया ही दिखेगा। हलाहल विष के समान सारी सृष्टि को कँपाते हुए गुस्सा दिखायगा। ९ वह यों जला देगा कि शत्रु जड़ तथा जड़ की मिट्टी तक खोकर जल जाय (निर्मूल हो जाय)। वह आकाश और भूमि का हजार वर्षों का सहा दुख एक ही क्षण में दूर कर देगा। १० इस क्षण वह चक्र हाथ में ले, तो अगले क्षण भूमि में धर्म पनप उठेगा। क्षण के अन्दर ! —क्या कोई अन्तर है ? उसी में वह शत्रु का हनन कर सकता है, जान लो। ११ मैं हमारे राजा कान्हा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(उसकी गूढ़ गिरा को हम कैसे पहचानें ?)।
कैसे समझें अर्थ (धैर्य उर कैसे मानें ?) ॥ ६ ॥
उसके बल के जब रहते हम लोग सहारे।
वह निर्लज्ज कहीं छिप जाता (हमें बिसारे) ॥
कभी - कभी वह संकट भी है सुलझा देता।
कभी तुच्छता दिखा लुप्त होता, भग जाता ॥ ७ ॥
षडयंत्रों का कभी कान्ह अभ्यास करेगा।
कभी वीरता का भी (प्रबल) प्रयास करेगा ॥
कभी मंत्रणा - दक्ष, मंत्र - दाता बन जाता।
निर्बल बनकर हीन ज़िन्दगी कभी बिताता ॥ ८ ॥
कभी - कभी जब है उसको अवसर मिल जाता।
क्षण भर में ही नया रूप अपना प्रकटाता ॥
हालाहल विष के समान सब विश्व कँपाता।
(रिपुओं - दुर्दमनों पर भीषण) कोप दिखाता ॥ ९ ॥
शत्रु, शत्रु की जड़, जड़ की मृत्तिका खोदकर।
कभी जलायेगा इस भाँति भयंकर होकर ॥
जो दुख सहा सहस वर्षों से क्षिति - अंबर में।
कभी मिटा देता उनको यह क्षण ही भर में ॥ १० ॥
जिस क्षण यह लेगा निज कर में चक्र भयंकर।
पनप उठेगा धर्म उसी क्षण इस धरती पर ॥
क्षण भर का अन्तर भी क्या होता है अन्तर !।
शत्रु - हनन कर देता यह क्षण भर के अन्दर ॥ ११ ॥
मैं अपने राजा कान्हा की कीर्ति सुनाऊँ।
कविता द्वारा उसकी (सुन्दर) महिमा गाऊँ ॥
मैं उसके द्वारे पर झाड़ देने आया।
उसने निज मंत्री जग - विश्रुत मुझे बनाया ॥ १२ ॥
उदर - पूर्ति - हित उसकी सेवा करने आया।
उसने (कृपा दिखा) अनुपम धन मुझे दिलाया ॥
(अज्ञ रहा) मैं कुछ भी विद्या सीख न पाया।
पर उसने मेरे मन में वेदार्थ सुझाया ॥ १३ ॥

की कीर्ति की महिमा सदा कविता द्वारा गाऊँगा। आँगन और द्वार पर झाड़ू लगाने आये हुए उसने मुझे देश की प्रशंसा का पात्र, अपना मंत्री बना लिया। १२ रोज़ के भोजन के लिए सेवा-टहल करने आया मैं; मुझे उसने अनुपम बड़ा धन दिला दिया। विद्या मैंने अच्छी नहीं सीखी। पर उसने मेरे मन में वेदार्थ को प्रकाशित करा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णनॆम्बॆरु मानरुळ् वाऴ्हवे ! कलिय ऴिन्दु पुवित्तलम् वाऴ्हवे !
अण्ण लिन्नरुळ् नाडिय नाडुतान् अवलम् नोङ्गिप् पुहऴिल् उयर्हवे 14

कण्णन् : ऍन् शीडन्—6

(आशिरियप्पा)

यान्न याहि ऍन्नलार् पिऱवाय्
यानुम् अवैयुमाय् इरण्डिनुम् वेऱाय्
यादॊ पॊरुळाम् मायक् कण्णन्
ऍन्निलुम् अऱिविर् कुऱैन्दवन् पोलवुम्
ऍन्नैत् तुणैकॊण्डु ऍन्नुडै मुयऱ्चियाल् 5
ऍन्निडै पऴहलाल् ऍन्मॊऴि केट्टलाल्
मेम्बाडॆय्द वेण्डिनान् पोलवुम्
यान्शॊलुङ् कविदै ऍन्नदि यळवै
इवऱ्ऱिनैप् पॆरुमै यिलङ्गिन वॆन्ऱु
करुदुवान् पोलवुम्, कण्णन् कळ्वन् 10
शीडना वन्दॆनैव् चेर्न्दनन् तॆय्वमे !
पेदैयॆन् अव्वलैप् पिन्नलिल् वीऴ्न्दु
पट्टन तॊल्लै पलपॆरुम् बारदम्
उळत्तिनै वॆन्ऱिडेन्, उलहिन्नै वॆल्लवुम्
तान्नहञ् जुडादॆन् पिऱर्तमैत् तान्नॆनुम् 15
शिऱुमैयि नहऱ्ऱिच् चिवत्तिले निऱुत्तवुम्
तन्नुळे तॆळिवुम् शलिप्पिला महिऴ्च्चियुम्
उऱ्ऱिडेन्; इन्दच् चहत्तिले युळ्ळ
मान्दर्क् कुऱ्ऱ तुयरॆलाम् माऱ्ऱि
इन्बत् तिरुत्तवुम् ऍण्णिय पिऴैक्कॆनैत् 20

दिया। १३ हमारे प्रभु कान्हा की कृपा जिए! कलि का नाश हो; भू-तल उन्नति करे! प्रभु की मधुर कृपा का अभिलाषी यह देश दैन्य-रहित होकर यश में उन्नत हो। १४

कान्हा : मेरा शिष्य—६

मायावी कान्हा कोई अज्ञेय पदार्थ है, जो 'मैं' बना तथा मेरे सिवा 'अन्य' भी बना; 'मैं' और 'वे' और इन दोनों से पृथक् भी बना। तो भी मानो मुझसे बुद्धि में कम हो, मेरी सहायता लेकर मेरे प्रयत्न से— ५ मेरे साथ परिचय रखने से, मेरी वाणी सुनने से वह उन्नति करना चाहता हो। मानो, वह मेरी रचित कविता तथा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरे प्रभु कान्हा की कृपा जिये (शुभ संतत)।
हो कलि-(मल) का नाश और भूतल हो उन्नत ॥
मेरे प्रभु को मधुर कृपा का (शुभ) अभिलाषी।
दन्य - रहित हो देश बढ़े यश - कीर्ति (प्रभा - सी) ॥
(कान्हा मात, पिता कान्हा है, कान्हा संगी)।
(वह सेवक - सम्राट् अजब कान्हा बहुरंगी) ॥ १४ ॥

कान्हा : मेरा शिष्य—६

मैं औ' मुझसे पृथक अन्य जो भी धरती पर।
इन दोनों से पृथक वस्तु अज्ञेय कान्ह वर ॥
तो भी अपने को मुझसे मतिहीन जताकर।
मेरी सहायता ले मेरे ही प्रयत्न पर ॥ १-५ ॥

मुझसे परिचय करके मेरी वाणी सुनकर।
उन्नति करना चाह रहा हो मानो तत्पर ॥
मानो मेरे द्वारा निर्मित कविता सुन्दर।
औ' मम मति के माप-दंड का करता आदर ॥ ६-१० ॥

आया मेरे पास शिष्य मेरा वह बनकर।
फँसा जाल में, हुए कष्ट मुझको अति दुष्कर ॥
किया महाभारत औ' अगणित युद्ध बृहत्तर।
अपने मन को जीत न वश कर पाया उस पर ॥ ११-१५ ॥

विश्व जीतनें चला चित्त को जीत न पाया।
अहंकार भी नहीं किसी का दूर भगाया ॥
ब्राह्मी स्थिति में नहीं किसी को मैं ला पाया।
मन में निर्मल ज्ञान, अचल संतोष न आया ॥
मैंने अपने मन में भ्रांत विचार बनाया।
कर दुख दूर सभी को सुख दूँगा (मनभाया) ॥ १६-२० ॥

मेरी मति के माप को आदरणीय मानता हो। वह चोर कान्हा— १० शिष्य बनकर मेरे पास आया। हा देव! बेचारा मैं उस जाल में गिरा, तो कितने कष्ट हुए। 'महाभारत' अनेक और बड़े हुए। मैंने अपने मन को न जीता था, लोक को जीतने के लिए मैंने अपने चित्त को भी नहीं 'जलाया' था (उसको शून्य नहीं किया था)। दूसरों को 'अहंकार' की— १५ नीच स्थिति से अलग करके 'शिव' स्थिति में रखने के लिए आवश्यक अपने मन में निर्मल ज्ञान तथा अचल सन्तोष भी मैं नहीं रखता। पर मैंने यह (ग़लत) सोचा कि जग के सभी लोगों का दुख दूर करके, मैं उन्हें सुख में रखूँगा। इस अपराध के लिए मुझे— २० दण्ड देने के विचार से मायावी कान्हा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तण्डनै पुरिन्दिडत् तानुळङ् गॊण्डु,
मायक् कण्णन् बलिन्दॆनैच् चार्न्दु,
पुहळ्च्चिहळ् कूऱियुम् पुलमैयै वियन्दुम्
पल्वहै याल्अहप् पऱ्ऱुऱच् चॆय्दान्
वॆरुम्बाय् मॆल्लुङ् गिऴविक् किःदोर् 25
अवलाय् मूण्डदु यानुमङ् गवनै
उयर्निलैप् पडुत्तलिल् ऊक्क मिक्कवनाय्,
"इन्नदु शॆय्दिडेल्, इवरॊडु पऴहेल्,
इव्वहै मॊऴिन्दिडेल् इनैयन विरुम्बेल्
इन्नदु कऱ्ऱिडेल्, इन्नननूऱ् कऱ्पाय् 30
इन्नब रुऱबु कॊळ् इन्नवै विरुम्बुबाय्"
अॆनप्पल तरुमम् अॆडुत्तॆडुत् तोदि
ओय्विला दवनो डुयिर् विडलानॆन्
कदॆयिले कणबन् शॊल्लिनुक् कॆल्लाम्
अॆदिर्शॆयुम् मनैविपोल् इवनुम्नान् काट्टुम् 35
नॆऱियिनुक् कॆल्लाम् नेरॆदिर् नॆऱिये
नडप्पा नायिनन् नानिलत् तवर्तम्
मदिप्पैयुम् पुहळुरु बाळ्वैयुम् पुहळैयुम्
वॆय्बमाक् कॊण्ड शिऱुमीद युडयेन्,
कण्णनाञ् जोडन्यान् काट्टिय वऴियॆलाम् 40
विलहिये नडक्कुम् विनोदमिङ् गिन्ऱियुम्
उलहिनर् वॆऱुप्पुऱुम् ऒऴुक्क मत्तनैयुम्
तलैयाक् कॊण्डु शार्बॆलाम् पऴिच्चॊलुम्

ने जबरदस्ती मेरे पास आकर मेरी प्रशंसा की और मेरी विद्वत्ता पर विस्मय करके, अनेक रीति से मेरे मन में 'ममता' पैदा कर दी। यों ही खाली मुख चबानेवाली बूढ़ी को यह— २५ चिडड़ा मिल गया। (हमेशा कुछ न कुछ चुगली की इच्छा में रहनेवाले को कुछ ऐसी बात मिल जाय, तो यह कहावत प्रयुक्त की जाती है।) मैं भी उसको ऊँची स्थिति में लाने के लिए उत्साह-युक्त हो गया। उसे ताकीदें दीं कि अमुक काम न कर, अमुक लोगों से परिचय न रख, ऐसी बातें न बोल, ये बातें मत चाह, अमुक बात मत सीख, ये ही ग्रंथ सीख। ३० अमुक लोगों से मित्रता कर, ये वस्तुएँ चाह, आदि ऐसे अनेक धर्म बताकर मैं निरन्तर जान देने लगा (खूब परिश्रम करने लगा)। एक कहानी है, जिसमें कोई स्त्री अपने पति की सभी हिदायतों के खिलाफ़ काम करती है। उस पत्नी के समान वह भी मेरे बताये— ३५ सभी मार्गों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मायावी कान्हा सहसा मेरे ढिग आया।
इस अपराध हेतु कृपया उसने उकसाया॥
मेरी विद्वत्ता पर था विस्मय दिखलाया।
भाँति-भाँति से करी प्रशंसा दिखला माया॥
मेरे मन में उसने ममता-भाव जगाया।
मैं अयोग्य बन गया योग्य, अवसर अपनाया॥ २१-२५ ॥

मैं उत्साहित हुआ उसे उन्नत करने को।
शिक्षाएँ दीं उसे कहा स्वीकृत करने को॥
"मत कर ऐसा काम", "न कर ऐसों से परिचय"।
"मत कह ऐसी बात", "सीख ये ग्रंथ सुनिश्चय"॥
"ये बातें मत चाह", "सीख ऐसी बातें मत"।
"इनसे कर मित्रता", "वस्तुएँ कर ये स्वीकृत"॥ २६-३० ॥

इस प्रकार से सब प्रकार उसको सिखलाकर।
करने लगा प्रयत्न धर्म बहुविध बतलाकर॥
कहानियों में जैसे बात सुनी यह जाती।
कोई पत्नी पति-प्रतिकूल कार्य अपनाती॥
उसी भाँति उसने मेरे द्वारा बतलाये।
मार्गों के प्रतिकूल मार्ग सहसा अपनाये॥ ३१-३५ ॥

वन, गिरि, सरिता-तट, समुद्र-तट वाले भू-तल।
इन चारों से संबंधित विद्याएँ निर्मल॥
इनके ज्ञाता विज्ञवरों के शुभ आदर को।
और यशस्वी जीवन की शुभ कीर्ति प्रखर को॥
इन सबको देवता-समान माननेवाला।
अल्पबुद्धि वाला मनुष्य था मैं (मतवाला)॥
मैंने देखा कान्हा मेरा शिष्य यदपि है।
पर न बताये पथ पर वह चलता कदापि है॥ ३६-४० ॥

मेरे मार्गों से प्रतिकूल मार्ग अपनाता।
इस प्रकार मेरे मार्गों की हँसी उड़ाता॥
जिन कामों से सारा विश्व घृणा करता है।
उन कामों को यह अपने सिर पर धरता है॥

के ठीक उलटे मार्ग में जानेवाला बन गया। चतुर्विध (पर्वतीय, जंगली, नदी-तटीय, समुद्र-तटीय भू-भागों के) जगत् के वासियों के आदर को तथा यशस्वी जीवन की कीर्ति को देव-सा माननेवाले अल्पमति मनुष्य ने—मैंने यह देखा कि शिष्य कान्हा, मेरे बताये मार्ग से— ४० हटकर जाने का मस्खरापन करता है और इसके अलावा, लोक-वासियों द्वारा घृणा करने योग्य सभी चालों को सिर पर लेकर चलता है, सब ओर उसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इहऴुमिक् कवऩाय् ऎऩ्मऩम् वरुऩ्द
नडऩ्दिडल् कण्डेऩ्, नाट्पड नाट्पडक् 45
कण्णऩुमुऩ् कऴिपडु नडैयिल्
मिञ्जु वाऩाहि वीदियिऱ् पॆरियोर्
किऴविय रॆल्लाम् किऱुकऩैऩ् ऱिवऩै
इहऴ्च्चियो डिरक्कमुऱ् ऱेळऩम् पुरियुम्
निलैयुम् वऩ्दिट्टाऩ् ऩॆञ्जिले यॆऩक्कुऩ् 50
तोऩ्ऱिय वरुत्तम् शॊल्लिडप् पडादु
मुत्तऩाक् किडनाऩ् मुयऩ्ऱदोर् इळैञऩ्
पित्तऩॆऩ् ऱुलहिऩर् पेशिय पेच्चॆऩ्
ऩॆञ्जिऩै अऱुत्तदु नीदिहळ् पलवुम्
तऩ्दिरम् पलवुम् शात्तिरम् पलवुम् 55
शॊल्लिनाऩ् कण्णऩैस् ऩॊळैऩ्तिड लायिऩैऩ्
देव निलैयिले शेर्त्तिडा बिडिऩुम्,
माऩुडऩ् दवऱि मडिवुऱा वण्णम्
कण्णऩै नाऩुम् कात्तिड बिरुम्बित्
तायॆऩक् कॊदित्तुच् चिऩमॊऴि युरैत्तुम् 60
शिरित्तुरै कूऱियुम् शॆळ्ळॆऩ विऴुऩ्दुम्
केलिहळ् पेशिक् किळऱियुम् इऩ्ऩुम्
ऎत्तऩै वहैयिलो ऎऩ्वऴिक् कवऩैक्
कॊणर्ऩ्दिड मुयऩ्ऱेऩ्, कॊळ्पय ऩॊऩ्ऱिलै,
कण्णऩ् पित्तऩाय्क् काट्टा ळाहि, 65
ऎव्वहैत् तॊऴिलिलुम् ऎण्णमऱ् ऱवऩाय्
ऎव्वहैप् पयऩिलुङ् गरुत्तिऴऩ् दवऩाय्,
कुरङ्गाय्क् करडियाय् कॊम्बुडॆप् पिशाशाय्
यादो पॊरुळाय् ऎङ्ङऩो निऩ्ऱाऩ्
इदऩाल् 70

निन्दा तथा अपकीर्ति मिल रही है। और वह मेरे मन को दुखी करनेवाली चाल चलता है! दिन के बीतते— ४५ कान्हा भी अपने निन्दा करने योग्य चाल-चलन में बढ़ता गया और ऐसी स्थिति में पहुँच गया, जहाँ गली में बड़े लोग, बुढ़ियाँ —सब इसे पागल समझकर अवहेलना करके तथा सहानुभूति व्यक्त करते हुए परिहास करने लगे। मेरे मन में— ५० जो दुख हुआ, वह अकथनीय रहा। जिस तरुण को मैं 'मुक्त' बनाना चाहता था, उसे लोगों ने 'पागल' कहा— इस बात ने मेरे मन को काटा। अनेक नीतियाँ, अनेक तंत्र तथा अनेक शास्त्र— ५५ बताकर, मैं कान्हा को छेड़ने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सभी ओर से निन्दा औ' अपयश मिलता है।
मुझको दुखकर राह, उसी पर वह चलता है॥ ४१-४५ ॥
इस प्रकार से बीत गये कितने ही वासर।
कान्हा बढ़ने लगा निरन्तर वर्जित पथ पर॥
धीरे-धीरे ऐसी स्थिति आयी अति दुखकर।
गली-गली में बड़ी-बूढ़ियाँ और वृद्ध नर॥
इस कान्हा को पागल मूर्ख नितान्त समझकर।
लगे उड़ाने हँसी सभी मिल करके पथ पर॥
करते अवहेलना कहीं पर इसकी कुछ जन।
कुछ करते उपहास यदपि वे थे सहृदय-मन॥ ४६-५० ॥
चाह रहा था जिस नर को मैं मुक्त बनाना।
उसे सभी जग के लोगों ने पागल माना॥
अकथनीय दुख हुआ इसलिए मेरे मन में।
निरत हुआ मैं उसे बदलने के साधन में॥ ५१-५५ ॥
विविध नीतियाँ, विविध तंत्र, बहु शास्त्र सुनाकर।
मैं कान्हा को लगा छेदने (तत्पर होकर)॥
भले, अगर वह देव नहीं जग में बन पाये।
तो उसकी यह मानवता भी नहीं नशाये॥
सब प्रकार से कान्हा का करने परिवर्तन।
होकर क्रोधित भी मैंने कुछ कहे कटु वचन॥ ५६-६० ॥
उससे मैंने की अनेक बातें हँस-हँसकर।
उसको उकसाया अनेक ताने कस-कसकर॥
किये अनेकों यत्न कान्ह को सुधारने को।
(सुमति सिखाने और कुमति को विदारने को)॥
किन्तु चली कुछ नहीं, हुआ मैं नितान्त निष्फल।
बना रहा जंगली कान्ह पागल-का-पागल॥ ६१-६५ ॥
किसी कार्य में कभी नहीं वह चित्त जमाता।
और किसी भी फल की चाह नहीं जतलाता॥
कभी रीछ, तो भूत कभी बंदर बन जाता।
इस प्रकार वह भाँति-भाँति के रूप बनाता॥ ६६-७० ॥

लगा (सताने लगा)। चाहे उसे देव-स्थिति तक पहुँचा न पाऊँ, तो भी उसकी मानवता बची रहे —इस विचार से मैं कभी आग के समान उबलकर क्रुद्ध वचन कहता— ६० कभी हँसते हुए बातें करता, 'छिः छिः' कहकर बरस पड़ता, ताने कहकर उकसाता और कितने ही ढंग से उसे अपने मार्ग में लाने का प्रयत्न करता था। पर फल कुछ नहीं रहा। कान्हा पागल जंगली बना। ६५ वह किसी भी कार्य में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहन्दैयुम् ममदैयुम् आयिरय् पुण्णुऱ्
यात्कडुञ् जिनमुऱ्रु अॅव्वहै यानुम्
कण्णनै नेरुऱक् कण्डे तीर्प्पेन्
अॅनप्पॅरन् दाबम् अॅय्दिनै नाहि
"अॅव्वा रेनुम् इवनैयोर् तॉळिलिल् 75
ओरिडन् दन्तिल् ऑरुवळि वलिय
निऱुत्तुवो मायिन् नेरुऱ् ऱिडुवान्"
अॅन्ऱुळत् तॅण्णि इशैनदिडुञ् जमयङ्
गात्तिरुन् दिट्टेन् ऑरुनाळ् कण्णनैत्
तनिये अॅनदु वीट्टिनिऱ् कॉण्डु 80
"महने, अॅन्पाल् वरम्बिला नेशमुम्
अन्बुम् नी उडैये; अदनै यान्नम्बि
निन्निड मॉन्ऱु केट्पेन्; नीयदु
शॅय्दिडल् वेण्डुम् शेर्क्कैयिन् पडिये
मान्दर्तञ जॅयलाम् वहुप्पुऱल् कण्डाय् 85
शात्तिर नाट्टमुम् तरुक्कमुम् कविदैयिल्
मॅय्प्पॊरु ळाय्वदिल् मिञ्जिय विळैवुम्
कॉण्डार् तमैये अरुहिनिऱ् कॉण्डु
पॊरुळिनुक् कलैयुम् नेरम् पोह
मिञ्जिय पॊळुदॅलाम् अवरुडन् मेवि 90
इरुन्दिड लाहुमेल् अॅनक्कुनन् ऱुण्डाम्
पॊळुदॅलाम् अॅन्नुडन् पोक्किड विरुम्बुम्
अऱिवुडै महनिङ् गुनैयलाल् अरिन्दिडेन्,
आदलाल्
अॅन्पयन् करुदि, अॅनक्कॊरु तुणैयाय् 95

बत्तचित्त नहीं बना रहता, किसी भी फल की चाह नहीं करता था। बन्दर, रीछ, सींगवाला भूत-- कोई (अकल्पित) वस्तु (जीव) कुछ भी बनकर रहा ! इससे-- ७० मेरी अहंता तथा ममता सहस्र रूप से क्षत हुई। मैंने बहुत क्रुद्ध होकर सोचा, 'किसी भी तरह कान्हा को ठीक कर दूंगा'। संताप करके यह सोचा कि किसी तरह इसे किसी कार्य में-- ७५ जबरदस्ती लगाकर स्थिर रख लूंगा, तो वह सुधर जायगा। मैं उचित मौके की ताक में था। एक दिन कान्हा को अपने घर में अकेले ले जाकर--८० कहा-- "रे पुत्र ! तुम मेरे प्रति असीम स्नेह तथा प्रेम रखते हो। उस (बात)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरी ममता अहंकार सब हुए पराजित।
मैं अपने मन में हो उठा बहुत ही क्रोधित॥
अब मैं किसी प्रकार कान्ह को ठीक करूँगा।
किसी कार्य में इसे लगाकर (कुमति हरूँगा)॥ ७१-७५॥

बलपूर्वक, बस किसी कार्य में इसे लगाकर।
कर दूँगा मैं इसकी चंचल मति को सुस्थिर॥
इस प्रकार यह कान्हा शीघ्र सुधर जायेगा।
सोच रहा था समुचित मौका कब आयेगा॥
एक दिवस (मैंने कान्हा को बाहर पाया)।
(अंक लगाकर) उसको अपने घर ले आया॥ ७६-८०॥

मैंने कहा— "विदित है मुझको, पुत्र! कि मुझ पर।
रखते (सच्चा) प्रेम, असीम स्नेह अविनश्वर॥
हे कान्हा! विश्वास मानकर पूरा तुम पर।
माँग रहा हूँ तुमसे एक वस्तु (हो कातर)॥
मैं तुमसे जो कहूँ तुम्हें वह करना होगा।
(मेरी बातें तुम्हें हृदय में धरना होगा)॥
इस जग में जिसकी जैसी हो जाती संगति।
वैसी ही सानुरूप उससे प्रकृति, कार्य, मति॥ ८१-८५॥

कविता में हों कुशल शास्त्र में भी तत्पर हों।
सत्य तत्त्व के विश्लेषण में परम प्रखर हों॥
तर्क-शास्त्र में निपुण (विश्व में ऐसे नर हों)।
उनकी संगति करो (प्राप्त तुमको शुभ वर हों)॥
अर्थार्जन-हित प्रथम समय तुम कान्ह! लगाओ।
शेष समय ऐसे मनुजों के पास बिताओ॥ ८६-९०॥

यदि ऐसा तुम करो हमारा तो हित होगा।
(होंगे सब दुख दूर प्रमोद अपरिमित होगा)॥
जो मेरे सँग रहकर सारा समय बिताये।
ऐसा बुद्धिमान कोई न मुझे दिखलाये॥ ९१-९५॥

पर विश्वास करके, मैं तुमसे एक (चीज) माँगूंगा। तुमको वह करना होगा। संगति के अनुकूल ही मानवों के कार्य विभाजित होते हैं। ८५ शास्त्र में तत्परता, तर्क, कविता, सत्यतत्त्व-विश्लेषण आदि की अधिक इच्छा जिनमें हो, उनको पास रखकर, अर्थार्जन के लिए लगनेवाले समय को छोड़ बाक़ी समय में उनसे मिले— ९० रहो, तो मेरा भला होगा। तुम्हारे सिवा अन्य किसी बुद्धिमान मनुष्य को मैं नहीं जानता, जो सारा समय मेरे साथ बिताये। इसलिए मेरा लाभ सोचकर मेरा साथी बनकर— ९५ मेरे साथ कुछ दिन रहो। मैं यह तुमसे प्रार्थना करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऎन्नुडन् शिलनाळ् इरुन्दिड निन्नै
वेण्डि निर्कित्रेन्; वेण्डुदल् मरुत्ते
ऎन्नै नी तुन्बम् ऎय्दुवित् तिडामे
इव्वुरक् किणङ्गुवाय्" ऎन्रेन् कण्णनुम्
"अङ्ङन्ने पुरिवेन् आयिन् निन्तिडत्ने 100
तोळिलिलादु याङ्ङनम् शोम्बीरल् इरुप्पदु ?
कारिय मॊन्रु काट्टुवै यायिन्
इरुप्पेन्" ऎन्रान् इवनुडै इयल्बेयुम्
तिरनैयुङ् गरुदि ऎन्शॆय्युळै ऎल्लाम्
नल्लदोर् पिरदियिल् नाडॊडम् ऎळुदिक् 105
कॊडुत्तिडन् दॊळिलिन्नैक् कॊळ्ळुदि ऎन्रेन्
नन्रॆनक् कूरियोर् नाळिहै यिरुन्दान्;
'शॆल्वेन्' ऎन्रान् शिनत्तॊडु नानुम्
पळङ्गदै यॆळुदिय पहुदियॊन् रिनैयबन्
कैयिनिर् कॊडुत्तुक् 'कविनुर इदनै 110
ऎळुवुह' ऎन्रेन्; इणङ्गुवान् पोन्रदक्
कैयिले कॊण्डु कणप्पॊळु दिरुन्दान्
"शॆल्वेन्" ऎन्रान् शिनल्दी याहिनान्
"एदडा शॊन्नशॊल् अळित्तुरक् किन्राय्;
पित्तनन् रुन्नै उलहिनर् शॊल्वदु 115
"पिळैयिल पोलुम्" ऎन्रेन् अदर्कु
'नाळैवन् दिव्विन्नै नडत्तुवेन्' ऎन्रान्
"इत्तॊळि लिङ्गे इप्पॊळु दॆडुत्तुच्
चॆय्हित् रनैया ? शॆय्हुव दिल्लैया ?
ओरुरै शॊल्" लॆन् रुरुमिन्नेन् कण्णनुम् 120

प्रार्थना न मानकर मुझे दुख न पहुँचाओ। इससे सहमत हो जाओ।" —कहा मैंने। कान्हा ने भी कहा— 'वैसा ही मैं करूँगा। तो भी आपके पास— १०० विना काम के आलस्य में कैसे रहा जायगा? कोई काम दिखाओ, तो रहूँगा'। —कान्हा ने (ऐसा) कहा। इसका स्वभाव तथा योग्यता को जानकर मैंने कहा— 'मेरी सारी कविताओं की, रोज़, अच्छी प्रतियाँ बना— १०५ देने का कार्य करो'। 'अच्छा' कहकर वह एक घड़ी चुप रहा। फिर उसने कहा— 'चलूँगा'। तो मेरा क्रोध (का पारा) चढ़ गया। पुरानी कहानी का एक भाग उसके हाथ में देकर मैंने कहा— 'सुन्दर ढंग से इसको— ११० लिखा जाय'। मैंने कहा। वह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरे साथ रहो कुछ दिन मेरा हित लखकर।
यही प्रार्थना करता हूँ तुमसे मैं प्रियवर!॥
ठुकराकर प्रार्थना मुझे दुख मत पहुँचाओ।
मेरी बातों से अवश्य सहमत हो जाओ"॥
इस प्रकार जब मैंने कान्हा को समझाया।
तो उसने माना मेरा कहना (मनभाया)॥ ९६-१००॥
बोला कान्हा— "जो कहते हैं वही करूँगा।
किन्तु काम बिन नहीं आपके पास रहूँगा॥
बिना किये कुछ काम मुझे आलस घेरेगा।
(रहूँ उसी के पास काम जो मुझको देगा)"॥
तब मैंने उसका स्वभाव, योग्यता परखकर।
कहा— "तुम्हें मैं काम बताता अभी निरखकर॥१०१-१०५॥
"प्रतिदिन मेरी कविताओं की प्रतिलिपि करना।
(यही कार्य करके तुम मेरे मन को हरना)"॥
किया काम स्वीकार कान्ह ने— "अच्छा" कहकर।
"चलता हूँ" कह हुआ पुनः चलने को तत्पर॥
यह सुन मुझको उस पर क्रोध बहुत ही आया।
एक पुराना कथा-ग्रंथ उसको पकड़ाया॥
कहा— "भली विधि से तुम इसको देखभाल लो।
इसे तुम्हें लिखना है, तुम इसको सँभाल लो"॥१०६-११०॥
लिखने के हित कान्ह हो गया तत्क्षण सहमत।
फिर "जाता हूँ" बोल हुआ जाने को उद्यत॥
यह सुनकर मैं बोल उठा अति क्रोधित होकर।
"कैसी तू करता है बातें (सुध-बुध खोकर)।
अपने वचन मिटाकर तू कैसे जाता है।
सचमुच तू पागल है जैसा कहलाता है"॥१११-११५॥
यह सुन करके दिया कान्ह ने मुझको उत्तर।
"कर दूँगा यह काम आपका मैं कल आकर"॥
मैं गरजा— "यह काम अभी है तुमको करना।
संभव नहीं इसे करने से तुम्हें मुकरना॥११६-१२०॥

मानो सहमत हुआ हो। वह उसे हाथ में लेकर क्षण भर खड़ा रहा। उसने कहा, 'मैं जाऊँगा', तो मेरा क्रोध आग बना। 'क्यों रे! कहे वचन को मिटाकर बात कहते हो। तुम्हें लोग जो पागल कहते हैं, वह— ११५ ग़लत नहीं है शायद'। मैंने बताया। उसके उत्तर में उसने कहा कि कल आकर यह काम करूँगा। 'यह काम अभी (हाथ में) लेकर करोगे या नहीं करोगे? एक बात कहो।' —मैं गरजा। कान्हा ने भी— १२० पलक झपने के पहले कहा कि नहीं! झट से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"इल्लै"यॆन् ऱॊरुशॊल् इमैक्कुमुन् कूऱिनान्
वॆडुक्कॆनच् चिनत्ती वॆळ्ळमाय्प् पाय्न्दिडक्
कण्शिवन् दिदळ्हळ् तुडित्तिडक् कनन्ऱुनान्
"चीच्चि पेये ! शिऱिदुपोळ् देनुम्
इनियॆन् मुहत्तिन् अदिर्निन् ऱिडादे 125
ऍन्ऱुमिव् बुलहिल् ऍन्निडत् तिनिनी
पोन्दिडल् वेण्डा पोपो पो" ऍन्ऱु
इडियुऱ शॊन्नेन्; कण्णनुम् अळुन्दु
शॆल्हु वनायिनन् विळिनीर् शोर्न्दिड
"महने ! पॊहुदि वाळ्ह नी; निन्नैत् 130
तेवर् कात्तिडुह ! निन्ननैच् चॆय्मै
शॆय्दिडक् करुदि एदेदो शॆय्देन्
तोऱ्ऱविट् टेनडा ! शूळ्च्चिहळ् अळिन्देन्
मऱित्तिनि वाराय् शॆल्लुदि वाळि नी !"
ऍनत्तुयर् नीक्कि अमैदियो दिशैत्तेन् 135
शॆन्ऱनन् कण्णत् तिरुम्बियॊर् कणत्ते
ऍङ्गिरुन् दोनल् लॆळुदुकोल् कॊणर्न्दान्;
काट्टिय पहुदियैक् कविनुऱ वरन्दान्
"ऐयने निन्वळि यनत्तैयुङ् गॊळ्वेन्
तॊळिल्पल पुरवेन् तुन्बमिङ् गॊन्ऱुम् 140
इनिनिनक् कॆन्नाल् ऍय्दिडा" दनप्पल
नल्लशॊल् लुरत्तु नहैत्तनन् मऱन्दान्
मऱन्ददोर् कण्णन् मरुकणत् तॆन्ऱन्
नॆञ्जिले तोन्ऱि निहळ्त्तुवा नायिनन्;
"महने, ऒन्ऱै याक्कुदल् माऱ्ऱुदल् 145

क्रोध की आग बाढ़ के समान फैल गयी। मेरी आँखें लाल हुईं। अधर फड़क उठे। खोलकर मैंने कहा-- छिः छिः ! पिशाच ! जरा देर के लिए भी मेरे मुख के सामने मत खड़े रहो। १२५ इस संसार में कहीं भी मेरे पास नहीं आना ! जाओ, जाओ, जाओ ! --ऐसा मैंने कड़ककर कहा ! कान्हा भी उठकर चलने लगा। अश्रु के ढलते रहते मैं बोला-- पुत्र ! जाओ ! जिओ तुम ! देवता तुम्हारी रक्षा करें। १३० तुम्हें सुधारने का विचार करके मैंने क्या-क्या किया। मैं हार गया। एक उपाय-शून्य हो गया मैं। फिर आगे कभी मत आओ ! जाओ ! जय जीव ! रे ! मन का दुख मिटाकर शान्ति के साथ ऐसा कहा। १३५ कान्हा गया; पर वह क्षण में कहीं से एक अच्छी लेखनी लाया। जिस भाग को मैंने दिखाया था, उसको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मायावी कान्हा सहसा मेरे ढिग आया।
इस अपराध हेतु कृपया उसने उकसाया॥
मेरी विद्वत्ता पर था विस्मय दिखलाया।
भाँति-भाँति से करी प्रशंसा दिखला माया॥
मेरे मन में उसने ममता-भाव जगाया।
मैं अयोग्य बन गया योग्य, अवसर अपनाया॥ २१-२५ ॥

मैं उत्साहित हुआ उसे उन्नत करने को।
शिक्षाएँ दीं उसे कहा स्वीकृत करने को॥
"मत कर ऐसा काम", "न कर ऐसों से परिचय"।
"मत कह ऐसी बात", "सीख ये ग्रंथ सुनिश्चय"॥
"ये बातें मत चाह", "सीख ऐसी बातें मत"।
"इनसे कर मित्रता", "वस्तुएँ कर ये स्वीकृत"॥ २६-३० ॥

इस प्रकार से सब प्रकार उसको सिखलाकर।
करने लगा प्रयत्न धर्म बहुविध बतलाकर॥
कहानियों में जैसे बात सुनी यह जाती।
कोई पत्नी पति-प्रतिकूल कार्य अपनाती॥
उसी भाँति उसने मेरे द्वारा बतलाये।
मार्गों के प्रतिकूल मार्ग सहसा अपनाये॥ ३१-३५ ॥

वन, गिरि, सरिता-तट, समुद्र-तट वाले भू-तल।
इन चारों से संबंधित विद्याएँ निर्मल॥
इनके ज्ञाता विज्ञवरों के शुभ आदर को।
और यशस्वी जीवन की शुभ कीर्ति प्रखर को॥
इन सबको देवता-समान माननेवाला।
अल्पबुद्धि वाला मनुष्य था मैं (मतवाला)॥
मैंने देखा कान्हा मेरा शिष्य यदपि है।
पर न बताये पथ पर वह चलता कदापि है॥ ३६-४० ॥

मेरे मार्गों से प्रतिकूल मार्ग अपनाता।
इस प्रकार मेरे मार्गों की हँसी उड़ाता॥
जिन कामों से सारा विश्व घृणा करता है।
उन कामों को यह अपने सिर पर धरता है॥

के ठीक उलटे मार्ग में जानेवाला बन गया। चतुर्विध (पर्वतीय, जंगली, नदी-तटीय, समुद्र-तटीय भू-मार्गों के) जगत् के बासियों के आदर को तथा यशस्वी जीवन की कीर्ति को देव-सा माननेवाले अल्पमति मनुष्य ने—मैंने यह देखा कि शिष्य कान्हा, मेरे बताये मार्ग से— ४० हटकर जाने का मस्खरापन करता है और इसके अलावा, लोक-वासियों द्वारा घृणा करने योग्य सभी चालों को सिर पर लेकर चलता है, सब ओर उसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इहळुमिक् कवन्नाय् ऎत्मनम् वरुन्द
नडन्दिडल् कण्डेन्, नाट्पड नाट्पडक् 45
कण्णनुमुतन् कळिपडु नडैयिल्
मिञ्जु वान्नाहि वीदियिर् पॆरियोर्
किळविय रॆल्लाम् किरुकनॆन् रिवनै
इहळ्च्चियो डिरक्कमुर् रेळनम् पुरियुम्
निलैयुम् वन्दिट्टान् नॆञ्जिले यॆन्नक्कुत् 50
तोन्रिय वरुत्तम् शॊल्लिडप् पडादु
मुत्तन्नाक् किडनान् मुयन्रदोर् इळैञन्
पित्तनॆन् रुलहिन्नर् पेशिय पेच्चॆन्
नॆञ्जिनै अरुत्तदु नीदिहळ् पलवुम्
तन्दिरम् पलवुम् शात्तिरम् पलवुम् 55
शॊल्लिनान् कण्णनॆन् तॊळैन्तिड लायिन्नेन्
देव निलैयिले शेर्त्तिडा बिडिनुम्,
मानुडन् दवरि मडिवुरा वण्णम्
कण्णनै नानुम् कात्तिड बिरुम्बित्
तोयॆनक् कॊदित्तुच् चिनमॊळि युरैत्तुम् 60
शिरित्तुरै कूरियुम् शॊळ्ळॆन विळुन्दुम्
केलिहळ् पेशिक् किळरियुम् इन्नुम्
ऎत्तनै वहैयिलो ऎन्वळिक् कवनक्
कॊणर्न्दिड मुयन्रेन्, कॊळ्पय नॊन्रिलै,
कण्णन् पित्तनायक् काट्टा ळाहि, 65
ऎव्वहैत् तॊळिलिलुम् ऎण्णमर् रवनाय्
ऎव्वहैप् पयनिलुङ् गरुत्तिळन् दवनाय्,
कुरङ्गाय्क् करडियाय् कॊम्बुडैप् पिशाशाय्
यादो पॊरुळाय् ऎङ्ङनो नित्रान्
इदनाल् 70

निन्दा तथा अपकीर्ति मिल रही है। और वह मेरे मन को दुखी करनेवाली चाल चलता है! दिन के बीतते— ४५ कान्हा भी अपने निन्दा करने योग्य चाल-चलन में बढ़ता गया और ऐसी स्थिति में पहुँच गया, जहाँ गली में बड़े लोग, बुढ़ियाँ —सब इसे पागल समझकर अवहेलना करके तथा सहानुभूति व्यक्त करते हुए परिहास करने लगे। मेरे मन में— ५० जो दुख हुआ, वह अकथनीय रहा। जिस तरुण को मैं 'मुक्त' बनाना चाहता था, उसे लोगों ने 'पागल' कहा— इस बात ने मेरे मन को काटा। अनेक नीतियाँ, अनेक तंत्र तथा अनेक शास्त्र— ५५ बताकर, मैं कान्हा को छेदने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सभी ओर से निन्दा औ' अपयश मिलता है।
मुझको दुखकर राह, उसी पर वह चलता है॥ ४१-४५ ॥
इस प्रकार से बीत गये कितने ही वासर।
कान्हा बढ़ने लगा निरन्तर वर्जित पथ पर॥
धीरे-धीरे ऐसी स्थिति आयी अति दुखकर।
गली-गली में बड़ी-बूढ़ियाँ और वृद्ध नर॥
इस कान्हा को पागल मूर्ख नितान्त समझकर।
लगे उड़ाने हँसी सभी मिल करके पथ पर॥
करते अवहेलना कहीं पर इसकी कुछ जन।
कुछ करते उपहास यदपि वे थे सहृदय-मन॥ ४६-५० ॥
चाह रहा था जिस नर को मैं मुक्त बनाना।
उसे सभी जग के लोगों ने पागल माना॥
अकथनीय दुख हुआ इसलिए मेरे मन में।
निरत हुआ मैं उसे बदलने के साधन में॥ ५१-५५ ॥
विविध नीतियाँ, विविध तंत्र, बहु शास्त्र सुनाकर।
मैं कान्हा को लगा छेदने (तत्पर होकर)॥
भले, अगर वह देव नहीं जग में बन पाये।
तो उसकी यह मानवता भी नहीं नशाये॥
सब प्रकार से कान्हा का करने परिवर्तन।
होकर क्रोधित भी मैंने कुछ कहे कटु वचन॥ ५६-६० ॥
उससे मैंने की अनेक बातें हँस-हँसकर।
उसको उकसाया अनेक ताने कस-कसकर॥
किये अनेकों यत्न कान्ह को सुधारने को।
(सुमति सिखाने और कुमति को विदारने को)॥
किन्तु चली कुछ नहीं, हुआ मैं नितान्त निष्फल।
बना रहा जंगली कान्ह पागल-का-पागल॥ ६१-६५ ॥
किसी कार्य में कभी नहीं वह चित्त जमाता।
और किसी भी फल की चाह नहीं जतलाता॥
कभी रीछ, तो भूत कभी बंदर बन जाता।
इस प्रकार वह भाँति-भाँति के रूप बनाता॥ ६६-७० ॥

लगा (सताने लगा)। चाहे उसे देव-स्थिति तक पहुँचा न पाऊँ, तो भी उसकी मानवता बची रहे —इस विचार से मैं कभी आग के समान उबलकर क्रुद्ध वचन कहता— ६० कभी हँसते हुए बातें करता, 'छिः छिः' कहकर बरस पड़ता, ताने कहकर उकसाता और कितने ही ढंग से उसे अपने मार्ग में लाने का प्रयत्न करता था। पर फल कुछ नहीं रहा। कान्हा पागल जंगली बना। ६५ वह किसी भी कार्य में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहन्दैयुम् ममदैयुम् आयिरय् पुण्णुऱ्
यान्कडुञ् जितमुऱ्रु ऍव्वहै यानुम्
कण्णनै नेऱुरक् कण्डे तीर्प्पेन्
ऍनप्पॅरन् दाबम् ऍय्दिनै नाहि
"ऍव्वा रेनुम् इवनैयोर् तॉळिलिल् 75
ओरिडन् दन्निल् ऑरुवळि वलिय
निऱुत्तुवो मायिन् नेरुऱ् ऱिडुवान्"
ऍन्ऱळत् तॅण्णि इशैनदिडुञ् जमयङ्
गात्तिरुन् दिट्टेन् ऑरुनाळ् कण्णनैत्
तनिये ऍनदु वीट्टिनिऱ् कॉण्डु 80
"महने, ऍन्पाल् वरम्बिला नेशमुम्
अन्बुम् नी उडैयै; अदनै यान्नम्बि
निन्निड मॉन्ऱु केट्पेन्; नीयदु
शॅय्दिडल् वेण्डुम् शेर्क्कैयिन् पडियै
मान्दर्तञ जॅयलाम् वहुप्पुऱल् कण्डाय् 85
शात्तिर नाट्टमुम् तरुक्कमुम् कविदैयिल्
मॅय्प्पॊरु ळाय्वदिल् मिञ्जिय बिळैवुम्
कॉण्डार् तमैये अरुहिनिऱ् कॉण्डु
पॊरुळिनुक् कलैयुम् नेरम् पोह
मिञ्जिय पॊळुदॅलाम् अवरुडन् मेवि 90
इरुन्दिड लाहुमेल् ऍनक्कुनन् रुण्डाम्
पॊळुदॅलाम् ऍन्नुडन् पोक्किड विरुम्बुम्
अऱिबुडै महनिङ् गुनैयलाल् अरिन्दिडेन्,
आदलाल्
ऍन्पयन् करुदि, ऍनक्कॊरु तुणैयाय् 95

वत्तचित्त नहीं बना रहता, किसी भी फल की चाह नहीं करता था। बन्दर, रीछ, सींगवाला भूत-- कोई (अकल्पित) वस्तु (जीव) कुछ भी बनकर रहा! इससे-- ७० मेरी अहंता तथा ममता सहस्र रूप से क्षत हुई। मैंने बहुत क्रुद्ध होकर सोचा, 'किसी भी तरह कान्हा को ठीक कर दूंगा'। संताप करके यह सोचा कि किसी तरह इसे किसी कार्य में-- ७५ जबरदस्ती लगाकर स्थिर रख लूंगा, तो वह सुधर जायगा। मैं उचित मौके की ताक में था। एक दिन कान्हा को अपने घर में अकेले ले जाकर--८० कहा-- "रे पुत्र! तुम मेरे प्रति असीम स्नेह तथा प्रेम रखते हो। उस (बात)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरी ममता अहंकार सब हुए पराजित।
मैं अपने मन में हो उठा बहुत ही क्रोधित॥
अब मैं किसी प्रकार कान्ह को ठीक करूँगा।
किसी कार्य में इसे लगाकर (कुमति हरूँगा)॥ ७१-७५ ॥

बलपूर्वक, बस किसी कार्य में इसे लगाकर।
कर दूँगा मैं इसकी चंचल मति को सुस्थिर॥
इस प्रकार यह कान्हा शीघ्र सुधर जायेगा।
सोच रहा था समुचित मौका कब आयेगा॥
एक दिवस (मैंने कान्हा को बाहर पाया)।
(अंक लगाकर) उसको अपने घर ले आया॥ ७६-८० ॥

मैंने कहा— "विदित है मुझको, पुत्र! कि मुझ पर।
रखते (सच्चा) प्रेम, असीम स्नेह अविनश्वर॥
हे कान्हा! विश्वास मानकर पूरा तुम पर।
माँग रहा हूँ तुमसे एक वस्तु (हो कातर)॥
मैं तुमसे जो कहूँ तुम्हें वह करना होगा।
(मेरी बातें तुम्हें हृदय में धरना होगा)॥
इस जग में जिसकी जैसी हो जाती संगति।
वैसी ही सानुरूप उससे प्रकृति, कार्य, मति॥ ८१-८५ ॥

कविता में हों कुशल शास्त्र में भी तत्पर हों।
सत्य तत्त्व के विश्लेषण में परम प्रखर हों॥
तर्क-शास्त्र में निपुण (विश्व में ऐसे नर हों)।
उनकी संगति करो (प्राप्त तुमको शुभ वर हों)॥
अर्थार्जन-हित प्रथम समय तुम कान्ह! लगाओ।
शेष समय ऐसे मनुजों के पास बिताओ॥ ८६-९० ॥

यदि ऐसा तुम करो हमारा तो हित होगा।
(होंगे सब दुख दूर प्रमोद अपरिमित होगा)॥
जो मेरे सँग रहकर सारा समय बिताये।
ऐसा बुद्धिमान कोई न मुझे दिखलाये॥ ९१-९५ ॥

पर विश्वास करके, मैं तुमसे एक (चीज) माँगूँगा। तुमको वह करना होगा। संगति के अनुकूल ही मानवों के कार्य विभाजित होते हैं। ८५ शास्त्र में तत्परता, तर्क, कविता, सत्यतत्त्व-विश्लेषण आदि की अधिक इच्छा जिनमें हो, उनको पास रखकर, अर्थार्जन के लिए लगनेवाले समय को छोड़ बाक़ी समय में उनसे मिले— ९० रहो, तो मेरा भला होगा। तुम्हारे सिवा अन्य किसी बुद्धिमान मनुष्य को मैं नहीं जानता, जो सारा समय मेरे साथ बिताये। इसलिए मेरा लाभ सोचकर मेरा साथी बनकर— ९५ मेरे साथ कुछ दिन रहो। मैं यह तुमसे प्रार्थना करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऎन्नुडन् शिलनाळ् इरुन्दिड निन्नै
वेण्डि निर्किन्ऱेन्; वेण्डुदल् मऱुत्ते
ऎन्नै नी तुन्बम् ऎय्दुवित् तिडामे
इव्वुरक् किणङ्गुवाय्" ऎन्ऱेन् कण्णनुम्
"अङ्ङन्ने पुरिवेन् आयिन् निन्निडत्ने 100
तॊळिलिलादु याङ्ङन्नम् शोम्बीरल् इरुप्पदु ?
कारिय मॊन्ऱु काट्टुवै यायिन्
इरुप्पेन्" ऎन्ऱान् इवनुडै इयल्बॆबुम्
तिऱनैयुङ् गरुदि ऎन्शॆय्युळै ऎल्लाम्
नल्लदोर् पिरदियिल् नाडॊऱुम् ऎळुदिक् 105
कॊडुत्तिडन् दॊळिलिलनैक् कॊळ्ळुदि ऎन्ऱेन्
नन्ऱॆनक् कूऱियोर् नाळिहै यिरुन्दान्;
'शॆल्वेन्' ऎन्ऱान् शिनत्तॊडु नानुम्
पळङ्गदै यॆळुदिय पहुदियॊन् ऱिनैयबन्
कैयिनिऱ् कॊडुत्तुक् 'कविनुऱ इदनै 110
ऎळुदुह' ऎन्ऱेन्; इणङ्गुवान् पोन्ऱदेक्
कैयिले कॊण्डु कणप्पॊळु दिरुन्दान्
"शॆल्वेन्" ऎन्ऱान् शिनन्दी याहिनान्
"एदडा शॊन्नशॊल् अळित्तुरक् किन्ऱाय्;
पित्तनन् ऱुन्नै उलहिनर् शॊल्वदु 115
"पिळैयिल पोलुम्" ऎन्ऱेन् अदऱ्कु
'नाळैवन् दिव्विनै नडत्तुवेन्' ऎन्ऱान्
"इत्तॊळि लिङ्गे इप्पॊळु दॆडुत्तुच्
चॆय्हिन् ऱनैया ? शॆय्हुव दिल्लैया ?
ओरुरै शॊल्" ऎन् ऱुरुमिनेन् कण्णनुम् 120

प्रार्थना न मानकर मुझे दुख न पहुँचाओ। इससे सहमत हो जाओ।" —कहा मैंने। कान्हा ने भी कहा— 'वैसा ही मैं करूँगा। तो भी आपके पास-- १०० विना काम के आलस्य में कैसे रहा जायगा? कोई काम दिखाओ, तो रहूँगा'। —कान्हा ने (ऐसा) कहा। इसका स्वभाव तथा योग्यता को जानकर मैंने कहा— 'मेरी सारी कविताओं की, रोज, अच्छी प्रतियाँ बना-- १०५ देने का कार्य करो'। 'अच्छा' कहकर वह एक घड़ी चुप रहा। फिर उसने कहा-- 'चलूँगा'। तो मरा क्रोध (का पारा) चढ़ गया। पुरानी कहानी का एक भाग उसके हाथ में देकर मैंने कहा-- 'सुन्दर ढंग से इसको-- ११० लिखा जाय'। मैंने कहा। वह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरे साथ रहो कुछ दिन मेरा हित लखकर।
यही प्रार्थना करता हूँ तुमसे मैं प्रियवर!॥
ठुकराकर प्रार्थना मुझे दुख मत पहुँचाओ।
मेरी बातों से अवश्य सहमत हो जाओ"॥
इस प्रकार जब मैंने कान्हा को समझाया।
तो उसने माना मेरा कहना (मनभाया)॥ ९६-१००॥
बोला कान्हा— "जो कहते हैं वही करूँगा।
किन्तु काम बिन नहीं आपके पास रहूँगा॥
बिना किये कुछ काम मुझे आलस घेरेगा।
(रहूँ उसी के पास काम जो मुझको देगा)"॥
तब मैंने उसका स्वभाव, योग्यता परखकर।
कहा— "तुम्हें मैं काम बताता अभी निरखकर॥१०१-१०५॥
"प्रतिदिन मेरी कविताओं की प्रतिलिपि करना।
(यही कार्य करके तुम मेरे मन को हरना)"॥
किया काम स्वीकार कान्ह ने— "अच्छा" कहकर।
"चलता हूँ" कह हुआ पुनः चलने को तत्पर॥
यह सुन मुझको उस पर क्रोध बहुत ही आया।
एक पुराना कथा-ग्रंथ उसको पकड़ाया॥
कहा— "भली विधि से तुम इसको देखभाल लो।
इसे तुम्हें लिखना है, तुम इसको सँभाल लो"॥१०६-११०॥
लिखने के हित कान्ह हो गया तत्क्षण सहमत।
फिर "जाता हूँ" बोल हुआ जाने को उद्यत॥
यह सुनकर मैं बोल उठा अति क्रोधित होकर।
"कैसी तू करता है बातें (सुध-बुध खोकर)।
अपने वचन मिटाकर तू कैसे जाता है।
सचमुच तू पागल है जैसा कहलाता है"॥१११-११५॥
यह सुन करके दिया कान्ह ने मुझको उत्तर।
"कर दूँगा यह काम आपका मैं कल आकर"॥
मैं गरजा— "यह काम अभी है तुमको करना।
संभव नहीं इसे करने से तुम्हें मुकरना॥११६-१२०॥

मानो सहमत हुआ हो। वह उसे हाथ में लेकर क्षण भर खड़ा रहा। उसने कहा, 'मैं जाऊँगा', तो मेरा क्रोध आग बना। 'क्यों रे! कहे वचन को मिटाकर बात कहते हो। तुम्हें लोग जो पागल कहते हैं, वह— ११५ ग़लत नहीं है शायद'। मैंने बताया। उसके उत्तर में उसने कहा कि कल आकर यह काम करूँगा। 'यह काम अभी (हाथ में) लेकर करोगे या नहीं करोगे? एक बात कहो।' —मैं गरजा। कान्हा ने भी— १२० पलक झपने के पहले कहा कि नहीं! झट से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"इल्लै"यॆऩ् ऱॊरुशॊल् इमैक्कुमुऩ् कूऱिऩान्
वॆडुक्कॆऩच् चिऩत्ती वॆळ्ळमाय्प् पाय्न्दिडक्
कण्शिवन् दिदळ्हळ् तुडित्तिडक् कऩऩ्ऱुनाऩ्
"चीच्चि पेये ! शिऱिदुपोळ् देनुम्
इऩियॆऩ् मुहत्तिऩ् ऍदिर्निऩ् ऱिडादे 125
ऍऩ्ऱुमिव् बुलहिल् ऍऩ्ऩिडत् तिऩिनी
पोन्दिडल् वेण्डा पोपो पो" ऍऩ्ऱु
इडियुऱ् शॊऩ्ऩेऩ्; कण्णऩुम् ऍळुन्दु
शॆल्हु वऩायिऩऩ् विळिनोर् शोर्न्दिड
"महऩे ! पॊहुदि बाळ्ह नी; निऩ्ऩॆऩ् 130
तेवर् कात्तिडुह ! निऩ्तऩैच् चॆम्मै
शॆय्दिडक् करुदि एदेदो शॆय्देऩ्
तोऱ्ऱुविट् टेऩडा ! शूळ्च्चिहळ् अळिन्देऩ्
मऱित्तिऩि वाराय् शॆल्लुदि वाळि नी !"
ऍऩत्तुयर् नीक्कि अमैदियो दिशैत्तेऩ् 135
शॆऩ्ऱऩऩ् कण्णऩ् तिरुम्बियॊर् कणत्तै
ऍङ्गिरुन् दोनल् लॆळ्ळुकोल् कॊणर्न्दाऩ्;
काट्टिय पहुदियैक् कविऩुऱ् वरॆन्दाऩ्
"ऐयऩे निऩ्वळि यऩॆत्तैयुङ् गॊळ्वेऩ्
तॊळिल्पल पुरवेऩ् तुऩ्बमिङ् गॊऩ्ऱुम् 140
इऩिनिऩक् कॆऩ्ऩाल् ऍय्दिडा" दऩप्पल
नल्लशॊल् लुरॆत्तु नहैत्तऩऩ् मऱॆन्दाऩ्
मऱॆन्ददोर् कण्णऩ् मरुकणत् तॆऩ्ऱऩ्
नॆञ्जिले तोऩ्ऱि निहळ्त्तुवा ऩायिऩऩ्;
"महऩे, ऒऩ्ऱै याक्कुदल् माऱ्ऱुदल् 145

क्रोध की आग बाढ़ के समान फैल गयी। मेरी आँखें लाल हुईं। अधर फड़क उठे। खोलकर मैंने कहा-- छिः छिः ! पिशाच ! जरा देर के लिए भी मेरे मुख के सामने मत खड़े रहो। १२५ इस संसार में कहीं भी मेरे पास नहीं आना ! जाओ, जाओ, जाओ ! --ऐसा मैंने कड़ककर कहा ! कान्हा भी उठकर चलने लगा। अश्रु के ढलते रहते मैं बोला-- पुत्र ! जाओ ! जिओ तुम ! देवता तुम्हारी रक्षा करें। १३० तुम्हें सुधारने का विचार करके मैंने क्या-क्या किया। मैं हार गया। एक उपाय-शून्य हो गया मैं। फिर आगे कभी मत आओ ! जाओ ! जय जीव ! रे ! मन का दुख मिटाकर शान्ति के साथ ऐसा कहा। १३५ कान्हा गया; पर वह क्षण में कहीं से एक अच्छी लेखनी लाया। जिस भाग को मैंने दिखाया था, उसको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पलक झपकने के पहले ही बोल उठा वह।
"कर सकता हूँ कभी न तत्क्षण अभी काम यह"॥
यह सुन मेरा बढ़ा अग्नि-सम क्रोध भयंकर।
लाल हुईं आँखें, फड़के अधरों के प्रान्तर॥
बोल उठा— "धिक् तुम्हें पिशाच! न सम्मुख आना।
आँखों से हो दूर, न मुझको मुख दिखलाना"॥१२१-१२५॥

इस प्रकार जब मैंने उससे कहा कड़ककर।
कान्हा भी चल पड़ा तुरन्त वहाँ से उठकर॥
अश्रु बहाते हुए कहा मैंने— "तुम जाओ।
चिरंजीव तुम रहो (सर्वदा मोद मनाओ)॥
करें देवगण सदा तुम्हारी रक्षा प्रियवर!।
तव सुधार-हित मैंने क्या-क्या किया शिष्यवर!॥
हार गया मैं, हुआ उपाय-शून्य मैं (कातर)।
(था विधि को स्वीकार यही मैं क्या सकता कर)॥
अब आगे तुम कभी पास मेरे मत आना।
जीते रहना सदा, सदा आनन्द मनाना"॥
इस प्रकार की बातें उसको सुना-सुनाकर।
शान्त हुआ मैं अपने मन का दुःख मिटाकर॥१२६-१३५॥

कान्हा चला गया पर क्षण भर में फिर आया।
अपने हाथों में वह एक लेखनी लाया॥
मैंने जिसके लिखने को था उसे बताया।
वह उसने सुन्दर लिपि में लिख शीघ्र दिखाया॥
बोला— "स्वामी! मैं मानूँगा सब आज्ञाएँ।
तज दूँगा वे कार्य जो कि तव हृदय दुखाएँ"॥१३६-१४०॥

इस प्रकार के कहकर विनय-वचन वह अगणित।
हँस करके तत्काल हो गया कान्ह अलक्षित॥
प्रकट हो गया फिर वह मेरे उर में आकर।
करने लगा (मधुर) बातें मुझसे (हरषाकर)॥१४१-१४५॥

सुन्दर ढंग से उसने लिपिबद्ध किया। "स्वामी! आपकी सारी आज्ञाएँ मैं मान लूँगा। अनेक कार्य करूँगा। कोई कष्ट— १४० मेरे कारण आपको नहीं होगा।" —इस प्रकार अच्छे वचन कहकर वह हँसा और ओझल हो गया। अदृश्य होने के पश्चात् दूसरे ही क्षण मेरे हृदय में प्रगट होकर उसने कहा— पुत्र! किसी की रचना करना, उसे बदलना— १४५ या मिटाना, यह सब तुम्हारे वश का कार्य नहीं है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अळित्तिड लॅल्लाम् निन्शॅय लन्ऱकाण्;
तोऱ्ऱेन् अॅन्नी उरैत्तिडुम् पॉळुदिले
वॅन्ऱाय्, उलहिन्निल् वेण्डिय तॉळिलॅलाम्
आशैयुन् दाबमुम् अहऱ्ऱिये पुरिन्दु
वाळ्ह नी' अॅन्ऱान् वाळ्हमऱ्ऱवने ! 150

कण्णन्—अॅन् शऱ्कुरु—7

पुन्नाह वराली— तिस्र जाति; एक ताळम्; रसङ्गळ्— अऱ्पुदम् बक्ति

शान्तिरङ् गळ्पल तेडिनेन्— अङ्गु
शङ्गैयिल् लादन शङ्गैयाम्— पळङ्
गोत्तिरङ्गळ् शॊल्लु मूडर्तम्— पॊय्मैक्
कूडैयिल् उण्मै किडैक्कुमो— नॅञ्जिल्
मान्तिरम् अॅन्द वहैयिलुम्— शह
मायम् उणर्न्दिडल् वेण्डुमे— अॅन्नुम्
आन्तिरम् निन्ऱ दिदन्निडॅ— नित्तम्
आयिरन् दॊल्लैहळ् शूळ्न्दन 1
नाडु मुळुदिलुञ् जुऱ्ऱिनान्— पल
नाट्कळ् अलन्विडुम् पोदिन्निल्— निऱैन्
दोडुम् यमुनैक् करैयिले— तडि
ऊन्ऱिच् चॅन्ऱारोर् किळवनार्— ऒळि
कूडु मुहमुन् तॅळिवुतान्— कुडि
कॊण्ड विळियुम् शडैहळुम्— वॅळ्ळैत्
ताडियुम् कण्डु वणङ्गिये —पल
शङ्गति पेशि बरुहैयिल् 2

जब 'हार गया' कहते हो, तब तुम जीत गये हो। संसार में तुम जो करो, वह स
कार्य इच्छा या ताप छोड़कर करो और जिओ तुम !. --उसने कहा ! जय हो
उसकी ! १५०

कान्हा : मेरा सद्गुरु—७

मैंने अनेक शास्त्रों का अन्वेषण किया। वहाँ शंकाएँ ही शंकाएँ हैं ! क
प्राचीन गोतों की गाथा गानेवाले मूर्खों की असत्य-पिटारी में सत्य मिलेगा ? मन
यह चाहता रही कि किसी विध जगत को माया समझा जाए। इस बीच सहस्रों सं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"पुत्र ! किसी की रचना करना और मिटाना।
और किसी का परिवर्तन करके दिखलाना॥
ये सब कार्य तुम्हारे वश के नहीं कभी हैं।
(ईश्वर की इच्छा से होते काम सभी हैं)॥
मानी तुमने हार तुम्हारी यही विजय है।
चिरजीवी हो सदा तुम्हारी जग में जय है॥
राग - द्वेष तज जग के सारे काम करो तुम।
(जो चाहो जग-बीच वही वर सदा वरो तुम)"॥
(है कान्हा निष्काम, भले ही वह सेवक है)।
(सुपथ दिखाता स्वामी को यद्यपि पायक है)॥१४६-१५०॥

कान्हा : मेरा सद्गुरु—७

मैंने किया अनेकों शास्त्रों का अन्वेषण।
शंकाओं पर शंकाओं का मिला विवर्तन॥
जो प्राचीन गोत्र की गाते हैं गाथाएँ।
कैसे सत्य भला उनकी झोली में पाएँ!॥
मन में सदा हमारे थीं यह आतुरताएँ।
किस प्रकार हम जान सकें जग की मायाएँ॥
घेरे हुए हज़ारों ही हमको विपदाएँ।
(कैसे हम उन विपदाओं से पिंड छुड़ाएँ?)॥ १ ॥

खाक छानता रहा बहुत दिन मैं निशि - वासर।
(जिज्ञासा को लिये) देश में घूम - घूमकर॥
(एक दिवस) जल से लहराते यमुना - तट पर।
मिले वृद्ध, चलते थे लाठी टेक-टेककर॥
शुभ्र (दीर्घ) दाढ़ी से शोभित उनका आनन।
शंका - हीन ज्ञान - मंदिर थे उनके लोचन॥
उनका (भव्य रूप) लख (परम) प्रभावित होकर।
अभिप्राय अपना बतलाया नमस्कार कर॥ २ ॥

घेरे रहे। १ देश भर में घूमकर अनेक दिन मैं खाक छानता रहा। तब जिसमें पानी भरपूर बह रहा था, उस यमुना के तीर पर एक बूढ़े व्यक्ति लाठी टेककर जा रहे थे। शोभायुक्त नेत्र, जिनमें शंकाहीन ज्ञान परिलक्षित हो रहा था, और शुभ्र जटाएँ तथा दाढ़ी —इनको देखकर मैंने (प्रभावित होकर) नमस्कार किया और जब बातें हो रही थीं, तब— २ मेरे मन की इच्छा जानकर उन्होंने बहुत खुश होकर यह कहना शुरू

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऎन्नुळत् ताशै यऱिन्दवर्— मिह
इन्बुर् ऱुरैत्तिड लायिनर्— "तम्बि
निन्नुळत् तिऱ्कुत् तहुन्दनन्— शुडर्
नित्तिय मोनत् तिरुप्पवन्— उयर्
मन्नर् कुलत्तिल् पिऱन्दवन्— वड
मामदुरैप्पति आळ्हिन्ऱान्— कण्णन्
तन्नैच् चरणॆन्ऱु पोवैयेल्— अवन्
सत्तियङ् गूऱुवन्" ऎन्ऱनर् 3

मामदु रैप्पदि शॆन्ऱुनान्— अङ्गु
वाळ्हिन्ऱ कण्णनप् पोऱ्ऱिये— ऎन्ऱन्
नाममुम् ऊरुङ्गरुत्तुमे— शॊल्लि
नन्मै तरुहॆन वेण्डिनन्— अवन्
कामनैप् पोन्ऱ वडिवमुम्— इळङ्
गाळैयर् नट्पुम् पळ्क्कमुम्— कॆट्ट
पूमियैक् काक्कुन् दॊळिलिले— ऎन्दप्
पोदुञ् जॆलुत्तिडुञ् जिन्दैयुम् 4

आडलुम् पाडलुम् कण्डुनान्— मुन्नर्
आऱ्ऱङ् गरैयिनिल् कण्डदोर्— मुनि
वेडन् दरित्त किळवरैक्— कॊल्ल
वॆण्डु मॆन् ऱुळ्ळत्तिल् ऎण्णिनॆन्— शिऱु
नाडु पुरन्दिडु मन्नवन्— कण्णन्
नाळुङ् गवलैयिल् मूळ्हिनोन्— तवप्
पाडुपट् टोर्क्कुम् विळङ्गिडा— उण्मै
पार्त्तिवन् ऎङ्ङनम् कूऱुवान् ? 5

ऎन्ऱु करुदियिरुन् दिट्टॆन्— पिन्नर्
ऎन्नैत् तन्नियिडङङ् गॊण्डुपोय्— "निन्नै

किया— 'भैया ! तुम्हारे मन के योग्य, प्रकाशमान मौन में हमेशा रहनेवाले, उच्च राजकुलोत्पन्न कान्हा उत्तर में श्रेष्ठ मथुरा राज्य का शासन कर रहे हैं। उनकी शरण मानकर चलोगे, तो वे सत्यतत्त्व बता देंगे'। ३ मैं महान् मथुरानगर गया। मैंने वहाँ रहनेवाले कान्हा के चरणों की वन्दना करके, अपना नाम, धाम तथा विचार जताकर प्रार्थना की कि वे मेरा कल्याण करें। उनका मनोज का-सा रूप, तरुणों की मित्रता और उनकी संगति, इस बिगड़ी भूमि की रक्षा के कार्य के विषय में सतत चिन्ता, गान तथा नृत्य —इनको देखा, तो मेरे मन में आया कि मुनिवेषधारी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इस प्रकार मेरे मन की लालसा जानकर।
कहने लगे (हृदय में अतिशय) प्रमुदित होकर॥
सदा प्रकाशित मौन भाव से रहनेवाले।
उच्च राज-कुल में उत्पन्न कान्ह (छबिवाले)॥
है उत्तर - प्रदेश में मथुरा - नगर श्रेष्ठतर।
करते हैं वे शासन कान्हा उसी राज्य पर॥
वही तुम्हारे मन के योग्य महाज्ञानी हैं।
(वीत-राग हैं, योगेश्वर हैं, विज्ञानी हैं)॥
यदि तुम उनको शरण मानकर अपनाओगे।
सत्य-तत्त्व का ज्ञान तभी तुम पा जाओगे॥ ३॥
पहुँच गया मथुरा - नगरी में मैं (अति - सत्वर)।
जाकर वन्दन किया कान्ह - चरणों का (सुन्दर)॥
उनको अपना नाम - धाम औ' काम बताया।
की प्रार्थना, करें (अब) मेरा हित (मनभाया)॥
कामदेव - सा सुन्दर उनका रूप निरखकर।
तरुणों - सँग मित्रता और सहवास परखकर॥
बिगड़ी हुई देश की स्थिति को सुधारने - हित।
देख सर्वदा व्यस्त और लख अतिशय चिन्तित॥
नाच-गान में मग्न उन्हें लख, यह मन आया।
(उस बुड्ढे ने मुझे व्यर्थ हीं में बहकाया)॥
मुनियों का - सा वेश — बनाये जो बूढ़ा नर।
मुझे मिला था हहराती यमुना के तट पर॥
(उसने झूठ बोल मुझको धोखे में डाला)।
है वह वध के योग्य (मुझे बहकानेवाला)॥ ४॥
यह सदैव चिन्ताओं में निमग्न रहता है।
छोटा - सा यह राज्य कान्ह शासन करता है॥
गूढ़ तत्त्व जो है तपस्वियों को भी अविदित।
भूमिपाल यह कैसे उससे होगा परिचित ?॥ ५॥
इस प्रकार मैं रहा सोचता अपने मन में।
तब मुझको ले गया कान्ह एकान्त भवन में॥

इस वृद्ध का, जिन्हें मैंने पहले यमुना-तट पर देखा था, वध कर देना चाहिए। ४ छोटे राज्य का पालक, रोज चिन्तामग्न रहनेवाला (सामान्य) राजा कणण वह तत्त्व कैसे बता सकेगा, जो तपस्या का श्रम करनेवालों को भी विदित नहीं होता। ५ मैं ऐसा सोचता रहा। बाद में उन्होंने मुझे अलग अकेले में ले जाकर बताया, उपदेश दिया—

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नन्रु मरुवुह ! मैन्दने !— पर
ञान मुरैत्तिडक् केट्पैनी;— नॅञ्जिल्
ऑन्रुङ् गवलै यिल्लामले— शिन्दै
ऊन्रु निरुत्तिक् कळिप्पुर्रे— तन्नै
वॅन्रु मरन्दिडुम् पोळ्दिनिल्— अङ्गु
विण्णै यळक्कुम् अरिवुतान् 6
शन्दिरन् शोदि युडैयदाम्— अदु
शत्तिय नित्तिय वस्तुवाम्— अदैच्
चिन्दिक्कुम् पोदिनिल् वन्दुतान्— निनैच्
चोर्न्दु तळुवि अरुळ् शॅय्युम्— अदन्
मन्दिरत् तालिव् वुलहमॅलाम्— वन्द
मायक् कळिप्पॅरुङ् गूत्तुक्काण्— इदैच्
चन्ददम् बॉय्यॅन् रुरैत्तिडुम्— मडच्
चात्तिरम् बॉय्यॅन्रु तळ्ळडा ! 7
आदित् तन्निप्पॉरु ळाहुमोर्— कडल्
आरुङ्गुमिळि उयिर्हळाम्— अन्दच्
चोदि यरिवॅन्नुम् ञायिरु— तन्नैच्
चूळ्न्द कदिर्हळ् उयिर्हळाम्— इङ्गु
मीदिप् पॉरुळ्हळ् ऍवैयुमे— अदन्
मेन्नियिल् तोन्रिडुम् वण्णङ्गळ्— वण्ण
नीदि यीर्न्दिन्बम् ऍय्दिये— ऑरु
नेर्मैत् तॉळिलिल् इयङ्गुवार्; 8
शित्तत् तिलेशिवम् नाडुवार्— इङ्गु
शेर्न्दु कळित्तुल हाळुवार्— नल्ल
मत्त मदवॅङ् गळिरुपोल्— नडै
वाय्न्दिरु मान्बु तिरिहुवार्;— इङ्गु

हे पुत्र ! तुम्हें अच्छा ज्ञान मिले। मैं परम ज्ञान बताता हूँ, सुनो। चित्त में कोई चिन्ता मत रखो। आनन्द में मन को स्थिर रखकर अपने को जीतोगे याने भूले रहोगे, तब तुम्हारी बुद्धि आकाश को माप देगी। ६ चन्द्र ज्योतिर्मय है। वह सत्य तथा नित्य वस्तु है। उसका ध्यान करो, तो वह मिलकर तुम पर कृपा करेगा। उसके मंत्र से यह सारा संसार आनन्द का बड़ा मायावी नृत्य बन जाता है, देखा ! इसको हमेशा असत्य कहनेवाले मूढ़ शास्त्रों को असत्य जानो और दूर कर दो ! ७ आदि तथा विशिष्ट अकेली वस्तु को समुद्र समझो; जीव उसमें उठनेवाले बुदबुद हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दिया मुझे उपदेश कान्ह ने— "सुनो पुत्रवर !।
मिले तुम्हें सद्ज्ञान, बताता परम ज्ञान (वर) ॥
रखो चित्त में चिन्ता कोई नहीं (पुत्रवर !)।
परमानंद - मध्य निज मन को सुस्थिर रखकर ॥
जीत सकोगे जब (तुम) अपने (चंचल मन) को।
बुद्धि तुम्हारी नाप सकेगी तभी गगन को ॥ ६ ॥

नित्य वस्तु है, सत्य वस्तु है, शशि ज्योतिर्मय।
करो चंद्र का ध्यान द्रवित होगा (करुणामय) ॥
पाकर उसका मंत्र विश्व यह सारा (सुंदर)।
हो जाता आनंद - नृत्य मायावी (मनहर) ॥
जो इस (सुंदर जग) को हैं असत्य बतलाते।
वे मूर्खों के शास्त्र (विश्व में) जाने जाते ॥
वे मूर्खों के शास्त्र (दृष्टि से दूर) हटाओ।
(मान जगत को सत्य अमित आनंद मनाओ) ॥ ७ ॥

उस अद्वैत अनादि तत्त्व को सागर जानो।
जीवगणों को उसमें उठते बुद्बुद मानो ॥
(परम - तत्त्व वह) ज्ञान - सूर्य (नव) ज्योतिर्मय है।
किरण-राशि सम यह (समस्त जग-) जीवाशय है ॥
इस जग में जितने लघुतम पदार्थ (सुंदर) हैं।
वे उसके तन के (अगणित) प्रकार (मनहर) हैं ॥
(सभी) प्रकारों की (तुम विविध) नीतियाँ जानो।
(सबकी विविध नीतियाँ भली भाँति पहिचानो) ॥ ८ ॥

सुख - पूर्वक जो सरल - भाव से कार्य - निरत हैं।
वे मन में शिव को (सदैव) लखते अविरत हैं ॥
वे इस जग में भी रहकर आनंदित होकर।
सदा करेंगे (शाश्वत) शासन जगती-तल पर ॥
जो मद-मत्त मतंगज के सम गर्वित होकर।
सदा घूमते हैं (विशाल इस वसुधा-तल पर) ॥

ज्योतिर्मय ज्ञान-सूर्य को घेरनेवाली किरणें हैं ये जीव ! यहाँ जो अन्य वस्तुएँ हैं, वे उसके शरीर पर प्रकट होनेवाले (रंग-) प्रकार हैं। उन (रंग-) प्रकारों के गठन को जानो। सुख मानकर जो सीधे कार्य में लगेंगे— ८ वे चित्त में शिव को देखनेवाले हो जाएँगे। वे इधर रहते हुए मुदित होकर दुनिया पर शासन करेंगे। वे मस्त भयंकर गज के समान घमंडी होकर घूमते रहेंगे। यहाँ जो रोज रहेंगे, वे सभी मेरे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नित्तम् निहऴ्ब दनैत्तुमे— ऍन्वै
नीण्डतिरु वरुळाल्वरुम्— इन्बम्
शुत्त शुहन्दनि यानन्दम्— ऍनच्
चूऴ्न्दु कवलैहळ् तळ्ळिये, 9

शोदि अऱिविल् विळङ्गवुम्— उयर्
शूऴ्च्चि मदियिल् विळङ्गवुम्— अऱ
नीदि मुऱैवऴु वामले— ऍन्द
नेरमुम् पूमित्तॊऴिल् शॆय्दु— कलै
ओदिप् पॊरुळियल् कॊण्डुताम्— पिऱर्
उऱ्ऱिडुन् दॊल्लैहळ् माऱ्ऱिये— इन्बम्
मोदि विऴिक्कुम् विऴियिनार्— पॆण्मै
मोहत्तिल् शॆल्वत्तिल् कीर्त्तियिल् 10

आडुवल् पाडुदल् शित्तिरम्— कवि, यादि यिनैय कलैहळिल्— उळ्ळम्
ईडुपट् टॆन्ऱुम् नडप्पवर्— पिऱर्, ईन निलैकण्डु तुळ्ळुवार्— अवर्
नाडुम् पॊरुळ्हळ् अनैत्तैयुम्— शिल, नाळिनिल् ऍय्दप् पॆऱुहुवार्—अवर्
काडु पुदरिल् वळरिनुम्— दॆय्वक्, कावनम् अन्ऱुदैप् पोऱ्ऱलाम् 11

आनियर् तम्मियल् कूऱिनेन्— अन्द
आनम् विरैविनिल् ऍय्दुवाय्"— ऍनत्
तेनि लिनिय कुरलिले— कण्णन्
शॆप्पवुम् उण्मैनिलै कण्डेन्— पण्डै
ईन मनिदक् कनवॆल्लाम्— ऍङ्ङन्
एहि मऱैन्दवु कण्डिलेन्;— अऱि
वान तनिच्चुडर् नान्कण्डेन्— अदन्
आडलुल हेननान् कण्डेन् 12

पिता की कृपा से आनेवाले सुख ही हैं, शुद्ध आनन्द हैं; विशिष्ट मोद हैं। यह समझकर चिन्ताओं को वर्जित कर देंगे। ९ बुद्धि में ज्योति (प्रकाश) युक्त हो। उच्च उपाय (या साधना मार्ग) मन में सुझायी दे। ऐसा धर्मनय से च्युत न होकर हमेशा भूमि में कर्म करते हुए, सुख का आकर्षण जिनमें जाग्रत रहता है, उन आँखों वाली स्त्रियों के प्रेम के मोह में, धन में, कीर्ति में मग्न रहेंगे। १० नृत्य, गीत, चित्र, काव्य आदि कलाओं में मन को लगाकर जो चलेंगे, वे दूसरों की दीनता देखकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इस जग में जो (बहते रहते) सुख (-सोते) हैं।
पिता - कृपा से वे सुख सभी प्राप्त होते हैं॥
वे विशुद्ध आनंद - स्वरूप विशिष्ट मोद हैं।
चिन्ता तजो (चित्त में तब जगते विनोद हैं)॥ ९ ॥

तुम प्रकाश - मय मति में (अपना) चित्त लगाओ।
मन में (विविध) साधनाओं के पथ लख पाओ॥
धर्म-मार्ग से (कभी नहीं तिल-मात्र) डिगो तुम।
(कर्म-) भूमि में कर्म (-मार्ग) में सदा लगो तुम॥
जिनके नयनों में जागृत सुख का आकर्षण।
सुन्दरियों के शुद्ध प्रेम में ग्रस्त करो मन॥ १० ॥

धन, यश, नृत्य, गान, कवितादिक में रत जो जन।
दीन किसी को देख छटपटाते हैं वे जन॥
ऐसे सज्जन मन - वांछित पदार्थ पाते हैं।
(रहते सदा प्रसन्न सर्वदा मुसकाते हैं)॥
पलें झाड़ - झंखाड़ - बीच वे चाहे वन में।
बाग़ - बगीचे उनको वे मानेंगे मन में॥ ११ ॥

बतलाये यों ज्ञानि - जनों के मैंने गुण (-गण)।
अपनाओ तुम (सभी) ज्ञान के वे (शुभ) लक्षण॥
जब मधु से भी मधुर कान्ह यों बोले वाणी।
तब मैंने (शुभ सहज) सत्य की स्थिति पहचानी॥
हीन मानवी - स्वप्न, असत्य विचार पुराने।
कैसे हुए विलुप्त न मैंने कुछ भी जाने॥
ज्ञान - ज्योति का किया विशिष्ट - रीति से दर्शन।
देख लिया यह जग - प्रपंच उसका ही नर्तन॥ १२ ॥

छटपटाते रहेंगे। वे मनचाही सारी चीजें कुछ ही दिनों में पा जायेंगे। ऐसे वे लोग चाहे वन या झाड़-झंखाड़ में पलें, उन स्थानों को हम दिव्य नन्दनवन ही मान सकते हैं। ११ ज्ञानियों का गुण मैंने बताया। वह ज्ञान तुम्हें शीघ्र प्राप्त हो। ऐसा शहद से भी मधुर स्वर में जब कान्हा ने कहा, तब मैंने सत्य की स्थिति को जान लिया। पहले के हीन मानवीय स्वप्न (मिथ्या-विचार) सब कैसे जाकर छिप गये —यह मैंने नहीं जाना। ज्ञान रूपी विशिष्ट ज्योति को देख लिया और यह भी देख लिया कि यह संसार उसी का नृत्य है। १२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णम्मा—अन् कुळन्दै—8

(पराशक्तियै कुळन्दैयाहक् कण्डु शॊल्लिय पाट्टु)

राहम्— पैरवि; ताळम्— रूपकम्

सससस— सा सा— पपप, दनीद— पदप— पा
पपप— पदप— पमा— गरिसा, रिगम— रिगरि— सा

अॆन्ऱ स्वर वरिशैहळै मादिरियाह वॆत्तुक्कॊण्डु मनोपावप्पडि माऱ्ऱि पाडुह ।

शिन्नञ् जिऱु किळियॆ— कण्णम्मा !, शॊल्वक् कळञ्जियमे !
अॆन्नैक् कलि तीर्त्तॆ— उलहिल्, एऱ्ऱुम् पुरिय वन्दाय् ! 1
पिळ्ळैक् कलि यमुदे— कण्णम्मा !, पेशुम्बॊऱ् चित्तिरमे !
अळ्ळि यणैत्तिडवे !— अॆन् मुन्ने, आडि वरुन्दैन्ने ! 2
ओडि वरुहैयिले— कण्णम्मा !, उळ्ळङ् गुळिरुदडी !
आडित् तिरिदल् कण्डाल्— उन्नैप् पोय्, आवि तळुवु दडी ! 3
उच्चि तनै मुहन्दाल्— करुवम्, ओङ्गि वळरुदडी
मॆच्चि युनैयूरार्— पुहळ्न्दाल्, मेनि शिलिर्क्कु दडी 4
कन्नत्तिल् मुत्त मिट्टाल्— उळ्ळन्दान्, कळ्वॆऱि कॊळ्ळुदडी !
उन्नैत् तळुविडि लो— कण्णम्मा !, उन्मत्त माहुदडी ! 5
शऱ्ऱुन् मुहम् जिवन्दाल्— मनदु, शञ्जल माहुदडी !
नॆऱ्ऱि शुरुङ्गक् कण्डाल्— अॆन्नक्कु, नॆञ्जम् पदैक्कुदडी ! 6
उन्कण्णिल् नीर्वळिन्दाल्— अॆन्नञ्जिल्, उदिरङ् गॊट्टुदडी !
अॆन् कण्णिर् पावैयन्ऱो ?— कण्णम्मा !, अॆन्नुयिर् निन्नदन्ऱो ? 7
शॊल्लु मळलैयिले— कण्णम्मा !, तुन्बङ्गळ् तीर्त्तिडुवाय्;
मुल्लैच् चिरिप्पाले अॆन्दु, मूर्क्कन् दविर्त्तिडु वाय् 8
इन्वक् कदैहळॆल्लाम्— उन्नैप्पोल्, एडुहळ् शॊल्व दुण्डो ?
अन्बु तरुवदिले— उन्नेर्, आहुमॊर् तॆय्व मुण्डो ? 9

कण्णम्मा : मेरी बच्ची—८

(पराशक्ति को शिशु मानकर गाया हुआ गीत)

[स स स— सा सा —प प प । द नी द— प द प— पा । प प प —प द प— प मा —ग रि सा— रि ग म— रि ग रि —सा । इस स्वर-क्रम को नमूना मानकर अपने मनोभाव के अनुसार बदलकर गायें ।]

नन्ही छोटी बुग्गी— कण्णम्मा (कण्णन का स्त्री रूप), धन की निधि ! मेरा कलि (-मल) दूर करके संसार में (मेरी) उन्नति कराने आयी ! १ हे शिशु-रूप में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णम्मा : मेरी बच्ची—८

(पराशक्ति को शिशु मानकर गाया हुआ गीत)

पहले-पहल "स स स - सा सा" औ' "प प प" सुनाओ।
राग "द नी द - प द प - पा" यह रुचि - पूर्वक गाओ॥
"प प प - प द प" औ' "प मा" पुनः आलाप लगाओ।
"ग रि सा-रि ग म-रि ग रि-सा" ये स्वर मधुर गुँजाओ॥
नन्ही छोटी सुग्गी कण्णम्मा (अपार) धन की भंडार।
जग को उन्नत करने आयी करके कलि - मल का संहार॥ १॥
कण्णम्मा शिशु-फल का अम्रित, है (शुभ) स्वर्णिम चित्र मुखर।
अंक लगाकर उसे उठा लूँ, सम्मुख नर्तित नृत्य मधुर॥ २॥
जभी दौड़ आती कण्णम्मा तभी चित्त होता शीतल।
होता तभी आत्म-विस्मृत मैं जभी देखता नृत्य (विमल)॥ ३॥
जब मस्तक सूँघता (प्रेम से) तभी गर्व होता उन्नत।
सुनता संस्तुति जब बस्ती में हो जाता है तन पुलकित॥ ४॥
जब कपोल चूमता चित्त पर मदिरा - सी मस्ती छाती।
जब तेरा आलिंगन करता उन्मत्तता उमड़ आती॥ ५॥
तेरे मुख को लाल देखकर मन हो जाता है चंचल।
देख भाल पर सिकुड़न घबड़ाकर मन हो जाता विह्वल॥ ६॥
तेरे नयनों से जल बहता मानों मेरा हृदय - रुधिर।
तू मेरे नयनों की पुतली, तू ही मेरे प्राण चिर॥ ७॥
तुतली बोली से कण्णम्मा मेरे दुख को हर देगी।
और जुही - सी (मधुर) हँसी से मेरे हठ को हर लेगी॥ ८॥
क्या तेरे सम मधुर कथाएँ ग्रंथ (कभी) कह पायेंगे।
मधुर प्रेम-सुख क्या तेरे सम कोई देव दिलायेंगे॥ ९॥

अमृत-फल कण्णम्मा, हे बोलते स्वर्ण चित्र ! लगता है, तुझे लिपटकर उठाऊँ— मेरे सामने नाचते आनेवाले, हे मधु ! २ तू दौड़ती आती है तब— कण्णम्मा, मेरा चित्त शीतल हो जाता है, री ! तुझे नाचती फिरती देखता हूँ तो— तेरे पास जाकर मेरी आत्मा जुड़ जाती है। ३ तेरा माथा सूँघूं तो— गर्व ऊँचा बढ़ता है, री ! मान देकर गाँववाले तेरी प्रशंसा करें, तो मेरा शरीर पुलकित हो जाता है, री ! ४ तेरे गाल को चूँमूं— तो चित्त सुरा-मस्ती पा जाता है, री ! तेरा आलिंगन करूँ, तो— कण्णम्मा, उन्मत्तता आ जाती है, री ! ५ जरा भी तेरा मुख लाल हो— मेरा मन चंचल हो जाता, री ! तेरे भाल पर सिकुड़न दिखे— तो मेरा मन घबड़ा जाता है, री ! ६ तेरी आँखों से जल बहे —तो मेरे हृदय से रुधिर चूता है, री ! तू मेरी आँख की पुतली है न, कण्णम्मा ? मेरे प्राण तेरे ही हैं न ? ७ तुतली बोली से— कण्णम्मा दुख का हरण कर लेगी; जुही-सी अपनी हँसी से मेरा हठ दूर करेगी। ८ तू मधुर कहानी है। क्या ऐसी मधुर कहानियाँ तालपत्र (ग्रंथ) कहेंगे ? क्या प्रेम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मार्बिल् अणिवदऱ्के— उन्नैप्पोल्, वैर मणिह ळुण्डो ?
शीरपंऱ्ऱ वाळ्वदऱ्के— उन्नैप्पोल्, शॆल्वम् पिऱिदुमुण्डो ? 10

कण्णन्—ऍन् विळैयाट्टुप् पिळ्ळैलै—9

केदारम्— कण्ड जादि; एक ताळम्; रसङ्गळ्— अऱ्पुदम्, शिरुङ्गारम्

तीराद विळैयाट्टुप् पिळ्ळै— कण्णन्
तॆरुविले पॆण्गळुक् कोयाद तॊल्लै— (तीराद)
तिन्नप् पळङ्गॊण्डु तरुवान्;— पादि
तिन्गिन्ऱ पोदिले तट्टिप् पऱिप्पान्;
ऍन्नप्पन् ऍन्नैयन् ऍन्ऱाल्— अदनै
ऍच्चिऱ् पडुत्तिक् कडित्तुक् कॊडुप्पान् (तीराद) 1
सॆन्नॊत्त पण्डङ्गळ् कॊण्डु— ऍन्न
शॆय्दालुम् ऍट्टाद उयरत्तिल् वैप्पान्
मान्नॊत्त पॆण्णडि ऍन्बान्— शऱ्ऱ
मनमहिळुम् नेरत्तिलेकिळ्ळि विडुवान् (तीराद) 2
अळहुळ्ळ मलर्कॊण्डु वन्दे— ऍन्नै
अळ अळच् चॆय्दुपिन् कण्णे मूडिक्कॊळ्
कुळलिले शूट्टुवेन् ऍन्बान्— ऍन्नैक्
कुरुडाक्कि मलरिनैत् तोळिक्कु वैप्पान् (तीराद) 3
पिन्नलैप् पिन्निन् रिळुप्पान्— तलै
पिन्ने तिरुम्बुमुन् नेशॆन्ऱु मऱैवान्
वन्नप् पुदुच्चेलै तनिले— पुळुवि
वारिच् चॊरिन्दे वरुत्तिक् कुलैप्पान् (तीराद) 4
पुल्लाङ् गुळल्कॊण्डु वरुवान्— अमुदु
पॊङ्गित् तदुम्बुनऱ् कीदम् पडिप्पान्;
कळ्ळाल् मयङ्गुवदु पोले— अदैक्
कण्मूडि वाय्तिऱन् देकेट् टिरुप्पोम् (तीराद) 5

(सुख) देने में तेरे मुक़ाबले में और कोई देवता है ? ९ वक्ष में पहनने के लिए— क्या तेरे समान और हीरे मणि हैं ? क्या समृद्धि पाकर जीने के लिए तेरे समान और कोई धन है ? १०

कान्हा : मेरा चुहलबाज़ (लीलाधर) बच्चा—९

कभी न रुकनेवाली ठठोली करनेवाला लड़का है कान्हा ! वह गलियों में कन्याओं के लिए निरन्तर झंझट है। (टेक) वह खाने के लिए फल लाकर देगा। आधा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जिन्हें वक्ष पर पहनें ऐसे क्या तव-सम हीरक-मणि-गण ?।
चिरजीवें जिससे समृद्धि पा क्या तेरे सम कोई धन ? ॥ १० ॥

कान्हा : मेरा चुहलबाज़ लड़का (क्रीडा-शिशु)—९

करता है ठठोलियाँ कान्हा, कभी न रुकनेवाला है।
गली-गली में कन्याओं को आफ़त का परकाला है॥
खाने के हित ला करके यह देगा (मधु) फल।
अधखाये में झपट - छीन भागेगा (चंचल)॥
तात तुम्हीं, प्रभु तुम्हीं, विनय करतीं बाला - जन।
तब यह फल काटकर उन्हें देता हैं जूठन॥ १ ॥
वह मधु के सम मधुर रखे फल (सुंदर) लाकर।
अगम ठौर में रख देगा उन्हें छिपाकर॥
"तुम हिरनी - सी (चंचल) बाला !" —यह कह - कहकर।
चुटकियाँ काट लेता है भटका - बहकाकर॥ २ ॥
मुझे रुलाकर कहता सुंदर फूल दिखाकर।
"रख दूँगा केशों में, तू निज नयन बंद कर"॥
इस प्रकार मुझको अंधी के तुल्य बनाकर।
किसी सखी के केशों में रख देता जाकर॥ ३ ॥
जूड़े को खींचता कभी पीछे से आकर।
छिप जाता ज्यों ही निहारती सीस घुमाकर॥
रँगवाली (सुंदर) साड़ी पर धूल गिराकर।
हृदय विलोडित करता देता त्रास खिझाकर॥ ४ ॥
मुरली लाता, सुधा - सदृश संगीत सुनाता।
सुनकर जिसे सुरा के सदृश नशा छा जाता॥
अपने नयन बंद कर लेता सुननेवाला।
सुनने लगता विस्फारित कर वदन निराला॥ ५ ॥

खाते रहते समय छुड़ाकर छीन लेगा। हम यदि यह कहकर चिरौरी करें कि मेरे तात हो न, स्वामी हो न, तो उस(फल)को जूठा बनाकर कुछ काटकर दे देगा। १ शहद के समान (मधुर) पदार्थ लाकर, वह ऐसे ऊँचे स्थान पर रख देगा कि जहाँ कुछ भी करो, पहुँचा नहीं जा सकता। वह कहेगा, हिरण-सी कन्या हो ! थोड़ा बहलते रहें, तो उस समय चुटकी काट लेगा। २ सुन्दर फूल लाकर मुझे खूब रुलाने के बाद कहेगा—आँखें बन्द कर लो, केश में रख लूँगा। मुझे अन्धी बनाकर वह उसे सहेली के केश में खोंस देगा। ३ पीछे खड़ा होकर जूड़े को वह खींच लेगा; सिर उस ओर करने के पहले भागकर छिप जायगा। रंगीन साड़ी पर धूल गिराकर तंग करेगा और विलोड़ित कर देगा। ४ वह मुरली लायगा। ऐसा श्रेष्ठ संगीत निकालेगा, मानो अमृत झर रहा हो। सुरा से जैसे नशे में आते हैं, वैसे हम आँखें बन्द करके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अङ्गान् दिरुक्कुम्वाय् तनिले— कण्णन्
आरेऴु कट्टॅरुम् बॅप्पोट्टु विडुवान्;
ऍङ्गाहिलुम् पार्त्त दुण्डो ?— कण्णन्
ऍङ्गळैच् चॅय्हिन्ऱ वेडिक्कै यॊन्ऱो ? (तीराद) 6
विळैयाड वावॅन् ऱऴैप्पान्— वीट्टिल्
वेलैयॅन् ऱालदैक् केळाविऴुप्पान्;
इळैयारॊ डाडिक् कुदिप्पान्— ऍम्मै
इडैयिर् पिरिन्दुपोय् वीट्टिले शॊल्वान् (तीराद) 7
अम्मैक्कु नल्लवन् कण्डीर्— मूळि
अत्तैक्कु नल्लवन् तन्बैक्कु भःदे
ऍम्मैत् तुयर्शॆयुम् पॆरियोर्— वीट्टिल्
यावर्क्कुम् नल्लवन् पोले नडप्पान् (तीराद) 8
कोळुक्कु मिहवुम् शमर्त्तन्— पॊम्मै
कुत्तिरम् पऴिशॊलक् कूशाच् चऴक्कन्
आऴुक् किशैन्दपडिप् पेशित्— तॆरुविल्
अत्तनै पॆण्गळॆयुम् आहादडिप्पान् (तीराद) 9

कण्णन्—ऍन् कादलन् (1)—10

शॆञ्जुरुट्टि— तिस्र एक ताळम्; शिरुङ्गार रसम्

तूण्डिर् पुऴुबिनैप् पोल्— बॆळिये, शुडर् विळक्किनैप्पोल्
नीण्ड पॊऴुदाह्— ऍनदु, नॆञ्जम् तुडित्तदडी !
कूण्डुक् किळियिनैप् पोल्— तनिमै, कॊण्डु मिहवुम् नॊन्देन्;
वॆण्डुम् पॊरुळै यॆल्लाम्— मनदु, वॆरुत्तु विट्टदडी 1

और मुख खोलकर उसे सुनते रहेंगे। ५ नशे में खुले मुख में कान्हा छः-सात बड़ी चींटियाँ डाल देगा। क्या ऐसा कहीं देखा है आपने ? इस प्रकार कान्हा जो ठठोली करता है, वह क्या एक ही विनोद है ? ६ 'खेलने आओ' कहकर वह बुलायगा। 'घर में काम है' —कहें, तो नहीं सुनेगा। खींचेगा। छोटों के साथ नाचेगा, कूदेगा। हमें बीच में ही छोड़कर घर जायगा और उनसे कह देगा। ७ मेरी मैया के लिए वह अच्छा है ! अंगहीना (= "विधवा") बुआ (सास) के लिए भी वह अच्छा है। पिता के लिए भी वही अच्छा है। हमें सतानेवाले जो बड़े लोग हैं घर में, उन सबके सामने वह 'अच्छे बच्चे' की तरह बरताव करेगा। ८ वह चुगलबाजी में महासमर्थ है ! झूठ, शिकायत, दोषारोपण आदि में न हिचकनेवाला धूर्त है वह। आदमी के मन के अनुकूल बातें करके वह गली में सारी लड़कियों में वैमनस्य पैदा कर देगा। ९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मद से खुले हुए मुख के विवरों को लखकर।
देता उनमें डाल चींटियाँ बड़ी पकड़कर॥
करता कान्ह विनोद (लिये ग्वालों की टोली)।
ऐसी भी देखी है तुमने कहीं ठिठोली?॥ ६॥
"आओ खेलें साथ" —यही कह कान्ह बुलाता।
कहें "काम है घर में", पिण्ड नहीं बच पाता॥
है ढोटों के साथ कूदता और नाचता।
(चुटकी भरकर अंग नोचता वस्त्र) खींचता॥
हमें बीच में ही तज करके घर जाता है।
घरवालों से (वह मेरी) चुगली खाता है॥ ७॥
अच्छा लड़का इसे समझती मेरी मैया।
कहती कानी सास— "बड़ा है भला कन्हैया"॥
और पिता के लिए कान्ह सीधा-सच्चा है।
(घरवालों के लिए कान्ह भोला बच्चा है)॥
हमें सताता और बड़ों से भोला बनता।
उन के प्रति व्यवहार सज्जनों-सा है करता॥ ८॥
चुगली खाने में समर्थ अतिशय धुरीण है।
झूठ, शिकायत, दोषारोपण में प्रवीण है॥
गलियों में सखियों से मन-अनुकूल वचन कह।
बालाओं में वैमनस्य पैदा करता वह॥ ९॥

कान्हा : मेरा प्रेमी (१)-- १०

ज्यों काँटे में फँसी हुई मछली अति पीड़ित।
बाहर जलता हुआ दीप ज्यों चंचल, कम्पित॥
बहुत देर से मेरा हृदय छटपटाता है।
पिंजर-शुक को ज्यों न अकेलापन भाता है॥
उसी भाँति मेरे मन को भी कुछ न सुहाता।
सभी वस्तुएँ प्रिय, न किन्तु मन है रम पाता॥ १॥

कान्हा : मेरा प्रेमी (१)—१०

आँकड़ी (मछली पकड़ने के काँटे) में फँसे कीड़े के समान, बाहर (खुले में) रहनेवाले जलते दीप के समान, बहुत देर से मेरा मन छटपटा रहा था, री! पिंजरे में बन्द तोते के समान अकेलापन लिये मैं बहुत दुखी रही। सारी प्रिय वस्तुओं को मेरे मन ने अप्रिय मान लिया, री! १ चटाई पर जब मैं पड़ी रही, माता को देखूं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पायिन्मिशै नानुम्— तनिये, पडुत् तिरुक्कैयिले
तायिनैक्कण्डालुम्— सकिये, शलिप्पु वन्ददडी !
वायिनिल् वन्द देल्लाम्— सकिये, वळर्त्तुप् पेशिडुवीर्;
नोयिनैप् पोलञ्जिनेन्— सकिये, नुङ्ग ळुऱवैयल्लाम् 2
उणवु शैल्ल विल्लै— सकिये !, उऱक्कङ् गोळ्ळविल्लै
मनम् विरुम्बविल्लै— सकिये, मलर् पिडिक्क विल्लै;
कुणमुरुदि यिल्लै— ऍबिलुम्, कुळप्पम् वन्ददडी !
कणमुम् उळत्तिले— शुहमे, काणक् किडैत्तविल्लै 3
पाम्बुङ् गशन्ददडी— सकिये, पडुक्कै नॉन्ददडी !
कोलक्किळि मॉळियुम्— शॊवयिल्, कुत्त लॅडुत्तदडी
नालु वयित्तियरुम्— इनिमेल्, नम्बुदर् किल्लैयॅन्ऱार्;
पालत्तुच् चोशियनुम्— गिरहम्, पडुत्तु मॅन्ऱु विट्टान् 4
कनवु कण्डदिले— ऑरुनाळ्, कण्णुक्त् तोन्ऱामल्
इनम् विळङ्गविल्लै— ऍवनो, ऍन् नहन्दॊट्टु विट्टान्
विनवक् कण्विळित्तेन्— सकिये, मेनि मऱैत्तु विट्टान्
मनदिल् मट्टिलुमे— पुदिदोर्, महिळ्च्चि कण्डदडी ! 5
उच्चि कुळिर्न्ददडी !— सकिये, उडम्बु नेराच्चु
मच्चिलुम वीडुमॅल्लाम्— मुन्नैप् पोल्, मनत्तुक् कॊत्तदडी !
इच्चै पिऱन्ददडी !— ऍदिलुम्, इन्बम् विळैन्ददडी !
अच्च मॊळिन्ददडी !— सकिये, अळहु वन्ददडी ! 6
ऍण्णुम् पॊळुदि लॅल्लाम्— अवन्कै, इट्ट इडत्तिनिले
तण्णॅन् ऱिरुन्ददडी !— पुदिदोर्, शान्दि पिऱन्ददडी !

तो भी— हे सखी, उकताहट आयी ! मुख में जो आया, वह सब बढ़ा-चढ़ाकर बोलोगी— री सखी ! अतः हे सखियो, तुम्हारे नाते से मैं बीमारी के समान डरूँगी । २ खाना मुख के अन्दर नहीं जाता । उसे मन नहीं चाहता । हे सखी ! फूल पसन्द नहीं आते । मनोदशा स्थिर नहीं रहती । हर बात में गड़बड़ाहट (अव्यवस्था) आ गयी ! क्षण के लिए भी चित्त में सुख देखने को नहीं मिला । ३ दूध भी कड़ुआ लगा । री सखी ! शय्या दुख देती है ! सुन्दर शुक-वाणी भी कान में चुभती है ! चार वैद्यों ने भी कह दिया-- अब विश्वास नहीं किया जाता । पुल पर के ज्योतिषी ने भी कह दिया-- ग्रहों का गुण है, वह संकट उत्पन्न कर देगा ही ! ४ एक स्वप्न देखा; उसमें एक दिन आँखों को दिखाई दिये बग़ैर, वह किस जाति का है, यह नहीं मालूम हुआ-- किसी ने मेरा मर्म छू लिया । पूछने के लिए आँखें खोलीं-- हे सखी ! वह शरीर को छिपाकर गया मन में, तो एक नयी पुलक (आनन्द) दिखने लगी । ५ भाल शीतल हो गया । (मन स्वस्थ हो गया ।) हे सखी ! शरीर भी ठीक हो गया । मचान, घर सब पहले की तरह मन को भाये ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(दुखित) चटाई पर मैं पड़ी रही मुरझायी।
माता को लखकर हे सखि ! उकताहट आयी ॥
मुख में जो कुछ भी आयेगा सखी ! तुम्हारे।
बढ़ा - चढ़ाकर वह बोलोगी (बिना विचारे) ॥
तुमसे नाता जोड़ रोग - सम, मैं डरती हूँ।
इसीलिए तव सम्मुख कुछ न कथन करती हूँ ॥ २ ॥
कौर नहीं धँसता है मेरे मुख के अन्दर।
मन उदास, सखि ! फूल नहीं लगते हैं सुन्दर ॥
गड़बड़ है हर बात नहीं मन रहता सुस्थिर।
मेरे मन को चैन नहीं मिलता है क्षण भर ॥ ३ ॥
कड़वा लगता दूध, सेज भी लगती दुखकर।
कानों में चुभती है शुक की वाणी सुन्दर ॥
वैद्यों ने भी कहा कि— "अब विश्वास नहीं है।
(इसके जीने की अब कुछ भी आश नहीं है)" ॥
कहा ज्योतिषी ने (इसके) ग्रह बड़े विकट हैं।
(आनेवाले इस पर बड़े - बड़े) संकट हैं ॥ ४ ॥
एक बार निशि में मैंने यह सपना देखा।
"छुआ किसी ने मर्म" नयन ने उसे न पेखा ॥
मैंने आँखें खोलीं जभी पूछने के हित।
तभी हो गया उसका (सुघर) शरीर अलक्षित ॥
जाने, था किस वर्ग (जाति) का जान न पाई।
मेरे मन में प्रीति (अलौकिक अद्भुत) छाई ॥ ५ ॥
शीतल मस्तक हुआ, हृदय भी स्वस्थ हो गया।
तन चंगा हो गया (ताप सम्पूर्ण खो गया) ॥
पहले के ही सम मचान, घर मन को भाये।
इच्छाएँ जग पड़ीं सभी में सुख सरसाये ॥
हुआ दूर भय, सखी ! सरस सौंदर्य छा गया।
(उर-उपवन में मंजु मधुर मधुमास आ गया) ॥ ६ ॥
जहाँ-जहाँ (तन में) उसका कर लगा (सुकोमल)।
(वहाँ-वहाँ) वह अंग हो गया (अतिशय) शीतल ॥
हे सखि ! (अब) हर समय (उसी की) याद सताती।
(अद्भुत सुखकर) नयी शान्ति (मन में) उपजाती ॥

इच्छाएँ पैदा हुईं। किसी भी बात में सुख मिलने लगा। री ! सखी ! डर दूर हो गया। सौन्दर्य छा गया। री ! ६ स्मरण करते हर समय, उसका हाथ, जहाँ-जहाँ लगा, वह स्थान शीतल रहा, री ! एक नयी शान्ति पैदा हो गयी, री !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅण्णि यॅण्णिप् पार्त्तेन्— अवन् तान्, यारॅन्नच् चिन्दै शॅय्देन्;
कण्णन् तिरुवुरुवम्— अङ्ङन्ने, कण्णिन्मुन् निन्ऱदडी ! 7

कण्णन्—अॅन् कादलन् (2)—11

(उऱक्कमुम् विऴिप्पुम्)

नादनामक् किरियै— आदि ताळम्; रसङ्गळ्— बीबत्सम्-शिरुङ्गारम्

नेरम् मिहुन्ददिन्नुम् नित्तिरैयिन्ऱि— उङ्गळ्
निन्नैप्पुत् तॅरिय विल्लैकूत् तडिक्किऱीर्;
शोरन् उऱङ्गि विऴुम्नळ्ळिरक्किले— अॅन्न
तूळि पडुहुदडि, इव्विडत्तिले
ऊरै यॅऴुप्पिविड निच्चयङ् गॊण्डीर्— अन्नै
ऑरुत्तियुण् डॅन्बदैयुम् मऱन्दु विट्टीर;
शारम् मिहुन्ददॅन्ऱु वार्त्तै शोल्हिऱीर्— मिहच्
चलिप्पुत् तरुहुदडि सहिप् पॅण्गळे ! 1
नानुम् पलदिनङ्गळ् पॊऱुत्तिरुन्देन्— इदु
नाळुक्कु नाळदिह माहिविट्टदे;
कून नॊरुवन् वन्दिन् नाणि पिन्नलैक्
कॊण्डैमलर् शिदऱ निन्ऱिऴुत् तदुम्
आनैमदम् पिडित्तिव् वञ्ञि यम्मैयिन्
अरुहिनि लोड इवळ् मूर्च्चै युऱ्ऱदुम्,
पानैयिल् वॅण्णॅय् मुऱ्ऱुम् तिन्ऱु विट्टदाल्
पाङ्गि युरोहिणिक्कु नोवु कण्डदुम् 2
पत्तिनि याळैयॊरु पण्णै वॅळियिल्
पत्तुच् चिरुवर् वन्दु मुत्तमिट्टदुम्
नत्ति महळिनुक्कोर् शोदिडन् वन्दु
नाऱ्प दरशर् तम्मै वाक्कळित्तदुम्

स्मरण करके देखती हूँ। 'आखिर वह कौन होगा ?' इस पर विचार किया। तब कान्हा का श्रीरूप आँखों के सामने आ गया, री ! ७

कान्हा : मेरा प्रेमी (२)—११

(निद्रा तथा जागरण)

समय अधिक हो गया बिना सोये —तुम क्या सोचती हो, मैं नहीं जानती। धूम मचाती हो बहुत ! जब चोर भी नींद में मग्न हो जाता है, उस अर्धरात्रि में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"आखिर है वह कौन ?" —विचार किया जब मन में।
झलक उठा तब कान्हा का श्रीरूप नयन में ॥ ७ ॥

कान्हा : मेरा प्रेमी (२)—११

(निद्रा तथा जागरण)

नहीं जानती— "तुम क्या सोच रहीं (सकुचाती)"।
बहुत देर से नींद नहीं (नयनों में आती) ॥
सोयीं नहीं देर से, क्यों तुम धूम मचातीं ?।
(भलभल रोकूँ, फिर भी उधम मचाती जातीं) ॥
अर्धरात्रि में नींद चोर को भी है आती।
तब तू ऐसे समय (भला) क्यों धूल उड़ाती ॥
सारा गाँव जगाने का क्या किया विनिश्चय।
"माता भी है !", भूल गई क्या उनका भी भय ? ॥
अपनी समझ सरस सुन्दर है बात सुनाती।
वह उचाटती मेरे मन को किन्तु सताती ॥ १ ॥
बहुत दिनों से मैं चुपके से सहती जाती।
पर यह व्यथा दिनों दिन अब है बढ़ती जाती ॥
"इस लज्जाशीला नारी के केश पकड़कर।
खींच रहा कुबड़ा जूड़े के फूल गिराकर" ॥
"पीछा करता दौड़-दौड़ हाथी मतवाला।
भय से मूर्च्छित होती वज्जि नाम की बाला" ॥
"खा जाने पर वह हाँड़ी का सारा मक्खन।
सखी रोहिणी हो जाती बीमार (रुग्ण-तन)" ॥ २ ॥
"शीलवती का खेत बीच (आलिंगन करते)।
एक साथ दस-दस लड़के हैं चुंबन करते" ॥
"ननद - सुता को आकर एक ज्योतिषी ब्राह्मण।
सुना रहा चालीस नृपों का प्रणय - निवेदन" ॥

क्या धूल उड़ा रही हो ? री ! यहाँ सारे गाँव को जगाने का निश्चय कर चुकी हो ! एक माँ भी है यहाँ —यह भी भूल गयी हो ! सारभूत समझकर एक बात सुना रही हो —पर मन को उचाट देती है, री ! हे सखियो ! बालाओ ! १ मैं भी अनेक दिन चुप रहकर सहती रही। —पर यह (शरारत) रोज-ब-रोज ज्यादा हो रही है। एक कुबड़े का आकर इस लज्जाशीला नारी के जूड़े को पकड़कर जूड़े के फूलों को छितराते हुए खींचना; हाथी का मदमत्त होकर 'वज्जि' नामक बाला के पास दौड़ना और इसका मूर्च्छित होना; घड़े का मक्खन सारा खा जाने से सखी रोहिणी का बीमार हो जाना— २ एक शीलवती का खेत के मैदान में दस छोकरों का आकर चुम्बन कर लेना; ननद की पुत्री को (नती नाम की स्त्री को, एक ज्योतिषी का आकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कॊत्तुक् कनल् विळियक् कोविनिप् पॆण्णैक्
कॊङ्गत्तु मूळिकण्डु कॊक्करित् तडुम्
वित्तेप् पॆयरुडैय वीणि यवळुम्
मेऱ्कुत्तिशै मॊळिहळ् कऱ्ऱु वन्दबुम् 3

ऎत्तनै पॊय्हळडि ! ऎन्न कदैहळ्
ऎन्नै उऱक्क मिन्ऱि इन्नल् शॆय्हिरोर् !
शत्तमिडुङ् गुळल्हळ् वीणैह ळॆल्लाम्
ताळङ्गळोडु कट्टि मूडिवैत् तङ्गे
मॆत्त वॆळिच्चमिन्ऱि ऒऱ्ऱै विळक्कै
मेऱ्कुच् चुवररुहिल् वैत्तदन् पिन्नर्
नित्तिरै कॊळ्ळ ऎनैत् तनियिल् विट्टे
नीङ्गळॆल् लोरुमुङ्गळ् वीडु शॆल्लुवीर् 4

(पाङ्गियर् पोन्नपिन्बु तनियिषन्बु शॊल्लुदल्)

कण्गळ् उऱङ्ग वॊरु कारण मुण्डो,
कण्णनै इन्ऱिशबु काण्बदन् मुन्ने ?
पॆण्गळॆल् लारुमवर् वीडु शॆन्ऱिट्टार्
पिरिय मिहुन्द कण्णन् कात्तिरुक्किन्ऱान्;
वॆण्गल वाणिहरिन् वीवि मुनैयिल्
वेलिप् पुऱत्तिलॆनैक् काणडि यॆन्ऱान्;
कण्गळ् उऱङ्ग लॆनुङ् गारिय मुण्डो
कण्णनैक् कैयिरण्डुङ् गट्टलिन्ऱिये ? 5

चालीस राजाओं का (प्रणय-) वचन सुनाना; अंगारों की राशि के समान आँखोंवाली राजकुमारी को देखकर कोंग (देश) की विधवा नारी की हँसी उड़ाते हुए ताली पीटकर शोर मचाना; और विस्मयकारी नामवाली उस निरर्थक काम करनेवाली का आकर पाश्चात्य भाषाएँ सीखकर आना— ३ कितने ही झूठ ! क्या ही कहानियाँ ! मुझे बिना सोने दिये तंग कर रही हो ! स्वर उत्पन्न करनेवाली मुरलियाँ, वीणाएँ —सभी को करतालों के साथ बाँधकर बन्द करके वहाँ मन्द प्रकाश का अकेला दीप पश्चिमी दीवार के पास रखो और फिर मुझे सो लेने के लिए अकेले में छोड़कर तुम सभी अपने-अपने घर चली जाओ। ४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"अंगारों की राशि - समान लोचनों वाली।
राजकुमारी को लखकर (अतिशय मतवाली)॥
कोंग देश की अंगहीन नारी (मदमाती)।
ताली बजा - बजाकर हँसती शोर मचाती"॥
"अद्भुत नाम्नी काम निरर्थक करनेवाली।
सीख पश्चिमी भाषाएँ आती (मतवाली)"॥ ३॥

झूठी कहानियाँ ऐसी सैकड़ों सुनातीं।
सोने देतीं नहीं मुझे तुम लोग सतातीं॥
बजनेवाली सभी मुरलियाँ औ' वीणाएँ।
बन्द करो, कोई न ताल (तुक, तान) मिलाएँ॥
सब बाजों को बाँध, दीप की ज्योति मन्द कर।
उस पश्चिमी दिवार पास इनको आओ धर॥
शान्ति - समेत मुझे सोने दो (गुल न मचाओ)।
मुझे अकेले छोड़ सभी अपने घर जाओ॥ ४॥

(सखियों के जाने के बाद अकेले कहना)

जब तक कान्हा का न आज कर लेंगे दर्शन।
तब तक सो सकते न कभी ये मेरे लोचन॥
गईं सभी कन्याएँ अब अपने - अपने घर।
करता (प्रबल) प्रतीक्षा होगा कान्हा प्रियवर॥
"बर्तन वालों की वीथी के अन्त - छोर पर।
आकर मुझसे मिलो भीत के पास पहुँचकर"॥
कान्हा ने था कहा— अतः मुझको है जाना।
उर लाये बिन कान्ह, (नींद बस एक बहाना)॥ ५॥

(सखियों के जाने के बाद अकेले में कहना)

आँखों के पास सोने का कोई कारण है क्या ? फिर कान्हा को आज रात देखने के पहले ? सभी कन्याएँ अपने-अपने घर चली गयीं। बड़ा प्रेम करनेवाला कान्हा प्रतीक्षा कर रहा है ! 'काँसे के व्यापारियों की वीथी के छोर पर, चहारदीवारी के पास मुझसे मिली, री !' —यह कहा था उसने ! आँखों के लिए सोने का कार्य, बिना कान्हा के दोनों हाथों को बाँधे (गले लगे), होगा क्या ? ५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णन्—ऍन् कादलन् (3)—12

(काट्टिले तेडुवन्)

हिन्दुस्तानी तोडी रागम्; आदि ताळम्; रसङ्गळ्— बयनकम् अर्पुदम्

तिक्कुत् तॅरियाद काट्टिल्— उन्नैत्
तेडित् तेडि इळैन्तेन्
मिक्क नलमुडैय मरङ्गळ्— पल
विन्दैच् चुवैयुडैय कनिहळ्— ऍन्दप्
पक्कत्तैयुम् मऱैक्कुम् वरैहळ्— अङ्गु
पाडि नहर्न्दुवरु नदिहळ्— ऑरु (तिक्कुत्) 1
नॅञ्जिऱ् कनल् मणक्कुम् पूक्कळ्— ऍङ्गुम्
नीळक् किडक्कुमलैक् कडल्हळ्— मदि
वञ्चित् तिडुमहळिच् चुनैहळ्— मुट्कळ्
मण्डित् तुयर्कॊडुक्कुम् पुवर्हळ्— ऑरु (तिक्कुत्) 2
आशैपॅऱ् विळिक्कुम् मान्गळ्— उळ्ळम्
अञ्जक् कुरल्पळहुम् पुलिहळ्— नल्ल
नेशक् कविदै शॊलुम् पऱवै— अङ्गु
नीण्डे पडुत्तिरुक्कुम् पाम्बु— ऑरु (तिक्कुत्) 3
तन्निच्चै कॊण्डलैयुम् शिङ्गम्— अदन्
शत्तत् तिनिऱ् कलङ्गुम् यानै— अदन्
मुन्निन् ऱोडुमिळ मान्गळ्— इवै
मुट्टा दयल्पडुङ्गुन् दवळै— ऑरु (तिक्कुत्) 4
काल्है शोर्न्दुविळ लानेन्— इरु
कण्णुम् तुयिल्पडर लानेन्— ऑरु

कान्हा : मेरा प्रेमी (३)—१२

(जंगल में ढूँढ़ना)

मैं उस जंगल में जहाँ दिशाएँ ज्ञात नहीं होतीं तुम्हें ढूँढ़ते-ढूँढ़ते दुर्बल हो गयी। (टेक) बहुत सुहावने तरु-- अनेक विचित्र स्वाद के फल-- सब ओरों को छिपा देनेवाले पहाड़ (या बाँस के वृक्ष), वहाँ गाती हुई, मन्द रेंगती आनेवाली नदियाँ-- (टेक) १ दिल में आग-सी गन्ध देनेवाले फूल-- सर्वत्र लम्बे लहरों सहित पड़े रहनेवाले समुद्र (झील), मति-भ्रम पैदा करनेवाली भँवरों-सहित सरिताएँ-- काँटों को अधिक उगाकर दुख देनेवाली झाड़ियाँ-- (टेक) २ प्यार चाहती हुई ताकने वाली हिरनियाँ-- मन को दहलाते हुए स्वर उठानेवाले व्याघ्र--अच्छी प्यार की कविता कहनेवाली चिड़िया-- वहाँ लम्बा पड़ा रहनेवाला सर्प-- एक (जंगल में)। (टेक) ३ अपनी इच्छा के अनुसार घूमनेवाला सिंह— उसके स्वर से घबड़ानेवाला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कान्हा : मेरा प्रेमी (३)—१२

(जंगल में ढूँढ़ना)

अति भीषण है यह अनजाना जंगल कान्हा।
खोज - खोजकर तुम्हें, हुई मैं दुर्बल कान्हा ।। टेक ।।
सुहावने तरु भाँति - भाँति के (सुहा रहे हैं)।
अति विचित्र स्वादिष्ट सुफल (मन लुभा रहे हैं) ।।
सभी दिशाएँ ढकनेवाले पर्वत सुन्दर।
ऊँचे - ऊँचे झूम रहे बाँसों के तरुवर ।।
मन्द - मन्द बहतीं नदियाँ (मानो) गाती हैं।
(कलकल - छलछल करती चलतीं, लहराती हैं) ।। १ ।।
अति भीषण है यह अनजाना जंगल कान्हा !।
खोज - खोजकर तुम्हें हुई मैं दुर्बल कान्हा ! ।। टेक ।।
मन में आग लगाते सुरभित सुमन (रँगीले)।
लहर - लहर लहरातीं (अतिशय) लंबी झीलें ।।
मति - भ्रम पैदा करतीं भँवर - भरी सरिताएँ।
काँटों - भरी झाड़ियाँ (उलझा) दुख पहुँचाएँ ।। २ ।।
अति भीषण है यह अनजाना जंगल कान्हा !।
खोज - खोजकर तुम्हें हुई मैं दुर्बल कान्हा ! ।। टेक ।।
प्यार चाहनेवाले ताक रहे मृग-गण हैं।
मन दहलाते बाघ गरजते (अतिभीषण) हैं ।।
प्रेममयी रचनाएँ गाते खग (मधु - स्वर हैं) ।।
लंबे - लंबे लेटे हुए कहीं अजगर हैं ।। ३ ।।
अति भीषण है यह अनजाना जंगल कान्हा !।
खोज - खोजकर तुम्हें हुई मैं दुर्बल कान्हा ! ।। टेक ।।
सिंह (कहीं) स्वेच्छा से विचरण करनेवाले।
(और कहीं) गज उसके स्वर से डरनेवाले ।।
मृग उसके सम्मुख से (कहीं) भगानेवाले।
(कहीं) अलग छिपनेवाले मेंढक (भयवाले) ।। ४ ।।
अति - भीषण है यह अनजाना जंगल कान्हा !।
खोज - खोजकर तुम्हें हुई मैं दुर्बल कान्हा ! ।। टेक ।।
हाथ - पैर थक गये लगी मैं गिरने (भू पर)।
निद्रा छाने लगी युगल आँखों में (आकर) ।।

गज--उसके सामने से भागनेवाले हिरण-- ये सींग न मारें --अलग छिपनेवाले मेंढक --(टेक) ४ हाथ-पैर थक गये और मैं गिरने लगी। दोनों आँखों में निद्रा छाने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेल्कैक् कॊण्डुकॊलै वेडत्— उळ्ळम्
वॆट्कम् कॊण्डॊळिय विळित्तान्— ऒरु (तिक्कुत) 5
"पॆण्णे उन्नदळैक् कण्डु— मन्नम्
पित्तङ् कॊळ्ळु" दन्नु नहैत्तान्— "अडि
कण्णे ऎन्नविरुकण् मणिये— उन्नैक्
कट्टित् तळुवमन्नम् कॊण्डेन् 6
शोर्न्दे पडुत्तिरुक्क लामो ?— नल्ल
तुण्डक् कऱिशमैत्तुत् तिन्बोम्— शुवै
तेर्न्दे कनिहळ् कॊण्डु तरुवेन्— नल्ल
तेङ्गळ् ळुण्डिनिदु कळिप्पोम्" 7
ऎन्ऱे कॊडियविळि वेडत्— उयिर्
इऱ्ऱुप् पोहविळित् तुरैत्तान्— तनि
निन्ऱे इरुकरमुङ् गुवित्तु— अन्द
नीशन् मुन्नरिवे शॊलवेन् 8
"अण्णा उन्नदडियिल् वीळ्वेन्— ऎन्ने
अम्जक् कॊडुमै शॊल्ल वेण्डा— पिऱन्
कण्णालञ् जॆय्दुविट्ट पॆण्णै— उन्ऱन्
कण्णाऱ् पार्त्तिडवुन् दहुमो ?" 9
"एडि, शात्तिरङ्गळ् वेण्डेन्;— निन्न
बिन्बम् वेण्डुमडि कनिये— निन्ऱन्
मोडि किऱुक्कुदडि तलैयै— नल्ल
मॊन्दैप् पळैय कळ्ळैप्पोले" 10

लगी—एक साँग हाथ में लेकर एक घातक निषाद ने—मन में लाज को त्यागकर ताका (और कहा)। (टेक) ५ 'हे तरुणी! तुम्हारा सौन्दर्य देखकर मेरा मन उन्मत्त हो रहा है' —कहकर वह हँसा—'री! आँख! दोनों आँखों की पुतली! तुम्हारा आलिंगन करने को मन चाहता है। (टेक) ६ क्या थककर लेटी हुई हो? —अच्छा मांस पकाकर खायेंगे। मैं स्वादिष्ट फल तोड़ लाऊँगा—हम अच्छी मधुर सुरा पियेंगे तथा मन बहलायेंगे'। (टेक) ७ क्रूर-दृष्टिनिषाद ने मेरे प्राणों को गिराते हुए ऐसा कहा। —अलग खड़ी होकर दोनों हाथ जोड़कर, उस नीच के आगे मैंने ये शब्द कहे! (टेक) ८ 'बड़े भैया! तुम्हारे चरणों पर गिरूँगी। मुझे भयभीत करते हुए क्रूर बातें मत कहो। दूसरे की ब्याही स्त्री को अपनी (काम की) आँखों से देखना भी उचित है क्या?' (टेक) ९ "हे री! शास्त्र नहीं चाहिए! तुम्हारा सुख ही चाहता हूँ। हे फल! तुम्हारा क्रोध मेरे सिर को घूमा रहा है—अच्छे घड़े की पुरानी ताड़ी के समान"। (टेक) १० अपने कानों से यह वचन सुना! 'रे कान्हा' चिल्लाते हुए मैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हत्यारा निषाद आ, लिये साँग था निज कर।
लगा ताकने ढीठ हृदय की लज्जा तजकर॥ ५ ॥

अति - भीषण है यह अनजाना जंगल कान्हा !।
खोज - खोजकर तुम्हें हुई मैं दुर्बल कान्हा ! ॥ टेक ॥
"हे तरुणी ! लखकर (अपूर्व) सौन्दर्य तुम्हारा।
है अतिशय उन्मत्त हो रहा हृदय हमारा॥
मेरी आँखों की पुतली (-सी तुम मन - भावन)।
मन होता है करूँ तुम्हारा (मैं) आलिंगन"॥
यह कहकर हँस पड़ा (ठठाकर) था वह (दुर्जन)।
(सुनकर उसकी बात डर गया मेरा मृदु मन)॥ ६ ॥

अति भीषण है यह अनजाना जंगल कान्हा !।
खोज - खोजकर तुम्हें हुई मैं दुर्बल कान्हा ! ॥ टेक ॥
(बहुत) थकी हो, (अच्छा) लेटी रहो (भूमि पर)।
खायेंगे (हम अभी मनोरम) मांस पकाकर॥
स्वाद - भरे फल तोड़ - तोड़कर हम लायेंगे।
मधुर सुरा पी करके मन (को) बहलायेंगे॥ ७ ॥

अति - भीषण है यह अनजाना जंगल कान्हा !।
खोज - खोजकर तुम्हें हुई मैं दुर्बल कान्हा ! ॥ टेक ॥
क्रूर - दृष्टि वाले निषाद ने ऐसा कहकर।
किये भयातुर प्राण, हुई मैं अतिशय कातर॥
उठकर खड़ी हो गई मैं उससे कुछ हटकर।
कहा नीच से (मैंने) दोनों हाथ जोड़कर॥ ८ ॥

अति - भीषण है यह अनजाना जंगल कान्हा !।
खोज - खोजकर तुम्हें हुई मैं दुर्बल कान्हा ! ॥ टेक ॥
अरे ! बड़े भैया ! गिरती हूँ तव चरणों पर।
कहो क्रूर मत ऐसी बातें मुझे भीत कर॥
किसी दूसरे की नारी जो मिले विवाहित।
काम - दृष्टि से उसे देखना है क्या समुचित ?॥ ९ ॥

अति - भीषण है यह अनजाना जंगल कान्हा !।
खोज - खोजकर तुम्हें हुई मैं दुर्बल कान्हा ! ॥ टेक ॥
तब बोला वह— "नहीं चाहिए शास्त्र तुम्हारा।
तव सुख का (सुन्दरी !) चाहिए (मुझे सहारा)॥
अच्छे घट में भरी पुरानी ताड़ी के सम।
रोष तुम्हारा भ्रमित कर रहा है मस्तक (मम)॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कादा लिन्दवुरै केट्टेन्— "अड
कण्णा!" बॆन्ऱलऱि वीळ्न्देन्— मिहप्
पोदाह बिल्लैयिदऱ् कुळ्ळे— ऍन्ऱन्
पोदन् दॆळिय निनैक् कण्डेन् 11
कण्णा ! बेडनॆङ्गु पोनान्— उनैक्
कण्डे यलऱिबिळुन् दानो ?— मणि
वण्णा ! ऍनदबयक् कुरलिल्— ऍनै
बाळ्विक्क वन्दअरुळ् बाळि ! 12

कण्णन्—ऍन् कादलन् (4)—13

(पाङ्गियैत्तुदु विडुत्तल्— तङ्गप् पाट्टु मॆट्टु)

रसङ्गळ्—शिरुङ्गारम्, रौद्रम्

कण्णन् मनिलैयैत् तङ्गमे तङ्गम् (अडि तङ्गमे तङ्गम्)
कण्डुवर वेणुमडि तङ्गमे तङ्गम्;
ऍण्ण मुरैत्तु विडिल् तङ्गमे तङ्गम्— पिन्नर्
एदॆनिलुञ् जॆय्वमडि तङ्गमे तङ्गम् 1
कन्निहै यायिरुन्दु तङ्गमे तङ्गम्— नाङ्गळ्
कालङ् गळिप्पमडि तङ्गमे तङ्गम्;
अन्निय मन्नर् मक्कळ् पूमियिलुण्डाम्— ऍन्नुम्
अदनैयुञ् जॊल्लिडडि तङ्गमे तङ्गम् 2
शॊन्न मॊळि तवरुम् मन्नवनुक्के— ऍङ्गुम्
तॊळमै यिल्लैयडि तङ्गमे तङ्गम्;
ऍन्न पिळैहळिङ्गु कण्डिरुक्किन्ऱान्?— अवै
यावुम् तॆळिवुपॆऱक् केट्टु विडडी ! 3
मैयल् कॊडुत्तु विट्टुत् तङ्गमे तङ्गम्— तलै
मऱैन्दु तिरि बिवर्क्कु मानमु मुण्डो ?
पॊय्यै युरुवमॆनक् कॊण्डव नॆन्ऱे— किळप्
पॊन्नि युरैत्तदुण्डु तङ्गमे तङ्गम् 4

गिर गयी। --बहुत समय नहीं बीत गया। उसके अन्दर, मेरे होश आ गये--यह जाना। (टेक) ११ कान्हा! निषाद कहाँ गया? क्या तुम्हें देखकर चिल्लाता हुआ गिर गया? रे मणिवर्ण! मेरा अभय-दान मांगनेवाला स्वर सुनकर मुझे बचाने जो आयी --वह करुणा जिये। (टेक) १२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अति - भीषण है यह अनजाना जंगल कान्हा ! ।
खोज - खोजकर तुम्हें हुई मैं दुर्बल कान्हा ! ।। टेक ।।
अपने कानों से उसके वचनों को सुनकर ।
रे कान्हा ! चिल्लाकर मैं गिर पड़ी भूमि पर ।।
तनिक देर तक पड़ी रही मैं (सुध-बुध खोकर) ।
होश आ गया मुझे कुछ समय के ही भीतर ।। ११ ।।
अति - भीषण है यह अनजाना जंगल कान्हा ! ।
खोज - खोजकर तुम्हें हुई मैं दुर्बल कान्हा ! ।। टेक ।।
कान्हा ! कहाँ निषाद गया ? (जो मुझे सताता) ।
तुम्हें देखकर भाग गया क्या (वह) चिल्लाता ।।
सुन मेरा भय - शब्द बचाने मुझको आयी ।
सदा जिये वह करुणा मणिमय-वर्ण ! (सुहायी) ।। १२ ।।
अति - भीषण है यह अनजाना जंगल कान्हा ! ।
खोज - खोजकर तुम्हें, हुई मैं दुर्बल कान्हा ! ।। टेक ।।

कान्हा : मेरा प्रेमी (४)—१३

(सखी को दूती बनाकर भेजना)

कान्हा के मन के भावों को तुम जानो स्वर्णिम - वदने ! ।
मन की बात बता दे तब ही कुछ ठानो स्वर्णिम - वदने ! ।। १ ।।
अविवाहित रहकर काटेंगी हम जीवन स्वर्णिम - वदने ! ।
इस पृथ्वी पर अन्य दूसरे भी नृपजन स्वर्णिम - वदने ! ।। २ ।।
वादा जो तोड़ता न उसका मित्र कहीं, स्वर्णिम - वदने ! ।
पूछो "देखे दोष यहाँ क्या" साफ़ कहे, स्वर्णिम - वदने ! ।। ३ ।।
लाज - हीन कर प्रीति छिपाता निज आनन, स्वर्णिम - वदने ! ।
वह असत्य की मूर्ति "पोन्नि" का वचन सत्य, स्वर्णिम - वदने ! ।। ४ ।।

कान्हा : मेरा प्रेमी (४)—१३

(सखी को दूती बनाकर भेजना)

कान्हा की मनस्थिति को, हे तंगम्! (स्वर्ण-सी स्त्री!) हे तंगम्, जानकर आना है, री तंगम् ! हे तंगम् ! वह अपना मन बता दे, तो हे तंगम्, हे तंगम् ! हम चाहे कुछ भी कर लेंगी— तंगम्, हे तंगम् ! १ (अविवाहिता) कन्याएँ रहकर, तंगम्, हे तंगम्, जीवन काटेंगी, तंगम्, हे तंगम् ! अन्य राजा भी पृथ्वी पर हैं —यह बात भी उसे बता दो, तंगम्..... २ वादा तोड़नेवाले राजा का कहीं मित्र नहीं होता, तंगम् .....यहाँ कौन-से दोष उसने देखे ? वे सब साफ़-साफ़ पूछ लो, री तंगम्..... ३ मोह देकर, तंगम्..... सिर छिपाकर घूमनेवाले को लाज भी है क्या ? पोन्नि नामक बूढ़ी स्त्री

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आऱ्ऱङ् गरैयदनिल् मुन्नमॊरु नाळ्— ऎन्नै
अऴैत्तुत् तनियिडत्तिल् पेशिय ऎल्लाम्
तूऱ्ऱि नहर्मुरशु शाऱ्ऱुव नॆन्ऱे
शॊल्लि वरुवैयडि तङ्गमे तङ्गम् 5
शोर मिऴैत्तिडैयर् पॆण्गळुडनॆ— अवन्
शूळ्च्चित् तिऱमै पलकाट्टुव ऎल्लाम्
बीर मऱक्कुलत्तु मादरिडत्ते
वेण्डिय दिल्लैयॆन्ऱु शॊल्लि विडडो ! 6
पॆण्णॆन्ऱु पूमितनिल् पिऱन्दु विट्टाल्— मिहप्
पीऴै यिरुक्कदडि तङ्गमे तङ्गम्;
पण्णॊन्ऱु वेय्ङ्गुऴलिल् ऊदि वन्दिट्टान्— अदेप्
पऱ्ऱि मऱक्कु दिल्लै पञ्जैयुळ्ळमे 7
नेर मुऴुविलुमप् पावि तन्नैये— उळ्ळम्
निनैत्तु मऱहुदडि तङ्गमे तङ्गम्
तीर ऒरुशॊलिन्ऱु केट्टु वन्दिट्टाल्— पित्बु
तॆय्व मिरुक्कुदडि तङ्गमे तङ्गम् 8

कण्णन्—ऎन् कादलन् (5)—14

(पिरि वाऱ्ऱामै)

रागम्—बिलहरि

आशै मुहमऱन्दु पोच्चे— इवै, आरिडम् शॊल्बेनडि तोऴि ?
नेश मऱक्कविल्लै नॆञ्जम्— ऎनिल्, निनैक मुहमऱक्क लामो ? 1
कण्णिल् तरियुदॊरु तॊऱ्ऱम्— अदिल्, कण्ण नऴहुमुऴु दिल्लै
मण्णु मुहवडिवु काणिल्— अन्द, नल्ल मलर्च् चिरिप्पेक् काणोम् 2
ओयवु मॊऴिदलुमिल् लामल्— अवन्, उऱवै निनैत्तिरुक्कु मुळ्ळम्
वायु मुरैप्पदुण्डु कण्डाय्— अन्द, मायन् पुहऴिनै यॆप्पोदुम् 3
कण्गळ् पुरिन्दुविट्ट पावम्— उयिर्क्, कण्ण नुरुमऱक्क लाच्चु;
पॆण्ग ळिनत्तिलिदु पोले— ऒरु, पेदैयै मुन्बुकण्ड दुण्डो ? 4

ने कहा भी था कि वह असत्य की मूर्ति है। तंगम्····· ४ नदी के तट पर, पहले किसी दिन, मुझे बुला लेकर एकान्त स्थान में उसने जो कहा, वह सब नगर भर ढिंढोरा पिटवाकर बता दूंगी —यह कहकर आओ, री तंगम्····· ५ चोरी करके ग्वाल-कन्याओं के साथ जाल-फ़रेब में जो कौशल दिखाता है, वह वीर (मऱवर्) कुल की (कुलीन) कन्याओं से न दिखा दे। यह कह दो। री तंगम्····· ६ स्त्री-जन्म दुनिया में लिया, तो बहुत पीड़ाएँ होती हैं— तंगम्···। बाँसुरी पर एक गीत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुझे बुला जो कहा नदी - तट पर, कहना स्वर्णिम - वदने ! ।
नगर - ढिंढोरा पीट चौतरफ़ कह देंगी स्वर्णिम - वदने ! ।। ५ ।।
चोरी से गोपियों - साथ जो करता छल स्वर्णिम - वदने ! ।
करे न वीर - सुताओं से वैसे कौशल स्वर्णिम - वदने ! ।। ६ ।।
पीड़ाओं से भरा नारियों का जीवन स्वर्णिम - वदने ! ।
मुरली में जो गाया, भूला उसे न मन स्वर्णिम - वदने ! ।। ७ ।।
उस पापी को सोच - सोचकर घुलता मन स्वर्णिम - वदने ! ।
करे दूर, कुछ कहे, अन्यथा दैव प्रबल ! स्वर्णिम - वदने ! ।। ८ ।।

कान्हा : मेरा प्रेमी (५)—१४

(विरह-दुःख)

भूल गया प्रिय - मुख, किससे मैं कहूँ सखी ! दुख ? ।
प्यार न भूला मुझे, भूलना होगा क्या मुख ? ।। १ ।।
आँखों से मैं एक रूप ही को लख पाती ।
उसमें कान्हा की छवि किन्तु न पूर्ण दिखाती ।।
यद्यपि मुख की झलक निरन्तर देख रही हूँ ।
किन्तु सुमन - सी हँसी न दिखती (तरस रही हूँ) ।। २ ।।
उसका सँग अविराम निरन्तर सोच रहा मन ।
मायावी की सदा प्रशंसा करता आनन ।। ३ ।।
कृष्ण - रूप को भुला दिया, हैं पापी लोचन ।
स्त्री - समूह में देखी क्या ऐसी दुःखित - मन ।। ४ ।।

गाता आया, उसको मेरा दुर्बल मन भूलता नहीं ! ७ सारा समय उसी पापी का स्मरण करते-करते चित्त सोच-सोचकर घुलता है— तंगम् ..... । उसे दूर करने के लिए (उससे) कोई समाचार सुनकर आज ले आओ— तो आगे दैव है, (भाग्य में जो होगा, सो हो ।) तंगम्..... ८

कान्हा : मेरा प्रेमी (५)—१४

(विरह-दुःख)

प्यारा मुखड़ा भूल गया— इसे किससे कहूँ, री सखी ! मेरे मन ने प्यार को तो भुला दिया नहीं, तो क्या स्मरण का मुख भूलना होगा ? १ आँखों में एक रूप दिखता है ! उसमें कान्हा का पूर्ण सौन्दर्य नहीं दिखाई देता । मुख को देखती हूँ, पर वह सुमन-सा सुन्दर हास्य नहीं दिखता । २ आराम नहीं, अन्तराल नहीं— मेरा मन उसके सम्पर्क को याद करता रहता है ! मुख भी उस मायावी के यश की प्रशंसा करता रहता है सदा । ३ आँखों का किया पाप— कान्हा का रूप भूल गया । स्त्रियों के समूह में ऐसी एक बेचारी को क्या पहले देखा है ? ४ शहद को भूला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तेन्नै मऱन्दिरुक्कुम् वण्डुम्— ऑळिच्, चिऱप्पै मऱन्दुविट्ट पूवुम्
वान्नै मऱन्दिरुक्कुम् पयिरुम्— इन्द, वैयमुळदु मिल्लै तोऴि ! 5

कण्णन् मुहमऱन्दु पोनाल्— इन्दक्, कण्ग ळिरुन्दु पयनुण्डो ?
वण्णप् पडमुमिल्लै कण्डाय्— इनि, वाऴुम् वऴियैन्नडि तोऴि ? 6

कण्णन्—ऎन् कान्तन्—15

वराळि–तिस्र:एक ताळम्; शिरुङ्गार रसम्

कनिहळ् कॊण्डु तरुम्— कण्णन् कऱ्कण्डु पोलिनिदाय्;
पनिशॆय् शन्दनमुम्— पिन्नुम् पल्वहै अत्तऱ्हळुम्
कुनियुम् वाण्मुहत्तान्— कण्णन् कुलवि नॆऱ्ऱियिलै
इनिय पॊट्टिडवे— वण्णम् इयन्ऱ शव्वादुम् 1

कॊण्डै मुडिप्पदऱ्के;— मणङ् गूडु तयिलङ्गळुम्
वण्डु विऴियिनुक्के— कण्णन् मैयुङ्गॊण्डु तरुम्
तण्डैप् पदङ्गळुक्के— शॆम्मै शार्त्तुशॆम् पञ्जु तरुम्
पॆण्डिर् तमक्कॆल्लाम्— कण्णन् पेशरुन् दॆय्वमडी ! 2

कुङ्गुमङ् गॊण्डु वरुम्— कण्णन् कुऴैत्तु मार्बॆऴुद
शङ्गैयि लावपणम्— तन्दै तऴुवि मैयल् शॆय्युम्;
पङ्ग मॊन्ऱिल्लामल्— मुहम् पार्त्तिरुन् दाऱ्पोदुम्
मङ्गळ माहुमडि— पिन्नोर् वरुत्त मिल्लैयडी ! 3

रहनेवाला भ्रमर और छवि विशेष को जो भूल जाय ऐसा फूल, और आकाश को भूला हुआ पौधा, इस संसार भर में कहीं नहीं है, री सखी ! ५ कान्हा का मुख भूल गया, तो क्या आँखों के रहने से लाभ होगा ? रंगीन चित्र भी नहीं है --अब जीने का रास्ता (संबल) क्या है, री सखी ! ६

कान्हा : मेरा कान्त—१५

खाँड़ के समान मीठे फल लाकर देनेवाला-- कान्हा; शीतल चन्दन और विविध इत्र; शुकी हँसिया-सा मुखवाला कान्हा। प्यार करके भाल पर सुन्दर तिलक लगाने के लिए -- १ कान्हा चोटी सजाने के लिए सुगन्धित तेल, भ्रमर-सी आँखों में लगाने के लिए काजल ला देगा। पायल-विभूषित चरणों के लिए महावर लगाने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कहाँ मधुप ऐसा जो मधु को ही बिसराये।
कहाँ फूल ऐसा जो छवि (की छटा) भुलाये॥
ऐसा पौधा कहाँ भूल जो घन को जाये।
ऐसा कहीं नहीं, कोई जग में दिखलाये॥ ५॥

भूल गये जो कान्हा का रमणीय वदन हैं।
अरी सखी! वे आज हमारे व्यर्थ नयन हैं॥
कान्हा का रंगीन चित्र भी पास नहीं है।
अब जीवन की मन में दिखती आस नहीं है॥ ६॥

कान्हा : मेरा कांत—१५

कान्ह खाँड से भी मीठे फल है ले आता।
शीतल चन्दन और सुगंधित इत्र लगाता॥
झुकी हुई तलवार - सदृश मुख है मुसकाता।
कान्ह सप्रेम भाल पर सुन्दर तिलक लगाता॥ १॥

सुरभित तैलों से (सुन्दर) चोटियाँ सजाता।
भ्रमर - सदृश - दृग - हित कान्हा है काजल लाता॥
पायल लाकर के चरणों को (सदा सजाता)।
लाल रुई से सदा महावर रंग लगाता॥
(सभी भाँति से कान्ह रिझाता महिलाओं को)।
है बोलता हुआ परमात्मा ललनाओं को॥ २॥

कान्हा लाता (कर से) कुंकुम घोल - घोलकर।
रंग - बिरंगे चित्र बनाता वक्षस्थल पर॥
वह असंख्य निधियाँ देकर करता आलिंगन।
कर देता है (मानिनियों का) मोह - मुग्ध मन॥
निर्निमेष देखते रहो उसका मुख (-मंडल)।
होंगे सब दुख दूर (सदा ही) होगा मंगल॥ ३॥

के लिए लाल रुई देगा। स्त्रियों के लिए कान्हा वर्णनातीत भगवान है, री! २ कान्हा कुंकुम लायगा घोलकर छाती पर चित्रकारी करने के लिए। असंख्य निधियाँ देकर वह आलिंगन में लेगा और मोहमुग्ध कर देगा। बिना अंतराल किये (अनवरत) उसका मुख देखते रहो —पर्याप्त है। मंगल होगा। फिर कोई दुख नहीं होगा। ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णम्मा—ऍन् कादलि (1)—16

(काट्चि वियप्पु)

शॅञ्जुरुट्टि— एक ताळम्; रसङ्गळ्— शिरुङ्गारम्— अद्भुतम्

शुट्टुम् विळिच्चुडर् तान्— कण्णम्मा ! शूरिय चन्दिररो ?
वट्टक् करिय विळि— कण्णम्मा ! वानक् करुमै कॊल्लो ?
पट्टुक् करुनीलप्— पुडवै पदित्त नल्वयिरम्
नट्ट नडुनिशियिल्— तॆरियुम् नक्षत्तिरङ्गळडी ! 1
शोलै मलरॊळियो— उनदु शुन्दरप् पुन्नहै तान् ?
नीलक् कडललैये— उनदु नॆञ्जि ललैहळडी !
कोलक् कुयिलोशै— उनदु कुरलि निमैयडी !
वालैक् कुमरियडी— कण्णम्मा मरुवक् कादल् कॊण्डेन् 2
शात्तिरम् पेशुहिराय्— कण्णम्मा ! शात्तिर मेदुक्कडी !
आत्तिरङ् गॊण्डबर्क्के— कण्णम्मा शात्तिर मुण्डोडी !
मूत्तवर् सम्मदियिल्— वदुवै मुरैहळ् पिन्बु शॆय्वोम्;
कात्तिरुप् पेनोडी ?— इतुपार् कन्नत्तु मुत्तमॊन्रु ! 3

कण्णम्मा—ऍन् कादलि (2)—17

(पिन् वन्दु निन्रु कण् मरैत्तल्)

नादनामकिरियै— आदि ताळम्; शिरुङ्गार रसम्

मालैप् पॊळुदिलॊरु मेडै मिशैये, वानैयुम् कडलैयुम् नोक्कि यिरुन्देन्;
मूलैक् कडलिनैयव् वान वळैयम्, मुत्तमिट् टेतळुवि मुहिळ्त्तल् कण्डेन्

कण्णम्मा : मेरी प्रेमिका (१)—१६

(दृश्य विस्मय)

तुम्हारे भाव-पूर्ण आँखों की ज्योतियाँ— कण्णम्मा, क्या सूर्य व चंद्र हैं? गोल काली पुतली— कण्णम्मा, क्या आकाश की कालिमा है ? रेशम की काली-नीली साड़ी में जड़े हीरे क्या बीच रात्रि में दिखनेवाले तारे हैं, री ? १ क्या तुम्हारा सुन्दर मंदहास बाग़ के फूलों की छवि है ? नीले सागर की लहरें ही तुम्हारे मन की भाव-लहरें हैं, री ! विचित्र कोयल-स्वर तुम्हारे कंठ की मधुरिमा है, री ! बालकुमारी री कण्णम्मा ! मैं आलिंगन की अभिलाषा करता हूँ । २ शास्त्र (प्रतिवाद) बोलती हो ! कण्णम्मा, शास्त्रवाद क्यों हो, री ! जो आतुर हैं, कण्णम्मा, उनके लिए शास्त्र (की जरूरत) है क्या ? री ! बड़ों की सम्मति पाकर, विवाह की विधि पीछे सम्पन्न करेंगे । क्या मैं प्रतीक्षा में बैठा रहूँ ? री ! देखो इधर ! गाल में एक चुंबन— ३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णम्मा : मेरी प्रेमिका (१)—१६

(दृश्य विस्मय)

जो करतीं संकेत दृगों की (दिव्य) ज्योतियाँ।
वे मानो हैं सूर्य - चंद्र की (जगमग) द्युतियाँ ॥
कण्णम्मा ! ये गोल पुतलियाँ काली - काली।
मानो हैं नभ-मंडल की कालिमा निराली ॥
श्याम रेशमी साड़ी में ये हीरे प्यारे।
कृष्ण - निशा में चमक रहे हैं मानो तारे ॥ १ ॥
कण्णम्मा की मंद - मंद मुसकान मनोहर।
उपवन के फूलों की छवि - सी लगती सुंदर ॥
मन में भावों की लहरें उठ - उठकर आतीं।
नीले सागर में जैसे लहरें लहरातीं ॥
निकल रहा तव (कलित) कंठ से मधुर - मधुर स्वर।
कूक रही हो ज्यों कोकिल - काकली (मनोहर) ॥
कण्णम्मा ! तुम बाल - कुमारी हो (सुन्दर तन)।
अभिलाषा है यही कि कर लूँ मैं आलिंगन ॥ २ ॥
शास्त्र - वाद को बोल रही हो (करतीं प्रवचन)।
कण्णम्मा को शास्त्रवाद से कौन प्रयोजन ? ॥
कण्णम्मा के लिए जिन्हें है अति आतुरता।
शास्त्रवाद की उनको है क्या आवश्यकता ? ॥
गुरु - आज्ञा से बँध जायेंगे परिणय - बंधन।
मैं कर रहा प्रतीक्षा, दे दो मुझको चुम्बन ॥ ३ ॥

कण्णम्मा : मेरी प्रेमिका (२)—१७

(पीछे से आकर आँख मूंद लेना)

मैं सन्ध्या के समय बैठकर चबूतरे पर।
देख रहा था नभ (विशाल) औ' (विस्तृत) सागर ॥

कण्णम्मा : मेरी प्रेमिका (२)—१७

(पीछे से आकर आँख मूंद लेना)

संध्या समय एक चबूतरे पर बैठकर मैं आकाश तथा समुद्र को निहार रहा था। वह क्षितिज का कमान कोने के समुद्र को चूमते हुए उसका आलिंगन करके मुदित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नील नॅरुक्किडैयिल् नॅञ्जु शॅलुत्ति, नेरङ् गळिवदिलुम् निनैप्पिन्ऱिये
शालप् पलपल नऱ्पहऱ् कत्तबिल्, तन्नै मऱन्दलयत् तन्निल् इरुन्देन्

आङ्गप् पॊळुदिलॅन् पिन्बु ऱत्तिले
आळ्बन्दु निन्ऱॅनदु कण्म ऱॅक्कवे
पाङ्गिलिऱ् कैयिरण्डुम् दीण्डि यऱिन्देन्
पट्टुडै वीशुकमळ् तन्नि लऱिन्देन्
ओङ्गि वरुमुवहै यूऱ्ऱि लऱिन्देन्;
ऑट्टुमि रण्डुळत्तिन् तट्टि लऱिन्देन्;
"बाङ्गि विडडि कैयैयेडि कण्णम्मा
माय मॅवरिडत्तिल्"? ऍन्ऱु मॊळिन्देन् 2
शिरित्त ऑलियिलवळ् कैवि लक्कियि
तिरुमित् तळुवि "ऍन्न शॅय्दिशॊल्" ऍन्ऱॅन्;
"नॅरित्त तिरैक् कडलिल् ऍन्न कण्डिट्टाय्?
नील विशुम्बिनिडै ऍन्न कण्डिट्टाय्?
तिरित्त नुरैयिनडै ऍन्न कण्डिट्टाय्?
शिन्नक् कुमिळिहळिल् ऍन्न कण्डिट्टाय्?
पिरिसुप् पिरित्तु निदम् मेहम् अळन्दे
पॅऱ्ऱ नलङ्गळ् ऍन्न? पेशुदि" ऍन्ऱाळ् 3
"नॅरित्त तिरैक्कडलिल् निन्मुहङ्गण्डेन्;
नील विशुम्बिनिडै निन्मुहङ् गण्डेन्
तिरित्त नुरैयिनिडै निन्मुहङ् गण्डेन्
शिन्नक् कुमिळिहळिल् निन्मुहङ् गण्डेन्
पिरित्तुप् पिरित्तु निदम् मेहम् अळन्दे
पॅऱ्ऱडुन् मुहमन्ऱिप् पिऱि दॊन्ऱिल्ले

हो रहा था --यह मैंने देखा। नीले सँकरे स्थान पर ध्यान लगाये, बीतती देर का न स्मरण करके मैं अनेक सुन्दर दिवा-स्वप्न देख रहा था (और उनमें अपने को विस्मृत कर एक लय में डूबा हुआ था। १ तब वहाँ मेरे पीछे किसी व्यक्ति ने आकर मेरी आँखें मूंद लीं। तो उसी तरीके से दोनों हाथों को स्पर्श करके मैंने उसे जान लिया। रेशमी बस्त्र की सुगन्ध से उसे मालूम कर लिया। उसके बढ़ आते आनन्द के स्रोत से उसे समझ लिया। और मिलते हुए दोनों दिलों के टकराने से जान लिया (कि वह कौन है)। री कण्णम्मा! हटाओ अपने हाथ! यह माया किसके साथ (चल रही है)? --मैंने कहा। २ हँसते हुए स्वर के साथ उसके हाथ को हटाकर मैंने पीछे मुड़कर उसको गले से लगाकर पूछा कि क्या समाचार है? 'लहर-संकुल समुद्र में तुम क्या देखते रहे? नीले आकाश में क्या देखते रहे? मथकर निकलते झागों के बीच क्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सागर के कोने को (झुककर) क्षितिज - शरासन।
आलिंगन - चुम्बन करके हो रहा मुदित - (मन)॥
उस नीले सँकरे थल पर मैं ध्यान लगाये।
"देर हो रही है" —इसकी भी याद भुलाये॥
देख रहा था दिवा - स्वप्न अगणित मन - भाये।
मग्न एक - लय था उनमें निज को बिसराये॥ १॥
तभी वहाँ पीछे से किसी व्यक्ति ने आकर।
(अकस्मात् धर लिये) हमारे नेत्र (मूँद कर)।
भली भाँति से वे दोनों कर मैंने छूकर।
जान गया रेशमी वस्त्र की गंध सूँघकर॥
उसके बढ़ते सुख - प्रवाह से मैंने जाना।
दो हृदयों के टकराने से भी पहचाना॥
कण्णम्मा हो, जान गया मैं, हाथ हटाओ।
अपनी माया (औ' न चुहल) यह मुझे दिखाओ॥ २॥
हँसते - हँसते मैंने उसका हाथ हटाया।
पीछे मुड़कर के फिर उसको गले लगाया॥
फिर उससे पूछा मैंने— "क्या समाचार है"।
उसने भी मुझसे पूछा (फिर इस प्रकार है)॥
"देख रहे थे क्या तुम इस उर्मिल सागर में?।
देख रहे थे क्या तुम इस नीले अम्बर में?॥
देख रहे थे क्या इस उठते झाग - निकर में?।
देख रहे थे क्या तुम लघु - बुद्बुद - आकर में?॥
रोज मापते मेघों को सुलझा - सुलझाकर।
क्या उनसे मिलता है? कहो मुझे समझाकर"॥ ३॥
वदन तुम्हारा देखा लहराते सागर में।
वदन तुम्हारा देखा नील - नील अम्बर में॥
वदन तुम्हारा देखा झागों की करवट में।
वदन तुम्हारा देखा बुद्बुद के सम्पुट में॥
मेघों को नित्य माप मन को उलझाता था।
(केश-राशि मानो मैं तेरी सुलझाता था)॥

देखते रहे? छोटे बुदबुदों में क्या देखते रहे? सुलझा-सुलझाकर रोज मेघों को मापते हो, उससे क्या भले मिला—? —कहो!' —उसने कहा। ३ 'लहर-संकुल समुद्र में तुम्हारा चेहरा देखा, नीले आकाश के मध्य तुम्हारा चेहरा देखा। मथ उठे झागों के मध्य तुम्हारा चेहरा देखा। छोटे बुदबुदों में तुम्हारा चेहरा देखा। सुलझा-सुलझाकर रोज मेघों को मापकर जो पा लिया, वह तुम्हारे चेहरे से कोई अलग नहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शिरित्त ऑलियिनिलुन् कैविलक्कियै
तिरुमित् तऴुवियदिल् निन्मुहङ् गण्डेन्" 4

कण्णम्मा—ऍन् कादलि (3)—18

(मुहत्तिरै कळैदल्)

नादनामक्किरियै—आदि ताळम्; शिरुङ्गार रसम्

तिल्लित् तुरुक्कर् शॅय्द वऴक्कमडि— पॅण्गळ्
तिरैयिट्टु मुहमलर् मऱैत्तु वैत्तल्;
वल्लि यिडैयिनैयुम् ओङ्गि मुन्निऱ्कुम्— इन्द
मार्बैयुम् मूडुवदु शात्तिरङ् गण्डाय्
वल्लि यिडैयिनैयुम् मार्बि रण्डैयुम्— तुणि
मऱैत्तद नालऴहु मऱैन्द दिल्लै;
शॊल्लित् तॆरिवदिल्लै मन्मदक्कलै— मुहच्
चोदि मऱैत्तुमॊरु कादलिङ् गुण्डो ? 1
आरियर् मुन्नॆरिहळ् मेन्मै यॆन्गिऱाय्— पण्डे
आरियप् पॆण्गळुक्कुत् तिरैहळ् उण्डो ?
ओरिरु मुऱैकण्डु पऴहियपिन्— वॆरुम्
ऑप्पुक्कुक् काट्टुवदिन् नाण मॆन्नडी ?
यारिरुन् दॆन्नैयिङ्गु तडुत्तिडुवार्— वलु
वाह मुहत्तिरैयै अहऱ्ऱि विट्टाल् ?
कारिय मिल्लैयडि वीण्प शप्पिले— कनि
कण्डवन् तोलुरिक्कक् कात्तिरुप्पेन्नो ? 2

था। हँसते हुए स्वर के साथ तुम्हारे आलिंगन में तुम्हारा ही चेहरा देखा।' —(मैं बोला।) ४

कण्णम्मा : मेरी प्रेमिका (३)—१८

(घूंघट हटाना)

यह दिल्ली के तुर्कों का रिवाज है, री—बुरक़ा लगाकर स्त्रियों का अपने मुख-सुमन का ढाँप रखना। लता-सी कटि को और उन्नत तथा बाहर निकली रहनेवाली

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हँसते स्वर के साथ किया जो तव आलिंगन।
मुझे वहाँ भी दिखा तुम्हारा (हँसता) आनन ॥ ४ ॥

कण्णम्मा : मेरी प्रेमिका (३)—१८

(घूंघट हटाना)

तुर्कों ने है यह पर्दे की प्रथा चलाई।
तब से मुख को सदा ढाँपती नारी आई ॥
कटि - लतिका को ढँकना, ढँकना कुच - युग उन्नत।
(इस जग की) है प्रथा यही प्राचीन समुन्नत ॥
कटि - लतिका को ढँककर उन्नत कुच - युग ढककर।
नहीं छिपाया जा सकता सौंदर्य (मनोहर) ॥
काम - कला है नहीं किसी से सीखी जाती।
मुख - छबि छिपा, न प्रीति कभी भी है हो पाती ? ॥ १ ॥

श्रेष्ठ बतातीं आर्यों की प्राचीन प्रथाएँ।
परदे में रहती थीं क्या पहले ललनाएँ ? ॥
कई बार का मिलन हो चुका जब दृढ़ परिचय।
व्यर्थ दिखावे की लज्जा अब सकुच न संशय ! ॥
यदि मैं बरबस यहाँ उठाऊँ तेरा घूंघट।
तो रोकेगा कौन मुझे ? (क्या मुझे रुकावट) ॥
अब न बहाना करने से कुछ काम चलेगा।
फल यदि सुलभ, भला क्या छिलका रोक सकेगा ? ॥ २ ॥

इन छातियों को ढँकना शास्त्र (रिवाज) है ! कटि-लता को तथा दोनों स्तनों को कपड़ा डालकर छिपाने से सौन्दर्य नहीं छिपता। मन्मथ-कला किसी से सीखकर नहीं जानी जाती ! मुख-छवि छिपाकर क्या कोई प्रेम भी होता है इधर ? १ आर्यों के प्राचीन मार्गों को (प्रथाओं को) श्रेष्ठ कहती हो ! क्या पुरानी आर्य ललनाएँ परदे में थीं ? दो-एक बार परिचय बढ़ाने के बाद भी यह केवल दिखावे की लाज क्यों है, री ? यहाँ मैं बरबस घूंघट हटाऊँ, तो इधर कौन रोकेगा मुझे ? व्यर्थ हीले-हवाले से कोई कार्य नहीं होगा, री ! फल देखने के बाद क्या छिलका उतारने में मैं विलम्ब करूंगा ? २

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णम्मा—ऎन् कादलि (4)—19

(नाणिक् कण् पुदैत्तल्)

नादनामक्किरियै—आदि ताळम्; शिरुङ्गार रसम्

मन्नर् कुलत्तिन्निडैप् पिऱन्दवळै— इवन्
मरुव निहऴ्न्द दॆन्ऱु नाण मुऱ्ऱनदो ?
शिन्नञ् जिऱुकुऴन्दै यॆन्ऱु करुत्तो ?— इङ्गु
शॆय्यत् तहाद शॆय्है शॆय्दव रुण्डो ?
वन्न मुहत्तिरैयैक् कळैन्दि डॆन्ऱेन्— निन्ऱन्
मदङ्गण्डु तुहिलिन्नै वलिदुरिन्देन्
ऎन्न करुत्तिलडि कण्पुदैक्किऱाय् ?— ऎन्नक्
कॆण्णप् पडुवदिल्लै येडि कण्णम्मा ! 1
कन्नि वयदिलुन्नैक् कण्डदिल्लैयो— कन्नङ्
गन्ऱिच् चिवक्क मुत्त मिट्ट दिल्लैयो !
अन्नियमाह नम्मुळ् ऎण्णुव दिल्लै— इरण्
डाविय मॊन्ऱाहुमॆन्नक् कॊण्ड दिल्लैयो ?
पन्निप् पलवुरैहळ् शॊल्लुव दॆन्ने ? तुहिल्
परित्तवन् कैप्परिक्कप् पयङ् गॊळ्वानो ?
ऎन्नैप् पुऱमॆन्नवुङ् गरुदुवदो ?— कण्गळ्
इरण्डिन्निल् ऒन्ऱै यॊन्ऱु कण्डु वॆळ्हुमो ? 2
नाट्टिन्निऱ् पॆण्गळुक्कु नायहर् शॊल्लुम्— शुवै
नेन्द पळङ्गदैहळ् नान्ऱुरैप्पदो ?
पाट्टुञ् जुदियु मॊन्ऱु कलन्दिडुङ् गाल्— तम्मुळ्
पन्नि उपशरणै पेशुव दुण्डो ?
नोट्टुङ् गदिर्हळॊडु निलवु वन्दे— विण्णै
निन्ऱु पुहऴ्न्दु विट्टुप् पिन् मरुवुमो ?

कण्णम्मा : मेरी प्रेमिका (४)—१९

(लजाकर आँखें मूंद लेना, नायिका और नायक का संभाषण)

क्या इसे इसलिए लज्जा हुई कि इस राजकुल की कन्या पर आलिंगन करने की नौबत आयी ? या यह विचार है कि मैं नन्हा-सा बच्चा हूँ ? या यह कोई अनुचित काम किया जानेवाला है ? मनोहारी रंग के घूंघट को हटाओ —मैंने कहा ! तुम्हारी मस्ती देखकर मैंने तुम्हारा चीर बलात् हरण किया। किस ख़याल में अपनी आँखें मीच लेती हो? मैं समझ नहीं पाता —री कण्णम्मा ! १ (तुम्हें) कन्या की (छोटी) उम्र में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णम्मा : मेरी प्रमिका (४)—१९

(लजाकर आँखें मूंद लेना)

नायिका और प्रेमी का वचन

राज-वंशजा करती है किसका आलिंगन।
इसीलिए क्या आज लाज आई इसके मन ?॥
या नन्हा बच्चा विचार करके हो लज्जित।
या कि किसी ने कहा कार्य है यह अति अनुचित॥
मन को हरनेवाला यह रंगीन मनोहर।
मैंने कहा हटाओ अपना घूँघट (सुन्दर)॥
देख तुम्हारी मस्ती (गर्वीली सुमनोहर)।
दिया हटा तब घूँघट मैंने जान-बूझकर॥
नयन मूंद लेतीं मन में तुम क्या विचार कर ?।
समझ नहीं पाता कण्णम्मा ! मैं (उर-अन्तर)॥ १॥
क्या कन्या थीं तब न तुम्हें मैंने देखा था ?।
गाल लाल हो जायँ नहीं ऐसे चूमा था ?॥
भाव परायेपन का नहीं परस्पर जाना।
दोनों के हैं एक प्राण, हमने था माना॥
बार-बार इस भाँति बहुत बातें करना क्या ?।
साड़ी खोली, हाथ हटाने से डरना क्या ?॥
क्या तुम मुझको अन्य पुरुष के सम मानोगी ?।
नयन परस्पर मिलने पर, क्या भय मानोगी ? २॥
देश-बीच कह-कह जर्जर प्राचीन कथाएँ।
इस प्रकार नायक प्रेयसियों को (बहलायें)॥
'क्या मैं भी उस भाँति कथाएँ तुम्हें सुनाऊँ ?।
(सुना-सुनाकर आज तुम्हारा मन बहलाऊँ)॥
गीत तथा स्वर, ये समस्त जब लय हो जायें।
बनावटी बातें आपस में क्यों कर आयें ?॥

क्या हमने देखा नहीं था ? गाल दुखकर लाल हो जायँ, ऐसा मैंने चूमा नहीं था ? हम आपस में पराये का भाव नहीं रखते ! दोनों के प्राण एक हैं —ऐसा हमने नहीं माना था क्या ? बार-बार बहुत बातें क्या कही जायँ ? (तुम्हारी) साड़ी जिसने उतार दी, वह मैं हाथ हटाने से डरूँगा (हिचकूँगा) ? क्या मुझे अन्य मानोगी ? आँखें एक-दूसरे को देखकर डरेंगी कहीं ? २ देश में स्त्रियों से उनके नायक, जो जर्जर-रुचि पुरानी कहानियाँ कहते हैं, वे मैं भी सुनाऊँगा क्या ? गीत तथा स्वर जब लय हो गये, तब आपस में औपचारिक बातें भी कही जाती हैं ? बढ़ती किरणों के साथ चाँदनी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मूट्टुम् विऱहिनै यच्चोदि कव्वुङ्गाल्—अवै
मुन्नुप शारवहै मौळिन्दिडुमो ? 3
शात्तिरक् काररिडम् केट्टु वन्दिट्टेन्;— अवर्
शात्तिरञ् जौल्लियदै निनक्कुरैप्पेन्
नेऱ्ऱु मुन्नाळिल् वन्द उऱवन्ऱडी— मिह
नॆडुम् पण्डैक् कालमुदऱ् चेर्न्दु वन्ददाम्
पोऱ्ऱु रामनॆन मुन्बुदित्तनै— अङ्गु
पौन् मिदिलैक् करशनिन् पूमडन्दै नान्
ऊऱ्ऱमु दॆन्नवोरु वेय्ङ्गुळल् कौण्डोन्— कण्णन्
उरुवम् निनक्कमैयप् पार्त्तनन् अङ्गुनान् 4
मुन्नै मिहप्पळैमै इरणियनाम्— ऍन्दै
मूर्क्कन् दविर्क्क वन्द नरशिङ्गन् नो;
पिन्नैयौर् पुत्तनॆन नान्वळर्न्दिट्टेन्— ऒळिप्
पॆण्मै अशोदरैयॆन् ऱुन्नै यॆय्दिनेन्
शौन्नवर् शात्तिरत्तिल् मिह वल्लवर् काण्— अवर्
शौल्लिऱ् पळुदिरुक्कक् कारण मिल्लै
इन्नुङ् गडैशिवरै ऒट्टिरुक्कुमाम्; इदिल्
ऍदुक्कु नाण मुऱ्ऱुक् कण्पुदैप्पदे ? 5

कण्णम्मा—ऍन् कादलि (5)—20

(कुऱिप्पिडम् तवऱियदु)

शॆञ्जुरुट्टि—आदि ताळम्; शिरुङ्गार रसम्

तीर्त्तक् करैयिनिले— तॆऱ्कु मूलैयिल् शॆण्पहत् तोट्टत्तिले
पार्त्तिरुन्दाल् वरुवेन्— वॆण्णिला विले पाङ्गियो डॆन्ऱु शौन्नाय्

आती है, तब वह आकाश की रुककर प्रशंसा करने के बाद उससे मिलेगा क्या ? आग जब इंधन को ग्रसती है, तब वे दोनों औपचारिक रूप में पहले भाषण करते रहेंगे ? ३ मैंने शास्त्रज्ञों (ज्योतिषियों) से पूछ भी लिया। उन्होंने जो शास्त्र की बातें बतायीं, वे सुनाऊँगा मैं तुम्हें। (उन्होंने कहा था--) यह कल-परसों का आया रिश्ता नहीं है। कहा कि बहुत प्राचीन काल से आ रहा रिश्ता है ! पहले पूज्य राम के रूप में पैदा हुए थे तुम ! वहाँ मैं स्वर्ण-मिथिला के राजा की मृदुल कन्या रहा। ४ अमृत के स्रोत के समान मुरलीधारी कान्हा का रूप तुम्हारा रहा, तब वहाँ मैं पार्थ रहा। बहुत प्राचीन काल के हिरण्य, मेरे पिता की हठीली क्रूरता को शान्त करने आये नरसिंह तुम थे। फिर बुद्ध बनकर मैं पला। छविमय स्त्रीत्व वाली यशोधरा स्वरूप तुमसे मैं मिला। जिसने ये सब कहा, वे शास्त्र निष्णात चतुर हैं। उनके कथन में दोष रहने की गुंजाइश नहीं है। यह रिश्ता और आखिर तक चलता रहेगा --यह बात है। फिर इसमें लजाकर आँखें ढाँपना क्यों ? ५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बढ़ती - किरणों - साथ चाँदनी है जब आती।
क्या रुक नभ की करे प्रशंसा, तब मिल पाती ?॥
जब जलती अति - प्रबल आग ग्रसती है ईंधन।
तब क्या पहले करें औपचारिक संभाषण ?" ३ ॥
ज्योतिषियों से मैंने (पहले) पूछा जाकर।
जो बतलाया तुम्हें बताता हूँ (समझाकर) ॥
"तुम दोनों का रिश्ता नहीं नया (अनजाना)।
(जन्म - जन्म का) है सम्बन्ध अतीव पुराना ॥
राम - रूप में तुम उत्पन्न हुए (धनुधारी)।
बनकर मैं उत्पन्न हुआ मिथिलेश - कुमारी।
सुधा - स्रोत के तुल्य (मनोरम) मुरलीधारी।
कृष्ण - रूप धरकर प्रकटे जब तुम वनवारी ॥
तब मैं तुमको मिला वहाँ पर अर्जुन बनकर।
(तुम थे नारायण - स्वरूप मैं कहलाया नर) ॥
अति - प्राचीन काल में दैत्य हिरण्यकशिपु था।
(था ईश्वर से वैर नष्ट करता जप - तप था) ॥
तब मैं था प्रह्लाद (और तुम थे प्रतिपालक)।
धर नरसिंह - स्वरूप बने तुम असुर - विनाशक ॥ ४ ॥
बुद्ध - रूप में जब जन्मे तुम (हे परमेश्वर !)।
बनकर यशोधरा तब तुम्हें मिला मैं आकर ॥
जिसने यह सब बतलाया वह शास्त्र - निपुण है।
उसके वचनों में न कहीं कोई अवगुण है ॥
सदा रहेगा यह सम्बन्ध हमारा सुस्थिर।
नयन ढाँपना व्यर्थ, न इसमें कुछ लज्जा कर ॥ ५ ॥

कण्णम्मा : मेरी प्रेमिका (५)—२०

(संकेत-स्थान चूक गया)

"है चंपक का बाग़ पवित्र - जलाशय - तट पर।
वहीं प्रतीक्षा करना तुम दक्षिण - कोने पर ॥

कण्णम्मा : मेरी प्रेमिका (५)—२०

(संकेत स्थान चूक गया)

'पवित्र जलाशय के तीर पर— दक्षिणी कोने में, चंपक बाग़ में देखते (प्रतीक्षा करते) रहो, तो मैं आऊँगी—सखी के साथ चाँदनी में', यह तुमने कहा। पर बात

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बार्त्तलै तबदि विट्टाय्— अडि कण्णम्मा ! मार्बु तुडिक्कुदडी !
पार्त्त बिडत्ति लॅल्लाम्— उन्नैप् पोलवे पावै तॅरियुदडी ! 1
मेनि कॉदिक्कुदडी !— तलै शुर्रिये बेदनै शॅय्हु दडी !
बानि लिडत्तै यॅल्लाम्— इन्द बॅण्णिला बन्दु तळुवुदु पार् !
मोनत् तिरुक्कु दडी ! इन्द वयहम् मूळ्हित् तुयिलिन्निले
नानॉरुबत् मट्टिलुम्— पिरिवॅम्बदोर् नरहत् तुळलुबदो ! 2
कडुमै युडैय दडो— अॅन्द नेरमुम् कावलुन् माळिहैयिल्
अडिमै पुहुन्द पिन्नुम्— अॅण्णुम् बोडु नान् अङ्गु बरुदर् किल्लै;
कॉडुमै पॉरुक्क विल्ले— कट्टुङ् गावलुम् कूडिक् किडक्कु दङ्गे
नडुमै यरशि यवळ्— अॅदर्काहबो नाणिक् कुलैन्दिडुबाळ् 3
कूडिप् पिरियामलै— ओरि रावॅलाम् कॉञ्चिक् कुलबि यङ्गे
आडि बिळैयाडिये— उन्नरन् मेनियै आयिरङ् गोडि मुरै
नाडित् तळबि मनक्— कुरै तीर्न्दु नान् नल्ल कळियॅय्दिये
पाडिप् परबशमाय्— निर्कबे तबम् पण्णिय दिल्लै यडो ! 4

कण्णम्मा—अॅन् कादलि (6)—21

(योहम्)

पायुम् ऑळि नी अॅनक्कुप् पार्क्कुम् बिळि नानुनक्कु;
तोयुम् मदु नी अॅनक्कुत् तुम्बियडि नानुनक्कु;

नहीं रखी— री कण्णम्मा ! वक्ष तड़फड़ाता है ! जहाँ-जहाँ देखो, वहाँ-वहाँ सब जगह तुम्हारे ही समान प्रतिमा दिखती है, री ! १ शरीर तपता है, अरी, सिर चकराता है तथा पीड़ा होती है। आकाश के अवकाश को उज्ज्वल चाँदनी आकर गले मिलती है। देखो ! मौन है —यह दुनिया निद्रा में मग्न होकर ! अकेला मैं ही विरह-नरक में भटकनेवाला रह जाऊँ क्या ? २ कड़ा होता जाता है, री ! सदा तुम्हारे महल में पहरा ! दासता स्वीकार करने के बाद भी जब चाहूँ, तब आ नहीं पाता ! क्रूरता सही नहीं जाती। बन्धन तथा पहरा दोनों वहाँ मिले रहते हैं। मध्यस्थता की रानी —न जाने, क्यों लजाकर शिथिल पड़ जाती है ! ३ मिलकर बिना बिछुड़े —एक रात भर, वहाँ दुलार-पुचकार करके, नाचकर, खेलकर— तुम्हारे शरीर का हजारों-करोड़ों बार आलिंगन करके —असंतोष को दूर करके, बहुत आनन्द मनाऊँ और गाने में बेहोश रहूँ —इसके लिए मैंने तपस्या नहीं की है (मुझे ऐसा सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ)। ४

कण्णम्मा : मेरी प्रेमिका (६)—२१

(योग)

फैलता प्रकाश है तू मेरे लिए, देखती आँखें मैं तेरे लिए। जमा मद्य तू मेरे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वहाँ सखी के साथ चाँदनी में आऊँगी।
(तुमसे मिलकर क्रीड़ा करके सुख पाऊँगी)" ॥
यह था तुमने कहा, बात पर नहीं निभायी।
मूर्ति तुम्हारी सभी जगह पड़ती दिखलायी ॥
री कण्णम्मा! (तुम न मिलीं) मन घबड़ाता है।
(पंख - हीन पक्षी - सा) हृदय तड़फड़ाता है ॥ १ ॥
तन तपता है, मस्तक मेरा चकराता है।
(अतिशय) पीड़ा होती है (मन घबराता है) ॥
है (असीम) आकाश (विशद) अवकाश (उरस्थल)।
गले मिल रही देखो (चपल) चाँदनी उज्ज्वल ॥
निद्रा - मग्न मौन है यह (सारा) जगती - तल।
मैं एकाकी विरह - नरक में रहा, हाय! जल ॥ २ ॥
यद्यपि मैं दासता (तुम्हारी) हूँ स्वीकारे।
तो भी जब चाहूँ तब आ सकता न सदा रे! ॥
महल तुम्हारे बड़ा कड़ा पहरा है होता।
बन्धन से मिल पहरा दुसह क्रूरता बोता ॥
(जो) मध्यस्थ - भाव की रानी (कहलाती है)।
ज्ञात नहीं किसलिए शिथिल वह पड़ जाती है? ॥ ३ ॥
तुमसे मिलकर रहूँ, न बिछुड़ूँ, यही समस्या।
मनचाही सब फलें, भला क्या सिद्ध तपस्या ॥
एक रात भर वहाँ दुलारूँ औ' पुचकारूँ।
नाचूँ खेलूँ (अपना तन - मन - जीवन वारूँ) ॥
असन्तोष को दूर करूँ, आनन्द मनाऊँ।
हो जाऊँ अचेत मैं ऐसा (गायन) गाऊँ ॥
(कण्णम्मा!) पाकर मैं (मंजु) तुम्हारा (मृदु) तन।
करूँ करोड़ों बार (प्रेम से) तव आलिंगन ॥ ४ ॥

कण्णम्मा : मेरी प्रेमिका (६)—२१

(योग)

है फैलता प्रकाश (प्रियतमे!) तू मेरे हित।
मैं निहारनेवाली आँखें हूँ तेरे हित ॥
घनीभूत मदिरा (कण्णम्मा!) तू मेरे हित।
मतवाला भौंरा हूँ (सुन्दरि) मैं तेरे हित ॥

लिए, भौंरा मैं हूँ तेरे लिए। मुख से कहना नहीं आता --(बधाई) लिए तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वायुरैक्क वरुहुदिल्लै वाऴि निन्ऱन् मेन्मै यॅल्लाम्;
तूयशुडर् वानॊळिये ! शूऱैयमुदे ! कण्णम्मा ! 1

बीणैयडि नी ऎन्नक्कु, मेबुम् विरल् नानुन्नक्कु
पूणुम् वडम् नी यॆन्नक्कु पुदु वयिरम् नानुन्नक्कु
काणुमिडन्दोऱुम् निन्ऱन् कण्णि नॊळि वीशुदडि !
माणुडैय पेररशे ! वाऴ्वु निलैये कण्णम्मा ! 2

वान्नमऴै नी यॆन्नक्कु वण्ण मयिल् वानुन्नक्कु;
पान्नमडि नी ऎन्नक्कु पाण्डमडि नानुन्नक्कु
ञान्न वॊळि वीशुदडि नङ्गै निन्ऱन् शोबिमुहम्
ऊन्नमऱु नल्लऴहे ! ऊऱु शुवैये कण्णम्मा ! 3

वॆण्णिलवु नी यॆन्नक्कु मेबुकडल् नानुन्नक्कु
पण्णुशुदि नी यॆन्नक्कुप् पाट्टिनिमै नानुन्नक्कु;
ऎण्णि यॆण्णिप् पार्त्तिडिलोर् ऎण्णमिलै निन्शुवैक्के
कण्णिन् मणि पोन्ऱुवळे ! कट्टियमुदे कण्णम्मा ! 4

वीशुकमऴ् नी यॆन्नक्कु विरियु मलर् नानुन्नक्कु
पेशु पॊरुऴ् नी यॆन्नक्कुप् पेणुमॊऴि नानुन्नक्कु
नेशमुऴ्ळ वान् शुडरे ! निन्नऴहै एडुरैप्पेन् ?
आशै मदुवे कनिये अऴ्ऴु शुवैये कण्णम्मा ! 5

बड़ाई सब । पवित्र ज्वाला की स्वच्छ ज्योति, अपार अमृत, कण्णम्मा ! १ वीणा है तू मेरे लिए, (तार) छेड़नेवाली उँगली मैं तेरे लिए । पहना हुआ हार है तू मेरे लिए, नया हीरा मैं तेरे लिए । जहाँ भी देखूं, वहाँ सब तेरी आँखों का प्रकाश छिटकता है । गौरवमयी बड़ी सम्राज्ञी, जीव के आधार, कण्णम्मा ! २ आकाश की वर्षा है तू मेरे लिए, विचित्र मयूर मैं तेरे लिए । पान है तू मेरे लिए, पात्र हूं मैं तेरे लिए । री, नायिका, तेरे तेजोमय मुख से छिटकती ज्ञान की ज्योति । री निर्दोष श्रेष्ठ सुन्दरता, बढ़ती स्वाद, कण्णम्मा ! ३ शुभ्र चाँदनी है तू मेरे लिए, (उससे) आच्छादित हुआ समुद्र मैं तेरे लिए । मनोहारी स्वर है तू मेरे लिए, गीत की मधुरता मैं तेरे लिए । सोच-सोचकर देखता हूँ तो भी तेरे सुख का वर्णन ही नहीं कर पाता ! री आँखों की पुतली-सी, री सघन अमृत, कण्णम्मा ! ४ फैलती सुगन्ध है तू मेरे लिए, खिलता सुमन मैं तेरे लिए । उक्त भाव तू है मेरे लिए, उसे सँजोये रखनेवाली भाषा हूँ मैं तेरे लिए । प्यारी आकाश की ज्योति । तेरे सौन्दर्य का वर्णन कैसे करूँ ? रे कांक्षित मद्य ! री फल, मनोहारी स्वाद, री कण्णम्मा ! ५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुख से नहीं कही जा सकती (कभी) बधाई।
जिये तुम्हारी (निखिल विश्व में सदा) बड़ाई॥
(कण्णम्मा !) तू स्वच्छ ज्योति, पावन ज्वाला है।
अमित सुधा (का भरा हुआ मधुमय प्याला) है॥ १॥
(सुधावर्षिणी मधुमय) वीणा तू मेरे हित।
तार बजानेवाली उँगली मैं तेरे हित॥
पहनी जानेवाली माला तू मेरे हित।
नया (जगमगाता) हीरा हूँ मैं तेरे हित॥
तेरी आँखों की छिटकी सर्वत्र प्रभा है।
गौरवमयी बड़ी सम्राज्ञी कण्णम्मा है॥
कण्णम्मा है जीवन का आधार हमारी।
(कण्णम्मा है जीवन की पतवार हमारी)॥ २॥
नभ - मंडल की (रस-) वर्षा है तू मेरे हित।
रंग - बिरंगा (मंजु) मोर हूँ मैं तेरे हित॥
है (मादक मधु-) पान (मानिनी) तू मेरे हित।
हूँ मंजुल मधु पात्र (सुन्दरी) मैं तेरे हित॥
अरी नायिका ! तेरे तेजोमय आनन से।
छिटक रही है ज्ञान - ज्योति (उज्ज्वलतम - तन से)॥
रुचि बढ़ती है लख निर्दोष श्रेष्ठ सुन्दरता।
(दे अनेक उपमाएँ कवि - कुल वर्णन करता)॥ ३॥
शुभ्र चाँदनी है (कण्णम्मा !) तू मेरे हित।
हूँ लहराता सिन्धु (सुन्दरी !) मैं तेरे हित॥
(मंजु) मनोहर स्वर है (प्रेयसि !) तू मेरे हित।
गीतों का माधुर्य (मनोरम) मैं तेरे हित॥
(भलीभाँति से) सोच - विचार यही समझा मन।
कभी न कर सकता मैं तेरे सुख का वर्णन॥
मेरी आँखों की पुतली तू आज बनी है।
(मेरी प्यारी) कण्णम्मा ! (तू) सुधा घनी है॥ ४॥
व्यापक (सरस) सुगंध (बनी) है तू मेरे हित।
विकसित (रसमय) सुमन (बना हूँ) मैं तेरे हित॥
व्यक्त भाव है (अरी सुन्दरी !) तू मेरे हित।
व्यंजन भाषा हूं (मन - मोहिनि !) मैं तेरे हित॥
तू प्यारी आकाश - ज्योति (फैली उज्ज्वलता)।
किस प्रकार मैं भला कहूँ तेरी सुन्दरता ?॥
(कण्णम्मा ! तू) मन - वाञ्छित मदिरा (मंजुल) है।
कण्णम्मा ! तू स्वाद भरा अति (मीठा फल) है॥ ५॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कादलडि नी यॆऩक्कुक् कान्दमडि नाऩुऩक्कु
वेदमडि नी यॆऩक्कु वित्तैयडि नाऩुऩक्कु
पोदमुऱ्ऱ पोदिऩिले पॊङ्गि वरुन् दीञ्जुवैये !
नादवडि वाऩवळे, नल्ल उयिरे कण्णम्मा ! 6
नल्ल बुयिर् नीयॆऩक्कु नाडि यडि नाऩुऩक्कु;
शल्वमडि नी यॆऩक्कु शेमनिदि नाऩुऩक्कु;
ऍल्लै यऱ्ऱ पेरळ्हे ! ऍङ्गुम्निऱै पॊऱ्चुडरे !
मुल्लै निहर् पॊऩ्ऩहैयाय् ! मोदुमिऩ्बमे ! कण्णम्मा ! 7
तारैयडि नी यॆऩक्कुत् तण्मदियम् नाऩुऩक्कु
वीरमडि नी यॆऩक्कु वॆऱ्ऱियडि नाऩुऩक्कु
तारणियिल् वाऩुलहिल् शार्न्दिरुक्कुम् इऩ्बमॆलाम्
ओरुरुवमाय्च् चमैन्दाय् ! उळ्ळऩुबे ! कण्णम्मा ! 8

कण्णऩ्—अॆऩ् आण्डाऩ्—22

पुऩ्ऩाग वराळि– तिस्र एक ताळम्; रसङ्गळ्— अद्भुदम्, करुणै

तञ्ज मुलहिऩिल् ऍङ्गणुमिऩ्ऱित्
तवित्तुत् तडुमारि
पञ्जैप् परैयऩ् अडिमै पुहुन्देऩ्
पारमुऩक् काण्डे !
आण्डे ! पारमुऩक् काण्डे ! 1

प्रेम है तू मेरे लिए, आकर्षण हूँ मैं तेरे लिए। वेद है तू मेरे लिए, विद्या हूँ मैं तेरे लिए। बोध पाते समय उभड़ती आनेवाली री मधुर रुचि, री नाद-रूपिणी, हे श्रेष्ठ प्राण-रूपा, कण्णम्मा ! ६ अच्छे प्राण है तू मेरे लिए, नाड़ी हूँ मैं तेरे लिए। धन है तू मेरे लिए, सुरक्षा-कोश हूँ मैं तेरे लिए। री असीम बड़ा सौन्दर्य, री सर्वव्यापी स्वर्णज्वाला, री चमेली-सी हँसनेवाली ! हे टकरानेवाले सुख, कण्णम्मा ! ७ तारा है तू मेरे लिए, शीतल चाँद हूँ मैं तेरे लिए। वीरता है तू मेरे लिए, विजय हूँ मैं तेरे लिए। धरणी पर व्योमलोक में जो मिलता है, वह सारा सुख एक रूप में बनी है तू ! री आन्तरिक अमृत कण्णम्मा ! ८

कान्हा : मेरा मालिक—२२

[ज़मींदार के अधीन रहकर 'परैयन्' नामक अछूत जाति के आदमी खेती का काम करते हैं। वे मालिक को 'आण्डाऩ्' कहते हैं और 'आण्डे' सम्बोधित करते हैं। खेती के काम के अलावा ढोल बजाना या ढिंढोरा पीटना आदि भी उनका काम होता है।]

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(पावन) प्रेम - (प्रदीप) बनी है तू मेरे हित।
आकर्षण अति प्रबल (बना) हूँ मैं तेरे हित॥
(ज्ञान - राशि शुभ) वेद (बनी) है तू मेरे हित।
विद्या (की नवज्योति बना) हूँ मैं तेरे हित॥
ज्ञान - प्राप्ति के समय उमड़ती आनेवाली।
(मंजु) मधुर रुचि है (मन - मणि में छानेवाली)॥
कण्णम्मा! तुम नाद - रूपिणी (निज को) जानो।
कण्णम्मा! तुम सर्वश्रेष्ठ (अपने को) मानो॥ ६॥
(प्राणप्रिये!) शुभ प्राण (-रूप) है तू मेरे हित।
(प्राणवाहिनी शुभ) नाड़ी हूँ मैं तेरे हित॥
(अति अपार) धन (-राशि बनी) है तू मेरे हित।
और सुरक्षा-कोश (बना) हूँ मैं तेरे हित॥
तू असीम (अतिशय) महान सौंदर्य (निराला)।
तू है सर्वव्यापक (सुन्दर) स्वर्णिम ज्वाला॥
तू है (चारु) चमेली - सी (मृदु) हँसनेवाली।
तू सुख - (शान्ति) सदा उर में है बसनेवाली॥ ७॥
(जगमग - जगमग करता) तारा तू मेरे हित।
शीतल (निर्मल) चन्दा (प्यारा) मैं तेरे हित॥
(प्रबल) वीरता है (कण्णम्मा!) तू मेरे हित।
(कीर्ति-प्रसारक विमल) विजय हूँ मैं तेरे हित॥
जो सुख मिलता व्योम-लोक में औ' धरणी पर।
उस सारे सुख का तू पुंजीभूत रूप (वर)॥
हे कण्णम्मा! (तू) आन्तरिक अमृत निर्मल है।
(सबके हृदयों को सजीव करती प्रतिपल है)॥ ८॥

कान्हा : मेरा मालिक—२२

सकल विश्व में भागा - भागा फिरा निरन्तर।
कष्ट उठाकर नहीं कहीं भी आश्रय पाकर॥
बना आपका दास, परैयन् मैं अब आकर।
आण्डे! अब है मेरा (सारा) भार आप पर॥ १॥

कहीं भी शरण (आश्रय) न पाने से, संकट उठाकर, बेतहाशा घूमकर बेचारा मैं 'परैयन्' दास बना! आण्डे, भार आप पर है, आण्डे! १ दुख, रोग, दरिद्रता को दूर कर सुख दिलाने की कृपा करें। मैं प्रेम से आपकी महिमा गाकर नाचूंगा; आपकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुन्बमुम् नोयुम् मिडिमैयुन् दीर्त्तुच्
चुहमरुळल्
वेण्डुम्;
अन्बुडन् निन् पुहळ् पाडिक् कुदित्तु निन्
आणैवळि
नडप्पेन्;
आण्डे ! आणैवळि नडप्पेन् 2
शेरि मुळुदुम् परैयडित् तेयरुट्
चीर्त्तिहळ्
पाडिडुवेन्;
पेरिहै कॊट्टित् तिशैह ळदिर निन्
पॆयर्
मुळक्किडुवेन्;
आण्डे ! पॆयर् मुळक्किडुवेन् 3
पण्णैप् परैयर्तङ् कूट्टत्ति लेयिवन्
पाक्किय मोङ्गि विट्टान्;
कण्ण नडिमै यिवनॆनुङ् गीर्त्तियिल्
कादलुर्
रिङ्गु वन्देन्;
आण्डे ! काबलुर् रिङ्गु वन्देन् 4
काडु कळनिहळ् कात्तिडुवेन्, निन्रन्
कालिहळ्
मेय्त्तिडुवेन्;
पाडुपडच् चॊल्लिप् पार्त्तदब् पित्तनॆन्
पक्कुवञ्
जॊल्लाण्डे !
आण्डे— पक्कुवञ् जॊल्लाण्डे 5
तोट्टङ्गळ् कॊत्तिच् चॆडिवळर्क्कच् चॊल्लिच्
चोदनै
पोडाण्डे !
काट्टु मळैक्कुरि तप्पिच् चॊन्नालॆनैक्
कट्टियडि
याण्डे !
आण्डे ! कट्टियडि याण्डे ! 6
पॆण्डु कुळन्बैहळ् कञ्जि कुडित्तुप्
पिळैत्तिड
वेण्डुमैये !
अण्डे यपलुक्कॆन्नालुब कारङ्गळ्
आहिड
वेण्डुमैये !
उबहारङ्गळ् आहिड वेण्डुमैये 7

आज्ञा पर चलूंगा। आण्डे, आज्ञा पर चलूंगा। २ शेरि (अछूत दासों की बस्ती) भर में ढिंढोरा पीटकर आपकी कीर्ति गाऊँगा। भेरी बजाकर दिशाओं को थरथराते हुए आपके नाम की तूती बोलूंगा ! आण्डे, नाम की तूती बोलूंगा ! ३ 'पण्णै (मालिक के दासों की मंडली तथा मालिक की ज़मीन का दायरा)' भर के 'परैयों' के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरे सब दुख, रोग, ग़रीबी दूर भगाय।
कृपा करें (मुझ पर मुझको) सुख (सभी) दिलायें॥
प्रेम - पूर्वक मैं नाचूँगा महिमा गाकर।
चलता (रहूँ) सदैव आपकी ही आज्ञा पर॥ २॥

'शेरि' नाम वाली अछूत बस्ती में जाकर।
गाऊँगा मैं कीर्ति ढिंढोरा पीट - पीटकर॥
भेरि बजाकर सभी दिशाओं को थहराऊँ।
आण्डे ! तव यश को मैं तूती सदा बजाऊँ॥ ३॥

दास - मण्डली मालिक की है "पण्णै" सुविदित।
मालिक की ज़मीन का घेरा "पण्णै" विश्रुत॥
पण्णै भर के परैयरों के पूरे दल में।
मेरा भाग्य बढ़ा (तुरंत एक ही पल में)॥
"मैं कण्णन का दास" विश्व के बीच कहाया।
उस यश का बन प्रेमी (आज) इधर मैं आया॥ ४॥

बाग़ों, खेतों की रक्षा कर (उन्हें बचाऊँ)।
(और) आपके (आण्डे ! सुन्दर) ढोर चराऊँ॥
देकर श्रम का काम (मुझे) देखें (हे प्रभुवर !)।
फिर सुझाव दें (मुझे कृतार्थ करें करुणाकर)॥ ५॥

फुलवारी खोदना और बहु वृक्ष उगाना।
करें परीक्षा मुझे काम ऐसे दे (नाना)॥
यदि बरसात समझने में जाऊँ ग़लती कर।
मुझे बाँधकर तो पीटें हे आण्डे ! (प्रभुवर !)॥ ६॥

मेरी पत्नी और बाल - बच्चे (पल जायें)।
कञ्चि - माँड़ पीकर अपनी ज़िन्दगी बितायें॥
पड़ोसियों का भी मैं (दुःख हरूँ कुछ)।
आण्डे ! (करें कृपा उनका) उपकार करूँ कुछ॥ ७॥

दल में इसका भाग्य बढ़ गया है। यह 'कण्णन्' का दास है। इस यश का प्रेमी बनकर मैं इधर आया। आण्डे, प्रेमी बनकर इधर आया। ४ बाग़ और खेत की रक्षा करूँगा। आपके ढोर चराऊँगा। (मुझे) श्रम का काम देकर देखें; फिर सुझाव दें। आण्डे, सुझाव दें। ५ फुलवारियों को खोदने तथा पौधों को उगाने का काम देकर परीक्षा कर लीजिए। बरसात के आसार समझने में ग़लती करूँ, तो बाँधकर पीटिये। आण्डे, बाँधकर पीटिये। ६ मेरी स्त्री और बच्चों को 'कञ्जि (माँड़-सा पतला भोजन)' पीकर जीवन बिताना होगा। पास-पड़ोस वालों का मेरे द्वारा कुछ उपकार होना चाहिए। आण्डे, उपकार होना चाहिए। ७ लाज बचाने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मानत्तैक् काक्कवोर् नालुमुळत्तुणि
वाङ्गित् तरवेणुम्
तानत्तुक्कुच् चिल वेट्टिहळ् वाङ्गित्
तरवुङ् गडनाण्डे !
शिल वेट्टि तरवुङ् गडनाण्डे ! 8
ऑन्बदु वायिर् कुडिलिलैच् चुर्रि
यॊरु शिल पेय्हळ् वन्दे
तुन्बप् पडुत्तुदु मन्दिरम् जॆय्दु
तॊलैत्तिड वेण्डुमैये !
पहैयावुन् दॊलैत्तिड वेण्डुमैये 9
पेयुम् पिशाशुम् तिरुडर् मॆन्रुन्
पॆयरिलैक् केट्टळविल्
वायुङ् गैयुङ्गट्टि अञ्जि नडक्क
बळि शॆय्य वेण्डुमैये !
तोल्लै तीरुम्— वळि शॆय्य वेण्डुमैये ! 10

कण्णम्मा—ऎन्दु कुल दॆय्वम्—23

रागम्— पुन्नाह वराळि

पल्लवि (टेक)

निन्नैच् चरणडैन्वेन्— कण्णम्मा !
निन्नैच् चरणडैन्वेन् !
पॊन्नै उयर्वेप् पुहळै विरुम्बिडुम्
ऎन्नैक् कवलैहळ् तिन्नत् तहादॆन्रु (निन्नै) 1
मिडिमैयुम् अच्चमुम् मेविर्यॆन् नॆञ्जिल्
कुडिमै पुहुन्दन् कॊन्रवै पॊक्कॆन्रु (निन्नै) 2
तन्शॆय लॆण्णित् तविप्पदु तीर्न्दिङ्गु
निन्शॆयल् शॆय्दु निरैबु पॆरुम् वणम् (निन्नै) 3

के लिए चार हाथ कपड़ा खरीदकर देना होगा ! दान के रूप में कुछ धोतियाँ भी खरीदकर देना कर्तव्य होगा। भाण्डे, कुछ धोतियाँ देना (आपका कर्तव्य होगा। ८ नौ द्वारों की इस कुटिया को घेरे कुछ भूत आकर दुख दे रहे हैं। जादू करके उन्हें दूर करना चाहिए। सभी शत्रुओं को दूर करना चाहिए। ९ भूत, पिशाच, चोर —जब मेरा नाम सुनते ही मुख को हाथ से बन्द करके डरते हुए चलें —इसका उपाय करना चाहिए। संकट हरने का उपाय करना चाहिए, हे स्वामी ! १०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चार हाथ का वस्त्र मुझे दें, लाज बचाऊँ।
दान-रूप में कुछ धोतियाँ (दान में) पाऊँ॥
आण्डे ! है कर्तव्य आपका धोती देना।
(बदले में सेवायें सब प्रकार की लेना)॥ ८॥
नौ द्वारों को इस कुटिया को घेर-घारकर।
दुःख दे रहे हैं कुछ भूत (भयंकर) आकर॥
जादू करके उन्हें दूर (प्रभु ! सत्वर) करिये।
शत्रु दूर कर सभी (हमारे संकट हरिये)॥ ९॥
भूत-पिशाच-चोर सब मेरा नाम श्रवण कर।
हाथ बाँध, मुख बाँध, भाग जायें सब डरकर॥
हे स्वामी ! ऐसा उपाय कुछ (कृपया) करिये।
(हमें सतानेवाले सारे) संकट हरिये॥ १०॥

कण्णम्मा : मेरी कुलदेवी—२३

मेरी कुलदेवी कण्णम्मा ! तेरी चरण-शरण आया॥ टेक॥
उन्नति हो यश फैले मेरा, स्वर्ण-(पुंज) भी मिल जाएँ।
(मेरे मन को जर्जर करके) नहीं सताएँ चिन्ताएँ॥
(चिन्ताओं से जर्जर होकर मेरा मन अति घबराया)।
मेरी कुलदेवी कण्णम्मा ! तेरी चरण-शरण आया॥ १॥
मेरे मन में बसे हुए हैं दरिद्रता औ' भय आकर।
मार भगा दे उन्हें (देवि ! तू करुणाकर मेरे ऊपर)॥
(मेरे सिर पर वरद-हस्त की माता ! तू कर दे छाया)।
मेरी कुलदेवी कण्णम्मा ! तेरी चरण-शरण आया॥ २॥
अपना सभी काम तजकर मैं करूँ (प्रेम से) तेरा काम।
(हो अपूर्णता दूर हमारी) पूर्ण बनूँ मैं (गौरव-धाम)॥
(इसी लिए तेरे चरणों को माता मैंने अपनाया)।
मेरी कुलदेवी कण्णम्मा ! तेरी चरण-शरण आया॥ ३॥

कण्णम्मा : मेरी कुलदेवी—२३

तेरी शरण आया— कण्णम्मा ! तेरी शरण आया। (टेक) स्वर्ण, उन्नति, यश चाहते हुए चिन्ताएँ न खा जायें —इसलिए (तेरी०) १ दरिद्रता, डर आकर मेरे मन में बस गये। उन्हें मार भगा —इसलिए (तेरी०) २ अपना काम करना छोड़कर तेरा काम करके पूर्णत्व को प्राप्त होऊँ —इसलिए (तेरी०) ३ अब दुख नहीं, थकावट नहीं,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुन्ब मिनियिल्लै शोर्विल्लै तोर्पिल्लै
अन्बु नॅरियिल् अरङ्गळ् वळर्त्तिड (निन्नै) 4

नल्लदु तीयदु नामरियोम् अन्नै !
नल्लदु नाट्टुह ! तीमैयै ओट्टुह ! (निन्नै) 5

2 पाञ्जालि शबदम्

(मुदर् पाहम्)

अळैप्पुच् चरुक्कम्

पिरम तुदि—1

(नॉण्डिच् चिन्दु)

ओ मॅनप् पॅरियोर् हळ्— अॅन्रुम्, ओदुव दाय् विन्नै मोदुव दाय्
तीमैहळ् माय्प्पदु वाय्— तुयर्, तेय्प्पदुवाय् नलम् वाय्प्पदुवाय्
नाममुम् उरुवुम् अर्रे— मनम्, नाडरि दाय्प् पुन्दि तेडरिदाय्
आमॅनुम् पॅरुळनॅत् ताय्— वॅरुम्, अरिबुडन् आनन्द इयल्बुडैत् ताय् 1

निन्रिडुम् बिरमम् अॅन्बार्— अन्द, निर्मलप् पॅरुळिन्नै निन्नैत्तिडुवेन्
नन्रुशॅय् तवम् योहम्— शिव, आनमुम् बक्तियुम् नणुहिड वे
वॅन्रि कॉळ्शिव शक्ति— अॅन्नै, मेवुर वे इरुळ् शावुरवे
इन् तमिळ् नूलिदु तान्— पुहळ्, एय्न्दिनि दायॅन्रुम् इलहिडवे 2

हार नहीं। प्रेम पथ पर धर्म बढ़ें--इसलिए (तेरी०) ४ अच्छा-बुरा हम नहीं जानते ! माँ ! अच्छा स्थापित कर, बुरा मिटा दें —इसलिए (तेरी०) ५

२ पांचाली-शपथ

(प्रथम भाग)

पहला आह्वान सर्ग

ब्रह्म-स्तुति—१

जो महात्मा लोगों द्वारा सदा ॐकार स्वरूप उच्चरित है, (जो) कर्मभंजक, कष्ट-हारक, दुःखनाशक, हितकारक, नाम-रूप-हीन, मन के लिए अनन्वेषणीय, बुद्धि के लिए अगोचर रहनेवाले सभी पदार्थ है (सत् है), (जो) केवल चित् और आनन्दमय— १ रहता है, उसे ब्रह्म कहते हैं। उस निर्मल तत्त्व का मैं स्मरण करूँगा। (क्योंकि)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दुःख नहीं हो, थकन नहीं हो, और न कभी पराजय हो।
प्रेम - पंथ पर बढ़ें सर्वदा, सदा धर्म की ही जय हो॥
(टिकी धर्म पर ही यह धरती धर्म सदा सुखकर पाया)।
मेरी कुलदेवी कण्णम्मा! तेरी चरण - शरण आया॥ ४॥
भला-बुरा हम नहीं जानते माँ! तू करुणा कर मुझ पर।
मिटा अमंगल दे तू सारा, सदा हमारा मंगल कर॥
(तू है मंगलमयी मनोरम अद्भुत है तेरी माया)।
मेरी कुलदेवी कण्णम्मा! तेरी चरण - शरण आया॥ ५॥

२ पाञ्चाली-शपथ

(प्रथम भाग)

आह्वान सर्ग

ब्रह्म-स्तुति--१

जो (पुण्यात्मा - सिद्ध) महात्मा लोगों द्वारा।
हैं ॐकार - रूप में जाता सदा पुकारा॥
जो कर्मों का भंजक (और) कष्ट - हारक है।
जो हित - कारक है दुःखों का संहारक है॥
नाम - रूप से हीन जिसे मन खोज न पाता।
और बुद्धि के लिए अगोचर जो (कहलाता)॥
जो अस्तित्व - युक्त (कहलाता) सत् (स्वरूप) है।
जो है केवल चित् (स्वरूप) आनन्द - रूप है॥ १॥
जिसे (सच्चिदानन्द) ब्रह्म कहते हैं (बुधजन)।
उस निर्मल तत्त्व का करूँ (मैं) सदा संस्मरण॥
जिससे सुसंपन्न तप योग मुझे मिल जाए।
और मिले शिव - ज्ञान भक्ति (उर में लहराये)॥
और विजयिनी मिले मुझे शिव - शक्ति (मनोरम)।
(मिले ज्ञान की ज्योति) मिटे (अज्ञान - रूप) तम॥
और तमिळ का ग्रंथ मधुर यह संस्तुति पाकर।
सदा रहे (जग बीच) मधुर (रस - धार बहाकर)॥ २॥

सुसम्पन्न तप, योग, शिव-ज्ञान तथा भक्ति प्राप्त हो; विजयिनी शिवशक्ति मुझसे मिले, अन्धकार का नाश हो जाय। और इस वास्ते कि यह मधुर तमिळ-ग्रंथ प्रशंसा को प्राप्त होकर मधुर बनकर सदा बना रहे। २

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सरस्वदि वणक्कम्—2

बॅळ्ळैक् कमलत् तिले— अबळ्, बीऱ्ऱिरुप्पाळ् पुहळॅऱ्ऱिरुप् पाळ्
कॉळ्ळैक् कनियिशं तान्— नन्गु, कॉट्टुनल् याळिनैक् कॉण्डिरुप्पाळ्
कळळैक् कडलमुदै— निहर्, कण्डदॉर् पून्दमिऴ्क् कवि शॉलवे
पिळ्ळैप् परुवत् तिले— अॅमैप्, पेण बन्दानरुळ् पूणबन् दाळ् 3
वेदत् तिरुविऴि याळ्— अदिल्, मिक्क पल् लुरैयॅनुङ् गरुमै यिट्टाळ्
शीदक् कदिरमदि ये— नुदल्, शिन्दनैये कुळ लॅन्ऱुदै याळ्,
बादत् तरुक्क मॅनुञ्— जॅबि बाय्न्दनर् रुणिबॅनुन् दोडणिन् दाळ्
बोदमॅन् नाशियि नाळ्— नलम्, पॉङ्गुपल् शात्तिर वायुडै याळ् 4
कऱ्पनैत् तेनिद ळाळ्— शुवैक्, काबिय मॅनुमणिक् कॉङ्गै यिनाळ्
शिऱ्प मुदऱ्कलै हळ् पल, तॅमलर्क् करमॅनत् तिहळ्न्दिरुप् पाळ्
शीऱ्पडु नयमऱि वार्— इशै, नोय्न्दिडत् तॉहुप्पदिन् शुबैयऱि बार्
बिऱ्पनत् तमिऴ्प् पुलवोर्— अन्द, मेलवर् नावॅनुम् मलर्प् पदत् ताळ् 5
बाणियॅच् चरण् बुहुन् देन्— अरुळ्, बाक्कळिप् पाळॅसत् तिडमिहुन् देन्;
पेणिय पॅरुन् दवत् ताळ्,— निलम्, पॅयरळबुम् बॅयर् पॅयरादाळ्
पूणियल् मारबहत् ताळ्— ऐबर्, पूवॅ तिरौपदि पुहळ्क् कबॅयै
माणियल् तमिऴ्प् पाट्टाल्— नान्, बहुत्तिङक् कलैमहळ् वाऴ्त्तुह वे 6

सरस्वती-वन्दना—२

वह शुभ्रकमल पर विराजती है; प्रशंसा धारण किये रहती है। वह याळ् (वीणा) रखती है, जो बहुत ही मधुर संगीत इस तरह उँड़ेल देती है, मानो सुधा रही हो। वह मेरे बचपन में मुझे पालने और कृपा करने के लिए आयी, ताकि सुरा तथा सुधा-सम सुमन-मृदु तमिऴ-कविता मैं कर सकूँ। ३ वेद ही उसके नेत्र हैं। उसमें विविध भाष्य रूपी अंजन लगाये हुए हैं। शीत-किरण चन्द्र ही उसका भाल है। विचार ही उसके बाल हैं। वाद-तर्क कान हैं। उनमें साहस रूपी कर्णफूल हैं। बोध ही मृदु नासिका है। हितकारी विविध शास्त्र उसका मुख है। ४ कल्पना उसके मधु अधर हैं। वह सरस काव्य रूपी सुन्दर स्तनों से युक्त है। शिल्प आदि कलाएँ उसके हस्त-कमल हैं। जो शब्दशक्ति जाननेवाले, संगीतमय रचना करनेवाले व्युत्पन्न तमिऴ विद्वान श्रेष्ठ लोग हैं, वे उनकी जिह्वा उसके चरण-कमल हैं। ५ मैं उन वाणी (देवी सरस्वती) की शरण में पहुँचा हूँ। वह कृपावचन कहेगी— मैं यह दृढ़ विश्वास रखता हूँ। निश्चय के साथ जिसने बड़ी तपस्या की थी, भूमि जब तक होगी तब तक जिसका नाम अचल रहेगा, उस आभरण-भूषित वक्ष वाली पंचपत्नी देवी द्रौपदी की विख्यात कहानी को मैं तमिऴ-गीतों में गाऊँ —मुझे सरस्वती यह आशीर्वाद दें। ६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सरस्वती-वन्दना--२

शुभ्र कमल पर (सरस्वती) वह है विराजती।
प्रचुर प्रशंसा धारण करके (सदा भ्राजती)॥
उसके कर में (मंजुल) वीणा सुहा रही है।
मधुर - मधुर संगीत - (सुधा - सी) बहा रही है॥
(मुक्त - हस्त से सबको) मानो लुटा रही है।
(विद्या देकर प्रबल अविद्या मिटा रही है)॥
वह बचपन में मुझे पालने के हित आयी।
(इस प्रकार थी मुझ पर) अमित कृपा दिखलायी॥
सुधा - सुरा - सी (लिये मधुरता औ' मादकता)।
जिससे मैं कर सकूँ सुमन - मृदु तामिळ - कविता॥ ३॥
सरस्वती देवी के चारों वेद विलोचन।
विविध भाष्य - रूपी (अंजित) है उनमें अंजन॥
शीत - किरण - युत (चारु) चन्द्र है भाल (मनोहर)।
(निर्मल विविध) विचार (सुशोभित) बाल मनोहर॥
वाद - तर्क हैं कान (सु) - साहस कर्ण - फूल है।
(विमल) बोध ही मृदुल नासिका (सानुकूल) है॥
(जग में जितने) विविध शास्त्र (शोभित) हितकारी।
(मानो उसकी सुन्दर) दंत - पंक्ति है (प्यारी)॥ ४॥
(कलित) कल्पना - रूपी (उसके) मधुर अधर हैं।
सरस काव्य - रूपी उसके (सु-) स्तन सुन्दर हैं॥
शिल्प आदि (जग में जितनी कमनीय) कलाएँ।
वे सब उसके कर - कमलों के तुल्य सुहाएँ॥
(जग में जितने) शब्द - शक्ति के (सुन्दर) ज्ञाता।
औ' संगीत - प्रधान काव्य के (कुशल) विधाता॥
तामिळ के व्युत्पन्न श्रेष्ठ विद्वान् (मनोहर)।
उनकी जिह्वा (सरस्वती के) चरण - कमल (वर)॥ ५॥
उस वाणी की (चरण) - शरण में मैं (हूँ आया)।
कृपा - वचन बोलेगी, यह विश्वास समाया॥
जिसने की थी बड़ी तपस्या निश्चय - पूर्वक।
अचल रहेगा नाम भूमि यह संस्थित जब तक॥
उस आभूषण - भूषित (विमल) वक्ष वाली की।
(प्रथित) पंच - पति - वाली देवी पांचाली की॥
तमिळ - गायनों में गाऊँ विख्यात कहानी।
दे यह आशीर्वाद मुझे शारदा (भवानी)॥ ६॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हस्तिनापुरम्—3

अत्तिन पुरमुण् डाम्— इव्, अवनियि लेयदर् किणैयिलै याम्;
पत्तियिल् वीदिह ळाम्;— वॆळ्ळैप्, पनिवरै पोऱ्पल माळिहै याम्;
मुत्तॊळिर् माडङ्गळाम्— ऍङ्गुम्, मॊय्त्तळि शूळ्मलर्च् चोलैह ळाम्
नत्तियल् वाविह ळाम्— अङ्गु, नाडु मिरदिनिहर् तेविह ळाम् 7
अन्दणर् वीदिह ळाम्— मऱै, यादिह ळाम्कलैच् चोदिह ळाम्;
शॆन्दळल् वेळ्विह ळाम्; मिहच्, चोर्बॆऱुञ् जात्तिरक् केळ्विह ळाम्
मन्दिर गीदङ्ग ळाम्— तर्क्क, वादङ्ग ळाम्; तव नीदङ्ग ळाम्;
शिन्दैयि लऱमुण् डाम्;— ऍनिऱ, शेर्न्दिडुङ् गलिशॆयुम् मऱमुमुण् डाम् 8
मॆय्त्तवर् पलरुण्डाय्— वॆऱुम्, वेडङ्गळ् पूण्डवर् पलरुण् डाम्
उय्त्तिडु शिवञानम्— कनिन्, देर्न्दिडु मेलवर् पलरुण् डाम्
पॊय्त्त विन्दिर शालम्— निहर्, पूशैयुम् किरियैयुम् पुलैनडै युम्
कॆत्तिडु पॊय्म् मॊळि युम्— कॊण्डु, कण्मयक् कार्पिळैप् पोर्पल राम् 9
मालैहळ् पुरण्डशैयुम्— पॆरु, वरॆयॆनत् तिरण्डवन् तोळुडं यार्,
वेलैयुम् वाळिनैयुम्— नॆडु, विल्लैयुन् दण्डैयुम् बिरुम्बिदु वार्
कालैयुम् मालैयि लुम्— पहै, काय्न्दिडु तॊळिल् पल पळहिवॆम् बोर्
नूलैयुम् तेर्च्चि कॊळ्बोर्— करि, नूऱिनैत् तनिनिन्ऱु नॊऱुक्कबल् लार् 10

हस्तिनापुर—३

हस्तिनापुर नामक एक नगर है। उसके टक्कर का नगर अवनी-भर में नहीं है। वहाँ पंक्तियों में वीथियाँ (बनी) थीं। श्वेत हिमपर्वत-सरीखे अनेक सौध थे। मोती-मंडित खण्डों से युक्त भवन; सब कहीं शीतल जलाशयों से भरी फुलवारियाँ; अभीष्ट जलवाली वापियाँ —और उन स्थानों को पसन्द करके आनेवाली रति-सम्मान देवियाँ पायी जाती थीं। ७ वहाँ ब्राह्मणों के आवास की वीथियाँ थीं। वेद आदि (विद्याओं) की ज्योति रहती थी। प्रज्वलित अग्नि के यज्ञ होते थे। उत्कृष्ट शास्त्रार्थ होते थे। मन्त्र, गीत, तर्क, वाद, कई प्रकार के तप आदि पाये जाते थे। मन में धर्म था, जो भी कलि-मल अधर्म का भी अस्तित्व था। (इधर भारती का आशय है— धर्म-नेता ब्राह्मणों के मन में भी अधर्म को स्थान मिल गया था। इसीलिए देश का नाश हो गया था।) ८ उन ब्राह्मणों (की बस्ती) में अनेक सच्चे तपस्वी थे, तो कई पाखण्डी भी थे। ऐसे भी महात्मा लोग थे, जिनका शिव-ज्ञान पक्का था और जो सच्चे चिन्तक थे। मिथ्या इन्द्रजाल के समान पूजा आदि क्रियाएँ तथा नीच आचरण करते हुए दूसरों की आँखों में धूल झोंककर जीनेवाले भी अनेक लोग थे। ९ जिन पर मालाएँ झूलती थीं ऐसे बड़े पर्वत के समान स्कन्धों वाले; साँग, तलवार, लम्बे धनु तथा दण्ड उत्कट इच्छा के साथ धारण करनेवाले; सबेरे और शाम शत्रु-संहारक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हस्तिनापुर--३

नगर हस्तिनापुर (प्रसिद्ध प्राचीन मनोरम)।
नगर नहीं कोई अवनी में है उसके सम॥
वहाँ पंक्तियों में (शोभित) थीं (विविध) वीथियाँ।
श्वेत - हिमालय - सम सौधों की सजी श्रेणियाँ॥
(मंजु) मोतियों से मंडित मंडप (मनमोहन)।
शीतल जलाशयों से पूरित (अगणित) उपवन॥
(ठौर - ठौर पर) थीं कमनीय वापियाँ सुन्दर।
जहाँ सुहातीं रति - समान देवियाँ (मनोहर)॥ ७॥

वहाँ ब्राह्मणों के भवनों की थीं बहु गलियाँ।
वेद आदि विद्याओं की थीं व्याप्त ज्योतियाँ॥
लाल अग्नि में वहाँ यज्ञ होते थे अगणित।
करते थे उत्तम शास्त्रार्थ परस्पर पंडित॥
न्याय - पूर्ण तप - पूर्ण वहाँ था मानव - जीवन।
(सतयुग के ही तुल्य चरित सबका था पावन)॥
(यद्यपि) धर्मभाव (परिपूरित) था (सबके) मन।
तो भी था कलि - मल, अधर्म - अस्तित्व (अपावन)॥ ८॥

उन विप्रों में थे अनेक सच्चे तपधारी।
तो भी थे अनेक पाखण्डी (मिथ्याचारी)॥
वहाँ महात्मा थे अनेक पक्के शिव - ज्ञानी।
सच्चे चिन्तक थे (सुविज्ञ थे, अति विज्ञानी)॥
मिथ्या इंद्रजाल - सम कर पूजादि क्रियाएँ।
औ' आँखों में धूल झोंक (निज काम बनाएँ)॥
नीच आचरण करें (भुलाएँ श्रेष्ठ आचरण)।
ऐसे भी कुछ बसे हुए थे वहाँ विप्रगण॥ ९॥

पर्वत के समान (अति उन्नत) कन्धों वाले।
जिन पर हिलते थे फूलों के हार (निराले)॥
साँग, खड्ग, लम्बे धनु और दण्ड - धारी थे।
साँझ - सबेरे शत्रु - दलन के अभ्यासी थे॥
ग्रंथ भयंकर युद्ध - शास्त्र में परम कुशल थे।
मार हज़ार गजों को सकते, सबल धवल थे॥ १०॥

कार्य का अभ्यास करके भयंकर युद्धशास्त्र-सम्बन्धी ग्रंथों में निष्णात रहनेवाले, हज़ार हाथियों को अकेले ही मार सकनेवाले— १० आर्य राजा, क्षत्रिय वीर, भू-शासन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आरिय वेल्मऱ वर्— पुवि, याळुमॉर् कडुन्दॉळिल् इनिदुणर्न् दोर्
शीरियल् मदिमुहत् तार्— मणित्, तेनिद ळमुदॅन नुहर्न्दिडुवार्;
वेरियङ् गळ्ळरुन्दि— ॲङ्गुम्, बॅम्मद यानैहळ् ॲनत्तिरि बार्
पारिनि लिन्दिरर् पोल्— बळर्, पार्त्तिबर् बीदिहळ् पाडुव मे 11

नल्लिशै मुळक्कङ्गळाम्— पल, नाट्टिय मादर्तम् पळक्कङ्गळाम्
तॉल्लिशैक् कादियङ् गळ्— अरुन्, दॉळिलुणर् शिऱ्परशॅ योबियङ्गळ्
कॉल्लिशै बारणङ् गळ्— कडुङ्, गुदिरैह ळॉडुपॅरन् बेर्हळुण् डाम् !
मल्लिशै पोर्हळुण् डाम्;— तिरळ्, बाय्न्दिवै पार्त्तिडु बोर्हळुण् डाम् 12

ॲण्णरु कनिबहै युम्— इवै, इलहिनल् लॉळितरुम् पणि वहैयुम्
तण्णऱुञ् ञान्बङ्गळुम्— मलर्त्त, तार्हळु मलर्विळिङ् कान्बङ्गळुम्
शुण्णमुम् नऱुम्बुहै युम्— शुरर्, तुय्प्पदर् कुरियपल् पण्डङ्गळुम्
उण्णनर् कनिबहै युम्— कळि, युवहैयुम् केळियुम् ओङ्गिन बे 13

शिमनुडै नण्बन् ॲन् बार् बड, दिशैक्कदि पदियळ नेशन् ॲन् बार्
अवनुडैप् पॅरुञ्जॅल् वम्— इवर्, आबणन् दॉऱुम्बुहुन् दिरुप्पदु बाम्;
तबनुडै वणिहर्हळुम्— पल, तरनुडैत् तॉळिल् शॅयु माशन मुम्
ॲबनुडंप् पयमुमिला— दिनि, दिरुन्दिडुन् दऱुमैय दॅळिन हरे 14

के कठिन कार्य में दक्ष; श्रेष्ठ चन्द्र-सम आननवालियों के आकर्षक अधर-मधु को सुधा-सम चखनेवाले वीर (क्षत्रिय) सुगन्धित सुरा पीकर मदमत्त हाथियों के समान घूमते थे। भूमि पर जो इन्द्रों के समान रहते थे, उन पार्थिवों (क्षत्रियों) की वीथियों का वर्णन हम गाकर करेंगे। ११ वहाँ श्रेष्ठ संगीत की धूम थी। अनेक नर्तकियों का (नृत्य-) अभ्यास होता था। प्राचीन संगीतमय काव्य; उत्कृष्ट कारीगरी के ज्ञाता शिल्पियों द्वारा रचित प्रतिमाएँ; घातक हाथी गण, तीव्रगामी अश्व, बड़े-बड़े रथ —ये सब होते थे। मल्लयुद्ध होते थे तथा इनके दर्शक भी अनेक थे। १२ असंख्यक धातुओं (नगों) के वर्ग; उनको छवि प्रदान करनेवाले भृत्यों (आभरणों) के वर्ग; शीतल सुगन्धित चन्दन; फूलों के गुच्छे; सुमन-अक्ष रूपी चुंबक; चूर्ण तथा धूप; सुर-योग्य अनेक पदार्थ; खाने के लिए अनेक फलों के वर्ग —इन सबके साथ आनन्द और केलियाँ वर्धमशील रहीं। १३ शिवजी का मित्र, उत्तर दिशा का दिग्पाल है जिसे अलकेश कुबेर कहते हैं, उसका-सा धन इनके कोश में धरा पड़ा था। सौभाग्यशाली व्यापारी (वैश्य) तथा उच्च श्रेणी की सेवा करनेवाले महान् समुदाय (शूद्रवर्ग— जान-बूझकर कवि उस शब्द से बचे हैं, क्योंकि उसको कुछ मूर्ख लोगों ने घृणित अर्थ में प्रयुक्त किया है) थे। वह ऐसा नगर था कि जिसमें ये सब किसी से भी भय न करते हुए रहते थे। १४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

क्षत्रिय वीर आर्य राजा (उस समय अतुल) थे।
भू - शासन के कठिन कार्य में (बहुत) कुशल थे॥
चन्द्र - वदनियों के सुख के वे आकर्षक थे।
मधुर - अधर की मधुर - सुधा के आस्वादक थे॥
पीकर सुरभित सुधा घूमते मत्त - गजों - सम।
भू - तल पर बसते थे इंद्र - समान (मनोरम)॥
उन क्षत्रिय राजाओं की गलियों के (गुण - गण)।
गा - गाकर हम आज करेंगे (विस्तृत) वर्णन॥ ११॥

(सुखद) श्रेष्ठ संगीत वहाँ होता था मुखरित।
नर्तकियों का नृत्य (वहाँ) होता था (अविरत)॥
था प्राचीन काव्य (सुन्दर) संगीत - समन्वित।
थीं प्रतिमाएँ श्रेष्ठ शिल्पियों - द्वारा निर्मित॥
तेज़ अश्व थे, बड़े - बड़े रथ, गज थे घातक।
मल्ल - युद्ध होते थे, लखते अगणित दर्शक॥ १२॥

भरे पड़े थे वहाँ असंख्य नगीने सुन्दर।
उनको छवि देनेवाले थे भूषण मनहर॥
थे फूलों के गुच्छ, सुगंधित शीतल चंदन।
थे खाने के योग्य फलों के विविध वर्ग गण॥
सुमन अक्ष रूपी चुंबक थे, चूर्ण, धूप (वर)।
देवगणों के योग्य पदार्थ सभी थे (सुन्दर)॥
(सभी ओर) छाया था (अति) आनंद (मनोहर)।
ठौर - ठौर थीं बड़ी केलियाँ (अनुपम सुंदर)॥ १३॥

जो अलकापति औ' शंकर का मित्र कहाता।
जिसे विश्व उत्तर - दिशि का दिक्पाल बताता॥
(उसके कोषों में संचित था जितना कंचन)।
भरा पड़ा इनके कोषों में उतना ही धन॥
थे व्यापारी वहाँ बड़े सौभाग्य - समन्वित।
उच्च सेवकों के महान समुदाय अपरिमित॥
हिल - मिलकर सब लोग वहाँ रहते थे निर्भय।
सब प्रकार से नगर (हस्तिनापुर) था सुखमय॥ १४॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुरियोदनन् सबै—4

कन्नङ् गरियदु वाय्— अहल्, काट्चिय दाय्मिहु माट्चिय दाय्
तुन्नर् किनियदु वाय्— नल्ल, शुवैतरु नीरुडै यमुनैयैनुम्
बन्नत् तिरुनदि यित्— पॊन्, मरुङ्गिडैत् तिहळ्न्दअम् मणिनह रिल्
मन्नवर् तङ्गो मान्— पुहळ्, वाळरवक्कॊडि युयर्त्तु निन्ड्रान् 15
तुरियोदनप् पॆय रान्— नॆञ्जत्, तुणिवुडैयान् मुडि पणिव ड्रियान्
करियो रायिरत् तिन्— वलि, काट्टिडु वोन् ऍन् ड्रक्कविञर्पि रान्
पॆरियोन् बेदमुनि— अन्ड्र, पेशिडुम् बडितिहळ् तोळ्वलि योन्
उरियोर् तामॆनिनुम्— पहैक्, कुरियोर् तमक्कुबॆन् दीयनै यान् 16
तम्बॆशॊल् नॆड्रिप्पडि ये— इन्दत्, तडन्दोळ् मन्नवन् अरशिरुन् दान्
मन्दिर मुणर्पॆरि योर्— पलर्, वाय्त् तिरुन्दार् अवन् सबैत निले,
अम्बमिल् पुहळुडै यान्— अन्द, आरिय वीट्टुमन् अड्रम् अड्रिन् दोन्
बन्दनै पॆरुङ्गुर वोर्— पळ्, मरैक्कुल मड्रवर्हळ् इरुवरॊडै 17
मॆय्न्नॆड्रि युणर्विदु रन्— इनि, वेरुपल् अमैच्चरुम् विळङ्गिनिन् ड्रार्;
पॊय्नॆड्रित् तम्बिय रुम्— अन्दप्, पुलैनडैच् चहुनियुम् बुड्रमिरुन् दार्;
मैन्नॆड्रि वान्कॊडै यान्— उयर्, मानमुम् वीरमुम् मदियुमु ळोन्
उय्न्नॆड्रि यड्रिया दान्— इड्रैक्कु, उयिर् निहर् कन्नतुम् उडनिरुन् दान् 18

तुरियोदनन् पॊड्रामै—5

बेड्र

अण्णि लाव पॊरुळिन् कुवैयुम्, याङ्गणुम् शॆलुञ् जक्कर माण्बुम्
मण्णि लार्क्कुम् पॆड्रलरि दामोर्, वार्हडर् पॆरुञ् जेनैयु माङ्गे

दुर्योधन-सभा—४

काली, विस्तृत, बहुत गौरवशालिनी, आकर्षक तथा मधुर जलदायिनी यमुना नामक मनोरम नदी के पास एक श्री-नगर था। उसमें राजाओं का राजा (दुर्योधन) यशस्वी सर्प-ध्वजा फहराता हुआ रहता था। १५ दुर्योधन दिलेर था। वह सिर झुकाना नहीं जानता था। कवि-सम्राट् वेदव्यास ने यह कहा है कि वह सहस्र गज-बल से युक्त भुजबल धारण करता था। मित्र भी हों, पर यदि वे शत्रुता के योग्य हो जायें, तो वह उनके लिए कठोर अग्नि के समान था। १६ अपने पिता की कही हुई नीति के अनुसार ही वह विशाल-भुज राजा राज्य करता था। उसकी सभा में अनेक मंत्रज्ञ बड़े लोग थे। उसमें अनन्त यशस्वी, धर्मज्ञ आर्य भीष्म और वंद्य महान् गुरु क्षत्रिय धर्म को अपनानेवाले दो वीर (द्रोण तथा कृप) थे। १७ सत्य मार्ग जानने वाला विदुर और अन्य अनेक मंत्री उसकी सभा की शोभा बढ़ा रहे थे। झूठे मार्ग पर जानेवाले छोटे भाई और नीच चाल चलनेवाले शकुनि भी एक ओर थे। और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दुर्योधन-सभा—४

आकर्षक मधुमय जल - दानी गौरव - शाली।
बहती उसके पास सुविस्तृत यमुना काली॥
यशस्विनी (निज) सर्प - ध्वजा फहराता (सुंदर)।
उस नगरी में बसता था दुर्योधन नृपवर॥ १५॥
था (अतिशय) साहसी (वीर) दुर्योधन नामक।
नहीं जानता (कभी) झुकाना (अपना) मस्तक॥
कवि - सम्राट व्यास ने उसका (यश) है गाया।
गज-सहस्र बल-सम उसका भुज-बल बतलाया॥
यदि उसके वैरी बन जायें उसके चाहक।
उनके हित भी प्रबल-अनल-सम था वह (दाहक)॥ १६॥
पिता-प्रदर्शित नीति-मार्ग का कर अवलंबन।
यह विशाल भुजवाला नृप करता था शासन॥
उसकी सभा-बीच मंत्रज्ञ बड़े जन अगणित।
(वर्तमान रहकर) करते थे उसको शोभित॥
अमित यशस्वी आर्य भीष्म थे धर्मज्ञानी।
क्षत्रिय-धर्मी वन्द्य द्रोण-कृप दो (सेनानी)॥ १७॥
सत्य-मार्ग के ज्ञाता विदुर वहाँ थे (वन्दित)।
ऐसे अगणित मंत्री करते सभा सुशोभित॥
एक ओर थे उसके अनुज असत्-पथ-गामी।
नीच शकुनि - (मामा आदिक) थे उसके हामी॥
स्वार्थ-रहित, साहसी, प्राण-सम-प्रिय, अभिमानी।
था दुर्योधन - साथी कर्ण बड़ा ही दानी॥ १८॥

दुर्योधन की ईर्ष्या—५

विविध पदार्थों के (पर्वत से) ढेर (सुशोभित)।
सब पर चलनेवाली आज्ञा गौरव - मंडित॥
भू - मंडल में नहीं किसी को मिलनेवाली।
थी विशाल सागर - समान सेना (मतवाली)॥

राजा (दुर्योधन) के साथ चलनेवाला, बड़ा दानी, अभिमानी, साहसी तथा बुद्धिमान और स्वार्थ न जाननेवाला, राजा का प्राण-सम कर्ण भी वहाँ था। १८

दुर्योधन की ईर्ष्या—५

(भिन्न छन्द में)

असंख्य पदार्थों के ढेर, सर्वत्र चलनेवाले आज्ञाचक्र का गौरव, पृथ्वी में किसी को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विण्णि लिन्दिरन् तुय्प्पन पोन्रु, वेण्डु मिन्बमुम् पॆऱ्ऱव नेनुम्
कण्णि लात्तिरि दराट्टिरन् मैन्दन्, काय्न्द नॆञ्जुडन् अॆण्णुव केळोर् 19

वेऱु

पाण्डवर् मुडियुयर्त् ते— इन्दप्, पार्मिशै युलविडु नाळ्वरै नान्
माण्डदो ररशा मो ?— अॆन, दाण्मैयुम् पुहळुमोर् पॊरुळा मो ?
काण्डदु बिल्लुडै योन्— अन्बक्, काळै यरुच्चुनन् कण्गळि लुम्
माण्डहु तिऱल्वो मन्— तड, मार्बिलुम्, अॆनदिहळ् वरैन्दुळ दे ! 20
बारद नाट्टिलुळ्ळ— मुडिप्, पार्त्तिवर् यार्क्कु मोर् पदिवॆन्ऱे
नारदन् मुदन्मुनि वोर्— बन्दु, नाट्टिडत् तरुमनव् वॆळ्दि शॆय् दान्;
शोरनव बॆदुकुलत् तान्— शॊलुम्, जूळ्च्चियुन् दम्बियर् तोळ्बलि युम्
बीरमि लात्तरु मन्— तनै, वेन्दर् तम् मुदलॆन बिदित्तन बे 21
आयिर मुडिवेन् दर्— पदि, नायिर मायिरङ् गुरुनिलन् तार्
मायिरुन् दिरैकॊणरन् दे— अङ्गु, बॆत्तदोर् बरिशैयै मऱन्दिड वो ?
तूबिऴै याडेह ळुम्— मणित्, तॊडैयलुम् पॊन्नुमोर् तॊहैप्पडु मो ?
शेयिऴै मडवारुम्— परित्, तेर्हळुङ् गोडुत्तबर् शिरु तॊहै यो ? 22

भी न मिल सकनेवाली बड़े समुद्र-सी सेना, व्योमलोक के इन्द्र द्वारा भोग्य सुख के समान सुख और मन-माँगी सुविधाएँ —इन सबका स्वामी होकर भी आँखों से हीन धृतराष्ट्र का पुत्र जलते मन के साथ, जो सोचता है, उसे सुनिए— । १९

(भिन्न छन्द में)

जब तक पांडव अपना सिर ऊँचा किये इस संसार में घूमते हैं, तब तक मैं जो शासन करता हूँ, वह राज्य (-शासन) भी होगा क्या ? क्या मेरा पौरुष तथा यश कोई चीज होगा ? दर्शनीय गांडीवधारी उस पट्ठे अर्जुन की आँखों में और गौरव योग्य वीरता के स्वामी भीम के विशाल वक्ष में तो मेरी निंदा (ही) अंकित (दिखती) है। २० धर्म ने यज्ञ क्या किया ? —नारद आदि मुनियों ने आकर यह सिद्ध किया कि भारत देश भर में सभी राजाओं का स्वामी वही है। चोर यदुकुलपति (कृष्ण) के षड्यन्त्र तथा अपने छोटे भाइयों के भुजबल के बल पर वह वीरताहीन धर्मराज राजाओं का सरदार बन गया। २१ सहस्र किरीटी राजाओं ने तथा दस सहस्र छोटे-छोटे राज्यों के अधिपतियों ने जो बहुत कर लाकर भेंट किये, क्या उसे भुलाया जा सकता है ? शुभ्र वस्त्र, मणिमालाएँ, स्वर्ण —क्या यह सब गिनती में आ सकता है ? श्रेष्ठ आभरणधारिणी स्त्रियों (दासियों), अश्वों तथा रथों को भेंट करनेवाले क्या कम थे ? २२ उच्च श्रेणी के स्वर्ण के बने कलश, रवि-सम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

थे वे सुख, जिनको न इन्द्र स्वर्ग में पाएँ।
मन माँगी थीं प्राप्त (सभी उसको) सुविधाएँ॥
इन सबका भी सर्वोत्तम स्वामी कहलाकर।
(तीनों लोकों के सारे सुख-वैभव पाकर)॥
नयन-अंध धृतराष्ट्र-तनय (पापी) दुर्योधन।
सुनिये, क्या वह सोच रहा है ले जलता मन॥ १९॥

जब तक पाण्डव करके अपना मस्तक उन्नत।
घूम रहे हैं इस जगती-तल में (शुभ संतत)॥
(जब तक पाण्डव हैं इस वसुधा पर प्रमुदित मन)।
मेरा तब तक व्यर्थ सकल यश, पौरुष, शासन॥
दर्शनीय अर्जुन गाण्डीव धनुषधारी है।
भीम वीरता के गौरव का अधिकारी है॥
पार्थ दृगों में और भीम के वक्षस्थल में।
मेरी निन्दा अंकित दिखती है (पल-पल में)॥ २०॥

धर्मराज ने यज्ञ किया (इस वसुधा-तल पर)।
आये नारद आदि अनेकों (विश्रुत) मुनिवर॥
उन सबसे प्रत्यक्ष हो रहा सिद्ध सुनिश्चित।
भारत के सब राजाओं का पति यह (अविजित)॥
यदुकुल-पति उस चोर (कृष्ण) ने किया कूट-छल।
औ' अपने छोटे अनुजों का पाकर भुज-बल॥
यद्यपि था वीरता-हीन (यह कैसी संगति)।
धर्मराज बन गया सभी राजाओं का पति॥ २१॥

एक हज़ार मुकुट-धारी भूपति थे आये।
दस हज़ार छोटे नरेश आये (मनभाये)॥
इन सबने दीं उनको अगणित भेंटें लाकर।
कैसे रक्खा जा सकता है उसे भुलाकर॥
स्वर्ण (-राशि), शुभवस्त्र और दीं मणि-मालाएँ।
(अमित द्रव्य थे) उन्हें कहाँ तक (तुम्हें) गिनाएँ॥
आभूषण-धारिणी श्रेष्ठ दासियाँ (मनोहर)।
भेंट-रूप में आये (अगणित) रथ तुरंगवर॥ २२॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आणिप् पॊऱ् कलशङ्गळुम्-- रवि, यत्ननल् वायिरत्तिन् महुडङ्ग ळुम्
माणिक्कक् कुवियल्ह ळुम्— पच्चै, मरहदत् तिरळुनन् मुत्तुक्क ळुम्
पूणिट्ट तिरुमणि ताम्— पल, पुदुप्पुदु वहैहळिर् पॊलिवन्न वुम्
काणिक्कै याक्कॊणर्न् दार्— अन्दक्, काट्चियै मऱप्पदु मॆळिदा मो ? 23
नाल्वहैप् पशुम्बॊन् नुम्— ऑरु, नाला यिरवहैप् पणक्कुवै युम्
बेल वहै विल्वहै युम्— अम्बु, विदङ्गळुन् दूणियुम् वाळ्वहै युम्
शूलवहै तडिवहै युम्— पल, तॊलिशॆयुम् पऱैहळुङ् गॊणर्न्दु वैत्ते
पाल्वळर् मन्नवर् ताम्— अङ्गुप्, पणिन्दवै यॆन्नुळ मऱन्दिडु मो ? 24
किळ्वियर् तपशियर् पोल्— पळङ्, गिळिक्कवै पडिप्पवन् पॊरुमैयॆन् ऱुम्
पळ्वित्तै मुडिवॆन् ऱुम्— शॊलिप्, पडुङ्गि निऱ्पोन् मऱत्तन् मैयि लान्
बळबळत् तरुमतुक् को— इन्ब, मानिल मन्नवर् तलैमैतन् दार् ?
मुळ्वित्तैक् कॊडिकॊण् डान्— पुवि, मुळुदैयुन् दन्निये कुडिकॊण् डान् 25
तम्बियर् तोळ्वलि याल्— इवन्, शक्कर वर्त्तियॆन् ऱुयर्न्ददु वुम्
बॆम्बिडु मदकरि यान्— पुहळ्, वेळ्विशॆय् दन्निलै मुळक्कॊय दुम्
अम्बुवि मन्नरॆ लाम्— इवन्, आणॆतम् जिरत्तिनि लणिन्दव राय्
नम्बरुम् बॆरुञ्जॆल् वम्— इवन्, नलङ्गिळर् शबयिनिऱ् पॊळिन्ददु वुम् 26
अॆप्पडिप् पॊऱुत्तिडु वेन् ?— इवन्, इळमैयिन् वळमैह ळऱिये नो ?
कुप्पै कॊलो मुत् तुम् ?— अन्दक्, कुरैहड निलत्तवर् कॊणर्न्दुपॆय् दार्;
शिप्पियुम् बवळङ्गळुम्— ऑळि, तिरण्डवॆण् शङ्गत्तिन् कुवियल्हळुम्
ऑप्पिल् वॆडूरिय मुम्— कॊडुत्, तॊडुङ्गि निऱ्ऱारिव नॊरु वतुक्के 27

हीरे के किरीट, माणिकों के ढेर, हरे मरकत की राशियाँ, श्रेष्ठ मुक्ताएँ और नये-नये आभापूर्ण मणिजटित आभरण —यह सब भेंट के रूप में जो वे लाये, क्या वह दृश्य भुलाया भूला जा सकता है ? २३ चार प्रकार के चोखे स्वर्ण, चार सहस्र प्रकार के सिक्के, साँगों के वर्ग, धनुवर्ग, तलवार के वर्ग, शूलों तथा दंडों के प्रकार और बजनेवाले पटह —इन सबको विविध श्रेणियों में बँटे राजाओं ने लाकर रखा और वहाँ उसके सामने अपने सिर नवाये। क्या उसे मेरा मन भूल सकेगा ? २४ वृद्धाओं तथा तपस्वियों के समान पुराना शुक-कथा-वाचक; क्षमा, प्राचीन कर्मफल आदि का नाम लेकर दबा रहनेवाला, वीर स्वभाव से हीन चिपचिपा धर्मराज ! क्या उसे देश के राजाओं ने आधिपत्य प्रदान किया ? मेरी जिसकी ध्वजा है, उसने सारी पृथ्वी को अकेले ही अपनी प्रजा बना लिया है। २५ छोटे भाइयों के भुजबल के आधार पर इसका चक्रवर्ती के रूप में उन्नत हो जाना, मदमत्त गज वाले (धर्म) का प्रकीर्तित यज्ञ सम्पन्न करके उस स्थिति की खबर फैलाना, पृथ्वी के सारे राजाओं का इसकी आज्ञा को शिरोधार्य करके अविश्वसनीय ढंग से बड़ा धन इसकी शोभित सभा में लाकर बरसाना— २६ हाय ! इसे मैं कैसे सहूँगा ? इसके बचपन की बड़ाइयाँ क्या मैं नहीं जानता ? क्या मोती भी कूड़ा हैं कि उन्हें गर्जनशील समुद्रावृत भूमि के पालकों ने लाकर उँड़ेल दिया। सीपियों तथा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उच्च कोटि के स्वर्ण - कलश थे (अतिशय सुंदर)।
रवि - समान थे हीरक - जटित किरीट (मनोहर)॥
थीं मरकत - राशियाँ (ढेर माणिक के अगणित)।
आभा - पूर्ण नवीन आभरण थे मणि - मंडित॥
मंजुल मुक्ताएँ सब भेंट - रूप में लाये।
जा सकते वे दृश्य कभी भी नहीं भुलाये॥ २३॥
चार तरह के चोखे - चोखे स्वर्ण - (निकर) थे।
चार सहस्र तरह के (शुभ) सिक्के (सुंदर) थे॥
साँग, धनुष, तलवार, शूल औ' दंड सभी थे।
बजनेवाले ढोल (विशाल प्रचंड) सभी थे॥
विविध श्रेणियों के भूपों ने इनको लाकर।
(धर्मराज के सम्मुख) रक्खा शीश नवाकर॥
भूल नहीं सकता वह दृश्य कभी मेरा मन।
(जब-जब करता याद हृदय में होती तड़पन)॥ २४॥
वृद्धाओं औ' तपस्वियों - सम कथा पुरानी।
शुक - संवाद - सदृश कह (कल्पित झूठ) कहानी॥
क्षमा और प्राचीन कर्म - फल गिना - गिनाकर।
सदा दबा रहता वीरत्व - हीन जो (कायर)॥
ऐसे लिबलिब धर्मराज को सभी नृपति गण।
अपना अधिपति मान रहे हैं (हो सभीत मन)॥
अंकित जिसकी (दिव्य) ध्वजा पर भेरी (भारी)।
(आज) बनी है प्रजा उसी की पृथ्वी सारी॥ २५॥
हुआ चक्रवर्ती है अनुजों के भुज-बल से।
है सम्पन्न (सदा) मद-मत्त गजों के दल से॥
किया यज्ञ सम्पन्न विश्व में यश फैलाया।
पृथ्वी के सब राजाओं पर शासन पाया॥
(सदा) अविश्वसनीय ढंग से बहु धन लाते।
इसकी शोभित सभा बीच (नृपगण) बरसाते॥ २६॥
इसके बचपन की बड़ाइयाँ क्या न जानता ?।
हाय सहूँगा कैसे ? जिसको नहीं मानता॥
नृप थे गर्जन - शील समुद्रावृत धरनी के।
मोती लाये भेंट (रत्न जगमग अवनी के)॥

प्रवालों, छविमय श्वेत शंखों के ढेर, अनुपम वैदूर्य —यह सब इसी एक को भेंट करके वे अलग एक ओर खड़े रहे। २७ पार्वत्य देशों के राजा अनेक हिरण लाये। उन्होंने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मलैना डुडैयमत् नर्— पल
माङ्कोणर्न् दार्पुडुत् तेन् कोणर्न् दार्
कोलैमाल् वाय्कोणर्न् दार्— मलैक्
कुविरैयुम् वत्रियुङ् गोणर्न्बु तम् दार्;
कलैमाम् कोन्बुह् ळुम्— बंरङ्
गळिऱडैत् तन्बमुङ् गवरिह् ळुम्
बिलैयार् तोल्वहै युम्— कोण्डु
मेलुम्बोन् वैत्तङ्गु वणङ्गि निन् ऱार् 28

शेन्निऱत् तोल् वरन् वोल— मन्बत्, तिरुमळर् कदलियिन् तोलुड ने
वैन्निऱप् पुलित् तोल् हळ्— पल, वेळङ्गळ् आडुहळ् इवऱ्ऱडैत् तोल्
प्निऱ मविरुडै हळ्,— बिलै, पहरुम् परवैहळ् विलङ्गिनङ् गळ्,
पोन्निऱप् पाम्जालि— मिहिळ्, पूत्तिडुम् शन्बमम् अहिल्वहै हळ् 29
एलम् करुप्पू रम्— नऱुम्, इलवङ्गम् पाक्कु नऱ् चादि वहै
कोलम् पैऱ्क् कोणर्न् वे— अवर्, कोट्टि निन्ऱार्, करम् मोट्टिनिन् ऱार्
मेवुन् वलत्तिडु ळार्— पल, वेन्दरप् पाण्डवर् विळैन्दिड वे
ओलन् दरक्कोणर्न् वे— वैत्त, वोम्बोन्ऱम् अंन्मनत् तुऱैन्ददु वे 30
मालैहळ् पोन्नुम् बुत् तुम्— मणि, वहैहळिऱ् पुनैन्दवुम् कोणर्न्दु पय्दार्
वेलैहळ् नूऱवन् नम्— पल, शित्तिरत् तोळिल् वहै शेर्न्दवन वाय्
शालवुम् पोन्निळैत् ते— दैय्वत्, तंमलर् विळैवन पलर् कोणर्न् दार्
कोल नऱ् पट्टुक्क ळिन्— वहै, कूऱवो ? अंण्णिल् एऱुव दो ? 31
कळल्हळुम् कडहङ्ग ळुम्— मणिक्, कवशमुम् मऱुडमुम् कणक्किल वाम्
निळल्निऱप् परिपल बुम्— शेन्, निऱत्तल पलवुम् वण्णिऱम् पल वुम्

नया शहद, घातक हाथी, पर्वतीय अश्व, सूअर लाकर भेंट किये। हिरण के सींग, दाँत, चामर, बहुबूल्य चमड़ों के वर्ग —सब लाये; उनके ऊपर स्वर्ण भी रखकर उन्होंने नमस्कार किया और वे (एक ओर) खड़े रहे। २८ लाल रंग का चमड़ा, काला चमड़ा, सुन्दर 'कदली' मृग का चर्म, भयानक रंग के बाघों के चर्म, अनेक गजों तथा अजों के चर्म, अनेक रंगों के रोम-वस्त्र; अनमोल पक्षीगण, जानवर, स्वर्ण-वर्ण पांचाली को पसन्द आनेवाले चन्दन और अगरु वर्ण २९ एला (इलायची), कर्पूर, सुवासमय लौंग, अच्छी जाति के पूगीफल (सुपारी) —सब धूम-धाम से लाकर उन्होंने लुटा दिये। फिर हाथ बाँधे वे खड़े रहे। और भूमि के अनेक अधिपतियों ने पांडवों को खुश करने के लिए कोलाहल के साथ जो-जो ला रखे, उनमें से हर एक वस्तु मेरे मन में चुभ गयी। ३० स्वर्ण, मणि और युवती-बालाओं को लाकर उँड़ेल दिया गया था। साड़ियाँ सौ-सौ वर्णों की; उनमें अनेक प्रकार की चित्रकारी की हुई थी। स्वर्ण जड़ा था। देवी-देवता भी पसन्द करें, ऐसी साड़ियों को लाया गया था।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(श्वेत) सीपियाँ लाये (लाल) प्रवाल (प्रभास्वर)।
छबिमय श्वेत - श्वेत शंखों के ढेर (मनोहर)॥
कर अनुपम वैदूर्य (राशि) की भेंट (निछावर)।
खड़े हो गये एक ओर वे (सारे) नृपवर॥ २७॥
लाये मृग - गण पर्वतीय देशों के नृपवर।
नवमधु, घातक गज, पर्वती अश्व औ' शूकर॥
हिरण - श्रृंग, बहुमूल्य चर्म, (गज) - दंत (सु) चामर।
(लाये विविध पदार्थ भेंट में अति उमंग भर)॥
इन सब पर रख स्वर्ण - राशि (अतुलित सुषमाकर)।
खड़े हो गये (एक ओर नृप) नमस्कार कर॥ २८॥
लाल चर्म औ' कृष्ण रंग का चर्म (मनोहर)।
कदली - मृग के, गजों, अजों के चर्म (मृदुल तर)॥
रंग - बिरंगे व्याघ्र - चर्म (अत्यन्त) भयंकर।
रंग - बिरंगे रोम - वस्त्र, पशु और पक्षिवर॥
स्वर्ण - वर्ण - वाली पांचाली के मन भाये।
चंदन, अगरु आदि (वे अनुपम भेंटें लाये)॥ २९॥
एला और कपूर (मनोरम) लौंग सुवासित।
सुपारियाँ उत्कृष्ट जाति की (सुन्दर अगणित)॥
धूमधाम से लाकर सब उपहार लुटाये।
हाथ बाँधकर खड़े रहे (नृपगण सकुचाये)॥
भू - मण्डल के भूप पाण्डवों को खुश करने।
कोलाहल के साथ भेंट लाये ढिग धरने॥
उन भेंटों का जो पदार्थ (मुझको दिखता) है।
वह मेरे मन में (काँटे - सा ही) चुभता है॥ ३०॥
मणि, मुक्ता - माला, कंचन (का ढेर प्रचुरतर)।
सौ-सौ वर्णों वाली थीं साड़ियाँ (मनोहर)॥
स्वर्ण जड़ा था उनमें, विविध चित्रकारी थी।
देवी और देवताओं को भी प्यारी थी॥
भाँति - भाँति के थे रेशमी वस्त्र मन - मोहक।
गणना हो सकती न (वस्त्र थे भूरि असंख्यक)॥ ३१॥
मणि - (मय) कवच, कड़े, कंगन थे मुकुट असंख्यक।
रंग - बिरंगे अश्व अनेकों थे (मनमोहक)॥

सुन्दर अच्छे रेशम के प्रकारों का भी क्या कहा जाय ? क्या उन्हें गिनती में भी ला सकेंगे ? ३१ कड़े और कंगन, मणि-कवच तथा मुकुट असंख्यक थे। छबिमय रंग के अनेक अश्व थे— लाल, श्वेत रंग वाले; अग्नि तथा मेघ के रंग वाले; आकाश में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तऴल्निऱम् मेहनि ऱम्— विण्णिल्, शारुम् इन्दिर विल्लै नेरुम् नि ऱम्
अऴहिय किळिवयिऱ् ऱिऩ्— वण्णम्, आऱ्न्दऩ वाय्प्पणि शेऱ्न्दऩ वाय् 32
काऱ्ऱैऩच् चॆल्वऩ वाय्— इवै, कडिदुकैत् तिडुन्दिऱऩ् मऱव रॊडे
पोऱ्ऱिय कैयिऩ राय्प्— पल, पुरवलर् कॊणर्न्दु अवऩ् शबॆपुहुन्दार्
शीऱ्ऱवऩ् पोर्यानै— मऩ्ऩर्, शेर्त्तवर् पलपल मन्दैयुण् डाम्;
आऱ्ऱल् विलेच्च मऩ् नर्— तॊलै, अरबियर् ऒट्टैहळ् कॊणर्न्दुतऩ् दार् 33
तॆऩ्ऱिशेच् चावह माम्— पॆरुन्, दीवु तॊट्टेवड विशैयद निल्
निऩ्ऱिडुम् पुहळ्च्चो ऩम्— वऱै, नेर्न्दिडुम् पलपल नाट्टिऩ रुम्,
वॆऩ्ऱि हॊळ् तरुमऩुक् के— अवऩ्, वेळ्बियिल् पॆरुम् बुहळ् विळैयुम्वण्णम्
नऩ्ऱुपल् पॊरुळ् कॊणर्न् दार्— पुवि, नायहऩ् युदिट्टिरऩ् ऎऩबुणर्न् दार् 34

आडुहळ् शिलर् कॊणर्न् दार्— पलर्
आयिरम् आयिरम् पशुक्कॊणर्न् दार्;
माडुहळ् पूट्टिऩ वाय्प्— पल
वहैप्पडु तानियम् शुमन्दऩ वाय्
ईडुऱु वण्डिहॊण् डे— पलर्
ऎय्दिऩर् करुम्बुहळ् पलकॊणर्न् दार्;
नाडुऱु तयिलवहै— नऱु
नाऩत्तिऩ् पॊरुळ्पलर् कॊणर्न्दुतऩ् दार् 35
नॆय्ककुडम् कॊण्डुवऩ् दार्— मऱै
नियमङ्गॊळ् पार्प्पऩर् महत्तिऩुक् के;
मॊय्क्कु मिऩ् कळवहै— हळ्— कॊण्डु
मोदिऩर् अरशिऩम् महिळ्बऱ् वे;
तॆक्कुनऱ् कुप्पा यम्— शॆम्बोर्
चाल्वैहळ् पोर्वैहळ् कम्बळङ्गळ्
कॆक्कुमट् टिऩुन्दा ऩो— अवै
काण्बवर् विळिहट्कुम् अडङ्गुव वो? 36

उगनेवाले इन्द्रधनुष के-से रंग वाले; सुन्दर शुक के पेट के रंग-से वाले तथा अलंकृत—३२ और पवन गति से चलनेवाले अश्वों को तथा उनको सवेग चलानेवाले कुशल वीरों के साथ अनेक राजा उस सभा में आये। राजा लोग जिन क्रुद्ध तथा दुर्धर्ष युद्ध-गजों को लाये थे, उनके अनेक झुण्ड थे। म्लेच्छ राजाओं ने अरब से ऊँट लाकर भेंट किये। ३३ दक्षिण दिशा के शावक द्वीप से लेकर उत्तर के प्रसिद्ध चीन देश तक के अन्दर रहनेवाले अनेक देशों के लोगों ने विजयी धर्म को उसके यज्ञ का यश बढ़ाते हुए अनेक उत्तम वस्तुएँ लाकर भेंट कीं। उन्होंने युधिष्ठिर को भूमि का नायक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लाल, श्वेत औ' अग्नि, मेघ के तुल्य कान्तिमय।
नभ में उगनेवाले इन्द्र - धनुष - सम छबिमय ॥
शुक के उदर - समान रंग वाले समलंकृत।
अश्व पवन की गति से चलनेवाले अगणित ॥ ३२ ॥

कुशल वीर ले उन्हें सवेग चलानेवाले।
सभा - बीच आये अनेक नृप (-वृन्द निराले) ॥
क्रुद्ध कठोर युद्ध - गज (अगणित) नृप जो लाये।
उन करियों के झुंड अनेकों थे (मनभाये) ॥
अरब (देश) से म्लेच्छ-महीपति (अगणित आये)।
(अपने साथ) भेंट में ऊँट (असंख्यक) लाये ॥ ३३ ॥

दक्षिण - वर्ती शावक - द्वीप - निवासी (शुभ नर)।
उत्तर - वर्ती चीन - देश - वासी मनुष्य वर ॥
विजयी धर्म, यज्ञ के यश को (समुद) बढ़ाकर।
दिये भेंट में विविध पदार्थ समुत्तम लाकर ॥
देश-देश के सब लोगों ने (सुयश बखाना)।
(नृपति) युधिष्ठिर को भू-तल का नायक माना ॥ ३४ ॥

कुछ अज लाये और हज़ारों गायें लाये।
बैल - जुते औ' धान्य-भरे छकड़े ले आये ॥
कुछ मनचाहे तेल और कस्तूरी लाये।
कुछ लोगों ने ईखों के अंबार लगाये ॥ ३५ ॥

विप्रों के वेदोक्त यज्ञ - हित घृत-घट लाये।
सिले हुए कुर्ते, चादर, कम्बल ले आये ॥
राज - वर्ग के मन को मुग्ध बनानेवाली।
लाये विविध भाँति की मदिरा (मंजु निराली) ॥
लाल (रंग की सुन्दर) स्वर्णिम शालें लाये।
ये पदार्थ मेरे हाथों में समा न पाय ॥
देख न पाये उन्हें दर्शकों के भी लोचन।
(थीं असंख्य वस्तुएँ कौन कर सकता वर्णन) ॥ ३६ ॥

मान लिया। ३४ कुछ लोग अज लाये; अनेक सहस्र-सहस्र गायें लाये। अनेक बैल-जुते, धान्य लदे अनुपम छकड़े ले आये। कुछ लोग ईख लाये, और लोग मन-पसन्द तेल वर्ग, कस्तूरी आदि लाये। ३५ वे घृत-घट लाये ब्राह्मणों के वेदोक्त यज्ञ के वास्ते। राजवर्ग को मुग्ध करने के लिए अनेक प्रकार की सुरा लायी गयी। सिलाये हुए कुर्ते, लाल स्वर्ण-शालें, चादरें, कम्बल —ये क्या केवल मेरे हाथों में समा नहीं पाये ? नहीं, दर्शक की आँखें भी उन्हें समा नहीं पायीं। ३६ हाथी-दाँत के पलंग,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तन्दत्तिल् कट्टिल्ह ळुम्— नल्ल, तन्दत्तिन् पल्लक्कुम् वाहन मुम्
तन्दत्तिन् पिडिवाळुम्— अन्दत्, तन्दत्तिले शिऱ्पत् तोळिल्वहै युम्
तन्दत्ति लाबन् णुम्— पिन्नुम्, तमनिय मणिहळिल् इवैयन्नेत् तुम्
तन्दत्तेक् कणक्किड वो— मुऱुत्, तरणियुन् तिरुवुम् इत् तरुमनुक् को ?" 37

वेऱु

ऍन्ऱिव् वाऱु पलपल ऍण्णि, एळै याहि यिरङ्गुद लुऱ्ऱान्
बन्ऱि रत्तोरु कल्लॆन्नुम् नॆम्जन्, बाणम् बोळिनुम् अञ्जुबल् इल्लान्
कुन्ऱ मोन्ऱु कुळैबुऱ् ऱिळहिक्, कुळम्बु पट्टळि वॆय्बिडुम् बण्णम्
कन्ऱु बूबलत् तुळ्ळुऱै वॆम्मै, काय्न् वॆळुनदु वॆळिप्पडल् पाल 38
नॆञ्जत् तुळ्ळोर् पॊऱामै यॆनुन्दी, नौळ्बदाल् उळ्ळम् नॆक्कुऱ हिप्पोय्
मञ्जन् आण्मै मऱन्दिण्मै मानम्, बन्मै याबुम् मऱन्दन नाहिप्
पञ्जै यामॊऱु पॆण्मइळ् पोलुम्, पालर् पोलुम् परिबविप् पान्नायक्
कॊञ्ज नेरत्तिऱ् पादहत् तोडु, कूडि ये उऱ वॆय् दिनिन् ऱान्नाल् 39
यादु नेरिनुम् ऍब्बहै यानुम्, यादु पोयिनुम् पाण्डवर् बाळ्बैत्
तीदु शॆय्दु मडित्तिड ऍण्णिच्, चॆय्है यॊन्ऱाऱि यान्तिहैप् पॆय्बिच्
चूदुम् पॊय्युम् उरुवॆनक् कॊण्ड, तुट्ट मामनॆत् तान्शर णॆय्दि,
"एदु शॆय्बम्" ऍनच्चॊल्लि नैन्दान्, ऍण्णत् तुळ्ळन् याबुम् उरैत्तै 40
मन्नर् मन्नन् युधिट्टिरन् शॆय्द, माम हत्तिलिल् बन्दु पॊलिन्द
शॊन्नन् पूण्मणि मुत्तिवै कण्डुम्, तोऱ्ऱङ् गण्डुम् मदिप्पिनैक् कण्डुम्
ऍन्न पट्टदु तन्नुळम् ऍन्ऱे, ईन मामन् अऱिन्दिडुम् बण्णम्
मुन्नम् तान्नॆम् जिऱ् कूऱिय वॆल्लान्, मूडन् पिन्नुम् ऍडुत्तु मॊळिन्दान् 41

हाथी-दाँत की पालकियाँ, वाहन, दाँत की मूठ की तलवारें, हाथी-दाँतों की बनी मूर्तियाँ, दाँत के आसन, स्वर्ण तथा मणि-जड़े हाथी-दाँत —क्या उनकी गिनती हो सकती है ? सारी पृथ्वी की सारी श्री क्या धर्मपुत्र के लिए ही थी ? ३७ विविध प्रकार से ऐसा सोचकर दुर्योधन दीन बनकर दुःखी हुआ। पत्थर-सा कठोर दिल वाला, आसमान गिरे तो भी डरनेवाला नहीं; जैसे एक पर्वत को पिघलाकर साँड़-सा बनाते हुए अन्दर की गर्मी उग्र होकर वह निकली हो, वैसे उसके मन के अन्दर की ईर्ष्या की आग बढ़ी, तो वह पिघल-सा गया। वह वीर अपना पौरुष, वीरता, दृढ़ता, मान, कठोरता सब भूल गया। किसी दुर्बल स्त्री के समान और बालक के समान लाचार हुआ। वह कुछ देर में पापी विचारों से युक्त बन गया। ३८-३९ चाहे कुछ हो, प्रकार चाहे जो हो, चाहे कुछ जाए, वह पांडवों के जीवन को बिगाड़कर नष्ट करने के विचार से उद्वेलित हुआ। क्या किया जाय ? उसे यह सुझायी नहीं दिया। श्रान्त-सा होकर वह अपने उस दुष्ट मामा की शरण में गया, जो षड्यंत्र तथा झूठ का (मूर्त) रूप था। उससे अपने मन की सारी बातें कहकर दीनता से पूछा कि अब क्या करें ! ४० राजाधिराज युधिष्ठिर के द्वारा किये हुए यज्ञ में इकट्ठा हुआ वह स्वर्ण, आभरण, मोती आदि को देखकर, धर्म-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गज - दंतों के पलंग और पालकियाँ (सुन्दर) ।
गज - दंतों की मूठों की तलवार (मनोहर) ॥
गज - दंतों की बनी मूर्तियाँ, आसन, वाहन ।
गज - दंतों में जड़े हुए कंचन औ' मणिगण ॥
(इतनी भेंटें मिलीं) नहीं गिनती हो सकती ।
धर्म - पुत्र - हित श्री - प्रपूर्ण थी सारी धरती ॥ ३७ ॥

ऐसा बहुविधि सोच हुआ दुःखी दुर्योधन ।
दीन बना वह पत्थर - सा कठोर जिसका मन ॥
ज्यों पर्वत को पिघला माँड़ बनानेवाली ।
निकली हो अन्दर की गर्मी उग्र (निराली) ॥
बढ़ी उसी विधि उसके मन में ईर्ष्या - ज्वाला ।
गया पिघल - सा तब वह (दुर्योधन मतवाला) ॥
भूल गया वह पौरुष, मान, (अपार) वीरता ।
भूल गया (अनुपम) दृढ़ता (सारी) कठोरता ॥
हीन - स्त्री, बालक - समान वह विवश हो गया ।
कुछ क्षण में ही पाप - विचारों - बीच खो गया ॥ ३८-३९ ॥

चाहे जिस प्रकार का हम पर संकट आये ।
(औ' हमको जग में) चाहे जो कुछ हो जाये ॥
नष्ट-भ्रष्ट हो जाय पांडवों का (यह) जीवन ।
उद्वेलित है इस विचार से (ही मेरा मन) ॥
मैं कैसे क्या करूँ ?— न सूझा जब (उपाय वर) ।
गया दुष्ट मामा की शरण भ्रांत - सा होकर ॥
वह मामा षडयंत्र - झूठ का रूप बना था ।
(उसके मन में झूठ कपट छल महा घना था) ॥
उससे अपने मन की सारी बातें कहकर ।
अब क्या करें ?— (प्रश्न) पूछा (सु-) दीनता गहकर ॥ ४० ॥

अधिपों के अधिराज युधिष्ठिर का मख लखकर ।
भूषण, मुक्ता, स्वर्ण (राशि की भेंट) निरखकर ॥
धर्मपुत्र का लखकर गौरव औ' (विशाल) तन ।
लगा (प्रबल) आघात हुआ (अतिशय) व्याकुल मन ॥
हीन-प्रकृति के मामा को यह सब समझाकर ।
अपने मन का भाव कहा फिर से दुहराकर ॥ ४१ ॥

पुत्र का डील देखकर तथा उसका गौरव देखकर, अपने मन पर किस तरह का आघात हुआ —यह सब उस हीन प्रकृति के मामा को समझाकर उस मूढ़ ने वह सब फिर कहा, जिसको वह अपने आप से कह रहा था। ४१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुरियोदनन् शहुनियिडम् शॊल्वदु—6

वेऱु

"उलहु तॊडङ्गिय नाळ्मुद लाहनम् शादियिल्— पुहळ्
ओङ्गि निन्ऱादित् तरुमनै पोलॆवर् माम ने!
इलदु पुहळ्मनु वादि मुदुवर्क्कुम् माम ने— पॊरुळ्
एऱ्ऱमुम् माट्चियुम् इप्पडि युण्डु हॊल्? माम ने!
कलैह ळुणर्न्दनल् वेदियप् पावलर् शॆय्द वाम्— पळङ्
गर्पनैक् काबियम् बर्पल कर्ऱनै मामने!
पलहडल् नाट्टैयुम् इप्पडि वॆन्ऱदै अङ्गणुम्— शॊल्लप्
पार्त्त बुण्डो? कदै केट्टदुण्डो? पुहल् माम ने! 42
'अॆदनै युलहिल् मऱप्पिनुम्, यानिनि मामने!— इवर्
याहत्तै यॆन्ऱुम् मऱन्दिड, लॆन्ऱब दॊन्ऱेदु काण्?
बिदमुऱच् चॊन्न पॊरुट्कुवे, युम्बॆरि दिल्लै काण्;— अन्द
वेळ्वियि लॆन्नै वदुप्पिन, वेऱु पलबुण् डे;
इदनै यॆलामव् बिळियऱ्ऱ, तन्दयिन् पाऱ्चॆन् ऱे— शॊल्लि
इङ्गिवर् मीदव नुम्बहै, अॆय्दिडच् चॆय्हु वाय्
मिदमिहु मन्बवर् मीदुहॊण्, डानवन् केट्कवे— अन्द
वेळ्बिकण् डॆन्नुयिर्, पुणबडुञ् जॆय्दि विळम्बु वाय् 43
कण्णैप् पऱिक्कु मळहुडे, यारिळ मङ्गैयर्— पल
कामरु पॊन्मणिप् पूण्ग, ळणिन्दवर् तम्मै ये
मण्णैप् पुरक्कुम् पुरवलर्, तामन्द वेळ्वियिल्— कॊण्डु
वाळ्त्ति यळित्तनर्, पाण्डवर्क् के यॆङ्गळ्— माम ने!
अॆण्णैप् पळिक्कुन् दॊहैयुडै, यारिळ मञ्जरैप्— पलर्
ईन्दनर् मन्न रिवर्तमक्, कुत्तॊण् डियऱ्ऱ वे;
विण्णैप् पिळक्कुन् दॊनियुडैच्, चङ्गुह ळूदिनार्;- दॆय्व
वेदियर् मन्दिरत् तोडुपल्, वाळ्त्तुक् कळोदि नार् 44

दुर्योधन का शकुनि से कथन—६

हे मामा, जगत के आरम्भ से अब तक हमारी जाति में धर्म के समान यश में में बढ़ा कौन रहा? क्या यशस्वी मनु आदि बड़ों का भी इतनी सम्पत्ति तथा बढ़ती का हाल रहा था? हे मामा, तुमने शास्त्रज्ञ वैदिकी पण्डितों द्वारा रचित तथा प्राचीन कल्पित रचनाएँ बहुत पढ़ी हैं। पर क्या कहीं भी स-सागरा पृथ्वी के इतने देशों की इस तरह की जीत तुमने देखी है? या कहानी सुनी है? कहो, हे मामा। ४२ हे मामा, चाहे कुछ भी भूल जाऊँ, पर संसार में इसके यज्ञ को किसी एक दिन भी भूलना हो ही नहीं सकता। देखो, बहुविध कल्पित वस्तुओं के ढेर तो नहीं, पर उस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दुर्योधन का शकुनि से कथन—६

हे मामा ! जब से यह जग उत्पन्न हुआ है।
यश में धर्म-समान कौन सम्पन्न हुआ है ॥
हुआ यशस्वी मनु आदिक का भी अति - गौरव।
पर क्या था उनका भी इससे बढ़कर वैभव ? ॥
शास्त्रों के ज्ञाता (महिमामय) वैदिक पंडित।
वे सब हैं लिख गये ग्रंथ प्राचीन (अपरिमित) ॥
हे मामा ! तुमने वे पढ़ीं बहुत रचनाएँ।
ऐसा देखा - सुना कहीं ? मुझको बतलाएँ ॥
भू - मंडल के सब देशों की विजय मनोहर।
(सदा) सिंधु - पर्यन्त (अखंडित शासन सुन्दर) ॥
मामा ! ऐसी जीत कहीं तुमने देखी है ?।
सुनी अलभ्य कहानी तुमने या पेखी है ? ॥ ४२ ॥
मामा ! चाहे सब कुछ (यहाँ) भूल मैं जाऊँ।
किन्तु दुसह यह यज्ञ विश्व में भूल न पाऊँ ॥
विविध वस्तुओं के थे कल्पित ढेर निराले।
थे पदार्थ बहु मेरा हृदय जलानेवाले ॥
मेरे अन्ध पिता को सब बतलाओ जाकर।
विवश करो, वे बनें युधिष्ठिर - शत्रु (भयंकर) ॥
जो रखता है अमित प्यार उन (पांडुसुतों) पर।
(मामा !) जाकर कहो पिता से (तुम) समझाकर ॥
(धर्मराज का वैभवशाली) यज्ञ देखकर।
प्राण हमारे हुए (हाय !) किस भाँति व्यथातुर ॥ ४३ ॥
नयनाकर्षक (अति) सौन्दर्यवती (शुभ सुखकर)।
भूषण - भूषित तरुण रमणियाँ (मंजु मनोहर) ॥
धराधिपों ने यज्ञ-भूमि में उनको लाकर।
पाण्डु - सुतों को भेंट करीं उनकी जय गाकर ॥
और असंख्य तरुण जन सेवा करनेवाले।
अगणित अर्पित किये नृपों ने अति छबि वाले ॥
नभ को गुंजित करनेवाले शंख बजाये।
दीं बधाइयाँ वेद - मंत्र विप्रों ने गाये ॥ ४४ ॥

यज्ञ में मेरे दिल को जलानेवाले पदार्थ अन्य अनेक थे। यह सब तुम जाकर मेरे नेत्र-हीन पिता से कहो। कहकर उन्हें उन पर शत्रुता करने को मजबूर करा दो। उन पर जो अमित प्यार रखता है, उस (पिता) से समझाकर कहो कि मेरी जान यज्ञ देखकर किस तरह व्रण से पूर्ण हो गयी है। ४३ नयनहारी सौन्दर्यवती तरुण स्त्रियाँ, जो मनोहारी आभरण पहने हुए थीं, उन्हें धराधिपों ने उस यज्ञ में लाकर जय गाकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नारवम् ऱानुमव् वेदवियाशनु माङ्डने— पलर्
नाविङ् गुरैत्त करिय पॅरुमै मुनिवरुम्
मारद वीररप् पाण्डवर् वेळ्विक्कु वन्दवुम्— वन्दु
मामऱै याशिहळ् कूऱिप् पॅरुम् बुहळ् तन्द बुम्
वीरर्तम् बोरि नरियनर् चात्तिर बाडङ्गळ् पल
विप्पिरर् तम्मुळ् विळैत्तिड बुण्मैहळ्वीश वे
शार मरिन्द युदिट्टिरन् केट्टु वियन्दवुम्— नल्ल
तङ्ग मऱैपॊऴिन् बाङ्गवर्क् केमहिळ् तन्द बुम् 45
विप्पिर रादिय नाल्वरु णत्तवर् तुय्प्पवे— नल्
विरुन्द शॆयलिल् अळवऱ्ऱे पॊन्शॆल विट्टदुम्
'इप्पि ऱविक्कु ळिवैयॊत्त, वेळ्वि विरुन्दुहळ्— पुवि
यङ्गमुम् नाङ्गण्ड दिल्लै', यॆनत् तॊन्नि पट्टदुम्
तप्पिन्ऱि येनल् विरुन्दिनर्, यार्क्कुन् दहुविहळ्— कण्डु
तक्कशन् मान मळित्तु, वरिशैह ळिट्ट दुम्,
शॆप्पुह नीयव् विळियऱ्ऱ, तन्दैक्कु, 'निन्महन्— इन्दच्
चॆल्वम् बॆऱाविडिर् चॆत्तिडु, वान्' अॆन्ऱुञ् जॆप्पुवाय् 46
"अण्णम् मैन्द नवनिक्, कुरियवन् यानल्ऱो ?— अवर्
आडियव राहियमैप् पऱ्ऱि, निऱ्ऱल् विदियन् ऱो ?
पण्णुम् वेळ्वियिल् यार्क्कु, मुबन्मै यबर् तन्दार्?— अन्दप्
पाण्ड वर् नम्मैप् पुल्लॆन, बॆण्णुदल् पार्त्तै यो ?
कण्ण नुक्कु मुदलुब, शारङ्गळ् काट्टिनारु— शॆन्ऱु
कण्णि लात्तन्दैक् किच्चॆय, लिन्बॊरुळ् काट्टु वाय्;
मण्णिल् वेन्दरुट् कण्णलॆव्, वाऱु मुदऱ् पट्टान् ?—अॆन्ऱन्
माम नॆयव नम्मि, लुयर्न्द वहै शॊल् वाय् ! 47

पांडवों को भेंट में दिया। हे मामा, गिनती का परिहास करनेवाली संख्या में तरुणों को उनकी सेवा के लिए बहुत राजाओं ने अर्पित किया। आकाशभेदी ध्वनिवाले शंख बजाये। सूत-सुरों ने वेदमन्त्रोच्चारण करते हुए बधाइयाँ दीं। ४४ स्वयं नारद का, वेदव्यास तथा मेरे द्वारा अगेय महिमा के महान् मुनियों का महारथी वीर पांडवों के यज्ञ में आना, आकर वेद पढ़कर आशीर्वाद देना तथा बड़ा यश दिलाना; वीरों के युद्ध से भी अधिक मूल्यवान शास्त्रवादों का होना तथा उस अवसर पर अनेक तत्त्वों का प्रकट होना; सारज्ञ युधिष्ठिर का सुनकर चकित होना तथा स्वर्णवर्षा करके उनको तृप्त करते हुए स्वयं आनन्द पाना— ४५ यह उक्ति कि 'इस जन्म में ऐसे यज्ञ और आतिथ्य-सत्कार पृथ्वी भर में हमने देखे ही नहीं; बिना किसी भूल-चूक के अतिथियों को उनके पद को देखकर उचित सम्मान देकर पुरस्कार देना', यह सब तुम मेरे अग्रज पिता से कहो और कहो कि तुम्हारा पुत्र यह सम्पत्ति नहीं पायगा, तो मर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरे द्वारा अति अगेय महिमा से मंडित।
नारद, व्यास महान मुनीश्वर आदि (सुपंडित)॥
महारथी पाण्डव वीरों के मख में आये॥
वेद-मंत्र पढ़, दिये (अमित) आशीष (सुहाये)।
(इस प्रकार भू-तल में उनका) सुयश बढ़ाया॥
(यज्ञ सफल हो गया, बढ़ गई उनकी माया)।
वीरवरों के (विशद) युद्ध से भी बढ़-चढ़कर॥
मूल्यवान शास्त्रार्थ हो रहे इस अवसर पर॥
प्रकट हो रहे तथ्य अनेक वहाँ पर (सुंदर)।
चकित हो रहे थे सारज्ञ युधिष्ठिर सुनकर॥
(धर्मपुत्र ने हो प्रसन्न) सोना बरसाया।
उन्हें तृप्त कर दिया, स्वयं आनन्द मनाया॥ ४५॥
"इस प्रकार सत्कार अतिथियों का बढ़-चढ़कर।
देखा ऐसा यज्ञ नहीं हमने पृथ्वी पर॥
भूल-चूक के बिना अतिथियों का पद लखकर।
पुरस्कार देना समुचित सम्मान सौंपकर"॥
इस प्रकार की बातें जग के जन कहते हैं।
(धर्मराज का यश गाकर अति सुख लहते हैं)॥
(मामा!) मेरे अंध पिता के (ढिग तुम जाकर)।
ये सब बातें उनसे कहो (सविधि समझाकर)॥
कहो कि— "तव सुत अगर न यह सम्पति पाएगा।
तो (न रहेगा जग में जीवित) मर जाएगा"॥ ४६॥
जेठे का सुत हूँ मेरा अधिकार राज्य पर।
यही न्याय है, रहें दास वे मेरे बनकर॥
हमें पाण्डवों ने तिनके-सा (तुच्छ) मानकर।
अग्र स्थान दे दिया कृष्ण को मान पूज्यवर॥
दिया प्रथम सम्मान कृष्ण को (यह बतलाओ)।
इसका मतलब अन्ध पिता को जा समझाओ॥
जग-भूपों में प्रथम-मान्य-पद हरि ने पाया।
मामा! हमसे बड़ा कृष्ण कैसे कहलाया?॥ ४७॥

जायगा। ४६ मैं ज्येष्ठ का पुत्र हूँ। तो मेरा ही राज्य पर हक है न! वे मेरे दास बनकर मेरे आश्रित होकर रहें, यही कानून है न! और भी देखो— यज्ञ में उन्होंने अग्र स्थान किसको दिया? देखा न पांडवों ने हमें तृण मात्र समझ लिया? कान्हा को प्रथम सम्मान दिया। जाओ और चक्षुहीन पिता को इस करनी का मतलब समझाओ। संसार के राजाओं में कृष्ण कैसे मान्य हुआ? मेरे मामा, हमसे उसका बड़ा बनने का हाल कहो! ४७ यह सारा जग कहता है कि मैं चन्द्रकुलजात

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शन्दिरन् कुलत् तेपिऱन्— दोर्तन् दलैवन्यान्— ऍन्ऱु
शहमॅलाज् जॉलुम् वार्त्तै मॅय्, योवॅऱुञ् जाल मो ?
तन्दि रत्तॉळि लॉन्ऱुण, रुञ्जिऱु बेन्दनै— इवर्
तरणि मन्नरुळ् मुऱ्पड, बैत्तिडल् शालुमो ?
मन्दि रत्तिलच् चेदियर्, मन्नतनै माय्त्तिट्टार्— ऐय !
माम हत्ति लविदियैक्, कॉल्ल मरबुण्डो ?
इन्दि रत्तुवम् बॅऱ्ऱिवर्, बाळु नॅऱि नन्ऱे !— इदै
ऍण्णि यॅण्णियॅन् नॅञ्जु, कॉविक्कुदु माम नै ! 48
शदिशॅय् दार्क्कुच् चदिशॅयल्, बेण्डुम् ऍन् मामने !— इवर्
तामॅ नन्बन् शराशन्द, नुक्कुमु नॅव्वहै
विदि शॅय् दार् ? अदै यॅन्ऱुमॅ, नुळ्ळ मऱक्कुमो ?— इन्द
मेदिनि योर्हळ् मऱन्दु बिट्टार्, इःदोर् विन्दैये !
निदिशॅय् दारैप् पणिहुवर्, मानिडर् माम ने !— ऍन्द
नॅऱियि नालदु शॅय्यिनुम्, नायॅन नोळ् पुवि
तुदिशॅय् देयडि, नक्कुदल्, कण्डनै मामने !— बॅऱुञ्
जॉल्लुक् केयऱ नूल्ह, ळुरैक्कुन् दुणिवॅलाम् 49

वेऱु

पॉऱ्ऱडन् देरोन्ऱु वालिहन्, कॉण्डु विडुत्तदुम्— अदिर्
पॉऱ्कॉडि शेदियर्, कोमहन् वन्दु तॉडुत्तदुम्
उऱ्ऱदोर् तम्बिक्कुत् तॅन्नवन्, मार्बणि तन्ददुम्— ऑळि
योङ्गिय मालयम् मागदन्, ऱान् कॉण्डु वन्ददुम्
पऱ्ऱल रञ्जुम् पॅरुम्बुह, ळेह लवियनै— शॅम्बॉर्
पादुहै कॉण्डु युदिट्टिरन्, ताळिनि लार्त्तदुम्
मुऱ्ऱिडु मञ्जनत् तिऱ्कुप, पलपल तीर्त्तङ्गळ्— मिहु
मॉय्म्बुडै यानब् ववन्दियर्, मन्नवन् शेर्त्तदुम् 50

लोगों का नायक हूँ। तो यह क्या झूठ है या ढोंग है ? केवल तन्त्र जानता है यह छोटा राजा (कृष्ण)। उसको इनका धराधिपों में प्रथम बनाकर रखना उचित है क्या ? षड्यंत्र करके चेदी राजा को उन्होंने मरवा दिया। हाय ! महामख में अतिथि को क्या मारने की भी प्रथा है ? राजा बनकर इनके रहने की रीति भली है ! यह सोच-सोचकर मेरा मन जलता है, हे मामा ! ४८ षड्यंत्र करनेवालों के प्रति षड्यंत्र ही करना चाहिए। हे मामा, इन्होंने मेरे मित्र जरासन्ध की क्या गति करायी ? क्या उसे मेरा मन कभी भूलेगा ? यह बात भू-वासी भूल गये —यह विचित्र है। जो धन बना लेता है, मानव उसकी क़दर करते हैं ! हे मामा ! चाहे जिस मार्ग से निधि पैदा करे, यह विशाल धरती कुत्ते के समान उस धनवान की स्तुति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सभी चन्द्र - कुल - जात जनों का मैं नायक हूँ।
सारा जग कहता, "क्या मैं असत्य - गायक हूँ" ? ॥
है षडयंत्री कृष्ण एक नृप वह लघुतर है।
जग-भूपों में प्रथम पूज्य फिर वह क्योंकर है ? ॥
उसे पूज्य मानना उचित कैसे (ठहराया) ?।
चेदिराज को षडयंत्रों - द्वारा मरवाया ॥
अतिथि मारने की क्या मख में प्रथा चली है ?।
नृप बनकर इनके रहने की रीति भली है ॥
ये सब बातें सोच - सोच जलता मेरा मन।
मामा ! (कैसे दूर करूँ मन की यह तड़पन ?) ॥ ४८ ॥
(षडयंत्री है कृष्ण जानता छल - बल करना)।
छल करनेवाले से समुचित है छल करना ॥
मित्र हमारे जरासंध का इस विधि मरना।
कैसे भूला जा सकता है (न्याय निदरना) ॥
भू - वासी सब भूल गये यह बात असंगत !।
यह विचित्र है (अति विचित्र इस जग की रंगत) ॥
धनवानों का (सभी) मनुज करते हैं आदर।
(धनवानों को ही अपनाते बंधु - बिरादर) ॥
चाहे किसी मार्ग से पैदा करे मनुज धन।
कुत्ते - सम चाटते पैर धनवानों के जन ॥
धनवानों की जग के सब जन स्तुति गाते हैं।
(धनवानों के दोष न कोई कह पाते हैं) ॥
धर्म - शास्त्र जो नैतिक धीरज बतलाते हैं।
वे सब केवल कहने भर की ही बातें हैं ॥ ४९ ॥
वाह्लीक का महाविशाल स्वर्ण - रथ लाना।
चेदि - नृपों का उस पर स्वर्ण - ध्वजा फहराना ॥
दक्षिण नृप का हृदयाभरण अनुज - हित लाना।
स्वर्ण - हार लाना मागध का भेंट चढ़ाना ॥
वैरी एकलव्य का स्वर्ण - पादुका लाना।
और युधिष्ठिर के (उन) चरणों में पहिनाना ॥
वीर अवन्ति - राज का (अति - सम्मान दिखाना)।
अभिषेकार्थ (पवित्र) तीर्थ का जल पहुँचाना ॥ ५० ॥

करके उसका तलुवा चाटती है। देखा न ! धर्मशास्त्र जो नैतिक धैर्य बताते हैं, वे सब केवल कहने भर के लिए ही हैं। ४९ वाह्लिक का विशाल स्वर्णरथ लाकर प्रदान करना, चेदी लोगों का उसकी स्वर्णपताका लाकर उस पर लगाना, दक्षिणात्य का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मञ्जन नीर्तव वेदवि, याशत् पॊळिन्ददुम्— पल
वैदिहर् कूडिनन् मन्दिर, वाळ्त्तु मॊळिन्द दुम्
कुञ्जरच् चात्तहि वॆण्णुडै, ताङ्गिड वीमनुम्— इळङ्
गॊऱ्ऱव नुम्बॊऱ् चिविऱिहळ्, वीश इरट्टै यर्
अञ्जुवर् पोलङ्गु निऱ्ऱु, कवरि यिरट्टवे,— कडल्
आळु मॊरुवन् कॊडुत्तदॊर् दॆय्विहच् चङ्गि निल्
वञ्जहन् कण्णन् पुनिदमु, ऱुङ्गङ्गै नीर् कॊण्डु— तिरु
मञ्जन माट्टुमप् पोदि, लॆवरु महिळ्न्ददुम् 51
मूच्चै यडैत्त दडा ! शबै, तन्निल् विळुन्दु नान्— अङ्गु
मूर्च्चै यडैन्ददु, कण्डनैये ! ऎन्ऱन् माम ने !
एच्चैयु मङ्गवर् कॊण्ड, नहैप्पैयु मॆण्णुबाय्;- अन्द
एन्दिळै याळुमैनैच्चिरित्, ताळिदै यॆण्णु बाय्;
पेच्चै बळर्त्तुप् पयनॊन्ऱु, मिल्लै ऎम् मामने !— अबर्
पेऱ्ऱै यळिक्कवु पायञ्जॊल्, बाय् ऎन्ऱन् माम ने !
तीच्चैय नऱ्चैय लेदॆनि, नुम् ऒन्ऱु शॆय्दु नाम्— अबर्
शॆल्बङ् गवर्न्दव रैविड, वेण्डुन् दॆरुबिले 52

सहुनियिन् शदि—7

बेऱु

ऎन्ऱु शुयोदनन् कूऱिये — नॆञ्जम्
ईर्न्दिडक् कण्ड शहुनिदान्— "अड !
इन्ऱु तरुहुवन् वॆऱ्ऱिये;— इदऱ्
इत्तनै बीण्शॊल् बळर्प्पदेन् ?— इनि

छोटे भाई के लिए वक्षाभरण लाकर देना; मागध का हार लाना, शत्रु-भयंकर यशस्वी एकलव्य का स्वर्णपादुका लाकर युधिष्ठिर के पैरों में पहनाना, वीर अवन्ति राजा का अभिषेक के लिए तीर्थ पहुँचाना; ५० वेदव्यास का अभिषेक-जल से अभिषिक्त करना; अनेक वेदज्ञों का मन्त्रसहित आशीर्वाद देना, गज पर लात्यकी का श्वेत छत्र पकड़कर लाना; भीम तथा लघुराज (अर्जुन) का स्वर्ण-मशक से पानी लाना; जुड़वाँ भाइयों का (नकुल तथा सहदेव का) संकोच के साथ चमर डुलाना, समुद्र-राज के दिये हुए शंख में वंचक कृष्ण द्वारा गंगाजल लेकर मज्जन कराते समय सबका आनन्द मनाना— ५१ अरे ! इन सबने मेरा दम घोंट डाला ! मेरे मामा, तुमने तब देखा कि मैं बेहोश होकर सभा में गिर पड़ा ! तब उनका हँसी उड़ाना तथा हँसी करना सोचो ! उस आभरण-भूषिता (द्रौपदी) ने भी हँसी उड़ायी। वह भी सोचो। हे मामा ! बातें बढ़ाने से फ़ायदा नहीं है। उनकी दौलत को नष्ट करने का उपाय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेद - व्यास का ले अभिषेक - सलिल - (पावनतम)।
(धर्मराज का) करना (शुभ) अभिषेक (मनोरम) ॥
विविध मंत्र - ज्ञाताओं का मंत्रोच्चारण कर।
(धर्मराज को) देना आशीर्वाद (मनोहर) ॥
और सात्यकी का सवार हो करके गज पर।
चलना अपने कर में श्वेत छत्र को गहकर ॥
लेकर स्वर्ण - गुलाब - पाश सर्वत्र विचरना।
भीमार्जुन का सब पर सुरभित - सलिल छिड़कना ॥
जुड़वाँ सगे भाइयों का संकोच दिखाना।
नकुल और सहदेव युगल का चँवर डुलाना ॥
सिन्धु - प्रदत्त शंख में (शुभ) गंगा-जल भरकर।
बंचक कृष्ण छिड़कता, प्रमुदित होते सब नर ॥ ५१ ॥
इन सबने मिल अरे ! घोट डाला मेरा दम।
गिरा सभा में (अति) अचेत होकर मै (बेदम) ॥
दशा देख मेरी उन सबका हँसी उड़ाना।
उस आभरण - भूषिता ने भी मारा ताना ॥
बात बढ़ाने से न लाभ कुछ सोचो मन से।
किसी भाँति से (मामा !) उनकी दौलत विनसे ॥
भला - बुरा कुछ काम करो मामा ! तुम तत्क्षण।
किसी भाँति से हर लो तुम उनका सारा धन ॥
फिर उनको तुम गली - गली में भीख मँगाओ।
(इस प्रकार तुम मेरे सच्चे हितू कहाओ) ॥ ५२ ॥

शकुनि का षड्यंत्र--७

इस प्रकार निज हृदय चीर कह रहा सुयोधन।
बोला शकुनि— "दिलाऊँ विजय आज ही राजन् ! ॥
इसके लिए अधिक कहना है व्यर्थ सुयोधन।
(तुमको) एक बताऊँगा मैं अच्छा साधन ॥

बताओ। चाहे काम बुरा हो या भला— कुछ करो। कुछ करके उनका धन हर कर उनको गली में छोड़ देना चाहिए। ५२

शकुनि का षड्यंत्र—७

(छन्द बदलता है)

ऐसा कहकर सुयोधन अपना दिल 'चीर' रहा था। तब शकुनि बोला—अरे ! आज तुम्हें विजय दिलाऊँगा। इसके लिए क्यों इतनी व्यर्थ बातें करते हो ? मैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऒऩ्ऱुरैप् पेऩल् लुबायन्दाऩ्;— अदै
ऊऩ्ऱिक् करुत्तॊडु केट्पैयाल्— ऒरु
मऩ्ऱु पुऩैन्दिडच् चॆय्दिनी— दॆय्व
मण्डब मॊत्त नलङ्गॊण्डे 53
मण्डबङ् गाण वरुविरॆऩ्— ऱन्ष
मऩ्ऩवर् तम्मै वरवळैत्— तङ्गु
कॊण्ड करुत्तै मुडिप्पवे— मॆल्लक्
कूट्टिवऩ् शूदु पॊरच्चॆय्बोम्;— अन्द
बण्डरै नाळिहै यॊऩ्ऱिले— तङ्गळ्
वाऩ् बॊरुळ् याबॆयुऩ् दोऱ्ऱुऩैप्— पणि
तॊण्ड रैऩच्चॆय् दिडुवऩ्यान्— ऎऩ्ऱऩ्
शूदिऩ् वलिमै यऱिवै नी 54
बॆञ्जमर् शॆय्दिडु वोमॆऩिल्— अदिल्
वॆऱ्ऱियुम् तोल्बियुम् यार्कण्डार् ?— अन्दप्
पञ्जवर् वीरम् बॆरिदुकाण् !— ऒरु
पार्त्तऩ्ऩकै विल्लुक् कॆदिरुण्डो ?— उऩ्ऱऩ्
नॆञ्जऩ्तिऱ् चूदै यिहळ्च्चियाक्— कॊळ्ळ
नोदमिल्लै, मुऩ्ऩैप् पार्त्तिवर्— तॊहै
कॊञ्ज मिलैप्पॆरुञ् जूदिऩाल्— वॆऱ्ऱि
कॊण्डु पहैयै यळित्तुळोर्— 55
नाडुङ् गुडिहळुम् शॆल्वमुम्— ऎण्णि
नाऩिलत् तोर्कॊदुम् बोर्शॆय्वार्— अऩ्ऱि
ओडुङ् गुरुदियैत् तेक्कबो ?— तमर्
ऊऩ्गुबै कण्डु कळिक्कबो ?— अन्द
नाडुङ् गुडिहळुञ् जॆल्वमुम्— ऒरु
नाळिहैप् पोदिनिऱ् चदिऩाल्— वॆल्लक्
कूडुमैऩिऱ् पिऱि दॆण्णलेऩ् ?— ऎऩ्ऱऩ्
कॊळ्है यिदु" वॆऩक् कूऱिऩाऩ् 56

एक अच्छा उपाय बताऊँगा। उसे दिल लगाकर अच्छी तरह सुन लो। एक मंडप बनाने को कहो। दिव्य मंडप के सारे गुण उसमें रहें। ५३ उन राजाओं को मंडप देखने के मिस बुला लाकर अपना मन साधने के लिए जुए के खेल में लगा दें। उन निगोड़ों को, एक ही घड़ी में, उनका सब हरवाकर तुम्हारे सेवक, दास बनवा डालूंगा। मेरे द्यूत-कौशल को तुम तो जानते ही हो। ५४ यदि हम भयकारी युद्ध करने जायें, तो उसमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सुन लो उसको भली भाँति तुम ध्यान लगाकर।
दिव्य सकल गुण-युक्त बनाओ मंडप सुन्दर ॥ ५३ ॥

(धर्म-) राज को उसे दिखाने हेतु बुलाएँ।
काम साधने हेतु उन्हें हम जुआ खिलाएँ ॥
एक घड़ी में ही नीचों को तुरत हराकर।
उन सबको दूँगा मैं तेरा दास बनाकर ॥
भली भाँति जानते हमारा द्यूत-सुकौशल।
(बहुत शीघ्र मैं लूँगा उन सब भूपों को छल) ॥ ५४ ॥

यदि हम उनसे कठिन युद्ध करने की ठानें।
होगी उसमें जीत-हार यह कैसे जानें? ॥
उन पाँचों में (अति अपार) वीरता भरी है।
कौन पार्थ के एक हाथ सम धनुर्धरी है ॥
अपने मन में जुआ खेलना नीच मानना।
न्याय नहीं है, (उचित सर्वदा इसे धारना) ॥
जीत जुए में किये जिन्होंने शत्रु पराजित।
ऐसे भू-पतियों की संख्या जग में अगणित ॥ ५५ ॥

देश-हेतु या प्रजा-हेतु या धन के कारण।
घोर युद्ध करते हैं इस जगती में सब जन ॥
युद्ध न करते— बहता रक्त जमाने के हित।
मांस ढेर लखकर आनंद मनाने के हित ॥
जीत सकूँ मैं (धर्म-पुत्र का) देश, प्रजा, धन।
तो मैं और नहीं सोचूँगा कोई साधन ॥
कहा शकुनि ने— रक्तपात बिन यही सरल है।
(धर्म, नीति दोनों प्रकार से मार्ग अटल है)" ॥ ५६ ॥

जीत होगी या हार— कौन जाने? उन पाँचों की वीरता बड़ी है, देखो। क्या पार्थ के एक हाथ के धनुष का सामना कर सकनेवाला कोई है? अपने मन में जूए को नीच मानने के लिए कोई न्याय नहीं है! जूए में जीतकर शत्रुओं का नाश करनेवाले पृथ्वी-पतियों की संख्या कम नहीं है। ५५ देश, प्रजा, धन को लेकर संसार के लोग घोर युद्ध करते हैं। वह क्यों? बहते रक्त को इकट्ठा करके रखने के लिए? या मांस का ढेर देखकर आनन्द मनाया जाय, इसलिए? देश, प्रजा तथा धन सब जूए में जीत सकें, तो और कोई मार्ग मैं नहीं सोचूँगा। यही मेरा सिद्धान्त है— शकुनि ने यों कहा। ५६ यह सुनकर सुयोधन बोला— मामा, तुमने बहुत ही मनभावन बात कही

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इङ्गिदु केट्ट शुयोदनन्— "मिह
इङ्गिदञ् जॉल्लिनै मामने"— ऍन्रु
शङ्गिलिप् पॉन्निन् मणियिट्ट— ऑळित्
तामञ् जहुनिक्कुच् चूट्टिनान्— पिन्नर्
"ऍङ्गुञ् बुदिमिशै युन्नैप्पोल्— ऍनक्
किल्लै यिनियदु शॉल्लुवार्"— ऍन्रु
पॉङ्गु मुवहैयिन् मार्बुरक् कट्टिप्
पूरित्तु विम्मित् तळुविनान् 57

शकुनि तिरितराट्टिरणिडम् शॉल्लुदल्—8

मर्रुबन् पिन्न रिरुवरुम्— अरु
मन्दिरक् केळ्वि युडैयवन्— पॅरुङ्
गॉर्रुबर् कोन्तिरिद राट्टिरन्— सब
कूडि वणङ्गि यिरुन्दनर्;— अरुळ्
अर्रु शहुनियुञ् जॉल्लुवान्— "ऐय
आण्डहै निन्महन् शॅय्दि केळ्— उडल्
बर्रित् तुरुम्बॉत् तिरुक्किन्रान्— उयिर्
बाळ्बै मुळुदुम् वॅरुक्किन्रान् 58
उण्ब शुवैयिन्रि उण्गिन्रान्— पिन्
उडुप्प दिहळ वुडुक्किन्रान्— पळ
नण्बर्ह ळोडुर वॅय्दिडान्— इळ
नारियरैच् चिन्दै शॅय्दिडान्— पिळ्ळै
कण्वशलै कॉण्डु पोयिनान्— इदन्
कारणम् यादॅन्रु केट्पयाल्— उयर्
तिण्परु मत्तडन् दोळिनाय्"— ऍन्रु
तीय शहुनियुञ् जॅप्पिनान् 59
तन्दॅम्बु मिव्वुरं केट्टदाल्— उळञ्
जालवुङ् गुन्रि वरुन्दिये— "ऍन्रुन्
मैन्द ! निनक्कु वरुत्तमेन्— इबन्
वार्त्ततॅयि लेदुम् पॉरुळुण्डो ?— निनक्

है। फिर उसने मणिमंडित छविमय स्वर्णहार शकुनि को पहना दिया। और वह बोला— मेरा हित बतानेवाला इस भूतल पर तुम्हारे समान कोई अन्य नहीं है ! यह कहकर उमड़ते आनन्द के साथ उसे गले से लगाकर वह फल उठा। ५७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह सुन करके बोल उठा (तत्काल) सुयोधन ।
"मामा ! तुमने कही बात अतिशय मन - भावन" ।।
मणि-मंडित छविमय सोने का हार (सुहाया) ।
यह कहकर (तत्काल) शकुनि को वह पहनाया ।।
फिर बोला— "(हे मामा !) तव सम मम हित-चिन्तक ।
मिला न कोई इस भू - तल में मुझको अब तक" ।।
ऐसा कहकर उसको (अपने) गले लगाया ।
उमड़ उठा आनन्द (हृदय में नहीं समाया) ।। ५७ ।।

शकुनि का धृतराष्ट्र से कहना—८

फिर (दुर्योधन और शकुनि) वे दोनों (सत्वर) ।
मंत्र-निरत धृतराष्ट्र-सभा में पहुँचे जाकर ।।
खड़े हो गये (वे उनको शुभ) अभिवादन कर ।
निःसंकोच शकुनि तब बोला— "सुनो तातवर !।।
पुरुष-श्रेष्ठ ! आपके सुवन की दशा (भयंकर) ।
तिनके - सा हो गया शरीर (समस्त) सूखकर ।।
घृणा हो गई उसको प्राणों से, जीवन से ।
(जाने कैसा शोक लग गया उसके मन से ?) ।। ५८ ।।
जो खाता है, बिना चाव के वह खाता है ।
पहनावा भी (सदा) निन्द्य ही अपनाता है ।।
नहीं पुराने मित्रों से नाता है रखता ।
और बाल-ललनाओं में भी प्रीति न रखता ।।
कहा शकुनि ने—हुए तेज से हीन विलोचन ।
पीन सबल भुजवाले ! पूछो इसका कारण" ।। ५९ ।।
यह सुनकर हो गया पिता का बहुत खिन्न मन ।
फिर पूछा— "हे पुत्र ! दुःख का है क्या कारण ?।।

शकुनि का धृतराष्ट्र से कथन—८

उसके बाद वे दोनों, मंत्रणा को सुननेवाले महान् राजा धृतराष्ट्र की सभा में गये और अभिवादन करके खड़े रहे । तब निःसंकोच शकुनि ने कहा— तात ! पुरुषश्रेष्ठ, अपने पुत्र की बात सुनिए । उनका शरीर सूखकर तृण-सा हुआ है । सप्राण जीने से वह नितान्त घृणा करता है । ५८ वह जो खाता है, बिना चाव के ही खाता है । जो पहनता है, वह भी निम्न वस्त्र पहनता है । अपने पुराने मित्रों से नाता नहीं रखता । युवती-ललनाओं का ख्याल ही नहीं करता । आँखें निस्तेज हो गयी हैं । हे उच्च, पुष्ट तथा बलवान भुजावाले, इसका क्या कारण है— पूछिए । —दुष्ट शकुनि ने कहा । ५९ पिता ने यह बात सुनी, तो उसका मन बहुत खिन्न हुआ । 'मेरे पुत्र !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॆन्द विदत्तुङ् गुऱैयुण्डो ?— निऩै
यारु मॆदिर्त्तिडु वारुण्डो ?— निऩ्ऱऩ्
शिन्दैयि लॆण्णुम् पॊरुळॆलाङ्— गणन्
देडिक् कॊडुप्पव रिल्लैयो ? 60
इऩ्ऩमु दॊत्त बुणवुहळ्— अन्द
इन्दिरऩ् वॆःकुरु माडैहळ्— पलर्
शॊऩ्ऩ पणिशॆय्यु मऩ्ऩवर्— वरुन्
दुऩ्बन् दविर्क्कु ममैच्चर्हळ्— मिह
नऩ्ऩलङ् गॊण्ड कुडिपडै— इन्द
नाऩिल मॆङ्गुम् परुम्बुहळ्— मिञ्जि
मऩ्ऩुमप् पाण्डवच् चोदरर्— इवै
वाय्न्दु मुऩक्कुत् तुयरुण्डो ?" 61
तन्दै वशऩम् शॆबियुऱ्ऱे— कॊडि
सर्प्पत्तैक् कॊण्दोर्— कोमहऩ्
वॆन्दळल् पोलच् चिऩङ्गॊण्डे— तऩ्ऩै
मीऱिप् पलशॊल् विळम्बिऩाऩ्— इवऩ्
मन्द मदिकॊण्डु शॊल्वदै— अन्द
मामऩ् मऱित्तुरै शॆय्हुवाऩ्— "ऐय
शिन्दै वॆडुप्पत्ति ऩालिवऩ्— शॊलुम्
शीऱ्ऱ मॊऴिहळ् बॊरुप्पॆयाल् 62
तऩ्ऩुळत् तुळ्ळ कुऱैयॆलाम्— निऩ्ऱऩ्
शऩ्निदि यिऱ्चॆऩ्ऱु शॊल्लिड— मुदल्
अॆऩ्ऩॆप् पणित्तऩऩ्; याऩिवऩ्— ऱऩै
इङ्गु वलियक् कॊणर्ऩदिट्टेऩ्— पिळ्ळै
नऩ्ऩय मेशिऩ्दै शॆय्हिऩ्ऱाऩ्;— ऍऩिल्
नऩ्गु मॊऴिव दऱिन्दलऩ्;— नॆञ्जैत्
तिऩ्ऩुङ् गॊडुऩ्दळल् कॊण्डवर्— शॊल्लुञ्
जॆय्दि तॆळिय वुरैप्परो ? 63

तुमको दुख क्यों है ? क्या इसके कहने का कोई अर्थ है ? तुमको क्या कमी है ? क्या ऐसा कोई है जो तुम्हारा मुक़ाबला करे ? तुम जो भी अपने मन में लाते हो, उस सबको एक ही क्षण में खोजकर लानेवाले नहीं हैं क्या ? ६० मधुर अमृत के समान भोजन, इन्द्र भी ईर्ष्या करे वैसे वस्त्र, तुम्हारे आज्ञाकारी अनेक राजा; आगामी संकट

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन सब बातों का क्या कोई अर्थ कभी है ? ।
स्वयं समर्थ ! तात ! तुमको क्या कहो कमी है ? ।।
मनचाहा तत्काल प्राप्त करने की क्षमता ।
ऐसा कौन व्यक्ति जो करे तुम्हारी समता ? ।। ६० ।।

मधुर अमृत के तुल्य (तुम्हें मिलते) भोजन हैं ।
करे इन्द्र भी ईर्ष्या ऐसे (दिव्य) वसन हैं ।।
हैं अनेक नृपवर्य तुम्हारे आज्ञाकारी ।
हैं अमात्यवर आगामी संकट के हारी ।।
श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण प्रजा, सेना अपार है ।
इस भू - तल में फैला (अनुपम) यश (उदार) है ।।
पाण्डव जैसे हैं उन्नत (बलशाली) भ्राता ।
इतने पर भी तुमको चिन्ता से क्या (नाता) ?" ।। ६१ ।।

अपने अंध पिता के इन वचनों को सुनकर ।
हुआ सुयोधन सर्पध्वज आपे से बाहर ।।
क्रोध-अग्नि से तपकर बातें कहीं (भयंकर) ।
मामा बोला वह बेमौका बात काट कर ।।
"तात ! (आज) संतप्त (बहुत) इसका (मृदु) मन है ।
क्षमा करें, इसलिए कहा जो क्रोध-वचन है ।। ६२ ।।

पहले ही कह चुका तात ! मुझसे दुर्योधन ।
करूँ आपसे उसकी बातें सभी निवेदन ।।
मैं ही इसको लाया अपने साथ बुलाकर ।
ठीक सोचता है बातें आपका पुत्रवर ।
ठीक रीति से पर न बात वह कह पाता है ।
उसके अंतस्तल को क्रोधानल खाता है ।
है जो समाचार बतलाने को अकुलाता ।
ठीक रीति से किन्तु नहीं वह है कह पाता । ६३ ।।

को हरनेवाले अमात्य, बहुत अच्छे गुणों से पूर्ण प्रजा तथा सेना; इस भू-भर में फैला यश और उन्नत पांडव बन्धु —इनके रहने पर भी तुम्हें क्या चिन्ता है ? ६१ अपने पिता का वचन सुनकर सर्पध्वज राजा दुर्योधन ने आपे से बाहर होकर आग-से क्रोध में आकर अनेक बातें कहीं । बुद्धिहीन रीति से उसके कहने को काटकर मातुल ने कहा— तात ! हृदय सन्तप्त है इसका, इसलिए वह जो क्रोध के वचन कहता है, उन्हें क्षमा कर दें । ६२ उसने मुझसे पहले आज्ञा की थी कि मैं आपकी सेवा में उसके मन की सारी बातें निवेदन करूँ । मैं ही इसे जबरदस्ती बुला लाया । आपका लड़का ठीक ही बातें सोचता है । पर अच्छी बात कहना नहीं जानता । जिसके हृदय को आग खा रही है, क्या वह जो समाचार कहना चाहता है उसे ठीक तरह से कह पाएगा ? ६३ आपका ही जनाया पुत्र है न ! वह राजनीति सहज ही जान गया है ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीपॅऱ्ऱु पुत्तिरन्ने यन्ऱो ?— मन्नर्
नोदि यियल्बि लऱिहिन्ऱान्— ऑरु
दीपत्तिर् चॅन्ऱु कॉळुत्तिय— पन्दम्
तेशु कुऱय वॅरियुमो ?— शॅल्बत्
तापत्तै नॅञ्जिल् वळर्त्तिडल्— मन्नर्
शात्तिरत् तेमुदऱ् चूत्तिरम्;— पिन्नुम्
आपत् तरशर्क्कु वेऱुण्डो— तम्मिल्
अन्नियर् शॅल्ब मिहुदल्पोल् ? 64
वेळ्बियि लन्ऱन्दप् पाण्डवर्— नमै
बेण्डुमट् टुङ्गुऱै शॅय्दन्नर्— ऑरु
केळ्बि यिलादुन् महन्ऱनैप्— पलर्
केलिशॅय् देनहैत्तार् कण्डाय् !— पुवि
आळ्बिन्नै मुन्नबर्क् किन्ऱियै— पुहळ्
आर्न्दिळै योरदु कॉळ्वदॅप्— पऱ्ऱि
वाळ्बिळि मादरु नम्मैये— कय
मक्कळॅन् ऱॅण्णि नहैत्तिट्टार् 65
आयिरम् यानै वलिकॉण्डान्— उन्ऱन्
आण्डहै मैन्द निबन्ऱ् कण्डाय् !— इन्द
मायिरु ञालत् तुयर्न्ददा— मदि
वान्कुलत् तिऱ्कु मुदल्वनाम्;— ऑळि
ञायिऱु निऱ्पबु मिन्मिनि— तन्नै
नाडित् तॉळुदिडुन् दन्मैपोल्,— अवर्
वेयिरुन् दूदुमॉर् कण्णनै— अन्द
वेळ्बियिऱ् शाल उयर्त्तिनार् 66
ऐयनिन् मैन्दनुक् किल्लैकाण्— अवर्
अर्क्कियम् मुऱ्पडत् तन्दनै;— इन्द
वॅयहत् तार्बियप् पॅय्ववे— पुवि
मन्नवर् शेर्न्द शबैतनिल्— मिह
नॉय्यदॉर् कण्णनुक् कार्ऱिनार्— मन्नर्
नॉन्दु मन्नङ्गुन्ऱिप् पोयिनर्— पणि

क्या एक दीप से जलाया गया दूसरा दीप कम प्रकाश के साथ जलेगा ? धन की लालसा अपने मन में बढ़ाना राजशास्त्र का पहला सूत्र है ! अपने से अधिक धन अन्यों के पास होने से बढ़कर क्या कोई अन्य विपत्ति राजाओं के लिए हो सकती है ? ६४ उस दिन यज्ञ में पांडवों ने हमारी जी-भर हेठी की। समझिए, अनेकों ने आपके पुत्र

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह दुर्योधन तात ! तुम्हारा ही आत्मज है ।
राजनीति का उसे इसी से ज्ञान सहज है ।।
एक दीप से दीप दूसरा जब जलता है ।
एक समान प्रकाश दूसरे में बलता है ।।
(अगणित) धन-लालसा बढ़ाना (नित) अपने मन ।
राजनीति का प्रथम सूत्र है यह मनभावन ।।
हो अन्यों के पास द्रव्य अपने से बढ़कर ।
नृप को इससे बढ़कर संकट कौन भयंकर ।। ६४ ।।

उस दिन पाण्डु-सुतों ने यज्ञ-भूमि के भीतर ।
किया हमारा जी भर के अपमान (भयंकर) ।।
बहुतों ने बेरोक-टोक जैसी मन - भायी ।
(मिल करके) तव (प्यारे) सुत की हँसी उड़ाई ।।
सदा ज्येष्ठ को राज, पुरातन से चल आया ।
पर इसके विपरीत राज्य छोटों ने पाया ।।
यही समझ नारियाँ कृपाण-सदृश-दृग-वाली ।
हँसी उड़ातीं हमें अयोग्य जान (मतवाली) ।। ६५ ।।

तव सुत एक सहस्र गजों सम है बलशाली ।
उन्नत चन्द्रवंश का प्रमुख (सुगौरव-शाली) ।।
प्रखर-तेजवाले रवि-सम्मुख यथा (अज्ञ जन) ।
(क्षीण-ज्योतिवाले) जुगनू का करते पूजन ।।
पाण्डु - सुतों ने उसी भाँति (दिखला निज वैभव) ।
वंशी वाले कृष्ण को दिया (अनुपम) गौरव ।। ६६ ।।

दिया उन्होंने पहला अर्घ्य न तव आत्मज को ।
जी ! यह जानें आप (तिरस्कृत निज वंशज को) ।।
सारे जग (के मन) में विस्मय को उपजाकर ।
तुच्छ कृष्ण को दिया सभा में प्रथम अर्घ्यवर ।।
पाण्डु-सुतों ने तव तनयों से (वैर निकाला) ।
उन्हें बनाया (हीन) काम का करनेवाला ।।

की हँसी, बिना किसी रोक-टोक के, उड़ायी । राज्य बड़ों का है । उसके विपरीत वह छोटों को मिल गया । इसी बात को लेकर तलवार-सी आँखों वाली स्त्रियों ने हमको नालायक समझ लिया और हमारी खूब हँसी उड़ायी ! ६५ देखिए-- आपका पुत्र सहस्र-गज-बली है; और इस बड़े संसार में उन्नत चन्द्रकुल का मुखिया है । जैसे प्रखर तेज के सूर्य के रहते, खद्योत के पास खोज करते जाकर उसकी पूजा करें, वैसे उस यज्ञ में उन्होंने मुरली बजानेवाले कृष्ण को गौरव देकर बड़ा किया । ६६ जी ! आप यह जानें-- वह आपका पुत्र नहीं था, जिसे उन्होंने पहला अर्घ्य दिया । पर क्षुद्र कृष्ण को दिया उस राजसभा में, संसार को विस्मय में डालते हुए । राजा लोग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शॆय्यवुङ् गेलिहळ् केट्कवुम्— उन्ऱन्
शेयिनै वैत्तनर पाण्डवर् 67
पाण्डवर् शॆल्वम् विळैहिन्ऱान्— पुविप्
पारत्तै वेण्डिक् कुळैहिन्ऱाल्;— मिह
नीण्ड महिदलम् मुऱ्ऱिलुम्— उङ्गळ्
नेमि शॆलुम्बुहळ् केट्किन्ऱान्— कुलम्
पूण्ड पॆरुमै कॆडादवा— ऱॆण्णिप्
पॊङ्गुहिन्ऱा नलम् वेट्किन्ऱाल्;— मैन्दन्
आण्डहैक् किःदु तहुमन्ऱो ?— इल्लै
यामॆनिल् वैयम् नहुमन्ऱो ? 68
नित्तङ् गडलिनिऱ् कॊण्डुपोय्— नल्ल
नीरै यळविन्ऱिक् कॊट्टुमाम्— उयर्
वित्तहर् पोऱ्ऱिडुङ् गङ्गैया— ऱदु
वीणिऱ् पॊरुळै यळिप्पदो ?— ऑरु
शत्त मिलानॆडुङ् काट्टिनिल्— पुनल्
तङ्गिनिऱ् कुङ्गुळम् मॊन्ऱुण्डाम्— अदु
वैत्ततन् नीरैप् पिऱ्ऱ्कॊळा— वहै
वारडैप् पाशियिल् मूडिये 69
शूरिय वॆप्पम् पडामले— मरञ्
जूळ्न्द मलैयडिक् कीळ्प्पट्टे— मुडै
नीरिनै नित्तलुङ् गाक्कुमाम्— इन्द
नीळ्शुनै पोल्वर् पलरुण्डे ?— ऍनिल्
आरियर् शॆल्वम् वळर्दऱ्के— नॆऱि
आयिरम् नित्तम् पुदियन्— कण्डु
वारिप् पळम्बॊरु ळॆऱ्ऱुवार्;— इन्द
वण्मैयु नीयऱि याददो ? 70

घुटकर घुल गये। पांडवों ने तुम्हारे पुत्रों को काम करनेवालों तथा परिहास के पात्र बननेवालों की स्थिति में डाल दिया। ६७ यह पांडवों का धन अपने लिए चाहता है। भूभार-वहन की इच्छा करते हुए सुरक्षा रहा है। बहुत लम्बी भूमि पर आपका आज्ञाचक्र चले —वह यही यश चाहता है। कुल को प्राप्त गौरव न घटे —इसका मार्ग सोचकर उमड़ता है। भला चाहता है! पुरुषश्रेष्ठ, पुत्र के लिए यह उचित है न? नहीं तो क्या दुनिया हँसेगी नहीं? ६८ गंगा, जो विद्वानों से प्रशंसित है, रोज अच्छे जल को निरन्तर ले जाकर अपार रूप से समुद्र में उँडेल देती है। क्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(भरी-सभा के बीच) हँसी का पात्र बनाया।
(नष्ट हुआ सम्मान मिला अपमान सवाया) ॥ ६७ ॥

पाण्डु-सुतों का (विस्मय-कारक अति अपार) धन।
(केवल) अपने लिए चाहता यह (दुर्योधन) ॥
भू-शासन-कामना लिये (मन में) मुरझाता।
जग पर आज्ञा-चक्र चले (इस हित ललचाता) ॥
कुल का गौरव घटे न, इसका मार्ग सोचकर।
उमड़ रहा, शुभ अभिलाषा ले (मन के भीतर) ॥
पुरुषश्रेष्ठ ! पुत्र के लिए न क्या यह समुचित ?।
यदि न हुआ तो विश्व हँसेगा (कर अपमानित) ॥ ६८ ॥

विद्वानों द्वारा गंगा है (परम) प्रशंसित।
क्या वह जल का दुरुपयोग करती रहती नित ॥
अच्छे जल को नित्य निरन्तर बहा-बहाकर।
है अपार धाराओं से भर देती सागर ॥
नीरव बन के बीच सुशोभित एक सरोवर।
जिसका जल (बस एक ठौर पर ही) है सुस्थिर ॥
उसके जल ने नहीं किसी की प्यास बुझाई।
वरन् व्यर्थ उसके जल को ढक लेती काई ॥ ६९ ॥

वृक्ष-घिरी-चट्टान-तले वह छिपा सरोवर।
पड़ती धूप नहीं सूरज की उसके जल पर ॥
अपने सड़े हुए जल की वह रक्षा करता।
(नहीं किसी की प्यास सरोवर है यह हरता) ॥
इस विशाल सर के समान (अपने में सीमित)।
हैं इस जग के बीच (स्वार्थ - रत) लोग (अपरिमित) ॥
आर्य लोग धन-वृद्धि-हेतु (उत्साह दिखाते)।
नित्य हज़ारों नये-नये साधन अपनाते ॥
हैं उलीच देते अपना धन सभी पुराना।
यह पुष्कल वृत्तान्त तात ! है जग में जाना" ॥ ७० ॥

वह वस्तु का दुरुपयोग है ? उसके मुक़ाबले में नीरव जंगल के बीच में एक तालाब है, जिसका जल स्थिर है। वह दूसरों को जल न लेने देते हुए काई से ढँका है। ६९ उस पर सूर्य की धूप नहीं पड़ती, वह तालाब वृक्षावृत चट्टान के नीचे रहकर सदा उस सड़ान्ध वाले जल की रक्षा करता है। इस विशाल सर के समान अनेक लोग हैं। पर आर्य लोग धन की वृद्धि करने के लिए नित सहस्र-सहस्र नये-नये उपाय करते हैं तथा पुराने धन को उठाकर उलीच देते हैं। क्या यह पुष्कल बात आप नहीं जानते ? ७०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिरितराट्टिरन् पदिल् कूऱ्दल्—9

कळ्ळच् चहुनियु मिङ्ङने— पल
कऱ्पनै शॊल्लित् तनुळ्ळत्तिन्— पॊरुळ्
कॊळ्ळप पहट्टुदल् केट्ट पिन्— पॆरुङ्
गोबत्तॊ डेतिरि तराट्टिरन्— 'अड
पिळ्ळैयै नाशम् पुरियवे— ऒरु
बेयॆन्न नीवन्हु तोन्ऱिनाय्— पॆरु
बॆळ्ळत्तैप् पुल्लॊन् ऱॆदिर्क्कुमो ?— इळ
बेन्बरै नाम्वॆल्ल लाहुमो ? 71
शोदरर् तम्मुट् पहैयुण्डो ? ऒरु
शुऱ्ऱत्ताले पॆरुम् जॆऱ्ऱमो ?— नम्मिल्
आदरङ् गॊण्डब रल्लरो ?— मुन्नर्
आयिरञ् जूळ्चचि यिवन्शॆय्दुम्— अन्दच्
शोदरन् ऱुण्णरु ळालुमोर्— पॆरुञ्
जीलत्ति नालुम् पुयवलि— कॊण्डुम्
यादॆरु तोङ्गुमि लामले— पिळैत्
तॆण्णरुङ् गीर्त्तिपॆऱ् ऱारन्ऱो ? 72
पिळ्ळप् परुवन् दॊडङ्गिदे— इन्दप्
पिच्च नवर्क्कुप् पॆरुम्बहै— शॆय्दु
कॊळ्ळप् पडाद पॆरुम्बलि— यन्ऱिक्
कॊण्डदॊर् नन्मै शिऱिदुण्डो ?— नॆञ्जिल्
ऎळ्ळत् तहुन्द पहैमैयो— अवर्
यार्क्कु मिळैत्त वहैयुण्डो ? वॆरुम्
नॊळ्ळैक् कदैहळ् कदक्किन्ऱाय्— पळ्ळ
नूलिन् पॊरुळैच् चिदैक्किन्ऱाय् ! 73
मन्नवर् नीदि शॊलवन्दाय्;— पहै
मामलै यॆच्चिऱु मट्कुडम्— कॊळ्ळब्
चॊन्नदॊर् नूल्शऱुक् काट्टुवाय्— विण्णिर्
चूरियन् पॊनिह रिन्ऱिये— पुहळ्

धृतराष्ट्र का उत्तर—९

कपटी शकुनि ने इस तरह कई कल्पित बातों द्वारा, अपने मन की साधने के लिए बहाने बनाये। सुनने के बाद धृतराष्ट्र ने बहुत गुस्से के साथ कहा— रे ! पुत्र

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

धृतराष्ट्र का उत्तर देना—९

कपटी शकुनी यों निज कल्पित बातों द्वारा।
बना बहाने मन को देने लगा सहारा॥
क्रोध-सहित धृतराष्ट्र ने कहा यह सब सुनकर।
"प्रकट हुए तुम पुत्र नशाने-हेतु निशाचर॥
बढ़ी बाढ़ का करे सामना कैसे तिनका?।
जीत सकेंगे कैसे हम (अपार दल) उनका?॥ ७१॥
भाई-भाई में अब होगा बैर-भाव क्या?।
सगे बन्धुओं बीच क्रोध का (कटु) प्रभाव क्या?॥
क्या वे (पाण्डव) नहीं हमारे हैं हित-चिन्तक?।
पहले भी षडयंत्र रचे इसने बहुसंख्यक॥
तो भी श्रीधर-कृपा तथा निज भुजबल-कारण।
कीर्तिमान बन गये, हुए सब कष्ट निवारण॥ ७२॥
बचपन से ही इसने उनसे बैर बढ़ाया।
(बदले में) अग्राह्य विपुल अपयश (ही) पाया॥
उसे छोड़कर भला इसे कुछ और मिला क्या?।
(कर उनसे शत्रुता न मति पर पड़ी शिला क्या?)॥
नहीं किसी से कभी किसी विधि वे दब सकते।
अंधी कहानियाँ कह झूठी बातें बकते॥
नाम पुराने ग्रंथों के लेकर जो कहते।
अर्थ मिटा करके अनर्थ तुम उनका करते॥ ७३॥
(मेरे सम्मुख) राजनीति तुम बघारते हो।
(गड़े-गड़ाये मुर्दों को तुम उखाड़ते हो)॥
पर्वत जैसी (प्रबल) शत्रुता (महा भयंकर)।
ले सँभाल अतिशय छोटा-सा मिट्टी का घर॥
इस प्रकार की (अद्भुत) नीति बतानेवाला।
हो यदि कोई ग्रंथ दिखा दो (मुझे निराला)॥

का नाश करने के लिए पिशाच की तरह तुम आकर प्रगट हुए हो! क्या बड़ी बाढ़ का छोटी घास सामना कर सकती है? क्या उन तरुण राजकुमारों को हम जीत सकेंगे? ७१ क्या आखिर भाई-भाई में शत्रुता होगी? बन्धुओं में क्रोध कैसा? वे क्या हमारे हितू नहीं हैं। पहले इनसे हजारों षडयंत्र रचे; तो भी श्रीधर की कृपा से तथा अपने भुजबल के कारण वे बिना किसी आँच के, बच गये और अपार कीर्तिमान बने हैं न? ७२ बचपन से ही लेकर, इस भ्रान्त पुरुष ने उनसे बड़ी शत्रुता की। पर अग्राह्य विपुल अपयश पाया—क्या उसे छोड़कर कुछ भला मिला? क्या उनकी शत्रुता उपेक्षणीय है? वे क्या किसी से कभी दबे हैं? बिलकुल अन्धी (अर्थहीन) कहानियाँ बकते हो! प्राचीन ग्रंथों का गलत अर्थ करते हो! ७३ तुम राजाओं की नीति बघारने आये हो! पहाड़ जैसी शत्रुता को छोटे मिट्टी के घड़े में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुन्नप् पुविच्चक्क रादिबम्— उडऱ्
चोदरर् ताङ्गॊण् डिरुप्पवुम्— तन्दै
यॆन्नक् करुदि यवरॆन्नैप्— पणिन्
दॆन्शॊऱ् कडङ्गि नडप्पवुम् 74
मुन्नै यिवन्शॆयद तीदॆला— मवर्
मुऱ्ऱु मऱन्दव राहिये— तन्नैत्
तिन्न वरुमॊर् तवळैयैक्— कण्डु
शिङ्गम् जिरित्तरुळ् शॆय्दल्पोल्— तुणै
यॆन्न विबनै मदिप्पवुम्— अव
रेऱ्ऱत्तैक् कण्डु मञ्जामले— निन्ऱन्
शिन्न मदियिन्नै यॆन्शॊल्वेन् !— पहै
शॆय्दिड बॆण्णिप् पिदऱ्ऱिनाय् 75
ऒप्पिल् वलिमै युडैयदान्— दुणै
योडु पहैत्त लुरुदियो ?— नम्मैत्
तप्पिळैत् तारन्द वेळ्वियिल्— ऎन्ऱु
शाल मॆवरिडम् जॆय्हिऱाय् ?— मयल्
अप्पि विळितडु माऱिये— इवन्
अङ्गुमिङ् गुम्बिळुन् दाडल्कण्— डन्दत्
तुप्पिदळ् मैत्तुन्नि तान्शिरित्— तिडिल्
तोष मिदिल् मिह वन्ददो ? 76
तवऱि विळुबवर् तम्मैये— पॆऱ्ऱ
तायुम् जिरित्तल् मरबन्ऱो ?— ऎन्निल्
इवनैत् तुणैवर् शिरित्तदोर्— शॆयल्
ऎण्णरुम् पादह माहुमो ?— मनक्
कवलै वळर्त्तिडल् वेण्डुवोर्— ऒरु
कारणङ् गाणुदल् कष्टमो ?— वॆऱुम्

ले लेने की नीति बतानेवाला कोई ग्रंथ हो, तो दिखा दो ! वे (पाँचों) सगे भाई आकाश के सूर्य के समान, प्रतिद्वन्द्वी के विना, यश के भाजन होकर भूमि पर आज्ञाचक्र का आधिपत्य रखते हैं। वे मुझे पिता मानकर मेरी विनय करके मेरे वचन को मानकर चलते हैं। ७४ इसकी पहले की हुई सब बुराइयाँ भूलकर, अपने को खाने आनेवाले मेंढक को जैसे सिंह हँसकर क्षमा कर देता है, वैसा वे इसको अपना साथी मान रहे हैं। यह सब होते हुए भी, और उनकी ऊँची स्थिति को देखकर विना डरे— तुम क्षुद्र बुद्धि का परिचय दे रहे हो। इसके बारे में कहूँ ? तुमने शत्रुता ठानी और तुम अंडसंड बक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सगे बन्धु नभ के दिनकर सम (हों प्रतिभासित)।
शत्रु-रहित हों यश के भाजन होकर संस्थित ॥
भू - मंडल पर आधिपत्य उनका संस्थापित।
बाधा-रहित निरंतर आज्ञा-चक्र प्रवर्तित ॥
मेरी विनती करके मुझको पिता जानकर।
चलते हैं वे सदा हमारे वचन मानकर ॥ ७४ ॥

अपने को खाने को मेंढक होवे तत्पर।
जैसे सिंह क्षमा कर देता है बस हँसकर ॥
यों ही पहले के अवगुण इसके बिसारकर।
पाण्डु-सुतों ने इसको माना साथी (प्रियतर) ॥
इतना होने पर भी उनका गौरव लखकर।
ठान रहे हो वैर बक रहे अंड-बंड स्वर ॥
(आगे अब) क्या कहूँ ? तुम्हारी क्षुद्र बुद्धि है।
(इतने पर भी अभी न उसकी हुई शुद्धि है) ॥ ७५ ॥

अनुपम शक्तिमान मित्रों से वैर बढ़ाना।
(विज्ञों ने) पुरुषार्थ कभी क्या इसको माना ? ॥
'किया बहुत अपराध यज्ञ में साथ हमारे'।
छल से यह आरोप कर रहे (विना विचारे) ? ॥
दृष्टि लड़खड़ाने से भ्रान्त-(चित्त - सा) होकर।
इधर-उधर से फिसल गिरा टकराकर (भू पर) ॥
हँसी प्रवालाधरा भ्रातृ-भार्या यह लखकर।
हुआ दोष क्या इसमें मुझे बताओ (बुध-वर ?) ॥ ७६ ॥

जो गिरता लड़खड़ा भूल से (कभी भूमि पर)।
हँस देती उसकी माता भी उसको लखकर ॥
बात सहज सामान्य, हँसे यदि साथी लखकर।
तो यह कैसे बुरा काम हो गया (भयकर) ॥
जो (निज) मन में चिन्ताएँ चाहता बढ़ाना।
वह निकाल लेता है कोई ढूंढ़ बहाना ॥

रहे हो ! ७५ अनुपम शक्तिमान् साथियों से शत्रुता करना क्या पुरुषार्थ है ? उस यज्ञ में हमारे प्रति खूब अपराध किया-- यह छल-कपट की बात किसको बताते हो ? भ्रमित होकर, दृष्टि को लड़खड़ाने से यह इधर-उधर फिसलकर टकराकर गिरा; उसे देखकर वह प्रवालाधरा भाभी हँस दी। क्या इसमें उसका कोई दोष है ? ७६ जो भूल से लड़खड़ाकर गिरता है, उसको देखकर उसकी माता भी हँस देती है —यह संसार की रीति है न ! तो इसको देखकर साथी लोग हँसे, तो क्या यह बेहद बुरा काम हो गया ? मन में चिन्ता जो बढ़ाना चाहता है, उसे कारण ढूंढ़ निकालना क्या कहीं कठिन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अवल मॊळिह ळळप्पदेऩ् ?— तॊळि
लायिर मुण्डवे शॆय्हुवीर् 77
शिऩ्ऩऱ् जिऱिय वयदिले— इवऩ्
तीमै यवर्क्कुऱ् तॊडङ्गिऩाऩ्— अवर्
ऎऩ्ऩरुम् पुऱ्ऱिर ऩॆऩ्ऱॆण्णित्— तङ्गळ्
याहत् तिबऩैत् तलैक्कॊण्डु— पशुम्
पॊऩ्ऩै निऱैत्तदॊर् पॆयिऩै— 'मऩम्
पोलच् चॆलविडुवा' यॆऩ्ऱे— तऩ्दु
मऩ्ऩवर् काण विबऩुक्के— तम्मुळ्
माण्बु कॊडुत्तऩ रऩ्लरो 78
कण्णऩुक् केमुद लर्क्कियम्— अवर्
काट्टिऩ रॆऩ्ऱु पळित्तऩै !— ऎऩिल्
नण्णुम् बिरुन्दिनर्क् कऩ्ऱियै— नम्मुळ्
नामुब शारङ्गळ् शॆय्ददो— उऱ
वण्णऩुन् दम्बियु मादलाल्— अव
रऩ्ऩिय मानमैक् कॊण्डिलर्— मुहिल्
वण्ण नदिदियर् तम्मुळे— मुदल्
माण्बुडै यानैऩक् कॊऩ्डऩर्; 79
कण्णऩुक् केयदु शालुमॆऩ्— ऱयर्
गङ्गै महऩ्शॊलच् चॆय्दऩर्; इदैप्
पण्णरुम् पावमॆऩ् ऱॆण्णिऩाल्— अदऩ्
पार मवर्तमैच् चारुमो ? पिऩ्ऩुङ्
गण्णऩै येदैऩक् कॊण्डऩै ?— अवऩ्
कालिऱ् चिऱुतुह ळॊप्पवर्— निलत्
तॆण्णरु मऩ्ऩवर् तम्मुळे— पिऱर्
यारुमिलै यॆऩल् काणुवाय् 80
आदिप् परम्बॊरुळ् नारणऩ्— तॆळि
वाहिय पार्कडल् मीदिले— नल्ल
शोदिप् पणामुडि यायिरम्— कॊण्ड
तॊल्लऱि वॆऩ्ऩुमॊर् पाम्बिऩ्मेल्— ऒरु

होता है ? केवल निरर्थक बातें क्यों बना रहे हो ? हजारों काम हैं--उनको (पूर्ण) करो । ७७ अपनी बहुत छोटी आयु में ही इसने उनका अहित करना आरम्भ कर दिया था । पर उन्होंने इसे मेरा पुत्र होने के नाते, यज्ञ में अभिमंत्रित कर स्वर्ण से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding by IKS

अरे ! निरर्थक बातें केवल नहीं बनाओ।
काम हजारों, उनको पूर्ण करो (सुख पाओ) ॥ ७७ ॥

जब थी दुर्योधन की आयु बहुत ही छोटी।
अहित-क्रियाएं इसने कीं उनके प्रति खोटी ॥
पाण्डु-सुतों ने इसको मेरा पुत्र मानकर।
किया यज्ञ में आमंत्रित (गौरव प्रदान कर) ॥
स्वर्ण-भरी थाली इसके हाथों में देकर।
कहा करो इच्छानुसार व्यय इसको प्रियवर ! ॥
क्या न पाण्डवों ने समुचित व्यवहार निभाया।
राजाओं के मध्य न गौरव उसे दिलाया ? ॥ ७८ ॥

दिया कृष्ण को प्रथम अर्घ्य इससे तुम (प्रकुपित)।
बना रहे हो उनको (तुम सब अतिशय) निन्दित ॥
तो क्या (तुम चाहते) अतिथि-सत्कार त्याग कर।
(केवल) स्वजनों का (ही) करें (अतीव) समादर ॥
हमको भाई माना, नहीं पराया जाना।
मेघवर्ण कृष्ण को अतिथि-सम था सन्माना ॥ ७९ ॥

कहा भीष्म ने— 'योग्य कृष्ण ही हैं इसके हित'।
पाण्डु-सुतों ने तभी किया उसको कार्यान्वित ॥
इसे अकृत्य, पाप यदि मान रहे तुम (रोषी)।
तो कैसे हो सकते इसके पाण्डव दोषी ॥
कृष्णचन्द्र को समझ रहे हो क्या तुम (मन में)।
उनकी चरण-धूलि-सम कौन भूप त्रिभुवन में ? ॥ ८० ॥

ज्योतिर्मय सहस्र फण वाला जो प्रसिद्धतर।
उस प्राचीन ज्ञान रूपी श्री शेषनाग पर ॥
महा योग-निद्रा में सोते जग के नायक।
स्वच्छ क्षीर-सागर में (भक्तों के वरदायक) ॥

भरी थाली भेंट की और कहा कि इच्छानुसार व्यय करो। ऐसा करके क्या उन्होंने राजाओं के सामने इसे गौरव नहीं दिलाया ? ७८ तुमने यह कहकर उनकी निंदा की कि उन्होंने कृष्ण को प्रथम अर्घ्य दिया। तो क्या अतिथियों को छोड़कर अपनों का सत्कार-उपचार किया जाय ? नाते के भाई हैं, इसलिए हमें पराया नहीं माना उन्होंने। और मेघवर्ण कृष्ण को अतिथियों में अग्रगण्य माना। ७९ गांगेय भीष्म ने कहा कि कृष्ण ही उसके योग्य हैं। तभी उन्होंने वैसा किया। इसे अगर अकृत्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पोदत् तुयिल्कॊळु नायहन्— कलै
पोन्दु पुविमिशत् तोन्रिनान्— इन्दच्
चोदक् कुवळै विळियिनान्— ऎन्रु
शॆप्पुव रुण्मै तॆळिन्दवर् 81

नानॆन्नु माणवन् दळ्ळलुम्— इन्द
ञालत्तैत् तानॆनक् कॊळ्ळलुम्— पर
मोन निलैयि नडत्तलुम्— ऒरु
मूबहैक् कालङ्गडत्तलुम्— नडु
वान करुमङ्गळ् शॆय्दलुम्— उयिर्
याबिर्कुम् नल्लरुळ् पॆय्दलुम्— पिर्र्
ऊनैच् चिदैत्तिडुम् पोदिनुम्— तन
दुळ्ळ मरुळि नॆहुदलुम् 82

आयिरङ् गाल मुयर्चियार्— पॆर्
लाबरिप् पेरुहळ् ञानियर्;— इवै
तायिन् वयिर्रिर् पिरन्दनरे— तमैच्
चार्न्दु विळङ्गप् पॆरुवरेल्— इन्द
मायिरु ञाल मवर्तमैत्— तॆय्व
माण्बुडै यारॆन्रु पोर्रुङ्गाण् ! ऒरु
पेयिनै वेद मुणर्त्तल्पोर्— कण्णन्
पॆर्रि युनक्कवर् पेशुवार् ?" 83

तुरियोदनन् शिनङ् गॊळ्ळुदल् —10

वेरु

पॆर्रि वेर्कैप् परदर्तङ् गोमान्
मेन्मै कॊण्ड विळि यहत् तुळ्ळोन्
पॆर्रि मिक्क विदुर नरिवैप्
पिन्नु मर्रॊरु कण्णॆनक् कॊण्डोन्
मुर्रु णर्तिरि ताट्टिर नॆन्बोन्
मूडप् पिळ्ळैक्कु मामन्शॊल् वार्त्तै

पाप तुम समझो, तो उसका जिम्मा क्या उन पर पड़ेगा ? फिर कृष्ण को भी क्या समझे ? पृथ्वी के असंख्य राजाओं में कोई भी उसके पैर की धूलि की भी समानता करनेवाला नहीं है —यह जान लो । ८० सत्यज्ञानी बताते हैं कि जो आदि परमवस्तु नारायण है, जो स्वच्छ क्षीर-सागर में ज्योतिर्मय सहस्र फणोंवाले प्राचीन ज्ञान रूपी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वे ही (भक्तों की रक्षा हित) भू - मंडल पर।
बन पुण्डरीकाक्ष प्रकटे हैं (प्रिय परमेश्वर) ॥
सच्चे ज्ञानी इस प्रकार करते हैं वर्णन।
कृष्णचन्द्र हैं परमतत्त्व आदिम नारायण ॥ ८१ ॥

अहंकार का त्याग, दया जीवों पर करना।
जग को आत्म-स्वरूप जानना, (प्रमुदित रहना) ॥
दया-द्रवित हो परहित अपना मांस कटाना।
हो निर्लिप्त त्रिकालातिक्रम कर्म निभाना ॥
मौन-मार्ग पर चलना (औ' सबका हित करना)।
(यही धर्म के नियम हृदय में संचित रखना) ॥ ८२ ॥

कर साधना सहस्रों वर्षों तक ज्ञानी जन।
(बड़ी कठिनता से) पाते हैं ये सब गुण-गण ॥
माता की कोख से उपजते ही ये गुण-गण।
किसी व्यक्ति में प्रकट रूप से हों (मन-भावन) ॥
तो दैवी-सम्पत्ति-समन्वित उसे मानकर।
यह विशाल संसार करेगा उसका आदर ॥
कृष्णचन्द्र की (अतुलित) महिमा तुम्हें बताना।
ऐसा है जैसे भूतों को वेद पढ़ाना" ॥ ८३ ॥

दुर्योधन का गुस्सा करना—१०

दिये विदुर ने ज्ञान-नेत्र थे जिनको (सुन्दर)।
अन्तश्चक्षु श्रेष्ठ धृतराष्ट्र विजय-माला-धर ॥

नाग पर ज्ञान-निद्रा करनेवाले लोकनायक हैं, वे ही भू पर प्रकट हुए इस पुण्डरीकाक्ष के रूप में। ८१ अहंकार का त्याग, संसार को आत्मरूप जानना, मौन-साधना पर चलना, त्रिकालातिक्रम, निर्लिप्त कार्य करना, जीवों पर दया करना, दूसरों के मांस काटने पर भी मन में कृपा करके आर्द्र होना— ८२ यह सब गुण सहस्र वर्षों की साधना से ज्ञानियों द्वारा पायी जानेवाली उपलब्धि है। अगर ये गुण माँ की कोख से पैदा होते समय से ही किसी में हो जाएँ, तो उसे यह विशाल भूमि दिव्य-सम्पत्तिवाला मानकर उसका आदर करेगी। चलो। सूत को वेद समझाने के समान तुम्हें कृष्ण की महिमा कौन बताये ? ८३

दुर्योधन का गुस्सा करना—१०

(छन्द-परिवर्तन)

विजयमाला-धारी, श्रेष्ठ अन्तश्चक्षु तथा सर्वज्ञ धृतराष्ट्र ने, जिसने विदुर का ज्ञान अपना दूसरा नेत्र माना था, अपने मूर्ख पुत्र को, उसके मामा के कथन को ठुकरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऎऱ्ऱि नल्ल वऴक्कुरै शॆय्दे
एन्ऱ वारु नयङ्गळ् पुहट्ट 84
कॊल्लु नोय्क्कु मरुन्दुशॆय् पोऴ्दिऱ्
कुडुम् बॆम्मैय दाय्प् पिणक्कुऱ्ऱे
तॊल्लुणर्बिन् मरुत्तुवन् ऱन्नॆच्
चोर्वु ऱुत्तल् पोल्, ऒरु तन्दे
शॊल्लुम् वार्त्तैयि लेतॆरु ळादान्
दोमि ऴैप्पदि लोर्मदि युळ्ळान्
कल्लु मॊप्पिडत् तन्दै विळक्कुङ्
गट्टु रैक्कुक् कडुम्जिन मुऱ्ऱान् 85

तुरियोदनन् ती मॊऴि—11

वेऱु

पाम्बैक् कॊडियॆन् ऱयर्त्तवन्— अन्दप्
पाम्बॆनच् चीऱि मॊऴिहुवान्— "अड !
ताम्बॆऱ्ऱ मैन्दर्क्कुत् तीदुशॆय्— दिडुन्
दन्दैयर् पार्मिशे युण्डु कॊल् ?— कॆट्ट
बेम्बु निहरिव नुक्कुनान्— शुवै
मिक्क शरुक्करै पाण्डवर्;— अवर्
तीम्बु शॆय्दालुम् पुहळ्हित्ऱान्,— तिरुत्
तेडिनु मॆन्नॆ यिहळ्हित्ऱान् 86
"मन्नर्क्कु नीदि यॊरुवहै— पिऱ
मान्दर्क्कु नीदिमर् ऱोर्वहै"— ऎन्ऱु
शॊन्न वियाळ मुनिवनै— इवन्
शुत्त मडैयनॆन् ऱॆण्णिये,— मऱ्ऱुम्
ऎन्नॆन्न वोकदै शॊल्हिऱान्,— उऱ
वॆन्ऱुम् नट्पॆन्ऱुङ् गदैक्किऱान्;— अवर्
शिन्न मुऱच्चॆय वेदिरङ्— गॆट्ट
शॆत्तै यॆन्ऱॆन्नै निनैक्किऱान् 87

कर अच्छे तर्कों के साथ भरसक सदुपदेश दिया। ८४ जैसे कोई रोगी, घातक रोग के लिए दवा कराते समय ताप अधिक पाकर बिगड़ उठे और अभ्यास के ज्ञान से युक्त चिकित्सक को तंग करे, वैसा अपने पिता के वचन से जो नहीं सुधरा, वह अपराध-मना (दुर्योधन) पिता के वचनों से बिगड़ उठा। वे वचन ऐसे सुलझे हुए थे कि जिनसे पत्थर भी सहमत हों। ८५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मूर्ख पुत्र के और शकुनि के वचन काटकर।
तर्क-पूर्ण दी उनको (शुभ) सलाह (अति हितकर) ॥ ८४ ॥
कठिन रोग की कोई दवा कराने आये।
पाकर औषधि-ताप, क्रोध अत्यन्त दिखाये ॥
अभ्यासी, ज्ञानी सुवैद्य को (बहुत) सताये।
(चाहे जितना समझाओ पर समझ न पाये) ॥
जिनसे सहमत हो जाए पत्थर (का) भी (मन)।
ऐसे अपने (अंध) पिता का सुनकर प्रकथन ॥
सुधर न पाया (समझ न पाया) अपराधी मन।
बिगड़ उठा निज-पितु-वचनों से वह दुर्योधन ॥ ८५ ॥

दुर्योधन के कुवचन—११

ध्वजा - रूप में जिसने (अपने रथ के) ऊपर।
फहराया था (काला-काला) सर्प (भयंकर) ॥
उसी सर्प-सम (दुर्योधन) फुफकार उठा वह।
(पितु के वचनों का करने प्रतिकार लगा वह) ॥
"अपने ही जाये पुत्रों के लिए हानिकर।
ऐसे भी हैं पिता (आजकल) इस धरती पर ॥
उनके हित मैं सदा नीम-सा ही हूँ कटु-तम।
पर पाण्डव हैं मधुर सदैव शर्करा के सम ॥
वे अनहित करते, तो उनको करें प्रशंसित।
मैं लक्ष्मी खोजता, मुझे करते हैं निन्दित ॥ ८६ ॥
राजनीति से भिन्न नीति सामान्य जनों की।
सुनकर के यह उक्ति बृहस्पति के वचनों की ॥
उन्हें मानते मूर्ख उक्ति को गल्प बताते।
रिश्ता-मैत्री आदिक बातें करते जाते।
शक्ति न इनमें छिन्न कर सकें जो ये उनको।
(हमें दबाते और) समझते कूड़ा मुझको ॥ ८७ ॥

दुर्योधन के दुर्वचन—११

(छन्द-परिवर्तन)

सर्प को ध्वजा के रूप में जिसने ऊपर फहराया था, वह उसी सर्प के समान फूत्कार कर के बोला। अरे! अपने ही जाये पुत्रों की हानि करनेवाले पिता भी भूमि पर हैं? मैं इनके लिए बुरा, नीम-सा कड़ुआ हूँ; पर पांडव मधुर शर्करा हैं। वे बुराई करते हैं, तो भी ये उनकी प्रशंसा करते हैं। मैं श्री को खोजता हूँ, तो भी ये मेरी निंदा करते हैं। ८६ बृहस्पति भगवान को, जिन्होंने यह कहा था कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन्दिर बोहङ्ग ळॆन्गिऱान्— उण
वित्बमु मादरि नित्बमुम्-— इबन्
मन्दिर मुम् पडै माट्चियुम्— कॊण्डु
बाळ्वदै विट्टिङ्गु वीणिले— पिऱर्
शॆन्दिरुवैक् कण्डु बॆम्बिये— उळन्
दॆम्बुदल् पेदैमै यॆन्गिऱान्;— मन्नर्
तन्दिरन् देर्न्दवर् तम्मिले— ऍङ्गळ्
तन्दैयै यॊप्पब रिल्लै काण् ! 88
मादरत मित्ब मॆत्तक्कॆन्ऱान्— पुबि
मण्डलत् ताट्चि यबर्क्कॆन्ऱान्— नल्ल
शादमु नॆय्यु मॆत्तक्कॆन्ऱान्— ऍङ्गुम्
शाऱ्ऱिडुङ् गीर्त्ति अबर्क्कॆन्ऱान्— अड !
आदर विङ्ङत्म् पिळ्ळैमेल्— वैक्कुम्
अप्प तुलहित्तिल् वेरुण्डो ?— उयिर्च्च्
चोदरर् पाण्डवर्, तन्दैनी— कुऱै
शॊल्ल इत्तियिड मेदैया ! 89
शॊल्लि तयङ्ग ळऱिन्दिलेन्— उत्तैच्
चॊल्लित्तिल् बॆल्ल विरुम्बिलेन्— करुङ्
गल्लिडै नारुरिप् पारुण्डो ? नित्तैक्
कारणङ् गाट्टुद लाहुमो ?— ऍन्नैक्
कॊल्लितुम् वेऱॆदु शॆय्यॆनुम्— नॆञ्जिऱ्
कॊण्ड करुत्तै विडुहिलेन्— अन्दप्
पुल्लियप् पाण्डवर् मेम् बडक्— कण्डु
पोऱ्ऱि युयिर् कॊण्डु वाळ्हिलेन् 90
बादु निन्नोडु तॊडुक्किलेन्— ऑरु
वार्त्तै मट्टुम् शॊलक् केट्पैयाल्— ऑरु
तीदु नमक्कु वारामले— वॆऱ्ऱि
शेर्वदऱ् कोर्वळि युण्डुकाण् !— कळिच्

राजाओं की एक नीति होती है और अन्य लोगों की दूसरी नीति होती है; ये बिलकुल मूर्ख मानते हैं और कोई-कोई कहानी बताते हैं। रिश्ता, मित्रता, ऐसी-वैसी करते बातें करते हैं। मुझे कूड़ा समझते हैं, जिसमें उनको छिन्न करने की शक्ति नहीं है। ८७ इन्द्र-भोग की बात करते हैं। भोजन-सुख, स्त्री-सुख, मंत्री, सेना का गौरव आदि सहित जीना छोड़कर दूसरों की श्रेष्ठ सम्पत्ति को देखकर जलने को जड़ता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भोजन-सुख, स्त्री-सुख, मंत्री, सेना का गौरव।
इनमें जीवित रहना (तजकर सारा वैभव)॥
अन्य जनों के उत्तम धन को लखकर जलना।
इसे बताते जड़ता (कैसी है यह छलना?)॥
कूट-नीति-ज्ञाता जितने भी (जग में) नृपवर।
मेरे पितु-सम रहा न भू-पति अब जगती पर॥ ८८॥
मेरे हित ये बतलाते स्त्री-सुख (का साधन)।
पर उनके हित बतलाते ये देश (प्र-) पालन॥
मेरे हित ये बतलाते घी-भात (सुभोजन)।
पर सर्वत्र उचित है उनके यश का वर्णन॥
इस प्रकार निज सुत पर स्नेह दिखानेवाला।
जग में कोई नहीं दूसरा पिता (निराला)॥
आप पिता हैं, प्राण-तुल्य हैं पाण्डव-भ्राता।
तात! शिकायत का फिर स्थान कहाँ रह जाता!॥ ८९॥
मैं कुछ भी शब्दों का कौशल नहीं जानता।
शब्दों में जीतना आपको नहीं चाहता॥
पत्थर से रेशा निकालना किसने जाना।
सम्भव नहीं आपको कारण का समझाना॥
चाहे मुझको मारें, कुछ भी करें हमारा।
पर न तजूँगा अटल वही जो मन में धारा॥
तृण-सम पाण्डव उन्नत हों इसको मैं लखकर।
जीना नहीं चाहता उनका यश गा-गाकर॥ ९०॥
(पिता!) आपसे वाद-(विवाद) नहीं (मैं) करता।
एक बात कहता हूँ सुन लें (दिखा सुघरता)॥
हम पर कोई आँच नहीं आने (भी) पावे।
ऐसा मार्ग (एक) है जिससे जय मिल जावे॥

कहते हैं। हा! तंत्रज्ञ राजाओं के मेरे पिता-सदृश कोई नहीं हैं—देख लो। ८८ कहते हैं— स्त्री-सुख मेरे लिए; पर देश-पालन उनके लिए! अच्छा भात तथा घी मेरे लिए; तथा सर्वत्र कीर्तिकथन उनका! अरे! इस तरह अपने पुत्रों से स्नेह रखनेवाला पिता दुनिया में और कोई है? प्राण-भ्राता हैं पांडव, आप तो पिता हुए; फिर शिकायत करने को स्थान कहाँ है तात! ८९ मैं शब्दों का कौशल नहीं जानता। और आपको शब्दों में जीतना भी नहीं जानता। क्या पत्थर से रेशा निकालनेवाला कोई होगा? आपको कारण बताना (समझाना) सम्भव नहीं। चाहे मुझे मारें या कुछ करें, अपने मन में ग्रहण की हुई बात को मैं नहीं त्यागूँगा। वे तृण-सम पांडव उन्नति करें—यह देखकर मैं उनकी प्रशंसा करते हुए प्राण धारण करके जीना नहीं चाहूँगा। ९० आपसे विवाद नहीं करता। पर एक बात कहूँ, सुन लें। हम पर कोई आँच नहीं आवे, वैसी जय पाने का एक मार्ग है। देखिए—उनको जूए के खेल में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चूदुक् कवरै यळैत्तॅलाम्— अदिल्
तोऱ्ऱिडु माऱु पुरियलाम्— इदर्
केदुन् दडैहळ् शॊल् लामले— अॅन्न
दॆण्णत्तै नी कॊळल् वेण्डुमाल् 91

तिरिदराट्टिरन् पदिल्—12

वेऱु

तिरिदराट् टिरन् शॆबियिल्— इन्दत्
तीमॊऴि पुहुदलुन् दिहैत्तु विट्टान् !
"पॆरिदात् तुयर् कॊणर्न्दाय्;— कॊडुम्
पेयॆन्प् पिळ्ळैहळ् पॆऱ्ऱुबिट्टेन्
अरिदाक् कुदल्पोले— अमर्
आङ्गव रोडुपॊर लबलमॆन्ऱेन्;
नरिताक् कुदल् पोलाम्— इन्द
नाणमिल् शॆयलिनै नाडुवनो ? 92
आरियर् शॆय्बारो ?— इन्द
आण्मै यिलाच्चॆय लॆण्णुवरो ?
पारिनिऱ् पिऱ रुडैमै— वॆःकुम्
पदरिनॆप् पोलॊरु पदरुण्डो ?
पेरियर् चॆल्वङ्गळुम्— इशैप्
पॆरुमैयु मॆय्दिड विरुम् बुदियेल्
कारिय मिदुवामो ?— अॆन्ऱन्
काळैयन् ऱो ? इतु करुदलडा ! 93
वीरनुक् केयिशैवार्— तिरु
मेदिनि यॆन्नुमिरु मन्नैवियर् ताम्;
आरमर् तमरल्लार्— मिशै
आऱ्ऱिनल् वॆऱ्ऱियि लोङ्गुदियेल्

आमन्त्रित करके उसमें उनको हारने दे सकते हैं। इसमें कोई बाधा न डालकर, मेरा मन आपको रखना ही पड़ेगा। ९१

धृतराष्ट्र का उत्तर—१२

(छन्द-परिवर्तन)

यह दुर्वचन धृतराष्ट्र के कानों में आग के समान घुसा, तो वह चकित हो गया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन्हें जुआ खेलने-हेतु मैं करूँ निमंत्रित।
और जुए में करूँ उन्हें (मैं पूर्ण) पराजित॥
इसमें कोई बाधा (हे पितु!) आप न डालें।
मेरा मन रख लें (मेरी यह बात निभा लें)"॥ ९१॥

धृतराष्ट्र का उत्तर—१२

चकित हुए धृतराष्ट्र सुना जब ऐसा कुवचन।
बोले— "अतिशय दुख-दायक यह (तव आयोजन)॥
क्रूर पिशाच-सरिस सुत मैंने उपजाये हैं।
(मूढ़ मंद - मति नहीं मानते समझाये हैं)॥
सिंह-समान सामने लड़ना है अनर्थकर।
(बार-बार यह उनको) समझा चुका (सरासर)॥
अब सियार-सम उन पर हमला करना (छिपकर)।
इस उपाय को सोच सकूँगा कैसे (प्रियवर!)॥ ९२॥

इस प्रकार पुरुषत्व - हीन (अति निन्दित) साधन।
कर न सकेंगे, सोच सकेंगे नहीं आर्य जन॥
इस जग में परधन-अभिलाषा करनेवाला।
होगा कोई तुच्छ निकम्मा (नर मतवाला)॥
जो चाहते महान विविध सम्पत्ति (कमाना)।
जो चाहते सुगेय (महान) प्रशंसा पाना॥
तो क्या सुत बस यही एक है समुचित साधन।
कभी न ऐसा सोच (न कर अपना मलीन मन)॥ ९३॥
श्रीदेवी औ' भूदेवी ये दोनों जानो।
वीरों की ही भार्याएँ हो सकतीं मानो॥
अन्यों से लड़ विजय युद्ध में यदि तुम पाओ।
तो पाण्डव-सम भारत में निज यश फैलाओ॥

तुम बड़ा ही दुख लाये हो। मैंने पुत्र ही पैदा किये, जो क्रूर पिशाच हैं। सिंह के समान उनसे युद्ध करना अनर्थ है—कहा मैंने। क्या मैं सियार के आघात के-से निर्लज्ज उपाय को सोच सकूँगा? ९२ क्या ऐसा आर्य लोगों ने कभी किया है? क्या वे ऐसा पुंसत्वहीन काम भी सोचेंगे? संसार में परधनाभिलाषी नाचीज के समान निकम्मा कोई होगा क्या? विविध बड़ी सम्पत्तियाँ और गाने योग्य प्रशंसा पाना चाहो, तो क्या यही उपाय है? मेरे बच्चे, यह मत सोचो! ९३ श्रीदेवी तथा भूदेवी दोनों वीर की ही पत्नियाँ हो सकती हैं। युद्ध परायों से करो और विजय में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बारद नाट्टिनिले— अन्दप्
पाण्डव रॅन्पप्पुहळ् पडैत् तिडुवाय्;
शोरर्तम् महनो नी ?— उयर्
शोमन्र ऩॊरुकुलत् तोन्ऱलन्ऱो ? 94
तम्मॊरु करुमत्तिले— नित्तन्
दळर्वऱु मुयऱ्चि मऱ् ऱोर्पॊरुळै
इम्मियुङ् गरुदामै— शार्न्
दिरुप्पवर् तमैनन्गु कात्तिडुदल्
इम्मैयि लिवऱ्ऱिनैये— शॆल्वत्
तिलक्कण मॆन्ऱनर् मूदरिञर्
अम्म, इङ् गिदनै यॆलाम्— नी
अरिन्दिलै यो ? पिळै याऱ्ऱल् नन्ऱो ? 95
निन्नुडैत् तोळनैयार्— इळ
निरुबरैच् चिदैत्तिड निनैप्पायो ?
ऍन्नुडै युयिरन्ऱो ?— ऍनै
यॆण्णि इक् कॊळ्हैयै नीक्कुदियाल्
पॊन्नुडै मार्बहत्तार्— इळम्
पॊऱ्कॊडि मादरैक् कळिप्पदिनुम्
इन्नुम् पलिन्बत् तिलुम्— उळम्
इशैयबिट् टेयिदै मऱन्दिडडा" 96

तुरियोदनन् पदिल्—13

वेऱु

तन्दै यिःदु मॊळिन्दिडल् केट्टे
तारि शैन्द नॆडुवरैत् तोळान्
"ऍन्दै निन्नॊडु वादिडल् वेण्डेन्
ऍन्ऱु पन्मुरै कूऱियुङ् गेळाय्;

बड़ो, तो भारत में पांडवों के समान यश बना लोगे ! क्या तुम चोर के पुत्र हो ? प्रसिद्ध चन्द्रकुलपुत्र नहीं हो ? ९४ वृद्ध ज्ञानी ऐसा कहते हैं कि अपने कर्तव्य-कर्म में अथक निरन्तर प्रयत्न, परधन का किंचित् भी न चाहना, आश्रितों का परिपालन, ये ही, इहलोक के धन के लक्षण हैं। भैया ! तुम यह सब क्या नहीं जानते ? गलत कहना भला है क्या ? ९५ वे तुम्हारे समभुज हैं। उन तरुण नृपों का नाश चाहोगे ? मेरे प्राण हो तुम ? मेरा ख़याल कर यह ग्रहण (हठ) छोड़ दो ! स्वर्णवक्ष, स्वर्णलता-सी तरुणियों के भोग में और अन्य सुखों में मन लगाओ और इसे भूल जाओ, रे ! ९६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

क्या तुम (निन्दित) चोरों के (दूषित) आत्मज हो ?।
क्या न प्रसिद्ध चन्द्र - कुल के सपूत (वंशज) हो ? ॥ ९४ ॥

निज कर्तव्य-कर्म में अथक प्रयत्न निरन्तर।
ध्यान नहीं किंचित भी देना (बस) परधन पर ॥
इस धरती पर धन के यही (विदित हैं) लक्षण।
कहते वृद्ध और ज्ञानी जन आश्रित-पालन ॥
क्या तुमको इन सब बातों का ज्ञान नहीं है ?।
यह है गलत काम क्या इसका ध्यान नहीं है ? ॥ ९५ ॥

तव सहभोजी क्या जितने भी तरुण भूपवर।
क्या तुम उनका चाह रहे हो नाश (भयंकर) ॥
प्राणों से भी प्रिय तुम मेरे पुत्र (मनोहर)।
यह हठ तज दो मेरे वचनों पर विचार कर ॥
स्वर्ण-लता-सी सुघर तरुणियों का स्वर्णिम उर।
हृदय लगाओ भोग करो (पाओ ज्यों सुर-पुर) ॥
(हे मेरे सुत !) अन्य सुखों में चित्त लगाओ।
यह (अनर्थकर बात हृदय से) तुरत भुलाओ" ॥ ९६ ॥

दुर्योधन का उत्तर—१३

(अपने अंध) पिता का सुनकर ऐसा प्रकथन।
बोला मालाधर गिरि - सम भुज - युक्त ! सुयोधन ॥
"तर्क आपसे कर सकता हूँ नहीं तात ! पर।
कई बार कह चुका आपसे मैं यह नृपवर ॥
किन्तु आप सुनते न (हमारा नम्र निवेदन)।
सुन लें मेरा कार्य हुआ जिस हेतु आगमन ॥

दुर्योधन का उत्तर—१३

(छन्द-परिवर्तन)

पिता का ऐसा वचन सुनकर मालाधारी पर्वत-विशाल-भुज दुर्योधन ने कहा—मेरे पिताजी ! मैं आपसे तर्क करना नहीं चाहूँगा। यह मैंने कई बार कहा है। पर आप नहीं सुनते। मेरे आगमन का उद्देश्य सुन लें। आपके संदेश के बिना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वन्द कारियङ् गेट्टि मऱ्ऱाङ्गुन्
वार्त्तै यिन्ऱियप् पाण्डवर् वारार्;
इन्द वार्त्तै युरैत्तु विडाबेल्
इङ्गु निल्मुनैन् नाबि यिऱुप्पेन् 97
मदिद मक्कैन् ऱिलाद्दवर् कोडि
वण्मैच् चात्तिरक् केळ्विहळ् केट्टुम्
पदियुग् जात्तिरत् तुळ्ळुरै काणार्
पानैत् तेनि लहष्पैयैप् पोल्वार्;
तुदिहळ् शॊल्लुम् विदुरन् मॊऴियैच्
चुरुदि यामॆनक् कॊण्डनै नीदान्
अदिह मोह मवनुळङ् गॊण्डान्
ऐवर् मीदिलिङ् गॆम्मै वॆऱुप्पान् 98
तलैव नाङ्गु पिऱर्कैयिऱ् पॊम्मै;
शार्न्दु निऱ्पवर्क् कुयन्मॆऱि युण्डो ?
उलैव लात्तिरि दाट्टिर वर्क्कत्
तुळ्ळ वर्क्कु नलमॆन्ब दिल्लै;
निलैयि लादन् शॆल्वमु माण्बुम्
नित्तन् देडि वरुन्द लिलामे
"बिलैयि लानिदि कॊण्डनम्" ऎन्ऱे
मॆय्हुळैन्दु तुयिल्बवर् मूडर् 99
पळैय वानिदि पोदुमॆन् ऱॆण्णिप्
पाङ्गु कात्तिडु मन्नवर् वाळ्बे
विळैयु मन्नियं रोर्कणत् तुऱ्ऱे
वॆन्ऱ ळिक्कुम् विदि यऱि यायो ?
कुळैद लॆन्बदु मन्नवर्क् किल्लै;
कूटक् कूडप्पिन् कूट्टुदल् वेण्डुम्;

पांडव इधर नहीं आयँगे। अगर आप यह सन्देश न भेजें, तो आपके ही समक्ष प्राणों का अन्त कर लूँगा। ९७ अपनी अकल जो नहीं रखते वे पुष्कल रूप से शास्त्र सुनकर भी शास्त्र का सच्चा गूढ़ अर्थ नहीं जान पाते। वे मधुकलश की करछुली ही रह जाते हैं! आप तो अपने प्रशंसक विदुर के वचन को वेदवाक्य मानते हैं। वे तो पांडवों पर अधिक मोह रखते हैं; अवश्य उनकी हमसे अप्रीति होगी। ९८ जब नायक दूसरों की (चालित) प्रतिमा रहे तो आश्रितों की उन्नति का मार्ग कहाँ? धृतराष्ट्र-कुल के लिए अब नाश ही है, भला नहीं है। चंचल धन तथा गौरव का रोज सम्पादन करने का श्रम किये बिना ही जो यह सोचकर सुस्ती में सो जाते हैं कि अमोल धन है हमारे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जब तक तव सन्देश न उनको पहुँचायेंगे।
तब तक पाण्डव यहाँ कदापि नहीं आयेंगे॥
यदि न आप सन्देश उन्हें भेजेंगे पितुवर!।
तो तज दूँगा प्राण आपके सम्मुख (सत्वर) ॥ ९७ ॥

बुद्धि न जिसके पास (विश्व में) ऐसे नरवर।
पूर्ण रूप से वे सब शास्त्रों को भी सुनकर॥
उनका सच्चा गूढ़ अर्थ जानते न वे नर।
मधु-घट की करछुली-सदृश वे अज्ञ (निरक्षर)॥
विदुर प्रशंसक हैं तव, उनके प्रवचन अनुपम।
सदा मानते आप (सुपावन) वेद-वाक्य-सम॥
अधिक मोह है उनका (प्यारे) पाण्डु-सुतों पर।
उनसे कैसे स्नेह-भाव है सम्भव हम पर॥ ९८ ॥

अन्य करों की जब कठपुतली होवे नायक।
तो आश्रित का उन्नति-मार्ग कहाँ (सुखदायक)?॥
अब धृतराष्ट्र-पक्ष की दिखती नहीं भलाई।
अब विनाश की घड़ी कौरवों की है आई॥
जो चंचल धन तथा (उच्च) गौरव पाने को।
करते कुछ भी नहीं परिश्रम अपनाने को॥
(अति) अमोल धन (सदा) हमारे पास भरे हैं।
यह विचार थककर जो सोते, मूर्ख निरे हैं॥ ९९ ॥

जो है मेरे पास विपुल धन (भरा) पुराना।
वह धन है पर्याप्त जिन्होंने ऐसा माना॥
यह विचार जो अपनी स्थिति की रक्षा करते।
(नहीं शत्रु को जीत कोष-धन से भर सकते)॥
धन के अभिलाषी नृप उनको (शीघ्र) जीतकर।
हर लेते हैं उनका (प्यारा) जीवन सत्वर॥
लोक-रीति क्या (भला) आप यह नहीं जानते।
(फिर किसलिए न मेरी समुचित बात मानते?)॥
राजाओं का काम नहीं है श्रम से थकना।
उन्हें चाहिए धन अधिकाधिक संग्रह करना॥

पास, वे मूर्ख हैं। ९९ "जो पुराना हमारे पास है, वह विपुल धन पर्याप्त है"—ऐसा सोचकर अपनी स्थिति की रक्षा करनेवाले राजाओं के जीवन को, धन के अभिलाषी अन्य लोग एक क्षण में जीतकर नाश कर देंगे—यह लोकरीति क्या आप नहीं जानते? थकना राजाओं का काम नहीं है। संग्रह होते-होते अधिक संग्रह करते रहना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पिळैयॊन् ऱैयर शर्क्कुण्डु कण्डाय्
पिऱरैत् ताळ्त्तु वदिऱ् चलिप् पॆय्दल् 100

वेऱु

वॆल्वडॆङ् गुलत् तॊळिलाम्;— ऍन्द
विदत्तिनि लिशैयिनुन् दवऱिलै काण् !
नल्वळि तीयवळि— ऍन
नामदिऱ् चोद नैशैय्त् तहुमो ?
शॆल्वळि याबिनुमे— पहै
तीर्त्तिडल् शालुमॆन् ऱनर् पॆरियोर्;
कॊल्बहुतान् पडैयो ?— पहै
कुमैप्पन यावुनऱ् पडैयलवो ? 101

वेऱु

शुऱ्ऱत् तारिव रॆन्ऱनै यैया !
तोऱ्ऱत् तालुम् पिऱविय नालुम्
पऱ्ऱला रॆन्ऱु नण्वर्ह ळॆन्ऱुम्
पार्प्प विल्लै युलहिनिल् यारुम्;
मऱ्ऱैत् तालुम् पहैयुर् विल्लै;
वडिविनि लिल्लै यळविनि लिल्लै;
उऱ्ऱ तुन्बत्ति नाऱ्पहै युण्डाम्
ओर्त्तॊळिल् पयिल् वार्त्तमक् कुळ्ळे 102
पूमित् तॆय्वम् विळुङ्गिडुङ् गण्डाय्
पुरव लर्पहै काय्हिलर् तम्मै
नामिप् पूदलत् तेकुऱै वॆय्द
नाळुम् पाण्डव रेऱुहिन् ऱाराल्
नेमि मन्नर् पहैशिऱि दॆन्ऱे
निनैव यर्न्दिरुप् पारॆनिल् नोय्पोल्

राजाओं की एक ही भूल हो सकती है। और वह दूसरों को नीचा दिखाने में रत माना है। १००

(छन्द-परिवर्तन)

हमारा कुलधर्म विजय पाना है ! यह चाहे जिस रीति से हो— इसमें कोई दोष नहीं है ! अच्छा मार्ग— बुरा मार्ग— ऐसा उसमें भेद करना हमारे लिए उचित नहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राजाओं की भूल एक ही है हो सकती।
शत्रु-पराजय-हेतु सुरुचि जब उनकी थकती ॥ १०० ॥

अरि पर पाना विजय यही कुल-धर्म हमारा।
दोष नहीं, चाहे जैसे हो (जिसके द्वारा) ॥
यह है अच्छा मार्ग और यह पथ अनुचित है।
ऐसा करना भेद न मेरे लिए उचित है ॥
सब मार्गों से नाश शत्रु का योग्य काम है।
यही बड़ों ने कहा वाक्य (अतिशय ललाम) है ॥
युद्ध - कार्य है केवल नहीं शत्रु का घातन।
युद्ध - कार्य हैं शत्रु-हनन के सारे साधन ॥ १०१ ॥

आर्य ! आपने इनको रिश्तेदार बताया।
(ऐसा कहकर मेरा मन आपने दुखाया) ॥
जन्म तथा आकार-भेद लख जग में (जाया)।
शत्रु-मित्र का अंतर कोई जान न पाया ॥
अन्य किसी भी बातों पर होकर आधारित।
शत्रु-मित्र का भेद नहीं होता है प्रविदित ॥
(इस जग में) आकार और परिणाम (भुलाकर)।
(होती है शत्रुता अन्य बातों पर निर्भर) ॥
एक कार्य में सदा लगे रहते हैं जो नर।
उनमें होता वैर चोट के लग जाने पर ॥ १०२ ॥

नहीं शत्रुओं का जो करते नाश भूपवर।
भू देवी उनको निगलेगी जानें (बुधवर) ॥
हम इस भू - तल पर (दिन-दिन) घटते जाते हैं।
और पाण्डु - सुत (दिन-प्रतिदिन) बढ़ते जाते हैं ॥
अगर शत्रु को लघु मानेगा भूप चक्रधर।
रोग-समान शत्रु बढ़ जायेगा तो (सत्वर) ॥

है। सभी मार्गों से शत्रु का नाश योग्य काम है— यही बड़ों ने कहा है ! क्या मारना ही युद्धकार्य है ? शत्रुसंहार के सारे उपाय युद्धकार्य ही हैं। १०१ आर्य ! आपने इनको रिश्तेदार बताया। इस संसार में जन्म तथा आकार से शत्रु या मित्र कोई नहीं मानता। अन्य किसी भी बात के आधार पर शत्रु या मित्र नहीं बनता। आकार में नहीं, परिमाण में नहीं, पर एक-से कार्य में लगे रहनेवाले लोगों में चोट के आधार पर शत्रुता हो जाती है। १०२ भूदेवी अशत्रुहंता राजाओं को निगल लेगी —यह जान लें। हम इस भूमि में घटते जाते हैं और पांडव बढ़ते जाते हैं। चक्रधर राजा अगर शत्रु को लघु मानकर भूल में रहे तो हे स्वामी, रोग के समान वह शत्रु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शानि, यन्दप् पहैमिह लुड्डे
शदिदि माय्ततिडु मॅन्बदुङ् गाणाय् 103
पोर्शॅय् वोमॅन्निल् नीतडुक् किन्ड्राय्;
पुविषि नोरुम् पळिपल शॉल्वार्;
तार्शॅय् तोळिनम् पाण्डवर् तम्मैच्
चमरिल् बॅल्वदु माङ्गॅळि दन्ड्राम्;
यार्शॅय् पुण्णियत् तोनमक् कुड्ड्रान्
अॅङ्ग ळारुयिर् पोन्ड्रबिम् मामन्;
नेर्शॅय् शूदिनिल् बॅन्ड्र तरुवान्;
नीदित् तर्मनुज् जूदिलन् पुळ्ळोन् 104
पहैवर् वाळ्बिनि लिन्बुरु वायो ?
पार दर्क्कु मुडिमणि यन्नाय् !
पहैयु मॅन्ड्र नुळ्ळत्तिनै वीड्रिल्
पुन्शोर् कूडि यबित्तिड लामो ?
नहैशॅय् दार्तमै नाळै नहैप्पोम्;
नमरिप् पाण्डव रॅन्नि लिहदाले
मिहैयुरुन् दुन्ब मेदु ? नम् मोडु
वेरु रादॅमैच् चार्न्दुनन् गुय्वार् 105
ऐय शूदिर् कवरै यळैत्ताल्
आडि युय्हुदुम्; अःदियर् रायेल्
पॉय्यन् रॅन्नुरै; अॅन्नियल् बोर्बाय्;
पॉय्म्मै वीरॅन्ड्रुम् जॉल्लिय दुण्डो ?
नेय निन्मुन रॅन्शिरङ् गॉय्दे
नाडिङ् गाबि यिरुत्तिडु वेनाल्;
शॅय्य लाबदु शॅय्हुदि" यॅन्ड्रान्
तिरिद राट्टिर नॅञ्ज मुडैन्दान् 106

बढ़ता हुआ आयगा और झट से मार देगा --यह भी जान लें। १०३ हम युद्ध करना चाहते हैं, तो आप रोकते हैं ! और संसार के लोग भी निंदा करेंगे। और भी मालाधारी तरुण पांडवों का युद्ध में जीतना भी आसान नहीं। किसी का पुण्यफल है कि हमें हमारे प्राणसम मामा मिले हैं। सीधे-सादे जूए में वे हमें जीत दिला देंगे। न्यायी धर्म भी जूए का प्रेमी है ! १०४ हे भारत-शिरोमणि ! शत्रुओं की बढ़ती में आनन्द मनायेंगे क्या ? धधकता मेरा मन फट जायगा, तो दुर्बल शब्दों से क्या वह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बढ़ा हुआ वह शत्रु उसे चट-चट मारेगा।
जानें आप न (वह करुणा उर में धारेगा) ॥ १०३ ॥

आप रोकते जभी चाहता मैं करना रण।
अपयश भी देंगे मुझे सभी जगती के जन ॥
मालाधारी तरुण पाण्डवों को जय करना।
सरल नहीं है (उनके साहस का क्षय करना) ॥
मिले प्राण-सम मामा यह है पूर्व-पुण्य-फल।
हमें जुए में जिता (करेंगे सदा सुमंगल) ॥
न्याय-युक्त धर्म भी न कहता— 'धर्म अपावन'।
(लेकर उसकी आड़ करेंगे जो, सो पावन) ॥ १०४ ॥

हे भारत के (सौम्य) शिरोमणि ! (यह बतलायें)।
क्या अरि-उन्नति देख आप आनन्द मनायें ? ॥
अरे ! धधकता मेरा मन (जब) फट जायेगा।
तो वह आग 'वचन' से कौन बुझा पायेगा ॥
आज हमारी हँसी उड़ाते हैं जो (पामर)।
हम भी (तो जी भरके खूब) हँसेंगे उन पर ॥
(हमें जलानेवाले) पाण्डव सगे बन्धुवर।
और कष्ट क्या हो सकता है इससे बढ़कर ॥
द्वेष न कर, वे सदा रहेंगे साथ हमारे।
(वे भी उन्नति प्राप्त करेंगे साथ हमारे) ॥ १०५ ॥

आर्य तात ! दीजिए जुए का उन्हें निमंत्रण।
जुआ खेलकर उनसे करें प्राण हम धारण ॥
मेरा आप स्वभाव जानते ही हैं (प्रभुवर !)।
नहीं झूठ प्रिय, झूठ नहीं बोलता वीर नर ॥
आज आपको मैं (सचमुच) अपार दुख देकर।
दे दूँगा मैं प्राण (तुरत) निज शीश काटकर ॥
जो चाहे सो करें (बताता तुम्हें तातवर !)।
दुखी हुआ धृतराष्ट्र बात उसकी यह सुनकर" ॥ १०६ ॥

आग बुझ सकेगी ? हम उन पर हँसेंगे, जिन्होंने आज हमारी हँसी उड़ायी ! पांडव हमारे हैं, तो इससे और क्या कष्ट हो सकता है ? वे हमसे द्वेष करके हमारे साथ उन्नति करेंगे। १०५ आर्य तात ! द्यूत में उन्हें निमन्त्रण दो, तो हम खेलकर प्राण धारण करेंगे। नहीं तो मेरा स्वभाव जानते ही हैं, झूठ नहीं बोलता—दिलेरी झूठ कभी बोलेगी क्या ? आपको अपार दुख देते हुए मैं अपना सिर काटकर इधर प्राण दे दूँगा। जो चाहो, वह करो ! यह सुनकर धृतराष्ट्र भग्नमन हो गया। १०६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिरिदराट्टिरन् सम्मदित्तल्—14

वेरु

"बिदिशॆयुम् विळैवितुक्के— इङ्गु
वेरु शॆय्वार्पुवि मीदुळरो ?
मदिशॆरि विदुरनन्ड्रे— इदु
वरुन्दिर् नरिन्दुमुन् नॆनक्कुरैत्तान्
अदिशयक् कॊडुङ्गोलम्— विळैन्
दरशर्तङ् गुलत्तिनै यळिक्कु मॆन्ड्रान्;
शदिशॆयत् तॊडङ्गि विट्टाय्— निन्ड्रन्
शदियिनिर् रानदुविळैयु मॆन्ड्रान् 107
बिदि ! बिदि ! बिदि ! महने— इनि
वेरॆदु शॊल्लुव नडमहने !
कदियुड्ड् गाल नन्ड्रो— इन्दक्
कय महनॆननिनैच् चार्त्तु विट्टान् ?
कोदियुरु मुळम् वेण्डा— निन्ड्रन्
कॊळ्हैयिन् पडियवर् तमैयळैप्पेन्
वबियुरु मनै शॆल्वाय्"— ऎन्ड्र
वळियुङ्गण् णीरॊडु विडै कॊडुत्तान् 108

शबा निर्माणम्—15

मञ्जनु मामनुम् बोयिन पिन्नर्
मन्नन् विनैजर् पलरै यळैत्ते
"पञ्जवर् बेळ्वियिर् कण्डदु पोलप्
पाङ्गि नुयर्न्दॊर् मण्डबञ् जॆय्वीर् !

धृतराष्ट्र का सम्मत होना—१४

(छन्द-परिवर्तन)

धृतराष्ट्र ने कहा-- विधि की करतूत के सामने उसके विपरीत कर सकनेवाला इस संसार में कहीं कोई है क्या ? बुद्धिमान विदुर ने तभी भविष्य जानकर मुझसे यह कहा था-- अतिशय क्रूर होगा भविष्य का घटनाक्रम और वह राजकुल का नाश करेगा। तुमने षड्यंत्र रचना आरम्भ कर दिया-- उसी के फलस्वरूप वह नाश हो जायगा। १०७ हाय ! दैव, दैव है ! पुत्र, दैव है ! आगे क्या कहूँ, मेरे वत्स ! बुरा काल ही अपनी गति में इस खल के रूप में तुम्हारे साथ मिल गया है न ? तप्तमन मत होओ ! तुम्हारी राय के अनुसार मैं उन्हें बुलाऊँगा। आवास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

धृतराष्ट्र का सम्मत होना—१४

(इस प्रकार जब जली-कटी बोला दुर्योधन)।
तब बोले धृतराष्ट्र (दुखी होकर अतिशय मन)॥
"विधि-विधान-विपरीत काम कर सकनेवाला।
इस जग में है कौन (विधान बदलनेवाला)॥
बुद्धिमान थे विदुर मदीय भविष्य जानकर।
बोले (आनेवाली बातों को बतलाकर)॥
'होंगी अतिशय क्रूर भविष्यत् की घटनाएँ।
जो (इस सारे) राजवंश को ही विनशाएँ'॥
तुमने यह षड्यंत्र किया प्रारंभ (भयंकर)।
फल-स्वरूप होगा विनाश (सबका ही सत्वर)॥ १०७॥
हाय! भाग्य है (अतिविचित्र अतिशय दुखदाता)॥
आगे मैं क्या कहूँ वत्स! (कुछ कहा न जाता)॥
बुरा काल ही इस खल के स्वरूप में आया।
मिलकर तुमसे (तुम्हें पाप-पथ पर बहकाया)॥
मन संतप्त करो मत (दुःख करो मत भारी)।
उन्हें बुलाऊँगा मैं जैसी राय तुम्हारी"॥
तुम आवास-महल में जाके, ऐसा कहकर।
भेज दिया धृतराष्ट्र भूप ने आँसू भरकर॥ १०८॥

सभा-निर्माण—१५

चले गये जब शकुनि और दुर्योधन अंदर।
तब राजा ने बुलवाये अनेक कारीगर॥
बोले—"मंडप रचो सभी तुम उस प्रकार का।
पाण्डु-सुतों का मख-मंडप था जिस प्रकार का॥
स्तर में उससे बढ़ा-चढ़ा तुम रचो (मुदित-मन)।
दिलवाऊँगा उसके लिए तुम्हें अतिशय धन"॥

के महल में जाओ। —यह कहकर बहते आँसुओं के साथ धृतराष्ट्र ने पुत्र को विदा किया। १०८

सभा-निर्माण—१५

राजकुमार और मातुल के जाने के बाद राजा ने अनेक कारीगरों को बुलवाया और आज्ञा दी कि पंच पांडवों के यज्ञ में जैसा मंडप देखा था, वैसे ही (पर) अधिक अच्छे मंडप का निर्माण कर लो। उसके लिए अधिक धन दिला दूंगा। उन्होंने भी अधिक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मिञ्जु पॊरुळदऱ् कार्ऱुवन्" ऎन्ऱान्;
मिक्क वुबहैयॊ डाङ्गवर् शॆन्ऱे
कञ्ज मलरिऱ् कडवुळ् वियप्पक्
कट्टि निऱ्ऱतिन्ऱ पॊऱ्चबै यॊन्ऱे 109

वेऱु

वल्लवन् नाक्किय शित्तिरम् पोलुम्
वण्मैक् कविञर् कऩविनैप् पोलुम्
नल्ल तॊऴिलुणर्न् दार्शॆय लॆन्ऱे
नाडु मुऴुदुम् पुहऴ्च्चिहळ् कूऱक्
कल्लैयु मण्णयुम् पॊन्नैयुङ् गॊण्डु
कामर् मणिहळ् शिलशिल शेर्त्तुच्
चॊल्लै यिशैत्तुप् पिऱर्शॆयु मारे
सुन्दर मामॊरु काप्पियञ् जॆय्दार् 110

विदुरनैत् तूदु विडल्—16

तम्बि विदुरनै मन्न नळैत्तान्;
"तक्क परिशुहळ् कॊण्डिनि देहि
यॆम्बियिन् मक्क ळिरुन् दरशाळुम्
इन्दिर मानहर् शार्न्दवर् तम्बाल्
कॊम्बिनै यॊत्त मडप्पिडि योडुम्
कूडियिङ् गॆय्दि विरुन्दु कळिक्क
नम्बि यळैत्तनन् कौरवर् कोमान्
नल्लदॊर् नुन्दै" यॆनवुरै शॆय्वाय् 111
"नाडु मुऴुदुम् पुहऴ्च्चिहळ् कूऱुम्
नन्मणि मण्डबञ् जॆय्ददुञ् जॊल्वाय्;
"नीडु पुहऴ्प्पॆरु वेळ्वियि लन्नाळ्
नेयमॊ डेहित् तिरुम्बिय पिन्नर्

उमंग के साथ जाकर एक स्वर्ण-सभा का निर्माण किया, जिसे देखकर कमलासन (ब्रह्म-) देव भी विस्मित हों। १०९

(छन्द-परिवर्तन)

चतुर चितेरे के चित्र के समान व मेधावी कवि के स्वप्न (कल्पना) के समान, उन्होंने पत्थर, मिट्टी, स्वर्ण, प्यारी मणियाँ आदि से मंडप क्या रचा—शब्दों को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आज्ञा पाकर सभी जुट गये वे कारीगर।
स्वर्ण-सभा रच दी उमंग के साथ (मनोहर)॥
लखकर के जिस (स्वर्ण-सभा का दिव्य निकेतन)।
विस्मित (निज मन में) हो जायँ स्वयं कमलासन॥ १०९॥
चतुर चितेरे के चित्रों-सम वह सुन्दर था।
मेधावी कवि के स्वप्नों के सम (मनहर) था॥
पत्थर, मिट्टी, स्वर्ण (रत्न) मणि आदि मिलाकर।
रचा (शिल्पियों ने) मंडप इस भाँति (मनोहर)॥
जैसे सुन्दर-सुन्दर शब्दों को संचित कर।
रचता है कवि महाकाव्य अतिशय ही सुन्दर॥
सारे जग ने (प्रचुर) प्रशंसा को विलोक कर।
'कुशल शिल्पियों कृत अवश्य यह कृति सुरम्यतर'॥ ११०॥

विदुर को दूत बनाकर भेजना—१६

तब नृप ने निज अनुज विदुर को (द्रुत) बुलवाकर।
कहा कि जाओ इन्द्रप्रस्थ ये भेंटें लेकर॥
जहाँ राज्य कर रहे भतीजे मेरे (प्रियवर!)।
उनसे कहो कि अपने साथ द्रौपदी लेकर॥
जो कोमल-लतिका-सी, बाल-मृगी-सी सुन्दर।
कुछ दिन मोद मनायें सभी यहाँ पर आकर॥
जो कौरव-नायक हैं श्रेष्ठ तुम्हारे पितुवर।
उन राजा ने तुम्हें बुलाया आमंत्रित कर॥ १११॥
जो उत्तम मणि-मंडप जग में श्लाघनीय है।
उसकी देकर खबर कहो अति दर्शनीय है॥
कहो कि देखा वृद्ध पिता ने यज्ञ प्रशंसित।
(उसे देखकर हुए बहुत वे मन में प्रमुदित)॥

मिलाकर रचा गया सुन्दर महाकाव्य ही रच डाला, जिसे देखकर सारे देश ने प्रशंसा में कहा कि यह अवश्य कुशल शिल्पियों की कृति है। ११०

विदुर को दूत बनाकर भेजना—१६

राजा ने लघु भ्राता विदुर को बुला भेजा। उससे कहा—यथोचित भेंटें लेकर इन्द्रप्रस्थ जाओ, जहाँ रहकर हमारे भ्रातृपुत्र राज कर रहे हैं। उनसे कहो कि लता-सी बाल हरिणी (द्रौपदी) को साथ लिये हुए इधर आकर आनन्द मनाने के हेतु कौरवनायक तुम्हारे पिता, श्रेष्ठ राजा ने तुम्हें आमन्त्रित किया है। १११ देश भर की वाहवाही के पात्र श्रेष्ठ मणिमंडप की रचना की खबर भी दे दो। यह भी कहो कि वृद्ध पिता ने बहुत प्रशंसित यज्ञ में उस दिन हो आने के बाद गौरवयुक्त पुत्रों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पोडुऱु मक्कळै योर्मुऱै यिङ्गे
पेणि यऴैत्तु बिरुन्दुह ळाऱ्ऱक्
कूडुम् वयदिऱ् किऴवन् विरुम्बिक्
कूऱिन निःदॆनच् चॊल्लुबै कण्डाय् 112
पेच्चि निडैयिऱ् चकुनिशॊऱ् केट्टे
पेयॆनुम् पिळ्ळै करुत्तिनिऱ् कॊण्ड
तीच्चॆय लिःदॆन् ऱदॆयुङ् गुऱिप्पाऱ्
चॆप्पिडि वायॆन्" मनत्तबन् कूऱप्
'पोच्चुदु पोच्चुदु पारद नाडु !
पोच्चुदु नल्लऱम् ! बोच्चुदु वेदम् !
आच्चरियक् कॊडुङ् गोलङ्गळ् काण्बोम्
ऐय बिदनैत् तडुत्त लरिदो ?' 113
ऍन्ऱु बिदुरम् पॆरुन्दुयर् कॊण्डे
एङ्गिप् पलशॊ लियम्बिय पिन्नर्
'शॆन्ऱु वरुहुदि तम्बि यिनिमेल्
शिन्दनै येदु मिदिऱ्चॆय माट्टेन्
बॆन्ऱु पडुत्तनन् बॆब्विदि यॆन्नै
मेलै बिळैवुहळ् नीयरि यायो ?
अन्ऱु बिबित्तदै यिन्ऱु तडुत्तल्
यार्क्कॆळि' दॆन्ऱु मॆय् शोर्न्दु बिळुन्दान् 114

विदुरन् तूदु शॆल्लुदल्—17

वेऱु

अण्णनिडम् विडैपॆऱ्ऱु बिदुरन् शॆन्ऱान्
अडवि मलै याऱॆल्लाम् कडन्दु पोहित्
तिण्णमुऱु तडम्दोळुम् उळमुङ् गॊण्डु
तिरुमलियप् पाण्डवर् तामरशु शॆय्युम्

को प्यार से बुलाकर दावत देने की इच्छा करके सन्देश भेजा है ! ११२ बात के बीच में यह संकेत भी दे दिया कि पिशाच-से लड़के का, शकुनि की बात में आकर मन का अमुक विचार है । —जब राजा ने यह प्रकट किया, तो विदुर चिल्ला उठे—हाय ! गया, गया भारत ! सद्धर्म गया । वेद गये ! अब हम विस्मयकारी बुरे दिन देखेंगे । हे आर्य ! इसे रोकना क्या कठिन होगा ? ११३ विदुर ने बहुत दुखी होकर तरस के साथ इस प्रकार कई बातें कहीं । फिर धृतराष्ट्र ने कहा कि लघु भ्राता ! हो आओ ! अब आगे इसमें कुछ सोचूँगा नहीं ! क्रूर विधि (देवता)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निज गौरव-मय पुत्रों को प्यार से बुलाया।
दावत देने के हित यह संदेश पठाया ॥ ११२ ॥
बातचीत के बीच (जभी तुम अवसर पाओ)।
संकेतों से बात (तभी तुम यह) जतलाओ ॥
'वह पिशाच-सुत शकुनी की बातों में आकर।
बैठा यहाँ द्यूत-क्रीडा का स्वाँग रचाकर' ॥
जब राजा ने यह रहस्य उनको बतलाया।
चिल्ला उठे बिदुर बोले "सद्धर्म नशाया ॥
वेद नष्ट हो गये, गिर गया है अब भारत।
बिस्मयकारी बुरे दिवस देखेंगे आरत ॥
आर्य ! इसे रोकना कठिन है क्या ? (बतलाओ)।
(यह अनर्थ रोको, दुर्योधन को समझाओ)" ॥ ११३ ॥
प्रकट किये उद्गार विदुर ने दुःखित होकर।
कहीं तरस के साथ कई बातें (अति दुखकर) ॥
फिर बोले धृतराष्ट— "अनुज ! तुम चट-पट जाओ।
अब इसमें सोचना न आगे (यह मन लाओ ॥
क्रूर दैव ने मुझे भली विधि दबा लिया है।
वह भविष्य में जाने क्या चाहता किया है ? ॥
बिधि-निश्चय को कौन रोक सकता जग में नर"।
गिरे शिथिल-तन यह कहकर धृतराष्ट्र (भूपवर) ॥ ११४ ॥

विदुर का दौत्य पर जाना—१७

विदुर चल पड़े यों अग्रज की आज्ञा पाकर।
पार किये अगणित सरिता, कानन, पर्वत-वर ॥
जहाँ साहसी मनवाले दृढ़ कंधों वाले।
राज्य कर रहे थे समृद्ध पाण्डव (गुणवाले) ॥

ने मुझे धर दबोच लिया है। क्या तुम भविष्य में होनेवाले नतीजे नहीं जानते ? उस दिन जो विधि द्वारा निश्चित हो गया है, उसको रोकना किसके लिए सुलभ है ? यह कहकर वह शिथिल-शरीर होकर गिर गये। ११४

विदुर का दूत-रूप में जाना—१७

(छन्द-परिवर्तन)

विदुर बड़े भाई से विदा लेकर चला। वन, पर्वत, नदी सब पार कर गया। वह उस अति सुन्दर नगर के पास पहुँचा, जहाँ सुदृढ़ स्कन्धों तथा साहस-पूर्ण मन से युक्त पांडव लोग समृद्धि लाते हुए राज्य कर रहे थे। तब रास्ते में देश की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वण्णमुयर् मणिनहरिन् मरुङ्गु शॆल्वान्
वऴियिडैये नाटटिन्नुऱु बळङ्ग णोक्कि
ऍण्णमुऱ लाहित्त निदयत् तुळ्ळे
यिन्नॆयपल मॊऴिकूऱि यिरङ्गु वानाल् 115
'नील मुडितरित्त पलमलैशेर् नाडु
नीरमुद मॆन्नप्पायन्दु निरम्बु नाडु
कोलमुऱु पयन् मरङ्गळ् शॆऱिन्दु वाऴुङ्
कुळिर् कावुऱ् जोलैहळुङ् कुलवु नाडु
जालमॆलाम् पशियिन्ऱिक् कात्तल् वल्ल
नन्शॆय्युम् पुन्शॆय्युम् नलमिक् कोङ्गप्
पालडैयु नऱुनॆय्युन् देनु मुण्डु
पण्ण वर् पोल् मक्कळॆलाम् पयिलु नाडु 116
अन्नङ्गळ् पॊऱ्कमलत् तडत्ति नूर
अळिमुरलक् किळिमऴल यरऱ्ऱक् केट्पोर्
कन्नङ्ग ळमुदूऱक् कुयिल्हळ् पाडुम्
कविन्नत्तु नऱुमलरिन् कमळैत् तॆन्ऱल्
पॊन्नङ्ग मणिमडवार् माड मीदु
पुलविशॆयुम् पोऴ्दिन्निले पोन्दु वीश
वन्नङ्गॊळ् वरत्तोळार् महिऴ मादर्
मैयल् विऴि तोऱुविक्कुम् वण्मै नाडु 117
पेरर्मुम् पॆरुन् दोऴिलुम् पिऱङ्गु नाडु
पॆण्ण ळॆल्ला मरम्बैयर्पोल् ऒळिरुनाडु
वीरमॊडु मॆय्ज्ञानन् दवङ्गळ् कल्वि
वेळ्बियॆनु मिवैयॆल्लाम् विळङ्गु नाडु

समृद्धियाँ देखकर तरह-तरह का विचार करते हुए अपने मन से ये बातें कहते हुए, वह दुखी हो रहा था। ११५ अनेक नील-शिखर पर्वतों का यह देश है; अमृत के समान जल बहकर इसको भरता रहता है। यह ऐसा देश है, जहाँ शीतल बाग़-बगीचे कसरत से हैं, जिनमें सुन्दर तथा फल-वृक्ष घने रूप से उगे हैं। सारे संसार को भूख से बचाकर पालनेवाले धान के खेत (धनहर) तथा अन्य (मीदा) बाग़ बहुत लाभकारी रूप से बढ़े हैं। दूध, मलाई, सुगन्धित घी, शहद आदि का खूब सेवन करके लोग देवों के समान रहते हैं—ऐसा देश है यह! ११६ हंस स्वर्ण-कमल-सर में मंद-मंद विचर रहे हैं। भ्रमर गुंजारव कर रहे हैं। शुक तुतलाते हैं। कोयलें सुननेवालों के कर्णमूलों में अमृत सरसाते हुए गाती हैं। बाग़ों के सुगन्धपूर्ण सुमनों के सुवास को दक्षिणी हवा (मलयपवन) स्वर्णांगी सुन्दर स्त्रियों पर, जो सौध के ऊपरी तल्लों में संभोग कर रही हैं, उँड़ेल रही है। रंगीन पर्वत-सम भुजावाले

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस अति सुन्दर नगर-पास पहुँचे वह जाकर।
मग में देश-समृद्धि अपरिमित देख-देखकर॥
भाँति-भाँति के करते थे विचार मन-भीतर।
विदुर हो रहे सोच-सोचकर दुखी निरंतर॥ ११५॥
नील-शिखर-गिरि-मंडित है यह देश (मनोहर)।
भरता रहता सुधा - सलिल इसको बह-बहकर॥
इसमें अगणित वन-उपवन शीतल (सुंदर) हैं।
घने फलों के उगे हुए सुन्दर तरुवर हैं॥
सारे जग की भूख मिटाकर करते पालन।
लगे धान के खेत लाभकारी बहु उपवन॥
दूध, मलाई, घृत, मधु आदिक का कर सेवन।
(देव-सदृश रह रहे जहाँ, वह देश सुपावन)॥ ११६॥
स्वर्ण-कमल-वाले शोभित (सैकड़ों) सरोवर।
मंद-मंद विचरण करते हैं हंस (मनोहर)॥
शुक तुतलाते और भ्रमरगण करते गुंजन।
श्रवण-सुधा सींचतीं कोयलें करतीं कूजन॥
जो स्वर्णाङ्गी सुन्दरियाँ (शुभ) सौध-तलों पर।
करती हैं संभोग (प्रियतमों से अति मनहर)॥
बागों के सुरभित सुमनों की सुरभि चुराकर।
दक्षिण पवन उँड़ेल रही है उनके ऊपर॥
जिनके भुज रंगीन पर्वतों-सम हैं (सुन्दर)।
उन पुरुषों के हृदयों को सुख से पुलकित कर॥
दृष्टि - पात मनमोहक करती हैं रमणीवर।
इस प्रकार का है यह (प्यारा) देश (मनोहर)॥ ११७॥
बड़े-बड़े उद्योग यहाँ अगणित पलते हैं।
बड़ा धर्म है यहाँ (धर्म पर सब चलते हैं)॥
यहाँ अप्सराओं-समान रमणियाँ मनोहर।
विद्या, तप, वीरता, यज्ञ सत्-ज्ञान यहाँ पर॥
चोरी आदि नीचता यहाँ न पायी जाती।
(निरपराध जनता न यहाँ ठुकरायी जाती)॥
(अति) प्राचीन विश्व के (मंजु) शिखर-मणि के सम।
है यह (उत्तम) देश (भूमि पर अतिशय अनुपम)॥

पुरुषों के मनों को आनन्द-पुलकित करते हुए वे स्त्रियाँ मनमोहक दृष्टिपात करती हैं —ऐसा देश है यह! ११७ यह ऐसा देश है, जहाँ बड़ा धर्म तथा बड़े-बड़े उद्योग पलते हैं। स्त्रियाँ अप्सराओं के समान शोभायमान हैं। वीरता, सत्यज्ञान, तप, विद्या, यज्ञ आदि सब विद्यमान हैं। चोरी आदि नीचता नहीं पायी जाती। यह प्राचीन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शोरमुदर् पुत्मै यॆदुन् दोत्ऱा नाडु
तॊल्लुलहिन् मुडिमणि पोल् तोन्ऱु नाडु
बारदर्तन् नाट्टिले नाश मॆय्दप्
पाबियेन् तुणैपुरियुम् बात्मै यॆन्ने !' 118

विदुरनै वरवेऱ्ऱल्—18

बिदुरन् वरुञ्जॆय्दि ताञ् जॆबि युऱ्ऱे
वोऱुडै ऐव रुळमहिळ् पूत्तुच्
चदुरङ्ग शेनै युडन्बल परिशुम्
ताळमु मेळमुन् दाङ्गॊण्डु शॆम्ऱे
ऍदिर् कॊण् डळैत्तु मणिमुडि ताळ्त्ति
येन्बल् बिदुरन् पदमलर् पोऱ्ऱि
मदुर मॊऴियिऱ् कुशलङ्गळ् पेशि
मन्न नॊडुन्दिरु माळिहै शेर्न्दार् 119
कुन्दि यॆनुम् पॆयर्त् तॆय्बदन् दन्नैक्
कोमहन् कण्डु बणङ्गिय पिन्नर्
वॆन्दिऱल् कॊण्ड दुरुपदन् शॆल्बम्
वॆळ्हित् तलैकुनिन् दाङ्गुवन् दॆय्दि
अन्दि मयङ्ग बिशुम्बिडैत् तोन्ऱुम्
आशैक् कदिर्मदि यन्न मुहत्तै
मन्दिरन् देर्न्ददॊर् माम नडिक्कण्
वैत्तु वणङ्गि वन्नप्पुऱ निन्ऱ्ऱराळ् 120
तङ्गप् पदुमै यॆन्नवन्दु निन्ऱ
तैयलुक् कैयन्नल् लाशिहळ् कूऱि
अङ्गङ् गुळिर्न्दिड वाळ्त्तिय पिन्नर्
आङ्गुवन् दुऱ्ऱ उऱबिन्नर् नण्बर्

जगत् की शिखर-मणि के समान रहनेवाला देश है। ऐसे भारतीयों के देश को नष्ट करने में सहायक, जो मैं बन रहा हूँ, उस स्थिति को क्या कहा जाय ? ११८

विदुर का स्वागत—१८

बिलेरों (पांडवों) ने विदुर के आगमन की बात सुनी, तो उनका मन मोद से फूल उठा। चतुरंगिणी सेना तथा अनेक उपहार के पदार्थ, बाजे आदि के साथ आकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भारतीय मनुजों का ऐसा देश (मनोहर)।
मैं विनष्ट करने में बना सहायक (सुंदर)॥
यह स्थिति है किस भाँति कष्ट-प्रद (और भयंकर)।
विवश बना हूँ मुझे क्षमा करना (परमेश्वर!)॥ ११८॥

विदुर का स्वागत करना—१८

विदुर-आगमन का संवाद सुना जब (सुन्दर)।
पाण्डुसुतों का फूल उठा मन (महा-) मोद भर॥
चतुरंगिणी चमू, अगणित उपहार सजाकर।
जाकर स्वागत किया (मनोरम) वाद्य बजाकर॥
उनके सम्मुख (जाकर सबने) शीश झुकाया।
पद-कमलों का वंदन कर (अतिशय सुख पाया)॥
मधु-बाणी से कुशल-प्रश्न पूछे (मनभाये)।
और विदुर के साथ महल में (वे सब) आये॥ ११९॥
नृपति विदुर ने (सबसे) पहले वहाँ पहुँचकर।
कुलदेवी कुंती की, की वंदना (मनोहर)॥
फिर कठोर वीरों की दौलत-सी मनभायी।
(अति) शरमाती हुई द्रौपदी उस थल आयी॥
उसने प्रिय किरणों वाले शशि-सम निज-आनन।
रख मंत्रज्ञ ससुर-चरणों पर किया (सु-) वन्दन॥
वंदन करके अलग खड़ी हो गई (सकुचकर)।
(ज्यों होती संकुचित कमलिनी निशि में सुन्दर)॥ १२०॥
खड़ी रही जो स्वर्ण-मूर्ति-सी (मंजु-मनोरम)।
दिये आर्य ने आशीर्वाद उसे (गद्गद-मन)॥
सारे अंग सुखी हों ऐसी स्थिति में आकर।
की मंगल-कामना प्रकट उसके प्रति (सुन्दर)॥
बंधु, मित्र, ब्राह्मण, पंडित औ' भृत्य (सुहाये)।
वीर सिंह-सम, उनका दर्शन करने आये॥

उन्होंने उनकी आवभगत की। उनके सामने सिर नवाया। चरणकमलों पर वन्दना अर्पित की। मधुर भाषा में कुशल प्रश्न किया। फिर सब राजा विदुर के साथ महल में आये। ११९ महाराजा विदुर ने पहले जाकर कुंती नामक कुलदेवी को नमस्कार किया। अनन्तर दुर्दान्त वीर की दौलत-सी द्रौपदी शरमाते हुए सिर झुकाकर वहाँ आयी तथा झुटपुटे के समय की प्यारी किरणों से युक्त चंद्र के समान अपने आनन को मंत्रणाचतुर ससुर के चरणों पर रखकर प्रणमन करके अलग खड़ी रही। १२० जो स्वर्ण-प्रतिमा-सी खड़ी रही, उसको आर्य ने आशीर्वाद दिये। सर्वांगीण प्रसन्नता के साथ उन्होंने उसकी मंगल-कामना की। बाद में वहाँ जो आ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शिङ्ग मॆन्त्तिहळ् वीरर् पुलवर्
शेवहर् यारॊडुञ् जॆय्दिहळ् पेशिप्
पॊङ्गु तिरुवि न्हर्वलम् वन्दु
पोऴ्दु कऴिन्दिर वाहिय पिन्नर् 121

विदुरन् अऴैत्तल्—19

ऐवर् तमैयुम् तनिक्कॊण्डु पोहि
आङ्गॊरु शॆम्बॊन् नरङ्गि लिरुन्दे
'मैवरैत् तोऴन् पॆरुम् बुहऴाऴन्
मामहऴ् पूमहट् कोर्मण वाऴन्
मॆय्वरु केऴ्वि मिहुन्द पुलवन्
वेन्दर् पिरान् तिरिदाट्टिरक् कोमान्
दॆय्व नलङ्गऴ् शिर्न्दिड नुम्मैच्
चीरॊडु नित्तलुम् वाऴ्हंन वाऴ्त्ति 122
उङ्गऴुक् कॆन्निडञ् जॊल्लि विडुत्तान्
ओर् शॆय्दि मऱ्ऱः दुरैत्तिडक् केऴीर् !
मङ्गऴम् वाय्न्दन लत्ति पुरत्ते
वॆयह मीदि लिणैयऱ्ऱ दाहत्
तङ्गु मॆऴिऱ् परुमण्डब मीन्ऱु
तम्बियर् शूऴ्न्दु शमैत्तनर् कण्डीर् !
अङ्गदन् विन्दै यऴहिन्नैक् काण
अन्बॊडु नुम्मै यऴैत्तनन् वेन्दन् 123
वेऴ्विक्कु नाङ्ग ळन्नैवरुम् वन्दु
मीण्डु पलदिन मायिन वेनुम्
वाऴ्वैक्कु नल्विऴि मङ्गैयॊ डेनीर्
वन्दॆङ्ग ळूरिल् मऱुविरुन् दाड

पहुँचे उन सब बन्धुओं, मित्रों, सिंह-सम वीरों, ब्राह्मणों, पंडितों तथा भृत्यों से वार्तालाप किया। फिर उमड़ती श्री-समृद्ध नगरी की यात्रा करके वे लौटे। समय बीता और रात हो गयी। बाद में-- १२१

विदुर का बुलावे की बात कहना—१९

(विदुर) पाँचों को अलग ले जाकर उधर एक श्रेष्ठ स्वर्ण सभा-भवन में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सबसे (मिलकर) वार्तालाप किया (हरषाये)।
श्री-समृद्ध नगरी की यात्रा फिर कर आये॥
इस प्रकार (धीरे-धीरे) दिन बीता (सारा)।
आयी (काली) रात (घिरा काला अँधियारा)॥ १२१॥

विदुर का बुलावे की बात कहना—१९

फिर पाँचों को (विदुर) अकेले में ले जाकर।
श्रेष्ठ स्वर्ण के रंग (-मंच) पर उन्हें बिठाकर॥
बोले काले पर्वत के समान भुजवाले।
सत्य श्रौत्र ज्ञानी, विद्वान, बड़े यशवाले॥
लक्ष्मी औ' भूदेवी इन दोनों के भर्ता।
राज-राज धृतराष्ट्र राष्ट्र के शासन-कर्ता॥
दिया उन्होंने तुमको आशीर्वाद (मनोहर)।
दिव्य मंगलों और श्री-सहित जियो निरन्तर॥ १२२॥
तुम्हें एक सन्देश सुनाने भेजा मुझको।
सुनो सकल वृत्तान्त ध्यान से, (अविचल सुन लो)॥
मंगलमय हस्तिनापुरी में अनुजों ने तब।
भू भर में बेजोड़ भवन (सुन्दर विशाल नव)॥
तुम्हें टिकाने हेतु (सुयोधन ने) बनवाया।
है उसका सौन्दर्य विचित्र (सरस सरसाया॥
बड़े प्यार के साथ भूप ने तुम्हें बुलाया।
चलकर देखो उसे (करो उनका मन - भाया)॥ १२३॥
और कहा, जब से लौटे तव यज्ञ देखकर।
बीत गये तब से हैं मुझे बहुत से वासर॥
चाहा था असि-सम-नयनों वाली को लेकर।
आओ, करो निमंत्रण ग्रहण (समुद सुख देकर)॥

बिठाकर (बोले)—काले पर्वत के सदृश भुजावाले, बड़े यशस्वी, महालक्ष्मी तथा भूमिदेवी दोनों के पति, सत्य और श्रौत ज्ञान रखनेवाले विद्वान राजाधिराज राजा धृतराष्ट्र ने तुम्हें दिव्य मंगलों तथा श्री-सहित चिरकाल जीने का आशीर्वाद देकर—१२२ एक सन्देश सुनाने को मुझे भेजा है। वह सुनाऊँगा, सुनो! मंगलमय हस्तिनापुर में तुम्हारे छोटे भाइयों ने भू भर में बेजोड़ एक सुन्दर तथा बड़ा भवन तुम्हारे ठहरने के लिए बनवाया है। समझे? उसका विचित्र सौन्दर्य देखने के हेतु राजा ने प्यार के साथ तुम लोगों को बुलाया है। १२३ यज्ञ में हम सब आकर लौटे; उसको कई दिन हो गये। हमने चाहा कि तलवार-सम आँखों वाली अपनी स्त्री के साथ तुम भी आओ और प्रीतिभोज ग्रहण करो। पर दिन शोधनेवाले ज्योतिषी के कारण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाळ्वक्कुञ् जोदिड रालिदु मट्टुम्
नायह् नुम्मै यळैत्तिड विल्ले !
केळ्बिक् कोडमिदि लादिब नोत्तोन्
केडर्र् मादमिदुवॆन्नक् कण्डे 124

वन्दु विरुन्दु कळित्तिड नुम्मै
बाळ्त्ति यळैत्तनन् ऍन्नरु मक्काळ् !
शन्दुकण् डेयच् चहुनिशोर् केट्टुत्
तन्मै यिळन्द सुयोदन मूडन्
बिन्दै पॊरुन्दिय मण्डबत् तुम्मै
वॆय्यपुन् शूदु कळित् तिडच् चॆय्युम्
मन्दिर मॊन्रु मनत्तिडैक् कॊण्डान्
वन्म मिदुवु नुमक्कदि बित्तेन्' 125

दरुम पुत्तिरन् पदिल्—20

ऍन्र बिदुर नियम्बत् तरुमन्, ऍण्णङ् गलङ्गिच् चिलशॊ लुरैप्पान्
मन्र पुनैन्ददु केट्टुमिच् चूदिन्, बार्त्तयैक् केट्टुमिङ् गॆन्रन् मनत्ते
शॆन्र बरुत्तन् उळैहिन्र दैया; शिन्दै यिलैयम् बिळैहिन्र दैया !
नन्र ममक्कु नितैपपव नल्लन्; नम्ब लरिदु शुयोधनन् रन्नै 126
कॊल्लक् करुदिच् चुयोधनन् मुन्बु, कुत्तिर मान शतिपल शॆय्दान् !
शॊल्लप् पडादव नालॆमक् कान, तुन्ब मनैत्तैयुम् नीयरि यायो ?
वॆल्लक् कडव रॆबरॆन्र पोदुम्, बेन्दर्हळ् शूदै बिरुम्बिड लामो ?
तॊल्लैप् पडुमॆन् मनम् दॆळि वॆय्दच्, चॊल्लुदि नीयॊरु शूळ्च्चियिङ् गॆन्रान् 127

नायक ने तुम्हें नहीं बुलाया। श्रवण ज्ञान में मिथिलाधिपति के समान राजा ने इसे दोषहीन (शुभ) मान जानकर— १२४ वहाँ आकर दावत ग्रहण करके आनन्द मनाने के लिए, 'जय' कहकर, आमंत्रित किया है, मेरे पुत्रो ! (पर एक बात में सावधान रहना है) अवसर पाकर शकुनि ने यह कहा और मूर्ख सुयोधन सद्भाव खो गया। उसने मन में यह गूढ़ विचार कर लिया है कि उस विचित्र मंडप में तुमको बुरा तथा नीच जुआ खेलने दिया जाय ! मैंने यह मर्म तुम्हें बता दिया। १२५

धर्मपुत्र का उत्तर—२०

विदुर के यों कहने पर धर्म का मन आलोड़ित हुआ। वे यों कुछ कहने लगे—मंडप-रचना और जुए की बात सुनकर मेरे मन में दुख पैदा होकर मुझे सालने लगा है। हे आर्य ! मन में संशय पैदा होता है। आर्य, सुयोधन हमारा हित सोचनेवाला नहीं है। उस पर विश्वास करना कठिन है। १२६ सुयोधन ने हमें मारने के लिए अनेक नीच उपाय किये थे। उससे हमें जो अकथ्य दुख हुआ, वह सब क्या आप नहीं जानते ? और,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पर मुहूर्त बतलानेवाले के वचनों पर।
कर विश्वास न अब तक तुम्हें बुलाया (सत्वर) ॥
श्रवण - ज्ञान में जनक-समान प्रवीर भूपवर।
दोषहीन (शुभ) मास इसे मन में विचार कर ॥ १२४ ॥

करते हैं आमंत्रित वे तुमको जय कहकर।
करो निमंत्रण स्वीकृत सुखकर, आओ सुतवर ! ॥
इतने में ही (नीच) शकुनि ने अवसर पाकर।
मूर्ख सुयोधन से कुछ बात कही समझाकर ॥
उसको सुनकर दूर हो गये सारे सद्गुण।
वह स्वभाव मिट गया, बदल वह गया सुयोधन ॥
उसने अपने मन में गूढ़ विचार विचारा।
उस बिचित्र मंडप में (स्वागत करें तुम्हारा) ॥
नीच द्यूत-क्रीडा में फिर वह तुम्हें फँसाये।
मैंने ये सब गुप्त भेद तुमको बतलाये ॥ १२५ ॥

धर्म-पुत्र का उत्तर—२०

सुन करके इस भाँति बिदुर का (पूरा) प्रकथन।
(अति) आलोडित हुआ धर्म का (धर्म-प्रवण) मन ॥
फिर वे बोले— "सुनकर मंडप-रचना (मनहर)।
और द्यूत - क्रीडा के समाचार को सुनकर ॥
दुःख सालता है मेरे मन में उठ-उठकर।
मेरे मन में संशय पैदा हुआ आर्य-(वर !) ॥
आर्य ! हमारा हित-चिन्तक है नहीं सुयोधन।
उस पर है विश्वास नहीं करता मेरा मन ॥ १२६ ॥

हमें मारने हेतु (मन्द - मति यह) दुर्योधन।
अपना चुका अनेक क्षुद्र (तम पहले) साधन ॥
इनसे अकथनीय जो दुख था हमने पाया।
नहीं जानते आप (भला) क्या (इसकी माया ?) ॥
जीत जुए में भला किसी की भी निश्चित है।
क्या नृप-दल मानता द्यूत-क्रीडा समुचित है ॥
मेरा मन संकट में है (हैं बहु चिन्ताएँ)।
कैसे हों निश्चिन्त उपाय आप बतलाएँ" ॥ १२७ ॥

जुए में जीत किसी की भी हो सकती है, (मेरी भी हो सकती है) तो भी क्या राजा लोग द्यूत को चाह सकते हैं ? मेरा मन संकट में है। वह चिन्ता-रहित हो, ऐसी एक युक्ति आप बताएँ —धर्मपुत्र ने यों कहा। १२७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विदुरन् बदिल्—21

वेऱु

विदुरनुञ् जॊल्लुहिऱान्— 'इदै, विडमॆनच् चान्ऱवर् वॆहुळुवर् काण्;
शतुरॆनक् कॊळ्ळुवरो ?— इदन्, ताळ्मै यॆलामवर्क् कुरैत्तु विट्टेन्;
इदुमिहत् तीदॆन्ऱे— अण्णन्, ऎत्तनै शॊल्लियु मिळवरशन्
मदुमिहुत् तुण्डवन् पोल्— ऒरु, वार्त्तैये पऱ्ऱिप् पिदऱ्ऱु हिऱान् 128
कल्लॆनि लिणङ्गि विडुम्— अण्णन्, काट्टिय नीदिहळ् कणक्किलवाम्
पुल्लनिङ् गवऱ्ऱॆयॆलाम्-— उळम्, पुहुद वॊट्टादुतन् मडमैयिनाल्
शल्लियच् चूदिनिले— मनन्, दळर्वऱ् निन्ऱिडुन् दहैवैशॊन्नेन्
शॊल्लिय कुऱिप्पऱिन्दे— नलन्, दॊन्ऱिय वळियिनैत् तॊडर्ह वॆन्ऱान् 129

दरुम पुत्तिरन् तीर्मानम्—22

तरुमनु मिव्वळविल्— उळत्, तळर्च्चियै नीक्कियॊ रुऱुदि कॊण्डे
परुमङ्गॊळ् कुरलिनाय्— मॊळि, पदैत्तिड लिन्ऱियिङ् गिवैयुरैप्पान्;
'मरुमङ्ग ळॆवैशॆयिनुम्— मदि, मरुण्डवर् विरुन्ऱऱञ् जिदैत्तिडिनुम्
करुममॊन् ऱेयुळदाम्— नङ्गळ्, कडन् अदै नॆऱिप्पडि पुरिन्दिडुवोम् 130
तन्दैयुम् वरप्पणित्तान्— शिऱु, तन्दैयुन् दूदुवन् ददैयुरैत्तान्
शिन्दैयॊन् ऱिनियिल्लॆ— अदु, शेरिनुम् नलमॆनत् तॆळिन्दु विट्टेन्

विदुर का उत्तर—२१

(छन्द-परिवर्तन)

विदुर कहते हैं— शिष्ट लोग इसको विष मानते हैं और इससे डरते हैं। इसे ठीक मानेंगे क्या ? सारे इसके दोष मैंने बता दिये। ज्येष्ठ भ्राता ने भी बहुत कहा कि यह बड़ी हानि करनेवाला है। पर वह राजकुमार मानो अत्यधिक मद्य पी चुका हो ! वह एक ही बात लेकर बकता रहा। १२८ पत्थर भी पसीज जायगा। भाई ने जो नीतियाँ बतायीं, वे असंख्य हैं। वह नीच किसी भी बात को अपने मन में प्रवेश करने न देकर छली द्यूत में, अपनी मूर्खता के कारण अडिग रूप से मन लगाये है —यह हाल मैंने तुम्हें बता दिया। मेरे कहे का संकेत जानकर तुम्हें जिसमें अपना हित दिखाई देता है, उस मार्ग पर जाओ। —विदुर ने कहा। १२९

धर्मपुत्र का निश्चय—२२

धर्मराज ने भी इतने में अपने मन की शिथिलता त्याग दी। कोई निर्णय मन में कर लिया। उन्होंने सुदृढ़ स्वर में, स्थिर भाषा में कहा कि वे चाहे जो वंचना करें,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विदुर का उत्तर—२१

बोले विदुर— "द्यूत को विष मानते शिष्टजन।
कैसे इसे मान सकते हैं समुचित (सज्जन)॥
मैंने इसका (सारा) दोष (तुम्हें) बतलाया।
अग्रज ने भी अतिव हानिकर इसे बताया॥
पर मद्यप-सम राजकुमार (दुष्ट दुर्योधन)।
बात एक ही रटता है (निज मुख से दुर्जन)॥ १२८॥

अग्रज ने नीतियाँ बतायीं जो बहुसंख्यक।
उनको (सुन करके) पसीज जाए पत्थर तक॥
पर वह नीच न कोई बात हृदय में धरता।
सदा मूर्खताओं का ही है (पालन करता)॥
छली द्यूत में अडिग रूप से हृदय लगाया।
उसका सारा हाल तुम्हें मैंने बतलाया॥
मेरा यह संकेत समझकर जो हो हितकर।
(अपनाओ तुम उसे) चलो तुम उसी मार्ग पर॥"१२९॥

धर्म-पुत्र का निश्चय—२२

धर्मराज ने भी इतने में (बातें सुनकर)।
अपने मन की (सभी) शिथिलता त्यागी (सत्वर)॥
अपने मन में कोई (अति निश्चित) निर्णय कर।
स्थिर भाषा में कहा व्यक्त करके दृढ़तम स्वर॥
"चाहे जो वंचना करे मति - भ्रान्त (सुयोधन)।
और करे आतिथ्य धर्म का भी उन्मूलन॥
मुझे वही करना है जो कर्तव्य हमारा।
उचित रीति से उसे निभायेंगे हम (सारा)॥ १३०॥

(पूज्य) पिता ने आने का आदेश दिया है।
चाचा ने बन दूत मुझे संदेश दिया है॥
अब क्या चिन्ता, जो भी होगा, होगा मंगल।
मैंने ठान लिया है (यही विचार समुज्ज्वल)॥

भ्रान्त-मति होकर आतिथ्य धर्म का नाश करें— फिर भी मेरा एक ही कार्य है। हमारा कर्तव्य है वह—उसे ठीक तरह से कर देंगे। १३० पिता ने आने की आज्ञा दी है। चाचा ने दूत के रूप में आकर यह संदेश कह दिया है। अब कोई चिंता नहीं है। जो भी होगा, वह भला ही होगा। मैंने ठान लिया है! पहले कोदंड-धारी राम ने जो निर्णय कर दिखाया है, उसे भूल सकेंगे क्या? जो होन हो, वह नहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुन्दैयच् चिलैरामन्— शैय्द, मुडिविलै नम्मवर् मरप् पदुवो ?
नौन्ददु शैयमाट्टोम्— पऴ, नूलिनुक् किणङ्गिय नेरि शैल्वोम् 131
'ऐम्बेरुङ् गुरबोर्ताम्— तरुम्, आणैयैक् कडप्पदु मरनेरियो ?
बैम्बेरु मदयानै— परि, वियत्रेर् आळुड निरुतिनत्तिल्
पैम्बौऴि लत्तिनहर्— शैलुम्, पयणत्तिर् कुरियल पुरिन्दिडुवाय्
मौय्मबुडै बिरल्बोमा !'— अैन, मौऴिन्दन नरनेरि मुऴुबुणर्न्दान् 132

वीमनुडैय वीरप् पेच्चु—23

बीमनुन् दिहैत्तु बिट्टान्— इळ, बिशयनै नोक्कियिङ् गिदुशौलुवान्;
'मामनुम् मरुहनुमा— नमै, यऴित्तिडक् करुदि इब्बऴि तौडर्न्दार्
तामदम् जैय्मोमो ?— शैमत्, तहुन्बहु' मैनबिडि युरनहैत्तान्
'कोमह तुरैप्पडिये— पडै, कौण्डुशैल् वोमौरु तडैयिलै काण् ! 133
नैडुनाट् पहै कण्डाय्— इन्द, निनैबिनिल् यान् कऴित् तनपल नाळ्;
कैडुनाळ् वरु मळबुम्— औरु, किरुमियै यऴिप्पब रुलहि लुण्डो ?
पडुनाट् कुरियन्रो— इन्दप्, पादहम् निनैप्पबर् निनैत्तदुतान् !
बिडुनाण् कोत्तिडडा !— तम्बि, विल्लिनुक् किरैमिह विळैयुदडा ! 134
पोरिडच् चैल्वमडा— महन्, पुलैमैयुम् तन्दैयिन् पुलमैहळुम्
यारिड मविऴुक्किन्रार् ?— इबै, मैत्तनै नाळ्वरै पौरुत् तिरुप्पोम् ?

करेंगे। प्राचीन शास्त्र-सम्मत मार्ग पर ही जायँगे। १३१ पाँच गुरुओं (माता, पिता, गुरु, राजा, ईश्वर) की आज्ञा का उल्लंघन करना क्या धर्म होगा ? हे बलवान भीम, मत्त तथा बड़े गज, अश्व, बड़े रथ तथा पदाति —इनके साथ दिन दो में हस्तिनापुर जाने की तैयारी कर दो। —धर्ममार्ग के पूर्ण ज्ञाता ने यह कहा ! १३२

भीम का वीर-वचन—२३

भीम ठिठक गया। छोटे भाई विजय से बोला— मामा और भानजा हमारे नाश का विचार कर इस मार्ग पर चले हैं। हम देरी करेंगे क्या ? जाना ही ठीक होगा ! —ठीक होगा ! कहकर भीम ठठाकर हँसा। राजा की आज्ञा के अनुसार सेना ले जाने में कोई आक्षेप नहीं है ! १३३ पर हाँ, यह बहुत दिनों की शत्रुता है ! इसी विचार में मैंने अनेक दिन बिताये हैं। पर नाश का दिन जब तक नहीं आता, तब तक एक कृमि का भी नाश कर सकनेवाला इस दुनिया में क्या कोई होगा ? उनका इस पातकी विचार को मन में लाना ही नाश के दिन की सूचना है न ? भाई ! डोरी चढ़ा दो ! तुम्हारे धनुष के लिए बहुत ग्रास मिलनेवाला है ! १३४ रे ! हम युद्ध करने के लिए जायँगे। पुत्र की नीचता तथा पिता की बुद्धिमता की गाँठ किसके सामने खोलते हैं वे ? इसको कितने दिन तक सहन करते रहेंगे ? वे और हम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किया धनुर्धर रामचन्द्र ने था जो निर्णय।
भूल सकेंगे कैसे उसे (वीरवर निर्भय)॥
नहीं करेंगे हीन कर्म का हम अवलंबन।
चलें शास्त्र-सम्मत पथ पर ही हम (अविचल मन)॥ १३१॥
(माता, पिता तथैव पूज्य गुरु, राजा, ईश्वर।
इनको सभी शास्त्र कहते हैं, पाँचों गुरुवर॥
इन पाँचों गुरुओं की आज्ञा का उल्लंघन।
कैसे धर्म कहा जा सकता (इसे सनातन)॥
हे बलशाली भीम! (उठो सब साज सजाओ)।
चलने को हस्तिनापुरी प्रस्तुत हो जाओ॥
ले लो अपने साथ बड़े गज (अति) मतवाले।
ले लो पैदल और बड़े रथ, अश्व (निराले)॥
धर्म-मार्ग के पूर्ण (रूप से) थे जो ज्ञाता।
उनने दिया भीम को यह आदेश (सुहाता)॥ १३२॥

भीम का वीर वचन—२३

बोले भीम अनुज अर्जुन से तभी ठिठक कर।
(सुनो विजय! मैं तुम्हें बताता बात मनोहर)॥
मामा-भांजे हमें नशाने का विचार कर।
आज चल पड़े हैं इस (छल-छद्म-प्रपूर्ण) मार्ग पर॥
देरी करना ठीक नहीं, जाना ही हितकर।
ऐसा कहकर भीमसेन हँस पड़ा ठठाकर॥
राजा की आज्ञानुसार सेना सँग लेकर।
है कोई आक्षेप नहीं इसमें (हे प्रियवर!)॥ १३३॥
बहुत दिनों से वे हैं मुझसे वैर बढ़ाये।
इस विचार में मैंने अगणित दिवस बिताये॥
अरे! मृत्यु-दिन जब तक नहीं किसी का आता।
तब तक एक कीट को भी नर मार न पाता॥
यह पातकी विचार हृदय में उनका लाना।
है विनाश के दिन का सूचक (मैंने जाना)॥
प्रत्यंचा (गाण्डीव धनुष पर) अनुज! चढ़ाओ।
मिलनेवाला ग्रास धनुष को (उसे खिलाओ)॥ १३४॥
अरे! युद्ध करने को हम (उनसे) जायेंगे।
कितने दिन तक यह (अनीति) हम सह पायेंगे॥
खोलेंगे हम गाँठ पुत्र की (उस) शठता की।
खोलेंगे हम गाँठ पिता की मति-मत्ता की॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पारिडत् तिन्नरॊडुनाम्— अॆनप्, पहुदियिव् विरण्डिर्कुम् कालमॊन्रिल्
नेरिड वाळ्वुण्डो ?— इरु, नॆरुप्पिनुक् किडैयिनि लॊरुविरुहो ?' 135

दरुम पुत्तिरन् मुडिवुरै—24

वेऱु

वीम नुरैत्तदु पोलवे— उळम्, वॆम्बि नॆडुविल् विशयनुम्— अङ्गु
कामनुम् जामनु मॊप्पवे— निन्ऱ, काळै विळैम रिरुवरुम्— शॆय्य
तामरैक् कण्णन् युषिट्टिरन्— शॊल्लैत्, तट्टिप् पणिवॊडु पेशिनार्—तव
नेमन् दवऱ्लु मुण्डुकाण्— नरर्, नॆञ्जङ् गॊदित्तिडु पोळ्दिले 136
अन्बुम् पणिवु मुरुक्कॊण्डोर्— अणु, वायिनुन् तन्शॊक् वळादवर्— अङ्गु
वन्बु मॊळि शॊलक् केट्टनन्— अऱ, मन्नवन् पुन्नहै पूत्तनन्:— 'अड !
सुन्बु सुयोदनन् शॆय्ददुम्— इन्ऱु, मूण्डिरुक् कुङ्गोडुङ् गोलमुम्— इदन्
पिन्बु विळैवदुन् वेर्न्दुळैन्— अन्नैप्, पित्तनॆन् ऱॆण्णि युरैत्तिट्टीर् 137
कैप्पिडि कॊण्डु शुऱ्ऱुवोन्— ऱन्,कणक्किऱ् चुऱ्ऱुन्ऱिडुम् जक्करम्—अदु
तप्पि मिहैयुङ् गुऱैयुमाच्— चुऱ्ऱुम्, तन्मै यदर्कुळ दाहुमो ?— इदे
ऑप्पिड लाहुम् पुविियिन्मेल्— अॆन्ऱुम्, उळ्ळ वुयिर्हळिन् वाळ्वुक्के—ऑरु
शॆप्पिडु वित्तैयैप् पोलवे— पुविच्, चॆय्दिहळ् तोन्ऱिडु मायिनुम् 138
इङ्गिवै यावुन् दवऱिला— विदि, येऱ्ऱु नडकुम् जॆयल् हळाम्— मुडि
वॆङ्गणु मिन्ऱि यॆवर्ऱिनुम्- अॆन्ऱुम्, एऱि यिडैयिन्ऱिच् चॆल्वदाम्- ऑरु

--दोनों पक्षों का एक ही समय में एक साथ जीवित रहना सम्भव है क्या ? दो आगों के बीच एक इन्धन कैसे हो ? १३५

धर्मपुत्र का अन्तिम वचन—२४

भीम के कथन के अनुसार ही बड़े धनु के धारक विजय का हृदय भी संतप्त हुआ। काम और (उसका भाई) साम के समान रहनेवाले दोनों तरुण पुरुष-ऋषभों ने धर्मपुत्र का वचन काटकर सविनय निवेदन किया-- 'देखते नहीं ! जब मनुष्य का मन जलता है, तब तपस्या का नियम भी चूक जाता है'। १३६ जो प्रेम और विनय के रूप थे तथा जो लव मात्र भी उनकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करते थे, वे आज उद्धत वचन कह रहे हैं --यह देखकर धर्मराज ने मंदहास किया। अरे ! पहले जो सुयोधन ने किया, आज जो विचित्र दृश्य बन रहा है, इसका बाद में क्या फल होगा --यह सब मैंने सोच लिया है। मुझे विक्षिप्त समझकर तुमने यह बात कही है ! १३७ दंड लेकर जो घुमाता है, उसी के अनुसार चाक घूमता है ! उससे बचकर अधिक बार या कम घूमने की उसको स्वतंत्रता हो सकती है क्या ? संसार के नित्य जीवों के जीवन से इसकी तुलना हो सकती है। जादूगर की पिटारी से निकलने वाली वस्तुओं के समान भूमि में बातें दिख सकती हैं। तो भी— १३८ इधर ये सब नियति की करतूतें ही हैं। नियति ही इनके लिए जिम्मेवार है। उसका कोई और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एक ओर है पाण्डव एक ओर हैं कौरव।
एक समय में एक साथ जी सकें न सम्भव॥
दो आगों के बीच एक कैसे ईंधन हो?।
(करें वही हम काम विजय का जो साधन हो)॥ १३५॥

धर्म-पुत्र का अन्तिम वचन—२४

भीमसेन के इस प्रकार वचनों को सुनकर।
तप्त-हृदय हो गया बिजय भी महा धनुर्धर॥
काम-साम-सम वे दोनों (अति) तरुण पुरुषवर।
सविनय बोले धर्म-पुत्र का वचन काटकर॥
(तात!) देखते नहीं, जभी जलता मानव-मन।
तब कर जाता है तप के नियमों का लंघन॥ १३६॥

प्रेम-विनय के (मूर्त) रूप थे जो (अति पावन)।
कभी न करते थे जो उनका आज्ञोल्लंघन॥
आज कर रहे इस प्रकार वे उद्धत प्रवचन।
धर्मराज हँस पड़े निरखकर यह (परिवर्तन)॥
अरे! कर चुका जो पहले (पापी) दुर्योधन।
और विचित्र दृश्य जो, अरे! आज आया बन॥
और बाद में होगा जो इसका (विषमय) फल।
वह सब मैंने सोच लिया (अपने अंतस्तल)॥
बात कही तुमने मुझको विक्षिप्त समझकर।
(नयी उम्र में यह बातें हो जातीं अक्सर)॥ १३७॥

उधर घूमता चाक घुमाता जिधर दंडधर।
न्यूनाधिक सकता न घूम उससे वह बचकर॥
सांसारिक जीवों के (बस) दैनिक जीवन से।
इसकी तुलना हो सकती है (सोचो मन से)॥
जैसे अपनी एक पिटारी से जादूगर।
दिखलाता वस्तुएँ निकाल अनेक (तरू पर)॥
उसी भाँति ही इस (विस्तृत से) भू-मंडल पर।
दिखलाई पड़ती हैं बातें (बहु विस्मयकर)॥ १३८॥

ये सब विधि की करतूतें हैं अति (विस्मयकर)।
विधि ही तो है इनका ज़िम्मेवार (निरन्तर)॥
ओर-छोर इनका न कहीं (भी है दिखलाता)।
सबसे बढ़कर है सब पर, सर्वत्र विधाता॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शङ्गिलि यॊक्कुम् विदिकण्डीर् !–वॆऱुञ्, जात्तिर मऱ्ऱिदु शत्तियम्–नित्ऱु
मङ्गियॊर् नाळि लळिबदा ?— नङ्गळ्, वाळ्क्कै यिवऩैक् कडन्ददो ? 139

तोन्ऱि यळिबदु बाळ्क्कैदान्— इङ्गु, तुन्बत्तॊ डिन्बम् वॆऱुमैयाम्—इव्
मून्ऱि लॆदुबरु मायिनुम्— कळि, मूळ्हि नडत्तल् मुऱैकण्डीर्— नॆञ्जिल्
ऊन्ऱिय कॊळ्है तळैप्परो— तुन्बम्, उऱ्ऱिडु मॆन्बदॊ रच्चत्ताल् ?–विदि
पोन्ऱु नडक्कु मुलहॆन्ऱे— कडन्, पोऱ्ऱि यॊळ्हुबर् शान्ऱवर् 140

शेऱ्ऱि लुळ्ळुम् पुळुविऱ्कुम्— पुबिच्, चॆल्व मुडैय बरशर्क्कुम्— पिच्चै
एऱ्ऱडल् कात्तिड मेळैक्कुम्– उयिर्, ऎत्तऩै युण्डवै याविऱ्कुम्–नित्तम्
आऱ्ऱवर् कुळ्ळ कडमैतान्– मुन्बन्, दव्वक् कणन्दॊरु निऱ्कुमाल्– अदु
तोऱ्ऱम् बॊळ्ळुदिऱ् पुरिहुवार्— पल, शूळ्न्दु कडमै यळिप्परो ? 141

याबरुक्कुम् बॊदु वायिनुम्— शिऱप्, पॆन्ब ररशर् कुलत्तिऱ्के— उयर्
तेवरै यॊप्पमुन् नोर् तमैत्— तङ्गळ्, शिन्दैयिऱ् कॊण्डु पणिहुदल्–तन्दै
एवलै मैन्दर् पुरिदऱ्के— विल्, लिरामन् कदैययुङ् गाट्टिनॆन्— पुबिक्
कावलर् तम्मिऱ् चिऱन्दनीर्— इन्ऱु, कर्मम् पिळैत्तिडु वीर् कॊलो ?' 142

नहीं, छोर नहीं। सब पर सब जगह नियति चढ़कर जाती है। वह एक साँकल के समान है। समझो। वह केवल (पुस्तक की) शास्त्र की बात नहीं। यह तथ्य है। क्या हमारा जीवन एक दिन में मंद पड़कर नष्ट होनेवाला है? या हमारा जीवन इसका अपवाद है? १३९ जीवन आगमापायी है। यहाँ दुख और सुख तथा इन दोनों से रहित शुद्ध स्थिति --इन तीनों में कोई भी मिले, प्रसन्न होकर जीवन बिताना ही उचित रीति है। दुख होगा --इस डर से मन में जो सिद्धान्त स्थिर हो गया है, उसको क्या हम छोड़ दें? विधि के विधान के अनुसार ही दुनिया चलेगी --यह जानकर श्रेष्ठ पुरुष अपने धर्म का पालन करते हुए चलते हैं। १४० सब जीवों के सामने, चाहे वे पंक में लोटनेवाले कीड़े हों, चाहे धनवान राजा हों वा भीख माँग कर खानेवाले भिखारी हों, प्रतिदिन, प्रतिक्षण कर्तव्य आ जाते हैं। वे (जीव) तत्क्षण उन्हें पूरा कर देते हैं। क्या वे कई बहाने बनाकर उनसे चूकेंगे? १४१ अपने बड़ों को देवता मानकर उनके प्रति विनम्रता दिखाना --यह सामान्य धर्म है सही; पर नृपकुल का विशेष दायित्व है। पितृवाक्य-परिपालन के लिए मैंने श्रीराम के चरित्र का हवाला दिया। भूपतियों में श्रेष्ठ तुम क्या कर्म का उल्लंघन करोगे? १४२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वह साँकल-समान है इसको समझो (मानो)।
शास्त्र-वचन ही नहीं, तथ्य तुम इसको मानो॥
अरे ! एक दिन में ही पड़कर मंद (पुरातन)।
क्या मिट जायेगा यह (हाय !) हमारा जीवन॥
क्या मेरा जीवन इसका अपवाद नहीं है।
(सत्य बात है इसमें वाद-विवाद नहीं है)॥ १३९॥

आवागमन - युक्त जानो यह मानव - जीवन।
(बतलाते हैं सभी शास्त्र औ' सारे बुध - जन)॥
सुख में, दुख में या दोनों से हीन शुद्ध मन।
उचित यही है, हो प्रसन्न जीवन - संचालन॥
दुख होगा इस डर से (अपना मुख मत मोड़ें)।
मन में स्थिर सिद्धान्त किया वह कभी न छोड़ें॥
विधि - विधान - अनुसार चलेगा जग (का जीवन)।
यही जान उत्तम नर करते धर्म - प्रपालन॥ १४०॥

कीच - निवासी कीड़े, धर धरणी - पति नृपजन।
भीख माँग तन पालन करनेवाले निर्धन॥
(इस प्रकार इस जग में) जितने (बसे) जीवगण।
उन सबके सम्मुख आ जाते जटिल प्रश्न बन॥
कछ कर्तव्य सदैव, किये जाते जो पालन।
वे कर्तव्य जभी होते हैं प्रकट (सनातन)॥
तभी उन्हें पूरा कर देते (सदा) श्रेष्ठ जन।
भाँति-भाँति के बना बहाने क्या वे सज्जन॥
वे कर्तव्य मिटा देते हैं कभी (पुरातन ?)।
(इस प्रकार वे कर सकते हैं नहीं कदाचन)॥ १४१॥

बड़े जनों को देव - समान मानना मन में।
विनम्रता (का भाव) दिखाना (इस जीवन में)॥
यद्यपि यह सामान्य धर्म (पर ग्राह्य तत्त्व है)।
नृप:- कुल का इस पर विशेष दायित्व (स्वत्व) है॥
पिता - वचन का कैसे होता है परिपालन।
उदाहरण में रामचंद्र का चरित (सुपावन)॥
भूपतियों में श्रेष्ठ (कहे जाते) तुम (श्रीमन)।
फिर कैसे तुम कर पाओगे कर्मोल्लंघन॥ १४२॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाल्वरुम् सम्मदित्तल्—25

वेऱु

अॅन्ऱिलैय नीदिपल तरुम् राशन्
अॅडुत्तुरैप्प इळैञर्हळुन् दङ्गै कूप्पिक्
'कुन्ऱिनिले येऱ्ऱिबैत्त विळक्कैप् पोलक्
कुवलयत्तिऱ् कऱङ्गाट्टत् तोन्ऱि नाय् नी !
वॅन्ऱि परुन् दिरुवडियाय् !— निनतु शॊल्लै
मीऱियॊरु शॅयलुण्डो ? आण्डा नाणै
यन्ऱियडि यार्तमक्कुक् कडन्वे रुण्डो ?
ऐयने ! पाण्डवर्त माबि नीये ! 143
तुन्बमुऱु मॅमक्कन्ऱे यॅण्णि निन्वाय्च्
चॊल्लै मऱत् तुरैत्तोमो ? निन्पा लुळ्ळ
अन्बुमिहै यालन्ऱो तिरुवु ळत्तिन्
आक्किनॅयै यॅदिर्त्तुरैत्तो मऱिविल् लामल्
मन्वदॅयि नुळच् चॅयल्हळ् तॅळियक् काणुम्
मन्नवने ! मऱ्ऱिदुनी यरिया दॊन्ऱो ?
वन्बु मॊळि पॊऱुत्तरुळ् वाय् वाळि ! निन्शॊल्
वळिच्चॅल्वोम्' अॅनक्कूऱि वणङ्गिच् चॅन्ऱार् 144

पाण्डवर् पयण मादल्—26

आङ्गदन्पित् मून्ऱाना ळिळैञ रोडुम्
अणियिळैयैप् पाञ्जालर् विळक्कि नॊडुम्
पाङ्गिनुरु परिशनङ्गळ् पलवि नॊडुम्
पडैयिनॊडुम् इशैयिनॊडुम् पयण माहित्

चारों का सम्मत होना—२५

इस तरह धर्मराज ने अनेक नीतियाँ बतलायीं। तब छोटे भाइयों ने हाथ जोड़कर निवेदन किया—पर्वत पर रखे दीप के समान आप संसार को धर्म दिखाने के लिए पैदा हुए हैं। हे विजयचरण ! आपकी बात को लाँघकर क्या कोई काम है ? स्वामी की आज्ञा मानने के सिवा दासों का क्या अन्य कोई कर्तव्य है ? हे स्वामी ! पांडवों के आप प्राण हैं। १४३ क्या हमने आपकी बातों का उत्तर दुख से डरकर दिया था ? आपसे प्रेम के आधिक्य के कारण ही हमने बुद्धिहीन होकर आपके श्रीचित्त के विपरीत बात कही न ? प्रजा के मन के कार्य को जाननेवाले

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चारों का सम्मत होना—२५

धर्मराज ने कहीं नीतियाँ इस विधि अनगिन।
तब अनुजों ने हाथ जोड़कर किया निवेदन॥
जैसे गिरि का दीप (मार्ग दिखलाना जाने)।
पैदा हुए आप त्यों जग को धर्म दिखाने॥
कर सकता है कौन आपका आज्ञोल्लंघन।
दासों का कर्तव्य स्वामि की आज्ञा पालन॥
हे स्वामी! (इन) पाण्डु-सुतों के आप प्राण हैं।
(सभी दुखों से करते रहते सदा त्राण हैं)॥ १४३॥
(पूज्य-पाद!) हमने तव उन बातों का उत्तर।
(बतलाइये) दिया था क्या दुःखों से डरकर?॥
(अरे!) आपसे प्रेम-प्रचुरता के ही कारण।
तव विरुद्ध मत का था हमने किया प्रकाशन॥
बात जानते आप प्रजाओं के भी मन की।
कौन बात अज्ञात आपसे है (किस जन की)॥
सहज भाव से हमने जो (कुछ) कहा (भूपवर!)।
उसको आप क्षमा कर दें (हम पर करुणाकर)॥
वही करेंगे श्रीमन् जैसा आप कहेंगे।
(जय हो जय) जय जीव (नहीं प्रतिकूल रहेंगे)॥
(तुरत) चल पड़े वे ऐसे वचनों को कहकर।
अग्रज की आज्ञा पालन को धर्म समझकर॥ १४४॥

पांडवों का प्रयाण—२६

उसके बाद तीसरे ही दिन छोटे भाई।
आभरणों से भूषित द्रुपद-सुता मनभाई॥
अगणित सेना, वाद्य, पार्श्ववर्ती बहु परिजन।
इन सबको ले धर्मराज चल पड़े (मुदित मन)॥

राजा, क्या कुछ आपसे अज्ञात है? सहज ही जो हमने कहा—उसको क्षमा कर दें। जय जीव! हम आपके कथन के अनुसार ही चलेंगे। ऐसा कहकर वे चले। १४४

पांडवों का प्रयाण—२६

उसके बाद तीसरे दिन छोटे भाई, आभरणभूषिता पांचालदीपिका, पार्श्वस्थ अनेक परिजन, सेना, वाद्य आदि के साथ प्रस्थान करके, वे धर्मराज, जो कभी बुरा नहीं सोचते थे, खलों के नगर की तरफ़ अपना श्रीनगर छोड़कर चले। नियति जो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तीङ्गदनैक् करुदाद तरुमक् कोमान्
तिरुनहर्विट् टहल्हित्ऱाल् तीया रूर्क्के !
नोङ्गियहन् ऱिडलाहुन् दन्मै युण्डो
नॆडुङ् गरत्तु विदिकाट्टम् नॆऱियि ऩिन्ऱे ? 145
नरिवहुत्त वलैयिऩिले तॆरिन्दु शिङ्गम्
नळुविविळुम् शिऱ्ऱॆऱुम्बाल् यानै शाहुम्
बरिवहुत्त वुडऱ्पुलियैप् पुळुवुङ् गॊल्लुम्
बरुङ्गाल मुणर्वोरु मयङ्गि निर्पार्
किरिबहुत्त वोडयिले मिदन्दु शॆल्लुम्
कीळ् मेला मेल्कीळाङ् गिळक्कु मेऱ्काम्
पुरिवहुत्त मुन्नूलार् पुलैयर् तम्मैप्
पोऱ्ऱिडुवर् बिदिवहुत्त पाळ्दि ऩन्ऱे 146

मालै वरुणनै—27

मालैप्पो दादलुमे मन्नन् शेनै
वळियडैयोर् पूम्बोळिलि ऩमर्न्द कालै
शेलैप्पोल् बिळियाळैप् पार्त्तन् कॊण्डु
शॆन्ऱङ्गोर् तानियिडत्तिल् पशुम्बुल् मेट्टिल्
मेलैप्पोम् परिदियिनैत् तॊळुदु कण्डाल्;
मॆल्लियलु मवन्ऱॊडैमेल् मॆल्लच् चायन्दु
पालैप्पोल् मॊळिपिदऱ्ऱ वबळै नोक्किप्
पार्त्तनमप् परिदि यॆळिल् विळक्कु हिन्ऱाल् 147
'पारडियो ! वानत्तिर् पुदुमै यॆल्लाम्
पण्मॊळी ! कणन्दोऱु माऱि माऱि

मार्ग दिखाती है, उस लम्बे मार्ग से कोई हटकर चल सकता है क्या ? १४५ जब नियति कुछ ठान लेती है, तब सियार के बिछाये हुए जाल में फिसलकर सिंह भी फंस जायगा; छोटी चींटी के हाथों हाथी मरेगा। धारीदार शरीरवाले व्याघ्र को कीड़ा भी मार देगा। भविष्यदर्शी भी भ्रम में पड़ जायंगे। सरिता में गिरि बह जायगा। नीच ऊँचा हो जायगा, ऊँच नीच। पश्चिम में बदल जायगी पूर्व दिशा। त्रिसूत्री यज्ञोपवीतधारी ब्राह्मण चांडालों की स्तुति करेगा। १४६

संध्या-वर्णन—२७

सायंकाल होते ही राजा की सेना रास्ते में एक फुलवारी में आकर ठहरी। तब 'शेल' मछली-सी आँखों वाली द्रौपदी को पार्थ ने अलग ले जाकर एक हरी घास वाले टीले पर पश्चिम में रहनेवाले सूर्य के स्तुति करते हुए दर्शन किये। तन्वंगी भी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

धर्मराज सोचते किसी का नहीं अहित थे।
तज निज-पुर खल-पुर की ओर हुए प्रस्थित थे॥
विधि (जिस जन के लिए) मार्ग जैसा दिखलाता।
उस पथ से हटकर न कभी कोई चल पाता॥ १४५॥
जैसा लेती ठान नियति वह हो जाता है।
(जो मानव चाहता नहीं वह हो पाता है)॥
सिंह स्यार के वितत जाल में फँस जाता है।
लघु चींटी के हाथों हाथी मर जाता है॥
धारीदार व्याघ्र कीड़े के द्वारा मरता।
है भविष्य - द्रष्टा भी भारी भ्रम में पड़ता॥
सरिता की धारा से गिरिवर बह जाता है।
नीच उच्च औ' ऊँचा नीचा बन जाता है॥
पूर्व दिशा पश्चिम की ओर बदल जाती है।
(सभी असंभव हो जाते मति चकराती है)॥
तीन सूत के ब्रह्म - सूत्र के धारी द्विजगण।
करते हैं चाण्डालों का वन्दन (अभिनंदन)॥ १४६॥

सायं-वर्णन—२७

संध्या होते ही राजा की सेना चलकर।
ठहरी मग के एक (मंजु) उपवन के भीतर॥
शेल - मीन - सी दृगवाली द्रौपदी मनोहर।
उसे ले गये पार्थ दूसरी ओर बुलाकर॥
हरी घास के एक (उच्च) टीले पर जाकर।
पश्चिम रवि के दर्शन किये (मधुर) संस्तुति कर॥
तन्वंगी भी पार्थ - गोद में सिर को रखकर।
दुग्ध - मधुर वाणी में लगी बोलने मनहर॥
करने लगा पार्थ तब रवि की छवि का वर्णन।
(सुन करके हो गया द्रौपदी का प्रमुदित मन)॥ १४७॥
अरी द्रौपदी ! देखो यह नभ प्रतिपल नूतन।
दृश्य बदलता है सुभाषिणी (देखो) क्षण - क्षण॥

उसकी गोद में सिर रखकर दूध के समान मधुर वाणी में कुछ आलाप करने लगी, तब पार्थ सूर्य के सौन्दर्य का वर्णन करने लगा। १४७ अरी ! देखो ! आकाश की सब नव नवता ! अरी सुभाषिणी ! क्षण-क्षण में दृश्य बदलता है। एक दृश्य दूसरे के समान नहीं रहता। बड़ा आनन्द देता है, देखो ! असंख्यक धन देने पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ओरडिमर् ऱोरडियो डॊत्त लिन्ऱि
उवहैयुऱ् नवनवमात् तोन्ऱुङ् गाट्चि;
यारडियिङ् गिवैपोलप् पुविय्यिन् मीदे
यॆण्णरिय पॊरुळ् कॊडुत्तु मियऱ्ऱ् वल्लार् ?
शीरडियाऱ् पळवदे मुनिवर् पोऱ्ऱुम्
शॆळुञ्जोदि वनप्पॆयॆलाञ् जेरक् काण्बाय् 148
कणन्दोऱुम् वियप्पुक्कळ् पुविय तोन्ऱुम्
कणन्दोऱुम् वॆव्वेऱु कनवु तोन्ऱुम्;
कणन्दोऱु नवनवमाङ् गळिप्पुत् तोन्ऱुम्;
करुदिडवुञ् जॊल्लिडवु मॆळिदो ? आङ्गे
कणन्दोऱु मॊरुपुदिय वण्णङ् गाट्टिक्
काळिपरा शक्ति अवळ् कळिक्कुङ् गोलम्
कणन्दोऱु मवळ्पिऱप्पा ळॆन्ऱु मेलोर्
करुदुवदन् विळक्कततै यिङ्गु काण्बाय् 149
अडिवानत् तेयङ्गु परिदिक् कोळम्
अळप्परिय विरैविनॊडु शुळलक् काण्बाय्;
इडिवानत् तॊळिमिन्नल् पत्तुक् कोडि
यॆडुत्तवऱ्ऱै यॊन्ऱुपड उरुक्कि वार्त्तु
मुडिवान् वट्टत्तैक् काळि याङ्गे
मॊय्कुळलाय् शुळऱ्ऱुवदन् मॊय्म्बु काणाय्
वडिवान् दॊन्ऱाह् तहडि रण्डु
वट्टमुऱच् चुळलुवदे वळैन्दु काण्बाय् 150
अमैदियॊडु पार्त्तिडुवाय् मिन्ने ! पिन्ने
अशैवुऱुमोर् मिन्शॆय्द वट्टु; मुन्ने
शमैयुमॊरु पच्चैनिऱ् वट्टङ् गाण्बाय्
तरणियिलिङ् गिदुपोलोर् पशुमै युण्डो ?

भी कौन इस संसार में ऐसा दृश्य रच सकता है ? सुन्दर मंत्रों द्वारा प्राचीन मुनिगण जिसकी स्तुति करते थे, उस घनी ज्योति का घना सौन्दर्य सब एक साथ देख लो। १४८ हर क्षण में भिन्न-भिन्न चमत्कार होते हैं। हर क्षण अलग-अलग स्वप्न (कल्पना)-दृश्य होता है ! भिन्न-भिन्न नव-नव आनन्द पैदा होता है ! उसे सोचना या कहना क्या आसान है ? वहाँ काली देवी क्षण-क्षण नयी-नयी झाँकी दिखाकर मुग्ध होती है। बड़े साधु लोग कहते हैं कि पल-पल में वह जन्म लेती है। उस तत्त्व की इधर व्याख्या देखो ! १४९ दूर क्षितिज पर सूर्य की परिधि अमाप तेजी से घूमती है, देख रही हो न ? कड़कनेवाले आकाश की चमकती दस करोड़ बिजलियों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यहाँ एक पग की न दूसरे से है समता।
(दृश्य देखकर) है आनन्द (अलौकिक) मिलता॥
इस जग में देने पर भी (अतिशय) अपार धन।
कर सकता है कौन दृश्य ऐसे का सर्जन॥
सुन्दर मन्त्रों द्वारा (सदा) पुरातन मुनिजन।
करते रहते थे जिसका वंदन (अभिनन्दन)॥
देखो रवि की घनी ज्योति की घनी सुघरता।
(निज - सौंदर्य - राशि से सबके मन को हरता)॥ १४८ ॥

हर-क्षण होते भिन्न-भिन्न विस्मय (अति मनहर)।
हर-क्षण होते भिन्न-भिन्न काल्पनिक दृश्यवर॥
हर-क्षण होता भिन्न-भिन्न नव-नव सुख सुंदर।
जिसे सोचना या कहना है नहीं सरलतर॥
क्षण-क्षण (अपनी) नयी-नयी झाँकी दिखलाकर।
मुग्ध वहाँ हो रही (महा-) कालिका (मनोहर)॥
जो कहते हैं (बड़े महात्मा) बड़े साधुजन।
पल-पल में वह करती अपना जन्म विधारण॥
उस (अज्ञेय) तत्त्व की व्याख्या (नभ में) देखो।
(पल-पल गाढ़ा होता जाता है तम पेखो)॥ १४९ ॥

देखो दूर क्षितिज पर रवि की परिधि मनोहर।
घूम रही अनुपम तेजी से (नभ में सत्वर)॥
गर्जन करनेवाले नभ के बीच चमकतीं।
दस करोड़ बिजलियाँ एक ही साथ दमकतीं॥
उनको पिघलाकर साँचे में (डाल-) ढालकर।
घुमा रही है काली, गोला सुघर बनाकर॥
घनकेशी! देखो झुककर (अतिशय अपार) बल।
सम आकृति के घूम रहे दो पत्र समुज्ज्वल॥ १५० ॥

हे बिजली! देखो तुम सावधान (मन) होकर।
है चमकीला पत्र घूमता पीछे (मनहर)॥
सम्मुख बनता हरे रंग का चक्र (मनोहर)।
हरियाली होती है ऐसी कहीं धरा पर?॥

को पिघलाकर साँचे में ढालकर कालिकादेवी उधर सुडौल गोला बनाकर घुमा रही है, हे घनकेशिनी! उसके बल को देखो! उधर झुककर देखो, दो सम आकार के पत्र घूम रहे हैं। १५० सावधान होकर देखो, हे बिजली! पीछे एक चमकदार पत्र घूमता है। सामने हरे रंग का एक चक्र बनता है! देखो, धरणी पर कहीं ऐसी हरियाली होती है क्या? उस चमकदार पत्र के असंख्यक वज्र पैर (ज्योति-रेखाएँ) बीच-बीच में दिखते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमैकुबिय मिन्वट्टिन् वयिर्क् काल्हळ्
ऍण्णिल्ला दिडैयिडैये यॆऴुदल् काण्बाय्
उमैकबिदै शॆय्हिन्ऱाळ् ऍऴुन्दु विन्ऱे
उरॆत्तिडुबोम् पल्लाण्डु वाऴ्ह ऍन्ऱे 151

वेऱु

पार्शुडर्प परिदियैच् चूऴवे पडर्मुहिल्
ऍत्तनै तीप्पट् टॆरिवत्त ! ओ हो !
ऍन्नडी यिन्द वन्नत् तियल्बुहळ् !
ऍत्तनै वडिवम् ! ऍत्तनै कलवै !
तीयिन् कुऴम्बुहळ् ! शॆऴुम्बोन् काय्च्चि
विट्ट बोडहळ् ! वॆम्मैतोन् ऱामे
ऍरिन्दिडुन् दङ्गत् तीबुहळ् ! पारडि !
नीलप् पॊय्हैहळ् !— अडडा नील
वन्न मॊन्ऱि लॆत्तनै वहैयडी !
ऍत्तनै शॆम्मै ! पशुमैयुङ् गरुमैयुम्
ऍत्तनै ! करिय पॆरुम् बॆरुम् पूदम् !
नीलप् पॊय्हैयिन् मिदन्दिडुन् दङ्गत्
तोणिहळ् शुडरॊळिप् पॊऱ्करै यिट्ट
करुम् जिहरङ्गळ् ! काणडि आङ्गु
तङ्गत् तिमिङ्गलम् ताम्बल मिदक्कुम्
इरुट्कदल् ! आहा ! ऍङ्गु नोक् किडिन्नुम्
ऒळित्तिरळ् ऒळित्तिरळ् वन्नक् कळञ्जियम् !' 152

वेऱु

शॆङ्गदिरत् तेवन् शिऱन्द पॊळियिन्नैत् तेऱ्हिन्ऱोम्— अवन्
ऍङ्ग ळऱिविन्नैत् तूण्डि नडत्तुह, ऍन्बदोर्— नल्ल

हैं, तो पलकें गिर जाती हैं —तो भी बीच-बीच में देख लो। उमादेवी कविता रच रही है ! उठ खड़े होकर हम यह मंगल-वचन कहें —युग-युग जिओ। १५१

(छन्द-परिवर्तन)

देखो ! सूर्य को घरकर कितने ही फैलनेवाले मेघ आग लगकर जल रहे हैं ! ओफ़ ! ओह ! क्या है इन विचित्र दृश्यों का हाल ! कितने रूप, कितने मिश्रण, आग के घोल, घने स्वर्ण को पिघलाकर बहाई हुई सरिताएँ ! बिना धाम दिये

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चमकदार वह पत्र, असंख्य वज्र चरण हैं।
बन प्रकाश - रेखाएँ जो करते विचरण हैं॥
बीच - बीच में वह प्रकाश - रेखाएँ लखकर।
गिर जाती हैं पलकें (चकाचौंध में पड़कर)॥
है कर रही उमा देवी कविता का सर्जन।
हम सब स्वागत हेतु करें उठ करके वन्दन॥
युग-युग जियो (प्राप्त हो तुमको लंबा जीवन)।
(इस प्रकार) हम करें (सदा) मंगलमय प्रवचन॥ १५१॥
फैले रवि को घेर (गगन में) जितने जलधर।
देखो वे जल रहे, लग गई आग (भयंकर)॥
हैं कितने विचित्र यह दृश्य अहा! (मनमोहन)।
कितने (सुन्दर) रूप और (हैं) कितने मिश्रण॥
(सुहा रहे हैं तरल) आग के घोल (मनोहर)।
नदियाँ गईं बहाई घना स्वर्ण पिघलाकर॥
बिना धाम के जलनेवाले स्वर्ण - दीप (वर)।
नाल वर्ण के देखो कितने भेद (मनोहर)॥
कितनी लाली, हरा और काला भी उस पर।
बड़े - बड़े हैं काले - काले भूत (भयंकर)॥
स्वर्ण - तरणियाँ तैर रही हैं नीले सर में।
ज्योति - किनारा झलक रहा है स्वर्ण - शिखर में॥
अन्धकार का सागर है (फैला नभ के तल)।
तैर रहे हैं उस पर अगणित स्वण - तिमिंगिल॥
जिधर देखते उधर (ललाम) प्रकाश - पुंज है।
वर्णों का है कोष (रंग का रम्य कुञ्ज है)॥ १५२॥

"तत्सवितुर्वरेण्यं,
भर्गो देवस्य धीमहि,
धियो यो नः प्रचोदयात्"।

"(हम सब मिलकर के) उस सविता को ध्याएँ।
(जिसकी कृपा - दृष्टि से) निज मति विमल बनाएँ॥

जलनेवाले स्वर्ण-दीप, देखो! अरी, नीले पोखर! रे, रे, इस नीले वर्ण के भी कितने भेद! कितनी लाली! हरा तथा काला भी कितना! काले बड़े-बड़े भूत! नीले तालाब में स्वर्ण-नौकाएँ तैरती हैं। ज्योतिप्रकाश के किनारे के साथ बड़े काले शिखर; अँधेरे का समुद्र; उस पर तैरनेवाले अनेक स्वर्ण तिमिंगिल आह! कहीं भी देखो—प्रकाशपुंज हैं। वर्णों के कोष हैं! १५२ 'तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मङ्गळम् वाय्न्द शुरुदि मॊळि कॊण्डु, वाळ्त्तिये— इवर्
तङ्ग ळिन्नङ्ग विरुन्द पॊळिलिडैच्, चार्न्दनर्— पिन्नर्
अङ्गव् विरवु कळिन्दिड वैहरै, यादलुम्— मन्नर्
पॊङ्गु कडलॊत्त शेनैहळोडु, पुरप्पट्टे— वळि
ऍङ्गुन् दिहळु मियर्कैयिन् काट्चियि, लिन्वुर्रे— कदिर्
मङ्गिडु मुन्नॊळि मङ्गु नहरिडै, वन्दुर्रार् 153

॥ तुरियोदन्न् शूळ्च्चिच् चरुक्कम् मुर्रिर्रु ॥

इरण्डावदु शूदाट्टच् चरुक्कम्

वाणियै वेण्डुदल्—28

तॆळिवुरवे यरिन्दिडुदल्, तॆळिवुतर, मॊळिन्दिडुदल् शिन्दिप् पार्क्के
कळिवळर् युळ्ळत्ति लानन्दक्, कन्नवुपल, काट्टल् कण्णीर्स्
तुळिवरउळ् ळुरुक्कुदल्इङ् गिवैयॆल्ला, नी यरुळुन् दॊळिल्ह ळन्रो ?
ऒळिवळरुन् दमिळ्वाणी ! अडियनेर्, किवैयन्नैत्तु मुदवु वाये 154

पाण्डवर् वरवेर्पु—29

अत्तिन मानह रत्तिनिल् वन्दनर्, आरियप् पाण्डव रॆन्रदु केट्टलुम्
तत्ति यॆळन्दन ऍण्णरुङ् गूट्टङ्गळ्, शन्दिहळ् वीदिहळ् शालैहळ् शोलैहळ्
ऍत्तिशै नोक्किनु मान्दनर् निरैन्दनर्; इत्तनै मक्कळु मॆङ्गणिरुन्दनर्
इत्तिन मट्टु मॆन्नवियप् पॆय्दुर, ऍळ्ळु विळर्किड मिन्रि यिरुन्दार् 155

यो नः प्रचोदयात्' —इस मंगलकारी श्रुति-वाक्य (गायत्री-मंत्र) से सूर्य की स्तुति करने के बाद वे उस बाग़ में गये, जहाँ उनके परिवार के लोग ठहरे थे। फिर वहीं वह रात कटी। सबेरा हुआ। राजा उमड़ते सागर-सी सेना लेकर चले। रास्ते भर में प्रकृति के सौंदर्य का आनन्द लूटते हुए सूर्य के प्रकाश के अस्त होने से पहले झुटपुटे में उस निष्प्रभ नगर में आ पहुँचे। १५३

दूसरा—द्यूत-केलि-सर्ग

वाणी की प्रार्थना !—२८

साफ़-साफ़ समझना, साफ़ सुलझाकर बात करना, विचारक के मन में बढ़ते आनन्द के साथ सुखमय अनेक स्वप्नों (कल्पनाओं) का दर्शन, हृदय को ऐसा प्रभावित करना कि आँसू की बूँदें निकल आएँ— आँसू की बूँदें निकलें। हे देवी तमिळ वाणी, ये सब तुम्हारी ही कृपा द्वारा होनेवाले कार्य हैं। बढ़ते प्रकाश की तमिळ वाणी ! मुझ दास को भी यह सब देकर सहायता पहुँचाओ। १५४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस सविता का तेज (परम) वरणीय मनोरम।
प्रेरित करे हमारी मति को (वह सर्वोत्तम)" ॥
यह मंगलमय वेद - मंत्र गायत्री - नामक।
पढ़कर करने लगे सूर्य की स्तुति (भय - शामक) ॥
फिर उस वन में गये जहाँ थे उनके परिजन।
कटी वहीं पर रात, प्रात फिर हुआ (सुशोभन) ॥
चले उमड़ते सागर - सी नृप सेना लेकर।
प्रकृति - छटा लूटते चले सानन्द मार्ग भर ॥
निष्प्रभ - नगर - प्रवेश किया झुटपुटे समय पर।
सूरज छिपने से पहिले ही पहुँचे (चलकर) ॥ १५३ ॥

॥ आह्वान सर्ग समाप्त ॥

दूसरा—द्यूत-केलि-सर्ग

वाणी की प्रार्थना—२८

साफ़ समझना, साफ़ बात करना सुलझाकर।
और विचारक के मन में सुख (अमित) बढ़ाकर ॥
दर्शन करना अगणित (सुन्दर) स्वप्न (मनोहर)।
हृदय आर्द्र हो निकलें जिससे अश्रु बिन्दु (वर) ॥
(हे सरस्वती !) जिस पर तुम करुणा करती हो।
उसके मन में ये सब बातें तुम भरती हो ॥
हे बढ़ते प्रकाश की तमिळ (सुपावन)-वाणी।
बनो सहायक सेवक को सब दो (कल्याणी !) ॥ १५४ ॥

पाण्डवों का स्वागत—२९

आज हस्तिनापुर में आये आर्य पाण्डु - सुत।
यह सुन अगणित जन जुड़ आये (अति प्रमोद-युत) ॥
चौराहों, वीथियों, बाग - सड़कों के ऊपर।
भरे (पड़े) थे (अगणित) लोग (सभी स्थानों पर) ॥
इतने लोग कहाँ थे अब तक (छिपे असंख्यक)।
हुए इकट्ठा, (सबके मन में) विस्मय - कारक ॥
तिल रखने के लिए कहीं भी स्थान नहीं था।
(लगी भीड़ ऐसी जिसका अनुमान नहीं था) ॥ १५५ ॥

पांडवों का स्वागत—२९

आर्य पांडव हस्तिनापुर में आ गये। यह सुनते ही अपार भीड़ लग गयी। चौराहे, वीथियां, सड़कें, बाग़ --जहां देखो, वहाँ लोग भरे थे। आज तक इतने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मन्दिर गोद मुळक्किन्नर् पार्प्पन्नर्, वन्ऱडन् दोळ्कोट्टि यार्त्तनर् मन्नवर्;
वेन्दिऱल् यानैयुन् देरुङ् गुदिरैयुम्, वीदिहळ् तोऱु मोलिमिहच् चेय्दन्न;
वन्दियर् पाडिन्नर् वेशैय राडिन्नर्;, वात्तियङ् गोडि वहैयि नोलित्तन्न
शेन्दिऱ वाऴु नहरिन्नि लत्तिन्नञ्, जेर्न्द वोलियेञ् चिरिदेन्न लामो ! 156

वालिकन् ऱन्ददीर् तेर्मिशै एऱियम्
मन्नन् युदिट्टिरन् तम्बियर् मादर्हळ्
नालिय लाम्बडै योडु नहरिडै
नल्ल पवन्नि येऴुन्द पोऴुदिन्निल्
शेलियल् कण्णियर् पोन्विळक् केन्दिडच्
चोरिय पार्प्पन्नर् कुम्बङ्गळ् एन्दिडक्
कोलिय पूमऴै पय्विडत् तोरणङ्
गोज्ज नहरेऴिल् कूडिय दन्ऱे 157

वेऱु

मन्नवन् कोयिलिले— इवर्, वन्दु पुहुन्दनर् वरिशैयोटे
पोन्नरङ् गिन्निलिरुन्दान्— कण्णिल्, पुलवनैप् पोय्निन्ऱु पोऱ्ऱियपिन्
अन्नव नाशि कोण्डे— उयर्, आरिय वीट्टुम नडिवणङ्गि
बिन्नय मुणर्किरुबन्— पुहळ्, वीरत् तुरोणनङ् गवन् पुदल्वन् 158
मऱुळ पेरियोर्हळ्— तमै, वाऴ्त्तियुळ् ळन्बोडु वणङ्गि निन्ऱार्;
कोऱ्ऱमिक् कुयर्कन्नन्— पणिक्, कोडियो निळैयवर् शहुन्नियोडुम्
पोऱ्ऱडन् दोळ्शरुवप्— पेरुम्, बुहळिन्नर् तळबिन्नर् महिळ्च्चि कोण्डार्;
नऱ्ऱवक कान्दारि— मुदल्, नारियर् तमैमुऱैप् पडितोऴुदार् 159

लोग कहाँ थे ? —बिस्मय में डालते हुए लोग इकट्ठा हुए। कहीं तिल रखने के लिए भी स्थान नहीं था। १५५ ब्राह्मणों ने मंत्रों के गीत उच्च स्वर में गाये। राजा (क्षत्रिय) लोगों ने अपनी कठोर विशाल भुजाएँ ठोंकीं। भयंकर बलवान हाथी, रथ तथा अश्व —सभी ने वीथी-वीथी में बहुत शोर मचाया। वन्दी जनों ने गीत गाये। वेश्याएँ नाचीं। करोड़ों तरह के बाजे बज उठे। सुन्दर श्रीदेवी के निवास के उस नगर में जो कोलाहल-ध्वनि उठी, क्या उसे कम कहा जा सकता है ? १५६ बाट्लोक द्वारा प्रदत्त रथ पर चढ़कर राजा युधिष्ठिर अपने कनिष्ठ बन्धुओं, स्त्रियों और चतुरंगिनी सेना के साथ नगर-यात्रा करके आये। तब 'शेल' मछली-सी आँखों वाली स्त्रियाँ स्वर्ण-दीप ले आयीं। श्रेष्ठ ब्राह्मणों ने पूर्ण कुम्भ प्रस्तुत किये। पुष्पवर्षा की गयी। तोरण डोल रहे थे। नगर का सौन्दर्य बढ़ गया था। १५७ वे लोग राजमहल में धूम के साथ आकर प्रविष्ट हुए। जो स्वर्ण-मंडप में रहे उन नेत्र-हीन राजा धृतराष्ट्र के पास जाकर वन्दना करने के बाद उन्होंने उनका आशीश लेकर, भीष्म के चरणों का वन्दन किया। उन्होंने धनुर्विद्यादक्ष कृपाचार्य, द्रोणाचार्य तथा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेद-मंत्र विप्रों ने ऊँचे स्वर में गाये।
ठोंकीं भूपों ने (सु-) विशाल कठोर भुजाएँ॥
रथ, तुरंग, गज (-राज) (महा-) बलवान भयंकर।
वीथी-वीथी में करते थे शोर प्रखर-तर॥
बन्दिजनों ने गाया (सुंदर) गान (मधुर-तर)।
लगीं नाचने वेश्याएँ (तरुणी अतिसुंदर)॥
कोटि भाँति के बाजे बजने लगे (मनोहर)।
(उमड़ पड़ा था मानो अनुपम सुख का सागर)॥
सुंदर श्रीदेवी का (शुभ) निवास वह (सु-) नगर।
कोलाहल-ध्वनि से गुंजित हो उठा प्रचुरतर॥ १५६॥
वाह्लीक द्वारा प्रदत्त (शुभ) रथ पर चढ़कर।
अनुजों और स्त्रियों को लेकर नृपति युधिष्ठिर॥
चतुरंगिणी चमू भी अपने साथ सजाकर।
यात्रा करने आये वे हस्तिनापुर-नगर॥
शेल-मीन-सी आँखों वाली स्त्रियाँ मनोहर।
स्वर्णिम दीप (सजाकर) लायीं (अगणित सुंदर)॥
भरे घड़े ले (सम्मुख) उत्तम ब्राह्मण आये।
डोल रहे थे तोरण, फूल गये बरसाये॥
इस प्रकार बढ़ गया नगर-सौंदर्य (अपरिमित)।
(सभी नगर-वासी जन हुए अतीव प्रफुल्लित)॥ १५७॥
धूम-धाम के साथ गये वे राज-भवन में।
अन्ध-नृपति धृतराष्ट्र-पास जा स्वर्ण-सदन में॥
वन्दन कर, लेकर उनका आशीष (मनोहर)।
भीष्म (पितामह) के चरणों में फिर प्रणमन कर॥
धनुर्वेद में दक्ष द्रोण-कृप के ढिग जाकर।
द्रोण-पुत्र औ' अन्य बड़ों के पास पहुँचकर॥ १५८॥
किया आन्तरिक-प्रेम-सहित इन सबका वन्दन।
खड़े हो गये विनय-सहित (अतिशय प्रमुदित-मन)॥
शकुनि, अनुज-सँग आया तभी क्रूर दुर्योधन।
गले मिला, यशवाले पाण्डव हुए मुदित-मन॥
शुभ्र तपस्विनि गांधारी का करके वन्दन।
किया समस्त देवियों का क्रम से अभिनन्दन॥ १५९॥

उनका पुत्र-- १५८ और अन्य बड़ों को आन्तरिक प्रेम के साथ वन्दना की तथा विनय के साथ वे खड़े रहे। क्रूर दुर्योधन ने अपने छोटे भाइयों तथा शकुनि के साथ आकर उन्हें गले से लगा लिया, तो ये यशस्वी (पांडव) भी बहुत मुदित हुए। उन्होंने श्रेष्ठ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुन्दियु मिळङ्गॊडियुम्— वन्दु, कूडिय मादर्तम् मॊडुकुलवि
मुन्दिय कदैहळ् शॊल्लि— अन्बु, मूण्डुरै याडिप्पिन् पिरिन्दुविट्टार्;
अन्दियुम् पुहुन्ददुबाल्— पिन्नर्, ऐवरु मुडल्वलित् तॊऴिल् मुडित्ते
शन्दियुञ् जबङ्गळुम् शॆय्— दङ्गु, शारुमिन् नुणबमु दुण्डदन्पिब् 160
शन्दन मलर्पुनैन्दे— इळन्, दॆयलर् वीणैकॊण् डुयिरुरुक्कि
विन्दैकॊळ् पाट्टिशैप्प— अदै, विऴैवॊडु केट्टनर् तुयिल् पुरिन्दार्
बन्ददॊर् तुन्बत्तिनै— अङ्गु, मडित्तिड लन्ऱिप्पिन् बरुन्दुयर्क्कै
शिन्दनै युळ्ळ्वारो ?— उळच्, चिदैवित्मै यारियर् शिऱप्पन्ऱो ? 161

पाण्डवर् सबैक्कु वरुदल्—30

पाणर्हळ् तुदिकूर्— इळम्, पहलव नॆऴुमुनर्त् तुयिलॆऴुन्दार्;
तोणलत् तिणैयिल् लार्— तॆय्वन्, तुदित्तनर्; शॆय्यपॊर् पट्टणिन्दु
पूणणिन् दायुवङ्गळ्— पल, पूण्डुपॊऱ् चबयिडैप् पोन्दनराल्;
नाणमिल् कवुर वरुन्— दङ्गळ्, नायह नॊडुमङ्गु वीऱ्ऱि रुन्दार् 162
वीट्टुमन् ऱानिरुन्दान्— अऱ, विदुरनुम् पार्प्पनक् कुरवर्हळुम्
नाट्टुमन् दिरिमारुम्— पिऱ, नाट्टिनर् पलपल मन्नर्हळुम्
केट्टिनुक् किरैयावान्— मदि, कडुन्दुरि योदसन् किळैयिनरुम्
माट्टुरु नण् बर्हळुम्— अन्द, वान् पॆरुञ् जवैयिडै बयङ्गि निन्ऱार् 163

तपस्विनी गांधारी से लेकर क्रम से सभी देवियों का अभिनन्दन किया। १५९ कुन्ती तथा बाललता द्रौपदी भी आयीं तथा वे सभी स्त्रियों से मिलीं। पुरानी कहानियाँ कहते हुए सभी ने प्रेम के साथ वार्तालाप किया। फिर वे अपने-अपने स्थान चली गयीं। संध्या हो गयी, अतः पांडवों ने व्यायाम किया, फिर बाद में संध्या-वन्दन, जप आदि पूरा करके भोजन किया। १६० चन्दन, पुष्प आदि धारण करके छोटी उम्र की ललनाओं ने ऐसा गीत गाया और वीणा-वादन किया कि सुननेवालों के प्राण द्रवित हो उठे। पांडव उसको सुनते हुए सो गये। दुख हो जाए तो उसका नाश करते हैं— नहीं तो, आने से पहले उसकी चिन्ता करके क्या घुलते रहें? क्या चित्त की स्थिरता आर्यों की विशेषता नहीं है? १६१

पांडवों का सभा में आगमन—३०

भाटों के यशोगान गाते, बाल रवि के उगने के पहले ही वे निद्रा तजकर उठे। भुजबल में अनुपम उन पांडवों ने ईश्वर-वन्दना की। श्रेष्ठ कौशेय वस्त्र तथा आभरण पहने; विविध हथियारों से लैस होकर वे सभा में आये। निर्भंजन कौरव भी अपने नायक के साथ वहाँ विराजमान थे। १६२ भीष्म भी थे। धर्मशील विदुर, ब्राह्मण गुरु, देश के मंत्री और अन्य देशों के अनेक राजा लोग, नाश का ग्रास बननेवाले मतिभ्रष्ट दुर्योधन के परिवार के लोग, पास में रहनेवाले मित्र —सब उस श्रेष्ठ सभा में शोभायमान रहे। १६३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बाल - लता द्रौपदी तथा कुन्ती भी आयीं।
सभी स्त्रियों से औ' उनसे मिलकर (हरषायीं) ॥
(सभी) पुरानी कहानियाँ कह - कह (हँस - हँस) कर।
किया सभी ने (मिलकर) वार्तालाप (मनोहर) ॥
फिर वे (सब थीं) चली गईं (निज-निज स्थानों पर)।
इतने में आ गयी (मनोरम) संध्या (सुंदर) ॥
किया पाण्डवों ने व्यायाम (हुआ हलका तन)।
फिर सन्ध्या - वन्दन, जप करके पाया भोजन ॥ १६० ॥
(पान - सुपारी) चंदन, पुष्प आदि धारण कर।
(पाण्डव गये शयन - मंदिर में उठकर सत्वर) ॥
वे पांडव सो गये सभी सुन ऐसा गायन।
लघु ललनाओं का गान पसीजे जिससे मन ॥
जब दुख आयेगा तब उसका हम नाश करेंगे।
पहले से कर चिन्ताएँ घुट - घुट न (मरेंगे) ॥
आर्यों की विशेषता है मन की सुस्थिरता।
(छोड़ नहीं सकते हम अपने मन की दृढ़ता) ॥ १६१ ॥

पाण्डवों का सभा में आगमन—३०

भाटों द्वारा गाये यशोगान सुन (सुन्दर)।
सूर्योदय से पूर्व उठे वे निद्रा तजकर ॥
अनुपम भुज-बलवालों ने कर ईश्वर - वन्दन।
श्रेष्ठ रेशमी वस्त्र पहिन, धारण कर भूषण ॥
फिर अपने तन पर अनेक हथियार सजाये।
(सब प्रकार से सजकर) सभा (-भवन) में आये ॥
(हुए उपस्थित) कौरव लज्जाहीन (जहाँ पर)।
हुए विराजित निज - नायक के साथ वहाँ पर ॥ १६२ ॥
भीष्म (पितामह) थे धर्मज्ञ विदुर (थे शोभित)।
ब्राह्मण गुरु थे द्रोण, देश के मंत्री (राजित) ॥
भिन्न - भिन्न देशों के विविध नृपति (थे भ्राजित)।
(सभा - भवन था सभ्य - सदस्यों द्वारा सज्जित) ॥
और नाश का ग्रास (शीघ्र ही) बननेवाले।
बुद्धि - भ्रष्ट दुर्योधन के कुल - जन (मतवाले) ॥
और पास में रहनेवाले मित्र (प्रफुल्लित)।
उस (अति) ऊँची श्रेष्ठ सभा में थे सब शोभित ॥ १६३ ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शूदुक् कळैत्तल्—31

पुन्बॊळिर् कवर्वतिल्— इन्दप्, पुविमिशै यिणैयिलै यॆनुम्पुहळ्ळात्
नन्ऱरियाच् चहुनि— शबै, नडुविनि लेऱॆनक् कळित्तिरुन् दान्;
बॆन्ऱिकॊळ् पॆरुञ्जू दर्— अन्द, विविञ्जवि शित्तिर शेनतु डन्
कुन्ऱशत् तियविर बत्— इदळ्, कूर्बरु मित्तिरन् शयनॆन् बार् 164
शालबु मञ्जुतरुम्— कॆट्ट, शदिक्कुणत्तार् पल मायम्वल् लोर्
कोलनर् चबॆतनिले— वन्दु, कॊक्करित् तार्प्परित् तिरुन्दन राल्;
मेलवर् तमैवणङ्गि— अन्द, बॆन्दिऱर् पाण्डव रिळैञ्ऱतमै
आलमुर् ऱिडत्तळविच्— चॆम्बॊन्, नादनत् तमर्न्दवप् पॊळुदिनिले 165
शॊल्लुहिन् ऱान्शहु निः— 'अऱत्, तोल्ऱलुन् बरविनैक् कात्तुळर्काण्
मल्लुऱ तडन्दोळार्— इन्द, मन्नव रनैवरुम् नॆडुम् बॊळुबा;
बिल्लुऱ पोर्त्तॊळिलार्— पुवि, वॆन्ऱुतङ् गुलत्तिनै मेम्बडुत् तीर्!
बल्लुऱ शूदॆनुम् पोर्— तनिल्, बलिमैहळ् पार्क्कुडुम् बरुदियॆन्ऱान्' 166

तरुमन् मऱुत्तल्—32

तरुमनङ् गिबैशॊल्बात्— 'ऐय!, शबियुऱ शूदिनुक् कॆनैयळैत् ताय्;
पॆरुमैबिङ् गिबिलुण्डो?— अऱप्, पॆऱ्ऱियुण्डो? मऱप् पोडुळ बो?

द्यूत में निमन्त्रण देना—३१

नीच द्यूत-कर्म में, दुनिया में अद्वितीय यश का भाजन, भला न जाननेवाला शकुनि सभामध्य में ऋषभ (या सिंह) के समान मस्ती के साथ बैठा रहा। वहाँ विजयी तथा बड़े द्यूती विविंशति, चित्रसेन, पुरुमित्र, जय, आदि १६४ बहुत भयंकर कुटिल षड्यंत्र करनेवाले अनेक माया में प्रवीण --सब लोग उस चित्रमय सभा में आकर कोलाहल करते हुए डींग मारते रहे। पराक्रमी पांडवों ने बड़ों को नमस्कार किया; छोटों को हृदय से लगा लिया। फिर वे श्रेष्ठ स्वर्णासन पर बैठे। तब— १६५ शकुनि बोला-- हे धर्मपुत्र! विशाल-मल्ल-भुज ये राजा लोग बहुत देर से आपके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। धनुर्युद्ध-कर्म से आपने भूमि जीतकर अपने कुल को श्रेष्ठता प्रदान की है। गोट रखकर जो खेला जाता है, उस द्यूत में आपका जोर देखें। आइये। १६६

धर्म का इनकार करना—३२

उधर धर्मपुत्र यों बोले-- आर्य! साजिश-भरी द्यूत में आपने मुझे बुलाया है! इसमें कोई बड़ाई है? क्या धर्म की उपलब्धि है या वीरता का गौरव है? आप मन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

द्यूत में निमंत्रण देना—३१

नीच द्यूत - क्रीडा में जो (सबका नायक बन)।
अद्वितीय यश का था (सारे) जग में भाजन ॥
नहीं किसी का भला चाहनेवाला शकुनी।
सभा - मध्य था ऋषभ - तुल्य मतवाला शकुनी ॥
विजयी बड़े - बड़े थे वहाँ जुआरी (अगणित)।
चित्रसेन, पुरुमित्र, विविंशति, जय (अति विश्रुत) ॥ १६४ ॥

बड़े भयंकर मायाओं में दक्ष (निराले)।
अवगुण अन्वित षड्यंत्रों को करनेवाले ॥
अतिविचित्र उस सभा (भवन) में ये सब आकर।
अपनी - अपनी डींग हाँकते शोर मचाकर ॥
पाण्डु - सुतों ने बड़े जनों को नमस्कार कर।
हृदय लगाकर छोटों को (दे करके आदर) ॥
फिर वे बैठे सभी श्रेष्ठ स्वर्णिम - आसन पर।
(जैसे बैठे पंचदेव हों सिंहासन पर) ॥ १६५ ॥

बोला शकुनि— "विशाल मल्ल-भुज ये नरपति-गण।
करते हैं आपकी प्रतीक्षा (अति उत्सुक - मन) ॥
धनुर्युद्ध से (आज) आपने भूमि जीतकर।
अपने कुल को की प्रदान श्रेष्ठता (मनोहर) ॥
अब जो खेला जाता है गोटें रख - रखकर।
द्यूत - कर्म में देखें ज़ोर आपका (श्रीवर !)" ॥ १६६ ॥

धर्म का इनकार करना—३२

धर्मपुत्र बोले उससे यों— "अरे आर्य (वर !)।
इस छल भरी द्यूत - क्रीडा में मुझे बुलाकर ॥
कौन बड़ाई इसमें मिलती ? (कहें मान्यवर !)।
क्या मिलता है धर्म ? बतायें मुझे बुद्धिवर !) ॥
इसमें क्या है कहो वीरता का (गुरु) गौरव ?।
मन में रखते मर्म (देखकर मेरा वैभव) ॥
आप पसन्द नहीं करते हैं मेरा जीवन।
(भली भाँति से बात) जानता हूँ यह (निज-मन) ॥

में मर्म (भेद) रखते हैं ! आप हमारा जीना पसन्द नहीं करते --यह मैं जानता हूँ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वरुमनिन् मनत्तुडै याय्— ऍङ्गळ्, वाऴ्विनै युहन्दिलै यॆनलऱिवेन्;
इरुमैयुङ् गॆडुप्पदु वाम्— इन्द, इऴितॊऴि लालॆमै यऴित्तलुऱ् ऱाय्' 167

शकुनियिन् ऍच्चु—33

कलकल वॆनच्चिरित् तान्— पऴिक्, कवऱ्ऱैयोर् शात्तिर मॆनप् पयिन् ऱोन्;
'पलपल मॊऴिहुव देन् ?— उनैप्, पार्त्तिव नॆन्ऱॆण्णि यऴैत्तुविट् टेन्
'निलमुऴ दाट्कॊण् डाय्— तनि, नी यॆनप् पलर् शॊलक् केट्टद नाल्
शिल षॊरुळ् विळैयाट्टिऱ्— चॆलुञ्, जॆलविनुक् कळिहलै ऍनिनैन् देन् 168
पारद मण्डलत्तार्— तङ्गळ्, पदियॊरु पिशुननॆन् ऱुरिवेनो ?
शोरमिङ् गिदिलुण्डो ?— तॊऴिल्, शूदॆनि लाडुन ररशरन् ऱो ?
मारद बीरर्मुन्नॆ— नडु, मण्डबत्ते पट्टप् पहलिनिले
शूर शिहामणि ये !— निन्ऱन्, शॊत्तिनैत् तिरुडुव मॆनुङ्गरुत् तो ? 169
अच्चमिङ् गिदिल्वेण्डा— विरैन्, दाडुव नॆडुम्बॊऴ दायिन दाल्;
कच्चॆ यॊर् नाऴिहै या— नल्ल, कायुडन् विरिन्दिङ्गु किडन्दिडल् काण्!
निच्चयम् नीवॆल् वाय्;— वॆऱ्ऱि, निनक्कियल् पायिन दऱिया यो ?
निच्चय नीवॆल् वाय्— पल, निनैहुव देन् ? कळि तॊडङ्गुहॆन्' ऱान् 170

यह दोनों (इह-परलोक) का बिगाड़नेवाला है। आप इस नीच कर्म द्वारा हमारा नाश करने चले हैं। १६७

शकुनि का ताना देना—३३

निंद्य द्यूत को शास्त्र मानकर जिसने अभ्यास किया था, वह शकुनि कलकल ध्वनि में हँसा और बोला— क्या कहूँ बहुत बातें ? मैंने आपको पृथ्वीपति समझकर निमन्त्रण दे दिया। बहुतों ने कहा था कि आपने अकेले ही सारी पृथ्वी को अधीन बना लिया है। इसलिए सोचा कि खेल में कुछ वस्तुएँ खो भी दें, तो आप उस हानि को लेकर नहीं मरेंगे। १६८ मैं क्या जानता कि भारतमंडल का पति एक कंजूस है ! (संस्कृत का 'पिशुन' तमिऴ में आकर कंजूस या कृपण का पर्यायवाची बन गया है) द्यूत कर्म नीच है तो खलनेवाले राजा लोग नहीं हैं ? (तब वह कैसे नीच रहा ?) महारथी वीरों के सामने, भरी सभा में और मध्य दिन में, हे शूर शिखामणि ! क्या आप यह सोचते हैं कि हम आपके धन को चुरा लेंगे ? १६९ इसमें कोई डर न करें। बहुत समय बीत गया। आइये, तुरन्त खेलें। चौपड़ गोटों के साथ बहुत देर से बिछी पड़ी है ! देख लीजिए। आप अवश्य जीत लेंगे। यों तो जीत आपके स्वभाव में (लिखी गयी) है, क्या यह नहीं देखते ? आप निश्चय ही जीतेंगे। बहुत सोचना क्यों ? खेल आरम्भ करें। —शकुनि ने ऐसा कहा। १७०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अयश, पराजय देकर नरक गिरानेवाला।
द्यूत - कर्म है दोनों लोक मिटानेवाला ॥
(द्यूत-) कर्म यह महानीच है इसके द्वारा।
करने चले आप हैं (श्रीवर !) नाश हमारा" ॥ १६७ ॥

शकुनि का ताना देना—३३

निन्द्य द्यूत को शास्त्र मानकर पढ़नेवाला।
कलकल ध्वनि में हँस बोला शकुनी (मतवाला) ॥
"(अरे ! अधिक) क्या कहूँ बहुत बातें (बढ़ - बढ़कर)।
दिया निमंत्रण मैंने तुमको भूप समझकर ॥
था बहुतों ने कहा अकेले (अपने भुज - बल)।
किया अधीन आपने अपने, सब भू - मंडल ॥
सोचा था यदि द्यूत-कर्म में कुछ खो देंगे।
तो सह लेंगे हानि, न उसके लिए मरेंगे ॥ १६८ ॥

मैं क्या जानूँ ? जो है भारत - मंडल का पति।
वह है (अति) कंजूस (और है महा - क्षुद्र - मति) ॥
शूर शिखामणि ! मध्य दिवस में (द्योतित क्षण में)।
महारथी वीरों के सम्मुख सभा - भवन में ॥
क्या भय है— आपका सभी हम हर लेंगे धन।
द्यूत कर्म क्यों नीच ? खेलते इसे भूप - गण ॥ १६९ ॥

बहुत समय हो गया डरें इससे मत (श्रीवर !)।
आओ खेलें तुरत (करें मत देर मान्यवर !) ॥
बहुत देर से बिछी हुई है चौपड़ (नृपवर !)।
देख लीजिए. रखी हुई हैं गोटें उस पर ॥
अरे ! आपके मस्तक पर जीत ही लिखी है।
निश्चय जीतें आप, बात क्या नहीं दिखी है ? ॥
करें खेल आरम्भ, बहुत सोचना व्यर्थ है।
—इस प्रकार शकुनी बोला (अतिशय अनर्थ है) ॥ १७० ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तरुमनिन् पतिल्—34

वेऱु

तोल्वि लैक्कुप् पशुविनैक् कॊल्लुम्, तुट्ट निव्वुरै कूऱुदल् केट्टे
नूल्वि लक्किय शॆय्हैह ळञ्जुम्, नोन्बि नोनुळ नोन्दिवै कूऱुम्
'तेवलप् पॆयर् मायुनि वोनुम्, शॆय्य केळ्वि यशिदनु मुन्नर्
काबलर्क्कु विदित्त दन् नूलिऱ्, कवऱु नञ्जॆनक् कूऱिनर् कण्डाय्! 171
'वम्ज हत्तिनिल् बॆऱ्ऱियै वेण्डार्, मायच् चूदैप् पऱियॆनक् कॊळ्वार्
भञ्ज लिन्ऱिच् चमर्क्कळत् तेऱि, याक्कुम् वॆऱ्ऱि यदनै मदिप्पार्
तुञ्ज नेरिनुन् दूय शॊल् लन्ऱिच्, चॊल्मि लेच्चरैप् पोलॊन्ऱुञ् जॊल्लार्
मिञ्जु शीर्त्ति कॊळ् पारद नाट्टिल्, मेवु मारिय रॆन्ऱनर् मेलोर् 172
आदला लिन्दच् चूदिनै वेण्डेन्!, ऐय शॆल्वम् पॆरुमै यिवऱ्ऱिन्
काद लालर शाऱ्ऱुव नल्लेन्, काळ्त्त नल्लर् मोङ्गवु माङ्गे
ओद लानु मुणर्त्तुद लानुम्, उण्मै शान्ऱ कलैत्तॊहै यावुम्
शाद लिन्ऱि बळर्त्तिडु माऱुम्, शहुनि यानर शाळुदल् कण्डाय् 173
ऍन्नै वञ्जित्तॆन् शॆल्वत्तैक् कॊळ्वार्, ऍन्ऱ नक्किडर् शॆय्ब वरल्लर्
मुन्नै निऱ्ऱबॊर् नान्मऱै कॊल्वार्, मूदु णर्बिऱ् कलैत्तॊहै माय्प्पार्
पिन्नै यॆन्नुयिर्प् पारद नाट्टिल्, पीडै शॆय्युङ् कलियै यळैप्पार्;
निन्नै मिक्क पणिबॊडु केट्पेन्, नॆञ्जिऱ् कॊळ्हैयै नीक्कुदि' यॆन्ऱान् 174

धर्म का उत्तर—३४

(छन्द-परिवर्तन)

चमड़े के दाम के लालच में गाय को मारनेवाले दुष्ट का यह वचन सुनकर शास्त्र-निषिद्ध कर्मों से डरनेवाले धर्मराज ने मन में दुखी होकर कहा कि देवल नाम के महामुनि ने राज्य-शास्त्र में द्यूत को विष बताया है। —यह जान लें। १७१ और वह भी जान लें कि अति प्राचीन भारत के वासी आर्य लोग कपट की जीत नहीं चाहते। वे वंचक द्यूत को निंद्य मानते हैं। निर्भय होकर युद्धरंग में चढ़ जाकर जो जीत पायी जाती है, उसी को मान देते हैं। मरना भी पड़े, तो भी वे पवित्र वचन को छोड़कर म्लेच्छ के समान कोई बात नहीं बोलते। —यही बड़े लोग कहते हैं। १७२ इसलिए यह द्यूत मैं नहीं चाहूँगा। आर्य! मैं ऐसा नहीं हूँ, जो धन तथा बड़ाई के प्रेम से शासन करूँ! पक्का सद्धर्म बढ़े और अध्ययन तथा अध्यापन से सच्चे शास्त्रों का समूह विना मिटे वर्द्धित हो —इस रीति से, हे शकुनि, मेरा शासन चलता है। —आप यह जान लें। १७३ मुझे वंचित करके, जो मेरा धन हरते हैं, वे मेरे लिए हानिकारी नहीं हैं। पर जो पुरातन चारों वेदों को नष्ट करते हैं, वे ही मेरे प्यारे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

धर्मराज का उत्तर—३४

चमड़े के मूल्य के (महा) लालच में (पड़कर)।
मार रहा जो गाय वचन उस खल का सुनकर॥
शास्त्र-निषिद्ध कर्म से डरनेवाले (नृपवर)।
धर्मराज बोले मन में (अति) दुःखित होकर॥
देवल नामक मुनि ने राज्यशास्त्र के भीतर।
"कहा द्यूत को विष-समान है, जानें (श्रीवर !)॥ १७१॥

अति प्राचीन-(देश)-भारतवासी (सु-) आर्यजन।
नहीं कपट की जीत चाहते, जानें यह (मन)॥
कपट-द्यूत को (सब प्रकार से) निन्द्य मानते।
(कभी द्यूत-क्रीडा की नहीं कुठान ठानते)॥
निर्भय होकर युद्ध-भूमि में अरि पर चढ़कर।
जो मिलती है विजय मान उसको देते (नर)॥
बड़े लोग यह कहते चाहे वे मर जाएँ।
पूत-वचन तज म्लेच्छ-तुल्य बातें न बनाएँ॥ १७२॥

जो धन और बड़ाई के लोभ में लगा मन।
करता (स्वार्थ दृष्टि से किसी राज्य का) शासन॥
इस प्रकार का, आर्य ! नहीं जानें मुझको जन।
जुआ नहीं खेलना चाहता मैं इस कारण॥
सच्चे शास्त्रों का होवे अध्ययनाध्यापन।
शास्त्र-ज्ञान मत मिटे, धर्म का होवे वर्धन॥
इस प्रकार से शकुनि ! हमारा चलता शासन।
(भलीभाँति से) आप जान लें यह (अपने मन)॥ १७३॥

ठग करके जो हर लेते हैं मेरा (सब) धन।
नहीं हानिकारक हैं मेरे हित ऐसे जन॥
जो करते (वि-) नष्ट हैं चारों वेद पुरातन।
हैं कलि-काल बुलाते (जग में) ऐसे ही जन॥
मेरे प्यारे भारत में फैलाते अवगुण।
सविनय करता यही आपसे (आर्य !) निवेदन॥
त्याग दीजिए भ्रान्त धारणा (जो ठानी मन)।
(इस प्रकार से सुख पायेंगे हम दोनों जन)॥" १७४॥

भारत में बुराई लानेवाले कलिकाल का आह्वान करते हैं। आपसे बड़ी विनय के साथ यह माँगता हूँ कि अपने मन की धारणा छोड़ दीजिए।

CC-0. Indira Gandhi National Centre for the Arts. Contributed by Husain, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शकुनि वल्लुक् कळैत्तल्—35

वेरु

'शात्तिरम् पेशुहिन् ऱाय्'— अंनत्, तळल्पडु बिळियोडु शकुनिशोल् बान्
'कोत्तिरक् कुलमद् तर्— पिऱर्, कुऱैपडत् तम्बुहळ् कूऱुव रो ?
नात्तिऱन् मिहबुडै याय् !— अंनिल्, नम्मबर् कात्तिडुम् पळ्ळबळक् कै
बात्तिरम् मऱन्दुबिट् टाय्;– मन्नर्,बल्लिमुक् कळैत्तिडिल् मऱुप्पदुण्डो? 175
तेर्न्दबम् वंन्ऱिडु बान्;– तोळिल्, तेर्च्चियिल् लाबबम् तोऱ्ऱिडु बान्;
नेर्न्दिडुम् बाट्पोरिल्— कुत्तु, नेरियऱिन् दबन्वेलप् पिऱनळि बान्;
ओर्न्दिडु शात्तिरप् पोर्— तनिल्, उणर्न्दबम् वंन्ऱिड बुणरा दान्
शोर्न्दळि वैय्दिडु बान्;— इबै, शूदंन्ऱुम् जदियंन्ऱुम् जोल्बा रो ? 176
वल्लबम् वंन्ऱिडु बान्;— तोळिल्, बन्मै यिलादबम् तोऱ्ऱिडु बान्
नल्लब नल्ला दान्— अंन, नाणमिलार् शोलुङ् गदंबेण् डा;
बल्लबर् शेय्दिडबे— इन्द, मन्नर्मुन् नेमिनै यळैत्तुबिट् टेन्
शोल्लुह बरुब बुण्डेल्— मनत्, तुणिमिल येलबुम् जोल्लु' हेन्ऱान् 177

तरुमन् इणङ्गुदल्—36

वैय्यदान् बिदियै निनैम्बान्, विलक्कोणादद् मंन्ब दुणर्न्दोन्;
पोय्य दाहुम् जिऱुबळक् कोन्ऱैप्, पुलनि लादबर् तम्मुडम् बाट्टै

शकुनि का द्यूत के लिए बुलाना—३५

आग उगलनेवाली आँख के साथ शकुनि ने उत्तर में कहा— शास्त्र बघारते हो ? सद्गोत्र में उत्पन्न कुलीन राजा लोग दूसरों को नीचा दिखाते हुए अपनी डींग क्या हाँकेंगे ? हे जिह्वाचतुर, तो भी हमारे लोग जिस पुरातन रीति का पालन करते हैं, उसको भूल गये हो ! द्यूत के लिए निमन्त्रण दिया जाय, तो राजा लोग क्या इनकार करेंगे ? १७५ जो कुशल है, वह जीत लेगा ! जो दक्ष नहीं है, वह हारेगा। जब तलवार का युद्ध होता है, उसमें वार की कला जो जानता है, वह जीतेगा तथा दूसरा नष्ट हो जायगा। शास्त्र-समर में बेहतर ज्ञान रखनेवाला जीतेगा तथा अज्ञानी हारकर मिटेगा। क्या इसको कोई जुआ या साजिश कहेगा ? १७६ समर्थ जीत लेगा। कार्य में जो चातुर्य नहीं रखता, वह हार जायगा। उसे 'भला नहीं' कहना निर्लज्जों की मन-गढ़ंत कहानी है। वह मत कहो। इन राजाओं के सामने ही मैंने तुम्हें 'द्यूत-समर' करने के लिए निमन्त्रण दिया है। आओ, (आना हो) तो कहो। मन में साहस नहीं हो, तो वह भी कह दो। —शकुनि ने यह कहा। १७७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शकुनि का द्यूत के लिए बुलाना—३५

शकुनी बोला ज्वालावर्षी नयनों वाला।
"शास्त्र-ज्ञान (हो तुम) बघारते (अजब निराला)॥
(शुभ) सद्-गोत्रोत्पन्न कुलीन (मान्य) भूपति-गण।
डींग नहीं हाँकते अन्य को नीच मान (मन)॥
हे हे जिह्वा - चतुर! हमारे (कुल के सब) जन।
जिस प्राचीन रीति का करते हैं (परि-) पालन॥
भूल गये वह रीति (धर्म के होकर नंदन)।
दिया जाय यदि द्यूत खेलने-हेतु निमंत्रण॥
तो करते इनकार नहीं (जो धार्मिक) नृपजन।
(ये सब बातें सोच-विचार करो निश्चय मन)॥ १७५॥
द्यूत-खेल में (सदा) जीतता कुशल (मनुजबर)।
(और) वही हारता (द्यूत में) जो न दक्ष नर॥
शस्त्र-समर में सदा जीतता उत्तम ज्ञानी।
और हारकर मिटता है (सदैव) अज्ञानी॥
मूर्ख व्यक्ति ही इसे जुआ या कपट कहेगा।
पर सद्बुद्ध न ऐसी बातें सहन करेगा॥ १७६॥
(जो) समर्थ (है वह) जीतेगा (मुद धारेगा)।
कार्य-चतुर जो नहीं वही (निश्चय) हारेगा॥
'भला नहीं वह'—इस प्रकार की बातें करना।
निर्लज्जों की (मन) गढ़ंत है कथा (-कल्पना)॥
इन राजाओं के सम्मुख ही मैंने श्रीमन्!।
दिया आपको द्यूत खेलने हेतु निमंत्रण॥
यदि तुमको आना है तो वैसा बतलाओ।
यदि साहस है नहीं, मुझे वैसा जतलाओ॥ १७७॥

धर्मराज का सम्मत होना—३६

सोच दुष्ट विधि को यह धर्मपुत्र ने माना।
है दुर्वार धर्म (यह सबने सदा बखाना)॥
झूठी रीति, मूढ़ की सम्मति (द्यूत रचाना)।
कभी (भ्रमित) आर्यों ने उसे धर्म था माना॥

धर्म का सम्मत होना—३६

दुष्ट नियति को सोचकर धर्मपुत्र ने माना कि धर्म दुर्वार है। वह झूठी रीति थी। मूढ़ों की सम्पत्ति थी। उसे आर्य ने अपने मन में कर्तव्य धर्म मान लिया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐय नैज्जि लऱमॅनक् कॊण्डान्, ऐयहो ! अन्दनाण् मुद लाहत्
तुय्य शिन्दैय रॆत्तनै मक्कळ्, तुन्ब मिव्वहै यॆय्दिन रम्मा ! 178
मुन्बि रुन्ददॊर् कारणत् ताले, मूडरे, पॊय्यै मॆय्यॆन लामो ?
मुन्बंनच् चॊल्लुङ् गाल मदऱ्कु, मूडरे यॊर् वरैयऱै युण्डो ?
मुन्बॆन्नच् चॊल्लिन् नेऱ्ऱमुन् बेयाम्; मून्ऱु कोडि बरुडमु मुन्बे;
मुन्बि रुन्दॆण्णि लाडु पुबिमेल्, मॊय्यत्तःमक्क ळॆलामुन्नि बोरो ? 179
नीर्पि ऱक्कुमुत् पारिशै मूडर्, नेर्न्द दिल्लै यॆन्निलॆन् दीरो ?
पाऱ्बि ऱन्ददु तॊट्टिन्ऱ मट्टुम्, पलप लप्पल पऱ्पल कोडि
काऱ्पि ऱक्कु मळैत्तुळि पोले, कण्ड मक्क ळलैवरुळ् ळेयुम्
नीर्पि ऱप्पदन् मुन्बु मडमै, नोक्कत् तन्मै यिरुन्दन वन्ऱो ? 180
पॊय्यॊ ऱुक्कै यऱमॆन्ऱु कॊण्डुम्, पॊय्यर् केलियैच् चात्तिर मॆन्ऱुन्
ऐयहो ! नङ्गळ् पारद नाट्टिल्, अऱिबि लारऱप् पऱ्ऱमिक् कुळ्ळोर्
नॊय्य राहि यऱिन्दवर् कोडि, नूल्ब हैपल तेर्न्दु तॆळिन्दोन्
मॆय्य ऱिन्दवर् तम्मु ळुयर्न्दोन्, बिदियि नालत् तरुमनुम् बोऱ्ऱुन्दान् 181
मदियि नुम्बिदि तान्पॆरि दन्ऱो ?, वेय मोबुळ वाहु मबऱ्ऱुळ्
बिदियि नुम्पॆरि दोर्पॊरु ळुण्डो ?, मेलैनाञ् जॆयुङ् कर्म मल्लादे
नदियि लुळ्ळ शिऱुकुळि तन्निल्, नान्गु तिक्कि लिरुल्दुम् पल्माशु
पदियु माऱु पिऱर्शॆयुङ् कर्मप्, पयनु नम्मै यडैवदुण् डन्ऱो ? 182

हाय रे ! उस दिन से (प्राचीन काल से) पवित्र-मन कितने ही लोग इस भाँति (झूठे धर्म को पवित्र अनिवार्य धर्म मानकर चले और) दुखी हुए। १७८ हे मूर्ख ! पहले बह रहा हो, इसी एक कारण से झूठ को सच कहा जाय ? हे मूढ़ ! 'पहले' कहने की भी कोई कालावधि है क्या। 'कल' भी पहला है ! तीन करोड़ साल के पहले का काल भी 'पहला' है ! जो प्राचीन है, उसका ध्यान किये बिना ही जो इस जगत में बड़ी संख्या में रहे क्या वे सब 'मुनिवर' हैं ? १७९ क्या वह सोच रहे हो कि तुम लोगों के जन्म के पहले तुम्हारे देश में मूर्ख लोग पैदा नहीं हुए ! पृथ्वी के जन्म से लेकर आज तक अनेक-अनेक अत्यनेक करोड़ जो लोग वर्षा के काल की बूँदों के समान रहे, उन सभी लोगों के मध्य, तुम्हारे जन्म से पहले भी, अज्ञान तथा नीचता रही है न ? १८० झूठे मार्ग को धर्म और झूठों के परिहास को शास्त्र मानकर, हाय, हमारे देश में जो धर्म-प्रेमी अज्ञानी लोग दीन-हीन होकर मरे, वे करोड़ों हैं। विविध शास्त्रों को स्पष्ट रूप से जाननेवाले, सत्य के जाननेवालों में श्रेष्ठ धर्मराज, विधि के विधान से च्युत हो गये। १८१ मति से भी नियति बड़ी है न ? जगत भर में रहनेवाली सभी वस्तुओं में नियति से बढ़कर कोई चीज है क्या ? पहले जो हमने किया, उस कर्म के फल के अलावा, नदी के मध्य रहनेवाले छोटे गड्ढे में जैसे चारों दिशाओं से बहुत मैल आकर जमा होती है, वैसे ही अन्यों के कर्मों का फल भी हमें पहुँच जाता है न ? १८२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस दिन से पवित्र मनवाले कितने ही नर।
इसी भाँति ऐसे अधर्म को धर्म मानकर ॥
(ऐसे पथ पर) चले और दुख सहे (भयंकर)।
(कभी न खेलो जुआ, जुआ है अति प्रलयंकर) ॥ १७८ ॥

अरे मूर्ख! "यह पहले रहा"—मान यह कारण।
क्यों असत्य को सत्य कहा जाए (निन्दित मन!) ॥
पहिले कहने की क्या कोई समय-अवधि है?।
कल ही "पहिला" कहलाता (यह सम्मत विधि है) ॥
तीन करोड़ साल पहिले का काल पुराना।
वह भी "पहिला" कहलाता है (जग में माना) ॥
"है प्राचीन"—विचार न उसके भले-बुरे पर।
पिल पड़ते हैं, कहो, कहें क्या उनको 'मुनिवर'? ॥ १७९ ॥

तुम लोगों के पैदा होने के पहिले क्या?।
मूर्ख लोग पैदा न हुए, ऐसा कहते क्या? ॥
पृथ्वी के पैदा होने से लेकर अब तक।
घन-बूँदों-सम हुए कोटि-जन (जग-उद्धारक) ॥
उन लोगों के बीच जन्म से पूर्व तुम्हारे।
थे अज्ञान नीचता (आदिक अवगुण सारे) ॥ १८० ॥

झूठे पथ को (मन में) सच्चा धर्म जानकर।
झूठों के परिहास शास्त्र के वाक्य मानकर ॥
इस भारत में अरे! धर्म-प्रेमी अज्ञानी।
दीन-हीन हो मरे (अजान) करोड़ों प्राणी ॥
सुलझी-मतिवाले, अगणित शास्त्रों के ज्ञाता।
सत्य जाननेवाले उत्तम धर्म-विधाता ॥
विधि-विधान से भ्रष्ट हो गये (अगणित नरवर)।
(धर्माधर्म-विनिर्णय जग में अति ही दुष्कर) ॥ १८१ ॥

"मति" से भी बढ़कर इस जग में (श्रेष्ठ) "नियति" है।
(सदा नियति के सम्मुख निर्जित होती मति है) ॥
जग की सभी वस्तुओं से भी आगे बढ़कर।
"नियति" सदा सर्वोपरि है, ऐसा विचार कर ॥
नदी-मध्यवर्ती छोटे गड्ढे के अन्दर।
सभी दिशाओं से ज्यों जमता मैल सिमटकर ॥
उसी भाँति निज कर्मों से अतिरिक्त भोग-फल।
अन्य जनों के कर्मों का मिल जाता प्रतिफल ॥ १८२ ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शूदाडल्—37

वेऱु

मायच् चूदि नुक्के— ऐयन्, मन्नमि णङ्गि विट्टान्;
'ताय मुरुट्ट लान्नार्;— अङ्गे, शहुनि यार्प्प रित्तान्;
नेय मुऱ्ऱ विदुरन्— पोले, नॅऱियु ळोर्ह ळॅल्लाम्
वायै मूडि विट्टार्— तङ्गळ्, मदिम यङ्गि विट्टार् 183
अन्द बेळैयदनिल्— ऐवर्क्, कदिब निःदु रैप्पाऱ्
'पन्द यङ्गळ् शॊल्वाय्— शहुनि, परप रत्ति डाहे!
विन्दै यान शॆल्बम्— कॊण्ड, बेन्द रोडु नीदान्
वन्दं दिर्त्तु विट्टाय्— ऍदिरे, वैक्क निदिय मुण्डो?' 184
तरुमन् वार्त्तै केट्टे— तुरियो दन्नॆ ळुम्दु शॊल्वान्
'अरुमै यान शॆल्वम्— ऍन्बाल्, उळवि लाद दुण्डु
ऑरुम डङ्गु वैत्ताल्— अदिरे, ऑन्ब दाह वैप्पेन्;
पॆरुमै शॊल्ल वेण्डा—। ऐया, पिन्न डक्कु' हॆन्ऱान् 185
'ऑरुव नाडप् पणयम्— वेऱे, ऑरुबन् वैप्प दुण्डो?
तरुम माहु मोडा— शॊल्बाय्, तम्बि यिन्द वार्त्तै?'
'वरुम मिल्लै यैया इङ्गु, माम नाडप् पणयम्
मरुहन् वैक्कॊ णादो?— इदिले, बन्द कुऱ्ऱ मेदो?' 186
'पॊऴुदु पोक्कु दर्क्के— शूदुप्, पोर्त्तो डङ्गु हिन्ऱोम्;
अऴुद लेनि दर्क्के?— ऍन्ऱे, अङ्गर् कोम हैत्तान्
पऴुदि रुप्प दॆल्लाम्— इङ्गे, पार्त्ति वर्क्कु रैत्तेन्;
मुऴुदु मिङ्गि दर्क्के— पिन्नर्, मुडिवु काण्बिर्' ऍन्ऱान् 187

जुआ खेलना—३७

आर्य धर्मराज मायिक जुआ खेलने के लिए सम्मत हो गये। पाशक फेंकने लगे। वहीं शकुनि ने हा! हा! कहा! स्नेही विदुर जैसे धर्म जाननेवाले लोग मुख बन्द करके रह गये। वे मति-भ्रष्ट हो गये। १८३ उस समय पाँचों (पांडवों) के नायक ने यह कहा— 'शकुनि! उतावले मत होओ! दाँव बोलो। चित्र-विचित्र धन के स्वामी राजाओं से तुम जुआ खेलने चले हो! दाँव पर चढ़ाने के लिए धन है क्या?' १८४ धर्म का वचन सुनकर दुर्योधन उठा और बोला— 'मूल्यवान धन मेरे पास अपार है। एक गुना रखोगे, तो मैं सौ गुना बोल सकता हूँ। डींग मत मारना, आर्य! आगे खेल हो'। १८५ 'एक जुआ खेले तथा दूसरा दाँव बोले— यह भी होगा क्या? भाई! यह न्याय है क्या? कहो?' 'इसमें कोई अन्याय (मर्म) नहीं है! मामा खेलता है; क्या भानजा नहीं बोल सकता? इसमें क्या दोष हो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जुआ खेलना—३७

आर्य हो गये कपट-द्यूत-हित विधिवश सहमत।
लगे फेंकने पाँसे अपने कर से अविरत ॥
शकुनी ने प्रफुल्ल-मन हा! हा! शोर मचाया।
मौन सकल धर्मज्ञ विदुर-सम, मति-भ्रम छाया ॥
स्नेही विदुर-समान धर्म के सच्चे ज्ञानी।
भ्रष्ट हो गई मति सब बने मौन अज्ञानी ॥ १८३ ॥

कहा पाण्डवों के नायक ने— "शकुनी! आओ।
उतावले मत बनो (जुए पर) दाँव लगाओ ॥
चित्र-विचित्र धनों के स्वामी से (टकराये)।
(मुझ जैसे) भूपों से जुआ खेलने आये ॥
कहो दाँव पर रखने के हित क्या धन लाये?।
(बोलो क्यों हो मौन? ताकते मुँह फैलाये)" ॥ १८४ ॥

धर्म-वचन सुन बोल उठा तत्क्षण दुर्योधन।
"दाँव लगाने को मेरे समीप अगणित धन ॥
एक-गुना तुम रखो अनेक-गुना मैं बोलूँ।
डींग मारना व्यर्थ, खेल हो, (थैली खोलूँ)" ॥ १८५ ॥

"एक जुआ खेले औ' दूजा दाँव लगाये।
यह भी क्या होता है? (कोई मुझे बताये) ॥
भाई! क्या यह न्यायोचित है, मुझे बताओ।
पूछ रहा हूँ, मुझे न्याय-सम्मत समझाओ" ॥
"है इसमें अन्याय न"—बोला तब दुर्योधन।
"मामा खेले और भांजा देता है धन ॥
इसमें है क्या दोष (मुझे आकर समझाओ)।
(जल्दी खेलो खेल, व्यर्थ मत देर लगाओ)" ॥ १८६ ॥

"समय काटने को हमने यह द्यूत रचाया।
फिर क्यों इसमें रोना - धोना (अरे मचाया)" ॥
यह कह करके वीर कर्ण विहँसा (मुसकाया)।
धर्मराज ने इसके उत्तर में बतलाया ॥
"जो भी इसमें दोष नृपों को सभी बताया।
होगा जो भी अन्त उसे देखें" (समझाया) ॥ १८७ ॥

गया?' १८६ 'केवल समय काटने के लिए द्यूत-समर आरम्भ करते हैं। इसमें रोना क्यों?' यह कहकर अंगराज (कर्ण) हँसा। धर्म ने कहा— जो भी इसमें दोष है, वह सब मैंने इन राजाओं को बता दिया। इसका जो अन्त होगा, उसको आप लोग पूरा देखेंगे। १८७ छविश्रेष्ठ मणियों की एक माला को (धर्मपुत्र ने) दाँव पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऒळिशि ऱन्द मणियिन्— मालै, ऒन्ऱै यङ्गु बैत्तान्;
कळिमि हुन्द पहैबन्— ऎदिरे, कन्द नङ्गळ् शॊन्नान्;
विऴियि मैक्कु मुन्ने— मामन्, वॆन्ऱ तीर्त्तु विट्टान् !
पऴियि लाद तरुमन्— पिन्नुम्, पन्द यङ्गळ् शॊल्बान् 188

'आयि रङ्गु डम्बॊन्— बैत्तै, आडु बो'मि दॆन्ऱान्;
मायम् वल्ल मामन्— अदनै, वशम दाक्कि विट्टान्
'पायु मावॊ रॆट्टिल्— शॆल्लुम्, पार मान पॊऱ्ऱेर्
ताय मुरुट्ट लानार्;— अङ्गे, शहुनि वॆन्ऱ विट्टान् 189
इळैय रान मादर्— शॆम्बॊन्, ऎऴि लिणैन्द बडिवुम्
वळैय णिन्द तोळुम्— मालै, मणिकु लुङ्गु मारुम्
विळैयु मिन्ब नूल्हळ्— तम्मिल्, मिक्क तेर्च्चि योडु
कळैयि लङ्गु मुहमुम्— शायर्, कबिन् नन्गु कॊण्डोर् 190
आयि रक्क णक्का— ऐवर्क्, कडिमै शॆय्दु वाऴ्बोर्
ताय मुरुट्ट लानार्— अन्बच्, चहुनि वॆन्ऱ विट्टान्
आयि रङ्ग ळावार्— शॆम्बॊन्, नणिहळ् पूण्डि रुप्पार्
तूयि लैप्पॊ नाडै— शुर्रुन्, तॊण्डर् तम्मै बैत्तान् 191
शोर नङ्ग वऱ्ऱै— बार्त्तै, शॊल्लु मुन्नर् वॆन्ऱान्
'तीर मिक्क तरुमन्— उळ्ळत्, तिडन ळिन्दि डादे
नीरै युण्ड मेहम्— पोले, निऱ्कु मायि रङ्गळ्
वार णङ्गळ् कण्डाय्— पोरिल्, मऱलि यॊत्तु मोदुम्' 192

लगाया। अति मुदित विपक्षी ने मुक़ाबले में बहुत धन लगाया। पलक मारने के पहले मातुल ने उसे जीत लिया। फिर अनिंद्य धर्म दाँव बोले। १८८ 'सहस्र घट स्वर्ण लगाकर हम खेलें।' —धर्म ने कहा। माया में चतुर मातुल ने उन्हें वश में कर लिया। 'लपक चलनेवाले आठ अश्वों का एक भारी स्वर्णरथ' के पांसे फेंके (गये), वहाँ शकुनि जीत गया। १८९ 'छोटी आयु की स्त्रियाँ— लाल स्वर्ण की छवि का आकार; बलय पहनी भुजाएँ; हार की मणियाँ जिस पर हिलती हैं —ऐसा वस्त्र; कामशास्त्र-ग्रंथों में निष्णात दक्षता; इनके साथ छविमय आनन तथा श्रेष्ठ छटावाली— १९० सहस्रों के हिसाब में पाँचों की दासता करके जीतनेवाली स्त्रियाँ— (उन्हें दाँव पर लगाकर) धर्म पाँसे फेंकने लगे। उस शकुनि ने (उन्हें) जीत लिया। फिर धर्म ने सहस्रों की संख्या के, लाल स्वर्णाभरणधारी, शुद्ध सूत्रों के स्वर्णवस्त्र जो पहने थे, उन सेवकों को दाँव पर लगाया। चोर शकुनि ने उन्हें शब्दोच्चारण की देर में जीत लिया। धीरज में बढ़े धर्म ने बिना साहस खोये, जलपायी मेघ के समान रहनेवाले हज़ार हाथी, जो युद्ध में यम के समान टकरानेवाले हैं— १९१-१९२ कहकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तब छविमय उत्तम मणियों की माला सुन्दर।
धर्मपुत्र ने (तुरत) लगाई (द्यूत-) दाँव पर ॥
(मणि - माला लख) मुदित विपक्षी अति (हरषाया)।
मुक़ाबले में उसने (भी) धन बहुत लगाया ॥
पलक भाँजने के पहिले ही (शकुनी) मामा।
जीत गया वह दाँव (मचा अद्भुत हंगामा) ॥ १८८ ॥

तभी अनिन्दित धर्मराज ने आगे बढ़कर।
लगा दिया फिर स्वर्ण सहस घट तुरत दाँव पर ॥
माया - चतुर शकुनि ने जीता वह सब कंचन।
तीव्र चाल के आठ हयों का स्वर्णिम स्यन्दन ॥
धर्मराज ने रखा दाँव पर तब (प्रमुदित मन)।
जीत लिया शकुनी ने (वह रथ भी बस तत्क्षण) ॥ १८९ ॥

लाल स्वर्ण की छवि-सी जिनकी आकृति सुन्दर।
वलय - विभूषित हैं जिनके (दोनों कोमल) कर ॥
हिलते मणि - हारों से शोभित जिनका उर - तल।
कामशास्त्र के ग्रंथों में निष्णात सुकौशल ॥
श्रेष्ठ छटावाली जो, जिनका छविमय आनन।
छोटी वयवाली (अगणित सुन्दर) रमणी - जन ॥ १९० ॥

पाँच पांडवों की सेवा कर जीनेवाली।
स्त्रियाँ सहस्रों की संख्या वाली छविशाली ॥
पाँसे फेंके गये स्त्रियों का दाँव लगाकर।
जीत लिया शकुनी ने उनको भी (अति सत्वर) ॥
जो पहने थे लाल स्वर्ण के (नव) आभूषण।
शुद्ध - सूत्र के स्वर्ण - वस्त्र जो करते धारण ॥
गया हज़ारों की संख्या में जिन्हें गिनाया।
धर्मराज ने उन दासों का दाँव लगाया ॥
चोर शकुनि ने शब्दोच्चारण के अन्तर में।
जीत लिया उन सभी सेवकों को (क्षण भर में) ॥
धैर्यशील धर्म ने, न साहस (स्वीय) गँवाया।
मेघ - समान हज़ार गजों का दाँव लगाया ॥
बोले— "ये रण में यम से टकरानेवाले"।
कहकर रखे दाँव पर वे गज भी (मतवाले) ॥ १९१-९२ ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅन्ऱु वत्त पणयम्— तन्नै, यिळिञन् वॅन्ऱु विट्टान्;
वॅन्ऱि मिक्क पडैहळ्— पिन्नर्, वेन्दन् वैत्तिळन्दान्;
नन्ऱि ळैत्त तेर्हळ्— पोरिन्, नडै युणर्न्द पाहर्
अन्ऱि वऱै यॅल्लाम्— तरुमन्, ईडु वैत्ति ळन्दान् 193
अॅण्णि लाद कण्डीर्— पुविय़िल्, इणैयिलाद वाहुम्
वण्ण मुळ्ळ परिहळ्— तम्मै, वैत्तिळन्दु विट्टान्
नण्णु पॊऱ्क डारन्— दम्मिल्, नालु कोडि वैत्तान्
कण्णि ळप् पवन् पोल्— अवैयोर्, कणमि ळन्दु विट्टान् 194
माडिळन्दु विट्टान्— तरुमन्, मन्दै मन्दै याह्;
आडिळन्दु विट्टान्— तरुमन्, आळिळन्दु विट्टान्;
पीडिळन्द शहुनि— अङ्गु, पिन्नुञ् जॊल्लु हिन्ऱान्;
'नाडिळक्क विल्लै— तरुमा !, नाट्टै वैत्ति' डॅन्ऱान् 195

नाट्टै वैत्ताडुदल्—38

वेऱु

ऐयहो विदै यादॅनव् चॊल्वोम् ?, अरश रानवर् शॅय्हुव दॊन्ऱो ?
मॅय्य दाहवॊर् मण्डलत् ताट्चि, वॅन्ऱु शूदिनि लाळुङ् गरुत्तो ?
वैय मिःदु पॊऱुत्तिडु मो ? मेल्, वान्पॊ ऱुत्तिडु मो ? पाळि मक्काळ् !
तुय्य शोर्त्ति मदिक्कुल मोनाम् ?, तू वॅन् ऱॅळ्ळि विदुरनुञ् जॊल्वान् 196
पाण्ड वऱ्पॊऱै कॊळ्ळुव रेनुम्, पॅन्दु ळायनुम् पाञ्जालत् तानुम्
मूण्ड वॅञ्जिनत् तोडुनञ् जूळल्, मुऱुम् वेरऱच् चॅय्हुव रन्ऱो ?

दाँव पर लगाया। उन्हें भी उस नीच ने हथिया लिया। फिर विजयिनी सेनाओं को राजा ने दाँव पर लगाकर हारा। सुरचित रथ, युद्धतंत्र जाननेवाले सारथी-- सबको धर्म ने गँवा दिया। १९३ देखिए-- अनगिनत, भूमि में बेजोड़ तथा सुन्दर अश्व-- उन्हें भी वे हार गये। दाँव पर चार करोड़ स्वर्ण-भरे घट लगाये गये। उन्हें, आँख को खोनेवाले के समान (धर्मराज ने) क्षण में गँवा दिया। १९४ ढोर गँवाये-- धर्म ने झुंड-के-झुंड। भेड़-बकरी के दल गँवाये। धर्म ने दासों को गँवा दिया। गौरवहीन शकुनि तब और कहता है-- तुमने राज्य नहीं गंवाया है। राज्य लगाओ। १९५

राज्य (को दाँव में) लगाकर खेलना—३८

(छन्द-परिवर्तन)

'हाय ! इसको क्या कहें ? क्या यह राजा का कृत्य हो सकता है ? जुए में जीतकर भूभाग का शासन करने का सचमुच क्या अभिप्राय है ? संसार इसे सहन करेगा या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस नीच ने हाथियों को भी दस हथियाया।
फिर विजयी सेनाओं को दाँव पर लगाया॥
इसी भाँति सुरचित (सुरम्य, अगणित, शुभ) स्यंदन।
युद्ध - तंत्र के ज्ञाता अति अपार सारथि-जन॥
इन सबका भी धर्मपुत्र ने दाँव लगाया।
(शकुनी की माया से तत्क्षण) इन्हें गँवाया॥ १९३ ॥
हारे अगणित, अनुपम, सुन्दर अश्व (निराले)।
स्वर्ण भरे घट चार कोटि हारे द्युतिवाले॥
आँख खोलने और मूँदने के अन्तर में।
धर्मराज ने गँवा दिये ये सब क्षण भर में॥ १९४ ॥
धर्मराज ने झुंड - झुंड पशु - वृंद गँवाये।
भेड़ - बकरियों के दल भी सानंद गँवाये॥
धर्मराज ने दास गँवाये आज्ञा - पालक।
गौरव-हीन शकुनि तब बोला (कुल का घालक)॥
बचा हुआ है (अब तक विस्तृत) राज्य (भूपवर!)।
इस कारण अब राज्य लगाओ (शीघ्र) दाँव पर॥ १९५ ॥

राज्य को दाँव में लगाकर खेलना—३८

"हाय! कहें क्या इसको (इसकी बुद्धि वाम है)।
क्या यह राजा के करने के योग्य काम है?॥
आज जुए के बीच सभी भू - भाग जीतकर।
शासन करने का क्या अभिप्राय है उस पर॥
इस (अनीति) को कैसे यह संसार सहेगा।
या ऊपर का कैसे गगन (अपार) सहेगा॥
क्या हम (पावन) चंद्रवंश के (वंशज पावन)।
निन्दनीय पुत्रो! (यह काम अतीव अपावन)॥
हे दुष्टो! धिक्कार तुम्हें" (इस भाँति) बोलकर।
कहने लगे विदुर (सबको इस भाँति कटुक स्वर)॥ १९६ ॥
"चाहे पाण्डव (क्रोध बिसार) क्षमा अपनायें।
(दण्ड न दें तुमको अपना सब वैर भुलायें)॥
पर पांचाल - महीपति तुलसी - माला - धारी।
कर देंगे कुल - नाश हमारा क्रोधित (भारी)॥

ऊपर का आकाश सहेगा? निंद्य पुत्रो! क्या हम पवित्र चंद्रकुल के नहीं हैं? धत्!' बताकर विदुर कहने लगे। १९६ 'पांडव चाहे क्षमा अपना लें तो भी तुलसीमालाधारी तथा पांचाल-नरेश क्रोध से उठें, तो वे क्या हमारे परिवार को निर्मूल नहीं करेंगे?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ईण्डिरु रुक्कुङ् गुरुकुल वेन्दर्, यार्क्कु मिहदुरैप् पेत् कुरिक् कॉण्मिन्
"माण्डु पोरिल् मडिन्दु नरहिल्, माळ्हु दर्कु वहैशॅयल् वेण्डा" 197
कुलमॅ लामळि वॅय्दिडर् कन्ड्रो, कुत्ति रत् तुरि योदनन् ड्रन्नै
नलमि लाविदि नम्मिडै वैत्तान्; ञाल मीदि लवन् पिरन् दन्ड्रे
अलरि योर्नरि पोर्कुरैत् तिट्टान्; ञःडु णर्न्द निमित् तिहर् 'वॅय्य
कलहन् दोन्रुमिप् पालह नाले, काणु बो'रॅनच् चॉल्लिडक् केट्टोम् 198
'शूदिर् पिळ्ळै कॅलित्तिडल् कॉण्डु, शॉर्क्क पोहम् पॅरुबवन् पोलप्
पेदै नीयु मुहमलर् वॅय्दिप्, पॅट्पु मिक्कुर् वीर्रिरुक् किम्ड्राय्;
मोदु शॅन्ड्रु मलैयिडैत् तेनिल्, मिक्क मोहत्ति नालॉरु वेडन्
पाद माङ्गु नळ्बिड मायुम्, पडुम् लैच्चरि वुळ्ळदु काणाम् 199
मर्रु नोरुमिच् चूदॅनुङ् गळ्ळाल्, मदिम यङ्गि वरुञ्जॅयल् काणीर्!
मुर्रुम् जादि शुयोदन नामोर्, मूडर् काह मुळ्हुहिड लामो?
पर्रु मिक्कबिप् पाण्डबर् तम्मैप्, पादहत्ति लळित्तिडु हिम्ड्राय्
कर्रु कल्बियुङ् गेळ्बियु मण्णे, कडलिर् कायङ् गरैत्तदॉप् पामे? 200
बीट्टु ळेनरि यॅविडप् पाम्बै, वेण्डिप् पिळ्ळै यॅनवळर्म् तिट्टोम्
नाट्टु ळेपुह ळोङ्गिडु मारिन्, नरियै विर्रुप् पुलिहळैक् कॉळ्वाय्
मोट्टुक् कूहैयैक् काक्कॅयै विर्रु, मॉय्म्बु शान्ड्रु मयिल्हळैक् कॉळ्वाय्;
केट्टि लेकळि यॉडुशॅल् वायो?, केट्कुङ् गादु मिळन्दुबिट् टायो? 201

वहाँ जो कुरुकुल के राजा हैं, उन सबको सुनाता हूँ, ध्यान में रख लें। युद्ध में मरकर नरक में घुलने का उपाय मत किया जाय! १९७ सारे कुल का नाश हो, इसीलिए दुष्ट नियति ने क्षुद्र दुर्योधन को हमारे मध्य रख दिया है न? जब उसने इस भू पर जन्म लिया, तभी वह सियार के समान चिल्ला उठा था। शकुन-विचारक ने कहा, देखो, इस बालक के कारण कलह मचेगा। हमने वह बात सुनी थी। १९८ हे अज्ञ! जुए में पुत्र को जीतता देखकर, तुम सुख खिलाए, शान के साथ ऐसे विराजमान हो, मानो, तुम स्वर्ग-सुख भोग रहे हो। किरात पहाड़ के ऊपर चढ़कर पहाड़ी शहद के मोह में यह नहीं देखता कि पैर के फिसलने से नीचे गिराकर मारने वाला ढाल भी है! १९९ वैसे ही तुम भी इस जुए की सुरा से मतिभ्रष्ट होकर भावी को नहीं देखते। क्या मूर्ख सुयोधन के कारण सारी जाति डूब जाय? अति प्रेमी पांडवों को तुम पातकीय काम करके मिटा रहे हो! अर्जित विद्या तथा श्रवण ज्ञान सब मिट्टी हो गया। यह समुद्र में हींग घोलने के समान होगा'। (यह तमिळ की कहावत है। जब साधन की अल्पता से कार्य व्यर्थ हो जाता है, तब इसका प्रयोग करते हैं।) २०० हमने घर में सियारों तथा विषैले सर्पों को चाहते हुए उन्हें पुत्रों के रूप में पाला है। देश में हमारा यश हो --इसके लिए इन सियारों को बेचकर व्याघ्रों को अपना लो। घर पर रहनेवाले उल्लुओं तथा कौओं को बेचकर बलवान मोरों को (खरीद) लो। क्या हानि (के मार्ग) में आनन्द के साथ चलोगे? क्या सुननेवाला कान भी खो गया? २०१ कनिष्ठ भ्राता के धन को चाहोगे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जो हैं यहाँ (उपस्थित) कुरु-कुल के भूपति-(गण)।
उन्हें सुनाता हूँ, वे ध्यान रखें (अपने मन)॥
युद्ध - भूमि में (पाण्डु - सुतों के हाथों) मरकर।
करें नरक में घुलने का उपाय मत (नृपवर!)॥ १९७॥
दुर्विधि ने मम सारे कुल का करने नाशन।
उपजाया मम - मध्य क्षुद्र (पापी) दुर्योधन॥
लेकर जन्म जभी वह इस भू - तल पर आया।
तब सियार के तुल्य (क्रूर स्वर में) चिल्लाया॥
तब विचार कर बोला (तत्क्षण) शकुन - विचारक।
कुल-विरोध का कारण होगा यह (खल) बालक॥
(उसकी कही हुई) हमने वह बात सुनी थी।
(सुन करके अपने मन में वह बात गुनी थी)॥ १९८॥
अरे! अज्ञ! (धृतराष्ट्र!) जुए में सुत-जय लखकर।
भोग रहे हो जैसे स्वर्ण - भोग तुम (सुन्दर)॥
खिला हुआ मुख (बड़ी) शान के साथ विराजित।
(जैसे इन्द्रासन पर इन्द्रदेव हो भ्राजित)॥
चढ़ जाता किरात मधु-लालच में पर्वत पर।
लखता नहीं ढलान, मरेगा जिसमें गिरकर॥ १९९॥
वैसे तुम भी द्यूत - सुरा से बुद्धि-भ्रष्ट हो।
नहीं देखते आनेवाले (भूरि कष्ट को)॥
क्या इस मूर्ख (घमंडी) दुर्योधन के कारण।
डूबे सारी जाति (चाहते हो कुल-तारण)॥
तुम यह पापकर्म (निज-सम्मुख) करा रहे हो।
अति - प्रेमी पांडव हैं उनको मिटा रहे हो॥
मिले धूल में श्रवण - ज्ञान, सीखी विद्याएँ।
ज्यों सागर में हींग घोलकर व्यर्थ बनाएँ॥ २००॥
पाले घर में स्यार, सर्प पाले विषवाले।
पुत्र - रूप में (शत्रु सभी) हैं हमने पाले॥
अगर चाहते देश - बीच तव यश हो (सुन्दर)।
तो अपना लो व्याघ्र, स्यार (सम इन्हें) बेचकर॥
घर में रहनेवाले काक - उलूक बेचकर।
तुम खरीद लो (प्रिय) बलवान मयूर (मनोहर)॥
हानि - मार्ग में क्या सुख - पूर्वक चल पाओगे।
सुननेवाले कान खो गये (सुन पाओगे?)॥ २०१॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तम्बि मक्कळ् पॊरुळ् वॆःकु वायो
शादर् कान् वयदिनि लण्णे ?
नम्बि निन्नै यडैन्दव रन्ऱो ?
नाद नॆन्ऱुनॆक् कॊण्डव रन्ऱो ?
अॆम्बि रानुळङ् गॊळ्ळुदि यायिन्
यावुन् दान् मॆनक्कॊडुप् पारे !
कुम्बि मानर हत्तिनि लाऴ्त्तुङ्
गोडिय शॆय्है तॊडर्वदु मॆन्ने ? 202
कुरुकु लत्तलै वन्शबॆक् कण्णे
कॊऱ्ऱ मिक्क तुरोणन् किरुबन्
पॆरुहु शीर्त्तियिक् कङ्गेयिन् मैन्दन्
पेदै नानु मदिप्पिऴन् देहत्
तिरुहु नॆञ्जच् चहुनि यॊरुवन्
शॆप्पु मन्दिरञ्जॊल्लुद न्नऱे !
अरुहु वॆक्कत् तहुदियुळ् ळान्नो ?
अवनै वॆऱ्पिडैप् पोक्कुदि यण्णे ! 203
'नॆऱियि ऴन्दपिन् वाऴ्वदि लिन्बम्
नेरु मॆन्ऱु निनैत्तिडल् वेण्डा
पॊऱि यिऴन्द शहुनियिन् शूदाऱ्
पुण्णि यर् तमै माऱ्ऱल राक्किच्
चिऱियर् पादह ऱैन्ऱुल हॆल्लाम्
शीयॆन् ऱेश वुहन्दर शाऴुम्
वऱिय वाऴ्वै विरुम्बिड लामो ?
वाऴि शूदै निरुत्तुदि' यॆन्ऱान् 204

॥ शूदाट्टच् चरुक्कम् मुऱ्ऱिऱ्ऱु ॥

॥ मुदऱ्पाहम् मुऱ्ऱिऱ्ऱु ॥

इस मरती उम्र में ? क्या वे विश्वास के साथ तुम्हारे पास नहीं आये ? क्या वे तुम्हें 'नाथ' माननेवाले नहीं हैं ? स्वामी, तुम चित्त लगाओ, तो वे सभी को दान के रूप में दे देंगे न ? कुम्भोपाक नरक में डालनेवाला यह कार्य क्यों जारी रखते हो ? २०२ कुरुकुलपति की सभा से विजयी द्रोण, कृप, वर्द्धमान कीर्ति के गांगेय और बेचारा मैं --सभी के आदर खोकर निकल जाने से, वक्रमन शकुनि की मंत्रणा क्या भली सिद्ध हो गयी ? क्या वह पास रहने देने योग्य भी है ? उसे पहाड़ों में भेज दो, भाई ! २०३ यह मत सोचो कि सन्मार्ग खोने के बाद जीवन में आनन्द मिलेगा। बुद्धिहीन शकुनि के जाल से पुण्यात्माओं को शत्रु बना लोगे। नीच हैं ! पातकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मरते समय हरोगे क्या अनुजों का (ही) धन ?।
आये क्या तव पास न वे विश्वास मान घन ?॥
क्या तुमको (वे) नाथ नहीं मानते (भूपवर !) ?।
(फिर क्यों उनसे वैर कर रहे हो तुम नृपवर !)॥
हे स्वामी ! यदि तुम अपना (यह) चित्त लगाओ।
दान - रूप में तो सारा धन उन्हें दिलाओ॥
कुम्भीपाक नरक के बीच डालनेवाला।
क्यों करवाते कार्य (स्ववंश - घालनेवाला)॥ २०२ ॥

जयी द्रोण, कृप (पूज्य) और मैं भी बेचारा।
वर्धमान - यश भीष्म जाह्नवी का सुत प्यारा॥
कुरु - कुल - पति की सभा - बीच (शुभ सम्मति देकर)।
निकले भीष्म, द्रोण, कृप, मैं सब खोकर आदर॥
कुटिल-हृदय शकुनी की ही मंत्रणा सुहाई।
पास बिठाने योग्य नहीं यह शकुनी, भाई !॥
भाई ! उसको निर्वासित कर दो पर्वत पर।
(टल जायेगा कुल - घालक यह पाप भयंकर)॥ २०३ ॥

जीवन में आनन्द मिलेगा सत्पथ खोकर।
यह सोचना नहीं (मन में मति - वंचित होकर)॥
दुर्मति शकुनि-जाल-बिच यदि फँस जाओगे तुम।
तो पुण्यात्माओं को निज - शत्रु बनाओगे तुम॥
'कौरव पापी, नीच' —कहे ऐसा जग सारा।
(दुर्योधन जाए सब लोगों से) दुतकारा॥
चाव-सहित इस भाँति देश का करना शासन।
कैसे अच्छा लग सकता है सूना जीवन"॥
कहा विदुर ने— 'रोको जुआ, तुम्हारी जय हो।
(यदि न चाहते हो तुम, कौरव-कुल का क्षय हो)"॥ २०४ ॥

॥ द्यूत क्रीडा सर्ग समाप्त ॥

॥ पहला भाग समाप्त ॥

हैं, छिः ! ऐसा सारा जगत दुत्कारे, तब देश का चाव के साथ शासन करने का शून्य जीवन पसंद किया जा सकता है क्या ? जय हो ! जुए को रोक दो। —यह विदुर ने कहा। २०४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पाञ्जालि शबदम्

(इरण्डाम् बाहम्)

मून्ऱावदु—अडिमैच् चरुक्कम्

पराशक्ति वणक्कम्—39

आङ्गॊरु कल्लै वायिलिऱ् पडियॆन्
ऱमैत्तनन् शिऱ्पि मऱ् ऱॊन्ऱै
ओङ्गिय पॆरुमैक् कडवुळिन् वडिवॆन्
ऱुयर्त्ति नान्; उलहिन्नोर् ताय्नी;
याङ्गनै ॲवरै ॲङ्ङनञ् जमैत्तऱ्
कॆण्णमो अङ्ङनञ् जमैप्पाय्
ईङ्गुनैच् चरणॆन् ऱॆय्दिनेन्; ॲन्नै
इरङ् गलैप् पुलवनाक् कुदिये 1

सरस्वति वणक्कम्—40

इडैयिन्ऱि अणुक्कळैलाञ् जुळ्ळुमॆन्न
इयल्नूलार् इशैत्तल् केट्टोम्;
इडैयिन्ऱिक् कदिर्हळैलाञ् जुळ्ळुमॆन्न
बानूलार् इयम्बु हिन्ऱार्
इडैयिन्ऱित् तॊळिल् पुरिदल् उलहिन्निडैप्
पॊरुट् कॆल्लाम् इयऱ्कै यायिन्
इडैयिन्ऱिक् कलैमहळे ! निन्नदरुळिल्
अंन्नदुळ्ळम् इयङ्गॊ पादो ? 2

पांचाली शपथ

(दूसरा भाग)

तीसरा—दासता-सर्ग

पराशक्ति-विनय—३९

किसी शिल्पी न वहाँ एक पत्थर की सीढ़ी बनायी; दूसरे को उन्नत गौरव के ईश्वर का रूप देकर उसे ऊँचा कर दिया। तुम लोकवासियों की माता हो। जिसको जैसे बनाना चाहोगी, उसको वैसा रच लोगी। यहाँ मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। मुझे श्रेष्ठ कलाकार विद्वान बना दो ! १

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पाञ्चाली-शपथ

(दूसरा भाग)

तीसरा— दासता-सर्ग

पराशक्ति-विनय—३९

सीढ़ी एक बनाई शिल्पी ने पत्थर की।
उन्नत गौरव देकर मूर्ति रची ईश्वर की॥
लोकवासियों की तुम माता हो (मंगलमय)।
(कृपा करो मुझ पर माता! हो जाऊँ निर्भय)॥
(माता!) तुम चाहतीं बनाना जिसको जैसा।
रच देती हो (माता! तुम बस) उसको वैसा॥
आया हूँ मैं माता (सविनय) शरण तुम्हारी।
मुझे करो विद्वान श्रेष्ठतम कला-पुजारी॥ १॥

सरस्वती-विनय—४०

हमने भौतिक शास्त्रिजनों के सुने वचन वर।
"सदा घूमते रहते हैं अणु सभी निरंतर"॥
कहते हैं खगोल-वेत्ता विद्वान यही स्वर।
ज्योति-पिण्ड (भी) सभी (सदा) घूमते निरन्तर॥
यदि दुनिया के (ये) सभी पदार्थ (प्रचुरतर)।
हैं स्वाभाविक (प्रगतिशील) क्रियमाण निरन्तर॥
कलादेवि! तव कृपा प्राप्त करके मेरा मन।
क्या न निरन्तर हो सकता उसमें आन्दोलन॥ २॥

सरस्वती-विनय—४०

हमने भौतिक शास्त्रियों को यह कहते सुना कि सभी अणु निरन्तर घूमते रहते हैं। खगोल-शास्त्रज्ञ विद्वान कहते हैं कि सभी ज्योतिपिंड निरन्तर घूमते रहते हैं। अगर दुनिया के सभी पदार्थों का निरन्तर क्रियमाण रहना स्वाभाविक है तो, हे कला की देवी (सरस्वती), तुम्हारी कृपा से मेरा मन क्या निरन्तर आन्दोलित नहीं रह सकता? २

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विदुरन् शॊल्लिय दर्कुत् तुरियोदनन् मरुमॊऴि शॊल्लुदल्—41

वेऱु

अऱिबु शान्ऱ विदुरन्शॊऱ् केट्टान्
अऴलु नॆञ्जि नरवै युयर्त्तान्
नॆऱियु रैत्तिडु मेलवर् वाय्च् चॊल्
नीश रानवर् कॊळ्ळुव दुण्डो ?
पॊऱि परक्क विऴिह ळिरण्डुम्
पुरुब माङ्गु तुडिक्कच् चिनत्तिन्
वॆऱि तलैक्क मदिमऴङ् गिप्पोय्
वेन्द निःदु विळम्बुद लुऱ्ऱान् 3

वेऱु

नन्ऱि कॆट्ट विदुरा— 'शिऱिदुम्, नाण मऱ्ऱ विदुरा !
तिन्ऱ उय्पितुक्के— नाशन्, वेडु हिन्ऱ विदुरा !
अन्ऱु तॊट्टु नीयुम्— ऍङ्गळ्, अऴिवु नाडुहिन्ऱाय्
मन्ऱि लुन्नै वैत्तान्— ऍन्दै, मदियै यॆन्नु रैप्पेन् ! 4
ऐव रुक्कु नॆञ्जुम्— ऍङ्गळ्, अरम नैक्क् वयिऱुम्
दॆय्व मन्ऱु नक्के— विदुरा, शॆय्दु विट्ट वेयो ?
मॆय्य हुप्प वन्पोल्— पॊदुवाम्, विदियु णर्न्द वन्पोल्
ऐवर् पक्क निन्ऱे— ऍङ्गळ्, अऴिवु तेडु हिन्ऱाय् 5
मन्नर् शूऴ्न्द शबॆयिल्— ऍङ्गळ्, माऱ्ऱ लार्ह ळोडु
मुन्नर् नाङ्गळ् पणैयम्— वैत्तै, मुऱैयिल् वॆल्लु हिन्ऱोम्
ऍन्न कुऱ्ऱङ् गण्डाय् ?— तरुमम्, यार्क् कुरैक्क वन्दाय् ?
कन्नम् वैक्कि ऱोमो ? पल्लैक्, काट्टि येय्क् किऱोमो ? 6
पॊय्यु रैत्तु वाऴ्वार्— इतऴिऱ्, पुहऴु रैत्तु वाऴ्वार्
वैय मीदि लुळ्ळार्— अवर्तम्, वऴियिल् वन्द दुण्डो ?

विदुर के कथन का दुर्योधन द्वारा उत्तर देना—४१

सर्प को जिसने (ध्वजा में) फहराया था, उसने तपते मन के साथ बुद्धिमान विदुर का वचन सुना। बड़ों का नीतिवचन नीच भी सुनेगा क्या ? आँखों से अंगारे निकालते हुए, भौंहों को कँपाते हुए, क्रोध के सिर पर सवार होते, मति के मंद पड़ने से राजा यह कहने लगा। ३ हे कृतघ्न विदुर ! निपट निर्लज्ज विदुर ! नमक खाकर उसके बदले नाश चाहनेवाले विदुर ! उस दिन से आज तक तुम ही हमारे नाश का मार्ग ढूंढ़ रहे हो। जिसने तुम्हें सभामध्य स्थान दिया, उस मेरे पिता की बुद्धि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विदुर के कथन का दुर्योधन द्वारा उत्तर देना—४१

सर्पध्वज (दुर्योधन) ने होकर प्रतप्त मन।
सुना (विज्ञ) मतिमान विदुर का (पूरा प्र-)वचन॥
नीच बड़ों के नीति-वचन कैसे सुन सकता।
दृग से अंगारे बरसा भ्रू कंपित करता॥
लगा क्रोध से (दावानल-सा ही वह) दहने।
(अज्ञानी) मतिमंद लगा दुर्योधन कहने॥ ३॥
"अरे! विदुर! तू (अति) कृतघ्न निर्लज्ज निपट है।
जिसका खाता नमक उसे करता चौपट है॥
कैसे हो विनाश कुरुदल का, यह रख मन में।
पांडव-हित ही सदा बसा है तव चिन्तन में॥
तुझको जिसने सभा मध्य लाकर बैठाया।
उस निज पितु को क्या मैं कहूँ (महा बौराया)॥ ४॥
उन पाँचों के पास (सदा तेरा) मन रमता।
और पेट मम राज-भवन (के आँगन) पलता॥
ऐसा ही दैव ने उसी दिन तुम्हें रचा है।
(स्वामि-भक्ति का तुममें एक न चिह्न बचा है)॥
सत्पथ-कर्ता-सम, मध्यस्थ दैव ज्ञाता-सम।
मम विनाश चाहते, पक्षधर पाँचों के तुम॥ ५॥
राजाओं से भरी सभा के बीच बैठकर।
निज अरियों के साथ प्रथम ही दाँव लगाकर॥
हम क्रम से जीतते, दोष क्यों कहते इसको?।
(बोलो) धर्म बताने आये हो (तुम) किसको?॥
क्या हम सेंध लगाते (लेते द्रव्य चुराकर)?।
या कि किसी को धोखा देते दाँत दिखाकर?॥ ६॥
यहाँ बहुत हैं जीनेवाले झूठ बोलकर।
झूठ प्रशंसा कर जीनेवाले भी बहु नर॥
क्या हम भी ऐसे मनुजों के ही समान हैं?।
(फिर क्यों मुझको नहीं आप दे रहे मान हैं)॥

को क्या कहा जाय? ४ 'मन पाँचों के पास और पेट हमारे महल में'—ऐसा ही देव ने उसी दिन तुम्हें रच दिया। सत्यपथ-कर्त्ता के समान, मध्यस्थ विधि के ज्ञाता की तरह पाँचों के पक्ष में रहकर तुम हमारा नाश ढूँढ़ते हो! ५ राजाओं की भरी सभा में अपने शत्रुओं के साथ पहले ही दाँव लगाकर हम क्रम से जीतते हैं। इसमें क्या दोष देखा तुमने? किसे धर्म बताने आये हो? क्या हम सेंध लगाते हैं? या दाँत दिखाकर किसी को धोखा देते हैं? ६ असत्य बोलकर जीनेवाले, ओंठों से (झूठी) प्रशंसा करके जीनेवाले इस विश्व में हैं। क्या हम उनकी-सी रीति में आये हैं?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शॆय्यॊ णाद शॆय्बार्— तम्मैच्, चीरु ऱुत्त नाडि
ऐय नीयॆ ऴुन्दाल्— अरिजर्, अबल मॆय्दि डारो ? 7
अत्बि लाद पॆण्णुक्— किदमै, आयि रङ्गळ् शॆय्बुम्
मुत्बि नॆण्णु बाळो ?— तरुणम्, मूण्ड पोडु कऴिबाळ्
वत्पु रैत्तल् बेण्डा— अङ्गळ्, वलिपॊ ऱुत्तल् बेण्डा
इत्ब मॆङ्ग णुण्डो— अङ्गे, एहि' डंन्ऱु रैत्तात् 8

विदुरत् शॊल्वदु—42

वेऱु

नत्ऱाहु नॆरि यऱिया मत्त नङ्गु
नात्गुदिशै यरशर्शवै नडुबे नत्तैक्
कॊत्ऱाबु मॊप्पाहा वडुशॊऱ् कूऱिक्
कुमैवदत्ति लणुबळबुङ् गुऴप्प मॆय्दाम्;
'शॆत्ऱालु मिरुम्दालु मिऱियॆत् तेडा ?
शॆय्हैनॆऱि यऱियाद शिऱियाय् निन्तैप्
पॊत्ऱाब बऴिशॆय्य मुयम्ऱु पाऱ्त्तेत्
पॊल्लाद बिदियॆत्तैप् पुऱङ्गण् डात्ताल् 9
कडुञ्जॊऱ्कऴ् पॊऱुक्काद मॆत्मैक् कादुम्
करुङ्गल्लिल् बिडन्दोय्म्द नॆञ्जुङ् गॊण्डोर्
पडुञ्जॆय्दि तोन्ऱुमुत्ते पडुवर् कण्डाय्
पाल्पोलुन् बेत्पोलु मिऱिय शॊल्लोर्

अकृत्य करनेवालों को सुधारने के वास्ते, हे आर्य ! आप उद्यत हो जायें, तो क्या ज्ञानी लोग कष्ट नहीं पायेंगे ? ७ प्रेमहीन नारी का हजार हित करो, तो भी वह क्या आगा-पीछा सोचेगी ? समय आने पर छोड़ ही जायगी। तुम टेढ़ा मत कहो। हमारी शक्ति को सहना नहीं हो, तो चले जाओ वहाँ, जहाँ सुख तुम्हें मिले। —दुर्योधन ने यों कहा। ८

विदुर का कथन—४२

(छन्द-परिवर्तन)

सन्मार्ग से अज्ञ राजा दुर्योधन वहाँ चारों दिशाओं से आये हुए राजाओं की सभा के मध्य मारता-सा, चोट करनेवाला शब्द कहकर छेद रहा था। तो भी विदुर कुछ नहीं घबड़ाये। उन्होंने कहा, 'अब जाने या रहने से क्या होता है, रे ! कर्तव्य-मार्ग न जाननेवाले क्षुद्र, मैंने तुम्हें न मरने देने का प्रयास करके देखा। पर क्रूर विधि ने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यदि अकृत्य करनेवालों को सुधारने हित।
आर्य! आप (जैसे जन यदि) हो जायें उद्यत॥
तो क्या ज्ञानी लोग नहीं संकट पायेंगे।
(इसी भाँति ही बुरा उन्हें भी बतलायेंगे)॥ ७॥
प्रेमहीन नारी के करो हज़ारों ही हित।
आगा-पीछा नहीं सोचती वह (मति-वंचित)॥
साथ छोड़ देती है वह मौका पड़ने पर।
कहो नहीं तुम मुझसे टेढ़े वचन कष्टकर॥
नहीं चाहते अगर हमारी ताकत सहना।
तो तुम जाओ कहीं जहाँ चाहो तुम रहना"॥
इस प्रकार (वह) बोला (अभिमानी) दुर्योधन।
(सुन करके उद्विग्न हो उठे सारे सज्जन)॥ ८॥

विदुर का कथन—४२

सभी दिशाओं से आये थे वहाँ भूप-जन।
सभा बीच बैठे थे वे सब (निज-निज आसन)॥
उनके बीच मर्म-घाती कह शब्द (अपावन)।
छेद रहा था सत्पथ से अनजान (सुयोधन)॥
तो भी विदुर नहीं कुछ भी घबराये मन में।
(बोले सबके सम्मुख उससे सभा-भवन में)॥
"अब जाने या रहने से क्या लाभ मुझे है?।
क्षुद्र! नहीं कर्तव्य-मार्ग का ज्ञान तुझे है॥
तुझे मौत से उबारने का यत्न किया है।
क्रूर विधाता ने पर मुझको हरा दिया है॥ ९॥
जो कटु सत्य न सुन सकते वे श्रवण (सुकोमल)।
विषमय काले पत्थर-सम जिनका अन्तस्थल॥
मौत-खबर आने से पहले ही ऐसे नर।
मर जाते हैं जानो (निश्चयपूर्वक प्रियवर!)॥
दूध-शहद-सम मीठी बातें करनेवाले।
संकट-पथ बतलाते (आफ़त के परकाले)॥
(जो होते हैं मनुजों के सच्चे) हित-चिन्तक।
चिकनी-चुपड़ी बातें करते नहीं निरर्थक॥

मुझे हरा दिया। ९ यह समझ लो कि जिनके कोमल कान कठोर (अप्रिय, पर हितकारी) शब्द सुन नहीं सकते और जिनका हृदय विष-सने पत्थर के समान है, वे मृत्यु की खबर आने के पहले ही मृत्यु को प्राप्त हो जायंगे। दूध और शहद के समान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इडुम्बैक्कु वऴि शॊल्वार्; नन्मै काण्बार्
इळहु मॊऴि कूऱा रॆन् ऱिनैत्ते तानुम्
नॆडुम् बच्चै मरम्बोले वळर्न्दु विट्टाय्
निनक्कॆवरुम् कूऱियव रिल्लै कॊल्लो ? 10
नलङ्गूऱि यिडित्तुरैप्पार् मॊऴिहळ् केळा
नारपति ! निन् नबैक्कळत्ते यमैच्च राह
वलङ्गॊण्ड मन्नरॊडु पार्प्पार् तम्मै
वेत्तिरुत्तल् शिऱिदेनुन् दहादु कण्डाय्
शिलङ्गॆप्पॊऱ् कच्चणिन्द वेशै मादर्
शिऱुमैक्कुत् तलै कॊडुत्त तॊण्डर् मऱ्ऱुङ्
गुलङ्गॆट्ट पुलै नीशर् मुडवर् पित्तर्
कोमहने ! निनक्कुरिय अमैच्चर् कण्डाय् ! 11
शॆन्ऱालु निन्ऱालु मिनियॆन् नेडा ?
शॆप्पुवन निनक्कॆन नान् शॆप्पि नेना ?
मन्ऱार् निऱैन्दिरुक्कु मन्नर् पार्प्पार्
मदियिल्ला मूत्तोनु मऱियच् चॊन्नेन्
इन्ऱोडु मुडिहुवदो ? वरुव दॆल्लाम्
यानऱिवेन् वीट्टुमनु मऱिवान् कण्डाय्
बॆन्ऱानुळ् ळाशैयॆलाम् योहि याहि
वीट्टुमनु मॊन्ऱुरैया दिरुक् किन्ऱाने 12
विदिवऴिनन् गुणर्न्दिडिनुम् पेदै येन्यान्
बॆळ्ळैमन मुडैमैयिनाल् महने निन्ऱन्
शदिबऴियैत् तडुत्तुरैहळ् शॊल्लप् पोन्देन्
शरि शरियिङ् गेदुरैत्तुम् पयनॊन् ऱिल्लै

मीठा-मीठा बोलनेवाले आफ़त का मार्ग बताते हैं। भला करनेवाले चिकनी-चुपड़ी बातें नहीं करते —इतनी सी बात, यद्यपि तुम ऊँचे हरे तरु के समान बढ़े हुए हो, तुमसे कहने वाले कोई नहीं रहे क्या ? १० भला कहकर डाँट बतानेवालों के वचन न सुननेवाले नरपति, तुम्हारा अपनी सभा में प्रतापी राजाओं के साथ ब्राह्मणों को अमात्यों के रूप में रखना जरा भी उचित नहीं है। हे राजा, घुँघुरू तथा स्वर्ण काछ-धारिणी वेश्याएँ, नीच कर्म के लिए सिर (हाथ) देनेवाले सेवक, कुलभ्रष्ट नीच चांडाल, लूले-लँगड़े, पागल —ये ही, तुम्हारे योग्य अमात्य होंगे, समझे ! ११ जाऊँ कि रहूँ ? इसमें अब क्या है ? मैंने जो कहा, वह क्या तुम्हारे लिए कहा ? सभा-भर में बैठे रहने वाले राजा लोग, ब्राह्मण और मेरे मतिहीन बड़े भाई —इन लोगों को समझाने के लिए मैंने यह कहा है। क्या आज के (कार्यों के) साथ समाप्ति हो जायगी ? भविष्य में होनेवाली सभी बातों को मैं जानता हूँ, भीष्म भी जानते हैं— जान लो !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुमसे इतनी - सी यह बात बतानेवाला।
रहा न कोई क्या नर (भय से रहित निराला)॥
हरे वृक्ष-सम तुम (अतिशय ही) बढ़े हुए हो।
(उच्च - गर्व - गिरि की चोटी पर चढ़े हुए हो)॥ १०॥
भला कहे जो उसको डाँट बतानेवाले।
वचन सुनो नरपति! (दुर्योधन! अति मतवाले!)॥
तुम्हें प्रतापी - नृपों - साथ निज सभा - भवन में।
उचित न विप्र अमात्यों का रखना (परिजन में)॥
घुँघुरू, स्वर्ण - कच्छ - धारक (जो हों) वेश्याएँ।
नीच - कर्म - हित जो सेवक निज - हाथ बटाएँ॥
(क्रूर दुष्ट) चांडाल नीच कुल - भ्रष्ट (अमंगल)।
तुम्हें चाहिए मंत्री लूले, लँगड़े, पागल॥ ११॥
जाऊँ अथवा रहूँ न अब कुछ शेष रहा है।
क्या जो मैंने कहा— तुम्हारे लिए कहा है॥
सभा बीच बैठे ये सारे भूपति गण।
कहा कि जानें ब्राह्मण औ' मति से विहीन जन॥
अरे! आज ही अन्त न होगा इन कामों का।
मुझे ज्ञात वृत्तान्त भविष्यत् परिणामों का॥
और भीष्म भी इसे जानते हैं, तुम जानो।
(कुछ भी तो तुम भय कुकृत्य का मन में मानो)॥
मन की सभी कामनाओं को (समुद) जीतकर।
जो इस (दुनिया में) रहते हैं बन योगीश्वर॥
क्या कारण वह भीष्म (भला) कुछ नहीं बोलते।
(क्यों वे अपने मन का नहीं रहस्य खोलते)॥ १२॥
मैं विधि की करतूत (अज्ञ!) जानते हुए भी।
निश्छल मन से सुत! (तव हित) मानते हुए भी॥
तेरे इस षड्यंत्र मार्ग को (अरे!) रोककर।
था कुछ कहने चला (नहीं जिससे हो संगर)॥
कुछ भी कहूँ, मगर कुछ भी परिणाम न होगा।
चल निज - मति - अनुसार (अरे! शुभ काम न होगा)"॥

सारी हृदय की कामनाओं को जीतकर जो योगी बने हुए हैं, वे भीष्म कुछ नहीं बोलते— यह क्या है? १२ विधि का मार्ग जानते हुए भी अज्ञ मैं, रे पुत्र, निष्कपट मन रखने के कारण, तुम्हारे षड्यंत्र-मार्ग को रोककर कुछ कहने चला। बस, बस! इधर कुछ भी कहो, नतीजा कुछ भी नहीं होगा। अपनी बुद्धि की राह ही पर चलो'। —कहकर विदुर मुख बन्द करके सिर झुकाये आसन पर बैठ गये। 'कलि' को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मदिबळ्ळिये शॊल्लु' हॆत बिदुरत् कूरि
बाय्मूडित् तलैकुनिन्दे यिरुक्कॆ कॊण्डात्
पदिबुरुबोम् पुदियिलॆतक् कलिम हिळ्ळुन्दात्
पारदप्पोर् वरुमॆन्ऱु तेव रार्त्तार् 13

शूदु मीट्टुन् दॊडङ्गुदल्—43

वेऱु

कायु रुट्ट लानार्— शूदुक्, कळिर्तो डङ्ग लानार्
माय मुळ्ळ शुहुनि— पिन्नुम्, वार्त्तै शॊल्लु हिन्ऱान्
'नीय ळित्त दॆल्लाम्— पिन्नुम्, निन्नि डत्तु मीळुम्
ओय्व डॆन्दि डावे— तरुमा, ऊक्क मॆय्यु' हॆन्ऱान् 14
कोयिर् पूशॆ शॆय्वोर्- शिलैयैक्, कॊण्डु विर्ऱल् पोलुम्
वायिल् कात्तु निऱ्पोन्— वीट्टै, वॆत्ति ळुत्तल् पोलुम्
आयि रङ्ग ळान— नीदि, यवैयु णर्न्द तरुमन्
तेयम् वैत्ति ळुन्दान्- चीच्ची !, शिरियर्-शॆय्है शॆय्दान् 15
नाट्टु मान्द रॆल्लाम्- तम्पोल्, निरर्ह ळॆन्ऱु करुदार्;
आट्टु मन्दै यामॆन्— ऱुलहै, अरश रॆण्णि विट्टार्
काट्टु मुण्मै नूल्हळ्— पलदाङ्, काट्टि नार्ह ळेनुम्
नाट्टु राज नीदि— मनिदर्, नन्गु शॆय्य विल्लै 16
ओरञ् जॆयदि डामे— तरुमत्, तुऱदि कॊन्ऱि डामे
शोरञ् जॆय्दि डामे— पिऱरैत्, तुयरिल् वीळ्त्ति डामे
ऊरै याळु मुऱैमै— उलहिल्, ओरपु ऱुत्तु मिल्लै
सार मऱ्ऱु वार्त्तै !— मेलै, शरिवै शॊल्लु हिन्ऱोम् 17

आनन्द हो गया कि हम स्थिर हो गये। 'भारत युद्ध' आरम्भ होनेवाला है, यह सोचकर देवों ने हो-हल्ला मचाया। १३

जुए का पुनः आरम्भ होना—४३

(छन्द-परिवर्तन)

व पाँसे फेंकने लगे। जुए का खेल आरम्भ हुआ। मायावी शकुनि फिर कहता है— तुमने जो गँवाये वे सब तुम्हारे पास फिर आयेंगे। श्रान्त न हो आओ! धर्म! उत्साह रखो। १४ जैसे मन्दिर का पुजारी मूर्ति को ले जाकर बेंचे, पहरेदार वह को (जुए में) लगाकर हाथ से जाने दे—उसी प्रकार सहस्र नीतियों के ज्ञाता धर्म ने राज्य लगाकर गँवाया! छिः छिः! नीच क्षुद्र बुद्धि कार्य कर दिया (उसने)। १५ राजा लोग देशवासियों को अपने समान मनुष्य नहीं मानते। वे उन्हें भेड़ों के झुण्ड

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किया बन्द मुख (पूज्य) विदुर ने ऐसा कहकर।
बैठ गये वे शीश झुका अपनें आसन पर॥
अपने को स्थिर जान हुआ कलियुग आनन्दित।
(माना उसने होगी मेरी सत्ता स्थापित)॥
भारत - रण को होनेवाला जान (सशोकित)।
देवगणों ने किया (तभी) कोलाहल अतुलित॥ १३॥

जुए का पुनः आरम्भ होना—४३

पाँसे फेंके गये शुरू हो गया जुआ फिर।
(कर कटाक्ष) वह मायावी शकुनी बोला फिर॥
"तुमने अब तक जुए - बीच जो द्रव्य गँवाया।
फिर से तुमको वह मिल जायेगा मन - भाया॥
धर्मराज! उत्साह रखो हो क्लान्त न (प्रियवर!)।
फिर से खेलो जुआ (हृदय में धीरज धरकर)"॥ १४॥
जैसे बेचे मूर्ति पुजारी मठ का हरकर।
जैसे पहरेदार बेच डाले (खुद ही) घर॥
त्यों ही विविध नीति - ज्ञाता भूपति (सुविज्ञवर)।
हार गये निज राज्य जुए में दाँव लगाकर॥
धिक्! धिक् कैसा नीच कार्य यह किया अल्पतम।
(निन्दा करते जग के सभी सुधीजन उत्तम)॥ १५॥
देश-वासियों को निज-सम मानते न नृप-जन।
भेड़ों के झुंड (के समान) मानते (निज-मन)॥
चाहे जितनी शास्त्रों की दें (सदा) दुहाई।
किन्तु देश की शासन-नीति न उचित बनाई॥ १६॥
पक्षपात कर और धर्म - स्थिरता बिगाड़कर।
चोरी कर दुख - बीच दूसरों को ढकेलकर॥
इनको बिना किये करना सुख-शान्त (प्र)शासन।
अब तक कहीं न देखा जग में ऐसा प्रचलन॥
सारहीन है किन्तु, व्यर्थ है उसका चिन्तन।
अब आगे की कथा (सुनो) हम करते वर्णन॥ १७॥

मान चुके हैं। चाहे अनेक शास्त्र ग्रंथों का हवाला दें, फिर भी देश-शासन-नीति को लोगों ने सही नहीं बनाया है! १६ पक्षपात किये बिना, धर्म की स्थिरता बिगाड़े बिना, चोरी किये बिना तथा दूसरों को दुख में ढकेले बिना देश का शासन करने का कर्म दुनिया में कहीं पर वह (निरर्थक) सारहीन बात है। हम आगे का चरित्र (कथा) नहीं है! बतायेंगे। १७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शहुनि शॊल्वदु—44

वेरु

'शॊल्वमुर् रिळन्दु विट्टाय्— तरुमा
देशमुङ् गुडिहळुञ् जेर्त् तिळन्दाय्
पल्वळ निरैपुविक्के— तरुमन्
पार्त्तिव नॆन्ब दिनिप् पळङ्गदैकाण् !
शॊल्वदॊर् पॊरुळ्केळाय्— इन्नुञ्
जूळ्न्दॊरु पणयम्बॆत् ताडुदियेल्
वॆल्वदर् किडमुण्डाम्— आङ्गव्
वॆऱ्रियि लनैत्तॆयुम् मीट्टिडलाम् 18
अॆल्ला मिळन्द पिन्नर्— निन्ऱन्
इळैञरु नीरुमऱ् ऱैदिर् पिळैप्पीर् ?
पॊल्ला विळैयाट्टिल्— पिञ्चै
पुहनिनै विडुवदे विरुम्बु हिलोम्
वल्लार् निनदिळैञर्— शूदिल्
वैत्तिडत् तहुन्दवर् पणयमॆन्ऱे;
शॊल्लाल् उळम् वरुन्देल्— वैत्तुत्
तोऱ्रदै मीट्' टॆन्ऱु शहुनि शॊन्नान् 19

वेरु

करुण नुञ्जिरित्तान्— शबैयोर्, कण्णि नीरु दिर्त्तार्
इरुणि ऱैन्द नॆञ्जन्— कळवे, यिन्ब मॆन्ऱु कॊण्डान्
अरवु यर्त्त वेन्दन्— उवहै, आर्त्तॆ ळुन्दु शोल्वान्
'परवु नाट्टै यॆल्लाम्— अॆतिरे, पणय माह वैप्पोम् 20
तम्बि मारै वैत्ते— आडित्, तरुमन् वॆन्ऱु विट्टाल्
मुन्बु माभन् वॆन्ऱ— पॊरुळै, मुळुदु मीण्ड ळिप्पोन्

शकुनि का कथन—४४

"हे धर्म ! सारा धन खो चुके। देश तथा प्रजा भी गँवा गये। 'धर्म विविध समृद्धियों से भरी पृथ्वी का पृथ्वीपति है' —यह बात अब पुरानी कहानी है. जान लिया ? मैं जो कहता हूँ, वह एक बात सुनो। और एक बार सोचकर दाँव लगाओ, तो जीतने का मौका है। उस जय से सारी सम्पत्ति लौटा सकते हो।" १८ 'सब खोकर तुम और तुम्हारे छोटे भाई दूसरी किस जीविका पर जिओगे ? निगोड़ी क्रीड़ा के फलस्वरूप हम तुम्हें भिखारी के जीवन में प्रवेश करने नहीं देंगे। तुम्हारे छोटे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शकुनि का कथन—४४

"धर्मराज ! तुम (आज) खो चुके (हो) सारा धन।
गँवा चुके तुम देश, हार तुम गये प्रजा-जन ॥
समृद्धियों से भरी धरा का धर्म नृपति है।
अब हो गई पुरानी कथा (नहीं संगति है) ॥
मैं जो कहता हूँ वह बात सुनो (मन लाओ)।
एक बार तुम और जुए पर दाँव लगाओ ॥
यह जय का मौका है (इसको नहीं गँवाओ)।
(पुनः) जुए में जीत सभी सम्पति लौटाओ ॥ १८ ॥
सब खोकर तुम और तुम्हारे छोटे भाई।
क्यों जीवेंगे ? और करेंगे कौन कमाई ? ॥
इस हतभागी (नीच) द्यूत-क्रीडा के कारण।
नहीं बिताने देंगे तुमको भिक्षुक - जीवन ॥
हैं सामर्थ्यवान (अतिशय) तव छोटे भाई।
उन्हें लगाकर दाँव (जीत परखो मन - भाई) ॥
सिर्फ़ कथन से मन को मत तुम दुखी बनाओ।
दाँव लगाओ फिर हारे धन को लौटाओ" ॥
इस प्रकार वह दुष्ट (नराधम) शकुनी बोला।
(मन में था विष भरा वचन में था मधु घोला) ॥ १९ ॥
हँसा कर्ण भी सभासदों ने अश्रु बहाये।
(सज्जन राजाओं के मन शोक में समाये ॥
अंधकार से भरे हुए काले मन वाला।
छल से धन हर करके आनन्द मनानेवाला ॥
सर्पध्वज संतोष - सहित (उर में) उमंग भर।
सबके सम्मुख बोला (इस प्रकार) स्थित होकर ॥
"मैं विशाल (यह) राज्य दाँव पर लगा रहा हूँ।
(सुन लें सभी सभासद सबको सुना रहा हूँ) ॥ २० ॥
निज छोटे भ्राताओं को दाँव पर लगाकर।
जीत गये यदि धर्मराज (इस बार युधिष्ठिर) ॥
तो मामा द्वारा पहिले जीता सारा धन।
हम तुरन्त लौटा देंगे (होकर प्रसन्न मन) ॥

भाई सामर्थ्यवान हैं ! वे दाँव के रूप में लगाने योग्य हैं। केवल कथन से मन को दुखी मत करो। लगाओ तथा हारी हुई चीजों को फिरा लो।' —शकुनि ने कहा। १९ कर्ण भी हँसा। सभासदों ने अश्रु बहाये। अंधकार भरे (काले) मन वाले, चोरी (वंचना से हरने) में आनन्द माननेवाले सर्पध्वज ने संतोष से उमड़ उठकर खड़ा होकर कहा— विशाल राज्य को हम आगे दाँव पर लगायेंगे। २० कनिष्ठ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नम्बि वेलै शॆय्बोम्— तरुमा, नाडि ळन्द पिन्नर्
अम्बि नॊतज विळियाळ्— उङ्गळ्, ऐवरुक्कु मुरियाळ् 21
अवळि हळ्न् विडाळो— अन्द, आयन् पेन्नु वानो ?
कवलै तीर्त्तु वैन्पोम्— मेले, कळिन डक्कु' हॆन्ड्रान्
इवळ वान पिन्नुम्— इळैजर्, एदुम् बार्त्तत शॊल्लार्
तुवळु नॆम्जि नाराय्— वदनन्, वॊङ्ग वोर्ड्रि रुन्बार् 22
वीमन् मूच्चु विट्टान्— मुळैयिल्, वॆय्य नाहम् पोले;
काम नॊत्त पार्त्तनन्— बदनक्, कळैयि ळन्दु विट्टान्
नेम निक्क नकुलन्— ऐयो, निनैव यर्न्दु विट्टान्
ऊमै पोलि रुन्दान्— पिन्नोन्, उण्मै मुड्र पर्न्बान् 23
कङ्गै मैन्द नङ्गे— नॆञ्जन्, कनलु ड्रन्तु डित्तान्;
पॊङ्गु वॆञ्जि नन्ताल्— अरशर्, पुहै युयिर्त् तिरुन्बार्;
अङ्ग नॊन्दु विट्टान्— विदुरन्, अवल मॆय्दि विट्टान्
शिङ्ग मैन्दै नाय्हळ्— कॊल्लुम्, जॆय्दि काणलुड्रे 24

सहादेवनैप् पन्दयङ् गूड्रल्—45

वेड्र

अॆप्पॊळुदुन् पिर मत्तिले— शिन्द
पैड्रि उलहमॊ राजल्पोल्— अॆण्णित्
तप्पिन्ड्रि यिन्बङ्गळ् तुय्त्तिडुम्— बहै
तानुणर्न् दान्सह देबसाम्— अङ्गुम्
ऒप्पिल् पुलवनै याट्टत्तिल्— बैत्तल्
उन्तिन् तरुमन् पणयमॆन— ड्रङ्गु
शॆप्पिनन् कायै युरुट्टिनार्— अङ्गु
तीय शहुनि कॊलित्तिट्टान् 25

भ्राताओं को दाँव पर रखकर अगर धर्म जीत गया, तो पहले मामा द्वारा जीता सारा धन लौटा देंगे। हे धर्म, विश्वास के साथ कार्य करेंगे। राज्य खोने के बाद जो बाण-सी आँखवाली तुम पाँचों के स्वत्व की है, २१ वह क्या निन्दा नहीं करेगी ? वह ग्वाला भी तुम लोगों से वार्तालाप करेगा ? हम चिन्ता दूर कर देंगे— आगे क्रीडा हो —कहा दुर्योधन ने। इतना होने पर भी छोटों ने कुछ नहीं कहा। उसका मन मुरझा गया और सिर लटक गया। वे वैसे ही बैठे रहे। २२ भीम ने बाँबी के अन्दर के भयंकर सर्प के समान आह भरी। कामदेव-से पार्थ का बदन निष्प्रभ हो गया। हाय ! नेमी नकुल संज्ञा खो गया। उसका सर्व-तत्त्वज्ञ छोटा भाई (सहदेव) गूंगा-सा बना रहा। २३ गांगेय हृदय में आग लगे-से छटपटा उठे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

धर्मराज ! विश्वास - सहित हम कार्य करेंगे ।
(जो कह देंगे उसे तुरत हम आर्य ! करेंगे) ।।
खो देने पर राज्य बाण - सी आँखों वाली ।
निन्दा क्या न करेगी पाँचों की पांचाली ।। २१ ।।
गोप कृष्ण क्या तुमसे वार्तालाप करेगा ? ।
खेलो द्यूत (यही) चिन्ता, (दुख सभी) हरेगा" ।।
इस प्रकार जब दुर्योधन ने वचन सुनाया ।
बोले अनुज न कुछ भी उनका मन मुरझाया ।।
चारों अनुजों के सिर हुए (शोक से) अवनत ।
हुए (मूर्ति के सम) जैसे के तैसे संस्थित ।। २२ ।।
भरी भीम ने आह सर्प ज्यों बाँबी अन्दर ।
काम-समान पार्थ का वदन हुआ निष्प्रभ-तर ।।
नेमी नकुल हो गया संज्ञाहीन (अचेतन) ।
गये अनुज सहदेव सर्वतत्त्वज्ञ मूक बन ।। २३ ।।
लगी हृदय में आग भीष्म छटपटा उठे तब ।
धुआँ साँस से तजते हुए कुपित भूपति सब ।।
अवश हो गये विदुर अंग पड़ गये शिथिलतर ।
जैसे मार रहे हों सिंह - सुवन को कुक्कुर ।। २४ ।।

सहदेव को दाँव पर लगाना—४५

यह सारा संसार खेल के तुल्य मानकर ।
सदा ब्रह्म - चिन्तन में रहते लीन (निरन्तर) ।।
इस प्रकार निर्दोष रीति से सुख के भोगी ।
थे अनुपम सहदेव (यथा हो कोई योगी) ।।
उन्हें धर्म - सुत ने (तुरन्त) दाँव पर लगाया ।
पाँसे फेंके, जीता शकुनी (करके माया) ।। २५ ।।

उमड़ते क्रोध से राजा लोग साँस के रूप में धुआँ छोड़ने लगे । विदुर के अंग शिथिल पड़ गये । वे विवश हो गये । —यह सब सिंह-शावक को कुत्तों द्वारा मारना देखकर हुआ । २४

सहदेव को दाँव पर लगाना—४५

सदा ब्रह्म-चिन्तन में, संसार को खेल मानकर निर्दोष रीति से सुख भोगनेवाले, तथा कहीं भी सानी न रखनेवाले सहदेव को धर्म ने दाँव पर लगाने का निश्चय करके कहा । पाँसे फेंके और शकुनि जीत गया । २५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नहुलनै यिळत्तल्—46

नहुलनै वैत्तु मिळन्दिट्टान्— अङ्गु
नळ्ळिरुट् कण्णॊरु शिऱ्ऱुळि— वन्दु
पुहुवदु पोलवन् पुल्दियिल्— ऎन्न
पुन्मै शॆय्दोम् ऎन्न ऎण्णिनान्— अव्वॆण्ण
मिहुवदन् मुन्बु शहुनियुम्— 'ऐय
वेऱॊरु तायिऱ् पिऱन्दवर्— वॆक्कत्
तहुवरॆन् ऱिन्दच् चिरुवरै— वॆत्तुत्
तायत्ति लेयिळन् दिट्टनै 26
तिण्णिय वीमनुम् पार्त्तनुम्— कुन्दि
देवियिन् मक्क ळुनैयॊत्ते— निन्निऱ्
कण्णिय मिक्कव रॆन्ऱवर्— तमैक्
काट्टुदऱ् कञ्जनै पोलुम् नी ?'— ऎन्ऱु
पुण्णिय मिक्क तरुमनै— अन्दप्
पुल्लन् विनविय पोदिनिल् तर्मन्
तुण्णॆन्न वॆञ्जिन मॆय्दिये— 'अड
शूदि लरशिळन् देहिनुम् 27

पार्त्तनै यिळत्तल् तर्मन् शॊल्वदु—47

ऎङ्गळि लॊऱ्ऱुमै तीर्न्दिडोम्— ऐवर्
ऎण्णत्तिल् आविय लॊन्ऱु काण्— इबर्
पङ्गमुऱ् ऱेपिरि वॆय्दुवार्— ऎन्ऱु
पादहच् चिन्दनै कॊळ्हिऱाय्— अड
शिङ्ग मऱवर् तमक्कुळ्ळे— विल्लुत्
तेर्च्चियि लेनिह रऱ्ऱवन्— ऎण्णिल्
इङ्गुप् पुवित्तल मेळ्ळुम्— थिलै
यीडनक् कॊळ्ळत् तहादवन् 28

नकुल को गँवाना—४६

धर्म ने नकुल को भी लगाकर खो दिया। जैसे घने अंधकार में एक छोटी किरण-रेखा आ घुसी, वैसे उनके मन में विचार आया कि हमने कैसी क्षुद्रता की है! उस विचार के बढ़ने से पहले शकुनि ने भी कहा कि आर्य, विमाता के पेट से जन्मे भाई लगाने योग्य हैं। —यही सोचकर न तुमने उनको दाँव पर लगाकर हारा! २६ बलवान भीम तथा पार्थ, कुंतीदेवी के पुत्र तुम्हारे समान, बल्कि तुमसे अधिक गण्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नकुल को गँवाना—४६

इसी भाँति से (अनुज) नकुल दाँव पर लगाया।
और उन्हें भी (जुए बीच हारकर) गँवाया॥
घन तम में लघु-रश्मि-रेख-सी (अति उज्ज्वलतर)।
उनके मन में उदित हुई भावना (मनोहर)॥
"हमने की है यह कैसी मूर्खता (भयंकर)"।
इस विचार के बढ़ने से पहिले ही (सत्वर)॥
बोला शकुनी, "सौतेले इनको विचार कर।
हार गये तुम इनको (सत्वर) लगा दाँव पर॥ २६॥
कुन्ती के सुत बली भीम औ' पार्थ (प्रबलतर)।
तुम-सम या तुमसे भी श्रेष्ठ, यही विचारकर॥
यह संकोच दिखावे का करते, (डरते हो)।
(इसीलिए दाँव पर नहीं उनको धरते हो)"॥
इस प्रकार यह क्षुद्र वचन उस (खल) का सुनकर।
बोले पावन धर्म - पुत्र (अति) क्रोधित होकर॥ २७

पार्थ को खोना—४७

(धर्म का कथन)

"चाहे जाएँ राज्य हार हम जुआ खेलकर।
तो भी नहीं त्याग सकते हैं मेल परस्पर॥
ऊपर से दिखते यद्यपि हम सब अनेक हैं।
पर पाँचों के प्राण और (सु-) विचार एक हैं॥
तुम यह पाप - विचार सोचते हो खुश होकर।
हम होंवेंगे अलग, पड़ेगी फूट परस्पर॥
(सभी) वीर - केसरियों से बढ़कर उत्तम जो।
और धनुर्विद्या - (विशारदों) में अनुपम जो॥ २८॥

हैं, क्या यह सोचकर तुम उनको दिखाने से डरे ? पुण्यात्मा धर्म से उस क्षुद्र ने ऐसा प्रश्न किया, तो तैश में आकर धर्मपुत्र ने कहा-- रे जुए में राज्य हारकर जायँ, तो भी-- २७

पार्थ को खोना—४७

हम आपस में मेल नहीं छोड़ेंगे। हम पाँचों विचार में तथा प्राणों में एक हैं—देख लो। तुम यह पातकीय विचार करते हो कि ये आपस में फूटकर अलग हो जायेंगे। अरे ! वीर-केसरियों में धनुर्विद्या में अनुपम, विचार करें, तो सातों लोक भी क्रय में जिसके समान नहीं हो सकते—२८ वह कृष्ण का प्राण-प्यारा मित्र, हमारा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णनुक् कारुयिर्त् तोळ्ळाम्— ऍङ्गळ्
कण्णिलुञ् जाल इन्नियवन्
वण्णमुन् दिण्मैयुम् शोदियुम्— पॅऱ्ऱु
बाऱत् तमररॅप् पोऱ्ऱवन्— अवन्
ऍण्णरु नऱ्कुणम् जाऱ्ऱवन्— पुह
ळॅऱ्ऱम् बिजयन् पणयङ्गाण्— पॊय्यिऱ्
पण्णिय कायै युरुट्टुवाय्'— अंऱु
पार्त्तिवन् निम्मि युरैत्तिट्टान् 29
मायत्तै येउरु वाक्किय— अन्द
मामनु नॅञ्जिल् मऴिल्वुऱ्ऱे— कॅट्ट
तायत्तैक् कॅयिनिऱ् पऱ्ऱिनान्;— पिन्बु
शाऱ्ऱि बिरुत्तमङ् गॊन्ऱैये— कॅयिल्
ताय मुरुट्टि विळुत्तिनान्;— अवन्
शाऱ्ऱिय देवन्दु वॊळ्ळन्ददाल्— वॅऱ्ऱम्
ईयत्तॅप् पॊन्नॅन्ऱु काट्टुवार्— मन्नर्
इप्पुवि मीदुळ रामन्ऱो ? 30

वीमनै इळत्तल्—48

कॊक्करित् तार्त्तु मुळङ्गिये— कळि
कूडिच् चहुनियुञ् जॊल्लुवान्— 'ऍट्टुत्
तिक्कनैत् तुम्बॅन्ऱु पार्त्तनै— वॅन्ऱु
तीर्त्ततनम् वीमनैक् कू'ऱॅन्ऱान्— तर्मन्
तक्कदु शंय्दल् मऱन्दनन्— उळञ्
जार्न्दिडु वॅञ्जिन वॅळ्ळत्तिल्— ऍङ्गुम्
अक्करै यिक्करै काण्गिलन्— अऱत्
तण्ण लिदनै युरैक्किन्ऱान् 31

आँखों से भी अधिक प्यारा, सौन्दर्य, बल तथा तेज पाकर व्योम देश के देवों के समान रहनेवाला —वह अगणित सद्गुणों से पूर्ण, वर्द्धमान यश का विजय है, उसे दाँव पर लगा रहा हूँ। कपट से निर्मित पाँसे फेंको ! —यह धर्मपुत्र ने दुख से भरकर कह दिया। २९ माया के ही रूप में बने उस मातुल ने मन में आनन्द से भरकर हानिकर पाँसे को हाथ में लिया। फिर कुछ कहकर पाँसे फेंके। उसने जो कहा, वही निकला। केवल काँसे को स्वर्ण बनाकर दिखानेवाले राजा भी इस पृथ्वी पर विद्यमान हैं न ? ३०

भीम को खोना—४८

ठठाकर, हा हा! करके आनन्द के साथ शकुनि ने कहा— 'आठों दिशाओं में सारी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सप्तलोक भी क्षुद्र, न उसकी समता वाला।
मम-दृग-प्रिय औ' कृष्णचन्द्र का सखा निराला॥
है सुन्दर बलवान, तेज का लिये उजाला।
व्योम देश में देवों के सम रहनेवाला॥
जिसका यश तानों लोकों में वर्धमान है।
अगणित - सद्गुण - पूर्ण पार्थ नामक महान है॥
उस अर्जुन को लगा रहा हूँ (आज) दाँव पर।
छल से निर्मित पाँसे फेंक (अरे! तू पामर !)"।
धर्म - पुत्र ने (तब अति भीषण) दुख से भरकर।
(उपर्युक्त कह दिये वाक्य उर क्षुब्ध-क्षुब्धतर)॥ २९॥

मायावी मातुल मन में प्रमोद से भरकर।
और अशुभ पाँसे को अपने कर में लेकर॥
फेंके पाँसे कुछ कहकर उसने पृथ्वी पर।
उसने जो कुछ कहा गिरा था वही मही पर॥
जो काँसे को (निज माया से) स्वर्ण बनाते।
ऐसे नृप भी भू पर विद्यमान दिखलाते॥ ३०॥

भीम को खोना—४८

तब बोला शकुनी हाहा कर समुद ठठाकर।
(कपटी, छली, दुष्ट, लंपट निज दाँत दिखाकर)॥
"आठ दिशा औ' सभी भूमि जय करनेवाले।
जीत लिये हैं आज पार्थ (अतुलित जय वाले)॥
अब बलशाली भीमसेन का दाँव लगाओ।
(बदले में तुम हारा हुआ सभी धन पाओ)"॥
उचित और अनुचित सब भूले तभी युधिष्ठिर।
मन में फैली (विकट) क्रोध की बाढ़ (भयंकर)॥
ओर-छोर देखा न किया (कुछ निश्चय मन में)।
धर्मराज बोले (क्रोधित हो सभा - भवन में)॥ ३१॥

भूमि को जीतनेवाले पार्थ को हमने जीत लिया। अब भीम को लगाओ।' अर्थ उचित-अनुचित भूल गये। मन में फैले क्रोध की बाढ़ का उन्होंने न ओर देखा न छोर। धर्मराज ने कहा — ३१ 'पाँचों के अनुपम नाथ को, हमारे शासन को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐवर् तमक्कॊर् तलैवनै— ऍङ्गळ्
आट्चिक्कु वेर्वलि यःदिनै— ऑरु
तॆय्वमुन् नेनिन् ऱॆदिर्प्पिनुम्— निन्ऱु
शीऱि यडिक्कुन् दिऱलनै— नॆडुङ्
गैवळर् यानै पलवर्ऱिन्— बाले
काट्टुम् पॆरुम्बुहळ् वीमनै— उङ्गळ्
पॊय्बळर् शूदिनिल् वैत्तिट्टेन्— वॆन्ऱु
पो' ऍन्ऱुरैत्तनन् पॊङ्गिये 32

पोरिनिल् यानै विऴक्कण्ड— पल
पूदङ्गळ् नाय्नरि काहङ्गळ्— पुलै
ओरि कळुहॆन् ऱिवैयॆलाम्— तम
दुळ्ळम् कळिकॊण्डु विम्मल्पोल्— मिहच्
चोरिय वीमनैच् चूदिनिल्— अन्दत्
तीयर् विऴुन्दिडक् काणलुम्— निन्ऱु
मार्बिलुन् दोळिलुङ् गॊट्टिनार्— कळि
मण्डिक् कुदित्तॆऴुन् दाडुवार् 33

तरुमन् तन्नैत् तानै पणयम् वैत्तिऴत्तल्—49

मन्नवर् तम्मै मऱन्दु पोय्— वॆऱि
वाय्न्द तिरुडरै यॊत्तनर्— अङ्गु
शिन्नच् चहुनि शिरिप्पुडन्— 'इन्नुम्
शॆप्पुह पन्दयम् वे' ऱॆन्ऱान्— इवन्
तन्नै मऱन्दव नादलाल्— तन्नैत्
तान् पणयमॆन बैत्तनन्— पिन्बु
मुन्नैक् कदैयन्ऱि वेऱुण्डो ?— अन्द
मोशच् चहुनि कॆलित्तनन् 34

सुदृढ़ जड़ को, एक देव भी सामने आ लड़े, तो उसको जो गुस्सा करके पीट सकता है उसको, सूंड़ोंवाले अनेक हाथियों का-सा बल रखनेवाले बड़े यशस्वी भीम को, तुम्हारे कपट बढ़ानेवाले जुए में मैंने लगा लिया। लो, जीत लो, चलो।' —धर्म ने उबलते हुए ऐसा कहा। ३२ जैसे युद्ध में हाथी को गिरता देखनेवाले अनेक मृग, सियार, कुत्ते, काग, नीच जानवर, गधे आदि सभी मन में खुश होकर फूल उठते हैं, वैसे ही अति श्रेष्ठ भीम को जुए में गिरा हुआ देखकर वे कुटिल लोग वस्त्र तथा भुजाओं को ठोंककर आनन्द के आधिक्य से उठे, उछले तथा नाचे ! ३३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"जो पाँचों में अनुपम, नाथ - समान सुशोभित।
जो मम - शासन की जड़ को दृढ़ करता (निश्चित) ॥
अगर देव - (दानव-) समूह सम्मुख आ जाये।
तो क्रोधित हो पीट - पाटकर दूर भगाये ॥
शुंड - विमंडित - गजों - तुल्य जो है बलशाली ॥
भू - मंडल में फैली जिसकी कीर्ति निराली।
आज तुम्हारे कपट - द्यूत में उसे दाँव पर।
लगा रहा हूँ, उसे जीत ले (रे खल! पामर!)" ॥
इस प्रकार धर्म ने कहा (क्रोध से) उबलकर।
(सुनकर उनके वचन सशंक हुए सब नृपवर) ॥ ३२ ॥

ज्यों रण - थल में गज को गिरता हुआ देखकर।
भूत, सियार, श्वान, गर्दभ, काकादि जानवर ॥
ये उठते हैं फूल सभी मन में खुश होकर।
त्यों ही श्रेष्ठ भीम को हारा हुआ देखकर ॥
वे दुर्जन निज वक्ष, भुजाएँ ठोंक - ठोंककर।
नाच उठे आनन्द - पूर्वक उछल - उछलकर ॥ ३३ ॥

धर्म का स्वयं अपने को लगाकर गँवाना—४९

तब अपनी सारी सुध - बुध को (तुरत) भूलकर।
पागल चोरों के समान बन गये युधिष्ठिर ॥
नीच शकुनि तब (फिर) बोला (उनसे यों) हँसकर।
"अब आगे का दाँव लगाओ (हे भूपति, वर!)" ॥
आपे में न रहे वे (सारा ज्ञान भुलाया)।
और जुए में अपने को दाँव पर लगाया ॥
फिर पहिले के ही समान ही सब कुछ बीता।
हारे धर्म, नृशंस (नराधम) शकुनी जीता ॥ ३४ ॥

धर्म का स्वयं अपने को लगाकर गँवाना—४९

राजा अपने को भूलकर पागल चोरों के समान बन गये। तब क्षुद्र शकुनि ने हँसते हुए कहा कि अब आगे दाँव बोलो। धर्म आपे में न रहे, इसलिए उन्होंने अपने को ही दाँव के रूप में लगा दिया। फिर क्या? पुरानी कहानी को छोड़ और था क्या? वह नृशंस शकुनि जीता। ३४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुरियोदनन् शॊल्वदु—50

पॊङ्गि मॆऴुन्दु शुयोदनन्— अङ्गु
पूदल मन्नर्क्कुच् चॊल्लुवान्:— 'ऒळि
मङ्गि यऴिन्दनर् पाण्डवर्— पुवि
मण्डल नम्म दिनिक्कण्डीर्— इवर्
शङ्गै यिलाद निदियॆलाम्— नम्मैच्
चार्न्दवु; वाऴ्त्तुदिर् मन्नर्हाळ् !— इवै
ऎङ्गुम् परैयरै वायडा— तम्बि !'
ऎन्ऱदु केट्टुच् चहुनितान् 35

शहुनि शॊल्वदु—51

'पुण्णिडैक् कॊल् कॊण्डु कुत्तुवन्— निन्नैप्
पोन्ऱवर् शॆय्यत् तहुवदो ?— इरु
कण्णि लिनियव रामॆन्ऱे— इन्दक्
काळैयर् तम्मैयिङ् गुन्वैतान्— नॆञ्जि
लॆण्णि विरुप्प दऱिहुवाय्;— इवर्
यार्निन्ऱन् शोवर रल्लरो ? कळि
नण्णिन् तॊडङ्गिय शूदन्ऱो ? इवर्
नाणु ऱच्चॆय्वदु नेर्मैयो ? 36
इन्नुम् पणयम् वैत्ताडुवोम्— वॆऱ्ऱि
इन्नु मिवर्पॆऱ लाहुङ्गाण्
पॊन्नुङ् गुडिहळुन् देशमुम्— पॆऱुप्
पॊऱ्पोडु पोदऱ् किडमुण्डाम्— ऒळि
निन्नु मन्नुदमुम् पोन्ऱवळ्— इवर्
नेविङु तेविये वैत्तिट्टाल्— अवळ्
मुन्नु मविट्ट मुडैयवळ्— इवर्
तोऱ्ऱ वन्नैत्तैयु मीट्टलाम्' 37

दुर्योधन का कथन—५०

दुर्योधन उमंग से उमड़ उठा। वह भूतल के भूपतियों से बोला— आओ लोकर पाडव मन्द हो गये, मिट गये। भूमण्डल अब हमारा है, देखो! इनकी सारी अपार सम्पत्ति हमें मिल गयी। हे राजाओ! बधाई दो। हे (कनिष्ठ) भाई! इसका सब जगह ढिंढोरा पिटवा दो। यह सुनकर शकुनि ने कहा— ३५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दुर्योधन का कथन—५०

तब (अतिशय) उमंग में भरकर (शठ) दुर्योधन।
भू-तल के भूपतियों से बोला (कलुषित-मन)॥
"मन्द हो गये, मिटे पांडु-सुत आभा खोकर।
अब भू-मंडल (सभी) हमारा है (हे नरवर!)॥
इनकी सभी अपार सम्पदा हमने पाई।
राजाओ! तुम सब मिलकर दो मुझे बधाई॥
हे अनुजो! सब जगह ढिंढोरा (तुम) पिटवाओ।
(जीत गये हम हँसो-खिलो, आनन्द मनाओ)"॥ ३५॥

शकुनि का कथन—५१

(दुर्योधन की) इस प्रकार की बातें सुनकर।
बोल उठा शकुनी (जैसे हो काला विषधर)॥
"अरे! घाव पर नमक छिड़कना अति अनुचित है।
तुम लोगों के योग्य काम यह नहीं उचित है॥
पिता तुम्हारे इन्हें समझते दृग का तारा।
तुम भी यह जानते (हाल) हो (भूपति सारा)॥
आखिर ये हैं कौन, तुम्हारे ही हैं भाई।
मन बहलाने-हेतु जुए की रस्म निभाई॥
ठीक नहीं है इनको (इस विधि) लज्जित करना।
(ठीक नहीं इनके मन में तप्तानल भरना)॥ ३६॥
खेलेंगे आगे भी अब ये दाँव लगाकर।
अब भी जीतेंगे अवश्य ये (भूप युधिष्ठिर)॥
स्वर्ण, प्रजा औ' देश आदि सब पुनः जीतकर।
संभावना यही लौटेंगे सादर (निज घर)॥
छविमय अमृत-समान साथ जो इनके नारी।
उसे लगायें, वह है भाग्यशालिनी प्यारी॥
यों ये हारे सभी द्रव्य लौटा सकते हैं।
(फिर से अपना राज्य, अनुज, सब पा सकते हैं)"॥ ३७॥

शकुनि का कथन—५१

'घाव में लकड़ी घुसाना तुम-से लोगों के लिए उचित काम नहीं है। तुम्हारे पिता इनको अपनी आँखों से प्यारा समझते हैं—यह तुम जानते हो। ये भी कौन हैं? क्या तुम्हारे भाई नहीं हैं? आखिर खेल के आनन्द के लिए यह जुआ आरम्भ किया गया न? क्या इनको लज्जित कर देना ठीक होगा? ३६ आगे भी दाँव लगायेंगे और खेलेंगे। अब भी ये जीत सकेंगे—देखो! स्वर्ण, प्रजा, देश—इन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅन्ऱन्द मामा नुरैप्पवे— वळर्
इन्ब मनत्ति लुडैयनाय— मिह
नन्ऱु नन्ऱैन्ऱु शुयोदनन्— शिरु
नायीन्ऱु तेन्कल शत्तिनै— अॅण्णित्
तुन्ऱु मुहवैयिल् वॅर्ऱुना— विनैत्
तोय्त्तुच् चुवैत्तु मिहिळ्दल् पोल्— अवन्
ऑन्ऱु रैयाम लिरुन्दिट्टान्— अळि
वुर्ऱ दुलहत् तऱमॅलाम् 38

।। अडिमैच् चरुक्कम् मुऱिऱु ।।

नान् गावदु— दिरौपदियैच् चपैक्कु अळैत्त चरुक्कम्

दिरौपदियै इळत्तल्—52

पावियर् सबैतलिले— पुहळ्प्
पाञ्जाल नाट्टिनर् तवप्पयनै
आविय लिनियबळै— उयिर्त्
तणिशुमन् दुलविडु शैय्यमुदै
ओविय निहर्त्तबळै— अरु
ळॉळियिनैक् कऱ्पनैक् कुयिर दनैत्
तेविये निलत्तिरुवै— अॅङ्गुन्
देडिनुम् किडैप्परुन् दिरवियत्तै 39
पडिमिशै यिशैयुऱवे— नडै
पयिन्ऱिडुन् दॅय्विह मलर्क् कोडियैक्
कडिकमळ् मिन्नुरुबै— ऑरु
कमनियक् कनविनैक् कादलिनै
वडिवुरु पेरळहै— इन्ब
वळत्तिनैच् चूडिनिऱ् पणयमॅन्ऱे
कॉडियव रवैक्कळत्तिल्— अऱक्
कोमहन् वैत्तिडल् कुऱित्तु विट्टान् 40

सबको जीतकर आदर के साथ लौट जाने की सम्भावना है। छविमय अमृत के समान जो इनके साथ मिली देवी है उसको लगा दें —वह सौभाग्यशालिनी है! ये हारे हुए सब पुनः लौटा ले सकते हैं।' ३७ इस प्रकार मामा के कहते ही, वर्द्धित-आनन्द मन दुर्योधन, 'अच्छा है, अच्छा है', कहकर जैसे क्षुद्र कुत्ता मधुकलश का स्मरण करके आनन्द से अपनी खाली जीभ को चाटता हो, वैसे ही चुप रह गया— कुछ नहीं बोला। संसार का धर्म बिलकुल मिट गया! ३८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मामा के (मुख से) सुन करके ऐसा प्रकथन।
अतिवर्धित आनन्दित - मन हो गया सुयोधन ॥
जैसे नीच श्वान रसमय मधु - कलश देखकर।
चाट रहा हो अपनी खाली जीभ निरन्तर ॥
वैसे ही वह भी "अच्छा अच्छा" यह कहकर।
मौन हो गया बोला कुछ भी नहीं (नीचतर) ॥
यों भू - तल से बिलकुल धर्म विनाश हो गया।
(काँप उठी धरती निष्प्रभ आकाश हो गया) ॥ ३८ ॥

॥ दासता-सर्ग समाप्त ॥

चतुर्थ—द्रौपदी-चीर-हरण-सर्ग

द्रौपदी को गँवाना—५२

यशवाले पांचाल देश का तप - फल सुन्दर।
प्राणवान भूषण - भूषित, प्राणों से प्रियतर ॥
चलने - फिरनेवाली (रसमय) सुधा श्रेष्ठ - (तर)।
कृपा-ज्योति (-सी) बसी हुई जो मन के भीतर ॥
प्राण - रूप थी (कलित) कल्पना की जो मनहर।
जो भू - तल की श्रीदेवी थी (अति सुषमाकर) ॥
कहीं ढूँढ़ने पर न मिले, वह ऐसा धन थी।
(सभी गुणों से पूर्ण मनोरम मंजुल मन थी) ॥ ३९ ॥
करती हुई भूमि पर (कलित) कीर्ति का अर्जन।
चलती - फिरती सुमन - लता - सी (अतिशय शोभन) ॥
बिजली-सा था (रम्य) रूप (अत्यन्त) सुगंधित।
प्रेमरूप थी (अति) कमनीय स्वप्न-सी (सुललित) ॥
जो महान सौन्दर्य - (राशि) थी रूप-युक्त वर।
अमित सुखों का जो थी पुष्कल-संग्रह (सुन्दर) ॥
खलों, पापियों की उस सभा - बीच (सकुचाकर)।
उसका दाँव लगाने को सोचा उर - अन्तर ॥ ४० ॥

चतुर्थ—द्रौपदी-चीर-हरण-सर्ग

द्रौपदी को गँवाना—५२

पापियों की सभा में— यशस्वी पांचाल देश के तप के फल को, प्राणों से प्यारी स्त्री को, प्राणवान होकर आभरण से भूषित होकर चलने-फिरनेवाले श्रेष्ठ अमृत को, चित्त-लभाना को, कृपा की ज्योति को, कल्पना के प्राणों को, देवी को, भूमि की श्री को, ढूँढ़ने पर भी दुर्लभ धन को— ३९ भूमि पर कीर्ति-अर्जन करते हुए चलने का अभ्यास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेऱु

वेळ्विप् पॊरुळिनैये— पुलै नायिन्मुन्, मॆन्ऱिड बॆप्पवर् पोल्
नीळ्विट्टप् पॊन्माळिहै— कट्टिप् पेयिनै, नेर्न्दु कुडियेऱ्ऱल् पोल्
आळ्बिऱ्ऱुप् पॊन् वाङ्गिये— शॆय्द पूणॆयोर्, आन्दॆक्कुप् पूट्टुदल् पोल्
केळ्बिक् कॊरु वरिल्लै— उयिर्त् तेबियॆक्, कॊऴ् मक्कट् काळाक्किनान् 41
शॆरुप्पुक्कुत् तोल्बेण्डिये— इङ्गुक् कॊल्वदो, शॆल्वक् कुऴन्दॆयिनै ?
बिरप्पुऱ् शूदिनुक्के— ऒत्त पन्दयम्, मॆय्त्तबप् पाम् जालियो ?
ऒरुप्पट्टुप् पोनबुडन्— कॆट्ट मामनुम्, उन्नियत् तायङ्गॊण्डे
इरुप्पहडै पोडॆन्ऱान्— पॊय्मैक् काय्हळुम्, इरुप्पहडै पोट्टवे 42

तिरौबदि शूदिल् वशमानदु पऱ्ऱिक् कौरवर् कॊण्ड महिऴ्च्चि—53

तिक्कुक् कुलुङ्गिडवे— ऎऴुन्दाडुमाम्, तीयवर् कूट्ट मॆल्लाम्
तक्कुत्तक् कॆन्ऱे अवर्— कुदित्ताडुबार्, तम्मिरु तोळ्कॊट्टुवार्
ऒक्कुन् दरुमनुक्के— इःदॆन्ब रो, ओ वॆन्ऱि रैन्दिडुवार्;
कक्कक्कॆन्ऱे नहैप्पार्— तुरियोदना, कट्टिक्कॊ ळॆम्मैयॆन्बार् 43
मामनैत् तूक्का यॆन्बार्— अन्द मामन् मेल्, मालै पल वीशुबार्
शेमत् तिरबियङ्गळ्— पल नाडुहळ्, शेर्न्ददि लॊन्ऱु मिल्लै;

करनेवाली दिव्य सुमन-लता को, सुगन्धित बिजली के रूप को, कमनीय स्वप्न के, प्रेम (के स्वरूप) को; रूपवान बड़े सौन्दर्य को, सुखों के पुष्कल संग्रह को, जुए में खलों की रंग-सभा में धर्मराज ने दाँव पर लगाने की बात ठान ली। ४० यज्ञ की वस्तु को घृणित कुत्ते के सामने रखनेवाले, लम्बी धरन के स्वर्ण-महल को रचकर पिशाच को ले आकर बसानेवाले, मनुष्य को बेचकर स्वर्ण खरीदकर उसका आभरण बनाकर उसे उल्लू को पहनानेवाले, के समान धर्मपुत्र ने —हाय, पूछनेवाला कोई नहीं रहा— प्राणों की देवी को क्षुद्र मनुष्यों की दासी बना दिया। ४१ चप्पल के लिए चमड़ा चाहकर प्राणधन शिशु को भी कोई मारेगा ? इच्छित जुए का योग्य दाँव सच्ची तपस्विनी (पतिव्रता) पांचाली है क्या ? जब धर्म सम्मत हो गये, तब मामा ने भी सावधानी से पाँसा लेकर 'दो' कहकर फेंका। झूठे पाँसे भी 'दो' होकर पलटे। ४२

जुए में द्रौपदी के अपने वश में होने से कौरवों को हुआ आनन्द—५३

खल लोगों का दल दिशाओं को कँपाते हुए नाचने लगा। तक-तक्—वे कूदे। उन्होंने अपने दोनों कंधे ठोंके। 'धर्म के लिए यही ठीक है।' कहते हुए हा ! हा ! का शोर मचाते। 'हह् हह्' वे हँसे ! वे बोले— हे दुर्योधन, हमारा आलिंगन कर लो। ४३ 'मामा को उठा लो !' कहते और उस मातुल पर अनेक मालाएं फेंकते रहे। निधि के द्रव्य तथा अनेक राज्य जीत लिये गये; वह कोई बात नहीं ! कामद्रव्य,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जैसे लेकर (पूत) यज्ञ की खीर (सुपावन)।
घृणित श्वान के सम्मुख रखता हो कोई जन॥
उच्चस्तम्भों वाला स्वर्ण - महल ज्यों रचकर।
(विकट) पिशाच बसाये उसमें कोई (पामर)॥
स्वर्ण खरीदे जैसे कोई मनुज बेचकर।
उस सोने से बनवाये आभरण (मनोहर)॥
उस आभूषण को उलूक को ज्यों पहनाता।
हाय ! रोकनेवाला कोई भी न दिखाता॥
उसी भाँति वह प्राणों की देवी (सुषमा-सी)।
धर्म - पुत्र ने की (पामर) मनुजों की दासी॥ ४१॥

चप्पल के चमड़े के लिए नहीं कोई नर।
नहीं मारता प्राणोपम (अपना) शिशु (सुन्दर)॥
इच्छित द्यूत - दाँव पर रखने योग्य मनोहर।
क्या हो सकती पतिव्रता पांचाली (सुन्दर)॥
उसे दाँव रखने को सहमत हुए युधिष्ठिर।
(भूल गये सब ज्ञान, बन गये साधारण नर)॥
(तभी अपार) सावधानी से पाँसे लेकर।
फेंका 'दो' कहकर मामा ने (था भू - तल पर)॥
वे झूठे पाँसे भी दो हो करके पलटे।
(धर्म - पुत्र के भाग्य हो गये मानो उलटे)॥ ४२॥

जुए में द्रौपदी के उनके वश में होने से कौरवों को हुआ आनन्द—५३

लगा नाचने 'ताक धिना-धिन' दुष्टों का दल।
लगीं दिशाएँ हिलने (मचा प्रबल कोलाहल)॥
'यही धर्म के लिए ठीक है', ऐसा कहकर।
लगे ठठाकर हँसने करने शोर (उग्रतर)॥
बोले दुर्योधन "कर लो मेरा आलिंगन।
(आज प्रफुल्लित है अतिशय हम सबका तन-मन)॥ ४३॥

मामा को गोद में उठा लो" (शोर मचाकर)॥
मालाएँ फेंकने लगे अगणित, मातुल पर॥
"जीतीं निधियाँ द्रव्य और राज्य भी अपरिमित।
बड़ी बात इसको कोई मत मानो (मम हित)॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कामत् तिरबियमाम्— इन्दप् पॅण्णैयुङ्, कैयश माहच् चॅय्दान्;
मामनॉर् तॅय्ब मॅन्बार्;— तुरियोदनन्, बाळ्ह वॅन् ऱार्त्तिडुवार् 44

तुरियोदनन्शॊल्वदु—54

मिन्ऱु तुरियोदनन्— अन्द मामनै, नॅञ्जॊडु शेरक् कट्टि
'ऍन्ऱुयर् तीर्त्तायडा— उयिर् मामनै, एळनन् दीर्त्तु विट्टाय्
अन्ऱु नहैत्ताळडा;— उयिर् मामनै, अबळैयॅन् आळाक्किनाय्
ऍन्ऱु मऱबेनडा— उयिर् मामनै, ऍन्न कैम् माऱशॅय्वेन्! 45

आशै तनित् तायडा— उयिर् मामनै, आबियैक् कात्ता यडा!
पूशै पुरिवो मडा!— उयिर् मामनै, पॊङ्ग लुनक्किडुवोम्
नाश मडैन्ददडा— नॅडु नाट् पहै, नामिनि बाळ्न्दो मडा!
पेशवुन् दोन्ऱुदिल्लै;— उयिर् मामनै, पेरिन्बङ् गूट्टि विट्टाय्' 46

ऍन्ऱु पल शॊल्लुवान्— तुरियोदनन्, ऍण्णियॅण् णिक्कुदिप्पान्;
कुन्ऱु कुदिप्पदु पोल्— तुरियोदनन्, कॊट्टिक् कुदित्ताडुवान्
मन्ऱु कुळप्प मुऱ्ऱे— अवर् यारुम्, बहै तॊहै यॊन्ऱु मिन्ऱि
अन्ऱु पुरिन्द ऍल्लाम्— अन्ऱन् पाट्टिलै, आक्क लॅळिदाहुमो? 47

इस कन्या को अपने वश में करा दिया। मामा एक देव हैं! वे चिल्ला उठे—जय दुर्योधन की! ४४

दुर्योधन का कथन—५४

दुर्योधन ने खड़े होकर अपने मामा को गले से खूब लगा लिया। उसने कहा—हे प्राणप्रिय मामा! तुमने मेरा दुख हर लिया। मेरी हेठी दूर कर दी। उस दिन वह हँसी! रे मामा! और उसको मेरी दासी बना दिया तुमने! हे मामा! कभी नहीं भूलूँगा! प्राण-स्वरूप मामा! मैं क्या प्रत्युपकार करूँ? ४५ तुमने मेरी इच्छा पूरी की—हे प्राणस्वरूप मामा! जान बचा ली! हम तुम्हारी पूजा करेंगे, हे मामा! मैं नैवेद्य चढ़ाऊँगा। बहुत दिनों की शत्रुता मिट गयी। हे! हम जीवित हो गये। हमें बोलना सूझता नहीं है! मेरे प्राण मामा! महान सुख मिला दिया तुमने! ४६ ऐसा विविध बातें कहता हुआ दुर्योधन रह-रहकर कूदता था। दुर्योधन उछलते हुए पर्वत के समान, तालियाँ पीटते हुए, नाचता-कूदता था, सभा अव्यवस्थित रही। वे सब बिना किसी व्यवस्था के, जो वे करते थे, उस सबको कविता में बता देना क्या मेरे लिए आसान है? ४७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वश में की यह काम - द्रव्य पांचाली (सुन्दर)।
मामा (सचमुच) देव (तुल्य) हैं (पूज्य मनोहर)" ॥
"दुर्योधन की जय हो", यह कह वे चिल्लाये।
(नाच - नाच दुष्टों ने गीत अपरिमित गाये) ॥ ४४ ॥

दुर्योधन का कथन—५४

दुर्योधन हो गया खड़ा (अतिशय हर्षाया)।
(बड़े प्रेम से) मामा को (निज) गले लगाया ॥
कहा— "प्राणप्रिय मामा, हरा हमारा सब दुख।
मिटी हमारी हेठी (उज्ज्वल हुआ आज मुख) ॥
सभा - भवन में इसने मेरी हँसी उड़ायी।
वह (पांचाली) मेरी दासी आज बनायी ॥
भूलूँगा न कभी मामा! उपकार तुम्हारा।
(कहो) करूँ क्या (इसके हित) प्रतिकार तुम्हारा ॥ ४५ ॥

इच्छा पूरी की रे मामा! तुमने (मेरी)।
जान बचा ली (पाँसे ही से क़िस्मत फेरी) ॥
मामा अभी करेंगे पूजा (आज) तुम्हारी।
मैं नैवेद्य चढ़ाऊँगा (हर्षित हो भारी) ॥
बहुत दिनों की मिटी शत्रुता (आज दुःखतर)।
हम जीवित हो गये (मिल गये प्राण नवलतर) ॥
हो मेरे तुम प्राण (तुल्य) हे मामा! (प्यारे!)।
दिये अमित सुख (दूर कर दिये संकट सारे)" ॥ ४६ ॥

ऐसी भूरि विविध बातें कह-कह दुर्योधन।
रह-रह करके कूद रहा था (अति प्रमुदित मन) ॥
जिस प्रकार से कोई पर्वत (गगन) उछलता।
दुर्योधन तालियाँ पीट नाचता - कूदता ॥
यों बिगड़ी उस सभा - भवन की सभी व्यवस्था।
सब करते मन - माना (भीषण हुई अवस्था) ॥
(वहाँ मची गड़बड़ी मची अतिशय हलचल है)।
कविता में उसका वर्णन करना न सरल है ॥ ४७ ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिरौबदियै तुरियोदनन् मन्ऱुक्कु अळैत्तु वरच् चॊल्लियदु
पऱ्ऱि जगत्तिल् उण्डान अदर्मक् कुळप्पम्—55

वेऱु

तरुमम् आळिबॆय्दच् चत्तियमुम् पॊय्याह
पॆरुमैत् तवङ्गळ् पॆयर् कॆट्टु मण्णाह
बानत्तुत् तेवर् वयिऱ्ऱिले तीप्पाय
मोन मुनिवर् मुऱैकॆट्टुत् ताम यङ्ग
वेदम् पॊरुळिन्ऱि वॆऱ्ऱुरैये याहिविड
नादङ् गुलैन्दु नडुमैयिन्ऱिप् पाळाह
कन्दरुव रॆल्लाङ् गळैयिळक्कच् चित्तरमुदल्
अन्दरत्तु वाळ्बो रनैवोरुम् पित्तुऱबे
नान् मुहनार् नावडैक्क नामहट्कुप् पुत्तिहॆड
वान्मुहिलैप् पोन्ऱबॊरु वण्णत् तिरुमालुम्
अऱितुयिल् पोय् मऱ्ऱाङ्गे आळ्न्दतुयि लॆय्दिबिड
शॆऱिदरुनऱ् चीरळहु शॆल्वमॆलान् दानाहुञ्
जीदेवि तन्बदनञ् चॆम्मैपोय्क् कारडैय
मादेबन् योहम् मदिमयक्क माहिविड,
बालै उमादेवी, माकाळि, वीरुडैयाळ्,
मूलमा शक्ति यॊरु मूबिलैवेल् कैयेऱ्ऱाळ्,
मायै तॊलैक्कुम् महामायै तानावाळ्
पेयैक् कॊलैयैप् पिणक्कुवैयैक् कण्डुवप्पाळ्
शिङ्गत्ति लेऱिच् चिरित्तॆवैयुङ् गात्तिडुबाळ्
मोबुङ् गॊलैयु नुवलॊणाप् पोडैहळुम्
शावुञ् जलियपुमॆनत् तान्पल् कणमुडैयाळ्,

द्रौपदी को दुर्योधन द्वारा सभा में ले आने की आज्ञा देने पर
जगत् में हुई दुर्दशा—५५

धर्म मिटा, सत्य झूठा हुआ; श्रेष्ठ तप नाम खोकर मिट्टी बने; गगन के देवों के पेड में आग फैली; मौनी मुनि नियमभंग से भ्रमित हुए। वेद अर्थहीन बनकर कोरा शब्द बन गये, नाद अस्तव्यस्त होकर सन्तुलन खो गया; सब गन्धर्व प्रभाहीन हो गये; सिद्धों से लेकर आकाशवासी सभी पागल हो गये; चतुर्मुख की जिह्वा बन्द हो गयी; वाणी की बुद्धि खो गयी, आकाश के मेघ के समान वर्णवाले विष्णु की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

द्रौपदी को दुर्योधन की सभा में ले आने की आज्ञा देने से जग में हुआ अधर्म का टंटा—५५

धर्म मिटा, हो गया सत्य झूठा (भू-तल पर)।
मिट्टी में मिल गये श्रेष्ठ महिमा को खोकर॥
नभ के देवों के (अगणित) उदरों के भीतर।
(संतापों की) ज्वाला जलने लगी (भयंकर)॥
नियम - भंग से भ्रमित हो गये मौन मुनीश्वर।
वेद - वाक्य हो गये निरर्थक इस भू - तल पर॥
मध्यस्थता - नाद हो अस्तव्यस्त खो गये।
गन्धर्वों के गण सब प्रभा - विहीन हो गये॥
सिद्ध, गगनचर, सभी हो गये (जैसे) पागल।
चतुरानन की जिह्वा बंद हो गई (विह्वल)
वाणी की भी बुद्धि खो गई (मानो उस पल)।
काँप उठा भू - मंडल हिलने लगा ख - मंडल॥
मेघ - समान श्याम - छवि वाले विष्णु (मनोहर)।
मिटी योग - निद्रा उनकी (सुन नाद भयंकर)॥
सच्ची गहरी नींद बीच सोये फिर (हरिवर)।
(मचा भयंकर हाहाकार विश्व के भीतर)॥
श्रीदेवी समृद्धि - सुन्दर - धन देनेवाली।
काली पड़ी (तभी) उसके श्रीमुख की लाली॥
महादेव का योग हो गया भंग भयंकर।
(उनके मन में छाया) मोह महान (प्रबलतर)॥
जो बाला औ' उमा महाकाली बलशाली।
महाशक्ति (भीषण) त्रिशूल (कर) धरनेवाली॥
ख्यात महामाया जो माया हरनेवाली।
भूतों के (भीषण) शव भक्षण करनेवाली॥
(विकट) सिंह पर बैठ (समोद) विचरनेवाली।
(विकट) हँसी से नाश लोक का करनेवाली॥
बैठ सिंह पर हँसकर (अनुपम सुषमाशाली)।
(जो त्रिभुवन में) सबकी रक्षा करनेवाली॥

योगनिद्रा भंग हो गयी; वे सच्ची गहरी नींद में सो गये; समृद्धि देनेवाले सुन्दर धन की श्रीदेवी का श्रीमुख लाली खोकर काला हो गया; महादेव का योग महान् मोह हो गया; बाला उमादेवी, महाकाली आदिशक्ति, महाशक्ति, त्रिशूलधारिणी, माया हरने वाली महामाया जो बनी रहती है-- भूतों, हत्या तथा लाशों के ढेर को चाहने वाली, सिंह पर सवार होकर हँसी से लोकनाश करनेवाली, सिंह पर सवार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कडाबॅरुमै येरुङ् गरुनिऱ्त्तुक् कालनार्
इडादु पणिशॅय्य इलङ्गु महाराणी
मङ्गळम् शॅल्वम् वळर्वाळ्नाळ् नऱ्कीर्त्ति
तुङ्गमुऱु कल्बियॅलच् चूळुम् बल्कणत्ताळ्
आक्कम् दानावाळ् अळिवु निलैयावाळ्,
पोक्कु बरबॅय्दुम् पुदमैयॅलान् दानावाळ्,
मारि मारिप् पित्तुम् मारिमारिप् पित्तुम्
मारि मारिप् पोम् वळक्कमे तानावाळ्
आदिपरा शक्ति— अवणॅज्जम् वन्मैयुऱ,
शोदिक् कदिर् विडुक्कुम् शूरियनान् दॅय्बत्तिन्
मुहत्ते यिरुळ् पडर— मूडप् पुलमैयिलोन्

तुरियोदनन् विदुरनै नोक्कि युरैप्पदु—56

अहत्ते यिरुळुडैयान् आरियरिन् बेऱानोन्
तुरियो दनन्नुम् जुरुक्कॅनवे तान्तिरुम्बि
अरियोन् विदुर नवनुक् कुरैशॅय्वान्
'शॅल्वाय् विदुरा! नी शिन्दित् तिरुप्पदेन् ?
विल्वा णुबलिनाळ्, मिक्क ऍळिलुडैयाळ्
मुत्ते पाज्जालर् मुडिवेन्दन् आबिमहळ्
इन्नेनाम् शूदिल् ऍडुत्त बिलैमहळ् पाल्
शॅन्ऱु विळैवॅल्लान् शॅय्वने तानुणर्त्ति
"मन्ऱि लिडैयुळ्ळातिन् मैत्तुननिन् नोर्त्तलवन्
निन्नै यळैक्किरान् नोळ्मनैयि लेबलुक्के"
ऍन्न बुरैत्तबळै यिङ्गुकीणर् बा' यॅन्ऱान्

होकर हँसकर सबकी रक्षा करनेवाली, जो बीमारी, हत्या, अकथनीय पीड़ाएँ, मृत्यु, वर्द आदि को अपने विविध गणों के रूप में रखनेवाली है, भैंसे पर सवार काले रंग के काल-देव, जिसकी सतत सेवा करते रहते हैं वह शोभायमान महारानी; जिसको मंगल, धन, वर्धनशील आयु, सत्कीर्ति, उन्नत विद्या आदि गण घेरे रहते हैं, जो उत्साह-रूपा है, नाश की स्थिति है, जो आगमापायी नवता है, परिवर्तित होकर, फिर परिवर्तित होकर, फिर बदलनेवाला सम्प्रदाय है; उस आदि पराशक्ति का मन कठोर हुआ; ज्योतिर्मय किरणों को बिखेरनेवाले सूर्यदेव के मुख पर अंधेरा फैला —यह सब होने देते हुए—

दुर्योधन का विदुर को देखकर कथन—५६

मूढ़, नीच अंधकार-मन, अनार्य दुर्योधन ने तपाक से मुड़कर विदुर से कहा—

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बीमारी, हत्या औ' अकथनीय पीड़ाएँ।
पीड़ा, मृत्यु आदि ये जिसके गण कहलाएँ॥
भैंसे के वाहन वाला यम काला - काला।
जिसकी संतत सेवा करता है (भयवाला)॥
वर्धनशील आयु, उन्नत विद्या, मंगल, धन।
सुयश आदि जिसको घेरे रहते अगणित गण॥
जो उत्साह-रूप है, जो विनाश की स्थिति है।
जिसे आगमापायी करता नमन (सुमति) है॥
जो परिवर्तित होकर फिर परिवर्तित होकर।
सम्प्रदाय परिवर्तनशील कहाती (सुन्दर)॥
जगमग ज्योतिर्मय किरणें बिखरानेवाला।
सूर्यदेव का हुआ दीप्त मुख - मंडल काला॥
ऐसी पराशक्ति का हुआ कठोर (कुपित) मन।
(जग में होने लगे विविध भीषण परिवर्तन)॥

दुर्योधन का विदुर को देखकर कथन—५६

मूढ़, अनार्य, नीच, काले मन का दुर्योधन।
कहने लगा विदुर से (ऐसे) मुड़कर (तत्क्षण)॥
"चलो विदुर! क्या खड़े सोचते हो निज-मन में।
(चटपट तुम जाकर पहुँचो रनिवास - भवन में)॥
धनुष - कृपाण - समान मनोरम मस्तक वाली।
(प्रिय) पांचाल - राज - तनया अनुपम छविशाली॥
आज जुए में हमने जीत लिया है जिसको।
उस वेश्या के पास पहुँच बतलाओ उसको॥
जो कुछ यहाँ हुआ सब कहो उसे समझाकर।
कहो कि तुझे बुलाते सभा - भवन में देवर॥
अरे! बुलाते हैं अब तुझको तेरे स्वामी।
अपने महलों में करने के लिए गुलामी॥
यह कहकर तुम उसे यहाँ (चटपट) ले आओ।
जल्दी जाओ नहीं ज़रा भी देर लगाओ॥

'चलो! विदुर—क्यों सोचते हुए खड़े हो? जो धनु-तलवार-ललाटिनी, बड़ी सौन्दर्यवती, पहले पांचाल राजा की कन्या रही, आज जिसको हमने जुए में पा लिया, उस पण्य स्त्री के पास जाओ! जो हुआ वह सब उसे समझाकर कहो, यह कहकर उसे यहाँ लाओ कि सभा में रहनेवाले तेरे देवर, तेरे स्वामी अपने महल में नौकरी करने को तुझे बुला रहे हैं।'

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विदुरन् शॊल्वदु—57

तुरियोदनैच् चुडुशॊऱ्कळ् कूऱिडवुम्
पॆरियोन् विदुरन् पॆरिदुञ् जिनङ्गोण्डु,
'मूड महने! मॊऴियॊणा वार्त्तैयिनैक्
केडु वरलऱियाय् कीऴ्मैयिनाऱ् चॊल्लि विट्टाय्
पुऴ्ळिच् चिऱुमान् पुलियैप्पोय्प् पाय्वदु पोल्
पिळ्ळैत् तवळै पॆरुम् बाय्बै मोदुदल् पोल्
ऐबर् शिनत्तित् अऴलै वळर्क्किन्ऱाय्
दॆय्वत् तवत्तियैच् चीऱ्कुलैयप् पेशुहिऱाय्
निन्नुडैय नन्मैक्किन् नोदियॆलाम् शॊल्लुहिऱेन्
ऍन्नुडैय शॊल्बे ऱॆबर् पॊरुट्टु मिल्लैयडा!
पाण्डवर् ताम् नाळैप् पऴियिदनैत् तीर्त्तिडुवार्
माण्डु तरैमेल् महने किडप्पाय् नी
तन्नऴिवु नाडुन् दऱुकण्मै यॆन्नेडा?
मुन्नमॊरु वेनन् मुडिन्द कदै केट्टिलैयो?
नल्लोर् तमदुळळम् नयच् चॆयल् शॆय्दान्
पॊल्लाद वेनन् पुऴुवैप्पोल् मायन्दिट्टान्
नॆञ्जञ् जुडवुरैत्तल् नेर्मैयॆनवॆक् कॊण्डायो?
मञ्जने यच्चॊल् मरुमत्ते पाय्वदन्ऱो?
कॆट्टार् तम् वायि लॆळिबे किळैत्तु विडुम्;
पट्टार्तम् नॆञ्जिऱ् पलना ळहलाडु
वॆन्नरहु शेर्त्तु विडुम् वित्तै तडुत्तुविडुम्
मन्नवने नॊन्दार् मनञ्जुडवे शॊल्लुञ् जॊल्
शॊल्लिविट्टेन्; पिन्नॊरु काल् शॊल्लेन् कवुरवर्हाळ्!

विदुर का कथन—५७

जब दुर्योधन ने ये संतापक शब्द कहे तब श्रेष्ठ विदुर ने बड़ा गुस्सा करके कहा—हे मूढ़ पुत्र! आनेवाले कष्ट को न जाननेवाले तुमने नीचता के कारण अकथनीय शब्द कह दिये। जैसे चितकबरे बाघ को हिरन देखकर उस पर झपटता हो, बालमेंढक बड़े सर्प से टकराता हो, वैसा तुम उन पाँवों के क्रोध की आग को बढ़ाते हो! दिव्य तपस्विनी के सम्बन्ध में अभद्र बातें कहते हो! यह सब नीतिवचन तुम्हारे हित के लिए ही कहता हूँ। अरे, मेरा कथन और किसी के लिए नहीं है। अरे, पांडव कल इसका बदला ले लेंगे। रे लड़के, मरकर धरती पर पड़े रह जाओगे। कोई भी ऐसी वीरता है, जो अपना ही नाश ढूँढ़ ले? पहले वेन नामक राजा का अन्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विदुर का कथन—५७

जब दुर्योधन ने ये वचन कहे दुखदायी।
(विज्ञ) विदुर ने अति क्रोधित हो डाँट बतायी॥
"आनेवाले संकट को न जाननेवाले।
मूढ़ पुत्र! तूने (ये) शब्द अकथ कह डाले॥
कहे नीचता-वश तूने ये शब्द अशोभन।
(इसके कारण होगा तेरा वंश-विनाशन)॥
जैसे (भीषण) चितकबरे व्याघ्र को देखकर।
उस पर घूम पड़े कोई मृदु हरिण झपटकर॥
बड़े सर्प से ज्यों टकराता मेंढक लघुतर।
त्यों तुम उनकी बढ़ा रहे क्रोधाग्नि भयंकर॥
पतिव्रता के प्रति अभद्र बातें कहते हो।
(आर्य धर्म, सभ्यता नहीं कुछ भी गहते हो)॥
करता हूँ मैं तव हित ही यह नैतिक (प्र-)वचन।
और किसी के लिए नहीं यह मेरा (प्र-)कथन॥
पाण्डव इसका बदला लेंगे (बड़ा भयंकर)।
पड़ जाओगे (काष्ठ-तुल्य) मरकर धरती पर॥
जो ढूँढ़े निज नाश, वीरता वह दुरन्त है।
तुमने सुना 'वेन' नृप का क्या नहीं अन्त है?॥
साधु जनों का उसने (कोमल) हृदय दुखाया।
वह कीड़े की मौत मरा (पातक-फल पाया)॥
हृदय जलाते हुए बोलना ठीक समझते?।
क्या न मर्म पर ये आघात वचन हैं करते?॥
खल-मुख से निकलता सहज ही मर्म-वचन यह।
पर आहत के मन से दूर नहीं होता वह॥
जो करता संतप्त किसी का है जर्जर मन।
इस प्रकार जो कहा जायगा (दाहक) (कु-)वचन॥
पहुँचा देता है वह (कुवचन) नरक भयंकर।
और रोक देता विद्या को है (वह सत्वर)॥

तुमने नहीं सुना क्या? उसने साधुओं का दिल दुखानेवाला कार्य किया। वह वेन कीड़े की मौत मरा। क्या दिल को जलाते हुए बोलना ठीक समझते हो? हे पुत्र! क्या वह वचन मर्म पर आघात नहीं करेगा? बुरे लोगों के मुख से आसानी से निकल जायगा, पर वह वचन आहत के मन से बहुत दिन तक दूर नहीं होगा। हे राजा! जर्जर हुए मन को संताप देते हुए जो वचन कहा जायगा, वह भयंकर नरक में पहुँचा देगा, विद्या को रोक देगा। मैं कह चुका हूँ। हे कौरव, फिर कभी नहीं कहूँगा। क्रूरों को इस संसार में सुख प्राप्त नहीं होगा। लालच में पड़कर तुम बड़े अपराध

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुल्लियर् हट् किन्नबम् बुवित्तलत्तिल् वाराडु
पेराशै कॊण्डु पिळैच्चॆयल्हळ् शॆय्हिन्ऱीर् !
वाराद वन् कॊडुमै माविबत्तु बन्दु विडुम्
पाण्डवर्तम् पादम् पणिन्दवर् पार् कॊण्ड दॆलाम्
मीण्डवर्क्के ईन्दुविट्टु विनय मुडन्
'आण्डवरे, याङ्गळ् अऱि यामै याऱ्चॆय्द
नीण्ड पळियिदनै नीर्पॊऱुप्पीर्' ऎन्ऱुरैत्तु
मऱ्ऱवरैत् तङ्गळ् वळनहर्क्के शॆल्ल विडीर्
कुऱ्ऱन् दविर्क्कु नॊऱियिदनैक् कॊळ्ळीरेल्,
माबार दप् पोर्वरुम्, नी रळिन्दिडुवीर्
पूबालरे !" ऎन्ऱन्द पुण्णियनुङ् गूऱिनान्
शॊल्लिदनैक् केट्टुत् तुरियोबन मूडन्
वल्लिडिपोल् 'चीच्ची ! मडैया कॆडुहनी
ऎप्पोदु मॆम्मैच् चबित्त लियल्बुनक्के
इप्पोदुन् शॊल्लै यॆवरुम् जॆविक् कॊळार्
यारडा तेर्प्पाहन् ! नीपोय्क् कणमिरण्डिल्
पारदर्क्कु वेन्दन् पणित्ता नॆनक्कूऱिप्
पाण्डवर्तन् देबितनैप् पार्वेन्दर् मन्ऱिनिलै
ईण्डळैत्तु वा' बॆन्ऱि यम्बिनान् आङ्गे तेर्प्
पाहन् विरैन्दुपोय्प् पाञ्जालि वाळ्मनैयिल्
शोहन् ददुम्पित् तुडित्त कुरलुडनै
'अम्मनै पोऱ्ऱि ! अऱङ्गाप्पाय् ताळ्पोऱ्ऱि !
वॆम्मै युडैय विदियिनाल् युदिट्टिरनार्
मामन् शहुनियॊडु मायच्चू दाडियदिल्

कर रहे हो। उससे अभूतपूर्व भयंकर कष्ट, महान् विपदा आ जायगी। पांडवों के चरणों को नमस्कार करके, उनसे ली हुई सारी सम्पत्ति फिर से उन्हें दिला दो और कहो कि हमारा अज्ञान से किया हुआ अपराध माफ़ करें। फिर उन्हें उनके समृद्ध नगर में जाने दो। यह अपराध से बचानेवाला उपाय नहीं अपनाओगे, तो महान् 'भारतयुद्ध' आ जायगा। तुम नष्ट हो जाओगे। हे भूपो ! --उस पुण्यात्मा ने यह कहा। यह वचन सुनकर मूढ़ दुर्योधन ने अशनि के समान (स्वर में) कहा— "छः छिः छिः मूर्ख ! मरो तुम ! सदा हमें शाप देना तुम्हारा सहज गुण है। अब तुम्हारी बात कोई नहीं सुनेगा। रे कौन है ? रे सारथी ! तू जा ! यह कहकर कि 'भारत राजा ने आज्ञा दी है', पांडवों की देवी को दो क्षणों में राजसभा में यहाँ ले आ।" तब सूत जल्दी गया। पांचाली जहाँ थी, उस महल में जाकर वह शोक-विकम्पित स्वर में बोला-- माता जय हो ! हे धर्मपालिनी ! आपके चरणों की जय हो। भयंकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मैं कह चुका कौरवो ! अब फिर नहीं कहूँगा।
क्षुद्रों को सुख प्राप्त न होगा (यही कहूँगा)॥
करते हो अपराध बड़े, लालच में पड़कर।
आयेगी महान विपदा औ' कष्ट भयंकर॥
अरे ! पाण्डवों के चरणों में नमस्कार कर।
उनकी सब संपत्ति उन्हें फिर से लौटाकर॥
कहो कि उनसे क्षमा करें अपराध हमारा।
हमसे हुआ जो कि अज्ञान (-भ्रान्ति) के द्वारा॥
फिर उनको उनके समृद्ध पुर में पहुँचाओ।
यह उपाय करके अपने अपराध मिटाओ॥
यह न करोगे अगर महाभारत रण होगा।
सभी नष्ट हो जाओगे (अति भीषण होगा)॥
हे भूपो ! (तुम सोच-समझ लो अपने मन में)"।
वे पुण्यात्मा बोले इस विधि (सभा-भवन में)॥
वचन विदुर के सुनकर (महा) मूढ़ दुर्योधन।
वज्र - समान (कठोर) स्वरों में बोला (तत्क्षण)॥
"धत् ! छिः ! छिः ! रे विदुर ! शीघ्र तुम मरो मूढ़ (-मन)।
हमें शाप देना सदैव तव (परम) सहज गुण॥
अब कोई भी नहीं सुनेगा बात तुम्हारी।
(टल सकती है नहीं कभी भी बात हमारी)॥
रे रथ के सारथी ! महल को शीघ्र गमन कर।
भारत के नृप की आज्ञा अविलम्ब मानकर॥
पाण्डव - पत्नी को ला राजसभा के भीतर"।
जल्दी से चल पड़ा सूत यह आज्ञा पाकर॥
पांचाली थी जहाँ उस महल बीच पहुँचकर।
शोक - विकंपित स्वर में बोला (सभय सूतवर)॥
"धर्म - पालिनी माता तव चरणों की जय हो।
(सुना रहा संवाद सुयोधन का दुखमय जो)॥

विधि के वश में आकर युधिष्ठिर ने मातुल के साथ मायिक जुआ खेलने से भूमि खोकर, धन गँवाकर, अपने भाइयों को भी खोकर, फिर अपनी स्वतन्त्रता भी दाँव पर लगायी। उसे भी खो दिया। हे माता ! फिर आपको भी दाँव पर बोलकर लगाया। जीभ भी कहने का साहस नहीं करती। —वे हार गये। मेरे राजा ने आपको सबकी भरी सभा में ले आने का हुक्म दिया है। उसके ऐसा कहते ही पांचाली ने पूछा कि किसका कहा वचन है यह, रे ? जुआरियों की सभा में प्राचीन वीर-कुल की स्त्रियों के आने की प्रथा है क्या ? रे ! किसके हुक्म से मुझे बुलाते हो ? उसने उसका उत्तर दिया— 'राजा दुर्योधन के कथन से'। 'ठीक है। तू जाकर, जो घटी वह घटना सुनकर आ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पूमि यिऴन्दु पॊरुळिऴन्दु तम्बि यरैत्
तोऱ्ऱत् तमदु शुदन्दिरमुम् वैत्तिऴन्दार्
शाऱ्ऱिप् पणयमॆन्नत् ताये उन्नैवैत्तार्
शॊल्लवुमे नाबु तुणियविल्लै; तोऱ्ऱिट्टार्
ऎल्लारुङ् गूडि विरुक्कुम् सबै तन्निले
निन्नै यऴैत्तुवर नेमित्तान् ऎम्मरशन्'
ऎन्न वुरैत्तिडलुम्, 'यार्शॊन्न वार्त्तैयडा !
शूदर् सबैतन्निले तॊल्शीर् मऱक्कुलत्तु
मादर् वरुदल् मरबोडा ? यार् पणियाल्
ऎन्नै यऴैक्किन्ऱाय् ? ऎन्ऱाळ्'; अदऱ्कवनुम्
'मन्नन् शुयोदनन्ऱन् वार्त्तैयिन्नाल्' ऎन्ऱिट्टान्
'नल्लदु नी शॆन्ऱु नडन्द कदै केट्टुवा
वल्ल शहुनिक्कु माण्बिऴन्द नायहर्ताम्
ऎन्नै मुन्ने कूऱि यिऴन्दारा ? तम्मैये
मुन्न मिऴन्दु मुडित् तॆन्नैत् तोऱ्ऱारा ?
शॆन्ऱु सबैयिल् इच् चॆय्दि तॆरिन्दु वा',
ऎन्ऱवळुङ् गूऱि यिवन्पो हियपिन्नर्
तन्नन् दनिये तविक्कु मनत्ताळाय्
वन्नङ् गुलैन्दु मलर्विऴिहळ् नीर् शॊरिय
उळ्ळत्तै यच्चम् उलैवुरुत्तप् पेय्हण्ड
पिळ्ळैयॆन्न वीऱ्ऱिरुन्दाळ् पिन्नन्दत् तेर्प्पाहन्
मन्नन् सबै शॆन्ऱु 'वाळ्वेन्दे ! आङ्गन्दप्
पॊन्नरशि ताळ्पणिन्दु 'पोदरुवी' रॆन्ऱिट्टेन्
ऎन्नैमुदल् वैत्ति ऴन्दपिन्बु तन्नैयॆन्
मन्न रिऴन्दारा ? माऱित् तमैत् तोऱ्ऱ
पिन्न रॆन्नैत् तोऱ्ऱारा ? ऎन्ऱेन्म् पेरवैयै
मिन्नर् कॊडियार् विन्नविवरत् ताम्पणित्तार्

चतुर शकुनि के हाथ अपना गौरव जो हारे, उन नाथों ने पहले मुझे लगाकर हारा या अपने को खो चुककर फिर मुझे हारा ? जाकर सभा से यह खबर जानकर आ।' यह कहकर, उसके जाने के बाद, वह अकेली, घबड़ाती रही। तेज खोकर कमल-लोचन से अश्रु के बहते, भयातुर मन के साथ भूत को देखनेवाले शिशु के समान वह बैठी रही। फिर वह सूत राजसभा में जाकर बोला— खड्ग-धारी राजा ! मैंने उस सुन्दर रानी के चरणों में नमन कर विनय की कि चलें। बिजली की लता-सी उन्होंने आज्ञा दी कि मैं सभा से यह पूछकर आऊँ कि क्या मुझे पहले हारकर बाद में वे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विकट विधाता के वश होकर (भूप) युधिष्ठिर।
मामा शकुनी - संग कपट - युत जुआ खेलकर॥
अनुज गँवाये, धन भी खोया, भूमि गँवायी।
अपनी स्वतंत्रता भी तब दाँव पर लगायी॥
और अन्त में माता! तुमको रखा दाँव पर।
हारे वह भी दाँव (तुरत ही भूप युधिष्ठिर)॥
साहस नहीं जीभ में, नृप - आदेश सुनाऊँ।
तुरत आपको भरी सभा में लेकर जाऊँ"॥
पांचाली ने पूछा उसका कहना सुनकर।
"किसका कहा वचन रे! (है वह कौन मूर्खवर?)॥
जुआरियों की सभा - बीच यह प्रथा दिखाती?।
क्या प्राचीन वीर - कुल की रमणी है जाती?॥
मुझे बुलाते हो तुम किसकी आज्ञा पाकर?"।
यह सुन करके दिया सारथी ने तब उत्तर॥
"राजा दुर्योधन के कहने से मैं आया।
(उसने ही आपको सभा के बीच बुलाया)"॥
"ठीक बात है सभा बीच फिर से तू जाकर।
जो घटना है घटी उसे तू आ फिर सुनकर॥
चतुर शकुनि के हाथ हारकर गौरव खोया।
हार स्वयं को तब स्वामी ने मुझे गँवाया?॥
प्रथम गँवाकर मुझे अथच निज तन को हारा।
सभा बीच जा हाल तुरत ले आओ सारा"॥
पांचाली उससे ऐसे वचनों को कहकर।
घबड़ाने फिर लगी अकेली (होकर कातर)॥
खोकर तेज कमल - नयनों से अश्रु बहाती।
भूत देख शिशु के समान मन में भय खाती॥
राज-सभा में जाकर बोला सूत (विनय कर)।
"सुनिये हे कृपाणधारी! भूपति (-भूपतिवर!)॥
मैंने उस सुन्दर रानी के पग में झुककर।
कहा कि चलें (आपको बुला रहे हैं प्रभुवर)॥
विद्युल्लता - सरिस वह बोली मैं फिर जाऊँ।
सभा - भवन से पूछ बात यह (चटपट) आऊँ॥
पहले मुझे हारकर फिर अपने को हारे।
या पहले वे हारे पीछे मुझको हारे"॥

मेरे राजा अपने को हारे; या इसके विपरीत, अपने को हारने के बाद मुझे हारे?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वन्दुविट्टेन्' ऎन्रुरैत्तान् माण्बुयर्न्द पाण्डवर् ताम्
नॊन्दुपो यॊन्रुम् नुवला दिरुन्दु विट्टार्
मऱ्ऱुम् सबै तन्निले वन्दिरुन्द मन्नरॆलाम्
मुऱ्ऱु मुरैयिळन्दु मूङ्गैयर्पोल् वीऱ्ऱिरुन्दार् 48

तुरियोदनन् शॊल्वदु—58

उळ्ळन् दुडित्तुच् चुयोदनन्— शिनम्
ओङ्गि वॆऱिकॊण्डु शॊल्लुवान्— 'अड
पिळ्ळैक् कदैहळ् बिरिक्किऱाय्— ऎन्ऱन्
पॆऱ्ऱि यऱिन्दिलै पोलुम् नी !— अन्दक्
कळ्ळक् करिय विळियिनाळ्— अवळ्
कल्लिहळ् कॊण्डिङ्गु वन्दनै !— अवळ्
किळ्ळै मॊळियि नलत्तैये !— इङ्गु
केट्क बिरुम्बुमॆन् नुळ्ळमे 49
बेण्डिय केळ्विहळ् केट्कलाम्— शॊल्ल
बेण्डिय वार्त्तैहळ् शॊल्ललाम्— मन्नर्
नोण्ड पॆरुञ्जबै तन्निले— अवळ्
नेरिडबे वन्द पिन्बुतान्— शिऱु
कूण्डिऱ् पऱवैयु मल्लळे ?— ऐवर्
कूट्टु मनैविक्कु नाणमेन् ?— शित्त
मूण्डु कडुञ्जॆयल् शॆय्युमुन्— अन्द
मॊय्कुळ लाळैयिङ् गिट्टु वा 50
'मन्नन् अळैत्तनन् ऎन्रु नी— शॊल्ल
माऱियव ळीन्रु शॊल्वदो ?— उन्नैच्
चिन्न मुऱच् चॆय्हु वेन्नडा !— कणञ्
जॆन्ऱवळैक् कॊणर् बाय्' ऎन्ऱान्— अबन्

चौरव में बड़े पांडव जर्जर-मन होकर कुछ कहे बिना चुप रह गये। सभा में आये हुए सारे राजा लोग बिलकुल वाणी खोकर गूँगों के समान विराजमान थे। ४८

दुर्योधन का कथन—५८

दुर्योधन का दिल भड़क उठा। उसका क्रोध बढ़ा। वह पागल होकर चिल्लाया। रे, शिशु-कथाएँ बिछाता है। मेरा रोष नहीं जानता शायद तू ! उस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गौरवशाली पाण्डव यह सुन हुए जीर्ण - मन।
कह न सके कुछ सभी रह गये मूक-सदृश बन॥
जो सारे नृप जन थे सभा - भवन में संस्थित।
वाणी खोकर मूक - सदृश हो रहे विराजित॥ ४८॥

दुर्योधन का कथन—५८

यह सुन करके भड़क उठा दुर्योधन का मन।
पागल होकर चिल्लाया क्रोधित हो (भीषण)॥
"बच्चों की-सी कथा सुनाता मुझको (पामर!)।
नहीं जानता (क्या) तू मेरा रोष (भयंकर)॥
अरे चोरनी, काली - काली आँखों वाली।
ले आया उसकी विदग्ध बातें (मतवाली)॥
सुनने को कर दिया विवश आखिर मेरा मन।
शुक - समान लालित्य - भरा उसका (मधु) - भाषण॥ ४९॥

वह जी भर के सारे प्रश्न पूछ सकती है।
जो कहना चाहती सभी वह कह सकती है॥
किन्तु विशाल सभा - मंडप में जब आयेगी।
सब राजाओं के सम्मुख तब कह पायेगी॥
खगी नहीं वह लघु - पिंजरे में रहनेवाली।
क्या लज्जा पाँचों - पति - वाली है पांचाली॥
कुछ कठोर (-तम) कार्य करूँ मैं नहीं बिगड़कर।
उसके पहिले ही ला घन-केशी को (सत्वर)॥ ५०॥

'राजा ने है तुझे बुलाया'. तू कह जाकर।
वचन काटकर यदि कुछ बोली, यह सुनने पर॥
तो (हे सूत!) फेंक दूँगा मैं तुझे काटकर।
क्षण भर में ही उसे यहाँ पर ला तू जाकर"॥

चोरनी, काली आँखोंवाली की विदग्ध बातें ले आया, इधर! आखिर मेरा मन उसके शुक-भाषण की ललिताई को ही सुनना चाहेगा। ४९ वह जी भर प्रश्न पूछ सकती है। जो कहना चाहती है, वह सारा कह सकती है! पर यह सब राजाओं की इस विशाल सभा में सामने आने के बाद ही! वह छोटे पिंजड़े में रहनेवाली चिड़िया तो नहीं! पाँच की पत्नी है—उसको लाज क्या? बिगड़कर मैं कुछ कठोर कार्य न करूँ, उसके पहले उस घने केशवाली को इधर ले आ। ५० तू कह दे कि राजा ने बुलाया है, तो वह क्या उसको काटकर कुछ बोलेगी? तुझे छिन्न कर दूँगा, रे! एक क्षण में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शॊन्न मॊळि यिनैप् पाहन् पोय्— अन्दत्
तोहैमुन् कूऱि वणङ्गिनान् !— अवळ्
इन्नल् विळैन्दिवै कूऱुवाळ्— 'तम्बि
अॆन्ऱनै वीणि लळैप्पदेन् ? 51

तिरौबदि शॊल्लुदल्—59

नायहर् तान्दम्मैत् तोऱ्ऱपिन्— अॆन्नै
नल्हु मुरिमै अवर्क्किल्लै— पुलैत्
तायत्तिले विलैप् पट्ट पिन्— अॆन्न
शात्तिरत् तालॆनैत् तोऱ्ऱिट्टार् ?— अवर्
तायत्ति ले विलैप्पट्टवर्;— पुवि
ताङ्गुन् बुरुपदन् कन्नि नान्— निलै
शायप् पुलैत् तॊण्डु शार्न्दिट्टाल्— पिन्बु
तार मुडैमै यवर्क्कुण्डो ! 52
कौरव वेन्दर् सबैतन्निल्— अऱङ्
गण्डवर् यावरु मिल्लैयो ?— मन्नर्
शौरियम् वीळ्न्दिडु मुन्नरे— अङ्गु
शात्तिरञ् जॆत्तुक् किडक्कुमो ?— पुहळ्
ऒव्वुऱ वाय्न्द कुरुक्कळुम्— कल्वि
ओङ्गिय मन्नरुञ् जूदिले— शॆल्वम्
बव्वुऱत् ताङ्गण् डिरुन्दनर्— अॆन्ऱन्
मान मळिवदुङ् गाण्बरो ? 53
इन्बमुन् तुन्बमुम् पूमियिन्— मिशै
यार्क्कुम् वरुवदु कण्डनम्— अॆनिल्
मन्बदे काक्कुम् अरशर्ताम्— अऱ
माट्चियैक् कॊन्ऱु कळिप्परो ?— अव
अन्बुन् दवमुञ् जिऱन्दुळार्— तलै
यन्दणर् कण्डु कळिप्परो ?— अवर्
मुन्बॆन् विनाविनै मीट्टुम् पोय्च्— चॊल्लि
मुऱ्ऱुन् दॆळिवुऱक् केट्टुवा' 54

जाकर ले आ ! सूत ने जाकर उसका वचन उस कलापी-निभ द्रौपदी से कहकर नमस्कार किया। उसके मन में कष्ट हुआ। वह बोली— कनिष्ठ भ्राता मुझे व्यर्थ ही क्यों बुलाते हैं ? ५१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तब कलापिनी - समान द्रौपदी के ढिग जाकर ।।
दुर्योधन का वचन सुनाया नमस्कार कर ।।
सुनकर उसके मन में कष्ट हुआ (अति भीषण) ।।
व्यर्थ मुझे क्यों बुला रहे हैं अनुज (सुयोधन) ।। ५१ ।।

द्रौपदी का कथन—५९

"हार गये पहले अपने को भूप युधिष्ठिर ।
मुझे हारने का उनको अधिकार नहीं फिर ।।
हार जुए में कौन शास्त्र (-वचनों) के बल पर ।
हार सके वे मुझे जुए में दाँव लगाकर ।।
द्यूत-क्रीत वे हैं पाँचों पाण्डव (निश्चिततर) ।
किन्तु महीपति द्रुपदराज की हूँ कन्या (वर) ।।
हो करके पदभ्रष्ट, दासता को अपनाकर ।
हो सकता है कैसे हक उनका पत्नी पर ।। ५२ ।।
कौरव - सभा - बीच धर्मज्ञ नहीं क्या कोई ।
कपट - द्यूत से प्रथम, शास्त्र - मर्यादा खोई ।।
कीर्तिमान गुरुजन, विद्या - सम्पन्न भूप - जन ।
रहे देखते जुए बीच हारा जाता धन ।।
अब क्या मेरी मान - हानि भी वे देखेंगे ? ।
(चित्र-लिखे-से, मूढ़ बने - से वे पेखेंगे ?) ।। ५३ ।।
पृथ्वी पर सुख - दुख सबके ऊपर आता है ।
यही (नियम) हमने देखा है (जग गाता है) ।।
विप्र प्रेम - तव - मूर्ति प्रजा के पालक नृप - जन ।
मिटा धर्म का गौरव क्या होंगे प्रमुदित - मन ।।
मेरा प्रश्न सुना उन भूपों के सम्मुख जा ।
पूर्ण रूप से साफ़ - साफ़ तू उत्तर ले आ" ।। ५४ ।।

द्रौपदी का कथन—५९

मेरे पतियों का, अपने को हारने के बाद मुझे देने का अधिकार नहीं है। नीच जुए में क्रीत होने के बाद किस शास्त्र के बल से वे मुझे लगाकर हारे ? वे जुए द्वारा क्रीत लोग हैं; मैं तो भूपालक द्रुपद की कन्या हूँ। पद को बिगाड़ते हुए नीच दासता को अपनाने के बाद, पत्नी पर क्या उनका कोई हक होगा ? ५२ कौरव-राजाओं की सभा में क्या कोई धर्मभ्रष्टा नहीं रहा ? मेरे राजाओं के शौर्य के पतन के पहले ही क्या शास्त्र मरा हुआ पड़ा रह गया ? यशस्वी गुरु लोग और विद्या-सम्पन्न राजा लोग जुए में धन को हर लिया जाता देखते रहे —अब वे क्या मेरी मान-हानि भी देखेंगे ? ५३ पृथ्वी पर सुख-दुख सब पर आता है ! यह हमने देखा है। पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्ऱन्दप् पाण्डवर् तेवियुम्— शॊल्ल
ऎन्शॆय्वन् एऴैयप् पाहन्ने ?— ऎन्ऩैक्
कॊन्ऱु विट्टालुम् पॆरिदिल्लै— इवळ्
कूऱुम् विन्नाविऱ् कवर्विडे— तरि
नन्ऱि यिवऴै मऱुमुऱै— वन्
दऴैत्तिड नानङ् गिशैन्दिडेन्— (ऎन्)
नन्ऱु मनत्तिडैक् कॊण्डवन्— शबै
नण्णि निहळ्न्ददु कूऱिनान् 55
'माद विडापि लिरुक्किऱाळ्— अन्द
मादर शॆ'ल्बदुङ् गूऱिनान्— कॆट्ट
पादह नॆञ्ज मिळहिडान्— निन्ऱ
पाण्डवर् तम्मुह नोक्किनान्— अवर्
पेदुऱ्ऱु निऱ्पदु कण्डनन्— मऱ्ऱुम्
पेरवै तन्नि लॊरुवरुम्— इवन्
तीदुऱ्ऱ शिन्दै दडुक्कवे— उळ्ळत्
तिण्मैयिला दङ्गिरुन्दनर् 56
पाहन्ने मीट्टुम् जिनत्तुडन्— अवन्
पार्त्तिडि पोलुरै शॆय्हिन्ऱान्— 'पिन्नुम्
एहि नमदुळङ् गूऱडा !— अवळ्
एऴु कणत्तिल् वरच्चॆय्वाय्— उन्नैच्
चाह मिदित्तिडु वेनडा'— ऎन्ऱु
तार् मन् नन् शॊल्लिडप् पाहनुम्— मन्नन्
वेहन् दनैप् पॊरुळ् शॆय्दिडान्— अङ्गु
वीऱ्ऱिरुन्दोर् तमै नोक्किये 57
'शॊरुम् अरशनुक् केऴैयेन्— पिऴै
शॆय्ददुण्डो ? अङ्गु तेवियार्— तमै
नूऱु तरम् जॆन्ऱ ऴैप्पिनुम्— अवर्
नुङ्गळैक् केट्कत् तिरुप्पुवार्;— अवर्

प्रजापालक राजा क्या धर्म का गौरव मिटाने में आनन्द पावेंगे ? और उसे प्रेम तथा तपस्या में श्रेष्ठ ब्राह्मण लोग देखकर मुदित होंगे ? उनके सामने जा तथा मेरा प्रश्न दुहरा तथा पूर्ण रूप से उसका स्पष्ट उत्तर ले आ । ५४ वैसा जब पांडवदेवी ने कहा, तब बेचारे उस सूत ने मन में ऐसा सोचकर कि मुझे जान से मार दें, तो भी कोई बड़ी बात नहीं है । उनसे इनके प्रश्न का उत्तर पाये बग़ैर, इनको ले जाने के लिए आना मैं स्वीकार नहीं करूँगा --वह उधर सभा में गया और उसने सारी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कहा द्रौपदी ने उससे, तब वह बेचारा।
(पड़ा धर्म - संकट में), मन में यही विचारा॥
भले जान से मुझे मार डाले दुर्योधन।
कोई बात नहीं समझूँगा (मैं अपने मन)॥
जब तक इसका नहीं उचित उत्तर पाऊँगा।
तब तक नहीं सभा में इसको ले जाऊँगा॥
इस प्रकार वह सभा - भवन में गया (दुखारी)।
दुर्योधन को तुरत सुनाई बातें सारी॥ ५५॥
उसने सारा समाचार जाकर बतलाया।
रजस्वला है रानी, यह भी हाल जताया॥
पर न पसीजा उस पापी दुर्योधन का मन।
देखा उसने खड़े पाण्डवों का फिर आनन॥
देखा खड़े हुए वे सभी भ्रान्त - से होकर।
रोक सके दुष्कर्म न नृपगण साहस खोकर॥ ५६॥
फिर वह (आये हुए) सूत को (सम्मुख) लखकर।
कहने लगा (सरोष) वज्र के तुल्य डाँटकर॥
"एक बार जाकर फिर मेरी बात सुना तू।
सात क्षणों के भीतर ही उसको ले आ तू॥
मार - मारकर तुझे रौंद डालूँगा पामर!"।
इस प्रकार से उस (दुर्योधन) के कहने पर॥
की न क्रोध की कुछ परवाह (हृदय के भीतर)।
बोला वहाँ विराजित सभासदों को लखकर॥ ५७॥
"यह राजा नाराज़ बहुत है (डाँट दिया है)।
मुझ बेचारे ने कोई अपराध किया है?॥
उन देवी को बार हज़ार भले बुलवायें।
तो भी बस वह यही पूछने को लौटायें॥

घटनाएँ बतायीं। ५५ उसने यह भी समाचार दिया कि वह स्त्री रानी रजस्वला है। पर उस पातकी (दुर्योधन) का बुरा मन कुछ पसीजा नहीं। फिर उसने खड़े रहे पांडवों के मुख को निहारा कि वे भ्रान्त होकर खड़े हैं। उस बड़ी सभा में सभी दुर्योधन के बुरे भाव को रोकने का साहस किये बिना चुप रहे। ५६ फिर वह सूत को देखकर अशनि के समान डाँटकर कहने लगा— अरे, फिर एक बार जाकर, मेरा मन सुना! उसे सात क्षणों में आने दे। नहीं तो तुझे मारते हुए रौंद दूँगा। उसके यों कहने पर सूत, राजा के क्रोध की परवाह किये बिना ही वहाँ विराजमान लोगों को देखकर बोला। ५७ —इन नाराज राजा के प्रति बेचारे मैंने क्या कोई अपराध किया? वहाँ देवी को एक सहस्र बार जाकर बुलाया जाय, तो भी वे आपसे वही प्रश्न करने के लिए लौटा देंगी। उनका समाधान करते हुए एक शब्द कहें, तो उसी क्षण मैं जाकर उन्हें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आरुदल् कॊळ्ळ ऒरुमॊळि— शॊल्लिल्
अक्कण मेशॆन् ऱळैक्किन्ऱेन्;— मन्नन्
कूरुम् पणि शॆय वल्लन् यान्— अन्दक्
कोदै वराविडि लॆन्शॆय्वेन् ?' 58

दुरियोदनन् शॊल्वदु—60

पाह नुरैत्तदु केट्टनन्— पॆरुम्
पाम्बुक् कॊडियवन् शॊल्हिन्शान्— 'अवळ्
पाह नळैक्क वरुहिलळ्— इन्दप्
पॆयलुम् वीमनै यञ्जिये— पल
वाहत् विहैप्पुऱ्ऱु निन्ऱनन्— इवन्
अच्चत्तैप् पिन्बु कुऱैक्किऱेन्— तम्बी !
पोहक् कडवॆइप् पोवङ्गे;— इङ्गप्
पॊऱ्ऱॊडि योडुम् बरुह नी !' 59

।। तिरौपदियैच् चर्पक्कु अळैत्त शरुक्कम् मुऱ्ऱिऱ्ऱु ।।

ऐन्दावदु—शबदच् चरुक्कम्

तुच्चादनन् तिरौबदियै सबैक्कुक् कॊणर्दल्—61

इव्वुरै केट्टतुच् चावनन्— अण्ण
निच्चैयै मॆच्चि ऎऴुन्दनन्— इवन्
शॆब्वि शिऱिदु पुहलुवोम्— इवन्
तीमैयि लण्णनै वॆन्ऱवन्— कल्वि
ऎळ्ळळ वेनु मिलादवन्— कळ्ळुम्
ईरऱ् करियुम् विरुम्बुवोन्;— पिर्
तॆव्व रिवन्ऱनै यञ्जुवार्;— तन्नैच्
चेर्न्दवर् पेयॆन् ऱॊदुङ्गुवार् 60

बुला लूंगा। मैं राजा का आज्ञाकारी सेवक हूँ ! पर वह देवी नहीं आएँ, तो मैं क्या करूँ ? ५८

दुर्योधन का कथन—६०

बृहत्-सर्प-ध्वज ने सूत की बात सुनकर कहा— 'वह सूत के बुलाने पर नहीं आएगी। यह छोकरा भी भीम से डरकर हतचित्त खड़ा है ! इसका डर बाद में दूर कर लूंगा। हे छोटे भैया ! तुम अभी वहाँ जाने योग्य हो ! उस स्वर्णलता-सह आ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समाधान उनके प्रश्नों का पा जाऊँगा।
तो क्षण भर में जाकर (उन्हें) बुला लाऊँगा॥
मैं दुर्योधन का हूँ सेवक आज्ञाकारी।
यदि देवी आयें न, करूँ क्या (है लाचारी)" ॥ ५८ ॥

दुर्योधन का कथन—६०

सर्प - ध्वज ने कहा सूत की बातें सुनकर।
"वह आयेगी नहीं सूत से बुलवाने पर॥
यह छोकरा खड़ा है भीमसेन से डरकर।
है हत - चित्त करूँगा इसका दूर सभी डर॥
अरे अनुज ! तुम गमन योग्य हो (जल्दी) जाओ।
स्वर्ण - लता (-सी पांचाली) को लेकर आओ" ॥ ५९ ॥

॥ द्रौपदी-चीर-हरण-सर्ग समाप्त ॥

पाँचवाँ—शपथ-सर्ग

दुःशासन का द्रौपदी को सभा में ले आना—६१

सुन (दुर्योधन का) यह कथन (दुष्ट) दुःशासन।
उठा, बड़े भाई के करता गुण-गण वर्णन॥
इसकी महिमा कहते हैं (यह अति पामर है)।
(अरे !) बुराई में भाई से भी बढ़कर है॥
तिल भर भी विद्या न पढ़ा है, (है मतवाला)।
मदिरा पीता, यकृत् - मांस को खानेवाला॥
शत्रु, पराये सब उससे (अतिशय) डरते हैं।
स्वजन पिशाच मानकर सदा दूर रहते हैं॥ ६० ॥

जाओ। [इस सर्ग के नामकरण में भेद पाया जाता है। किसी संस्करण में शीर्षक—'द्रौपदी को सभा में निमन्त्रित करने का सर्ग' देकर अन्त में यहाँ वही सर्ग समाप्त कहा गया है। किसी-किसी में शीर्षक 'चीर-हरण' है, पर अन्त में 'द्रौपदी को सभा में लाने का सर्ग' कहा गया है। हम शीर्षक तथा समाप्ति दोनों में 'चीर-हरण सर्ग' ही देते हैं।] ५९

पाँचवाँ—शपथ-सर्ग

दुःशासन का द्रौपदी को सभा में ले आना—६१

यह कथन सुनकर दुःशासन अपने ज्येष्ठ बन्धु की इच्छा की प्रशंसा करके उठा। इसकी महिमा कुछ कहेंगे। यह बुराई में बड़े भाई को जीतनेवाला है। उसमें तिल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुत्ति विवेहमिल् लादवन्;— पुलि
पोल वुडल्वलि कॉण्डवन्;— करै
तत्ति बळियुऱ् जॅरुक्किनाल्— कळ्ळिन्
शार्बित्ऱि येवॅऱि शान्ऱवन्;— अव
शक्ति बळिपऱ्ऱि निन्ऱवन्;— शिव
शक्ति नॅऱियुण रादवन्;— इन्बम्
मत्ति मऱङ्ग ळिळैप्पवन्— अॅन्ऱुम्
नल्लवर् केण्मै विलक्किनोन् 61
अण्ण नॉरुवनै यन्ऱिये— पुवि
यत्तनैक कुन्दलै यायिनोम्— अॅन्नुम्
अॅण्णन् दनदिडैक् कॉण्डवन्;— अण्णन्
एदु शॉन्नालु मऱुत्तिडान्— अरुट्
कण्णळि वॅय्दिय पादकन्— 'अन्दक्
कारिहै तन्नै यळैत्तु वा'— अॅन्ऱव्
वण्ण नुरैत्तिडल् केट्टनन्;— नल्ल
दामॅन् ऱुऱ्ऱि यॅळुन्दनन् 62
पाण्डवर् तेवि यिरुन्ददोर्— मणिप्
पैङ्गदिर् माळिहै शार्न्दनन्— अङ्गु
नीण्ड तुयरिऱ् कुलैन्दुपोय्— निन्ऱ
नेरिळै मादिनैक् कण्डनन्— अवळ्
तीण्डलै यॅण्णि यॉदुङ्गिनाळ्;— 'अडि
शॅल्व दॅङ्गे' यॅन् ऱिरैन्दिट्टान्— इवन्
आण्डहै यऱ्ऱ पुलैय नॅन्— ऱवळ्
अच्च मिला दॅदिर् नोक्किये 63

तिरौबदिक्कुम् तुच्चा दनुक्कुम् सम्वादम्—62

'तेवर् पुबिमिशैप् पाण्डवर्— अवर्
देवि, दुरुपदन् कन्निनान्;— इदै

मर भी विद्या नहीं है। वह सुरा तथा यकृत् का मांस चाहनेवाला है। पराये शत्रु उससे डरते हैं; उसके अपने लोग तो उसे पिशाच मानकर हट जाते हैं। ६० वह बुद्धि-विवेक-हीन है। वह व्याघ्र के समान शरीर-बल रखनेवाला, हद लाँघकर बढ़नेवाले घमंड के कारण बिना सुरा के मेल से ही मत्त रहनेवाला, (अधर्म-) अवशक्ति पर चलनेवाला है। 'शिव-शक्ति-मार्ग' से अज्ञ है। वह भोग चाहकर पापकर्म करनेवाला, नित्य साधु-संगति न करनेवाला है। ६१ 'ज्येष्ठ को छोड़ दिया जाय, तो मैं ही सारी भूमि का नायक हूँ।' —यह विचार मन में रखनेवाला वह, बड़ा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बुद्धि - विवेक - हीन है, (है अतिशय मतवाला)।
व्याघ्र - तुल्य है शारीरिक बल रखनेवाला॥
सीमा - हीन प्रचंड गर्व से भरा (निरन्तर)।
बिना सुरा के पिये मत्त रहता (निशि-वासर)॥
है अधर्म - पथ पर (सदैव यह) चलनेवाला।
है शिव - शक्ति - मार्ग से अज्ञ (महा मतवाला)॥
भोग चाहकर पाप - कर्म का करनेवाला।
सदा साधु - संगति से दूर विचरनेवाला॥ ६१॥
ज्येष्ठ बन्धु को छोड़ भूमि का मैं ही नायक।
यह विचार मन में रखनेवाला (दुखदायक)॥
अग्रज - आज्ञा से न कभी इनकार करेगा।
है अकरुण पातकी (सभी स्वीकार करेगा)॥
"उस दासी को लाओ" —बन्धु-वाक्य यह सुनकर।
"यह अच्छा है" —बोल उठा वह दुष्ट गरजकर॥ ६२॥
जहाँ पाण्डवों की पत्नी थी रहती सुन्दर।
गया दुष्ट वह उन छवि - युक्त महल के अन्दर॥
देखी वह आभरण - भूषिता देवी सुन्दर॥
रजस्वला हट चली, दुःख से थी वह जर्जर।
चिल्लाया वह— "अरे कहाँ है तुझको जाना"।
श्रेष्ठ पुरुष यह नहीं, द्रौपदी ने पहिचाना॥
यह चांडाल (समान) नीच है (अतिशय पामर)।
डटकर बोली उसको अपने सम्मुख पाकर॥ ६३॥

द्रौपदी-दुःशासन-संवाद—६२

"भू - मंडल के देव पाण्डु के पुत्र (मनोहर)।
उनकी पत्नी द्रुपद - सुता हूँ मैं (हे देवर!)॥

भाई जो भी कहे उससे इनकार नहीं करेगा। वह करुणाहीन पातकी है। भाई का यह कथन सुनकर कि उस दयिता को लाओ, वह गरजकर उठा कि यही ठीक है। ६२ वह उस मनोहर छविमय महल में गया, जहाँ पांडव-पत्नी थी। वह वहाँ बड़े दुख में जर्जर खड़ी थी। उसने आभूषण-भूषिता देवी का साक्षात्कार किया। वह 'रज' को सोचकर हट गयी। वह चिल्लाया— री! कहाँ जाती है? उसने समझ लिया कि यह श्रेष्ठ पुरुष नहीं है, नीच चांडाल है! इसलिए बेखटके सामने देखकर वह बोली। ६३

द्रौपदी-दुःशासन-संवाद—६२

पांडव भू पर स्थित देव हैं। मैं उनकी पत्नी और द्रुपद की पुत्री हूँ। भाई! मेरे सामने आज तक कोई भी यह बात नहीं भूला है! यहाँ मर्यादा तोड़कर बात कर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यावरु मिऱ्ऱै बरैयिनुम्— तम्बि
बॆन्मुन् मऱन्दव रिल्लैकाण्— तम्बि
काव लिळन्द मदिकॊण्डाय्— इङ्गु
कट्टुत् तबऱि मॊळिहिऱाय्— तम्बि
नीवन्द शॆय्दि विरैविले— शॊल्लि
नीङ्गुह' ऎन्ऱनळ् पॊन्कॊडि 64
'पाण्डवर् तेवियु मल्लै नी;— पुहळ्प्
पाञ्जाल् तान्मह ळल्लै नी;— पुबि
याण्डरुळ् वेन्दर् तलैवन्नाम्— ऎङ्गळ्
अण्णनुक् केयडि मैच्चि नी;— मन्नर्
नीण्ड सबैतनिऱ् चूदिले— ऎङ्गळ्
नेशच् चहुनियो डाडियङ्— गुन्नैत्
तूण्डुम् पणय मॆन्नवैत्तान्— इन्ऱु
तोऱ्ऱविट् टान्तरु मेन्दिरन् 65
आडि विल्प्पट्ट तावि नी;— उन्नै
आळ्ञव नण्णन् सुयोदनन्— 'मन्नर्
कूडि यिरुक्कुञ् जबैयिले— उन्नैक्
कूट्टि वरु' हॆन्ऱु मन्नवन्— शॊल्ल
ओडिवन् देनिदु शॆय्दिहाण्— इनि
ऒन्ऱुञ् जॊला दॆन्नो डेहुवाय्— अन्दप्
पेडि महनॊरु पाहन्पाऱ्— चॊन्न
पेच्चुक्कळ् वेण्डिलन् केट्कवे' ! 66

वेऱु

तुच्चा दनिदनैच् चॊल्लिनान् पाञ्जालि
'अच्चा केळ् मादविलक् कादला लोराडै
तन्नि लिरुक्किन्ऱेन् तार्वेन्दर् पॊऱ्चबैमुन्
ऎन्नै अळैतत लियल् विल्लै अन्ऱियुमे

रहे हो! छोटे भैया, तुम जो (सन्देश ले) आये हो, वह संदेश जल्दी कहकर चले जाओ। —(पुष्प-)लता-सी स्त्री ने यह कहा। ६४ दुःशासन ने कहा— तुम अब पांडव-पत्नी या द्रुपद-कन्या नहीं हो! तुम भूपालक राजाओं के नायक हमारे ज्येष्ठ की दासी हो! धर्मेन्द्र ने राजाओं की बड़ी सभा में हमारे प्यारे शकुनि के साथ जुआ खेलकर तुम्हें दाँव के रूप में रखा और वह हार गया। ६५ जुए में क्रीत दासी हो गयी तुम। ज्येष्ठ दुर्योधन तुम्हारे नियामक हैं। राजाओं से भरी सभा में तुम्हें बुला लाने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरे सम्मुख (अरे!) आज तक कोई भी (नर)।
बात नहीं यह भूला है (यह जानो प्रियवर!)॥
बात कर रहे हो (सारी) मर्यादा तजकर।
छोटे भैया! (उचित न यह व्यवहार उग्रतर)॥
जो लेकर आये हो तुम संदेश (निंद्यतर)।
जल्दी से जाओ वह सब तुम मुझसे कहकर"॥
सुमन - लता - सी (सुन्दर कोमल काया वाली)।
इस प्रकार उससे बोली (भोली) पांचाली॥ ६४॥
"पाण्डव - पत्नी द्रुपद - सुता तू नहीं (लता - सी)।
भू - पालक, नृप - नायक मम अग्रज की दासी॥
धर्मराज ने राज - सभा के बीच बैठकर।
मम प्रिय शकुनी साथ (प्रेम से) जुआ खेलकर॥
लगा दिया तुमको उसने तत्काल दाँव पर।
हार गया उसमें तुमको वह भूप युधिष्ठिर॥ ६५॥
जुए - बीच तुम जीती हुई क्रीत दासी हो।
(अब तुम उसके वश में अभिनव लतिका-सी हो)॥
अब तव स्वामी ज्येष्ठ बंधु मम दुर्योधन है।
उसने मुझको यह आदेश दिया (पावन) है॥
राजाओं से भरी सभा में तुम्हें बुलाया।
मैं लेकर संदेश (पास तव) भागा आया॥
बिना कुछ कहे मेरे साथ (शीघ्र) आ जाओ।
कहीं सूत से जो बातें वह नहीं सुनाओ"॥ ६६॥
इस प्रकार जब बोल चुका (पापी) दुःशासन।
तब पांचाली ने उससे यों किया निवेदन॥
"मैं रजस्वला हूँ इस समय एक - वसना हूँ।
(जाने योग्य नहीं, करती यह निवेदना हूँ)॥
मालाधारी राजाओं के सभा - भवन में।
मुझे बुलाना ठीक नहीं (सोचो निज मन में)॥

की उनके आज्ञा देने पर, मैं यह संदेश लेकर दौड़ा हुआ आया। अब बिना कुछ (प्रतिवाद) कहे, आ जाओ मेरे साथ! उस षंढ-कुल सूत से जो बातें कहीं, उन्हें मैं सुनना नहीं चाहता। ६६ दुःशासन के यह कहने पर पांचाली ने कहा— तात! सुनो, 'मासिक दूरी' के दिन हैं। (अतः) मैं एक-वस्त्र हूँ। (इस समय) मालाधारी राजाओं की सभा के सामने मुझे बुलाना ठीक नहीं है। और भी, सहोदर-पत्नी को जुए में हरा देकर, अनादर करके मान घटाना क्या राजकुल की प्रथा है? देखो! ज्येष्ठ के पास जाकर मेरी स्थिति बताओ। तुम जाओ। "ह ह ह!"

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शोदरर्तन् देविदनैच् चूदिल् वशमाक्कि
आदरवु नीक्कि यरुमै कुलैत्तिडुदल्
मन्नर् कुलत्तु मरबोकाण् ? अण्णन्पाल्
ऍन्निलैमै कूऱिडुवाय् एहुहनी !' ऍन्ऱिट्टाळ्
कक्कक् कवॅन्ऱु कन्नैत्ते पॅरुमूडन्
पक्कत्तिल् वन्देयप् पाञ्जालि कून्दलिनैक्
कैयिनाऱ् पऱ्ऱिक् करकरॅन्नत् तानिळुत्तान्
'ऐयहो' वॅन्ऱे यलऱि युणर्वऱ्ऱुप्
पाण्डवर्तन् देवियवळ् पादियुयिर् कॊण्डुवर
नीण्ड करुङ्गुळलै नीशन् करम् बऱ्ऱि
मुन्निळुत्तुच् चॅन्ऱान् वळिनॅडुह मॊय्त्त वराय्
'ऍन्न कॊडुमैयिदु ?' वॅन्ऱु पार्त्तिरुन्दार्
ऊरवर् तङ् गोळ्मै युरैक्कुन् दरमामो ?
वीरमिला नाय्हळ् विलङ्गा मिळवरशन्
तन्नै मिदित्तुत् तरातलत्तिऱ् पोक्कियै
पॊन्नैयव ळन्दप् पुरत्तिनिले शेर्क्कामल्
नॅट्टै मरङ्गळॅन्न निन्ऱु पुलम्बिनार्
पॅट्टैप् पुलम्बल् पिऱर्क्कुत् तुणैयामो ?
पेरळहु कॊण्ड पॅरुन्दवत्तु नावहियैच्
चीरळियक् कून्दल् शिदैयक् कवर्न्दु पोय्क्
केडुऱ्ऱ मन्नरऱङ् गॅट्ट सबै तनिले
कूडुदलु मङ्गे पोय्क् 'को' वॅन् ऱलरिनाळ्

--हिनहिनाकर उस बड़े मूढ़ ने पास आकर पांचाली के केश को पकड़कर जल्दी-जल्दी खींचा। पांडव-देवी 'हाय ! हाय !' चिल्लाकर, होश खोकर अर्धजीवित-सी जाती रही —वह नीच अपने हाथ से उसके लम्बे केश पकड़कर आगे खींचता गया। रास्ते भर में भीड़ लगाए लोग देखते रहे कि यह कैसा नृशंस कार्य है। नगरवासियों का घृणास्पद व्यवहार भी कहने योग्य था क्या ? वीरताहीन कुत्ते ! पशु युवराज को पैर से दबाकर धरातल में पहुँचाकर कांचन-सी पांचाली को महल में न पहुँचाकर वे लम्बे तरु के समान खड़े होकर प्रलाप करते रहे ! स्त्रैण-प्रलाप से दूसरों की सहायता होगी क्या ? बड़ी सौन्दर्यवती, बड़ी तपस्विनी नायिका को, श्रीहीन करके, वह उसके केश बिखेरकर खींचता चला और विराजे हुए राजाओं की अधर्म-सभा में पहुँचा। तब पांचाली वहाँ जाकर 'हा-हा' कहकर रोने लगी।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बन्धु - तीय को जीत जुएँ में, जीत बताना।
और अनादर करके उसका मान घटाना॥

राज - वंश की यही प्रथा है क्या बतलाओ।
ज्येष्ठ बंधु से जाकर मेरी स्थिति जतलाओ"॥

(हय-समान) हिनहिना उठा (यह सुन वह पामर)।
खींचा चटपट पांचाली को केश पकड़कर॥

पाण्डव - पत्नी हाय - हाय करती चिल्लाती।
हुई अध - मरी के समान सब होश गँवाती॥

अपने कर से उसके लम्बे केश पकड़कर।
चला लिये खींचता हुआ (उसको वह पामर)॥

भीड़ लगाये लोग देखते रहे मार्ग - भर।
(कहते थे) यह कार्य (अरे !) कितना नृशंस-(तर)॥

नागरिकों की घृणित दशा (भी दर्शनीय थी)।
(वर्णन करने योग्य न थी अति) अकथनीय थी॥

वे वीरता - विहीन श्वान (सम सब पामर) थे।
(करते थे मौखिक प्रलाप, अतिशय कायर थे)॥

पशु दुःशासन को पैरों के तले दबाकर।
(दलित - कुसुम - सम कुचल) धरा - तल में पहुँचाकर॥

पांचाली को महलों बीच नहीं ले जाकर।
करते रहे प्रलाप ठूँठ - सम संस्थित होकर॥

नपुंसकों - सम कर प्रलाप इस भाँति निरर्थक।
की जा सकती है सहायता किसकी सार्थक॥

द्रुपद - सुता (रति - सी) अपार सौंदर्यवती थी।
तपस्विनी (थी पतिव्रता) नायिका (सती) थी॥

उसको कर श्रीहीन, केश उसके बिखेर कर।
चला खींचता हुआ (मार्ग में उसको पामर)॥

उस अधर्म से भरी सभा में पहुँचा लेकर।
विराजते थे जहाँ विविध भू - तल के नृपवर॥

पांचाली उस सभा - भवन के भीतर जाकर।
हा हा करके रोने लगी (अश्रु बरसाकर)॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सबैयिल् तिरौबदि नीदि केट्टळुदल्—63

बिम्मि यळुदाळ्: "विदियो, कणवरे !
अम्मि मिदित्ते यरुन्ददियैक् काट्टियॅन्ने
वेदच् चुडर्त्तीमुन् वेण्डि मणञ् जॅय्दु
पादहर्मु निन्नाट् परिशळिदल् काण् बीरो ?'
ऍन्राळ् विजयनुड नेरुतिरल् वीमनुमे
कुन्ड्रा मणित्तोळ् कुरिप्पुडने नोक्किनार्
तरुमनु मर्राङ्गे तलैकुनिन्दु निन्ड्रिट्टान्
पॉरुमि यवळ् पिन्नम् पुलम्बुबाळ् वान् सबैयिल्
केळ्वि पलबुडे योर् केडिला नल्लि शॅयोर्
वेळ्वि तवङ्गळ् मिहप्पुरिन्द वेदियर्हळ्
मेलो रिरुक्किन्ड्रार् वॅज्जिनमेन् कॉळ्हि लिरो ?
बेलो रॅन्नैयुडैय वेन्दर् पिणिप्पुण्डार्
इङ्गि वर् मेर् कुर्र मियम्ब वळियिल्ले
मङ्गियदोर् पुन्मदियाय् ! मन्नर् सबैतनिले
ऍन्नैप् पिडित्तिळुत्ते येच्चुक्कळ् शॉल्लुहिड्राय्
निन्नै यॅबरुम् 'निरुत्तडा' यॅन्बदिलर्
ऍन् शॅय्हेन् ?' ऍन्ड्रे यिरैन्दळुदाळ् पाण्डवरै
मिन्शॅय् कदिर् विळियाल् वॅन्नोक्कु नोक्किनाळ्
मर्रवर् तामुन्पोल् वायिळन्दु शोर्कुन्रि
पर्रैहळ्पोल् निर्प्पबनैप् पार्त्तु वॅरिकॉणुडु

सभा में द्रौपदी का न्याय माँगकर विलाप करना— ६३

देवी सिसक-सिसक रोयी। वह बोली— "हे पतियो ! क्या यही नियम है ? सिल पर रखवाकर अरुंधती को दरसाकर (ये विवाह के समय के रस्म हैं) वैदिकी आग के सामने प्यार के साथ आपने मुझसे विवाह किया; अब क्या पातकियों के सामने मेरा मान का खोना भी देखेंगे ?" (यह सुनकर) विजय तथा भीम ने अपनी भुजाओं पर अर्थभरी दृष्टि डाली और धर्मराज सिर झुकाये खड़े रहे। फिर दुख से भरकर वह विलाप करने लगी। (वह बोली—) "इस बड़ी सभा में बहु-श्रवण-ज्ञानी, अनिंद्य प्रकीर्तित, यज्ञ-तप-कारी विप्र, साधु लोग आप सब हैं। आप भयंकर कोप क्यों नहीं करते ? मालाधारी मेरे राजा आबद्ध हो गये हैं। इनको कोई दोष लगाने का मार्ग नहीं है। हे मंद अल्पमति, राजसभा में मुझे खींचते निंदा के वचन कहते हो ! तुमसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सभा में द्रौपदी का न्याय माँगकर विलाप करना—६३

रोई देवी सभा-भवन में सिसक-सिसककर।
"हे पतियो! (देखो) विधि (भी) है (कितना निष्ठुर)॥
(शुभ विवाह में) रखवा करके पैर शिला पर।
अरुन्धती (औ' ध्रुव तारे को भी) दरसाकर॥
बैठ अग्नि के सम्मुख प्रेम-समेत (मान्यवर!)।
किया विवाह आपने (मेरे साथ मनोहर)॥
अब पातकियों के सम्मुख (इस सभा-भवन में)।
मम अपमान लखेंगे (क्या दुःखित हो मन में)"॥
पार्थ-भीम निज भुज-दंडों पर दृष्टि डालकर।
धर्मराज भी खड़े रह गये शीश झुकाकर॥
करने लगी विलाप (द्रौपदी) दुख फिर भरकर।
(जिसकी सुनकर व्यथा पिघल भी जायें पत्थर)॥
सभा-बीच बैठे बहुज्ञानी और बहुश्रुत।
याज्ञिक, तापस, विप्र, साधु जन प्रथित अनिन्दित॥
क्यों करते हैं नहीं आप सब कोप भयंकर?।
बद्ध हो गये हैं मेरे ये पति मालाधर॥
मार्ग नहीं कोई जो दोष लगाऊँ इन पर।
राज-सभा में मुझे खींचता मंद-बुद्धि नर॥
निन्दा करता (और अनेकों कुवचन कहता)।
क्या कोई न समर्थ, रोककर कुछ तो कहता?॥
(हाय!) क्या करूँ? पड़ता कोई नहीं दिखायी।
यह कह ऊँचे स्वर में वह रोयी-चिल्लायी॥
और चमकती आग भरी आँखों से (हेरा)।
(देख) पाण्डवों को (नयनों को सरुष) तरेरा॥
पहले के समान ही अपनी वाणी खोकर।
जड़-समान रह गये खड़े श्री से च्युत होकर॥
यह लख करके हो उन्मत्त (दुष्ट) दुःशासन।
'री दासी!' अपमान भरे बोला वह कुवचन॥

'रोको रे' कहनेवाला कोई नहीं। क्या करूँ?" --वह उच्च स्वर में रोने लगी। उसने पांडवों की ओर चमकती आग्नेय आँखों से देखा। सब लोग पहले की तरह वाणी खोकर श्रीहीन बने जड़ के समान खड़े रहे। यह देखकर दुःशासन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'तादियडि तादि' यॆन्नत् तुच्चा दन्नवळैत्
तीदुरैहळ् कूऱिनान् कर्णन् शिरित्तिट्टान्
शहुनि पुहऴ्न्दान् सबैयिनोर् वीऱ्ऱिरुन्दार् !
तहुदियुयर् वीट्टुमनुञ् जॊल्लुहिऱान्— 'तैयले

वीट्टु माचारियन् शॊल्वदु—64

शूदाडि निन्नै युदिट्टिरन्नै तोऱ्ऱु विट्टान्
बादाडि नीयवन्ऱन् शॆय्है मऱुक्किन्ऱाय्
शूदिले बल्लान् शहुनि तॊऴिल् वलियाल्
मादरशे निन्नुडैय मन्नवनै वीऴ्न्ति विट्टान्
मऱ्ऱिदनि लुन्नैयॊरु पन्दयमा वैत्तदे
कुऱ्ऱमॆन्ऱु शॊल्लुहिऱाय्, कोमहळे पण्डैयुह
वेद मुनिवर् विदिप्पडि नी शॊल्लुवदु
नीद मॆन्नक्कूडुम्; नॆडुङ्गालच् चॆय्दियदु !
आणॊडुपॆण् मुऱ्ऱु निहरॆन्नवे यन्नाळिल्
पेणिवन्दार् पिन्नाळि लिःदु पॆयर्न्दुपोय्
इप्पॊऴुदे नूल्हळिन्नै यॆण्णुङ् गाल्, आडवरुक्
कॊप्पिल्लै मादर् ऒरुवन् तन्नतारत्तै
बिऱ्ऱिडलाम्; तान्नमॆन्न बेऱ्ऱुवर्क्कुत् तन्दिडलाम्
मुऱ्ऱुम् बिलङ्गु मुऱमैयन्ऱि वेऱिल्लै
तन्नै यडिमैयॆन्न विऱ्ऱपिन् नुन्दरुमन्
निन्नै यडिमैयॆन्नक् कॊळ्वदऱ्कु नीदियुण्डु
शॆल्लु नॆऱियऱियार् शॆय्हैयिङ्गु पार्त्ति डिलो
कल्लुम् नडुङ्गुम् बिलङ्गुहळुम् कण्पुदैक्कुम्

उन्मत्त होकर 'री दासी, दासी' आदि अपमान की बातें कहने लगा। कर्ण हँसा। शकुनि ने तारीफ़ की! सभासद विराजमान रहे। योग्यता में श्रेष्ठ भीष्म बोले— नारी !

भीष्माचार्य का कथन—६४

युधिष्ठिर ने ही जुआ खेलकर तुम्हें हारा। तुम तर्क के बल, उसके कार्य को पलटना चाहती हो ! शकुनि जुए में दक्ष है। कार्यचतुरता से, हे स्त्रीरत्न, उसने तुम्हारे राजा को पछाड़ दिया। और तुम यह कहती हो, 'मुझे दाँव पर लगाना ही उचित है'। हे राजकन्या ! तुम्हारा कहना पुराने काल के वैदिकी मुनियों के शास्त्र के अनुसार न्यायसंगत कहा जा सकता है ! पर वह बहुत काल (पहले) की बात है। उन दिनों पुरुष तथा स्त्री समानता का पालन करते रहे ! पीछे यह रिवाज शिथिल पड़ गया, आज के शास्त्रों को देखें, तो स्त्री पुरुष की समानता नहीं रखती। कोई भी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कर्ण हँस पड़ा (इस प्रकार की बातें सुनकर)।
शकुनी ने की (बहुत) प्रशंसा (प्रमुदित होकर)॥
बड़ी शान के साथ सभासद रहे विराजित।
योग्य भीष्म नें कहे वचन (जो समझे समुचित)॥

भीष्माचार्य का कथन—६४

री नारी! शकुनि (जुआरी - संग जुआ खेलकर।
हार गये हैं भूप युधिष्ठिर तुम्हें दाँव धर॥
तुम (केवल अपनें थोथे) तर्कों के बल पर।
उसका कार्य पलटनें के हित हो (अति) तत्पर॥
शकुनि जुए में दक्ष (जानता है सब माया)।
तब पति को उसनें चतुराई दिखा हराया॥
तुम कहती हो "अनुचित मुझे दाँव पर रखना"।
राजकुमारी (सुन लो यही) तुम्हारा कहना॥
अति प्राचीन काल के जो थे वैदिक मुनि जन।
किया उन्होंने (विविध) शास्त्र - ग्रंथों का प्रणयन॥
राजकुमारी! उनके मत का कर अवलंबन।
जा सकता है कहा न्याय - संगत तव प्रकथन॥
पर यह बातें अब हो गईं अतीव पुरातन।
तब नर-नारी में चलता समता का पालन॥
इन नियमों में पीछे से आ गई शिथिलता।
नर-नारी में शास्त्र न अब बतलाते समता॥
कोई भी निज पत्नी आज बेच सकता है।
दान - रूप में उसे किसी को दे सकता है॥
(आज) पाशवी धर्म छोड़ दूसरा नहीं है।
(यही धर्म अब माना जाता सभी कहीं है)॥
दास - रूप में अपने को विक्रय करने पर।
धर्मपुत्र का तुम पर है अधिकार निरन्तर॥
बिकने पर भी तुम उनकी दासी रहती हो।
यही आज की प्रचलित रीति (न क्यों लखती हो)॥
जो न इसे जानते, दृष्टि डालें यदि इस पर।
(तो इसको लख करके) काँप उठेंगे पत्थर॥

अपनी पत्नी को बेच सकता है। दूसरों को दान में दे सकता है! हाँ, यह पाशवी धर्म है और कुछ नहीं है। अपने को दास के रूप में विक्रय करने के बाद भी धर्मपुत्र को तुम्हें अपनी दासी मानने का अधिकार है। यह जो प्राचीन रीति है, उसे न जाननेवाले

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शॅय्है यनीदि यॅन्ऱु तेर्न्दालुम्, शात्तिरन्दान्
बॅहु नॅऱियुम् वळक्कमु नी केट्पदनाल्
आङ्गवैयु निन्शार्विलाहा वहैयुरॅत्तेन्
तीङ्गु तडुक्कुन् दिऱमिलेन्' अंन्ऱन्द
मेलोन् तलै कविळ्न्दान् मल्लियळुम् जॉल्लुहिऱाळ्

तिरौबदि शॉल्वदु—65

"शालनन्गु कूऱिनी रैया! तरुमनॅऱि
पण्डो रिरावणनुम् सीदॅतन्नॅप् पादहत्ताऱ्
कॉण्डोर् वनत्तिडैये वॅत्तुप्पिन् कूट्टमुर्
मन्दिरिहिळ् शात्तिरिमार् तम्मै वर वळैत्ते
शॅन्दिरुवैप् पऱ्ऱि वन्द शॅय्दि युरॅत्तिडुङ्गाल्
'तक्कदुनोर् शॅय्दीर्; तरुमत्तुक् किच्चॅय्है
ऑक्कुम्' अंनक्कूऱि युहन्दनराम्·शात्तिरिमार्!
पेयरशु शॅय्दाल् पिणम् तिन्नुम् शात्तिरङ्गळ्!
माय मुणराद मन्नवनैच् चूदाड
वऱ्पुऱुत्तिक् केट्टदुतान् वञ्जनैयो? नेर्मैयो?
मुऱ्पडवो शूळ्न्दु मुडित्तदॉरु शॅय्हैयन्ऱो?
मण्डबनोर् कट्टियदु मानिलत्तैक् कॉळळ वन्ऱो?
पॅण्डिर् तमैयुडैयीर्! पॅण्ग ळुडन् पिऱन्दीर्!
पॅण्पाव मन्ऱो? पॅरिय वशै कॉळ्वीरो?
कण्पार्क् कवेण्डुम्' ऍन्ऱु कैयॅडुत्तुक् कुम्बिट्टाळ्

इधर देखें, तो पत्थर काँप उठेगा। पशु भी आँख मूंद लेंगे। कार्य (जो हो रहा है) अन्याय है। यह समझने पर भी, शास्त्र व सम्प्रदाय की बात तुमने पूछी, अतः मैं बतला रहा हूँ। वे तुम्हारे पक्ष में नहीं रह सकते। मैं बुराई रोकने में असमर्थ हूँ। यह कहकर उन श्रेष्ठ पुरुष ने सिर झुका लिया। तो उस कोमलांगी ने कहा --।

द्रौपदी का कथन—६५

हे आर्य, वाह! बहुत खूब कहा धर्म का मार्ग! पहले जब रावण ने कपट से सीता को लाकर वन में रखने के बाद मंत्रियों तथा शास्त्रियों को बुलाकर श्रेष्ठ श्री को लाने का समाचार सुनाया, तब शास्त्रियों ने यह कहकर खुशी प्रकट की कि आपने योग्य काम किया। यह कार्य धर्म-सम्मत होगा! (ऐसी ही) यह बात है! जब पिशाच नासम करेगा, तो शास्त्र 'शव-खादक' होंगे। माया से अभिज्ञ राजा को जुआ खेलने को मजबूर करना कपट है, या सीधा कार्य है? यह क्या पहले ही षड्यंत्र रचकर किया गया काम नहीं है? मंडप-निर्माण क्या विशाल राज्य को हर लाने के वास्ते नहीं था?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पशु भी (इसे देखकर) मूँदेंगे (निज) लोचन।
यह अन्यार्य - पूर्ण जानते हुए इसको मन ॥
तुमने पूछा सम्प्रदाय शास्त्रों का अभिमत।
तव पक्ष का समर्थन करता नहीं शास्त्र - मत ॥
हम असमर्थ रोक सकते यह नहीं बुराई"।
यह कह करके निज ग्रीवा भीष्म ने झुकाई ॥
(सुनकर उनकी बात द्रौपदी) तन्वी बोली।
(बहुत देर से रुकी हुई निज वाणी खोली) ॥

द्रौपदी का कथन—६५

"धन्यवाद है, वाह! आपने खूब सुनाया।
आर्य - धर्म का मार्ग आपने (खूब बताया) ॥
जब रावण छल से सीता को था हर लाया।
तो उसने मंत्रियों, शास्त्रियों को बुलवाया ॥
सीता लाने का उनको संवाद सुनाया।
'योग्य काम यह किया' —शास्त्रियों ने समझाया ॥
मिलकर सभी शास्त्रियों ने यह कहा एकमत।
यह (सीता का हरण) कार्य है धर्म सु-सम्मत ॥
जब पिशाच का होगा इस धरती पर शासन।
शास्त्र करेंगे तब शव - भक्षण का प्रतिपादन ॥
जो माया से (और छल-कपट से) अनजाना।
उसको कर मजबूर (कपटमय) जुआ खिलाना ॥
क्या यह सीधा (न्याय - पूर्ण) है कार्य (विज्ञवर!)।
किया न क्या षडयंत्र (अरे!) पहले से रचकर? ॥
किस कारण की इस विशाल मंडप की रचना?।
क्या इसका उद्देश्य नहीं था राज्य हड़पना ॥
अरे! आपके घर में भी तो हैं महिलाएँ।
पैदा हुए स्त्रियों से (उनको ही ठुकराएँ) ॥
पाप नहीं स्त्री, नारी - निन्दा मत अपनाएँ।
कृपा - दृष्टि से देखें (सद्भावना दिखाएँ)" ॥
यह कह की वन्दना (दुःख के सिन्धु - समायी)।
बाण - विद्ध - हिरणी - समान ही वह अकुलायी ॥

आपके भी स्त्रियाँ हैं! आप स्त्रियों से पैदा हुए हैं। स्त्री पाप नहीं है! क्या आप बड़ी निंदा अपनायेंगे? कृपादृष्टि के साथ देखो! —यह कहकर उसने हाथ उठाकर नमस्कार किया; वह बाणाहत हिरण के समान छटपटायी। घने केश को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अम्बु पट्टमान् पोलळुदु तुडितुडित्ताळ्
वम्बु मलर्क्कून्दल् मण्मेर् पुरण्डु विळत्
तेवि करैन्दिडुदल् कण्डे शिल मॉळिहळ्
पावि तुच्चादनुम् पाङ्गिळन्दु कूरिनान् 67

वेऱु

आडै कुलैन्बु निऱ्किराळ्— अवळ्
आबॅन् ऱळुदु तुडिक्किराळ्— बॅरुम्
माडु निहर्त्त तुच्चादनन्— अवळ्
मैक्कुळल् पऱ्रि यिळुक्किरान्— इन्दप्
पीडैये नोक्किनन् वीमनुम्— करै
मीरि यॅळुन्ददु बॅञ्जिनम्— तुयर्
कूडित् तरुमनै नोक्कियै— अवन्
कूरिय वार्त्तैहळ् केट्टिरो ! 68

वीमन् शॊल्वदु—66

'शूदर् मनैहळिले— अण्णे, तॊण्डु महळिरुण्डु
शूदिर् पणय मॅन्रे— अङ्गोर्, तॊण्डच्चि पोवदिल्लै 69
ऐदु करुदि बैत्ताय ?— अण्णे !, यारैप् पणयम् बैत्ताय् ?
मादर्कुल विळक्कै— अम्बे, वायन्द वडिबळहै 70
पूमि यरशरॅल्लाङ्— गण्डे, पोऱ्र विळङ्गु हिन्ऱान्
शामि पुहळिनुक्कै— वॅम्बोर्च्, चण्डनप् पाञ्जालन् 71
अवन् शुडर्मनहळ्— अण्णे, आडि यिळन्दु विट्टाय्
तवऱु शॅय्दु विट्टाय्— अण्णे, तरुमङ् गॊन्ऱु विट्टाय् 72

भूमि पर बिखरने देते हुए वह देवी रो-रोकर विलाप कर रही थी। उसको देखकर पापी दुःशासन औचित्य का उल्लंघन करके कुछ (अभद्र वचन) बोला। ६७ वह खड़ी है। उसके वस्त्र अस्तव्यस्त हैं। वह 'हाय' कहकर रोती-छटपटाती है। केवल बैल के समान रहा दुःशासन उसके काले केश पकड़कर खींचता है। भीम यह पीड़ादायक बात देखता है। भयावह क्रोध सीमा को तोड़कर उठता है। वह दुखी होकर धर्म से जो शब्द कहता है, उसे सुनो न ! ६८

भीम का कथन—६६

जुआरियों के घरों में, भाई, परिचारिकाएँ होंगी। पर जुए में दाँव के रूप में कोई सेविका नहीं जाती। ६९ क्या सोचकर लगाया आपने ? भाई ! किसको लगाया ?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

घनी केश की राशि भूमि - तल पर बिखराकर।
कलप - कलप रोती वह देवी अश्रु बहाकर॥
उसे देखकर तब पापी (पामर) दुःशासन।
बोला (फिर) औचित्य भाव का कर उल्लंघन॥ ६७॥

"अस्त - व्यस्त हैं वस्त्र, खड़ी पांचाली (सुन्दर)।
रोती है छटपटा रही है हाय - हाय कर"॥
देखो बैल - समान (दुष्ट पापी) दुःशासन।
केश पकड़कर खींच रहा है (अति कलुषित मन)॥
भीमसेन ने देखी घटना पीड़ादायक।
टूट गया तब विकट क्रोध का बाँध भयानक॥
कहा युधिष्ठिर से उसने जो दुःखित होकर।
उन वचनों को सुनो (ध्यान देकर हे प्रियवर!)॥ ६८॥

भीम का कथन—६६

"जुआरियों के सदन दासियाँ होतीं भाई।
द्यूत-दाँव पर किन्तु कभी जातीं न लगाई॥ ६९॥
कहो, भला क्या सोच आपने उसे लगाया?।
किसे लगाया (जो थी हम सबकी ही जाया)॥
प्रेम - रूपिणी को नारी - कुल के दीपक को।
रूप - सुन्दरी को (स्वर्गिक सुख की साधक को)॥ ७०॥
हे स्वामी! जो सारे भूपों से हो संस्तुत।
(इस भू - मंडल पर) होता जो (अतिशय) शोभित॥
वह पांचाल राज अति विस्तृत - यशवाला है।
युद्ध (भूमि) में अति प्रचंड (पौरुष वाला) है॥ ७१॥
उस पांचालराज की पुत्री अतिशय सुन्दर।
हार गये हैं आप (नीच यह जुआ) खेलकर॥
(अरे! आपने) भाई! की यह भूल (भयंकर)।
किया धर्म का नाश आपने (धर्मराज वर!)॥ ७२॥

स्त्री-कुल-दीप को, प्रेम-स्वरूपिणी को! रूप-सुन्दरी को! ७० स्वामी! सारे भूपों की स्तुति पाकर जो शोभायमान है, वह पांचाल राजा बड़ा यशस्वी है तथा युद्ध में चंड है! ७१ उसकी तेजस्विनी पुत्री को, भाई, जुआ खेलकर आप हार गये हैं! भूल कर चुके, भाई! धर्म का नाश किया आपने! ७२ उसे हमने चोरी में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चोरत्तिर् कॊण्ड विल्लै;— अण्णे, शूदिर् पडैत्त दिल्लै !
वीरत्तिनाऱ् पडैत्तोम्;— वॆम्बोर्, वॆऱ्ऱियि नाऱ् पडैत्तोम् 73
शक्कर वर्त्तियॆन्ऱे— मॆलान्, दन्मै पडैत्तिरुन्दोम्;
पॊक्कॆन ओर् क्षणत्ते— अॆल्लाम्, पोहत् तॊलैत्तुविट्टाय् 74
नाट्टैयॆल् लान्दॊलैत्ताय्;- अण्णे, नाङ्गळ् पॊऱुत्तिरुन्दोम्
मीट्टु मॆमैयडिमै— शॆय्दाय्, मेलुम् पॊऱुत्तिरुन्दोम् 75
दुरुबदन् महळैत्— तिट्टत्, तुय्न नुडऱ्पिऱप्पै
इरुपहडॆ अॆन्ऱाय्— ऐयो, इवर्क् कडिमैयॆन्ऱाय् 76
इदु पॊऱुप्प विल्लै— तम्बि !, अॆरि तळल् कॊण्डुवा
कदिरै वॆत्तिळन्दान्— अण्णन्, कैयै अॆरित्तिडुवोम्' 77

अर्जुनन् शॊल्वदु—67

बेऱु

अॆन वीमन् सहदेव निडत्ते शॊन्नान्
इदैक् केट्टु विल्विजयन् अॆतिर्त्तुच् चॊल्वान्
"मन मारच् चॊन्नायो ? वीमा ! अॆन्न
वार्त्तै शॊन्नाय् ? अॆङ्गु शॊन्नाय् ? यावर् मुन्ने
कन मारुन् दुरुपदनार् महळैच् चूदुक्
कळियिले यिळन्दिडुदल् कुऱ्ऱ मॆन्ऱाय्
शिनमान तीयऱिवॆप् पुहैत्त लाले
तिरि लोह नायहनैच् चिनन्दु शॊन्नाय् ! 78
तरु मत्तिन् वाळ्वदनैच्चूदु कव्वुम्;
तरुम मरु पडिवॆल्लु" अॆनुमि यऱ्कॆ
मरु मत्तै नम्माले युलहङ् गऱ्कुम्
वळितेडि विदियिन्दच् चॆय्है शॆय्दान्

नहीं पाया था, हे भाई ! जुए में नहीं पा लिया था। वीरता से पाया था; भयंकर युद्ध में विजय द्वारा पाया था। ७३ चक्रवर्ती के रूप में हम उन्नत पद पर थे। झट से एक क्षण में सबको आपने गँवा दिया ! ७४ राज्य सब हारे ! भाई ! हम सब किये रहे। फिर हमें दास बनाया और हम सहते रहे ! ७५ द्रुपद-सुता को, धृष्टद्युम्न की सहोदरा को दाँव पर लगाकर कहा, "दो" ! हाय ! इनको 'दासी' कहा आपने ! ७६ यह सहन नहीं होता ! छोटे भैया ! जलता अंगार लाओ। 'किरण' को गँवा दिया ! हम ज्येष्ठ के हाथ को जला दें। ७७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हमने चोरी में न द्रौपदी को था पाया।
औ' न जुए में दाँव लगा उसको अपनाया॥
हमने दिखा वीरता (अपनी) उसको पाया।
जीत भयंकर युद्ध (उसे हमने) अपनाया॥ ७३॥
(अरे!) चक्रवर्ती का था उन्नत पद पाया।
किन्तु एक क्षण में उसको आपने गँवाया॥ ७४॥
सहनशील हम रहे, राज्य सब अपना हारे।
हमें बनाया दास सहे (ये) संकट सारे॥ ७५॥
द्रुपद - सुता को धृष्टद्युम्न की सहोदरा को।
दाँव लगा दासी कर डाला (मनोहरा को)॥ ७६॥
सहन न होता (कैसे सहें तुम्हीं बतलाओ)।
छोटे भैया! तुम जलता अंगारा लाओ॥
जिन हाथों ने दाँव लगाकर इसे गँवाया।
ज्येष्ठ (बन्धु) के (उन) हाथों को जाय जलाया"॥ ७७॥

अर्जुन का कथन—६७

इस प्रकार सहदेव अनुज से कहा भीम ने।
यह सुन किया विरोध कहा अर्जुन (असीम) ने॥
"भीमसेन यह बात अरे मन से कहते हो?।
किसके सम्मुख? कहाँ? और तुम क्या कहते हो?॥
गौरववान द्रुपद - तनया को दाँव लगाना।
तुम कहते अपराध— हार उसका यों जाना॥
क्रोध - अग्नि से बना बुद्धि को धूमिल (अवमत)।
क्रोधित हो त्रैलोक्य नाथ पर कहा (असंगत)॥ ७८॥
ग्रस लेगी वंचना धर्म का जीवन (सुस्थित)।
किन्तु धर्म जीतेगा फिर से (है यह निश्चित)॥
स्वाभाविक रहस्य यह तुमको बता दिया है।
यह जग सीखे विधि ने अतः उपाय किया है॥

अर्जुन का कथन—६७

भीम ने सहदेव से यह कहा। इसको सुनकर विजय ने विरोध करके कहा—भीम! क्या तुमने मन से कहा? कैसी बात कहते हो? कहाँ कहते हो? किनके सामने? गौरववान द्रुपद जी की कन्या को क्रीड़ा में हारना अपराध कहा। क्रोध की आग की बुद्धि को धूमिल बनाने से तुमने त्रिलोकनाथ पर गुस्सा करके कहा! ७८ 'धर्म के जीवन को वंचना ग्रस लेगी। पर धर्म फिर से जीतेगा'—यह स्वाभाविक रहस्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करुमत्त मॆत्मेलुङ् गाण्बोम्; इन्रु
कट्टुण्डोम् पॊरुत्तिरुप्पोम् कालम् मारुम्
तरुमत्तै यप्पोदु वॆल्लक् काण्बोम्
तन्नुवुण्डु काण्डीव मदन्पेर्' ऎन्ड्रान् 79

विकर्णन् शॊल्वदु—68

अण्णनुक्कुत् तिऱल् वीमन् बणङ्गि निन्ड्रान्
अप्पोदु विकर्ण नॆळुन् दवैमुन् शॊल्वान्
'पॆण्णरशि केळ्विक्कुप् पाट्टन् शॊन्न
पेच्चदनै नान् कॊळ्ळेन्; पॆण्डिर् तम्मै
ऎण्ण मदिल् विलङ्गॆन्नवे कणवर् ऎण्णि
एदॆनिलुञ् जॆय्दिड लामॆन्ड्रान् पाट्टन्
वण्णमुयर् वेदनॆऱि माऱिप् पिन्नाळ्
वळङ्गुवदिन् नॆऱि यॆन्ड्रान्; वळुवे शॊन्नान् 80
'ऎन्दैयर् तम् मनैवियरै विऱ्ऱ दुण्डो ?
इदुहारु मरशियरैच् चूदिऱ् तोऱ्ऱ
विन्दैयैनीर् केट्ट दुण्डो ? विलै मादर्क्कु
विदित्तदैये पिऱ्काल नीदिक् कारर्
शॊन्द मॆनच् चात्तिरत्तिल् पुहुत्तु विट्टार् !
शॊल्लळवे तानालुम् वळक्कन् दन्निल्
इन्दविदञ् जॆय्व दिल्लै; शूदर् वीट्टिल्
एवर्पॆण् पणयनिल्लै यॆन्ड्रुङ् गेट्टोम् 81

है। यह संसार हमसे सीखे, तदर्थ नियति ने यह उपाय किया है ! आगे का कर्म उत्तरोत्तर देखेंगे। आज बँध गये; सब्र करेंगे। बदलेगा जमाना। तब धर्म को जीतता देखेंगे। धनु है-- उसका नाम भी गांडीव है —अर्जुन ने कहा। ७९

विकर्ण का कथन—६८

बली भीम ज्येष्ठ को नमस्कार करके चुप रहा। तब विकर्ण उठकर सभा (-सदों) के सामने बोला-- 'स्त्री रानी के प्रश्न का जवाब जो पितामह ने कहा, उसे मैं (ठीक) नहीं मानूंगा। पितामह कहते हैं कि स्त्री को पशु मानकर उसे जो चाहे किया जा सकता है ! सुगठित श्रेष्ठ वेदमार्ग पीछे बिगड़ा तथा आगे जो प्रचलित हुई

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अब आगे का कर्म लखेंगे (सजग निरन्तर)।
आज बँधे हैं (हम परखेंगे उर) धीरज धर॥
युग बदलेगा, तभी धर्म की विजय लखेंगे।
इस गाण्डीव धनुष से अरि का निलय लखेंगे"॥
इस प्रकार अर्जुन ने वचन कहे समझाकर।
(भीमसेन हो गये शान्त उर में धीरज धर)॥ ७९॥

विकर्ण का कथन—६८

बली भीम रह गया ज्येष्ठ के सम्मुख नम कर।
सभासदों से था विकर्ण बोला तब उठकर॥
"पांचाली को दिया पितामह नें जो उत्तर।
उसे मानता नहीं (किसी भी भाँति) उचिततर॥
कहते भीष्म कि नारी को पशु (तुल्य) मानकर।
मनमाना व्यवहार किया जा सकता उस पर॥
श्रेष्ठ वेद का मार्ग बिगड़ अब गया पुरातन।
अब जो प्रचलित नीति वही है समुचित नूतन॥
इस प्रकार से इस अधर्म का किया समर्थन।
कहा भीष्म नें ग़लत (किया झूठा प्रतिपादन)॥ ८०॥
कभी पूर्वजों ने क्या किया स्वपत्नी-विक्रय।
(सोच - समझकर मुझे बतायें सभी महाशय)॥
हारीं कब रानियाँ द्यूत के दाँवों पर धर?।
सुनी आपनें यह विचित्रता है (विस्मयकर)?॥
वेश्याओं के लिए नियम जो रहा बनाया।
निज - नारी - हित वही नियम शास्त्र में घुसाया॥
कहने भर को नियम (शास्त्र में यद्यपि वर्णित)।
पर करने की प्रथा नहीं है जग में प्रचलित॥
जुआरियों के घर में भी दासियाँ दिखाएँ।
(यदि हैं, तो बेचते न उनको कर शठताएँ)॥ ८१॥

वही यह नीति है —भीष्म ने यह भी कहा, पर ग़लत कहा। ८० क्या हमारे पूर्वजों ने पत्नी को कभी बेचा था? अब तक रानियों को जुए में हारने की विचित्रता आपने सुनी है? पण्य-स्त्रियों के लिए जो नियम था, उसे ही पीछे के नियम बनानेवालों ने अपनी ओर से शास्त्र में घुसा दिया है! वह भी कहने भर को है, पर ऐसा करने की प्रथा नहीं पायी जाती। हमने यह भी कहा कि जुआरियों के यहाँ परिचारिकाएँ पण्य नहीं रहतीं। ८१ अपने को हारकर दास बनने के बाद इनकी पत्नी कैसी?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'तन्नैयिव निऴन्दडिमै यान पिन्नर्त्
तारमॆदु वोडेदु ? ताद नान
पिन्नैयुमो रुडैमै युण्डो ?' ऎन्रु नुम्मैप्
पॆण्णरशु केट्किन्ड्रार् पॆण्मै वायाल्
मन्नर्हळे ! कळिप्पदुतान् शूदॆन् ड्रालुम्
मनुनोदि तुरन्दिङ्गे वलिय पावन्
दन्नैयिरु विऴि पार्क्क वायपे शीरो ?
तात्तनै नीदियिदु तहुमो ?' ऎन्ड्रान् 82
इव्वारु विकर्णनु मुरॆत्तल् केट्टार्;
ऎऴुन्दिट्टार् शिलवेन्दर् इरॆच्च लिट्टार्
'ऒव्वादु शहुनि शॆयुङ् गॊडुमै' यॆन्बार्;
'ऒरुनाळु मुलहिवन मऱक्का दॆन्बार्
'ऎव्वारु पुहैन्दालुम् पुहैन्दु पोवीर्;
एन्दिऴैयै अवक्कळत्ते इहऴ्दल् वेण्डा
शॆव्वानम् पडर्न्दाऱ् पो लिरत्तम् पायच्
चॆरुक्कळत्ते तीरुमडा पऴियिः' दॆन्बार् 83

कर्णन् पदिल्—69

वेऱु

विकरुणन् शॊल्लैक् केट्टु, विल्लिशैक् कर्णन् शॊल्वान्
'तहुमडा, शिऱियाय्, निन्शॊल्, तारणि वेन्दर् यारुम्
पुहुवदु नन्ऱन् ड्रॆण्णि, वायपुदैत् तिरुन्दार् नीतान्
मिहुमुरै शॊल्लि विट्टाय्, विरहिलाय् पुलन्नु मिल्लाय् ! 84
पॆण्णि वळ् तूण्ड लॆण्णिप्, पशुमैयाल् पिदऱ्ऱु हिन्ड्राय् !
ऎण्णिला दुरॆक्क लुऱ्ऱाय्; इवळैनाम् वॆन्ऱु दाले

इनका घर कैसा ? दास बनने के बाद इनका कोई स्वत्व होता है क्या ? स्त्रीरानी अपने सुन्दर स्त्रीमुख से यह पूछती है। हे राजाओ, जुआ क्रीड़ा है सही, तो भी मनुनीति का हनन करके कठोर पाप होता है; उसे अपनी दोनों आँखों से देखते हुए मुख नहीं खोलेंगे क्या ? पूछा उसने। ८२ ऐसा विकर्ण को बोलता सुना। कुछ राजा उठे। शोर मचाया। कहा— शकुनि का किया नृशंस कार्य अनुचित है। कुछ ने कहा कि संसार कभी इसे नहीं भूलेगा। कुछ बोले कि आप किसी तरह धुआँ बन जायँगे (नष्ट हो जायँगे)। सभामध्य आभरण-भूषिता को अपमानित मत करो। (करो तो) युद्ध-रंग-मध्य संध्यागगन के समान रक्त बहेगा, बदला लिया जाएगा। ८३

कर्ण का उत्तर—६९

धनुर्धर कर्ण विकर्ण की बात सुनकर बोला— उचित है रे ! हे छोकरे ! उचित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'दास बन गये जब अपने को सभी हारकर।
तब कैसी इनकी पत्नी, कैसा इनका घर ?॥
क्या इनका हक होता (कहो) दास बनने पर ?'।
श्रीमुख से पूछती द्रौपदी इसका उत्तर॥
नृपो ! द्यूत - क्रीड़ा है यद्यपि (मानो सुखकर)।
उग्र पाप होता मनु का नियमोल्लंघन कर॥
युगल दृगों से देख पाप होते निज - सम्मुख।
क्या न (सभासद) खोलेंगे (अब भी अपना) मुख ?"॥
इस प्रकार पूछा विकर्ण ने (क्रोधित होकर)।
(हलचल मची कर्ण - सुत के वचनों को सुनकर)॥ ८२॥
सुन विकर्ण के इस प्रकार के वचन (उग्रतर)।
उठे भूप कुछ और मच गया शोर (भयंकर)॥
"यह शकुनी का किया नृशंस कार्य अनुचित है।
इसे न भूलेगा जग (जग के हेतु अहित है)॥
सभा - बीच है खड़ी द्रौपदी भूषण - भूषित।
अपमानित मत करो (करो उसको सम्मानित)॥
इसी भाँति ही यदि अधर्म ये अपनायेंगे।
होकर भस्मीभूत धुआँ-से बन जायेंगे॥
संध्या की लाली - सी लाल रक्त की धारा।
युद्ध - भूमि में बहती देखेगा जग सारा"॥
इस प्रकार सब कहने लगे वहाँ भूपति - गण।
(सुन-सुनकर मन में अति कुपित हुआ दुर्योधन)॥ ८३॥

कर्ण का उत्तर—६९

सुन विकर्ण की बात कर्ण बोला धनुधारी।
"अरे ! छोकरे (बड़ी) उचित है बात तुम्हारी॥
यही सोच सब मौन रहे धरणी के नरपति।
'घर की बात ! बीच में पड़ना' समझा अनुचित॥
रे सामर्थ्यहीन ! यह बात कही (अति) उद्धत।
(नहीं किसी का भय क्या तुझको अरे ! असंगत ?)॥ ८४॥
यह नारी भी अरे बुद्धि से (सदा) रहित है।
तू बचपन की बातें बकता जिसके हित है॥

है तुम्हारा वचन। धरणी के सब नृपति यह सोचकर चुप रहे कि बीच में पड़ना अच्छा नहीं है। तू ही ने उद्धत बात कही ! सामर्थ्यहीन ! ८४ बुद्धि से भी रहित ! यह स्त्री है, उसकी प्रेरणा से तू बचपन की-सी बात बकता है। बिना सोचे तू

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नण्णिडुम् पाव मॅन्ड्राय्, नाणिलाय् पॉऱैयु मिल्लाय् !
कण्णिय निलैमै योराय्, नीदि नी काण्ब दुण्डो ? 85
मार्बिले तुणियैत् ताङ्गुम्, वळक्कङ् गीळडि यार्क् किल्लै
शीरिय महळु मल्लळ्, ऐवरैक् कलन्द तेवि !
यारडा पणियाळ्, वाराय्, पाण्डवर् मार्बि लेन्दुम्
शीरैयुङ् कळैवाय्; तैयल्, शेलैयुङ् कळैवाय्' अंन्ड्रान् 86
इव्वुरै केट्टा रैवर्, पणि मक्क ळेवा मुन्नन्
दॅव्वर् कण् डञ्जु मार्बैत्, तिऱन्दन्नर् तुणियैप् पोट्टार्
नव्वियैप् पोन्ऱ कण्णाळ्, ञानसुन् दरिपाञ् जालि
'अॅव्वळि युय्वो' मॅन्ड्रे, तियङ्गि नाळ् इणैक्कै कोत्ताळ् 87

तिरौबदि कण्णनुक्कुच् चॅय्युम् पिरार्त्तनै—70

बेऱु

तुचचादनन् अॅळुन्दे— अन्नै
तुहिलिनै मन्ऱिडै युरिदलुऱ्ऱान्
'अच्चो तेवर्हळे'— अॅन् !
ऱलरियब् विदुरनुन् दरै शाय्न्दान्
पिच्चेऱि यवनैप्पोल्— अन्दप्
पेयनुन् दुहिलिनै युरिहैयिले
उट्चोदि यिर्कलन्दाळ्;— अन्नै
उलहत्तै मऱन्दाळ् ऑरुमैयुऱ्ऱाळ् 88

कहने लगा। कहता है कि इसको जीतने से हमें पाप लगेगा। निर्लज्ज, सब भी नहीं रखता। शोच्य स्थिति को नहीं सोचते ! क्या तू न्याय देख सकेगा ? ८५ 'यहाँ वक्ष पर वस्त्र धारण करने की प्रथा अधीनस्थ दासों में नहीं है। यह उत्तम पत्नी भी नहीं। पाँच लोगों से संसर्ग रखनेवाली पत्नी है ! रे कौन रे ! भृत्य ! आ ! पांडवों के वक्ष वस्त्र पर के वस्त्र उतार दो तथा इस नारी की साड़ी को भी हटा दो' —कहा कर्ण ने। ८६ पाँचों ने यह वचन सुना। भृत्यों के आज्ञा देने से पहले ही उन्होंने अपने शत्रुभयकारी वक्ष को उघारते हुए वस्त्र नीचे डाल दिये। हरिणाक्षी ज्ञानसुन्दरी पांचाली 'हम कैसे बचेंगी ?' सोचकर भ्रमित हो गयी। हम कैसे बचेंगी ? उसने दोनों हाथ जोड़े। ८७

द्रौपदी की कृष्ण से प्रार्थना—७०

दुःशासन उठा और अम्बा (द्रौपदी) का चीर, सभामध्य उघारने लगा। विदुर 'हा देव' चिल्लाते हुए भूमि पर गिर पड़े। पागल के समान जब वह पिशाच चीर उघाड़ रहा था, तब अंबा संसार को ही भूल गयी। एकाग्र हुई। ८८ वह प्रार्थना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सोचे-(समझे) बिना (मूर्ख !) तू (बातें) बकता।
पाप लगेगा इसे जीतने से तू कहता ॥
रे निर्लज्ज ! नहीं (निज मन में) धीरज धरता।
शोच्यस्थिति का शोक न (धीरजशाली) करता ॥
क्या तू सच्चा न्याय कभी भी देख सकेगा ?।
(न्याय देखकर अंड - बंड क्या नहीं बकेगा ?) ॥ ८५ ॥
यही प्रथा है जो अधीन हैं यहाँ दास-जन।
वस्त्र नहीं वे कभी वक्ष पर करते धारण ॥
उत्तम पत्नी भी यह नहीं (तुम्हें बतलाता)।
पाँच जनों के साथ जुड़ा है इसका नाता ॥
अरे ! कौन है यहाँ ? भृत्य जल्दी से आ तू।
वस्त्र पाण्डवों के उर पर से (शीघ्र) हटा तू ॥
इस नारी (के तन) की भी साड़ी उतार तू"।
बोला कर्ण ("शीघ्र कर, मत कुछ भी विचार तू") ॥ ८६ ॥
पाण्डुसुतों ने वचन (कर्ण के) ऐसे सुनकर।
अरि भयकारी अपने वक्षस्थल उघार कर ॥
भृत्यों के आज्ञा - पालन से पहले सत्वर।
दिये भूमि पर डाल वस्त्र अपने (अति सुन्दर) ॥
तब हरिणाक्षी ज्ञान - सुन्दरी द्रुपद-सुता भी।
अब हम कैसे बचें ? भ्रमित-सी अजब दशा थी ॥
उसने (तत्क्षण) अपने दोनों हाथ जोड़कर।
(मन ही मन में लगी मनाने वह मुरलीधर) ॥ ८७ ॥

द्रौपदी की कृष्ण से प्रार्थना—७०

उठा दुष्ट दुःशासन सभा - मध्य यह सुनकर।
चीर खींचने लगा द्रौपदी का (वह पामर) ॥
हाय देव ! यह (दुखपूर्वक) चिल्लाते (कातर)।
विदुर गिर पड़े (शोक - मग्न होकर) भू - तल पर ॥
पागल के समान वह (दुष्ट) पिशाच (नीचतर)।
खींच रहा था जब द्रुपदा का चीर (पकड़कर) ॥
तब एकाग्र हुई द्रुपदा भूली जग सारा।
(करुण स्वरों से रक्षा-हित कृष्ण को पुकारा) ॥ ८८ ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'हरि हरि हरि' अॅन्ऱाळ्;— 'कण्णा
अबय मबयमुऩक् कबय' मॅन्ऱाळ्
'करियिऩक् करुळ्पुरिन्दे— अन्ऱु
कयत्तिडै मुदलैयि ऩुयिर् मडित्ताय् !
करिय नऩ् ऩिऱमुडैयाय्— अन्ऱु
काळिङ्गऩ् तलैमिशै नडम् पुरिन्दाय् !
पॅरियदॊर् पॊरुळावाय्— कण्णा !
पेशरुम् पळमऱैप् पॊरुळावाय् ! 89
शक्कर मेन्दिनिन्ऱाय्— कण्णा !
शार्ङ्गमॅऩ् ऱॊरुविल्लैक् करत्तुडैयाय् !
अट्चरप् पॊरुळावाय्— कण्णा !
अक्कार अमुदुण्णुम् पशुङ्गुळुन्दाय् !
तुक्कङ्ग ळळित्तिडुवाय्— कण्णा !
तॊण्डर्कण् णीर्हळैत् तुडैत्तिडुवाय् !
तक्कवर् तमैक्काप्पाय्— अन्दच्
चदुर्मुह देवऩैप् पडैत्तु विट्टाय् 90
वाऩत्तुळ् वाऩावाय्— तॊ
मण्णीर् काऱ्ऱिऩिल् अवैयावाय्;
मॊऩत्तुळ् वॊळ्न्दिरुप्पार्— तव
मुऩिवर्तम् अहत्तिऩि लॊळिर् तरुवाय् !
काऩत्तुप् मॊय्हैयिले— तऩिक्
कमलमॅऩ् पूमिशै वॊऱ्ऱिरुप्पाळ्
ताऩत्तु श्रीदेवी— अवळ्
ताळिणै कैक्कॊण्डु महिळ्न् दिरुप्पाय् ! 91
'आदियि लादियप्पा— कण्णा
अऱिविऩैक् कडन्दविण् णहप्पॊरुळे !
शोदिक्कुच् चोदियप्पा— अॅन्ऱुऩ्
शॊल्लिऩैक् केट्टरुळ् शॆय्दिडुवाय् !

करने लगी— हरि, हरि, हे हरि ! कृष्ण ! अभय ! अभय आपका। उस दिन तुमने गज पर कृपा करके, सर में मगर को मारा था। काले तथा मनोहर रंग वाले, उस दिन तुमने कालिय नाग के सिर पर नृत्य किया। तुम परब्रह्म हो ! हे कृष्ण, तुम अवर्ण्य प्राचीन वेदार्थ हो। ८९ हे चक्रधर कृष्ण ! शार्ङ्ग नामक अनुपम धनु एक हाथ में रखते हो। तुम अक्षर वस्तु हो। हे कृष्ण ! शर्करान्न खानेवाले शिशु हो ! कृष्ण, दुःख मेटनेवाले हो ! भक्तों के आँसू पोंछनेवाले, योग्य साधुओं की रक्षा करनेवाले हो।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करने लगी प्रार्थना "हे हरि ! कृष्ण ! अभय कर ! ।
(हरो हमारे संकट, हे हरि ! हे मुरलीधर !) ॥
(चक्र सुदर्शन से) तुमने ग्राह को मारकर ।
गज की रक्षा की थी कृपा दिखा (करुणाकर !) ॥
काले रंग वाला था कालिय नाग विषमतर ।
तुमने उसके सिर पर नृत्य किया (अति सुन्दर) ॥
कृष्ण (हरो दुख) तुम हो परब्रह्म (सर्वोत्तम) ।
तुम अवर्ण्य प्राचीन (पुण्य) वेदार्थ (ज्ञान-सम) ॥ ८९ ॥

शार्ङ्ग नाम का अनुपम धनुष लिये रहते कर ।
तुम हो अक्षर तत्त्व, (तुम्हीं हो कृष्ण चक्रधर) ॥
तुम शिशु हो (माखन) मिसरी के खानेवाले ।
कृष्ण ! तुम्हीं हो संकट सभी मिटानेवाले ।
भक्त जनों के अश्रु पोंछनेवाले तुम हो ।
साधु जनों की रक्षा करनेवाले तुम हो ॥
तुमसे प्रकटे वेद पुरुष (ब्रह्मा) चतुरानन ।
(जो करते हैं सभी सृष्टि का ही उत्पादन) ॥ ९० ॥

तुम नभ के भी नभ हो (अगम अपार तुम्हीं हो) ।
क्षिति, जल, अनल, अनिल इनके भी सार तुम्हीं हो ॥
मौन तपस्वी मुनियों के हृदयों के भीतर ।
(तुम) होते हो प्रकट (कृपा करके करुणाकर) ॥
विपिन - सरोवर - बीच अनोखे मृदुल कमल पर ।
स्वर्गलोक की श्रीदेवी विराजती (सुंदर) ॥
उसके (पावन) चरण युगल को गहनेवाले ।
तुम हो (माधव ! परम प्रफुल्लित रहनेवाले) ॥ ९१ ॥

कृष्ण ! आदि के आदि तुम्हीं हो तुम हो धाता ।
तुम बुद्धि से परे स्वर्गीय वस्तु (जग - त्राता) ॥
तुम्हीं ज्योति की ज्योति सुनो तुम विनती (मेरी) ।
कृपा करो तुम पिता ! (लगाओ मत अब देरी) ॥

इस चतुर्मुख वेदपुरुष को भी तुमने सृष्ट किया । ९० तुम आकाश के आकाश हो । अग्नि, पृथ्वी, जल, अनिल, इनके सार तुम्हीं हो । मौनी तपस्वी मुनियों के हृदय में प्रकट होते हो ! जंगल के सरोवर में अनोखे मृदुल कमल पर, जो विराजती है, इस सुरलोक की श्रीदेवी के चरणयुगल को पकड़े खुशी से रहनेवाले हो तुम ! ९१ आदि के भी आदि हो, हे धाता ! हे कृष्ण ! बुद्धि के परे रहनेवाले स्वर्ग की वस्तु हो ! ज्योति की ज्योति हो । हे पिता ! मेरी विनती सुनो और कृपा करो ! महान् दिगन्तर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मातिक्कु वॅळियिनिले— नडु
वानत्तिऱ् पऱन्दिडुङ् गरुडन्मिशै
शोतिक्कुळ् ऊऱ्न्दिडुवाय्— कण्णा !
शुडऱ्प् पॊरु ळेपे रडऱ्पॊरुळे ! 92
'कम्बत्ति लुळ्ळानो ?— अडा !
काट्टुन्ऱन् कडवुळैत् तूणिडत्ते !
वम्बुरै शॅयुमूडा !'— अॅन्ऱु
महन्मिशै युऱुमियत् तूणुदैत्तान्
शॅम्बविर् कुऴलुडैयान्— अन्दत्
तीयवल् लिरणिय नुडल् पिळन्दाय् !
नम्बिनिन् नडि तॊऴुदेन्— अॅन्नै
नाणऴिया दिङ्गु कात्तरुळ्वाय् 93
वाक्किनुक् कीशनैयुम्— निन्ऱन्
वाक्किनि लशैत्तिडुम् वलिमै यिनाय्
आक्किनै करत्तुडैयाय्— अॅन्ऱन्
अन्बुडै यॅन्दै अॅन् नरुट् कडले !
नोक्किनिऱ् कदिरुडैयाय्— इङ्गु
नूऱुवर् कॊडुमैयैत् तविर्त् तरुळ्वाय्
तेक्कुनल् वानमुदे !— इङ्गु
शिऱ्ऱिडै याय्च्चियिल् वॅण्णॅ युण्डाय् 94
बैयहङ् गात्तिडुवाय्— कण्णा !
मणिवण् णाअॅन्ऱन् मनच्चुडरे !
ऐय . निन् पदमलरे— शरण्
हरि हरि हरि हरि हरि !' अॅन्ऱाळ्
पॊय्यरत्तन् दुयरिनैप्पोल्— नल्ल
पुण्णिय वाळरत्तम् पुहऴिनैप् पोल्
तैयलर् करुणैयैप् पोल्— कडल्
शलशलत् तॅऱिन्दिडुम् अलैहळैप्पोल् 95

में मध्य आकाश में उड़नेवाले गरुड़ पर सवार हो 'ज्योतिमंडल' में रेंगते हुए चलनेवाले ! हे कृष्ण ! हे ज्योति-वस्तु, हे बहुत बलवान पुरुष । ९२ ताम्रकेशी हिरण्य ने अपने मुख से गरजकर यह कहा— 'क्या यह खम्भे में है ? रे ! दिखा अपने देव को इस स्तम्भ में ! तकरार की बात करनेवाले मूर्ख !' और उसने खम्भे पर लात मारी । उस दुर्गुणी के हिरण्य के शरीर को तुमने चीर दिया । हे श्रेष्ठ पुरुष ! मैंने तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गरुड़ देव आकाश - मध्य हैं उड़नेवाले।
उन पर चढ़ ग्रह - मंडल मध्य विचरनेवाले॥
ज्योति-तत्त्व तुम कृष्ण ! बहुत बलवान पुरुष हो।
(शत्रु - जनों को काल - तुल्य दीखते सरुष हो)॥ ९२॥

'क्या वह खम्भे में है? दिखा खम्भ में मुझको।
अरे ! विवादी ! मूर्ख ! (मार डालूँगा तुझको)'॥
इस प्रकार अपने सुत से बोला गर्जन कर।
मारी लात हिरण्यकशिपु ने उस खंभे पर॥
उस दुर्गुणी हिरण्यकशिपु का उदर चीरकर।
(बचा लिया प्रह्लाद भक्त नरसिंह रूप धर)॥
श्रेष्ठ पुरुष ! मैं करती तब चरणों का वन्दन।
लाज न मेरी जाय, करो रक्षा (यदुनंदन)॥ ९३॥

वाक्शक्ति से वागीश्वर को करते कंपित।
वरद हस्त तुम (भक्तों के सिर रखते सस्मित)॥
हो मेरे आराध्य देव तुम करुणा-सागर !।
आँखों में हैं अग्नि तुम्हारे (महा भयंकर)॥
क्रूर कौरवों की शठता से मुझे बचाओ।
(लुटती मेरी लाज बचाने गिरिधर ! आओ)॥
नभ - मंडल के मधुर अमृत (के हो तुम प्याले)।
सदा गोपियों के मक्खन के खानेवाले॥ ९४॥

हे जगरक्षक ! कृष्ण ! (नील) मणि-वर्ण ! (मनोहर !)।
मेरे मन की ज्योति (तुल्य तुम भासित सुन्दर)॥
स्वामी ! (दुख के हरण) तुम्हारे कमल-चरण हैं।
हरि ! हरि ! हरि ! हरि ! वही हमारे लिए शरण हैं"॥
द्रुपद - सुता ने इस प्रकार की विनय मनोहर।
(सुनकर उसकी आर्त गिरा पिघले करुणाकर)॥ ९५॥

चरणों की वन्दना की। मेरी लाज न हर ली जाय। मेरी रक्षा करो। ९३ वागीश को भी अपनी वाक्शक्ति से हिलानेवाले हो। तुम वरदहस्त हो ! मेरी भक्ति के देव ! कृपासागर ! आँखों में अग्नि रखनेवाले, अब इन सो (कौरवों) की क्रूरता से बचाओ ! हे आकाश के मधुर अमृत ! पतली कमर वाली ग्वालिनों के घर का मक्खन खानेवाले ! ९४ हे जगतरक्षक कृष्ण ! हे मणिवर्ण ! हे मेरे मन की ज्योति ! हे स्वामी ! तुम्हारे कमलपद ही शरण है मेरी ! हरि, हरि, हरि, हरि ! ——कहा उसने ? वंचकों के दुःख के समान, पुण्यात्मा के यश के समान, स्त्रियों की करुणा के समान, समुद्र की लहरों के समान— ९५ स्त्री की ज्योति की महिमा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॆण्णॊळि वाळ्त्तिडुवार्— अन्दप्
पॆरुमक्कळ् शॆल्वत्तिन् पॆरुहुदल् पोल्
कण्णपिरा नरुळाल्— तम्बि
कळर्रिडक् कळर्रिडत् तुणि पुदिदाय्
वण्णप् पॊर् चॆलैहळाम्— अवै
वळर्न्दन वळर्न्दन वळर्न्दनवे !
ऍण्णत्ति लडङ् गावे— अवै
ऍत्तनै यॆत्तनै निरत्तनवो ! 96
पॊन्निळै पट्टिळैयुम्— पल
पुदुप्पुदुप् पुदुप्पुदुप् पुदुमैहळाय्
शॆन्नियिर् कैकुवित् ताळ्— अवळ्
शॆव्विय मेनियॆच् चार्न्दु निन्रे
मुन्निय हरि नामम्— तन्निल्
मूळुनर् पयनुल हरिन्दिडवे
तुन्निय तुहिर् कूट्टङ्— गण्डु
तॊळुम्बत् तुच्चादनन् वीळ्न्दु विट्टान् 97
तेवर्हळ् पूच्चॊरिन्दार्— 'ओम्
जॆयजॆय बारद शक्ति' यॆन्रे
आवलॊ डॆळुन्दु निन्रु— मुन्नै
आरिय वीट्टुमन् कैतॊळुदान्
शावडि मरुव रॆल्लाम्— 'ओम्
शक्ति शक्ति शक्तियॆन्रु करङ्गुवित्तार्
कावलिन्रि पिळैत्तानु— कॊडि
कडियर वुडैयवन् तलै कविळ्न्दान् 98

वीमन् शॆय्द शबदम्—71

वेरु

वीम नॆळुन्दुरै शॆय्वान्— 'इङ्गु
विण्णव राणै पराशक्ति याणै !
तामरैप् पूविनिल् वन्दान्— मरै
शार्रिय तेवन् तिरुक्कळ लाणै;

गानेवाले बड़े लोगों के धन के समान, कृष्ण की कृपा से उतारते-उतारते नयी-नयी साड़ियाँ, रंग-बिरंगी स्वर्ण की साड़ियाँ-- वे बढ़ीं, बढ़ीं, बढ़ती चलीं। रे भाई, वे गिनती में नहीं आ सकतीं। उनके भी कितने ही, कितने ही रंग थे! ९६ स्वर्ण सूत्र, रेशम के सूत्र! नया, नया, नया! —जिसने सिर पर हाथ जोड़ रखे थे,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ज्योतिमयी स्त्री - महिमा का जो करते गायन।
जिस प्रकार बढ़ता है ऐसे लोगों का धन॥
कृष्ण-कृपा से बढ़ने लगा चीर अति सत्वर।
(खींच - खींचकर चीर थका दुःशासन पामर)॥
रंग-बिरंगी नयी-नयी साड़ियाँ (मनोहर)।
बढ़ने लगीं असंख्यक स्वर्णमयी (शुभ सुन्दर)॥ ९६॥
स्वर्ण - सूत्र थे, रेशम के थे सूत्र (मनोहर)।
नये-नये रँगवाले थे (अति अगणित अंबर)॥
जोड़े दोनों हाथ रखे थी वह निज सिर पर।
लिपटे हुए चीर थे अगणित उसके तन पर॥
हरि के (मधुर) नाम की महिमा विश्व-विदित कर।
ढेर लग गया वहाँ साड़ियों का (ज्यों भूधर)॥
(चकित हुआ अगणित असंख्य) साड़ियाँ देखकर।
गिरा (दुष्ट) दुःशासन (पापी) थकित (भूमि पर)॥ ९७॥
'जय-जय भारत शक्ति ॐ जय-जय-जय कहकर'।
(अति) आनन्द-पूर्वक (निज आसन से) उठकर॥
आर्य भीष्म ने हाथ जोड़ हरि के गुण गाये।
(नभ - मंडल से) फूल सुरगणों ने बरसाये॥
सभासदों ने 'ॐ शक्ति! जय शक्ति!' बोलकर।
जोड़े अपने हाथ (हो गये सभी विनत सिर)॥
सर्प - ध्वज था (दुष्ट) धर्म - शासन का भंजक।
(गर्व चूर हो गया) झुक गया उसका मस्तक॥ ९८॥

भीम की सौगन्ध—७१

"पराशक्ति की शपथ" भीम बोले तब उठकर।
"शपथ तुम्हारी स्वर्गलोक के वासी (सुरवर!)॥
लिया कमल से जन्म, वेद के पढ़नेवाले।
उन ब्रह्मा की शपथ (जो कि चतुरानन वाले)॥

उसके सुन्दर शरीर पर लिपटे रहे बहुत चीर! हरिनाम में महिमा संसार में प्रकट करते हुए, साड़ियों के लगे ढेर को देखकर वह छोकरा दुःशासन (थककर) गिर गया। ९७ देवों ने फूल बरसाये। आर्य भीष्म ने, पहले, 'ॐ जय, जय भारत शक्ति की', कहते हुए आनन्द के साथ उठकर अपने हाथ जोड़े। सभा के वीरों ने भी 'ॐ शक्ति शक्ति शक्ति' कहते हुए हाथ जोड़े। शासन-धर्म-भंजक सर्पध्वज नतमस्तक हो गया। ९८

भीम की सौगन्ध—७१

भीम ने उठकर कहा— यहाँ आकाशवासियों की सौगन्ध, पराशक्ति की शपथ!

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मामहळैक् कॉण्ड तेवन्— अॅङ्गळ्
मरबुक्कुत् तेवन् कण्णन्पदत् ताणै;
कामनैक् कण्णळ लाले— शुट्टुक्
कालनै वॅन्ऱवन् पॉन्नडि मीदिल् 99
आणैयिट् टिःदुरै शॅय्वेन्— इन्द
आण्मै यिलात्तुरि योदनन् ऱन्नै
पेणुम् पॅरुङ्गन लॉत्ताळ्— अॅङ्गळ्
पॅण्डु दिरौबदियैत् तॉडै मीदिल्
नाणिन्ऱि 'वन्दिरु' वॅन्ऱान्— इन्द
नाय्मह नान् दुरियोदनन् ऱन्नै
माणऱ्ऱ मन्नर् कण् मुन्ने— अॅन्ऱन्
वन्मैयि नाल् युत्त रङ्गत्तिन् कण्णे 100
तॉडैयैप् पिळन्दुयिर् माय्प्पेन्— तम्बि
शूरत् तुच्चाद नन्नतन्नैयु माङ्गे
कडैपट्ट तोळ्हळैप् पिय्प्पेन्— अङ्गु
कळ्ळॅन्न ऊऱु मिरत्तङ् गुडिप्पेन्
नडैपॅरुङ् गाण्बि रुलहीर्— इदु
नान् शॊल्लुम् बारत्तैयॅन् ऱॅण्णिडल् वेण्डा
तडैयऱ्ऱ दॅय्वत्तिन् वारत्तै— इदु
शादनै शॅय्ह पराशक्ति' अॅन्ऱान् 101

अर्जुनन् शबदम्—72

पारत्त नॅळुन्दुरै शॅय्वान्— 'इन्दप्
पादहक् कर्णनैप् पोरिल् मडिप्पेन्
तीर्त्तन् पॅरुम् बुहळ् विष्णु— अॅङ्गळ्
शीरिय नण्बन् कण्णन्कळ् ताणै;

कमलभव वेदपाठी (ब्रह्मा) देव के चरणों की सौगन्ध ! महालक्ष्मी के पति, हमारे कुल के नायक कृष्ण के चरणों की शपथ ! कामदेव को आँख से जलाकर जिसने काल को जीता था, उसके स्वर्णचरणों की-- ९९ शपथ करके यह कहता हूँ। इस पुंसत्वहीन दुर्योधन को, पालित बड़ी अग्नि-सम रहनेवाली हमारी देवी द्रौपदी को जिसने 'मेरी जाँघ पर आकर बैठो' कहा उस कुत्ते के बच्चे दुर्योधन को, इन गौरवहीन नृपतियों के सामने, युद्धाजिर में-- १०० जंघा तोड़कर जान से मार डालूँगा। उसके भाई शूर दुःशासन के भी नीच कन्धों को उधेड़ दूँगा। वहाँ जो रक्त का स्रोत निकलेगा, उसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जो कि महालक्ष्मी के पति मम कुल के नायक।
शपथ कृष्ण के चरणों की मुझको (सुखदायक)॥
नयन - ज्वाल से काम जलाया, जो मृत्युञ्जय।
उनके स्वर्ण - चरण की खाता शपथ (नहीं भय !)॥ ९९ ॥

पालित महा अग्नि - सम मम घर रहनेवाली।
जंघा पर बैठाने हित लाया पांचाली॥
वह पुरुषत्व - विहीन, श्वान का सुत दुर्योधन।
इन गौरव - विहीन - नृप - सम्मुख रण के आँगन॥ १०० ॥

जाँघ तोड़ मम हाथों से मारा जायेगा।
(जो है उसने किया उसी का फल पायेगा)॥
उसका भाई शूर (बड़ा बनता) दुःशासन।
नीच करों को मैं उखाड़ लूँगा उसको हन॥
उनसे जो निकलेगी (गर्म) रक्त की धारा।
उसे सुरा - सम पी लूँगा (प्रण यही हमारा)॥
लोकवासियो ! तुम देखो, अवश्य यह होगा।
(जैसा कर्म किया वैसा ही फल भोगेगा)॥
मत सोचो यह मेरे (मुख से) कहे वचन हैं।
यह अकाट्य हैं वेद - वाक्य (सुनते सब जन हैं)॥
पूर्ण करेगी पराशक्ति (यह है दृढ़ निश्चय)"।
कहा भीम ने (हुआ कौरवों के मन में भय)॥ १०१ ॥

अर्जुन की सौगन्ध—७२

(सभा-भवन में) तब बोले अर्जुन यों उठकर।
"रण में मारूँगा यह पापी कर्ण (नीचतर)॥
शपथ तीर्थ की, विपुल यशस्वी विष्णु (विमल) की।
शपथ मित्र श्री श्रेष्ठ कृष्ण के चरण-कमल की॥

सुरा के समान पी लूँगा। हे लोकवासियो —यह होगा, देख लो। मत सोचो कि यह मेरा कहा वचन है ! यह अबोध देववाक्य है ! इसको पराशक्ति सिद्ध करें। —भीम ने कहा। १०१

अर्जुन की सौगन्ध—७२

पार्थ उठकर यह बात सुनाता है— मैं इस पातकी कर्ण का युद्ध में वध करूँगा। तीर्थ, विपुल कीर्तिवाले विष्णु, हमारे श्रेष्ठ मित्र कृष्ण के चरणों की सौगन्ध ! काली

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कार्त्तडङ् गण्णियॆन् देवि— अवळ्
कण्णिलुङ् गाण्डिव विल्लिनु माणै
पोर्त् तॊळिल् विन्दैहळ् काण्वाय्— हे
पूदलमे ! अन्दप् पोदिनिल्' अॆन्रान् 102

पाञ्जालि शबदम्—73

तेवि दिरौपदि शॊल्वाळ्— 'ओम्
देवि पराशक्ति याणै युरैत्तेन्;
पावि तुच् चादनन् शॆन्नीर्— अन्दप्
पाळ्त् तुरि योदनन् आक्कै यिरत्तम्
मेवि यिरण्डुङ् गलन्दु— कुळल्
मीदिनिर् पूशि नरुनॆय् कुळित्ते
शीविक् कुळल् मुडिप् पेन्यान्— इदु
शॆय्युमुन् नेमुडि येनॆन्' रुरैत्ताळ् 103

ऒमॆन् रुरैत्तनर् तेवर्— ओम्
ऒमॆन्रु शॊल्लि युरुमिर्रु वानम्
पूमि यदिर्च्चि युण्डाच्चु— विण्णैप्
पूळिप् पडुत्तिय दाञ्जुळर् कार्रु
शामि तरुमन् पुविक्के— अॆन्रु
साक्षि युरैत्तन पूवङ्ग ळैन्दुम्
नामुङ् गदैये मुडित्तोम्— इन्द
नानिल मुर्रुनल् लिन्बत्तिल् वाळ्ह 104

॥ शपदम् चरुक्कम् मुर्रुम् ॥

॥ पाञ्जालि शबदम् मुर्रिर्रु ॥

तथा विशाल आँखोंवाली हमारी देवी —उसकी दोनों आँखों की तथा मेरे गांडीव धनु की सौगन्ध ! हे भू-तल ! युद्ध-कर्म की करामातें देखोगे उस समय । १०२

पांचाली-शपथ—७३

देवी द्रौपदी ने सुनाया— ॐ देवी पराशक्ति ! तुम्हारी सौगन्ध लेती हूँ। पापी दुःशासन का लाल रुधिर, उस शून्य दुर्योधन के शरीर का रक्त —दोनों को मिलाकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विपुल - नयन - वाली मम पत्नी पांचाली की।
दोनों आँखों की है शपथ, शपथ काली की॥

शपथ (मुझे) गांडीव (धनुष) की (सुन लो नृपजन !)।
युद्ध - कर्म के कौशल देखेंगे रण - आँगन" ॥ १०२ ॥

पांचाली-शपथ—७३

(सभा - भवन में) तब बोली द्रौपदी (दुखारी)।
"देवी पराशक्ति मैं खाती शपथ तुम्हारी॥
दुर्योधन - दुःशासन - तन के रक्त मिलाकर।
धोकर केश, सुगंधित घृत से पुनः नहाकर॥

तब कंघी करके मैं बालों को बाँधूंगी।
इससे पूर्व न अपने बालों को बाधूँगी" ॥
पांचाली नें शपथ (सभा के सम्मुख) खायी।
(काँप उठे दुःशासन - दुर्योधन अन्यायी) ॥ १०३ ॥

ॐकार का किया देवगण ने उच्चारण।
"ॐ ॐ" कहकर गरजा नभ - मंडल (पावन) ॥
धूलि - धूसरित हुआ गगन, आँधी हहराई।
(डगमग - डगमग) लगी डोलने धरती (-माई) ॥

दिया प्रमाण पंच भूतों ने (यह बलदायक)।
धर्मराज ही हैं सारे भू - तल के नायक॥
कथा समाप्त हो गई मेरी भी (यह सुखमय)।
सुखी चतुर्विध भूमि रहे, जग हो मंगलमय ॥ १०४ ॥

॥ पांचाली-शपथ-सर्ग समाप्त ॥

मैं केशों में मलूंगी; सुगन्धित घी में स्नान करूंगी। तब कंघी करके चोटी बांध लूंगी। यह करने से पहले मैं बाधूंगी नहीं। ('मुडियेन्' का 'नहीं मलूंगी' भी अर्थ है।) देवी ने यह शपथ ली। १०३ देवों ने 'ॐ' का उच्चारण किया। आकाश ॐ ॐ कहकर गरजा। भूकम्प हुआ। आँधी ने आकाश को धूल बना दिया। पाँचों भूतों ने इस बात का सबूत दिया कि धर्म ही सारी भूमि का नायक है हमने भी कथा समाप्त की। चतुर्विधा भूमि का यह संसार भी अच्छे सुख से रहे। १०४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पाञ्जालि शबत्त् तिऱ्कुप् पारदियारिन्
समर्प्पणमुम् महवुरैयुम्
समर्प्पणम्

तमिळ् मॊळिक्कु अळियाद उयिरुम् ऒळियुम् इयलुमाऱ
इन्निप् पिऱन्दु कावियङ्गळ् शॆय्यप् पोहिऱ
वरकविहळुक्कुम्
अवर्हळुक्कुत् तक्क वाऱ
कैङ्गर्यङ्गळ् शॆय्यप् पोहिऱ
पिरबुक्कळुक्कुम्
इन्नूलॆप् पाद काणिक्कै याहच्
चॆलुत्तुहिऱेन्

—आशिरियन्

मुहवुरै

ऎळिय पदङ्गळ्, ऎळिय नडै, ऎळिदिल् अऱिन्दु कॊळ्ळक् कडिय शन्दम् पॊदु जनङ्गळ् विरुम्बुम् मट्टु, इवऱ्ऱिनै युडैय काविय मॊन्ऱु तऱ्कालत्तिले शॆय्दु तरुवोन् नमदु ताय् मॊळिक्कुप् पुदिय उयिर् तरुवोना हिन्ऱान्। ओरिरण्डु वरुषत्तुक्कु नूऱ् पळक्क मुळ्ळ तमिळ् मक्क ळॆल्लोरुक्कुम् नन्गु पॊरुळ् विळङ्गुम्बडि ऎळुदुवदुडन् काविय्त् तुक्कुळ्ळ नयङ्गळ् कुऱैपडा मलुम् नडत् तुदल् वेण्डुम्।

कारियम् मिहप्पॆरिदु; ऎनदु तिऱमै शिऱिदु। आशैयाल् इदनै ऎळुदि वॆळियिडु हिन्ऱेन्; पिऱरुक्कु आदरिशमाह अन्ऱु, वळि काट्टियाह!

इन्नूलिडैये तिरुदराष्टिरनै उयर्न्द कुणङ्ग ळुडैयवनाहवुम् शूदिल् विरुप्प मिल्लाद वनाहवुम्, तुरियोदन निडम् वॆऱुप्पुळ्ळवना हवुम् काट्टि

"पांचाली-शपथ" का भारती जी द्वारा प्रस्तुत 'समर्पण' तथा 'आमुख'

समर्पण

तमिळ भाषा को अमर जीवन तथा ज्योति साध्य करते हुए आगे पैदा होकर काव्य रचनेवाले बर कवियों को और उचित रीति से उनका कैंकर्य जो करेंगे उन प्रभुओं को यह ग्रंथ चरणोपहार के रूप में समर्पित करता हूँ।

—रचयिता

आमुख

जो सरल पद, सरल शैली, सुगमता से समझे जानेवाले छन्द, आम जनता की पसन्द के तर्ज —इनसे युक्त काव्य आज के दिनों में रच देगा, वह हमारी तमिळ भाषा को नया जीवन प्रदत्त करनेवाला होगा। दो एक साल का पुस्तकाभ्यास रखनेवाले

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'पांचाली शपथ' का भारती जी द्वारा समर्पण

जो कविवर इस तमिळ देश में पैदा होकर।
काव्य विरचकर तमिळ-सुभाषा को ज्योतित कर॥
देंगे (दिव्य) अमर जीवन तामिळ-भाषा को।
पूर्ण करेंगे सेवा कर इसकी आशा को॥
उन प्रभुओं के चरणों में मैं अति प्रमुदित मन।
करता हूँ उपहार-रूप यह ग्रंथ समर्पण॥

आमुख

शैली सरल, सरल पद, सरल सुबोध छन्दवर।
जन-सामान्य जिसे चाहे वह तर्ज़ मनोहर॥
जो होगा ऐसी कविता का करनेवाला।
होगा तामिळ में नवजीवन भरनेवाला॥
जो दो एक साल के ही हैं ग्रंथाभ्यासी।
ऐसे नये-नये सब तामिळ-भाषा-भाषी॥
जिसके अर्थ सरलता से कर लें हृदयंगम।
ऐसा विरचें तमिळ-सुभाषा-काव्य मनोरम॥
काव्य-गुणों की कमी नहीं हो जिसमें किंचित।
ऐसा तमिळ-सुकाव्य करें सब कविजन प्रचलित॥

× × × ×

कार्य बड़ा है पर सामर्थ्य हमारी सीमित।
इसी कामना से रच इसको किया प्रकाशित॥
हो आदर्श रूप यह बात नहीं आवश्यक।
हो नूतन कवियों के हित यह मार्ग-प्रदर्शक॥

× × × ×

श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण जुए से डरनेवाले।
दुर्योधन से घृणा (अपरिमित) करनेवाले॥
अपने को भी दुर्गुणी मानते निज-सुत-सम।
इस प्रकार धृतराष्ट्र-चरित्र दिखाया अनुपम॥

सभी तमिळ भाषा-भाषियों को खूब अर्थ मालूम हो —ऐसा लिखने के साथ-साथ काव्य की खूबियों की कमी भी न हो, ऐसा प्रणयन करना चाहिए। कार्य, बहुत बड़ा है। मेरी सामर्थ्य अल्प है। उपर्युक्त कामना से यह रचकर मैं प्रकाशित करता हूँ। दूसरों के लिए आदर्श के रूप में नहीं, मार्गदर्शक के रूप में। इस ग्रंथ में मैंने धृतराष्ट्र को श्रेष्ठ गुणपूर्ण, जुए के अनिच्छुक तथा दुर्योधन से घृणा करनेवाले के रूप में बरसाया है। यह माननेवाले भी हैं कि वह अपने ही पुत्र के समान दुर्गुणी है! मेरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यिरुक्किन्ऱेन्। अवनुम् महनैप् पोलवे तुरक् कुणङ्गळुडैयवन् ऎन्ऱु करुदु बोरु मुळर्। ऎनदु शित्तिरम् वियासर् बारदक् करुत्तैत् तळुवियदु। पॆरुम् बान्मैयाह इन्नूलै वियास पारदत्तिन् मॊळि पॆयर्प्पॆन्ऱे करुदि विडलाम्। अदावदु 'कर्प्पनै' तिरुष्टान्दङ्गळिल् ऎनदु शॊन्दच् चरक्कु अदिह मिल्लै; तमिळ् नडैक्कु मात्तिरमे नान् पॊरुप्पाळि।

तमिळ् जादिक्कुप् पुदिय वाळ्वु तरवेण्डु मॆन्ऱु कङ्गणङ् गट्टि निऱ्कुम् पराशक्तिये ऎन्नै इन्दत् तॊळिलिल् तूण्डिना ळादलिन् इदन् नडै नम्म वर्क्कुप् पिरियन् दरुवदाहुम् ऎन्ऱे नम्बुहिऱेन्।

ओम् वन्दे मादरम्!

—सुब्बिरमणिय बारदि

3 कुयिल् पाट्टु

कुयिल्—1

कालै यिळम् परिदि वीशुङ् गदिर् हळिले
नीलक् कडलोर् नॆरुपॆदिरे शेर्मणि पोल्
मोहनमाञ् जोदि पॊरुन्दि मुऱै तवऱा
वेहत् तिरैहळिनाल् वेदप् पॊरुळ् पाडि
वन्दु तळुवुम् वळञ्जार् करैयुडैय 5
शॆन्दमिळ्त् तॆन्पुदुवै यॆन्नुन् दिरु नहरिन्
मेऱ्के, शिऱु तॊलैयिल् मेवु मॊरु माञ् जोलै
नाऱ्कोणत् तुळ्ळपल नत्तत्तु वेडर्हळुम्

चित्रण व्यास के भारत के आधार पर हुआ है। प्रायः इस ग्रंथ को व्यास के भारत का अनुवाद ही माना जा सकता है। यानी कल्पित दृष्टान्तों में मेरी अपनी चीजें अधिक नहीं हैं। केवल 'तमिळ शैली' भर का मैं उत्तरदायी हूं। उसी पराशक्ति ने, जो तमिळ जाति को नया जीवन देने के लिए कंकणबद्ध (कटिबद्ध) है, मुझे इस काम में प्रेरित किया है। इसलिए इसकी शैली अपनों को प्रसन्न कर देगी (प्रिय लगेगी) —मैं ऐसा विश्वास करता हूं।

ॐ वन्दे मातरम्।

—सुब्रह्मण्य भारती

३ कोकिल-गान

कोयल—१

सबेरे के बाल सूर्य द्वारा बिखेरी गयी किरणों में नीला समुद्र, जो आग के सामने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

व्यास - रचित भारत का यह अनुवाद मनोहर।
रचा गया यह ग्रंथ उसी का आश्रय लेकर॥
कल्पित दृष्टांतों की नहीं अधिकता आयी।
केवल तामिळ शैली का मैं उत्तर - दायी॥

× × × ×

तमिळ जाति को नूतन जीवन, देने के हित।
पराशक्ति है कंकण - बद्ध (सदैव सुसज्जित)॥
किया उसी ने इस (सु-) कार्य में मुझको प्रेरित।
यह शैली प्रिय मानेंगे मेरे प्रिय - परिचित॥
उर - अन्तर में है ऐसा विश्वास हमारे।
(आदर देंगे इसे सुधीजन सहृदय सारे)॥

ॐ वन्दे मातरम्!

—सुब्रह्मण्य भारती

३ कोकिल-गान

कोयल—१

बाल सूर्य प्रातः अपनी किरणें बिखेरता।
सागर के नीले जल में निज प्रभा गेरता॥
जैसे मणि में अग्नि - दीप्ति होती प्रतिबिम्बित।
वैसे दीपित भानु - दीप्ति होती है दीपित॥
मोहक ज्योति साथ ले करके होकर ज्योतित।
बिना किये क्रम-भंग तरंगें गतिमय अविरत॥
लहरों के मिस मानो वेद-अर्थ को गाता।
विस्तृत तट के गले सिन्धु आकर मिल जाता॥ १-५ ॥
स्वच्छ तमिळ - भाषी उस दक्षिण - सागर - तट पर।
बसा हुआ श्री पुदुवै नामक नगर मनोहर॥
उसे पांडिचेरी भी कहते हैं बहुधा नर।
एक आम्र - वन उससे पश्चिम कुछ दूरी पर॥

की मणि के समान मोहक ज्योति के साथ क्रम-भंग किये बगैर गतिशील लहरों के मिस, वेदार्थ गाता हुआ, जिससे (समुद्र) आकर मिल जाता है, उस पुष्कल तीर पर स्थित— ५ स्वच्छ तमिळ (भाषी) दक्षिणी 'पुदुवै' नामक श्रीयुक्त नगर (पांडिचेरी की), पश्चिम में, कुछ दूरी पर एक आम का वन था। चारों ओर के मैदान के व्याधों के लिए आकर पक्षियों पर गोली मारने के लिए वह उपयुक्त है। उस आम के बाग में,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वन्दु पऱवै शुड वाय्न्द पॅरुम् जोलै
अन्द माम् जोलै यदनिलोर् कालैयिले 10
वेडर् वराद विरुन्दुत् तिरु नाळिल्
पेडैक् कुयिलॊन्ऱु पॅट्पुऱवोर् वान्कि ळैयिल्
वीऱ्ऱि रुन्दे, आण् कुयिल्हळ् मेनि पुळहमुऱ
आऱ्ऱ लळिवु पॅऱ उळ्ळत् तनल् पॅरुह
शोलैप् पऱवै यॅल्लाम् शूऴ्न्दु पर वशमाय्क् 15
कालैक् कडनिऱ् करुत्तिन्ऱिक् केट्टिरुक्क
इन्न मुदैक् काऱ्ऱिनिडै ऍङ्गुङ् गलन्ददु पोल्
मिन्नऱ् चुवैतान् मॅलिदाय् मिहविनिदाय्
वन्दु परवुदल् पोल् वानत्तु मोहि नियाळ्
इन्द वुरु वॅय्दित्तन् एऱ्ऱम् विळङ्गुदल् पोल् 20
इन्निशैत् तीम्बाडल् इशैत्तिरुक्कुम् विन्दैतनै
मुन्निक् कविदै वॅऱि मूण्डे नन्नवळियप्
पट्टप् पहलिले पावलर्क्कुत् तोन्ऱु वदाम्
नॅट्टैक् कन्नविन् निहळ्च्चियिले— कण्डेन् यान्
कन्निक् कुयिलॊन्ऱु काविडत्ते पाडियदोर् 25
इन्निशैप् पाट्टिनिले यानुम् परवशमाय्
"मनिदबुरु नीङ्गिक् कुयिलुरुवम् वारादो ?
इनिदिक् कुयिर् पेट्टै अन्ऱुम् पिरियामल्
कादलित्तुक् कूडिक् कळियुडने वाळोमो ?
नादक् कन्नलिले नम्मुयिरैप् पोक्कोमो ?" 30
अन्ऱु पलवॅण्णि एक्कमुऱप् पाडिऱ्ऱाल्
अन्ऱुनान् केट्टदु अमरर् ताङ् गेट्पारो ?
कुक्कुक्कू वॅन्ऱु कुयिल् पाडुम् पाट्टिनिले

एक दिन सबेरे— १० व्याध नहीं आये; उस (मन को) दावत (आनन्द) देनेवाले दिन में एक मादा-कोयल शान के साथ ऊँची शाखा पर बैठी थी। नर कोयलों के शरीरों को पुलकित करते हुए, उन (नर कोयलों) की शक्ति को मिटाते हुए, मन की आग को भड़काते हुए गा रही थी। तब बाग के सभी पक्षी घेरकर, निहाल होकर— १५ प्रातःक्रिया पर ध्यान दिये बिना, सुन रहे थे। (मानो) मधुर अमृत को हवा में सब जगह घोल दिया गया हो, (मानो) बिजली का-सा पतला और बहुत मधुर 'स्वाद' आकर फैल रहा हो, मानो आकाशमोहिनी उसका रूप ले इधर आकर अपनी शान प्रकट कर रही हो— २० (इस भाँति) वह कोयल अति मधुर राग का मीठा गान कर रही थी! मैंने उस चमत्कार को पास जाकर कविता की लालसा में सुध खोकर बिलकुल दिन में कवियों को दिखनेवाले दिवा-स्वप्न के मध्य देखा। स्त्री कोयल द्वारा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वहाँ चतुर्दिक् - वासी (दुष्ट) व्याध आ - आकर।
चिड़ियों का शिकार करते गोलियाँ चलाकर॥
था शिकार के लिए बड़ा उपयुक्त आम्र-वन।
व्याध शिकारी नहीं वहाँ पर गये एक दिन॥ ६-१० ॥
वह दिन था आनन्द-प्रदायक (अतिशय) सुन्दर।
कोयल एक शान से बैठी उच्च डाल पर॥
पुरुष-कोयलों के हो गये (मृदुल) तन पुलकित।
उनके तन की शक्ति क्षीण होती थी अविरत॥
भड़क रही थी उनके मन की आग (प्रज्वलित)।
उसे घेरकर हुए बाग़ के सब खग प्रमुदित॥ ११-१५ ॥
अपनी सारी प्रातक्रिया का ध्यान भूलकर।
सुनने लगे, सभी खग (तन्मय थे) उसका स्वर॥
मधुर सुधा सर्वत्र वायु में घोल - घोलकर।
मधुर राग से गाती मीठा बोल - बोलकर॥
फैल रहा था मधुर स्वाद पतला ज्यों बिजली।
शान दिखाती इस प्रकार आकाश - मोहिनी॥ १६-२० ॥
कविता - रस के लालच में सब सुध - बुध खोकर।
कवि को दिखनेवाले दिवा-स्वप्न के भीतर॥
मैंने देखा विस्मय - पूर्वक पास पहुँचकर।
मधुर राग से गान गा रही थी वह सुमधुर॥ २१-२५ ॥
बाग़ - बीच कोयल के गाये हुए (मनोहर)।
मधु-संगीत भरे गायन सुन प्रमुदित होकर॥
मानव-तन तज, क्या न मिलेगा कोयल का तन ?।
इस कोयल के साथ बितायें सुखमय जीवन॥
बिना विरह के करके उससे प्रेम (सुपावन)।
नाद अग्नि में होम करें अपना (यह) जीवन॥ २६-३० ॥
तरसूँ बातें इस प्रकार की सोच - सोचकर।
इस प्रकार वह गान गा रही थी (अति सुन्दर)॥
उस दिन मैंने सुना गान जो (उसका मनहर)।
देवों ने भी सुना न होगा उसे कहीं पर॥

बाग़ में, गाये गये-- २५ मधुर संगीतमय गान से निहाल होकर मैंने परवश होकर सोचा-- क्या मेरा मानव रूप दूर होकर कोयल का रूप मुझे नहीं मिलेगा ? क्या मैं इस स्त्री कोयल के साथ वियोग के बिना प्रेम करके, मिला रहकर सानन्द जी नहीं सकूँगा ? नाद-अग्नि में अपना जीवन क्या मैं होम नहीं कर सकूँगा ? ३० ऐसी कई बातें सोचकर तरस उठूँ --ऐसा वह गा रही थी। उस दिन जो मैंने सुना, क्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तॊक्क पॊरुळॆल्लाम् तोन्ऱियदॆन् शिन्दैक्के
अन्दप् पॊरुळे अवनिक् कुरैत्तिडुवेन्; 35
विन्दैक् कुरलुक्कु मेदिनियीर् ऍन् शॆय्हेन् !

कुयिलिन् पाट्टु—2

राग— शङ्करा बरण] [एक ताळ

स्वर : सगा— रिमा— गारी
पापापापा— मामामामा
रीगा— रिगमा— मामा

शन्द बेदङ्गळुक्कुत् तक्क पडि माऱ्ऱिक् कॊळ्ह

कादल, कादल, कादल्
कादल् पोयिऱ् कादल् पोयिऱ्
चादल् शादल् शादल् (कादल)
अरुळे यानल् लॊळिये
ऒळिपो मायिन् ऒळिपो मायिन्
इरुळे इरुळे इरुळे (कादल्) 1
इन्बम् इन्बम् इन्बम्
इन्बत् तिऱ्को रॆल्लै काणिल्
तुन्बम् तुन्बम् तुन्बम् (कादल्) 2
नादम् नादम् नादम्
नादत् तेयोर् नलिवुण् डायिन्
शेदम् शेदम् शेदम् (कादल्) 3
ताळम् ताळम् ताळम्
ताळत् तिऱ्कोर् तडैयुण् डायिन्
कूळम् कूळम् कूळम् (कादल्) 4
पण्णे पण्णे पण्णे
पण्णिऱ् केयोर् पळुदुण् डायिन्
मण्णे मण्णे मण्णे (कादल्) 5
पुहळे पुहळे पुहळे
पुहळुक् केयोर् पुरैयुण् डायिन्
इहळे इहळे इहळे (कादल्) 6

उसे भ्रमरों ने भी कहीं सुना होगा ? 'कुहक् कू' के कोकिल-गीत में, जो अर्थ जुड़े थे, वे सब मेरे मन में स्पष्ट हो गये। उन अर्थों को मैं दुनिया पर प्रकट करूँगा। ३५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुहू - कुहू के गीत - बीच जो अर्थ समन्वित।
वे सब मेरे मन में हुए साफ़ परिलक्षित॥
उन अर्थों को मैं जग भर को बतलाऊँगा।
पर मनुजो! वह अद्भुत कंठ कहाँ पाऊँगा॥ ३१-३५॥

कोयल का गाना—२

प्रीति चाहिए, प्रीति चाहिए, प्रीति चाहिए।
प्रीति नहीं तो मौत चाहिए, मौत चाहिए॥ टेक॥
कृपा (एक) शुभ ज्योति (जगमगाती अपार है)।
ज्योति नहीं तो अन्धकार ही अन्धकार है॥ (प्रीति०)॥ १॥
(जग में सभी ओर दिखलाता) सुख ही सुख है।
सुख की सीमा पार करो तो दुख ही दुख है॥ (प्रीति०)॥ २॥
(गूँज रहा सब ओर मधुर) नाद ही नाद है।
नाद नष्ट हो गया विषम घिरता विषाद है॥ (प्रीति०)॥ ३॥
ताल - युक्त संगीत बड़ा लगता रसाल है।
ताल - भंग हो गया गीत बनता कराल है॥ (प्रीति०)॥ ४॥
सरस स्वरों से गूँज रहा अभिराम राग है।
राग-भंग हो गया बहुत होता विराग है॥ (प्रीति०)॥ ५॥
(चन्द्र - चन्द्रिका - सदृश फैलता जग में) यश है।
यश हो जाता नष्ट फैलता जग - अपयश है॥ (प्रीति०)॥ ६॥

पर उस विचित्र (विस्मयकारी) कंठ के लिए, हे मेदिनीवासियो, (कहाँ जाऊँ ?) क्या करूँ ?

कोयल का गाना—२

[स्वर— स गा-रि मा-गा री। पा पा पा पा— मा मा मा मा। री गा— रि ग मा— मा मा। छन्द-भेद के अनुसार स्वर बदल लें।]

मुहब्बत, मुहब्बत, मुहब्बत। मुहब्बत गयी तो, मुहब्बत गयी तो मौत, मौत, मौत। (टेक) कृपा अच्छी ज्योति है! ज्योति गयी, ज्योति गयी, तो अंधकार, अंधकार, अंधकार (मुहब्बत०) १ सुख, सुख, सुख, सुख की सीमा देख ली, तो दुःख, दुःख, दुःख— (मुहब्बत०) २ नाद, नाद, नाद, नाद की हीनता हुई, तो नष्ट, नष्ट, नष्ट— (मुहब्बत०) ३ ताल, ताल, ताल, ताल में बाधा हुई, तो कूड़ा, कूड़ा, कूड़ा— (मुहब्बत०) ४ राग, राग, राग, राग कुछ छिन्न हुआ, तो मिट्टी, मिट्टी, मिट्टी— (मुहब्बत०) ५ यश, यश, यश, यश में नासूर लग गया, तो अपयश, अपयश, अपयश— (मुहब्बत०) ६ पुरुषार्थ, पुरुषार्थ, पुरुषार्थ, पुरुषार्थ टूट गया तो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उऱुदि उऱुदि उऱुदि;
उऱुदिक् केयोर् उडैउण् डायिन्
इऱुदि इऱुदि इऱुदि (कादल्) 7
कूडल्, कूडल्, कूडल्;
कूडिप् पिन्ने कुमरन् पोयिन्
वाडल् वाडल् वाडल् (कादल्) 8
कुळले, कुळले, कुळले
कुळलिऱ् कीऱल् कूडुङ् गालै
विळले, विळले, विळले (कादल्) 9

कुयिलिन् कादऱ् कदै—3

मोहनप् पाट्टु मुडिवु पॅऱप् पारॅङ्गुम्
एह मवुन मियन्ऱदु काण्; मऱ्ऱदि लोर्
इन्ब वॅऱियुन् दुयरुम् इणैन्दनवाल्
पिन्बु नान् पार्क्ककप् पॅडैक्कुयिलः दॉन्ऱल्लाल्
मऱ्ऱंप् पऱवै मऱैन्दॅङ्गो पोहवुमव् 5
वॉऱ्ऱैक् कुयिल् शोहमुऱ्ऱत् तलै कुनिन्दु
वाडुवदु कण्डेन् मरत्तरुहे पोय् निन्ऱु
'पेडे ! तिरवियमे ! पेरिन्बप् पाट्टुडैयाय् !
एळुलहम् इन्बत् तो एऱ्ऱुन् दिऱनुडैयाय् !
पीळैयुनक् कॅम्दियदॅन् ? पेशाय् !" अॅनक्केट्टेन् 10
मायक् कुयिलदुतान् मानुडवर् पेच्चि निलोर्
मायच् चॉल् कूऱ मनन्दी युऱ निन्ऱेन्
"कादलै वेण्डिक् करहिन्ऱेन् इल्लै यॅनिल्
शादलै वेण्णित् तविक्किन्ऱेन्" अॅन्ऱदुवाल्
'वानत्तुप् पुळ्ळॅल्लाम् मैयलुऱप् पाडुहिराय् 15

अंत, अंत, अंत-- (मुहब्बत०) ७ मिलन, मिलन, मिलन, मिलके कुँवर छोड़ गया, तो मुरझाना, मुरझाना, मुरझाना-- (मुहब्बत०) ८ वंशी, वंशी, वंशी, वंशी में दरार पड़ गयी, तो पतन, पतन, पतन-- (मुहब्बत०) ९

कोयल की प्रेम-कथा—३

मोहक गीत पूरा हुआ, तो दुनिया भर में एक ही मौन (सन्नाटा) छा गया और उसमें सुख का दीवानापन तथा दुख मिल गये; फिर मेरे देखते स्त्री कोयल को छोड़कर अन्य पक्षीगण कहीं जाकर छिप गये, तो यह-- ५ कोयल शोकाकुल-सी हो सिर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(जीवन में) पुरुषार्थ (लहलहाता वसंत) है।
नष्ट हुआ पुरुषार्थ आ गया जीवनांत है॥ (प्रीति०) ॥ ७ ॥
मिलन मधुर मधुमास विहँस उठता मन-वन है।
विरह ग्रीष्म का मास भयंकर उग्र तपन है॥ (प्रीति०) ॥ ८ ॥
मधुमय वंशी मधुर सुधा की धार बहाती।
जब फट जाती फटी बाँसुरी तब कहलाती॥ (प्रीति०) ॥ ९ ॥

कोयल की प्रेम-कथा—३

हुआ समाप्त जभी उसका वह गायन मोहक।
दुनिया भर में मौन छा गया (तभी अचानक)॥
उसमें दुख मिल गये मिला सुख का पागलपन।
(स्तब्ध हो गये एक साथ मानो जड़-चेतन)॥
फिर मेरे देखते - देखते पिक को तजकर।
पक्षीगण छिप गये कहीं इत-उत जा-जाकर॥ १-५ ॥
तब देखा कोयल मन में शोकाकुल होकर॥
मुरझाने लग गयी (अकेली) शीर्ष झुकाकर।
तब मैं उस तरु के पास पहुँचकर संस्थित होकर।
लगा पूछने उस कोयल से प्रश्न मनोहर॥
तुम सुख - सम्पति - दायक गायन गानेवाली।
सातों लोकों में सुख-अग्नि लगानेवाली॥
इतनी पीड़ा तुम्हें हुई क्यों (है मतवाली)।
(पूछ रहा हूँ बतलाओ तुम पिकी! निराली)॥ ६-१० ॥
मानव - भाषा में मायावी कोयल (सुन्दर)।
बोली जब माया का शब्द (महान मनोहर)॥
मेरे मन में लगी आग - सी तभी (भयंकर)।
खड़ा रह गया मैं (चुपचाप ठगा - सा बनकर)॥
"प्रीति चाहकर मैं घुलती हूँ (खुश होती हूँ)।
नहीं प्रीति तो मौत मिले इस हित रोती हूँ"॥
इस प्रकार बोली मुझसे वह कोयल सुन्दर।
(मेरे प्रश्नों का समुचित उत्तर - सा देकर)॥
नभचर सभी खगों को निज प्रेम में फँसाकर।
मैंने कहा— कोकिले! तुम) गाती हो (मनहर)॥ ११-१५ ॥

झुकाकर मुरझाने लगी। --यह मैंने देखा। तरु के पास जाकर खड़ा होकर मैं बोला-- हे नारी, धन-स्वरूप महान (मोक्ष-)सुखदायक गीत गानेवाली, सातों लोकों में सुख की आग लगा सकनेवाली, तुम्हें पीड़ा क्यों हुई है? कह दो। १० मायावी कोयल ने मानव भाषा में माया का शब्द कहा, तो मेरे मन में आग-सी लग गयी।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ञानत्तिऱ् पुट्कळिलुम् नऩ्गु शिऱन्दुळ्ळाय्
कादलर् नी यॆय्दुहिलाक् कारणन्दान् यावॆ'न्ऱेऩ्
वेदनैयुम् नाणुम् मिहुन्द कुरलिऩिले
कानक् कुयिलि कदै शॊल्ल लायिऱ्ऱु
"मानक् कुलॆवुम् वरुत्तमुनाऩ् पार्क् कामल् 20
उण्मै मुळ्ळुम् उरैत्तिडुवेऩ् मेऱ्कुलत्तीर् !
पॆण्मैक् किरङ्गिप् पिळ्ळै पॊऱुत्तल् केट्किऩ्ऱेऩ्
अऱिवुम् वडिवुम् कुऱहि अवऩियिले
शिऱिय दॊरु पुळ्ळाय्च् चिऱियेऩ् पिऱन्दिडिऩुम्
तेवर् करुणैयिलो दॆय्वच् चिऩत्तालो 25
यावर् मॊळियुम् ऎळिदुणरुम् पेऱु पॆऱ्ऱेऩ्
मानुडवर् नॆञ्ज वळ्क् कॆलान् देर्न्दिट्टेऩ्
कानप्पऱवै कलकलॆनुम् ओशैयिलुम्
काऱ्ऱु मरङ्गळिडैक् काट्टुम् इशैहळिलुम्
आऱ्ऱुनी रोशै अरुवि यॊलियि ऩिलुम् 30
नीलप् पॆरुङ्गडलॆऩ् नेरमुमे तानि शॆक्कुम्
ऒलत् तिडैये उदिक्कुम् इशैयिऩिलुम्
मानुडप् पॆण्गळ् वळमॊरु कादलिनाल्
ऊनुरुहप् पाडुवदिल् ऊऱिडुन्देऩ् वारियिलुम्
एऱ्ऱनीर्प् पाट्टिऩ् इशैयिऩिलुम् नॆल्लिडिक्कुङ् 35
कॊऱ् ऱॊडियार् कुक्कु बॆनक् कॊञ्जुम् ऒलि यिऩिलुम्
शुण्ण मिडिप्पार्तञ् जुवैमिहुन्द पण्गळिलुम्
पण्णै मडवार् पळ्ळु पल पाट्टिऩिलुम्
वट्ट मिट्टुप् पॆण्गळ् वळैक्करङ्गळ् तामॊलिक्कक्
कॊट्टि यिशैत्तिडुमोर् कूट्टमुदप् पाट्टि ऩिलुम् 40

मैं खड़ा रह गया। उसने कहा-- मुहब्बत चाहकर मैं घुल रही हूँ ! --नहीं तो मुझे मौत मिले --इस तरह चाह से मैं रो रही हूँ ! मैंने कहा-- आकाशचारी सभी पक्षियों को प्रेम में फँसाते हुए तुम गाती हो ! १५ ज्ञान में पक्षियों में श्रेष्ठ भी हो ! तुमको प्रेमी नहीं मिलता-- क्या कारण है ? --मैंने पूछा। पीड़ा तथा लाज भरे स्वर में-- गान-चतुर (या काननवासिनी) कोयल अपनी कहानी कहने लगी ! अवमान तथा पीड़ा की परवाह किये बिना-- २० मैं सारा सत्य बता दूंगी, हे उच्च कुलवाले ! स्त्री पर दया करो। अपराध के लिए क्षमा माँगती हूँ।। मेरा ज्ञान तथा आकार छोटा है। धरती में छोटे पक्षी के रूप में पैदा हुई, तो भी देवों की दया से या ईश्वर के कोप से-- २५ सभी की बोली आसानी से समझने का भाग्य मुझे मिल गया। मैं मानवों के मन के सब प्रकार जानती हूँ। गान-चतुर पक्षियों की कल-कल ध्वनि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"श्रेष्ठ ज्ञान में सभी पक्षियों से तुम (बढ़कर)।
क्या कारण है मिला न प्रेमी तुम्हें (मनोहर)?" ॥
यह पूछा तो पीड़ा लाज भरे स्वर में वह।
गान - चतुर वह कोयल कहने लगी कथा यह ॥
"मान-हानि, पीड़ा की कुछ परवाह नहीं कर।
सारा सत्य बता दूँगी हे उच्च वंशधर! ॥ १६-२० ॥
ज्ञान तथा आकार (हमारा) है (अति) लघुतर।
क्षमा माँगती हूँ (मैं तुमसे हाथ जोड़कर) ॥
क्षमा करो अपराध समझ नारी, करुणाकर!।
लघु पक्षी बनकर मैं पैदा हुई भूमि पर ॥
ईश्वर के कोप से, दया देवों की पाकर।
सबकी बोली समझूँ ऐसा मिला भाग्य वर ॥ २१-२५ ॥
जान गयी मैं रीति सभी मनुजों के मन की।
(जान गयी मैं सभी प्रथाएँ जग - आँगन की) ॥
गान-चतुर विहगों की कलकल ध्वनि सुन्दर में।
वन - तरुओं से उठनेवाले गीत - निकर में ॥
सरिता के जल के (नव कलकल - छलछल) स्वर में।
नीले सागर से उठते संगीत मधुर में ॥
पुष्ट प्रेम से जब (अपनी) हड्डी पिघलाकर।
गातीं मनुजों की स्त्रियाँ गीत (अति सुन्दर) ॥
तब जो गीत गूँजता उसकी मधु - बारिश में।
(मधुर) गान के (ललित रम्य नव) राग (सरस) में ॥ २६-३५ ॥
धान कूटने में भूषण - भूषिता मनोहर।
गाती हैं जो कुहक दुलार भरा सुमधुर स्वर ॥
जो चूना कूटतीं, सुनातीं गीत रसीले।
खेतों की सुन्दरियों के गाने (गरबीले) ॥
जब सुन्दरियाँ (अपना भारी) गोल बनाकर।
कंकण - भूषित हाथों से तालियाँ बजाकर ॥
गाती हैं (मिल - जुलकर रसमय) रास मनोहर।
उठता है उससे शुचि संगीतामृत सुमधुर ॥ ३६-४० ॥

में जंगली पेड़ों के बीच उठनेवाले संगीत-स्वरों में, नदी के पानी की ध्वनि में, सरिता के स्वर में— ३० नीला सागर हमेशा जो उठाता है उस शोर के मध्य उगनेवाले संगीत में, मानवी स्त्रियाँ पुष्ट प्रेम से जब हड्डी पिघलाकर गाती हैं, तब जो झरती है, उस मधु-बारिश में, गान के राग में, धान कूटते वक्त— ३५ मनमोहक आभरण-धारिणियों के कुहक दुलार के स्वर में, चूना कूटनेवालियों के रसीले गानों में, खेत की सुन्दरियों के अभ्यस्त अनेक गानों में, गोल बनाकर स्त्रियाँ जब अपने कंकण-हस्तों से नाद उठाते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेयिन् कुळलोडु वीणै मुदला मनिदर्
वायिनिलुङ् गैयालुम् वाशिक्कुम् पल्करुवि
नाट्टिनिलुङ् काट्टिनिलुम् नाळैल्लाम् नन्ड्रो लिक्कुम्
पाट्टिनिलुम् नैञ्जंप् पडिकोडुत्तेन् पावियेन्
नावुम् मौळिय नडुक्कमुरुम् वार्त्तैहळैप् 45
पावि मनम् दानिरुहप् पड्रि निड्प देन्नैयो ?
नैञ्जत्ते तैक्क नैडुनोक्कु नोक्किडुवीर
मञ्जरे अंन्ड्रन् मननिहळ्च्चि काणीरो ?
कादलै वेण्डिक् करैहिन्ड्रेन् इल्लैयौनिल्
शादलै वेण्डित् तविक्किन्ड्रेन्" अंन्ड्रदुवे 50
शिन्नक् कुयिलिदनैच् चंप्पियवय् पोळ्दिनिले
अंन्नैप् पुदिदोर् इन्बच् चुरङ्गवर
उळळत् तिडैयुम् उयिरिडैयुम् आङ्गन्दप्
पिळ्ळैक् कुयिलिन दोर् पेच्चन्ड्रि वेड्ड्रेन्
"कादलो कादलि निक् कादल् किडैत्तिल देल् 55
शादलो शादल्" अंन्नच् चाड्रु मौरु पल्लवियेन्
उळळमाम् वीणै तनिल् उळळवी डत्तनैयुम्
विळ्ळ औळिप्पदाल् वेड्रोर् औलियिल्लै
शित्तम् मयङ्गित् तिहैप्पौडु नान् निन्ड्रिडवुम्
अत्तरुणत् तेपड्रवै यत्तनैयुन् दान् तिरुम्बिच् 60
चोलक् किळैयिलैलान् दोन्ड्रि यौलित्तनवाल्
नीलक् कुयिलुम् नडिडुयिर्त्ताङ् गिनिदुरैक्कुम्
"कादल वळितान् करडुमुर डामेन्बर्;
शोदित् तिरु विळि यीर् ! तुन्बक् कडलिनिले
नल्लुरुदि कौण्डवोर् नावाय्पोल् वन्दिट्टीर्; 65

हुए ताली बजाकर (रास) गाती हैं, उस मिलित संगीतामृत में-- ४० बाँसुरी के साथ वीणा आदि लेकर मनुष्य मुख से तथा हाथों से जो बजाते हैं, वे अनेक वाद्य, नगरों तथा जंगलों में जो निकालते हैं, उस संगीत में मैंने खो दिया —ऐसी मैं पापी। ऐसे वचनों को, जिनका उच्चारण करने में जीभ भी काँप उठे-- ४५ यह पापी मन कसकर पकड़ रखता है। यह क्यों ? हृदय में चुभनेवाली लंबी पैनी लम्बी नजर डालनेवाले हे तरुण, मेरे मन में जो बीतता है क्या तुम उसे नहीं देखते हो ? मुहब्बत चाहकर मैं घुल रही हूँ (कूक रही हूँ), न हो, तो मौत की कामना करके बेचैन होती हूँ। --ऐसा कहा उसने ! ५० छोटी कोयल के यह कहते समय मेरे मन को एक नया मोद ग्रस उठा। हृदय के अन्दर, जान के अन्दर उस कोयल के कथन के अलावा, कुछ नहीं रहा ! मुहब्बत ही मुहब्बत ! मुहब्बत नहीं मिली, तो-- ५५ मौत ही मौत ! -यह पल्लवी (टेक) मेरी हृदय-वीणा की सारी तंत्रियों को मानो तोड़ते हुए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुख औ' हाथों से जो बजते हैं अति सुन्दर।
वीणा और बाँसुरी आदिक बाजे लेकर॥
नगरों और जंगलों बीच जलूस सजाकर।
निकालते हैं गाते हुए गीत अति मनहर॥
इस प्रकार के सारे गीतों को सुन - सुनकर।
मेरा पापी मन खो गया (विश्व के भीतर)॥ ४१-४५॥
जिह्वा भी काँपे जिनका करके उच्चारण।
ऐसे वचनों को कस क्यों गहता पापी मन॥
मन में चुभे, तरुण ऐसी दृष्टि से देखते।
बीत रहा क्या मेरे मन यह नहीं पेखते॥
घुलती हूँ मैं (प्रतिपल पावन) प्रीति चाहकर।
प्रीति बिना बेचैन हो रही मौत चाहकर"॥
इस प्रकार (मुझसे) बोली वह (प्यारी कोयल)।
(सुनकर उसकी बात हो गया मम मन विह्वल)॥ ४६-५०॥
(उस) छोटी - सी कोयल के वचनों को सुनकर।
मेरे मन में नया मोद भर गया मनोहर॥
मन के अन्दर और (घने) प्राणों के अन्दर।
नहीं रहा कुछ भी, उस कोयल का स्वर तजकर॥
प्रीति चाहिए, प्रीति चाहिए, प्रीति चाहिए।
'प्रीति नहीं तो मौत चाहिए, मौत चाहिए'॥ ५१-५५॥
इस प्रकार की प्रीति भरी वह टेक मनोहर।
मेरी उर - वीणा के सारे तार तोड़कर॥
लगी मींड़ने, रहा न कोई उसे छोड़ स्वर।
सन्न रह गया मैं (भी) बुद्धि भ्रांत (सा) होकर॥
उसी समय वे आये लौट सभी पक्षीवर।
(देख उन्हें मन में उमड़ा प्रमोद का सागर)॥ ५६-६०॥
कलरव करने लगे बैठ वन की डालों पर।
वह नीली कोयल बोली लंबी आहें भर॥
"(अरे!) प्रेम का मार्ग (बड़ा) ऊबड़-खाबड़ है।
कहते हैं (सब) लोग (बहुत इसमें गड़बड़ है)॥
(तुम) ज्योतिर्मय दृष्टि लिये हो (मनभाये हो)।
दुख - सागर में सुदृढ़ नाव के सम आये हो॥ ६१-६५॥

मींड़ गयी; इसलिए अन्य कोई ध्वनि नहीं रही। भ्रान्त-मति होकर, मैं सन्न रह गया, तो उस समय सारे पक्षी लौट आये। ६० वाग की सभी डालों पर बैठकर वे कलरव करने लगे। नीली कोयल भी लम्बी आह भरकर मुझसे यह कहने लगी।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अल्लऱ नुम्मो डळवाय् नान् पॅऱुमिव्
विन्बत् तिनुक्कुम् इडैयूऱु मूण्डदुवे !
अन्बॉडु नीरिङ्गे अडुत्तनान् गानाळिल्
वन्दरुळल् वेण्डुम् मऱवादीर्, मेऱ्कु लत्तीर् !
शिन्दै पऱिकॉण्डु शॅल्हिन्ऱीर् वारीरेल् 70

आवि तरियेन् अऱिन्दिडुवीर्, नान्गा नाळ्
पावि यन्द नान्गुनाळ् पत्तु युहमाक् कऴिप्पेन्
शॅन्ऱु वरुवीर् अॅन्शिन्दै कॉडु पोहिन्ऱीर्
शॅन्ऱु वरुवीर्' अॅनत् तेऱाप् पॅरुन्दुयरङ्
गॉण्डु शिऱु कुयिलुङ् गूऱि मऱैन्ददु काण् 75

कादलो कादल्—4

कण्डदॉरु काट्चि कनवुनन वॅन्ऱऱियेन्
अॅण्णुदलुञ् जॅय्येन् इरुपदु पेय् कॉण्डवन् पोल्
कण्णुम् मुहमुम् कळियेऱिक् कामनार्
अम्बु नुनिहळ् अहत्ते अमिऴ्न् दिरुक्क
कॉम्बुक् कुयिलुरुवम् कोडिपल कोडियाय् 5

ऑन्ऱे यदुवाय् उलहमॅलान् दोऱ्ऱमुऱ
शॅन्ऱे मनैपोन्दु शित्तन् दनदिन्ऱि
नाळॉन्ऱु पोवदऱ्कु नान् पट्ट पाडनैत्तुम्
ताळम् पडुमो ? तऱि पडुमो ? यार् पडुवार् ?
नाळॉन्ऱु पोयिनदु नानु मॅनदुयिरुम् 10

लोग कहते हैं कि मुहब्बत का रास्ता ऊबड़-खाबड़ है। हे ज्योतिर्मय दृष्टिवाले, तुम दुःखसागर में मेरे लिए मजबूत नाव के समान आये हो। ६५ दुःख मिटा। तुम्हारे साथ बोलते हुए जो मुझे मिल रहा है, उस सुख में भी बाधा आ गयी। प्रेम के साथ तुम यहाँ आज के चौथे दिन आने की कृपा करो ! हे उच्च कुलवाले, मत भूलो ! मेरे हृदय का हरण करके जा रहे हो। अगर नहीं आओगे तो-- ७० प्राण-धारण नहीं करूँगी ! जान लो ! चौथे दिन, हाँ ! पापी मैं वे चार दिन दस युग के समान बिताऊँगी। जाकर (लौट) आओ ! मेरा चित्त लिये जा रहे हो। जाकर (लौट) आओ ! --अदम्य बड़े दुख के साथ वह छोटी कोयल यह कहकर चली गयी-- ओझल हो गयी। ७५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरा दुख मिट गया तुम्हारे साथ बोलकर।
मुझको सुख मिल रहा (इस समय परम मञ्जुकर)॥
इस सुख में भी (यह) बाधा आ गयी (भयंकर)।
चौथे दिन आने की कृपा करो तुम (प्रियवर!)॥
अरे उच्च-कुल वाले! मत भूलो (मनमोहन!)।
लिये जा रहे हो हर करके तुम मेरा मन॥ ६६-७०॥
अगर नहीं तुम अब से चौथे दिन आओगे।
तो जानो तुम नहीं मुझे जीता पाओगे॥
मुझ पापिन के चार दिवस बीतेंगे युग-सम।
जाओ, लिये जा रहे हो मेरा मन (अनुपम)"॥
ऐसा दुर्दमनीय बड़े दुखपूर्वक कहकर।
हुई नयन से ओझल (छोटी कोयल सुन्दर)॥ ७१-७५॥

मुहब्बत—हे मुहब्बत!—४

जो देखा वह दृश्य स्वप्न था या यथार्थ था।
सोच न पाया जान न पाया (अरे! अर्थ क्या?)॥
मानो भूत सवार हो गये बीसों मुझ पर।
आँखों में, मुख पर मस्ती छा गई (मनोहर)॥
धँसे हृदय में कामदेव के अग्नि-सदृश शर।
रूप करोड़ों कोयल के हो गये डाल पर॥ १-५॥
सारे जग में रूप उसी का पड़ा दिखाई।
मैं घर गया, न मन पर मुझको वश था भाई॥
कष्ट हुआ वे दिवस बिताने में जो मुझको।
करघों करतालों ने सहन किया क्या उसको?॥
कौन सहे (फिर वह वियोग का कष्ट भयंकर)?।
(किसी भाँति से) एक दिवस बीता यों (दुखकर)॥ ६-१०॥

हे मुहब्बत, हे मुहब्बत!—४

जिसे देखा, वह दृश्य स्वप्न था या यथार्थ— मैं नहीं जानता। कुछ सोचता भी नहीं, मानो बीस भूत सवार हो गये हों। आँखों में तथा मुख पर मस्ती चढ़ी; कामदेव के अग्नि-बाण हृदय में पैठे रहे। शाखा की कोयल का रूप करोड़, कई करोड़ बना; ५ वही एक सारे विश्व में दिखायी दिया। घर गया। चित्त वश में नहीं रहा, दिन बिताने में जो कष्ट हुआ, वह क्या सब करताल ने सहा होगा? करघों ने सहा होगा? कौन सह सकता है? एक दिन बीता तो मैं और मेरी जान— १० जो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीळच्चिलै कॊण्डु निऱ्ऱदॊऱु मऩ्मदऩुम्
मायक् कुयिलुमदऩ् मामायत् तीम् बाट्टुम्
शायैपो लिऩ्दिरमा शालम्बोल् वैयमुमा
मिञ्जि निऩ्ऱोम् आङ्गु मऱुनाळ् विडिऩ्दवुडऩ्
(वञ्जनै नाऩ्कूऱविल्लै) मऩ्मदऩार् विऩ्दैयाल् 15
पुत्ति मऩञ् जित्तम् पुलनॊऩ् ऱरियामल्
वित्तं शॆयुञ् जूत्तिरऩ् मेवुमॊऱु पॊम्मैयॆऩ
कालिरण्डुङ् गॊण्डु कडुहवुनाऩ् शोलैयिले
नीलि तऩैक् काणवन्दॆऩ् नीण्ड वऴियिऩिले
निऩ्ऱपॊऱुळ् कण्ड निऩैविल्लै; शोलैयिडैच् 20
चॆऩ्ऱुनाऩ् पार्क्कैयिले शॆञ् जायिऱ् ऱॊण्कदिराल्
पचचै मर मॆल्लाम् पळपळॆऩ अॆऩ्ऩुळत्तिऩ्
इच्चै युणर्न्दऩ पोल् ईण्डुम् पऱवैयॆलाम्
वेऱॆङ्गो पोयिऱुप्प वॆम्मैक् कॊडुङ् गादल्
मीऱवॆऩैत् ताऩ् पुरिन्द विऩ्दैच् चिऱुकुयिलैक् 25
काणनाऩ् वेण्डिक् करैकडन्द वेट्कैयुडऩ्
कोणमॆलाञ् जुऱ्ऱि मरक् कॊम्बैयॆलाम् नोक्कि वन्दॆऩ् 27

कुयिलुम् कुरङ्गुम्—5

मऱ्ऱैनाट् कण्ड मरत्ते कुयिलिल्लै
शुऱ्ऱु मुऱ्ऱुम् पार्त्ततुत् तुडित्तु वरुहैयिले
वञ्जऩैये ! पॆण्मैये ! मऩ्मदनाम् पॊय्त्तेवे !
नॆञ्जहमे ! तॊल्विदियिऩ् नीदिये ! पाळुलहे !
कण्णाले नाऩ्कण्ड काट्चितऩै अॆऩ्ऩुरैप्पेऩ् ! 5

लम्बा धनु लेकर खड़ा था, वह मन्मथ, मायावी कोयल तथा उसका महान मोहक गीत, छाया की तरह, इन्द्रजाल की तरह दुनिया --ये ही सब बचे रहे ! तब दूसरे दिन सबेरा हुआ, तो (मैं झूठ नहीं कहता) मन्मथ की करामात के कारण-- १५ बुद्धि, मन, चित्त, इन्द्रियाँ सब कुछ नहीं समझे। खेल दिखानेवाले सूत्रधार से चालित प्रतिमा के समान दोनों पैर लेकर जल्दी-जल्दी मैं बाग में उस नीली (त्रिया-चरित्र वाली) को देखने आया। जो भी वस्तुएँ लम्बे मार्ग में थीं, उनको देखा हो --इसका स्मरण नहीं है ! बाग में-- २० जाकर देखा तो-- लाल सूर्य की प्रकाशमय किरणों से सभी हरे-हरे तरु चमके; मेरे मन की इच्छा मानो जान गये हों --सब पक्षी कहीं दूसरी जगह चले गये थे। जिस जादूगर कोयल ने मुझे सन्तापक क्रूर प्रेम का मुझे शिकार बना दिया, २५ उसे देखने की अपार इच्छा लेकर, मैं कोना-कोना घूमकर सभी डालों को देखता हुआ आया। २६-२७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वह मन्मथ जो खड़ा हुआ लंबा धनु लेकर।
मायावी कोयल औ' उसका गीत रूप धर॥
यह सारी दुनिया छाया सम, इन्द्रजाल-सम।
मैं औ' मेरे प्राण बचे बस रहे (मनोरम)॥
हुआ दूसरे दिवस जभी (अभिराम) सबेरा।
मैं करता छल नहीं (सुनो तुम प्रकथन मेरा)॥ ११-१५॥
(कामदेव के अति अद्भुत कौशल के कारण)।
समझ न पाये इन्द्रिय, चित्त तथैव बुद्धि, मन॥
खेल - प्रदर्शक - सूत्रधार - निर्मित - प्रतिमा - सम।
गया बाग में लखने नीली (कोयल) अनुपम॥
उस लम्बे पथ - बीच हुआ किस - किसका दर्शन।
स्मरण नहीं कुछ रहा (हुआ मैं ऐसा उन्मन)॥ १६-२०॥
मैंने देखा उस सुन्दर उपवन में जाकर।
फैलाते प्रकाशमय किरणें लाल दिवाकर॥
चमक रहे थे जिनसे हरे - हरे (से) तरुवर।
(चारों ओर) ललाम छटा छाई थी सुन्दर॥
मेरे मन की इच्छा मानो जान गये थे।
सब पक्षी (उड़) किसी दूसरे स्थान गये थे॥
गर्म क्रूर प्रीति का रहे कोई न ठिकाना।
कोयल के ऐसे जादू का बना निशाना॥ २१-२५॥
उसे देखने की असीम इच्छा (शुभ) लेकर।
कोना - कोना घूम लखीं डालियाँ सभी (वर)॥ २६-२७॥

कोयल और बन्दर—५

पिछले दिन देखा था कोयल को जिस तरु पर।
(आज) नहीं थी उस पर बैठी वह कोयल (वर)॥
इधर - उधर जब देख रहा था विह्वल होकर।
तभी दृश्य देखा आँखों से (अति) विस्मय - कर॥
हा! नारी! (इस जग में कोरी) प्रवंचना है।
मन्मथ की झूठी देवी है (निठुर - मना है)॥
अरे! हृदय! (यह तो है) विधि की नीति पुरानी।
हे बिगड़े संसार! तुम्हारी अकथ कहानी॥ १-५॥

कोयल और बन्दर—५

पिछले दिन जिस पर देखा था उस तरु पर कोयल नहीं थी। इधर-उधर देखता हुआ मैं बेचैन होकर आ रहा था— हाय! प्रवंचना! स्त्री! मन्मथ के झूठे देवता!

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॆण्णाल् अऱिविळक्कुम् पित्तरॆलाङ् गेण्मिनो !
कादलिनैप् पोऱ्ऱुङ् गवि जरॆलाङ् गेण्मिनो !
मादरॆलाङ् गेण्मिनो ! वल्विदियॆ केळाय् नी !
मायक् कुयिलोर् मरक्किळैयिल् वीऱ्ऱिरुन्दे
पायुम् विऴिनीर् पदैक्कुञ् जिऱिय वुडल् 10
विम्मिप् परिन्दु शॊलुम् वॆन्दु यर्च्चॊल् कॊण्डदुवाय्
अम्मवो ! मऱ्ऱाङ्गोर् आण्कुरङ्गु तन्नुडनॆ
एदेदो कूरि इरङ्गुम् निलैकण्डेन्
तीदेदु ? नन्ऱेदु ? शॆय्हैत् तॆळिवेदु ?
अन्दक् कणमे अदैयुङ् गुरङ्गिनैयुम् 15
शिन्दक् करुदि उडैबाळिऱ् कैशेर्त्तेन्
कॊन्ऱु विडु मुन्नॆ कुयिलुरैक्कुम् वार्त्तैहळै
निन्ऱु शऱ्ऱे केट्पपॆऱ्कॆन् नॆञ्जम् विरुम्बिडवुम्
आङ्ग वऱ्ऱिन् कण्णिल् अहप्पडा वाऱुहे
ओङ्गु मरत्तिन् पाल् ऒळिन्दु निन्ऱु केट्कैयिले 20
पेडक् कुयिलिदनैप् पेशियदुः— 'वानररे !
ईडऱिया मेन्मैयळ् हेय्न्दवरे ! पॆण्मैतान्
अॆप्पिऱप्पुक् कॊण्डालुम् एन्दले ! निन्नळैत्
तप्पुमो ? मैयल् तडुक्कुन् दरमामो ?
मण्णिलुयिर्क् कॆल्लान् दलैवरॆन मानिडरे 25
अॆण्णि निन्ऱार् तम्मै; अॆन्निलॊरुकाल् ऊर्वहुत्तल्
कोयिल्, अरशु, कुडिवहुप्पुप् पोन्ऱ शिल
वायिलिले अन्द मन्निदर् उयर्वॆन्नलाम्
मेन्नियळहिन्निलुम् विण्डुरैक्कुम् वार्त्तैयिलुम्
कून्नि यिरुक्कुम् कॊलु नेर्त्ति तन्निलुमे 30

हे हृदय ! पुरातन प्रारब्ध-क्रम ! हे बिगड़े संसार ! मैं अपनी आँखों से देखा दृश्य कैसे कहूं ? ५ ललना के कारण बुद्धि खोनेवाले दीवानो ! मुहब्बत की महिमा गानेवाले हे कवियो ! सब सुनो ! हे स्त्रियो, सब सुनो ! सुदृढ़ विधाता, तुम सुनो ! एक मायावी कोयल तरु की डाल पर बैठी हुई थी। बहनेवाले आँसू-- काँपनेवाली छोटी देह-- १० सिसक-सिसककर कहे जानेवाले करुण वचन, कठोर दुःख-कथन के साथ, मैया री ! क्या जानूं--वहाँ एक वानर से क्या-क्या कहते हुए दुःख जता रही थी – मैंने यह देखा। बुरा क्या है ? अच्छा क्या है ? कार्य में स्थिरता कहाँ हो ? उसी क्षण उसे और वानर को-- १५ मारने की बात सोचकर मैंने करवाल पर हाथ रखा। पर मारने के पहले मेरे मन ने कुछ देर ठहरकर कोयल जो बोले, उन बातों को सुनने की इच्छा की। इसलिए पास ही में ऊँचे पेड़ की आड़ में इस प्रकार खड़ा होकर कि वे मुझे देख न पायें, मैं सुनने लगा। २० स्त्री कोयल ने यह कहा-- हे वानरजी ! हे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नारी - हित मति खोनेवाले ! सुनो दिवानो ! ।
प्रीति - महत्ता गायक कवियो ! सुनो (सयानो !) ॥
सुनो सुदृढ़ विधि ! सुनो सभी ललनाओ ! (सुन्दर !) ।
मायावी कोयल बैठी थी एक डाल पर ॥
उसके नयनों से बहते थे आँसू के कण ।
उसके छोटे तन में होता था (अति) कंपन ॥ ६-१० ॥
करुण - वचन वह बोल रही थी सिसक - सिसककर ।
उस कोयल के पास एक था बैठा वानर ॥
उससे निज दुख जता रही थी (होकर कातर) ।
जाने क्या क्या कहती थी उससे दुख पाकर ॥
क्या अच्छा ? क्या बुरा ? (कौन बतला सकता है ?) ।
कौन कार्य में स्थिरता ? (कौन जता सकता ?) ॥ ११-१५ ॥
उस क्षण साथ - साथ लखकर वह कोयल - वानर ।
उन्हें मारने को रक्खा असि पर अपनाकर ॥
किन्तु मारने से पहले जो कहती कोयल ।
उन वचनों को सुनने के हित होकर विह्वल ॥
थोड़ा रुककर उसकी आँखों से मैं हटकर ।
ऊँचे तरु की ओट खड़ा हो गया सिमटकर ॥ १६-२० ॥
सुना— कह रही थी कोयल, "सुन लो हे वानर ! ।
(बता रही हूँ तुमसे लोक - रीति अविनश्वर) ॥
चाहे किसी जाति की होवे नारी (सुन्दर) ।
(अति) सौन्दर्य - युक्त (अति) अनुपम श्रेष्ठ (मनोहर) ॥
हे राजा ! तब आकर्षण से बच सकती क्या ? ।
अरे ! मोह की गति है रोकी जा सकती क्या ? ॥
पृथ्वी के सब जीवों में अपने को मानव ।
सर्वश्रेष्ठ मानते (दिखाते अपना गौरव) ॥ २१-२५ ॥
गाँवों की स्थापना, मन्दिरों को बनवाना ।
प्रजा जनों पर शासन, संस्थाएँ खुलवाना ॥
ऐसे कुछ क्षेत्रों में बढ़े हुए हैं मानव ।
इनमें ही माना जा सकता (उनका गौरव) ॥
पर तन की सुन्दरता में सुस्पष्ट वचन में ।
(आन-बान में विपुल) शान में (कोमल मन में) ॥ २६-३० ॥

अप्रतिम श्रेष्ठ सौंदर्ययुक्त, हे राजा ! स्त्रीत्व चाहे जिस किसी भी जन्म (योनि) की हो, क्या तुम्हारे सौंदर्य के आकर्षण से बच सकेगा ? क्या मोह रोका जा सकेगा ? मानव पृथ्वी के जीवों में अपने को मूर्धन्य-- २५ समझते हैं, तो शायद गाँव की स्थापना, मन्दिर, शासन, प्रजा, संस्थाएँ आदि ऐसे कुछ क्षेत्रों में वे मानव बढ़े हैं। --यह कहा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वानरर्तञ् जादिक्कुम् मान्दर् निहरा वारो ?
आन वरैयुम् अवर् मुयन्ऱु पार्त्तालुम्
पट्टु मयिर् मूडप्पडाद तमदुडलै
ऍट्टुडैयाल् मूडि ऍदिरुमक्कु वन्दालुम्
मीशैयुम् ताडियैयुम् विन्दैशैय्दु वानरर् तम् 35
आशै मुहत्तितैप् पोलाक्क मुयन्ऱिडिनुम्
आडिक् कुदिक्कुम् अळुहिलुमै नेर्वदऱ्के
कूडिक् कुदित्तुक् कुदित्तालुम् कोबुरत्तिल्
एऱत्तैरियामल् एणिवैत्तुच् चॆन्ऱालुम्
वेऱैत्तैच् चॆय्दालुम् वेहमुऱप् पाय्वदिले 40
वानरर् पोलावरो ? वालुक्कुप् पोवदॆङ्गे ?
ईनमुरुङ् गच्चै इदऱ्कु निहरामो ?
पाहैयिले वालिरुक्कप् पार्त्तदुण्डु; कन्दपोल्
वेहमुऱत् तावुहैयिल् वाशि ऍळुवदऱ्के
तॆय्वङ् गॊडुत्त तिरुवालैप् पोलामो ? 45
शैवशुत्त पोशनमुम् शादुरियप् पार्वैहळुम्
वानरर् पोऱ् चादियॊन्ऱु मण्णुलहिन् मीदुळदो ?
वानरर् तम्मुळ्ळे मणिपोल उमैयडॆन्दॆन्
पिच्चैप् पऱवप् पिऱप्पिले तोन्ऱि डिनुम्
निच्चयमा मुन्पुरिन्द नेमत् तवङ्गळिनाल् 50
तेवरीर् कादल्पॆरुञ् जोर्त्ति कॊण्डेन्; तम्मिडत्ते
आवलि नाऱ् पाडुहिन्ऱेन् आरियरे केट्टरुळ्वीर्"
(वानरप् पेच्चिले मैक्कुयिलि पेशियदै
यानऱिन्दु कॊण्डु विट्टेन् यादो ऑरु तिऱत्ताल्)
नीशक् कुयिलुम् नॆरुप्पुच् चुवैक्कुरलिल् 55

जा सकता है। पर शरीर के सौंदर्य में, खोलकर की हुई बात में, कूबड़ा रहने की शान में-- ३० वानर जाति के समान क्या मानव हो सकेंगे ? वे भरसक कोशिश करें-- रेशमी रोम से जो ढका नहीं है, उस शरीर को आठ पोशाकों से ढँक लें और तुम्हारे सामने आयें; मूँछ, दाढ़ी में विचित्र परिवर्तन लाकर वानरों के-- ३५ मुख के समान अपने मुख को बनाने का प्रयास करें —पर नाच-कूद के सौंदर्य में तुम्हारी समानता करने के लिए मिलकर, पोकर नाचें, गोपुर (मीनार) पर चढ़ना न जानकर सीढ़ी लगाते जायँ, चाहे और कुछ बातें करें-- तो भी त्वरित गति से छलांग मारने में-- ४० वानरों की समानता क्या वे कर सकेंगे ? पूँछ के लिए जायं कहाँ ? उसकी जो हीन काछनी है, वह क्या इसकी टक्कर की हो सकती है ? पगड़ी में गुदड़ी के समान पूँछ है-- हमने देखा है ! पर जल्दी छलाँग मारते समय, उछलकर उठने के लिए क्या वह ईश्वर-दत्त तुम्हारी पूँछ के समान हो सकेगी ? ४५ शुद्ध शैव भोजन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वानर-जाति-समान नहीं हो सकते मानव।
भरसक कोशिश करें (नहीं हो सकता संभव)॥
नहीं रेशमी रोमों से जो ढका (मनोहर)।
आठ - आठ पोशाकें पहनें वे निज तन पर॥
दाढ़ी - मूँछ - बीच अद्भुत परिवर्तन लायें।
इस प्रकार बन - ठनकर वे तव सम्मुख आयें॥ ३१-३५॥

कपियों के मुख - सम वे निज-मुख (मंजु) बनायें।
कपियों के समान ही नाच-कूद दिखलायें॥
(मादक मदिरा) पीकर नाचें (खेल दिखायें)।
सब प्रकार वे करें वानरों की चेष्टायें॥
चढ़ना नहीं जानते चढ़ने को ललचायें।
मीनारों पर चढ़ने को सीढ़ियाँ लगायें॥
पर द्रुत गति से (लंबी बड़ी) छलाँग मारना।
अरे! वानरों का कर सकते नर न सामना॥ ३६-४०॥

किन्तु पूँछ के लिए कहाँ जाएँगे मानव?।
तुच्छ काछनी पूँछ-समान नहीं है सम्भव॥
पगड़ी में देखी है उनकी पूँछ (मनोहर)।
गुदड़ी के समान (ढीली - ढीली है मृदुतर)॥
पर क्या जल्द छलाँग लगाने के अवसर पर।
ईश्वर - दत्त पूँछ - सम वह उठती है ऊपर॥ ४१-४५॥

(शाक - फलों का) शुद्ध वैष्णव (सात्त्विक) भोजन।
(चंचल) चतुर दृष्टियाँ (अति सतर्क - से लोचन)॥
(इन सब बातों में) इस (विस्तृत) जगती - तल पर।
वानर - जाति - समान नहीं है कोई भी नर॥
दीन (हीन) पक्षी - कुल - बीच जन्म धारण कर।
पूर्वजन्म - कृत नियम - तपों के फल को पाकर॥
वानर - मणि के तुल्य तुम्हें है मैंने पाया।
मिला तुम्हारा प्रेम रूप गौरव (मनभाया)॥ ४६-५०॥

आर्य! कृपा कर सुनें (हमारे वचन मनोहर)।
(ऐसी पिक - वाणी सुन हुआ समुत्सुक वानर)॥
नीच कोकिला भी आकर्षक स्वर में तरु पर।
प्रेम - सुधा छलकाकर गाने लगी मनोहर॥ ५१-५५॥

और चतुर दृष्टियाँ-- (हा!) वानर के समान कोई जाति इस संसार में क्या दूसरी कोई है? वानरों में मणि के समान तुम्हें मैंने पा लिया है! दरिद्र पक्षी-योनि में जन्म लेने पर भी निश्चय ही पहले किये हुए नियम तथा तपों से-- ५० तुम्हारे प्रेम का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आशै तदुम्बि अमुदूरप् पाडियदे:—
कादल् कादल् कादल्
कादल् पोयिऱ् कादल् पोयिऱ्
चादल् शादल् शादल्— (कुयिल् पाट्टु)
काट्टिल् विलङ्गऱियुम् कैक्कुळ्ळन्दे तानऱियुम्
पाट्टिन् शुवैयदनैप् पाम् बरियुम् ऎन्ऱुरैप्पार्
वऱ्ऱऱ् कुरङ्गु मदिमयङ्गिक् कळ्ळिनिले
मुऱ्ऱुम् वॆऱिपोल् मुळुवॆऱि कॊण् डाङ्ङने 60
ताविक् कुदिप्पदुवुन् दाळङ्गळ् पोडुवदुम्
"आवि युरुहुदडी आहा हा" ऎन्बदुबुम्
कण्णैच् चिमिट्टुवदुम् कालालुङ् गैयालुम्
मण्णैप् पिऱाण्डि यॆङ्गुम् वारि यिऱैप्पदुवुम्
"आशैक् कुयिले ! अरुम् पॊरुळे दॆय्वदमे ! 65
पेश मुडियाप् पॆरुङ् गादल् कॊण्डु विट्टेन्
कादलिल्लै यानाल् कणत्तिले शादलॆन्ऱाय्
कादलिनार् चाहुङ् गदियिले ऎन्नै बैत्ताय्
ऎप्पॊळुदुम् निन्नै इनिप् पिरिव दाऱुहिलेन्
इप्पॊळुदे निन्नै मुत्तमिट्टुक् कळि युरुवेन्" 70
ऎन्ऱु पल पेशुवदुम् ऎन्नुयिरैप् पुण्शैयवे
कॊन्ऱुविड ऎण्णिक् कुरङ्गिन्मेल् वीशिनेन्
कैवाळे याङ्गे ! कनवो ? ननवु कॊलो ?
दॆय्व वलियो ? शिऱु कुरङ्गॆन् वाळुक्कुत्
तप्पि मुहञ्जुळित्तुत् ताबि यॊळित् तिडवुम् 75
ऒप्पिला मायत् तॊरुकुयिलुन् दान् मऱैय
शोलैप् पऱवे तॊहैया तॊहैयात् दामॊलिक्क

गौरव मिला है ! हे आर्य ! सुनने की कृपा करें। (वानर वाणी में कोयलिया का कथन मैंने जान लिया— किसी शक्ति से।) नीच कोयल भी अग्निमय आकर्षक स्वर में— प्रेम के छलकते अमृत को सरसाते हुए गाने लगी— ५५ मुहब्बत, मुहब्बत, मुहब्बत गयी तो, मुहब्बत गयी तो मौत, मौत, मौत आदि ·····(कोकिल-गान)। जंगल का जानवर जानता है; हाथ (माँ की गोद) का शिशु जानता है, गाने की रुचि सर्प भी जानता है। सूखकर काँटा हुआ वह वानर बुद्धि खो गया। कोई सुरापान से पूर्ण रूप से नशे में आया हो, वैसे पूर्ण रूप से नशे में आकर— ६० छलाँग मारकर कूदने तथा तालियाँ बजाने लगा।····· 'हा ! प्राण पिघलते हैं, री ! हा हा !' कहता हुआ वह पलकें मारता, पैरों तथा हाथ से मिट्टी खोद लेकर सब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"प्रीति चाहिए, प्रीति चाहिए, प्रीति चाहिए।
प्रीति नहीं तो मौत चाहिए, मौत चाहिए"॥
हैं संगीत - रसिक वन के भी (सारे) पशुवर।
हैं संगीत - रसिक माँ की गोदी के शिशुवर॥
हैं सगीत - रसिक (भीषण) भुजंग भी (विषधर)।
(सुन सुन्दर संगीत सभी) सुध भूला वानर॥
सुरा - पान से ज्यों प्रमत्त होता कोई नर॥
उसी भाँति वह वानर पूर्ण नशे में आकर॥ ५६-६०॥
देता ताल, कूदता और छलाँग मारता।
"हा हा! प्राण पिघलते"—कह पलकें उघारता॥
हाथ - पैर से मिट्टी खोद-खोद छितराता।
"प्यारी! कोयल! तू अमूल्य"—कह प्रेम जताता॥ ६१-६५॥
"प्रीति नहीं तो मौत मिलेगी क्षण के भीतर"।
—इस प्रकार का तूने वचन कहा है (सुन्दर)॥
देवी! अकथ प्रीति में मैं फँस गया (निरन्तर)।
मृत्यु - दशा में पहुँचाया प्रीति को सिखाकर॥
सह सकता न वियोग तुम्हारा (हूँ मैं पल भर)।
खुश हो जाऊँगा मैं तुमको अभी चूमकर"॥ ६६-७०॥
इस प्रकार उस वानर की बातों को सुनकर।
व्यथित हो गये मेरे (प्यारे) प्राण निरन्तर॥
उसे मारने को अपने मन-बीच सोचकर।
फेंकी बन्दर पर मैंने तलवार भयंकर॥
वह सपना था अथवा थी यथार्थ वह घटना?।
या ईश्वर-संकल्प-(विनिर्मित्त थी वह रचना)?॥
छोटा बन्दर मेरी उस कृपाण से बचकर।
छिपा कूद करके अपने मुख को सिकोड़कर॥ ७१-७५॥
अनुपम-माया-चतुर पिकी भी लुप्त हो गयी।
कलरव करने लगे विहग वन (शान्ति खो गयी)॥

ओर छितराता था। 'प्यारी कोयल! अमूल्य वस्तु! देवी!' ६५ अकथ्य बड़ी मुहब्बत में मैं फँस गया। मुहब्बत नहीं रही, तो क्षण में मौत— कहा तूने! मुहब्बत की वजह से मौत की हालत में मुझे पहुँचा दिया तूने! कभी तुम्हारा विरह नहीं सह सकता। अभी तुम्हें चूमकर मैं खुश हो जाऊँगा। ७० ऐसी बहुत बातें कहता और मेरी जान को घायल कर देता रहा। 'उसे मारने की बात सोचकर बन्दर पर मैंने अपनी करवाल फेंकी!' स्वप्न था या यथार्थ घटना? ईश्वर-संकल्प? छोटा बन्दर मेरी करवाल से बचकर मुख को सिकोड़कर छलाँग मारकर छिप गया। ७५ अनुपम माया-चतुर कोयल भी गायब हो गयी। बागों के पक्षी दलों में कलरव करने लगे। आगे क्या करना है, इसे न जानकर सीधी बुद्धि वाला सादा आदमी मैं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेलैच् चॅयलरिया वॅळ्ळरिविर् पेदैयेन्
तट्टित् तडुमारिच् चार्वनैत्तुन् देडियुमे
कुट्टिप् पिशाशक् कुयिलै यॅङ्गुम् काणविल्लै 80

इरुळुम् ऒळियुम्—6

वान नडुविले माट्चियुर् ञायिरुतान्
मोन ऒळि शूळ्न्दिडवुम् मॊय्म्बिर् कॊलुविरुन्दान्
मॆय्यॆल्लाञ् जोर्वु विळियिल् मयक्क मुर्
उय्युम् वळियुणरा दुळ्ळम् पदैपदैक्क
नाणुन् दुयरुम् नलिवुरुत्त नान् मीण्डु 5
पेणुम् मनै वन्देन्; पिरक्किनै पोय् वीळ्न्दु विट्टेन्
मालैयिले मूर्च्चै निलै मारित् तॅळि वडैन्देन्
नालुपुर् मॅनै नण्बर् वन्दु शूळ्न्दु निन्रार्
"एनडा मूरच्चै युर्राय् ?" ऍङ्गु शॅन्राय् ? एदु शॅय्दाय् ?
वानम् वॅळिरु मुन्ने वैहरि यिलेतनित्तुच् 10
चॅन्रनै ऍन्गिल्रारच् चॅय्दि ऍन्ने ? ऊणिन्रि
निन्र देन्ने ?" ऍन्रु नॅरित्तु विट्टार् केळ्विहळै
इन्नार्क् किदु शॊल्व देन्रु तॅरियामल्
'ऍन्नार् पलवुरैत्तल् इप्पॊळुदु कूडादाम्
नाळै वरु वीरेल् नडन्ददॅलाञ् जॊल्वेन् इव् 15
वेळै ऍनैत् तनिये विट्टहल्वीर्" ऍन्रुरैत्तेन्
नण्बरॆल्लाञ् जॅन्रुविट्टार्; नैन्दु निन्र तायार् ताम्

लड़खड़ाता हुआ उसे सब ओर ढूँढ़ने लगा, पर बालभूतनी कोयल को मैं कहीं नहीं देख सका। ८०

अँधेरा और प्रकाश—६

आकाशमध्य शान के साथ सूर्य मौन-प्रकाश-मध्य सतेज दरबार लगाये था। मेरे शरीर भर में थकावट और आँखों में चक्कर का अनुभव था। जीने का मार्ग न जानकर मेरा हृदय बेचैन था। शरम तथा दुःख मुझे सताने लगा। तो मैं फिर-- ५ अपने निवास-स्थान में आया और बेहोश हो गिर गया। शाम को होश आया तो मैं थोड़ा स्वस्थ हुआ। चारों ओर, मेरे मित्र आकर मुझे घेरकर खड़े थे। (उन्होंने कहा—) क्यों बेहोश हो गये ? कहाँ गये थे ? क्या किया था ? आकाश के शुभ्र होने से पहले तड़के, अकेले-- १० गये --ऐसा लोग कहते हैं। क्या वह बात है ? बिना भोजन के क्यों रहे ? --उन्होंने ऐसे प्रश्नों की झड़ी लगा दी। किससे क्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किंकर्तव्य-विमूढ़ सरल मति का सीधा नर।
सभी ओर मैं लगा ढूँढ़ने भटक-भटक कर॥
कहीं नहीं देखी वह भूत-काल की कोयल।
(हार गया, थक गया, हो गया अतिशय व्याकुल॥ ७६-८०॥

अँधेरा और प्रकाश—६

नभ-मंडल के मध्य शान के साथ दिवाकर।
मौन प्रकाश-मध्य शोभित दरबार लगाकर॥
तन में थकन और लेकर आँखों में चक्कर।
जीवन-पथ से अज्ञ हृदय था विकल (निरन्तर)॥
लज्जा और दुःख ने जब था मुझे सताया।
तो मैं फिर रहने को (अपने) घर में आया॥ १-५॥
मैं अचेत होकर गिर पड़ा (वहाँ भू-तल पर)।
हुआ शाम को चेत हृदय कुछ हुआ स्वस्थतर॥
घेर लिया मुझको मेरे मित्रों ने आकर।
(लगे पूछने भाँति-भाँति के प्रश्न निरन्तर)॥
"क्यों बेहोश हो गये? (तुम मुझको समझाओ)।
कहाँ गये थे? और किया क्या काम बताओ?॥
नभ के उज्ज्वल होने के पहिले ही उठकर।
तड़के ही तुम कहीं अकेले गये (मित्रवर!)॥ ६-१०॥
इस प्रकार से हाल बताते हैं हमको सब।
है सच्ची क्या बात? अजब सब हाल कहो अब॥
किया नहीं क्यों भोजन? (कैसी आफ़त आयी?)"।
इस प्रकार सबने प्रश्नों की झड़ी लगायी॥
"नहीं जानता मैं किसको क्या कहूँ? (मित्रवर!)।
अभी नहीं कुछ कह पाऊँगा (हृदय न सुस्थिर)॥
कल आओ, जो हुआ सभी बतला दूँगा मैं।
(सब मित्रों को भली-भाँति समझा दूँगा मैं)॥ ११-१५॥
हट जायें सब (मित्र इस समय) मुझे छोड़कर"।
यह सुन करके चले गये वे सभी मित्रवर॥
लाकर भोजन दुखी जननि ने मुझे परोसा।
औ' थोड़ा सा दूध दिया (कुछ हुआ भरोसा)॥

कहूँ —यह न जानकर मैंने कहा— "मुझसे अब बहुत नहीं कहा जायगा। कल आओ तो, जो हुआ सब बता दूँगा। अब— १५ मुझे छोड़कर हट जायँ" —(कहा मैंने)। सब मित्र चले गये। दुःखी माता खाने के लिए खाना देकर दूध लायी। थोड़ा विश्रान्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उण्बदऱ्कुप् पण्डम् उदवि नल्ल पाल्कॊणर्न्दार्
शऱ्ऱु विडाय् तीर्न्दु तऩिये पडुत्तिरुन्देन्;
मुऱ्ऱुम् मऱन्दु मुळुत्तुयिलिल् आळ्न्दु विट्टेन् 20
पण्डु नडन्द दऩैप् पाडुहिऩ्ऱ इप्पॊळुदुम्
मण्डु तुयरॆऩदु मार्बै यॆलाङ् कव्वुवदे !
ओडित् तवऱि उडैवऩवाम् शॊऱ्कळॆल्लाम्
कूडि मदियिऱ् कुविन्दिडुमाम् शॆय्दि यॆलाम्
नाशक् कदैयै नडुवे निऱुत्ति विट्टुप् 25
पेशु मिडैप् पॊरुळिऩ् पिऩ्ऩे मदि पोक्कि
कऱ्पऩैयुम् वर्णऩैयुङ् गाट्टिक् कदैवळर्क्कुम्
विऱ्पऩर् तऱ्जॆय्है विदमुन् दॆरिहिलऩ् यान्
मेलॆक् कदैयुरैक्क वॆळ्हिक् कुलैयु मऩम्
कालॆक् कदिरळहिऩ् कऱ्पऩैहळ् पाडुहिऱेऩ् 30
तङ्ग मुरुक्किऩ् तळल् कुऱैत्तुत् तेऩाक्कि
ॲङ्गुम् परप्पियदोर् इङ्गिदमो ? वाऩ्बॆळियैच्
चोदि कवर्न्दु शुडर्मयमाम् विन्दैयिऩै
ओदिप् पुहळ्वार् उवमै यॊऩ्ऱु काण्बारो ?
कण्णैयिऩि दॆऩ्ऱुरैप्पार्; कण्णुक्कुक् कण्णाहि 35
विण्णै अळक्कु मॊळि मेम् बडुमोर् इऩ्बमऩ्ऱो ?
मूलत्तऩिप् पॊरुळै मोऩत्ते शिन्दै शॆय्युम्
मेलवरुम् अःदोर् विरियुमॊळि ॲऩ्बारेल्

होकर मैं अकेला लेटा रहा। पूर्ण रूप से भूलकर गाढ़ी निद्रा में मग्न हो गया। २० यह बहुत पहले जो हुआ, उसे अब गाते समय भी घने रूप से दुःख मेरी छाती को लपेट लेता है ! भागकर-चूककर टूटनेवाले हैं सारे शब्द; समाचार मिलकर बुद्धि में ढेर लग जाते हैं। नाशकारी कहानी को बीच में छोड़कर, २५ बोलते समय बीच में आनेवाली बातों के पीछे लगकर, कल्पना तथा वर्णन के पीछे कहानी बढ़ाने के विद्वानों के कार्य की रीति को मैं नहीं जानता। आगे की कथा कहते हुए मेरा मन लजाकर लट जाता है। मैं सबेरे के सूर्य की किरणों की सुन्दरता की कल्पना करके गाता हूँ। ३० सोने को पिघलाकर, उसकी गरमी कम करके उससे शहद बनाकर सब जगह फैला दिया हो। लगता था, वह सौंदर्य मानों आकाश के अवकाश की ज्योति आच्छादित करके ज्वाला बन गया हो। उस विस्मय के प्रशंसक अब क्या कोई उपमा दे सकेंगे ? वे आँखों को मधुर कहते हैं; आँखों की आँख बनकर—३५ आकाश को मापनेवाली ज्योति उससे बढ़कर मधुर है न ? आदि परमवस्तु का मौन रहकर ध्यान करनेवाले महात्मा उसे केवल 'ज्योति' कहेंगे, तो श्रेष्ठ ज्योति की कोई दूसरी चीज़ उपमा बन सकती है क्या ? घास को हँसाकर (खिलाकर), फूल को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

थका हुआ था लेट गया मैं (निज शय्या पर)।
था एकान्त (नहीं कोई था अनुज वहाँ पर)॥
मग्न हो गया गाढ़ी निद्रा-बीच क्लान्त तन।
पूर्ण रूप से (बीती बातों को बिसार मन)॥ १६-२०॥

बीती जो पहले थी वह (अति अद्भुत घटना)।
(परमेश्वर की ही यह थी विस्मयकर रचना)॥
अब भी जब यह बात किसी को मैं बतलाता।
तो मेरी छाती में अतिशय दुख छा जाता॥
शब्द सभी चूककर, भागकर मिट जाते हैं।
समाचार के ढेर बुद्धि में लग जाते हैं॥ २१-२५॥

क्लेशकरी अति कथा (अरे !) बीच में छोड़कर।
(कहता हूँ आगे बातें अब विस्मयकर)॥
जो बीच में उपजतीं कहने के अवसर पर।
उन (असार थोथी) बातों के पीछे लगकर॥
जो कल्पना तथा वर्णन को बढ़ा-चढ़ाकर।
कर देती हैं बड़ी कहानी बढ़ा विपुलतर॥
इस प्रकार के विद्वानों की कार्य रीतियाँ।
नहीं जानता (इस प्रकार की व्यर्थ नीतियाँ)॥
आगे का वृत्तान्त बताते समय हृदय मम।
लज्जित होकर लट जाता है (महा विपुलतम)॥
कर कल्पना प्रभात-भानु की छटा निराली।
मैं गाता हूँ (पिला-पिलाकर रस की प्याली)॥ २६-३०॥

सोने को पिघलाकर उसकी गरमी कम कर।
फैलाया हो सभी ओर ज्यों शहद बनाकर॥
ऐसी है सौन्दर्यमयी यह (रवि की लाली)।
ज्वाला-सी छायी ढककर नभ - ज्योति निराली॥
इस विस्मय को देख प्रशंसा करनेवाले।
दे पायेंगे कोई उपमा (सुकवि निराले)॥
मधुर बताते हैं आँखों को (सारे कविवर)।
पर वह आँखों की भी (मधुर) आँख (सी) बनकर॥ ३१-३५॥

व्योम-मापनेवाली (मंजुल) ज्योति (निराली)।
उससे बढ़कर मधुर (और उससे छबिशाली)॥
आदिम परमवस्तु पर ध्यान जमानेवाले।
मौन - मना (महनीय) महात्मा-जन (गुणवाले)॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नल्लॊळिक्कु वेऱुपॊरुळ् ञालमिशै यॊप्पुळदो ?
पुल्लै नहैयुऱुत्तिप् पूवै वियप्पाक्कि 40
मण्णैत् तॆळिवाक्कि नीरिल् मलर्च्चि तन्दु
विण्णै वॆळियाक्कि विन्दैशैयुञ् जोदियिनैक्
कालैप् पॊऴुदिनिले कण्विऴित्तु नान् तॊऴुदेन्
नालु पुऱत्तु मुयिर् नादङ्ग ळोङ्गिडवुम्
इन्बक् कळियिल् इयङ्गुम् पवि कण्डेन् 45
तुन्बक् कदैयिन् तॊडरुरैप्पेन् केळीरो !

कुयिलुम् माडुम्—7

कालैत् तुयिलॆऴुन्दु कालिरण्डु मुन् बोले
शोलैक् किऴुत्तिड नान् शॊन्दवुणर् विल्लामे
शोलैयिनिल् वन्दु निन्ऱु शुऱ्ऱु मुऱ्ऱुन् देडिनेन्
कोलप् पऱवैहळिन् कूट्ट मॆल्लाङ् गाणविल्लै
मूलैयिलोर् मामरत्तिन् मोट्टुक् किळैयिनिले 5
नीलक् कुयिलिरुन्दु नीण्ड कदैशॊल्लुवदुम्
कीऴे यिरुन्दोर् किऴक्काळै माडदनै
आऴ मदियुडने आवलुऱक् केट्पदुवुम्
कण्डेन् वॆहुण्डेन् कलक्क मुऱ्ऱेन्; नॆञ्जिलनल्
कॊण्डेन् कुमैन्देन् कुमुऱिनेन् मॆय्वॆयर्त्तेन् 10
कॊल्ल वाळ् वीशल् कुऱित्तेन् 'इप्पॊय्प् पऱवै
शॊल्लु मॊऴि केट्टदन्पिन् कॊल्लुदले शूऴ्च्चि'यॆन्

विस्मयकारी बनाकर-- ४० पृथ्वी को साफ़ करके, जल में विकास (करनेवाली) देकर, आकाश को अवकाश बनाकर जो जादू कर रही है, उस ज्योति की, सबेरे जागकर मैंने वन्दना की। चारों ओर जीवन का कोलाहल बढ़ गया। मैंने देखा कि मधुर आनन्द में भूमि हिल रही थी। ४५ (अब) मैं दुःख की कहानी का छूटा हुआ अंश कहूँगा ! सुनें ! ४६

कोयल तथा बैल—७

सबेरे निद्रा से जाग उठा। मेरे दोनों पैर, पहले की तरह बाग़ की ओर मुझे खींचकर ले जाने लगे। सुध-बुध-रहित होकर मैं बाग़ में आया और आस-पास चारों ओर ढूँढ़ा। पर वह विचित्र पक्षियों का दल नहीं दिखायी दिया। कोने में एक आम के पेड़ की ऊँची डाल में— ५ मैंने नीली कोयल का बैठकर लम्बी कहानी सुनाना तथा नीचे रहकर एक बूढ़े बैल का उसे गहरा ध्यान देकर उत्सुकता से सुनना, देखा। मुझे गुस्सा आया। मैं घबड़ाया। मेरे हृदय में आग लग गयी। मैं घुला,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उसको केवल ज्योति बतायेंगे (अति सुन्दर)।
श्रेष्ठ ज्योति की उपमा हो सकती है क्योंकर ? ॥
जो नवज्योति (अपार) घास (की राशि) हँसाती।
जो नवज्योति कुसुम विकसा विस्मय उपजाती ॥ ३६-४० ॥
जो नवज्योति धरातल को उज्ज्वल कर देती।
जो नवज्योति तरल जल को निर्मल कर देती ॥
जो नवज्योति गगन में भी अवकाश बनाकर।
दिखलाती है (अपना) जादू (अति विस्मयकर) ॥
उसी ज्योति की की वन्दना सबेरे जगकर।
(मुखर) हो उठे चारों ओर उच्च जीवन स्वर ॥
पा मधुमय आनंद भूमि होती थी लरजित।
मैंने देखा (यह सब होकर अतिशय विस्मित) ॥ ४१-४५ ॥
उस दुख-भरी कहानी का जो टूट गया क्रम।
उसे कहूँगा (सावधान हो) सुनें (ससंयम) ॥ ४६ ॥

कोयल तथा बैल—७

हुआ सबेरा, उठा (तुरत) निद्रा से जगकर।
हुए हमारे पैर बाग़ की ओर अग्रसर ॥
मैं सब सुध-बुध भूल बाग़ में पहुँचा जाकर।
ढूंढ़ा चारों ओर उसे सर्वत्र (निरन्तर) ॥
नहीं दिखाई दिया खगों का झुण्ड वहाँ पर।
(सभी ओर थी शान्ति नहीं था कलरव का स्वर) ॥ १-५ ॥
कोने में आम के वृक्ष की बैठ डाल पर।
नीली पिक थी लंबी कथा सुनाती (सुन्दर) ॥
बूढ़ा एक बैल तरु के नीचे स्थित होकर।
सुनता था उत्सुक हो, गहरा ध्यान लगाकर ॥
यह लखकर मैं क्रोधित हुआ और घबड़ाया।
लगी हृदय में आग, पसीना चुचुवा आया ॥
(क्रोध-अग्नि से) घुला, उबल मैं उठा (क्षणांतर)।
(मन में उठने लगे अनेकों भाव निरन्तर) ॥ ६-१० ॥
सोच रहा था मैं अपनी तलवार चलाकर।
उसे फेंक दूं मैं पृथ्वी पर मार-काटकर ॥
पर इस झूठी चिड़िया की बातों को सुनकर।
इसे मारना कूट-नीति है, मन में गुनकर ॥

उबल उठा। —शरीर स्वेदयुक्त हुआ। १० मारने के लिए तलवार चलाने की बात

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुन्पोल् मऱैन्बु निन्ऱेन्; मोहप् पळङ्गदैयैप्
पॊन्पोऱ् कुरलुम् पुदुमिन्पोल् वार्त्तैहळुम्
कॊण्डु कुयिलाङ्गे कूऱुवदाम्, "नन्दिये 15
पॆण्डिर् मनत्तैप् पिडित् तिळुक्कुम् कान्दमे !
कामने ! माडाहक् काट्चि तरुम् मूर्त्तिये
पूमियिले माडुपोऱ् पॊऱ्पुडैय शादि युण्डो ?
मानुडरुन् दम्मुळ् वलिमिहुन्द मैन्दर् तमै
मेनियुरुङ् गाळैयॆन्ऱु मेम्बा डुऱप्पुहळ्वार् 20
काळैयर् तम् मुळ्ळै कनमिहुन्दीर आरियरे !
नीळ मुहमुम् निमिर्न् दिरुक्कुङ् गॊम्बुहळुम्
पञ्जुप् पॊदिपोल् पडर्न्द तिरु वडिवुम्
मिञ्जुप् पुऱच्चुमैयुम् वीरत् तिरुवालुम्
वानत् तिडिपोल 'मा' वॆन्ऱु रुमुवदुम् 25
ईनप् पऱवै मुदुहिन्मिशै एऱिविट्टाल्
वालैक् कुळैत्तु वळैत्तडिक्कुम् नेर्मैयुम् पल्
कालम्नान् कण्डु कडुमोह मॆय्दिविट्टेन्
पार वडिवुम् पयिलु मुडल् वलियुम्
तीर नडैयुम् शिऱप्पुमे इल्लाद 30
शल्लित् तुळिप् परवैच् चादियिले नान् पिऱन्देन्
अल्लुम् पहलु निदम् अऱप वयिऱ् रुन्नुक्के
काडॆल्लाञ् जुऱ्ऱि वन्दु काऱ्ऱिले ऍऱ्ऱुण्डु
मूड मनिदर् मुडै वयिऱ्ऱुक् कॊरुण वाम्
शिन्नक् कुयिलिन् शिऱुकुलत्तिले तोन्ऱि 35
ऍन्न पयन् पॆऱ्ऱेन् ? ऍन्नैप्पोलोर् पावियुण्डो ?
शेऱ्ऱिले तामरैयुम् शीळुडैय मीन् वयिऱ्ऱिल्

सोची। 'इस झूठी चिड़िया का कथन सुनकर इसे मारना ही कूटनीति है' —ऐसा सोच कर पहले की तरह मैं आड़ में खड़ा रहा। कोयल मोहक पुरानी कहानी को स्वर्ण-सदृश स्वर में तथा नयी बिजली-सदृश शब्दों में कहने लगी। वह बोली— हे नंदी! १५ हे स्त्रियों का मन हरनेवाले चुम्बक, हे कामदेव! हे बैल के रूप में दिखनेवाले देव! क्या भूमि पर बैल के समान श्रेष्ठ जाति है? मानव भी अपनों में बलवान पुरुष को 'पुरुष ऋषभ' कहते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं! २० पट्ठों में तुम गुरु हो— हे आर्य! लम्बा मुख, सीधे सींग, रुई की गठरी-सा विशाल श्रीरूप, बड़े पुट्ठे— वीरतामयी पूंछ, आकाश गर्जन के समान 'माँ'···रँभाना— २५ नीच पक्षी पीठ पर सवार हुआ तो दुम हिलाकर उसे मार भगाने का सीधा कार्य —यह सब अनेक दिनों से देखती हुई मैं अपार मोह में पड़ गयी। भारी आकार, उपयोगी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पहले के सम ही लुक गया आड़ में दबकर।
सुनने लगा मनोरम बातें उनकी छिपकर॥
नूतन-बिजली-सदृश मनोरम शब्द बोलकर।
अपना करके (सुन्दर) स्वर्ण-समान (सुघर) स्वर॥
वही पुरानी कथा लगी कहने वह कोयल।
"नन्दी! (सुनो, सुनाती तुमको कथा सुकोमल)॥ ११-१५॥
ललनाओं के मन हरनेवाले हे चुम्बक!।
वृषभ-रूप धर कामदेव हो तुम (मनमोहक)॥
बैल-समान न श्रेष्ठ जाति है इस भू-तल पर।
'पुरुषर्षभ' कहलाता जो होता बल-युत नर॥ १६-२०॥
'पट्ठों में तुम गुरु हो'—इस प्रकार से कहकर।
करते रहते सदा प्रशंसा हैं जग में नर॥
लंबा-लंबा मुख है, सीधे सींग (उच्चतर)।
(मृदुल) रुई की गठरी-सा श्रीरूप मनोहर॥
पुट्ठे बड़े, पूंछ वीरत्व भाव से उत्थित।
घन-गर्जन के तुल्य रँभाना 'माँ' कहकर नित॥ २१-२५॥
बैठा पक्षी नीच पीठ पर कोई आकर।
मार भगाते हो तुम उसको पूंछ चलाकर॥
बहुत दिनों से कृत्य तुम्हारा देख-देखकर।
मैं अपार मोह में पड़ गयी हूँ (अति कातर)॥
उपयोगी शारीरिक शक्ति (अपार बदन में)।
है भारी आकार धैर्य-युत चाल (जगत में)॥
कौन श्रेष्ठता है जो नहीं तुम्हारे तन में।
(गुण-गौरव गाती रहती मैं अपने मन में)॥ २६-३०॥
तुच्छ पक्षि-कुल में मैं पैदा हुई (अभागी)।
निशि-दिन नीच-पेट-हित फिरती भागी-भागी॥
उड़ती रहती सदा हवा में झोंका खाकर।
मूढ़ मनुज खा जाते मेरा मांस पकाकर॥
लघु कोयल के छोटे कुल में पैदा होकर।
(अरे!) क्या मिला मुझको (बतलाओ पण्डित वर!)॥ ३१-३५॥
क्या मेरे समान भी होगा पापी कोई?।
(सबके सम्मुख फूट-फूट प्रायः मैं रोई)॥

शरीर-शक्ति, धैर्य-बोधक चाल, कोई श्रेष्ठता-- इनसे रहित-- ३० कौड़ी के छोटी पक्षी-कुल में मैं पैदा हुई। रात और दिन इस कमीने पेट के लिए जंगल भर में घूमती हुई आकर, हवा में झोंका खाकर, मूर्ख मानवों के मांस के पेट का खाना बननेवाली इस छोटी कोयल के छोटे कुल में पैदा हुई-- ३५ मुझे क्या मिला? मेरे समान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पोऱ्ऱु मॊळि मुत्तुम् पुऱप्पडुदल् केट्टिलिरो ?
नीशप् पिऱप्पॊरुवर् नॆञ्जिले तोन्ऱिवरुम्
आशै तडुक्क वल्ल दाहुमो ? कामनुक्के 40
शादिप् पिऱप्पुत् तरातरङ्गळ् तोन्ऱिडुमो ?
वादित्तुप् पेच्चै वळर्त्तोर् पयनुमिल्लै
मूड मदियालो मुन्नैत् तवत्तालो
आडवर् तम्मुळ्ळै अडियाळुमैत् तॆरिन्वेन्
मानुडराम् पेय्हळ् वयिऱ्ऱुक्कुच् चोऱिडवुम् 45
कूनर्तमै ऊर्हळिले कॊण्डु विडुवदऱ्कुम्
तॆय्बमॆन्न नीरुदवि शॆय्द पिन्नर् मेनि विडाय्
अॆय्दि यिरुक्कु मिडैयिनिले पावियेन्
वन्दु मुदु कादिल् मदुरविशै पाडुवेन्
वन्दु मुदुहिल् ऒदुङ्गिप् पडुत्तिरुप्पेन् 50
वालि लडि पट्टु मन्नमहिळ्वेन् 'मा' वॆन्ऱे
ओलिडुनुम् पेरॊलियो डॊन्ऱुपडक् कत्तुवेन्
मेनियिले उण्णिहळै मेवादु कॊन्ऱिडुवेन्
कानिडैये शुऱ्ऱिक् कळनियॆलाम् मेय्न्दु नीर्
मिक्क वुण वुण्डुवाय् मॆन्ऱुशैतान् पोडुहैयिल् 55
पक्कत् तिरुन्दु पलकदैहळ् शॊल्लिडुवेन्
कालै यॆरुदरे ! काट्टिलुयर् वीररे !
ताळैच् चरणडैन्देन् तैयलॆनैक् कात्तरुळ्वीर्
कादलुऱ्ऱ वाडुहिन्ऱेन् कादलुऱ्ऱ शॆय्दियिनै
माद रुरैत्तल् वळक्क मिल्लै ऎन्ऱुरिवेन् 60

क्या कोई पापी होगा ? पंक में पंकज तथा पीब भरे मछली के (सीपी) पेट से मान्य छविमय मोती निकलता है --आपने सुना है ! क्या नीच जन्मवाले किसी के मन में प्रकट होनेवाली कामना रोकी जाने योग्य है ? कामदेव को-- ४० क्या जाति-जन्म का भेदाभेद मालूम होगा ? वाद करके बात बढ़ाने से कोई लाभ नहीं है। मूर्ख बुद्धि के कारण या पहले के तप से मैं दासी ने पुरुषों में आपको (प्रेमी के रूप में) चुन लिया। मानवरूपी भूतों के पेट को भरने की-- ४५ तथा कुब्जों को गाँवों में ले जाकर देवता के समान सहायता करके जब आप श्रान्त रहेंगे, तब पापी (कमनसीब) मैं आकर आपके कानों में मधुर गाना गाऊँगी। आकर पीठ पर दुबककर लेटी रहूँगी। ५० आपकी दुख से चिटकर मन में मुदित होऊँगी। आपके 'मा' उच्च स्वर में स्वर मिलाकर मैं ध्वनि उत्पन्न करूँगी। आपके शरीर पर के कीड़ों को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

होता है उत्पन्न पंक में पंकज (सुन्दर)।
मछली के पेट से निकलता मोती मनहर ॥
नीच व्यक्ति के किसी व्यक्ति की मनोकामना।
क्या न पूर्ण की जा सकती है, यही भावना ॥ ३६-४० ॥

जाति-जन्म का भेद-भाव क्या विदित मदन को।
बात बढ़ाने से न लाभ, (पछतावा मन को) ॥
पूर्व-जन्म-कृत तप या मूर्ख बुद्धि के कारण।
मुझ दासी ने लिया आपको पुरुषों में चुन ॥ ४१-४५ ॥

नर रूपी भूतों के पेटों को भरने-हित।
औ' कुब्जों के गाँवों में जाकर (अति प्रमुदित) ॥
देव-समान सभी की कर सहायता संतत।
जभी थकेंगे आप तभी मैं पापिन अविरत ॥
मधुर गान गाऊँगी पास आपके आकर।
और दुबककर लेटूँगी आपकी पीठ पर ॥ ४६-५० ॥

हूँगी मन में मुदित आपकी दुम से पिटकर।
और आपके 'माँ' इस स्वर से स्व-स्वर मिलाकर ॥
तेरे तन के कीड़ों को चुन-चुन मारूँगी।
(सेवा करने में न कभी हिम्मत हारूँगी) ॥
वन-खेतों में घूम-घूमकर चारा चरकर।
जभी जुगाली आप करेंगे (समुद) लेटकर ॥ ५१-५५ ॥

तब (अति-प्रेम-समेत आपके) पास बैठकर।
मैं कहानियाँ तुम्हें सुनाऊँगी अति सुन्दर ॥
वन के हो तुम श्रेष्ठ वीर हे वृषभ ! ऋषभ वर ! ।
मैं आपकी शरण आयी हूँ अबला (कातर) ॥
स्त्री-रक्षा कीजिए, प्रेम से मुरझाती हूँ।
(बार-बार मैं करुण स्वरों से चिल्लाती हूँ) ॥
मैं जानती स्त्रियों का यही स्वभाव पुरातन।
निज मुख से करतीं न कभी वे प्रेम-निवेदन ॥ ५६-६० ॥

चुनकर मारूँगी। जंगल में तथा खेतों में घूम-घूमकर चरने के बाद आप जब लेटकर जुगाली करेंगे— ५५ तब मैं पास रहकर कहानियाँ सुनाऊँगी। हे वृषभश्रेष्ठ, जगल के श्रेष्ठ बीर ! मैं आपकी शरण में आयी हूँ; स्त्री की रक्षा कीजिए। मैं प्रेम से मुरझा रही हूँ। प्रेम में फँसने की बात को स्त्रियों में स्वयं सुनाने की आदत नहीं है—मैं जानती हूँ। ६० मेरी तरह विचित्र प्रेम कोई करे तो उसके लिए स्वयं कहने के सिवा क्या और चारा है ? समान कुलवालों के बीच शरम होती है। परन्तु इस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आन्नालुम् ऍन्बोल् अबूर् वमाङ् गादल् कॊण्डाल्
तान्ना वुरैत्त लिन्रिच् चारुम् वऴियुळदो ?
ऒत्त कुलत् तवर् पाल् उण्डाहुम् वॆट्कमॆलाम्
इत्तरैयिल् मेलोर्मुन् एऴैयर्क्कु नाण मुण्डो ?
तेवर् मुन्ने अन्बुरैक्कच् चिन्बे वॆट्कम् कॊळ्वदुण्डो 65

कावलर्क्कुत् तङ्गुऱैहळ् काट्टारो कीऴ् डियार् ?
आशैतान् वॆट्कम् अऱियुमो ?" ऍन्ऱु पल
नेशुवुरै कूऱि नॆडिदु यिर्त्तुप् पॊय्क्कुयिलि
पण्डुपो लेतन्दु पाऴडैन्द पॊय्प् पाट्टै
ऍण्डि शैयुम् इन्बक् कळियेऱप् पाडियदे; 70

कादल् कादल् कादल्
कादल् पोयिऱ् कादल् पोयिऱ्
चादल् शादल् शादल्

मुदलियन् (कुयिलिन् पाट्टु)

पाट्टु मुडियुम् वरै पारऱियेन् विण्णाऱियेन्
कोट्टुप् पॆरुमरङ्गळ् कूडिनिन्ऱ कावऱियेन्
तन्नै यरियेन् तन्नैप्पोल् ऍरुदऱियेन्
पॊन्नै निहर्त्तत कुरल् पॊङ्गि वरुम् इन्ब मॊन्ऱे
कण्डेन् पडैप्पुक् कडवुळे ! नान्मुहन्ने ! 75

नीण्डे युलहु पडैत्तन्नै नी ऍन् गिन्ऱार्
नीरैप् पडैत्तु निलत्तैत् तिरट्टि वैत्ताय्
नीरैप् पऴैय नॆरुप्पिऱ्कुळिर् वित्ताय्
काऱ्ऱै मुन्ने ऊदिन्नाय् काणरिय वान्नवॆळि
तोऱ्ऱु वित्ताय् निन्ऱन् तॊऴिल् वलिमै यारऱिवार् ? 80

संसार में बड़ों के सामने दीनों को क्या वैसी शरम हो सकती है ? देवों के सामने प्रेम का निवेदन करते हुए क्या (दीन) चित्त में शरम करेगा ? ६५ क्या मालिकों का दास अपनी प्रार्थनाएँ प्रस्तुत नहीं करें ? क्या इच्छा भी कोई शरम जानती है ? इस प्रकार प्रेम के अनेक वचन कहकर, लम्बी आह भरकर, वह झूठी कोयल पहले की तरह अपना खोखला झूठा गीत आठों दिशाओं में नशा भरते हुए गाने लगी। ७० 'मुहब्बत, मुहब्बत, मुहब्बत, मुहब्बत गयी, मुहब्बत गयी तो मौत, मौत, मौत' आदि आदि (कोयल-गान) गान के पूरा होते तक मैंने न भूमि जानी, न आकाश ! टेढ़े तथा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मम सम करे विचित्र प्रेम कोई बेचारा।
तब खुद कहने के सिवाय क्या होगा चारा ? ॥
जो समान-कुल वालों में लज्जा है होती।
दीनों में वह लाज बड़ों के सम्मुख खोती ॥
(शुभ) देवों के सम्मुख करते प्रेम-निवेदन।
लज्जा की अनुभूति करेगा कौन मूढ़ जन ? ॥ ६१-६५ ॥

क्या स्वामी से दास करेगा नहीं निवेदन ?।
क्या वासना कभी लज्जा करती (अपने मन) ? ॥
इस प्रकार के प्रेम-पूर्ण वचनों को कहकर।
उस झूठी कोयल ने लम्बी आहें भरकर ॥
आठ दिशाओं में पहले की भाँति नशा भर।
गाया झूठा गीत खोखला (फिर से मनभर) ॥ ६६-७० ॥

"प्रीति चाहिए, प्रीति चाहिए, प्रीति चाहिए।
प्रीति नहीं तो मौत चाहिए, मौत चाहिए" ॥
जब तक पूरा हुआ नहीं वह सुन्दर गाना।
तब तक मैंने भूमि न जानी, व्योम न जाना ॥
टेढ़े और बड़े तरु जिसमें संस्थित नाना।
मैंने सम्मुख लगा हुआ वह बाग़ न जाना ॥
भूल गया बैल को, न अपने को ही जाना।
(मंत्र-मुग्ध-सा भूल गया, जाना-अनजाना) ॥
स्वर्ण-समान स्वरों में (समुद) उमंगनेवाला।
मैंने सुख एक ही विलोका (परम निराला) ॥ ७१-७५ ॥

(सृष्टि विधाता !) सृष्टिदेव ! (सुनलो) चतुरानन ! ।
बहुत समय से तुम करते लोकों का सर्जन ॥
जल को करते हो प्राचीन अनल में शीतल।
कहते सब जन सभी बनाये तुमने जल-थल ॥
फूंक वायु को अलख गगन को प्रकट कराया।
कौन जानता कार्य-दक्षता (औ' तव माया) ? ॥ ७६-८० ॥

बड़े तरु जिसमें खड़े थे, वह बाग न जाना। अपने को न जाना, उसी तरह बैल का भी स्मरण नहीं रहा। स्वर्ण-से स्वर में उमड़ आनेवाला सुख —एक ही मैंने देखा। हे सृष्टिदेव ! हे चतुरानन ! ७५ तुम लम्बे काल से लोक-सृजन करते आये हो। लोग कहते हैं-- तुमने जल बनाया, थल एकत्र कर रखा। जल को पुरानी आग में ठंडा कर दिया ! अनिल को फूंका पहले, फिर अदृश्य अन्तरिक्ष प्रकट कराया। तुम्हारी कार्यदक्षता को कौन जाने ? ८० चित्त को जो ग्राह्य न हों, ऐसे करोड़ों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उळ्ळन्दान् कव्व ऑरु शिऱिदुङ् गूडाद
कोळ्ळैप् पॅरियवुरुक् कॉण्ड पलकोडि
वट्ट बुरुळैहळ्पोल् वान्तत्तिल् अण्डङ्गळ्
ऍट्ट निरप्पियबै ऍप्पोदुम् ओट्टुहिन्ऱाय्;
ऍल्ला मशैविल् इरुप्पदऱ्के शक्तिहळैप् 85
पॊल्लाप् पिरमा पुहुत्ति बिट्टाय् अम्मावो !
कालम् पडैत्ताय् कडप् पदिलात् तिक्कमैत्ताय्
आलम् पलविन्निलुम् नाडोऱुम् ताम्पिऱन्दु
तोन्ऱि मैऱैयुम् तोडर्बाप् पल अन्नन्दम्
शान्ऱ उयिर्हळ् शमैत्तु बिट्टाय् नान्मुहने ! 90
शाल मिहप् पॅरिय शादन्नै काण् इःदॆल्लाम् !
तालमिशै निन्ऱन् समर्त्तुरैक्क बल्लार् यार् ?
आन्नालुम् निन्ऱन् अदिशयङ्गळ् याविनुमे
गान्ना मुदम् पडैत्त काट्चि मिह बिन्दैयडा !
काट्टु नॆडुवान्नम् कडलॆल्लाम् विन्दैयन्निल् 95
पाट्टिन्नैप् पोल् आच्चरियम् पारिन् मिशै इल्लैयडा !
पूतङ्गळॊत्तुप् पुदुमैतरल् विन्दैयन्निल्
नादङ्गळ् शेरुम् नयत्तिनुक्कु नेरामो ?
आशै तरुङ् गोडि अदिशयङ्गळ् कण्डदिले
ओशै तरुम् इन्बम् अवमैयिला इन्बमन्ऱो ! 100
शॆत्तैक् कुयिल् पुरिन्द तॆय्बिहत्तोम् पाट्टॆन्नुमोर्
वित्तै मुडिन्द वुडन्, मीट्टु मऱिबय्दि नान्
कैयिन्निल् वाळॆडुत्तुक् काळैयिन् मेल् वीशिन्नेन्
मॆय्यिऱ् पडुमुन् विरैन्दुतान् ओडिविड
बन्नक् कुयिल् मऱैय मऱ्ऱैप् पऱवैयॆलाम् 105

बहुत बड़े आकार के गोल चक्र के समान, आकाश में, (ब्रह्म-) अण्डों से भरकर तुम उनको हमेशा दौड़ाते हो। सब चलते रहें —एतदर्थ शक्ति को-- ८५ हे बड़े चालाक ब्रह्मा, तुमने उनमें भर दिया ! मैया री ! तुमने काल निर्मित किया— अलंघ्य दिशाओं को बनाया। अनेक लोकों में (लगातार) रोज पैदा होकर प्रकट तथा गायब होने का क्रम अपनानेवाले अनन्त जीवों को रच दिया। हे चतुरानन, ९० बहुत ही बड़ी साधना है यह सब ! दुनिया में तुम्हारी जैसी सामर्थ्य रखनेवाला और कौन है ? तो भी तुम्हारे सभी विस्मयों में जो गान का अमृत निर्मित है, वैसा दूसरा कोई विस्मयकारी नहीं है— अरे ! दृश्यमान विशाल आसमान, समुद्र सब विस्मय हैं, तो भी— ९५ गान के समान आश्चर्य दुनिया में दूसरा नहीं है ! भूतों का मिलकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कर पाता है ग्रहण नहीं जिनको कुछ भी जन।
जो हैं बृहदाकार अनेक कोटि हैं अनगिन ॥
गोल चक्र-सम व्योम-मध्य घूमते निरन्तर।
इस प्रकार के ब्रह्माण्डों से नभ को भरकर ॥
उनको करते रहते हो सदैव संचालित।
अरे ! कुशल विधि ! उनमें भरते शक्ति इसी हित ॥ ८१-८५ ॥

रचीं अलंघ्य दिशाएँ, तुमने काल बनाया।
अगणित जीवों को तुमने जग में उपजाया ॥
जो प्रतिदिन पैदा होते प्रतिदिन मरते हैं।
जन्म-मरण क्रम का अनुसरण किया करते हैं ॥ ८६-९० ॥

बहुत बड़ी साधना (अरे !) है यह चतुरानन !।
कौन तुम्हारे है समान (जन जग के आँगन) ॥
सभी विस्मयों बीच (अरे ! सुचतुर चतुरानन !)।
किया सरस संगीत सुधा का तुमने सर्जन ॥
ऐसा कोई और पदार्थ नहीं विस्मयकर।
विस्मयकर विस्तृत नभ, विस्मयकर है सागर ॥ ९१-९५ ॥

नहीं गान-सम जग में कोई है विस्मयकर।
विस्मयकर वस्तुएँ बनाना तत्त्व मिलाकर ॥
जो होता संगीत मुखर नादों से मिलकर।
कर सकता है उसकी समता कौन तत्त्व वर ? ॥
कोटि-कोटि कौशल (मन-) मोहक हैं (अति उत्तम)।
पर ध्वनि का सुख जग में सभी सुखों से अनुपम ॥ ९६-१०० ॥

शुष्क - पत्र - सी कोयल के कंठों से गायी।
बन्द - हुई जब मधुर गान - विद्या (मन - भायी) ॥
तब सचेत होकर मैंने तलवार उठाई।
और बैल पर बड़ी शीघ्रता-सहित चलाई ॥
असि के लगने से पहिले ही भाग गया वह।
लुप्त हो गई कोयल, मैं ही वहाँ गया रह ॥१०१-१०५॥

नयी वस्तुएँ बनना विस्मय है, तो भी स्वरों के मिलने से प्राप्त सौन्दर्य की समानता क्या वह कर सकता है ? मोहक करोड़ करामातें हैं, फिर भी उनमें जो ध्वनि सुख देती है, वह अनुपम सुख है न ! १०० सूखे पत्र-सी (तुच्छ) कोयल की दिव्य मधुर गान विद्या (आलाप) जब बन्द हुई, तब फिर से सुधि पाकर मैंने हाथ में तलवार ली और बैल पर चलायी। (तलवार के) शरीर पर लगने से पहले वह तेज दौड़ गया; वह रंगीन कोयल भी ओझल हो गयी और अन्य सारे पक्षी ! — १०५ पहले की तरह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुन्नैप् पोऱ् कॊम्बु मुनैहळिले वन्दॊलिक्क
नाणमिल्लाक् कादल् कॊण्ड नानुऱ् जिऱुकुयिलै
वीणिले तेडियपिन् वीडु वन्दु शेर्न्दु विट्टेन्

∴ ∴ ∴

अॆण्णि यॆण्णिप् पार्त्तेन् अॆदुवुम् विळङ्गविल्लै
कण्णिले नीर् तदुम्बक् कानक् कुयिलॆनक्के 110
कादऱ् कदैयुरत्तु नॆञ्जङ् गरैत्तदैयुम्
पेदै नानङ्गु पॆरिय मयल् कॊण्डदैयुम्
इन्बक् कदैयिऱ् इडैये तडैयाहप्
पुन् बऱबै अॆल्लाम् पुहुन्द वियप्पिनैयुम्
ऒन्ऱैप् पॊरुळ् शॆय्या उळ्ळत्तॆक् काम वनल् 115
तिन्ऱैनदु शित्तम् तिहैप्पुऱवे शॆय्ददैयुम्
शॊऱ्ऱैक् कुरङ्गुम् तॊळुमाडुम् वन्बॆनक्कु
मुऱ्ऱुम् वयिरिहळा मूण्ड कॊडुमैपॆयुम्
इत्तनैको लत्तिनुक्कुम् यान्वेट्कै तीरामल्
पित्तम् पिडित्त पॆरिय कॊडुमैयैयुम् 120
अॆण्णि बॆण्णिप् पार्त्तेन् अॆदुवुम् विळङ्गविल्लै
कण्णिरण्डुम् मूडक् कडुन् दुयिलिल् आळ्न्दु विट्टेन् 122

नान्गाम् नाळ्—8

नान्गाम नाळ् अॆन्नै नयवञ्जनै पुरिन्दु
वान् कादल् काट्टि मयक्किच् चदि शॆय्द
पॊय्म्मैक् कुयिलॆन्नैप् पोन्दिडवे कूऱियनाळ्
मॆय्म्मै यऱिविळन्देन् वीट्टिले माडमिशै
शित्तत् तिहैप्पुऱ्ऱोर् शॆय्है यऱियामल् 5

शाखाओं के अग्र भागों में आकर चहचहाने लगे। निर्लज्ज प्रेमी मैं भी छोटी कोयल को व्यर्थ ही खोजने के बाद घर आ गया। सोचता हूँ, सोचकर देखता हूँ; कुछ समझ में नहीं आता। आँखों में अश्रु के छलकते, गान-कोकिल का मुझे-- ११० प्रेम-कहानी सुनाकर मेरे मन को द्रवित कर देना, मुझ अबोध का बड़ा प्रेम पालना, मधुर-चरित्र के बीच बाधा के रूप में सभी तुच्छ पक्षियों के घुसने का आश्चर्य, किसी की भी परवाह न करनेवाले मन में कामना रूपी आग का, ११५ लाकर चित्त को भ्रमित कराना, कमजोर बानर और रोगी बैल का आकर मेरा बिलकुल बैरी बन जाने का क्रूर दुर्भाग्य, इतनी विचित्र स्थिति में भी मेरे प्रेम का कम न होना और पागल बनने का बड़ा दुर्भाग्य— १२० सोच-सोचकर देखा-- कुछ समझ में न आया। दोनों आँखें बन्द हुईं और मैं गहरी निद्रा में डूब गया। १२१-१२२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पहले के समान ही अन्य सभी पक्षी वर।
कलरव करने लगे बैठकर शाखाओं पर॥
मैं निलज्ज प्रेमी कोयल को व्यर्थ खोजकर।
(हार मानकर लौट) आ गया (फिर अपने) घर॥
सोच - सोचकर ये सब बातें हूँ रह जाता।
पर इसका रहस्य कुछ नहीं समझ में आता॥१०६-११०॥
आँखों में भर अश्रु, (कंठ में) गान छलकते।
प्रेम - कहानी सुना द्रवित कर हृदय ललकते॥
मुझ-सम बड़ा अबोध, प्रेम का पालन करना।
तज सबकी परवाह, कामना निज मन करना॥
मधुर चरित्र बीच (अतिशय) आश्चर्य दिखाना।
बाधा बनकर नीच पक्षियों का आ जाना॥१११-११५॥
खाकर आग चित्त को (अपने) भ्रमित कराना।
फिर उस दुर्बल वानर का (सहसा) आ जाना॥
फिर रोगी बैल का (नया वह रूप दिखाना)।
इन दोनों का आकर मम वैरी बन जाना॥
क्रूर भाग्य! कामना न थी फिर भी मुरझाई।
है दुर्भाग्य कि पागल-सी मम गती बनाई॥११६-१२०॥
सब प्रकार से सोचा नहीं समझ में आया।
बन्द हुए दृग, घनी नींद के बीच समाया॥१२१-१२२॥

चौथा दिन—८

ऊँचा प्रेम दिखाकर मेरे साथ दग़ा कर।
द्रोह किया जिसने विमोह में मुझे फसा कर॥
उस झूठी कोयल ने कहा जभी आने को।
वह चौथा दिन आया (मुझको उकसाने को)॥
खोकर सच्चा ज्ञान भ्रमित (अति) मन में होकर।
छत से आता घर में, घर से जाता छत पर॥ १-५ ॥

चौथा दिन—८

चौथा दिन—मेरे साथ दगा करके ऊँचा प्रेम दिखाकर मुझे मोह में डालकर, जिसने बड़ा द्रोह किया, उस झूठी कोयल ने जब आने को कहा था, वही यह दिन था। सच्चा ज्ञान खोया—घर की छत पर मन में भ्रमित होकर, किंकर्तव्यविमूढ़ होकर मैं ५ दग़ाबाज़ कोयल ने जो-जो मेरा अपमान किया, वह सब फिर से स्मरण करते,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅत्तुक् कुयिलॅन्ऩै अॅय्दुवित्त ताळ्च्चियॅलाम्
मीट्टुम् निऩैत्तङ्गु वीऱ्ऱिरुक्कुम् पोळ्दिऩिले
काट्टुत् तिशैयिलॅन् कण्णिरण्डुम् नाडियवाल्
बाऩत्ते आङ्गोर् करुम्बऱवै वन्दिडवुम्
यान्दऩैक् कण्डे; इतुनम् पॉय्क्कुयिलो 10
अॅन्ऱु तिहैत्तेन्; इरुन्दॊलैक्के निन्ऱदऩाल्
नन्ऱु वडिवम् तुलङ्गविल्लै; नाडु मऩम्
आङ्गदऩै विट्टुप् पिरिवदऱ्कु माहविल्लै
ओङ्गुम् तिहैप्पिल् उयर्माडम् विट्टुऩान्
बीदियिले वन्दु निन्ऱेन् मेऱ्ऱिशैयिल् अव्वुरुवम् 15
शोदिक् कडलिले तोन्ऱुम् करुम्पुळ्ळियॅऩक्
काणुदलुम् शऱ्ऱे गडुहि यरुहे पोय्
नाणमिलाप् पोय्क्कुयिलो अॅन्बदऩै नन्गऱिवोम्
अॅन्ऱु करुत्तुडऩै यान् विरैन्दु शॅन्ऱिडुङ्गाल्
निन्ऱ पऱवैयुन्दान् नेराहप् पोयिऩदाल् 20
यान् निन्ऱाल् तान् निऱ्कुम् यान् शॅन्ऱाल् तान्शॅल्लुम् !
मेऩि नन्गु तोन्ऱ् अरुहिऩिले मेवादु
वाऩिलदुतान् वळि काट्टिच् चॅन्ऱिडवुम्
यान् निलत्ते शॅन्ऱेन् इरुदियिले मुऩबु नाम्
कूऱियुळ्ळ माञ्जोलै तन्ऩैक् कुरुहियन्द 25
ऊऱिलाप् पुळ्ळुमद नुळ्ळे मरॅन्ददुवाल्
माञ्जोलैक् कुळ्ळे मदियिलि नान् शॅन्ऱाङ्गे
आञ्जोदि वॅळ्ळम् अलैयु मॉरु कॉम्बरिन् मेल्
शिन्ऩक् करुङ्गुयिलि शॅव्वऩै वीऱ्ऱिरुन्दु
पॉन्ऩङ् गुळलिन् पुदिय ऑलि तऩिले 30

हुए बैठा था। तब जंगल की दिशा में मेरी आँखें कुछ खोजने लगीं। वहाँ आकाश में एक काली चिड़िया आयी। मैंने उसे देखकर सोचा-- क्या वह हमारी झूठी कोयल तो नहीं है ? १० मैं सोचकर भ्रमित हुआ। बहुत दूरी पर था, इसलिए रूप साफ़ नहीं दिखा; उसे चाहनेवाला मेरा मन उसको छोड़ने को तैयार न हुआ। बढ़ते भ्रम के साथ मैं ऊँची छत छोड़कर सड़क पर आया। पश्चिम दिशा में— १५ ज्योति-सागर में एक काले धब्बे के समान उसे देखकर, मैं तेज़ जाकर पास पहुँचा। मैं इस विचार से तेज गति से जाने लगा कि ठीक पहचान लें— क्या यह वह निर्लज्ज झूठी कोयल (तो नहीं) है। तो अब तक खड़ी रही वह कोयल सीधे (दूर) जाने लगी। २० मैं खड़ा रहा, तो वह भी रुकी; मैं चलने लगा, तो वह भी बढ़ चली। ऐसा पास तो न

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दग़ाबाज़ कोयल ने मम अपमान किया था।
उस सबका फिर से मैंने अब ध्यान किया था॥
किंकर्तव्य-विमूढ़ बना बैठा था छत पर।
लगे खोजने मेरे दृग कुछ वन के भीतर॥
नभ में काली चिड़िया वहाँ एक थी आयी।
उसे देखकर मेरे मन में बात समायी॥
क्या यह मेरी अरे! वही झूठी कोयल है?।
(बार-बार जो बना रही मुझको पागल है)॥ ६-१०॥
(यही) सोचकर (अपने मन में) हुआ (अति) भ्रमित।
बहुत दूर थी साफ़ नहीं होती थी लक्षित॥
छोड़ नहीं पाया उसको मेरा चाहक मन।
भ्रम-वश छत से उतर सड़क पर किया पदार्पण॥ ११-१५॥
पश्चिम ओर (ज्वलित था विमल) ज्योति का सागर।
काले धब्बे के समान उसमें कुछ लखकर॥
पहुँचा उसके पास तेज गति से मैं चलकर।
झूठी कोयल है निर्लज्ज वही, यह लखकर॥
उस कोयल की ओर बढ़ा तेजी से मैं जब।
सीधे जाने लगी (अरे!) वह कोयल (भी) तब॥ १६-२०॥
खड़ा हुआ मैं तो वह भी रुक गई (ठिठककर)।
मैं (जब) आगे बढ़ा, बढ़ी तो वह भी चलकर॥
दिखे साफ़ तन, इतना पास नहीं वह आती।
नभ में उड़ती चली जा रही मार्ग दिखाती॥
चला जा रहा मैं (उसके पीछे) पृथ्वी पर।
पूर्व-प्रवर्णित आम्र-विपिन में पहुँची जाकर॥ २१-२५॥
वहाँ पहुँचकर (अकस्मात झलकी) फिर ओझल।
बेवकूफ़-सा लगा देखने तब (मैं आकुल)॥
ज्योति-बाढ़ से दमक रही, देखी तरु-डाली।
बैठी वहाँ शान्ति से छोटी कोयल काली॥
श्रेष्ठ बाँसुरी के-से भरने लगी नवल-स्वर।
गाने लगी पुरानी झूठी प्रेम-कथा फिर॥ २६-३०॥

आयी कि उसका शरीर स्पष्ट रूप से दिखायी दे, पर वह आकाश में उड़कर मार्ग दिखाती जा रही थी और मैं भूमि पर चलता रहा। आखिर पहले हमने जो कहा था, उस आम्रवन में जाकर वह— २५ स्वच्छन्द पक्षिणी उसमें ओझल हो गयी। आम्रवन में मैं बेवकूफ़ भी गया और जिस डाल पर ज्योति की बाढ़-सी दिखायी दे रही थी, उस पर छोटी नीली कोयलिया शान से बैठी हुई श्रेष्ठ बाँसुरी की-सी नवध्वनि में— ३०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पण्डैप् पॊय्क्कादर् पळम्बाट्टैत् तान् पाडिक्
कॊण् डिरुत्तल् कण्डेन् कुमैन्दे ऍदिरे पोय्
'नीशक् कुयिले निलैयऱियाप् पॊय्म्मैये
आशैक् कुरङ्गिनैयुम् अन्बार् ऍरुदिनैयुम्
ऍण्णिनी पाडुम् इळिन्द पुलैप्पाट्टै 35
नण्णि यिङ्गु केट्क नडत्तिवन्दाय् पोलुमॆन्नै'
ऍन्ऱु शिनम् पॆरुहि एदेदो शॊल्लुरैत्ते
कॊन्ऱु विड नॆञ्जिऱ् कुरित्तेन् ईङ्गिदऱ् कुळ्
वञ्जक् कुयिलि मनत्तै इरुम् बाक्किक् 40
कण्णिले पॊय्न्नीर् कडकडॆनत् तानूऱ्ऱप्
पण्णिशै पोलिन् कुरलाल् पावियदु कूऱिडुमाल्
'ऐयनै ऍन्नुयिरित् आशैये ! एळैयॆनै
वैयमिशै वॆक्कत् तिरुवुळमो ? मऱ्ऱैनैये
कॊन्ऱुविडच् चित्तमो ? कूऱीर् ऒरु मॊळियिल् 45
अन्ऱिऱ् चिरुपऱवै आण्पिरिय बाळादु
आयिऱुतान् वॆम्मैशॆयिल् नाण्मलर्क्कु बाळ्वुळदो
तायिरुन्दु कॊन्ऱाल् शरण्मदलैक् कॊन्ऱुळदो ?
तेवर् शिनन्दु विट्टाल् शिऱ्ऱुयिर्हळ् ऍन्नाहुम् ?
आवऱ् पॊरुळे ! अरशे ! ऍन् आरियरे ! 50
शिन्दयिल्नीर् ऍन्मेऱ् चिनङ्गॊण्डाल् मायन्दिडुवेन्
बॆन्दळलिल् वीळ्वेन् विलङ्गुहळिन् वाय्प्पडुवेन्
कुऱ्ऱम्नीर् ऍन्मेऱ् कॊणर्न्ददनै यानऱिवेन्
कुऱ्ऱनुमैक् कूऱहिलेन्; कुऱ्ऱमिलेन् यानम्म !
पुन्मैक् कुरङ्गैप्पोदि माट्टैनान् कण्डु 55

पुरानी झूठी प्रेमगाथा-गान कर रही थी। —यह देखा मैंने। दिल मथित हो उठा। सामने जाकर मैंने कहा-- री नीच कोयल, सच्ची स्थिति न जान सकनेवाली मिथ्या, प्यारे वानर को तथा प्रेमी बैल को सोचकर जो गाती हो, उस नीच गान को— ३५ मुझे सुनाने के लिए इधर ले आयी क्या ? क्रुद्ध होकर मैंने ऐसा ही कुछ कहा और उसका वध करने की बात सोची। फिर मेरा मन आर्द्र हो गया। इतने में वंचक पापी कोयल ने मन को लोहा बनाकर-- ४० आँखों में से झूठे आँसुओं को टप-टप टपकाते हुए, रागमय संगीत के समान अपने स्वर में कहा : 'स्वामी ! मेरी जान के प्रेम ! मुझ ग़रीब को क्या दुनिया में रहने देने का अभिप्राय है या मुझे मार देने का विचार है ? बोलें, एक शब्द में। ४५ मादा अन्ऱिल (बुलबुल या क्रौंच ?) नर बुलबुल के विरह में जी नहीं सकती। सूर्य जला दे तो ताज़े फूल का जीवन क्या बना रहेगा ? माता स्वयं वध कर दे, तो आश्रित शिशु के पास कुछ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह लखकर हो गया हमारा मन (अति) विह्वल।
सम्मुख जाकर बोला, "अरी! नीच-तम! कोयल॥
तू झूठी है, तू क्या सच्ची स्थिति को जाने।
वानर और बैल को तू निज प्रेमी माने॥ ३१-३५॥
उन्हें मानकर प्रेमी जो गाती हो गाने।
ले आयी हो मुझे क्या वही गान सुनाने"॥
इस प्रकार कुछ कह, मैंने अति क्रोधित होकर।
उसे मारने की सोची निज मन के भीतर॥
फिर मेरा मन आर्द्र हो गया (अतिशय कोमल)।
मन को लोह बनाकर बोली वंचक कोयल॥ ३६-४०॥
आँखों से झूठे आँसू टप-टप टपकाती।
बोली पापिन राग-युक्त संगीत सुनाती॥
"स्वामी! मेरे प्राणों के (तुम) प्रेम (मनोहर)।
मुझ ग़रीब को रहने दोगे क्या जग-भीतर?॥
या (फिर) मुझे मार देने का (ही) विचार है?॥
एक शब्द में कहें (आप का मन उदार है!)॥ ४१-४५॥
नर-वियोग में जी न सकेगी मादा बुलबुल।
सूर्य जला दे जल जायेगा सभी कुसुम-कुल॥
आश्रित शिशु का वध कर दे यदि खुद ही माता।
तो फिर जग में कौन बनेगा उसका त्राता?॥
यदि देवता कुपित हो जाएँ (जग-जीवों पर)।
तो क्या कर लेंगे (भला, बताओ) अल्प (-शक्ति) नर॥ ४६-५०॥
मेरे प्रेम-पात्र! मेरे तुम प्राण भूपवर!।
आप करें यदि कोप सुनिश्चित जाऊँगी मर॥
(हिंसक) पशुओं के मुख में मैं पड़ जाऊँगी।
तपती ज्वाला में गिर करके जल जाऊँगा॥
जो अपराध समझते मुझ पर, जान रही हूँ।
नहीं आपका दोष, नाथ! मैं मान रही हूँ॥
पर मैं हूँ निर्दोष (करें विश्वास हमारा)।
(छोड़ आप को मुझे न कोई सचमुच प्यारा)॥ ५१-५५॥

(उपाय) क्या रहेगा? देवता लोग गुस्सा करें, तो छोटे जीव क्या करेंगे? प्यार के पात्र! राजा! मेरे प्यारे प्राण! ५० चित्त में आप कोप करें, तो मैं मर जाऊँगी। मैं तपती आग में गिरूँगी। जानवरों के मुख में पड़ जाऊँगी। आप मुझे दोष लगाने आये हैं —यह मैं जानती हूँ। मैं आपको कोई दोष नहीं लगाती!

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मॅन्मैयुऱक् कादल् विळैयाडिनेन् ऍन्ऱीर्
ऍन् शॊल्हेन् ! ऍङ्ङनुय्वेन् ? एदुशॅय्हेन्, ऐयने;
निन्शॊल् मऱुक्क नॅऱियिल्लै ! आयिडिनुम्
ऍन्मेल् पिऴैयिल्लै; यारिदनै नम्बिडुवार्
निन्मेल् शुमैमुऴुदुम् नेराहप् पोट्टुविट्टेन् 60
वॅव्विदिये ! नी ऍन्नै मेम्बाडुऱच् चॅय्दु
शॅव्विदिनिङ् गॅन्नै ऍन्ऱन् वेन्दनोडु शेर्त्तिडिनम्
अल्लादन् वार्त्तै अवर् शिऱिदुम् नम्बामे
पुल्लाह ऍण्णिप् पुऱक्कणित्तुप् पोय्विडनान्
अक्कणत्ते तीयिल् अळिन्दुविड नेरिडिनुम् 65
ऍक्कदिक्कुम् आळावेन्; ऍन् शॅय्केन् ? वॅव्विदिये ! 66

कुयिल् तन्नदु पूर्व जन्मक कदैयुरैत्तल्—9

'देवने ! ऍन्नरुमैच् चॅल्वमे ! ऍन्नुयिरे !
पोवदन् मुन्नॊन्ऱु पुहल्वदनैक् केट्टरुळ्वीर् !
मुन्नम् ऒरुनाळ् मुडिनीळ् पॊदियमलै
तन्नरुहे नानुम् तनियेयोर् शोलै तनिल्
माङ्गिळैयि लेदो मनदिलंणणि वीऱ्ऱिरुन्देन् 5
आङ्गुवन्दार् ओर् मुनिवर् आरो पॅरियरॅन्ऱु
पादत्तिल् वीळ्नदु परविनेन्; ऐयरॅनै
आदरित्तु वाळ्त्ति अरुळिनार् मऱ्ऱदन्पिन्
'वेद मुनिवरे मेदिनियिल् कीळ्प्पऱवेच्
चादियिले नान् पिऱन्देन् शादिक् कुयिल्हळैप् पोल् 10

पर मैया, मैं निर्दोष हूँ। तुच्छ वानर तथा भारवाहक बैल को देखकर— ५५ मृदुल प्रेम का प्रदर्शन करते हुए मैंने केलि की ! यह आप कहते हैं ! क्या कहूँ ? कैसे बचूँ ? क्या करूँ, स्वामी ? आपकी बात को न मानने का मार्ग नहीं है। तो भी मेरा इसमें कोई दोष नहीं है। पर कौन विश्वास करेगा ? अब आप पर मैं सारा भार सौंप डाल देती हूँ। ६० हे क्रूर नियति ! तुम चाहो तो मुझे बड़ाई देकर ठीक तरह से मेरे राजा के साथ मुझे मिला दो या वे मेरी बात का कतई विश्वास न करके मुझे तृण समझकर छोड़ जायँ ! --पर यदि ऐसा हो जाए तो उसी क्षण मैं आग में कूदकर मर जाऊँगी। चाहे जैसा हो ! ६५ मैं किसी भी गति के लिए तैयार हूँ। हे क्रूर भाग्य ! मैं क्या करूँ ? ६६

कोयल का अपने पूर्वजन्म का चरित्र सुनाना—९

हे देवता ! मेरे प्यारे धन ! मेरे प्राण ! जाने से पहले एक बात कहूँ ? उसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'बैल भार-वाहक को औ' वानर को लखकर।
मृदुल प्रेम प्रकटा, को मैंने केलि (मनोहर)'॥
यह कहते हैं आप, कहूँ क्या? (और) करूँ क्या?।
कैसे बचूँ? (अरे! कैसे अपवाद हरूँ क्या?)॥
हे स्वामी! क्यों झूठी कह दूँ बात आपकी।
पर मैं दोषी नहीं, (न मन में छाप पाप की)॥
करें आप विश्वास (करें या घोर अनादर)।
डाल रही हूँ अब मैं सारा भार आप पर॥ ५६-६०॥
अरे! क्रूर विधि! तुम चाहो तो गौरव देकर।
भली भाँति से मुझे मिला दो मेरा प्रियवर॥
करें न कुछ विश्वास या कि मेरी बातों पर।
अथवा मुझे छोड़ दें तृण के तुल्य समझकर॥
यदि ऐसा कुछ हुआ (न तो मैं जी पाऊँगी)।
कूद आग में उसी समय मैं मर जाऊँगी॥ ६१-६५॥
सभी दशाओं को सहने को हूँ मैं प्रस्तुत।
अरे! क्रूर विधि! मैं क्या करूँ (प्रबल है क़िस्मत)"॥ ६६॥

कोयल का अपने पूर्व-जन्म का चरित्र सुनाना—९

मेरे देव! प्राण मेरे! मेरे प्यारे धन!।
जाने से पहले सुन लो यह बात (शान्त-मन)॥
उच्च पोदिहै— पर्वत-पास एक था उपवन।
आम्र-डाल पर बैठी सोच रही थी कुछ मन॥ १-५॥
इतने में ही आये एक महर्षि वहाँ पर।
"यह हैं कोई महापुरुष" —यह (हृदय) सोचकर॥
उनके चरणों में गिर मैंने किया निवेदन।
दिखा सहानुभूति आशीष दिया (अति पावन)॥
बोली मैं— "देवर्षि! अरे इस भू-मंडल पर।
क्षुद्र पक्षि-कुल में उत्पन्न हुई हूँ आकर॥ ६-१०॥

सुन लीजिए। पहले कभी उच्च शिखर 'पोदिहै' पर्वत के पास मैं अकेली एक बाग में आम्रशाखा पर, कुछ सोचती हुई बैठी थी। ५ वहाँ आये एक महर्षि। कोई महात्मा है --यह सोचकर मैंने उनके चरणों में गिरकर निवेदन किया। उस ब्राह्मण ने सहानुभूति से मुझे आशिश दिया। उसके बाद मैंने उनसे कहा— 'हे वेद-ऋषि! मेदिनी पर मैं क्षुद्र पक्षी-कुल में पैदा हो गयी हूँ। फिर भी मैं जाति की कोयलों के समान-- १० नहीं रही। मेरी प्रकृति कुछ भिन्न है और सारे जीवों की बोलियाँ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इल्लामल् अॅन्ऱन् इयऱ्कै पिरिवाहि
अॅललार् मॉळियुम् अॅनक्कु विळङ्गुवदॅन् ?
मानुडर्पोल् शित्तनिलै वाय्त्तिरुक्कुञ् जॅय्दियॅन् ?
यानुणरच् चॉल्वीर्' अॅन वणङ्गिक् केट्कैयिले
कूऱुहिन्ऱार् ऐदर्— 'कुयिले ! केळ् मुऱ्पिऱप्पिल् 15
वीऱुडैय वॅन्दॉळिलार् वेडर् कुलत् तलैवन्
वीर मुरुहनॅनुम् वेडन् महळाहच्
चेर वळनाट्टिल् तॅन्पुऱत्ते ओर् मलैयिल्
वन्दु पिऱन्दु वळर्न्दाय् नी ! नल्लिळमै
मुन्दु मऴहिनिलै मून्ऱु तमिऴ् नाट्टिल् 20
यारुम् निनक्कोर् इणैयिल्लै अॅन्ऱिडवे
शीरयर निन्ऱाय्; शॅळुङ्गान वेडरिलुन्
मामन् महनॉरुवन् माडनॅनुम् पेर्कॉण्डान्
कामन् कणॅक्किरैयाय् निन्ऱऴहैक् कण्डुरुहि
निन्ऱै मणक्क नॅडुनाळ् विरुम्बि अवन् 25
पॉन्ऱै मलरैप् पुदुत्तेनैक् कॉण्डुनक्कु
नित्तम् कॉडुत्तु निनैवॅल्लाम् नीयाहच्
चित्तम् बरुन्दुहैयिल् तेमॉळिये नीयवनै
मालैयिड वाक्कळित्ताय् मैयलि नालिल्लै; अवन्
शाल बरुन्दलु सहिक्कामल् शॉल्लि विट्टाय् 30
आयिडैये निन्ऱन् अऴहिन् पॅरुङ्गीर्त्ति
तेयमेङ्गुन् वान्परवत् तेन्मलैयिन्निल् शार्विनिलोर्

मुझे मालूम होती हैं। मानवों के समान मेरी चित्त-स्थिति है। —यह क्यों ? मुझे समझाकर कहें।' मैंने निवेदन किया। तब आर्य ने कहा— "री कोयल, सुनो ! पूर्व जन्म में— १५ शक्तिमान भयंकर कार्यवाले व्याधों के नायक 'वीर मुरुगन' नामक व्याध की पुत्री बनकर 'चेर' नामक समृद्ध देश में, दक्षिण के पर्वत-प्रदेश में तुम आ जन्मी और पली। श्रेष्ठ तरुणाई के कारण बढ़ते सौंदर्य में, तीनों तमिऴ् प्रदेशों में— २० तुम्हारी टक्कर का कोई नहीं था। इस प्रकार तुम गौरव के साथ बढ़ती रही। घने जंगल के व्याधों में तुम्हारे मामा का 'माडन्' नामक पुत्र था। वह कामदेव के बाण का शिकार बन गया। तुम्हारी सुन्दरता देखकर वह द्रवित हुआ। तुमसे विवाह करना चाहकर, बहुत दिन से— २५ वह स्वर्ण, पुष्प, ताजा मधु आदि लाकर तुम्हें रोज देता था। तुम्हारी ही याद में विक्षुब्ध था। तो मधुर-भाषिणी तुमने उसे (वर-) माला पहनाने का वादा किया। यह प्रेम के कारण नहीं। पर उसका गहरा दुख तुम सह नहीं सकी थी। इसलिए तुमने ऐसा वादा किया था। ३० उस बीच तुम्हारे सौन्दर्य का बड़ा यश देश भर में व्याप्त हो गया। मधु-पर्वत के पार्श्व में एक व्याघराज था, जो धनी तथा वीर था। वह ऐसी करतूतें करता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

है मेरा न स्वभाव अन्य कोयलिओं के सम।
उन सबसे कुछ भिन्न प्रकृति है मेरी (अनुपम)॥
सारे जीवों की बोली मुझको सुविदित है।
और मानवों के समान मम चित्त-स्थिति है॥
ऐसा क्यों है? मुझे बतायें (सब) समझाकर"।
मैंने पूछा (उन महर्षि से शीश झुकाकर)॥
तब महर्षि बोले (मेरी बातों को सुनकर)।
कोयल! सुनो (दे रहा तव प्रश्नों का उत्तर)॥ ११-१५॥
दक्षिण पर्वत के प्रदेश में शोभित सुन्दर।
अति समृद्धिमय चेर देश है बसा मनोहर॥
शक्तिमान भीषण-कर्मा व्याधों का नायक।
एक व्याध था बसा वहाँ पर 'मुरुगन' नामक॥
तुम उत्पन्न हुई थीं उसकी पुत्री बनकर।
लालन-पालन हुआ तुम्हारा सभी वहीं पर॥
हुई तरुण तुम बढ़ी तुम्हारी अति सुन्दरता।
त्रि-तमिळ में मिलती थी नहीं तुम्हारी समता॥ १६-२०॥
तुम श्रेष्ठता-बीच थीं वहाँ सभी से बढ़कर।
घने जंगलों बीच बसे थे व्याध भयंकर॥
माडन नामक तव मामा का पुत्र मनोहर।
काम-बाण का लक्ष्य बन गया तुम्हें देखकर॥
द्रवित हो गया देख तुम्हारी छटा (मनोहर)।
तुमसे ही विवाह करने का (शुभ) विचार कर॥ २१-२५॥
बहुत दिनों तक स्वर्ण, पुष्प, ताज़ा मधु लाकर।
प्रेम-समेत तुम्हें देता था वह प्रति-वासर॥
सदा तुम्हारी (मधुर) याद में रहता व्याकुल।
हे मधु-वाणी! उसे देखकर तुमने विह्वल॥
वर-माला पहिनाने का प्रण किया (समुज्ज्वल)।
तुम्हें दया आ गई देख उसको (अति) आकुल॥
नहीं प्रेम के कारण वादा किया गया यह।
उसका गहरा दुःख देख तुम नहीं सकीं सह॥ २६-३०॥
इसी बीच तव सुन्दरता की ख्याति मनोरम।
व्याप्त हो गई सब देशों में (अतिशय अनुपम)॥
मधु पर्वत के पास (एक वन था अति सुन्दर)।
व्याधराज था बसा वहाँ पर एक सबलतर॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बेडर्कोत् शॅल्वमुम् नल्वीरमुमे तानुडैयान्
नाडनैत्तुम् अञ्जि नडुङ्गुञ् जॅयलुडैयान्
मोट्टैप् पुलियनुन्दन् मूत्त महनान 35
नॅट्टैक् कुरङ्गनुक्कु नेरान पॅण्वेण्डि
निन्नै मणम् पुरिय निच्चयित्तु निन्नप्पन्
तन्नै यणुहि 'निन्नोर् तैयलैयन् पिळ्ळैक्कुक्
कण्णालञ् जॅय्युम् करुत्तुडैयेन्' ऍन्ऱिडलुम्
ऍण्णाप् पॅरुमहिळ्च्चि ऍय्दिये निन्तन्दै 40
आङ्गे उडम्बट्टान् आऱिरण्डु नाट्कळिले
पाङ्गा मणम्पुरियत् तायुरुदि पण्णि विट्टार्
पन्निरण्डु नाट्कळिले पावैयुनैत् तेन्मलैयिल्
अन्नियन् कॊण्डेहिडुवान् ऍन्नुम् अदुकेट्टु
माडन् मनम् पुहेन्दु मऱ्ऱैनाळ् उन्नै वन्दु 45
नाडिच् चिनत्तुडने नाना मॊळिन कऱ
नीयुम् अवनिडत्ते नोण्ड करुणैयिनाल्
'कायुञ् जिनन्दविर्प्पाय् माडा कडुमैयिनाल्
नॅट्टैक् कुरङ्गनुक्कुप् पॅण्डाह नेर्न्दालुम्
कट्टुप् पडिअवर्तङ् गावलिऱ्पोय् वाळ्न्दालुम् 50
मादमॊरु मून्ऱिल् मरुमम् शिलशॅय्दु
पेदम् विळैवित्तुप् पिन्निङ्गे वन्दिडुवेन्
तालिदनै मोट्टुमवर् तङ्गळिडमे कॊडुत्तु
नालिरण्डु मादत्ते नायहना निन्ऱनैये
पॅऱ्ऱिडुवेन्; निन्निडत्ते पेच्चुत् तवरुवनो ? 55
मऱ्ऱिदनै नम्बिडुवाय् माडप्पा' ऍन्ऱुरैत्ताय्
कादलि नालिल्लै करुणैयाल् इःदुरैत्ताय्
मादरशाय् वेडन्महळान मुऱ्पिऱप्पिल्

था कि सारा देश उससे डरता था। 'मुण्डा सिरवाला' व्याध अपने ज्येष्ठ पुत्र-- ३५ 'ऊँचा वानर' के लिए एक अच्छी वधू चाहता था। तुमसे उसका विवाह कराने का निश्चय करके वह तुम्हारे पिता के पास आया और बोला-- तुम्हारी इकलौती पुत्री का मेरे पुत्र से ब्याह करा दो। उसके यों कहते ही अचिंत्य आनन्द पाकर तुम्हारे पिता ने, ४० स्वीकृति दे दी! 'छः के दो' (बारह) दिनों में ठीक तरह से विवाह कराने का निर्णय कर लिया। बारह दिनों में प्रतिमा (-सी) तुमको मधु पर्वत पर कोई पराया ले जायगा— ऐसा समाचार सुनकर माडन् चिंतित हो गया। दूसरे दिन उसने आकर, ४५ तुमको खोजकर क्रोध से नाना बातें कहीं! तुमने भी बड़ी करुणा के कारण उससे (कहा)-- माडा! यह जलानेवाला क्रोध छोड़ दो। जबरदस्ती के कारण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

धनी, वीर था, सभी काँपते उससे थरथर।
ऐसी करतूतों वाला था व्याध - राज वर॥
व्याध - राज वह था प्रसिद्ध "मुण्डा सिर वाला"।
"ऊँचा वानर" उसका ज्येष्ठ पुत्र (मतवाला) ॥ ३१-३५ ॥
'ऊँचा वानर' के हित अच्छी बधू चाहकर।
तुमसे निज सुत के विवाह की अभिलाषा कर॥
व्याध - राज तव - पिता - पास वह दौड़ा आया।
'मम सुत से पुत्री विवाह दो', यह समझाया॥
सुनकर उसके वचन पिता ने प्रमुदित होकर।
किया ब्याह स्वीकार प्रेम से सहमति देकर॥ ३६-४० ॥
बारह दिवसों बाद करूँगा मैं यह परिणय।
व्याध - राज से इस प्रकार बतलाया निर्णय॥
समाचार यह सुनकर माडन चिंतित होकर।
तुम्हें खोजकर मिला दूसरे ही दिन आकर॥
"बारह दिन में ही प्रतिमा-सी तुम्हें ब्याह कर।
ले जायेगा तुम्हें पराया मधु - पर्वत पर" ॥ ४१-४५ ॥
तुम्हें सुनाईं नाना बातें क्रोधित होकर।
तुमने अति करुणा से उससे कहे वचन (वर)॥
माडा! छोड़ो तुम यह जलता क्रोध भयंकर।
पत्नी मुझे बलात् बनाता लंबा वानर॥
रहना पड़े मुझे पहरे में उसके बँधकर।
तो भी मैं तव-ढिग आऊँगी पाकर अवसर॥ ४६-५० ॥
कूट - नीति करके मैं तीन मास के भीतर।
आ जाऊँगी पास तुम्हारे, वैमनस्य -कर॥
मंगल - सूत्र उसी के हाथों बीच सौंपकर।
तुम्हें बना लूँगी पति चार मास के अन्दर॥
तुमसे वादा नहीं तोड़ सकती मै (प्रियवर!)।
कहती हूँ विश्वास करो (माडन!) तुम मुझ पर॥ ५१-५५ ॥
नहीं प्रेम के कारण तुमने कहा वचन यह।
फिर उस पर करुणा कर तुमने कहा वचन वह॥

मुझे ऊँचे वानर की पत्नी बन जाना पड़े, बन्धन में जाकर उनके पहरे में रहना पड़े, तो भी, ५० तीन मास में कुछ कूट काम करके, (मत-)भेद बनाकर मैं इधर आ जाऊँगी। ताली (मंगल-विवाह-सूत्र) को फिर से उनके ही हाथ सौंपकर दो चार महीनों में तुमको ही पति बना लूँगी। तुमसे किया वादा क्या मैं तोड़ दूँगी? ५५ तुमने कहा— विश्वास करो। हाँ, यह प्रेम के कारण नहीं, पर करुणा से कहा! (हे स्त्री-रानी! व्याधपुत्री के पूर्व-जन्म में लोग तुम्हारा नाम 'छोटी कोयलिया' बताते थे।)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शिन्नक्कुयिलि यॆन्ऱु शॆप्पिडुवऱ् निन्नामम्
पिन्नर्च् चिलदिनङ्गळ् शॆन्ऱदन्पिन् पॆण्कुयिलि 60
निन्नॊत्त तोऴियरुम् नीयुमॊरु मालैयिलै
मिन्नऱ् कॊडिहळ् विळैयाडु दल्पोलै
काट्टिनिडैये कळित्ताडि निऱ्कैयिलै
वेट्टैक्कॆन वन्दान् वॆल्वेन्दन् शेरमान्
तन्नरुमै मैन्दन्; तनिये तुणैपिरिन्दु 65
मन्नवन्ऱन् मैन्दनॊरु मानैत् तॊडर्न्दुवरत्
तोऴियरुम् नीयुम् तॊहुत्तु निन्ऱे आडुवदै
वाऴियवन् कण्डु विट्टान् मैयल् करै कडन्दु
निन्नैत् तन्दाक्क निच्चायित्तान्; मादु नी
मन्नवनैक् कण्डवुडन् मा मोहङ् गॊण्डु विट्टाय् 70
निन्नैयवन् नोक्किनान्; नीयवनै नोक्कि निन्ऱाय्
अन्नदॊरु नोक्किनिलै आवि कलन्दु विट्टीर्
तोऴियरुम् वेन्दन् शुडर्क् कोलन् दान् कण्डे
आऴि यरशन् अरुम्बुदल्वन् पोलुमॆन्ऱे
अञ्जि मरैन्दु विट्टार् आङ्गवनुम् निन्निडत्ते 75
'वञ्जित् तलैवन् महन्यान्!' ऎन वुरैत्तु
'वेडर् तवमहळे! विन्दै यऴहुडैयाय्!
आडवनात् तोन्ऱि यदन् पयनै इन्ऱु पॆऱ्ऱेन्
कण्डदुमे निन्मिशै नान् कादल् कॊण्डेन्' ऎन्ऱिशैक्क
मण्डु पॆरुङ्गादल् मनत्तडक्कि नी मॊऴिवाय् 80
'ऐयनै! उङ्गळ् अरण्मनैयिल् ऐन्नूऱु
तैयल रुण्डाम्; अऴहिल् तन्नि हरिल् लादवराम्

फिर कुछ दिन बीतने के बाद, हे स्त्री कोयल! ६० तुम्हारी बराबरी की सहेलियाँ और तुम एक शाम को जंगल में अठखेलियाँ करती रहीं। जैसे विद्युल्लताएँ ही खेल रही हों। तब आखेट के लिए आया, विजयी राजा 'चेरमान' का प्यारा पुत्र। अकेले, साथियों से छूटकर, ६५ वह राजकुमार एक हिरण के पीछे दौड़ा आया। उस चिरजीव ने सखियों और तुमको मिलकर खेलते हुए देख लिया। उसका प्रेम सीमा पार कर गया। उसने तुमको अपना बना लेना चाहा। तुम स्त्री भी राजा को देखकर बहुत मोहित हो गयी। ७० तुमको उसने देखा और तुमने भी उस पर दृष्टि डाली। उस (चार आँखोंवाली क्रिया में) तुम दोनों के प्राण एक हो गये। सखियाँ भी राजा का तेजोमय रूप देखकर और उसको चक्रधर राजा का पुत्र समझकर भय से नौ दो ग्यारह हो गयीं! तब तुमसे उसने, ७५ यह कहा— 'वंचि देश के अधिपति का मैं पुत्र हूँ। हे व्याध की तपोजनित कन्या! हे विचित्र सौन्दर्यवती, पुरुष-रूप में पैदा होकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पूर्व - जन्म में व्याध - सुता जब थीं तुम सुन्दर।
तुम्हें बुलाते सब 'छोटी कोयलिया' कहकर ॥ ५६-६० ॥
इस प्रकार कुछ दिवस बीतने पर, हे कोयल !।
बराबरी की सहेलियों के संग तुम हिल - मिल ॥
विद्युल्लता - समान एक दिन संध्या - वेला।
अठखेलियाँ खेल जंगल में करतीं खेला ॥
विजयी राजा चेरमान का सुत तब प्यारा।
आया मृगया हेतु साथियों से हो न्यारा ॥ ६१-६५ ॥
एक हिरण के पीछे लगकर नृप-सुत आया।
सखियों - साथ खेलते तुमको था लख पाया ॥
तुम्हें देखकर मुग्ध हुआ वह प्रेम - दिवाना।
चाहा उसने तुमको अपनी वधू बनाना ॥
तुम भी मोहित हुईं नृपात्मज को निहारकर।
दोनों ने दोनों को देखा समुद परस्पर ॥ ६६-७० ॥
नयन चार होते ही इस प्रकार अति सत्वर।
प्राण एक हो गये (तभी दोनों के मिलकर) ॥
सखियाँ भी नृप का तेजोमय रूप देखकर।
किसी चक्रवर्ती राजा का पुत्र समझकर ॥
भय-पूर्वक भागीं सब नौ दो ग्यारह होकर।
तब तुमसे वह बोला राज - पुत्र (अति सुन्दर) ॥ ७१-७५ ॥
वंचि देश के अधिपति का मैं पुत्र (सुनो तुम !)।
तपोजनित तुम व्याध - राज की कन्या अनुपम ॥
तुम विचित्र सौंदर्यवती हो तुम्हें देखकर।
मैं मोहित हो गया (प्राण न्योछावर तुम पर) ॥
पुरुष जन्म का सुफल आज है हमने पाया।
यह तव सुन्दर रूप नयन के सम्मुख आया ॥
राज - पुत्र के ऐसे प्रिय वचनों को सुनकर।
बोलीं तुम निज प्रेम हृदय के बीच दबाकर ॥ ७६-८० ॥
हे स्वामी ! आपके महल में अनुपम सुन्दर।
पढ़ी लिखी पाँच सौ स्त्रियाँ हैं (परम मनोहर) ॥
उनका गाना सुन पसीज जाता है पत्थर।
उनसे मिलकर करें प्रेम (सर्वदा निरन्तर) ॥

उसका फल आज मैंने पाया। देखते ही तुम पर मैं मोहित हो गया।' यह कहने पर तुमने छानेवाली प्रेमभावना को मन में दबाकर कहा-- ८० 'हे स्वामी ! आपके महल में पाँच सौ स्त्रियाँ हैं। (ऐसा मालूम होता है कि) वे सौन्दर्य में अनुपम हैं,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कल्वि तेरिन्द वराम् कल्लुरुहप् पाडुवराम्
अन्नवरैच् चेर्न्देनीर् अन्बुडने बाळ्न्दिरुप्पीर्
मन्नवरै वेण्डेन् मलैक्कुरवर् तम्महळ् यान् 85
कॊल्लु मडर्चिङ्गम् कुळि मुयलै वॆट्पदुण्डो ?
वॆल्लु तिरल् मावेन्दर् वेडरुळ्ळो पॆण्णॆडुप्पार् !
पत्तितिया वाळ्वदल्लाल् पार्वेन्दर् तामॆन्निनुम्
नत्ति विलैमहळा नाङ्गळ् कुडि पोवदिल्लै
पॊन्नडियैप् पोर्रुहिन्रेन् पोय् वरुवीर् तोळियरुम् 90
अॆन्नै विट्टुप् पोयिन्नरे अन् शॆय्हेन् ?' अॆन्रु नी
नॆञ्जङ् गलक्क मॆय्दि निर्क्कैयिले वेन्दन् महन्
मिञ्जु निन्रन् कादल् विळिक्कुरिप्पि नालरिन्दे
पक्कत्तिल् वन्दु पळिच्चॆन् रुनदुकन्नञ्
जॆक्कच् चिवक्क मुत्तमिट्टान् शिन्नङ् गाट्टि 95
नी विलहिच् चॆन्राय्— नॆरि येदु कामियर्क्के ?
तावि निन्नै वन्दु तळुविनान् मार्बिरुह
'निन्नै यन्रि ओर् पॆण् निलत् तिलुण्डो अॆन्रुन्नुक्के
पॊन्नै ऒळिर् मणिये पुत्तमुदे इन्बमे
नी ये मनै याट्टि नीये अरशाणि 100
नीये तुणैयॆन्नक्कु नीये कुलदॆय्वम्
निन्नैयन्रिप् पॆण्णै निनैप्पेनो ? वीणिले
अॆन्नै नीऐयुरुदल् एदुक्काम् ? इप्पॊळुदे
निन्मनैक्कुच् चॆन्रिडुवोम्; निन् वीट्टिलुळ्ळोर् पाल्
अॆन् मनत्तैच् चॊल्वेन् अॆनदु निलैयुरैप्पेन् 105

विद्यावती हैं ! वे पत्थर भी पसीजे, ऐसा गानेवालियाँ हैं। उनसे मिलकर आप प्रेम-पूर्वक रहेंगे ! मैं पति के रूप में राजा को नहीं चाहूँगी। मैं पर्वतीय कुरवर जाति की कन्या हूँ ! ८५ क्या घातक बलवान सिंह गड्ढा खोदकर रहनेवाले शशक को चाहेगा ? क्या विजय-बली बड़ा राजा व्याध की कन्या का वरण करेगा ? पत्नी बनकर जीना छोड़कर, भूपति हों तो भी इच्छा करके पण्य स्त्री के रूप में हम जी नहीं सकेंगी ? मैं आपके स्वर्णचरणों की वन्दना करती हूँ। आप चले जायँ ! सखियाँ भी, ९० तो मुझे छोड़कर चली गयी हैं --मैं अब क्या करूँ ?' --तुम घबड़ा रही थीं, तब राजकुमार ने तुम्हारे बढ़ते प्रेम को आँखों से जानकर पास आकर तपाक से गाल को लाल करते हुए चूम लिया; क्रोध दिखाकर-- ९५ तुम हट चलीं। पर कामी के पास नीति कहाँ ? वह उछलकर आया और तुम्हें उसने छाती से कसकर लगा लिया। वह बोला, 'तुम्हें छोड़कर इस भूमि में क्या मेरे लिए अन्य कोई

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मैं कुरवर जाति की सुता हूँ पर्वतवासी।
कैसे हो सकती मैं राजा की पग - दासी ॥ ८१-८५ ॥
घातक बली सिंह बिल - वासी शश को चाहे।
विजयी बली नरेश व्याध की कन्या ब्याहे ॥
भूपति हों तो भी निज मन में यों इच्छा कर।
मैं रखैल-सम जी सकती नहीं (मान्यवर !) ॥
(यह मेरा संकल्प सुनें, है अतिशय दृढ़तर)।
मैं रह सकती हूँ केवल पत्नी ही बनकर ॥
तव स्वर्णिम चरणों का मैं करती हूँ वन्दन।
(यही प्रार्थना) आप यहाँ से जायें (श्रीमन् !) ॥ ८६-९० ॥
सखियाँ भी तो चली गई हैं मुझे छोड़कर।
अरे ! करूँ अब क्या मैं (पड़ी विपत्ति भयंकर) ॥
(इस प्रकार से बोलीं जब) तुम अति घबराकर।
तब वह राजकुमार तुम्हारे पास पहुँचकर ॥
बढ़ता हुआ प्रेम आँखों को देख - जानकर।
चूम लिया उसने चट अरुण कपोल मनोहर ॥ ९१-९५ ॥
तब तुम दूर हट चलीं (किंचित क्रोध दिखाकर)।
पर कामी के पास नीति है कहाँ (मनोहर) ? ॥
राजकुमार पास तव पहुँचा तभी उछलकर।
लगा लिया उसने तुमको छाती से कसकर ॥
"तुम्हें छोड़कर कोई नारी नहीं भूमि पर।
मेरे लिए दीप्त मणि तुम हो स्वर्ण मनोहर ॥
ताजी सुधा तुम्हीं, तुम सुख, तुम गृहिणी (प्यारी)।
(और ललाम) राज - रानी हो तुम्हीं (हमारी) ॥ ९६-१०० ॥
तुम कुल - देवी, तुम्हीं संगिनी मेरी (सुन्दर)।
और किसी को नहीं लखूंगा तुम्हें छोड़कर ॥
शंका व्यर्थ करो न (सुन्दरी अब तुम) मुझ पर।
अभी चलूंगा साथ तुम्हारे ही मैं तव घर ॥
तव घर वालों के सम्मुख निज मत बतलाऊँ।
अपनी स्थिति भी (पूर्णतया मैं उन्हें) सुनाऊँ ॥ १०१-१०५ ॥

वारी भी है ? री स्वर्ण ! री दीप्त मणि, री ताजा अमृत, री सुख, तुम ही गृहिणी हो, तुम ही राजरानी हो। १०० तुम ही संगिनी हो मेरी, तुम ही कुलदेवी हो; क्या तुम्हें छोड़कर किसी स्त्री का ख्याल करूँगा ? व्यर्थ मुझ पर क्यों शंका करती हो ? अभी तुम्हारे घर जायँगे ! तुम्हारे घरवालों से मैं अपना मन बताऊँगा ! अपनी स्थिति सुनाऊँगा। १०५ वेद-विहित रीति से तुमसे विवाह कर लूँगा। हे स्त्रियों में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेदनॆऱियिल् विवाहमुऩैच् चॆय्दुकॊळ्वेऩ्;
मादरशे' ! ऍऩ्ऱु वलक्कै तट्टि वाक्कळित्ताऩ्
पूरिप्पुक् कॊण्डाय् पुळहम् नी ऍय्दि विट्टाय्
वारिप् पॆरुन्दिरैपोल् वन्द महिळ्च्चियिले
नाणन् दविर्त्ताय्; ननवे तविर्न्दवळाय् 110
काणत् तॆविट्टाबोर् इऩ्बक् कऩविऩिले
शेर्न्दु विट्टाय् मऩ्ऩवऩ् ऱऩ् ऱिण्डोळै नीयुवहै
आर्न्दु तळुवि अवऩिदळिल् तेऩ्परुहच्
चिन्दै कॊण्डाय् वेन्दऩ्महऩ् तेऩिल् विळुम् वण्डिऩैप् पोल्
विन्दैयुऱु कान्दमिशै वीळुम् इऱुम्बिऩैप्पोल् 115
आवलुडऩ् निऩ्ऩै यऱ्त्तळुवि आङ्गुऩ्ऩु
कोवैयिदळ् परुहिक् कॊण्डिरुक्कुम् वेळैयिले
शऱ्ऱु मुऩ्ऩे ऊरिऩिऩ्ऱु ताऩ्वऩ् दिऱङ्गियवऩ्
मऱ्ऱुनी वीट्टै विट्टु मादरुडऩ् काट्टिऩिले
कूत्तिऩुक्कुच् चॆऩ्ऱदऩैक् केट्टुक् कुदूहलमाय् 120
आत् तिरन्दाऩ् मिऱ्जि निऩ्ऩै आङ्गॆय्दिक् काणवन्दोऩ्
नॆट्टैक् कुरङ्गऩ् नॆरुङ्गि वऩ्दु पार्त्तु विट्टाऩ्
'पट्टप् पहलिले पावि महळ् शॆय्दियैप् पार् !
कण्णालङ् गूड इऩ्ऩुङ् गट्टि मुडियविल्लै
मण्णाक्कि विट्टाळ् ! ऍऩ् माऩऩ् दॊलैत्तु विट्टाळ् 125
निच्चच ताम्बूलम् निलैया नडऩ् दिरुक्कप्
पिक्चैच् चिरुक्कि शॆय्द पेदहत्तैप् पार्त्तायो ?"
ऍऩ्ऱु मऩदिल् ऍऴु हिऩ्ऱ तीयुडऩे

रानी !' —कहकर दाहिना हाथ पीटकर वादा किया। तुम खिल गयीं, पुलकाकुल हो गयीं। समुद्र तरंगों के समान बढ़ते आते हुए आनन्द में तुमने लाज त्याग दी ! सुध भूल गयीं ! ११० जो देखने में उकताहट पैदा नहीं कर देता, उस सुख-स्वप्न में तुम लय हो गयीं। राजा के सुदृढ़ स्कन्धों से ससुख खूब लगा लेकर, उसके अधरों में मधु का स्वाद लेने की इच्छा की तुमने। राजकुमार मधु में गिरते भ्रमर के समान, विचित्र चुम्बक पर गिरनेवाले लोहे के समान-- ११५ आतुरता के साथ तुम्हारा खूब आलिंगन करके वहाँ अधर-मधु-पान जब कर रहा था, तब कुछ देर पहले लंबा वानर उस बस्ती में आया था। उसने सुना कि तुम घर छोड़कर कन्याओं के साथ वन में केलि के लिए गयी हो। तब कुतूहल के साथ, १२० आतुरता के बढ़ने से वह वहाँ देखने के लिए आ गया। उस 'लम्बे वानर' ने आकर देख लिया। उसके मन में ये भाव उठे-- देखो बिलकुल दिन में पापी कन्या की यह करतूत। अब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेद-रीति से मैं तुमसे प्रिय! ब्याह करूँगा।
(करता हूँ वादा न कभी इससे मुकरूँगा)॥
(रम्य) रमणियों में (तुम) रानी (हो यह कहकर)।
वादा उसने किया दाहिना हाथ पीटकर॥
(यह सुनकर) तुम फूल गयीं पुलकाकुल होकर।
सिन्धु - तरंगों के समान आनन्दित होकर॥
तुम लज्जा तजकर औ' सुध-(बुध सभी) भूलकर।
मग्न हो गईं सुख स्वप्नों में जो थे रुचिकर॥ १०६-११०॥
राजा के दृढ़ कन्धों का सुख - आलिंगन कर॥
चाहा उसके मधु अधरों का स्वाद मधुरतर।
मधु पर गिरते हुए भ्रमर के तुल्य मनोहर॥
चुंबक पर गिरनेवाले लोहे - सम सुन्दर॥ १११-११५॥
आतुरता के साथ तुम्हारा आलिंगन कर।
करता था जब अधर - सुधा का पान (भूपवर)॥
तभी वहाँ बस्ती में आया लंबा वानर।
उसने सुना गईं तुम केलि - हेतु वन - भीतर॥
ले सखियों को साथ छोड़ करके अपना घर।
(बस्ती वालों के मुख से) यह हाल जानकर॥
कौतूहल के साथ (गया वह वन के अन्दर)।
(अपने मन में लिये प्रेम का भाव प्रबलतर)॥ ११६-१२०॥
आतुरता के साथ देखना जो था चाहा।
लंबे वानर ने वह सब देखा (मनचाहा)॥
दिन में यों पापिनी सुता की देखी करनी।
अभी नहीं ब्याह भी हुआ (यह बनी न घरनी)॥
सब मिट्टी हो गया हुआ अपमान हमारा।
(इस प्रकार सोचने लगा वानर बेचारा)॥ १२१-१२५॥
निश्चयार्थ नारियल - दान हो गया (मनोहर)।
इस छोकरी भिखारिन ने अघ किया उग्रतर॥
इस प्रकार क्रोधाग्नि उठी उसके उर - भीतर।
खड़ा रह गया (अतिशय) क्षुब्ध (हृदय में) होकर॥

ब्याह भी नहीं हुआ है! मिट्टी बना दी है! मेरा अपमान करा दिया। १२५ जब विवाह— 'निश्चयार्थ नारियल दान' हो गया है, तो यह भिखारिन छोकरी कैसा बुरा काम कर चुकी— देखा न? उसके मन में विचार की ऐसी अग्नि उठी। वह लम्बा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निन्ऱु कलङ्गिनान् नॆट्टैक् कुरङ्गनङ्गे
माप्पि ळ्ळैतान् ऊरुक्कु वन्ददैयुम् पॆण् कुयिलि 130
तोप्पिले तानुन् दन् तोऴिहळु माच् चॆन्ऱु
पाडि विळैयाडुम् पण्बु केट्टे कुरङ्गन्
ओडि यिरुप्पदोर् उण्मैय्युम् माडनिडम्
यारो उरैत्बु विट्टार्; ईरिरण्डु पाय्च्चालले
नीरोडुम् मेनि नरुप्पोडुङ् गण्णुडने 135
माडनङ्गु वन्बु निन्ऱान् मऱ्ऱिदनत् तेन्मलैयिन्
वेडर् कोन् मैन्दन् विऴि कॊण्डु पार्क्क विल्लै
नॆट्टैक् कुरङ्गनङ्गु नोण्ड मरम् बोले
अॆट्टि निऱ्कुञ् जॆय्दि इवन पार्क्क नेरमिल्लै
अन्नियनैप् पॆण् कुयिलि आऱ्न् दिरुक्कुञ् जॆयदियॊन्ऱु 140
तन्नैये इव्विरुवर् ताङ्गण्डार्; वेऱ्ऱियार्
माडनदैत् तान् कण्डान्, मऱ्ऱवनुम् अङ्ङनमे
माडन् वॆऱि कॊण्डान्; मऱ्ऱवनुम् अव्वाऱे
कावलन्ऱन् मैन्दनुमक् कन्नि हैयुम् तानुमङ्गु
देवगुहङ् गॊण्डु विऴियॆ तिऱ्क्क विल्लै 145
आविक् कलप्पिन् अमुद गुहन्बनिले
मेवियङ्गु मूडियिरुन्द विऴि नान्गु
आङ्गवऱ्ऱैक् कण्डमैयाल् आवियिले तीप्पऱ्ऱि
ओङ्गुम् पॊऱिहळ् उदिर्क्कुम् विऴिनान्गु
माडनुन्दन् वाळुरुवि मन्नवनैक् कॊन्ऱिडवे 150
ओडि वन्दान् नॆट्टैक् कुरङ्गनुम् वाळोङ्गि वन्दान्;
वॆट् टिरण्डु वीऴुन्दन काण् वेन्दन् मुदुहिनिले
शट्टॆनवे मन्नवनुम् तान्तिरुम्बि वाळुरुवि

वानर खड़ा होकर क्रुद्ध हुआ ! दामाद का बस्ती में आना, कोयलिया का-- १३० उपवन में सखियों के साथ जाकर गाते-गाते खेलना, यह बात सुनकर वानर का दौड़कर वहाँ जाना --यह समाचार माडन के पास जाकर किसी ने कह दिया। दो ही छलांग में जल-बहता-शरीर तथा आग-बरसाती आँखें लेकर माडन वहाँ आ खड़ा हुआ। १३५ इसको मधुपर्वत के व्याधराज ने अपनी आँखों से नहीं देखा ! लम्बा वानर लम्बे तरु के समान दूर खड़ा रहा। --यह समाचार वह देखे --उसके लिए समय नहीं था। वरपुरुष के गले से 'स्त्री कोयलिया' लगी है-- १४० यह दोनों ने देखा। अन्य बातों को नहीं जाना। माडन ने भी वही देखा, दूसरे ने भी वही। माडन पागल हो गया, दूसरा भी पागल हुआ। राजकुमार और कन्या दोनों ने दैवी सुख-भोग मे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस दमाद लंबे वानर का बस्ती आना।
कोयलिया का सखियों के सँग वन में जाना ॥ १२६-१३० ॥
वानर का यह जान दौड़कर वन में जाना।
माडन ने भी समाचार यह सारा जाना ॥
जल में बहती देह आग - सी आँखें लेकर।
मार छलाँगें माडन भी आ गया वहाँ पर ॥
मधु - पर्वत के व्याध - राज ने ये सब बातें।
निज नयनों से वहाँ विलोकीं (सारी घातें) ॥
लंबे तरु - सा दूर खड़ा था लंबा वानर।
(देख रहा था निज नयनों से सभी निरन्तर) ॥
समय नहीं था उसके पास कि वह सब देखे।
देख न पाया वह माडन को (रहा अदेखे) ॥
कोयलिया का इस प्रकार मिलना पर-नर से।
दोनों ने देखा (क्रोधित होकर अन्तर से) ॥ १३१-१४० ॥
जो माडन ने देखा वही लखा वानर ने।
माडन, वानर पागल होकर (लगे बिफरने) ॥
राजकुमार और वह कन्या दोनों ही जन।
थे दैवी - सुख - भोग - मग्न, थे मीलित - लोचन ॥ १४१-१४५ ॥
दो प्राणों का मधुर मिलन था (अतिशय पावन)।
थे आनन्द - मग्न, बन्द थे चारों लोचन ॥
लगी आग दोनों के मन में देख यह मिलन।
लगे आग बरसाने उनके चारों लोचन ॥
तब माडन अपनी कृपाण (भीषण) निकालकर।
राज - कुँवर का वध करने को दौड़ा (सत्वर) ॥ १४६-१५० ॥
लंबा वानर भी दौड़ा अपनी असि लेकर।
(साथ - साथ ही दोनों पीछे पहुँचे जाकर) ॥
उन दोनों की वे तलवारें (बड़ी भयंकर)।
एक साथ ही राज - कुँवर की गिरीं पीठ पर ॥

मग्न रहकर आँखें नहीं खोलीं। १४५ प्राणों के मिलन के अमृतमय आनन्द में मग्न होकर चार आँखें बन्द थीं; उन्हें देखने पर (दोनों के) प्राणों में आग-सी लग जाने से अंगार बरसानेवाली आँखें भी चार थीं। माडन अपनी तलवार निकालकर राजकुमार को मारने के लिए, १५० दौड़ा आया। ऊँचा वानर भी तलवार उठाये हुए आया। दो तलवारें गिरीं राजकुमार की पीठ पर! झट राजकुमार ने मुड़कर तलवार खींचकर दो वारों में उनको मार गिराया। जो गिरे, वे बोलना बन्द करके लाश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बीच्चिरण्डिल् आङ्गवरै वीळ्त्तिनान्; वीळ्न्दवर् ताम्
पेच् चिळन्दे अङ्गु पिणमाक् किडन्दु विट्टार् 155
मन्नवनुम् शोर् वॆय्दि मण्मेल् विळुन्दु विट्टान्
पिन्नवनै नीयुम् पॆरुन्दुयर् कॊण्डे मडियिल्
वारि यॆडुत्तु वैत्तु वाय् पुलम्बक् कण्णिरण् डुम्
मारि पॊळिय मनमिळन्दु निऱ्कैयिले
कण्णे विळित्तुनदु कावलनुम् कूऱुहिन्ऱान् 160
'पॆण्णे इनिनान् पिळैत्तिडेन्; शिल कणत्ते
आवि तुऱप्पेन् अळुदोर् पयनिल्लै
शाविले तुन्बमिल्लै तैयले इन्नमुम् नाम्
पूमियिले तोन्ऱिडुवोम् ! पॊन्ने निनैक् कण्डु
कामुऱुवेन् ! निन्नैक् कलनदिनिदु वाळ्न्विडुवेन् 165
इन्नुम् पिऱवियुण्डु, मादरशे इन्ब मुण्डु
निन्नुडने वाळ्वनिनि नेरुम् पिऱप्पिनिले !"
ॲन्ऱु शॊल्लिक् कण् मूडि इन्बमुऱु पुन्नहै तान्
निन्ऱु मुहत्ते निलवुतर माण्डनन् काण्
माडनिङ्गु शॆय्ददोर् मायत्ताल् इप्पॊळुदु 170
पोडैयुऱु पुळवडिवम् पेदैयुनक् कॆय्दियदु
वाळि निन्ऱन् मन्नवनुम् तॊण्डै वळ माट्टिल्
आळिक् करैयिन् अरुहेयोर् पट्टिनत्तिल्
मानिडनात् तोन्ऱि वळरुहिन्ऱान् निन्नै यॊरु
कानिडत्ते काण्बन्, कनिन्दे नी पाडु नल्ल
पाट्टिनैत् तान् केट्पान् पळविनैयिन् कट्टिनाल् 175
मीट्टि निन्मेऱ् कादल् कॊळ्वान् मॆन् कुयिले' ॲन्ऱन्दत्
तॆन् पॊदियै मामुनिवर् शॆप्पिनार् 'शामी !

हो गये। १५५ राजा भी थककर भूमि पर गिर गया। फिर तुमने बहुत दुख करके उसे अपनी गोद में उठा लिया। तुमने मुख खोलकर प्रलाप किया, आँखों ने वारिश की। मन मारकर तुम रहीं। तब आँखें खोलकर तुम्हारे राजा ने कहा-- १६० 'हे बाले, अब मैं नहीं जिऊँगा। कुछ क्षणों में प्राण छोड़ दूंगा। रोने से लाभ नहीं। मृत्यु में कोई दुख नहीं। हे दयिता, फिर हम भूमि पर जन्म लेंगे। हे स्वर्ण, तुमको देखकर मोहित हो जाऊँगा। तुमसे मिलकर सुख से जीऊँगा। १६५ आगे भी जन्म हैं। हे स्त्रीरत्न, तब सुख भी होगा। आगे के जन्म में मैं तुम्हारे ही साथ जीवन बिताऊँगा'। ऐसा कहकर उसने आँखें मूँद लीं। सुखदायक मुस्कुराहट उसके मुख पर झलकती रही --वह मर गया। माडन ने कोई माया-कार्य किया। इसलिए अब-- १७० वेदनादायी पक्षी-रूप मिला तुमको ! चिरंजीव तुम्हारा राजा भी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राजकुँवर ने भी जल्दी से पीछे मुड़कर।
(जल्दी से अपनी भीषण) तलवार खींचकर॥
दो वारों में मार गिराया उनको भू पर।
हुआ बोलना बंद गिरे दोनों शव बनकर॥ १५१-१५५॥
राजा भी गिर गया भूमि पर था तब थककर।
उठा लिया तुमने निज गोदी में अकुलाकर॥
रोनें लगीं तभी तुम अपना मुँह फैलाकर।
(अपनी) आँखों से (अपार) आँसू बरसाकर॥
तुम बैठी रह गईं वहाँ निज मन मसोसकर।
तब बोला वह राजा तुमसे नयन खोलकर॥ १५६-१६०॥
हे बाले! (तुम जानो) अब मैं नहीं जिऊँगा।
कुछ क्षण में ही अपने प्राणों को तज दूँगा॥
रोनें से (कुछ) लाभ नहीं, दुख नहीं मरण में।
हो दयिते! फिर हम पैदा होंगे भू-तल में॥
हे स्वर्णाङ्गी! तुम्हें देख होऊँगा मोहित।
तुमसे मिलकर सदा रहूँगा सुख से जीवित॥ १६१-१६५॥
हे स्त्री-रत्न! और आगे हैं जन्म हमारे।
साथ रहूँगा मैं अगले जन्म में तुम्हारे॥
सुख भी होगा साथ बिताऊँगा मैं जीवन।
इस प्रकार कह उसनें मूंदे (अपने) लोचन॥
सुखदायक मुसकान सुशोभित उसके मुख पर।
(प्राण-प्रदीप बुझ गया) राजकुमार गया मर॥
फिर मरकर माडन ने कुछ की अपनी माया।
इसीलिए यह पक्षि-रूप है तुमने पाया॥ १६६-१७०॥
(अति प्रसिद्ध) तोण्डै प्रदेश है सागर-तट पर।
(बसा हुआ) है वहीं एक (शुभ) नगर (मनोहर)॥
वहाँ तुम्हारा चिरंजीव राजा भी (सुन्दर)।
पैदा हो करके है पल रहा (निरन्तर)॥
वह तुमको देखेगा एक (आम्र) उपवन में।
तुम जो गाओगी दुख से जर्जर हो (मन में)॥ १७१-१७५॥
उस सुन्दर गानें को वह (रुचि-सहित) सुनेगा।
बँधा भाग्य-बन्धन में वह फिर प्रेम करेगा॥

'तोण्डै' प्रदेश में समुद्र तट पर एक नगर में मनुष्य होकर जन्मा है और पल रहा है। वह तुम्हें एक उपवन में देखेगा। दुख में जर्जर होकर, तुम— १७५ जो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुयिलुरुवङ् गॊण्डेन् यान् कोमानो मेन्मै
पयिलु मन्निबबुरुप् पऱ्ऱि निन्ऱान्, ऎम् मुळ्ळे 180
कादलिशैन् दालुङ् गडिमणन्दान् कूडादाम्
शादऱ् पॊऴ्दिले तार्वेन्बन् कूऱिय शॊल्
पॊय्याय् मुडियादो ? ऎन्ऱि शैत्तेन् पुन्नहैयिल्
ऐयर् उरैप्पार्; 'अडि पेदाय् ! इप्पिऱवि
तन्निलुम् नी विन्दगिरिच् चार्बिनिलोर् वेडन्क्कुक् 185
कन्नि यॆन्नत्तान् पिऱन्दाय् कर्म वशत्तिनाल्
माडन् कुरङ्गन् इरुवरुमे वन्पेयाक्
काडुमलै शुऱ्ऱि वरुहैयिले कण्डु कॊण्डार्
निन्नै यङ्गे, इप्पिऱप्पिल् नीयुम् पऴमैपोल्
मन्नसैये शेर्वैयॆन्ऱु ताञ्जूळ्न्दु मऱ्ऱवरुम् 190
निन्नैक् कुयिलाक्कि नी शॊल्लुन् दिक्कि लॆल्लाम्
निन्नुडने शुऱ्ऱुहिन्ऱार् नी यिदनैत् तेर्हिलै यो ?"
ऎन्ऱार् "विदिये इऱन्दवर् ताम् वाळ्वारै
निन्ऱु तुयरुऱुत्तल् नीदियो ? पेय्हळैप्
पेदैप् पडुत्ति पिऱप्पै मऱप्पुरुत्ति 195
वाबैप् पडुत्ति वरुमायिन् यानॆनदु
कादलनैक् काणुङ्गाल् काय् शिनत्ताल् एदेनुम्
तीदिळत्ताल् ऎन् शॆय्वेन् ? वरे मऱ्ऱिदर्कोर्
माऱ्ऱिलैयो ?' ऎन्ऱु मऱुहि नान् केट्कैयिले
तेऱ्ऱमुऱु मामुनिवर् शॆप्पु हिन्ऱार्— 'पॆण् कुयिले ! 200

गाओगी, वह अच्छा गाना सुनेगा। प्रारब्ध के बन्धन से फिर से वह तुमसे प्रेम करेगा। हे मृदु कोयल", —ऐसा उन दक्षिणी पोदिहै के मुनि ने कहा। हे स्वामी ! मैं कोयल बनी ! राजा ने श्रेष्ठता से युक्त मानव-रूप ले लिया। 'हममें, १८० प्रेम हो तो भी विवाह नहीं हो सकता है'—ऐसा कहा गया। तब 'मरते वक्त मालाधारी राजा ने जो कहा, क्या वह कथन झूठा नहीं हो जायेगा ?' मैंने पूछा। मुस्कराते हुए आर्य ने कहा— "री अबोध ! इस जन्म में भी तुम विंध्यगिरि के पास एक व्याध की १८५ पुत्री के रूप में पैदा हुई। कर्मवशात् माडन तथा कुरंगन (वानर) दोनों बलवान भूत बने। पर्वत, जंगल आदि में घूमते आते वक्त उन्होंने तुम्हें पहचान लिया ! इस जन्म में भी तुम पहले की तरह राजा से भी मिलोगी —ऐसा सोचकर एक तन्त्र करके, १९० तुम्हें कोयल बनाकर वे तुम जिस-जिस दिशा में जाती हो, उसमें तुम्हारे साथ घूमते हैं। क्या तुमने यह जाना नहीं ? आर्य ने कहा। 'हे विधि, जो मर गये वे जीवित रहनेवालों को कष्ट पहुँचाते रहें —वह भी न्यायसम्मत है ? वे भूत मुझे दीन बनाकर, (मेरे) इस जन्म को भुलाकर— १९५ जो संकट ढाते आते हैं, जब मैं अपने प्रेमी से मिलूं तब जलते क्रोध से कोई हानि कर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन दक्षिणी पोदिहै के वासी मुनिवर ने।
ऐसा (मुझसे) कहा (हमारा संशय हरने)॥
हे स्वामी! मैं हुई जन्म कोयल का लेकर।
नृप ने भी नर-जन्म लिया (अति) श्रेष्ठ (मनोहर)॥ १७६-१८०॥
यद्यपि प्रेम, विवाह नहीं तब भी हो सकता।
ऐसा कहा गया है (सारा जग है कहता)॥
मरते समय कह गये जो नृप माला-धारी।
कथन न वह झूठा हो सकता (है मन-हारी)॥
जब मैंने उनसे पूछा (यह प्रश्न मनोहर)।
तब मुसकाते हुए आर्य ने दिया समुत्तर॥
री अबोध! इस बार विन्ध्य गिरि-पास (मनोहर)।
हो तुम पैदा हुई व्याध की पुत्री बनकर॥ १८१-१८५॥
बने कर्म-वश माडन-वानर भूत (-युगल वर)।
पर्वत जंगल मध्य घूमते (सदा निरन्तर)॥
ऐसे अवसर पर ही तुमको कभी देखकर।
लिया तुम्हें पहिचान उन्होंने (ध्यान लगाकर)॥
पहले के समान ही तुम इस बार (मनोहर)।
(मुदित) मिलोगी फिर राजा से यह विचार कर॥ १८६-१९०॥
जादू करके तुमको कोयल रूप बनाकर।
साथ घूमते, जाती हो तुम जहाँ-जहाँ पर॥
क्या तुम नहीं जानती हो? —बोले वे मुनिवर।
मैं बोली— "हे विधि! जो हैं मर गये दुष्ट नर॥
वे जीवित मनुजों को रहें सताते (पामर)।
क्या यह कार्य न्याय-सम्मत है? (बोलो मुनिवर!)॥
दीन बनाकर मुझको, मेरा जन्म भुलाकर।
मुझको संकट देते हैं वे भूत (निरन्तर)॥ १९१-१९५॥
मैं जा करके निज प्रेमी से जभी मिलूँगी।
करें क्रोध से हानि अगर क्या कहो करूँगी?॥
इसका क्या प्रतिकार नहीं है कोई मुनिवर?"।
—इस प्रकार जब मैंने उनसे पूछा रोकर॥
तब बोले मुझसे वे (मुदित) महामुनि ज्ञानी।
"(बता रहा हूँ सुन ले) री कोयल! (अज्ञानी!)॥ १९६-२००॥

हैं तो मैं क्या करूँगी? हे देव! क्या इसका कोई प्रतिकार नहीं है? —ऐसा मैंने रोकर पूछा, तो ज्ञानी महामुनि ने कहा— हे स्त्री कोयल! २०० 'तोण्डुं' के समूह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तॊण्डैवळ नाट्टिलोर् शोलैयिले वेन्दन् महन्
कण्डुनदु पाट्टिल् करुत्ति ळहिक् कादल् कॊण्डु
नेशम् मिहुदि युर्रु निर्कैयिले पेयिरण्डुम्
मोशम् मिहुन्द मुळुमायच् चॆय्है पल
शॆय्दुपल पॊत्त्तोर्रङ् गाट्टित् तिरल् वेन्दन् 205
ऐयमुरच् चॆय्दुविडुम्, आङ्गवनुम् निन्रनैये
वञ्जहियॆन् रॆण्णि मदिमरुण्डु निन्मीदु
वॆञ्जिनन्दान् ऍय्दि निनै विट्टुविड निच्चयिप्पान्
पिन्दि विळैवदॆल्लाम् पिन्नै नी कण्डु कॊळ्वाय्
सन्दि जबम् शॆय्युम् समयमाय् विट्ट" दॆन्रे 210
कार्रिल् मरॆन्दु शॆन्रार्, मा मुनिवर् कादलरे !
मार्रि उरैक्क विल्लै मामुनिवर शॊन्न दॆल्लाम्
अप्पडिये शॊल्लि विट्टेन् ऐयो ! तिरुवुळत्तिल्
ऍप्पडि नीर् कॊळ्वीशे ? यानरियेन् आरियरे !
काद लरुळ्पुरि वीर् कादलिल्लै यॆन्रिडिलो 215
शाद लरुळित् तमदुकैयाल् कॊन्रि डुवीर्
ऍन्रु कुयिलुम् ऍनतु कैयिल् वीळ्न्ददु काण्
कॊन्रु विड मनन्दान् कॊळ्ळुमो ? पॆण्णॆन्राल्
पेयुमिरङ् गादो ? पेय्हळ् इरक्क मिन्रि
मायमिळैत्ताल् अदनै मानिडनुङ् गॊळ्ळुवदो ? 220
कादलिले ऐयम् कलन्दालुम् निर् पदुण्डो
मादरन्बु कूरिल् मनमि ळहार् इङ्गुळरो ?
अन्बुडने यानुम् अरुङ्गुयिलैक् कैक् कॊण्डु
मुन्बुवैत्तु नोक्किय पिन् मूण्डुवरुम् इन्बवॆरि
कॊण्डदनै मुत्त मिट्टेन् कोहिलत्तैक् काणविल्लै ! 225

प्रवेश में एक उपवन में राजकुमार तुम्हें देखकर, तुम्हारे गाने से द्रवित-मन होकर प्रेम करके अधिक स्नेह के साथ रहेगा। तब वे दोनों भूत दशा के अनेक माया-कार्य करके, अनेक झूठे रूप दिखाकर बलवान राजा-- २०५ के मन में संशय भर देंगे ! तब वह तुम्हें वंचक समझकर भ्रमित-मन हो, तुम पर गुस्सा करेगा और तुम्हें छोड़ जाने की बात सोचेगा। पीछे जो होगा, वह सब तुम स्वयं जान लोगी। संध्या-जप करने का समय हो गया-- यह कहकर-- २१० महर्षि हवा में छिप गये ! हे प्रिय ! बात कुछ बदलकर मैंने नहीं कही है ! महर्षि की सारी बातें मैंने वैसे ही कह दीं। हाय ! मन में आप क्या समझ लेंगे --मैं नहीं जानती ! पर आर्य प्रेम का दान करें ! प्रेम नहीं हो तो-- २१५ मौत दिलाते हुए अपने हाथ से वध करा दें। --यह कहकर कोयल मेरे हाथ में गिर गयी ! देखो ! क्या मारने का मन होगा ? स्त्री कहें,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तोण्डै के प्रदेश के वन में तुम्हें देखकर।
सुनकर तव संगीत द्रवित-मन (अतिशय) होकर॥
तुमसे करके प्रेम स्नेह के साथ रहेगा।
(पल भर को भी विरह तुम्हारा नहीं सहेगा)॥
तब ये दोनों भूत दगा देकर, माया कर।
और अनेकों अपने झूठे रूप दिखाकर॥ २०१-२०५॥
देंगे उस राजा के मन में ये शंका भर।
तुम्हें समझ करके वंचक तब वह प्रिय नृपवर॥
मन में होकर भ्रमित करेगा गुस्सा तुम पर।
और तुम्हें छोड़ने हेतु लेगा निश्चय कर॥
इसके पीछे होगी जो भी अद्भुत घटना।
वह तुम स्वयं जान लोगी (सुन लो बस इतना)॥
संध्या-जप का समय हुआ अब" —ऐसा कहकर।
लुप्त हो गये वायु-बीच वे (पावन) मुनिवर॥ २०६-२१०॥
हे प्रिय! मैंने नहीं कही कुछ बात बदलकर।
जैसी मुनि ने कही, कही वैसी ही (प्रियवर!)॥
हा! कैसे मन में ये बातें लेंगे मेरी।
नहीं जानती मैं (हूँ तव चरणों की चेरी)॥
करें प्रेम का दान आर्य! (मुझको अपनायें)।
प्रेम नहीं तो मुझे (भयंकर) मौत दिलायें॥ २११-२१५॥
अपने हाथों से मेरा वध करें (मान्यवर!)"।
गिरी हमारे कर में वह कोयल, यह कहकर॥
कैसे उसे मारने को हो सकता है मन।
सदय भूत भी हो जाता सुन नारी-क्रन्दन॥
भूत कर रहे थे जो माया निर्दय बनकर।
वह माया मनुष्य भी कैसे करे (निठुरतर)॥ २१६-२२०॥
टिक न सकेगा प्रेम हुई यदि शंका कुछ मन।
पा नारी का प्रेम द्रवित होगा न कौन जन?॥
प्यारी पिक को प्रेम-सहित निज कर में लेकर।
बड़े प्यार से चूमा उसको सम्मुख रखकर॥
तब वह कोयल नहीं दिखी (दीखी वह नारी)।
नहीं खोलकर कहा जा सके विस्मय भारी॥ २२१-२२५॥

तो भूत भी सदय नहीं होगा? भूत तो निर्दय होकर माया कर रहे थे, तो क्या मनुष्य भी वही करे? २२० प्रेम में शंका हुई, तो क्या वह टिकेगा? स्त्री प्रेम करे तो द्रवित न होनेवाला कोई यहाँ होगा? प्यार के साथ मैंने प्यारी कोयल को हाथ में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विण्डुरैक्क माट्टाद विन्दैयडा ! विन्दैयडा !
आशैक् कडलिन् अमुदमडा ! अऱ्पुदत्तिन्
तेशमडा ! पॆण्मैतान् दॆय्विहमाम् काट्चियडा !
पॆण्णॊरुत्ति अङ्गु निन्ऱाळ्; पेरुवहै कॊण्डुतान्
कण्णॆडुक्का दॆन्नॆक् कणप्पॊऴुदु नोक्किनाळ् 230
शऱ्ऱे तलै कुनिन्दाळ् शामि ! इवळऴहै
अॆऱ्ऱे तमिऴिल् इशैत्तिडुवेन् ? कण्णिरण्डुम्
आळै विऴुङ्गुम् अदिश यत्तैक् कूऱुवनो ?
मीळ विऴियिल् मिदन्द कविदैयॆ लाम्
शॊल्लिल् अहप्पडुमो ? तूय शुडर् मुत्तैयॊप्पाम् 235
पल्लिल् कनियिदऴिल् पाय्न्द निलविनै यान्
अॆन्ऱुम् मऱत्तल् इयलुमो ? पारिन् मिशै
निन्ऱदॊरु मिन्कॊडि पोल् नेर्न्द मणिप् पॆण्णराशिन्
मेनि नलत् तिनैयुम् वॆट्टिनैबुम् कट्टिनैयुम्
तेनि लिनियाळ् तिरुत्त निलैयिलैयुम् 240
मऱ्ऱवर्क्कुच् चॊल्ल वशमामो ? ओर् वार्त्तै
कऱ्ऱवर्क्कुच् चॊल्वेन् कविदैक् कनिपिऴिन्द
शाऱ्ऱि निले पण्कूत् तॆनुमि वऱ्ऱिन् शारमॆल्लाम्
एऱ्ऱु, अदनोडे इन्नमुदैत् तान् कलन्दु
कादल् वॆयिलिले कायवैत्त कट्टियिनाल् 245
मादवळिन् मेनि वहुत्तान् पिरमनॆन्बेन्
पॆण्णवळैक् कण्डु पॆरुङ् गळि कॊण्डाङ्डन्ने
नण्णित् तऴुवि नऱुङ्गळ् ळिदऴिनैये
मुत्तमिट्टु मुत्तमिट्टु मोहप् पॆरु मयक्किल्
शित्तम् मयङ्गिच् चिलपोऴ्दिरुन्द पिन्ने 250

लेकर सामने रखकर देखने के बाद चूमा। कोयल नहीं दिखी ! खोलकर न कहा जा सके, ऐसा आश्चर्य ! २२५ प्रेम सागर का अमृत-- स्त्री भी दिव्य दृश्य है रे ! एक वयिता वहाँ खड़ी रही ! बहुत मोद के साथ उसने आँखें हटाये बिना मुझे निहारा। थोड़ा सिर झुकाया उसने। हे स्वामी (भगवान्)! उसके सौंदर्य का-- २३० तमिऴ में मैं कैसे वर्णन करूँ ? दोनों आँखों के मनुष्य को निगलने का-सा आश्चर्य बताऊँ ? और आँखों में जो प्रकट हो रही थी, वह सारी कविता शब्दों में क्या लायी जा सकेगी ? शुद्ध उज्ज्वल मोती के समान-- २३५ दाँतों में बिम्ब-फलाधरों में फैलती रही चाँदनी को क्या कभी मैं भूल सकूँगा ? भूमि पर खड़ी रही बिजली-लता के समान मिली स्त्री-रानी के शरीर का सौंदर्य, अदाएँ और डील को २४० मधु से भी मधुर स्त्री की मँजी स्थिति को, दूसरों के शब्दों में कहें ? यह भी अपने बस की बात

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रेम-सिन्धु की सुधा - रूप स्त्री दिव्य दृश्य है।
वहाँ खड़ी थी एक सुन्दरी (क्या रहस्य है ?) ॥
बड़े मोद से उसने अपलक मुझे निहारा।
(फिर) थोड़ा सिर झुका लिया (लज्जा के द्वारा) ॥ २२६-२३० ॥
वह छबि बोलो, करूँ तमिल में कैसे वर्णन ?।
नर को वशीभूत कर लेते दोनों लोचन ॥
जो आँखों में प्रकट हो रही थी (अति ललिता)।
वह शब्दों में आये कैसे सारी कविता ॥ २३१-२३५ ॥
चमक रहे थे दाँत शुद्ध उज्ज्वल ज्यों मोती।
बिम्बाधर पर (हास्य-) चाँदनी जगमग होती ॥
भूल सकूँगा कभी नहीं मैं वह सुन्दरता।
खड़ी भूमि पर थी वह विद्युल्लता (सुललिता) ॥
स्त्री - रानी का तन - सौंदर्य, अदायें (सुन्दर)।
डील-डौल भी उसका मधु से मधुर (मनोहर) ॥ २३६-२४० ॥
उस नारी की मँजी हुई स्थिति अतिशय शोभन।
कहें दूसरों से तो होते वशीभूत जन ॥
विद्वानों से (वह सौंदर्य) बताऊँगा मैं।
(भली भाँति से उसकी शोभा गाऊँगा मैं) ॥
कविता-फल का सार-भूत (मधुमय) रस लेकर।
नृत्य और संगीत आदि का सार मिलाकर ॥
उसके साथ (मधुर-रस-वाली) सुधा घोलकर।
और प्रीति की (मृदुल) धूप में उसे सुखाकर ॥ २४१-२४५ ॥
इस प्रकार जो विधि ने घना पदार्थ बनाया।
वह पदार्थ जग में "नारी का रूप" कहाया ॥
उस नारी को देख बा सुख मैंने पाया।
जाकर उसके पास हृदय से उसे लगाया ॥
सुरभित - सुरा - समान अधर को चूम - चूमकर।
और मोह के बड़े नशे में सुध-बुध खोकर ॥
इस प्रकार कुछ देर रहा मैं खड़ा (ठगा-सा)।
(मुझको सारा दृश्य स्वप्न के तुल्य लगा-सा) ॥ २४६-२५० ॥

है ? विद्वानों को बताऊँगा --कविता-फल को, निचोड़ लिये रस में संगीत, नृत्य आदि का सार मिलाकर, उसके साथ अमृत घोलकर, २४५ मुहब्बत की धूप में सुखाने से बने बने पदार्थ से ब्रह्मा ने उस स्त्री का शरीर बनाया ! --मैं ऐसा कहूँगा। उस स्त्री को देखने पर बड़ा आनन्द पाकर मैंने पास जाकर उसका आलिंगन किया। सुगन्धित सुरा-से अधर को चूम-चूमकर मोह के बड़े नशे में मैं सुध-बुध खोकर कुछ देर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पक्कत् तिरुन्द मणिप् पावै युडन् शोलै यॆलाम्
ऒक्क मऱैन्दिडलुम् ओहो ऎऩक् कदऱि
वीळ्न्देन् पिऱहु विऴि तिऱन्दु पार्क्कैयिले
शूळ्न्दिरुक्कुम् पण्डैच्चुवडि, ऎऴुदु कोल्
पत्तिरिहैक् कूट्टम् पऴम् बाय्— वरिशै यॆल्लाम् 255

ऒत्तिरुक्क 'नाम् वीट्टिल् उळ्ळोम् ऎऩवुणर्न्देन्
शोलै कुयिल् कादल शॊऩ्ऩ कदै यत्तऩैयुम्
मालै यऴहिऩ् मयक्कत्ताल् उळ्ळत्ऩे
तोऩ्ऱियदोर् कऱ्पऩैयिन् शूऴ्च्चि यॆऩ्ऱे कण्डु कॊण्डेन्
आऩ्म तऱिऴ्प् पुलवीर कऱ्पऩैये यानालुम् 260

बेदान्द माह विरित्तुप् पॊरु ळुरैक्क
यातानुज् जऱ्ऱे इडमिरुन्दार् कूऱीरो ? 262

खड़ा रहा। बाद में २५० पास रही मणि-सी ललना के साथ सारा उपवन एक साथ ओझल हो गया ! 'ओफ़ ओह !' चिल्लाते हुए मैं गिरा। फिर आँखें खोलकर देखने पर धरे रहे पुराने तालपत्र ग्रंथ, लेखनी, पत्रों के ढेर, पुरानी चटाई-- सारी बहुमूल्य वस्तुएँ-- २५५ वहीं रहीं ! हमें यह भान हुआ कि हम घर पर ही हैं ? उपवन,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पार्श्व - वर्तिनी मणि-सी ललना को भी लेकर।
लुप्त हो गया एक साथ वह उपवन (सुन्दर) ॥
हुआ बड़ा आश्चर्य गिरा फिर मैं चिल्लाकर।
फिर जब देखा मैंने अपने नयन खोलकर ॥
देखा रक्खे ताल - पत्र के ग्रंथ पुरातन।
थे पत्रों के ढेर और लेखनी (सुशोभन) ॥
चटाइयाँ थीं बड़ी पुरानी (रखी वहाँ पर)।
थीं सारी बहु - मूल्य वस्तुएँ (शोभित सुन्दर) ॥ २५१-२५५ ॥

इन सबको अपने नयनों से निरख - परखकर।
जान लिया यह मैंने हूँ मैं (अपने) घर पर ॥
उपवन, कोयल, प्रेम और वह कथित कहानी।
है कल्पना-जाल यह स्थिति मैंने पहचानी ॥
संध्या की (सुन्दर .स्वर्णिम) छबि को विलोककर।
हुआ तुरत उत्पन्न हृदय में मोह (मनोहर) ॥
उठी मोह से (अति मंजुल) कल्पना मनोरम।
उसी कल्पना की है सारी क्रीड़ा अनुपम ॥
तमिळ सकल - निष्णात और विद्वान जान लें।
इस सबको वे पूर्ण कल्पना - कपट मान लें ॥ २५६-२६० ॥

इस पर भी दार्शनिक दृष्टि से व्याख्या करना।
संभव होगा तो बतलायेंगे (चित धरना !) ॥ २६१-२६२ ॥

कोयल, मुहब्बत, कहानी --सभी संध्याकाल की छवि से उत्पन्न मोह से मन में उठा हुओ कल्पना का छल है --यह मैंने जान लिया। निष्णात तमिळ विद्वान, कल्पना ही है तो भी २६० दार्शनिकता के ख्याल से व्याख्या करने को कोई स्थान रहा, तो कह दें। २६१-२६२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुदिय पाडल्हळ्

सुदन्दिर देवियिडम् मुऱैयीडु—1

(पुदुवै इन्दिया— 8-5-1909)

अन्नायिङ् गुनैक् कूऱिप् पिळैयिल्लै यामे, निन्नऱुळ् पॅऱ्ऱोङ्ग
ऍन्नानुन् दहुदियिले मिहप् पॊल्लेम्, पऴियुडैयेम् इऴिवु शान्ऱेम्
पॊन्नान वऴियहऱ्ऱिप् पुलै वऴिये शॆल्लुम्, इयल् पॊरुन्दि युळ्ळेम्
तन्नाल् वन्दिडु नलत्तैत् तविर्त्तुप् पॊय्त्, तीमैयिनैत् तऴुवुहिन्ऱोम् 1
ऍल्लैयिल्लाक् करुणै युऱुन् दॆय्वद नी, यॆवर्क्कु मऩमिरङ्गि निऱ्पाय्
तॊल्लै यॆलान् दविर्न्दॆङ्गळ् कण्काण, नॊडिप् पॊऴुदिल् तुरुक्कि मान्दर्
नल्ल पॆरुम् बदङ् गाणप् पुरिन्दिट्टाय् पल काल, नबै कॊण्डऩ्नार्
शॊल्लरिय पिऴै शॆय्द (दु) अत्तनैयु मऱन्दवरैत्, तॊऴुम्बु कण्डाय् 2

अरैक् कणमा यिनुमुन्नैत् तिरिकरणत् तूय्
मैयुडन् "अन्नाय् नानत्
तिरैकडले अरुट्कडले शीरनैत्तु मुदवु
पॆरुन्देवे यिन्दत्
तरैक्कणिय पॆरुम् बॊरुळे कावायो ?"
ऍन्ऱलऱित् तायुत् नामम्
उरैक्क मन (म्) ऍमक्किन्ऱि यामऴिन्दाऱ्
पिऴै शिऱिदुम् उळदाङ् गॊल्लो ? 3

नवीन गीत

स्वतंत्रता देवी से याचना—१

[पुदुच्चेरी को अंग्रेजी में 'पांडिचेरी' कहा जाता है। पत्र : 'इंडिया' यानी 'भारत'— ८-५-१९०९]

माँ ! तुम्हारा कोई दोष नहीं है ! हम ही तुम्हारी कृपा के पात्र बनने के कतई योग्य नहीं हैं। हम बहुत बुरे हैं, निंद्य हैं, नीच हैं। स्वर्ग-मार्ग का त्याग कर नीच मार्ग पर चलने का स्वभाव हम रखते हैं। स्वतः जो शुभ आने को तैयार है, उससे बचकर बुराई को हम गले लगाते हैं। १ अपार करुणामयी तुम किसी पर भी दया करने को उद्यत हो। हमने अपनी आँखों से देखा है कि तुम्हारी कृपा से टर्की के लोग संकटमुक्त हुए और अच्छे पद पर आसीन हो गये। वे बहुत काल तक अवनत थे। उन्होंने अकथ्य अपराध भी किये थे, पर तुमने उन सबको बुलाकर उनकी सेवा मान ली। २ आधे क्षण ही सही ! त्रिकरण शुद्धि के साथ, तुमसे यह विनय करने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुदिय पाडल्हळ्

नवीन गीत

स्वतंत्रता देवी से प्रार्थना—१

(अरे !) दोष है कोई नहीं तुम्हारा, माता ! ।
तव करुणा के योग्य नहीं हम हैं, जगमाता ! ।।
बहुत बुरे हैं हम निर्दय हैं अतिव नीचतर ।
स्वर्ग-मार्ग को त्याग चल रहे नीच मार्ग पर ।।
जो शुभ आने को प्रस्तुत है उसे त्यागकर ।
(सदा) बुराई को हम गले लगाते (पामर) ।। १ ।।
तुम अपार करुणा वाली हो (माता ! संतत) ।
सब पर दया दिखाने को रहती हो उद्यत ।।
अपनी आँखों से हमने देखा है (निश्चय) ।
पाकर कृपा तुम्हारी टर्की के जन (निर्भय) ।।
सभी संकटों से हैं मुक्त हुए (निःसंशय) ।
हुए उच्च पद पर आसीन (परम मंगलमय) ।।
बहुत काल से बने रहे थे वे (अति) अवनत ।
यद्यपि किये अकथ अपराध उन्होंने अविरत ।।
फिर भी उन्हें बुला तुमने निज शरण लिया ले ।
(तुम अपार करुणामय रक्षक शरणागत के) ।। २ ।।
आधे क्षण भी अपना अन्तःकरण शुद्ध कर ।
आर्त नाद करके तुमसे यह (विनत) विनय कर ।।
(अरे ! हमारी पावन) माता ! करुणा - सागर ! ।
ज्ञान - तरंग - सिंधु ! भू - देवी ! परम मान्यवर ! ।।
नहीं करोगी क्या (तुम) रक्षा (देवि !) हमारी ।
कह न सके हम इस प्रकार (हो महा-दुखारी) ।।
(इस प्रकार से) यदि हम (इस जग में) मिट जाएँ ।
तो अपराध तुम्हारा इसमें क्या (बतलाएँ) ।। ३ ।।

की और आर्तनाद उठाने की बुद्धि न रही कि हे माता, हे ज्ञान-तरंग-सागर, हे करुणा-समुद्र, हे धरती की परममान्या देवी, क्या हमारी रक्षा नहीं करोगी ? और अगर हम मिटें, तो उनमें तुम्हारा थोड़ा भी दोष है ? ३ स्वतः इच्छा करके, जो छोटा कीड़ा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॆण्डुमॆन विळक्किल् विळुञ् जिरु पूच्चि तन्नैयावर् विलक्क वल्लार् ?
तूण्डु मरुळाल् यामोर् विळक्कॆ यवित्ताल् अदुतान् शुर्रिच् चुर्रि
मीण्डुमोर् विळक्किट् पोय् माण्डु विळुम् अःदॊप्प विरुप्पोडेहित्
तीण्डरिय पुन्मै यिनिल् याम् वीळ्न्दा लन्नाय्, नी शॆय्व दॆन्ने ? 4
अन्द ना ळरुळ् शॆयनी मुर्पट्ट पॊळुदॆलाम्, अरिविलादेम्
वन्द मा देवि निनैनल् वरवु कूरियडि, वणङ्गिडामल्
शॊन्दमा मनिदरुळे पोरिट्टुप् पाळाहि, तुहळाय् वीळ्न्देम्
इन्द नाळच्चत्ताल् नी वरुङ्गाल् मुहन् दिरुम्बि, यिरुक्किन्रो माल् 5

दॆय्वम् नमक्कनुकूलम्—2

[बारदियार् अवरदु मूत्त पुदल्वि तङ्गम्माळ् अवर्हळ् रुदुवान्न नाळ् अन्रु पाडियदु ।]

इन्दत् तॆय्वम् नमक्कु अनुकूलम्
इनि मनक्क वलैक् किडमिल्लै (इन्द)
मन्दिरङ्गळैच् चोदनै शॆय्दाल्, वैयहत्तिनै आळ्वदु दॆय्वम्
इन्दत् तॆय्वम् गदियॆन्रिरुप्पोर्, आक्क मुण्डॆन् रनैत्तु मुरैक्कुम् (इन्द) 1
मरत्तिन् वेरिल् अदर्कुण वुण्डु, वयिर्रिनिले करुवुक्कुण वुण्डु
तरत्ति लॊत्त तरुमङ्गळुण्डु, शक्ति यॆन्रिलो मुक्तियुण्डु (इन्द) 2
उलहमे उडलाय् अदर् कुळ्ळे, उयिरदाहि विळङ्गिडुन् दॆय्वम्
इलहुम् वानॊळि पोलरि वाहि, ऍङ्गणुम् परन्दिडुम् दॆय्वम् (इन्द) 3

दीप में जा गिरता है, उसे कौन रोक सकता है ? प्रेरक दया से हम एक दीप को बुझा दें, तो वह चक्कर काट-काटकर दूसरे दीप पर जा गिरेगा और जल मरेगा। ठीक उसी भाँति जान-बूझकर हम (हमारे लोग) अस्पृश्य नीचता में जा गिरेंगे, तो तुम क्या करोगी ? ४ उन दिनों, जब-जब तुम हम पर दया दिखाने लगी, तब-तब हम बुद्धिहीनों ने आयी हुई महालक्ष्मी का स्वागत करके उसकी आराधना नहीं की। हम आपस में अपनों ही से लड़ाई-झगड़ा करके मिटे और धूल बने। आज जब तुम आ रही हो, तब डर के कारण हम मुख दूसरी ओर करके रह रहे हैं। ५

देव हमारे अनुकूल है—२

[जिस दिन भारती की ज्येष्ठ पुत्री सयानी हुई, उस दिन भारती ने यह गीत गाया।] यह देव हमारे अनुकूल है। आगे चिंता का कोई अवसर नहीं ! (टेक) मंत्रों का शोध करो, तो (विदित होगा कि) सृष्टि का शासक देव है। इस देव का आश्रय मानो, तो अभ्युदय होगा। यही सब शास्त्रों का कहना है। (यह देव०) १ पेड़ की जड़ में पेड़ का खाना (रखा) है, पेट (गर्भ) में ही गर्भस्थ शिशु का खाना रहता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जो पतंग खुद ही दीपक पर जा गिरता है।
उसको जल जाने से कौन रोक सकता है ? ॥
दीप बुझाएँ एक दया से प्रेरित होकर।
तो तत्क्षण जाएगा वह दूसरे दीप पर ॥
जल जायेगा उस पर काट-काटकर चक्कर।
उसी भाँति ही हम सब जन भी जान-बूझकर ॥
यदि अस्पृश्य नीचता में गिर जाएँ जाकर।
तब कहो, हमारे लिए तुम्हीं क्या लोगी कर ॥ ४ ॥

हम पर दया दिखाने लगीं (जननि !) तुम जब-जब।
हम सब बुद्धि-हीन (मनुजों ने माता !) तब-तब ॥
आयी हुई महालक्ष्मी का करके स्वागत।
आराधना नहीं की उसकी (हो श्रद्धा - नत) ॥
हम आपस में अपनों ही से (बस) लड़-भिड़कर।
धूल बन गये और मिट गये (ग़ारत होकर) ॥
आज आ रही है जब (माता पास हमारे)।
मुख फेरे हम खड़े हुए लज्जा के मारे ॥ ५ ॥

देव हमारे अनुकूल है—२

चिन्ता का क्या काम ! देव अनुकूल हमारे ॥ टेक ॥
शोध करोगे यदि तुम श्रुति-मंत्रों के ऊपर।
है प्रपंच का शासक देव, जान लोगे उर ॥
होगा (नव) अभ्युदय, रहो तुम देव-सहारे।
यही (एक स्वर से हैं) शास्त्र कह रहे सारे ॥ (चिंता०) ॥ १ ॥

तरु की जड़ में संचित है तरु का भोजन वर।
रखी गर्भ-शिशु की खूराक गर्भ के अन्दर ॥
हैं स्तर के अनुकूल धर्म (सबके ही) निश्चित।
और शक्ति ही में है मुक्ति (सभी की संचित) ॥ (चिंता०) ॥ २ ॥

मानव के इस शारीरिक प्रपंच के अन्दर।
देव प्राण बनकर शोभित रहता है (सुन्दर) ॥
दीप्त गगन की (जगमग) ज्योति-समान (समुज्ज्वल)।
सर्वव्यापी है यह देव (निरन्तर निर्मल) ॥ (चिंता०) ॥ ३ ॥

है। वर्णों के अनुकूल धर्म निश्चित हैं। शक्ति में मुक्ति है। (यह देव०) २ प्रपंच के शरीर के अन्दर देव प्राण बने शोभायमान रहता है। दीप्त आकाश की ज्योति के समान सर्वव्यापी है यह देव। (यह देव०) ३ हमारे सभी कृत्य ईश्वर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शॅय्है यावुम् दॅय्वत्तिन् शॅय्है, शिन्दै यावुम् दॅय्वत्तिन् शिन्दै
उय्है कॉण्डदन् नामत्तैक् कूरिन्, उणर्वु कॉण्डवर् तेवर्ह ळावर् (इन्द) 4
नोयिल्लै वरुमैयिल्लै, नोन्बिळैप् पदिले तुन्बमिल्लै
तायुन् दन्दैयुम् तोळनुमाहित्, तहुदियुम् पयनुन् दरुम् दॅय्वम् (इन्द) 5
अच्च मिल्लै मयङ्गु वदिल्लै, अन्बुम् इन्बमुम् मेन्मैयु मुण्डु
मिच्च मिल्लै पळनदुयर्क्, कुप् वॅर्रि युण्डु विरैविनिल् उण्डु (इन्द) 6
इन्दत् तॅय्वम् नमक्कनुकूलम्
इनि मनक् कवलैक् किडमिल्लै 7

इन्दियाविन् अळैप्पु—3

(शुदेशमित्तिरन्— 19-7-1921)

वेण्डुकोळ्

अन्बिर् किनिय इन्दिया ! अहिल
मदङ्गळ् नाडुहळ् मान्दरुक्कॅल्लाम्
ताये ! अॅङ्गळ् उणर्विनैत् तूण्डिय
शेय् नॅडुङ् गालत्तिन् मुन्ने शिरन्दॉळिर्
कुरुक्कळै यळित्तुक् कुवलयङ् गात्तनै
तिरुक्किळर् दॅय्वप् पिरप्पिनर् पलरै
उलहिनुक् कळित्ताय् ! उनदॉळि ञानम्
इलहिड नी यिङ् गॅळुन् दरुळुहवे !
विडुदलै पॅरनाम् वेण्डि निन् मरैवु

के कार्य हैं। विचार सब उसके ही विचार हैं। उद्धार की कामना से उसका नाम जपें, तो भावमग्न मनुष्य सुर बन जायँगे। (यह देव०) ४ (तब) रोग नहीं होगा, अभाव नहीं होगा। व्रतधारण में कष्ट नहीं होगा। माता-पिता और सखा बनकर देव योग्यता भी देगा और उसका फल भी। (यह देव०) ५ डर नहीं होगा। भ्रम नहीं होगा। प्रेम, आनन्द तथा बड़ाई होगी। पुराने दुखों के ढेर बाक़ी नहीं हैं। जीत होगी और वह जल्दी मिलेगी। (यह देव०) ६ यह देव हमारे लिए अनुकूल है। आगे मन में कोई चिन्ता नहीं है। ७

भारत का निमन्त्रण—३

[सुदेश मित्तिरन् (पत्र) १९-७-१९२१]

निवेदन

प्रेम-मधुर इंडिया (भारत) ! अखिल मतों, देशों तथा मानवों की माता !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ईश्वर के हो कार्य कृत्य हैं सभी हमारे।
उसके ही विचार मेरे विचार हैं सारे॥
यदि उद्धार चाहकर, उसका नाम जपेंगे।
भाव-मग्न हो सब मनुष्य ही देव बनेंगे॥ (चिंता०) ॥ ४ ॥
होगा नहीं अभाव (कष्टकर) रोग न होगा।
व्रत-धारण में (कभी) कष्ट का (योग) न होगा॥
देव हमारे माता, पिता, सखा (सब) बनकर।
हमें योग्यता देगा उसका फल भी (सुन्दर)॥ (चिंता०) ॥ ५ ॥
उर मिट जायेगा मिट जायेगा (सारा) भ्रम।
प्रेम तथा आनन्द, बड़ाई होगी (अनुपम)॥
राशि नहीं अब शेष पुराने दुख की भारी।
शीघ्र, निकट में, निश्चय होगी जीत हमारी॥ (चिंता०) ॥६-७॥

भारत का निमंत्रण—३

[सुदेश मित्तिरन् (पत्र) १९-७-१९२१]

निवेदन

प्रेम-मधुर! भारत! (मन - भावन भारतमाता!)।
अखिल मतों, मनुजों, देशों की (पावन) माता!॥
तुमने तेजस्वी उत्तम गुरुजन पैदा कर।
यहीं पुरातन में भावों को अति प्रबुद्ध कर॥
किया विश्व का (हे माता!) तुमने संरक्षण।
श्री - संपन्न अनेक महान भरे जग - आँगन॥
दीप्ति तुम्हारी और तुम्हारा ज्ञान (सुपावन)।
(इस जग में) अपनी आभा का करे प्रदर्शन॥
इस कारण तुम (मेरी माता!) यहाँ पधारो।
हमें स्वतंत्र बनाने हित निज वदन विदारो॥
जो मानव - जातियाँ यहाँ की रहनेवाली।
करो उपाय कलह से हो उनकी रखवाली॥

तुमने श्रेष्ठ तथा तेजोमय गुरुजनों को पैदा करके, बहुत प्राचीन काल में ही हमारी भावनाओं को उद्बुद्ध किया, विश्व का संरक्षण किया। तुमने संसार को श्रीसम्पन्न देवी जन्म के अनेक महान लोग दिलाये। तुम्हारी दीप्ति तथा ज्ञान इधर अपनी आभा का प्रदर्शन करे —तदर्थ तुम यहाँ पधारो। हमें स्वतंत्र बनाने के लिए अपने छिपे हुए सुन्दर मुख को खोलो और हमारी दृष्टि के सामने पधारो! यहाँ रहनेवाली मानवजातियों को युद्ध से बचने का उपाय करो। उनकी शत्रुता को प्रेम के द्वारा निर्जीव बना दो। क्रुद्ध लोगों की सेनाओं को, उनके स्थानों को लौटा दो। हे माता!

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पडु मणि मुहत्तैत् तिऱन्दैम् पार्वै मुन्
वरुह नी ! इङ्गुळ मान्निडच् चादिहळ्
पॊरुहळन् दविर्न्दमै वुऱ्ऱिडप् पुरिह नी !
मऱ्ऱवर् पहैमैयै अन्बिन्नाल् वाट्टुह !
शॆऱ्ऱवर् पडैहळै मन्नैयिडन् दिरुप्पुह !
ताये नित्ऱन् पडैत् तनयराम्
मायक्कण्णन् पुत्तन् वलिय शीर्
इरामनुम् आङ्गॊरु महमदु मिणैयुऱ्ऱ
विरावु पुहळ् वीररै वेण्डुदुम् इन्नाळ् !
"तोन्ऱिन्नेन्" ऎन्ऱु शॊल्लि वन्दरुळुम्
शान्ऱोन् ऒरु मुन्नि तरुह नी ऎमक्के !
मोशे, किऱिस्तु नानक् मुदलि योर्
माशऱ वणङ्गि मक्कळ् पोऱ्ऱिडत्
तहुन्दिडुन् दिऱत्तिन्नर् तमैप् पोलिन्ऱॊरु
पवित्तिर महनैप् पयन्दरुळ् पुरिह नी !
ऎन्मुन् वन्दु नीदियिन् इयलैच्
चॆम्मैयुऱ विळक्कुमॊरु शेवहनै अरुळुह नी !

उत्तरम्

केळ् ! विडै कूऱिनळ् मादा ! नम्मिडै
यावनै यिङ्गु तोन्ऱिन्नन् ? इवन् यार् ?
उलहप् पुरट्टर् तन्दिर उरैयॆलाम्
विलहत् ताय्शॊल् विदियिनैक् काट्टुवान्
मलिवु शॆय्यामै, मनप् पहैयिन्मै
नलि वुरुत्तोरै नाम् ऎदिर्त्तिडामै
तीच् चॆयल् शॆय्युम् अरशिनैच् चेरामै
आच् चरियप्पड उरैत्तनन्— अवै यॆल्लाम्

हम आज तुम्हारे वीर पुत्र, मायावी कृष्ण, बुद्ध, पराक्रमी श्रीरामचन्द्र और मुहम्मद, जैसे यशस्वी वीर चाहते हैं। तुम ऐसे एक मुनिवर को, महात्मा को (पैदा कर) दो जो यह कहते हुए प्रकट हो कि 'प्रकट हो गया' और हम पर कृपा करें। एक ऐसी योग्य पवित्र संतान पैदा करो, जो मूसा, ईसा तथा नानक आदि अनिंद्य तथा वंद्य महात्माओंके समान हो ! एक ऐसा वीर पैदा करो, जो न्याय की गति को हमें अच्छी तरह से तथा नेक प्रकार से समझा दे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उनका वैर प्रेम द्वारा निर्जीव बना दो।
क्रोधित सेनाएँ उनके स्थल पर लौटा दो॥
मायावी श्रीकृष्ण (महात्मा) बुद्ध (तपस्वी)।
पराक्रमी श्रीरामचन्द्र - से (महा मनस्वी)॥
और मुहम्मद के समान (अतुलित ओजस्वी)।
वीर पुत्र हों (फिर) इनके सम अतुल (यशस्वी)॥
दो हमको तुम ऐसे एक महात्मा मुनिवर।
जो कि प्रकट हों "प्रकट हो गया" ऐसा कहकर॥
कृपा करें वे मुनिवर फिर हम सब लोगों पर।
ऐसा योग्य पवित्र पुत्र उपजाओ (सुन्दर)॥
जो मूसा, ईसा, नानक आदिक अनिन्द्य (वर)।
वन्द्य महापुरुषों समान हो (गुणवाला नर)॥
औ' उपजाओ ऐसा एक वीर (विद्याधर)।
(हे माता! तुम इस भारत की वसुन्धरा पर)॥
भली भाँति जो हमें न्याय की गति समझाये।
(भटक रहे जो उन्हें न्याय का पथ दिखलाये)॥

उत्तर

यह सुन करके दिया (हमें) माता ने उत्तर।
सुनो हमारे मध्य हुआ पैदा ऐसा नर॥
जग भर के षड्यंत्रकारियों के कथनों को।
बना प्रभाव-हीन (उनके वञ्चक - वचनों को)॥
माता के आदेश सुनायेंगे (अति सुन्दर)।
(सुन लो वे आदेश रखो निज मन के अन्दर)॥
निष्क्रिय मत रहना, न वैर रखना उर-भीतर।
दीनों पर करना न कभी आक्रमण (निठुरतर)॥
जो शासन करता है कार्य (महा) नृशंस (-तर)।
उससे (तुम) सम्बन्ध न रखना (कभी रंच भर)॥

उत्तर

सुनो! माता ने प्रार्थना स्वीकार की। हमारे मध्य कौन पैदा हो गया है? वह कौन है? वह वही है जो विश्व भर के षड्यंत्रकारियों के कथनों को प्रभावहीन करनेवाली माता की आज्ञा को सुनायेंगे। निष्क्रिय न रहना, मन में शत्रुता न रखना, दीनों पर हमला न करना, नृशंस कार्य करनेवाले शासन से सम्बन्ध न रखना —यह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वरुह गान्दि ! आशिया वाळ्हवे !
तरुम विदिदान् तळैत्तिड उळैप्पाय्
आत्मा अदनाल् जीवनै याण्डु
मेन्नॅरिप् पडुत्तुम् विदितनै यरुळिनाय् !
पारत नाट्टिन् पळम्बॅरुङ् गडवुळर्
वीरवान् कॉडियै बिरित्तु नी निरुत्तिनाय्
मानुडर् तम्मै वरुत्तिडुम् तडैहळ्
आनवै बुरुहि अळिन्दिडुम् वण्णम्
उळत्तिनै नी कनल् उरुत्तुवाय् ! ऍङ्गळ्
गान्दि महात्मा ! निन् पाऱ् कण्डनम् !
मान्दरुट् काण नाम् विरुम्बिय मनिदनै
निन् वाय्च् चॉल्लिल् नीदि शेर अन्नै
तन् वाय्च् चॉल्लिनैक् केट्किन्ऱनम् याम्
तॉळुन्दा यळैप्पिऱ् किणङ्गि वन्दोम् याम्
ऍळुन्दोम्; गान्दिक् कीन्दोम् ऍमदुयिर्
इङ्गवन् आविक् कॉळ्है वॅन्ऱिडवे !
अन्ऱैक्कुणवु तान् अहप्पडुमायिन्
नन्ऱदिल् महिळ्वोम्; विडुदलै नाडि
ऍय्दिडुम् जॅल्ब ऍळुच्चियिऱ् कळिप्पोम्
मॅय्तिह ळॉऱुमै मेबुवोम्; उळत्ते
कट्टिन्ऱि वाळ्वोम्; पुऱत्तळैक् कट्टिनै
ऍट्टुण मविया देऱुवोम्; पळम् बोऱ्क्
कॉलत् तॉळिऱ् करुविहळ् कॉळ्ळा दॅन्ऱुम्
निलैत्तन माहिय नीदिक् करुवियुम्
अऱिवुम् कॉण्डे अरुम् पोऱ् पुरिदोम्;

सब उन्होंने विस्मयकारी रूप से कहा ! आइए गांधीजी। एशिया की जय हो ! धर्म विधि का बढ़ावा हो, इसके लिए आप परिश्रम करते हैं। आपने वह विधि बताई, जिससे जीवन पर आत्मा का शासन हो और जीवन उन्नत तथा उत्कृष्ट हो ! भारत देश के प्राचीन देशों का श्रेष्ठ तथा पवित्र झंडा फहरा दिया। आपने अपने मनुष्यों के मन में एक आग प्रज्वलित की, जिससे मानव-संकटहारी बाधाएँ पिघल जायं ! हे महात्मा गांधीजी ! हमने आप में वह मनुष्य पाया, जिसे हम मनुष्यों में देखना चाहते थे। आपके वचनों में हम माता के न्यायसम्मत वचन सुनते हैं। वंद्य माता की पुकार (आपके वचनों द्वारा) सुनकर हम आये हैं। हम उठ गये। गांधीजी को हमने जीवन समर्पित कर दिया। उनका आध्यात्मिक सिद्धान्त सफल हो ! रोज का खाना मिल जाय, तो सही; खुश होंगे। (पर)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह सब कहा उन्होंने मन में उपजा विस्मय।
स्वागत श्री गांधी का और एशिया की जय॥
वृद्धि धर्म-विधि की हो (इस भारत-वसुधा पर)।
इसके लिए परिश्रम करते आप (निरन्तर)॥
जिससे जीवन पर होवे आत्मा का शासन।
उन्नत हो उत्कृष्ट बने (यह मानव-) जीवन॥
इस प्रकार की (उत्तम) विधि आपने बतायी।
(अपना करके जिसे बनें जीवन सुखदायी)॥
भारत के प्राचीन देवताओं का (सुन्दर)।
फहराया झंडा पवित्र (अत्यन्त) श्रेष्ठ (-तर)॥
मनुजों के मन में धधकाईं वे ज्वालाएँ।
जिससे पिघलें नर - संकटकारी बाधाएँ॥
मिला आप में गांधीजी! वह मनुज (श्रेष्ठ तर)।
जिसे देखना चाह रहे थे नर के भीतर॥
(पूज्य!) आपके वचनों में (हम सब जन सन्तत)।
माता के (ही) वचन सुन रहे न्याय - सुसम्मत॥
वन्दनीय माता की (प्रबल) पुकार (मनोहर)।
हम (सब) आये हैं तव वचनों द्वारा सुनकर॥
हम जग उठे, किया गांधी को जीवन अर्पण।
आध्यात्मिक सिद्धान्त सफल हो उनका (शोभन)॥
मिले नित्य यदि अन्न मुदित होंगे तो सब जन।
पर स्वतंत्रता पाने का प्रयास कर (पावन)॥
हमें प्राप्त होगा उत्कंठा का जो (नव) धन।
उसे प्राप्त करके आनन्द लहेंगे सब जन॥
बाह्य बंधनों की न रंच परवाह करेंगे।
तोड़ आत्म:- बंधन हम आगे (सदा) बढ़ेंगे॥
रण के वे घातक हथियार पुराने तजकर।
ले निज मति-बल और धर्म के आयुध लेकर॥
युद्ध करेंगे सत्याग्रह - पथ अपनायेंगे।
(किन्तु नहीं मन में कदापि हम घबरायेंगे)॥

स्वतन्त्रता पाने के प्रयास में जो उत्कण्ठा का धन मिलता है, उसी में आनन्द का अनुभव करेंगे। सच्चे रूप से हम एकता का पालन करके गौरवान्वित होंगे। आत्मा पर बन्धन नहीं लगने देंगे। बाहरी बन्धनों की कतई परवाह नहीं करेंगे और आगे बढ़ेंगे। प्राचीन युद्धोपयुक्त घातक आयुधों का त्याग करके, हम धर्म का हथियार तथा अपनी बुद्धि का बल लेकर लड़ेंगे (सत्याग्रह का मार्ग अपनायेंगे)। साधनों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नऱिय पुन् शिऱैहळिल् वाडिनुम् उडलै
मडिय बिदिप्पिनुम् "मीट्टु नाम् वाऴ्वोम्" अॅन्
ऱिडियुऱक् कूऱि वॅर्ऱि येऱि
ऑडिपडत् तळैहळ् ओङ्गुदुम् यामे

कुरुविप् पाट्टु—4

(पुदुवै— 'तमिऴ् अन्बन्'— 23-10-1946)

अरुबि पोलक् कवि पॉऴिय— अॅङ्गळ्
अन्नै पादम् पणिवेन्
कुरुविप् पाट्टै यान् पाडि— अन्दक्
कोदै पादम् अणिवेन् 1

केळ्बि

शिऱ्ऱञ् जिऱु कुरुबि— नी शॅय्हिऱ बेलै अॅन्न ?
बऱ्ऱक् कुरुवि— नी वाऴुम् मुऱै कूऱाय् 2

कुरुवियिन् विडै

केळडा मान्निडवा— अॅम्मिल् कीऴोर् मेलोर् इल्लै
नीळा अडिमैयिल्लै— अॅल्लोरुम् बेनद रॅऱत् तिरिवोम् 3
उणबुक्कुक् कवलैयिल्लै— अॅङ्गुम् उणवु किडैक् कुमडा !
पणमुम् काशुमिल्लै— अॅङ्गु पार्क्किनुम् उणवे यडा 4
शिऱियवोर् वयिऱ्ऱिनुक्काय्— नाङ्गळ् जन्म मॅल्लाम् वीणाय्
मऱिहळ् इरुप्पवु पोल्— पिऱर् वशन् दन्निल् उऴल्वदिल्लै 5

से निपट हीन तथा घृणित कारागृहों में रहकर दुख उठायें तब भी, प्राणदण्ड मिल जाय तब भी, हम 'फिर से जन्म होगा' ऐसी घोषणा अशनि के स्वर में करते हुए बन्धनों को काटकर फेंक देंगे ! हम सफलता पायेंगे और आगे बढ़ेंगे !

कुरुवि (गोरैया ?) का गीत—४

[कुरुवि छोटी चिड़िया का नाम है। वह चिड़िया राख के रंग की तथा बहुत छोटी होती है। यह गीत 'पुदुच्चेरी' के 'तमिऴ अन्बन' नामक पत्र में छपा था। ता. २३-१०-१९४६]

सरिता के समान कविता चल निकले; इस वास्ते माता के चरणों में विनय करूँगा, हाँ ! १

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हो साधन से हीन, घृणित जेलों में रहकर।
दुःख उठाकर, प्राण - दंड को भी अपनाकर॥
फिर से लेंगे जन्म (यही विश्वास हृदय धर)।
वज्र स्वरों से यही घोषणा कर (भूतल पर)॥
सारे बंधन काट - काटकर बिखरायेंगे।
सदा बढ़ेंगे (पूर्ण) सफलता (हम) पायेंगे॥

कुरुवि का गीत—४

सरिता के सम बहे (सरस) कविता की धारा।
अतः चरण - वन्दन करता मैं जननि! तुम्हारा॥ टेक॥

प्रश्न

क्या तुम करतीं काम? कुरुवि! बतलाओ लघुतर।
जीने की विधि बतलाओ, हे कुरुवि! मनोहर!॥ १॥

कुरुवि का उत्तर

ऊँच - नीच का भेद नहीं हममें कुछ रे नर!।
नहीं दासता (अरे!) छूटना जिससे दुष्कर॥
हम राजाओं - सदृश (सदा) घूमते (निरन्तर)।
भोजन की चिन्ता न, प्राप्त है सभी जगह पर॥
रुपये - पैसे से कुछ नहीं हमारा नाता।
सभी जगह ही है हमको भोजन मिल जाता॥ २-४॥
क्षुद्र पेट के लिए दूसरों के वश होकर।
भेड़ - बकरियों तुल्य न हम घुटते जीवन - भर॥

प्रश्न

हे छोटी से छोटी कुरुवि, तुम क्या काम करती हो? हे सुन्दर कुरुवि, जीने की विधि बताओ! २

कुरुवि का उत्तर

सुनो रे मानव! हममें बड़ा-छोटा (यह भेद) कुछ नहीं है। ऐसी दासता नहीं है, जिससे छूट नहीं सकते। हम राजाओं के समान घूमते हैं। ३ भोजन की चिन्ता जब नहीं करो, तब सर्वत्र भोजन मिल जायगा। रुपये-पैसे की बात ही नहीं उठती। जहाँ देखो, वहाँ खाना मिल जाता है! ४ इस क्षुद्र पेट के लिए हम भेड़-बकरियों के समान, जन्म-भर वृथा अन्यों के वश में नहीं घुटते! ५ आकाश ही हमारा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काट्रुम् ऑळियु मिहु आहायमे ऍङ्गळुक्कु
एट्र दॊरु वीडु इदऱ् कॆल्लै यॊत्रिल्लै यडा 6
बेयहम् ऍङ्गु मुऴदु उयर्वान पॊरुळॆल्लाम्
ऐयमिन् ऱॆङ्गळ् पॊरुळ् इवै ऍम् आहार माहुमडा 7
एळैहळ् यारु मिल्लै— शॆल्वम् एरियोर् ऍन्ऱु मिल्लै
बाळ्वुहळ् ताळ्वु मिल्लै— ऍन्ऱुम् माण्बुडन् वाळ्व मडा 8
कळ्ळम् कपडमिल्लै— वॆरुम् गर्वङ्गळ् शिऱुमैयिल्लै
ऍळ्ळऱ् कुरिय गुणम्— इवै याबुम् उम् कुलत्तिलडा 9
कळवुहळ् कॊलैहळिल्लै— पॆरुङ् गामुहर् शिऱुमैयिल्लै
इळैत्तवर्क्के वलियर्— तुन्बम् इळैत्तुमे कॊल्ल विल्लै 10
शित्तन् जिऱु कुडिलिल् मिहच् चीरऴि वीडुहळिल्
इत्तलिल् वाळ्न्दिडुवीर्— इदु ऍङ्गळुक्कु इल्लैयडा 11
पूनिऱै तरुक्कळिलुम्— मिहप् पॊऴिलुडैच् चोलैयिलुम्
तेनिऱै मलर्हळिलुम्— नाङ्गळ् तिरिन्दु बिळयाडुवोम् 12
कुळत्तिलुम् एरियिलुम् शिऱु कुन्ऱिलुम् मलैयितिलुम्
पुलत्तिलुम् वीट्टिनिलुम्— ऍप्पॊऴुदुम् विळै याडुवोम् 13
कट्टुहळ् ऑन्ऱु मिल्लै— पॊय्क्कऱैहळुम् ऑन्ऱु मिल्लै
तिट्टुहळ् तीदॆङ्गळ्— मुदऱ् चिऱुमैहळ् ऑन्ऱुमिल्लै 14
कुडुम्बक् कवलैयिल्लै— शिऱु कुम्बि यत् तुयरु मिल्लै
इडुम् बैहळ् ऑन्ऱु मिल्लै— ऍङ्गट् किन्बमे यॆन्ऱु मडा 15

निवासस्थान है, जहाँ हवा तथा प्रकाश भरा है ! उसकी कोई सीमा नहीं है, रे ! ६ विश्व भर में श्रेष्ठ वस्तुएँ हैं। निःसंशय वे हमारी भोग्य वस्तुएँ हैं। ७ दरिद्र कोई नहीं है, न धन में बढ़े कोई। उन्नयन नहीं है, न पतन ही। हमेशा गौरव के साथ जीते हैं। ८ वंचना नहीं ! कपट नहीं ! खोखला घमंड नहीं, छोटेपन का भाव नहीं ! ये सब निंद्य गुण, अरे मानव, तुम्हारे कुल में ही होते हैं। ९ चोरी, हत्या आदि हमारे बीच नहीं होती। कामुकों की जघन्य बात भी हममें नहीं है। हममें बलवान् लोग निर्बलों पर अत्याचार नहीं करते तथा उन्हें नहीं मारते। १० छोटे-छोटे झोंपड़ों में तथा टूटे-फूटे घरों में तुम संकटों के बीच जिओगे। हमारी वह दुर्गति नहीं है। ११ हम पुष्पों से भरे तरुओं पर, जलाशय-सहित वनों में तथा मधु-भरे पुष्पों पर घूमते तथा क्रीडा करते हैं। १२ तालों-झीलों में, छोटे-बड़े पर्वतों पर, खेतों तथा घरों में --हम हमेशा खेलते रहते हैं ! १३ बन्धन कुछ नहीं है, झूठे कलंक नहीं हैं। गाली-गलौज, गुस्सा आदि निंद्य व्यवहार भी हममें नहीं हैं। १४ कौटुम्बिक चिन्ताएँ और इस छोटे पेट की कठिनाइयाँ, कोई भी संकट या कष्ट नहीं है। हमेशा हमारे लिए सुख ही सुख है ! १५ रे, कोई दुख नहीं, कोई कष्ट नहीं !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जहाँ पवन है जो प्रकाश से भासमान है।
वह असीम आकाश हमारा वास - स्थान है ॥ ५-६ ॥

जग भर में जिन श्रेष्ठ वस्तुओं का है संचय।
भोग्य वस्तुएँ सभी हमारी वे निःसंशय ॥ ७ ॥

यहाँ न कोई धनी, नहीं है कोई निर्धन।
नहीं यहाँ है पतन, नहीं है यहाँ उन्नयन ॥
हम गौरव के साथ सदा जीते रहते हैं।
(धीर-भाव से जीवन के सुख-दुख सहते हैं) ॥ ८ ॥

कपट नहीं है यहाँ, नहीं है यहाँ प्रवंचन।
है खोखला घमंड न, और नहीं छोटापन ॥
इस प्रकार के निन्दनीय सब अवगुण, मानव !।
मानव - कुल में ही हो सकते सारे संभव ॥ ९ ॥

होती चोरी हत्या आदिक नहीं हमारे।
होते कामुक जन के कृत्य जघन्य न (सारे) ॥
अत्याचार सबल करते न यहाँ निर्बल पर।
सबलों से मारे जाते न कभी निर्बल - तर ॥ १० ॥

पा छोटे झोंपड़े और टूटे-फूटे घर।
संकट से जीते रहते हैं बेचारे नर ॥
इस प्रकार की हम न कभी दुर्गति सहते हैं।
(सुख से अपने निर्मित नीड़ों में रहते हैं) ॥ ११ ॥

हम पुष्पों से भरे हुए सुन्दर तरुओं पर।
जलाशयों से शोभित (सुखद) वनों के भीतर ॥
मधु (मकरंद) भरे सुरभित पुष्पों के ऊपर।
घूम - घूमकर क्रीडा करते (सदा मनोहर) ॥ १२ ॥

तालों, झीलों, छोटे - बड़े पर्वतों ऊपर।
खेतों और घरों में हैं खेलते (निरन्तर) ॥ १३ ॥

झूठे यहाँ कलंक नहीं हैं, और न बंधन।
गाली, गुस्सा ये न निन्द्य व्यवहार (अशोभन) ॥ १४ ॥

कभी नहीं हैं हममें कौटुम्बिक चिन्ताएँ।
कष्ट नहीं है कोई और न हैं विपदाएँ ॥
इस लघु पेट हेतु कोई न हमें कठिनाई।
सुख ही सुख है हमें सर्वदा (मिलता भाई) ॥ १५ ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुन्बम् मॆन्ऱिल्लै यडा— ऒरु तुयरमुम् इल्लै यडा
इन्बमे ऎम् वाऴ्क्कै— इवर्क्कु एऱ्ऱ मॊन्ऱिल्लै यडा ! 16
कालैयिल् ऎऴुन्दिडुवोम्— पॆरुङ् गडवुळैप् पाडिडुवोम्
मालैयुम् तॊऴुदिडुवोम्— नाङ्गळ् महिऴ्च् चियिल् आडिडुवोम् 17
तानॆ तळैप्पट्टु— मिहच् चञ् जलप् पडुम् मनिदा
नानोर् वार्त्तै शॊल्वेन्— नी मॆय्ञ्ञानत्तैक् कैक् कॊळ्ळडा 18
विडुदलैयैप् पॆऱडा— नी विण्णवर् निलै पॆऱडा
कॆडुवलै ऒन्ऱु मिल्लै— उन् कीऴ्मैहळ् उदऱिडडा 19
इन्बम् निलै पॆऱडा— उन् इन्नल्हळ् ऒऴिन्ददडा
तुन्बम् इनि यिल्लै— पॆरुञ् जोदि तुणैयडा 20
अन्बिनैक् कैक् कॊळ्ळडा— इदै अवनिक् किङ्गु ओदिडडा
तुन्बम् इनियिल्लै— उन् तुयरङ्गळ् ऒऴिन्ददडा 21
सत्तियम् कैक्कॊळ्ळडा— इनिच् चञ् जलम् इल्लैयडा
मित्तैहळ् तळ्ळिडडा— वॆरुम् वेषङ्गळ् तळ्ळिडडा 22
दर्मत्तैक् कैक्कॊळ्ळडा— इनिच् चङ्गडम् इल्लैयडा
कर्मङ्गळ् ऒन्ऱु मिल्लै— इदिल् उन् करुत्तिनै नाट्टिडडा 23
मच्चत्तै विट्टिडडा— नल् आण्मैयैक् कैक् कॊळ्ळडा
इच्चहत्तिनि मेल् नो— ऎन्ऱुम् इन्बमे पॆरुवैयडा 24

शॆल्वत्तुळ् पिऱन् दन्मा ?—5

('कल्कि'— 13-4— 1958)

शॆल्वत्तुट् पिऱन्दन्मा ? अदु पॆरुवान्
शिऱु तॊऴिल्हळ् पयिल वल्लोमा ?

हमारा जीवन सुखमय है। इससे बड़ी कोई स्थिति नहीं है रे ! १६ हम सबेरे उठते हैं और महान् ईश्वर की महिमा गाते हैं। हम शाम को प्रार्थना करते हैं और आनन्द से नाचते हैं। १७ स्वयं बन्धन डालकर संकट उठानेवाले रे मानव ! मैं एक बात बताऊँगी। तुम सत्य ज्ञान का अनुसंधान करो। १८ छुटकारा पाओ और देवों की-सी स्थिति पा लो। कोई बुराई नहीं होगी। अपनी क्षुद्रताएँ त्याग दो। १९ सुख-स्थिति में आओ। अपने संकटों को भगा दो। आगे दुख नहीं होगा। (शक्ति की) बड़ी ज्योति तुम्हारी सहायिका होगी। २० प्रेम का रास्ता अपनाओ। दुनिया में उसका प्रचार करो। आगे कोई दुख नहीं होगा। समझो— तुम्हारे सारे कष्ट दूर हो गये ! रे ! २१ सत्य को हाथ में ग्रहण करो। आगे कोई चंचलता नहीं होगी। मिथ्या तथा ढोंग दूर कर दो ! रे ! २२ धर्म ग्रहण करो। संकट नहीं होगा। कर्म (बन्धन) कुछ न हो; इस पर ध्यान दो। २३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हमको कोई दुःख नहीं है, कष्ट नहीं है।
इससे बढ़कर स्थिति कोई (सुस्पष्ट) नहीं है॥
(अरे!) हमारा जीवन ही (अतिशय) सुखमय है।
(हम स्वच्छन्द विचरते, औ' न कहीं संशय है)॥ १६॥
साँझ - सबेरे हम गाते ईश्वर की महिमा।
समुद नाचते, ध्यान सदा कर ईश्वर - गरिमा॥ १७॥
खुद बंधन में फँसकर कष्ट उठानेवाले।
(सुन ले मेरी बात) अरे! मानव! (मतवाले!)॥
एक बात मैं बता रहा हूँ (तुमको सुन्दर)।
सत्य ज्ञान का अनुसंधान करो तुम (सुखकर)॥ १८॥
छुटकारा पाओ, देवों की - सी स्थिति पाओ।
अहित न होगा, (शीघ्र) क्षुद्रता सभी भगाओ॥ १९॥
सुख की स्थिति में आओ, संकट सभी भगाओ।
परम ज्योति की शक्ति सहायक, दुख विनशाओ॥ २०॥
करो प्रचार विश्व में प्रेम - मार्ग अपनाओ।
दुख न रहेगा, सारे संकट दूर भगाओ॥ २१॥
मिथ्या, ढोंग त्याग कर सत्य मार्ग अपनाओ।
(तन - मन की चंचलता से छुटकारा पाओ)॥ २२॥
करो धर्म को ग्रहण दूर होंगे सब संकट।
यदि इस पर दो ध्यान कर्म - बंधन जाए कट॥ २३॥
डर को छोड़ो, करो हृदय में पौरुष धारण।
सुखी रहोगे जग में, होंगे कष्ट - निवारण॥ २४॥

क्या हम धनी पैदा हुए ? —५

(कल्कि १३-४-१९५८)

क्या हम हुए धनी पैदा (इस वसुधा - तल पर)।
अथवा धन पाने के हित हम (सदा निरंतर)॥
छोटे - छोटे धंधों में अभ्यास - प्राप्ति - हित।
करते हैं प्रयास हम (संतत सदा समाहित)॥

डर को छोड़ो; पौरुष को धारण कर लो। तो इस जगत में सदा सुखी रहोगे। २४

क्या हम धनी पैदा हुए ?—५

['कल्कि', १३-४-१९५८]

क्या हम धनी पैदा हुए ? या धन पाने के वास्ते हम छोटे-छोटे धन्धों में अभ्यास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विल्वैत्त नुदल् विळियार् कण्डु मैयल्
उऱ वडिवम् मेविनेमा ?
पल् वित्तैयिलुम् शिऱन्द तीम् कानप्
पॅरु वित्तै पयिन्ऱिट्टोमा ?
कॉल् बित्तै, इरुळ्वित्तै, मरुळ् वित्तै
पयिन्ऱु मनम् कुऱैहिन्ऱेमाल्
कावित् तिरुविळि मानार् तम् मैयल् कडु विषमाम्
कूविच् चमयर्क् कुरैप्पन पॉय् इक्कु वलयत्तिल्
आविच् चुहमॅन् ऱिऱिन्द वॅल्लाम् तुन्बम् अन्ऱियिलै
पाविच् चिऱु उलहे ! उन्नै यावन् कॉल् पण्णियदे ?

पिरॅञ्जु देशिय गीदम्—6

('ला मर्सॅलेस्' अॅन्नुम् पिरॅञ्जु देशिय गीदत्तैत् तमिळ्प् पडुत्ति माणवर्हळ् नडित्त नाडहत्तुक्काहक् कॉडुत्तदु ।)

अन्नै नन्नाट्टिन् मक्काळ् एहुवम्, मन्नु पुहळ् नाळिवुबे !
नम्मेल् कॉडुङ्गोल् शॅलुत्तुवोर्, नाट्टिनार् उदिरक् कॉडि तन्नै !
केट्टीर्हळा ! किरामङ्गळिल्, बोरिडुम् अरक्कप् पडैहळ्
अणुहि नम् मडिहळिलेये, नम्मक्कळ् पॅण्डिरैक् कॉल्लत् तुणिवार्
पोर्क्कोलम् पूणुवीर् ! वहुप्पोर् अणिहळै !, शॅल्वोम् शॅल्वोम्
नाम् पोम् पादैयिल्, पाय्च्चुवोम् अवरिरत्तत्तै !

करने का प्रयास करते हैं ? क्या हमारा रूप ही ऐसा रहा कि जिसे देखकर धनु के समान भाल वाली अँगनाएँ मोहित हों ? अनेक विद्याओं में श्रेष्ठ मधुर गान-विद्या है। क्या हमने उसका अभ्यास किया ? परन्तु हम हत्या की विद्या, अन्धकार में डालनेवाली विद्या, भ्रम में डालनेवाली विद्या आदि सीखते हैं और छीजते हैं। नीलोत्पल-सी आँखोंवाली हरिणियों (नारियों) के प्रति मोह कठोर विष है ! सत्गुरु जो घोषित करते हैं, क्या वे सब उपदेश झूठे हैं ? इस संसार में आत्मा को सुख देनेवाले जो समझे जाते हैं, वे सब दुख देनेवालों के सिवा कुछ नहीं हैं ! हे पापी छोटे जग ! तुम्हें किसने रचा ?

फ्रांसीसी राष्ट्रगीत—६

['ला मर्सलेस' फ्रांसीसी राष्ट्रगीत है। नाटक खेलनेवाले के उपयोग के लिए उसका अनुवाद किया गया था।] हे मातृभूमि की संतानो ! चलें आज, शुभ दिन है अब। हम पर अत्याचारी शासन चलानेवालों ने रुधिर से सना झंडा गाड़ दिया है !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

क्या रूप हमारा है ऐसा (जिसे देखकर)।
मोहित हों धनु - सदृश - भाल - युत स्त्रियाँ (मनोहर)॥
विद्याओं में मधुर गान - विद्या उत्तम है।
क्या उसका अभ्यास किया हमने (अनुपम) है ?॥
अंधकार में डाल मानवों को भटकाती।
जो भ्रम - (गह्वर -) बीच (मानवों को) भरमाती॥
जो हत्या सिखलाती वही (कु -) विद्या पढ़कर।
हम होते हैं नष्ट (दूसरों का विनाश कर)॥

नील - कमल - सी आँखों वाली सुन्दरियों पर।
मोह - (प्रदर्शन) है कठोर विष (तुल्य भयंकर)॥
सद्गुरु जिनकी करते हैं घोषणा (निरंतर)।
क्या वे झूठे हैं (समस्त) उपदेश (मनोहर)॥
जो समझे जाते जग में सुख देनेवाले।
(वास्तव में) हैं वे (समस्त) दुख देनेवाले॥
हे पापी ! लघु जगत ! बनाया किसने तुमको ?।
(देकर मोहक रूप सजाया किसने तुमको ?)॥

फ्रांसीसी राष्ट्र-गीत—६

जो अत्याचारी हम पर करते हैं शासन।
रुधिर - सना झंडा गाड़ा है उनने (भीषण)॥
मातृभूमि - सन्तानो ! आज दिवस (मंगलमय)।
चलो (बढ़ो उन सभी पापियों का कर दो क्षय)॥
वीर सैन्य आती है ग्रामों में चिल्लाती।
और हमारी ही गोदी खाली कर जाती॥
संतानों का तथा नारियों का वध करती।
साहस करती (प्राण देश - जन के है हरती)॥
युद्ध - वेष धारण कर व्यूह रचो अति भीषण।
मग - कण्टक - रिपु - रक्त बहाओ चलो, करो रण॥

सुना न ! ग्रामों में चिल्लाती हुई वीर-सेना आती है और हमारी ही गोदी में हमारी संतानों तथा नारियों का बध करने का साहस करती हैं। युद्ध-वेष धारण कर लो। व्यूह रच दो। चलें ! चलें। अपने जाने के रास्ते में हम उनका रक्त बहा दें।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मणि मुत्तुप् पुलवर्—7

पन्दैत् तॅरुमुलै माप् पान् मॊळियिनुङ् गरिय
ऍन्दैक्कुच् चाल इनिक्कुमे— विन्दै
अणि मुत्तुक् कोवैयॅन अञ् जॊलिशै शेर्क्कुम्
मणि मुत्तु नावलर् वाक्कु

उयिर् पॅऱ्ऱ तमिळर् पाट्टु—8

पल्लवि (टेक)

इनि ऑरु तॊल्लैयुम् इल्लै— पिरि
विल्लै कुऱैयुम् कवलैयुम् इल्लै (इनि)

जादि

मनिदरिल् आयिरम् जादि— ऍन्ऱु, वञ्जह वार्त्तैयै ऑप्पु वदिल्लै;
कनि दरुम् मामरम् ऑन्ऱु— अदिल्, काय्हळुम् पिञ्जुक् कनिहळुम् उण्डु 1
पूविल् उदिर् वदुम् उण्डु— पिञ्जैप्, पूच्चि अरित्तुक् कॅडुवदुम् उण्डु
नाविऱ् कितियदैत् तिन्बार्- अदिल्, नाऱ्पदि नायिरम् शादिहळ् शॊल्लार् 2
ऑन्ऱुण्डु मानिड शादि- पयिन्ऱु, उण्मैहळ् कण्डवर् इन्बङ्गळ् शेर्वार्
इन्ऱु पडुत्तदु नाळै— उयिर्त्, तेर्ऱम् अडैयुम् उयर्न्द दिळियुम् 3

कवि मणिमुत्तु—७

मधुर शब्द रूपी मोतियों का चयन करके (उनसे) सुन्दर मुक्तामाला-सी, काव्य-रचना-कौशल से सम्पन्न वाक्य (काव्य) रचना करनेवाले कवि हैं— मणिमुत्तु। उनकी वाणी मेरे पिता (शिवजी) को मेरी कन्दुक-स्तनी माता (पार्वती) को (दुग्ध-) मधुर वाणी से भी अधिक मधुर लगेगी।

जीवन्त हो उठे तमिळो !—८

(तमिळ देश के वासियों का गीत)

आगे कोई झंझट नहीं होगी। अलगौझा नहीं। शिकायत नहीं! चिन्ता भी नहीं। (टेक)

जाति

मनुष्यों की हजार जातियाँ (होती) हैं। यह धोखा है। हम उस पर विश्वास नहीं करते। फल देनेवाला एक आम का पेड़ है। उसमें कच्चे फल तथा अँबियाँ पाये

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कवि मणिमुत्तु—७

मुक्ता - माला के सम शब्दों का संचय कर।
जो करते हैं वाक्यों की रचना (अति सुंदर) ॥
कवि - कौशल से पूर्ण तमिळ भाषा के बुध वर।
हैं श्रीयुत मणिमुत्तु (तमिळ भाषा के कविवर) ॥
कन्दुक - स्तन नारी - पय से भी (मधुर) मधुरतर।
धाता को (मणिमुत्तु-) सुवाणी है (प्रिय) प्रियतर ॥
है मणिमुत्तु (सुकवि) की (सुंदर मंजुल) वाणी।
(करती है कल्याण देश का यह कल्याणी) ॥

जीवन्त हो उठे तमिळो !—८

(तमिळ देश के वासियों का गीत)

आगे कोई झंझट नहीं, नहीं अलगौझा।
नहीं शिकायत और नहीं चिन्ता का बोझा ॥ टेक ॥
मनुजों की जातियाँ हज़ारों, है यह विभ्रम।
लेशमात्र विश्वास न उस पर करते हैं हम ॥
फल देनेवाला है एक आम का तरुवर।
कच्चे फल औ' अँबियाँ सभी लगे हैं उस पर ॥ १ ॥
कभी - कभी हैं फूल सभी उनके झड़ जाते।
औ' अँबियों के बीच कभी कीड़े पड़ जाते ॥
इस प्रकार के आम समस्त बिगड़ जाते हैं।
जो मीठे लगते हैं जन उनको खाते हैं ॥
किन्तु सहस्र जातियों की वे बात न करते।
(जो फल अच्छे लगते उनसे झोली भरते) ॥ २ ॥
मानव - जाति एक है, यह सिद्धान्त मानकर।
जो चलते वे सभी भोगते सौख्य निरन्तर ॥
आज पतन है जिसका वह कल होगा उन्नत।
जो है आज समुन्नत वह कल होगा अवनत ॥ ३ ॥

जाते हैं। १ कभी फूल भी झड़ जाते हैं। अँबियों में कीड़े लग जाते हैं तथा वे बिगड़ जाती हैं। जो जीभ को मधुर लगते हैं, उन्हें लोग खाते हैं; परन्तु चार सहस्र जातियों की बात करते हैं। २ मानव-जाति एक ही है! उस सिद्धान्त को मानकर चलनेवाले अनेक सुखों के भोक्ता बन जाते हैं। आज जो गिरा है, वह जीव (मनुष्य) कल उठकर बढ़ जायगा; और जो आज उन्नत है, वह सम्भव है, कल पतित हो जायगा। ३ गुण की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नन्दनैप् पोल् ऒरु पार्प्पान्–इन्द, नाट्टिनिल् इल्लै कुणम् नल्ल दायिन्
ऎन्बक् कुलत्तिन इ़ेनुम्— उणर्, विन्बम् अडैदल् ऎळिदॆनक् कण्डोम् 4

इन्बत् तिऱ्कु वऴि

ऐन्बु पुलनै अडक्कि— अरशु, आण्डु मदियैप् पऴहित् तॆळिन्दु
नॊन्दु शलिक्कुम् मनदै— मदि, नोक्कत्तिऱ् चॆल्ल विडुम् वहै कण्डोम् 5

पुराणङ्गळ्

उण्मैयिन् पेर् दॆय्वम् ऎन्बोम्— अन्ऱि
ओदिडुम् दॆय्वङ्गळ् पॊय् ऎनक् कण्डोम्
उण्मैहळ् वेदङ्गळ् ऎन्बोम्— पिऱिदु
उळ्ळ मऱैहळ् कदैयॆनक् कण्डोम् 6
कडलिनैत् तावुम् [कुरङ्गुम्— वॆङ्
गनलिऱ् पिर्न्ददोर् शॆव्विदऴ्प् पॆण्णुम्
बडमलै ताऴ्न्द दनाले— तॆऱ्किल्
बन्दु शमन् शॆयुम् कुट्टै मुनियुम् 7
नदियिनुळ्ळे मुऴुहिप्पोय्— अन्द
नागर् उलहिलोर् पाम्बिन् महळै

बात पर सोचा जाय, तो नन्द के समान कोई विप्र पैदा नहीं हुआ है। (नन्द एक अछूत भक्त था। वह किसी ब्राह्मण जमींदार का दास था। भक्ति की करामात थी कि स्वयं चिदम्बरम् क्षेत्र के देव नटराज ने उसे सब तरह की सहायता करके छुटकारा दिलाया और वह चिदम्बरम् जाकर नटराज की ज्योति में विलीन हो गया।) चाहे जिस कुल का हो— किसी का भावना के बल पर (मुक्ति) सुख पाना सुगम ही है। ४

सुख का मार्ग

हमने पाँच इन्द्रियों को वश में किया। बुद्धि पर शासन करके अभ्यास से विचार को शुद्ध बनाया। चंचल मन के लिए हमने बुद्धि के मार्ग दर्शन में आगे बढ़ने का उपाय जान लिया। ५

पुराण

हमने यह जान लिया कि सत्य का नाम ईश्वर है। अन्य जिन देवों का नाम लिया जाता है, वे सब झूठे हैं। सत्य ही वेद हैं। उसको छोड़कर अन्य जो वेद के नाम पर प्रचलित हैं, वे सब झूठी कहानियाँ हैं। —हमने यह देख लिया। ६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सोचा जाए यदि गुण का आधार मानकर।
नंद (अछूत) सरिस जन्मा न जगत में द्विजवर॥
चाहे जिस कुल में उत्पन्न हुआ होवे नर।
सुगम मुक्ति है सिर्फ़ भावना के ही बल पर॥ ४ ॥

सुख का मार्ग

पाँच इन्द्रियों को अपने - अपने वश में कर।
(रोक लिया मादक विषयों का वेग भयंकर)॥
किया बुद्धि पर शासन है हमने (फल पाया)।
कर अभ्यास विचारों को है शुद्ध बनाया॥
चंचल मन का किया बुद्धि ने मार्ग - प्रदर्शन।
आगे बढ़ने का उपाय जाना (अति शोभन)॥ ५ ॥

पुराण

(केवल एक) सत्य का नाम (कहाता) ईश्वर।
(उसका ही वर्णन करते हैं सभी शास्त्रवर)॥
और अन्य हैं जितने भी देवगण (धुरंधर)।
जान लिया वे हैं सब झूठे (देव सरासर)॥
सत्य वेद हैं उन्हें छोड़कर वेद - नाम पर।
जो प्रचलित हैं ग्रंथ झूठ वे सभी (सरासर)॥
यह सब हमने देख लिया है (जान लिया है)।
(सत्य - झूठ के बीच भेद पहिचान लिया है)॥ ६ ॥
वह समुद्र उल्लंघन करनेवाला वानर।
अरुणाधरा अग्निजा, वह कन्या (अति सुंदर)॥
जिसने उत्तर के पर्वत के धँस जाने पर।
भारत - भू को किया बराबर दक्षिण जाकर॥
वह अगस्त्य नामक (प्रसिद्ध अति) नाटा मुनिवर।
(था जिसने पी लिया तीन चुल्लू में सागर)॥ ७ ॥
नदी - बीच घुसकर जिसने पाताल पहुँचकर।
विधिवत ब्याही नागराज की कन्या सुन्दर॥

समुद्र-तरण करनेवाला वानर, आग में पैदा हुई लाल अधर वाली कन्या, उत्तर के पर्वत के धंस जाने पर दक्षिण में जाकर जिसने भारत-भूमि को सम बनाया वह नाटा मुनि (अगस्त्य), ७ नदी में घुसकर, पाताल में जाकर जिसने नागराज की कन्या से विधिवत् विवाह कर लिया, वह बलवान भीम-- सभी कल्पित पात्र हैं। हमने ऐसा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विदियुऱवे मणम् शॅय्द— तिऱल्
वीमनुम् कऱ्पनै ऍन्बदु कण्डोम् 8

ऑन्ऱु मऱ्ऱॊन्ऱैप् पऴिक्कुम्— ऑन्ऱिल्
उण्मै यॅन् ऱोदिमऱ् ऱॊन्ऱु पॊय्यॅन्नुम्
नन्ऱु पुराणङ्गळ् शॅय्दार्— अदिल्
नल्ल कदै पलप् पल तन्दार् 9

कविदै मिह नल्ल देनुम्— अक्
कदैहळ् पॊय्यॅन्ऱु तॅळिवुऱक् कण्डोम्;
पुवि तनिल् वाऴ्नॅऱि काट्टि— नन्मै
पोदिक्कुम् कट्टुक् कदैहळ् अवैताम् 10

स्मिरुदिहळ्

पिन्नुम् (स्) मिरुदिहळ् शॅय्दार्— अवै, पेणुम् मनिदर् उलहिनिल् इल्लै
मन्नुम् इयल्बिन् वल्ल— इवै, माऱिप् पयिलुम् इयल्बिन आहुम् 11

कालत्तिऱ् केऱ्ऱ वहैहळ्- अव्वक्, कालत्तिऱ् केऱ्ऱ ऑऴुक्कमुम् नूलुम्
आल मुऴुमैक्कुम् ऑन्ऱाय्- ऍन्द, नाऴुम् निलैत्तिडुम् नूलॊन्ऱुम् इल्लै 12

शूत्तिरनुक् कॊरु नीदि— दण्डच्, चोऱुण्णुम् पार्प्पुक्कु वेऱॊरु नीदि
शात्तिरम् शॊल्लिडु मायिन्— अदु, शात्तिरम् अन्ऱु शदियॅन्ऱु कण्डोम् 13

जान लिया। ८ एक पुराण दूसरे की निंदा करता है। एक, एक को सच्चा तथा दूसरे को झूठा साबित करना चाहता है। पर पुराण अच्छे बने हैं और पुराणकारों ने उनमें अच्छी-अच्छी कविताएँ बना रखी हैं। ९ कविता अच्छी है, पर उसकी कथाएँ झूठी हैं। यह बात हमें साफ़ मालूम हो गयी। वे संसार में जीने का सही मार्ग बताने के लिए रचित मन-गढ़ंत कल्पनाएँ ही हैं। १०

स्मृतियाँ

फिर (ऋषियों ने) स्मृतियाँ बनाईं। पर उनका मान करनेवाले लोग संसार में पाये नहीं जाते। ये भी व्यवहार में उपयोगी होते हुए भी बदलने का स्वभाव रखती हैं। ११ काल के अनुसार रीतियाँ बदलती हैं। काल के अनुसार चलने के नियम होते हैं तथा चरित्र बतानेवाले ग्रंथ बनते हैं। सब काल के लिए समान रूप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वह बलवान भीम ये सभी पात्र हैं कल्पित।
(जान लिया हमने सारा रहस्य जो वर्णित) ॥ ८ ॥

एक पुराण दूसरे की है निन्दा करता।
सत्य किसी को और किसी को झूठा कहता ॥
पर पुराण हैं अच्छे बने (बहुत सरसाएं)।
उनमें हैं वर्णित अच्छी - अच्छी कविताएँ ॥ ९ ॥

कविताएँ हैं अच्छी पर झूठी सभी कथाएँ।
साफ़ बात यह हमने जानी (क्या समझाएँ ?) ॥
जग में जीने का कैसा पथ सही चलाए।
इसी लिए वे मनगढ़न्त हैं रचित कथाएँ ॥ १० ॥

स्मृतियाँ

फिर ऋषियों ने रचीं (बहुत - सी) स्मृतियाँ (सुंदर)।
पर उनका सम्मान न कर पाये जग के नर ॥
है इनका प्रयोग उपभोगी (वसुधा - तल पर)।
किन्तु सभी ये हैं परिवर्तनशील निरन्तर ॥ ११ ॥

हैं समयानुसार चलती रीतियाँ (मनोरम)।
हैं समयानुसार चलने के नियम (समुत्तम) ॥
बनते उनसे ग्रंथ चरित्र बतानेवाले।
वे समयानुसार बनते हैं सभी (निराले) ॥
सब कालों में जो सब पर लागू हो पाता।
ऐसा कोई शास्त्र नहीं है पाया जाता ॥ १२ ॥

जहाँ शूद्र के लिए न्याय कोई बतलाता।
मुफ़्तखोर द्विज - हित विधान है अन्य बनाता ॥
है कोश षडयंत्र शास्त्र ऐसा मनमाना।
इस रहस्य को (भली भाँति) हमने है जाना ॥ १३ ॥

से लागू हो, ऐसा कोई शास्त्र ग्रंथ रचा नहीं जाता। १२ यदि शास्त्र ऐसा बताने लगें कि शूद्र के लिए एक न्याय है, मुफ़्त खाना खानेवाले ब्राह्मण के लिए दूसरे प्रकार का विधान है, तो हम मानेंगे कि वह शास्त्र शास्त्र नहीं, साजिश है। यह हमने जान लिया। १३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेऱ्कुलत्तार् ऍवर् ?

बैयहम् काप्प वरेनुम्— शिऱ्, वाळैप् पळक्कडै वैप्पवरेनुम्
पॊय्यहलत् तॊलिल् शॆय्दे— पिऱर्, पोऱ्ऱिड वाळ्बवर् ऍङ्गणुम् मेलोर् 14

तवमुम् योगमुम्

उऱ्ऱवर् नाट्टवर् ऊरार्— इवर्क्कु, उण्मैहळ् कूऱि इनियन शॆय्दल्
नऱ्ऱवम् आवदु कण्डोम्— इबिल्, नल्ल पॆरुन्दवम् यादॊन्ऱुम् इल्लै 15
पक्कत् तिरुप्पवर् तुन्बम्- तन्नैप्, पार्क्कप् पॊऱादवन् पुण्णिय मूर्त्ति
ऑक्कत् तिरुन्दि उलहोर्— नलम्, उऱ्ऱिडुम् वण्णम् उळैप्पन् योगि 16

योगम्, यागम्, ज्ञानम्

ऊरुक् कुळैत्तिडल् योगम्— नलम् ऑङ्गिडुमारु वरुन्दुदल् यागम्
पोरुक्कु निन्ऱिडुम् पोदुन्— उळम् पॊङ्गल् इलाद अमैदि मॆय्ञ् ज्ञानम् 17

परम् बॊरुळ्

ऍल्लैयि लाद उलहिल्— इरुन्, वॆल्लैयिल् कालम् इयङ्गिडुन् दोऱ्ऱम्
ऍल्लैयिल् लादन बाहुम्— इवै, यावैयु मायिवर् रुळ्ळुयि राहि 18
ऍल्लैयिल् लाप् पॊरुळ् ऑन्ऱु— तान्, इयल् बऱि वाहि इरुप्पदुण्डॆन्ऱे
शॊल्लुवर् उण्मै तॆळिन्दार्— इवैत्, तूवॆळि यॆन्ऱु तॊळुबवर् पॆरियोर् 19

उच्च कुलवाले कौन हैं ?

चाहे वे विश्व शासक हों या केले की दूकानें चलानेवाले हों, जो झूठा व्यवहार छोड़कर धन्धा करते हैं और दूसरों के आदर का पात्र बनकर जीवन बिताते हैं, वे ही सर्वत्र श्रेष्ठ होते हैं। १४

तप तथा योग

हमने यह जान लिया कि रिश्तेदारों, देशवासियों तथा अपने गाँववालों को सत्य का उपदेश देना, उनका हित करना तपस्या है ! इससे श्रेष्ठ कोई तप नहीं है। १५ पड़ोसी का दुख जो सहन नहीं कर सकता (उसका उपचार करता है) वह पुण्यमूर्ति है। स्वयं पवित्र बनकर लोगों के हित में जो लगा रहता है, वह योगी है। १६

योग, यज्ञ, ज्ञान

देशवासियों के लिए परिश्रम करना योग है। उनके हित की वृद्धि करने के हेतु कष्ट सहना यज्ञ है। युद्ध करते भी मन को उद्वेग से परे होकर शान्त रखना सच्चा आत्मज्ञान है ! १७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उच्च कुल वाले कौन हैं ?

जो झूठा व्यवहार छोड़ उद्योग चलाते।
बन पर - आदर - पात्र स्व - जीवन (सदा) बिताते॥
वे जन ही सर्वत्र श्रेष्ठ हैं आदर वाले।
चाहे हों सम्राट, अथच अदना फल वाले॥ १४॥

तप तथा योग

देशवासियों, ग्रामवासियों को, स्वजनों को।
सिखलाना सत्योपदेश - संयुत वचनों को॥
उनका हित करना तप है यह हमने जाना।
इससे श्रेष्ठ नहीं कोई तप अन्य बखाना॥ १५॥
जो स्व - पड़ोसी का दुख देख नहीं सकता है।
जो उसका उपचार (सदैव किया) करता है॥
बनकर स्वयं पवित्र (सदा) जो परहित करता।
वह (सच्चा) योगी है (जो सबके दुख हरता)॥ १६॥

योग, यज्ञ, ज्ञान

देशवासियों हित श्रम करना योग कहाता।
पर - हित - हेतु कष्ट सहना जग यज्ञ बताता॥
जिसका मन रण में भी शान्त सुधैर्यवान है।
उसको ही जानो तुम सच्चा आत्म - ज्ञान है॥ १७॥

परमात्मा (परावस्तु)

इस असीम जग - बीच अनन्त काल तक रहकर।
रहते हैं जो क्रियाशील (सर्वदा निरन्तर)॥
व्यक्त रूप ऐसे भी जन हैं जग में अगणित।
उन सबसे है बनी एक ही वस्तु (सुनिश्चित)॥
उनके भीतर प्राण - रूप बनकर वह संस्थित।
चिन्मय उसका रूप (मनोरम महिमा मंडित)॥
साधु महात्मा औ' सत्यज्ञ यही बतलाते।
"चिदाकाश" कह इसे विज्ञ जन शीश नवाते॥ १८-१९॥

परमात्मा (परावस्तु)

इस असीम संसार में, अनन्त काल तक रहकर जो क्रियाशील बने रहते हैं और रहेंगे वे 'व्यक्त रूप' भी अनगिनत हैं। एक ही वस्तु ये सब बनी ! वही उनके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीयुम् अदनुडैत् तोऱ्ऱम्— इन्द, नील निऱङ् गॉण्ड वानमुम् आङ्गे
ओयुदल् इन्ऱिच् चुळलुम्— ऑळि, ओङ्गु पल् कोडिक् कदिर्हळुम् अःदे 20

शक्तिहळ् यावुम् अःदे— पल्, शलनम् इऱत्तल् पिऱत्तलुम् अःदे
नित्तियकाम् इव्वु लहिल्— कडल्, नीरिल् शिऱ्तूळि पोलुम् इप् पूमि 21

इन्बमुम् ओर्कणत् तोऱ्ऱम्—इङ्गु, इळमैयुम् शॅल्वमुम् ओर् कणत् तोऱ्ऱम्
तुन्बमुम् ओर् कणत् तोऱ्ऱम्— इङ्गु, तोल्वि मुदुमै ओर् कणत् तोऱ्ऱम् 22

मुक्ति

तोन्ऱि अळिवदु वाळ्क्कै— इदिल्, तुन्बत् तोडिन्बम् वॅऱुमै यॅन्ऱोदुम्
मून्ऱिल् अंदु वरुमेनुम्— कळि, मूळ्हि नडत्तल् परशिव मुक्ति 23

इळशै ऑरुपा ऑरुप:दु—9

काप्पु

नित्तरॅनुम् तॅन्निळशै नित्मलनार् ताम्पयन्द
अत्तिमुहत् तॅङ्गोन डियिणैये— शित्ति तरुम्
ऍन् तमिळि लेदु मिळुक् किला मेय:दु
नन्ऱाहु मॅन्ऱरुळुम् नन्गु

अन्दर प्राण भी बनी। उसका रूप चिन्मय है। यही सत्यज्ञ साधु महात्मा लोगों का कथन है! इसी को बड़े लोग 'शुद्ध आकाश (चिदावकाश)' भी कहकर प्रणाम करते हैं। १८-१९ तुम भी उसी का एक रूप हो। यह नीला आकाश तथा अथक रूप से सतत घूमनेवाले प्रकाशमय अनेक सहस्र गोल (ग्रह-नक्षत्र आदि) भी वही हैं। २० सभी शक्तियाँ वही हैं। अनेक क्रियाएँ, मरना-जीना— सभी वही हैं। यह सृष्टि नित्य है। उसमें यह भूमि समुद्र की एक बूंद के समान है। २१ सुख भी एक क्षण का आभास है। यौवन, धन भी वैसे ही क्षणिक आभास है! दुख हार, जरा (बुढ़ापा) सभी क्षणिक आभास हैं! २२

मुक्ति

यह जीवन प्रकट होकर ओझल हो जानेवाला है। दुख, सुख या दुख-सुख-रहित स्थिति—तीनों में चाहे कुछ भी हो, उस स्थिति में आनन्द-मग्न रहकर उसका भोग करते जाना ही मुक्ति है। २३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुम भी उसके ही स्वरूप हो (ऐसा मानो)।
यह नीला आकाश रूप उसका ही जानो॥
अथक रूप से सतत घूमनेवाले (तारे)।
अगणित पिण्ड प्रकाशित रूप उसी के सारे॥ २० ॥
सभी शक्तियाँ, मरना, जीना, सभी क्रियाएँ।
विविध स्वरूप उसी के जग के बीच सुहाएँ॥
सृष्टि नित्य है (यह सिद्धान्त अटल तुम जानो)।
सिन्धु - बिन्दु - सम यह भू - तल है (उसमें मानो)॥ २१-२२ ॥

मुक्ति

यह जीवन (इस जगती - तल में) होकर प्रकटित।
(और अन्त में) हो जाता है (सदा) अलक्षित॥
सुख हो दुख हो या सुख - दुख से भिन्नस्थिति हो।
इन तीनों में चाहे जैसी भी परिणति हो।
सभी दशाओं में आनंद - मग्न - सा रहकर।
उसे भोगना कहलाती है मुक्ति (श्रेष्ठतर)॥ २३ ॥

इलशै (अेट्टयपुरम्) पर एक गीत-दशक—९

नान्दी

दक्षिण में स्थित नित्य पुरुष शिव हैं परमेश्वर।
उन निर्मल देव के जनित हैं पुत्र गणेश्वर॥
उन धाता के चरण - युगल मुझको दें यह वर।
मम सिद्धिदा तमिळ में त्रुटि हो नहीं रंच - भर॥
वह सिद्धिदा तमिळ भाषा शुभ (हो मंगलमय)।
(उसके गीतों में रस का निर्झर हो अक्षय)॥

इळशै (अेट्टयपुरम्) पर एक गीत-दशक—९

नांदी

नित्य पुरुष (परमेश्वर शिव), दक्षिण में स्थित निर्मल देव के जनाये पुत्र गजमुख, मेरे धाता के हे चरणद्वय ! मुझे यह वर दीजिए कि मेरी सिद्धिदायक तमिळ (भाषा के इस गीत) में कोई त्रुटि न हो ! वह शुभ हो !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नूल्

तेनिरुन्द शोलै शूळ् तॅन्निळशै नन्नहरिन्
मानिरुन्द कैयन् मलरडिये— वानिऱ्
चुरर् तमनियन् माल् तॉळुङ् गाऱ् किरीडत्
तरदनङ्गळ् शिन्दु महम् 1

अहविडत्तिऱ् कोर् तिलह मामॅन्निळ शैप्
पहवन्नॅन् नॅट्टीशन् पदमे— तिहिरि
पॉरुन्दु करत् तानन्ऱोर् पोत्तिरियाय्त् तेडि
वरुन्दियुमे काणाच् चॅल्वम् 2

शॅल्व मिरण्डुऱ् जॅळित्तोङ्गुन् दॅन्निळशै
यिल् वळरुम् ईशन् ॲळिऱ् पदमे— वॅल्वयिरम्
एन्दु करत् तान् करियन् अंन्कणन् तम् उळ्ळत्तुप्
पेर्न्दु वळर्हिन्ऱ पॉरुळ् 3

पॉरुळाळरीय वेऱ् पोरिळशै
यरुळाळ रीशरडिये— तॅरुळ् शेर्
तमना मरैयवन् मेऱ् ऱन्पाश मिट्ट
शमनावि वाङ्गुम् पाशम् 4

ग्रंथ भाग

मधु से भरे वनों से आवृत दक्षिणी इळशै नगर के अधिदेवता 'मृग-हस्त (शिव के एक हाथ में हरिण रहता है; दूसरे में प्रज्वलित अग्नि है।)' के चरण ही वह स्थान है, जहाँ स्वर्ग के सुरों, चतुर्मुख तथा विष्णु के किरीटों के रत्न (उसको नमस्कार करते वक्त) झड़ जाते हैं। १ यह मेरा 'इळशै' विशाल विश्व का तिलक है। उसके अधिदेवता "अॅट्टीशन" का चरण वह चरण है, जो चक्रधर विष्णु को वराह के रूप में खोज पाने को दौड़-धूप करने पर भी नहीं मिला था। (यह एक पौराणिक कथा है, जिसके अनुसार ब्रह्मा हंस बनकर ऊपर उड़े तथा विष्णु वराह बनकर नीचे अधोलोक में गये। न ब्रह्मा को शिव का सिर मिला, न विष्णु को उनके पैर मिले।) २ इस इळशै में दोनों तरह के धन बहुतायत से पाये जाते हैं। इसके ईश्वर का पद ही वज्रधर इन्द्र तथा 'काले देव' मेरे कृष्ण, दोनों के मन में प्रतिष्ठित ध्यानवस्तु है। ३ धनवान के दिये दान को ग्रहण करनेवाले इळशै के, आवेश-वशीभूत पुजारियों के ईश्वर (इळशै के अधिदेवता) के चरण ही यम के प्राणों को हरनेवाले चरण हैं। इस यम ने ब्राह्मण भक्त मार्कण्डेय पर पाश फेंका था। (दक्षिण में कथा प्रसिद्ध है : मृकन्द् या मृगण्ड् नाम के ब्राह्मण की प्रार्थना पर शिव ने उसे एक पुत्र-प्राप्ति का वर दिया। पर वह पुत्र सोलहवें साल की आयु तक ही जी सकता था। मार्कण्डेय नामक उस पुत्र ने घोर तपस्या की। जब यम उन्हें पकड़ने आया, तब वे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ग्रंथ-भाग

मधु से भरे हुए विपिनों से (संतत) आवृत।
(मधुर) दक्षिणी इलशै नगर सदा से शोभित॥
उसके अधिनायक हैं हरिण - हस्त शिवशंकर।
उनके ही (अति सुंदर पूज्य) चरण - कमलों पर॥
स्वर्गलोक के सुर, चतुरानन, विष्णु निरंतर।
करते हैं प्रणाम प्रतिदिन सविनय आ - आकर॥
चरणों पर झरते उनके मुकुटों के मणिगण।
(जगमग करते कमल - दलों पर जैसे हिम - कण)॥ १॥

मम इलशैपुर विशद विश्व का तिलक मनोहर।
हैं इसके देवता पूज्य "अेट्टीशन" (शंकर)॥
जब वराह थे बने विष्णु (भगवान) चक्रधर।
खोज न पाये सुचरण इनके दौड़ - धूप कर॥ २॥

इस इलशै में दोनों ही प्रकार के (शुभ) धन।
पाये जाते प्रचुर रूप से (अतिशय शोभन)॥
श्याम - वर्ण श्रीकृष्ण और देवेन्द्र वज्रधर।
ध्यान कर रहे इसके ईश्वर के पदाब्ज वर॥ ३॥

धनवानों के दिये दान को लेनेवाले।
प्रेमावेश - लीन पूजन - परिचर्या - वाले॥
उन पुजारियों के ईश्वर के चरण मनोरम।
यम के प्राणों को भी हरनेवाले अनुपम॥
थे शंकर के भक्त, मार्कण्डेय मुनीश्वर।
सोलह वर्ष आयु का उनको प्राप्त हुआ वर॥
यम ने फेंका उन पर अपना पाश (भयंकर)।
लिपट गये मुनिवर सभीत शिव की प्रतिमा पर॥
प्रकट हुए तब मूर्ति मध्य से श्री शिवशंकर।
तान दिया अपना त्रिशूल था यम के ऊपर॥
तभी गये यमराज भाग यम - लोक भयातुर।
अमर हो गये शिव - वर से, "मार्कण्ड" मुनीश्वर॥ ४॥

जाकर शिव-लिंग से लिपट गये। यम ने अपने पाश से लिंग को भी मार्कण्डेय के साथ खींचना चाहा। तब शिवजी प्रकट हुए और यम को उन्होंने लात मारकर उसे मूर्च्छित कर दिया। फिर उन्होंने देवों की प्रार्थना पर उसे जिला दिया। कहा जाता है कि मार्कण्डेय अमर हैं तथा उनकी उम्र सोलह साल की ही रहती है।) ४ शंख-भूषिष्ठ खेतोंवाले

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शङ्गम् तवऴ् कऴनि तण् इळशै नत्तहरिल्
ऍङ्गळ् शिवनार् ऍऴिर् पदमे— तुङ्ग मिहुम्
वेद मुडियिन् मिशैये विळङ्गुनर्
चोदियॅन नॅञ्जे तुणि 5
तुणि निलवार् शॅम् जडैयान् तोळ् इळशै ऊरन्
मणि कण्डन् पाद मलरे— पिणि नरहिल्
बोऴच् चॅय्यादु विरुम्बिय ईन्दे अडियर्
बाऴच् चॅय्हित्तर मरुन्दु 6
मरुळऱक् कऱ्ऱोर्कण् मरुविळशै— ऊरिल्
वरुमिरैवन् पाद मलरे— तिरुवन्
विरै मलरा वट्ट विऴियाम् बियत्तरा
मरैपूत्त शॅन्दामरै 7
तामरैयिन् मुत्तॅङ्गुन् दान् शिदऱन् दॅन्तिळशैक्
कोमा नॅट्टीशन् मलर् कॊळ् पदमे— नामवेल्
वल्लरक्कन् कैलै वरै यॅडुत्त कावलनै
अल्लर् पडवैत्तदाल् 8
आल विऴिया रवर् मुलै नेर् तण् वरै शूऴ्
कोल मणि इळशैक् कोन् पदमे— शील
मुनिवर् विडुत्त मुयलहन् मीदेऱित्
तनि नडञ् जॅय्ददुमे तान् 9
तानै परम् बॊरुळान् दण्णिळशै यॅट्टीशन्
तेनेय् कमल मलर्च् चीरडियै— यानै मुन्

हमारे इळशै के अधीश्वर शिवजी के चरण ही उन्नत वेद शिखा ज्योति हैं। रे मन, यह स्थिर धारणा कर लो। ५ अर्धचन्द्र-अरुण जटाधारी, सर्वशक्तिमान इळशै के अधीश्वर मणिकंठ शिवजी के चरणकमल ही नरक में पतन से रोकनेवाली तथा इच्छित वर दिलाकर भक्तों को उत्कृष्ट जीवन दिलानेवाली ओषधि है। ६ जिस इळशै नगर में निश्चिन्त विद्वान रहते हैं, उस इळशै के ईश्वर का चरण-पुष्प ही वह पुंडरीक है, जो एक विस्मयकारी कमलनाल पर उगा था। वह पुंडरीक विष्णु का सुगन्धित गोल अक्ष-कमलपुष्प है। (यह कथा प्रचलित है कि विष्णु ने एक दिन शिवपूजा के अवसर पर देखा कि उनके पास एक सहस्र आठ कमलों में एक की कमी रह गयी; तब उन्होंने अपनी एक आँख को निकालकर शिवजी पर कमलपुष्प के स्थान पर चढ़ाया।) ७ इळशै जल-समृद्ध नगर है, जहाँ कमल के बीज यत्र-तत्र बिखरे मिलते हैं। उस इळशै के ईश्वर के चरणकमल ने ही भयंकर शक्तिधर राजा रावण को पीड़ित किया था, जब उसने कैलाश पर्वत को उठाया था। ८ जो हलाहल-नयना स्त्रियों के स्तनों के समान पर्वतों से घिरा हुआ है, उन इळशै के अधीश्वर के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शंख - पूर्ण खेतों वाले इलशै के ईश्वर।
शिवजी के ही उन्नत (पावन) चरण (महिमवर)॥
वेद (दीप) की (दिव्य) शिखा हैं (अति) ज्योतिर्मय।
रे मन! यह धारणा करो तुम (दृढ़तम) निश्चय॥ ५॥
अरुण जटाधारी हैं, अर्ध - चन्द्र मस्तक पर।
सर्वशक्त, मणि - कंठ शंभु इलशै के ईश्वर॥
नरक-पतन से रक्षा करते उनके पग - वर।
भक्त जनों को देते हैं वे मन - वाञ्छित वर॥
वे औषध हैं, देनेवाले उत्तम जीवन।
(उनकी कृपा - दृष्टि पाकर के तर जाते जन)॥ ६॥
इलशै में रहते हैं भ्रान्ति - हीन विद्वज्जन।
इलशै के ईश्वर का चरण - पुष्प ही पावन॥
पुण्डरीक है वह (ललाम अतिशय ही शोभन)।
जो कि उगा था विस्मयकारी कमल - नाल पर॥
है वह सुरभित पुंडरीक हरि का लोचन वर।
(जो कि बन गया चक्र सुदर्शन उनके शुभकर)॥ ७॥
इलशै है जल से समृद्ध (शुभ) नगर (मनोहर)।
यत्र - तत्र बिखरे मिलते हैं कमल - बीज वर॥
जब राजा रावण ने था कैलाश उठाया।
(उमा भगवती को उसने भय - भीत बनाया)॥
तब इलशै के ईश्वर के चरणों से (सत्वर)।
त्रस्त हो गया राजा रावण बली भयंकर॥ ८॥
विष - नयना ललनाओं के अति उच्च कुचों - सम।
है इलशै के चारों ओर शैल (अति अनुपम)॥
इस इलशै के ईश्वर शिव के चरण (मनोहर)।
दारुक - वन के मुनियों द्वारा प्रेरित होकर॥
"मुयलक" नामक राक्षस के सिर - ऊपर चढ़कर।
नाचे थे अतिशय विशिष्टतम नाच (मनोहर)॥ ९॥
परम - तत्त्व - मय हैं शीतल इलशै के ईश्वर।
उनके मधु (मकरन्द) प्रपूरित चरण - कमल (वर)॥
मेरे पूर्वजन्म - कृत पापों का विनाश कर।
मुझको ऐसी स्थिति में पहुँचा देंगे (सत्वर)॥

चरण ही वे चरण हैं, जो (दारुक वन के) तपस्वी मुनियों द्वारा प्रेरित 'मुयलक' नामक राक्षस के सिर पर चढ़कर विशेष रूप से नाचे थे। ९ शीतल इलशै के ईश्वर स्वयं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शॆय्द विनै तीर्त्तुच् चिवानन्दम् पॊङ्गियरुळ्
ऍय्दिडवुञ् जॆय्युम् ऍनै 10

तनि

कन्न नॆनुम् ऍङ्गळ् करुणै वेङ्कटेशरॆट्ट
मन्नवन् पोऱ्ऱु शिव माणडियै— अन्नवनुम्
इन्नूलुन् दॆन्ना रिळशै यॆनुम् नन्न हरुम्
ऍन्नाळुम् वाऴवैक्कु मे 11

तनिमैं इरक्कम्—10

(मदुरै विवेकपानु मलर् 1904)

कुयिलनाय्! निन्नॊडु कुलवियिन् कलवि
पयिल्वदिऱ् कऴित्त पन्नाळ् निनैन्दु पिन्
इन्ऱैनक् किडैये ऍण्णिल् योशनैप् पडुम्
कुन्ऱमुम् वनमुम् कॊऴि तिरैप् पुनलुम्
मेविडप् पुरिन्द विदियॆयुम् निनैत्ताल् 5

पावियॆन् नॆञ्जम् बगीरॆनल् अरिदो
कलङ्गरै विळक्कॊरु कावदम् कोडिया
मलङ्गुमोर् शिऱिय मरक्कलम् पोन्ऱैन्
मुडम् पडुदिनङ्गाळ्! मुन्नर् यान् अवळुडन्
उडम्बॊडुम् उयिरॆन उऱ्ऱु वाऴ् नाट्कळिल् 10

परमवस्तु हैं। उनके मधुमिश्रित कमल-से चरण ही मेरे पूर्वकृत पापों का निराकरण करके मुझे ऐसी स्थिति में पहुँचा देंगे, जहाँ शिवानन्द उमड़ता रहेगा। १०

अतिरिक्त

हमारे करुणाकर राजा वेंकटेश रेड्डन कर्ण माने जाते हैं। उनसे पूजित शिव के आदरणीय चरण, उन राजा को, इस ग्रंथ को तथा दक्षिण के इळशै नगर को सदा अमर रखेंगे। ११ (मुझे यह भारती-रचित नहीं लगता। इसके अन्तिम भाग में छन्दःशास्त्र के नियमों का उल्लंघन किया गया है। विष्णु को शिव से कम दिखाने में भारती की जो रुचि इसमें प्रकट की गयी है, वह उनके लिए अस्वाभाविक लगती है। शैली भी उनकी नहीं जान पड़ती।)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ब्रह्मानन्द जहाँ पर (सदा) उमगता होगा।
(भक्त जनों का मन उमंग में पगता होगा) ॥ १० ॥

अतिरिक्त

वेंकटेश श्री रेट्टन कर्ण - सदृश करुणाकर।
माने जाते हैं हम सबके नृप (दानी वर) ॥
उनसे पूजित शिव के आदरणीय चरण वर।
(कृपा करें अविराम सदा वे हम लोगों पर) ॥
उन नृपवर को और हमारे ग्रंथ (सुघर) को।
अमर करेंगे दक्षिण इलशै के सु - नगर को ॥ ११ ॥

विरह-व्यथा—१०

(मदुरै, विवेक-भानु विशेषांक—१९०४)

साथ तुम्हारे प्रणय - केलि में बीते जो दिन।
कोकिल - सी भद्रे! करता उन दिनों का स्मरण ॥
सोच रहा फिर उस विधि का विधान (प्रलयंकर)।
हम दोनों में जिसने किया योजनों अन्तर ॥
पर्वत, वन, उत्तुंग - तरंग जलाशय सारे।
आज आ गये बीच हमारे और तुम्हारे ॥ १-५ ॥
है हो रहा विदीर्ण आज मुझ पापी का मन।
है अनहोनी बात (अरे! यह कैसी भीषण) ॥
मैं उस नौका के समान हूँ (अति - विह्वल - मन)।
दीप - स्तंभ हो जिससे दूर करोड़ों योजन ॥
फिर वह दीपस्तंभ काँपता हो (चंचल हो)।
अचल नहीं हो एक स्थान पर, सदा सचल हो ॥
तन (मन) प्राणों से उससे जब मिला हुआ था।
(प्रात - कमल - सम हृदय हमारा खिला हुआ था) ॥ ६-१० ॥

विरह-व्यथा—१०

[मदुरै—विवेक भानु विशेषांक—१९०४]

हे कोकिल-सी भद्रे! तुम्हारे साथ प्रणय-क्रीडा में जो दिन बीते थे, उन अनेक दिनों का स्मरण करता हूँ और बाद में जब उस विधि के विधान पर सोचता हूँ— जिससे कि तुम्हारे और मेरे बीच असंख्य योजनों में पर्वत, वन, उत्तुंग तरंगों वाले जलाशय हो गये हैं — तो ५ मुझ पापी अभागे का मन दलक जाता है— क्या वह अनहोनी बात है? मैं उस नौका के समान हूँ, जिससे दीप-स्तम्भ एक करोड़ योजन पर रहता हो और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वळि यॆऩप् पऱन्ब नीर् मऱ्ऱि यान् ऍऩाबु
किळियिऩैप् पिरिन्दुळिक् किरियॆऩक् किडक्कुम्
शॆयलैयॆऩ् इयम् बुवल् शिवऩे !
मयलैयिर् ऱॆऩ्ऱॆबर् वहुप् परङ् गवट्के ? 14

वङ्गमे वाळ्ळिय !—11

(सुदेश मित्तिरऩ् 15-9-1905)

अङ्गमे तळर् वॆय्बिय कालैयुम्
अङ्गॊर् पुऩ्ऩरि तन्दिडु मूऩुणाच्
चिङ्गमे यॆऩ वाळ्दल् शिऱप्पॆऩाच्
चॆम्मै कूऱिनऩ् दाय्प् पॆरुन् वैयत्तैप्
पङ्गमे पॆरुमिन् निलै निऩ्ऱुयर्
पण्डै माण्बिडैक् कॊण्डिऩि दुय्त्तिडुम्
वङ्गमे यॆऩ वन्दऩै वाळ्ळि नी
वङ्गमे नऩि वाळ्ळिय वाळ्ळिय 1
कऱ्पहत्तरुप् पोलॆदु केट्पिऩुम्
कडिदु नल्हिडुम् बारद नाट्टिऩिल्
पॊऱ्पुऱप् पिऱन्दोम् नमक्कोर् विदप्
पॊरुळु मऩ्ऩिय रीवल् पॊऱुक्किलेम्
अऱपर् पोलप् पिऱर् करम् नोक्कियो
मवऩि वाळ्दला हादॆऩ नऩ्गिदै
वऱ्पुऱुत्तिडत् तोऩ्ऱिय दॆय्वमे
वङ्गमे नऩि वाळ्ळिय वाळ्ळिय 2

जो बरसता रहता हो ! हे 'लँगड़े दिनो', जब मैं उसके साथ शरीर तथा उसके अन्दर प्राणों के समान जुड़ा रहा, तब उन दिनों— १० तुम वायु के समान उड़ते चले; वे ही तुम अब, जब मैं अपनी शुकी से अलग रहता हूँ, तब गिरियों के समान अचल रहते हो ! तुम्हारे इस कृत्य को क्या कहूँ ? हे शिव ! यह कौन कह सकता है कि उसे भी वह प्रणय-पीड़ा हो नहीं रही हो ! १४

वंग जिए (जय बंगाल की)—११

अंग शिथिल हो जाएँ, तब भी शेर वह मांस नहीं खाता, जिसे क्षुद्र सियार खा दे। वंग ने भी उसी सिंह के-से जीवन को ही श्लाघ्य समझा। वह वंग हमारी महान जन्मभूमि भारत देश को इस भग्न दशा से छुड़ाकर प्राचीन गौरव पर ले आने का परिश्रम कर रहा है ! हे वंग ! तुझे नमस्कार ! जय हो तेरी ! वंग खूब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दिनो ! लुञ्ज - सम तब न कभी टिकते थे क्षण भर।
उड़ते जाते तब तुम वायु - समान निरन्तर ॥
शुकी - समान प्रिया से हूँ मैं पृथक् हुआ अब।
गिरियों के सम अचल हो गये दिवसो ! तुम अब ॥
इस कुकृत्य के लिए तुम्हें मैं कहो कहूँ क्या ?
(मौन - भाव से विरह - व्यथा मैं सदा सहूँ क्या ?) ॥
कहो किसे यह प्रणय - पीर है नहीं सताती ?
कह सकता है कौन (अरे ! कैसे सह पाती ?) ॥ ११-१४ ॥

वंग जिये (जय बंगाल की)—११

(और किसी पशु को) सियार है जो ले आता।
शिथिल अंग हों, शेर मांस वह कभी न खाता ॥
समझा श्लाघ्य वंग ने सिंह - सदृश ही जीवन।
(सिंह - सदृश बंगाल देश है करता गर्जन) ॥
जन्म - भूमि हम सबकी भारत (का वन्दन कर)।
वंगदेश, परतंत्र दशा से उसे उठाकर ॥
है कर रहा परिश्रम गत - गौरव लाने को।
(फिर से सुखकर स्वतंत्रता को सरसाने को) ॥
वंगदेश ! है नमस्कार तुझको यह सादर।
चिरजीवी हो वंगदेश ! जय ! तुझे समादर ॥ १ ॥
देश हमारा (यह) भारत है (अतिशय सुन्दर)।
कल्पवृक्ष - सम यह देता है मनभाया वर ॥
हमने इसमें गौरव - पूर्वक जन्म लिया है।
(खाया इसका अन्न इसी का सलिल पिया है) ॥
हमें विदेशी जन देवें कुछ दान (दया कर)।
इसे नहीं हम सह सकते (अति लज्जा - कर !) ॥
नीचों के सम ही मुहताज दूसरों का बन।
भला नहीं इस जग के बीच बिताना जीवन ॥
वंगदेश ! हमको यह पाठ सिखाने आया।
वंगदेश की जय हो जग में जिये (सवाया) ॥ २ ॥

जिये। १ कल्पवृक्ष के समान मन-माँगा (वर) देनेवाला है यह भारत देश ! हम इसमें गौरव के साथ जनमे हैं। हमें कोई विदेशी कुछ दान दे —हम इसे सह नहीं सकते। छोटे लोगों के समान दूसरे का मुहताज रहकर संसार में जीना भला नहीं है। यह पाठ सिखाने आये हुए हे वंग ! हे देव। तुम खूब जियो ! (जय हो तुम्हारी !) २ हे महीयसी तथा सुन्दर भारत देवी ! अपने आँसू पोंछ लो ! हंसो !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णिनीर् तुडैप्पाय् पुत्तहै कॊळ्वाय्
कविनुरुम् परदप् पॆरुन् देविये
उण्णिहळ्न् दिडुन् दुन्बम् कळैदियाल्
उन्ड्रन् मैन्दर्हळ् मेन्नॆड्रि युड्रनर्
पॆण्णि नॆञ्जिड् किदमॆन लावदु
पॆड्र पिळ्ळैहळ् पीडुड्रवे यन्ड्रो ?
मण्णि नी पुहळ् मेविड लाळ्त्तिय
वङ्गमे नन्नि वाळ्िय वाळ्िय 3

कावडिच् चिन्दु—12

("पुदुमैक् कवि बारदियार्" ऎन्ड्र पुत्तहत्तिल् वॆळि याहि युळ्ळदु ।)

पच्चैत् तिरु मयिल् वीरन् अलङ्कारन् कौमारन्— ऒळिर् पन्तिरु तिण् पुयप् पारन् अडि पणि सुप्पिरमणियर्क् करुळ् अणि मिक्कुयिर् तमिळैत् तरु बक्तर्क् कॆळिय शिङ्गारन्— ऎळिल् पण्णु मरुणा शलत् तूरन्

वन्दे मातरम्—13

(सुदेश मित्तिरन् : 20-2-1906)

आरिय मॆन्ड्र पॆरुम् बॆयर् कॊण्डवॆ मन्नैयित् मीदु तिहळ्
अन्बॆन्नु मॆन् कॊडि वाडिय काले यदर् कुयिर् तन्दिडुवान्
मारियॆन्नुम् पडि वन्दु शिड्रन्ददु वन्दे मातरमे
माणुयर् बारद तेवियिन् मन्दिरम् वन्दे मातरमे

अम्बर का दुख दूर कर दो ! तुम्हारी संतानें आगे बढ़ रही हैं। नारी के मन के लिए हितकारी बात उसके पुत्रों का गौरववान हो जाना है न ? पृथ्वी पर तुम्हारा यश बढ़े। तुमने ऐसा मंगलाशासन (शुभाशीर्वाद) दिया। ऐसे हे बंग ! तुम खूब जियो ! जय हो तुम्हारी ! ३

मुरुगन की प्रशंसा में गाया जानेवाला पद्य—१२

['नवीनता का कवि भारती'—शीर्षक पुस्तक में प्रकाशित]

अरुणाचल (नगर) के श्री मयूर पर आरूढ़ रहनेवाले हैं, सुसज्जित कुमार हैं, शोभायमान बारह भुजावाले हैं और अलंकारपूर्ण तमिळ में रचना कर देनेवाले तथा उनके चरणों पर नमनेवाले 'सुब्रह्मण्यमों' (सुब्रह्मण्य भारती आदि कवियों के लिए) सुलभ सुन्दर देव हैं !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हे महीयसी ! (सुखमय) भारतदेवी ! सुन्दर ! ।
अपने आँसू पोंछो, हँसो (प्रफुल्लित होकर) ।।
दूर करो मन का दुख (भाग्य तुम्हारे जागे) ।
संतानें बढ़ रही तुम्हारी हैं अब आगे ।।
माता के मन को हितकारी यही प्रीतिकर ।
बनते गौरववान पुत्र जब उसके यशधर ।।
ऐसा तुमने दिया (बिगुल) मंगलमयकारी ।
इस भू - तल पर छा जाए यश - कीर्ति तुम्हारी ।।
चिरजीवी हो वंगदेश तेरी हो जय - जय ।
(तूने आकर किया भारतीयों को निर्भय) ।। ३ ।।

मुरुगन की प्रशंसा में गाया जानेवाला पद्य—१२

हरित - वर्णवाले मयूर (वाहन) पर संस्थित ।
जय हो देव कुमार (सुभग) द्वादश - भुज - शोभित ।।
अलंकार - मय तमिळ - सुभाषा में तव गुणगण ।
गाते हैं तव भक्त (सदा प्रमुदित होकर मन) ।।
निज भक्तों के लिए सुलभ (तुम) देव मनोहर ।
तुम अरुणाचल के वासी हो (हे करुणाकर !) ।।

वन्दे मातरम्—१३

आर्य भूमि विख्यात हमारी भारत - माता ।
उस पर प्रेम - लता को लखा तनिक कुम्हलाता ।।
जीवन - दान उसे करने के लिए (निरन्तर) ।
वर्षा - सम है यह "वन्दे मातरम्" गीत - स्वर ।।
यशस्विनी भारतदेवी का मंत्र मनोहर ।
यह "वन्दे मातरम्" गीत है (अतिशय सुंदर) ।।

वन्दे मातरम—१३

आर्य भूमि संज्ञित हमारी माता पर रहनेवाली प्रेम की लता यदि जरा भी कुम्हलाये, तो उसे जीवन प्रदान करने के लिए वर्षा के समान आनेवाला 'वंदे मातरम्' गीत है। यश में बढ़े भारत देवी का मन्त्र 'वन्दे मातरम्' है। वीर्य, ज्ञान तथा बड़े यश को मन्द करते हुए जिन क्षुद्र अन्धकार-पुंजों ने आकर आर्यों को घेर लिया,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बीरिय आन मरुम् पुहऴ् मङ्गिड मेविनल् आरियरै
मिञ्जि वळैन्दिडु पुन्मै यिरुट्कणम् वीऴ्वुऱ वङ्ग महा
वारिदि मीदि लॆऴुन्द इळङ्गदिर् वन्दे मादरमे
वाऴि नलारिय देवियिन् मन्दिरम् वन्दे मादरमे 1
कारडर् पॊन् मुडि वानि मयन्दरु गङ्गै वरम्बि तिलुम्
कन्तियै वन्दॊरु तॆन्दिशै यार् कलि कादल् शॆया यिडैयुम्
बीरर्हळ् मिञ्जि बिळङ्गु पुन्ना मुदल् 'वेरुळ वूर्हळिलुम्
बिञ्जै यॆनुम् पडि यन्बुडन् यारुम् वियन्दिडु मन्दिर मुम्
बारद देश विरोदिहळ् नॆञ्जु पदैत्तिडु मन्दिरमुम्
पादह रोदिनु मेदह वुऱ्ऱिडु पण्बुयर् मन्दिरमुम्
बार मुरुञ् जुवै यिन्नर् बुण्कनि वान् मरुन्दॆन्नवे
माणुयर् बारद देवि विरुम्बिडुम् वन्दे मादरमे 2

अॆन्ने कॊडुमै—14

(सुदेश मित्तिरन् 4-4-1906)

मल्लार् तिण्डोट् पाञ्जालन् महळ् पॊऱ्करत्तिन् मालुऱ्ऱ
बिल्लाल् विजयन् अन्ऱिऴैत्त विन्दैत्तॊऴिलै मऱन्दिलिराल्
पॊल्ला विदियाल् नी विरवन् पोरमुन्निऴैत्त पॆरुन् दॊऴिल् हळ्
अॆल्ला मऱन्दीरॆम् मवर् हाळ् अॆन्ने कॊडुमै यीङ्गिदुवे ? 1

उनको छिन्न-भिन्न करते हुए वंग-वारिधि पर बालसूर्य उग आया। वही बालसूर्य 'वन्दे मातरम्' है ! श्रेष्ठ आर्या देवी का उच्च मन्त्र जिये ! वन्दे मातरम्। १ मेघाच्छन्न स्वर्ण-किरीटी गगनचुम्बी हिमालय पर्वत से उत्पन्न गंगा के उद्गम-स्थल से लेकर कन्या (कुमारी) तक जहाँ दक्षिणी दिशा का शब्दायमान सागर आकर प्रेम से लीला करता है, तथा वीरों से पूर्ण पुणे आदि अन्य नगरों में, सभी लोग जादू के समान इसी मंत्र से विस्मित होते हैं। भारत देश के शत्रुओं का दिल इसी मंत्र से दलक जाता है। पातकी लोक भी इस मंत्र का उच्चारण करते हैं, तब वे सुसंस्कृत हो जाते हैं। श्रेष्ठ तथा मधुर खाद्य फल, या स्वर्गिक दवा मानकर भारत-देवी जिस मंत्र को चाहती है, वह मंत्र 'वन्दे मातरम्' है। २

क्या ही विपदा है !—१४

हे हमारे लोगो, मल्ल-वक्ष कठोर-बाहु पांचाल नरेश की कन्या के स्वर्ण (सुन्दर) कर के प्रति मुग्ध हुए विजय (अर्जुन) ने अपने धनु से जो अनोखा साहस किया, उसको तुम भूल गये ! दुर्भाग्य के वश होकर तुमने वह सब कर्म भुला दिया, जो उसने युद्धक्षेत्रों में कर दिखाया था ! हाय ! यह क्या ही क्रूर विपदा है ! १ जहाँ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वीर्य, ज्ञान औ' विपुल सुयश को मंद बनाकर।
घेर लिया आर्यों को तम - पुंजों ने आकर॥
उनको छिन्न - भिन्न करके वंगीय - जलधि पर।
बाल - सूर्य उग आया (लिये प्रकाश प्रभास्वर)॥
बाल - सूर्य है वह "वन्दे मातरम्" मनोहर।
(सर्व) श्रेष्ठ भारतदेवी का उच्च मंत्रवर॥
उस "वन्दे मातरम्" मंत्र की जय हो, जय हो।
चिरजीवी हो (और सभी विघ्नों का क्षय हो)॥ १॥
स्वर्ण - मुकुट - मंडित मेघों से जो आच्छादित।
नभ - चुंबी है जहाँ समुच्च हिमालय पर्वत॥
उससे निकली गंगा जिस सीमा में बहती।
जहाँ कुमारी कन्या की शोभित है धरती॥
करता जहाँ प्रेम - क्रीडाएँ दक्षिण - सागर।
वहाँ और पूना आदिक नगरों के भीतर॥
यह "वन्दे मातरम्" मंत्र जादू-सा सुनकर।
विस्मित होते हैं इन स्थानों के वासी नर॥
यह "वन्दे मातरम्" मंत्र सुनते ही (पावन)।
हो जाता विदीर्ण भारत के अरियों का मन॥
पापी जन भी जब करते इसका उच्चारण।
सभी सुसंस्कृत हो जाते हैं (अतिशय पावन)॥
श्रेष्ठ खाद्य फल मधुर स्वर्ग की दवा मानकर।
भारतमाता को भी प्रिय है यही मंत्र वर॥
वह "वन्दे मातरम्" मंत्र है (अतिशय सुखकर)।
(आज उसे जप रहे देश के सभी नारि - नर॥ २॥

क्या ही विपदा है—१४

थे पांचाल - नरेश मल्ल - विद्या में सुकुशल।
उनके बाहु कठोर (पुष्ट) थे (अतिशय मांसल)॥
उनकी कन्या थी द्रौपदी स्वर्ण - सुन्दर - कर।
लोगो! उस पर मुग्ध हुए जब पार्थ (धनुर्धर)॥
निज धनु से अद्भुत साहस उनने दिखलाया।
(आर्यो!) उस साहस को क्या (पूर्णतः) भुलाया॥
देशवासियो! तुम अभाग्य के वश में होकर।
भुला दिया तुमने वह सभी कृत्य (साहस - कर)॥
युद्ध - क्षेत्र में जिसे पार्थ ने कर दिखलाया।
कैसी क्रूर विपत्ति (अरे! यह कैसी माया?)॥ १॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वीमन् तिऱ्लु मवऱ्किळैय विजयन् तिऱ्लुम् विळङ्गि निन्ऱ
शैम मणिप्पून् दडनाट्टिल् शिऱिय पुळुक्कळ् तोन्ऱि वॅरुङ्
काम नुहर्दल् इरन्दुण्डल् कडैयाम् वाळ्क्कै वाळ्न्दु पिन्ऱ्
ईमम् पुहद लिवै पुरिवार् अॅन्ऱे कॉडुमै यीङ्गिदुवे 2

अॅन्ऱदु ताय् नाट्टिन् मुन्नाट् पॅरुमैयुम् इन्नाट् चिऱुमैयुम्—15

(सुदेश मित्तिरन्— 11-4-1906)

कण्णिहळ्

पुन्नहैयु मिन्निशैयु मॅङ्गॉळित्तुप् पोयिन्नवो ?
इन्नलॉडु कण्णीरि रुप्पाहि विट्टन्नवे !
आणॅल्लाम् पॅण्णाय् अरिवैयरॅल्लाम् विलङ्गाय्
माणॅल्लाम् पाळाहि मङ्गिविट् टदिन्नाडे !
आरियर्हळ् वाळ्न्दु वरुम् अऱ्पुद नाडॅन्बदु पोय्प्
पूरियर्हळ् वाळुम् पुलैत्तेश मायिन्दे !
वीमादि वीरर् विळित् तॅङ्गु पोयिन्नरो
एमाऱि निऱ्कु मिळिञर् हळिङ् गुळ्ळारे !
वेदवुपनिडद मॅय् नूल्ह ळॅल्लाम् पोय्
पेदैक् कदैहळ् पिदऱ्ऱु वरिन् नाट्टिन्निले !
आदि मऱैक् कीदम् अरिवैयर्हळ् शॉन्नदु पोय्
वीदि पॅरुक्कुम् विलै यडिमै यायि न्ऱे !
शॅन्देनुम् पालुम् तॅविट्टि निन्ऱ नाट्टिन्निले
वन्दे तीप्पञ्ज मरबाहि विट्टदुवे !

भीम का शौर्य, तथा उसके लघु सहोदर की वीरता खिल उठी थी, उस महान तथा सुन्दर विशाल देश में क्षुद्र कीड़े पैदा हो गये; वे काम-भोग तथा भिक्षा-भोजन करते हुए निकृष्ट जीवन बिताकर चिता पर पहुँच जायँ ! यह क्या ही क्रूर विपदा है ? २

मेरी मातृभूमि का प्राचीन दिनों का गौरव और आजकल की लघुता—१५

(सुदेश मित्र—११-४-१९०६)

मुस्कुराहट तथा मधुर गीत जाकर कहाँ छिप गये ? दुख तथा आँसू आकर घर कर गये ! सभी पुरुष नारियाँ बन गये; स्त्रियाँ पशु बन गयीं। सभी गौरव मिट्टी में मिल गया और यह देश हतप्रभ हो गया ! यह कीर्ति कि यह आर्यों का वासस्थान है— चली गयी। यह क्षुद्रों का नीच देश हो गया ! भीम आदि वीर मरकर कहाँ चले गये ? अब वही निकृष्ट लोग रहते हैं, जो धोखा खाकर खड़े हैं। वेद, उपनिषद् आदि सत्य-ग्रंथ लुप्त हो गये और इस देश में अज्ञानता भरी कथाओं को लोग बकते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जहाँ खिला था भीमसेन का शौर्य (भीमतर)।
जहाँ खिली थी अर्जुन की वीरता (उग्रतर)।
है यह वही महान देश (अति) विस्तृत सुन्दर।
क्षुद्र कीट से किन्तु यहाँ पर आज हुए नर॥
काम - भोग को भोग, पेट - हित भीख माँगकर।
बिता निन्द्य जीवन जल जाते सभी चिता पर॥
कैसी क्रूर विपत्ति (अरे! भारत पर छायी)।
(सिंह बन गये स्यार दशा दारुण दुखदायी)॥ २॥

मेरी मातृभूमि का प्राचीन दिनों का गौरव और आजकल की लघुता—१५

(सुदेश मित्र—११-४-१९०६)

मधुर गीत, मुसकान कहाँ छिप गये (मनोहर)।
दुःख और आँसू छा गये यहाँ पर आकर॥
बनीं नारियाँ पशु, नारी बन गये सभी नर।
मिट्टी में मिल गये सभी गौरव (उन्नत - तर)॥
प्रभाहीन हो गया हमारा देश (मनोहर)।
(देख दशा दयनीय दुःख होता दारुणतर)॥

× × ×

"यह आर्यों की वास भूमि"—यह कीर्ति समुज्ज्वल।
नष्ट हो गयी (लगा सभी के मुख पर काजल)॥
क्षुद्र जनों का नीच देश यह बना (निम्नतर)।
कहाँ न जाने चले गये भीमादिक मरकर॥
अब बसते हैं वही निकृष्ट लोग (मतवाले)।
जो (सर्वदा सभी को) धोखा देनेवाले॥
वेद, उपनिषद्, सत्य - ग्रंथ सब लुप्त हो गये।
बकते सब अज्ञान - कथाएँ (ज्ञान खो गये)॥
कभी यहाँ की स्त्रियाँ वेद के गातीं गायन।
किन्तु हुआ अब उस स्थिति में (भारी) परिवर्तन॥
बिक्री की बन गयीं दासियाँ अब महिलाएँ।
गली - गली में झाड़ू देती (देखी जाएँ)॥
दूध - शहद की नदियाँ यहाँ बहा करती थीं।
तृप्त सभी होते थे (इच्छाएँ भरती थीं)॥

यहाँ स्त्रियाँ आदि वेदों के गीत गाती थीं। अब वह स्थिति बदल गयी और हमारी देवियाँ गली साफ़ करनेवाली बिक्री की दासियाँ बन गयीं। यहाँ शहद तथा दूध

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मामुनिवर् तोन्ऱि मणमु यर्न्द नाट्टिनिले
कामुहरुम् पॊय्यडिमैक् कळ्वर्हळुम् शूळ्न्द नरे !
पॊन्नु मणियु मिहप् पॊङ्गि निन्ऱ विन्नाट्टिल्
अन्नमिन्ऱि नाळु मळि वार्ह ळॆत्तनैपेर् ?

यात्—16

(सुदेश मित्तिरन्— 17-9-1906)

आयिरङ् गोडि अऱि ञर्हळ् पऱ्पल
आयिर युहङ्ग ळारायन् दऱिहिला
'यात्' उडै यियऱ्कै यानो अऱिवन्
मीनुणर्न्दिडुङ्गॊल् वियन् कडऱ् पॆरुमै ?
अरुळ् वळि काण्गॆन् ऱरुळिनर् पॆरियोर्
मरुळ् वळि यल्लान् मऱ्ऱॊन्ऱुणर् हिलेन्
अहिलमुम् 'यात्' ॲन आन्ऱो रिशैप्पर्
महिद लत्तिऱुळिन् मण्डिय मणत्तेन्
यानदै यॊरो वळिक् कण्डुळेन् ॲनिनुम्
मानद ॲळियदु मङ्गवोर् कणत्ते
यानॆनुम् पॊरुळ्तान् ॲन्नै कॊल् ? अदनैयिव्
वूनॆनक् कॊळ्व रुयिरिलार् शिलरे
पिरममे यानॆनप् पेशुवर् पेशुह !
पिरममे यानॆनप् पेशिनर् पॆरियोर् !

इतना बहता था कि लोग अघा जाते थे। अब यहाँ अकाल का बोलबाला हो गया है! यहाँ महान मुनि जन्म लेते थे तथा देश की यश-गंध दूर-दूर फैलती थी; अब कामुक लोग, झूठ के दास तथा चोर आकर भर गये हैं। इस देश में स्वर्ण तथा रत्न कसरत से खिले थे। अब यहाँ बिना भोजन के मरनेवाले कितने ही हो गये हैं!

मैं—१६

सहस्र करोड़ पंडितों ने अनेकानेक युगों से अन्वेषण करके भी जिस 'अहम्' की स्थिति को नहीं जाना, उसको क्या मैं जान सकूँगा? क्या मछली समुद्र की स्थिति जान सकती है? महात्माओं ने कहा है कि 'कृपा के द्वारा' उसे जान लो। मैं तो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अब है चारों ओर अकाल यहाँ पर छाया।
(हा ! यह कैसा विकट समय मेरे प्रभु ! आया)।।
पैदा हुए यहाँ पर थे महनीय मुनीश्वर।
फैली थी जिनकी यश - गंध देश - देशान्तर।।
अब असत्य के दास, चोर हैं, कामुक नर हैं।
(सभी ओर दिखलाते दुष्ट, नीच, पामर हैं)।।
स्वर्ण - रत्न भरपूर यहाँ थे कभी अपरिमित।
विना आग के अब मरते देखो जन अगणित।।

मैं—१६

कोटि - कोटि बुध अमित युगों से अन्वेषण कर।
जान सके जिस "मैं" की स्थिति को नहीं (रंच - भर)।।
जान सकूँगा मैं कैसे उस (अति दुस्तर) को।
जान सकेगी (लघु) मछली कैसे सागर को।।
ईश - कृपा के द्वारा जानो उसको निज मन।
बतलाते हैं सबको यही महात्मा (सज्जन)।।
मैं तो भ्रम के सिवा और कुछ नहीं जानता।
(भटक रहा हूँ भ्रम में कुछ भी नहीं मानता)।।
"मैं" है अखिल प्रपंच बताते यही साधु - जन।
भू - तल के तम से आच्छादित है मेरा मन।।
एक रीति से मैंने उसको जाना (मन में)।
पड़ जाता है मंद प्रकाश हृदय का क्षण में।।
"मैं" क्या है ? इस तन को "मैं" कहते हैं कुछ जन।
"मैं हूँ ब्रह्म" बताते पंडित (करते प्रवचन)।।

'भ्रम' के सिवा कुछ नहीं जानता। अखिल (सृष्टि) ही 'अहम्' है ! यही साधुओं ने कहा है। मेरा मन तो महीतल के अन्धकार से आच्छादित है ! मैंने एक रीति से उसे जाना है। तो भी मन का प्रकाश एक क्षण में मन्द पड़ जाता है। 'अहं' आखिर क्या चीज है ? कुछ लोग इस शरीर को 'मैं' यह 'अहं' समझते हैं। 'अहं ब्रह्मास्मि' ! कहनेवाले कहते रहें। पंडितों ने 'अहं ब्रह्मास्मि' घोषित किया है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शन्दिरिहै—17

(सुदेश मित्तिरन्— 25-9-1906)

याणर्क् कुरैयुळा मिन्दु नाडदनिऱ्
काणर्किन्रिय काट्चिहळ् पलवित्तु
माणप् पॆरिय वनप् पमैन्दिन् कवि
वाणर्क् कमुदा यिलङ्गिडुम् पॊरुळिदॆन्
ऱूणप् पुलवो नुरैत्तुळन् मुन्नाळ्
अःदु तान्
करुमैयिऱ् पडर्त्त वनमाङ् गडलिडै
ऒरुमैयिऱ् ऱिहळु मॊण् मदित् तीविनिन्
ऱॆल्लात् तिशैयिनु मॆऴिल् पॆर् वूऱुऱ्
शॊल्ला लिनिमै कॊळ् शोदि यॆन् ऱोदिनन्
ओर् मुऱै
कडऱ्पुऱ मणन्मिशैत् तनिये कण्णयर्न्
दिडैप्पडु मिरवि लिनिदु कण् विऴित्तु यान्
वानह नोक्किनेन् मऱ्ऱदन् माण्बिनै
यूनमा नाविनि लुरैत्तलुम् पडुमो ?
निनैवुऱुन् दॆय्वीहक् कनलिडैक् कुळिर् तेन् वाळ् मदि !

पण्डारप् पाट्टु—18

बॆयहत्ते शडवस्तु विल्लै मण्णुङ् गल्लुम् शडमिल्लै
मॆय्युरैप्पेन् पेय् मनमे मेलुम् कीऴुम् पयमिल्लै ! 1

चन्द्रिका—१७

(सुदेश मित्र—२५-९-१९०६)

बड़े मानुसों का वासस्थान है यह हिन्द देश। इसमें अनेक दर्शनीय दृश्य हैं। उनमें जिसे बड़ी बड़ाई मिली है, जो मधुर कवियों के लिए अमृत-सम विद्यमान है, वह यही है। इस प्रकार एक अंग्रेज कवि ने पहले निर्दिष्ट किया है ! वह तो— काले वन-सागर में अकेले शोभायमान चन्द्ररूपी द्वीप से सभी दिशाओं में बिखरनेवाली, मधुर बोली से द्योतित ज्योति है ! यही उसने कहा है ! एक बार, सागर के पास बालू पर मैं अकेले लेटकर सो गया। अर्धरात्रि में मैंने जागकर आकाश की ओर नजर दौड़ायी। क्या उसकी महिमा को इस दुर्बल जिह्वा से बताया जा सकता है ? वह निरन्तर स्मरण में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चन्द्रिका—१७

(सुदेश-मित्र—२५-६-१९०६)

भले मानुसों का यह भारत वास-स्थल है।
दर्शनीय दृश्यों की महिमा यहाँ (प्रबल) है॥
मधुर सुकवियों के हित जो है (अति) अमृतोपम।
कहा आंग्ल कवि ने है वह चन्द्रिका मनोरम॥
काले वन-रूपी विस्तृत सागर के भीतर।
एक अकेला द्वीप सुशोभित चन्द्र मनोहर॥
उससे छिटक दिशाओं बीच बिखरने वाला।
मधु-भाषिणी ज्योति द्योतित (चन्द्रिका निराली)॥
यही आंग्ल कवि ने कविता में है बतलाया।
(वही गीत गा करके मैंने तुम्हें सुनाया)॥
एक बार सागर के पास (श्वेत) बालू पर।
मैं सो गया अकेले (जाकर) वहाँ लेटकर।
अर्ध रात्रि में (सहसा मैं उठ पड़ा) जागकर।
नभ की ओर निहारा अपनी दृष्टि उठाकर॥
उसकी (सुषमा की) महिमा (थी अति सुखदायी)।
जो दुर्बल जिह्वा से जा सकती न बतायी॥
दिव्य अनल के मध्य द्वीप-सम जो द्युतिकारी।
शीतल मधुमय चन्द्रदेव की (सजी सवारी)॥
(चारु) चन्द्र की जय हो, चन्द्रदेव की जय हो।
(चारु चन्द्रिका की शोभा जग में अक्षय हो)॥

शिव-भक्त का गीत—१८

है जड़ वस्तु नहीं कोई इस जग के भीतर।
हैं जड़ वस्तु नहीं जग में मिट्टी औ' पत्थर॥
अरे! भूत-सम मन! मैं कहता सत्य वचन वर।
नीचे है भय नहीं और भय (लेश) न ऊपर॥ १॥

रहनेवाले दिव्य अग्नि के मध्य स्थित शीतल और मधुमय चन्द्र है। उस चन्द्र की जय हो।

शिव-भक्त का गीत—१८

संसार में जड़ वस्तु कोई नहीं है। मिट्टी तथा पत्थर जड़ नहीं हैं। हे भूत-से मन, मैं सच कहता हूँ! न ऊपर भय है, न नीचे! १ धीरे-धीरे पहचान लो—

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पेयप् पेयत् तेरडा पडैयुम् विषमुम् कडवुळडा
पॊय्यु मॆय्युञ् जिवऩडा पूमण्डलत्ते पयमिल्लै 2

शाबुम् नोकुञ् जिवऩडा शण्डैयुम् वाळुञ् जिवऩडा
पाविय मेळैयुम् पाम्बुम् पशुवुम् पण्णुन् दाऩमुन् दॆय् वमडा 3

मॆङ्गुम् जिवऩैक् काणडा ईऩप् पयत्तैत् तुरत्तडा
गङ्गैच् चडैया कालन् कूऱ्ऱे कामन् पहैये वाळ्ह नो ! 4

पाऱ्ऱन् दॆय्वम् पदियुन् दॆय्वम् पालै वनमुङ् गडलुन् दॆय्वम्
एऴु पवियुन् दॆय्वम् दॆय्वम् मॆङ्गुन् दॆय्वम् मॆदुवुम् दॆय्यवम् 5

वॆयत्ते शडमिल्लै मण्णुङ् गल्लुन् दॆय्वम्
मॆय्बुरैप्पेन् पाळ् मऩमे मेलुम् कीऴुम् पयमिल्लै ! 6

आशु कवि—19

वॆण्बा

"उलहैत् तुऱन्दीर् उरुवैत् तुऱन्दीर्
मलैयैप् पिळन् दुविड वल्लीर्— इलहु पुहऴ्
ञाऩम् तवम् कल्वि नाऩ्गुन् दुऱक्कलीर्
आऩन्द मैया हरि"

हथियार और विष ईश्वर हैं। झूठ तथा सच शिव हैं। भू-मण्डल पर भय नहीं ! २ मृत्यु तथा रोग शिव हैं। युद्ध और तलवार शिव हैं। पापी, गरीब, साँप और गाय और किया हुआ दान-- सभी देव हैं। ३ सर्वत्र शिव को देखो ! अरे, हीन भय को भगा दो। हे गंगा-जटाधारी ! यम के यम ! काम के शत्रु ! जय हो आपकी ! ४ शून्य भी देव है, बस्ती भी देव है ! रेगिस्तान भी देव है, समुद्र भी देव है ! सातों भुवन देव हैं। देव— सभी देव हैं। सर्वत्र देव हैं ! ५ संसार में जड़ कुछ नहीं है। मिट्टी तथा पत्थर देव हैं। हे निगोड़े मन, मैं सच कहता हूँ। ऊपर भय है, न नीचे भय है ! (यह एक दर्शन है, जिसे शिव-भक्तों का एक सम्प्रदाय मानता है।) ६

आशु-कवि—१९

तुमने संसार से संन्यास लिया; रूप से संन्यास लिया। तुम पर्वत को भी भेद सकते हो ! पर यश, ज्ञान, तप, विद्या –इन चारों को छोड़ नहीं सके हो ! आनन्द मैया-हरि !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

धीरे - धीरे शिव - स्वरूप को तुम पहिचानो।
शस्त्र और विष (भी) ईश्वर हैं (मन में मानो)॥
झूठ और सच (दोनों) शिव (स्वरूप) हैं (सुन्दर)।
भू - मंडल पर (कहीं) नहीं भय (लेश रंच - भर)॥ २॥

मृत्यु - रोग (ये दोनों) शिव - स्वरूप हैं (सुन्दर)।
शिव - स्वरूप हैं युद्ध और तलवार (महेश्वर)॥
पापी, दीन, साँप औ' गाय सभी हैं ईश्वर।
शिव - स्वरूप है दिया हुआ दान (भी पाप - हर)॥ ३॥

सभी ओर देखो शिव का ही रूप (मनोहर)।
अरे! हीन भय को दो भगा (भूत - सा सत्वर)॥
अरे! जटाओं में गंगाधारी, यम के यम।
जय हो, जय हो, कामदेव के शत्रु (काल - सम)॥ ४॥

सूनापन शिव - रूप और शिव बस्ती सुंदर।
है मरुथल शिव - रूप और शिव (जानो) सागर॥
हैं ये सातों भुवन - रूप शिव के ही सुंदर।
सभी ओर हैं बसे हुए (जग में) शिवशंकर॥ ५॥

है जड़ वस्तु नहीं कोई इस जग के भीतर।
हैं जड़ वस्तु नहीं जग में मिट्टी औ' पत्थर॥
अरे! निगोड़े मन मैं कहता सत्य वचन वर।
नीचे है भय नहीं और भय (लेश) न ऊपर॥ ६॥

आशु-कवि—१९

जग (अनूप) से भी संन्यास लिया है तुमने।
(रम्य) रूप से (भी) संन्यास लिया है तुमने॥
पर्वत को भी (अरे!) भेद सकते हो (सत्वर)।
यश, तप, विद्या, ज्ञान नहीं तज सके (मित्रवर!)॥
(फैला चारों ओर अमित) आनन्द (मनोरम)।
हे माता! हे हरि! आनन्द मग्न हो (अनुपम)॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ञानरदप् पाट्टु—२०

(इक् कविदै 'ञानरदम्' वशनप् पहुदियिल् उळ्ळदु)

इडियेरु शार्बिलुर उडल् वॆन्दोन्, ऑन्रुरैया दिरुप्प आवि
मुडियेरि मोदियदॆन् ऱुरुळ् मुहिलैक्, कडुञ् जोर्कळ् मॊळिवान् पोलक्
कडियेरु मलर्प् पन्दु मोदिय दॆन्, रिनियाळैक् काय्हिन्रुनाल्
वडिपेरु वेलनवन् विळियेरि, यॆन्नावि वरुन्दल् काणान्

बगवद् गीदै—२१

काप्पुच् चॆय्युळ्

वेयिनिक्क इशैत्तिरुम् कण्णन् तान्, वेदमन्न मॊळिहळिल् पार्त्तनै
नीयिनिक् कवलाहरप् पोर् शय्दल्, नेर्मै ऍन्ऱदोर् शॆय्बियैक् कूरुमॆन्
ऱायिनिक्क वरुन् दमिळ् वार्त्तैहळ्, वैयहत्तिनर् नॆञ्जु कवर्न्दिडत्
तायिनिक् करुणै शॆयल् वेण्डुम् निन्, शरण मन्ऱि यिङ्गोर् शरणिल्लैये

ज्ञान-रथ गीत—२०

(यह कविता भारती के 'ज्ञानरथ' शीर्षक गद्य-संकलन में उपलब्ध है।)

[भूमिका : 'ज्ञानरथ' भारतीजी के मन का कल्पित रथ है, जिस पर सवार होकर वे कई लोकों की सैर करते हैं। एक बार वे गन्धर्वकन्या पर्वतसुन्दरी के पथ-प्रदर्शन में गन्धर्वलोक जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने एक ऊँचे मैदान में कुछ गन्धर्वबालकों व बालिकाओं को देखा। वे फूलों की बनी गेंद खेल रहे थे। दूर एक स्फटिकासन पर बैठा एक बालक यह खेल देख रहा था। उसे देखते ही लगता था कि वह लड़का तीव्र भाव से विलोड़ित है। वह लड़का पर्वतकुमारी का छोटा भाई चित्तरंजन था। खेल के सिलसिले में रसिका नामक बालिका ने गेंद को किरीटरामन नाम के बालक पर फेंक मारा। तब वह खिसियाकर शिकायत करने लगा कि तू जान-बूझकर मेरी 'छड़ी' को बचाकर किसी विध गेंद को मेरे मुख पर फेंकती है। मैं तेरे साथ नहीं खेलूंगा। उसके इस व्यवहार से चित्तरंजन का मन उद्वेलित होता है। वह रसिका का प्रेमी था। उसका तब का भाव इस कविता में व्यक्त है।]

पार्श्व में अशनि के गिरने से जिसका शरीर जला, वह कुछ न बोला! पर दूसरा (कोई) उस सकरुण मेघ की शिकायत में कठोर शब्द कहे कि उसकी बूंदें आकर मेरे सिर पर आघात करती हैं— उसी प्रकार यह (किरीटरामन) मेरी प्रिया से गुस्सा करता है और कहता है कि उसका मारा हुआ सुगन्धित पुष्पकंदुक मुझे चोट पहुँचाता है। पर वह यह नहीं देखता कि तीक्ष्णशक्ति (भाले) के समान उस (रसिका) की सशक्त दृष्टि मुझ पर चढ़ जाती है और मेरे प्राण पीड़ा से व्याकुल हैं।

भगवद्गीता—२१

(नांदी पाठ)

मधुर-वंशी-वादक श्रीकृष्ण ने जो पार्थ से कहा— हे पार्थ! अब तुम चिन्तातुर मत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ज्ञान-रथ-गीत—२०

जिसके पास गिरा हो (भीषण) वज्र (भयंकर)।
जिससे हो उसका जल गया (सभी) तन (सुन्दर)॥
अपने मुख से वह कुछ भी बोले न वचन वर॥
अन्य व्यक्ति उस सकरुण घन की ओर लक्ष्य कर॥
करे शिकायत कटु शब्दों का दुष्प्रयोग कर।
करतीं बूँदें चोट जलद की मेरे सिर पर॥
उसी भाँति ही यह किरीट-रामन (अति क्रोधी)।
करता क्रोध प्रिया पर (बनकर प्रबल विरोधी)॥
उसका माला फूलों का यह गेंद सुगंधित।
मुझे चोट पहुँचाता (करता अतिशय पीड़ित)॥
पर वह यह कुछ नहीं देखता (है मतवाला)।
तीक्ष्ण दृष्टि रसिका की चुभती जैसे भाला॥
जिससे मेरे प्राण हुए पीड़ा से व्याकुल।
(समझाता हूँ इसीलिए मैं तुम्हें व्यथाकुल)॥

भगवद्-गीता—२१

नान्दी-पाठ

वंशी मधुर बजानेवाले हरि (योगेश्वर)।
बोले अर्जुन से— "सुन लो, हे पार्थ! (मित्रवर!)॥
धर्म-युद्ध तुम करो, नहीं हो मन में चिन्तित।
वही उचित है वे बातें करता हूँ वर्णित॥
हो उपयोग तमिऴ जिन शब्दों का उनके हित।
उनका उच्चारण हो मधुर (सरस-रस-मज्जित)॥
लोक-वासियों के मन को वे (सहसा) लें हर।
हे माँ! ऐसी दया करो तुम (कृपया मुझ पर)॥
तुम्हें छोड़कर मुझे न कोई और सहारा।
(इसीलिए अति करुण स्वरों से तुम्हें पुकारा)॥

होओ। तुम धर्म-युद्ध करो। वही ठीक। मैं उस बात का वर्णन करनेवाला हूँ। उसके लिए प्रयुक्त तमिऴ शब्द— उच्चारण में मधुर हो जावें! हे माँ, दया करो, जिससे वे (शब्द) लोकवासियों का मन हर लें। दया करो। तुम्हें छोड़कर मेरा कोई (अन्य) आश्रय नहीं है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॅरियोरिन् पॅरुमै—२२

(कल्कि—15-9-1968)

कण्णिलान् कालिर् कवित्मणियै यॅऱ्ऱि विट्टाल्
मण्णिलदुतान् मदिप्पहत्ऱ दाय् विडुमो ? 1
पॊय्त् तॊळिलोन् मैतिलियाम् पूवै तत्तैप् पुन्गावल्
वैत्तदन्ना लन्नत्ते मदिप्पिळन्दु पोयिन्ऱळो ? 2
ऐवर् मुन्ने पाञ्जालि याडैयुरिन्दार् कयवर्
मैवळर्न्द कण्णाळिन् माण्बहन्ऱु पोयिन्ऱदो ? 3

शुदन्दिरम्—२३

ताडैयिन् कुरुदियिन् शाय्न्दु नाम् मडियिन्ऱुम्
पिन् वळि मक्कळ् पेणु माऱळिक्कुम्
शुदन्दिरप् पॅरुम्बोर् ओर्नाट् तॊडङ्गुमेऱ्
पलमुऱै तोऱ्कुम् पान्मैत् तायिन्ऱुम्
इऱुदियिल् वॅऱ्ऱि योडिलहुवल् तिण्मम्

शॅट्टि मक्कळ् कुल विळक्कु—२४

पल्लाण्डु वाळ्न् दॊळिर्ह ! कान्ताडु, कात्त नहर्प् परिवि पोन्ऱ्राय्
शॊल्लाण्ड पुलवोर् तमुयिर्त् तुणैये, तमिळ् काक्कुन् दुरैये, वॅऱ्ऱि
बिल्लाण्ड इरामनैप्पोल् निदियाळुम्, इरामनॅन विळङ्गुवाय् नी
मल्लाण्ड तिण्डोळाय् शण्मुहनामम्, पडैत्त वळ्ळऱ् कोवे ! 1

बड़ों का बड़प्पन—२२

यदि अन्धा मनुष्य रत्न को पैर से ठुकरा दे, तो क्या वह रत्न दुनिया में महत्त्व-हीन हो जायगा ? १ वंचक कार्यकर्ता (रावण) ने कोकिला (-सी) मैथिली को क्षुद्र कारा में बन्द कर रखा। क्या उससे माता सीता गौरवहीन हो गयीं ? २ जनों ने पाँचों पांडवों के सामने पांचाली का चीर हरण किया। क्या उससे अंजन-लिप्त आँखोंवाली उस स्त्री का गौरव नष्ट हो गया ? ३

स्वतन्त्रता—२३

बाप-दादाओं के रक्त पर गिरकर हम मर जायें, तो भी पीछे संतानों की रक्षा करनेवाली स्वतन्त्रता के लिए बड़ा युद्ध किसी दिन आरम्भ हो जायगा। यह निश्चित है कि कई बार हार का सामना करने पर भी अन्त में जीत मिलेगी। हम विजयी हो जाएँगे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बड़ों का बड़प्पन—२२

अन्धा यदि पैरों से रत्नों को ठुकराता।
तो क्या रत्नों का महत्त्व जग में घट जाता॥ १॥
कपटी रावण ने पिक-सी मिथिलेश-कुमारी।
कारा में की कैद (दिया दुख अतिशय भारी)॥
गौरवहीन हुई क्या उससे सीता-माता।
(अरे! आज भी उनके गुण-गण है जग गाता)॥ २॥
दुष्ट कौरवों ने पाँचों (पतियों) के सम्मुख।
चीर-हरण कर पांचाली (को पहुँचाया दुख)॥
अंजन-अंजित नयनों वाली का (वर-वैभव)।
नष्ट हो गया क्या उससे उसका (गुरु) गौरव॥ ३॥

स्वतन्त्रता—२३

बड़े जनों की प्रबल रक्त-धारा पर गिरकर।
(देश जाति के हेतु अगर) हम सब जायें मर॥
सन्तानों की रक्षक स्वतंत्रता के कारण।
यदि छिड़ जाये कभी (अचानक बहुत) बड़ा रण॥
कई बार हार का सामना भी करने पर।
(किन्तु) मिलेगी जीत अन्त में (मधुर मनोहर)॥
हम विजयी होंगे (अवश्य) यह (मत) निश्चित है।
(मन में दृढ़ विश्वास हमारे यह संस्थित है)॥

शेट्टियों के कुल-दीप—२४

जो कानाडु देश के रवि-समान प्रतिपालक।
प्राण मित्र कवियों के, जो वाणी के शासक॥
(जो हैं) प्रभुवर (सारे) तमिळ देश के रक्षक।
रामचन्द्र के सम विजयी कोदंड-विधारक॥

शेट्टियों के कुल-दीप—२४

[शेट्टि एक जाति है, जिसके लोग उदारता तथा दानशीलता के लिए प्रसिद्ध हैं। यह शब्द शायद श्रेष्ठी का अपभ्रंश है।] अनेक साल जिओ तथा शोभायमान रहो! कानाडु (नामक एक प्रदेश) के परिपालक सूर्य के समान रहनेवाले, वाणी के शासक कवियों के प्राण-मित्र, तमिळ के रक्षक प्रभु, विजयी कोदंड के शासक श्री रामचन्द्र के समान निधियों के प्रभु राम बनकर शोभित रहो! मल्ल-दक्ष कठोर कन्धोंवाले, हे षण्मुख नाम के राजा! १ शेट्टि लोगों के कुल के देदीप्यमान दीपक, भारत-महा-देवी के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शॅट्टि मक्कळ् कुलत्तिनुक्कुच् चुडर् विळक्के, बारद मादेवि ताळक्
कट्टि युळत् तिरुत्ति वैत्ताय् पराशक्ति, पुहळ् पाडिक् कळित्तु निऱ्पाय्
ऑट्टिय पुत् कवलै बयऱ् जोर्वॅत्तुम्, अरक्करॅल्लाम् ऑरुङ्गु माय
वॅट्टियुयर् पुहळ् पडैत्ताय् विडुदलैये, वडिव मॅत मेवि निऱ्राय् 2
तमिळ् मणक्कुम् नित्ताबु; पळ वेद, उपनिडदच् चार मॅत्तुम्
अमिळ्दु नित दहत्तिनिले मणम् वीशुम्, अदनाले यमरत्तत्मै
कुमिळ् पड नित्मेनि यॅला मणमोङ्गुम्, उलहमॅलाङ् गुळैयु मोशै
उमिळ् पडु वेय्ङ्गुळ लुडैय कण्णनॅत, नित्तैप् पुलवोर् आदुवारे 3
बारद दनादिपति ऍत नित्तैये, वाळ्त्तिडुवार् पारिलुळ्ळोर्
ईरमिला नॅञ्जुडैयोर् नित्तैक् कण्डा, लरुळ् वडिव मिशैत्तु निऱ्पार्
नेरऱिया मक्कळॅला नित्तैक् कण्डाल्, नीदि नॅऱि नेर्न्दु वाळ्वार्
यारऱिवार् नित् पॅरुमै ? यारदनै, मॉळियिनिडै यमैक्क वल्लार् ? 4
पलनाडु शुऱ्ऱि वन्दोम् पल कलैहळ्, कऱ्ऱु वन्दो मिङ्गु पऱ्पल
कुल मार्न्द मक्कळुडन् पळहि वन्दोम्, पलशॅल्वर् कुळात्तैक् कण्डोम्
निल मीदु नित् पोलोर् वळ्ळलैयाङ्, गण्डिलमे, निलवैयत्ऱिप्
पुलतारच् चकोर पक्षि कळिप्पदर्कु, वेऱु शुडर्प् पॉरुळिङ् गुण्डो ? 5
मत्तर् मिशैच् चॅल्वर् मिशैत् तमिळ् पाडि, यॅय्प्पुऱ्ऱु मनङ् गशन्दु
पॉत्तनैय कविदैयिनि वानवर्क्के, यत्ऱि मक्कट् पुऱत्तार्क् कीयोम्

चरणों को अपने हृदय में रखनेवाले, पराशक्ति का यश गाकर आनन्द-लाभ करनेवाले साथ में लगे रहनेवाले चिन्ता, भय, निराशा आदि नीच राक्षसों को एक साथ तुमने काटकर उन्नत यश पाया ! स्वतन्त्रता के साकार रूप ही बनकर सम्मानित रहते हो ! २ तुम्हारी जिह्वा तमिळ की सुगन्ध से युक्त है ! तुम्हारे हृदय से उपनिषद्-सार रूपी अमृत सुगंध फैला रहा है ! उससे अमरता की सुगंध उमगकर तुम्हारे सारे शरीर पर फैली है। लोग तुमको संसार भर में फैलनेवाली ध्वनि जिससे निकलती है, उस वंशी के धारक कृष्ण ही बताते हैं।३ विश्व-वासी लोग तुम्हें "भारत धनाधिपति" कहकर महिमा गाते हैं। अकरुण मनवाले भी तुम्हें देखें, तो करुणामय बन जायँ। अन्यायी लोग तुमसे साक्षात्कार करें, तो नीति-सम्मत न्याय-मार्ग अपना लें। तुम्हारी महिमा (पूर्ण रूप से) कौन जाने ? और, कौन ही उसे भाषा-बद्ध कर सके ? ४ हम कई देशों में घूमकर आये हैं। अनेक कलाएँ (विद्याएँ) सीखकर आये हैं। अनेक विविध कुलों के लोगों से हमारा परिचय है अनेक धनवानों के समाज हमने देखे। पर इस पृथ्वी पर तुम जैसे दाता को हमने नहीं देखा ! क्या चकोर पक्षी के लिए अपने अंगों को तुष्ट करने के हेतु चन्द्र को छोड़कर कोई दूसरी प्रकाशमय वस्तु है ? ५ राजाओं तथा रईसों पर हमने तमिळ में प्रशंसा-गीत गाये। पर मन उचट गया, कटु हो गया। हमने वादा कर रखा था कि स्वर्ण-सम अपनी कविता आगे देवों को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शोभित रहो (सदव) राम-सम निधि के नायक।
दक्ष - मल्ल - सम पुष्ट स्कंधवाले (सुखदायक)॥
षण्मुख नामक नृप! तुम रहो (सर्वदा) शोभित।
(शत वर्षों तक रहो धरा - तल पर तुम जीवित)॥ २॥
भारत - माता के पग उर में धरनेवाले।
पराशक्ति - गुण गा, सुख अर्जित करनेवाले॥
चिन्ता, भय, नैराश्य - आदि - राक्षस - संहारक।
(जगती - तल में) उन्नत यश के (प्रबल-) प्रसारक॥
स्वतंत्रता की मूर्ति - समान (सदा) सम्मानित।
शेट्टि - जनों के कुल के हो तुम दीप प्रकाशित॥ २॥
तमिऴ - सुगंध सुगंधित है तव रसना रसमय।
उपनिषदों के सुधा - सार - सुरभित - मन सहृदय॥
उस उरतल से गंध अमरता की उठ - उठकर।
फैली हुई तुम्हारे है सारे शरीर पर॥
जगतीतल में मधुर - मधुर ध्वनि के विस्तारक।
बतलाते हैं 'कृष्ण' तुम्हें जन, 'वंशी - धारक'॥ ३॥
भारत - धनाधिपति कह करके निखिल विश्व - जन।
तव महिमा गाते हैं (करते हैं गुण - वर्णन)॥
अकरुण जन तुमको लख करुणामय बन जायें।
(करें सभी का हित दुखियों पर दया दिखायें)॥
अन्यायी जन अगर तुम्हारा दर्शन पायें।
तो वे नीति - न्याय - सम्मत पथ को अपनायें॥
कौन जानता (पूर्ण रूप से) है तव महिमा।
भाषा - बद्ध कौन कर सके (तुम्हारी गरिमा)॥ ४॥
घूमे देश अनेक पढ़ीं अगणित विद्याएँ।
विविध कुलों से परिचय हुआ (बढ़ी सीमाएँ)॥
देखे हमने धनियों के समुदाय अपरिमित।
तुम जैसा दाता न लखा हमने (उदार - चित)॥
प्रिय चकोर पक्षी के तन को पुष्ट बनाता।
बिना चन्द्र के कौन प्रकाशित सुधा - प्रदाता॥ ५॥
राजा और रईस न जाने कितने पाये।
गीत प्रशंसा भरे तमिऴ में हमने गाये॥
(इन सबसे) फिर उचट गया मेरा (भावुक) मन।
फैली मन में कटुता हमने किया यही प्रण॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅन्न नम दुळत् तॅण्णि यिरुन्दोमर्, रुत्निडत्ते इमैयोर् क्कुळ्ळ
वन्न मॅलाङ् गण्डु निनैत् तमिळ् पाडिप्, पुहळ्दर्कु मनङ् गॉण्डोमे 6
मीनाडु कॉडि युयर्त्त मदवेळै, निहर्त्त वुरु मेवि निन्ड्राय्
या (म्) नाडु पॉरुळै यॅमक् कीन् दॅमदु, वरुमैयिनै यिन्ड्रे कॉल्वाय्
बानाडु मन्नाडुङ् गळियोङ्गत्, तिरुमादु वन्दु पुल्हक्
कानाडु कात्त नह रवदरित्ताय्, शण्मुहनाङ् गरुणैक् कोवे ! 7

॥ बारदियार् कविदैहळ् मुर्ड्रम् ॥

ही अर्पित कर दी जायगी; मानवों को नहीं ! पर तुममें देवों के सारे गुण विद्यमान हैं। यह देखकर, हमारा मन हुआ कि तुम पर गीत लिखें। ६ तुम मत्स्य-ध्वज मन्मथ के समान आकृतिवाले हो ! हम जिसकी खोज में आये हैं, वह धन हमें दो और हमारे अभाव को आज ही नष्ट कर दो ! आकाश तथा पृथ्वी में आनन्द बढ़े; श्रीदेवी आकर आलिंगन कर ले —इस हेतु से कानाडु नगर में आकर अवतरित हे षण्मुख (नाम के) करुणामय प्रभु ! ७

॥ भारती की कविताओं का गद्यानुवाद समाप्त ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अब मैं अपनी स्वर्ण - तुल्य (नव) कविता (सुललित)।
त्याग नरों को, बस देवों को करूँ समर्पित ॥
तुममें विद्यमान देवों के किन्तु सकल गुण।
गाऊँ तुम पर गीत, प्रसन्न हुआ मेरा मन ॥ ६ ॥
मत्स्यध्वज मन्मथ के तुल्य स्वरूप (मनोरम)।
वह धन देवें जिसे खोजते आये हैं हम ॥
दूर करो तुम सारे आज अभाव हमारे।
(अब न रहूँ मैं इस जग में अपना मन मारे) ॥
धरा - गगन में बढ़े (अतुल) आनन्द (मनोरम)।
श्रीदेवी आकर आलिंगन कर ले (अनुपम) ॥
कानाडु नगर में आकर अवतरित हुए तुम।
षण्मुख नामक करुणामय प्रभु प्रथित हुए तुम ॥ ७ ॥

॥ भारती की कविताओं का पद्यानुवाद समाप्त ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ताज़ी विज्ञप्ति

प्रकाशित हो चुके हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण ग्रन्थः—

१ गुजराती—गिरधर रामायण (रचनाकाल-१८३५ ई०) हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृष्ठ संख्या १४६० मूल्य ६०·००

२ ,, प्रेमानन्द रसामृत—नागरी लिप्य० तथा हिन्दी अनुवाद पृ० संख्या ४९६ मूल्य ३५·००

३ मलयाळम—अध्यात्म रामायण (एळुत्तच्छन् कृत) १५वीं शती हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृ० सं० ७५२ मू० ४०·००

४ ,, —महाभारत-एळुत्तच्छन् (१५वीं शती) पृ० १२१६ मू० ६०·००

५ बँगला— कृत्तिवास रामायण (पाँचकाण्ड)—१५वीं शती। हिन्दी पद्या० सहित नागरी लिप्य० पृ० ६२४ मू० २५·००

६ ,, कृत्तिवास लंकाकाण्ड— ,, गद्यानुवाद पृ० ४८८ मू० २५·००

७ ,, ,, उत्तरकाण्ड ,, ,, पृ० ३२४ मूल्य २५·००

८ कश्मीरी—रामावतारचरित-प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत पृ० ४८९ मू० २०·००

९ ,, लल्द्यद—(नागरी) हिन्दी गद्य संस्कृत पद्यानु० पृ० १२० ,, १०·००

१० राजस्थानी—रुक्मिणी मंगल पदमभगत कृत। पृ० ३०० मू० १५·००

११ तमिळ— तिरुक्कुऱळ्-तिरुवळ्ळुवर कृत। २००० वर्ष से अधिक प्राचीन; नागरी लिप्यन्तरण, गद्य-पद्य हिन्दी अनुवाद, पृ० ३५२ मू० २०·००

१२ ,, कम्ब रामायण बालकाण्ड (९वीं शती) पृ० ६५२ मूल्य ४०·००

१३ ,, ,, अयोध्या-अरण्य पृष्ठ १०२४ मूल्य ७०·००

१४ ,, ,, किष्किन्धा-सुन्दर ,, १०१६ मूल्य ७०·००

१५ ,, ,, युद्धकाण्ड पूर्वार्ध ,, १०१६ मूल्य ७०·००

१६ ,, ,, ,, उत्तरार्ध ,, ८४० मूल्य ७०·००

१७ ,, बारदियार् कविदैहळ्—(सुब्रह्मण्य भारती का साहित्य नागरी लिप्य० एवं गद्य-पद्य हिन्दी अनु० पृ० ११०८ मूल्य १००·००

१८ कन्नड— रामचन्द्रचरित पुराणं, अभिनव पम्प विरचित (जैन-मतानुसार रामचरित्र ११वीं शती) पृ० ६९० मूल्य ४०·००

१९ ,, तोरवे रामायण (कुमार वाल्मीकि कृत) १४वीं शती पृष्ठ १४०८ मूल्य १००·००

२० तेलुगु— मोल्ल रामायण (१४वीं शती) पृ० ३०८ मूल्य २०·००

२१ ,, रंगनाथ रामायण (१३वीं शती) पृ. १३३५ मू० ६०·००

२२ ,, श्री पोतन्न महाभागवतमु १-४ स्कन्ध पृ० ८५६ मूल्य ७०·००

२३ ,, ,, ,, ५-९ ,, पृ० ८३८ मूल्य ७०·००

२४ ,, ,, ,, १०-१२ स्कन्ध पृ० ९२० मूल्य ८०·००

२५ मराठी—श्रीरामविजय-श्रीधरकृत (१७वीं शती) पृ० १२२८ मू० ६०·००

२६ ,, श्रीहरि-विजय (श्रीधर कृत) पृष्ठ १००४ मू० ७०·००

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

२७ फ़ारसी—सिर्रे अक्बर (दाराशिकोह कृत उपनिषद-व्या०)
प्रथम खण्ड (ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तरीय, श्वेताश्वर) २८० मू० २०·००
२८ उर्दू— शरीफ़ज़ादः (मिर्ज़ा रुस्वा कृत) पृ० १३६ मूल्य ८·००
२९ ,, गुज़श्तः लखनऊ (मौ० शरर) पृ० ३१६ मूल्य २०·००
३० गुरमुखी—श्री गुरुग्रन्थ साहिब पहली सैंची पृ० ९६८ मूल्य ५०·००
३१ ,, ,, ,, दूसरी सैंची पृ० ९९२ मूल्य ५०·००
३२ ,, ,, ,, तीसरी सैंची पृ० ९६४ मूल्य ५०·००
३३ ,, ,, ,, चौथी सैंची पृ० ८०० मूल्य ५०·००
३४ ,, श्री दसम गुरुग्रन्थ साहिब प्रथम सैंची पृ० ८२० मू० ५०·००
३५ ,, ,, ,, ,, दूसरी सैंची पृ० ७०४ मू० ५०·००
३६ ,, ,, ,, ,, तीसरी सैंची पृ० ७३६ मूल्य ५०·००
३७ ,, ,, ,, ,, चौथी सैंची मूल्य ५०·००
३८ ,, श्रीजपुजी सुखमनी साहब गुरमुखी पाठ तथा ख्वाजः दिलमुहम्मद कृत उर्दू पद्यानुवाद—दोनों नागरी लिपि में; पृ० १६४ मू० १०·००
३९ ,, सुखमनी साहिब मूल गुटका नागरी लिपि। मूल्य ४·००
४० सिन्धी— सामी, शाह, सचल की त्रिवेणी पृष्ठ ४१५ मू० २०·००
४१ नेपाली—भानुभक्त रामायण पृ० ३४४ मूल्य २०·००
४२ असमिया—माधवकंदली रामायण (१४वीं शती) पृ० ९४३ ,, ६०·००
४३ ओड़िआ—बैदेहीश-बिळास उपेन्द्रभञ्ज (१८वीं शती) पृ० १०००,, ६०·००
४४ ,, तुलसी-रामचरितमानस—ओड़िआ लिपि में मूलपाठ तथा ओड़िआ गद्य-पद्य अनुवाद। पृ०सं० १४६४ मू० ६०·००
४५ संस्कृत—मानस-भारती रामचरितमानस-सहित संस्कृत पंक्ति-अनुपंक्ति पद्यानुवाद। पृ० ७४० मू० ५०·००
४६ ,, अद्भुत रामायण हिन्दी अनुवाद सहित पृ० २४४ मूल्य २०·००

प्रचारित प्रकाशन (ल.कि.घ.)

४७ अरबी क़ुर्आन शरीफ़ मूलपाठ अरबी तथा नागरी लिपि में तथा हिन्दी अनुवाद सहित पृ० १०२४ मू० ५२·००
४८ ,, ,, केवल मूल; अरबी, नागरी दोनों लिपि में पृ० ५२० मू० २६·००
४९ ,, ,, केवल हिन्दी अनुवाद पृ० ५३० मूल्य २६·००
५० ,, क़ौरानिक कोश (पठनक्रम) पृ० १९२ मूल्य १०·००
५१ ,, ज़ादे सफ़र (रियाज़ुस्सालिहीन) भाग १ पृ० ३३६ मू० १५·००
५२ ,, तफ़सीर माजिदी पारः १ से ५ (क़ुर्आन शरीफ़) मौ० अब्दुल माजिद दर्याबादी का मूल, अनु० एवं भाष्य पृ० ५१२ मू. ५०·००
५३ ,, बुख़ारी शरीफ़ (हदीस, पारः १-५) पृ० ५८० मूल्य ५०·००
५४ बहुभाषाई— 'वाणी सरोवर' त्रैमासिक पत्र वार्षिक मूल्य १५·००

प्राप्ति-स्थान— मूल वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यन्त्रस्थ तथा कार्याधीन चल रहे सानुवाद लिप्यन्तरित ग्रंथ :–

		अनुमानित पृष्ठ
१	मैथिली—चन्द्रा झा रामायण सानुवाद	८००
२	मराठी—संत एकनाथ भावार्थ रामायण	३०००
३	ओड़िआ—जगमोहन बलरामदास रामायण	१०००
४	,, बिलंका रामायण	५००
५	फ़ारसी—सिर्रे अक्बर खण्ड–२-३	६००
६	,, मुल्ला मसीही रामायण	५००
७	नागरी उर्दू-हिन्दी–विश्वनागरी उर्दू-हिन्दी कोश	१२००
८	कन्नड—बत्तलेश्वर (कौशिक) रामायण	१०००
९	,, महाभारत कुमार व्यास कृत	१०००
१०	अरबी—बुख़ारी शरीफ़ पारः ६-३०	३०००
११	,, क़ौरानिक कोश वर्णानुक्रम (ल.कि.घ.)	३००
१२	,, तफ़सीर माजिदी क़ुर्आन शरीफ़ अरबी तथा नागरी लिपि में क़ुर्आन का मूल पाठ व माजिदी साहब कृत अनुवाद तथा वृहत् भाष्य पारः ६-३० (ल.कि.घ.)	६०००
१३	हिब्रू—बाइबिल् ओल्ड् टेस्टमेण्ट्	मूल हिब्रू, अरामी, ग्रीक, उनका तथा अंग्रेजी अनु० का नागरी-लिप्यन्तर तथा हिन्दी अनुवाद ३०००
१४	ग्रीक— ,, न्यू टेस्टमेण्ट्	
१५	उर्दू—मर्सियः मीर अनीस	१६००
१६	गुरमुखी—भाई गुरदासजी के कबित्त-सवैये	६००
१७	,, ,, ,, ,, वारां	१०००
१८	कोंकणी—ख्रीस्त पुराण (मूल तथा हिन्दी अनु०)	१०००
१९	संस्कृत—वाल्मीकि रामायण (मूल तथा हिन्दी पद्यानुवाद)	३०००
२०	,, महाभारत (एक लक्ष श्लोक) (मूल तथा हिन्दी पद्यानुवाद)	१५०००

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow.

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यन्त्रस्थ तथा कार्याधीन चल रहे सानुवाद लिप्यन्तरित ग्रंथ :–

		अनुमानित पृष्ठ
१	मैथिली—चन्द्रा रामायण सानुवाद	८००
२	मराठी—श्री संत एकनाथ भावार्थ रामावण	३०००
३	तेलुगु—पोतन्न भागवतसु स्कन्ध–१०-१२ (१३वीं शती)	१०००
४	ओड़िआ—जगमोहन बलरामदास रामायण	१०००
५	फ़ारसी—सिर्रे अक्बर खण्ड–२-३	६००
६	,, मुल्ला मसीही रामायण	५००
७	नागरी उर्दू-हिन्दी–विश्वनागरी उर्दू-हिन्दी कोश	१२००
८	कन्नड—तोरवे रामायण (१६वीं शती)	९००
९	अरबी—बुखारी शरीफ़ (ल. कि. घ.)	३०००
१०	,, क़ौरानिक कोश वर्णानुक्रम (,,)	३००
११	,, क़ुर्आन शरीफ़ तफ़सीर माजिदी अरबी तथा नागरी लिपि में क़ुर्आन का मूल पाठ व माजिदी साहब कृत अनुवाद तथा बृहस् भाष्य पारः ६-३० (ल.कि.घ.)	६०००
१२	हिब्रू—बाइविल् ओल्ड् टेस्टमेण्ट्	मूल हिब्रू, अरामी, ग्रीक, उनका तथा अंग्रेजी अनु० का नागरी-लिप्यन्तर तथा हिन्दी अनुवाद ३०००
१३	ग्रीक— ,, न्यू टेस्टमेण्ट्	
१४	उर्दू—मर्सियः मीर अनीस	१६००
१५	गुरमुखी—श्री दसम गुरूग्रन्थ साहिब (गुरूगोविंदसिंह जी कृत) सैंची ३,४	२०००
१६	तमिळ—सुब्रह्मण्य भारती का साहित्य नागरी लिप्यन्तरण एवं गद्य-पद्य हिन्दी अनुवाद	१५००
१७	कोंकणी–ख्रीस्त पुराण (मूल तथा हिन्दी अनु०)	१०००
१८	संस्कृत—वाल्मीकि रामायण (मूल तथा हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद)	५०००

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow